



सूरसागर ॥

सारावली ॥

श्रीनल्लभ चरणा कमलेभ्यो नमः ॥ श्री बिठलेशो जयति तुरास ॥
 श्री गिरिधरो जयति तुरास ॥ श्री कृष्णाय नमः ॥ अथ श्रीसूरदास जी
 कृत सूरसागर सारावली तथा सवाला खपदके सूचीपत्र श्रीकृष्णानन्द
 चरणदेव रागसागर संग्रहकृत तथा राग कल्पद्रुम लिख्यते ॥ बन्दों
 श्री हरिपद सुखराई । जाको कृपासे पंख गिरि लंघे अंधरेको सबकुछ
 दरशाई ॥ बहिरो सुभै रंग पुनि जोलै रंजवले शिर छत्र धराई ॥ सूर-
 दास प्रभुकी शरणागत आश्रय नमो ते पाई ॥ रागिनीकाफी तालजति ॥
 खेलत यहि विधि हरि होरी हो होरी हो वेद विदित यह बात ॥
 टेक-अविगति आदि अनन्त अनूपम अलख पुरुष अविनाशी ।
 पूरणा प्रह्लादप्रकट पुरुषोत्तम नित निज लोकविलासी १ जहँ वृन्दावन
 आदि अजरजहँ कुंजलता बिस्तार । तहँ बिहरत प्रिय प्रीतम दोऊ
 निगम भृङ्ग गुंजार रतन जरित कालिंशीके तट अति पुनीत जहँ नीर ।
 सारस हंस चक्रोर मोर खग कूजत कोकिल कीर ३ जहँ गोवर्द्धन
 पर्वतमणिसय सघन कंदरासार । गोपिन मंडल मध्यविराजत निशि
 दिन करत बिहार ४ खेलत खेलत चितमें आई सृष्टि करन बिस्तार ।
 अपने आप करि प्रकट कियो है हरी पुरुष अवतार ५ साया कियो सोभ
 बहु विधि करि कालपुरुष के अंग । राजस तामस सात्विक अँगुणा
 प्रकृति पुरुषको संग ६ कोन्हे तत्त्व प्रकटते हो साया सबै अष्टअरु बीश ।
 तिनके नाम कहत कबि सूरजी निरुणा सबके ईश ७ पृथिवी अप तेज

बाधु नभसजा शाल्य पाय आरुजल । यत्त असुख्य औरमन लब्धि किं ।
 अहंकार मति प्रकाश ४ धान अमान न्यान उदान और कहियत प्राधान
 सभाज । तक्षक धनंजय पुनि देवदत्त और पौंड्रक प्रख्युमान हं राजप
 तामस सात्विक तीनों जीप ५ हं सुखदास । अट्टाक्षिष तत्त्व यह कहि-
 यत मोकांज सूरजी नाम १० नाभी कमल नारायणाको सो वेद और
 अवतार । नाभीकमल में बहुतहि भवयो तज न प्रायो पार ११ तव
 आज्ञाभइ अहंहरको नभ करो परमतप आय । तवब्रह्मा तर्पकियों कर्थ
 प्राप्त दूरिभये सबपाथ १२ तव दर्शन गेहो वातगाकार परसधाम निज
 लोक । ताको दर्शन देखिभयो अज खज दात । निःशोक १३ जहांआदि
 निजलोक महाविधि रमा सहस्र संज्ञत । अंगोत्तम भूतत करुणानिधि
 रमासुखद आतिपूत १४ अस्तुतिभरे विविध नामा करि परम पुरुष
 आनन्द । जै जै जै आतिगीत गायकी पढत हैं जानाछंद १५ आशा
 करीनाथ चतुरानन करो सृष्टि प्रस्तार । जोरी खेलत कीर्तिधि नीकी
 रचनारच अपार १६ चौदहलोक करो जाय विधि रचिदेकुंड पताल ।
 जाना रचना रची विधाता होरीखेल रसात १७ रसाही पुषभये ब्रह्मा
 के जिनसंज्ञयो संसार । स्वायंभुवन प्रकटतप्रतीपदे असुखतखपाभार १८
 भुवकी रक्षा करन जु कारनाभार पराह अवतार । पाळे कपिल रूप
 हरि धार्यो कीन्हे सांख्य विचार १९ दीन्हे ज्ञान आप साताकी
 कीन्हे भवनिस्तार । आहों लोकपाल तवकीये आपन आपन अधिकार
 २० तेज अग्नि यम मरुत वरुणा ओ सूर्यचन्द्र यह नाम । मृत्यु कवेर
 यक्षपति कहियत जहँ शंकर को धाम २१ सत्यलोक जनलोक तप-
 लोक और सहर निजलोक । जहँ राजत क्षुभराज महानिधि निशिदिन
 रहत अशोक २२ जननी आशा पाय चले वन पांय वर्य सुकुमार ।
 ताको आप कृपा हरि कीन्ही धरि आपे अवतार २३ पाळे पृथु को
 रूपहरि लीन्हे जानारधुहि काळे । तापर रचना रची विधाता बहु
 विधि यत्न नबाहै २४ रचि नयप्रखंड क्षीपसातांसिल कीन्हेजोरि
 समाज । वन उपवन पर्वत बहुफूले सबै वसन्त को साज २५ दानव देव
 लगे आपसमें कीन्हे युद्ध प्रकार । विविधपाख दूहर्ताप्रचकारी चलत
 कविरकी धार २६ दीन्हे मारि असुर हरिने तव देवन दीन्ही राज ।

एकन को फलवा इन्द्रासन एक भालावरी साज २७ विद्याधर मन्त्रवर्ध
 आराग गाज करत गजनाडे । आराग विद्व द्युत विद्यावर्ध लोहावा
 भुववाले २८ चन्द्रलोक दीप्ति प्रीति को तव फलवासे हरिआप । सब
 भस्त्र को राजा दीप्ति प्रीतिमंडल में आप २९ संगल दुज शुभ अरु
 शनि अरु राहु केतु यह जान । रवि अरु शशि सबहुन को फलवा
 दीप्ति चतुर गुण ३० अतल वितल अरु सुतल तलातल और सहा-
 तजजान । पाताल और रगातल मिलि साते भुवन प्रमान ३१ संक्र-
 र्शना को धाम परमरुचि तहें राजत निजजीर । शेषनाग ताके तरकरम
 बसत महा धन धोर ३२ इलावर्त और विषपुरुषा कुरु और हरिधर
 केतुमात । हिरनमैरसनक भद्रासन भरतखण्ड सुखपाल ३३ साते
 दीप केहे शुभ सुनिने सोई कहत अवतार । जंगु पाला प्रीति शाद प्री-
 ति कुश पुष्कर भरपूर ३४ अथ २ स्थाननपर तव फलवा दियो
 भुववा ३ । अथ २ हरि सायाते दानज प्रकट भये हैं आय ३५ तव २ हरि
 अथतार कण्ठने कीन्हे अमर संहार । सो चौबीसरूप निज कटिधर
 लक्ष्मी दारत बिचार ३६ प्रथम द्विग स्वायंभुव पृथ अज आजा जग
 योन्ही । भूधर जाय राज तुष दारिहो स्थिति विस्तार यह कीनी ३७
 जायभवन अरु वतखण्ड सुरा भूति धर आय । अलगे भगत भये भुव
 जेव फिर अजये चलि आय ३८ जायो आप कही सबही विधि सुवदय
 देखियत नाहीं । तव अति ध्यान कियो शीघ्रतको कैषव भये सहा-
 हीं ३९ आर्द्धलींक नाकते प्रकटे सूकर अति लघु रूप । देखत राजसे
 तीयगये हैं कीन्हे वृहतस्वरूप ४० जयजय करत सकल सुर नर सुनि
 जलमें कियो प्रवेश । जायपताल बाहंगहि लीन्ही धरणी रमानेश ४१
 ते भुवकमल कुसुमकीनाई चलेमनुं गजराज । कछु डरनाहिंन जिय
 ते डरपति अतिआनन्द समाज ४२ योगीसाधु सनकादिक चारों गये
 हरिके निजलोक । कीन्हे क्रोधमने जब कीन्हे दियो शाप अति शोक
 ४३ जय अरु विजय असुरयोजिन को भये तीनअवतार । तिनमें प्रथम
 लियो कश्यप गृह दितिकी कोयिसंभार ४४ प्रथमभयो हिरगयास
 महाबल जिन जीते लोकपाल । नारद सीखगयो सूकर पै देखो रूप
 बिकराल ४५ सहस्रवर्षलों जलमें जूझे कियोदनुज संहार । पाछे आय

भक्तिको थापी कियो अज निस्तार ४६ स्वायम्भूत सतरूपा तनया क-
 हियत तीन प्रमान । आकूती देवहुती और परमूती चतुर सुमान ४७
 परमूती दई दशप्रजापति तिनकी गतीध्यान । सोदीन्ही महादेव दो
 की अतिआनंद सुदान ४८ तयोपेह अभिमान पायक बहुति दक्षगुड
 जाई । क्षांतप्रतहि धर्म जग जान्यो बहुरो रूपविहाई ४९ आकूती दई
 रुचि प्रजापति भयेयज्ञ अवतार । इन्द्रासनबैठे सुख बिलसत दूरकिय
 भुवभार ५० देवहुती कर्म को दीन्हो तिन कीन्हो तप भारी । विन्दु
 सरोवर आये साधव दियो गरुड असवारी ५१ दियो बरदान सृष्टि
 करिबेको अस्तुति करी प्रमान । मेरो अंश अवतार होयगो कहिभये
 अन्तर्धान ५२ पाछे ज्योति निज तप मनलायो कीन्हो प्रकट निमान ।
 तामे बैठ सकलजग देख्यो कन्याना सुवदान ५३ पाछे कपिल रूप
 हरि प्रकटे दर्शन करि सुनिराय । कीन्हो त्याग गये वनको तब ब्रह्म
 परमपद पाय ५४ पाछे विविधज्ञान जननीको दीन्हो कपिल दयाय ।
 सांख्य योग अरु ज्ञान भक्ति दृढ बरगो विविध बनाय ५५ जगको
 रूप तुरत ह्वै गइ बह हारके रूप रुमाय । चले मगनह्वै ब्रह्मध्यानकर
 गंगासागरन्याय ५६ राजहंसीराजत नीरधिकैतद करनसो अविस्तार ।
 सांख्याजनसे बहुत सहायुनि सेवत चरगासुचार ५७ अगे गुणां ब्रह्माये
 तिनकीन्होतपजाय । आये तीनदेवताकेहिग ब्रह्माशिव हरिराय ५८
 तब उन सांख्यो सुत तुमहीसे तीनों प्रकट आय । अज प्राप्ति अंश रुद्र
 दुर्वासा दत्तात्रेय हरिराय ५९ अनसूया के गर्भ प्रकट ह्वै कियो योग
 आराधि । यस अरु नियम प्रमान प्रत्याहार धारणा ध्यान गमार्थ ६०
 आसन कसब सिद्ध योगकर प्रकट कला जगदीश । दीन्हो भोग सहस्र
 नृपको बहु करुणानिधि जगदीश ६१ कीन्हो गुरु चौबीस भीख ले
 यदुकोदीन्हो ज्ञान । पातंजलिसे मुनिपद सेवत करतमदा अजध्यान ६२
 जब सृष्टिन पर किरपाकीन्हो ज्ञानकला बिस्तार । सनकसनंदन और
 सनातन चारों सनतकुमार ६३ उनसे कह्यो सृष्टि नाना विधि रचना
 करो बनाय । उनहिं सान्यो तब चतुरानन खोभे क्रोध उपाय ६४
 शङ्कर प्रकट भये भृकुरोते करो सृष्टिनिर्माण । भूत प्रेत बैतालरचो बहु
 दौरे विधि को खान ६५ पूरणा करो कह्यो चतुरानन सृष्टि महादुख

देन । तब शङ्कर सागस्यो को निकसे चित्तें कमलदल नैन ६६ सुरति
 विद्याजुभई धर्मकी तिनके हरि अवतार । नारायणा जब भई प्रकट
 ७५ तिन सेहो भुनभार ६७ सहस कवच इक असुर गंधारेउ बहुरि
 किं प्रोतवभारो । शोचपरेउ सुरपतिको तब उन पट अस्तरानारी ६८
 बहुत भाँति उन कियो परम छल तपमें उनके काज । कछु नाहिँ चली
 महानार । यथा सुख भगाधि तियमाज ६९ इक उर्बशी हृदय उपजाई
 दई शक को ताथ । ताकी देखि देखि जीवत हैं अजहुं इन्द्र सुख
 पाय ७० स्वायंभू के द्वितिय पुत्र उत्तानपाद सति धीर । तिन के
 ध्रुव बालक जो जाये और उत्तम गंभीर ७१ नृपके पास गये गोदीमें
 भैरवको सुकुमार । तब लघु मात कह्यो तब दैतो जव मेरे अवतार ७२
 मुनि कटु बचन गयो साता पै तब उन ज्ञान दृढायो । हरिकी भक्ति
 कगे सुख लीके जो चाहौ सुख पायो ७३ पाँचवर्य के निकमि चले
 तब गंधुवन पहुँचे आग्र । बिच नारदमुनि तब्व बतायो जपे मंत्र चित
 लाय ७४ कछुदिन पत्र भक्ष करि बीते कछुदिन लीन्हो पानी । कछु
 दिन पयन कियो अनुप्राशन राँको आस यह जानी ७५ दारुणा तप
 जब कियो राजसुत तब काँप्यो सुर लोक । चाहि २ हरिसौं सबभाष्यो
 पूर करो सब शोक ७६ तब हरि कह्यो कोऊ जिन डरपो अर्वाहंतु-
 रत में जैहौ । बालक ध्रुव बन करत गहन तप ताहि तुरत फल दैहौ
 ७७ इतनी कहत गसड पर चाँदके तुरतहि मधुवन आये । कबु कपो-
 ल परिबालकके बाणीप्रकटकराये ७८ अस्तुतिकरी बहुत ध्रुव सब
 विधि सुनि प्रसन्न भये आप । दाये राज भूमिमण्डल को सब विधि
 थिर करि थाप ७९ हरि बैकुराठ सिधारे पुनि ध्रुव आये अपने
 धाम । कीन्हो राज तीस घट वरयन कीन्हे भक्तन काम ८० यक्ष
 प्रबल बाहे भुव मंडल तिन साख्यो निज भ्रात । तिनके काज अंश हरि
 प्रकटे ध्रुव जगत बिलयात ८१ बहुत बर्यलौं राज कियो भुव फिर
 आये निजलोक । सबके ऊपर सदा विराजत ध्रुव सदा निःशोक ८२
 सनकादिक पुष्टियो चतुरानन ब्रह्मजीवकी बीच । प्रकट संभवपुष्टयो
 जगत पुर जोपे नीर समीच ८३ यह भुवमंडलको रसकाढ्यो भाँति २
 निजहाय । धरि पृथुरूप कियो जगानंद अखिललोकके नाथ ८४

प्रियव्रत बंधा धरेउ हरि निज नष्टु अवधभदेव यह नाम । कीजैजात
 सकल भक्तन को अंग २ अतिराम ४५ कीन्हो गरी गता मयाये
 बरया बरयो नाहिं । तब हरि आप भेष ह्वै बरये करी परम मुख
 छाहिं इई ज्ञान उपदेशकियो पुवनको ब्रह्मावर्त सँभार । पायेपानि
 मंत्रप्राप्त जगतमें बिचरे परम उदार ८७ आठो सिद्धि भई मनुमुख जय
 करी न अंगीकार । जैजैजै श्रीवृषभदेव गुनि परब्रह्म अवतार ८८ ब्रह्म
 सभामें यज्ञकियो जब करन वेदउच्चार । प्रकटभये हृद्यशील सद्गुणिवि
 षरब्रह्म अवतार ८९ चार वेद लैगो शंखासुर जलमें रह्यो छियाथ ।
 धरि हृद्यशील रूप हरि भाख्यो लीन्हें वेद छुड़ाय ९० सत्यव्रत राजा
 रघुवंशी प्रथम भये मनुवश । कीन्हो तब बहु भांति परम लूचि प्रकट
 भय हरिअंग ९१ धरि लघु रूप सीनको मोहन जाये उरको धानि ।
 तब उन जल में डारि दियो फिर तब बोले हरि दाणि ९२ जलमें
 लूचि डारि जिन सोको बड़े सबछ डर लाग । यहभाँति तुलसीदास जी
 धरेउ सत्यव्रत को भाग ९३ सत्यें दिवस होयगा परब्रह्म प्राप्ति की
 गाय । तामें बैठ शतद्विज अरु सुग करी भजन मसभाय ९४ कोटीप्राप्ति
 हरि नृप देखतही भये जो अन्तर्धान । सार्थेदिना भयो जगत्ताप
 तबकीन्हो नृप ज्ञान ९५ सगहि अज्ञको बीज लिंगो भूय प्रीतिनिदा
 दिज साध । बैठो नाव ध्यान हरिको धरि दर्शन दीन्होभाय ९६ लाज-
 किनाग आय तहँ तस्लगा बाँधीदंडकरिनाव । पक्षीजान कथ्यो सो
 तब हरि तत्त्व विधान बनाय ९७ बहुतकाललों बिचरे जलमें तब हरि
 भये सुगानि । बीस प्रलय त्रिविध नानाकर छहिरनी बहुगानि ९८
 यह हरि सच्छरूप जब लीन्हो कियो चरित बिस्तार । जैजैजै श्रीसीत
 महा वपु जै जै जगत आधार ९९ सुर अरु अमर सथन कीन्हो निधि
 चौदह रतन निकार । पर्वतपीठ धरेउहरि नीके लियो कूर्म अवतार ॥
 १०० हिरण्यकशिपु अतिप्रबलसुजहै तपकीन्हो परचंड । तबउनवर
 दीन्होचतुरानन कीन्हो अमरअखंड १०१ जपतपगयो तबहिं सवनाने
 सबसंपति गहिलीन्ही । गहे जबकच कामिनि राजाकी तवनारदसिख
 दीन्हो १०२ याके गर्भवसतहै हरिजन सुनुसुरपति यत्नयात । तब तजिएई
 आप लैआये निज आश्रम बिख्यात १०३ नितप्रति ज्ञानकया हंसन

मो कलस ०५५ गुनिराज । धुनि प्रस्त्राद प्रमत्त कोविपे गति आनन्द
 गता ॥ १०५५ पाछे उपविष्यो असुरबहु गिरार देखयो गिजनाम । तब
 नारदपुनि दूरी जगो भू लै आयाहें ग्राम १०५ पाछे लोकपान मवतीते
 गरुडति विगो उवाच । बहुताकुर्वर अग्नि यस सारुत सुवर्माकियो क्षता
 पाव १०६ जगत्कार भयो सुरलोकन गये सर्वे अगपास । तब प्रज मथान
 कियो आनन्द को बाणा भई अकास १०७ सकल लोक घर दैत असुर
 पुत्र पानन करी गहार । जब लेरे जन को दुष्य देहै क्षणाहिं में डारो
 भार १०८ अव प्रस्त्राद प्रकट ताके गृह पांच वर्ष के भै हैं । आदर बहु
 कीन्हो राजाने पढन विप्र गृह गेहें १०९ जब वह विप्रपढावै कुद्ध भुन
 के क्षित धरिगलै । जब वह जाय तनहिं श्वहिनसों रामराम मुखभाखै
 ११० लरिका और पढत शालामें तिनहिं करत उपदेश । हरिको भजन
 करी खनही मिलि और जगत मुखलेश १११ याहि विधि करि उपदेश
 सवनको किये भजन रसलीन । मगडामर्क जो पूछन लाग्यो तब यह
 उत्तर दीन ११२ रामकृष्णअवतार मनोहर भक्तनक हितकाज ॥ मोईसार
 जगतमें कहियत सुनो देव द्विजराज ११३ येही बात जगतमें नीकी सोई
 पढतहमराज । जबहीं विप्रकहेउ जो असुर सों पुत्र पढतविनकाज ११४
 तबहि असुर प्रस्त्राद बुलाथे लिये गोद भरिष्क । कहो पुत्र तुम कहा
 पढाही पूछत कहेउ निशंक ११५ अवरा कौतर्न स्मरतापाद रत अगचन
 बंदनदाध । सख्य और आत्मा नैवेदन प्रेमलक्षणा जास ११६ सुगोपिता
 हों प्री पढ्योहं और बातनहिं जान । इनते और मोहिं जो कहियत सो
 कबहुं नहिं भानूं ११७ दीन्हो पदकिभूषधरगायिपर कहेउ विप्रसांगीभक्त ।
 रेसूरख तू कहा पढाओ कैसे देखैं तोहिं रीभ ११८ जो यह मेरो बैरी
 कहियत ताको नामपढाओ । देहुगिराय याहि परबतते क्षरा गतजीव
 कराओ ११९ दीन्हो डारिशीतत भू पर पुनि जल भीतर डारो । डारि
 अग्निमें शस्त्रन सारो नाना भाति प्रहारो १२० तऊन घात भई अंगन
 की जहँतहँ राम बचाओ । तब नृप आपशस्त्रकर राहि कै बहुतहिवास
 दिखाओ १२१ कहाँहैं राम कृष्ण बहतेरो यों कहि गरजन कोन्ही । घट
 घट जल थल व्योम धरणिमें व्यापक यह धुनिलीन्ही १२२ तबलै खड्ग
 खम्भमें सारो भयोशब्द अतिभारी । प्रकट भये नरहरि वपु धरि हरि

कटकतकार उच्चारो १२३ प्रकारिनियो सगामांभअपरवत्तयां नमव
विदारी । सधिरपानकरि आंत सालनरि जैजै शब्द उच्चारो १२४ सारो
दैत्य दुष्ट द्रक क्षगामें जै नृसिंह बपुआरे । पुष्पन दृष्टि करत सुर नर तुनि
भयेभक्तखवारो १२५ रमानिकट नहिं प्रावत हरिके सेसोवपुहरिधारो ॥
अजमनकादिदेव नारदमुनि जानतखप निहारो १२६ अपनीअपनी अ-
स्तुतिकरि के सबहिन यहैसुनायो । गन्धर्व अरु विद्याधरचारणा बिसल
बिसलयशगायो १२७ तब प्रह्लाद आय हरिपदों श्री गताय यहभाख्यो ॥
जैजैजै जादीश जगतगुरु सोर अधमप्रगाराख्यो १२८ तुमहीं आदि अखंड
अनूपस अशरणा शरणा सुरार । देव देव परब्रह्म परिपूरणा भक्तहेतु अव-
तार १२९ जहँजहँ भीरपरत भक्तनको तहँतहँ होत सहाय ॥ अस्तुतिकरि
मन हर्यबढायो लेहन जीभकराय १३० तबबोलेनरारंग हृपाकरि सुनहु
भक्तसगवात ॥ सन्वन्तरको राजदियो तोहिं धख्यो शीशपर हाथ १३१
निरगुणा सगुणाहोय में देख्यो तोंमें भक्त न पाऊ ॥ जहँजहँ भीर परत
भक्तनको तहां प्रकटहोआऊ १३२ सुन प्रह्लाद प्रतिजा मेरो तोंको कव-
हुंन त्याग ॥ जैसे धेनु बच्छ को चाहत तैसे में अनुराग १३३ जो साँझो सो
देहुतुरतहो नहिं बिलम्ब कछु लाग । तब प्रह्लाद यही वरमाँग्यो वरणा
कमल अनुराग १३४ किरपाकरि दीन्हो करुणाभिधि अलसभक्तिधिर
राज ॥ अन्तर्दानभये हरि तहँते सुफलभये गवकाज १३५ नारदखप जगत
उद्धारणा बिचरत लोकन माय ॥ कारि उपदेश जान हरि भक्तिहि अरु
वैराग्य दृढाय १३६ स्थायंभू मतखपादोऊ कहियतहँ अवतार ॥ जग को
धर्मप्रचार किये भुव भक्त कर्म आचार १३७ करुणाकर जल निधिते
प्रकरेखुआ कलश लै हाथ । आयुवेद विस्तारणा प्रकारणा सबब्रह्माण्डके
नाथ १३८ सबो दुष्ट बढे जो भुवपर लियो कथाअवतार । परशुरामहँके
द्विज थापे दूरकियो भूभार १३९ घुक्लबंश चतुर चूडामाणिक्योत्तम
अवतार । दशरथकेगृह जन्मलियो हरि रूपराम सुकुमार १४० रावणा
कुम्भकराँ असुराधिप बढे सकल जग साहिं । सबहिन लोकपाल उन
जीते कोऊ बाच्योनाहिं १४१ सक तदेव मिलि जायपुकारे चतुराननके
पास । लै शिवसंगचले चतुरानन सीरसिन्धु सुखवास १४२ अस्तुतिकरि
बहु भाँति जगाये तब जागे निज नाथ । आज्ञादई जाय कापि कुल में

प्रकटो भयसुरसाय १४३ तब ब्रह्मा कबहिनमों भाष्यो सोई सदन सुरकीन्हों ।
 सातांछीप जाय कपिकुल में आय जन्म सुरलीन्हों १४४ अपनंछाआप
 छरि प्रकटे पुरुषोत्तम निज रूप । नारायण सुखगार हरो है अति आ-
 नन्दस्वरूप १४५ वासुदेव मों कहत भेदमे हैं पूरणावतार । शेषसहस्रमुख
 रत विरंतर तऊ न पावत पार १४६ सहस्रवर्ष लौं ध्यान कियो शिव राम
 चरित सुखसार । अवगाहन करिके गब देख्यो तऊ न पायो पार १४७
 वितीसमाधि मती तब लूख्यो कहो मरम गुरु ३३ । काको ध्यामकरत उर
 अंतरको परगाजगदीश १४८ तब शिव कहेउ राम अरु गोविंद परम इष्ट
 इक मेरे । सहस्र वर्ष लौं ध्यान करत हैं राम कथा सुख केरे १४९ तामें
 राम समाधि करी अब सहस्रवर्ष लौं वाम । अतिआनन्द सगन मेरो मन
 अंगअंग पूरगा काम १५० दाया करि मोको यह कहिये असर होहुं
 जेहि भांति । मोहिं नारद मुनि तत्व बतायो ताते जिय अकुलाति १५१
 तब गढ़देव कृपा करिके यह चरित कियो विस्तार । सो ब्रह्मांड पूरागा
 व्यास मुनि कियो बदन उच्चार १५२ मुनि वारसोकि कृपा सातांछाधि
 राम संघ फल पायो । उलटो नाम जपत अघ वीर्यो मुनि उपदेश करा-
 यो १५३ राम चरित वरगानके कारण बालमीकि अवतार । तीनों
 लोक भये परिपूरगा राम चरित सुखसार १५४ शतकोटी रामायणा
 कीनी तऊ न लीन्हों पार । कह्यो ब्रह्मसुनि रामचन्द्रों रामायणा
 उच्चार १५५ कांगभुशुंड गरुड मों भाष्यो रामचरित अवतार । सकल
 वेद अरु शास्त्र कह्यो है रामचन्द्र यशसार १५६ कछु संक्षेप सूर अब
 वरगात लघुमति दुरबल बाल । यह रसना पावनके कारन सेवन भव
 जंजाल १५७ तीनों द्यूह संगले प्रकटे पुरुषोत्तम श्रीराम । शक्यन प्रद्युम्न
 लक्ष्मिन भरत महा सुख धाम १५८ शत्रुघ्रहि अनिरुध कहियतु हैं
 चतुर्व्यूह निज रूप । रामचन्द्र प्रकटे जब गृह में हरये कोशलभूष १५९
 पुण्य नक्षत्र नौमीजु परम दिन लगन शुद्ध शुभवार । प्रकटभय दशरथ
 गृह पूरगा चतुर्व्यूह अवतार १६० आत फूले दशरथ मनहीमन को-
 शल्या सुख पायो । सौमित्रा केकयी मन आनंद यह सबहिन सुत
 जायो १६१ गुरु ब्रह्म नारद मुनि जानी जन्मपत्रिका कीनी । राम-
 चन्द्र विख्यात नाम यह सुरमुनि की सुधि लीनी १६२ देत दाज नृप

राज द्विजनको सुरभी हेम आधार । सब सुन्दरि मिलि संगल गावत
 कंचन कलश दुवार १६३ आये देव और मुनिजन सब दे अशोष सुख
 भारी । अपनेअपने धाम चलेसब परमसाद रुचिकारी १६४ मनबांछित
 फल सहिह्न पाये भयो सबन आनन्द । बालरूप ह्वै के दशरथ सुत
 करतकौलि स्वच्छन्द १६५ घुटुहन चलत कानक आंगन में कोशल्या
 छबि देखत । नील नलिन तन पीत भण्डुलिया घनदामिनिद्युति पख-
 त १६६ कबहुँक साखन रोटी लैके खेल करत पुनि मांगत । मुखचुं-
 बत जननी समझावत आय कंठ पुनि लागत १६७ काग भृशुंड दरश
 को आये पांच वर्षलों देखे । स्तुति करी आपुबर पाथो जन्मसुफल
 करि लेखे १६८ किरपा करि निज धाम पठायो अपनो रूपदिखा-
 य । वाके आश्रम कोउ बसतहै माया लगत न ताय १६९ प्रातकाल
 उठि जननि जगावत उठा मेरे बारे राम । उठि बैठे वतुवन लै आई
 करी मुखारी श्याम १७० चारो धात मिल करत कलेऊ समु मेवा
 पकवान । जल आचमन आरता कारके फिर कीन्हों स्नान १७१
 करत शृंगार चार भइया मिलि शोभाबरगि न जाई । चित्र विचित्र
 सुभग चौतनिया इन्द्र धनुय छबि छाई १७२ अलकावलि मुक्तावलि
 गंधी डोर मुरंग बिराजै । मन्हुं सुरसरी धार सरस्वती यमुना मध्य
 बिराजै १७३ तिलक भाल पर परम मनोहर गोरोचन की दीनो ।
 मानो तीन लोककी शोभा अधिक उदय सो कोनो १७४ खंजन
 नैन बीच नासापुट राजत यह अनुहार । खंजन युग मनो लरतलराई
 कीर बुझावत रार १७५ नासा के बेंसर में मोती बरसा बिराजत
 चार । मनोजीव शनि शुक्र सकल बाढे रविके द्वार १७६ कुंडलल-
 लित कपोल बिराजत झलकत आभागंड । इन्दीवरपर मनो देखि-
 यत रविकी किरण प्रचंड १७७ अरुण अधर दमकत दशनावलि
 चारु चिबुक मुसक्यान । अति अनुराग सुधाकर सींचत दाड़िमबीज
 समान १७८ कंठसिरी बिच पदिक बिराजत बहुमणि मुक्ताहार ।
 दहिनावत देत ध्रुव तारे सकल नखत बहुबार १७९ रतन जड़ित कं-
 क्रन बाजबंद नगन मुद्रिका सोहै । डार डार मनु मदन बिटपतरु बिकच
 देखि मनसोहै १८० कटिकिकिरिण रुनु भुनु मुनि तनकी हंस करत

क्रि नकारी । नूपर धनि पर लालि पन्हैया उपमा कौनविचारी १८१
 भयन बसन आदि सब रवि रचि गाता लाड लडावै । रामचन्द्र की
 देख माधुरी दरपरा देख दिखावै १८२ निज प्रतिबिंब विलोकमुकर
 में हँसत राम सुख राम । रौमेइ लहसगा भरत शत्रुहन खेलत डोलत
 पाम १८३ दशरथ राय न्हाय भोजनको बैठेअपने धाम । लावोबेगि
 राम लक्ष्मणाको मुनि आये सुखधाम १८४ ऐहें संग वावा के चारो
 भैया जेवन लागे । दशरथराय आपु जेवतहैं अतिआनंद अनुरागे १८५
 लघु लघु प्रास राम सुख खेलत आपु पिता सुख खेलत । बालकेलि को
 विशद परमसुख सुखसमुद्र नृपभेजत १८६ दालभात घृत कढ़ासलोनी
 अरु नाता पकवान । आरोगत नृप चारिपुत्र मिलि अति आनन्द नि-
 धान १८७ अचबनकर पुनि जलअचवायो जननृप जीरा लीला । राम
 लघरा अरु भरत शत्रुहन सबहिन अचबनकीनी १८८ दोराखाप्रचले
 खतनको मिलिके चारोबीर । सखासंग सब मिलेबराबर आये सरयू
 तीर १८९ तीर चलावत शिष्यमिखावतवरनिशानदेखरावत । कबहुंका
 सधे अश्व बहि आपुन नालाभांति नदावत १९० कबहुंका चारभात
 मिलि अगिया जात परम सुखपावत । हरिन आदि बहुजंतु कियेबध
 निज सुरलोकपटावत १९१ यहिबिधि वन उपवन बहुक्रीडा करीराम
 सुखदाई । बालसांकि मुनि कही कथाकर कहु यकमूर जोगई १९२
 भई सांभ जननी ढेरतहै कहां गये चारोभाई । सुख लागे हँहें लालन
 को लावो बेगि बुताई १९३ इतने सांभ चार भैया मिलिआये अपने
 धाम । सुखचुंबत आरतीउतारत कौशलया अभिराम १९४ सौमित्रा
 केकयि सुखपावत बहुनिधि लाड लडावत । सधमेया पकवान मि-
 टाई अपने हाथ जेवावत १९५ चारों भातन अमित जानिके जननी
 तब पौछाये । चापत चररा जननि अप अपनी कहुक सधुर सुर गा-
 ये १९६ आई नौद राम सुख पाया दिनको अस बिसरायो । जागे
 भोर दौरि जननी ने अपने कंठलगायो १९७ विद्यातिव्र बडे मुनि कहि-
 यत यज्ञ करत निजधाम । सारिच और सुवाहु महासुर विघन करत
 दिनयाम १९८ परब्रह्म अवतार जानि के आये नृपके पास । दशरथ
 राय बहुत पूजाबिधि किये प्रसन्न हुलास १९९ भोजन कर जनहीजु

पुरुषोत्तम नेक नयन जबहेरे २३७ लीन्हों अंग स्योचि भृगुपति को
 अपने रूप समायो । करो जायतप शैल महेंद्र पै मुनि मुनिपर शिर-
 नायो २३८ अति आनन्द अयोध्या आये कियो नगर गुंगार ।
 कदली खम चौक सांतिन के बांधी बंदनवार २३९ कियो प्रवेश
 राजभवनन में रामचन्द्र सुखराश । अज्ञत भवन बिराजत रत्नन
 मुरज कोटि प्रकाश २४० द्वादश वरय बिराजै बालक फिर भूभार
 हरो । कैकेयो के बचन प्रमान कियो नृपतब यह काज करो २४१
 बचन समझ नृपआजा कीन्हों देव उपाय करो । रामचन्द्र पितृआजा
 सांनि जिय में बचन धरो २४२ यहभूभार उतारन रघुपति बहुत कष्टिन
 सुखसेन । बनो बाम को चले सियासंग सुखनिधि राजिव जैन २४३
 मारग में हरि कृपा करी है परम भक्त इक जान । तहँते गयेजु चित्र-
 कूट को जहां मुनिन की खान २४४ बालगिकि मुनि बसत निरंतर
 रासमंत्र उचार । ताकोफत यह आज भयो मोहि दर्शन दियो कुमार
 २४५ पूजा कर पधराय भवन में रामचन्द्र परनाम । कियो विविध
 विधि पूजा करिकै श्रायि चरनन शिरनाम २४६ बहुत दिनसलों बसे
 जगत गुरु चित्रकूट निजधाम । किये सनाथ बहुत मुनिकूल को बहु-
 विधपूरे काम २४७ भरतजान जियमें रघुपतिको दुःख परगळियोरा ।
 आये धाय संग सब लैके पुरवासी गृहलोग २४८ बिन दशरथ सब
 चले तुस्तही कोशतपुरके बासी । आये रामचन्द्र मुख देख्यो सबकी
 मिठी उदासी २४९ रामचन्द्र पुनि सब जन देखेपिता न देखन पाये ।
 पूछी बात कह्यो तबकाह मन बहुविधि दिल्खाये २५० बेदरीतिद्वारि
 रघुपति सबविधि सद्वर्त्ता अनुसार । बहुत भांति सब विधि सगुणा-
 ये भरत करी मनुहार २५१ गुरु वशिष्ठ मुनिकह्यो भरतसों रागत्रह
 अवतार । बनमें जाय बहुत मुनि तारे दूर करै भुवभार २५२ पुनिनिज
 विश्वरूप जो अपनो सो हरि जाय देखायो । आज्ञा पाय चले निज
 पुरको प्रभुहि गीतसमभायो २५३ कह्यु दिन बसे जुचित्रकूट में राम-
 चन्द्र सहभात । तहांते चले दंडकावन को सुखनिधि सांवत्सगात २५४
 मारग में बहु मुनि जन तारे अरु बिराध रिपुमारे । बंदन कर सरभांग
 महामुनि अपने दीय निवारे २५५ दरशन दियो सुतक्षरा गीतस.पंच-

वती पाा धारे। तहां दुष्ट सूर्पनखा नारी करि बिन नाक उधारे २५६
 यह मुनि असुर प्रबल दलआये छिन में राम सँहारे। कीन्हे काज
 सकल सुर मुनि के भुव के भार उतारे २५७ मुनि अगस्त्य आयम जु
 गये हरि बहुबिधि पूजा कीन्हीं। दिव्य वसन देने जब मुनि ने फिर
 यह आज्ञा दीन्हीं २५८ दशकंधर को बेग सँहारे दूरकरो भुवभार।
 लोया बुद्धा दिव्य वस्त्र लै देने जनक कुमार २५९ सूर्पनखा जब जाय
 पुकारी नाक काज ले हात। रावरा क्रोध क्रियो अति भारी अधर
 फरक अतिगात २६० गयो मारीच आश्रमहि तबहीं वाने बहु सम-
 स्थायो। तब मारीच कह्योदयकंधर बिनती बहुत करायो २६१ राम-
 चन्द्र अवतार कहत हैं मुनि नारद मुनि पास। प्रकट भये निश्चर
 मारन की मुनि वहभयो उदाम २६२ करगहिखड्ग तोर बध करिहैं
 मुनि आदिच डर मान्यो। रामचन्द्र के हाथ सखी परम पुरुष फल
 जान्यो २६३ कपट करग रूपधरि आगे सोता बिनती कीन्हीं। राम-
 चन्द्र कर शायक लैके मारन की विधि कीन्हीं २६४ माख्यो वनय
 बापाले ताको लक्ष्मणा नाम एकारेव। लक्ष्मणा नाम सुगत तहँ आये
 अवतर दुष्ट बिचारेव २६५ धरि कै कपट भय भिक्षुक को दशकन्धर
 तहँ आया। हरि कीन्हीं छिन में मायाकरि अपने रथ बैठायो २६६
 चतुर्भाज गोसायु जंतुज्यों लैके हरिको भाग। इतने रामचंद्र तहँ
 आये परमपुरुष बड़भाग २६७ जब माया सोता नहि देखी जियमें
 भये उदाम। पूछनजगे राम द्रुम गनसों बहुत बड़ीदुखराम २६८ मा-
 रग में जरायु खगरेख्यो बिकत भयो तनहीन। बिनती करी राम
 मैतासों बहुत लड़ाईकीन २६९ जब तन तज्यो गृह रघुपति तब बहुत
 करम बिधि कीनी। जान्यो सखा राघ दशरथको अपनी निजगति
 दीनो २७० मारगमे कंधरिपु माख्यो सुरपति काज सँवाख्यो। पंपापुर
 हरि तुरतपधारे जलको दोयनिवाख्यो २७१ शबरी परमभक्तरघुपति
 कीबहुतदिननकीदामो। ताकेफल आरोगे रघुपति पूराभाक्तिप्रकासी
 २७२ दीन मुक्ति निजपुर की ताको तब रघुपति चले आगे। सोता
 सीताबिलपत डोलत परम बिरह सोपागे २७३ रविनन्दन जब मिले
 रामको अरु भेटे हनुमान। अपनी बात कहा उन हरिसों बालि बड़ो

नहल चित्रकारी शरद्विधा उजियारी । बैठे जनकसुता संग बिलसत
 मधुर कोलि मनुगारी ३१२ कबहुँक अगरभूष नानाविधि लियसुगन्ध
 सुगकारी । कबहुँक निरतत देवनीलखि रीभक्त हैं सुखभारी ३१३
 राम बिहार कहेउ नानाविधि बालमोकि सुनिगायो । बर्रात चरित
 विस्तार कोटिगत तऊ पार नहीं पायो ३१४ सुर समुद्रको बुन्द भई
 यह कवि बरगान कह करिहै । कहत चरित रघुनाथ मरस्वती बौरी
 सति अनुसरि है ३१५ अपने पास पठाय दिये तब पुरवासी सब
 लोग । जैजै श्रीराम कल्पतरु प्रकट अयोध्याभोग ३१६ दुष्ट नृपति
 जब बैठे भुवधर धरि भृगुपति को रूप । क्षणमें भुवको भार उताखो
 परशुराम द्विजभूष ३१७ व्यासरूप हैं वेद विस्तार कीन्हे प्रकट पुरा-
 णान । नाना बाक्य धर्म थापनको तिमिरहरण भुवभारन ३१८ बुद्ध
 रूप कालिधर्म प्रकाशयो दया सदन को मल । दूर कियो पाखण्डबाद
 हरि भक्तनको अनुकूल ३१९ कनिके आदि अन्त कृतयुगकेहै कलको
 अवतार । सारि मलेच्छ धर्म फिर धायो भयो जग जगजय का-
 र ३२० कर्मबाद थापनको प्रकटे पुष्टि गर्भ अवतार । सुधापान दीन्हे
 सुरगणको भयो जग यश विस्तार ३२१ असुरनको राजा मोह कियो
 हरि धरो मोहली क्षय । अमृत प्राप्तकराय सुरनको कोण्डे चरित अ-
 नप ३२२ तैसेही भुवभार उत्तारन हरिहणधर अवतार । कालिंदी आकर्य
 कियो हरि मारे दैत्य अपार ३२३ गज अरु शार्ङ्ग लड़ेउ जलभीतर तब
 हरि सुनिरता कीन्हे । कोडिगहूँ सुखधान मांघरो भक्तनको सुख-
 दीन्हे ३२४ जब नहुँ असुर पडे पृथिवी पर कियो अनर्थ विस्तार ।
 सत्यसेन प्रकटे विद्युम्भर सत्यकियाहै अपार ३२५ निजबैकुण्ठ प्रसाय
 रमापति कियो रमाकी हेत । विनतीसुनि कमलाकी केशव कीन्हे
 सुख संकेत ३२६ ब्रह्मद्वय थापनके कारण धरो बिभू अवतार । जहँ
 तहँ मुनिवर निज मठ्यादा थापी अघट अपार ३२७ अजित रूप हैं
 शैल धरो हरि जलनिधि मधवे काज । सुर अरु असुर चकित भये
 देखत किये भक्तके काज ३२८ जब बलिराजागये देवपुर लीन्हे स्वर्ग
 छुडाय । अदिती दुखितभई कश्यपसों विनती करो सुनाय ३२९ तब
 कश्यप मुनि कहेउ पयोव्रत बिधिसों करो बनाय । ताकी कोधि

अधरि लीन्हे श्रीजामन सुखदा ३३० भावै अमनादा रणीशुभादिन
 परो विप्र हरिखण । शिव विरवि सभकादिन पाये व. २१ वौ सुख
 भूष ३३१ यज्ञोपवीत बिलोका कियो विप्र सब सुर भिया गीनरी ।
 बाभनरूप चलेहरि डिअर परिणीतगुपि को ३३२ रामदास
 राडलु हाथ विराजत अरु ओढे मृगकाला । धरि बहुलप चरो रामन
 ज अम्बुज नयन विशाला ३३३ सूरजकोटि प्रकाश छांषे कतिमेखला
 विराजै । करी वेदबुनि नृपदारेपै मनहुं महाधनगार्जे ३३४ सुनिधायो
 तबहीं बलिराजा आय चरणाशिरतायो । बिगती करी बहुत सुखमा-
 न्यो आजभयो मनभायो ३३५ चलिये बिप्र यज्ञशाला गे जहँ द्विज-
 वर सब राजै । आये ब्रह्ममभा में बासन सूरज तेज विराजै ३३६ तब
 नृप कहेउ कछु द्विज माँगो रत्नभूमि मणिदान । हय गज हेमरत्न
 पाटम्बर देहैं प्रकट प्रमान ३३७ तबयोले बासन यहवासीसुन प्रह्लाद
 कुतभूष । बहुत प्रतिग्रह लेतविप्रजो जायपरत भयकूप ३३८ तीनपैड
 बसुधा हमपावै पराकुटी इक कारन । जब नृप भुव संकल्प कियो है
 लागेदेह वसारन ३३९ सक पैडमें बसुधा नापी सकपैड सुरलोक । सक
 पैड दीजै बलिराजा तब हैहो विनशोक ३४० नापोदेह हमारी डिजवर
 सो संकल्पित कीन्हे । सुनि प्रसन्न वासन यों बोलेतै मोको वशकी-
 न्हे ३४१ सदा द्वार तेरे ठाढ़ोहैं दरशन देहैं तोहिं । मायाकाल कबहुं
 नहिं व्यापै सुमिरन करतै मोहिं ३४२ सुतल लोकमें थिरकारिशाण्यो
 जहँ विभूति अति भारी । गहिंके गदा द्वारपर ठाढ़े वासन ब्रह्म सु-
 रारी ३४३ स्वर्गलोक दीन्हे सुरपातको पुनि थिर कर करथाण्यो ।
 निगम नेति कहि रतत निरन्तर देव प्राबु सब काँप्यो ३४४ बासनरूप
 ब्रह्महरि प्रकटे जिनको यश जगगावै । शेष सहसमुख रतत निरन्तर
 सुर पारकिमि पावै ३४५ पुनि बलि राजहिं स्वर्गलोकमें धापैगे हरि-
 राय । सर्वभौम अवतार धरैगे श्रीजामन सुखदाय ३४६ पुनि विभूतप
 सक हरिलेंगे सकत जगत कल्यान । कपट खराड पाखराड अहुर को
 थापै भक्त निदान ३४७ विष्वक्सेन रूप हरिलेंगे कीन्हे शिवको
 हेत । अहुर मारि सब तुरत विडारि दीन्हें रुद्र निकेत ३४८ धर्मसेसु ह्वै
 धर्मब्रह्मायो भुविकी धारणा कीन्हे । शेषरूप ह्वै धराशीश फिर सब

जगको सुख दीन्हो ३४६ अन्तर्यामी पालन कारन निज सुधर्म धरि-
 रूप । अन्नदानद्वै सबजग पोष्यो किये काज सुरभूप ३५० योगपन्थ
 पातंजलि भाष्यो सोउसीसा सबजान्यो । योगीश्वर वपुधरि हरिप्रक-
 टे योग समाधि प्रमान्यो ३५१ क्रियापन्थ युतिने जो भाष्यो सो सब
 असुर मिरायो । उहदभानु द्वैकै हरिप्रकटे सगामें फिरिप्रकटायो ३५२
 यह अनेक अवतार कृष्णके को करिसकै बखान । सोई मूरदासने ब-
 रसो जो कहै द्यास पुरान ३५३ अंशकला अवतार श्यामके कविये कहत
 न आवै । जहँ जहँ भीर परत भक्तन को तहँ तहँ वपु धरिधावै ३५४
 साया कला ईश चतुरानन चतुर्व्यूह धरिरूप । वायु बरुना अरु यम
 कुबेरशशि मृत्यु अग्नि सुरभूप ३५५ रवि शशि भृगु मरीचि सुरगुरु
 अरु चार वेद वपुजान । जगको प्रकट करन परजापति प्रकटे कलानि-
 वान ३५६ जो जो भूप भये भूमण्डल लोकपाल निजजान । निज महिमा
 हरि प्रकट करी है विधिके बचन प्रमान ३५७ सुर अरु असुर रची
 हरिरचना सो जगप्रकटहि कीन्ही । क्रीड़ाकरी बहुतनानाविधिनिगम
 बात दुहुचोन्ही ३५८ यहिविधि होरी खेलत खेलत बहुत भांति सुख
 पायो । धरि अवतार जगतमें जाना भक्तन चरित दिखायो ३५९ अंश
 कला अवतार बहुतविधिराम कृष्ण अवतारी । सदा बिहार करत ब्रज
 मण्डल नंदसदन सुखकारी ३६० नित्य अखण्ड अनूपअनागत अविगत
 अनघ अनन्त । जाकोआदि कोऊ नहिँ जानत कोउन पावतअन्त ३६१
 जब हरिलीलाकी सुधिकीन्ही प्रकटकरन बिस्तार । श्रीरूपभानु रूप
 ह्वै प्रकटे पुनि ब्रजराज उदार ३६२ विद्या ब्रह्मकही यशुमति सोंजाकी
 कोयि उदार । सोरहकला चन्द जो प्रकटे दीन्होतिमिर विदार ३६३
 पुनि बसुदेव देवकी कहियत पहिले हरि बर पायो । पुराण भाष्यआय
 हरि प्रकटे यहुकुल ताप नशायो ३६४ आठे बुद्ध रोहिणी आई शंख
 चक्र वपुधारो । कुण्डल लसत किरीट महाधुनि वपु बसुदेव निहा-
 रो ३६५ अस्तुति करी बहुत नानाविधि रूपचतुर्भुज देख्यो । पीता-
 म्बर अरु श्याम जलद वपु निरखि सुफल दिन लेख्यो ३६६ तब हरि
 कहैउ जन्मतुन्हरे गृह तीनवार हम लीनो । पृथ्वीगर्भ देव ब्राह्मण जो
 कृष्णरूप रंग भीनो ३६७ माँगो सकल मनोरथ अपने मन बांछित

फल पायो । शंख चक्र गदा पद्म चतुर्भुज अजन जन्म लैआयो ३६८
यह भुव भार उतारन कारन हलधर के संग लायो । क्रीडा करो
लोक पावनकर करो भक्त मन भायो ३६९ प्राकृत रूप धरोहरि
क्षणमें शिशु है रोवनलागे । तब बसुदेव देवकी निरखत परम प्रेम
रसपागे ३७० तब देवकी दीन है भाख्यो नृपको नाहिँ पतीजै । अहो
बसुदेव जाव लै गोकुल कह्यो हमारो कीजै ३७१ तबलै हरि पलना
पीढाये पीताम्बर जुट्टाया । तब बसुदेव शीशधरि पलना भयोसवन
मन भायो ३७२ गोकुल चले प्रेम आतुर है खुलियाये कपट कपाट ।
सोयेचान पहरुआ सोये सबै मुक्त भईबाट ३७३ तब बसुदेव लियो कर
पलना अपने शीशचढाया । रैन अंधेरी कहु नहिँ मुक्त अटकर
अटकर आयो ३७४ शेष सहस फन ऊपर छाये घनकी बूंद बचावै ।
आगे सिंह हुंकारत आवत निर्भय बाट जनावै ३७५ यमुना अतिजल-
पूर बहुत है चरगा कमल परशायो । मारग दीन्हो राम सिन्धु ज्यों
नन्दभवन चलि आयो ३७६ पहुंचे आय महार मन्दिरमें नेक न शंका
कीन्ही । बालक धरि लैकै सुर देवी सुरति गवन की कीन्ही ३७७
लै बसुदेव तुरत घर आये काहू जिय नहिँ जाने । जब वह रोवनलागी
तब सब जाग परे अकुलाने ३७८ बालक भयो कह्यो नृपसों जब दौरि
कंस तब आयो । करगहि खड्ग कह्यो देवकी सों बालक कहँ पहुँ-
चायो ३७९ तब देवकी अधीन कह्यउ यह मैं नहिँ बालक जायो ।
यह कन्या मोहिँ बकस वीरतू कीजै सोमनभायो ३८० कंस बंशको
नाशकरतहै कहासमुझ रिसयानी । मोको भई अनाहदबानी तातेडर
नहिँजानी ३८१ कन्यासाँगलई तब राजा नेकुशंक नहिँआनी । परकत
शिला गई आकाशै कंस प्रतीति न मानी ३८२ भइ अकाश वाणी
सुरदेवी कंस यहां अबआई । तेरो शत्रु प्रकट कहुँ ब्रजमें काहुलख्यो
नहिँ जाई ३८३ जैसे मीन करत जलक्रीडा जलमें रहत समाई । त्यों
तुवकाल प्रकट इक कतहूँ लिख न सकत तेहि कोई ३८४ अन्त
दाँन भई सुर देवी कंस प्रतीति जो मानी । तब बसुदेव देवकीके गृह
कंसगयो यह जानी ३८५ क्षन अपराध देवकी मेरो लिख्यो न मेत्यो
जाई । मैं अपराध किये शिशुमार कर जोरे बिललाई ३८६ पुनि

गृह आय धेजपर सोयो नैकु नींद नहिं आये । देश देशके दूत बुलाये
 सर्वाङ्गन गतो सुनावे ३८७ दीन हीन जो असुर चहत बलि करत
 सकल पुनितैसो । दूकतनहिं तनभार उतारेउ जलको साखनजैसो ३८८
 भयो भोर यशुमति गृह आनन्द संगलचार बधाई । जागी महारि पुत्र
 मुख देख्यो आनंद उर न सगाई ३८९ जैसे शशि प्रकटन प्राचीपिथि
 सकल कलाभरि पूर । यशुमतिकोय आय हरि प्रकटे असुर तिमिर
 कर दूर ३९० नन्दराय घर होटाजायो सहर महासुख पायो । बिप्र
 बुलाय वेदधुनि कीन्ही स्वस्ती बचन पढायो ३९१ जातकर्म कर पाजि
 पितर सुर पूजन बिप्र करायो । दोइलख धेनुदई तेहि अवतार बहुतेहि
 दान दिवायो ३९२ परबत सात तिलन को कीन्ही रतनन ओघ गि-
 लायो । मागध सत और बन्दोजन ठोर ठोर यश गायो ३९३ बाजे
 बजत बिचित्र भाँति सों रह्यउ घोष सब गाज । सुर सुसनन बरयावत
 गावत व्योम बिमानन साज ३९४ बाँधत बन्दनवार साँघये द्वारेध्वजा
 सोडाई । कनक कलश प्रति पौर बिराजत मंगलचार बधाई ३९५
 सुरभी मुखम सिंगारि बहुविधि हरदी तेल लगाई । सुवरा माल बि-
 चित्र धातुरंग आँगाँ चित्र बनाई ३९६ आयेगोष भेंट लै लैके भूयसा
 वसन सोहाये । नाना विधि उपहार दूधदाध आगेधरि शिरनाये ३९७
 यशुमति के गृह पुत्र प्रकट भयो रानी सकल व्रज नारी । मंगल साज
 सँभार हायलै घर घर मंगलकारी ३९८ अति आतुर है चलीं भुगड
 जुरि शिर सुसनन वरसावें । मानों रीझ मधुप धरणी की रस पराग
 दरसावें ३९९ पहुँची जाय सहर मन्दिर में करत कलाहल भारी ।
 दर्शन करि यशुमति सुतको सब लेन लगीं बलिहारी ४०० नाचत
 गोष परसपर सब गिलि छिरपात हैं नवनीत । दूध और दाध और
 हरद जल सींचत हैं करप्रीत ४०१ यशुमति कोयि सराहि बलैयालेन
 लीं व्रजनार । सेसो सुत तेरे गृह प्रकट्यो या व्रजकी शृङ्गार ४०२
 यशुमति रानी देति बधाई भूयसा रतन अपार । फूलोफिरत रोहिणी
 मइया नख शिखकर शृङ्गार ४०३ देत अशीश चलीं व्रजसुन्दरि जिय
 उपज्यो सुखभारी । गृह पूजन सब कियो वेद विधि नंदराय सुखका-
 री ४०४ देश देश ते दाह्यो आये मन बाँछित फत पायो । को कहि

सकें द्यौंवी उनको भयो सयन सन भायो ४०५ ताहिने ते सगरे या
 ब्रजमें रमाखप दरशायो । निज कुल लुट जाति एक ढाही गोबर्द्धन ते
 आयो ४०६ परम उदार गहर ब्रजपतिजू ढाही निकट बुलायो । वा-
 जत हुडुक संजीरा लूपुर जाना भाँति नचायो ४०७ झूगा पंगा असु
 पाग पिछोरी ढाहिन को पहिरायो । हरि दरियाई कंठ लगाई पर
 दरसात उठायो ४०८ बहुत दान दीन्हें उपनन्दजू रतन कनक मरिगा-
 नीर । धरानन्द धन बहुतीहि दीन्हें ज्यों बरयत धननीर ४०९ कुराडल
 कान कंठ मालादे ध्रुवनन्द अति सुखपायो । सीधो बहुत सुरसुरा नंदे
 साटा भरि पहुंचायो ४१० कर्माधिरानन्द कहत हैं बहुतहि दान दि-
 वायो । ब्रजराजी ढाहिन पहिराई सगवांछित फल पायो ४११ चले
 भवनको बै अशीश दीउ निरभय कीरति गावै । जनि यांचे ब्रजपति
 उदार अति आचक्र फिर न कहावै ४१२ नाना विधिके बिबिध खि-
 लौना रतवन अधिक अमोले । ताको लेन गये मधुरा को आनक
 दुन्दुभि बोले ४१३ बेग जाव गोकुल तुम अबहीं सुनियत है उतपात ।
 सुनि ब्रजराज तुरत घरआये जियमें अति अकुलात ४१४ प्रथम पूतना
 कंस पठाई अति सुन्दर जघुधाखंड । घसिली गरल लगाय उरौजन
 कपट न कोउ निहाखंड ४१५ लिये उठाव प्रयास सुन्दर तो घनगहि
 को मुख लीन्हो । लीन्हें स्नेह प्राणा बिय पयसुत देह बिकत तय की-
 न्हो ४१६ छोड़ छाड़ कहि परी धरिया पर कर धरणा जु पसार ।
 योजन डेढ़ चिरप बेली सब चूर चूर कर डार ४१७ ताको जननी की
 गतिदोन्हीं परम कपाल गुपाल । दोन्हीं फंक काढ तन वाको सिलके
 सकल गुआल ४१८ तबहीं नंदरायजू आय कौतुक सुनि यहभारी । बि-
 स्मितभये देवने राख्यो बालक यहसुखकारी ४१९ विप्रबुलाय वेदधुनि
 कीन्ही रक्षा बहुत कराई । आरति बिबिध उतार सहरजू संगल करत
 बधाई ४२० एक दिना हरि लई करोटी सुनि हरयो नंदरानी । विप्र
 बुलाय स्वस्तिवाचन करि रोहिणा नयन मिरानी ४२१ नित संगल
 नित होत कुलाहल नित नित बजत वधाई । भादों देव छटि को शुभ
 दिन प्रकट भये बलभाई ४२२ वर्ष दिवस पहिले ब्रजमण्डल श्रेय महा
 प्रप लीन्हो । अपनो धाम जान अकरो भवरूप प्रकट निज कीन्हो ४२३

कंस नृपति ने शकट बुलायो लेकर बीरा दीन्हे । आय नन्द गृह द्वार
 नगर में रूप शकटको कीन्हे ४२४ सारी लात श्याम पलनाते पखड
 धरिया भहराय । जहँ तहँतें दौरे ब्रजबासी श्यामहिं लियो उठाय ४२५
 बच्छ पुच्छ लैदियो हाथपर मंगलगीत गवायो । यशुमति रानीकोयि
 सिरानी मोहन गोद खिलायो ४२६ इकदिन अस्तन पान करावति
 यशुमति अति बहूभागी । बदन पसारि विश्व दिखरायो क्षणा इक
 मुरका जागी ४२७ तगावत्त बिपरीत महाखल सो नृपराय पढायो ।
 चक्रवात ह्वै सकल घोषमें रज धुंधर ह्वै छायो ४२८ चल्थो उठाय
 गुपाल बयोम में तब हरि कंठगहायो । पटक्यो शिला खरिककै आगे
 क्षणा निरजीव करायो ४२९ गर्गराज मुनिराज महाश्रेष्ठि सो बसुदेव
 पढायो । नाम करणा ब्रजराज महर घर अति आनन्दित आयो
 ४३० नाम करणा कीन्हे दोहुन को नारायणा सम भाये । तुम्हरे
 दुःख मिटावन कारण पूरणा की अभिलाये ४३१ रामरूपा अवतार
 मनोहर भक्तन के हित काज । बहुतहि काज करैगे तुम्हरे सुनहु महर
 ब्रजराज ४३२ एकदिना पलना हरि पौढे नन्दमहर के द्वार । नंदरा-
 नी गृह कारजलागी नाहिंन लई सँभार ४३३ कंस नृपति इक असुर
 पढायो धरेउ कागको रूप । मनमुख आय नयन दोउ जोरे देख्यो
 श्याम को रूप ४३४ कंठ चाप बहु बार फिरायो पटक्यो नृप के
 पास । एक याम में बचन कहेउ यह प्रकट भयो तुव नास ४३५ यह
 कहिकै तन त्याग कियो उन कंस नृपतिके आगे । भयो उदास सुहात
 न कुछ ये क्षणा सोवत क्षणा जागे ४३६ एकदिना ब्रजराज महरजू और
 यशोदाराजी । घुटुवनचलत श्यामको देखत बोलत अमृतबानी ४३७
 इतते नन्द महर बोलतहँ उतते जननि बुलावत । सुंदरश्याम खिलौना
 कीन्हे हँसि हँसि मोद बढ़ावत ४३८ शशि की देख आर हरि ठानी
 कर मनुहार मनावत । मधु मेवा पकवान मिठाई बिबिध खिलौना
 लावत ४३९ कमलनैन को महरयशोदा जल प्रतिबिंब दिखावत । फेरत
 हाथ चन्द पकरन को नाहिंन होत लखावत ४४० बूढ़े बाबू दरशन
 आये लाय चन्द्रमणि दीन्हे । ताको देख और सब छांडी भोजन की
 सुधि कीन्हे ४४१ औत्थो दूध कपूर मिलायो प्यावत कनक कटोरे ।

प्रीत देख रोहिणी यशुमति डारत हैं लखा तोरे ४४२ कछुदिन भयं
सरा दोउ बालक बल मोहन दोउ भाई । चोरी करत हरत दधिगाखन
लीला कहिय न जाई ४४३ सब ब्रजनारी उरहन आई ब्रजरानी के
आगे । मैं नाहिंन दधिखायो याको शिशुहैं रोवनलागे ४४४ एकदिना
ब्रजपतिकी पौरा खेलतहरि ब्रजबाल । मादीखाय बदन दिखरायो
अंचल नयन बिशाल ४४५ सकल ब्रह्मांड उदर में देख्यो ब्रजमंडल
राताल । नन्दमहर यशुदा रोहिणी पुनि धेनु सकल ब्रजबाल ४४६
हृदयज्ञान उपज्यो तब यशुमति पूरया ब्रह्म बिशेखे । हरि उपजाई
आया तब सब बहुरि पुत्रकरि लेखे ४४७ एकदिना दधिमयन कर-
तहीं महरघोषका राना । हरि मांग्यो साखन नहिं दीन्हों तबमन
में रिस ठानी ४४८ फारे भांड दही आंगनमें फौल परेउ अति भारी ।
दौंसि पकर देत नहिं मोहन अति आतुर महतारी ४४९ जानी विक-
ल बहुत जननी को हरि पकराई दीन्हों । बहुत दामलै बांधन लागी
आंपुर हैभइहीनी ४५० दयाकुल भई बंधत नहिं मोहन दया प्रयामको
आई । ऊखल दाम बंधे हरि जाने गोपी देखन धाई ४५१ तौलों बंधे
देव दामोदर जीलों यह कत कीन्हों । देख दुखितहैं सुत कुबेरके कृपा
दृष्टिकरिदीन्हों ४५२ नारदमुनिको शापपायके प्रयामदई गतिताय ।
निकसे बीच अटक ऊखलमें प्रयाम रहे अटकाय ४५३ चरणापरसि
ते पुत्रकि भये भुव परे लख भहराय । भयो शब्द आघात स्वर्ग लौ
सुनि आये ब्रजराय ४५४ अस्तुति करिवे गये स्वर्गको अभय हाथ
करिदीन्हों । बंधन छोरि नंदबालकको लै उछंग कर लीन्हों ४५५
यशुमतिजु सों लौरे महरजू तुमक्यों बाँध्यो दाम । रागकहेउ मोहैनारा-
यया आयैहैं बलश्याम ४५६ यशुमतिमाय धाय उर लीन्हों राईलीन
उतारो । लेत बलाय रोहिणी नीकें सुंदररूप निहारो ४५७ कबहुँक
कर करताल बजावत नानाभांति नचावत । कबहुँक दधि साखन के
कारणा आछी आर सचावत ४५८ बड़ेगोप उपनन्द बुलाये नंदमहर
के धाम । कीन्हे संभ गोपसब मिलिके जेहिबिधि पूरया काम ४५९
बहु उतपात रहतहैं गोकुल नितप्रति कंस पढायो । अंतजाय कहुँबास
करैगे बालक देवबचायो ४६० अब वृन्दावन जाय रहेंगे जहुँ वारुन

तृणापानी । चलेगोप अति ओप विराजें बोलत होहोबानी ४६१ यमुना उतर आय तृन्दावन जहां सुखदहसुम राजें । गोवर्द्धन तृन्दावन यमुना सघन कुञ्ज अति छाजें ४६२ बसे जाय आनंद उमंगसों गदगयां सुखद चरावें । आयो दुष्ट बकासुर जान्यो हरिचित वातधरावें ४६३ करि शिचार किनमें हरिमारी सो बकरा बनआज । तापाछे जो बकासुरआयो घातकियो ब्रजराज ४६४ बच्छुचरावत बेगाबजागत गोप सखनके संग । सो देखत चतुरानन आये हरिलीलारसरङ्ग ४६५ छाकें खात खवावत खालन सुन्दर यमुनातीर । खालमंडली मध्याविराजत हरि हलधर दोउबीर ४६६ गाय गोप अरु बच्छु सबै विधि किनहीमें हरिलीन्हों । सबको रूपभये हरिआपुन नेकबिलम्ब न कीन्हों ४६७ जबहीं गर्ब गयो चतुरानन अद्भुत चरितहिंदेख । परोधाय हरिपांथ जोरिकर नाथ कृपाकरदेख ४६८ अस्तुतिकरी वेदविधि करिके चतुरानन बहुभांति । अद्भुत चरित देख माधोको हंसत सकल कलिकाति ४६९ गयेधाम अपनेविधि सुखसों हरिआज्ञा सुखपाय । बर्यादिवसलों सर्वरूप हरि ब्रजवासिन सुखदाय ४७० धेनु चरावन चले प्रयास घन खाल मंडलीजोर । हलधर संग छाकभरि काँवर करत कुलाहलभोर ४७१ क्रीडाकरतआय तृन्दावन धेनु समूह नचावत । गोवर्द्धन पर धेनु बजावत फूलन भेष सँवारत ४७२ कालीनाग नाथ हरिलाये सुर । खालजिवावे । कनक कमलके बोझ शीशधरिमथुरा कंसपठाये ४७३ दावानलको पान कियो मुख गोपन रसा कीनी । बर्या सुखतु देख तृन्दावनक्रीड़ाकी सुधि लीनी ४७४ धेनु बजाय बिलास कियो बनधौरी धेनु बुलावत । बरहापीड दास गुञ्जासगिा अद्भुत भेष बनावत ४७५ प्रातकाल असनान करनको यमुना गोपि सिधारी । लैंकै चोरकदम्ब चढे हरि बिनवत हैं ब्रजनारी ४७६ दै बरदान संग खेलन को शरद रीति जब आई । रचिके रास सबन सुख दीन्हें रजनी अधिक कराई ४७७ गोवर्द्धन धरि सब ब्रज राख्यो सघवा मान मिठायो । नारायण प्रकटे सब जाने जोइ गर्गमुनि गायो ४७८ धेनुक और प्रलम्ब सँहारे शंखचूड़ बध कीन्हें । करिके चरगा परस प्रभु बनमें ब्याल अभय पद दीन्हें ४७९ नानाविधि क्रीडा हरि कीन्हें ब्रजवासिन

सुखपायो । सबहिन यहसौर्यो विनतीकर हरि बैकुण्ठदिखायो ४८०
 अभयदान दीन्हों सधवाको नंदगायको राख्यो । बसतालोक में गये
 कृपाकरि विविज बचन उन भाख्यो ४८१ यज्ञ करत ब्राह्मण सथुरा
 के ओदन प्रयास मँगायो । उन नाहिँ दियो नारिपै पढये तब जन सुनि
 सुखपायो ४८२ बटरस थार सँवार साजसों सबही हरिपै आई । कि-
 या मनोरथ पूरगा उनको निरभय करि जु पठाई ४८३ ल्योमासुर
 केशी सब सारि असु अरिष्ट बध कीनो । क्रीडा बहुत करी गोकुल में
 भगतन को सुखदीनो ४८४ नारद आय कहैउ नृपसों यह कौन नोंद
 तू सोबे । तेरो शत्रु प्रकट गोकुल में गुप्त न जानत कोबे ४८५ यह
 सब देव प्रकट भये ब्रज में जहँ तहँ ठौरहिँ ठौर । उग्रसेन बसुदेव देवकी
 यादवजे सब और ४८६ नंदगोप वृथभान यशोदा सर्वाहि गोप कुल
 जानें । करो उपाय बचो जो चाहो मेरो बचन प्रमानो ४८७ यह
 सुनि कंस सबन को बन्धन दोनो है त्यहिँ काल । श्रीबसुदेव देवकी
 निज पितु बन्धन दियो विशाल ४८८ फिर नारद गोकुल हो आये
 हरि चरणान शिरनाये । अस्तुति करी बहुत नानाविधि सधुरे बैन
 बजाये ४८९ हरि कछु इन उत्तर नाहिँ दीनो फिर गये अपने धाम ।
 बल मोहन सब सखा वृन्द सँ क्रीडत गोकुल ग्राम ४९० बल अक्रूर
 कंस यह भाख्यो सुन सुफलकसुत बात । राम कृष्ण को लायो सधुपुर
 विलस करी जनि जात ४९१ तब रथ बैठ चले सुफलक सुत संध्या
 गोकुल आये । पैँडे में हरिचरण धूरिलैं अपने अंग लगाये ४९२ मिले
 नंद बलदेव रोहिणी और यशोदारानी । पूजा करिपधराय सदन में
 भोजन की विध ठानी ४९३ भोजन करि अक्रूर जो बैठे सब वृत्तांत
 सुनाये । धनुष यज्ञ कीन्हों नृपजने सबको देग बुलाये ४९४ चलेमहर
 ब्रजराज साजलैं कौतुक देखन आज । रामकृष्ण दोउ आगे लैंकै सकल
 घोष शिरताज ४९५ मारग में कालिंदी के तट कीन्हों जल असनान ।
 निज बैकुण्ठ दिखायो जलमें दीन्हों पूरगा ज्ञान ४९६ करि बंदन हरि
 के चरणानको पुनि अक्रूर यह भाख्यो । तुम यदुकुल प्रकटे पुरुषोत्तम
 भक्तनको प्रगाराख्यो ४९७ सथुराआयरहे उपवनमें नंदराय सबगोप ।
 राम कृष्ण के चरगा परसते अधिक सधुपरी ओप ४९८ गये नगर

देखन को मोहन बलदाऊ ले साथ । पुर कुल बधू भरोखन भाँकत
 निरख निरख सुनकात ५६६ मारग में यकरजक सहायो सर्वाहि
 बसन हरि लीन्हे । साथक मिल्यो सर्वाहि पहिराये सर्वाहिन को सुध
 दीन्हे ५०० आगे मिल्यो सुदामामाली फूल माल पहिराई । निर्भय
 दान दियो हरि तिनको अविचल भक्ति डुहाई ५०१ कुब्जा घमि च-
 न्दनलै आई मारग देखन आई । हरि माँग्यो उनले जु समर्थो मन
 बाँझित फल पाई ५०२ दियो बरदान भवन आवन को तहाँते चले
 कन्हारि । मथुरा नगर देख मन मोहन फूले हैं दोउभाई ५०३ रीकत
 नारि कहत मथुरा की आपुस में दै सैन । कोसलगात कौन को ढोटा
 सुन्दर राजिव नैन ५०४ यह बालक सुकुमार सरस वपु असुर प्रबल
 अति भारी । कैसे कौ वाको मारेगे शोचत हैं पुर नारी ५०५ उपवन
 आय कियो हरि व्यास नन्दराय सुख दीन्हें । मधु मेवा पकवान
 मिठाई जो भायो सो लीन्हें ५०६ पौढेजाय दोउशठ्यागर सोवत आई
 निंद । स्वप्ने में मथुरा फिर देखी जागे बालगोविन्द ५०७ भयो प्रात
 नृप फेर बुलायो धनुषयज्ञको देखन । मल्लयुद्ध नानाविध क्रीडा राज
 द्वारको देखन ५०८ गये ब्रजराज द्वार भूपतिके बहु उपहारदिवाये ।
 तब नृप कह्यो सकल गोपन सों भली करी तुमआये ५०९ बैठारेसब
 मंचओप सों कौतुक देखन लागे । रामकृष्ण संग ग्वाल मण्डली नगर
 देख अनुरागे ५१० तोरेबधनुष टूककरिडारे दोउन आयुधकीने । तासु
 सारिकरि चर पहरुआ परम सोदरस भीने ५११ सद राजराज द्वार
 पर ठाहो हरि कहेउ नेक वचाय । उन नहिँ मान्यो सन्मुख आयो
 पकरेउ पूँछ फिराय ५१२ दियो पठाय प्रयास निजपुर को सावत सहि
 राजराज । आगे चले सभामें पहुंचे जहँ नृप सकलसमाज ५१३ बड़ेबड़े
 राजा सब बैठे अरु पुरबासी लोग । अपने अपने भाव सुदेखत भित्तो
 सकल मनशोक ५१४ मल्लनसबन मल्लसे दीखे नृपन लखे नृपराय ।
 युवतिन सबै काम वपुदेखे भेंटन को ललचाय ५१५ गोपन सखाभाव
 करि देखे दुष्ट नृपति कृतदण्ड । पुत्रभाव बसुदेव देवकी देखे नित्यअ-
 खण्ड ५१६ बिदुष जनन विराट प्रभु दीखे अति मनमें सुखपायो ।
 रूपणा तत्त्व देख योगीजन हितसों ध्यान लगायो ५१७ अदुकुलके कुल

दोषक प्रकटे सब यादव सुखदाई । कंसदेखि निजकाल आपनो बहु-
 तसि क्रोध रिमाई ५१८ जब उन कह्यो मल्लक्रीडा तुम करत गोपक
 रांग । तुम्हाबन में हम सुनियत हैं क्रीडित हो यहुरङ्ग ५१९ अब तुमकंस
 नृपाति कु देखाओ मल्ल युद्ध करिनीके । कह्यो चारार सुष्टि सब मिलि
 कै जानत हो सब जीके ५२० तब हरि भिरे मल्ल क्रीडाकर बहुविध
 दौड़ देखाये । बरगान कियो प्रथम संक्षेपन अबहं बरगान पाये ५२१
 सुष्टिकसाय लरेबलभाई भरेउ टुहदबपुदोउ । दिनहीमेंहरितुरतसंहारे
 अतिआनन्दमनहोउ ५२२ और मल्लमारे शलतोशल बहुतगये सबभाज ।
 मल्लयुद्ध हरि करि गोपनसों लखिफूले ब्रजराज ५२३ तब नृपकंस बहुत
 विललायो बार बार रिमयाई । बोधो नन्द हरो गोपन धन कीन्हों
 कपट दुराई ५२४ फागुनबदि चौदशको शुभदिन अरु रविवारसुहायो ।
 नयत उत्तरा आप बिचारैउ काल कंसको आयो ५२५ यह कहि कद
 गये हरि ऊपर जहँ बैठे नृपराय । हरि को देखि खड्ग कर लीन्हों
 सम्मुख आयो धाय ५२६ तब हरि केश पकारि अपनेकर धरणी साँझ
 पकारो । ऊपर गिरे आपु तिहुँपुर को बोझ शीश पर डारो ५२७
 कचगाहि आपु बहुत वह खँट्या हरि यहुनालों आये । करिबियाम
 सकल अम बोधो जब यमुना जल न्हाये ५२८ वंघन छोर पिता माता
 को अस्तुति करि शिरनायो । तुम हमको पढये गोकुल में याते लाइ
 लड़ायो ५२९ यशुमति मात और ब्रजपातिजू बहुतहि आनंददीनो ।
 याते तहल करन नहिँ पायो कहत प्रयास रंग भीनो ५३० तब ब्रजराज
 महरपे आये बलि मोहन दोउ भाई । तुम्हरी कृपा कंस में मारों कहँ
 लौं करौं बडाई ५३१ रोहिशिा यहबोली यशुमति सों हम तुम्हरेसुख
 पायो । ज्यों तुम्हरो सुत त्यों मेरो सुत बहुतहि लाइलड़ायो ५३२ हि ।
 मिलि चले सकल ब्रजबासी नंदगाँव फिरि आयो । सुबस बसी मथुरा
 नादिनते उग्रसेन बैठायो ५३३ रामकृष्ण घरआये जाने पुरबासिन सुख
 पायो । मंगलचार भये घर घर में सातिन चौक पुरायो ५३४ तबहरि
 मात पिता पै आये दोउ भाइन शिरनायो । बन्धन छोर विनय बहु
 कीन्हे तुम हम बिन दुखपायो ५३५ फिर बसुदेव बसे अपने गृह परम
 कचिर सुखधाम । राम कृष्णको लाइ लड़ावत जानत नहिँ दिन या-

कीन्हों कीप । छिनहीमाँभ गोवर्द्धनधारो राखिअलिये सबगोथ ५७४
 ऐसे बहुत चरित्र कान्हके बरसा कहत नहिं आवैं । उदव तुम नयन
 नहिं देखो ताते भेद न पावै ५७५ तब उदव कहेउ धन्य धन्य तुमधन्य
 धन्यव्रजनार । तुम्हरे सुवस सदा हरिखेलो ब्रजमें करतबिहार ५७६
 तुम्हरी चरणाकमल रज कारणा तप कीन्हों चतुरानन । रमाशेष पुन
 किनहुन पायो सो देखियत वृन्दावन ५७७ गुल्मलता में जन्मसाँगि
 तब बिधिसें गोद पसारी । उदव कहत सदा म्वहिं दीजै चरणा रेंगा
 ब्रजनारी ५७८ एक रूप ह्वैरहे वृन्दावन गुल्म जाता कर बास । ब्रज-
 नाम उपदेश कियोजिन पूरणा केल प्रकाश ५७९ स्वरूप उदव फिर
 आये हरिचरणान शिरनायो । कह्यो वृत्तान्त गोप बनिनतन को बिरह
 न जात कहायो ५८० म्वहिं खोजत यदमास बीतिगये तबहुं न आयो
 अन्त । ब्रजगतनके नैन प्राणाबिच तुमहीं प्रयास यसन्त ५८१ छिन
 नहिं दूर प्रयास तुम उनसों में निषचय यह कीनो । तुम्हरोरूप देखि
 गोकुलमें बाढ्यो नेह नवीनो ५८२ तबहरि कह्यो सुनो उदवज ब्रज-
 बार्सा तन मार । तिनको सपन कबहुं नहिं काँडो सत्य कहतहैं तोर
 ५८३ वृन्दावनमें धेनु चरायत गोप सलनके संग । धेनु बजावत सोद
 बढावत क्रीडा काँटि अनंग ५८४ अरु गोपिनसों आसुआँगकारिनित
 प्रति करो बिनोद । दुष्टकंस मारन यहआयो सदा यशोदागोद ५८५
 कुंज कुंजमें क्रीडा करिकरि गोपिनको सुख देहैं । गोप सखन संग
 खेलतडोलैं ब्रजतज अन्त नजैहैं ५८६ मारेउ दुष्ट बहुत जो भूपर धर्म
 करो विस्तार । बहुधाभार उतारन कारन यहुकुल लिय अवतार ५८७
 मित्र एक बन बसत हमारो सो नयनन भरि देख्यो । ताको पूजन
 नितप्रति करिहैं सो तुम सुबुध बिशेख्यो ५८८ नाना रत्न कंदराक-
 बहं छिन नहिं सोहिं भुलावे । क्रीडा करो नित्य कुंजनमें गोपिन को
 सुख भावे ५८९ ताहीक्षणा अक्रूर बुलाये बलि मोहन यह भाख्यो ।
 तुम अब वेग जाव हस्तिनपुर कमल नयन जिय दाख्यो ५९० तब
 अक्रूरबैठि हरिकेरथ हस्तिनपुरजुसिधारे । कुंतीमिली युधिष्ठिरअर्जुन
 भीम बिदुर उर धारे ५९१ गांधारी दुर्योधन आदिक भीष्म करणा
 सबभेटे । बहुत दिना के ताप सबन के सुफलकसुत सब भेटे ५९२ तब

यह कह्यउ नृपतिसों नीके बहुत भाँति समुझायो । तब नृप कह्यउ नहीं मेरो ब्रह्म मोह प्रबल जिय छायो ५६३ तब अक्रूर बिचार कियो यह हरिउच्छा जियमानी । करि परगाम गये मधुपुर को जहां प्रथम सुखदानी ५६४ समाचार सबही कहि दीनो बलिमोहनहि सुनायो । सुनबसुदेव देवकी दोऊ बहुतहि दुखजिय पायो ५६५ अस्तो अरु प्राप्ती दोउपत्नी कंसराय की कहियत । जरासंधपै जाय पुकारों महा क्रोध मन दहियत ५६६ तीन बीस असोहिगाले दल जरासंध तहँ आयो । बलिमोहन छिनसांझ सँहारे करि बिनचमू पढायो ५६७ स-
बहवार फेर फिर आयो हरि सब चमू सँहारी । अबकै फेर दुष्टों बनि आयो हरि कछुवात बिचारो ५६८ अंतरिक्षतै द्वैरथ उपजे आयुध तुरंग समेत । तापर बैठ कृष्ण संकर्यन जीतेहैं सबखेत ५६९ नारदजाय यव-
नसों भाष्यो राम कृष्ण दोउबीर । तोहि न गनत वसतहैं मथुरा बड़े बली रगाधीर ६०० यह सुनि यवन तुरतही धायो जियमें अति अ-
कुलाय । तीन कोटि भट यवन संगले मथुरा पहुंच्यो जाय ६०१ सुनि बलि मोहन बैठ रहसि में कीनो कहू बिचार । मागध मगध देशते आयो साजेफौज अपार ६०२ विश्वकर्मा को आज्ञा दीनीरची द्वारका आय । निशिको सोये सब मथुरा में जगे द्वारकाजाय ६०३ हलधर हलमूसर करलीने सभीमलेस सँहारे । सारि फौज सबही मागध की जरासंध उड्वारे ६०४ चले भाज दोउभाइ उहाँते जहँसोवत मुचकुन्द । बसन उढायरहोछापि आपन परगा परमानन्द ६०५ मारी लात आय जब नृपको तब जाग्योभहराय । निकसी अग्नि नैनतें तासों भस्मभयो ते-
हिदाय ६०६ इतने सांझ आपुहरि आये दरशन दीन्हों भूप । शंख चक्र गद पद्म चतुर्भुज सुंदरप्रथाम स्वरूप ६०६ तबपूज्यो तुमकौनरूप हौ कौन देव अवतार । अबलों कहुं देखे नाहीं मैं तुव अतिहै सुक-
सार ६०८ तबहरि कह्यो जन्म मेरे बहु श्रेय न पावै पार । भुवकी रज नभके सब तारे तितने हैं अवतार ६०९ अब कहिये द्वारपर युग सुन नृप बासुदेव ममरूप । भूतल भार उतारन आयो यदुकुल सुखद स्वरूप ६१० तब नृप अस्तुति बहुबिधि कीन्हो जन्मकर्म गुणागाय । तुमहीं ब्रह्म अखिल अविनाशी भक्तन सदा सहाय ६११ नव गुणा नवल रूप

पुरुषोत्तम औ यदुकुल अवतार । जयजयजय बैकुण्ठसहानिधि कमलन-
यन सुखसार ६१२ वेदपुराणा रहस्यश जाको तऊ न पावत पार ।
मैं मुचकुन्द नृपति कृतयुगको सोवत भये युगचार ६१३ अबसोको
आज्ञा कछु दीजै जैसे चरगान पाऊं । सदाबसां निजलोक निरंतर जन्म
कर्म गुणों गाऊं ६१४ सबीजन्म बहुत अघ कीन्हो तातें मुक्ति न होय ।
विप्र जन्म धरि मुक्ति होयगी करि तप साधन सोय ६१५ आज्ञा
लैके चल्यो नृपति वहँ उत्तर दिशाविशाल । करि तप विप्र जन्म जब
लीन्हो सित्यो जन्म उंजाल ६१६ तहांते चले श्याम अरु हलधर प-
रवरयन गिरि आये । परबत बहुत नमन करि पूजा यह बिनती कर-
वाये ६१७ नितप्रति सोशिर सद्यवा बरसत लगत शीतअपार । अर्गनित
पाप महा दुख सेठो सांगत यही सुरार ६१८ इतने सांभ सगव चलि
आयो उन जानीयह बात । परबत सांभ गये दोउ भइया उब देखे दृग
जात ६१९ दीन्ही अग्नि लगाय चढ़ंधा उन जानी रिपु हान । राम
कृष्ण दोउ कूद पधारे पुरीं द्वारका जान ६२० भयो आनंद द्वारका
में सब घरघर गीतगवाये । करि रिपुहान समर सब जीत्यो रामकृष्ण
घर आये ६२१ एक समय नारदमुनि आये नृपति भीष्म के गेह । पू-
जाकरी बहुत नानाविधि नृपति जनायेनेह ६२२ लखि रुक्मिणी कह्यो
मुनि नारद यह कमला अवतार । पूरा ब्रह्म प्रकट पुरुषोत्तम शिव-
सुदेव कुमार ६२३ उनके योग्य यही कन्या है सुनो देव महाराज । तब
नृप कह्यउ करों लिखय यह सुफलहोय समकाज ६२४ तब नारदमुनि
गये द्वारका कृष्णचन्द्र के पास । बिनती करी रुक्मिणी की सब सुनि
हरि भये हुलास ६२५ करो बेग कछु बिलम्ब न कीजै नारद कहि
यह बात । अबरासुनत कमलापतिको जियतन पुलकित सबगात ६२६
मुनि नारद म्बहिं नौद न आवे करिहों बेग उपाय । यह कहि चले
आप हरि रय चहि शोभा कही न जाय ६२७ देश देश के नृपति जुरे
सब भीष्म नृपति के धाम । रुक्म कह्यउ शिशुपालहि देहांतहीं कथा
सों काम ६२८ इतने सांभ आपु हरि आयेसुनो नृपति सबबात । उपवन
रहे जान जियमें यहसजमेंअति अकलात ६२९ पूजन करनचली देवीको
सखी वृंद सब संग । पूजा करि सीसी यह कमला लोक लाज कृत

भंगई ३० अटल शक्तिअविनाश अधिक बल एक अनादि अनूप । आदि अव्यक्त अंबिका पूरणा अखिल लोक तब रूप ई ३१ कृष्णा चन्द्र के चरणा कमलमें सदा रहो अनुराग । येही पति नित होहिं हमारे जो पूरणा सम भाग ई ३२ तब उन कहेउ कृष्णा तुम्हरे पति हैंहैं अचल सुहाग । चली महाबर पाय रुक्मिणी अति पूरणा अनुराग ई ३३ तब हरि आय बैठ रथनीके आग्रमिले बडभाग । कर गहि बांह लई रथनीके अति आतुर चले भाग ई ३४ मानो नोल मेघके संगमें मिली दामिनी आय । चले तुरत हरिपुरी द्वारका शंख चक्र धरि धाय ई ३५ दुष्ट नृपति को माल मथनकरि चले द्वारकानाथ । जरासंध शिशुपाल आदि नृप पाछे लागे साथ ई ३६ रथ पाछे मिलि शोभित यहिविधि सकल दुष्टकी खान । महासिंह निज भाग लेत ज्यों पाछे दोरैं प्रवान ई ३७ हलधर आय दुष्ट सब सारे अतुर नृपति की भीर । भाजि चले शिशुपाल जरासंध अति व्यापित तन पीर ई ३८ आये नाथ द्वारका नीके रथ्यो मांडवो छाये । ब्याह केलि विधि रची सकल सुख सौंज गनीनहिं जाय ई ३९ ब्रह्मा रुद्र देव तहँ आये शुक नारद मनकादि । दर्शन करि संगल सुखके सब सेठी बिरह जो आदि ई ४० चैवमास पूनो को शुभदिन शुभ नक्षत्र शुभवार । ब्याहि लई हरि देव रुक्मिणी बाढ्यो सुख जो अपार ई ४१ एक सत्राजित यादव कहिये सूरज देव उपास । दीन्ही मणि आदित्य स्यमंतक कोटिक सूर्य प्रकाश ई ४२ भार भार नित कनक देतहैं नृपति सुनी यह बात । तब उन मांगी इ-नजहिं दीनी बाढ्योबैर अघात ई ४३ एक दिवस मृगया को निकस्यो कंठ महामणि लाय । तबउन सिंहमारि गहि लीन्हों ऋच्छ मित्यो एक ताय ई ४४ जाम्बवान महबली उजागर सिंहमारि मणि लीन्ही । परबत गुफा पैठ अपने गृहजाय सुताको दीन्ही ई ४५ चरचा परी बहुत द्वारावती कृष्णाचन्द्रकी बात । तबहरि गये शैलकंदर में अति कोमल मृदुगात ई ४६ दिन अट्टाईस युद्ध कियो जब ऋच्छ भयो बल भंग । तब पग परेउ बहुत स्तुति करि जानि रामपद संग ई ४७ तब हरि कहेउ भक्त तू मेरो तोसों करि संग्राम । कीन्हें शुद्ध तत्व सब तनके पूरणा कीन्हें काम ५४८ जाम्बवती अरपी कन्या भरि मणि राखी समु-

हाय । करि हरिध्यान गयो हरिपुरको जहां योगेश्वर जाय ६४६ लै
 श्यमंत सरिता जानववती सह आय द्वारकानाथ । अति आनंद कुलाहल
 घर घर फूले अंग न समात ६४७ आश्विन सुदि नौसीको शुभदिन
 हरि आये निजधाम । तौलौ घर घर प्रति दुर्गाको पूजन कियो सब
 गाम ६४८ सर्वाजित अपनी तनया को दीन्हें त्रिभुवन राय । सतभा-
 सा जुनाम तेहि कहियत शोभा कही न जाय ६४९ कीन्हो ब्याह
 पद्म आनंद सो सतभासा सुखरास । हारावती बिराजत नित प्रति
 आनंद करत विलास ६५० इन्द्रप्रस्थ हरि गये कृपाकरि पांडव कुल
 को तार । तहुँ कालिन्दी बलमें ब्याही अतिसुंदरि सुकुमार ६५१ मिव-
 बिंदा एक नृपति नन्दनी ताको साधव ब्याधे । सात बैल नाथन के
 कारणा आप अयोध्या आये ६५२ सत्या ब्याहि बहुत सुख कीन्हो
 मथ्यो नृपति को मान । आये फेर द्वारका मोहन मंगलकेलि निधा-
 न ६५३ भद्रा ब्याहि आप जब अये हारावती अनन्द । तैसेही लक्ष्म-
 णा बिवाही पूरणा परमानंद ६५४ नरकासुर को सारि प्रयास घन
 सोरह सहस त्रियलाये । सकहि लगन सबन कर पकरेय एक मुहूर्त
 बिवाये ६५५ यह मुनि नारद अचरज पायो ब्रह्मलोक ते धाये । कृष्ण
 चन्द्र के चरणा परम करि वीणा मधुर बजाये ६५६ तब हरि रोषि
 कहेउ नारदसों कहौ कहाँ ते आये । तब उन कहेउ दरग को आयो
 बहुत रूप धरि ब्याये ६५७ यह कौतुक देखनके कारणा में आयोजो
 देखावो । रूप अनंत आदि अविनाशी दरगान प्रेम बहावो ६५८ तब
 हरि कहेउ जाव घर घर प्रति देखोगे सबदोर । लैहीहैं सब थल परि
 पूरणा सो बिन नाहिं न और ६५९ तब मुनि चले देख घरघर प्रति
 परम केलि सुखपायो । नाना क्रीडा करत निरन्तर घरघर रूप दे-
 खायो ६६० कहुं क्रीडत कहुं दाम बनावत कहुं करत अंगार । कहुं
 बालकन खिलावत साधवखेलत परम उदार ६६१ कहुं चौपर खेलत
 युवतिन सँग पांच सात उचार । कहुं मृगया को चले अश्वचढि श्री-
 बसुदेव कुमार ६६२ कहुं कर लेकर शस्त्र सँवारत कहुं कछु करत
 बिचार । कहुं कछु बात कहत सबहिन सों कहुं धुनि घेद उचार ६६३
 कहुं मिलि यज्ञकरत विप्रन सँग अति आनंद मुरार । नाना दान देत

हय राजभुव ऐसे परम उदार ६६७ कहुं गोदान करत कहुं देखे कहुं
 कछुसुनत पुरान । कहुं निरत सबदेख बार बुध कहुं गंधर्व गुण गान
 ६६८ कहुं जप करत सनातन निज वपु ब्रह्म करत कहुं ध्यान । कहुं
 उपदेश कहुं जैके को कहुं दुहायतजान ६६९ कहुं भोजन नाना सचि
 सांगत यदरस के पकवान । आगोगत ब्रजराज सांवरो कहुं करत
 जलपान ६७० कहुं जागत दरशनदियो मुनिको करि पूजा परगास ।
 संध्या करत कहुं त्रिभुवनपति स्नान करत कोउ धाम ६७१ कहुं
 पौढे कमलाके संगमें परम रहस्य सकान्त । कहुं व्रत करत कहुं नि-
 गमनको ज्ञान कर्मको अन्त ६७२ कहुं यादकरत पितरनको तर्पणा
 करि बहुभांति । कहुं बिप्रनको देतदक्षिणा कहुं भोजन की पांति ६७३
 कहुं सुगंध लगावत लैंकै कहुं अश्व सुंगार । कहुं गजरथ कहुं बाजि
 रथन सजि डोलतहैं गृहद्वार ६७४ कहुं ऊधोसों ब्रजसुख क्रीडापरम
 प्रेम उच्चार । कहुं पांडवको कथा चलावत चिन्ता करत अपार ६७५
 कहुं मिलि बिप्र कहत सबहिनसों बालक करन सगाई । कहुं सुत
 व्याह कहुं कन्याको देत दायजो राई ६७६ कहुं गजराजवाजि सुं-
 गारे तापर चढेजु आप । संग बलभद्र चमू सब संगलै चले असुरदल
 कांप ६७७ कहुं हस्तिनापुर देखनको मनमें करतबिचार । कहुं अर्घ
 देत सूरजको कहुं पूजत त्रिपुरार ६७८ कहुं यक दुर्गादेवि जानि कै
 जोरि बिप्र निजधाम । करतहोम बहुभांति वेदधुनि सबविधि पूरणा
 काम ६७९ प्रथमपुत्रको व्याहजानिकै पूजत कहुं गणेश । कहुं ऋषिनके
 चरणाधोयकै शिरपर धरतनरेश ६८० कहुं व्याहकी केलि परमसुख
 निरखत मुनिसचुपायो । शेष सहसमुख पारन पावै कछुयकसूरजु पायो
 ६८१ फिर मुनि आय भवन कमलाके चरणाकमल शिरनायो । मैं
 सब ठौर फिरेउ तुव देखन कहुं पार न पायो ६८२ जित तितदेखो
 तुम परिपूरणा आदि अन्त अखंड । लीला प्रकट देव पुरुषोत्तम व्या-
 व्यापक कोटि ब्रह्मंड ६८३ शिव विरंचि सनकादि महामुनि प्रेयसु-
 रेश दिनेश । इन सबहिन मिलि पार न पायो द्वारावती नरेश ६८४
 तुम्हरे चरणाकमल की महिमा जानत हैं त्रिपुरारि । प्रकटगंग पावन
 चरणान ते ताहिरहत शिर धारि ६८५ पुनि गौतम धरणी जानत हैं

नाचक शिवरीजान । उडव बिदुर युधिष्ठिरअर्जुन अरु भीष्मसुरजान
 ६८६ हनुमान अरु भक्त बिभीषण चरणाकमल रजसांशी । सोईकृपा
 करो करुणानिधि सांगतहों अनुरागी ६८७ यह कहिकै मुनि लोक
 सिधारे बीसावजाय रिभाय । ब्रह्मलोकपहुंचे छिनहीमें हरिआज्ञाको
 पाय ६८८ पहिलो पुत्र रुक्मिणी जायो प्रद्युम्ननाम धरायो । काम-
 देव प्रगटे हरिके गृह पहिलेरुद्र जरायो ६८९ नारद जायकह्यो संवर
 सों तब रिपुदपु धरिआयो । वेग उपाय करो मारनको प्रगटद्वारका
 जायो ६९० तब संवर भयभीत द्वारका गयो तुरत त्यहिकाल । हरिको
 चक्रदेख रखवारी दयाकुल भयो बेहाल ६९१ तब नारदमुनि आयचक्र
 सों बात करन ठहरायो । इतनेसांभ पुत्रलै भाज्यो निधिमें जान दुरा-
 यो ६९२ एक सीनने भक्ष कियो तब हरि रखवारी कीनों । सोई
 मत्स्य प्रकारि मोधुकने जाय असुरको दीनी ६९३ तब उनकह्यो पा-
 कशालामें अबहीं यह पहुंचाओ । चीखो उदग पुत्र तब निकस्योउन
 जान्यो मम नाओ ६९४ नारद कह्यो यही तब पतिहै याकं बेग ब-
 द्हाय । जौलों बड़ो होय तौलों यह असुरन मतिहि देखाय ६९५ सेवा
 कीनी बड़े भये जब समरथ बिपुल उदार । महाबली बलरास कृपा
 सुत कीन्हों असुर संहार ६९६ मारि असुर को आप द्वारका कृपा
 चरणा शिरनायो । भीतरगये नये रुक्मिणीको सबहिन कटलगायो
 ६९७ बर अरु बधू आय जब जाने रुक्मिणी करत बधाई । रतिअ-
 रु काम प्रकट तादिन ते कवि मिलि कीरति गाई ६९८ यहिबिधि
 केलि करत द्वारौवति पूरणा परमानंद । सहिमा सिन्धु कहां लग
 बरगो सूरजु कवि मतिमद ६९९ पुनि अनिरुद्ध भेद नारदके चित्रे-
 खा हरिलीन्हों । चारवर्थ अरु चारसास लौंऊखाको सुखदीन्हों ७००
 तब हरिजाय संग हलधरलै सब यादव दल जोर । सबै भुजाकरि दूर
 असुरकी चार हाथ दियेछोर ७०१ आये रुद्र पक्ष करि ताको युद्ध
 करन हरि साथ । छिनमें जीतिबधूसुत लैकै आय द्वारकानाय ७०२
 पुनि एक दिवस सुधर्मा बैठे यादव सभा अपार । उग्रसेन बसुदेव सा-
 तिचकी अरु अक्रूर उदार ७०३ इतने सांभ दूत एक आयो सबहिन
 कहि समझायो । बासुदेवनृप आज्ञा करके सोकों बेगिपदायो ७०४

वासुदेव यह कहत वेदमें प्रकटब्रह्म अवतार । सोतो मेंहीं प्रकट भयो भुव
यहिविधि बह्यो अपार ७०५ सरामें जायतुरत हरि साखो दीन्हीं मुक्ति
कपाल । फेर द्वारका तुरत पधारे गरुडचढ़े गोपाल ७०६ एक दुष्ट ने
बहुत कियो तप सो रीझे विपुलार । तब शिवने उन कृत्या दीन्हीं बाढो
क्रोध अपार ७०७ कृत्याचली जहां द्वारावति हरिजानी यह बात ।
आज्ञाकरो चक्र को साधव छिन कृत्याकर घात ७०८ काशी जाय
जराय छिनकमें गये द्वारका फेर । अति आनंद परम सुखसों सर्वादिन
बीतत रसतेर ७०९ पुनिकुरुक्षेत्र गये यादवमिलि क्रियोतीर्थ अस्नान ।
यज्ञहोम करि पितर देवता विप्रनको बहुदान ७१० सूरज ग्रहा नृपन
बहु जान्यो आय जुरी सब भीर । दर्शनभयो सबनको हरिको मित्यो
ताप तनपीर ७११ भीष्म द्रोणा अरु करण युधिष्ठिर भीमार्जुन सहदेव ।
कुंती नकुल औरगन्वारो कृपी बिदुर सहदेव ७१२ दुर्योधन सब भ्रात
संगलै धृतराष्ट्रहिलै आयो । नारद गौतम बालमीकिमुनि हरिदर्शनहित
धायो ७१३ भारद्वाज मरीच अगिरा अश्वमेधी अर्जुन । पुलह पुलस्त्य अ-
गस्त्य कश्यप पुनि अरु सनकादिक संत ७१४ हरि को दर्शन करि सुख
पायो पूजाबहु बिधिकीन्ही । अति आनंदभये तनमनमें सौंज बहुत विधि
दीन्हीं ७१५ ब्रजबासी सब सरवासंगके यशुमति अरु ब्रजराज । दर्शनपाय
बहुत सुख पायो सुफल भये सबकाज ७१६ यशुमति मात उडंग लगाये
बल मोहन को आय । बाल भाव जिय में सुधि आई अस्तन चले
चुचाय ७१७ गोपिन देखि कान्ह की शोभा बहुतहि मन सुखपायो ।
सघननि कुंज सुरत संगम मिलि मोहन कदलगायो ७१८ रुक्मिणी
कहत कमल लोचन सों राधा हमें देखायो । जाकी नित्य प्रशंसा तुम
करि हम सर्वाहन कुं सुनायो ७१९ तब वृषभानसुता पगधारी रानिन
मंडल सांझ । मनो सरस इन्द्रीवर फूलै ता मधिफूली सांझ ७२० देख
तेज वृषभान सुता को सबै भई छवि हीन । अति आनन्द मोद मन
मान्यो हमहि कृतारथ कीन ७२१ तब हरि कह्यो मोहिं राधा बिन
पल सरा कहु न मोहाय । सुनौ रुक्मिणी कथा घोष की मोपै कहिय
न जाय ७२२ एक दिना बतमें इन मोकों अपनो सुधा पिवायो । ताके
बल गिरि गोवर्धन लै अपने हाथ उठायो ७२३ अरु काली धेनुक दा-

धानल प्रकट पलना आई । इनकी कृपा सकल विघनन को छिन में
 दियो नशई ७२४ भांति भांति करि मोहिं लड़ायो सघन कुंज में जाय ।
 ताकी कथा कहों कह तुमसे मोपै कहिय न जाय ७२५ रास केलि
 करि क्रीडा कीन्हीं होरी खेलखिलायो । मटुकि छुड़ाय लियोदधि
 बरसत तउ कलु मन नहि आयो ७२६ रतन जटित पर्यंक द्वारका पौडत
 हैं सुखधाम । तोह इनको ध्यान करतही बीतत है सब याम ७२७ इन
 बिन मोहिं कछु नहि भावै नन्दरायकी आन । सुनो रुक्मिणी लोचनमें
 ग बसी रहैं मम प्रान ७२८ जागत सोवत अरु बन डोलत भोजन करत
 बिहार । ध्यान करत नखशिख इनहीं को बसि द्वारका मँभार ७२९
 तब मिलि रंग बहुत भांतिन सों कीन्हें विपुल बिहार । ब्रजजन चले
 सकल गोकुल को दीन्हें दान अपार ७३० चले द्वारका यदुकुल सब
 मिलि भयो कुलाहल भार । पहुंचे आय द्वारका सन्मुख घर घर मंगल
 चार ७३१ कियो बिचार यज्ञ को राजा राजसूय जिय जानि । कृ-
 ष्णाचन्द्र को बेगि बुलाओ संग सकल पटरानि ७३२ आये इन्द्रप्रस्थ
 सब यदुकुल महा महोत्सव मान । जुरे भूप बहु सकल देश के हरि
 दर्शन जिय जान ७३३ चारों भात चारिदिशि जीतो भारतक ही बखान ।
 तौरतौर के नृप सब आये लै उपहार प्रभान ७३४ बड़ो यज्ञ राजसूय
 रचायो जुरे बिप्र बहु भारी । महा भारय राजा जु युधिष्ठिर जहें सा-
 धव अधिकारी ७३५ सबहिन कह्यो प्रथम पूजा अब कहो कौनकी
 कीजै । सबमें बड़ो कौन भूपति है जाहि अर्चना दीजै ७३६ तब सहदेव
 कह्यो सबहिन सों सुनो नृपति मनलाय । पूजा योग प्रकट पुरुषोत्तम
 कृष्णाचंद्र यदुराय ७३७ सबहिन कह्यो साधु यह बाणी सुरमुनि स-
 नुज सराई । एक शिशुपाल दुष्ट नृप कहिये सुनतहि उठ्यो रिसाई
 ७३८ गोकुल नंद अहीर गोप गृह पय पियके यह जीयो । दधि जु
 चुराय खाय वृन्दावन चरित बियस बहुकीयो ७३९ सातुज मारि
 बहुत अघ कीन्हें कहालों करों बड़ाई । वृन्दावन गोबर्धन कुंजन लूटी
 नारि पराई ७४० बनबन गाय चरावत डोलत कांध कर्मरिया राजै
 लकरी हाथ गरे गुंजमाला अवर मुरलिका बाजै ७४१ ऐसे ख्याल
 करे इन बहुबिधि कहत जु आवे लाज । वेद विदित सुर काज विगारे

नहँ कायं अजरारत्न ७४२ प्रज्जकारत विप्रनगशुभाभं यांचेभील नदीन्हीं ।
 अरपणाकियो नहीं देवनको पहिले इनमति कीन्हीं ७४३ साखनचोर
 चोरगोपिनको दूध जु दाँध लैखायो । यमुना न्हात गोप कन्यनकोले
 पट कदम चढायो ७४४ काली हरिकी आज्ञा को लै यमुना सांभ
 बसायो । ताहि निकालदियो क्षणाहीमें नेक सकोच न आयो ७४५
 यक पूतना पथ पान करावन प्रेम सहित चलि आई । ताहि लगाय
 हृदय लपटानो प्राणा जो लियो चुराई ७४६ जन्महोत इन सात तात
 को तनहीं बन्धन दीन्हीं । यादव जात भाज जित तितको अनतजाय
 मुख कीन्हीं ७४७ बेरा बजाय रास इन कीन्हीं सधुप गोप की ना-
 री । परनारी को दोय कछु चित इन नहिँ कीन्ह बिचारी ७४८ दूध
 दहीके भाजनचाटे नेकहु लाज न आई । साखनचोरि फोरिमथनीको
 पीवत छाँछ पराई ७४९ छाक खाथ जुठन खालिन को कछु मनमें
 नहिँ सान्यों । परदाराके संगजाय निशि कुब्जासों सुखमान्यों ७५०
 बहुत प्रीति करि गोपन जाने बहुविधि लाड लढायो । ताको यतन कछु
 नहिँ सान्यों मथुरा में चलिआयो ७५१ जरासन्ध इन बहुत बारही
 करि संग्राम पलायो । हमरेडरकर दोऊभाई नगरसमुद्र बसायो ७५२
 कालशवन के आभे भाज्यो जाय गुफा गहि लीन्हीं । लातमारि सु-
 चक्रंद जगायो नेकु दया नहिँ कीन्हीं ७५३ बातें बहुत याहिकी लंपट
 सभा सांभ नहिँ कहिये । जियमें समुझ आपने सन्मुख मुखते चुप
 करि रहिये ७५४ अतिशय क्रोध भये पांडव सुत और नृपति हरि-
 दास । राखे बरज सवन की साधव नेक न भये उदास ७५५ अतिही
 भई अवज्ञा जानी चक्र सुदर्शन सान्यों । करि निज भाव एक कुश
 तनमें क्षणाक दुष्ट शिर भान्यों ७५६ परम कृपाल दयाल देवकी न-
 न्दन पावन नाम । दीन्हीं मुक्त दयाकरिकै तब दियो लोक निज धा-
 म ७५७ जैजैकार भयो बसुधा पर राज युधिष्ठिर हरये । अमृतस्नान
 कराय वेद विधि कनक कुसुम शिर बरथ ७५८ दीन्हीं सभा बनाय
 पांडुकी मय सायागत अंत । ताको देख भ्रमे दुर्योधन सहा मोह मति
 संत ७५९ जलमें थलमति थलमें जलमति भई नृपतिको जान । अन्ध
 पुत्र लखि हँसे पवनसुत सुन जियमें रिसमान ७६० गयो भवन अक-

लाय बहुत जिय कोधवत अभिमानो । ताही दिनते पांडु पुत्रां बैर
 बियस गति ठानी ७६१ सभा रची चौपर क्रीडाकरि कपट कियो
 अति भारी । जीत युधिष्ठिर भइ सबजानी तउ मनमें अविकारी ७६२
 युवती श्री जान दुष्टन ने जब द्रौपदी बुलाई । हरिको सुमिरन करत
 पथमें दुष्टशासन गहिलाई ७६३ अहोनाथ व्रजनाथ नाथनिज यदुकुल
 के निज नाथ । शोकुलनाथ नाथ सबजनके सोपति तुम्हरे हाथ ७६४
 ज्यों राजराजपञ्चायो जलमें नेक बिलंब न कीन्हों । अपनो भक्त बचावन
 कारणा विष अमृत करि दीन्हों ७६५ शबरी गीध और पशु पक्षी
 सबकी रक्षा कीरी । अबतो सहाय करो तुम मेरीहै पाँवर सति ही-
 नी ७६६ चौपर खेलत भवन आपने हरि द्वारका संभार । पाँसेडार
 परस आतुर सों कीन्हें अनत उचार ७६७ चीर बढाय दियो बहुतेहि
 सारा सेंचत पार न पायो । भीष्म द्रोणा अस करण युधिष्ठिर सब बि-
 स्मय मनलायो ७६८ रहेउदुष्ट पचिहार दुष्टासन कछु न कलाचलाई ।
 बैठो आय सभा में पाछे बार बार पछिलाई ७६९ फिर द्रौपदी भवन
 में आई श्रीहरि लज्जा राखी । वेद पुराण तन्त्र भारत में कही बहुत
 बिधि भाखी ७७० पुनिबलजास दियो पांडवसुत हरिद्वारका में जानी ।
 असयं पाव दिवायो रणिये बड़े भक्त सुखदानी ७७१ दुरबाणा शापन
 को आये तिनकी कछु न चलाई । असय कियो कमल दल लोचन
 भक्तन भये सहाई ७७२ पांडव कुलके सहाय भये हरि जहँ तहँ संगहि
 डोले । दुर्योधन सों कहेउ दूत ह्वै भक्त पक्ष दृढ़ बोले ७७३ पाँवगाँव
 पागडवको दीजै सुनो नृपति समयात । और राज सब तुमहीं करिये
 निपट जगत बिखयात ७७४ प्राची और प्रतीचि उदीची और अवाची
 मान । इन्द्रप्रस्थ बीचमें दीजै और राज तुव जान ७७५ सुनिकै क्रोध
 भयो दुर्योधन सब पागडवको राज । तुमरो कुल सब नाशहोयगो क-
 हि जो चले ब्रजराज ७७६ बहुत दुःख दीन्हों पांडव को अबलों में
 सहि लीन्हों । लाय भवन बैठार दुष्ट ने भोजन में विष दीन्हों ७७७
 बने के फिरे अर्क तूलन ज्यों बार्स विराटहि कीन्हों । अन्तहि गुप्त
 रहे तापूर में भवे काहुं नहि दीन्हों ७७८ जुरे नृपति असोन अठारह
 भयो युद्ध अतिभारी । रथ हाँकत गोविन्द अर्जुनको दीन्ह शस्त्र सब

हारी ७७६ करी प्रतिज्ञा कहेउ भीष्ममुख पुनि पुनि देवमनाऊं । जो
तुम्हरेकर शरन गहाऊं गंगासुत नकहाऊं ७८० चहेप्रबलदजरोउओर
के बिच अर्जुन रथ ठाढो । इत पारथ गमेयबली उत जुरो युद्ध अति
गाढो ७८१ दशदिन लरे बली गंगासुत श्याम प्रतिज्ञा जानी । सत्य
बचन हरि कियो भक्तको निगम भूँठकर बानी ७८२ धरि रथचक्र
श्यामनिज करमें जबाहिँ भीष्म परडारो । शीतल भई चक्रकी ज्वाला
जब शिर तिलक निहारो ७८३ धन्य धन्य कहि परे आय पग गुणा
निधान गंगेव । तब हरि कहेउ लिपुल बल तुम्हरो जीति लिये सब
देव ७८४ तब उनकहेउ चरगा आपनमें राख्यो निशिदिन ध्यान । सोरि
प्रतिज्ञा तुम राखी है मेदि वेदकी कान ७८५ डार शस्त्र शर शय्या
सोये हरि चरगान चितलायो । उत्तर दिशि रवि जानदेह तजि वहाँ
परम पद पायो ७८६ नृपति युधिष्ठिर राजतिलकदे मारि दुष्टकी भीर ।
द्रोणा करगा अरु शल्य सुक्तकारि मेटी जगकी पीर ७८७ गोविन्दआय
हारका निज गृह अति आनन्द बढायो । घर घर संगल महा कुला-
हल यदुकुल होत बढायो ७८८ शल्य नृपति तप किय पंचानन तापे
यह बरपायो । दियो बनाय नगरगोपुरमें काहुन जातलिवायो ७८९
आय द्वारका शोर कियो उन हरि हस्तिनापुर जाने । प्रद्युम्न लरेसप्त
दश दोदिन रंचहार नहिँ माने ७९० हरि अप सगुन जानि हस्तिन
पुर बैठ तुरत रथ धाये । बहुत देशको पावन करिकरि सभिकारका
आये ७९१ कीन्हों युद्ध आय शालव सेां उन बहु साया कीन्हों ।
जलमें थलमें जल देख्यो श्याम दूर करदीन्हों ७९२ साया दूर करी
नैदनन्दन चक्र दियो शिर डार । सगाहीं सांभ दुष्ट संहारो भुवको
भार उतार ७९३ जय जयकार करत देवांगन बरयत कुसुम अपार ।
कियो प्रवेश द्वारका मोहन घर घर संगलचार ७९४ राजसूय कर
वाय श्यामघन जरासंध मरवायो । बन्तबक्र सहिपाल महाबल वि-
दुरथ प्राणा नशायो ७९५ बालक नृपक देवकी सांगे सो दिनमें हरि
लाये । दीन्हों दश भक्त नृपबलिको तनके ताय नशाये ७९६ बालक
आय देवकी जाने अस्तन पान कराये । हरि को शेषपान करिके वे
हरिके पद पहुंचाये ७९७ सकदिना यदुनाथ संग सब विप्र मगडली

न्हाय शुद्ध तनको करि हेरि द्विज बचन बिचारेउ ८३५ वरय दिवस
 में अरसठ तीरथ न्हाय करत घर आये । आय प्रभास विप्र बहुजनको
 बहुतहि दानदेनाये ८३६ पुन मिथला एक दिवस पधारे हरि बलदेव
 गोसाई । गदा युद्ध दुर्योधन सिखयो नाचाभेद बताई ८३७ निहारका
 पधारे निजपुर अतिआनंद सुखबाढ्यो । प्रकट ब्रह्म नित बसत द्वारका
 कलह भूमिको काढ्यो ८३८ दश दश पुत्र एक एक कन्या हरिसबके
 उपजाई । सुतके सुतनाती पतिनी की सहिमा कहिय न जाई ८३९
 बड़े बली प्रद्युम्न कहावत कृष्ण अंश अवतार । तिन सब जगजीत्यो
 तिहुं लोकनबाढ्यो सुयश अपार ८४० अश्वमेध करवाय युधिष्ठिर कुल
 को दोषमिटायो । करि दिगबिजय बिजय को जगमें भक्त पक्ष कर-
 वायो ८४१ नानाबिधि कीन्हों हरि व्रीडा यदुकुल शाप द्वायो ।
 जोइयहि लोक छोड़िके आयो ताको तहँ पहुँचायो ८४२ ऊधो को
 कहि ज्ञान आपनो निगमन तत्व बतायो । कही कथा दत्तात्रिय मु-
 निकी सुत चौबीस करायो ८४३ कहि आचार भक्त बिधभायी हंस
 धर्म प्रकटायो । कही बिभूत मिद्धमावनता आग्रम चार कहायो ८४४
 सांख्य तत्व गीता हरि कीन्हों गुनके भेद करायो । ऐलगीत पुनिभिक्षु
 गीत कहि पूजा बिधि दरशायो ८४५ सदाबसत हरिपूरी द्वारका बहु
 बिधि भोग बिलासी । आदि अनन्त अवड्ड अनूपमहे शशिगति अनि-
 सी ८४६ एकदिना एकविप्र द्वारका बसत सुखद निजधाम । वेदरूप
 तप रूप महामुनि कृष्ण विप्र यहनाम ८४७ बालक दश जु भये वाके
 जब भूमा लिये मँगाय । चित्तमें यह अनुरक्त बिचारत हरि दर्शनको
 चाय ८४८ दश सुत भयो जानके ब्राह्मण करि पुकार हरिपाम । तब
 हरिकहेउ देवकी रातियह करतकाल जग नाम ८४९ तब अर्जुन यह
 कहेउ मत्त है नृप नाहिन भुवभार । मैं अर्जुन ग्रांडिवधनु जाको काल
 सो लरों क्षणामार ८५० जब सुत भयो कहेब ब्राह्मण ने अर्जुन राये
 गुहताह । शरपंजर रोप्यो चहुँ दिशि ते जहाँ पवन जहिँ जाह ८५१
 तब सुत रायो देहको लेके दरशन भयो न साथ । अतिही क्रोध भयो
 ब्राह्मणको बहुत बक्यो बिलखाय ८५२ तब अर्जुन डूढ़न को निकसे
 तीनलोक फिर आयो । कहन पायो सुत ब्राह्मणके तब मनमें अकु-

लायो ८५३ कियो विचार प्रवेश अग्नि की हरि आये समुझायो ।
 लै निज संगचले पवित्रमकोलोका लोका सोहायो ८५४ कनकभूमि
 अरु धाम देखी देखे परम सुहायो । बहुत निबिडतम देख चक्रवर्ति
 धरेउ हाथ सभाये ८५५ महाकालपर तुरत पधारे हरिभूमाके पास ।
 तुल्य अग्नि बर अग्नि समानी भूमा तेज प्रकास ८५६ कशातेजको
 देख सकल सुर तनमन भयो हुलास । अतिहीमंद तेज भूमाको हरिके
 तेज प्रकास ८५७ अतिआनंद परसपर बाढ्यो जब उन बिनतोकोन्हीं ।
 भलीभई भुवभार उतारेउ मेरीफिर सुधिलीन्हीं ८५८ लैदशपुत्रहार-
 काआये दीन्हें बिप्रबुलाय । कीन्हें दुःखदूरि अर्जुनको महिमा प्रकट
 सिखाय ८५९ कीन्हें केलि बहुत बलमोहन भुवको भार उतारेउ ।
 प्रकट ब्रह्मराजत डारावति वेद पुराणा बिचारेउ ८६० एक दिना रु-
 कुमिरिा सों साधव करत बात सुखराई । सुनु रुकुमिरिा राधिकाबिन
 मोहिं पल सरा कल्प त्रिहार्डे ८६१ कनकभूमि रचि खचित द्वारका
 कुंजनकी छविनाहीं । गोवर्द्धन पर्वतके ऊपर बोलतमोर सुहाहीं ८६२
 यशुनातीर भीर खग अगकी मोहिं नितप्रति सुवि आवैं । वृन्दा वि-
 ष्णि राधिका मंदिर नितप्रति लाडलडावैं ८६३ रतिदिवस रमश्रवत
 सुधामें कानधेनु दरगाई । लूट लूट दखिखात सखनसँग तैसो स्वाद न
 पाई ८६४ यदरस भोजन नानाबिधिके करत महलके माहीं । छाकें
 खात ब्रालमडलमें बैसोतो सुखनाहीं ८६५ जन्मभूमि देखनके कार-
 रा मेरोमन ललचावे । धौरीधेनु बुलावन काररा मधुरेबेनु बजावे ८६६
 रामबिलास बिबिधमें कीन्हें संग राधिका लीन्हें । कीन्हेंकेलि बि-
 विध गोपिनसों सबहिनको सुखदीन्हें ८६७ बलमोहन फिर ब्रजहि
 पधारे ऊधोको सँग लीने । दीन्होबास चरगारज गोपिन गुल्म लता
 रसभीने ८६८ सदा बिलास करत गोकुलमें धन धन यशुमति मात ।
 ज्यों दीपकते दीपक कीन्हें भयै डारकानाथ ८६९ नितप्रति संगल
 रहत सहरके नितप्रति बजत बधाई । नितप्रति संगल कलश धरावत
 नितप्रति वेद पढाई ८७० श्रीवृषभानु रायके आंगन नित प्रति बजत
 बधाई । नित प्रति मिलि सुनि राजमण्डली संगल घोष कराई ८७१
 बाल मिलि क्रीडत ब्रज आंगन यशमति की सुखदीन्हें । तरुणा रूप

मानो ६०६ बीरीखाय चले खेलनको बीचमि तीव्रजनार । लेचलिपकर
 बांह राधा पे सयन कुंज के द्वार ६१० राधा सों मिलि अति सुख
 उपज्यो उन पूछी यक बात । कहे जु आज रैन कहं सोये हम देखे
 तुम जात ६११ तब हरि कहेउ सुनो मृगनैनी राय गई यक दौर । ताको
 लेन गयो गोवर्द्धन साथ रहेउ तेहि ठौर ६१२ कंद मूल फल दीने
 गोधन सो निशि को मैं खायो । भोर भये उठि तेरे आयों चरण
 कमल परसायो ६१३ निज प्रतिबिंब बिलोकि राधिका हरि नख
 मंडलमाह । द्वितियरूप देखे अबलाको मान बह्यो तन छांह ६१४
 चली रिसाय कुंज मृगनयनी जहँ अति करत गुंजार । बैठीजाय सकांत
 भवन में जहाँ मान गृह चार ६१५ नन्द कुंवर बिरहन राधा के बिरह
 भये भरि पर । बैठे जाय सकांत कुंज में सखा कियो सब दूर ६१६
 ललिता बोल कही मृदुवानी कृष्ण विमल दल नैन । बिन राधा मोहिं
 कल न परत है कहत मधुर मृदु बैन ६१७ बेगजाय परि पांय राधिका
 यिनती करो सुनाय । दरशन देउ सकल दुःख मेरो तुम बिन रहेउ न
 जाय ६१८ तुम बिन खान पान नहिं भावत गोचरन शृंगार । रैन
 नींद नहिं परत निरंतर संभायन व्यवहार ६१९ करि दंडवत चली ल-
 लिता जो गई राधिका रोह । पांयन पर पर बहुत विनय कर सुफल
 करन को नेह ६२० बेगि चली लृपभानु जन्मनी बोलत नन्द कुमार ।
 तुम बिन पल छिन कल न परत है भोजन सुख व्यवहार ६२१ नयनि
 कुंज में मिलो प्रियाम सों भेंटो भरि अंकवार । कुसुम सेज पर करो केलि
 प्रिय गिरधर परम उदार ६२२ तो जिन प्रियहि कछु नहिं भावे तीसों
 प्रिय आधीन । तो बिन प्रियाम रहत हैं ऐसे जैसे जल बिन मीन ६२३
 कहा सुभाव पखौ सखि तेरो यह बिनवत हैं तोह । मान करत गिर-
 वर धर प्रथमों मानत नाहिन सोह ६२४ करि शृंगार सकल ब्रज
 सुन्दरि नीलांबर तन साज । रैन अघेरी कछु न दीखत नूपुर धुनि जिन
 वाज ६२५ कुबलय दल कुंसुमन सज्जा रचि पंथ निहारत तोर । सुपन
 जाग अरु सैन सुमृत तुव वचन सत्य है मोर ६२६ सित अरु पीत जू-
 थिका बेनी गुंथो विविधबनाय । रचो भाल निज तिलक मनोहर अंजन
 नयन सोहाय ६२७ तू छवि सिंधु बिहर ब्रजनायक सुद्र नदी नहिं

भावे । जवले नाम सुन्यो अवसान तुव रैन नहिं आवै ६२४ हनि
 राधा राधा रत जपत रांघ सुरदास । विरह विराग महायोगी ज्ये
 वीतत हैं सब आस ६२६ कप्रहुँ क किशलै सेज सँवारत तेरेही हित
 लाल । कबहुँ क अपने हाथ सँवारत गुंथत कुसुमन माल ६३० तुव बिन
 बर संकेत सदन बन देखत लगत उदास । विरह अगिन चहुँदिशि मे
 धावत फूले दिखत पलास ६३१ सारस हंस मोर पारावत बोलत अमृत
 बान । बैठ रहे दुर सदन सघन बन धुनि नहिं सुनियत कान ६३२ का-
 लिन्दी तट विमल कदमतर करत बदन तुव ध्यान । सुहृदय सखा त्यागि
 मनमोहन करत मधुर तुव गान ६३३ गुंजत अवसान मधुप सुनत हैं तुव
 श्रुति की सुधि आवै । कंचन बरन जात तेरो बपु पीताम्बर पहिरा-
 वै ६३४ सुनत कोकिला शब्द मधुरधुनि कमल नयन अकुलात । तेरे
 बोल करत सुधि जिय में विरह मान हवै जात ६३५ तुव नासापटगात
 मुक्तफल अधर बिंदु उनमान । गुंजाफल सबके शिर धारत प्रकटी मोन
 प्रमान ६३६ सिंधु सुतासुत तासु रिपु गमनी सुन मेरी तू वात । काम पिता
 बाहन भवको तन क्यों न धरत निजगात ६३७ प्रति बाहन पति बाहन
 रिपुकी तपत ब्रह्मी तन भारी । शैल सुतासुत तासुत अंगना सोतेत बै बिसा-
 री ६३८ भृङ्ग यूथ चतुरानन तनया ब्रह्मनाद सुरसंग । जलसुत बाहन सो जन
 धारत बियम लगत बिय अंग ६३९ चतुरानन सुत तासुत वा सुत उदित
 होन अव आयो । मन्मथ मात तात सुत अथयो सोतो वृथा गँवायो
 ६४० पंकज उर पंकज जिन करे तेरो अटल सुहाग । सुरपति बाहन
 तासुत शिर पर सांग भरी अनुराग ६४१ कमल पुत्र ता सुत कर राजत
 सो हरि निज कर लीन्हें । सप्त सुरन उपजाय बजावत रहन राधिका
 लीन्हें ६४२ सुत प्रह्लाद तासु सुत ता पित आता वृथा गँवायो । संज्ञा
 सुत वपु सहृदय बसन तन सो तन लागत छायो ६४३ सारंग ऊपर सारंग
 राजित सारंग शब्द सुनावै । सारंग देख सुने मृगनैनी सारंग मुख दर-
 शावै ६४४ सारंग रिपु की बदन ओटै कह बैठी है मौन । ब्रह्म सुता
 सारंग के धोखे करत सकल ब्रज गौन ६४५ सारंग सुता देख सारंग
 को तेरो अटल सुहाग । सारंग पति तापति ता बाहन कीरत रत अनु-
 राग ६४६ दधि सुत बाहन सुभग नासिका दधि सुत बाहन देखयो

दिधि सुत बाहन बचन सुनत तुव अंग अंग अवरेख्यो ६४७ शशि को
 भ्रात कहत ता बाहन कुन्द कुसुम ललचात । खंजन सदृश देख तुव
 अखियां तन मन में अकुलात ६४८ मारुत सुरपति रिपु ता पतनी
 ता सुत बाहन बात । अबगा सुनत अकुलात सांवरो कलुक कही नहिं
 जात ६४९ चतुरानन सुत ता सुत पतनी ता सुतको जो दास । ता सुत
 बाहन पुत्र अंग धरि जलसुत करों प्रकास ६५० श्रीबलदेव रास जो
 कहिये तामें भानु मिलाय । ताकी सुता कहत चतुरानन निगम सदा
 गुणागाय ६५१ सिंधुसुता तव भाग्य बिलोकत मनमें रही लजाय ।
 काम पिता साता शुरुता बपु युवति कोट दरशाय ६५२ सातो रास
 मेल द्वादशमें सेसे बीततयास । द्वितीय रासमें मिलत सप्तमी सोजानत
 निजधाम ६५३ शैल सुतावरि तारिपु बांधत अंग अंग पिय आज ।
 कोटि यतनकर सींचत तोक मित्त नहीं बजरज ६५४ बायसअजा
 शब्द मनमोहन रहत रहत दिनरैन । तारापति के रिपुपर ठाढ़े देखत
 ! हरिनैन ६५५ गंगासुत रिपु रिपु शिष्य मेरी सुनत नहीं सखिकाह ।
 नारायणसुत ता सुत ता सुत लगत बियस बिय ताह ६५६ जल
 बाहन देख बदन तुव ब्रह्मसुता अकुलानी । मंगल मात तासु पति बा-
 हन राजत सदृश भुलानी ६५७ दक्ष प्रजापतिकी तनया पति तासुत
 नारगई । सिंधुसुता सुत बाहनकी गति देखत बियस भई ६५८ अगि-
 न तात तेहि तात अंगना त्यों उनमें तू राखी । बंधु कुसुम द्रुम तारिपुको
 पति सारंग रिपुकर भाखी ६५९ पति पाताल लगन तन धारन सो
 सुख भुजा बिचारी । प्रथम मथत जलनिधि जो प्रकट्यो सो लागत
 सब नारी ६६० बंधु कुसुद पति पिता सुता जो तुव यश सधुरगावै ।
 ब्रह्मसुता सुत पदरज परसत सारंग सुता देखावै ६६१ इन्द्र सुतापति
 भुजा लगन लखि जल सुत हृदय लगावै । इन्द्र सुता तनया पति को
 सुत ताके शुनै न पावै ६६२ धरत कमलमें कमल कमल कर मधुर व-
 चन उच्चार । कमलाबाहन गइत कमलसों कमलन करत विचार ६६३
 काबिन्दी पति नैन तासु सुत लागत हैं सब लोग । इन्द्र मात तेहि
 तात सो सरधत प्रकट देखियत भोग ६६४ अंबुज मात तात पतिता-
 रिपु ता पति काम बिगारे । ताते सुनत भाननन्दनी मेरी बचन कि

चारे ६६५ तीस भान हैमास सकल ऋतु सिंधु सुता सन जान । भूपन
 अंग लसत गुंजावलि और न कछु समान ६६६ इति दुष्टकूट सूचनिका
 संपूर्णा ॥ कबहुँक सेज रचत बेदीकर हृदय होम घृत नैन । विप्रभोज
 बालन तुव देखियत अंग कूस नहिं चैन ६६७ अब तू वेग विचारबचन
 मन सुन वृथभान कुमारि । मिलही बेग कमल दल लोचन सुन मेरी
 मनुहारि ६६८ गौर वरणा हैजात सांवरो ध्यानकरत तुव अंग । पुन
 ललिता हरिके ढिग आई बैठे सांवतरंग ६६९ वेगचलो तुम प्रयास
 मनोहर आपुकाज सहकाज । लेहु मनाय प्राणायारीको प्रकट्यो कुं-
 ज समाज ६७० ऋतु बसंत अबआय देखियत फूलेकुसुम सुरंग । मानो
 सदन बसंत मिले दोउ खेलतहैं रसरंग ६७१ बेगचलो अब प्रिया म-
 नावन नेक बिलम्ब न लाओ । मेरीकही बात नहिं मानत ताकोजान
 दुहाओ ६७२ परी पांय अपराध समावत सुनत मिलेगी धाय । सु-
 नत बचन दूतिका वदनतें प्रयासचले अकुलाय ६७३ जहँ बैठी वृथ-
 भानुनंदनी तहँआये धरि मौन । परे पांय हरिचरणा परशकरि छिन
 अपराध मलौन ६७४ सुनि हरिवचन बिलोकत शोभा मानगयो सब
 कूट । मिले धाय अकुलाय प्रयासघन प्रेम काम रस लूट ६७५ रच्यो
 सिंगार श्याम अपने कर नख शिख प्रिया बनायो । शीश फूल बेनी
 नकबेसर तिलकभाल करवायो ६७६ युगताटकं चिबुक दशनात्रलि
 करकंकरा उरमाल । नूपुरपद कटि छुद्रघटिका सब अंगाररसाल ६७७
 सकल सिंगार करत बरगानको कृपा यथामति मोर । होत बिलम्ब
 मिलनके कारणा ताते बरगात थोर ६७८ चले धाय नवकुंज दोउमिलि
 किशलय सेज बिराजे । परिभन सुख रास हासमृदु सुरत केलिसुख
 साजे ६७९ नाना बंध विधि रस कीड़ा खेलत प्रयास अपार । रसरस
 तत्त्व भेद नहिं जानत दंपति अंग संभार ६८० सुरत सरुद्र मगन दंप-
 ति रस भेलतु अति सुखभेल । निरवधि रसन अपरमित अच्युत म-
 नुज माय बहु खेल ६८१ नूपुर संचित किंकिनिकी धुनि सुनत मधुर
 किलकार । सदन सिंधु मधुसूत मधुपगन फूलेकरत गुंजार ६८२ म-
 धुप यूथमिलि सबन चन्द्रमा तडित लिये आकास । खंजन मौन ब-
 जावत गावत निरतत सुख मुबिलास ६८३ जलद सम्ह खसत उड़गारा

गरापी समुद्रके बीच । मरु कपोल बोल मृदु कोकिल अमृत सुधारस
 सींचे ६४ सोहन बेल सिंगार बिहपसां उरभी आनंदबेल । कंचन बेल
 तमालाहि लपटी रसिकरंग भरिरेल ६५ युगुल कमल गोमिलत कमल
 युग युगुलकमल लेसंग । पांच कमलमध्य युगुलकमल लखिसनभा भई
 अपंग ६६ किररा कदम्ब संजुका पूरणा सौरभ उडत अवेश । अगर
 धूप सौरभ नासा मुख वरयत परम सुदेश ६७ कुंतल कुमुद बंधूक
 मिलत पुनि सील देख ललचात । तापर चन्द्रदेख संज्ञासुत तनमें बहुत
 डेरात ६८ वरना भवकार में अविलोकत केश पास कृत बंद । अधर
 समुद्र सदल जो सहसा धुनिउपजत मुखफन्द ६९ मुदित सरालमिलत
 मधुकर सां खंजन मिलत कुरङ्ग । कीर कीर रनधीर मिलत सम रत
 रस लहर तरङ्ग ६९० सुरत समुद्र कहत दर्शति कै निरबधि रमत अ-
 पार । भयो शेषसन मूढ कहन को राधा कथा विहार ६९१ शोभा
 अमित अपार अखण्डित आप आतसा राम । पूरणा ब्रह्म प्रकट पुरु-
 योत्तम सर्वाविधि पूरणाकाम ६९२ आदि सनातन एक अनूपम अविगति
 अल्प अहार । ओंकार अदि वेद असुरहन निरगुन सगुन अपार ६९३
 चतुरानन पञ्चानन अरु पुन यत आनन ससजान । सहसानन बहु आ-
 नन गावत पार न पाय वखान ६९४ सघन कुञ्ज में अमित कैल लख
 तन सुगन्ध कीरेल । मधुकर निकट आय पीवत रस सुखद सदा रस
 भेल ६९५ नलिन भये रसमान सरोवर मुनि जन मानस हंस । अकित
 बिलोक शारदा बरगान करबे बहुत प्रशंस ६९६ नृन्दावन निज धाम
 परमरुचि बरगान क्रियो बढाय । व्यास पुरान सघन कुञ्जन में जब
 सनकादिक आय ६९७ धीर समीर बहुत त्यहिकालन दो तत मधुकर
 सोर । प्रीतम प्रिया बदन अविलोकत उठि उठि मिलत चकोर ६९८
 अमित एक उपमा अविलोकत जियमें परत विचार । नहिं प्रवेशअज
 शिवराशोश पुनि कितक बात संसार ६९९ सहस्ररूप बहु रूप रूप पुनि
 एकरूप पुनिदोय । कुमुदकली विगणित अम्बुज मिलि मधुकर भागी
 सोय १००० नलिन पराग मेघ साधुरि सो मुकुलित अम्ब कदम्ब ।
 मुनिमन मधुप सदा रस लोभित सेवत अज शिव अम्ब १००१ गुरु-
 प्रसाद होत यह दर्शन सरसठ वरय प्रवीन । शिवविधान तप करेउ

बहुत दिन तऊ पार नहिँ लीन १००२ मुख पदर्थक अंक ध्रुव देखियत
 कुसुम कन्द प्रस छाये । सधुर मलिका कुलमित कुञ्जन दम्पति लगत
 मोहाये १००३ गोबर्धन गिरि रतन सिंहासन दम्पति रस सुखमान ।
 निविड कुञ्ज जहँ कोउन आवत रस विलसत सुखखान १००४ निशा
 भोर कबहुँ नहिँ जानत प्रेम मत्त अनुराग । ललितादिक सींचत सुख
 बैनन जुर सहचरि बडभाग १००५ यह निकुञ्जको बरसान करिदे वेद
 रहे पचिहार । नेतिनेतिकर कहेउ सहसबिधि तऊनपायोपार १००६
 दरशन दियो कृपाकरि मोहन बेगदियो बरदान । आगम कल्पपरमरा
 तुव ह्वैहै श्रीमुख कहोबखान १००७ सोअतिरूप होयत्रजमगडल कीनो
 रास बिहार । नवल कुञ्जमें अंग बाहुधरि कीन्हौं केलिअपार १००८
 पुनि अयि रूप राम बर पायो हरि से प्रीतम पाय । चरसा प्रनाद
 राधिका देवी उन हरिकंठ लगाय १००९ टुन्दाबन गोबर्धन कुञ्जन
 यमुना पुलिन सुदेश । नित प्रति करत बिहार सधुररस प्रयास प्रयास
 सुवेश १०१० निरखि निरखि मुख दम्पति को यह कवि कुल सब
 पचिहारे । भूषन खसै सुरत बग दोऊ केश न आपु संचारे १०११ ल-
 लिता ललित बजाय रिभावत सधुर कीर कर लीने । जान प्रभात
 रागपञ्चम घट मालकौस रसभीने १०१२ सुर हिँडोल देधमालब पुनि
 सारंग सुर नटजान । सुरसांवत भूपाली ईसन करतकान्हरोमान १०१३
 ऊँठ अडाने केसुर सुनियत निपट नायकीलीन । करत बेहार सधुर
 केदारो सकल सुरन सुखदीन १०१४ सोरठ गौड़मलार मोहावन भैरव
 ललित बजायो । सधुर बिभास सुनत बेलावल दम्पति अति सुख पा-
 यो १०१५ देव गिरी देशक देव पुनि गौरी श्री सुखरास । जैतशी अरु
 पूर्वी रोड़ी आसावरि सुखरास १०१६ रामकली सुनकली केतकी सुर
 सुघराई गाये । जै जैवन्ती जगत मोहनो सुरसों बीन बजाये १०१७ सुआ
 सरस मिलत प्रीतम सुख सिन्धुबीर रस मान्यो । जान प्रभात प्रभाती
 गायो भोर भयो दोउ जान्यो १०१८ जागे प्रात निपट अलसाने भूषन
 सबउलटाने । करतसिंगार परसपरदोऊ अतिआलस शिथलाने १०१९
 जालरंध्र ह्वै सहचरि देखत जन्म सुफल करि लेखे । जान प्रभात उछं-
 गन दम्पति लेत प्राणा रस-पेखे १०२० औट्यो दूध कपर मिलायो लै

ललिता तहँ आई । पहिले प्रयाग को अँचवायो पाछे पिवत कन्हा-
ई १०२१ करि शृङ्गार सघन कुञ्जत में निशिदिन करत बिहार । नीरा-
जन बहुबिधि वारत हैं ललितादिक ब्रजनार १०२२ कबहुँक केलि
करत यमुना जल सुन्दर शरद तड़ाग । कबहुँक सधुर साधुरी भूलत
आनँद अति अनुराग १०२३ प्रथम बसन्त पञ्चमी शुभदिन संगलचार
बधाये । पञ्चानन जाह्यो मन्मथ सो प्रकट भयो फिरि आये १०२४
यशुमति मात बधाई बाँसत फूली अँत न समाई । उबटि न्हवाय प्रयाग-
सुन्दरको आभूषण पहिराई १०२५ घरघरते आई ब्रजसुन्दरिसंगलसाज
सँवारे । हेम कलश शिर पर धरि पराण काम मन्त्र उपचारे १०२६
अबिर गुलाल अरगजा सोधी लीन्हो सौज बनाय । मनमें किये मनो-
रथ बहुबिधि मिलवत सब मनभाय १०२७ भीर जानि सिंहपौर वियत
की यशुमति भवन दुराई । ढूँढ सकल विय दौर मात को पकर बाँह
ले आई १०२८ केसर चन्दन और अरगजा शीश महर के नाये ।
जोजो बिध उपजी जाके जिय सोइ सोइ भाँति कराये १०२९ फगुआ
दियो महर मनभायो यशुमति परमउदार । पकरलिये घनप्रयाग मनो-
हर भेंटे भरि अँकवार १०३० पहिली जान बसंत पंचमी यशुमति बहुत
खिलाये । केसर चोवा और अरगजा प्रयाग अङ्ग लपटाये २०३१ ता
पाछे गोपिन ने छिरके कनक कलश भरिडारे । मानो शीश तमाल
अमृत घन सरस सुधानि धरारे १०३२ चन्दन चोवा मयत हाथ कर
नील जलद तन अरग्यो । मानो प्रकट करी अपने चित पियको प्राण
समरग्यो १०३३ किये सबोरथ नानाबिधि के मेवा बहुबिधि लाई ।
सो हरिने स्वीकार कियो सब निरखि परम सुख पाई १०३४ सुबत
सुबाहु तोक ओदामा सकल सखा जुरिआये । रतन चौकमें खेल म-
चायो सरस बसन्त बधाये १०३५ करत परस्पर गोपगाल मिलिकीड़ा
अति मनभाई । सुरँग अबीर गुलाल उडावत रह्योगान सबछाई १०३६
फगुआ देन कह्यो मन भायो सबै गोपिका फूलों । कंठ लगाय चलीं
प्रीतम को अपने गृह अनुकूलों १०३७ करत आरती बिबिध भाँतिसों
यशुमति परम मुहाई । सखाचन्द सब चले यमुन तट खेलत कुँवर क-
न्हाई १०३८ बैठे जाय सघन कुँजनमें यमुना तीर गोपाल । सखी एक

मैं आब निकटही बोली वचन रसाल १०३६ वृन्दावन फूलयो नंदनंदन
 गयन भिज पहनांत । हरि प्रतीत मुकुलित डुग पल्लव मुखरित मधुकर
 धात १०४० ठौर ठौर झिल्ली धुनि सुनियत गधुर मेघ गुंजार । मनो
 रम्यय मिलि कृष्णनाकर फूले करत विहार १०४१ अपनी सब गुणा
 लुहरे देखावन स्तर वसन्त मिलि आयो । मधुर माधुरी मुकुलित पल्लव
 लागत परम सुहायो १०४२ गोवर्धन के शिखर सुभगपर फूले कुसुम
 पलास । सहज सुरत सुखदेत सँयोगिन बिरहिन करत उदास १०४३
 पुहुष पराग परम मधुकर गन मत्त करत गुंजार । मनो कामि जन देख
 सुवर्ति जन बियया शक्ति अपार १०४४ बीथिन बिपिन विलोकि बि-
 बिध सन मगिइन कुसुमित कुंज । मनहुं हेम मंडपिका मुखरिति कल्प
 लता रस पुञ्ज १०४५ बेगचली वृन्दावन नायक राधा मारग जोवत ।
 हिलमिल खिलो मन्मथक्रीडा क्यों बसंतदिन खोवत १०४६ सुनत बचन
 ललितता के मोहन तुरत चले उठिवाय । कियो बसंत खेल वृन्दावन अद्भुत
 फागु सदाय १०४७ लता लता बन बन फुञ्जन में खेलत फिरत बसंत ।
 मनहुं कागल मगडल में मधुकर बिहरत हैं रसमन्त १०४८ उत प्रयासा
 इत सग्या मगडली उत हरि इत ब्रजनार । मनो तामरस पारस खेलत
 गिल मधुकर गुञ्जार १०४९ खेल बसंत बहुत मुख मान्यों हर्षे गोपी
 खाल । बिहँसि गये ब्रजराज भवन सब चञ्चल नैन विशाल १०५०
 होरी डांडो दिवस जानके अति फूले ब्रजराज । बैठे सिंहद्वारपै आपुन
 जरिके गोप समाज १०५१ बिप्र बुलाय वेदाबधि करिके होरी डांडो
 रोप । आनन्दे सब गोप मगडली मन्मथ कियो प्रकोप १०५२ परिचा
 प्रथम दिवस होरी को मन्दराय गृह आई । सकल सोंज गोपी कर
 लेके खेलन को मनभाई १०५३ दुइज दुई दिशि ते होरी सचि सुरङ्ग
 गुलाल उडायो । मनो अनुराग दुहुँन को अन्तर सत्रहिन प्रकट करा-
 यो १०५४ तोज तरुणा मिलि पकरे मोहन राहिकर अञ्जन दीनों ।
 मत्त मधुष बैल्यो अम्बुज पर मुखरत है सुरभीनों १०५५ चम्पकलता
 चौथदिन जान्यो मृगमद शोर लगायो । मनहुं नील जलधर के ऊपर
 कृष्णागर लपटायो १०५६ पांचै प्रमदा परम प्रीतिसों कोसर छिड़की
 धोर । मनहुं सुवानिधि बर्यत घनपर अमृत धार चहुँओर १०५७ छटि

छरागनीगाय रिभावत अति नागर बलबीर । खेलत फाय संग गो-
 पिनके गोप रुन्दकी भीर १०५८ खार्ते रिजि सुगन्ध सब सुन्दरि ले
 आई उपहार । बल मोहन को हँसत खेलावत रीझ भरत अंकवा-
 र १०५९ आठे अति आतुर अबला प्रिय चुम्बन दीन्हों गाल । नाना
 बिधि अङ्गार बनाये बेबा दीन्हों भाल १०६० नवमी नौसत साजि रा-
 धिका चन्द्रावलि ब्रजनारि । हो हो करत पलाम कुसुम रँग बर्यत है
 जो अपार १०६१ दशमी दशौ दिशाभङ्ग पूरित मुरँग सबीर गुलाल ।
 मनु प्रीतम मिलिबे के कारणा फूले नयन विशाल १०६२ सकादशी
 एक सखि आई डाखो सुभग अवीर । एक हाथ पीताम्बर पकखो
 छिरकत कुम कुम नीर १०६३ द्वादशिसची दुहँदिशि होरी इत गोपी
 उत ग्वाल । इत नायक बलमोहन दोऊ उत राधा नवलात १०६४
 तेरस तरुणी सब मिलके यहकीन्हों कछुक उपाय । तोक सुबल मधु
 संगल बोल्यो सर्वाहिन मतो सुनाय १०६५ चौदशि चहूँदिशा सो
 मिलिके गठजोरो गहि भीर । मनमोहन प्रिय दूलह राजत दुलहिन
 राधागौर १०६६ देखि कुहं कुसमाकर फूल्यौ मधुप करत गुंजार ।
 चंद्रावलि केसर ले आई छिरके नंदकुमार १०६७ शुक्लपक्ष परिवार
 पुरुषोत्तम क्रीड़ाकरत अपार । हलधरसंग सखा सबलोन्हें डोलतगृह
 गृह द्वार १०६८ द्वैज दाम कुसुमन की गुंथी अपने हाथ सँवार । दरे
 पढाय भानुतनया को पहिरत घोषकुमार १०६९ तीज तरुणा सब
 गावतआई नन्दरायदरवार । पकरेआय श्यामनट सुंदर भेटत भरिअंक-
 बार १०७० चौथ चहूँदिशिते सबधाये सखा मंडलीधाय । इततेआई
 कुंवर राधिका होरी अधिक मचाय १०७१ पंचमिपंच शब्द करि
 साजे सजि बादित्र अपार । रुजमुरज हफताल बांसुरी भालरको भं-
 कार १०७२ बाजतबीर रबाव किन्नरी अमृत कुराडली यंत्र । सुरसुर
 मंडल जल तरंग मिल करत मोहनीसंत्र १०७३ बिबिध पखावज आ-
 वज संचित बिच बिच मधुर उपंग । सुर सहनाई सरस सारंगी उपजत
 तानतरंग १०७४ कंसताल कटताल बजावत शृङ्गमधुर मुहचंग । म-
 धुर खंजरी पटह प्रगाव मिल मुख पावत रतभंग १०७५ निपटन के-
 री अवगान धुनि धुनि धीरन रहे ब्रजबाल । मधुरनाद मुरलीको सुनके

भेदे श्यामतमाल १०७६ छठि को यटरस सरस ननायो हरि भोजन
करवायो । नानाविधि एकवानवनायो जैबल अति सुखपायो १०७७
सातें सखिमिलि बारीलाई आरोगे ब्रजराज । अठौंदिशा सकलमिल
ठाढोदूरकरी सब लाज १०७८ नवमी नवसत साजि राधिकाहरिसों
खेलतफाग । दशमी दशहुदिशा परिपूरया बाढ्योअतिअनुराग १०७९
सकादशी राधिका मोहन बोउमिल खेलनलाग । बौंजेजाय सघन कुं-
जनमें जहँ सहचरि बडभाग १०८० सघनकुंजमें डोल बनायो भूलत
हैं पिय प्यारी । ललितादिक बीरी जो खबावत नानाभांति सँवारी
१०८१ अतिसुगंध घसलाय अरगजा छिरकत सांगलागत । हरिवारी
प्यारी हरि छिरकत शोभा बरगान जात १०८२ द्वादश दिवस दुहुँ
दिश माच्यो फागुसकल ब्रजसांभ । आलिंगन सबदेत प्रयासकोलखै
न धुन्धरसांभ १०८३ तेरस भाभिनि पियो अधररस अतिआनंदअ-
घाय । चहुंदिशिते गहिके गठ जोरी कीन्हों सखियन आय १०८४
पूज्यो सुखपायो ब्रजबासी होरी हरय लगाय । परमराग अनुरागप्र-
कटभयो अतिफूले ब्रजराय १०८५ यशुसतिमाय लाल अपनेकोशुभ
दिन डोल भुलायो । फगुवादियो सकल गोपिनको भयो सबन मन
भायो १०८६ यमुनाजल कीडत ब्रजबासी संगलिये गोविंद । सिंहद्वार
आरती उतारत यशुसति आनंद कंद १०८७ यहिविधि कीडत गोकु-
लमें हरिनिज वृन्दावन धाम । मधुवन और कुसुदवन सुंदर बहुलावन
अभिराम १०८८ नन्दग्राम संकेत खिदर बन और काम बन धाम ।
लोहबन साठबेलवन सुन्दर भद्रवृहद बनग्राम १०८९ चौरासी ब्रजको
स निरन्तर खेलतहैं बलमोहन । सामवेद ऋग्वेद यजुर्में कहेउ चरित
ब्रजमोहन १०९० व्यासपुराणा प्रकट यह भाष्यो तंव ज्योतिषिन जा-
न्यो । नारदसों हरि कहेउ कृपाकर अमृतवचन परवान्यो १०९१ मन
कादिकसों कहेउ आपुहरि निज बैकुंठ मभार । व्यासदेव सुकदेवस-
हामुनि नृपसौं कियो उचार १०९२ नारायणां चतुरानन सों कहिनारद
भेद बतायो । ताते मुनिके व्यास भागवत नृप शुक्रदेव जतायो १०९३
शेयकहेउ जो सांख्यायनसों मुनिके सनत्कुमार । कहेउ वृहस्पतिपुनि
मैत्रेसों उद्वकियो बिचार १०९४ ऐसे विविधप्रसाणा प्रकटबहुलीला

करि ब्रजईश । सोई श्री शुक्रदेव महामुनि प्रकटकही राखीश १०६१
 चन्दावन हरि यहिबिधि कीडत तदा राधिकासंग । भोरभिया कबहु
 जानतहैं सदा रहत यकरंग १०६६ सघनकुजमें खेलत गिरिभर मधु-
 राकी सुधिआई । राखे बरजि राधिकारानी अन्नमयोभोजाई १०६७
 राखें कंदलगाय लालको पलकओट नहिं करिहों । युग कुच बीच
 भुजा दोउनमिल सदा प्रेमरंग भरिहों १०६८ सदा यकरस यकअखं-
 डित आदि अगादि अनूप । कोटिकल्प बीतन नहिं जानत विहरत यु-
 गुल सखप १०६९ संकर्षण के बदन अनल तें उपजी अग्नि अपार ।
 सलल ब्रह्मांड तुरतते जसों मानो होरी दई पजार ११०० सकल तत्त्व
 ब्रह्मांड देवपुनि माया सबबिधि काल । प्रकृतिपुरुष श्रीपतिनारा-
 यरा सबहैं छंश गोपाल ११०१ करस योगपुनि ज्ञान उपासन सबहो
 भ्रमभरमायो । श्रीवल्लभ गुरुतत्व सुनायो लीलाभेद बतायो ११०२
 तादिन ते हरि लील गाई सक लक्ष पदबंध । ताको सारसरसारावलि
 गावत अति आनन्द ११०३ ॥ अथ श्रीनाथजी केबरदान ॥ तब दोहो जायते
 जगत गुरु सुनो सूर ममगाथ । तूकत ममग्रश जो गाथैको कदाहे नम
 माथ ११०४ खेलत यहि बिधि हरि होरी हो होरी हो वेद दिशिगह
 बात ॥ * ॥ धरिजिय नेस सूर सारावलि उत्तर दक्षिण काल । अन
 बांछित फल सबहीपावैं भिह जन्म जंजाल ११०५ थोखे सु पेटे मन
 राखैं लिखैं परग चितलाथ । ताके संग रहत हों निश दिन आनन
 जन्म बिहाय ११०६ सरस संमतसर लीलागाथें युगल वरणा वित्तपाथें ।
 गरभवास बंदीखानेमें सूर बहुरि नहिं आवैं ११०७ इतिटंक ॥ इतिश्री
 सूरदासजीकृत सम्मतसरलीलातथासवालाखपदकेसूचीपत्रसमाप्त ॥

रागसारंग ॥ हरि हरि हरि सुभिरगा करो । हरि चरगारचिन्द उरमें
 धरो ॥ हरिकी कथा होय जब जहां । गंगाहू चलि आवे तहां ॥ यतुना
 सिन्धु सरस्वतिआवे । गोदावरी बिलम्ब न लावे ॥ सर्व्व तीर्थकोवास
 तहां । सूर हरि कथा होवे जहां १ यहि बिधि राजा करो बिचार ।
 राजसाज सबही कोडार ॥ जीरन पट कोपीन तनधारी । चलो सुरसरी
 शीश उधारी ॥ पुत्र कलत्र देख सबरोखे । राजा तिनकीओर नजोवे ॥
 राजा चलत चले सब लोग । देखित भये सब प्रीति बियोग ॥ राजा

भांशाये दिगआये । किये स्नान मृत्तिका लगाये ॥ करि संकल्प अन्न
जल द्यागो । केदल हरिपदसों अनुरागो ॥ अघि वशिष्ठादिक तहँ
आये । नारद आदि तहां मुनिवाये ॥ कृष्ण आशान दे तेहि बैठाये ।
यों कहि पुनि तिनको शिरनाये ॥ धन्यभाग तुम दरशन पाये । मग
उच्चार करण तुम आये ॥ तुम देखत हरि सुमिरगा होई । और प्रसंग
चले नहिँ कोई ॥ आज्ञाहोय करौं अब सोई । जातें मेरी सद्गतिहोई ॥
कोई कहे ज्ञान विस्तारो । कोई कहत यहां निस्तारो ॥ कोऊ कहे
मन्त्रजप करना । कोऊ कहै बहुत विधि बरना । राजा कहेउ सप्तदिन
माहीं ॥ होतु अन्त मोहिँ मूकतनाहीं ॥ यहि अन्तर शुकमुनि तहँ आये ।
ठाढ़ भये सब मुनि समुदाये ॥ करि प्रणाम नृप आसन दीन्हों । पुनि
सनमान ऋषियन सबकीन्हों ॥ शुकको रूप कहेउ नहिँ जाई । शुकको रह्यो
हृष्या रसखाई ॥ शुककी महिमा शुकही जाने । सूरदास कहि कंहा
बखाने ॥ प्रथमगवनाम महिमा ॥ रागभैरव ॥ कृष्णानाम रसनारहत सोई धन्य
कलियें । ताको पदपंकजकी रेणुकी बलिमें ॥ सो मुकत सोई पुनीत सोई
कुलवन्ता । जाको निशि बासर रहे कृष्णानाम चिन्ता ॥ यो यज्ञ तीर्थ
जत कृष्णानाम माहीं । बिना कृष्णानाम कलि उच्चार और नाहीं ॥ सब
सुखको सार कृष्णा कबहूँ ना बिसरिये । कृष्णानाम ले ले भवसागरको
तरिये ॥ श्रीगोवर्द्धन धरणा प्रभु परम संगलकारी । उघरे जन सूरदास
ताकी बलिहारी ३ ॥ राग बिलावल ॥ भृङ्गीरे भजु चरणा कमलपद जहां
न निशिको ग्राम । जब बिधुभानु समान एकरस सुखवारिज सुखरा-
स ॥ जहां कंजलरा भक्ति होतिनो लक्षणा रस एक निगम संग । शुक
नारद शारद भँवर भृङ्ग अनंग ॥ शिव बिरज्जि खञ्जन मनरञ्जन क्षणा
क्षणा प्रगट प्रवेश । सुनु मधुकरी भ्रमत्याग मदन राजीव केश ॥ चरणा
सरोवर ब्रह्म शिव हंस सनक सनन्दन व्यास । सुर प्रभु सुगन्ध में प्र-
फुलित तहां चल करिये बास ४ ॥ अथ सप्तवधि उत्पत्ति ॥ ब्रह्मा सुमिरगा
करि हरि नाम । प्रगट किये ऋषि सप्त अभिराम ॥ भृश मरीचि
अंगिरा वशिष्ठ । अवेय पुलह भयो पुलस्त ॥ दक्ष प्रजापति आदिक
भये । तिनते अनेक औरहूँ किये ॥ तिनते प्रगटी सृष्टि अपार । सुर
कहाँल गि कहेपसार ५ शुकसों नृपति परीक्षित सुन्यो । तिन पुनि

भलीभाँति करगुन्यो ॥ सुत सेवकन तब सुनियों कहेउ । बिदुर मयवो
 सों पुनि लहेउ ॥ सुनि भागवत सबन सुखपायो । सुरदास सो बरसा
 सुनायो ॥ * ॥ अथ व्यास सम्वाद ॥ * ॥ सतव्याससों हरिगुण सुने । बहुरो
 तन तैज मनमें सुने ॥ सो पुनि नैमियार में आयो । तहां ऋथिन को
 दर्शन पांयो ॥ शिष्यन कहेउ भागवत सुनाई । भली भाँति हरिके
 गुणागाई ॥ प्रथम कहेउ तिन व्यास अवतार । सुनो सुरसो अब चित
 धार ६ ॥ अथ व्यास अवतार वर्णन ॥ सत युग लाख बरस की आई । वेता
 दश सहस्रकरिगाई ॥ द्वापरदश सकही भाई । कलियुग सतसेवत रहि
 गाई ॥ शोक ऋथिन सुननेको भाई । कलि मर्याद कही नहिँ जाई ॥
 ताते हरि करि व्यास अवतार । करी संहिता वेद बिचार ॥ बहुरि
 पुराण अठारह किये । सतहु शान्ति न आई हिये ॥ तब नारद तिनके
 ढिगआये । चारणलोक कहे समुभाये ॥ यह ब्रह्मा सों कहे भगवान ।
 ब्रह्मा मोसों कहे बखान ॥ सोई अब मैं तुमसों भाखी । कही भागवत
 इनमें राखी ॥ ओ भागवत सुनै जो कोई । ताको हरिपद प्राप्तहोई ॥
 ऊँच नीच ब्योरा नहिँ कोय । हरिको भजय सो हरिको होय ॥ जैसो
 लोहा पारसहोय । व्यासभई मेरोगति सोय ॥ दासी सुत में नारदभये ।
 दोषदासके सब सिटिगये ॥ व्यासदेव तब करि हरिध्यान । कियो भा
 गवत को जो बखान ॥ सुने भागवत जो चितलाई । सुर सो हरि भजि
 भवतरिजाई ॥ हरि हरि हरि हरि हरिहरिहरो । हरि चरणारविंद
 उरधरो ॥ हरिब्रियोग पांडव तजिराज । गयोहमालय सबहीत्याग ॥
 होजूकथा सुनहु चितधार । सुर कहे भागवत अनुसार ८ ॥ गग घनाश्री ॥
 करमगतिदारेहु नाहिरे । कहविंराहु कहां वे रविशशि आनिसंयोग
 परे ॥ गुरुब्रशिय पंडित अतिजानी रचिपचि लगनधरे । पितामरनअरु
 हरनसियाको बनमेंबिपतिपरे ॥ भारतमेंभरबीडको अंडा घंटाट्टिपरे ।
 हरिश्चन्द्र से दानी राजा नीचको पानिभरे । तीन लोक भावीके बशमें
 सुर नर देह धरे ॥ सुरदास होनीसो होहै काहैको शोचकरै ६ ॥ करुणा
 निधि तेरी गति लखि न परे । धर्म अधर्म नियेधि अबिद्यहि कर्ण
 अकर्णकरे ॥ जय अरु विजय अकर्म कियो कह ब्रह्मभरापदिवायो ।
 असुर योनि दीनी ताऊपर धर्म अछेद करायो ॥ पितावचन खंडे सो

पापी सोई प्रह्लादहि कीनो । निकसे खम्भबीचतें नरहरि ताहि अभय
पद दीनो । दान धर्म बहुकीन भानुसुत सोतुम बिमुख कहायो । वेद
विरुद्ध सकल पांडवसुत सो तुमरे मन भायो । यज्ञकरत जु बिरोचनको
सुत वेदवचन बिधिकर्म । द्विजकुल पतित अजामिल बिषयी गिराका
हाथ बिकायो । सुतहित नामलियो नारायण सो बैकुण्ठ पढायो । प-
तिव्रता जालंधर युवती सो पतिव्रततेदारी । दुष्टपुंश्चली अधम सुवेश्या
शुआ पढावत तारी । मुक्तहेतु योगी ग्रसकरई असुर विरोधी पावै ।
अबिगत गति करुणासय तेरी सूर कहा कहि गावै १० ॥ अबिगत
गति जानी न परै । मन बच अगम अगाध अगोचर केहि बिधि बुध
संचरै । अतिप्रचंड पौरुषसो मातो केहरि भुखभरै ॥ तजि उद्यम अकाश
कर बैठ्यो अजगर उदरभरै । कबहुं क तड़ा बूडत पाभीमें कबहुं क शि-
ला तरै ॥ बागरसे सागर करि राखे चहुंदिशि नीरभरै । पाहन बीच
कमल बिगसाहीं जलमें अगिनि जरै ॥ राजारंक रंकते राजा लेशिर
छवधरै । सूर पतित तरि जाय छिनकमें जो प्रभु टेक धरै ॥ ११ ॥ राग
धनाथी ॥ निगम कल्पतरु पक्वफल शुक्र मुख तेजुदयो ॥ ओशुक्रदेव
कृपा करिके अति परीक्षित अवगापयो ॥ ज्ञान दीप हिरदे प्रगट्यो
मनोकासना काजलियो ॥ जगमें प्रकाश करि हरि कथा उरको ति-
सिर सर्वाहि गयो । सुरश्याम सुनहो रत्निकनसगि वारंवार रस पीवो
नयो ॥ १२ ॥ रागनीसीरठ ॥ सुवा चलि व बनको रसलीजै । जाबन कृष्ण
नाम अमृतरस अवगापाव भरि पीजै ॥ को तेरो पुत्र पिता तू काको
मिथ्याधम जगकेरो । कालमंजार ले जइहै तोको तू कहै मेरो मेरो ॥ हरि
ना नारस मुक्तसेव चलि तोको देखराऊं । सुरदास साधनकी संगति
बड़े भाग जो पाऊं ॥ * ॥ अथ श्री भगवान्की सेवा फल कीर्तन ॥ रागनी बिलावन
भजो गोपाल भूलि जिनि जाउ । मानुष जन्मको यहीहै लाउ ॥ गुरुसेवा
करि भक्ति कमाई । कृपाभई तब मनमें आई ॥ रही देहसों सुमरो देवा ।
देहधारि करिये यह सेवा ॥ सुनो संत सेवाकी रीति । करै कृपा मन
राखै प्रीति ॥ उठके प्रात गुरुन शिर नावै । प्रात समय श्रीकृष्णहि
ध्यावै ॥ जोई फल मांगै सोइ पावै । हरिचरणान में जो चित लावै ॥
जिन ठाकुर को दरशन कियो । जीवन जन्म सुफल करि लियो ॥

जो ठाकुरकी आरति करै । तीनलोक वाके पायन परै ॥ जो ठाकुरको
करै प्रणाम । बिष्णु लोक तिनको निजधाम ॥ जो कोइ हरिको सुमिरे
नाम । ताके सकल पूरणा है काम ॥ जो ठाकुरको ध्यान लावै । ध्रुवप्रज्ञाद
की पदवी पावै ॥ जिन हरिको चरणा मृत लियो । बिष्णुधाम अपनो
घर कियो ॥ जो हरिआगे वाद्य बजावै । तीनलोक रजधानी पावै ॥
जो जन हरिको ध्यान करावै । गर्भधाममें कबहुं न आवै ॥ जो हरिको
नित करै सिंगार । ताको पूरणा है स्वीकार ॥ जो दर्पणा ठाकुरहिं देखा
वै । चंद्र सूर्य ताको शिर नावै ॥ जो ठाकुरहिं सुतुलसि चढ़ावै । ताकी
सहिसा कहत न आवै ॥ जो कीर्तन ठाकुरहिं मुनावै । ताको ठाकुर
निकट हुलावै ॥ हरिमंदिरमें दीपक करै । अंधकूप में कबहुं न परै ॥
जो ठाकुरकी सेज बिछावै । निज पदपाय दामसो कहावै ॥ पलना जो
ठाकुरहिं भुलावै । बैकुंठ सुख अपनेघर ल्यावै ॥ जो ठाकुरहिं भुला-
वै डोल । नितलीलामें करै कलोल ॥ उत्सवकरि मन आरति करे ।
ता आधीन रहे श्रीहरे ॥ जो ठाकुरको भोग धरावै । सदा परम नित
आनंद पावै ॥ जो पद दीन्ह यशोदामात । ता मुखकी कलु कही न
जात ॥ खालन धरित गोपाल जिमावै । सो ठाकुरको मखा कहावै ॥
जो ठाकुर को स्वाद करावै । सो ताको फल तबहीं पावै ॥ गोबर्धन
की लीला गावै । चरणा कमल की तबहीं पावै ॥ श्री यमुनाजल करै
जोपान । सो ठाकुर के रहे निधान ॥ जहां समाज बैष्णवी होवै ।
ताकी संगति नितप्रति जोवै ॥ श्रीभागवतसुनै आनंद करि । ताके ह-
ृदय बसे नितही हरि ॥ जो ठाकुर की देह समरपै । उत्तम श्रेष्ठ जानके
अरपै ॥ जिन हरि की गगरी भरिआनी । तिन बैकुंठ अपनी स्थिति
ठानी ॥ जो ठाकुर को मन्दिर लेपै । मायाताके कबहुं न लेपै ॥ जो
ठाकुर को सीधो बीने । जितने तीरथ तितने कीने ॥ जो ठाकुरकी
माता पोवै । सोई परमभक्त नित होवै ॥ जो ठाकुरको चन्दन लावै ।
विविधताप सन्ताप मिटावै ॥ जो ठाकुरके पावनधोवै । सदासर्वदानि-
मल होवै ॥ जो हरि कीर्तनमुखसों करै । मुक्ति चारहूं पावनपरै ॥
सेवामें जो आलस करै । कूकर हँके फिर फिर सरै ॥ मनसा जो सेवा
आचरे । तबहीं सेवा पूरीपरै ॥ सेवाको आश्रय करि रहै । दुख सुख

बचन सबनको सहे ॥ जो सेवामें आलस लावै ॥ सो जइ जनन प्रेतको
पावै । वेद पुराणान में यों भाख्यो ॥ सेवा रस ब्रज बीथिन चाख्यो ॥
सेवाकी यह अद्भुत रीती । श्री विठलेश सों राखे प्रीती ॥ श्री आ-
चार्यहि प्रकट बनाई । कृपा भई तब मनमें आई ॥ सेवाको फल क-
हेउ न जाई । सुखसुमिरे श्रीबल्लभराई ॥ सेवाको फल सेवा पावै । सूर-
दास प्रभु हृदय समावे ॥ इतिसूरदास विरचित सेवापद ॥

रागविहाण ॥ भरोसो दूढ़ इन चरगान केरो । श्रीबल्लभ नखचन्द्र छटा
बिन सबजग सांझ अंधेरो ॥ साधन और नहीं या कलिमें जासे होय
निधेरो । सूरकहा कहे द्विविध आंधरो बिनामोल को चरो ॥

इति श्री राससागरोद्भव रागकल्पद्रुम सूर
सागरस्य सुरसारावली समाप्ता

रागकल्पद्रुमानित्यकीर्तन ॥

श्रीसरस्वत्यैनमः ॥ श्रीगुरुभ्यान्नमः ॥ श्रीगोपीजनबलभायनमः ॥
 अथ श्रीकृष्णानन्द व्यासदेव रागसागरोद्भव रागकल्पद्रुम नित्यकीर्तन
 प्रारंभः ॥ रागभैरव ॥ मंगल माधो नाम उच्चार । मंगल वदन कमल कर
 मंगल मंगल जनहि सदा संभार । देखत मंगल पूजत मंगल गावतमंगल
 चरित उदार । मंगल श्रवणा कथारस मंगल मंगलतन बसुदेव कुमार ।
 गोकुल मङ्गल मधुवन मंगल मङ्गल रुचि वृन्दावन चन्द । मंगलकरन
 गोवर्द्धनधारी मङ्गल बेध यशोदानन्द ॥ मङ्गलधेनु रेनुभुव मङ्गल मङ्गल
 मधुर बजावत बेनु । मङ्गल गोप बधू परिरंभन मङ्गल कालिन्दी पय
 फेनु । मङ्गल चरणाकमल मरिण मङ्गल मङ्गल कीरति जगत निवास ।
 अनुदिन मङ्गल ध्यान धरत मुनि मङ्गलमति परमानन्द दास १ मङ्गल
 रूप यशोदानन्द । मङ्गल मुकुटकान सधि कुण्डलमङ्गल तिलकविराजत
 चन्द । मङ्गल भयणा सब अंग सोहत मङ्गल मूरति आनन्द कन्द । म-
 ङ्गल लकट काँखमें चापे मङ्गल मुरलि बजावत मन्द । मङ्गल चाल
 मनोहर मङ्गलदर्शन होत सिंहेउ दुखदन्द । मङ्गल व्रजपतिनामसब
 को मङ्गल यशगावत श्रुतिछन्द २ उठोहो गोपाललाल दुहोधोरीगैया
 मद्य दूधमथि पीवहुभैया ॥ भोरभयो बनतमचरबोले । घरघर घोषहा
 सब खोले । तुम्हरे सखा बुलावन आये । कृष्ण कृष्णाकहि मङ्गलगाये ।
 गोपी रई मथनियां धोवें । अपनो अपनो दही बिलोवें । भूयन बस
 पलटि पहिराऊं । चन्दन तिलक ललाट बनाऊं ॥ चार भुजा गोवर्द्ध
 धारी । मुख कविपर बलिगइ महतारी ३ जागो हो मेरे जगत उजा
 कोटिक सन्मथ वारों मुसकनि पर कमल नयन अंखियन के तारे ॥
 संगरवाल बछ सबलेके यमुनाकेतीर बनजाउसवारे । परमानन्द कहि
 नंदरानी दूर जिन जाहु मेरे ब्रज रखवारे ४ आखो नीको लोनो सु

भोरहो दिखाइये । निशि के उनीचे नैन तोतरात सीठे वैन भावतहो
 जीके मेरेसुखही बढ़ाइये । सकलसुख करन विविधि तापहरन उरको
 तिमिर बाढेउ तुरत नशाइये । द्यारेठाढे ग्वालवाल करउ कलेउलाल
 मिश्रिरी रोटी छोटी सीटी साखनभों खाइये । तनिकसों मेरो कन्हैया
 वारि फेरी डारी मैया बेसी तो गुह बनाय गहरु न लाइये । परमानंद
 जन जगनि मुदित मन फूली फूली फूली उर अंग न समाइये ५ उठोनंद-
 कुमार भयो भिनुसार जगावत नंदरानी । झारी के जल बदन पखारत
 सुतकहि सारंग पानी । साखन रोटी अरु मधमेवा भावे सो लीजै हो
 आनी । सूरप्रयास सुख निरखि यशोदा मनहीं मन जु सिहानी ६ उठे
 नंदलाल सुनत जननी सुखबानी । आलस भरे नैन उठे शोभाकी खानी ।
 गोपीजन थकितहिये चितवति सब टाढी । नैनकी चकोर चन्द बदन
 प्रीति बाढी । माता जल झारी लिये कमल मुख पखारेव । नीरहोका
 परस करत आलस बिसारेव । सखा द्वार टाढे सब ढेरत हैं तुमकं ।
 यमुना तट चलो प्रयास चारन गोधनकं । सखा सहित जेवहु बलि
 भोजन कछु कोनों । सूरप्रयास हलधर संग सखा बोल लीनों ७ जागिये
 गोपाललाल जननी बलिजाई । उठो तात भयो प्रात रजनी को तिमिर
 घटो प्रकटे सब ग्वाल वात मोहन कन्हाइ । उठो मेरे आनंद कंद गरन
 चंद मंद मंद प्रगल्भो आकाशभानु कमलनि सुखदाई । सिंगी सब पुर-
 तबेनु तुमबिना न छुटे धेनु उठो लाल तजो सेज सुन्दर धरराई । मुखते
 पर दूर कियो यशुदा को दरश दियो अरु दविसबसांगिलियो विविध
 रसमिठाई । जेवत दोउराम प्रयास सकल मंगल गुन निधान थारमें
 कछु जूठ रही सु मानदासपाई ८ प्राणानाथ प्रातभयो जागो बलिजा-
 ऊं । सोना केर गोफन सुबेन में गुथाऊं । उगत सुरजज्योति भई कुल-
 हिरी बनाऊं । पाँयबांधोंधूधरु अरु चालिबोसिखाऊं । सुरदास मदन
 मोहन गुन तिहारे गाऊं । हरखि निरखि छविके उपर बलिबलि ब-
 लिजाऊं ९ खेलिये आँगनमें छगन मगन कीजिये कलेवा । छीकेतें
 सारी दधि ऊपरतें काँढिधरी पहिरिलेउ भंगुली फीटा बांधिलेहु
 मेवा । ग्वालन के संग खेलनजाहु खेलन के मिस भूयनल्याउ कीत-
 यरी प्यारेकलन निशि दिनाकी देवा । सुरदास मदनमोहन घरही

खेलोप्यारं ललन भंवरा चक्र डोर देहां हंस चक्रोर परेवा १० सदन
 मोहन पीय कीजे कलेऊ । दूध में रोटी साना साखन मिश्री आनी
 जोई जोई भावे सोईसोई लेऊ । खाँडखीर और घृत मिटाई सेवा आप
 खाहु और ग्वालन को देऊ । बृजपति पीय फेर खेलनको जाउ बल
 सुबल श्रीदासा को संग करिलेऊ ११ भोरनिकंज भवनते भासिनि ।
 आवति है लटकति गज गासिनि । अलक सुगन्धसराबगीकुटी । नि-
 शिकेउनीं दे नैनबीरबहूदी॥पलटित बसन रसन सनि भयरा । शोभाअंग
 अंग जित दूयरा । गुन निधान दृयभान हुलारी । दासी गोपाल लाल-
 जूकी प्यारी १२ रैनजागी पिय संग रंग भीनी । प्रफुलित मुख कंज
 नैन खंजरीट सीन सैन बियुरि रहे चूरन कच बदन ओप कीनी ।
 आतुर आलस जह्वात पुलकित अति पान खात सदाते तन सुधि न
 रही शिथिल भई बेनी । मांगते दरि मुक्ताइल अलक संग अस्तुति
 रही उरगन सतफल सानो कंचुकी तजि दीनी । विकसति ज्यों चंप-
 कली भोर भये भवनचली लटपटात प्रेमघटा गजगति गति लीज्यों ।
 आरति को करत नाग गिरधर सुठि सुखकीराशि सूरदास स्वासिनि
 गुन गने न जात चीन्हें १३ नागरी नव लाल संग रंग भरी राजे ।
 श्याम अंश बाँह दिये कुंवरि पुलकि हिये मंदमंद हंतनि प्रिया कोटि
 सदन लाजे । तरु तमात श्याम लाल लपटी अंग अंग बेलि निरखि
 सखी छबिसों कैलि नूपुर कल बाजे । दासोदर हित सुबेत शोभित
 सविसुसुदेशनव निकंज भंवर गुंज कोकिल कल गाजे १४ ॥ अयखं-
 डिता ॥ नव कंज नैन रति रंगरगे । प्रिया प्रेम बली रस रास रसमधे
 आलस बरा साधुरी अंगअंगे । रूप यौवन चपलता गुमानआगरे सधुप
 खंजन सीन सान भंगे । कहे कृष्णादास कामिनि उरसि सधुप्रगति गि-
 रधरन सुखद प्रतिबिम्ब संगे १५ प्रातकाल प्यारेलाल आवनी बनी
 उरसि सरग जो सुमाल डगमगि सुदेश चाल चरन खुदि सदन जीति
 करत हो सनी । प्रियाप्रेम अंगाराग सगबगी सुरंग पांग गलित बरुह
 चूड़यमज बारि करा सनी । कृष्णादासप्रभु गिरिधरकंठ सुरतपवलि-
 ख्यो करज लेखनी सुनि पुन राधिका गुनी १६ आजु नीके बने नंद
 नंदा । बदन इन्दु की ज्योति निरखि नभ चन्द्रमा सार अंबधि परत

मधनचन्दा । श्रमस्वेदकन गातलालगिरिवर धरनसुखदेत मलयजसु
पवनमदा । कृष्णादामनाथ डग सगत पग चलतमानों कुंवर गूँथयो प्रेम
फरा १७ ललितवदन गलित कुसुम बलितकेश अतिसुदेश नयन नलिन
रगमगेशशिगरद शर्वरी । मरगजी उरमाल शिथिल कहुंकहुं चंदनकी
रेखरसभरे लपटातगातमधुप अर्वरी । शोभित उरउरजलखि मनो पर-
सत नहिं परत पक्षिसनखछवि पर बारिडारों चंद खर्वरी । बासुदेव
लालकल्याणा गिरिधरको सुयशगावत आबिटूलपदकमल रजप्रताप
गर्वरी १८ भोर अंग २ शोभा प्रयासके भली । मानहुं विकसित बिचित्र
नील कमल की कली । प्रिया उरसि लगन राग सरस कुरित छवि
पराग पवनपरसि मंदले सुगंधको चली । करि प्रवेश घाराडार हरति
युवति चिन्मसार मरस बेधि समर बासा कामते बली । पलटि बसन
सुखनिधान मत्त मधुप करतगान सुरत समै सुयश सुनोषवनदैअली ।
शोपालदास मदनमोहन कुंज भवन बलित रंग सुदित अबनि भावनी
सुभानि केरली १९ शोभित सुभग लटपटी पात भीने रसिक प्रिया
अनुराग । कुंकुम तिलक अलक सेंदुर छवि असन नयन घूमत निशि
जाग । कहु जूँभात उर माल मरगजी पीक कपोल अधर मसि दाग ।
चतुर्भुज प्रभु गिरिधर नोकेलागत आलस बग सब अंग विभाग २०
भोर तमचुर बोले दीनों जू दरशना । आतुरहैं उठि धाये डगत चरगा
आये आलसमें नैन बैन अटपटी रसना । संध्या जु कहि सिधारे बचन
जीयमें संभारे सकुचिकै मदमंद प्रकटित दशना । चतुर्भुजप्रभु गिरिध-
रन सिधारो तहां जहां रति रंगरस लपटाये बसना २१ घूमत मत्तगज
ज्योचलतडगमगे । बतियाँ कहत सैन मुख न आवतबैन आलसउनींदे
नैन शोभित रगमगे । नागर नंदकिशोर नोकी छवि आयेभोर अंगअंग
रतिरग चिन्ह जगमगे । चतुर्भुज प्रभु गिरिधर नहीं लागेपलक चारि
जास जीति काम रहे जूठ डगमगे २२ आजु छवि देत नयना आलस
भरे रगमगे । रैनपलक न परी सुरतरन जेकरी भोरआये लाल धरत
पग डगमगे । तन और गति भांति कहत कही न जाति कांति अडुत
सकल अंग अंग जगमगे । चतुर्भुज प्रभु गिरिधर न भलीकरी पलटि
आये बसनसोंधे मिले सगमगे २३ भोर डगमगतपग जीति मन्मथचले ।

सकलरजनी डगे नयन नहिं पलल । अरुन आलस चलतनयन लागत भले । करिवनगर नरत चिन्ह प्रकटित करत बसन आभूषन सुरतरन दलमले । चतुर्भुजदाम प्रभुगिरिधर कबिवढी अधर काजर कुंकुमअंग अंगारले २४ डगमगात आये नटनागर । कछु जंभात अलसात भोरभये अरुना नयन घमत निशि जागर । रसिकगोपाल सुरतरनको जस सकल चिन्ह लाये उरकागर । चतुर्भुज प्रभु गिरिधरन कुंजगढ रतिपाति जीत्यो रस मुखसागर २५ भोरभय आये हो ललन नीकी भंतियां । जावकके उरचिन्ह नीलपट प्यारी दीनेनयन आलस भीने जागे स रतियां । छुटी ग्रीवा वन दामन खचित अभिराम कैसेकै दुरत श्याम डगमगी गतियां । केशवदाम प्रभु नन्दसुवन काहे लजात भलेजू सां रेगात जानी सब घतियां २६ आइयेज भले आयेकत सकुचतहो । तुरत संग्राम कीने सौतिनको सुखदीने याही रसभीने होपै मोको तोरुचा हो । तुमदेखे रिसगई उपजीहै प्रीति नई भई सेतो भई अब काहेधौ शोचतहो । नारा प्रगा मोहिं जानो बहै चरो करिवानो कहा जीय र तो अभिलाष जू शोचतहो २७ अरुणानयन राजत प्रभुभोरे । अति सुल सुरत किये ललना संग जात समद मन्मथ शर जोरे । राति उनींदे अलसात मरालगति गोलक चपल रहत कछु थोरे । मनहुं कमल के कोशते प्रीतम ढूँढन रहत छपि रिपुदल दोरे । सजल कोप प्रतिमें शोभियत संगम कवितारे पर दोरे । मनहुंभारते भंवर मीनशिशुजा तरल चितवत चितचोरे । बरगिा न जाइ कहांलो वरगाँ प्रेमजल बलावल ओरे । सूरदाससो कौन बियाजिहि हरि के सकल अंगवत तोरे २८ नाहिं दुरत नयना रतनारे । जानु बंधूक सुमन विशालपरसुंद श्याम शिलोमुख तारे । रहीजु अलक कुटिल कुंडलपर मोतनचितवत चितै बिसारे । शिथिल भौह धनुगहे मदनगुण रहे क्रीकनद बागिा बिखारे । गंदेही आवतहैं ये लोचन पलक आतुर उधरत नउधारे । सूरदास प्रभु मोईधौं कहो ऐधीको बनिता जासों रतिरनहारे २९ आवतलाल गोवर्द्धनधारी । आलस नयनसरस रसरंगित प्रिया प्रेमनूतन अनुहारी । बिलुलित मालमरगजी उरपर सुरतसमरकी लगी पराग । चंबनश्याम अधररसगावत सुरतिभाव सुख भैरव राग । पलटिपरे पटनील सखीके

रसमें भीलत मदन तड़ाग । वृन्दावनदीयिन अवलोकत कृष्णादास लो
चन बडभाग ३० ॥ अथ समुदायपद ॥ रागभैरव ॥ भोर भाव तो श्रीगिरिधर
देखों । सुभग कपोल लोल लोचन छबि निरखि के नयन सुफल करि
लेखों । नख शिख रूप अनूप विराजत अंग अंग मन्मथ कोटि विशेषो ।
चतुर्भुज प्रभु रस रास रसिक को बडे भाग बल इकटक पेखो ३१
प्रियाम सुन्दर भोर भवन आगे होय आवे । कबहुं मुख मंदहास मेरेसखि
मुख किराम कबहुं बैन कबहुं नैन सैनहो जनावे । मेरी दधिमयन बार
उनकी उठनि सवाररई नेतमाट समेत सकलहो बिसरावे । चतुर्भुज प्रभु
गिरिधरअंग अंगकोटि मदन मूरति चलत बनको तनरुमनको चितेही
चुरावे ३२ जैये वह देशजहां नन्द नन्दन भेटिये । निरखिये मुखकमल
कांति बिरह ताप मेटिये । सुन्दर मुख रूपसुधा लोचन पुट पीजिये ।
लंपटलव निसिध रहित अंचय अंचय जीजिये । नख शिख मृदु अंगअंग
कोमलकर परसिये । अरुअनन्य भावसो भजि मन क्रमबच सरसिये ।
रानहास भुव बिलास लीला मुख पाइये । भक्तन के यूथ सहित र-
सनिधि अवगाहिये । इह अभिलाष अंतरगत प्राणानाथ पूरिये । साग-
रकरुणा उदार बिबिध ताप चूरिये । छिनु छिनु पल कोटि कलष
बीतत अतिभारी । परमानन्द कल्पतरु दीनन दुखहारी ३३ भोर भये
नीको मुख हंसत दिखाइये । रातिके दरशके बिकुरेदोऊ पलकमेरे-
वारिफेरिडारों नेकु नयननि मिराइये । कोमल उन्नत बाहूपर अमित
भाव मेरीतेरी छाती छबि अधिक बढाइये । छीतास्वामी गिरिधर
सकलगुण निधान कहा कहूं मुख करि प्राणाहीते पाइये ३४ बिललित
कर पल्लवमृदु बेन । हरयितहं कृत आवत धेन । कोटि मदन द्युति
प्रियाम शरीर । विपति कल्पतरु यमुना तीर । दक्षिणा चरणा चरणा
परधरे । बामअंश भू कुंडलचले । बरुह चन्दवन धातु प्रवाल । मरिा
मुक्ता गुंजाफल माल । देखन चलहु खेम नन्दलाल । ललित त्रिभंगी
मदन गोपाल ३५ तोहिं ध्यान लाग्यो सजनीरी । बारक दृष्टि परे
मोहन । देखियत चित्र लिखीसी ठाढ़ी मदन सिंधु जल बूंद सनी । रूप
निधान कमल लोचन तोहिं मिले आजुकी रजनी । कृष्णा दास प्रभु
गोवर्द्धनधर रसिक युवति दुख हरनी ३६ आंखिन में दुराय प्यारो

काहू देखन न दीजिये । हियेलगाइ सुखपाइ सबगुणा निधिपूरणा
 जोई जोई मन इच्छा होइ सोई सोई क्यों न कीजिये । मधुरमधुर बचन
 कहत ग्रवगानसुख दीजिये । निर्मल प्रभुनन्द नंदन निरखि निरखि जी
 जिये ३ ७ ऐसेही धरोरी दधिबिना मथन किये देहु यशुमतिनेकु अपनो
 रई । अपनहुं हुंढिहारी तैसी निशि अधियारी पाऊं न भवन सांभ क-
 हां धौं गइ । कछु न जिय सुहाई याहीते आतुर आई लोना के लालच
 जीय चटपटी भई । दिनाचारि करो काज बाढो नन्दजूको राज जौलौं
 बहु रहों लग्गाऊं नई । चतुर्भुजदासरानी मेरी अति चोप जानी कै प्रमत्त
 सांतामहिया आनि दई । भोरही देउ अशीश वारजि निखिसो शीश
 तिहारे गिरिधरकी हों बलि बलि गई ३८ श्रीनाथजी को ध्यान भेरे
 निशि दिना री साई । साधुरी मूरति मोहनी मूरति चितलियो चतुराई
 लाल पाग लटकि भाल चिबुक बेसर कंठमाल करणाफूल मंदहास
 लोचन सुखदाई । मोरपंख शीशधरे मोतिनके हारगरे बाजूबन्द प-
 हुंचिन कर सुद्रिका सुहाई । सुद्रघंटिका जेहरि नूपुर बिछिया सुदेश
 अंग अंग देखत उर आनन्द न समाई । मुरली अधर धरे श्याम दाढे
 ब्रजयुवाति सांह सतसरन तान गान गोबर्द्धनराई । निरखि रूप अति
 अनूप छाके सुर नर बिमान बल्लभ पद किंकर दामोदर बलिजाई ३९
 श्रीकृष्णजीको ध्यान भेरे निशि दिना री साई । मनके महल प्रीतिकंज
 तामें यदुराई ॥ ध्रुव ॥ सांवरे बरणा कोमल चरणा नखदेखे चकचौंधी
 होत पाय नूपुर पैजनी सो बिधिने बनाई । दाहिने पदपद्म ताते टेढ़े
 धरत आलीरी ऐसे चरणा दुखके हरणहैं सदा सुखदाई । लालइजार
 ताके बीच कंचनके तार लगे काछनी पचरंग तापर किंकिनी छवि
 छाई । बनमाल मुक्तमाल कंठवनी कौस्तुभमणि पीताम्बर चटकतामें
 दामिनी द्युतिपाई । बाजूबन्द अंगुरि सुंदरि नगनको अति चमत्कार
 अरुणा अधर मधुर सुर मुरली बजाई । कमल नयन बिसल कान्ति
 कुंडल प्रतिबिम्ब होत आनंदसों सुख मानो रहेउ री सुसकाई । घुंघर
 वारी अलक भलक किये चन्दन खौर और मोर मुकुट शीश धरे
 बनी सुन्दरताई । कहैं भगवान हित रामराय प्रभुको निहारि श्री गो-
 पाल २ स्मना रटलाई ४० सुमिशो नरनामर बर सुन्दर गोपाललाल ।

सबही दुख निदिजैहैं चिन्तत लोचन बिशाल ॥ भुव ॥ अलकन की
 भलकन लखि पलकन गति भलिजात भूबिलास मंदहास रदनहास
 कदल धति रसाल । निन्दत रबि कुंडल कवि गंडमुकर भलमलात
 पिच्छ गुच्छ कृतवसन्त इन्दु विमल बिन्दुभाल । अंग अंग जितअनंग
 साधुरी तरङ्ग रङ्ग बिमद मद गधन्द होत देखत लटकीली चाल । रतन
 रसन पीतवसन चारुहार बर अंगार तुलसी रचित कुसुम खचितपीन
 उशीन गाल । व्रजनरेश बंशदीप तुन्दावन वरसहीप अतिव्यभान सान्म
 पाव सहज दीनजन दयाल । रसिकरूप रूपराशि गुणनिधान जान
 राय गदाधर प्रभु युवती जन मुनि मानसमन मराल ४१ दीन्हों दरश
 सपने में आइ । सगा यक मुख उपजयो मेरे मन गये कहूं हरि बिरह
 बढ़ाइ । हाहा पाइ परतिहैं तेरे क्योंहूं करि लावे न बुलाइ । अब न
 परत सोपै न रहेउ सगा बिनुभेटे जिय अतिअकुलाइ । यहदुख काहि
 कहैंसखि तोबिनु भरेतही सक सहाइ । कहा बिलंब करति जैबे को
 तोसों कहति सखि सोहैं खाइ । वह मूरति गड़िरही हियेमें निकसति
 नहीं न और उपाइ । उदिये है मुनि बिनतीमेरी यशुमतिमुत रसकिन
 कोराइ ४२ रागभैरव चर्चरी ॥ हरिके बिमुखनको मुख जिनि दिखावे ।
 जिनिदिखावे नाथ जिनि दिखावे । जिनकी संगति होत दुरमतिहिये
 हरिके गुणारूप यश मुरत बिसरावे । जिनके परसत सदा सरस मन
 बिययरस मगलहैं जात अतिपाप उपजावे । करत कछुना डरे बैर में
 चित्तधरे सतसंग परिहरे युवति चितलावे । साधु निन्दाकरे भंड भावे
 सदा प्रीतिराखे बियथी वचन मनभावे । अनेकसाधनकरि जारिराख्यो
 भाव साराक्रमें जलअग्नि उयों बुझावे । तेईजन बिमुख जे करे और
 बात कथा न सुहात संसार धावे । साधुसंगतिरहे वचन हरिगुण कहे
 संतत निबहै रसिक सोई सुखपावे ४३ नाथहाहा सोहिं दरश दीजै ।
 दोषजिनि मनधरो सहज करुणाकरो बिगिर साधन सोहिं दासकरि
 लीजे । दुखित सगा होत जियवदन देखिविनारैनिदिन तपतचित्त कैसे
 जीजै । कासोंकहिये हिये राखिये कौनविधि रहत नहीं क्योंहूं करि
 देह कीजै । लेत न उसास उरकैसेहू समाइ नहीं शोचि दुःखभरिण पीजै ।
 वदनलावति अमृतरसिकप्रीतम सुखदपान बिनुसकलतन कैसे भीजै ४४

नेक बोलोनाथ अमृत रसधेन । औरन मुहाइ परी करतिहो हाथ नित
चितन लागत कहूँ नेक नहीं छैन । दीन जन मन मनोरथ को पूरन
कारन और तिहुँलोकमें देखियत हैं । जेमिलत आइ ते लेत मरबसु-
भाव करि कहौ कैसे हरिमनु रहै ऐन । अर्घवश रावरीहै तिहारेहाथ
नाथकहौ और समरथ है को दैन । रमिकपिया जिनि करौ कठिनमन
दीनपर परसिकौ तजत यह लखन तो घटै ४५ खललना जागोभयो
भोर । दूध दही पकवान मिठाई लीजिये साखन चोर । बिकसे कमल
बिमल बासी सों बोलन लगे पक्षी चहुँधोर । रमिक प्रीतमसों कहति
नँदरानी सुनि आवो दैदी गोद हाहा नन्दकिशोर ४६ तुन्दलन ज-
वनिकुंज टाढ़े उठि भोर । बाँह जोरि बदन भारि हँसत सुरत रतिकी
करि चितवत पुनि कछु लजाइ नैननि की कोर । करत कलहुँ बेसा
नाद अधरन पाइ सुधा स्वाद पक्षी गगा प्रमुदित बन बोलत चहुँधोर ।
रमिक प्रीतम छवि निहारि प्रकट्यो धन जिय बिचारि बार बार उ-
मँगि तहां नाचत हैं मोर ४७ श्रीबल्लभ सुयश सन्तत नित उतिगाऊं ।
मन क्रम बचन क्षणा एक न बिसराऊं ॥ ध्रुव ॥ पुरुषोत्तम अवतार
मुक्त भल फलित जगत बंदन श्रीबिलेश दुलराऊं । परसि पदकमल
रज निरखि सौंदर्यनिधि प्रेम पुलकित कलुष कोटिक नशाऊं । श्री
गिरिधरन देवपति मानमर्दन करन घोषरक्षक सुखद सुयश सुनाऊं ।
श्रीगोविन्द ग्वाल संग गायले चलत बन निरखि नैनन सिराऊं । श्री
बालकृष्ण सदा सहज बालक दशा कमल लोचन सुहरयित रुचि ब-
ढाऊं । भक्ति मारग सुदृढकरन गुणाराशि ब्रजमंडल श्रीगोकुलनाथही
लड़ाऊं । श्रीरघुनाथ धर्मधुर धारशोभा सिंधु रूप लहरिन दुख दूर
बहाऊं । पतित उदरगा महाराज श्रीरघुनाथ विशद अम्बुज हाथ सि-
रसि परसाऊं । श्रीधनश्याम अभिराम रूप बरया स्वाती आशालागि
रसना चातक रटाऊं । चतुर्भुजदास परेउ द्वार प्रणिपत करे सकल
कुलको चरणाभूत भोर उठिपाऊं ४८ भजि श्रीबिटूल चरणासरोज ॥
नखमरिा दीधिति दमित मनोज । इच्छसि यदि सततं सुखसारं । त्य-
जसि न किमिति विषय धृतभारं । यदि बाँछसि हरि भक्ति सुरत्नं ।
कुरुचपलं शरणागत यत्नं । प्राप्य सुदुर्लभ नर बरदेहं । परिहरि

मकल निगम सन्देश । सानय हृदय सगोदित लचन । तदयामिनो चे-
दतिशयप्रचन । जलपदभावयभव जलधि । अन्तमसय भवाधिन बा-
बधि । नाथ तवाहं भतिरगा राव । पर्य सतत मिसं सयि भाध । तव
गुणा गणा कथितामृत माथे । प्रार्थ्य मिदं दिशितव रघुनाथे ४६ श्री
बिलेश बिलेश रसना जपमेरी । ग्रन्थनिको यहिसार याहीमें होत
पारबारबारबार कहत तोसों तूहित मेरी । अनतहु न भलो तोर बेग कहेउ
करहि मोर भजिले शिरमेर नाथहि सकल सुखदकेरी । अगतजनक
सहाय प्रेम पुंज सुयश गाय दूरिकरी असद बात विश्रया अरुमेरी ५०
प्रकटित सकल सृष्टि आधार । श्रीमद्वल्लभ राजकुमार । ध्येय सदापद
अम्बुजभार । आगिरातगुणा सहिसा जू अपार । धर्मादिक द्वारे प्रति-
हार । पुष्टि भक्तिको झंगीकार । श्रीबिटूल गिरिधर अवतार । नंद
दास कीन्हों बलिहार ५१ जय जय श्रीवल्लभ प्रभु श्रीबिलेश नाथे ।
निजजन पर करत कृपा धरत हाथ माथे । दीय सबै दूर करत भक्त
भार्वाहिये भरत काज सबै सरन सदा गावत गुणा गाथे । काहेको देह
दमत साधन करि सूरख जड़ बिद्यमान आनंद तजि गहत क्यों अपाथे
रसिक चरणा शरणा सदा रहत है बड़भागी जन अपनो करिगोकुलपति
भरत ताहि बाथे ५२ श्रीबिटूलनाथ जूके चरणा शरणा श्रीवल्लभनंदन ।
कलिकलुष खंडन परम पुरुष जैताप हरणा । सकल दुख दारुणां भव
सिंधु तारणां जनहित ली तादेह धरणां । कान्हरदास प्रभुसब सुखसागर
भूतले दृढभक्ति भाव करणां ५३ जै जै जै श्रीवल्लभनंद । कोटि कला
सुन्दावन चन्द । निगम बिचारें न लहे पार । सोढाकर अक्का के द्वार
लीलाकरि गिरिवाखो हाथ । सीति स्वामि श्रीबिटूलनाथ ५४ नैन
भरि देखौं गिरिधरको कमलमुख । मङ्गल आरतीकरौं प्रातही धारत
निरखत होत परम सुख । लोचन विशाल छवि संचि हृदयमें धरो
कृपा अवलोकन चार भृकुटि नख । चतुर्भुज दास प्रभु आनन्द निधि
रूप निरखिकरो दूरिसब रैनिको विरह दुख ५५ संगल आरती गो-
पालकी । नित उठि मङ्गल होत निरखि मुख चितवन नैन विशाल
की । संगलरूप श्यामसुंदर को मंगल छवि भृकुटि भातकी । चतु-
र्भुजदास सदासंगलनिधि नानिक गिरिधर लालकी ५६ सदनगोपाल

हमारै राम ॥ धनुषबाणा धरि विमल बने कर पीतपवन अरु तनवन-
 प्र्याम । अपनी भुज शिन जलनिधि बांध्यो राम नचाये कौटुककामा
 दश गिर हति सन असुर संहारे गोवर्द्धन धारिउ कर बाम । तब रघुवर
 अब यदुवर नागर लीला नित्य विमल बहु नाम । परमानंद प्रभु भेद
 रहित हरि निज जन मिलिगावत गुणाग्राम ५७ ॥ अथरासके कीर्तन ॥ राग
 मैरव ॥ राम रंगनि मिलवत नई । नाचति ब्रजललना तनु धेई । मुखरित
 कटि तटमणि मेखला । अभिनव जति चञ्चल करतला । नूपुर सञ्चि-
 त मोहित जना । लीति उरगति प्रमुदित मना । कृष्णदास प्रभुदे धँक-
 वारी । रिभये लाल गोवर्द्धनधारी ५८ नीकों मन लाव्यो गिरिवर
 गावै । ततथेई ततथेई भैरव रागमिलि मुरलिका बजावै । नाचत नृप
 वृषभानु नन्दिनी ओघर गति रँग उपजावै । नूपुर कृशांत मुखरमणि
 कंकणामखी यूथ सुख राशि बढावै । मुरनदेत मधुसूत मधुपकुलंयक
 ताली सबके मनभावै । मुरति सिंधुधारी प्रियपदरज कृष्णदास न्यो-
 छावर पावै ५९ ग्यारीश्रीवा भुजभेलि नृत्यतपीय सुजात । मुदितपर-
 स्पर लेत गतिमें गति गुणाराशि राधे गिरिवरन गुण निवान । सरस
 मुरली धुनिमों मिले सप्तसुर गावत भैरवराग अवधरतानबंधान । च-
 तुर्भुज प्रभु प्र्याम प्र्यामाकी नटनदेखिरीभे खगमृग बनयकितव्योम
 विमान ६० निरतगुपाल संग राधिका बनी । बाहुदंड भुजनगेलिमं-
 डल राधिकरत केलि सरस गान प्र्यामकरै संग भामिनी । मोरमुकुट
 कुण्डल छवि काछनी बनी बिचित्र भलकत उरहार विमलयकित
 चांदनी । परस मुदित सुर नर मुनि वरयत सब कुसुमनिवारत तनसन
 प्रागा कृष्णदास भामिनी ६१ नाचत वृषभानुसुताहंससुता पुलिनमध्य
 हंस हंसिनी मयूर मंडली बनी । गावतगोपाललाल मिलवत भूपताल
 लाल लज्जित अतिसत्तमदन कानिनी अनी । पदिक लाल कंठमाल
 तरल तिलक छलकभाल अवरु फूल बरदुकूल नामिकाबनी । नील
 कंचुकी सुदेश चंपकली गलित केश मुखरित मणि दाम बामकाटि
 सु काछनी । सरकत मणि बलयराघ मुखरित नूपुर सुभाव जावक
 युत चरगानखन चन्द्रिकाधनी । मन्दहास भौहपास रासलासधू बिलास
 अलग लाग लेत सुपर राधिका गुनी । कामअंध कितव बन्धरीभ हे

अरसागहे साधुसाधुकहतफिरत राधिकाधनी । भेंटतर्गाहबाहुमलउरज
 परस भई फूल व्यासबचन सानुकूल रसिक जीवनी ६२ सोरन के
 मराडलभे नाचत पियप्यारी । मिखवत सब तानमान सीखति लखि
 दुरनि सुरनि हां हांहां होके आप देते हैं करतारी । मधुरे सुर राग
 लेत रागिनी सों मिलेतानरीभक्त लपटात दोऊ भरि भरि अंकवारी ।
 श्री बिटुल मग खेलति बोलति तताथेई थैई विहरत गिरिवारीलाल
 सुन्दरि नवनागरी ६३ ॥ अथ श्रीयमुनाजी के पद ॥ रागमेरव ॥ जैजै श्रीसूरजा
 कलिन्द नन्दनी । गुलमलता तरु सुवास कुंजकुसुम मोदमत्त गुंजत अलि
 सुभग पुलिन बायु मंदनी । हरि समान धर्मशील कान्ति मंजुल जलद
 नील कटि नितंब भेदतनित गतिउत्तंगनी । सिक्ताजनु मुक्ताफल कंकरा
 द्युत भुजतरंग करालन उपहार लेत पियाचररा बंदनी । श्रीगोपेन्द्र
 गाँधी संग असजल कहि सिक्ता रग अति तरंगिनी सुर कि सरस सुकं-
 दनी । छोट स्वागी गिरिवर धर नंदनन्दन आनन्दकन्द यमुने जन दुरित
 हरसादुख निकांदनी ६४ अतिमंजुल प्रवाह मनोरमा सुखावगाह न-
 वनव द्युति राजत अति तररा नन्दनी । श्यामवररा भलक रूपलाल
 लहरिवर अनपसेवत सांतत मनोज बायुमंदनी । कुमुद कुंजवन बिकास
 मंडित दिशि दिशि सुवास कूजित कल हंस कोक मधुर कन्दनी । प्र-
 फुलित अरविन्द पुंज कोकिल शुकसारगुंज सेवित अलि भृङ्ग पुंज
 विबिध बंदनी । नारद शुक सनक व्यास ध्यावत मुनि करत आस
 चाहत हैं पुलिनवास सकल दुख निकंदनी । नाम लेत करत पाप अयि
 किन्नर मुनि कलाप करत जाप परमानन्द आनन्द कन्दनी ६५ श्री-
 यमुनादेवीको नमजार्इ । नाम रूप गुण ले हरि जूको न्यारी अपनी
 चाल चलाई । उनबश देशकियो आताको तुमहिं परसिको उतहि न
 आई । जे तन तजत तीर तुम्हरे ते तात किरनि में गैल लगाई । मुक्ति
 बधूको करिदूतह्य अवमनको लै आनि मिलाई । आपुन प्रयास आन
 उज्ज्वल करितात तपत आपु शीतलताई । जलको कलकरि अनल
 अधनको यहतुनिको कोउको पतिआई । निशिदिन पक्षपात पतितन
 को तदापि गदाधर प्रभु सबभाई ६६ यमुना यमुना नामभजो । हरि
 वतकरो अराधन इनको और कपंथ तजो । देह सकलपदारथ तुमको

और को नाहिं भजो । ब्रजपतिकी अतिही द्यारी हैं तातेमकल अंगार
 सजो ६७ ॥ समुदाय रागभेग ॥ अरुभियोनीलाम्बर पीताम्बर सहियां ।
 कुंडल सोलरलट बेसरिसों पीतपटहारहुमें बनमाल बहियांमेबहियां ।
 हनगतिअतिछवि अङ्गच्छरही फबिउपमा बिलोकिवेको पटतरनहिं-
 यां । कामके कलोल छूटे सेजहू के मुख लूटे सूरप्रभु बिलसे कदमहूं
 की छहियां ६८ आये लाल डगमगत प्रातभालमहावर पीक कपोलन
 अधरन समिनयननि अरसात । सोती माल लखैउर बिनु गुण शिथि-
 लित पागशिथिल सबगात । बोलत बोल अटपटे मोहन तापर सौंह
 करत न लजात । ओछे नीलबसन तुम आये द्वैजचन्द हृदि सांभ लखात
 सांचे बोल निबाहे ब्रजपति मायाकर आयेपरभात ६९ अरुता उदय-
 आये मेरेनन्दलाल । शिथिलितअंग उनींदे नयनन धरराधरत डगमगी
 चाल । अधरन अंजन पीक कपोलन लटपट पाग जावक नित्यभाल ।
 तापर सौंह करत हौ ब्रजपति उरसि बिराजत बिनुगुण माल ७०
 प्रातमसय आवत गिरिधारी । कुंज महलतेचले भोर उठि संगराजित
 दृषभान दुनारी । घूमत नयन उनींदे मिसि के निरखि सहचरी गइ
 बलिहारी । पीक कपोलन लगे दुहुनके ब्रजपति शिथिल गात अति
 भारी ७१ घूमत रतनारे नयन सकल निशाजागे । लटपटी सुदेशपाग
 अलकन की भूतक बीच पीकछाप युग कपोल अधरन समिलागे ।
 बिन गुणभाल बनी बीच नखन रेखठनी पलटि परे बसन पीठकंकरा
 सों दागे । घाकबन्धो चन्दनबनमाल लग्यो चन्दनसों डगमगात चररा
 धरत प्रिया प्रेमपागे । बचन रचन क्रियो साज बेग आये भोर सांभ
 बलिबलि या बदन कमल शोभित अनुरागे । जाय बसो बेगही धाम
 बिलसे जहां सकलयास गोविन्द प्रभु बलिहारी कर जोरे सांगे ७२
 आये भोर उनींदे श्याम । सकल निशाजागे द्यारी सग हारेहो रति
 रसा संग्राम । शिथिलित पागभाल पर जावक हिये बिराजत बिन
 गुणभाल । कुंकुम तिलक अलकपर सेंदुर सुभगपीक सोहत दोउगाल ।
 कंकरा पीठ गह्यो उर नखकृत जनु घनसांभ द्वैजको चन्द । छीतस्वामि
 गिरिधरन भले तुम मोहिं खिभावत हो नैदनन्द ७३ ॥ रागभेखवचनी ॥
 सुमिरि मन गोपाललाल सुन्दर अति रूपजाल सिटिहै जंजाल सकल

निरखत मङ्ग गोपबाल । सार सुकट शोणधरे वनमाल सुभरा गारे सब
को मनहरे देखि कुंडलकी भलकगाल । आभूषण अंग सोहैं मोतिन
के हार पोहैं कंठसरी सोहैं दृगगोपी निरखत निहाल । कीत स्वामी
गोबर्द्धनधारी कुँवर नन्दसुयन गाइनके पाँके पाँके भरत हैं लटकीली
चाल ७४ प्रातभयो जागो बलिमोहन सुखदाई । जननी कहै बारबार
उठो प्राणके आधार मेरे दुखहार श्यामसुन्दर कन्हदाई । दूध दही मा-
खन घृत मिथी मेवा बरान पकवान भाँति विविध रस मताई । कीत
स्वामी गोबर्द्धनधारी लाल भोजन करि खालन के मङ्ग बन गोचारन
जाई ७५ ॥ रागभोग ॥ भई भेंट अचानक आय । हौं अपने गृहते चली
यमुनाके उतते चले चारन गाय । निरखत रूप ठगोरी लागी उनको
डगरभर चढ्योनजाइ । कीतस्वामि गिरिधरन कृपाकरि मोतन चितये
गुरिसुसकाइ ७६ जागिये ब्रजराज कुँवर कमल फूले । कुसुद नन्दसकृचि
भयेभङ्ग लता भूले । तमचुर खगरोर सुनहु बोलत बनराई । रांभाति गौ
सीरदेन बहुरा हित धाई । बिधु मलीन रवि प्रकाश गावत ब्रजनारी ।
सूरप्रियामप्रातउठे शंबुज करधारी ७७ कमलनयन हरिकरो कलेषा ।
माखन रोटी मद्य जम्घो दधि भाँतिभाँति की मेवा । खारिक दाख
चिरौंजी किसमिस उज्ज्वल गरी बदाम । सफरी सेव कोहार सिंघारे जे
खरबूजा नाम । अरुमेवा बहुभाँति भाँतिके यटरसके मिष्ठान । सूरदाम
प्रभुकरत कलेऊ रोभे प्रियाम सुजान ७८ उठहु नंदकुमार भयोभिनुसार
जगावत नंदरानी । भारीके जल बदन पखारो सुत कहिकहि शार-
गपानी । माखन रोटीअरु मधुमेवा जोभावे सो लीजै आनी । सूरप्रियाम
मुख निरखि यशोदा मनहींमनहिं सिहानी ७९ भोरभये निरखत हरि
को मुख प्रसुदित यशुमति हरयित नन्द । दिनकर किरशि कमल
जनु विकसित उरप्रति अति उपजत आनन्द । बदन उधारि जगावत
जननी जागहु मेरे आनंद कन्द । मानहुं मथि सुरसिंधु फेन फटिदयो
दिखाई परमा चन्द । जाको ईश शेष ब्रह्मादिक गावत नेति नेति
अतिछंद । सोई गोपाल सुगोकुल भीतर सूर सो प्रकटे परमानंद ८०
तहीं जाहु जहां रैन हुते । काहेको दुराव करत नंदनन्दन मिटे न अंक
उर चिह्न जुते । बिनगुणाहार मनोहर उरपर परम चतुर हिय लाइ

सुते । बिथुरी अलक अटपटे भूयसा लुटे काम कूचबीच उते । दशन
 दाग नख रेख छधीली भासिनि भवन भाव भुगुते । सुरप्रियाम देखि
 अति शोभा लोचन ललित उनींद हुते ८१ तहीं जाहु जहँ निशा बसे ।
 जानतिहो पिय चतुर शिरोमणि नागर जागर राग रसे । घूमत हो
 मानो पिया उर गनी नव बिलास अम सेज उसे । प्रियाम उरस्थल पर
 नख शोभित गगन दुइज जनु इन्दु लसे । काजल अधर प्रकट देखियत
 हैं नागनेलि रंग निपट खसे । लटपटि पाग महावर के रंग मानिन
 पगपर शीश घसे । बिगलित केश मरगजी माला पीठि बलयके
 चिह्नबसे । सुरदास प्रभु प्रिया बचन सुनि नागर नगधर नेक हँसे ८२
 क्यों सुदुरत हो प्रकट भये । कहतहैं नैन निशाके जागे मानो सरसिज
 अरुणा नये । जावक माल नागशाशि लोचन मसिरेखा अधरन जोरये ।
 बलया पीड़नितंब चरणा मरिा बिनु गुणा कंठहार बनये । भुज ताटक
 ग्रीव सोइ चन्दन चिह्न कपोल दशन ग्रसये । आलिंगन चन्दन कूच
 चर्चित मानो द्वैशाशि उर उदये । चरणा शिथिल अरु चाल डगमगी
 घूमत घायल समर सये । सुरसखी कैसे मनमाने सुन्दर प्रियाम कुटिल
 मगाये ८३ लालन आयेरी रैन गवांई । निशि भई छोम बोले तमचुर
 खग खालिन तबहिहँसी मुसकाई । अरुणा किरणा मुख पंकज बिक-
 सित मधुप लियो सुन्दर रस जाई । चन्दमलीन भयो दिनमरिा ते
 कुमुद गये सबहो कुम्हिलाई । चारि याम जागत बीते मोहिं तुम त्रिनु
 मोको कहू न सुहाई । सुरप्रियाम या दरश परश बिनु सब निशि गई
 मेरी नोंद हेराई ८४ रति संग्राम बीर रसमाते । हो हरि सुरशिरोमणि
 अजहँ नहिंन संभार सकल अंगनाते । औरै बरणा भये थे लोचन अपने
 अपने सहज बिनाते । मानहुँ भीर परी औधनकी ताते भये क्रोध
 अति राते । परिमल लुब्ध जहां अलि बैठत उडिउडिउडि नहिं सकत
 तहां ते । जनु मनमथ शर बागे फाल्यो फाक होत सब बाहर घाते ।
 बैसिजात अलसात उनींदे क्रम क्रम क्रम करि उठत तहां ते । मनमुरछा
 कटीक्ष नाटस ले काढत नहिं चुभ्यो हियराते । डगमगात घूमत जो
 घायल शोभा अति भई सुभट कलाते । सुरदास स्वामी रराजीते अब
 सकुचत धौ हो तुमकाते ८५ जानति हैं जैसे गुणानि भरेहौ । काहे को

दुराग वारन मनभीहव लोई पै कहै तुम जहाँ दुरेहो । भिषि जागर
निन भय न भाव न आलसवन्त सबधक धरेहो । चंदन तिलक मिल्यो
कहै वदन कागकर्तल कुब उरउभरेहो । तुम आत कागल किशोर नंद-
धुत कहै कोनके चित्तहरेहो । औचकही जियजानि मूरप्रभु सोहैं कहन
कोहोत खरोटोठहहाहा हो पिय बात कहौ । आप ककू जिय तरक
गहतहो तो तुमसोहो मौनगहो । कहाचूक हमको पियलागैरुखिरहे
हो काहे भू । तबहीं ते बैसैहो ठाढ़े मोतिन को नहिं चाहे जू । अथ
हमरा अगराध हानोने कृपाकरो मुख बोलो जू । मूरप्रयाग अब तजो
निरहै एछो हृदयकी खोलो जू ८७ जाहु तहां कहा शोचतहो । जा
भंग रीते बिहात न जानीभोरभये त्यहिमोचत हो । औरनि को किनु
युग बीतत है तुम निहचीते नागरहो । घूमत नयनजम्हात वारहीं रति
संग्राम उजागर हो । में अब कहत तुम्हारे हित की ताहीके गृह सो-
यरहो । मूरप्रयाग बैसो त्रिय कोहै वह रस बाही बिनु न लहो ८८
तमों पर पिय रखैहो । बोलत नहीं सकबधों हवैरहे अति रंगहीन
ककू से हो । तब निरखत औरहि हित चित बिनु किधों कहूं तुम
खुदेहो । तब हँसि बदन मिलत आजहि ककू और भये नितुखसेहो ।
उगसयात पग उतहि परतहै चितचंचल उतहसेहो । मूरदास प्रभुसांचि
सांप्रयाये विध अंग अबला मूसे हो ८९ जागिये गोपाल लालआनंद
निधि तमबाल प्रभुसति कहै बार बार भोरभयो प्यारे । नयन कमल
से पिशाल प्रीति वापिका सराल बदन ललित चंदननै ऊपर कीटि-
वार ढारे । उगत अरुणा बिगत शर्वरीश सकि किररिा हीन दीप
मलिन छीन छुति समूह तारे । मनहँ भान घनप्रकास बीते सब भय
बिलास आस आस तिमिर तोय तरािा तेज जारे । बोलत खग सुखर
निकर मधुकर हवै बे प्रतीत सुनहु परम प्राणा जीवन धन मेरे तुम
बारे । मनो वेद बंदी मुनि सूत वृन्द मागध गन विरद बंदत जै जै जै
जैत कैरभारे । बिगसित कमलावली चल प्रफंद चंचरीक गुंजत कल
कामल धुनि त्यागि कंजन्यारे । मनो बिराग पाय सकल शोक कूप
गृह बिहाय प्रेम सत्त फिरत भृत्य गुंरात गुंरा तिहारे । सुनतबचन प्रिय
रसाल जागे अतिशयदयाल भागे जंजाळ बिपुल दुख कदंब रारे । त्यागे

भ्रम कंद दंद निरखिकै सुखारविंद मुरदास आतिअनंद सो गदभार ८०
जागिये गोपाल लाल प्रकटभयो हंसमाल भितै गयो अंधकार उठो
जननि मुख देखार्इ । मुकुलित भै कमल जाल कुमुद तृन्दावन त्रिहाल
मेढहु जंजाल विविधि तापतननशार्इ । टाढे सबसखा द्वार कहत नन्द
के कुमार टेरत हैं बार बार आइये कन्हार्इ । गैयनि भई बड़ी वार
भरि भरि पययजन भार बहुरा गगा कर पुकार तुमबिनु यदुरार्इ ।
ताते यह अटकपरी दुहुन काज सौंह करी उठि आवहु क्यों न हरी
बोलत बलभार्इ । मुखते पट भटकि डारि चन्द्रबदन दै उचारि यशुमति
बलिहारि बार लोचन सुखदार्इ । धेनु दुहन चले धाय रोहिणी की
लई बुलाय दोहनी मोहिं दे सँगाय तबहीं ले आइ । बहुरा दियो यत
लगायदुहंतबैठिकै कन्हायहंसत नंदराय तहांमाता दोउआइ । दोहनी
कहुं दूधधार सिखवत नंद बार बार वह छबि नहिं वार पार नंद घर
बधार्इ । तब हलधर कहेउ सुनाय धेनु वन चलो लिवाय भेवा लीन्हें
सँगाय विविधि रस मिठार्इ । जेवत बलराम प्रयास संतन के सुखद
धाम धेनु काज नहिं बिश्राम यशुदा जल ल्यार्इ । प्रयासराम मुख
प्रखारि खाल बाल लये हँकारि यमुना तट मन बिचारि गाइन हँ-
कगार्इ । शृङ्ग बेरा नाद करत मुरली सुर मधुर धरत ब्रजांगन मन हरत
खाल गावत सुखार्इ । तृन्दावन तुरत जाय धेनु चरति लखा अधाय
प्रयास हरष पाय निरखि मुरज बलिजार्इ ८१ जननि जगावति उठो
कन्हार्इ । प्रकट्यो तरंगिा क्रिरागा गगा छार्इ । आवहु चन्द्रबदन दि-
खार्इ । बार बार जननी बलिजार्इ । सखाद्वार सब तुमहिं बुलावत । तुम
कारणा हम धाये आवत । सुरप्रयास उठि दरशन दीन्हें । माता देखि
मुदित मन कीन्हो ८२ भोर भये भोगीरस बिलसि भये टाढे । जागे आ-
मिनी जगाय भामिनी अंग संग समाय आस शिथिलडरनि टरत देत
आलिंगन गाढे । घूमत रसमत्त मगन सूधेहु डग परत पगन छिनछिन
चित्तु चौपचोजनि मोज मनोजनबाढे । अति रसमें रसिक राय शोभा
बरणी न जाय बरु बिहारनि दासि लड़ाय प्रेम रँगरँगि काढे ६३ ॥
रागभैरव चर्चरी ॥ प्रातहि किशोर जोरि कुंजखेलनी । अंगअंग गुण तरंग
गौर प्रयास रूपराशि मदन केलि मुरत सिंधु कूल भेलनी । तरंगि

नन्दनी सुतीर गावत प्रिय भृङ्ग कीर विगुणा मरुत गन्धरीर अमज अंशु
भेलनी । बरबिहार रानी सुनुपुग दिवाजानी बिठल बिपुल वारनेक
भुजा कठमेलनी ६४ ॥ रागभैरव ॥ श्यामसंग श्यामनचत राससंग गुणानि
बचन शशि अखंड मंडल हंसिशरद यामिनी । तरंगा तरुणा कूलमृ-
दुत अरुम सितरज पुनीत त्रिविध प्रवन तापबदन कामकामिनी । च-
रणा चलिता बाहु बलित ललित गान कलित तान मानसुख निधान
तिरपलेति भामिनी । बर सुगन्ध रंगाताल मणि मृदंग विंग चाल
लात सुघर औघर राजराज गामिनी । रिभै पतिहिं गति दिखाय
लेत कुंवर कंठलाय श्याम गरा मांभ मनहुं दुरति दामिनी । नैन
सैन भ्रूविलास मंदहास सुखनिवास मुनि ध्यान मुनि बोलत जै व्यास
स्वामिनी ६५ जै गोविन्द माधो मुकुन्द हरि । कृपासिन्धु कल्याण
कम अरि । कृपनिपाल केशवकमलापति । कृष्णकमल लोचन अग-
शात गति । रामचन्द्र राजीवनयन बर । शरणा साधु श्रीपति
शारंगधर । बनमाली बामन बिटुलबल । वासुदेव बासी ब्रज भूतल ।
खरहूयगा विशिरा शिर खंडन । चरणाचिह्न दण्डक भुवमंडन । वकी
दशन बकबकन बिदारन । बरुणाबियाद नन्द निस्तारन । ऋषिमख
ब्रान ताडका तारक । बनव्रति तात बचन प्रतिपालक । गोकुलपति
गिरिधर गुणा सागर । गोपी रमन रास रति नागर । रघुपति प्रबल
पिनाक बिभंजन । जगहित जनक मुता मनरंजन । कालीदसन केशि
कर पातन । अध अरिष्ट धेनुक अनुधातन । करुणामय कपिकुल
हितकारी । बालविरोध कपट मृगहारी । गुप्तगोप कन्या व्रतपूरणा ।
द्विजनारी दरशन दुखचूरणा । रावणा कुम्भकरणा शिरछेदन । तरवर
सात एकशर भेदन । शखचूड चाणूर संहारणा । शक्र कहै मेरो रक्त
कारणा । उत्तर कृपा गीध कृतकारी । दरशन दै शवरी उद्वारी । जे
पद सदा शंभु हितकारी । जेपद परति सुरसरी गारी । जेपद रमा हृदय
नहिं टारी । जिनपद ते तिहुं भुवन तियारी । जेपद टुन्दाबनहिं बिहारी ।
जेपद पांडव गृह पगुधारी । जिनपद शकटासुर संहारी । जेपद अहि
फन फन प्रतिधारी । जेपद भक्तनके सुखकारी । जिन पद रज गौतम
व्रियतारी । सूरदास सुर यांचत वे पद । करहु कृपा अपने जन पर

सद ६६ सोहत धुंधुधारे वार । अरुआरहे सुकृता हल गिरवारानवार ।
 रतिसानीभंग नन्दनन्दके छूटेवन्द कांठुको दूरेहार । गिरिप्रिये नामे जोऊ
 नैना उरजिरहे चलति योवन मदभार । मूरप्र्याम सग गह सुख देखत
 रीझे वारम्बार ६७ नैन प्र्याम सुख लूतत हैं । यही जात गोको जति
 भावे हमतेकाह लूतत हैं । सदा अछौनिधि पाइ अचानक आपुनि कथे
 चुरावत हैं । अपनेहैं ताते वह कहियत प्र्यामझाहं भरहावत हैं । किनु
 किनु प्रति सुखसागर लूतत वरजे भौहैं तानत हैं । सूरदास जो देत कछू
 यक कहौ कहा अनुमानत हैं ६८ श्रीकृष्ण नाम रसना रसखोई मन्य
 कलिमें । जाके पदपङ्कजकी रेणुकी बलिमें । सोई सुकृत सोई पुनीत
 सोई कुलवन्ता । जाके निशि दिन रहे कृष्णनाम चिन्ता । योग यज्ञ
 तीरथ व्रत कृष्णनाम साहीं । विना कृष्णनाम कलिउधार औरनाहीं ।
 मन सुखनको सार कृष्णकबहुं न बिसरिये । कृष्णनाम लै लै भवनागर
 को तरिये । श्रीगोवर्द्धन धरन प्रभु मङ्गलकारी । उधरे जन सूरदास
 ताकी बलिहारी ६९ ॥ रागमेखतालश्रुताला ॥ कृष्णनाम भांषरीहं कृष्ण
 नाम भावे । बलिहारी ताकी जो कृष्णनाम गावे । बसुधाको वार कृष्ण
 मेरे मनके आधार । कृष्ण श्रवण मङ्गलरूप कृष्ण सब विचार । मनन
 की मूल कृष्णहरन सकल खल कृष्ण ब्रज समुद्रको वार । कृष्ण शिव
 को आधार मेरे रसनाको भाग्य कृष्णध्यान धार । मनको छुड़ा कृष्ण
 रसना तंत्रनको तंत्र कृष्ण सब मंत्रन सुधार । यह रामदास कहत कृष्ण
 ताही जपत भगवान कृष्ण वारम्बार हरे हरे हरे कृष्ण कृष्ण रामराम
 राम । नारायण नारायण बासुदेव बासुदेव गिरिवरधर गिरिवरधर
 प्र्याम प्र्याम प्र्याम । दीनबन्धु दीनबन्धु बैकुण्ठधाम । होत प्रात वड
 पुनीत लेत हरिको नाम । दामोदर दामोदर चक्रपाणि चक्रपाणि
 नरहरि हरि नरहरि हरि मुररिपु मुरारी । मधुसूदन मधुसूदन सांवरे
 बनवारी । यमुना के नीरेतीरे वृन्दावन धाम । मूरप्र्याम रत रहत
 राधावर नाम । भोर उठि सुमिरन करो होय सबही काम । वंशोबट
 यमुनातट सुन्दर घनप्र्याम १०० ॥ रागमेख ॥ बांसुरी बजाई आज रङ्गमों
 मुरारी । शिवसमाधि भलिगई मुनि मनकी तारी । वेदभनत ब्रह्माभूले
 भूले ब्रह्मचारी । सुनतही आनन्दभयो लगीहैं करारी । रक्षा सबताल

ब्रह्मी भूमी प्रप्यकारी । यमुना जल उलटि बहेउ सुधना सम्हारी ।
 श्रीनृन्दापन वंशी गङ्गी तीनलोक ध्यारी । खाल बाल मगनभये ब्रज
 की मग नारी । सुन्दरप्रथाम मोहनी मूरति नटवर बपुधारी । मूरकि-
 शोर सदनमोहन चरगत बलिहारी १०१ ॥ रागभैरवतालतिताला ॥ दधिक्के
 भतवारे कान्ठ खोलो ध्यारे पलकें । शीश मुकुट लटा कुटी और कुटी
 अलकें । सुरनर मुनिद्वार टाढ़े दरश कारणा किलकें । नामिका के
 गोती सोहे बीच लाल ललकें । कटि पीतांबर मुरली कर अवगा कुं-
 डल भलकें । मुरदास सदनमोहन दरश देहो भलकें १०२ ॥ रागभैरव ॥
 रागद्वया कहिये विशिभोर । वे अवधेश धनुषकर धारे वे ब्रज जीवन
 साखन चोर । उनके छत्र चमर सिंहासन भरत शत्रुहन लक्ष्मणा जोर ।
 उनके लकुट मुकुट पीताम्बर गायनके संग नन्दकिशोर । उनसागरमें
 भिला तराई उन राखयो गिरि नखकी कोर । नन्ददास प्रभु सयतजि
 भजिये जैम निरतत चन्दचकोर १०३ देखोरी यह कैसा बालक रानो
 यशोभति जायाहै । सुन्दर वदन कमलदल लोचन देखत चन्द्रलजाया
 है । पूरताप्रह्म अलख अविनाशी प्रकट नन्दधर आया है । मोरमुकुट
 पीताम्बर सोहै केशरि तिलक लगायाहै । कानन कुण्डल गलविच
 भाला कोटि भागु छवि छायाहै । शङ्ख चक्र गदा पद्म विराजै चतु-
 र्भुजह्व बनायाहै । परमेश्वर पुरुषोत्तम स्वामी यशुसतिसुत कहलाया
 है । सच्छ कच्छ वाराह औ बासन रामरूप दरशायाहै । खंभफारि
 प्रकटे नरहरि बपु जन प्रह्लाद कुड़ाया है । परशुराम बुध निकलंक
 होय भुवको भार मिलायाहै । काली मरदन कंस निकन्दन गोपीनाथ
 कहाया है । मधुसूदन माधव मुकुन्द प्रभु भक्तबहुल पदपायाहै । दा-
 मोदर गिरिधर गोपालहरि विभुवन पति मनभायाहै । शिव सनका-
 दिक अरु ब्रह्मादिक शेष सहसमुख गायाहै । सुरनर मुनिके ध्यान न
 आवत अद्भुत जाकी माया है । सो परब्रह्म प्रकट हो ब्रज में लूट लूट
 दधि खाया है । परमानन्द कृष्ण भक्तमोहन चरगा कमल चितलाया
 है १०४ ॥ रागभैरव तालप्रकृताला ॥ मैं योगी यश गायारे बाबा मैं योगी
 यश गाया । तेरे सुत के दरशन कारणा मैं काशी से धाया । परब्रह्म
 पूरता पुरुषोत्तम सकललोक जामाया । अलख निरंजन देखनकारणा

सकल लोक फिर आया । धनि तेरो भाग यशोदारानी जिन भेसा सुत
जाया । गुनन बड़े छोटे मतभूलो अलखरूप धर आया । जो भाव सो
लीजै रावर करो आपनी दाया । देहु अशीश मेरे बालकको अचि-
चल बाढे काया । नामैंलेहों पाटपटम्बर नामैं कंचनमाया । मुखदेखूं
तेरे बालकको यह मेरे गुरुने लखाया । करजोरे बिनवै नन्दरानी सुन
योगिनके राया । मुख देखन नहिं देहों रावर बालकजात डेराया ।

कहुं बालक जात दिटाया । जाकी दृष्टि सकल जग ऊपर सो क्योंजात
दिटाया । तीनलोकका साहब मेरा तेरे भवन छिपाया । कृष्णालोक
ल्याई यशुदाकर अंचल मुखकाया । करपसार चरान रजलीनो सि-
ङ्गीनाद बजाया । अलख अलख कर पाय छुये हैं हंसि बालककिल-
काया । पांचवेर परकर्माकरके अति आनन्द बढ़ाया । हरिकीर्तीला
हरमन अटक्यो चितनहिं चलत चलाया । अखिल ब्रह्मांडके नायक
कहिये नन्द घरहि प्रकटाया । इन्द्रचन्द्र सरज सनकादिक शारद पार
न पाया । लाग अवरण मंत्रदीजो सुनाया हंसिबालकमुसकाया । कौन
देशके योगीहो तुम कौन नाम धरवाया । कहाँ बाम यह कहत य-
शोदा सुन योगिन के राया । तुमहीं ब्रह्मा तुमहीं बिष्णु तुमहीं ईश
कहाया । तुम बिष्णुभर तुम जगपालक तुमहीं करत सहाया । सूर
श्याम कहे सुनो यशोदा शंकर नाम बताया १०५ ॥ रागभैरव ॥ नन्द
द्वारे एक योगी आयो सिंगीनाद बजायो । शीशजटा शशिबदन सो-
हायो अरुणा नयन छबिछायो । रोवत खीभक्त कृष्णामांवरो रहतनहीं
हुलरायो । लियो उठाय गोद नंदरानी द्वारे जाय दिखायो । अलख
अलख करिलियो गोद में चरणा चूमि उरलायो । अवरण लाग कहुं
मंत्र सुनायो हंसि बालक किलकायो । चिरजीवो सुत महारि तिहारो
हो योगी मुखपायो । सूरदास रसिचल्यो रावरो शंकर नाम बतायो
१०६ ॥ रागभैरव तालतिताला ॥ रामचरणा अभिराम कामप्रति तीरथराज
बिराजै । शंकर हृदयभक्ति भूतलवर प्रेम अक्षयबट छाजै । श्यामवरणा
पद पीठि अरुणातल लसत विशद नखश्रेणी । मनो रबिसुता शारदा
सुरसरि मिलिचलि ललित बिबेगी । अंकुश कलिश कमलध्वजरेखा

सूरसागर रागकल्पद्रुम नित्यकीर्तन ।

४७

भँवर तरंग बिलासा । मज्जन सुर मज्जन मुनि बरजन मुदित मनोहर
वामा । बिन विराग तप याग योग व्रत बिन तन तोरथ त्यागे । सो
मथ सुलभदास तुलसी प्रभुपद प्रयाग अनुरागे १०७ ॥ रागभैरव ॥ यदुन्नर
मेरे दीनदयाल शरणागत को करै निहाल । केवट गोध शीकृ कपि
राक्षस कोट पतङ्ग किये प्रतिपाल । मुनिमनसा पूरणा करिबेको गो-
पीनाथ भये नँदलाल । तन मन धन तुम्हरो तुमकोदे प्रेमरङ्ग छूटे यम
जाल । चलनारे प्रभुके दरबार । कालबली ठाढ़ो चौबदार । इहहजूर
में याद तिहार । चलने की कछु करो तयार । जिसमें हुरमत रहै तु-
म्हारा । ऐसी करणी करले यार । जिसको खावन्द पकर बुलावै ।
यतनकरे कछु बनि नहिं आवै । बिन मरजी कोउ रहन न पावै । क्या
गरीब क्या साह कहावै । जब यम आवे कछु न बसावै । सारामें बांध
पकर लेजावै । तबतौ तूकहु कौन छुड़ावै । ढिग बैठा कलपेकलपावै ।
भोजदातकि तेयारी कीजै । दर्शन तलब बेग चललीजै । जो खावन्द
तोहि देखि पसीजै । कंठ लगाय रङ्गमें भीजै । करणीका कर करम
कठारा । शील सिपर तपतेग तुम्हारा । धरै तोपकर ध्यान पियारा ।
ज्ञान घोड़ हूजे असवारा । जो तू सेवा होय चलेगा । मालिक मनमें
बहुत खिलेगा । काम क्रोध मदलोभ मोहबश यह संसार सपनदहेगा ।
निशिबासर हरिनाम उचारके रसना जपले परमपद लहेगा । सूरदास
मुख जो तू चाहै गोविन्दके गुण उयो तू गोविन्दके गुण गावै । प्रतित
उधारन बिरद कहावै चरणा शरणानित ध्यावै १०८ ॥

इति राग कल्पद्रुम नित्य कीर्तनान्तर्गत रागभैरव समाप्त ॥

अथ रामकली राग प्रारम्भ ॥

श्रीकृष्णायनमः ॥ मोहन जागि हो बलिगई । खाल बाल सब द्वार
ठाढ़े बेर बनकी भई । पीतपट करि दूर मुखते छाँडिदे अरसई । अति
अनन्दित होत यशुमति देखि युति नितनई । जगे जंगम जीव पशु खग

और ब्रज सबई । सूरके प्रभु दरश दीजे अरुणा कीरणा छई १ ॥ गंगा-
कनो ॥ भोर भयो जागोहो ललना कहा तम अजहू रहेछो सोइ । पिछो
धार अपनी धौनीको जैसे देह बल होइ । बेनी एहरेछे हंग अंजन लसि
बिंदुका मुख धोइ । हुंसत बदन मुख सदन निहारो नानहीं नानहीं
दतियां दोइ । हेरत खाल बाल खेलन को भोरभजहू होइ । प्रजजन
सब ठाही मुख देखन अति आरत सब कोइ । उठि बैठे लय सोइ यथो-
दा सुन्दर सुत तिहुं लोइ । रसिक प्रीतम लशिगरे जगनि से सांभल रांटी
रोइ २ गैया तेरे लाल को मुख देखन हों आई । कालिह मुख रंघि
गई दधि बेचन जातहि गयोहै निकई । दिनतेहुनो दासजाभभयो
गाइनि बहिया जाई । आईसर्वेधंभाय साथकी गिरिधर देहुजाई ।
सुनि ब्रिय बचन बिहंसि उठि बैठे नागरि निकट बूलाई । परमानंद
सयानी खालिनि चली संकेत बनाई ३ लाल को दरशन भयोगबेरो ।
बहुत लाभ पाऊगी माई दही विकैहै मेरो । गली जु सांकरि एक जो
नीकी भेंट भयो भट भेरो । अंज दे चली सयानी खालिनि हरिको
बदन फिरि हेरो । प्रातहि मंगल भयो सखीरो हूँ हूँ सज काज
भलेरो । परमानन्द प्रभु मुख निरखत मित्यो भयसागर भरो ४ दुगसग
चलति ओरही भांती । नवनि कुंज ते राधा भासिनि अरुणा उदै धर
जाती । रतिकी केलि सुमिरि मृगनैनी बार बार सुसजाती । बदन
ज्योतिते सुनुरी भासिनि मंदत उडपति कांती । निशिक चिह्न प्रकाट
देखियत हैं कामकेलि कुल कांती । प्रीतम प्राणा रतन संपुं कुच भेंट
जुगई छाती । नंदकुमार सुरत भंग लीने शरद बिसलकां राती । कृ-
ष्णादास गिरिधर प्रियके संग अधर सुधारस माती ५ हरिअनुभवाति
युवाति बडभागी । राधा रसिक नन्दनन्दनके सुखनिधि चरसाकसल
अनुरागी । कोककला संगीत निपुणा सखि प्रिय संगस रतिरस नि-
शिजागी । कृष्णादास प्रभु गिरिधर प्रियमुख देखत नयन टकरकी
लागी ६ बेसइयो मेरी रैन बिदाहोत लागी । घटिगई ज्योति संदभये
तारेफूल बासना पागी । सोरह शिगार बतीस अभूयसा अपने प्रीतम
संग जागी । सूरदास प्रभु तुम्हरे मिलनको कृष्ण हेमारे अनुरागी ७
होबालजाउँ कलेऊकीजे । खोर खांड घृत अति मीठोहै अवाकि कौर

सूरसागर राधकल्पद्रुम जिन्यकीर्तन ।

८६

बद्ध तो जे । बेनी बहे सुगो । मनभोरन मेरो कहो पत्तीजे । ओढ्यो दूध
सद्य धौरीको सातधंठ जो पीजे । हौं वारी या बदन कमलपर अँचल
प्रेमजलभीजे । बहुरि जाय खेलो यमुना तट गोविंद संगकरि लीजे ८
रवालिन पिछवारे ह्वै बोल सुनायो । कमल नयन हरि करत कलेऊ
कवरन सुख लो आयो । मैया एक गाय बन द्याई बकरा वहीं ब-
सायो । बेगुन लई लकुट नहिं लीनी अरबराव कोउ सखा न बुलायो ।
चक्रित नयन चहुँदिशि दितवत् सत्य डहै किधौं सपनो पायो । फले
अंग न समात रसिक बर त्रिभुवनपुर रसकव निछायो । मिलिबैठै सं-
केत सदनमें विविध भांति कीनो मनभायो । परमानन्द सयासी गवा-
लिन उलटिअड्डु गिरिवरपियपायो ९ ॥ राग रामकली चर्चते ॥ जयति आभीर
नागरी प्राणनाथे । जयति ब्रजराज भयण यशोमति ललितदेत नव
नीतिमिश्रीमुहाथे । जयति पात परभात दधिरयात श्रीदामासक अखिल
गोवन वृन्द चमेसाये । होर रसगीक वृन्दा बिपिन शुभस्थल सुन्दरी
केलि गुण गूढ साधे । जयति तरंगिजा तटनिकट रासमंडल रच्योतत्त
ता थैथैथै तत्तताथे । चतुर्भुजदास प्रभु गिरिवरन बहुरि अब श्रीबिटूल
प्रकटव्रज किप्रो मनाथे १० ॥ राग रामकली ॥ साखन तोनकदेरीसाय । त-
निक करपर तनिकरोटी सांभाति चरगाचलाय । कनक भुवपर तनिक
रेखाकरन पकरेव वाय । कंठ्योगिरिशेष शंकोदधिहेत अकुलाय । मेरे
मनके तनिक मोहन लागो मोहिंबलाय । तनिक मुखपर तनिक बतियां
बोलतहैं तुतराय । यशुमतिके प्राण जीवन धनलियो उर लपटाय । नंद
कुँवरगिरिवरन ऊपर मूरबली बलिजाय ११ ॥ राग रामकली चर्चते ॥ लाल-
हिजगाइ बलिगई साता । निरखि मुखचन्दकविमुक्ति भई मनहिं मन
कहाति आधे बचन भयोप्राता । नयन अरसात आतबारबार जंभातकं-
दसौंलखजात हरय गाता । बदन पोंकियो प्रमुन जलसों धोइके कहेउ
सुमकाय कछुखाहु ताता । दूध ओढ्योआनि अधिक मिश्री सानि लेहु
साखन पानि प्राण दाता । सूर प्रभु किये भोजन विविध भांति सो
पियोपय मोद करि घंटसाता १२ आजलाडिली लालहि जगाय जागी ।
सकल निशि कुंज बाँस प्रियेबल बाँहुकसि बिलसि अंगछा अनुरा-
गरागी । रामरोमनि अरुभि सकति नेकन सुरभि अति अवर मधुर

रस प्रेमपापी । बिहारनि दासि सकास गौरप्रयास सदास चितै चि-
 तवत जाम लतनि लागी १३॥ अथ छडितागमगानकनी ॥ राधिका प्रयासलन
 देखि मुसकानी । हारबिन गुणा लेखअधर अंजनरेखनी त भोशुतरा-
 तबानी । पागलटपटीवनीउरह दूरीतनी अंगकीर्ति देखि जीय लजानी । पाणि
 उपरि कंकन पीठ बक्रबिहवल दीठ ईठकी ईउता लखीकानी । पाणि
 पल्लव अधर दशनसोंगहिरहों अरव बैन बोलि बचन हारभानी । सूर
 प्रभु अंकभरी प्राणापति नागरी नवल नागर उरह घालिसानी १४
 गगामकनी चर्चनी ॥ प्रयाससुन्दररैनि कहाँ जागे । देखिबिनु गुणामाल अधर
 अंजन भाल जावक लग्यो गाल पीक पागे । चाल डगमगी अति
 शिथिल अङ्गअङ्ग सबतोतरे बोल उर नखनि दागे । गड़्यो कंकनपीठ
 निपट बिह्वल दीठ शर्वरीलाल नहिं पलकलागे । कहिये साँचि बात
 काहेजीय सकुचात कौन ब्रिय जाके अनुराग रागे । दास कुंभनलाल
 गिरिधरनरतेपर करत भूँढोसोंह मेरेआगे १५ ॥ रागगामकनी ॥ जैयेतहाँ
 जहाँ रैनिजागे । बनी बिनुगुणा माल ओठ अंजन भाल गेंदुर लग्यो
 भगड पीकपागे । आरक्त नयन अति शिथिल सब अंग गति डगमगत
 राति नहिं पलक लागे । चपल चातुर दीठ उपरि कंकन पीठ देखि-
 यत उर साँभ नखन दागे । सकल ब्रज ब्रियन में कौनगी नारि वह
 जाकेतुम लाल अनुराग रागे । चतुर्भुज दास प्रभु गिरिधरनकाहे को
 करत भूँढी सोंह मेरेआगे १६ भले आये भोर गिरिवरधरन । अरुणा
 नयन जभात आलस धरत डगमगे चरन । पागलटपटी पलटि परे पर
 अटपट आभरन । शिथिल अंग अंग सबहि देखियत निशाके जागर-
 न । नव ब्रिया संग प्रहर चारी पलन न पाये परन । चतुर्भुज प्रभु जीति
 रतिरन कियो रति पति शरन १७ नीके आये गिरिवरधारीनागर ।
 जियकी कृपा हम तबहीं जानी भोर खोलाई आगर । तुम्हरे चिन्तत
 रैन नैन अरुणाभये सकल निशाके जागर । जिन तुमपै यह खेतखेत
 हैशेखी कौन उजागर । तुम अपने रंगही रीझे चतुर नारिके बागर ।
 बलि बलि जाउं मुखारबिन्द की सुरति कलेवरसागर । गुणा कहि-
 यत कहि पार न आवत मसि पर्वत क्षितिकागर । सूरदास प्रभु हमें
 लाजआवत है तुमहो सदा उजागर १८ प्रातभये आये लाल काँड़हु

अटपटी । आजकी रैन गोहिं नखत गनत गई मारग जोवत आंखिन
 लागी चटपटी । उर नाख पदवर सुनु गिरिवरवर गलित बरुहा चूड़
 पाग बनी लटपटी । छप्पादाम प्रभु जानत रनित दाम निशान सदन
 जूपाति रन लीनीमानो अटपटी १६ लालरस मसे नयन आज निशि
 जागे । अति विशाल अरसात अरुणा भये रतिरन के रंग पागे । सुंदर
 श्याम सुभमता अटपटि अङ्गअङ्ग नख सत दागे । मानहुं कोपि निर्दार
 सङ्मुख शर साथ भये अरिभागे । चतुर्भज प्रभु गिरिधरन अधिक छबि
 बदनभृङ्गती लागे । मानहुं सन्मथ चाप भेंटधरि रहेउ जोरिकर आगे २०
 आजु हरिनैन उनींदे आये । अंजन अधरललाट महावर नयन तमोर
 खदाये । शिथिलित बसन सरगजी माला कंकन पीठ मुहाये । लटपटि
 पाग अटपटे भूयगा बिनु गुगा हार बनाये । शिथिल गात अरु चाल
 डगमगी भृङ्गती चन्दन लाये । सुरदास प्रभु यहै अचंभो तीन तिलक
 कहँ पाये २१ आवत ललन पिया रंगभीने । शिथिल अंग डगमगत
 चरगा गति मोतिनहार उर चीने । पारिजात मन्दारमाल लपटात
 मधुप मधु पीने । गोविन्द प्रभु पियतहीं जाहु जहँ अधर दशन सत
 कीने २२ लालन जागत रैनबिहानी । देखत पथ अंखियां अतिहारी
 कहाँ लाल रति मानी । कस्यो काल कोहि लाल सखिन संग पूरय
 बिबिध कहानी । रंग अनग सरत चित आयत छतियां अधिक पि-
 रानी । भोर भये आये मेरेगृह देखतसखी हिरानी । रसिक प्रीतमदोऊ
 अंखियां अरुणा भई कहे कहाँ रैन सिरानी २३ नयन उनींदे भयेरंग
 राते । मनहुं गुलाल कुसुम पर सजनी फिरत भृङ्गमदमाते । प्रेमपराग
 पांखुरी पल दल प्रफुलित सदन लताते । सदासुवासबिलास बिलोकनि
 प्रकट प्रेमके नाते । तैसिय सासतमन्द जम्हावरि मिलत मुदित छबि
 ताते । सींचे सुरपयास सानिनि निज हितकरि केलिकलाते २४ ॥ राग
 रामकनी अथ समुदायपद ॥ काहि मिस यशुमतिके जाउँ । सकल सुखनिधि
 सुख निरखिके नयन लया बुझाउँ । द्वारे आरजसभा जुरीरही निक-
 सिबे नहिँ पाउँ । विनुगाये पतिवर्त्त कूटे हँसे गोकुल गाउँ । प्रयासगात
 सरोज आनन ललित लेले नाउँ । सुरहि लगन कठिन मन की कहाँ
 काहि सुनाउँ २५ ॥ रागरामकली ॥ सखी हरिदरशको मोहिँचाउ । सांबदे

सों प्रीतिवादी लाख लोग रिमाउ । प्रयाससुन्दर कमल लोचन अंग
 अंग नितभाउ । मर हरि के रूप राखी लाज रहे कि जाउ रहे नन्द
 सदन गुसजन की भीर । तागें लालन बदननीके देखन न पाउ । बिन
 तेरे जिय अकुलाय जाय दुख पाय यदपि बड़ेई खन उठिउठि आउँ ।
 लौ चलरी मोहिं अमुना के तीर जहाँ बलभीर सुन्दर बदन देखि नैन
 सिराउँ । नन्ददास प्रयासेको पानी पिवाइ । ले जिभाय जिय की तू
 जानै तोमों कहाँ हों जनाइ २७ मन मृग बेधों मोहन नयन बान सों ।
 गूढभावकी सैन अचानक तक तान्यो भृकुटी कामानसों । प्रथमनाद
 बल घेरि निकटले मुरली सप्तक सुरबन्धानसों । पाछे वंक चितै मधुरै
 हंस घातकरी उलटी सुदानसों । चतुर्भुजदास पीर या तनकी मितत
 न औघवि आनसों । हौं है सुख तबहीं उर अन्तर आलिंगन गिरिधर
 मुजान सों २८ अंगुरिया छाँड़िरे मति अरग थरग । नपर बाजत ल्यों
 धरणी धरत पग ॥ ध्रुव ॥ कबहुँक यशोदा माहिँ भुज पखारि हंस
 डगमगायके उलटि डग । जननी मुदत मन चितै चितै शिशुतन रा-
 खति कंठ लगाय सुन्दर प्रयाससुभग । मृदुबानी तुतरात माँगिनवनीत
 खात भुजनभाव जैसे जनावत बालखग । चतुर्भुज प्रभु गिरिधरके बाल
 बिनीद नंद आनन्द मुख देखें ठहो डगडगर २९ उपमा धीरजतज्यो नि-
 रखि कबि । कोटि सदन अपुनो बल हारेउ कुंडल तेज छप्यो रनि ।
 स्वजन भीन मृगजैहों जेत दीनरहे क्योहूँदवि । गिरिधर पतर हरहि
 लजावत सकुचत नहीं खोटे कबि । ईपदहास भदनर्यात निरखत बज
 शिखर सकुचाने । सूरप्रयास लीला बपु काछियो पतरमेति बिराने
 ३० ठाढ़ेरी खरिकसाई कौनको किशोर । सांवरे बरनमन हरन बंशी
 धरन कामकरन केसी गति जोर । पवन परसि जात चपल होत देख
 पियरे पस्को चटकीलो कोर । सुभग सांवरी कोटी घटाते निकसि आई
 बे छबीली कटाको जैसे छबीली ओर । पूंछति पाहुनी गवारिहा हा
 हा भरी आली कहा नाउँ कोहै चित्तवति को चोर । नन्ददास जाहि
 चाहि चकचौंधी आय जाय भूत्योरी भवन गवन भूत्यो रजनी
 भोर ३१ साई गिरिधरनके गुसागाऊं । मेरे तो व्रतयहे निशिदिन औरन
 कचि उपजाऊं । खेलन आंगन आउ लाडिले नेकहूँ दरशन पाऊं ।

सूरमागर रागकल्पद्रुम निर्यकीर्तन ।

६३

कृष्णदास हिलगके कारणा लालच लागि रसाऊं ३२ करतहो सबे
मया नी बात । जोलो देखे नाहिन सुन्दर कमल नयन मुमुकात । सब
चतुराई विसरि जात है खानपान की तात । बिनु देखे किनु कल न
परतहै पलभरि कलप बिहात । सुनि भामिनिके बचन मनोहर मखि
मन अति सकुचात । चतुर्भुज प्रभु गिरिधरनलाल संग सदा बसो दिन
रात ३३ ॥ राग रामकनी चवरी ॥ निपट छोटे कान्ह सुनिजननी कहूँ बात ।
होत जब समुदाय करत तब शिशुभाय सकांत पायके नैन भरि मुस-
कात । देखिरस रीसिकी प्रीति विपरीति गतिमति मानि छाँडि संग
लगा रहो निशिप्रात । जातनहीं बिसरि देखि बहुत यतन धरि समुझि
कहुं चन्द देखे कमलहू बिगसात । दुरत धुंधर जवै लाल यशुमति हृदय
उभकि धसि धरिया पाउँ धरि मुख किलकात । मनहुँ आयाह घन
बादरी मरतजि होत आनन्द सब फल अति जल जात ३४ खालिन
आप तनदेखि मेरे लालतन देखिये । भीत जो होय तो चित अवरोखिये
ध्रुव ॥ मेरो तो साँवरो पांचही वरखको अजहुँ यह रोइ पयपान मांगे ।
तुमहो मस्त अति ढीठरी खालिनी फिरत अठिलात गोपाल आगे ।
मेरे तो प्रियामकी तनिकसी अँगुरियां ये बड़े नखन के दागतेरे । मष्ट
करि सुनेगो लोग अगवारको कहां पाई भुजा प्रियाम मेरे । ठगढगे नैन
बैनन हँसी खालिनी मुख देखे शोभा अतिही बाढी । सुनिसखी सूर
सरबस हरेन साँवरे अन उतर महरिके द्वारटाही ३५ मेरीमति राधिका
चरगा रत्नमें रहे । यह निहचे करेव अपने मनमें धरेव भूलिके कोउ
कहु औरह फलकहे । करम कोऊ करो जानहुँ अज्ञसों मुक्तिके यतन
करि तृप्ता दहो । रमिक बल्लभ चरगा कमल युग शरगा परि आश
धरि यह मद्धा पुष्टिपथ फल लहो ३६ मानिनी मानि जिमि मानिये
तो करे आपु पायन परे नाथतेरे । दरश जाको करन जपत तरसे सदा
सोतो यकटक तेरो बदनहेरे । हौ कहति सुमति उठि बेगि मिलि सीत
सों मेराहित बचनजिनिभूलि परे । रमिक प्रीतम संग विहारि रसरंग
सों क्यों न दुख अनगको सब निवेरे ३७ जयति श्रीराधिके सकलमुख
साधिके तरुणारिणि नित्य नौतन किशोरी । कृष्णातन लीन घनरूप
की चातकी कृष्ण मुख्याहम किरणाकी चकोरी । कृष्णा दग भृङ्ग बि-

आमहित पञ्चिनी कृष्णा दुग मगज बंधन सुडोरी । राधा अनुराग राग-
 रंदकी सधुकरी कृष्णाशुभागान रससिंधुबोरी । परस अदभुत अलौकिक
 मेरीगति लखि मन सु भांवरे रंग अंग सोरी । और आप्रचर्य काहें ये
 न देख्यो मुन्यो चतुर चौंसति कला तदपि भोरी । विभुख पराधित ते
 चित्त जाकोसदा करत निजनाहकी चित्तचोरी । प्रकति यह गंधधर
 कहत कैसेबने अमित सहसा इतेबुद्धिबोरी ३४ चतुर चारु बन्दा-
 बली मुख चकारे । अस्तुति में चरसा रति ब्रजयुवति भूयशी कामत
 लोचन ननः नृप किशोरे । मानु मेरो कह्यो अतिशील रस रीति क्यों
 करावति सखी बहुनिहारे । मिले किमि धाय अन्न कुँवर छूडारख
 रसिक वर भूपाल चित्तचोरे । नवरंग कुंज सहँ तब नामहित नाथ
 गुणात कल गुरलिका टाट सोरे । सुनि कृष्णादास शुभलरन वर अणि
 घरीलाल गिरिधरनसां हाथजोरे ३५ ॥ राग रामकली ॥ देखो मेरे भाग की
 शुभधरी । नवल रूप किशोर सूरति कंठ ले भुज धरी । जाकेचरसा
 सरोज रांगा शंभु ले शिरधरी । जाके चरसा सरोज परमत शिला मुनि-
 यत तरी । जाके बदन सरोज निरखत आश मगरी लरी । सूर प्रभुके
 संग बिलसत सकल कारज सरी ४० आज हरि पकरन पाय चोरी ।
 लेगयो चोरचोरि मनमाखनजां मेरेधनहोरी । बांधो कंचनखम्भकले-
 धर उभयभुजा दृगडोरी । राखी कठिन कठोर कूचन बिच सके नकाऊ
 कोरी । अधरदशन खडोरम गोरसंछुवे नकाहकोरी । कामदंडदंडाँ
 परधरको नाउँ न लेय बहोरी । तबकुल कानि आनि तिरछी भई क्षमि
 अपराध किशोरी । शिव पर हार्थ धराय सूर प्रभु भोचभोच शिर
 होरी ४१ गोपालेमाई वारेहीतेरेव । जानोंनहीं कौन पै सीखे चोरीके
 छलकेव । कबहुँक दुरते माखन खाते सुनि रहती करि कानि । अब
 हमपै क्यों सही परति है मरिा मारिाककी हानि । बुद्धि विवेक वचन
 चातुरि सब सर्वस लियोचुराय । सूरदास प्रभुके गुण ओगुण कासों
 कहियेजाय ४२ माखनचोररीमें पायो । जैयतु कहा जानकैसे पैयतु
 बहुत स्निहनीखायो । हौं जु कहतिही होत कहाहै नितउठि भाजन
 लगनछुआयो । बहुतबार कौरिलगि देख्योमेरीधात न आयो । बेनीकी
 कर गही चामटी घुंघटमांझ डरवायो । मत्तरोवो तुमसां कौन कहतहै

पल्ले उछंग हुलारायो । श्रीमुखते उधरीहै दतियाँ तब हँसिकंठ लगायो ।
 परमानन्द प्रभु प्राणा यौवन वन बिषाः बिमल यश रायो ४३ धनि
 यह राधि ना कै चरणा । सुभग शीतल अशित कोमल कमल केरो बरन ।
 जखचन्द्र चारु अनूप राजत बिबिध शोभा धरन । कृपात नूपुर कुंज
 बिहरत पगम कौतुक करन । रसिकलाल मनमोदकारी बिहर सागर
 तरन । विवश परमानन्द छिनु छिनु श्यामजीके शरन ४४ बहि बहि
 बातलागी करन । श्यामसुन्दर सबत मोहन आये तेरे घरन । उदित
 ऊपर चिकुर छूटे चिकुर ऊपर दुरन । काम को दल साजिआई आइ
 देदे लरन । विरहको संग्राम जीत्यो बांधि अपनी परन । सूरके प्रभु
 तरन तारन राखि अपनी शरन ४५ बोलत कोक कला निधान । सम
 बचन सुनि उठि चलिहै खखि छाँडि सुन्दरि मान । तवनाम सहित
 निकुंज महुँ पिय करत मुरलीगान । केलि कौतुक रसिकनी विय
 सुनिहिं देखिनि कान । शेष रजनीखसत उडपति जनुकिभयो चिहान ।
 कृष्णदास प्रभुगिरिधरनपर बारिहौ तन प्रान ४६ बहूँ जीत बहिमान
 धर आवे । सुन्दरप्रभास बहुरि सन्मुखकै अंबुज वदनदिखावे । तब
 लसुभातकरहु कोउ कैसे जब लगु वह दरशन नहिं पावे । दृष्टिपरे मन
 सधुकर तिहि छिनु सहज सरोजहि धावे । विभुवन सांभहो उत्तमयु-
 वता अरजप्रथहि दृढावे । कुंभनदास प्रभु गोवर्द्धन धरकुल मर्षादा
 दावे ४७ बेलाल तेरीपै जिनियाँ भुनकेदी । साथे वे तेरे मुकुट बिराजे
 रीझ गवा न लटकेदी । भईरी चकोर चतुर चन्द्रावलि गतिमति रति
 अठकेदा । आश करन प्रभु मोहन नागर चरणा कमल चितदेदी ४८
 हमारी दानदे रीगुजरेदी । नित उठि आवतजात चोर दधि बेचन आज
 अचानक भेदी । अति सतरात कैसे छूटोगी बड़े गोपकी बेदी । कुंभन-
 दास गिरिधरन लाल साँ भुज ओढ़नी लपेटो ४९ अहो दधि सयति
 घोघकीरानी । दिहप्रचीर पहिरे दक्षिणा को कटि किंकिनि रुन भुन
 बानी । सुतके कर्म गावति आनन्दभरि बाल चरित्र जानिजानी ।
 असजल राजे बदन कागलपर मगहुँ शरद बरयानी । पुत्र सनेह चुचात
 पयोधर प्रसुदित आतहरयाभी । गोविन्द प्रभु घुटरुन चलिआये पकरी
 लई मथानी ५० सोहिं दधि मथनदे बलिगई । जाउं बलिबलि बदन

ऊपर छांडू मयनी रई । लाल देहुं नव नीत लौंदा आरि कित तुमदर्श ।
 सुते हेति बिलोकि यशुमति प्रेम पुलकिन भई । लेउछंग लगाय उरसों
 प्राणाजीवन जई । बालकेलि गोपाल की ब्रज आश करन नित नई ५१
 श्री यमुना जी तिहारो दरश मोहिं भावै । श्रीगोकुल के निकट बस-
 ति है लहरन की छवि आवै । सुख करनी दुख हरनी यमुना जो जनप्रात
 नहावै । मन मोहन की खरी पियारी पटरानी जो कहावै । रुन्दाबनमें
 रास रच्यो है मोहन मुरलि बजावै । मूरदास प्रभु तुम्हरे मिलनको वेद
 बिमल यथागावै ५२ नमो तरागा तनया परम पुनीत जगपावनी कथा
 मन्त्र भावनां रुचिर नामा । अखिल सुख दायिनी सब सिद्ध हेतु श्री
 राधिकारवन रतिकरन प्रयासा । बिमल यश सुवन नव काननो भाद
 युत पुलिन अति रम्यप्रिय ब्रज किशोरी । गोप गोपी नवल प्रेमरति
 वंदिता तटमुदित रहत जैसे चकोरी । लहरि भांवरि ललित बालुका
 सुभग ब्रजबाल व्रत पूरना रासफलदा । ललित गिरिवर धरम प्रिय
 कलंद नंदिनी निकट कृष्णादाम बिहरत प्रवलदा । निरखि हरिचित्र
 युवति घोय मुरारि । थकित जित तित अमर मुनिगन नन्दलाल निहा-
 रि । बिनु बैन शिर केशलट चहुं दिशा करकी भारि । शीश पर जम्भ
 जरावरि रूपकिय विपुलारि । रुचिर रचित ललार केशरबिन्दु शोभा
 कारि । रोय मनहुं तृतीय लोचन रहे रिपु जन जारि । कुटिल हरि
 नख हिये हरिके सुभग इहि अनुहारि । ईश जनु रजनीश राख्यो
 भालतेजु उतारि । कंदसीपज नील मरिगमय माल रची मुम्हारि । नील
 गिरिवर गरल मानो लायलइ मदनारि । बदन रजतन प्रयामसरिडत
 शोभ यह अनुहारि । मनहुं अंग बिभूति राजत शम्भुसेइ मधुहारि ।
 विदश पति यशुमति के आगे अशनको करे आरि । मूरदाम बिरंचि
 जाको जपत यशमुखचारि ५३ बलिबलि चरितगोकुलराय । दावा-
 नलको पान कीनो पिबत दूध सिराय । पूतना के प्राण सोखेरहे डर
 लपटाय । कहति जननी दूध डारत खीभि कहु अनखाय । लयावर्त
 अकाशते गहि शिला पटक्यो आय । डरत लालन भुलत पलना खरे
 देत भुलाय । यमल अर्जुन तोरि तारे हृदय प्रेम बढ़ाय । भटक तात
 पलाश पल्लवदेहु देत दिखाय । कीरपिंजरा देत अंगुरी लेत प्रयाम

भजाय । बकासुर की चोंच फारो दृष्टि अचरज लाय । बिना दीपक
सदनमें हरि नेकु धरत न पाय । अघासुर मुखपैठि निकसे बालबद्ध
जिधाय । हरे बाणक बच्छनवक्त हेत दोरीमाय । फूटि प्रशुजवरगत
बनमें द्रुमनि टूटत जाय । लिख्यो द्वारे नागकारो देखि प्रथाम डराय ।
नित्य काली फराणि ऊपर सप्तताल नजाय । धरेव गिरिवर बोहनी
कर धरत बांहिपराय । शकटभंजन प्रसन्न कुचयुग कटिन लागतपाय ।
धोख नारिन संग मोहन रच्यो रास बनाय । कहति जननी व्याह की
तत्र लजत बदन दुराय । दृग्भ भंजनहतन केशी हन्यो पुच्छफिराय ।
भजत सखन समेत मोहन देखि ब्याई गाय । शेष सहिमा कहि न
आवे सहस्य रमना पाय । सक रमना मुरका कहे अग अगारात भाय
५४ लटकत आवत कुंजभवनतें । हरि हरि परत राधिका ऊपर जा-
गर शिथिल गवनतें । चौकि परत कबहु मारगबिच चले सुगन्ध प-
वनतें । भये नृत्ताभ भरम राधाके सकुचत दुवौ सरवनतें । आलस सिस
न्यारे न होतहैं नेकु न प्यारी तनतें । रसिक तरे जिन दशा प्रथामका
कजहुं मेरे मनतें ५५ चरगा कमलकी चेरी तेरी छाँड़हु लालन नंदके ।
कौसो है दान कहा किन लीन्हें दियो न कबहुं बचन अरबिंद के ।
देखत सखा सखी जन सगरी चरित चपल ब्रजचंद के । लालन स-
कुचत अंचरा रंचत पार न पावत विविध अटपटे फंद के । मटुकी
खसत हंसत सब ग्वालनि निरखि तिहारे छंद के । रसिक सदा नन
बसो विविध गुण रमानेधि आनन्द कंदके ५६ हाहाहो उरकोकोर ।
बहुत बेर भईहै भुंखे देख मेरी ओर । मेला मिथी दूध औठ्यो पिबो
हैंहै जोर । अबहि खेलन होरहैं तेरे ग्वालभयो अतिभोर । जगे पंकी
द्रुम द्रुमन प्रति करन लागे शोर । खेलबेको उठि भजोगे मानि मोर
निहार । कहूँ ललन बलाय तेरी जोरि अंचल ओर । बदन चन्द वि-
लोकि शीतल होत हृदयो मोर । बैठि जननी गोद जेवन लगे गोबिंद
थोर । रसिक बालक सहज लीला करत साखन चोर ५७ मानहुँ
बात लालन मोरी । करो भोजन रोख भूलो हैंजु मैयातेरी । दूधदधि
नवनीत घृत पक पकूमि राखी थार । कहा लोहत धरगामें मेरे लाल
होति अवार । गोद बैठो हैं जिवाऊं गाऊं तेरे गीत । खेलबेको तोहि

कार शरद समय शशि रातके । सन्तत मर सुभाव हगारा कत
 उरपति हैं काम भय । कैसिय भांति भजै कौट सांकोते शवै संभार
 जय ई ७ ॥ राग रामकली चन्दो ॥ जयति श्रीवल्लभ सुवन उदरन त्रिभुवन
 पारि नन्दके भवन की केलि ठानी । इष्ट गिरिवर धरणा सदा सेवक
 सरगाधार चारी बरणा भरत पानी । वेदपथ ध्यास से हनुमान दाम
 से ज्ञानको कपिल से कर्म योगी । माधु लक्ष्मणा निपुणि बहु व्रज-
 राज प्रकट सुखरास मनो इन्द्रभोगी । सिन्दु सम गम्भीर मिलन रंग
 गीर प्रीति को जलसीर व्रज उपासी । ध्यान को सनक से भक्त को
 मन्द से थाही ते बश कियो ब्रह्मरामा । मनहुँ इन्द्रको प्रीति कृष्णा
 गीं लारी प्रीति निगम की चली नीति प्रीति बिबेको । रचित अभि-
 यन्ते बड़े सनमान के शील अरु दान गोविन्द देकी । सदा निर्मल
 गति अष्ट सिद्धि नवनिधि द्वार सेवत जहां सुक्तिगानी । राम रास
 गिरिवरणा जानि आयो शरणा दीनके दुख हरणा धोष बारी ई ८
 अचिन्तर बल्लभा धीश चरणा अस्तुमें सर्वदा सुन्दरा कतिजगन्मोहन
 निहितता बिहित करणा । बिहित मायाबाद बादि दूषादि जन संग
 अनिलरस जन कसति हरणा । अखिल साधन रहित दीय शत कालुष
 जने विमति भर भरित निज दास शरणा । खंजमा काय कोषादि
 बहु लक्षयुत वासना भंग भवजलधि तरणा । बंदत हरिदास इति निज
 चरणा मात्रकह गोकुलाधीश पद कमल बरणा ई ९ जयति राधिका
 चरणावर चरणापरि चरणारति बल्लभाधीशसुत विट्टलेशे । दासजन
 लौकिका लौकिक के सर्वथा कैवर्चितो दयति हृदय देशे । स्थापयत
 जानसंसततकृत लालसं सहज सुखमा रुचिर रूप वेशे । भालगत ति-
 लक बुद्धादि शोभासहित मस्तकाबद्ध सित कृष्णाकेशे । सहज हासादि
 युत बदन पंकज सरस बचन रचना पराजित सुदेशे । अखिल साधन
 रहित दीयशत सहित मतिदास हरिदास गति निज बलेशे ७० मनो
 बल्लभा धीशपद कमल युगले सदा बसत मम विविध रसभाव बलितं ।
 अन्य महिमा भास वासना वासितं माभवतु जातु निज भाव चलितं ।
 भजतु भजनीय सति शयति रुचिरं चिरं चरणा युगलं सकल युगा सु-
 चालितं । बंदतु हरिदास इतिमाभवतु सुक्तिरपि भवतु मम देवसुत जन्म

कालंत ७१ जरांत भद्र साधना तनुज कृष्ण बदनानल श्रीमदित्तमगाह
 गर्भ रत्न । देव पुत्र जन समुद्धति करण कृतनिजा विभन बिहिन बहु
 विविध जल । महालक्ष्मी पती गोपिकानाथ श्रीमिट्टलागिध सुभग
 तनुज तापे । प्रथित सायाबाद वर्ति नदन धर्तसि विहित निजदाम
 जनपक्ष पाते । पुष्टिपथ कथन रचिता नेक सुप्रसन्न सधित भागवत
 पीयूषसारे । राध युवती भाव संतत भावित हृदय मदय मानस जनित
 मोद भारे । निज चरणा कमल धरणी परिक्रमण कृत्तिमात्र पावित
 धितत तीर्थजाले । कृष्ण सेवन विहित शरणागत शिखरा स्तपित संदेह
 दायक पाले । निज वचन पीयूष बर्थ पोषित रागत साहित्य पुरुष
 जन भुव्य युक्ते । विविध वांचो युक्ति निगम बचनो धितैरपिच दूरित
 दुष्ट जन दुरुक्ते । उद्देशेति भिरनि सर्वपावलभे सकल कर्त्तरि वया-
 ली । देव परि देवता भवति हरिदास के सकल मानन रहित जन
 कृपाली ०२ ॥ राग रामकल ॥ श्री मङ्गलम रूप सुरगे । नखशिख्य प्रति
 भावन के भूयता वृन्शवन एम्पति छंग छंगे । अरम परम गिरिधर
 जुकी पाई सेत भौन ब्रजराज उछंगे । पञ्चनाभ देखे कनिआवे सुबिरही
 रासरमा भुय भोगे ०३ हेरीनपनि कुंजलीला रक्षपरित श्रीबल्लभ बन
 मोरे । अंगअंग विषुन कृपुन प्रनशमिनि श्रुति फल फल प्रति दोरे ।
 करत अवेश बिरह बिरहिनि श्रुति भाता बहुत कटोरे । पञ्चनाभ
 मयुरेश बिचारत ओलहसगामर सुतओरे ०४ मुखिरी शोभास मय
 भाव प्रकट करि श्रीबल्लभ बर देह । अङ्ग अङ्ग प्रजबधु बिरहिनी
 व्यापी युगल सनेह । वृन्दारण्य इन्द्र प्रकटित ह्वै हृदय निगूढ कंदरा
 देह । पञ्चनाभ सुत हित कियो तारगनेह मुरलिका वेह ०५ श्रीगो-
 कृत्तनाथ निजबपु धरेउ । भक्त हेत प्रकटे श्रीबल्लभ जगते तिमिर जु
 हरेउ । नन्द नन्दन भयेतब गिरि गोप ब्रज उदखो । नाथ विट्ठलसुवन
 ह्वैके परम हित अनुमखो । अति अगाध अपार भव निधि तारि
 अपनो कखो । दास साधव जास देखे चरण शरणा पखो ०६ सुमिरों
 श्री बिल्लेय कुमार । अति अगाध अपार भवनिधि भयो चाहोपार ।
 मैं बलि रहत करुणा सिन्धु कोमल सदा चित्त उदार । गोकुलेश
 हृदय बसो मम माल पाल निहाल । माल तिलक न तजी कतहं परी

यदपि पुकार । अन्त भक्तन दिशो धीरज भये पर दातार । चार थुामें
विशद कीर्ति भक्तहित अवतार । तर्वाकशोर कल्याण के प्रभु गाव
बारम्बार ७७ रुक्मिणी चवन मिखावति पावन । सुतकी गहं अंशु
रिया डोतति शोभा कोटिक जा प्रल । तुमुनि तुमुनि पाग धरत धरणि
पर ले उछंग डरलायन । वृन्दावनको चन्द आबल्लभ ले बलाय हल
रायन ७८ ॥ श्रीहर्ष ॥ अथ प्रायमुनाजने कीर्तन राग रामकली ॥ चर्चरा ॥ भोम
देवि यमुने नमो देवि यमुने हरेश्या मिलनां तरायं । निजनाथ भाग
दायिनि कुमारी काग पूरके कुरु भक्तिरायं । ध्रुव सधुष कृत कलित
कमलावली द्रष्टृपदेश धारित श्रीकृष्णायुत भक्त हृदये । सतत सति श
यित हरि भावना जाततस्ता हृदय गदित निज हृदये । निज कू नभव
विविध तरु कुसुम युत नोपाभया विवक्ष बलि वृन्दे । स्मारमणि
गोपीवृन्द पूजित सर समीप वपुरा नन्द बंदे । उपरि चल दमल
कमलासुता द्युति सुगु परि मिलित जन भरीसामुना । व्रजवृत्ति कुच
कंभ कंकुमा सुतानुरः स्मारयसमार पितुरधुना । अधि रजनि हरि
बिहति मीक्षित कुततया भिध शुभग नयनान्य प्राशि शति तनुये ।
नयनयुग मल्यारिणि बहु तराशि वतानि रसिकता निधितया करुये ।
रजनि जागर जनित राग रजित नयन पंकजै रहति हरि मीक्षसे ।
मकरन्द भरमियेतालन्द परिता सतत मिह हयशु मुंचसे । तटगता
नेक शुक्रसारिका मुनिगरी स्तुत विविध गुणा सिन्धु सागरे । रागता
सतत मिह भक्त जन नाप हति राजसे राग रस सागरे । रति भर श्रम
जलोदित कमल प्ररिमल व्रज युवति जल बिहति मोदे । ताटक चलन
मुनि रस्त संजीत युत मद मुदित सधुष कृत विनोदे । निज व्रजजना
वनायात गोवर्द्धने राधिका हृदय गत हृदय कर कमले । रति सति
शयित रस बिटुल स्याशु कुरुबेरा निनदाह्वान सरले ७९ ॥ श्लोक ॥
व्रजपरिटटवल्लभंकदात्वचररासरोत्तहमीश्यास्पदमे । तत्रतटगतवा
लुकाकदाहंसकलनिजागतामुदाकरिष्ये । वृन्दावनेचारुवृद्धनेम
न्मनोरथंपूरयसूरमूते । दूरगोचरः कृष्णविहारसदस्थितिस्त्वदीयतटसव
भूयात् ॥ राग रामकली चर्चरी ॥ प्रियसंग भरिरंग करिकलोले । सबन को
सुखदेन प्रियको करत सेन चित न परत चैन जबहिं बोले । अतिहि

बिख्यात सब बात इन हाथ नाम लेतीह कृपाकार अतोले । दरश
 कार परशकार ध्यान हियमें धरे सदा ब्रजनाथ इनसंग डोले । अतिह
 सुखकरन दुखसवनको हरनयहै खीनोहे परन निजही जु कूले । ऐसी
 यमुना जानि तुम करो सुगगान रसिक प्रीतम पाय नंगसूले ८० ॥
 १॥ गमकली ॥ नयन भरि देखि अब भानु तनया । कालि पिये सों करे
 भवर तबहीं परे अम जलनि भरत आनन्द मनया । चलति टेढ़ी होइ
 लेति पियको मोहि इन बिना रहित नहिँ एक किनया । रसिक
 प्रीतम रास करत यमुना पास मानो निर्दनन की हौ जु धनया ८१
 प्रयास सुखधाम जहां नाम इनके । निशिदिना प्राणापति आय हिय
 में बसे जोई गावे सुयश भाग तिनके । यहि जगमें सार कहत बार-
 न्द्वार सवन के आधार धन निर्दनके । लेत यमुना नाम देत अभयपद
 भाग रसिक प्रीतम प्रिया जश जो जिनके ८२ कहत सुखसार निन्दार
 करके । इन बिना ऐसी कौन करहै मग्घी हरत दुखदन्द सुखकन्द
 वरथे । ब्रह्म सम्बन्ध जब करत है जीवको तबहिँ इनकी बाध भुजा
 फरके । दौरकार शोरकार जाय पियसों कहैं अतिह आतुरमनमें जु
 हरथे । नाम निर्मालन गले कोऊ नामके भक्तराखत हियेहार करके ।
 रसिक प्रीतम की होत जापर कृपा सोई यमुनाजूको रूप परये ८३
 यमुनासी नहिँ कोऊ और दाता । जे इनकी शरणा जातहैं दौरिके
 ताहिको तेहिक्षणा करि मनाया । यहि गरा गान रसना एक सहस
 रसना क्यों न दई बिधाता । गोविन्द बलि तन मन धन बारने सवनकी
 जीवन इनहीं के हाथा ८४ प्रयास संग प्रयास ह्वैरहोरी यहुने । सुरत
 अम बिंदुते सिन्धुसी बहि चली मानो आतुर आली रही न भवने ।
 कोटि कामहिँ वारों रूप नयन निहारों लाल गिरिधरन संग
 करत रमने । हरथि गोविंद प्रभु देखि इनकी ओर मानो नवदुल्हनी
 आई गवने ८५ यमुन यश जगत में जोई गायो । ताके आसक्त है
 रहत प्राणापति नयन में बैन में रस जो छायो । वेद पुराण की बात
 यह अगम है प्रेमको भेदकोऊ न पायो । कहैं गोविंद यमुनाकी जापर
 कृपा सोई बल्लभ कुलशरणा आयो ८६ चरणा पंकज रेणु यमुना देनी ।
 कलियुग जीव उद्धारणा कारणा काहतपाप अवधार येनी । प्राणापति

प्राणा ग्रह आयभतान नेह सकल यह मुखकी हो मु सेवी । गोविंद प्रभु
 बिना रहत नहीं एक छिना अतिह आतुर खंचल जो नंजी ८७
 धाड़के जाइवे यमुनातीरे । तिनहींकी सहिभा कहाँलों बरानये भाइ
 परसत प्रेम अंग नीरे । निशिदिना केलि करत मनसोहण प्रियके संग
 भक्तनकीहै जुभीरे । कीतखानी गिरिधरनको दिठलत । बिना नेकुनहीं
 धरत धीरेठठजोई गुण यमुना यह नाम आवे । ता ऊपर छपा करत
 श्रीवल्लभ प्रभु सोई यमुनाजी को भेद पावे । तन मन धन अब लाल
 गिरिधरनको देवारि चरना जब चितहिं लावे । कीतखानी गिरिधरन
 श्रीबिटूल नैननि प्रकटलीला दिखावे ८८ यनि यमुना गिधि देहेहारी ।
 करत गुणागान अज्ञान अघ दूरि जाहि मिलवत प्रिय और प्यारी ।
 जिनहिं सन्देह दारो दात जियमें धरो पूछि पद्य अनुसरो सुख जो
 कारी । प्रेमके पुंजमें राम रम कुजमें याहि राखति अति रङ्ग गारी ।
 यमुना अरु प्राणापति और सब प्राणासुत एहं जन जीव पर दया बि-
 चारी । कीत खानी गिरिधरन श्रीबिटूल श्रीबिके लिये यह संप्रदारी
 ८९ धरा अपार एक मुख कहाँलों कहिये । राजो साधन भजो नाम
 यमुनाजीको लाल गिरिधरन को तरहिं पड़ये । परम पुनीत प्रीति
 रीतिकी जानहीं इहकारि चरना कमल जो गहिंये । कीतखानी गि-
 रिधरन श्रीबिटूल यहिनिधि काँड़ि अब कहाँ जो जइये ९० चितमें
 यमुना निशिदिन जो राखो । भक्तके बग छपा करत हैं सधया सेषा
 यमुनाजीको है जो शाको । जाहि मुखतं यमुने नाम यह उचरे रङ्ग
 कीजै अब जाइ ताको । चतुर्भुजदास अब कहतहैं सबन सों ताते यमुने
 यमुने जो भाखो ९१ प्राणापति बिहरत यमुना के कूले । लुब्ध सक-
 रन्दके बग भये भ्रसर जे रवि उदय देखि मनो कल कल । करत
 गुंजार मुरली लेके सांवरो ब्रजबधू सुनत तन सुधि जो भूले । चतुर्भुज
 दास यमुना प्रेम सिंधुमें लालगिरिधरन अब हरिय भूले ९२ बारबार
 यमुने गुणागान कीजै । यहि रसनाते जो नाम रम अमृत भाग्यजाके
 सोई जो लीजै । भानुतनया दया अतिही करुणामया इनकी करे
 आशया सदा जोजै । चतुर्भुजदास कहें सोई प्रिय पामरहैं जोई यमुना
 रसमें भोजै ९३ हेत करिदेत यमुने वास कुंजै । जहां निशिबासर राम

में राखकर कहाँ लों चरनाये प्रेमपुंज । रॉकत गरिता नीरशक्ति
 ब्रजवधू भीर कोउ बन भरत घोर सुराल सुनिजे । चतुर्भुजदास यमुने
 जो धनज जानि राखकी नाई चितलाइ गंजे ६५ भक्तपर करिकपा
 यवन ऐसी । काँड़ निजदास बिद्याम भूतल कियो प्रपत्नी ता दि-
 खाई जो तैसी । परम परमारथ करत हैं पर्वान को रूप अद्भुत देत
 आप जैसी । नन्ददास जो जानि दूह चरना गहे रवा रवना कहाकहं
 निशेसी ६६ नेह कारने यमुन प्रथम आई । भक्त के दित की वृत्ति
 सब जानही ताहि ते अतिहि आतुर जो धाई । औसी जाके भग हती
 सब दृष्टा ताहि तैसी साखु जो पुजाई । नन्ददास प्रभुताथ ताहिपर
 लीला जोई सपनासके गुना जो गाई ६७ यमुने यमुने यमुने जो गावो ।
 शेष महसमुख गावत निशि बिना पार नहि पावत ताहि पावो । स-
 काय मुखदेनहार तातेकरो उच्चार कहतेहैं बारबार भूलि जिनजावो ।
 नन्ददासकी आस यमुने पराग करी तातें कहं घरी घरी चित लालो
 ६८ भाग्य सोभाय यमुने जो देखे । बात लौकिक तजे पुष्ट यमुनेभजे
 ता अतिरिधरन को ताहि बर मिलेरी । भगवती सङ्ग करि बात उन
 की ले गदा प्राप्ति रहें केलिगेरी । नन्ददास जो जाहि बल्लभ कृपा
 करे ताके यमुने रवा बस जो हेरी ६९ नाम महिमा जो शेखाजावो ।
 मर्यादादि क कहें लौकिक सुखलहें पुष्टको पुष्टपति निश्चयमानो ।
 स्वाति जलबंद अब परतहैं जाहिमें ताहिमें होत तैगो जो बानो । य-
 मुने कृपा जान सिंधुजल महिमान सूरगुण पूर कहाँ लों दखावो १००
 भक्तको सुगम यमुने आगम ओरे । प्रातही नहात अथजात ताके सकल
 समहु रहत ताहि हाथजारे । अनुभवी बिना अनुभव कहा जानहीं
 जाके पिथा नहीं चितचोरे । प्रेम के सिंधुको मर्मजान्यो नहीं सूर
 कहि कहा भयो दह वारे १०१ फल फलित होत फलरूप जाने । हे-
 खहु नहीं सुनि ताहि कह आपनो ताकी यह बात कोऊ कैसेमाने ।
 ताहीके हाथ निरमोल नग दीजिये जोई नीके करि परिख जाने ।
 सूर कहि कूरते दूर बसिये सदा यमुनको नाम लीजे जो छाने १०२
 राग रामकली चर्चरी ॥ यमुनेपतिदास के चिह्नन्यारे । भगवतीको भगवत
 सङ्ग मिलिरहे ताके बसत हिये प्राणधारे । गूढ़ यमुने बात जोई अब

१०६

सूरसागर रागकल्पद्रुम गीतकोर्तन ।

जानहीं ताके मनमोहन नयन तारे । सूर सुखसार निर्वार जे पावहीं
जापर होय बल्लभ कृपारे १०३ ॥ रागमकली ॥ यमुने राखतानको श्रीग
नाऊं । ऐसी माँहसा जाणि भक्तकी सुखदानि जोई जाणि सोई जोई
पाऊं । एतितपावन करन नाम लेने तरन दृढ़ करि गछे चरगा कहं न
जाऊं । कुंभनदास गिरिधरन सुखनिरखतें सही चाहत नहीं पलकला-
ऊं १०४ यमुने अर्गासात युगा भये न जाहीं । यमुना तद रेन इतने होय
बैनइनके सुखदेनकी कखंवडाइ । भक्तमांगत जोई देत तेही छिनसोई
ऐसी करै कौन प्राण निवाही । कुंभनदास गिरिधरन सुख निरखते
कहे। कैसे करि मन अघाई १०५ यमुना पर तनमन प्राण धारो ।
जाकी कीरति विशद कौन अब कहिसके ताहि नैननते न नेऊ टारो ।
चरगा कमल उनके जो चिंतत रहे। निशि दिन नाम सुखते उचारो ।
कुंभनदास कहेलालगिरिधरन सुख इनकी कृपाभईतो निहारो १०६
भक्त इच्छा पूरा यमुने जो करता । बिनहिं मांगे देत कहाँ लो कहं जैसे
काहूको कोऊ होय धरता । यमुना पुलिन रास ब्रजबधूलिये पासमंद
मन्दहास मन जो हरता । कुंभनदास जो प्रभुको मुख देखत यहि जिय
लेखत यमुना जो भरता १०७ रास रस सागरे यमुना जानी । प्रति
छिननउतन बहत धारा तने राखत अपने उरसाँझ टानी । भक्तको सहे
भार देत प्राण आधार अतिहि बोलत मधुर मधुर बानी । श्रीबिटुल
गिरिधरन बर वस किये कौन पै जात सहसा बखानी १०८ भक्त
प्रतिपालि जंजाल टारे । अपने रसरंगमें संग राखत सदा सर्वदा जोई
यमुने उचारै । इनकी कृपा अब कहाँ लो बरपाये जैसे राखत जननि
पुत्र वारे । श्रीबिटुल गिरिधर सग बिहरते भक्तको सक छिन ना
बिसारे १०९ कौनपै जात यमुने जो वरनी । सगहि को मन मनमोहन
हरता सो पियको मनये जोहरनी । इनबिन एक छिन रहे न जीवन
धन ब्रजचन्द मन आनन्दकरनी । श्रीबिटुल गिरिधरन सहित आय
भक्तके हेत अवतार धरनी ११० यमुना जो नाम ले सो सभागी । सोई
रत रूपको सदा चिन्तन करे नेऊ नहिं कलपरे जाहिलागी । पृष्टि
सारग परम अतिहि दुर्लभ परम छाँड़ि सगरे करम प्रेम पागी । श्री-
बिटुल गिरिधरनसी निधि अब भक्तको देतहैं बिनहिं मांगी १११

यमुने हमसी सकहे। तुलसी। करिकाया परग निशिवासर दीजिये
 तिहारे गुला गानकी रहे उलसी। तुमजु पायेते सकल निशिपावहीं
 अरगाकमल चित्त असर भवहीं। कृष्णादासनि कहे कौनयह तपकियो
 तिहारे दिग रहतहै लता द्रुमहीं ११२ प्रेक्षाकीजे कृपा लीजिये नाम ।
 यमुने जग वंदनी गुला न जात जोगिनी जिनके सेसे बनी सुन्दर प्रया-
 म । देत संयोग रस सेसे पियहैं जो बस सुनत सुखस तिहारो परेसब
 काम । कृष्णादासनि कहे भक्तके कारणे यमुन एक छिन नहींकरेविद्या-
 म ११३ यमुना के नाम अघ दूरभाजे । जिनकेगुला सुनिके लाल गि-
 रिधरन पिय आय सन्मुख ताके बिराजे । तेहि छिन काज ताके जो
 सगरेसरत जाइके मितत ब्रजबसु समाजे । कृष्णादासनि कहेताहि अब
 को निडर जाकेऊपर यमुनेसि गाजे ११४ यमुनाके नाम तेरे जो लैंहैं ।
 जिनकी लगन लागी जन्दलाल सों सरयस देके निकट रैंहैं । जिनहिं
 सुगम जानबात मनमें जानि बिना पहिँ जानि कैसे जो पैहैं । कृष्णादा-
 सनि यमुना नाम नौका भक्त भवसिन्धु तैयो जो तरैंहैं ११५ यमुने की
 आस अब करत हैं दाम । मनकाम वचन कर जोरिदो माँगत निशि-
 दिन राखिये अपनेहीं पास । जहां अब रसिकबर रसिकनी राधिके
 दोउवन संग मिलि करत हैं रात । दास परमानन्द पाय अब ब्रज-
 चन्दखेखि भिराने नयनमन्द द्वाय ११६ यमुने सुख कारनी प्राणापत्ति
 के । पियजे भुलजाजन्हें सुधि करि देत तिन्हें कहाँलोकहिबे आतहि
 इनके हितके । पिय संग गानकरें अघि रस उमंगि भरे देत तारी करें
 लेत जितके । दास परमानन्द पाय अब ब्रजचन्द यहि जागत अति
 प्रेम गतिके ११७ यमुने के साथ अब फिरत हैं लाय । भक्त के मनके
 मनोरथ पूरता सबे कहाँलों कहिये अब इनकी जो वात । बिबिध
 शृङ्गार श्रुता अङ्ग अङ्ग सजे अरुणा न जात शोभा बनी गात । दास
 परमानन्द पाय अब ब्रजचन्द राखे अपने शरणा बहे जो जात ११८
 यमुने पियको बस तुम कीने । प्रेम के फलइते घेरिराखे निकट ऐसे
 निरमोल नग मोल लीने । तुम जो पढावत तहां अब आवत निशि-
 दिन तिहारे रस रंग भीने । दास परमानन्द पाय अब ब्रजचन्द परम
 उदार यमुने जो दीने ११९ जगमें यहीसार भजित बारम्बार । श्रीयमुना

जीजी नाम जय विधिदिना जाते उतकेगी भवसागर पार । आके भ-
जगते हरि हियमें बसो करे दाना रवैया अपनी पिनुजार । कहत
ब्रजपति तुम सबन सों समुझाय परे । इनके चरणा और नाहिं आगा-
र १२० एक रसना गुता आपार बयोर्धार बरनी । साधन सबो तजो
भजो इनकेनाम जाके सुनिरनते होवो तरनी । एक मनमें निरधार
करिके करो सदातत इनके निकट रहनी । कहत ब्रजपति तुम सबन
सों समुझाय जयो हगिनाम और कछु न करनी १२१ पिप्र संग रास
भरि कारि बिलाखे । सुरति रस सिन्धुमें अतिहि हरयित भई काम
उयो फूलते रवि प्रकाशे । तनते सनत प्राप्ताते सर्वथा करति है हरि
संग गहन राखे । कहत ब्रजपति तुम सबन सों समुझाय भिरे यमनाम
इनहीं उपासे १२२ यमुना सी नाहीं कोऊ दुखकी हरनी । जाके ज्ञान
ते मिततहै सब पाप होतहै आनन्द मुखकी करनी । सहिमा अगाध
आपार इनके गुता सकल यश वेद पुराणा बरनी । कहत ब्रजपति तुम
सबन सों समुझाय छूटे यमदर जो आवे इनकी प्रानी १२३ ॥ राग राग-
कनी चर्चनी ॥ जयति भानु तनया चरणा गुगुल बंदे । अयति ब्रजराज
नन्दन प्रिये सर्वदा देति आनन्द उयो शरद चंदे । अयति सकल सुप्र
कारनी कृपा सबोहारनी श्रीगोकुल निकट बहत संदे । जाके तट शि-
कट हरिराम सरदल रच्यो तहाँ नितत तता घेई घेई दे । अयति
कालिंद गिरिनन्दनी देति आनन्दनी भक्तके हरें सब दुःखदन्दे । चित्त
में ध्यानधारि सुदित ब्रजपति कहें जयति यमुने जयति नन्द नन्दे १२४
राग रागकनी ॥ जी यमुने तुमही और न कोई । करो कृपा निज दीन
जानिके ब्रजनिज बाधो होई । राखो चरणा शरणा तरनि तनया ज-
नम आपदा खोई । यह संसार अपने स्वारथ को सुतपति सगो न
कोई । प्रेस भजन में करत बिधनता संत संतापत सोई । ताको संग
मोहिं सपण न दीजो मांगत नयनन रोई । गरल पानले डारत अमृत
बियथा रसमें सोई । रसिक कहत दीन हूँ याचूं लहरि समुद्र समो-
ई १२५ श्री यमुनाजी दीन जानि मोहिं दीजे । नन्दके लाल सदा बर
मांगूं सब गोपिय की दासी कीजे । तुमहो परस उदार कृपानिधि
संत जनन सुखकारी । तुम्हरे बश बरतत राधावर तट खेलें गिरिधा-

री । मधु सर्वावधेन मिलि हरिसँग खेलै अद्भुत राम बिलारी । तुम्हरे
 पुनिन निकट कुञ्ज द्रुम कमल पुहुप पर बासी । यम जल सहित
 नाथ अतिरस भरे जल कीडा सुखकारी । मनुतारा मधि चन्द विरा-
 जत धरि भरि छिरकत ब्रजनारी । रानीजूके पाई गणि बिनतीकरि
 पृथको कारज राव कीजे । परमानन्द प्रभु सय सुखदाता इहरम नयन
 भरि पीजे १२६ श्री यमुनाजी तिहारो दरशसोहिं भावे । श्रीगोकुलके
 निदात सहत हो लहरनकी छविआवे । सुखकरनी दुख हरनी यमुना
 जोकात प्रातहिन्हावे । मदन मोहन जूकी खरी पियारी पटरानी जो
 कासावे । तुन्दावन में रास रच्यो है मोहन सुरलि बजावे । सुरदास
 प्रभु तुम्हरे मिलन को वेद बिसल यश गावे १२७ यमुनाजी यह प्र-
 साद हो पाऊं । तुम्हरे निकट रहों निशि बासर राम कृपा गुणागाऊं ।
 सज्जनं करों बिसल पावन जल चिंता कलुष बहाऊं । तुम्हरी कृपा
 भानुकी तनया हरिपद प्रीति बढाऊं । बिनती करों यहै वरमांग अ-
 वस संग विसराऊं । परमानन्द चारफल दाता मदनगोपले भाऊ १२८
 यमुनाजी यह बिनतीचित धरिये । गिरिधरलालं मुखारविन्द रति
 जनम जनम सोहिं करिये । बियसागर संसार बियस अति विमुख
 सगते डरिये । काम क्रोध अज्ञान तिमिर अतिडर अन्तरते हरिये ।
 तुम्हरे निकट बसों निजजन संग रूप देख मन डरिये । गाऊं गुसा
 गोपाल तालके दुष्टबादते डरिये । विविध दोष हरिहो कालिन्दी नेक
 कृपाकरि डरिये । गोविंद सदा यहै वरमांग तुम्हरे चरणा अनुसरि-
 ये १२९ श्री यमुनाजी अवस उधारनी में जानी । गोधन संग प्र्यास
 धन सुन्दरतीर विभंगी दानी । गङ्गा चरणा परसतें पावन हर शिर
 चिकुर समानी । सात समुद्र भेदि यम भगिनी हरि नखशिखलपहानी ।
 आलिंगन चुम्बन रस बिलसत प्रेमपुंज ठकुरानी । गोविंद प्रभु रवि
 तनया प्यारी भक्ति मुक्ति की खानी १३० श्री यमुनाजी तिहारो
 दरशहो पाऊं । श्रीगोबर्द्धन श्रीतुन्दावन ब्रजरज अंग लगाऊं । दित
 दश पांच रहं श्रीगोकुल ठकुरानी घाट नहाऊं । दासन ऊपर करो
 कृपा निज सन्तन के संग आऊं १३१ श्री यमुनाजी पतित पावन क-
 रेव । प्रथमहीं जन दरश दीनो सकल पापजु हरेव । भुज तरङ्गन परम

कीनो पय पानदे मुख भरेय । नाम लेतहि राई दुरभाति छायास बस
 तरेव । गोपकन्या क्रियो मज्जन लालगिरिधर बरेव । सूर श्रीगोपाल
 निरखत सकल कारज सरेव १३२ श्रीयमुनाजी पतित पावन करन ।
 प्रथमहीं जाको दरश पायो कोटि कलमल हरन । पैठत ही भुज
 तरङ्ग परसत मित्त जियकी जरन । नाम उचरत शुद्धबाराी बुद्धिपो-
 यत भरन । उपजे उग्र बैराग जाकूं खैचि ल्यावे शरन । सूर हरि की
 भक्त दाता बिश्व तारन तरन १३३ जगत में श्रीयमुनाजी परमरूपाल ।
 बिनती करत तुरत मुनि लीनी भयेहैं सोपे दयाल । जो कोउ मज्जन
 करत निरन्तर ताते डरत यमकाल । व्रजपतिकी अति प्रियकालिंदी
 मुमिरत होतनिहाल १३४ ॥ रामके पद ॥ राग रामकली ॥ गाऊं रसिकनर
 भूपालगुणान्त न पार कमलनयन प्रिययशोदादुलार । प्रकटपुरुष
 सारु पृथ्वी तलहरे भारु जानत महिमा जाके उरग हारु । रामकली
 सकतारु नाचैं अघोषबिहारु कालिन्दी पुलिनसखी लोचन निहारु ।
 उत्तम भूषणाधारु तन लेखिघनसारु वृन्दाबन चन्द चर्चादिशि उज-
 यारु । मोहन नन्दकुमारु ध्वंगअरु सुकुमारु गिरिवरधर यग पिलोक
 बिस्तारु । उभय करु उदारु व्रजभाषिनि सिंगारु कृष्णादास प्रभु हरि
 सर्वसु दातारु १३५ रास रस गोविन्द करता विहार । सरसताके पु-
 लिन रम्य महँ फूले कुंद सँदार । अद्भुत शत दल विकसित कोमल
 मुकुलित कुमुदकलहार । मलय पवन बहे शारद पूरणा वन्द सखुष भं-
 कार । सुधर राय संगीत कलानिधि मोहन नन्दकुमार । व्रजभाषिनि
 संग प्रसुदित नाचत तन चर्चित घनमार । उभय स्वरूप सुभगता सोरां
 कोककला सुखसार । कृष्णादास स्वामी गिरिधर प्रिय पहरे रसभय
 हार १३६ गोविन्द करत मोहन मगन सप्तसुर गति भेद मिलवतबेरा
 सुरति बैधान । तरिन जाकर लहर बिरचित पुलिन कैलि बैधान ।
 शारद रजनी बिमल उडुपति मलय पवन सुदान । राग बारिसमुद्र तांडव
 लास्य कला निधान । व्रजबधु मँग सुदित नाचत लेत अग्र घर तान ।
 वशीकृत गरा सिद्ध सुरगारा यकित व्योम बिमान । कृष्णादास बिलास
 रस गिरिधरन सब गुणजान १३७ ॥ रागरामकली । चर्चरी ॥ नृत्यत मोहन
 रसिक सखन सहित प्रगताततत्यै तथैतत्ता । मृदङ्ग धूम धूम धूम ताल

उपंग भिखि श्रुतिद्वैत मधुप्र मधुगता । टिपारो शिरपीत अति लाल
 काछनी वनी किंकिनि भिन्नाभिन्त गति लेत गावत सुरमता । गोविंद
 प्र । गोप बालक जय जय प्रेम अनुरता १३८ रहेउ मोहिं श्रीवल्लभ
 मृद भावे । मुन भेया तूमो डरमाखन दूख रहेउ जो छिपावे । ततो क-
 रुणा कृपणा कहा कहूं नित उठि मोहिं खिभावे । मेरे प्राणी जीवन
 धन गोरस सोते दूर दुरावे । वेतो खीर खाँड पकवान ले बिबिध ले
 प्रातहिं मोहिं जगावे । तेल सुगन्ध लगाइ प्रीतियों ताते नीर नहावे ।
 भूयसा बसन बिबिध मनभाये पलटि पलटि पहिरावे । नैना आँजि ति-
 लक मृग मदकरि दर्शना मोहिं दिखावे । घटरस व्यंजन मोहिं जिवावे
 हितसों पान खवावे । भँवरा चकई बिबिध खिलौना लेकर मोहिं
 खिलावे । बिबिध कुसुम अपने कर गुहिले लै माला उरलावे । सुखद
 पर्यंक सँवारि मृदुल अतितापर मोहिं सुवावे । डोल झुलावे रथबैठावे
 पालन हिंडोर झुलावे । ऋतुवसन्त जाँनि जिय अपने ले सुरङ्ग छिर-
 कावे । जनम दिवस आवत जब मेरो आँगन चौक पुरावे । बाजे बहु
 विधि द्वारे बाजे बन्दनवार बँवावे । मेरे गुना पुनि जनपै सोकों सप्त
 सुरनि जो सुनावे । हरदो दूब असत दधि कुंकुम मङ्गल कतश भरावे ।
 धेनु दिवावे द्विजनको सोपै सुभग अशोष पढावे । केतिक बात कहों
 हों हित की सोते कहिय न आवे । मेरे प्रादुर्भाव दिवस दिन आनंद
 उर न समावे । नवदिन नये भोग करि सोकों हित सों भोग लगावे ।
 घसि गुलाब के नीर सुचन्दन ले कपूर सो बसावे । शीतल बारि बयारि
 शीत अति मेवा देय रिभावे । शीतल नीर सुगंध सुवासित करि अ-
 धिवासन लावे । भरि भरि जलज नाय शीशपर सोतन ताप मिटावे ।
 मेरे लिये पवित्र राखो अति सुन्दर जो बनावे । सर्वाङ्ग भाँति प्रीति
 व्रजजनकी आपें करि जो सिखावे । दशमी विजय जानि रघुबर को
 अंकुर शीश धरावे । बहुबिधि पाक सँभारि मोहिं हित मरिामय दीप
 दिवावे । शरदपूर रस दिन मेरो नखर भेय बनावे । मोर मुकूट पीतां-
 बर काछनी मुरली करहि गहावे । सुरभी बरदा न्योति कुहकी निशि
 पुनि पुनि लाड लडावे । सुरपति मान भङ्ग प्रतिपद तब गो गिरिराज
 पुजावे । कार्तिक सुदी एकादश के दिन कुंजमहल जो बनावे । पाट

सुरङ्ग बसन पाहरावत प्रवृद्धिनिर्घ्न मनावे । अति रातिसन्द करम
जड कलियुग जन्महि दृष्टा गँवावे । रसिक कहे बल्लभ करुणावि
फल कबहु नहिँपावे १३६ कुँवर राधिका तुषसकल मौभाग्य मौ
या बदनपर कीटिशतचन्द्र वारों । खंजन करङ्ग शतकोटि मैनांन उपर
वारने करत जीयमें बिचारों । कदली शतकोटि जघन उपर सिंह शत
कोटि कटिपर न्योछावर उतारों । मतगज कीटिशत चालपर कुम्भ
शतकोटि इन कुचग पर बारिडारों । कीर शतकोटि नासा उपर कुन्
शतकोटि दर्शनन उपर कहिन पारों । पञ्चकंदूर बंधक शतकोटि
अधरनि उपर बारि रुचि गर्बटारों । नागशतकोटि येनी उपर कपोत
शतकोटिशीवापरवारिदूरि सारों । कमल शतकोटिकरगुलपरवारों
नाहिन कोउ लोक उपमा जुधारों । दासकुम्भन स्वासिनी सुनगशिख
अङ्ग अद्भुत सुठानि कहाँलगि सँभारों । लालगिरिवरवरन कहत मोहिं
तोहिंलौं सुख जालों वह रूप लयालसा निहारों १४० ॥ मङ्गलआरती ॥
रागरामकवी ॥ मंगलमंगलं ब्रजभुवि मंगलं । मंगलमिह यीनन्दप्रशोद
नामसुकीर्त्तनमेतद्बुचिरोत्सङ्गमुत्तालितपालितरूपं ॥ ध्रुव ॥ श्रीश्रीकृष्ण
इति श्रुतिभारं नाममार्त्तं जनाशय तापापह मिति मङ्गलरावं । ब्रजसं
दरी वयस्य सुरभीतुन्द मृगीगणा निरूपमभावामङ्गल सिन्धुचया ।
मङ्गलमीयत स्मितयुतमोक्षरा भायगामुन्नत नासापुटगत मुक्ताफलव
लजं । कोमलवतदगुलिदलमङ्गत बेरागनिनाद बिभोहित तुन्दबनभुवि
जाता । मङ्गल मखिलं गोपी शिशुरीत संघर्षगति विध्रम मोहित रास
स्थितग नं । त्वजय सततं गोवर्द्धनधर पालय निजदासान् १४१ आरति
कीजे प्रियामसुंदर की । नन्द कुमार राधिकावर की । भक्ति करि
दीप प्रेमकी बाती । माधुसङ्गति करि अनु दिनराती । आरति ब्रज
युवती मनभावे । प्रियामलीला हित हरिवंश गावे १४२ आरति कीजे
सुन्दरवरकी । नन्दकिशोर यशोदानन्दन नागर नवल ताप तमहरकी ।
नवविलास मृदुहास मनोहर अवरामुधा सुख मोहन करकी । बिहारी
दास लोचन चकोरनित अंश प्रियामुज धरकी १४३ ॥ राग रामकली ।
चर्वरी ॥ सुभग प्रियामके सङ्ग राधिका बिराजे । नैन आलसभरी सक
ल निशि सुखकरी कंठहरि भुजधरी काम लाजे । मरिाकर कञ्चन

सो पीक दुगसों सनी अतिहि रसमें सजी रूप भाजं । छीत स्वामी
गिरिनगरन के सन वगी सनहीं सन हँसी सुखदियो आजे १४४ हारि
साजी नाथ अम्बर दीजै । नन्द नन्दन कुँवर रसिकवर मनहरन सुनहु
गिरिधर धरन नीति कीजै । सकल व्रजनागरी दामि तुम्हारी सदा
सन साँझ शीत अति होत भीजै । छीत स्वामी अमित गुण गगानि
आगरे बिनती करति सबे सानि लीजै १४५ ॥ राग रामकली ॥ राधिके
प्रथम सुन्दरको प्यारी । नखाशख अङ्ग अनूप विराजत कोटि चन्द
सुति वारी । एक सगा संग न छोड़त मोहन निरखि निरखि बलि-
हारी । छीत स्वामि गिरिधर बस जाके सो दृषभानु दुलारी १४६
जागावति अपने सुतको रानी । उठो मेरे लाल मनोहर सुन्दर कहि
कहि मधुरी बानी । साखन मिथी और मिठाई दूध सलाई आनी ।
छागच भगन तुम करहु कलेऊ मेरे सब सुखदानो । जननि वचन सुनि
तुरत उठे हरि कहत बात तुतरानी । नन्ददास कीनो बलिहारी यशु-
मति मन हरयानी १४७ करत कलेऊ मोहनलाल । साखन मिथी दूध
सलाई बेवा परम रसाल । दाँध ओदन एकवान मिठाई खात खवा-
वत खाल । छीत स्वामि वनगाइ चरावन चले लटक पशुपाल १४८
राग रामकली । चर्चरी ॥ नव कुँवर चक्र चूड़ा नृपति साँधरो राधिके
तरुणामनु पहरानी । शेषगृह आदि बैकंठ पदर्थतलों लोक यानैत ब्र-
जराजधानी । मेघ रूपन कोटि बाग सोचत जहाँ सुक्ति चारों जहाँ
भरत पानी । सूर शशि पहसवा पवन परजन्य इन्द्र चरगा दासी भाट
निगम बानी । धर्म कृतवाल शुक सुत नारद चारुवाल सनकादि बर
चारि ज्ञानी । सत्त्व गुण पौरिया काल बंधूआ जहाँ ढाड़िये काम
सुकत निशानी । नील मर्कत धरे कुंज कुसुमित महल मध्य कमनीय
से जहाँ ठानी । पल न बिहुरत दोउ जात नहीं तहाँ कोऊ व्यास
महलनि लिये पीकदानी १४९ ॥ राग रामकली ॥ बनि दृषभानु ज्ञानकी
बेटी । निबिडनि कुंज कुसुम पुंजनि पर श्याम बाम अँगलेटी । रति
निशि जागी मोवत भोर किशोर कुँवरि गुजरेटी । पियके हियमें जिय
उयो राजत नाहु बाहु बलभेटी । नैननि को सैननि कल सानों मनमथ
असिखअखेटी । लोभीलाल व्यासकी स्वामि कंचनराशिसमेटी १५०

दधि मधुति नन्द नरेंद्र रानी करति मृगयता यान । पीरा पीरा
 अह दिव्य दुकूत धर पोर रान । नेति करषति हरय भरकल वनय
 कङ्कणा पान । खेदकन रान जदन विसु पर सुग्रा विदु समान । केश
 कुसुमान करतमरिणा तातंक भक्तकानि कान । पयोधर पय अवत चा-
 तक कृष्णपत निवरात । सहस आनन कहिमके नहिं व्यास भाग
 बखान । जात बंदत मात पित्तन गदावर धरिख्यान १५१ खंजरी
 मोहे अलिकुल मोहे अम्बुज दलभोहे नैननि । सौभगता मृग शावक
 मोहे भीन मोहे जलसीननि । मुक्ता मोहे सरकत मोहे विद्रुम मोहे
 रस अननि । प्रताप बल उदुराज मोहे नटवर मोहे गति नैननि । आ-
 लस बलित लोलत भुव पल्लव बल्लवपति सुत युत नैननि । बलि कृष्ण
 दास आस पोरपूरसा गिरिधर मोहे सहभैननि १५२ ॥ राग रागकल्पद्रुम ॥
 नमो तरिगातनया परम पुनीतजरा पावनी कृष्णा मनभाउनी रुचिर
 नामा । अन्विल मुखदायिनी सब सिद्धि हेतु श्रीराधिका रवनरति
 करन प्रथमा । विमल जल सुवन नव कान नामोदयुत पुलिन अति
 रम्य प्रिय ब्रजकिशोरा । गोपगोपी नवल प्रेम रतिअदितो तत मुदित
 रहत जैसे चकोरा । लहरि भांवरि ललित बालुका शुभग ब्रजबालव्रत
 पूरणारास फलरा । ललित गिरिवर धरन प्रिय कल्लिंद नन्दिनी नि-
 कट कृष्णादान बिहहत प्रबलदा १५३ ॥ रागरागकल्प ॥ राधा ये हँग हैरी
 तेरे । जैसे हाल भयत दधि कीन्हों हरि मनो लिखे वितरे । तेरी मुख
 देखत शांति लाजे और कहे कों वाचे । देनातेरे जलन उद्योति है
 खंजनते अति नाचे । चपलाते चमकति अति प्यारी कहा करेगी
 प्रथामहिं । सुनहु सर रेशेदिन खोवति काज नहीं तेरेधामहिं १५४
 दूध दोहनी लेरी मैया । दाऊ तेरत मुनि में आऊं तबलों करि विधि
 घैया । मुरली मुकुट पिताम्बर दे स्वीहिं ले आई महतारी । मुकुट धरेउ
 शिरकटि पीताम्बर मुरली करलिय धारी । राधा राधा कति मुरली
 में खरिकाहि लई बुलाई । सूरदास प्रभु चतुर शिरोमणि रोखी बुद्धि
 उपाई १५५ कुँवर कहेउ में जात महारि घर । प्रातहि आई खरिक
 दुहावन कहति दोहनी लैकर । तब खरिकाहि कोउ बालगये नहिं
 तिहि कारणा ब्रज आई । जो देखीं तो अजिरहि बैठे गैया दुहत क-

बहाई । तनक दोहनी तनक दुहत मोहिं देखत आत सोचलागो । तनक राधिका तनक मूर प्रभु देखि सहोर अनुरागो १५० हरिमो धेनु दुहावत प्यारी । करति मनोरथ पूरत सगु वृषभानु सहारकी वारी । दूध खार मुखपर छवि लागत सो उपमा अति पारी । ताहीं बद्धकलं-
काह धोवत जहँ तहँ अंग सगरी । हाव भाव रस भगनभांय सोउ हाँव निरगवति ललितारी । जोदोउन मुख करत मूरप्रभु तीनोंहुं सुख क-
हारी १५१ नन्दनंदन सकनुहि उपाई । जे जे सखा प्रकृति के जाने ते सब लये दुलाई । सुबल सुदासा श्रीदासा मिलि और महर सुत आये । जो कछु मंत्र हृदयमें हरिके स्वासन प्रकट सुनाये । व्रजयुवती
नित प्रति दधि लेवन बन बन मथुराजाति । राधाचन्द्रावलि ललित-
दिक बहुतरुगी एक भाँति । नातिनरी तह कालि प्रातही दूधचढ़ि
रहो लुकाई । गोरम ले जबहीं सब आवैं मारण रोकहु जाई । भली
बुद्धि यह रची कन्हारि सखनि कहेउ मुखपाई । सूरदास प्रभु प्रीति
हृदय की सब मन गये फलाई १५२ प्रातहि उठी सोपकामा । परम्पर
बोलत जहां तहां यह सुगा बनचार । प्रथमहीं उठि सखा आय नन्द
के दरबार । आइये उठिके कन्हारि कहेउ वारम्बार । स्वातरेन धनि
अधादा कुँवर दिया जाताय । रहे आपन गोन साथे उठे तत्र अकुलाय ।
मुकुट मिर कटि पीत अम्बरभुषन लीनी हाव । सूरप्रभु काजिन्द
तह गये सखा लीने साथ १५३ भली करी उठि प्रातहि आय । मैं
जानत सब रमाति उठी जत्र तब तुम सोहिं योलाय । अब आवति है
हैं दधि लीन्हें घर घर ते ब्रजनारि । हँसे लवै करतारी दै दै आनंद
कौतुक भारि । प्रकृति प्रकृतिके जे सब राखे सखी पाँचहजार । और
पढाय दिये मूरज प्रभु जेजे अतिहि कुमार १६० कहा हमहिं रिम
करत कन्हारि । यह रिम जाय करो मथुरा पर जहँ है कंस क्रमाई ।
हम अब कहा जाय गोहरावैं बसति तुम्हारे गाउँ । ऐसे हाल करत
लोगनिके कोनरहे यहि ठाउँ । अपनेही घरके तुमराजा सबको राजा
कंस । सूरश्याम हम देखतबाहे अब सीखेये गंस १६१ प्यारी पीतां-
बर उर भटक्यो । हरि तोरी मोतिनकी माला कछु गर कछुकर लट-
क्यो । ही ओकरन प्रथम तुमलागे जाय गहीकटिफेट । आप्रश्यामरिस

करि अंकन भरि भरे प्रेमकी भेट । युवतिन घेरि जियो हरि को तब
 भरि भरि धरि अंकनारि । रसवा घरस्पर देखत पाये हँसत ऐत कि-
 लकारि । हांक दियो करि नन्द दोहाई आब गये राव ब्यास । सुर
 प्रियामको जानति नाहीं ढीठ भरे है बाल १६२ दसत सखिनसों कहत
 कन्हाइ । मैयाकी बाबा की बाऊजू की सोह दिवाई । काहति काहे
 हँसि हेरो काहे भौंह मकोरेउ । यह आचरज देखो तुम इनको कब
 हम बदन सरोरेउ । गंसी बातनि सोह दिवावति अधिक हँसि सीहि
 आवति । सुरप्रियाम कहि श्रीदासागों तुम काहे न समुझावति १६३
 यह काह उठे नन्दकुमार । कहा दाीतीरसी वाला पगेउ कौन त्रि-
 चार । दानको कहु कियो लेखो रहीं जहँ तहँ पोचि । प्रियह करि
 हमको सुनावहु मेदि जोरोदोचि । बहुरि यहि सगजाहु आपहु राति
 मांझ सकार । सुरसेषे कौन जो पुनि तुमहिं शोकनहार १६४ राधा
 सों साखन हरि सांगत । औरन के मरुकिन को खायो तुरहरे । कौनो
 लागत । लैआई दृमभानुसुता हँसि कपल वनीहैं मेरी । लै गेन्हों अपने
 कर हरिसुख खात अलाप हँसि मेरी । सप्रहियतो सीतो अधिदै यह स-
 धरे कहेउ सुनई । सुरदासप्रभु सुख उपजायो ब्रजतल्ला भगभार १६५
 धनि नद भागिनी ब्रजनारि । खात ले दाँव दूध माखन प्रकाट जग
 मुरारि । नहीं जानत भेद जाको ब्रह्म जग निधुगारि । शुक्र भनकसुनि
 येउ न जानत निगम गावत चारि । देखि सुख ब्रजनारि हरिसँग अ-
 मर रहे भुलाय । सुर प्रभुके चरित अगणित पराशा काषै जाय १६६
 रागगमकली चर्चरी ॥ ग्वालिली नन्दद्वारे नन्द गेह बूझे । इतहीने जाति
 उत उतहितते फिरतिइत निकटहु जाति नहिँ नेक सूझे । भरे वेहाल
 ब्रजबाल नंदलाल हित अर्थि तनमन सबै तिनहिँ दीनो । लोकलज्जा
 तजी लाज देखत लजी श्यामको भजो कहु डर न कीनो । भलिगयो
 रधि नाम कहति लैहो श्याम नहीं सुधि धान कहँहैं कि नाहीं । सुर
 प्रभुको मिली भेंटि भलि अनभली चून हरदीरा दोह छाहीं १६७ ॥
 रागगमकली ॥ तब सकसखी प्रीतम कहति । प्रेम सेमे प्रकट कीन्हों धीर
 काहेन गहति । ब्रजधरनि उपहास जहँ तहँ समुझि मन किन रहति ।
 बात मेरी सुनति नाहिन कहति निन्दा सहति । मात पितु गुरुजननि

जान्यो भली खोई महति । सूर प्रभुको ध्यान चितधरि अतिहि काहे
 महति १६८ एक गाउँ को बास धीरज कैसे के धरौं । लोचन मधुप
 अटक नहिँ मानत यद्यपि यतन करौं । वे थाह मग नित प्रति आवत
 हैं हों दधिलै निकरौं । पुलकित रोम रोम गद गद सूर आनंद उभंगि
 भरीं । पल अन्तर चलिजात कलप भर बिरहा अनल जरौं । सूर स-
 कृप च कुलकानि कहाँलागे आरज पथहि डरौं १६९ मेरो मन हरि
 चितवनि अरुभानो । फेरत कमल द्वार ह्वै निकसे करत अङ्कार भु-
 लागो । अरुणा अधर दर्शननि द्युति राजत सोहन मुरि सुसकानो ।
 उरध्व तनय सुत पाति कमलके बंदन मुकुरके मानो । यहि रस सगल
 रजति निशिवासर हरितजि और न जानो । सुरदरश चित भङ्ग होत
 क्यों जो जेहि रूप समानो १७० हों मङ्ग साँवरेके जेहों । होनी होय
 होय सो अबहीं यश अपयश काहुन डरौं । कहाँ रिमाथ करकोउ
 मेरो कछु जो कहे प्राण तिहि देहों । देहों त्यागि राखिहों यह बात
 हरि रति बीज बहुरि कब पैहों । का यह सूर अजिर अबनी तनुतजि
 अकाश पिय भौन समैहों । का यह व्रजवासी कीडा जल भज नन्द
 नन्दन सब सुखलैहों १७१ कब की मद्यो लिये शिरडोले । भठे हो
 इत उत फिर आवति यहां आनि पै चोले । सुंदलों भरी मथ्यो नयां
 मेरी तोहिं रदत भइ सांभ । जानतिहों गोरसको लेबो याही बाखरि
 सांभ । इततो आइ बात सुनि मेरी कहे बिलग जिनमाने । तेरे घरमें
 तुही सयानी और बैच नहिँ जाने । भ्रमतिहि भ्रमत भराम गङ्गवातिनि
 बिकल भई बेहाल । सूरदास प्रभु अन्तरयामी आइ मिले गोपाल
 १७२ भई मनसाधवकी अवसेरि । मानधरे मुख चितवति ठाढ़ी उवाच
 न आवै फेरि । तब अकुलाय चली उठि वनको बाले सुतल न टेरि ।
 बिरहा बिबश चहुधा भरमति श्याम कहा कियो भोरि । आवहुबेगि
 मिलहु नन्दनन्दन दानन करहु निवेरि । सूरश्याम अङ्गुल भरिलीनी
 दूरिकियो दुख डेरि १७३ यह कहिं मौन साध्यो गवारि । श्याम
 रस घट पुरि डुललत बहुत धरेउ सम्हारि । बैसेही ढँग बहुरि आइ
 देह दशा बिसारि । लेहुरी कोउ नन्दनन्दन कहै पुकारि पुकारि ।
 सखी सों तब कहति तूरी को कहाँकी नारि । नन्द के घरजाउँ कित

हैं जहां हैं बगवारी । देखि बाको यहुत भई सखि विकलधरम यहि
 सारि । सूरप्रयासहि कहिसुनाऊं गये शिरकहडारि १७४ रागरामकली
 ५५॥ ॥ कहा कहति हेरीसाता मोमों । ऐसे बहिनई को प्रियम संग
 फिरै जो वृथा रिमकरति कहा कह तोषों । कही कौने बानधोलि
 धौं तेहिमात मेरे आगे कहै ताहिदेखों । तातरिम करत साता कहे
 सारिहे भीति बिना बज तुम करतरेखों । तुमहि रिमकरति देखु कहा
 मोहिं नारिहो धन्य पितु साता भाता तुमही । गैसा लायकनन्दमहर
 को सुतभयोतिनहिं मोहिंकहति प्रभुसर सुनही १७५ प्रयासनभजानि
 हिरदै चुराये । चतुर बरनागरी सहोर्नागा तखिलिये प्रियसखी
 संग ताहि न जनाये । कपरा उद्यो भरतधन ऐसे दुह किता बन जननि
 सुनि बातहंसि कंठलाये । गामदयो डारिकहि कुँवरि मेरी बायारि
 सूर प्रभुनाम भूतेउं डायो १७६ संगवजनारि हरि रासकीन्हो । सव
 निरुक्ता आशपूरा करी प्रयासलै चिग्रनि पिय हेतसुखमानिलीन्हो ।
 मेरि कलजाहि नरियाद विधि वेकी त्यागि गृह नेह मुनि सेवाधारे ।
 फकी जैजै करी सखिं सब जे धरी शक कहुन करी आपभाई । ज्यों
 महाभक्त गजधूध करनो लिये कूल सब फोरि इन कहू न मान्यों ।
 सूर प्रभु नन्दसुत निदरि निर्गशरम करउनाम सरलो कसुमवै जान्यों
 १७७ रैनरस रास सुख कहतहीती । भोरभंग रागप्राप्त अभुगके स-
 लिल ग्हात सुख करत अतिबही प्रीती । एकएक सिगत हों शक
 हरिसंग रासक एक जल मध्य सकतीगडाही । एकएक इरति एक
 अंग भरिहो चलति एक सुख लरति अतिवेद याही । काहुनाहिं डरत
 जल यथा कीडाकरति हरति मन निदरि ज्यों कान्तनारी । सूर प्रभु
 प्रयास प्रयासा संग गोपिका मेरी तनु साध भई जगन भारी १७८
 रागरामकली ॥ प्रयासाप्रयास सुभग यमुनाजल बिभ्रम करतीबहारि । पीत
 कमल इन्दीवर मानों भोरहिभये निहारि । योराधा अंबुज कर भरि
 भरि छिरकत वारम्बार । कनक लता मकरंद भरत मानों हालत
 पवनसंचार । अतसी कुसुमकलेवरबूंदें प्रतिबिम्बन मनोहार । उद्योति
 प्रकाश सुघनमें खेलत स्वाति सुवन आकार । धाइधरे रुच्यभानमुता
 हरि मोहे सकल अंगार । विद्युत जलद सूर मनो विधुमिलि शबत

मुखासी धार १७६ शीको श्याम नागरिरूप । तेनिने लह पगारि उर
पर प्रयतनार अनूप । यवत जल कुच परतधारा नहीं उपमा धार ।
भरी उगलत राहु असृत कनक गिरिपर धार । कञ्ज परगत श्याम
सुन्दर नागरी रंग भाइ । सूर प्रभु तन काम ब्याकुल गये सत निज
नाइ १८० श्यामा प्रयास अंकमें भरी । उरज उर परसाइ भुजाओं भुजा
गाढे धरी । तुरत मनसुख मानि लीन्हें नारि तेहि रङ्ग धरी । परस्पर
दोउ करत कीडा राधिका नव हरी । रोसही सुखदियो मोहन सबै
आनंद भरी । करति रङ्ग हिलोर यमुना प्रेम आनंदभरी । रास निशि
ग्रस दूरि कीन्हो धन्य धनि यह धरी । सूर प्रभु तह निकसि आये
नारिसंग सब खरी १८१ कहा करौनीके करि हरिको रूप रोखनिहिं
पावति । संगहि संग फिरति निशि बामर नयन गिमेस न लावति ।
बँधी दृष्टि ज्यों गुडी डोरि बश पाके लागी आवति । निकट भये बेरो
ये छायासोको दुखउपजावति । नखगिख निरखि निहारेउ चाहति
मन सूरति अति भावति । जानो नहीं कहाँते निज छबि अङ्ग अङ्गमें
आवति । अपनी देह आपुको बैरनि दुरतन दुरे दुरावति । सूरश्याम
सों प्रीति निरन्तर अन्तर मोहिं करावति १८२ मैं मन बहुत भाँति
समुझायो । कहा करौं दरशन रस अटकों बहुरि नहीं पट आयो ।
उन नैननि के मेह रूप रस उनमें आनि दुरायो । वरजतहा बैकाज
सुपत ज्यों पतझो जो न सिधायो । लोक वेद कुत निदरि निडरहैं
करत आपनो भायो । सुख छबि निरखि चोंछि निशि खगज्यों हठि
आपुनिहिं बँधायो । हरिको दोष कहा कहि दीजै यह अपाँ बल
दायो । अति विपरीत भई सुनि मरज सुमिरि सो मदन जगायो १८३
राधातैं हरिके रंगरावी । तोतैं और चतुर नहिं । कोऊ बात कह मैं
साँची । तैं उतको मन नहीं चुरायो सेसीहैं तू काँची । हरि तेरा मन
अबहिं चुरायो प्रयत्नहिं तू है नाँची । तुम अरु प्रयास एक हैं दोऊ
बाकी नाही बाँची । सूरश्याम तेरे बश राधा कहत लोक मैं खाँ-
ची १८४ राधा हरि अनुराग भरी । गद गद मुखबानी परगासति देह
दशाबिसरी । कहति यहै मन हरिहरि लैगये येहीपरनिपरी । लोक
सकुच शंका नहिं मानति प्रयासहि रङ्ग धरी । सखी सखीसों कहति

बावरी यहि हम को निदरी । सूरदास प्रभुसों रतिमानो भुरई हम
 सिगरी १८५ कृतज्ञताज कहांलों करिहों । तुम आगे में कहों न गांवी
 अब काह नहिं डरिहों । लोक कुटुम्ब जगत कहियत पहिले सगहि
 निदरिहों । अत यह दुख सहिजात न मोपै बिमुख बचन सुनि सरि-
 हों । आपु सुखी तो सबहीं कैहें उनके मुख कह सरिहों । सूरदास
 प्रभु चतुर शिरोमणि अब केहों कहू लरिहों १८६ ॥ राग रामकली । चर्चरी ॥
 सुतासों कहति दृयभानु घरणी । कहां तू राधिका भोरते फिरति है
 तेरीगति मोपै नहिं जाति बरणी । तोरि मोतिसरी तब गुपत करि
 धरेउँ कहूँ यहि मिम सकुचि रही मुख न बोलै । मनां खञ्जन चपल
 चन्द फन्दा परे उडत नहिं ताहितें कहूँ न डोलै । कहा तेरी प्रकृति
 परीहे लाडिली अबहिंते कहा तू जातगीरी । सूर कहै जननि योल
 नहीं आजु तू परसि धर होआइ स्वाहिगीरी १८७ ॥ राग रामकली ॥
 राधा अतिहि चतुर प्रवीन । कृष्णको सुखदै चली गृह हम गतिकदि
 डीन । हारके मिस यहां आये श्याम मणि के काज । भयो मन पू-
 रण सतोरथ मिले श्रीवज्रराज । गांठि अञ्जर छोरिके मोतीमरी
 लीन्हों हाथ । सखी आवत देखि राधालई ताको साथ । युवति बू-
 भक्ति कहां नागरि निगिगई यक याम । सूरदयारी कहि सुनायो
 में गई तेहि कस १८८ ॥ राग रामकली । चर्चरी ॥ जागिये प्राणापति रैति
 बीती । चन्द्रकी द्युतिगई पहै पीरी भई सकुच नाहा दई अतिहि भी-
 ती । सात पितु बन्धु गुरुजन अबहिं जानि हैं लखे जिन कहें यह
 लाज भारी । सखिन आगे नहीं नहीं सब दिन कही मोहिं घेरे रहति
 सखे नारी । उठे मुसुकाय अकुलाय अतुराय के निकसि गये श्याम
 ब्रजनारि जान्यो । सूरप्रभु नन्द नन्दन दश देगयो निरखि यकटक
 रही पल भुलान्यो १८९ ॥ राग रामकली ॥ राधासखी मिलि मनभाई ।
 जबतें इनसों नेह लगायो बहुतभई चतुराई । और भई इतनों तुमको
 सखिगृह जनसे निठुराई । काहको मनहीं नहिं आनति हमहुं सबनि
 बिसराई । तुमहो कुशल कुशल हैं एक आप स्वारथीमाई । सूर पर-
 स्पर दम्पति आतुर चतुर सखी लखिपाई १९० यह सखी अबलों
 कहा दुराई । इतैं द्योस हम कबहुं न देखी अबजू कहांते आई ।

सुरसागर रागकल्पद्रुम नित्यकीर्तन ।

१२१

विभुवनकी शोभा सबगुणार्तिधि है विधि एक उपाई । विद्यमान दृश्य-
भानतन्दिनी सहचरि सब दुखदाई । अपने मन तकितकि तनु तौ नति
विधुजनु सुन्दरताई । दुमह रूपकी राशि राधिका कहौ कौन पुरपाई ।
राचि रही रस सुरत मूर दोउ निरखत नयन निकाई । चीन्हे हो
चलि जाहु कुञ्जगृह छाँडि देहु चतुराई १६१ ऐसी कुँवरि कहां तुम
पाई । राधाहूते नखशिख सुन्दरि अबलों कहां दुराई । काकी नारि
कौनकी बेगो कौन गांवते आई । देखी सुनी न ब्रज टुन्दावन सुधि
बुधि हरत पराई । धन्य सुहाग भाग्याकी यह युवतिनके मनभाई ।
सुरदास प्रभु हरयि मिले हँसिलै उरकंठ लगाई १६२ ॥ राग रागकली ।
धन्यो ॥ नन्दननन हँसे नागरी मुखचितै हरयि चन्द्रावली कंठजाई ।
बाम भुज रवनि दक्षिणा भुजा सखी पर चले बन धाम सुखकाहि न
जाई । मनो बिधुदामिनी बीच नभघन सुभग देखि छवि काम रति
सहित लाजे । किधौं कञ्चनतता बीचहि तमाल तरु भामिनी बीच
गिरिवर बिराजे । गये गृह कुञ्ज अलिगुञ्ज सुमननि पुञ्ज देखि आ-
नन्द भरे मूर त्तामी । राधिका रमन युवती रमनमन रमन निरखि
छबिहोत मन कामकामो १६३ ॥ राग रागकली ॥ मन तो हरिही हाथ
बिकान्यो । निकस्यो मान गुमान सहित बह मै यह होत न जान्यो ।
नयननि साटि करी मिलि नयननि उनहीं सो रुचि मान्यो । बहुत
यत्न करिहो पविहारी फिरि इतको न फिरान्यो । सहज सुभाय
ठगोरी डारी शीश फिरत अरगानो । सुरदास प्रभु रसबस गोपिन
बिसरि गयो तनुजानो १६४ लोचन भये प्रियामके चरे । सतेपर सुख
पावत कोटिक मोतन फिरि न हेरे । हाहा करत परत हरि चरणान
रेखे बश भये उनही । उनको बदन बिलोकत निशि दिन मेरो कहेड
न सुनही । ललित विभङ्गी छवि पर अटके फटके सोसों तोरी । सुर-
दास यह मेरी कीन्ही आपन हरिसों जोरी १६५ प्रियाम रङ्ग रँते
नैन । धोये छुरत नहीं यह कैसेहु मिले पधिलि ह्वै मैं । योगीधे नहिँ
तरत उहाँ ते सोसों लैन न दें । सुरज प्रभु के संग संग डोलत नेकहुँ
करत न चैन १६६ लोचन भृङ्ग कोश रसपागे । प्रियाम कमल पदसों
अनुरागे । सकुच कानि बनबेलीत्यागी । चले उडाय सुरति रतिपागी ।

मुकुति पराग रसहि इन चाख्यो । भवसुख फूल रसहि इन नाख्यो ।
 इनते लोभी और न कोई । जो पटतर दीजे कहि सोई । रायें तबहि त
 फेरि न आये । सूरप्रयाम बेगहि अरकाये १६७ नयन भयेबग साहन
 ते । ज्यों करङ्ग बग होत नादके तरत नहीं तागोहनते । ज्यों मधुकर
 नग कसल कोशके ज्यों बग चन्दनकोर । तैसेई येनश भये प्रयासा
 के गुहिया बग ज्यों डोर । ज्यों बग स्ताती बूदन चातक ज्यों बग
 जलके सीन । सूरज प्रभुके वषय भये येसरा सागा प्रतिज नवीन १६८
 नयना गान अपमान सहेउ । अति अकुलाय मिलेरी बरजत यद्यपि
 कीरि कहेउ । जाकी बानि परी सखि जैसी तेही रेक रहेउ । ज्यों
 सरबार मठी नहि छाँड़त नलिनि सबास गहेउ । जैसे नीर प्रवाह स-
 मुप्रहिँ गाँभ बहेउ सुबहेउ । सूरदास इन तैसिय कीन्ही फिरि मोतन
 न चहेउ १६९ सजनी मोते नयन गये । अबलों आश रही आवनको
 हरिके अङ्ग छये । जवते कमल बदन उन दरशयो दिननि और भये ।
 मिलेजाय हरदी चूना ज्यों एकहि रङ्ग रये । सोको तजि भये आप
 स्वारथी वा रस सत्तभये । सूरप्रयामके रूप समाने मानो बूदतये २००
 पिय निरखति ध्यारी हँसि दीन्हां । रीके प्रयाम अङ्ग अङ्ग निरखत
 ध्यारी हँसि नागर उर लोन्हां । आलिङ्गनदे अधर दशन खगिडकर
 गाँह जिनुक उठावत । नासासों नासा ले जोरत नयन नयन परमा-
 वत । यहि अन्तर ध्यारी उर निरख्यो भक्तकि भई तब ध्यारी ।
 सूरप्रयाम सोको दिखरावन उर ल्याये धरि ध्यारी २०१ प्रयाम नारि
 के बिरह भरे । कबहुँक बैठतकुञ्ज दुसन तर कबहुँक रहत खरे ।
 कबहुँक तनकी सुरति बिभारत कबहुँक तन सुधि आवत । तब ना-
 गरिक गुणहिं बिचारत तेई गुण गुनि गुनि गावत । कहँ मुकुट कहँ
 मुरलि रही गिरि कहँ कटि पीत पिछोरी । सूरप्रयाम ऐसी राति भी-
 तर आई दुतिका गोरी २०२ राठे नन्दद्वार गोपाल । बोलि लोन्हे
 देखि ललिता सैनदे ततकाल । हँसत गये हरिगेह ताके कोउ न जानत
 और । मिली हरिको लाइ उरभरि चापि कठिन कठोर । कहेउ मेरे
 धाम कबहुँ क्यों न आवत प्रयाम । सूर प्रभुकहि आजु नागरि आई
 हैं हसयाम २०३ ॥ राग रामकनी । चर्चरी ॥ बाम संग प्रयाम बययाम जागे ।

कोक बिद्या निपुणा सकल गुणमें संपुणा सुरत सग्राम जुरि नहीं भागे ।
 अङ्ग आलस भरे नैन निद्राढरे नेक शय्या परे निशा बीती । सूरप्रभु
 नन्दसुत चले अङ्ग नायके गये ताबान रसकामजीती २०४ ॥ राग रागकली ॥
 आजु बन्धो पियरूप अगाध ॥ पर उपकार प्रयास तनु धारिउ पुरवत
 सब सन साथ । धर्म नीति यह कहाँ पढीजु हमहूँ बात सुनावहु ।
 कहौ कहाँ काको सुज दीन्हों काहे न प्रकट बतावहु । धनि उपकार
 करत डोलत ही आजु बात यह जानी । सूरप्रयास गिरिधर गुण ना-
 गर अङ्ग निरखि पहिंचानी २०५ ॥ राग रागकली । चर्चरी ॥ कहाँ हैं प्रयास
 कहाँ गधत कीन्हों । कहाँ तुम रहत कबहुँ दरशयेत नहिं धोखे गये
 आय हस मानि लीन्हों । नैन आलसभरे चरगा डग लखखरे कहाँ हो
 डरेखे कहौ मोमों । रैनिकहुँ बसे बिय कौनसों रसेहों उर करज कसे
 सी कहौ गोसों । भलज भले नन्दलाल बेऊ भली चरगा जाबक पाग
 जिर्नाहिं रङ्गी । सूर प्रभु देखि अङ्ग अङ्ग वानक कुशल में रही रोभि
 वह नारि चङ्गी २०६ ॥ राग रागकली ॥ असीबो दींदाहाल न जाना ।
 दरशपियासे नैनबिहारी मिलि सहबंबाहुगा बलिहारि लुभाना । तो
 में वारिजामी वो आव पियारे सनदी आश पूजामी दरश देखामी ।
 बलिहारियांदा प्राणाबिहारी अरज हमारी सुन छिनजामी । तैनकी
 परवाह नेह लगायत आय साँवल दरद बंदीदा हाल बिहारिन सुन
 इनकी मलाह बलिहारियां दंदिलनुली तुम दरशन दी चाह । फ-
 लकादे पड़े पाय । धरि धरि जीव जिवाव बिहारी । किसन भाव
 पिया निरमोही अरज हमारी । हसन तुसाडा दिलबिच बसियाँ और
 न भावै प्यारी । बलिहारियांनु लगवो गया साँवल रङ्गकरारी ।
 जियरा मोरारे निशिदिन अकुलात बिहारी दरशन बिन । गुरुजन
 डर बाहर कयहुँ निकस न पाउँ समुझि समुझि बलिहार रहाँ घर
 अरी देखे कित । नित दाना कर फेरावो नन्ददे । बलिहारियां तेन
 की सिखलाया लोगहँसै गुरुजन बहुतेरा वो नन्ददे । बैठे दंपति रति
 राजे कोटि वारीतन सुदेश अङ्ग अङ्ग भूयरा बसन पहिरे वरन वरन ।
 तैसिये कुञ्ज मृदुल सरस रसपुञ्ज तहां करत भ्रमरगुञ्ज जहां दोऊ मिलि
 करत बातें मधुर मधुर हँसन मानो लागे फूल भरन । नील पीतपट

दुकूल कालिन्दीकूल मदन मवास कियो आन पास साँख समूह
गावत कल मधुर सुरन । रङ्ग राग जमि रह्यो जात नाहिँ कापै कह्यो
रीभि रीभि छवि निहारि लेत बलिहारि राधा मोहन दोऊ मनके
हरन । काम की रति पाय परत । जीति लोक लोकपति ब्रह्मादिक
इन्द्रादि सुर नर सिद्ध गन्धर्व नागजीते अति मदबादि रहेउ ताहुको
मनहांसिन हरत । ब्रज युवती मिलि नाचत गावत रङ्ग उपजावत
केलिकरत । बारि बिहारी बलिहारी तिहारी संग राधा प्यारी जी-
यते न तरत । तिहारी लाल बाल औरि हाल समुझ न परत बौंकहा ।
ज्यों ज्यों सुधि आवत मदन जगावत अति दुखपावत व्याकुल बिरह
महा । गिनति बीती रैन तारे सुनि श्याम नयन हमारे पलन पाय
दीन भये हहा । जोपै जिवावो बलिहारि दरश देखवावो मूनी सेज लेत
देखो प्रारा अहा । क्यों वो सुनदा श्याम प्यारा मेड़ी अरज । किकरा
साझा बसन बिहारी बलिहारियां मनलगानी अपनी गरज । तेडीवो
आशा बन्दिया में मेहर करो वो मिलि बलिहारियां नूझेस्कतु सांझे
फंदियां । मुरलीबजाईक्योरि त औचक द्वारखड़ा कान्हा । सैनबानसी
तानरसभरी सोवत जगाई क्योरि । भोरभावते गुरुजनमें तेलाजवाँवाई
क्योरि । सो सुखे हँसि बलिहारीअनोखे प्रीति लगाई क्योरि । नन्ददे
निमानाचार वे सुनि बंशीवाले गलमेंडरी । अरज हमारी सुनिबलि-
हारी की तकसीर पईमेंडरी । पलुडानु छेड़ वे मेंडो पनियानु जाँदिया
आजिज होइया ब्रजमोहनतेड़े बलिहारियां दे पाय परेदीसोंहे खा-
दिया । लोगवाजागे क्योँकर आवों मितवा । व्याकुल होत मुरलि
सुनि जिअरा आनकान जब लागै । हियरा भरेउ उमँगिअनुरागन लाज
नहीं सोहिँ त्यारै । कोइयतन मिलनको जाउँ बडेभाग मोहनरसपागे ।
तेड़े मेंवारिवारि जावां सुनिप्यारी जिवनहमारी । कुञ्जभवन देवी
सुरसेवी बलिहारियानु अनीजिवामीतोहिँ मिलवो बिहारी । आरति
करत सकल सुर साधा । चिन्ततचरसामिटे दुखबाधा । मनकरि मा-
रुतनन्दनगावो । मनमुखहोत चारिफलपावो । बालारकतन तेजबिरा-
जे । शोभा सिन्धु कव शिरछाजे । सीताकी सुधि क्षरामेंलायो । रावणा
को जिनगरब नचायो । महाबाहबल बिदित जगत पर । राक्षस कुल

कम्पत जाके डर । केशरिनन्दन कर्पि कुलनायक । संगलकरन सन्त
सुखदायक । सीताराम भक्ति रति ताकी । लइ बलिहार चरगारज
जाकी । और सदैसुख लजिये मन ब्रज बसिये कृष्णानाम कलिकीरति
गावन प्रेमपंथमें धाँसिये । योग यज्ञ व्रत ध्यान न आवतकाहेकोकाया
कसिये । धरमकरम बहँकायेदौरे करमकीच क्यों फँसिये । पुलिनपरविष
बलिहारिपरसरज लैलै शिरधरधसिये । वृथा मोहमेहो कितनघुबर । में
मेरो मायाको चरो भयो रहे नहीँ यमको डर । कपट कुचाल करो
करमब्रश सुभक्त नहिं तबचरगा कल्पतर । जानाकि मन भावनसुखसीमा
करुणासिंधुअयोध्यानगर । जिन सुखपायोदशरथसुतगायो गयोपार
भवसिंधु अगमतर । इह दीन जानि जन अपनो सुनो बलिहारि कृपालु
धनुषधर । आनि जिपांसीमेडा जीया । नन्दननन्दन प्यारे लाल दि-
लोदी दारुव तलामी । जो तू मानू छाँड़ि पड़े तो बिरहा दे हाथ बिका-
मी । बूझे निहात असाडा नी सावलबलिहारियां देघर आमी । श्याम
महोबत तेरो वो मन लीतानि महर दो मुरली बजा बंदागा बन्दानी
मोहन इत बलि करिगयो फेरिबो । बटोही जागुरे कहाँ सेवे । शिर-
पर काल चढो शर साथे आस आस भरि क्यों दिन खोवे ॥ २०७ ॥

इतिरागकल्पद्रुमनित्यकीर्तनान्तर्गतरागरामकलीसमाप्ता ॥

अथ राग विभास प्रारम्भ ॥

जागो जागोहो गोपाल । नाहिंन अतिसोइये भयोप्रातपरम शुचि-
काल । फिरिफिरि जात निरखि सुख छिनुछिनु सब गोपनके बाल ।
छिनु विकसित मनु कमलकोशते तैमधुकरकी माल । जो तुम मोहन
पत्थाउ सूर प्रभु सुन्दरश्य म तमाल । तो उठिये आपुन अबलोकिये
तजि निद्रा नयन बिशाल १ ॥ रागविभास ॥ जागिये ब्रजराज कुंवर
कमल कोश फूले । कुमुदिनि मुख सकुचि रही भृङ्गलता भूले । तमचुर
खगरीर सुनिये बोलतबनराई । रांभत गो मंधुरनाद बहराहितधाई ।

विधुमलीन रविप्रकाश गावत ब्रजनारी । सूरदासोपास उठे परमानन्द
 रत्नकारी २ प्रात भये कृष्ण राजीव लोचन । भग भग्या ठाढ़े रो भोचना
 बिकसत कमल रत्नयलि सेनी । उठोहो गोपाल शुद्ध तेरीसेनी । खो
 खांड घृत भोजन कीजै । मद्य दूध धोरीको पीजै । सुनिनि जानि जगत्
 नन्दरानी । परमानन्द प्रभु सब सुखदानी ३ लाले नाहिंन जगाइ लकी
 मनु सुवात मजनी । अपने जान अजहुँकान्ह मानत सुखरजनी । ज
 जब हों निकट जाउ रहत लागिलोभा । तनकी सुधिलिखरि मरि देख
 तमुख शोभा । बचननको जिय बहुत करत शोचत ठाढ़ी । नयन
 नयनविचार परेव निरखत रुचि बाढी । यहिविधि बदनारनिंद अशु
 मति जियभावे । मूरदास सुखकीरास कहत न बनि आवेअभये पाक
 ली पहर । कान्ह कान्ह करि तेरनलागे वावानन्दमहर । ब्रह्मसुख
 भयोभांवरे रांभन लागींवेत । उठे बलभद्र बलरुवा हीलन शोष
 परेवेन । गोपबध् दधि मंथन लागीं बिप्र पढ़न लागे वेद । परमानन्द
 दासकोठाकर गोकुलके दुखछेद ५ प्रात समय उठि सोवत सुतके
 बदन उघारेव नन्द । रहि न सके अतिशय अकुलाले नयन निश
 के दन्द । शुभ्र सेज मधिते मुख निकरेव गये तिमिर सिति मन्द
 मानहुँ पर्यानिधि मयत फेनफटि दयो दिखाई चन्द । सुगत चकोर सु
 उठिवाये सखि जन सखा मुदन्द । रही न सुधि शरीर धीरमनु पिक
 किरन मकरन्द हँ भोरभया जायो नंद नन्द । संगसखा ठाढ़े जगवन्त
 सुरभिन पयहित बच्छ प्रिवाये । पक्षीयूथ दशो दिशि धाये । मुनि
 तक्यो तमबुर सुर हारेउ । शिथिल धनुय रतिपति राहि डारेउ । निमि
 तिघरी रबिरथ रुचिराजी । चन्द्र मलिन चक्रई रति साजी । कुमुदिनि
 सकुची बारिज फूले । गुंजत फिरत अलीमता हूले । दर्शनदेहु मुदितन
 नारी । मूरदास प्रभुदेव मुरारी ७ भोर भया यशोदाजी चोतत जागे
 मेरे गिरिधरलाल । रतनजटित सिंहासन बैठो देखनको आई ब्रजब
 ला । नियरे जाइ सुपेती खेंचत बहुरेउ ढांपत बदन रसाल । दूधदही
 अरु माखन मेवा भामिनि भरि ल्याईहैं थाल । तब हरि हरयि गोदउठि
 बैठे करतकलेव तितकदे भाल । देवीरा आरति बारतहैं गावति गीत
 साल ८ जगो कृष्ण यशोदा बोले यहि अवसर कोउ सोवे हो ।

गायति गता गोपाल ग्वालिनी हरयित रही बिलोवेहो । गोदोहन
धनि परि रहेउ व्रज शोपीदीप सजोवेहो । सुरभी हृक बरुवाजागे
अगिमिथ सारराजावेहो । गेता मधुर धुनि सहुवर बाजत बेतगहे कर-
सेली हो । अपनी गाय मय ग्वाल दुहत हैं तुम्हरी गाय अकेली हो ।
जागे कृष्ण जगत के जीवन अरुण नयन मुख मोहेहो । शोबिंदप्रभुज
तुहतहं धीरी अजयोप अधू मतमोहेहो ६ चिरैया चुह चुहानी सुनि
अनईकी आभी । कटति यशोदाराती जागे मेरेलाला । रबिकीकि-
रियाजानि कुशुदिनसुकुचानी कमलनि बिकसानी दधिमयेवाला ।
गुपल आदागा तोक उड्डव्रज बसन लियेदार टाढे टेरतवाल गोपाला ।
नन्दलाल बलिहारी उठि बैठो गिरिधारी सब सुख देख्यो चाहेलोचन
गिराला १० उठि गोपाल भयो प्रात देखुं मुख तेरो । पाछे गृह काज
कोरी नित्य नेम मेरो । बिहित निशा अरुणा दिशा प्रकट भयो भान ।
कमलसिंके भसरउठे जागिये भगवान । बंदीजन डारताहेकरतहं केवार ।
सधुरबैन गानकरल लीला अशतार । परमानंदत्वासी दयाल जगत सं-
गतकृष । वेदपुराणा गावतहं सटिमा अनूप ११ प्रात समय भयो
सांवलिया हो जागे । नन्दयशोदाकसन आनन्द गाय दुहनको भाज-
नमोशो । रजि के उदय कमल प्रकाशे भसर उठिबले तमचूर बाम ।
गोपबधू दधि मयनलागीं । हरिज की लीलाराम पागीं । बिकमित
कमल चलत अलिसेनी । उठो गोपाल गुहेंतेरी बेनी । परमानन्ददाम
मनभायो । चरणाकमलरज देखन आयो १२ उठो मेरेलाल गोपाल
लाडिले रजनीशीती बिसल भयोभोर । घर घर दधि मयति गोपियां
द्विज करत वेदकी शोर । करोकलेऊ दधिअरु ओदन मिथीबांति प-
रोसोंओर । आश करन प्रभु मोहन तुमपर वारोंतन मन प्राणा अकोर
१३ प्रात समय उठि चलहु नन्द गृह बलराम कृष्ण मुख देखिये । आ-
नंदमें दिनजाइ सखी जन्ममुफल करि लेखिये । प्रथम काल हरि
आनंदकारी पाछे भवनकाज कीजिये । रामकृष्ण पुनि बनाहं जाइगे
चरणा कमलरस लीजिये । सकगोपिका व्रजमें सयानीश्याम महातम
मोई जाने । परमानंद प्रभु यद्यपि बालक नारायणा करिसोई साने १४
हो परभात समय उठि आई कमल नयन देखन तुम्हारी मुख । गोरस

बैचन चली मधुपुरी लाभ होइ सारग पाऊं सुख । करत कलेऊ श्याम
 मनोहर नेकुचित कोत्रै हमतन सुख । तुममपने स्वहिं मिलिजे बिछो
 कासों कहेँ यह रजनि जनित दुख । प्रीतिजु सक लाल गिरिधर से
 यहमिमकरिमबधातजनाई । परमानन्द दासब्रह्म नागरिनागरसोमनसा
 अरुभाई १५ मैं जान्यो जागेकन्हाइ ताते यशुमति तेरेघर आई । मेरे
 पिछवारे वैसेइ घरनिसों किनहुँ मधुरी सुरलिबजाई । जनम सफलकरि
 विनती चितधार अपने कान्ह किन देहो जगाई । लेउछत मोहन को
 यशुमति आंगनटाही गोपीमुख देखत हंसत रसिकबलिजाई १६ प्रात
 समयघरघरते देखनकोआई गोकुलनारी । अपनो कृपाजगाय यशोदा
 आनंद मंगलकारी । सब गोकुलको प्राणा जियन धन यासुत पर बलि
 हारी । आशकरन प्रभु मोहन नागर गिर गोबर्द्धन धारी १७ गोबर्द्धन
 गिरि मघन कन्दर । रैन निवास कियो प्रिय ध्यारी । उठि चले भो
 सुरतिरसभीनेदंदन दृयभानदुलारी । उतबिगलित कचमालमरगजी
 अटपटे भूषणामरगजीसारी । इतिह्रस्ववरमसि पागरही धमि दुहुँ दिशि
 कवि लागत अतिभारी । घूमत आवतरति रनजीते करिनी संग गजवर
 गिरिधारी । चतुर्भुजदास निरखि दम्पति सुख तनमन धनकीनो कति
 हारी १८ रजनी राज लियो निकुंज नगर की रानी । मदन महीपति
 जीति महारणायम जल सहित जन्धानो । परमसूर सौंदर्य भृहात
 धनु अनियारे नयन बान सन्धानो । दास चतुर्भुज प्रभु गिरिधर रस
 मत्पति बिलसी ज्योंमन मानी १९ राधेजू हारावति दूरी । उर
 कमल दल माल मरगजी वाम कपोत अलकलटछूटी । वर उर उर
 करजकर अङ्गिन बाहु युगल बलपारवति फूटी । कंबुक चीर बिबिध
 रंग रञ्जित गिरिधर अवर साधुरी घूटी । आलस बलित नयन अ
 नियारे अरुणा उनींदे रजनी खूटी । परमानन्द प्रभु सुरति समय रस
 मदन नृपति को सेना लूटी २० आजु प्रयासाजूके नयनकी बातें सुनिरी
 सखी सोपै बरणी न जाई । सुवांकरणा बिचयुग शुभखञ्जन किये
 पान मनो सोवत अघाई । सरकत बिद्रुम कमल कोश में ले जावक
 की रेश बनाई । आलस तिरछे चाहत बिच बिच कछु बिकसति जल
 लीति जँभाई । मन्मथ जयकरि हरि जीतन को दयो बारा भु भुब

चढ़ाई । दीप लाल लोचन विधकित भई परम चतुरता सब बिस-
राई । सुरप्रियाम रस रीझि रहे तहें तुम हम सहचरि को न बड़ाई २१
काहेका दुराव करति हारी देखिये फूल प्रकट हिये । तूवर मधुप
प्रिय मुख कमल आई मकरन्द प्रिये । शिथिल अङ्ग निशि के जागे
बिथरी अलक स्थाव गिये । यौवन के सदमाती खालिनि डगात च-
रता धरती दिये । नूपुर अरमात रुगात मानो रति केलि किये ।
कृष्णादास स्वासिनी गिरधरणा रसिक रसिये २२ आजु पियसां न
मिलिरी मानो । यम जत कगाभर वदन की शोभा निरखि नभसि
उडुराज खिलानो । विभुवन युवतिन को मुख सर्वसु जानति हां तुव
सांभ समानो । कृष्णादास प्रभु रसिक मुकुट सांभा सुबस कियो गो-
बर्द्धन रानो २३ आजु कछु देखिगत हे रासगी काहे न सम्हारति
लूटेइ, अलक। अधरनि रङ्ग कचुकी बन्द टटे नयन राते आई आधेई
तिलक । मरकत स्वम्भ जाहु नंदनन्दन मिलि रहीरी हेम मलक ।
रति रसा रसजीत्यो काम कृष्णपति ताहीते तेरो फल किलक । कृष्णा-
दास स्वासो सां प्यारी लीन्हेंते सुरतिरति हिंडोले भूलक । मोहन
लाल गोवर्द्धनधारी वदन कोटिचन्द मलक २४ नवनि कुञ्जते आवति
बनी राधा चाल सुहावनी मनकी हरनि । बिकसति वदन कमलकी
शोभा कहा कहां देखत उदित तरनि । तरुणा जलद नवप्रियामके सङ्ग
सरत भरि भेटत भूतल बजरनि । कृष्णादास प्रभु गिरिधर पियसां
कीनांते रसिक रसाली वरनि २५ में तेरी अधिक चतुराई जानी तेने
कचुकी सम्हारी । आनंद रस बस देह भूलिगई मिलत गोवर्द्धन
धारी । कहा कहूं गुराराशि अङ्ग अंग चलति मधुरगति भारी । कृ-
ष्णादास प्रभु रसिकलालके तू अति प्राणा पियारी २६ आईत तिलककूं
मिटाये । रतिरसा गोपाल संग नखशर लाये । कपोलन पर पीक
लागी नयन कयाये । हरि सां मिलि सदन जीत्यो दाय उपाये ।
कृष्णादास प्रभुसां मिली निशान बजाये । ऐसीको निमित्त तजै गिरि-
धर पाये २७ ते गोपालहेत कुसुभी कचुकी रंगाय लई भली भई सुफल
करी आजु निशि सोहावनी । रोम रोम फूली चाय चपल नयन
भुङ्करी भाय अभरन चाल अङ्ग चाल डगमगी सुहावनी । सुभासारी

भूमक तन श्याम पाट कुसुमनी बीतन मुख पचरङ्ग छोट ओढ़नी सु-
हावनी । सोहत अलक बिधुरे बदन मोहन लावन सदन कृष्णादास
प्रभु गिरिवर कैलि अति सुहावनी २८ कंचुकी के वन्द तरकि तरकि
रूटे देखत सदनमोहन घनश्यामहिं । काहेको दुराव करति हेरी ना-
गिरि उमंगत उरज दुरत क्यों यामहिं । कछु सुमकात दशान छवि
सुन्दर हँसत कपोल लोलभू धामहिं । रवि शशि युगुलपरे रातफंदत
अवशानि पालक तातंक के नामहिं । बदन कामल पर अलक सधूप
बरखज्जन नयनलेत बिश्रामहिं । सुनि कृष्णादासरसिक गिरिवर रा
रंगित सुमुखि लजावति कारहिं २९ भूमत अलक तेरे बदन कमल
पर अधिक नीके लागति नयन आलसरी । कहा कह शोभा दर
युगुल नव लेचली रसिक बर सङ्गल कलसरी । जानी मैते निधिपाई
लिकुञ्ज मगडप महँ जाके करतही नयन ललसरी । कृष्णादास प्रभु
गिरिवर प्रतीति बाढी नखपद पांति गोहे गोहन ललसरी ३० कार्हन
परे तेरे बदनकी ओप । भलकनि नव मोतिनहिं लजावति निरखत
शशि शोभा भइ लोप । पद्मन लागति चाहति पियतन उन्नत भौंह
घटा दोप । चपल कटाक्ष कुसुमशर तानति फुरत अधर कछु प्रेम प्र-
कीप । प्रात समय आय श्यामसनोहर तुमहीं लड़ावत अपनी चोप ।
कृष्णादास प्रभु गोवर्द्धनधर अति नागरवर धरे देख गोप ३१ प्रात आवत
बनी लृयभान नन्दिनी कृशात नूपुर चरणा लटक मन्दालसी । सुरत
सुखभाव अङ्ग अङ्ग भूयसा बसन अलक फरकत कछु भाँति मंदालसी ।
अधर अङ्गुतरेख प्रिया प्रीतम वेयसखी मंडल रसद नयन मंदालसी ।
कृष्णादासनि नाथ रसिक गिरिवर धरन मन हरेउचारु चना भौंह
मंदालसी ३२ अरुड उदय नीके लागत सुनि सजनी हाँहो तेरे नयन
रसनसे । जानहुं शरद कमल संपुट महँ युग अलि सधु लम्घत बिबश
बसे । श्याम सत आलस रस भावित भाव नमूह कयाय कमससे ।
सुनि कृष्णादास रसिक गिरिवर पिय सुखद सहज अञ्जन सों सस
ससे ३३ रोसी मानतिही अपने जिय महँ पियसों मिलतही करोगी
लाराई । देखत नन्दन धीरज न धरेउ मन लाल गिरिवर हों जानि
पाई । कहा करों सरबसु चोरेउ सखिरूप दिवाय ठगोरी नारई ।

कृष्णादास प्रभु रमिक शिरोमणि लै भुज बीच बातनि अरुभाइ ३४
नयन मंदालम भरेहैं लखत बदन चन्द्रमहि प्रकाशित । गतिमनहरति
सकल जनताके उरज युगल करलिनु उपदाशित । रति तब कोक
कला परिपूरणा भौंह रुचिर चित्रलेख बिकामित । सुनि कृष्णादास
बिबिध युवतिन के ले योवन गिरिधरन बिकामित ३५ सुरताल से
दुराव कित करत मानहुँ मिले गोबर्द्धनधारी । अघर सुरंगी पीककपो-
लन नख पद उरजसोहत चरणा गतिभारी । मरगजी ओढनीकंचुकी
के बंद टूटे नींदी पट प्रीधन होइ सारी । कृष्णादास प्रभु गिरिधर
संग जागी ताते उन गति फूल अङ्ग अङ्ग सुखकारी ३६ ॥ रागबिभास ।
धवंगी ॥ लाल गिरिधर संग लाडिली भामिनी ललित रसरति केनि
चारु सोहे । नव तमालहि मानों नवल मालित दोल नवरङ्ग बिलास
निधि आरोहे । कछुक मुतकात चमकत दशन भलमलनि जनुक
मुक्ता मणिहार पोहे । सुनि कृष्णादास अङ्ग अङ्ग वैभव सुमुखि सपन
तुन्दाबिपिन सार मोहे ३७ ॥ राग बिभास । जातताल ॥ राधा रङ्गभरी नहि
बोलति । सोहन मदन गोपाल लातसों अपनो योवन तोलति । चाहति
मिलन प्राण प्यारेको मेरो मन टकटोलति । छांडहु बहुत चातुरी
भामिनि कह हमसों भक्तभोलति । प्रात होन लाग्यो सुनि सजनी
अबहीं तमचुर बोलति । कृष्णादास प्रभु गिरिधर पियहित शारंग
नयन सतोलति ३८ ॥ राग बिभास । भूपताला । प्रयाससिन्धु अंग चन्दनाति
गन्ध पूजित पटपीत मदन लजावत सौभाग तरंगिमा । युवती सरिता
अनंग सम्मिलित शोभा सीमंत गुणा गरिष्ठ भाव भाव सिन्धुसंगिमा ।
बदन कमल अलक मधुप नयन खल्लरीट बीच अद्भुततिल कुसुमनाक
भोहंगिमा । अवरग्युति बिमोहन चल कुण्डल ताटक गण्ड मण्डित
मुसकानि अधर रंग रंगिमा । नखशिख भूषणा असोल मजहर मादक
सुबोल बैजयन्ती भूषित श्रीउर उत्तंगिमा । कृष्णादास प्रभु गिरिधर
सुरतनाथ राधावर बेसागान तानशब्द थुंग थुंगिमा ३९ ॥ राग बिभास ॥
तेरे भावसे गोपाल प्यारी बोलत बन । चलहिं मिलहिं न राबिका
नवसत साजे शिंगार तन । तब देही बिद्युत लता नन्द सुवन सांवल
धन । सोहहिं किनकंठ लागि रति बिलास उलसित मन नबनि कुञ्ज

कूजत कलबेरु युवति ताप हरन । कृष्णादास प्रभु नखर मोहन गि-
 रिराज भरन ४० जेसेत कहति तेसेई बने । भरे जाने सखिलोहि सम्हारि
 भासिनि अपने धने । सुरत सुभानिधि प्रथम सुदुल रनयामे दोसे कै
 सने । कृष्णादास प्रभु गोवर्द्धनधर गुना रयाल कांभ गने ४१ गोपालो
 देखहि किन आईरी । राजू वने गोविंद नय कमल नयन लोके हो
 कैत पठाईरी । तरासातनया पुलिन विमल प्रारद निशि जुगुआईरी ।
 राकापतिकर रञ्जित दुमलता भूमि सुहाईरी । गोवर्द्धन धरन लाल
 गानमो बुलाईरी । कृष्णादास प्रभुको मिलनि युवतिनि सुखदाईरी ४२
 सुन्दर नन्दनन्दन जोहोपाऊं । अङ्ग सग लागि मदन मनोहर या जोड़े
 को देशनिकारो दिवाऊ । मृगमद अगर कष्ट कुंकुमा दिलेअरगजा
 देह बढ़ाऊं । विविध सुगन्ध सुमनवै मनुसाख सघनान कुंजमंसेज वि-
 छाऊं । रागरागिनी उरपसुलत सचतान तरंगकै मधुरेगाऊं । कृष्णादास
 प्रभुगोवर्द्धनधर रसिकाशोभेगिा सुविधिरिभाऊं ४३ रागविभासपट्टाल ॥
 जिहँबंद पिउबेगिमिले करहि किनमोइबंद । विरहधीर हरनुरसिक
 सुन्दरि गोविंद त वजसर की कुसुमिनी हरि तुन्दान चन्द । अचन
 किरिगि बिगतअमृत पीवहि अतिपुष्टकंद । तूकरनीबरललना नन्द
 सुवन मदायंद । कृष्णादास प्रभु गिरिधर रति सुख आनंदकंद ४४ ॥
 रागविभास । जतिताल ॥ हरिमोहन की मोहन बानक मोहनरूप मनोहर
 सूरतिमोहनमोहिँ अचानक । मोहनवरयंचंद शिरमय्या मोहननयन
 सलोल । मोहनतिन भौंह मनमोहन मोहनचारुजपोल । मोहनयवरा
 मनोहर कुण्डल मधुसूदुमोहनबोल । कृष्णादासप्रभु गिरिधरन मनोहर
 नखशिख प्रेम कलोल ४५ ॥ रागविभास । इकताल ॥ तरासातनया त
 आवतहींप्रात समयकदुक खेलतदेखयो अनन्दकोकंदया । नूपुरपद
 कुशात पीतांबर कटिबाँधे लालउपरनाशिरमोरनिके चंदवा । पंक-
 जनयन सलोल मधुरमोहन बोलगोकुल सुन्दरीगंग विनोदमुकंदवा ।
 कृष्णादासप्रभु हरिगोवर्द्धनधारी लाल चारुचनबनि तोरेकंचुकीके
 बंदवा ४६ ॥ रागविभास । जतिताल ॥ जोभावतिसीकरतिलाडिलीप्यारीरसि
 कगोपालाहभावाति । गुणाकी राशितालजतिप्रमुदित रागविभासहि
 गावाति । तान बंधान मप्रसुर सांचेगति बहभांगि मिलावति । कृष्णा-

दान प्रभुगिरिवर रागरकेल छबीले सुखीय रिभावात ४ ॥ रागविभाम ॥
 तेरेबदनकी शोभा तोहिपे कहतबने जोमुख जीभ होइ लख कोटिक ।
 चिबुकपावन बिंदु खेलचतुर धिधाता देखोजनकोऊ दियोचखोडा
 कोटिक । तिलकआधोलताट कुरी उरज सुनह शिथिलअंग आभा-
 सकोटिक । कृष्णादास प्रभु गिरिवरन रसिकसंग सुरत हड्डोले प्यारी
 लिये निशिभोकोटिक ४८ रंगीले नयना तेरेहो कब देखीं गिरिवरन ।
 प्रारद सुख सुंदर वर विविध तापहरन । प्रयासवेत अनियारे भाव
 विविध वरन । मीन कमल खंजन अलि मृगजु भये प्रारन । श्रीरधारस
 लंपट कूचसरोज चरन । गाइक कृष्णादामहेत मुरलि तान हरन ४९ ॥ राग
 विभाम । इकताल ॥ भौह धनुययुत नयन कुसुमशर जिहिकेलगतसो परि
 परिताने । सहजाहि सुभगछबीली मोई गोवर्द्धनधरजाकीमाने । हावभाव
 नव सुरत तरंगानि सब बिधिकोऊ कला स्वई जाने । कृष्णादास प्रभु
 युवाति यथपति करि लौंहीं तिहि अपनोलाने ५० ॥ रागविभाम । जतिताम ॥
 इहमनकैसेक रहत रहत राख्यो । जिहिं मधुपति ह्वै गिरिवर प्रियको
 बदन कमल रस चाख्यो । जु करुकमें कीन्ही परप्रशहोइ मातेहीसत
 साख्यो । बार बार बहुविध ममुभायो ऊचोनीचो भाख्यो । केहुन
 मानति महाहठीली कही तुम्हारी आख्यो । कहै कृष्णादास कहाँलौं
 बरतौं पांच चोर मिलि चाख्यो ५१ ॥ रागविभाम ॥ बलि बलि जाउँ
 रसिक गिरिवरप्रिय नीके आयो प्रात तमचुरके बोले । इतो संकोच
 कौतको मानत अधिक लजाइ रहे बिनु बोले । सध्या बदे बोल मांचे
 किये अतसिमें जान्यो करि हैं यहारहि जोले । कृष्णादास प्रभु ऐसी
 कौन तोषां काहसके विजग मां विभुवन तकतीले ५२ आजु लालअति
 राजेबैठे बनि कमि छाजे सुधिन ककुरी गात प्यारीप्रेम मगना । लट-
 पटी पाग अरु शिथिल चिंकरचारु उपदत उरहार प्यारी कंठ लगाना ।
 आलस अरुणा रस भरेरी बिलोचन भरिभरि आवत प्रियसी अनुरा-
 ना । गोविन्द प्रभु प्रियजानि शिरीमणि सुरतिरंग रसविभो निशिज-
 गना ५३ एक रसनाकहा कहें सखीरी ललनकी प्रीति अमोली ।
 हंसनिखेतनि चितवनिजो छबीली अमृत बचन मृदुबोली । अतिरस
 भरे मदनमोहन प्रिय अपने करकमल खोलत बंद चोली । गोविन्द

प्रभु कीहे। बहुत कहा कहरी जेजे बातें कही मोरो। अपनो हरोखो-
ली ५४ त आज देखरी मनमोहनये बलबीरराजे । मदन मोहन प्रिय
मरिामंदिरते बैठेबनि कमि आयकाजे । लटपटपाग सरगजी भाला
लटपटात मधुप मधुकाजे । गोविन्द प्रभुके जुशिथिल असुरा दुग
देखत बिर्याकित कांठिमदन लाजे ५५ परसमसे नन्द ललार आयेहे। उठि
भोरे । असुरा नयन बेन मयरा अटपटे देखियत अधरन रंगभोरे । कैतव
बाद कत करत गुमाई तहीं जाहुजाकेहे अति प्राराध्यारे । गोविन्द
प्रभु भले जुभले जानिपाये जैसे तन प्रथाम तैसइ मनकारे ५६ मदनमो-
हन प्रिय भयो न भोर । प्राचीदिशि नहिअसुरा देखियत अरु सुनियत
नहिं बनखग रोर । गृहितकंठ परस्परदम्पति बिस्लेखकातर अतिजोर ।
गोविन्द प्रभु प्रिय रमिक शिरोमरिा प्यारीक बचननि वितचोर ५७
लालप्यारी अतिबिचस्वरा बशकियेरीसुहाग । बिबिधकुसुमसुवासशी-
तल बिचित्र शय्या रची जाते मदनमोहन निशिजाग । बैठे कुंजकेदार
तवपथ जोवत भरि भरि आवत नयन विशाल तुन अनुराग । दूतीके
बचन गुनि प्रेम ब्याकुलभई मिलिजाय गोविन्दप्रभुको न भित्थोहदय-
दाग ५८ पक खजूर जंबु बदरीफल लेहे काकिनि टेरीद्वार । बालक
यूथ संगबलमोहन चौके करत बिहार । सुन्दर कर जननीके नादिपो
धाये तबहीं नन्द कुमार । हीरा रतनसें पूरित भाजन सेसे परस उदार ।
उदरसें लियो लगायखात चलेसीठे परस रसाल । जूँठी गुठली मारत
गोविन्द हँसत हँसावत ग्वाल ५९ तेरेबारते जाउंसहरि यशोदाकेलाल ।
छांडे उन भावत कैसेनीकेलागत मधुरे सुर गावत मुरली बजावत परस
रसाल । बिभासरग जमायो मधुर मधुर गायोप्रातशुभकाल । गोविन्द
प्रभुप्रिय सुघर शिरोमरिा अहोश्याम तमाल ६० जहांई नयना लगत
तहांई तासां खगत अङ्गअङ्ग साधुरी जुबरानीनजाई । सुन्दरभाल भुव
कपोल नासिका देखतरहे जुलोभाई । हँसत ललनमुख दसन जुन्हाई
होति यह छवि कहा कहीं देखि धोरीआई । गोविन्द प्रभुके जु
सुन्दरबानिक पर बलि बलि बलि बलि जाई ६१ तोरो मुख मानां
किशोरी शरदशशि । दशन ज्योति जुन्हाई बचन शीतलताई अमृत
हासमुहाई बोलत नयनमसि । कस्तूरी तिलक भाल कटु कलङ्क छवि

नखत्र साजर्मां सङ्गलपि । गोविंद प्रभु नंदमुवन चकोर वरपान
करत वरपाण मनस्य तापनमि ६२ इंदुकुमुदिनी सगेरी अरु चक्रवानि
धिय गेरी मुकलित अति गरम कमल मुकलित भये नलिन । भयो
प्रात मुक्ता गात मियरी अति सोनो लागे बोलत तमचुर दीप ज्योति
भट मालिन । कैरी जैहीं रसिकराय नन्दगोप दुहतगाय जागे ब्रजवासी
मोहिं जात देखिहैं गलिन । गोविंद प्रभु प्रेम मगन दम्पति अति कंठ
लागत बढाय कृपा फिरिके प्राप्ति पश्चिम मकेचलनिहंश्नवनिक्कुञ्ज
महल रस दोनरी राजत रङ्गभीने । कुसुमितसेज भोर उठि बैठे आलस
नय अंशुनि भुज दीने । गौर प्रयास तन नील पीत पट संध्रम पलटि
बयन तन लीने । प्रिय बिहारि प्रिय संग सुरत रंग सुभग सिन्धु
ललिततदिक दृग भीने ६४ बनी प्रिय राधा साधव केलि । प्रात
मस्य सखि नवनि कुञ्ज में बढी परम रस बेलि । प्रिय की मुरली
अपन अधर धरि लीन्ही तान नबोल । मोहन रीझि बिषय हूँ दीनी
हीराहार हबेलि । निरखि कमल मुख कला भले जू भले सकल
क वाप्रबलि । सेभी कबहुँ न मोपै बाजी कहे करास भुजा उर मेलि ।
ललिता गिरधर ठाढ़ि ओऽहैं रहिमुख सागर भेलि । भाग सुहाग
कहत नहिं आवे बढ्यो मन आनन्द रेलि ६५ अतिही कठिन कुच उच्च
दोऊ तुंगनि से गाढ़े उर लगायके भेरी कामहूक । खेलत में लरट्टी
उरपर पीरपरी उपमा वरगान को भई मति मूक । अचरामृत रस
ऊपरते अंचवायो अङ्ग अङ्ग सुख पायो गयो दुख टूक । कीत स्वामि
गिरिधारी राज लूट्यो मनस्य तुन्दावन कुञ्ज में मैहं सुनी कूकईई
आजु किशोर कुंवरकान्ह देखिरी देखिआवत गावत भावत नयननि
बयन पावत सकल अङ्ग अङ्ग । मुरली कुगात सुभग बदन मदन मो-
चन लोल लोचन मधुप टोल मधुर बोल गुञ्जित संग संग । चरगा नू-
पुर कटि सुमेखल रति रता रस भरेरी श्याम कनक कपिस अम्बर
समरकृत मानभंग । कीतस्वामी गिरिधरन हरन तनके मनके संताप
मेरिके बिरह बेदन प्रीति मों जोति अनङ्ग ६७ यमुना पुलिन सुभग
तुन्दावन नवललाल गोवर्द्धन धारी । नवल कुञ्ज नव कुसुमित बल
नव नव वृषभान दुलारी । नवलहास नव नव कवि कीइत नवल बि-

लास करत मुखकारी । नवल बिटुलनाथ कृपाबल नन्ददास निगसत
 बलिहारी ६८ भोरही छविमों प्रभागा वीणा बजावति टाढी । ललित
 राग अनुराग ललित रति ललित गुणा आढी । लाडिलीलाल सहस्र
 में पौढे तिनहें जगाय रिभायबे को परम प्रीतिगाढी । नन्ददास द-
 र्शपति कृबि निरखत अति उत्क्रांटा बाढी ६९ कैलिकिये हरिनामक
 के संग भोरहि सज्जन को उठिवाड़े । नीलकी चोलीमें देहादिले य-
 मुना जलमें जैसे चन्दकी छाई । लेडुबकी अलकें विधुरीं जलते छिट
 की मुख ऊपर आई । दोऊकर बार सवारि लिये निकस्यो शशि
 फोरि पहारको ताई ७० तैनिशि लालकों रतिमानि में तबहीं जानि
 पाग डगमग सगत परत सूधे । शिथिल बदन कबरी केश राजत आ-
 नन सुदेन को गत कहु लटपटात बानी । यह छवि मोमन भाई सिटी
 है चपलताई पीक लीक अवरन लपटाती । मदन मोहन किशोर
 रिभाये प्रयासा प्यारी धनि धनि धनि नव निकुञ्जत रानी ७१ प्रात
 ममय नवकुञ्जके द्वारे ललिता ललित बजाई बीता । पौढे सुगत
 प्रयास श्रीप्रयासा दर्शपति चतुर नवीन नवीता । अति अनुराग सुहाग
 लाडिली कोटि कलान प्रवीन प्रवीता । बिहारी दास बलि बलि
 जोरीपर तन मन धन न्योछावरि कीता ७२ जागतही जागतगई निशि
 भीति हो देखि सखि सुखदैन । अपने २ सुख सहैत हरषत करखत
 सखी भये मन सैन । विधुरी अलक फलक आलस वलित नैन बैन ।
 चारो पहर बिहरत यों सखी भोरभयो बिहारनि दासिके हंसि ठरें
 उर सेन ७३ लाडित लाडिली नवरङ्ग अपने लाल बिहारी के संग ।
 अतमाने में जान प्राणप्रिया पति बिपरीत रतियों सुखदे अङ्ग अङ्ग ।
 बिगलित कचकुसुम शिथिल पाग मरगजी संग । बिहारनि दासकी
 स्वामिनी श्यामहि देख सखी सुख प्रेसकी परनि दरनि रंग अनङ्ग ७४
 रसिक लालके संगसंग जागीरी सुख चैनसों रैनिसगरी शोभितशीश
 ककुम शिथिल अलकें तामें कहूँ कहरी सांगमोती बगरी । अरुणानैन
 सलील मोहन मधुरे बोल रचीहै पीक कपोल प्रेम सुभगरी । सुवश
 किये बिहारीदास बलिबलि प्यारी सुरत निपुणा नित सुहाग भाग
 अनुराग अगरी ७५ भोरहों करसों कर जोरें अङ्ग अङ्ग मोरें आलस

लैत जँभाई । पियके अङ्ग निशक मयै निशि हूलसि हूलसि बिलसी
 अनन्द में उनींदिये उठिआई । अङ्गराग अनुराग रही फबि छबि ब-
 रानी नहिंजाई । अति सुख भरिभरि उमंगि बिहारनि दासिसों कहति
 सेसेहों लाइ लड़ाई ७६ धनि मुहाग अनुराग तेरो तू सर्वोपरि राधेजू
 रानी । नख शिख अँग अँग बानी प्रीतम प्राणा समानी रसिक कि-
 शोर सुरति सुखदानी । कोजाने बरगान बपुरा कबि अद्भुत छबिनहिं
 जात बखानी । बिहारीदास पियसों रतिमानी में जानि मयानी तोहिं
 सब निशि सुख सिरानी ७७ मुखपट ओटन करि प्यारी । काहेको
 सुंदे रहो भुक भुक्ति रसिकनी कहतहैं रसिकनि हारी । तू जु इतौ
 हठ करति चतुर त्रिया रतिके चिह्न देखाय निहारी । नवलकिशोरै
 मिलन किशोरी मानुतजि बिहारनिदासि बलिहारी ७८ करौकलेऊ
 बलराम कृष्ण तुम कहति थोदा सैया । पाछे बढइ रसाल संगलेके
 चलहु चरावन गैया । पायससिताविस सुरभिनको हित करि भोजन
 कीजै । जगजीवन ब्रजराज लाडिले जननीको सुखदीजै । शीश मुकुट
 कटि काछि काछी पीतबसन तनधारो । लेहु लज्जुट मुरली कर मो-
 हन मनय दर्वनिहारो । मृगसद तिलक अवगा कुंडल मरिा कौस्तुभ
 कंठ बनावो । परमानन्द दास को ठाकुर ब्रजजन मोद बढावो ७९
 प्रातसमय उठि यशुमति जननी गिरिधर सुतको सबति न्हवावति ।
 करि शृङ्गार बसन भयगा सजि फूलन रचि रचि पाग बनावति । छुटे
 बढबागो अति शोभित बिच बिच चोब अरगजा लावति । सुधललाल
 फन्दना शोभित आजुकी छबि कछु कहत न आवति । बिबिध कुसुम
 को माला उरधारि ओकरमुरली बेतगहावति । लैदर्पणा देखे प्रीमुख
 को गोबिन्द प्रभु चरणान शिरनावति ८० सुभग शिंगार निरखि मो-
 हनको लैदर्पणा कर पियहि देखावे । आपुन नेकु निहारिये बलिजाउँ
 आजकी छबि कछु कहत न आवे । भूयसा रहे ठांवठांवाहिं फबि अंग
 अङ्ग अति चितहि चुरावे । रोम रोम पुलकित तन सुन्दर फूलनरचि
 रुचि पाग बनावे । पंचल फेरि करत न्योछावर तन मन अति अभि-
 लाष बढावे । चतुर्भुज प्रभु गिरिधरको रूप सुधा पिवत नैनपुट त्रिपत्त
 न पावे ८१ आजुको शिंगार सुभग सांवरै गोपाल को कहत न अनि

आये देखेही बोनआवे । भूयसा सबभाँति भाँति अङ्ग अङ्ग अङ्गुतवाँति
लटपटी सुदेशपरा चित्तकी लुरावे । मकर कुण्डल तिलकमाल कस्तूरी
अति रसाल चित्तबनि लोचन विशाल कोटि काम लजावे । कंठ श्री
बनमाल फेंटा कटि छोरनको निरखि त्रिभुवन द्वियको धारज मन न
आवे । मेरे संग चलि निहारि कुंजमहल बैठे हरि हित की चित बात
कहूं जो तेरे जियभावे । चतुर्भुज प्रभु गिरिवरधर कोटि मदन मरति
बहुभाग ताहि गिनो जो जातही लपटाये ८२ मारि री आज और की
और दिनप्रति औरहि और देखिये रसिक गिरिराज धरन । नितप्रति
नव छवि बरगो सो कौन कवि नितही अङ्गार बागे बरन बरन । श्याम
तन अङ्ग अङ्ग मोहन कोटि अनङ्ग उपजी शोभा तरङ्ग विश्वके मनहरन
चतुर्भुज प्रभु गिरिवरको रूप सुधा नैनपट पान कीजे मेरे हिये सर
शरन ८३ ॥ अथ खडिता रागविभास ॥ मरगजी उर कुंदमाल लोचन अलसात
लाल गमगात चरगा धरनि धरत रैन जागे । शीशते खसि सोर मुकु
भुकुलीके तटआयो निकट शैल चपल चन्द्रिका सुवाँधि पाट तागे ।
अतसी कुसुम तन सुभाँति कहूं कहूं कुंकुमकी क्रांति मदन नृपतिपीक
छाप युग कपोलनि लागे । छीत स्वामि गिरिवरधर सोरभ रसमम
सधुप संगमगुणा गानकरत फिरत आगे आगे ८४ ॥ रागविभास ॥ कमल
नयन श्यामसुन्दर निशिके जागेहो आलस भरे । कर नख उर राजत
मानों अर्द्धशशि धरे । लटपटी शिर पाग खिसत बदन तिलक ठरे ।
मरगजी उर कुसुम माल भूयसा अङ्ग अङ्ग परे । सुरति रङ्ग उमगिरहे
रोम पुलकि होतखरे । परमानन्द रसिकराय जाहीके भाग ताहीके
ठरे ८५ सांवले भलेहो रतिनागर । अतके दुराये क्यों दुराये क्यों दुरत
हो प्रीति जुभई उजागर । अधर काजर नैन रगमगे रची कपोलनि
पीक । उर नख रेख प्रकट देखियतहै परी मदनकी लीक । पलटपरे
पट तिलक गयो सति जहँ तहँ कंकरा गाहे । परमानन्द स्वामि स-
धुकर गति भली आपनी छाते ८६ आस उनीदेई नैननभूमतआवत
मंदे अधिक नीके लागत अरुन बरन । जानेहो सुन्दरश्याम रजनी
के चारों याम नेकहु न पाये मानों पलक परन । अधरन रंगरेख उरही
चित्रविशेष शिथिल अङ्ग उगमगात चरन । चतुर्भुज प्रभु कहाँ बसन

पतीत आये सांची एकही गिरिराजधरन ८७ सांभ जुआवन कहि
 गये लाल भोर भये देखे । गनत नख नैन अकुलाये चारिपहर मानो
 युगते विशेषे । कीन्हों भली जुचिह्न मिठाये अधरान रँग अरु उरनख
 रँखे । कुम्भनदास प्रभु रसिक शिरोमणि गिरिधर तुम्हरे कैसे लेखे
 ८८ इतनी बार तुम कहाँ रहे । मगरी रँगि पथ चाहत चाहत नैनदेहे ।
 कुम्भनदास प्रभु भये ताहीके वश जिनहीं गहे । गिरिधर पीयभले बोल
 निवाहे सन्ध्या जु कहे ८९ निशिके उनींदे मोहन शयन रसमसे । काहे
 को लजात कहहुधों कहा लालन कहाँ बसे । डगत चलत आलस जँ-
 भात हो बदन रेख देखियत बसन खसे । कुम्भनदास प्रभु गिरिधर तुम
 भुजबंधन करि उरहि लाये कसे ९० अरुणा उनींदे आये हो रसमसे
 निशिके चिह्न प्रिय कहा दुरायें । नखपद प्राणा ध्यारीके मोहनकांति
 न रूपत छिपाये । कंकुम रंजित उर बनमाला बिलुलित मुख मधुर
 जनाये । गिरिधर नवकेलि कलारस प्रमुदित कृष्णादास अलिगाये ९१
 रागविभाम । चर्चंगी ॥ आजु मगरी निशि कहाँ जागे लाल कहो जु सांची
 सुभग सांवरे साधो । घोय मयन शब्द प्राणापति गृह गृह रहेउ मोहन
 भोर प्रकट भयो आधो । कमल बिकसित भये चक्रवाको हँसी सुमुखि
 पुलकित मुदित निजपति आराधो । विध मोहन बदन निरखि नभ
 चन्द्रमा सगरा लज्जित भयो प्रेम गुहा बाधो ॥ गगनचर्चंगी ॥ ताल धरि
 मधुप गावत सुयशपिक मिकर साधो । कहें कृष्णादास गोवर्द्धन उद्धरन
 धीर प्रिय सुन्दरी कृपसा धन लाधो ९२ ॥ राग विभाम ॥ भली कीन्हो
 लाल गिरिधर भोर आये बोल सांचे । युवतिबल्ला विरध कहियत
 मोहिँ सो सब सुबिध बांचे । ताहीपैजु मिधारिये प्रिय जाही के तुम
 रँगराचे । पहिले किह सिख पठये मानहुँ मन्थी सत्तेकाचे । अधमूचत
 आठ स्थिर नहीं निशि प्रिया रतिबंध पाछे । सुनिहँ किन कृष्णादास
 नगरि ज्यों नचाये त्योहीं नाचे ९३ अधिक नीके लागाति रगमगे
 लात आधी आधी बतियां कहत मेरे ध्यारे । खेलत प्राणाध्यायी सों
 मोहन निशि जाग नैना रतनारे । मरगजी मृगमर तिलक साथे पर
 कलुक जन्हात अधर सँतिकारे । अमजल करु कपोल मंडलकर सेंदुर
 रँगराते भोंह अनिधारे । अंभरन बसन पलटि पहिरे अङ्गनूपुर कुरात

चरणा मोहें भारे । सुनि कृष्णादास रसिक गिरिधर पीय पायेंहो नेक
 करहु न न्यारे ६४ आवत नने सुंदर नंदगन्दन नटपटी पाग डगमगति
 चाल । अरुणा कपोल अमर सजिकारे वपलनेन अमरीधेलात । रति
 जय लेखु लिखति उरपद नख जीत्यो मदनगोपाल कत आलमाल ।
 तजि न सकत सौरभ रन लंपट कुच कुंकुम रंजित यनमान । पलति
 पये पट कहहु कहाते शिथिल ग्रन्थि कटि बिंकिशित जान । छूटेवं
 स्वेदकशिका तन काहे लजात बिरह रिपुमाल । कृष्णादास प्रभु कितव
 दुरतहो दृगमद तिलक सरगजी माल । मोहनलाल गोवर्द्धनधारी प्रकट
 भयो पिय सुयश विशाल ६५ अरुणा उदय सुरतकेलि रतलाल नीकी
 बनी नव निकुंज ते आवनी । बनमाल रन सत्तमंग अलिमंडली तासो
 मिले श्रीमुखार्ह सरस गावनी । चरणा नूपुर दीप्ति कटि छुडि क्षुद्र-
 टिका मधुर मुखरति नील पटपर सुहावनी । रसमगी आदनी प्राण
 प्यारीकी सुरत अभिराम तन देह बिसरावनी । कामजय पवरस उरसि
 कामिनि लिखयो नख अंक पांति रसिकनि हृदय भावनी । शिथिल
 अलकावली गलित बरहापीड अरुणा लोचन मोहसन्मथ नचावनी ।
 श्रम स्वेदकरागात लाल गिरिधरनके निशिकथा सुमिरि मन रुचिर
 सुसुकावनी । मदन रस रहसि गाइके कृष्णादास कहा आपने पीतप
 दिये पहरावनी ६६ काहेको दुरावत अपनी केलि जानेहो हरि प्रो-
 तम नागर । मोहिं दिखावहु बांचि सुनावहु प्यारी करज अङ्क उ
 कागर । निशिकी बातें सबै प्रकटभई कत लजातहो कौतुक सागर ।
 कृष्णादास प्रभु गिरिधर चंचल युवति तापहर सुयश उजागर ६७ संध्या
 बदे बोल मनमोहन प्रात आइ काने सबसांच । तन मनउहें अभामत
 प्रीतम काहेको लाल करतहो छपांच । यह तो बिधा सो जाने गि-
 रिधर जाको लगी बिरहकी आंच । सुनि कृष्णादास जाउँ बलिताकी
 जिन लीने सरबसदे लांच ६८ बनेहो रसमसे आये प्रात । आलसभरे
 वपनकी शोभा निरखि लजित जलजात । संध्या बदे बोलकिये सांचे
 काहेको लाल लजात । कृष्णादास प्रभु गिरिधर बिनवत युवति मृगी
 तकिं प्रात ६९ बनेहो रसमसे आये प्रात । प्यारी नखपद रत्नावलि
 रस रंचित नवरंग गात । नख रेखा मोहनि युवतिन मन प्रमुदित पु-

लक जम्हात । कृष्णादास गिरिधर चितचञ्चल ज्यों तरवरकोपात १००
 बलि बलि जाऊँ रसिक गिरिधर प्रिय नीके आयेतमचुर बोले । येतो
 संकोच कौन कहो आनत अधिक लजाये रहे बिनु बोले । रुध्रा बदे
 मोल माँचे किये आत बश भैं जान्यों करिहैं यहाँ रहि जौले । कृ-
 ष्णादास प्रभु येना कौन तोसां कहिके विजगभौह विभुवन तक
 तोले १०१ कौनके भोराये भोर आयेहो भवन गरे ऊँची दृष्टिक्योंन
 करो कौनते लजानेहो । जाही के भवन भावे ताही के धारिये पाय
 काहे येनी आउपरी कौन गहरानेहो । भोरी भोरी बतियन भोरवनलागे
 मोहिगीरिधर तुमअतिही सयानेहो । कृष्णादासप्रभु छाँड़ो अटपटो
 रहेहो लाल आजहों तुम्हें दोखि नीके पहिंचानेहो १०२ मदनमोहन
 प्रिय आये प्रात । चारि याम जागे प्यारी सँग अरुणा नयन आलस
 जम्भात । विन गुना मोतीमाल विराजत अंजन अवर पीक लगिगात ।
 ब्रजपति प्रियतुम्हें येसीन बुझिय हमसां फिरि तुम हँसि मुसकात १०३
 मदनमोहन प्रिय जागे रैन । आलस बश जम्हात शिथिल अंग अरुणा
 तिहारे नैन । उपटे उर हार प्रकट देखियत प्यारी कंठ लागि दियो
 मुखचैन । ब्रजपति प्रियकी चाल लचनि पर कोटिक वारों भैन १०४
 सुन्दरलाल गोचर्द्धनधारी कहँ तुम रैन बसे मेरेलाल । आलस नयन
 बयन चलबोलत कूटेबंद डगमगाति चाल । शारंग अवर सूचि बपु
 नखकृतकूच प्रसंग उर बिलुलित माल । करि रयहीन सीन पति जीत्यो
 चही धनुय मानों मोह विशाल । नहीं सतभाय कहति प्रीतमसां फि-
 रतहो पात पात अरु डाल । दास सुरारि प्रीति औरनि सां देखति
 प्रकट तुम्हारे हाल १०५ आये हो उठिभोर रसमसेनन्दलालारे । अरुणा
 नयन बयन अटपटे-भयगा देखियत अवरन रंग भारे । कितव विबाद
 करत हो गुसाईं तहीं जाहु जाके अति प्राणा प्यारे । गोविन्द प्रभु भले
 जु भले जानिपाये जैसेतन श्याम तैसेमन कारे १०६ निशिके उनींदे
 अति छबि लागत भरे प्यारीरंग । आलस बलित ललित लोचन युग
 भरि भरि आवत कुंज केलि मुधिके प्रेम उमंग । सुभग उरसि परबिन
 गुना मोतीमाल कुंकुम खचित उपटे हैं कूच उत्तंग । गोविन्द प्रभु कत
 करहु दुराउ येसब कहत तुम्हारे अंग अंग १०७ प्रिय बिनु जागत रैन

गई । अर्वाध बदि गये न आये बड़ी बेर भई कछू कहत करत कछू
 कौन है सोख दई । सांचू नहीं सकोचंगकहा रीतितई । कैसे कीजे
 त्रिप्रवास भये हो बियई । रसिक प्रीतम रावरीहै किनु किनु गतिनई
 १०८ ढीले ढीले पगधरत ढीली पाग ढरकिरही ढीले से ढहेमे सेमे
 कौन पैढहेहो । गाढेजूहीयके पीयसेसी गाढी कौनअय गाढेगाढे भू-
 जनसां गाढे कर गहेहो । लाल लोल लोचन उनीदे लागि लागिजात
 सांची कहे पीयहो तो लाल लहेहो । नन्ददास प्रभु सांची क्यों नबो-
 ले भयो प्रातकहेबातप्यारे तुमरात कहारहेहो १०९ पागखनी शिर
 पेंचलटपटी घुसततयनउनीदे उजागरि । पीक कपोल अधरमसि दागे
 कंकरा पीठि गहेउ अति सुन्दरि । जात उतेइत पाउचले क्यों बोलतहो
 तुतरातलिये दरि । प्रातसमयउठि कहत मूरप्रभु आवतहो अनुरागभरे
 हरि ११० चन्द्रावलि धाम श्याम भोरभयेआय । अति रिसकारि रही
 बाम रैन जागि चारि याम देखै जो द्वार कान्ह ठाढे मुखदाये । सं-
 दिरते रहि निहारि मनहीं मन देति गारि सेमे कपटी कठोर आये
 निशि बीते । रिसनहीं सकी सम्हारि बैठी चढिहार बारि ठाढे गिरि-
 धारी निरखि कबि नखशिखहीते । बिनगुना बनी हृदय माल ताविच
 नखकृत रसाल लोचन दोउ दरशि लाल जैसे रुचि बाढी । जावक रंग
 लगयो भाल चंदन भुजपर विशाल पीकपलक अधर झलत बाम प्रीति
 गाढी । क्यों आये कौन काज नाना करि अंग साज उलटे भयरा शिं-
 गारि निरवतहो जाने । ताहीके जाहु प्रयाम जाके निशि बसेधाम
 मेरे घर कहा काम मूरदास गाने १११ मैं जानी प्रियवात तुम्हारी ।
 भोर भये मेरेगृहआये सेमेभोरे भारी । यहां आये मुख परमन मेरोहृदय
 दरत नहिं प्यारी । कपटचतुरई दूरि करौजू अपअश लेत रुतारी ।
 कहा सांच मैं खोवत करते भूँटे कहां फवावत । मूरश्यामनागर ना-
 गरि वह हम तुम्हरे मत आवत ११२ रैन जागे रति रसपागे अनुरागे
 नवप्रियसंग । सोसन मुखकत आयेहो दर्शन प्रिय रसमसे नयन अटप-
 टात बैननि तहई जाहु जाके रंग । बिन गुन बनी माल पीक कपोल-
 निलाल जावक तिलक भाल कीन्हें रसवश अंग । मूरदास प्रभु तुम
 रजनी बिहाइ आये प्रात भये आये मेरे जीतिअनंग ११३ साई आज

लाल लटपटात आये अनुरागे । शोभित भूयसा छंग छंग आलस भरे
 रैनि उनींदे जागे । लटपटी शिर पेंचपागे छूटे बंदनचागे सुरश्याम
 रतिक राय रस वश कीन्हें सुभाय जागे जहां सोई बिया बहभागे
 ११४ मंगल करन हरन मन आरति बारति मंगल आरति बाला ।
 रजनी रसपागे अनुरागे जागेप्रात गात अलसात शिथिल बसन अरु
 मरगजी माला । बेटे कुञ्ज महल सिंहासन श्री वृषभान कुँवरि नंद-
 लाला । ब्रजजन मुदित आट ह्वै निरखत निमित्त न लागत नवनिह-
 जलता दूसजाला ११५ रतन जटित कनकथाल मध्यसेहै दीपमाल
 अगाराधिक चन्दन अतिबहु सुगन्ध मारै । धननननन घंटा घोरभक्तनन
 भान रत कोरतननन ततथेई थैई थैई करति है एकदाई । तननननन
 तान मान राग रंग सुर बंधान गोपी जन गावैं भीत मंगल बधाई । च-
 तुर्भुज गिरिधरन ताल आरती बनी रमाल वारत तनमन प्राणा यशोदा
 नन्दराई ११६ मंगल आरती कीजै भोर । मंगल जनम करम गुण मं-
 गल मंगल यशोदामाखनचोर । मंगलमुकुट बेगा बनमाला मंगलरूप
 रवन मनमोर । जन भगवान जगत मयमंगल मंगलराधा युगलकिशोर
 ११७ श्री गोपालजकी आरती करतुहै । घंटा ताल परबावज बाजे प-
 ज्जमुखी बाती बरतुहै । शिव विरंचि नारद इन्द्रादिक सब मिलिगा-
 वत बीन बजतु है । प्रयास प्रभुको देखत सब तन मन धन वारिबारि
 डारतु है ११८ ॥ अथ समुदाय पद । राग बिभास ॥ प्रयासमुन्दर प्राणाप्यारे
 छिनिछिन जनिहोहु न्यारे । नेककी ओट मीन ज्यों तलफत त्यों तल-
 फत नयनन के तारे । मृदुमुमकानि बंक अवलोकनि डग मग चलनि
 सहज में सुढारे । चतुर्भुज प्रभु गिरिधर वानिक पर कोटिकन मनमय
 वारे ११९ ॥ राग बिभास ॥ बरगात तउन बने सुनिमजनी रगमगौ बेय
 बन्यो गोपाल को । रसना जो होहि लिखिकोटिक रूप गोवर्द्धनधारी
 लालको । प्रयासधाम कमनीय बरगासखिमनो तसगा धन तरु तमाल
 को । युवती लता गात अरुभानी पान करत मधु मधुप मालको । नख
 शिखमदन कोटिलावन छबिभूयसा बसननयन विशालको । कप्यादास
 प्रभुसुरति सुवानिधि ताप हरण तिय बिरह ज्वालको १२० प्रयासा
 प्रयास सेज उठिबैतै अरंस परसपर करत बिहार । उन उनकी पहिरी

मोतिनकी माला उनउनको पहिरेउ नौसरकोहार । लउपाठ पेंच सँ-
 चारति प्यारी अलकें सँवारत नन्दकुमार । सूरदानप्रभु नागारि नागर
 विपरित भयगा करत शिंंगार १२१ चिरई चुह चुहानी चन्दकी
 इथोति परानी रजनी बिहानी प्राची पियरी प्रबानकी । तारिका दु-
 रानी तम घट्यो तमचूर बोले श्रवणा भनक परी रागलालित के तान
 की । शृङ्गमिले भार्या बिहुर जोरी कोकमिले उतरी पनिचा श्रव
 कामके कमानकी । अथवत आये गृह बहुरि उवत भानु उठो प्राणा-
 नाथ महा जानन मरिा जानकी । ब्रज घरघर इहैकरतचवाउ लोग
 बारवार कहनि करनि डरनि घरनि घरनि पग आनकी । सूरदानप्रभु
 ननरसुवनसिधारो धाम सुनत उठे छबि कृपालकृपाके निधानकी १२२
 काहेन सेइये गोकुल नायक । भक्तनको ठाकुर भगवान सकल सुखनि
 वो दायक । ब्रह्मा महादेव इन्द्रादिकजाके आज्ञाकारी । सुरतरुकास-
 धेनु चिन्तामणि बरुण कुबेर भण्डारी । औरों नृपति कछो मनमाने
 सन्मुख बिनती कीजै । तुम प्रभु अन्तरयामी व्यापक दुर्दित्य शाखि
 को दाँजै । जनम करम अवतार रूप गुण नारदादि गुणगारवै । पर-
 मानन्द दास श्रीपति यश अवस भले बिसरावै १२३ बलिहारी पट
 कमलकी जिन महँ शत लक्षणा । ध्वज वज्रांकुश जब रेखा ध्यानकरत
 बिचक्षणा । तेचिन्तत प्रैताप हात शीतल सुखदायक । नख मरिाकी
 चन्द्रिका इथोति उड्डवल ब्रजनायक । रुन्दावन गोसंग फिरत भूतल
 हत पावन । गङ्गादिक तीरथ प्रसाद भक्तन मनभावन । भक्तवास क-
 मलानिवास साया गुण बाधक । परमानन्द ते धन्य जन्म जे मगुण
 आश्रयक १२४ माईहे अनन्दगुणगाऊँ । गोकुलकी चिन्तामणि साधव
 जो मांगों सो पाऊँ । जबते कमल नयन ब्रज आये सकल सम्पदाबाढी।
 नन्दरायके द्वारे देखो अयमहा सिधि ठाडी । फूल्यो फूल्यो सकल
 रुन्दावन कामधेनु दुहिलीजै । सांगे मेह इन्द्र बरयावै कृष्णाक्षपा सुख
 जीजै । कहति यशोदा सखिन आगे हरि उत्तराप अनावै । परमानन्द
 दासको ठाकुर सुरलिसनोहर भावै १२५ बिलगु जिन मानोरी कोउ
 हरिको । भोरहिं आवत नाच नचावत खात दही घर घरको । प्यारो
 प्राणा दीजे जो पइये नागर नन्द महरको । कुम्भनदास प्रभु गोबर्दन

धर रसिक राधिका बरको १२६ पाखी तेरे चपल नैन अरु बड़े बड़े
 तारं । हरि मुख निरखन मात पटनिमें निशिदिन रहत उद्यारे । जो
 आगेतेपक्ष रोकते न अग्रसा तोनजानोकहां चलेजाते अपरारे । कुंभ-
 नदास प्रभु गिरिवरन रतिक ये क्षपा रससींचे अति मुख बाहे भारे
 १२७ तेरे मुखकी निकाई सोपै बरणी न जाई । अंगअंग छविछाई
 नैननिलागे सुहाई ऐसी रचिपाचि बिधविध केबनाई । भौहन की कु-
 रिलाई नैननि अरुगाताई नासिका सुवनबनी अधर सुवाई । धोंधों
 प्रभुकेमन ऐसी भाई कहत न कछु बनिआई और सोहेंकीसोहें तेरीये
 दुहाई १२८कोउ मैया बेर बैचनआई । सुनतहिंदेर नन्दरावरमें भीतर
 भवनबुलाई । सखत धानपरे आंगनमें करअंजुली बनाई । ठसक ठसक
 चलतअपने रंग गोपीजन बलिजाई । लियेउठाय रिभूतय करिगोपी
 मुखचूंबत न अघाई । परमानन्द स्वासिआनंद बहुत बेरजबपाई १२९
 नन्द किशोर पेरी करन बोहनी न पाऊं । गोरस के मिस रसाहँ हँ-
 ठोरन सोहत मोहन सीठी तानन कैसेकै दधि छिपाऊं । गोरस मेरो
 घरहि बिजैहै काहे को तुन्दावन जाऊं । आशकरन प्रभु मोहननागर
 यशुमति जाइ सुनाऊं १३० भोरही दानसांगत मोसों गिरिधर । प्रातहि
 उठके चलीजो नगरको बैचन दधि मटुकीजरि शिरपर । जोतुम
 हमसों आरि करहुगे तोहममब मिलि उलटिआहिंघर । सांचीकहोधों
 बातव्रजपति प्रभु तुमकोन देवपरीतिहारी मनुहर १३१ होतकि लागि
 रहीरीमाई । जगगृहमेतेदधिखैलैतिकसे तबमेंबांहगहीरीमाई । हँसिदीनो
 मेरोमुख चितयो सीठीसी बातकहीरी माई । ठगि जुरही छेदक सो
 लागो परि गइ प्रीति सहीरी माई । बैठो नेकु जाउँ बलिहारी लाऊं
 औरदहीरी माई । परमानंद सयानी ग्वालिनि सर्वसुखे निबहीरी माई
 १३२ सुन्दर सांवरे मुरली अधरधरी । सुनि सिद्ध समाधि तरी ॥ ध्रुव ॥
 सुनि थके व्योम बिमान । सुर बधू चिब समान । ग्रह नक्षत्र तजत न
 रास । बाहन दधे धुनि पास । सुनि आनन्द उमंगि भरे । चल थके
 अचल ठरे । चल अचल गति विपरीत । सुनि बेगु कल्पद गीत ।
 भरना भरे पायान । कन्दर्प मोहे गान । सुनि खगमृग मौनधरी । फल
 दगाहुँकी सुधि बिसरी । सुनि धेनु मृग थकि रहे । दगा दंतह नहिं

गहे। बछरा न पीवें क्षीर। पक्षीमना सुनि धीर। इतपेलि चपल भी
 नवअंकुर प्रकट नई। तर्हवित्त च चलपात। ररि नितकटको अल्लात
 अंकुरित पुलकित गात। अनुराग नयन चुचात। सुनि चंचल पक्ष
 यक्यो। सरिता जल चलि न सक्यो। सुनि यक्यो मंद गभीर। उल्लस
 जु यमुना नीर। सुनि धुनि चली ब्रजनारि। सुत देह गेह धिसारि
 मन मोहनरूप धरो। तब कामको गर्ब हरो। नवनी न तन घनश्याम
 नवपीतपट अभिराम। नवमुकुट नववनदाम। लावण्य कोटिक काम
 मन मोहेउ मदन गोपाल। तन सांवल नयन विशाल। श्रीमदन मोह
 लाल। सँग नागरीनव बाल। नव कुंज यमुना कूल। देखत सूरदास
 फूल १३३ चलोरी मुरली सुनिये कान्ह बजाई यमुना तीर। तजिले
 कलाज कुलकी कानि गुरुजन की भीर। यमुना जल धांकित भयो
 बछा न पीवें क्षीर। सुर बिमान यकितभये यकिन केाकिल की।
 देहकी सुधिविसरि गई बिसरो तन को चीर। मात तात बिसरि सँग
 बिसरो बालक बीर। मुरली धुनि मधुर बाजे कैसे के धरो धीर।
 सूरदास मदन मोहन जानतहो पर पीर १३४ गोकुल गाउँ रसीले
 पियको। मोहन देखि मित्त दुख जियको। मोर मुकुट कण्डलक
 नमाला। याछबिसों ठाढ़ेनँदलाला। कर मुरली पीतांबर सोहे। देख
 रति प्रतिको मनमोहे ॥ चाल ॥ देखत रति प्रतिको मन मोहे चक्रि
 सी डोलत फिरे। और कछु न सुहाय तनकोबैठि उठत गिरत फिरे।
 मोह मदन बान समान लागे पीर नेकु न आवहीं। और कछु
 उपाय नहीं प्रयास बेग बुलावहीं। मैं तो तजी लाज गुरुजन की। अ
 मोहिं सुधि न परै या तनकी। लोक कहै यह भइ सतिधौरी। सु
 पति छाँड़ि फिरत बन दौरी ॥ चाल ॥ छाँड़ि सुधि न सँभारत त
 कृष्णा छबि हृदय बसी। मदनमोहन देखि भावे विहँसि कुंजनमेंवसी।
 कुंजधाम किशोर ठाढ़े केशरि खौरि बनाय के। चन्द्रिकापर बा
 रिडारों बलि गई या भायके। भारपरो यह घर घर बास। नितउठि
 कौन करै यह सास। इन नयनन बांध्यो प्रण भारी। निरखत रहत
 सदा गिरिधारी ॥ चाल ॥ निरखिकों करे प्रयासमुन्दर सहसकनक
 प्रकाशरी। कालिन्दी के तीर ठाढ़ो अवगा सुनिये बांसुरी। मदन

सुरात प्रथम देखत सरी सनकी आसरी । मूर हरि का सुयश गावत
 मेश चरगातिवासी १३५ तुन्दावननवनिकजटाहं उतिभोर । बांहजोरि
 वदन मोरि हंसत सुरत रतिकी करि कछु सकुचत पुनि लजात नैननि
 की कोर । करत कबहुं बेगुनादअधरध्याय सुधास्याद पक्षीगणप्रमुदित
 मन जालत चहुँ ओर । रसिकप्रीतम कबिनिहारि उदयो अनुघनविचारि
 बारबारउमगिरे नाचतहैं मोर १३६ आजु प्रभात लता मन्दिरमें सुख
 दरखत अति निरखि युगुल बर । गौर प्रयास अभिराम रस भरे लटाक
 लटाक पग धरत अर्वाँन पर । कुच कुंकुम रंजित मालावलि सुरतनाथ
 श्रीप्रयास धामधर । प्रियाकेप्रेम अङ्क अलंकृतचित्रितचतुर शिरोमणि
 निजकर । दम्पति अति अनुराग मुदितकल गानकरत मनहरत परस्पर
 हित हरिवंस प्रशंस पराइन गाइन अलि सुर देत सुधुर तर १३७
 जोई जोई प्यारो करे सोई मोइ मोहिं भावे । भावे मोहिं जोइ सोइकरे
 प्यारो । मेको तो भावती ठौर प्यारेके नैननिमें प्यारो भयो चाहे मेरे
 नैननि को तारो । मेरे तन मन प्राणाहं ते प्रीतम पीय अपने कोटिक
 प्राणा प्रीतम मोसों हारो । हित हरिवंस हंस हंसिनी प्रयासल गौर
 कहौ कौन करे जल तरंगनि न्यारो १३८ प्रात समय दोरस लम्पट
 सुरात युद्ध जययुत अतिफूत । यम बारिज घन बिन्दु बदन पर भूयगा
 अङ्ग अङ्ग विधिकन । कछु रहेउ तिलक शिथिल अलकावलि बदन
 कमल अलिभूल । हित हरिवंश सदन रंग रंगिरहे नैगवैन कटिशिथिल
 दुकूल १३९ आजु तो युवती लेरो बदन आनन्द भरेव पियके सङ्गमके
 सूचत सुखचैन । आलस बलित दो न सुरङ्गरंगे कपोल जियकित अरुणा
 उनींदे दोऊनैन । रुचिर तिललेश कीरत कुसुमकेश शिर सीमन्त भू-
 धित मालोतेन । कहणाकरउदार राखत कछु न तार दसन बसन लागत
 जबदेन । काहेको डरत भीर पलटे प्रीतम चीर बश क्रिये श्यामसखी
 शनमेन । गलित उरसि माल शिथिल किंकिकी जाल हित हरिवंश
 लता गृहमेन १४० प्यारे बोली भामिनी आजु नौकी यामिनी । भेंट
 नवीन मेघसों दामिनी । सोहन रसिक रायरी माई तासु जो मान करै
 रोसी कौन कामिनी । हित हरिवंश शवरा सुनत प्यारी राधिका र-
 मणासों मिलि गजगामिनी १४१ कौन चतुर युवती प्रिया जाहिमिलत

लाल चोर हँ रैन । दुरत को दुरे सुनो प्यारे रंगमग होल छैन में नैन ।
 उर नख चन्द धिराने पट अटपटे से बैन । हित हरिदंश सुरति राव
 पति प्रसथित सैन १४२ प्राप्तिमग उठि हरिनाम लीजै । गोविन्दनाम
 लीजै आनन्द सुखमें दिनजाय । ब्रह्मपाणि करुणामय केशव बिघ
 बिनाशन यशोदा माय । कलिमल हरन तरन भवसागर भक्त चिंत
 मरिा कामधेनु । रोसो मीरन नाम कृष्ण को बंदनीक पावन पदरेनु ।
 शिव विरंचि इन्द्रादि देवता मुनिजन करत नामकी आस । भक्तवत्स
 रोसो नाम कल्पद्रुम वरदायक परमानन्ददास १४३ छबीलेलाल छवि
 तेरी मोहिँ नीकी लागतहै हो तन मन जीववारोरे । भोर भये आये
 मेरे आँखना हो पलकनसों पग भारोरे । सुखदीजै रस लीजै रैनको हो
 चितते नेक न टारोरे । कृष्णजीवन लखिरामके प्रभु सङ्ग न बसत शि
 गारोरे १४४ नैनो मेरे धूँधलमें न समात । सुन्दर बदन नन्दनन्दन को
 निरखि निरखि न अघात । अति रस लुब्ध महासधु लंपट जानतनहीं
 सकौ वात । कहा कहों दरशन सुखसाते ओट भये अकुलात । बा
 बार बरजत हैं हारी तऊ देव नहिँ जात । सूर रसिक गिरिधर कि
 देखे अलप कलप प्राप्तजात १४५ अखियन वहे देवपरी । कहा कौ
 बारिजमुख ऊपर लागत उयो भँवरी । चितवति रहति चकोर चंदल
 नहिँ बिसरति मोहिँ सकधरी । यद्यपि हटकि हटकि हैं राखति ल
 त्यों होति खरी । चुभि जुरही वा रूप जलदमें प्रेम पियूय भरी । सू
 दास गिरिधर तन परसत ललत निशिसगरी १४६ राधे बसन प्रया
 तन चीन्ही । शारंग बदन विलास बिलोचन हरिशारंग जानि रति
 कीन्ही । सुवा पान करके नीकी बिधि रहेउ शेष शशि मुद्रा दीन्ही ।
 सूर सुबेय अहो रतिनागर भुज आकर्षि नाम कर लीन्ही १४७ राधे
 तू अतिरक्त भरी । मेरे जान मिली मोहन सों अञ्चल पोकपरी । कृ
 लट हूटी नकबेसरि मोतिनकी दुलरी । में जानौं तैं फौज सदनकी ल
 लई शंगरी । असुना नैन मुख शरद नासिका सत कुसुम गलित कवरी ।
 सूरदास प्रभु गिरिधरके संग सुरति समुद्र तरी १४८ प्रयास प्रयासासों
 अति रति कीली । अभजल बंद अपन यों राजत मनो शशिपर मोति
 लरदीनी । मुक्तामाल दूरियों लागति जनु सुरमरी अधोगति लीनी ।

सूरसागर मग हरन रमिक बर राधा सङ्ग सुरत रसभीनी १४६ श्यामा
 प्रयास सेज उठि बैठे अरस परस दोउ करत शिगार । यह पहिरो बाकी
 जोतिन साला उन पहिरो बाकी नवसरहार । पेंच सँवारे वृथभान न-
 नरनी अलक सँवारत नन्दकुमार । हँसि मुमकाय करत दोउबातें बदन
 निहारत बारंबार । लटपटि पाग सरगजी साला कहि न जात शोभा
 मुखसार । श्रीभटके प्रभुयुगलकि दूती मेरे आंगन करत बिहार १५०
 खखीरी और सुनहु यकबात । आज गोपाल हमारे आये उदत प्रातही
 प्रात । काहुके नैन उनींदे मोहन अपने घरको जात । आगे द्वार नन्द
 हुते ठाढ़े ताते गये न सकात । लटपटि पाग अटपटे भूयसा आलस
 युत जंभात । मानो साह दगडले छांड़े दे दे चुहटी गात । रोमी भाँति
 कहा हुते मोहन मैं झुम्मे मुसकात । ताते कहु उत्तर नहिँ आये मर-
 प्रयास सकुचात १५१ सुंदर धनप्रयास लाल पंकजलोचन विशाल आंगन
 ब्रजरानीजूके तुमुक तुमुक धावे । पहुँची करबनी चारों कंठमें बिचित्र
 हार लटकन लटके सुहारु कहत न बनिआवे । रुनन भनन धरे पाँइ
 निरखि मुदित यशदा साइ किंकिनि कटि नूपुर धुनि अचरा मुख
 बढ़ावे । श्रीबिठल बिहारी अङ्ग कोटि वारि वारि ठाढ़ो युवती अपार
 मनमें सचुपावे १५२ प्रात समय आवत आलस भरे युगलकिशोर देखे
 कुंजन की खोरी । लटपटी पाग छूटे बंदपियके प्रियाकी बेगीबिधुर
 छुटीकच डोरी । ललितादिक देखति जु नैन भरि अति अद्भुत सुन्दर
 बरजोरी । बिठल बिपुल पुहुप बरपत तब तारा टूटतहै अब होहोहोरी
 १५३ आज बनी लाडिली प्रीतम संग आवति । सोधै भीजी लट छूटी
 पियके अंश भुजा पाँके सखी सुघर बिभासहि गावति । श्रमजल बिंदु
 निशिके मुख सूचति मोहन बदनसों बदन मिलावति । बिठल बिपुल
 कल रसिक बिहारीलाल आनन्द समुद्र मयि मदन भिलावति १५४
 आई भोरभये प्यारी छूटी लटवगरी । वहाँ जोरी लाल संग निशिकिये
 कुंजरंग सबशकिये बिहारी कुंवरि अगरी । निशिके चिह्नफिके गौर
 प्रयास तनछबि पदनख परवारों जेतीतेरी नगरी । बिठल बिपुलकेलि
 मनुहुँ कञ्चनबेलि अरुभी कुंज तमाल आवै कुंज डगरी १५५ प्यारी
 तेरी चाल चितबनि बांकी । बांके बसन अभरन बंकरख

बकसुभाव सितल बांशी प्रिय बंककोरही भांजी । बिटुल बिपुल
 बिहारीबांके मिले तातेत फिरत निमांकी १५६ उयोंहीं उयोंहीं तुम
 गान्वतहो त्योंहीं त्योंहीं रहितहै हो हरि । और अचरब पायधरो सुतो
 कहो कौनके पेढभरि । यद्यपिहे अनभायो किशो चाहे कैसे करि
 सकों जो तुम राखो पकरि । हरिदासके स्वामी प्रयासा कुंजबिहारी
 पिजराके जनावर लों तरफराय रहेउ उडिबे को कितो कुकरि १५७
 काहको बशनाहीं तुम्हारी कृपाते सबहोय बिहारी बिहारनि । और
 मिथ्या परपंच काहेको भायिये सो तो है हारनि । जाहि तुमसों हित
 तामों तुमहीं तुमरा सब सुखकारनि । हरिदासके स्वामी प्रयासा कुंज
 बिहारी प्राणानिके आधारनि १५८ कबहूँ कबहूँ मन डतउत जात याते
 कौनहै अधिक सुख । बहुत भांतिलते घर आनि राखयो नाहिँ तो पा-
 वतो दुख । कोटि काम लावराय बिहारी तामें मुहचहा सबसुख लिये
 रहत रुख । हरिदासस्वामी प्रयासा कुंजबिहारी दिन देखत रहे बि-
 चित्रमुख १५९ आइयेज आइये जिनि दिवाइये सोसनि रित । शिथिल
 अङ्ग पगधरत उगतो भूँठही करत मातेकोसित । अय जुआयंहे मेरो
 जो समोय करत तरसाय प्राणा सगरी तिस । गोविन्द प्रभु प्रियजान
 शिरोमणि ओतनके मैं जाततिस १६० दोऊरी राजत हे रंगभीने ।
 नवन निकुंज महल रस कुसुमित सेज भोर उठिबै रे राजास अलनि
 भुजदीने । गौर प्रयास तन नील पीतपट संध म पलटि बसन तनलीने ।
 पोय बिहारी प्रिया संग अति बिगसे अति सुरत रंग सुभगसिंधु ललि-
 तादिकटगलीने १६१ चंचल लैचलीरी चितचोरी । मोहनको मनयोवश
 करलीनो उयों चकईसंग डोरी । जौलों न देखत तुव मूरति तौलोंपलक
 न लागत निमिघने और । नन्ददास प्रभु प्रेस सागभये नागर नन्दारु-
 शोर १६२ प्रातसमय जागी अनुरागी सोवत उठिरी प्रयासज की सँ-
 गिया । बीर सँवारत उठिरी दक्षिणाकर बामभुजा बकुली भरिगिया ।
 भालमें सुहाग भारी कंचुकीकी छविन्यारी पहिरे कुसुंभी सारीसोवे
 रंगबगिया । अग्रस्वामिनी लड़ाई बहुत कीनी बड़ाई फली फलीफिरे
 सब रैन रंगरंगिया १६३ प्रिय औचक मूंदेरी पाछेते नयनहोज नि-
 भसी बैठी ! अछन अछन पगधरत धरणि पर आवत जाने सैन । हों

इतलही चौकिपरी आली कतिधा धार धरैत । जगन्नाथ कबिरा प्रके
 प्रभु रोकिहैंसे तव हेहैं हँसी बह सुख कहत बनेत १६४ आच निकुंज
 ते पाँह घीरी । पिय अस्मात अस्मात रसमसी ललन खवावत धीरी ।
 सुरति शिथिल धँग अंग परस्पर भुजभरि लीनही श्यामरसोरी । बि-
 टूल बिपिन बिलोद बिहारी नहिँ कलितदिक् नीरी १६५ प्रथाम
 के भुजन बीच राखि है सुरत मीचि सोई सुकुमारि जागी तमचुर
 शोर्ते । हाहा कान्ह उदय भान अबहीं होयगीजान धुकर धुकर
 छाती गुरुजन डरते । मधुर बचन कहेउ प्यारे को भलो मनायो
 छुवन अकोर देति निरधारि गरते । आंगन में ठाढ़े आय ललिता
 लति बलाय मूरत्तामिनि राजे आनन्दके भरते १६६ तेरेनयन लोनेरी
 जिनि मोहे प्रथाम सलोने । अतिही दीरघ विशाल बिलोल कारभारे
 पियरसरिभये कोने । बदन ज्योति चन्दहुते निर्मल कुच कटोर अति
 दोने बाने । तानसेन प्रभुसों रतिमानी कंचनकसोटी कसोने १६७ हों
 गई बछरा मिलावन प्रथामने जानसारी । वरणी सुरकिपरी सुनुसजनी
 तनहं की सुधिबिसारी । मखी एक जबजलमुख धोयो क्रमक्रम अँचरा
 सन्हारी । सुरके प्रभु वरजो इनअँखियनि तेसबहीतेन्यारी १६८
 चले उठि कुंज भवनतें भोर । डगमगात लटकति लरछूटी पहिरे पीत
 पटोर । अरुणा नयन आलत युत घूमत बिधुमुख चन्द चक्कोर । गिरि
 गिरि परत गलित कुसुमाबलि शिथिल शीश चकडोर । लपटित
 बसन रसन मरिाभयरा कुराडल से लटछोर । परमानन्द मिली गिरि-
 धर सों रस सागर भक्तभोर १६९ गुजरी शशि बदनी सुन्दरि यौ-
 बनवाली । शिर कनक मटुकिया गोरस बेंचन चाली ॥ छन्द ॥ चली
 दधि बेंचन किशोरी कुंवरिहै गजशामिनी । नलशिख रूप अनूप
 सुन्दरि दशन द्युति मनु दामिनी । प्रथामाप्यारी कुल उज्यारी बिसल
 कीरति ऊजरी । यौवन वाली सरस सुन्दरि चन्द्रबदनी गुजरी । रु-
 न्दावन भीतर प्रथाम मनोहर घेरी । हो तुम्हें जान न देहीं लेहोंदान
 निबेरी ॥ छन्द ॥ लेहोंदान निबेरि अपनो करौ नन्द दुहाइयां । जात
 चोरी बेंचि नितप्रति आजु पकरन पाइयां । बोलि खाल लुटाय
 देहौ दधि करो जो भावेमना । घेरी मनोहर प्रथामसुन्दरि खालिनी

तुन्दबना । छाँड़हुमेरो अँचरा हँदार्जिन करहु गोपाला । सुन्दर मन-
 मोहन प्यारेअवार हेति नँदलाला ॥ छन्द ॥ नंदलाल हँत अवार प्रति
 छिन मघन बनमें अतिडरों । मेरे संग की सब बैँचिबगदीं कहां उत्तर
 घर करों । कब कब तुम्हारो दानलागे बादि भगरो ठानहु । बलि-
 जाउँ मानो कहेउमेरो लाल अँदराछाँड़हु । अति चतुर खालिनि अंतर
 नेह बढायो । प्रयासमनोहर जियको प्यारोपायो ॥ छन्द ॥ पायो
 मनोहर प्रयाससुन्दर सुरत सुखमानोरली । नवनेह अतिरसरंग बाढ्यो
 दानदे उठिघरचली । कहत श्रीहरिदास नागर कामिनी गुणसागरी ।
 जिनि रसिक श्रीहरराय मोहे अधिक चातुर नागरी १७०॥ राग बिभास ॥
 दधि मथति खालिगति भेद सो ठाढ़ी यौवन मरि क भक्ति नागलो-
 क लों बैँनिरकत कटि छबि बाढी । तन सुख सारि घनबोलि के
 लहँगा कंचुकी खसकि बनी उरोज गाढी । मूर को प्रभु तहां फिरि
 फिरि देखत मानो सांचे भरि काढी १७१ अतिहि अरुणा हरि नयन
 तिहारे । मानहुँ रतिसों भये रगभगे करत केलि पिय पलक बिंसारे ।
 मंद मंद डोलत शक्ति हूँ शोभित मध्य महा रतनारे । मानहुँ उकसि
 कमल संपुट में उड़ि न सकत चंचल अलि वारे । हिलि मिलि तन
 बगरैनि जनावत रति रस चुगत भसत अनियारे । मनहुँ सकलयुग
 जीति करत को काम बाणा खरसान सँवारे । अटपटात अरसात युगुल
 पुट कहँधूमत कहँकरत उधारे । मनहुँ मत्त सरकत मरिगच्छंगन खेलत
 खंजरीट चरकारे । बारबार अवलोकि करखियन कपटनेह मनहरत
 हमारे । सूरप्रयास देखत सचुपावत दुखमोचन लोचन रतनारे १७२
 उठे प्रात तोतरात कहत तोतरी तोतरी बात । सांगत हैं दधि साखन
 लाइहैं यशोदा मात । बाजत नूपुर सुहात नाचत बैँलोकनाथ । देखत
 सब गोपी खाल नयननि नाहित अघात । नंदसुवन सुखदाई चिरजी-
 वोरी कन्हाइ । जीवति मुख चाहिचाहि या निधिको माई । बालके-
 लि देखिआई रोमरोम सचुपाई । श्रीवल्लभ हरखिनिरखि लेतहैंबलाई
 १७३ कटि पीतपट मुखमुरलि मुकुटशीश कांखलकुलनटवरकोचटक ।
 तिलकराटक कानकुंडल कपोल वनमालाकीलटक तामें चटक मटक ।
 बपु घनघटा तामें मोतीहार बागठरा सुन्दर संभगपग पांवरी खटक ।

सरसागर रागकरपट्टन नित्यकीर्तन ।

१५३

ब्रजकी भटक दधिवोर की सरक गेरी किंउरति पान बनकी
 अटक १७४ जोलोंहार प्राणरागे न गाने । तोनों स विमान हनुनि
 गत पछे सुनेते न जावे । मुनिपिरवि नारायणधै नारदके का । पान ।
 नारदकही वेदव्यासों पावन जीवन कीतो । वेदव्यास ओषध दी
 जाई पंडि मनताप नशाया । तिनपै सुनि शुक्रदेव परीक्षित राजाको
 जमुनाया । यद्यपि नृपति सुनी ब्रजली ना पगस कहैउ शुक्रदेवा । स-
 बाँत्मा भावन ऊधो उधो ताते करी न सेवा । श्रीभागवत अमृत रस
 माथिके श्रीवल्लभ सर्वोत्तम । कोर आवरा दूर ब्रजजन के हाथ दिये
 पुरुषोत्तम । श्रवण अरु शिखर भोगरन श्रीवल्लभ प्रकटायो । करी
 कृपा अपने जीवनपर जगजीवन स्वादचखायो १७५ सोचिँदै दधि न
 बिलोवनदेहि । बारबार पाँचपरति योया का । हकले कलेहि । बाँध
 कटिपट सुद्वंद्विका मुदिन नदकी राती । कञ्चनचीर डारउर मरिा
 गसा बलय घोय मृदुबानी । इक इकतेहाइ ऐवदैत्य सत्र दमट सदरा-
 चल जानी । देखत देवजसमी ताँपी शतगोपाल सधानी । हयाचंद्र
 ब्रजराज रसापात मूलभार उभारे । परमानन्दरामको ठाकुर प्रजवसि
 जगत उधारे १७६ जान्यो जान्योरी शयनतेरो प्राणेश्वर कोतेकियो
 सान भयोहै बिधान । प्रियको तेरोई ध्यान मेरीसिय सुनिमान जामें
 वसे प्रान तासों कैनाथों गुमान । सुनिरी गुरलीमान आजीनीकी सी-
 दातान संकेत स्थलोंरची कुसुम बितान । मूरदास प्रभुजान शिरोमणि
 मानि मदनमोहन तेरे सुखको निधान १७७ प्रियहृदय राखतही नि-
 शिदिन आजु कहां तू अति रहीरी । बिच बिच नाहीं नाहों करति
 सब तियन में तुमसा कठिन कहीरी । मोगरीन पर कीजै कृपा सेसी
 सति तेरी किनहूँधोई सहीरी । रसिक प्रीतसवां मिलि परभात अति
 रुचि तोमों निवहीरी १७८ बारो कन्हैयारी मोहिँ भावै । अच्छी
 मोठी तानगावै मुरली बजावै नयननिमाँक रिभावै । निरखि परखि
 देखि जियको भरसायो साँवरी सरति मेरे सर्वस चुरावै । अतिही
 अघगरो मैनको प्रभुप्यारो सब गोपिनको नायक कहावै १७९ आ-
 लीरी पीरी यह भईहै निकसि टाढ़िभई डारकुञ्ज सेनके । नयखेंच्यो
 बदन निरखतही जीमोंजान्यो चन्द्रमातारो धोखे रैनके । नैन कुरङ्ग

आनि जायों आयो मतभाव आयो निन्दति प्रपेक्षत गह्वर बैलको ।
 रासदासगण्य प्रपाम सोती रास तारागणा और नपलायो देखि रास
 भौदन पीयसंग सुखमै जे १८० ॥ प्रथमनाजकिपय । गगविमाम ॥ सुप्रसूना
 गोपालकि भावे । यमुना यमुना नाम ज्योति धर्मराज तालीन चलोवो ।
 जे गमुना बने जानि महराज जे मनुना जलपान करै । जे प्रसूना अ-
 वाहे निर्गोपिन दिवसगुल लेखा नभै । एता प्रपेक्षत जेना नर पाव
 प्रपेक्षितक नामकपटी । ऐत महराज जानि जलत लख भवार
 परमाण्वलही १८१ ॥ प्रपेक्षत रसमतरङ्ग मिश्रीआता पी प्रसूना जल
 बैलक नभैनी । अति प्रसूना कालीन नगर लिखे मात एनि प्रस-
 मान मरदेखी । अनस जलमके दूजत हरकरवी कालत पीयस परमना
 मनी । कालिदासि निरिषास पिथारी नाथननाथ रसमल नवी १८२
 निरकतही मन आत आनन्दरायो प्रानोद देखि प्रनयार जात ॥ अ-
 तरसतही सजल अवसाजे प्रपेक्षित देखि हरितको भैय्या । और जीव
 को औरन की गति मेरी गतिही सुरसि अनन्या । अजपरिसरी सु-
 अतिहि पिथारी तुम संगसते सुरसरि खन्या १८३ ॥ पुलकति कलि-
 मुख नाशन देखि प्रजह प्रभाकर जग्या । वह देखी पावजात जित
 तित बहे ज्यों मृगराज देखिगुल सैन्या । दैपस धान पुचलों पीया
 जननि कतार्थ धन्या बहेधन्या । ऐयो चाहि गदामरज्ये चरसा शरसा
 अति प्रीति अनन्या १८४ ॥ प्रपेक्षतजीवोद । गग विमाम ॥ प्राये आतो रस
 भागीरथजूको चलोजात पाछेपाछे आदीत तरङ्ग रङ्गभरि पङ्क । भन
 मलात अतिउज्ज्वल जलकीथोनि अर्वाणि रवनिमाना शीशपरे सोती
 संग । जाइ परसे हैं भूप कबके भवसरूप दौरदौर जागिरठे रोसे होत
 सलिल संग । नन्ददास मानो अग्निके थप कूटे ऐसे सुरपुर चले धरे
 देवअङ्ग १८५ ॥ गगविमाम । चर्च । ॥ जे भागीरथ नन्दन सुनिचयचकार चर्चनि
 नरनाग विबुध वंदनि जैजनु बालिका । विष्णुपद मरोजजासि ईश
 शीशपर विभासि त्रिपथगाथ पुरयपाथ पापकालिका । विसल वि-
 पुल बहसिन्नार शीतलवैलाप हारि भँवरवर विहंगतर तरङ्गमालिका ।
 विजजन पूजोपहार शोभितशशि धवलधार भञ्जन भवभार भक्तकल्प
 यालिका । निज तटवार्सि बिहङ्ग जलचर थिरपशु पतङ्ग कीट जति

साप्रशोभ यत्न पातिका । सुतलो राज नीर तीर सौभरत रघुयशकीर
निचर्चन मलिनम मलिनम पातिका १८६ ॥ गगनमगल जगता जग
तापका आई । अतीव लहरया कोनी शिवकी शीत चलाई । पापी
दुष्ट अजासिन मोकाका । यत्निम मरम गतिपाई । परम प्रतीति प्रीति
वहावैकत वैभवत भनिगाई । नासलत तन पत्रान धरत है तारत
वारनलाई । निप्र गदाभर भरप्राज काल कोवलगाइ सहाई १८७ जीवन
गदा मदा काई । प्रमम अनन्य के कोटि दुक्त सब छिगही भाँभदहै ।
शानकरतते मन्ताकिन फल ततपरा उरत लहै । राजपातकी प्यारी
खगमते तहभुध देन चहै १८८ श्रीवल्लभ प्रतापान । प्रातसभे श्रीवल्लभ
सुतको श्रीबिठ्ठल प्रभुको उठतही रदवा लीजिये नाग । आनन्दकारी
मङ्गलकारी अशुभ हरनजल पूरा काय । यह लोक परलोकके बंध
को कहि सकत तिहाये गुताधारा । नन्ददास प्रभु रामक शिरोमणि
राजकरो श्रीगोकुल सुखधाम १८९ प्रातसमय श्रीवल्लभ सुतको प्रणय
पवित्र विमल यथा गाऊं । सुन्दर सुभग वचन गिरिधर को निरखि
निरखि दुग दुगान मिराऊ । मोहन मधुर वचन श्रीमुख को अवसान
सुनि सुनि हृदय बसाऊ । तन मन प्राणा भिषेद वेदविधि यह अपन-
पोहो मुफल कराऊ । रहे सदा चरणान के आगे महा प्रसादको जूठन
पाऊं । नन्ददास यह मांगत हौं श्रीवल्लभ पुताको दास कहाऊं १९०
प्रात समय श्रीमुख देखन को सेवकजन दाहै सब द्वार । जै जै जै श्री
वल्लभ नन्दन दरशन दीजै परम उदार । सुन्दर श्याम सुभगता भीवा
मेघ गम्भीर मधुर गिरिवार । नैनन निरखत होत परमसुख अवरा
सुनाये वचन सुदार । अवरा मङ्गल जगभवन मङ्गल रस पुस्तोत्तम
लीला अवतार । जन भगवान जाय बलिहारी अगसातलीला महिमा
नहिं पार १९१ प्रात समय उठिके जो सदा श्रीवल्लभनन्दनके गुतागौये ।
फिरि करजोरिरूप चिंतन करि उनहीके चरणान शिरनैये । सब सा-
धनके बारइहैपद बारबार समुझैये । कहै हरिदासमानि सिलमेरी श्री
बिठ्ठलके दास कहैये १९२ प्रातसमय उठिके जो सदा श्रीवल्लभनन्दनके
गुता गाऊं । श्रीगिरिधर गोविंदजुको नामले श्रीबालकृष्णको शीशान-
वाऊं । श्रीगोकुलनाथजुको प्रणामकरिरघुनाथजु देखेनयन मिराऊं ।

श्रीधुगाग्रजसंग खेलत घनप्रयामनूदनकी प्रीति होतहामिराऊं। यह
 अन्तारमर्तोहतकारसा जा राऊं तो परसपद पाऊं। चिनती करिकारि
 सांगत व्रजपति निशि। दन इनके दास काऊं १६३ प्रात सुमिरो श्री
 बल्लभ श्री बिठलेश परन हितकारी। भवदुख जात भजन सुखपावन
 कलिसल हरसा प्रताप मनारी। आये छाँडि शरसा नहिँ कबहुँ बाँह
 गहेकी लाज बिचारी। आन आसरो छाँडि भजो पद द्वारकेश प्रभु
 की बलिहारी १६४ प्रातसमय श्री बल्लभ सुतको परस पुनीत बिमत
 यशगाऊं। अम्बुज वदन सुभगनैना अति श्रवणान लै हिरदे बँठाऊं
 जब जब निकट रहस चरसान तर पुनि पूनि गिरतिव निरतिव सुख
 पाऊं। विष्णुदास प्रभु करौ कृपा मोहिँ बल्लभनन्दन दास कहाऊं
 १६५ विशद सुग्रय श्री बल्लभ सुतको प्रात उठत अनुदिन नवगाऊं।
 कलिसल हरसा चित्त बरि राख उपजे पर मुख दुःख बहाऊं। भक्त
 भवै श्री भक्ति रक्ष जाने माने मनसो तिनहुँ को छाऊं। छीत स्वामि
 गिरधरके सुमिरता अष्ट महा गिधिनवनिधि जोपाऊं १६६ योल
 दसगा सुत कमल प्रसुलित प्रकटे श्रीगल्लभ कुलको दिनेश। आनन्दे
 तिहुँपुर के सबजन आनंदे शिव मनक सुरेश। श्रीभगवान प्रसारकरन
 को निजजन सबको अति सुखदेन। जन जैलोक जाहिबलिहारी शी-
 तल भये सुख निरखत बैन १६७ गायो न गोपाल मनलायो न रमाल
 लीला सुनि न सुबोधान न साधु संग पायोहे। सोया नमवाद करि बरि
 अपधरि कबहुँ कृष्णनाम रसना कहायोहे। बल्लभ श्रीबिठलेश प्रभु
 की शरणा आय दीन हैकै मूढ़ छिन शीश न नवायो हे। रसिक
 कहाय अब लाजहू न आवे तोहिँ मनुष्य शरीर धरि कहायो कसायो
 है १६८ गायो न गोपाल मन लायके निवारि लाजपायो न प्रसार
 साधु मंडली न जायकै। धायो न धमकि वृन्दाबिपिन के कृञ्जन में
 रहेउ न शरसा जाइ बिठलेश रायकै। नाथजू न देखि कियो छिनहुँ
 कबीली कवि सिहपौरि परेवनाहिँ शीगहू नवायकै। कहे हरिदास
 तोहिँ लाजहू न आवै जिय जनम गँवायो न कसायो कहुआयकै १६९
 रूपरस साधुरी भरेव सलोना पियमुख देखे प्रभात बात कहु कहु र-
 तिरी। अरसात गात श्री जम्हात मिले जात दग उर भूज श्रीवा कवि

रसउभरतिरा । कृगडल कपोल अधर अरुणा रहेलसि अङ्ग रङ्ग सीत
रङ्गता हरतिरी । प्यारेलाल बल्लभ रसिक पर तन मन रीझि रीझि
अँखियाँ न्योछावर करतिरी२०० भोरही श्रीबल्लभ बल्लभ कहिये ।
आनंद परमानंद श्रीकृष्ण सुख सुमिरे अष्ट सिद्धि पइये । और सुमिरी
श्री बिटुल बिटुल श्री गिरिधर गोविन्द द्विजवर भूप । श्री बालकृष्ण
गोकुल पति रघुपति यदुपति नवधन प्र्याम स्वरूप । पढो सुमार श्री
बल्लभ बचनामृत जपो अष्टाक्षर मन्त्र करि नेम । अन्य श्रवणा कीर्तन
तजि निशिदिनसुनो सुबोधनी धरि जियप्रेम । और सेवा सदानंद य-
शोमति सुत प्रेमभक्ति सहित जियजानि । अम्याग्रये समर्पित लेनो
असद अलाप असद संहानि । नयनन निरखो श्रीकालिंदी और निरखो
सुखद व्रजधाम । यह सम्पति श्री बल्लभते पैये हरिजन नाहँ काहूँसों
काम २०१ प्रातःहिलोजै श्री बल्लभ नाम । श्री बिटुल श्री गिरिधर
गोविंद श्री बालकृष्ण सुखधाम । श्रीगोकुलनाथ अनाथ के तारन श्री
रघुनाथ परिपूरण काम । विष्णुदास सुमिरी सुन्दर धनप्र्याम २०२
प्रात समय नैननंदन प्र्यामा देखे मैं आवत कंजगली । नव धनप्र्याम
तरुणा दामिनि मिलि राजत रूप अनप अली । लटपटि पाग शीश
करसुरली लोचनधूमत भाँति भली । शिथिलित चार मरगजी अँगिया
काम कामिनी देखि छली । चारिधाम निशि जागतबीती उर उमरयो
अनुरागबली । कज्जल अधर नैन दोरीरंग मदन नृपति की चमूदली ।
सूरबदन पंकज रसपीके अलक मधुपकी पाँतिचली । प्रफुलित प्रीति
परस्पर निरखति तरनि उदै जैसे कमलकली २०३ उनींदी आँखेंरंगभरी
दुरतनहीं पट ओट । मोन खंजन मृगहीन भयेहैं और कमलदल वारि
हारों लख कोट । दुरत मुरत भूपकत अनियारी चंचल करतिहैं चोट ।
चतुरविहारि प्यारीकी छवि निरखत बांधत सुखकी पोट २०४ पल
भूपकि भूपकि आवत उनींदी अँखियाँ भई । अरबराइ उठे पट प-
लटि परे पह फाटन क्यों दई । नेक करो विद्याम बाम बोलिये मे-
रेहीधाम हों करो रहल जो तुमसोंहैं चोपनई । सकुचो जिनिसाँची
मानिये चतुर विहारी गिरिधारी प्रियजे नइ रिझवार रिझई २०५
सपनेहूँ न बिछुरिये हो हरिसों मनयों बाँके । प्र्यामसुन्दर बहनायक

सुखदायक सब हितकी सोचि तज्यो न भूँकेरी धार । नान्यदुःख न भूँ
 अन्त रसकीयो कास जरावरी सोचि दाखूँ ताँ । तनयन प्रभुके
 बिलु जगद भद्र सोचि रुहे । रस प्रालेखी पीक कोऊ पाके २०६ आत
 तनय उठेगायेहे मेरे अन्तरज्जन आराधन भरेवीके । पौन्यकाय न अप्र-
 रसाय होउत विन अन्तर्गत विराजतहीके । पाप जगदराजान नहा-
 वर पगपरये तम काहतीके । छीत स्वामि विन । सब कलेवस और
 विराजत जगत्पतीके २०७ भोग भये जगत्पति रादनते आवतलाल भो-
 जकियासी । अरुपादमाग अरुजीमा वा शिशिल अग दुधमपतिव्यारी ।
 विन अन्तमाल विराजत उरपर पावकत द्वेज चन्द्र अनुपारी । छीत
 स्वामि जग विजये मोचत तवहे । निरखि धई अलिहारी २०८ भोर
 भये जागेमेरेतुम आजकहाँ निप्रियसे नंदकुत । काहाफहाँ धैर अंगकी
 शोभा पीक कपोल नयन आलस युत । कहा तिहारत हा सोको अब
 जिनि परसो मोहिं चले जाउ उत । जानी जात तिहार सपकी छीत
 स्वामि गिरिधरन बड़े मुन २०९ लवार्जनि मेरी बाँह गरो । मारगने
 लोभदेखे दूरि ठाढ़ रहे । मनमेंहे कौनवात मोद्रि क्यों न काहे । हीनो
 कहा देव भंसी नेकुवाज लहे । कहेंगी जाय राख जसा बाह रोकत
 हो । कैसे हम आवहिं जायँ पनिघर पयहे । तुमहे तो कहु नहीं
 बिचारु लरिकारि पगहो । रभिक प्रीतम छाँड़िदेहु हँसति हैं रावहो
 २१० पैजनी एकर सौनरही चूरी छुप कर सुनिये न बैन ब्रजराज ब्रज-
 नारी के । सांझहीते सोये कि धोरी समै समोये कहे कालिदास
 को ये जानै चरित्र बिहारी के । करन के मनोरथ करन करन चारु
 चरन के संगी रगी अति सुकुमारी के । जानिये न देहु हाहा एजू महुँ
 मुख रहै मुखरहै मंद काहे नूपुर प्यारी के । सोधलेत ननद जेठानी
 देवरानी मिलि सोइवे के निपठा उसास लेतसासहै । कालिदास कोऊ
 रूप रेख देख पावत न योहीं उन मानीकाम केतिको विश्वास है ।
 आलो बनमाली कोन खालीपरै एकदिन देखेबिन कियोजात कासों
 उपहास है । दूतीसँग रभिक मुरारी को पहुँचि रहै नारि सुकुमारी
 जोवधार संगवासहै । स्वामीकी कहाकहै सब नखत नजाई जाके भी-
 तर सुहाई भाँतिभाँतिके बहुत है । कालिदास लागेपुसय पौनके भ-

कोरो नाथ यह आकरो जाना उसउसहे । अगत नवाँध सख जम्बुसोप
रती । नि को रनकायना ता मे गुन अछुत हे । पंथकोण भर जाका
पेनाभन भर सत्र जोवन को पुंनहोत यवों सुकत हे २११ जुरो कर
नामल येअमल आउपरारे कपक निधान एक मोतन निहारिहे । कहे
कारिदास मेरेपान हंगरो हरि मौरमाये सुकट लखर गहि । हरिहे ।
कनर कनरेशा गुन जम्बुकी कुन्देशा नक मेरीओर लोवन च कोरन
लोतारिहे । कनर १६६ की नीहि कनर तल मेरीदात अरकी हे लेक
वागि गुनारहे २१२ प्यारी तन पूर तामेखपसार सागरहे प्रीवन गँ-
कोर सुकजोपको घरतिहे । दीपका तनानयन बारिज से शोभितहे
पुनर्जन येनीजिय येखन डरतहे । कहे कारिदास गान जाडन भँवर
सख जालसभ जालन न ओर डगरत हे । वेभार को संतिमानोकर हे
शितादर को बारवार खेलनने हो करत हे २१३ प्यारीचलो किनला-
साय पेथरी लालनको सनताप निरावन । तूकोरिहे मेला एही हो
साखजकी आईहे नया इततोको बुलावन । ठाँह कहां हरिहे अगना
तटकाँकेकव बेरभर बेरमे आवन । नीकेहे प्रयासकहे सहजा कानिपाई
निदाई कहांगनभावन । द्वादश नयन सकादशीमे कुचप्यारीक होउण
हे हसते । नवमेवने भुवग आठलसे गहिसातको ऊयट हातुनते । जीता
पञ्च हो मध्यकती लितचारु खया विनुबार दृष्टाधिनुते । ठिकेरेजि
तन दोउमति छोडि कभारहि एकसी हूँहउते २१४ जोदलभाई को-
इल कुरंग तन कारोकिथो कुठकुठ केहोर कालकलंवदहली । जरजर
जम्बुनद अवरण बिइसभो हियाफाट दाजिमस्वचा भुअगवदली । गरी
चन्द्रमुखि ते कलंकीकिथो चन्द्र अब बोले व्रजचन्द्र वै किशोर आप
अदली । छारसीरडारै राजराज वै पुकारकरै पुराडरीक बूढयोरी क-
पुरखाया कदली । मवल नवोहाऊह ओढबो नवोढ जाने पोथ पास
पोढनेकीसार कहाजानिहे । मेरे लायवेकीलाज कीजैआज बलिजाई
आतुर न हूजे इह अबहीं अथानीहे । ऊह रसमीति कहा जानतहे मेरे
लाल रसहीमे रसहीमो बातें कहे सानिहे । मैनासी पढाई जब घर
अढाई परतीतमें बढाई तव केहूँकेहूँ यानिहे २५५ आजलों अकूती
काती काहके न रंगराती जीवनके सदमानी मोनेमन रौनेकी । खंजन

मे नयनरारी घूनी और चरीदेखदेख सकचाती बोलनाहिं मौनेकी
 कोतकमनो तोषों धानिया चन्द्रमुखि हैतो चितचोर नन्दलाल को
 भौनेकी । झूट नाहिं बोलत यदुनायकी बीमोजारवार याको लखला
 हों प्रियाही बिन मौनेकी । मेरीनी जो करि मेरीमी आखिन जौति
 बिलोकही आयेरीआयेचितै कोन देखयहै चितचोरचितनौतहैठाहो ।
 ब्रह्मभनेमाई कान्हके भेव घर बाहर बैरीको बारिद बाहो । यहैमुख
 देखकहै दुखहाइरी लाजकरो और घुघटकाहो । जौकरिगाहो२१६
 तिय सांभसमय हरि आवन जानि अंगार सवारि महासुखदै । अति
 आतुर दोबार निहार अठार बिचार मनो भवचित्त मुदै । मरिगा वेति
 प्रकाश प्रभाकरनाथ लखे बखवा नहिं हेतु जुदै । निशिह दिन को
 सुख पाय भले चकई इमि चाहति चन्द्र उदै २१७ बिरह अनल बरी
 खरी प्रेममनकरी चरपटी परि बिन हरि अकुलातहै । सुविबुध हरि
 कुलकान लोकलाजरी नाथचित्तधारि आश अति बिललातहै । हरि
 धरि दीरघउसामलै उदास नरी तगि ठगामुरि खेदकंप मगगातहै । नैन
 जल चलै गरी पावसकी भरी जैसे रेतभरी घरी चालजात दिनरात
 है २१८ मुख नेह नहीं सुधि देहनहीं तजिगेह नही न रही अटकी ।
 टकी एकतके करि टेक विवेक न नेक लजै हटकी छटकी । चकिकै
 तकिकै छतते छकिकै थकिनीथ चितै सुखसा नटकी । फटकी मनतै
 भटकी तनतै भटकी अखियां उटकी अटकी । सुन्दर सरोवरमें बौके
 हैं कमल किधों फूलन रबिस कैसे नयेनये जातहै । दोरे मधुकुकेसान
 देखत दुरत जत कैधों खेलै खञ्जन खरेसैन चुगातहै । कैधों मृगनाह
 सब शीश नाइनाइरहे किधों अलिगंज माल केतुकी सहातहै । नाथ
 इन खारिन सों झाककाहीं देखि काह लाज शीलजाति नैन लाजसों
 लजातहै ॥ अथवारहमासालिख्यते ॥ चैववर्गान ॥ सुफल फलमोहेंहो
 बेलमोहें लपटने द्रुमन सीफ फूलित जहांहै । भवैरसत्तबोलैं करें खा
 कलोलैं सुखीसाथ डोलैं रसिकरस महाहै । नहीं गरम शीतल पवन
 त्यों त्रिविध बल अचलसाथ सुखके सुखीसबतहांहै । अहोनाथ मानो
 सुखद चैत जानो धनुषले मदनदंड विरही कहांहै ॥ वैशाख वर्गान ॥
 त्रिमलरूप सरहै अचल प्रेमथरहै बरुन नालकर नैन परमान लीजै ।

कलह मंद लाधै रुचपत्र म गोचरे भोजनान्न जानी रजीजै । मुदितदेख
साधो तरन प्रीति पांथो सहित नाथ साधा सुभकरन्द पीजै । तुमतो
पुद्गलको इहैनेम लखै नयनकंज मेरे तुगन नाम कीजै ॥ ज्येष्ठ वरान ॥
तवनकोदयनमें अवनको तवनमें निकसिको आवनतं दिनरेनजानो । जहां
जलनं प्रीतल तजै जियन पी प्रल छुटेविजल रसवरल मेघमानो । मघन
अनन्य जगजन तरंजाग सतगल सखीसाथ बनकै वनो केल हानो । तजो
झोड़ उरते बसो राय करगाथ सुख ज्येष्ठकोहो कहांतो बरवानो ॥ आ-
याह वरान ॥ धरा प्रयागभागर लहरि दौरि बादर गरज फेन धूरवा
अगलबीच सोहै । सुसन भूम सनहै लसै देव बनहै बासोहति भरो कवि
शुभ दृष्टिमेहै । करिसर भवनरेनहिं मकर दवनछांड कशिथै चलन
हरन साहू पमोहै । सलिल जंतुखल नेह गंभीर पगनाथ आयाह
जानो उरवि है लखैहै ॥ सावननरान ॥ सुभातै अचल कंदरा वाति
कंधै मदन फूलखल चारुहरिये बसुंधर । वरग मोहसुंदे छुटेजंव जलथो
पुद्गल दूध हरनी रसारांश पुरंदर । भरजखग भवरनाथ बाजैधू इन्दवा
रा लखैप्रो एगनकां धनुंधर । प्रियालै तडित साथ यो प्रयागवननाथ
सावन बनोहै मदन बाग सुन्दर ॥ भादोंवरान ॥ लसै इन्द्रजगपन्ति मा-
रुत महावन नमैहै खोखर रगाचाप राजै । रुधिर सो बलित अंकुशौ दा-
मिनो लोतओ शृङ्गजल मदभरै मेघ छाजै । गरज जोर धुरवाधु जोचित
कंपैदेखि गडदार खगमैन सग्राम काजै । बभोनाथ सुख सैनसज देखिये
सोसो भादों सघन हास्तबिराजै ॥ आश्विनवरान ॥ सुसन सेतजेते धरा
सध्वतेते बिछाये किधौं भनही राल सैसो । सुधा दृष्टिकरपूरकै सुरसरी
फैत पारापरो पवकृपा बिभौसो । किधौं नाथ लैकर खरी शारदा जोरि
अस्तुतिलख्यो सेनसीरोधजैसो । बिसल चांदअश्विनीबिसलचांदनीहै
बिसल रूप सेसो बिसल साजतैसो ॥ कार्तिकवरान ॥ गरम भोजयोवन
सो अंग अंग सोवन सनेहोसुन ज्योतिमुखदायका । चाहि शिरपरबसै
श्याम तम नाशक अभिराम शायक मदनके अनल पानका । बार कटतें
बुझैरात रसमें जगै कीट शोचै भसम के करन जायका । नाथनेह न घटै
छबि प्रकाश न मिटै दीपकातिकिधौं यथनोनायका ॥ मार्गशीर्षव-
रान ॥ पावस सरसजै अपावन सलिल न्हातपावन रैमंग चहैचारु मोहै ।

जैसे लोहा में रहो लखे नाचता बंझाव का बुझाव का विभाजित । (१०६)
 नही रंग उधो नियों उड्डे गीत रयों नियों समंयोग राखे । जगाम रंग ॥
 बड़ी चाह कै के नदी पार लों नाथ किर्लामल गेह के गायन राखे ॥
 गोख बरान ॥ गोख मासतन व्यापकाशीत । सिन्धु के गेसावों गेह । सिन्धु
 पीयकाजान न जाय । सर्पाक समक सारी रैति विताय । सर्पाक
 मोहि नैक न सगये । विगहा भूम अतिही न जाये ॥ साधन गेह ॥ उधो
 शीतकर शीतकर और देखयो बलि भीतकर को धारि रंग कया है ।
 कथ्यो सुरयो पूरको तेजकर संदरको करन श्रीदूतन राखि गेह है । बसे
 धरनि संदर को नार के शंकतलो अतलो कवच तनयो है । नरी कप है
 अति धिगिर साधवस अही साधही नाथ यह प्राणन ॥ १०७ ॥ प्राण
 बरान ॥ वनेवन सुमन अलि सपन घन जहूं सुख बनवन । सिन्धु बरानि गी
 हंसे । अमि न विधि उमड रंग गरम सेध पिचकागर जगमग । आनर
 में बसे । तिय सुआल गरी उड्डे वामा उड्डे नेल तैतौ पवन राखि बलतरनौ
 नाथयेही तैसे को नमगपन धरे मास का पुन की रंग रंग पावस राखे ॥ इति
 बारहमासा समाप्त ॥

अथ स्फुट-लिखयते । गग विभाष । आनन तडाकर घरा अत रांगीर जी
 सरिससे वारस सकूल केश छाये है । झुकी लपर पालि सार्पाक रति
 जाति तेउ रत रंग आड अधिक जोहायो है । मीनसे नदीन जैन चारामे
 करण फूल तामों भुकि भुकि आवे मिसल राखि पायो है । लालत नि-
 घोभिनि बीच फरकत ऐसे मानों मनमय धेर जालमें पक्याये है । लालि
 मन सह और ऊडसी लगी है उर और हँगई सुधर हीन शरीर है ।
 है है गयो मोहि सो तो पडत हूँ है कोउ केतको कहै है न सुहै लै लगी
 रहै । जाहिलों प्रेतताहि केतक दुख देत याके लागे जिअत याते अधिक
 अधीर है । येरी मेरी बीर मेरी छाती पर पीर तबहीं सिरेगी जोपे छाती
 पर पीर है ॥

इति राग कल्पद्रुम नित्य कीर्तनान्तर्गत रागविभाष समाप्त ॥

अथ राग पंचम प्रारम्भ ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

आसोहो रेन सन तुत तैना आसन उताये । तुम क्रिया भवपान घुसत
उभारो सन काहेते अ नन्दहुताये । नन्ददास प्रिय आँ पीर हमारे उर
कारणा कौन प्रियारे । नन्ददास प्रभु न्यारे प्रान धन वरसे अनतजाय
हमपर भजनधनारे १ आलस उनींदे नयन लाल तिहारे कहाँ तुत
रेनि चिताये । पीक कपोल देखियत हे प्रिय अधरनि अंजन लाखाये ।
जायक भाव उर निन गुहालाल हृदय नख चिह्न दिखाये । नन्ददास
अभुखोल निनाहे भले सोरहो नरुवाये २ प्यारे तेरी आनन दृग आलस
दुत रागत रथनसे । नय क्रियार साँ आँ रैनरंग रसे । शिथिल नमन
दशन कापरन मत लसे । पीत काप युग कपोल प्रियमुख लागि हँसे ।
येँ आन प्रहिलासे अथन प्रीतम गुता प्रसे । प्रिय बिहारीलाल ललित
नरअन पिच तने अकंठा तुत गाँवा कहौते जु आये सोरभये नन्दलाल ।
गीत कथा जीने लागिरहीहै हूँ मत नयन विशाल । लटपट पाग अटप-
टी भदसिउरीन सरसार्न ताल । कृपादास प्रभुरसबस करिलीनो धन्य
अहेत्रजवाल अकौन पुराय करी नारिहं अवतरी ओहर दीन धईमान
साँगे । जहनी अविगती असर आन बल हेतेरे कमला बरकंठ लागे ।
जगि न जागे करी योग ध्यान धरी बहुत ये आदरी देह कर्ये । तोहे
तेहरीं स्वप्ने न देखिये प्रेम दृष्टे । शेष सिंहासन सहज सोहिये सदा
भुवन बैकुंठ तनु मन्य भावे । तेहयो अधिधिक क्षेमन्दिर साहेरु प्रेम
प्रोताभ्यरो पलंग आवे । भक्त बच्छलतनु बिरद पोतेवहेयेस कहेसमय
वेदब्राणी । नर सैथोने स्वामी मुख तगो सागर कीधों करुणासुने
दीन जासी ३ आज उजागर अङ्ग आलस भरेउ साहेरे मन्दिर केस आ-
व्या । भुवन शूलयावर भामिनी भोगिया साथ साहेलडी मेजलाव्या ।
पीत पट बिसारेव नील अम्बर धारेव अधर अंजन सनी रेख लागी ।
धन्यतेँ पुराय पूर्व तपकारि कामिनी तुम्हारे साथ जोरैनि जागी । अ-
लस अलतातता रङ्ग सलता थया तिलक अर्द्ध रहेउं सुभग भाले । अस
जल केलिकरी गीलूं सोहेँ घरां अधर तगोधक लोचन विशाले । का-

रज कहे कोई कारणा सततया भले धधारेउं प्रातःपंचाला । सूर तिया
मलबूते नर सयों राम कहे बलीने धधार जो कालवेहला दे पलंगया
थले कुसुम माला बड़े ताँधि सबेरा करलाज लोपी । जोउं रातरे म-
न्दिर थिकोरा मुकाबसे शुरे करसे पेती रोककोपी । तम्यो जगमाजी
ने अनयो वन बेलही नीरबहीं सींचो तो स्थाने रेपी । अशरजाया
तया फूल मकरन्दसा हृदय दासल माहारहे उरे ओपी । पीतकरी
तम्यो प्रेयता प्राय श्रंतन जन प्राणा पहरहेरे लाँपी । कहेनर सैंयां ता-
हरीरी सजेश उतरे तंसमुख सेन संमलरे गोपी ७ ध्यानधरि ध्यानधरि
नन्दजी कुंवर नज्जकी अखिल आनन्द पास्ये । अष्ट महासिद्धि ते
हारउ भीतर हँदैहना दुःखतरे दूरपास्ये । मोरना पिछयनगो मुकुटमस्तक
धरेउ मकारायात कुण्डल अवगा भलके । जीलपट तिलक ते सुभा
केशर तया कंठ मुक्ता फलहार ललके । पीतांबर लजीपल परकीरने
विभङ्गी उभला बेसाबाये । कदमना द्रुमलखे राधिका रस भोगहारजाते
संगे अलापियाये । तुन्दानन महामुरलिका धुनि सुनि शोषिका के-
रडा तुन्दआवे । नरसैं थाने सभे आनन्द अति धरयोपुष्टय मुक्ताफल लैं
बधावेठरहत रजनीज्यारे पाछली यधरी साधु पुरुषे तारिमूर्ध नरे हेबुं ।
निद्राने परहरी सुनिरवा श्रीहरी सकतू रामके हेबुं । योगिया होय तैं
योग संभालयो भोगिया होय तैंने भोग तजयो । वेदिया होय तैंने वेदउच्चा-
रयो बैषाव होय तेराों बिष्णुजपयो । मुकाबी होय तैंने सबलग्रन्थ भाषयो
दातारे दन्तधावनकरबुं । पीतव्रता नारिने कन्तने पूछबुं बचन कहेते
शीशधरबुं । आपना धर्म थो कयाकहं पीछबीमन शुद्धबद्ध करी कपट
मेहली । भरोनरमैयों हरिनी हापायकी जाताआवे रुडी बातमेहली ।
आजकीबानिकपरहे लालहोंबालबाल गई । बिगलितकच सुमनपाग
ठरकिरही नामभाग अङ्गअङ्ग अरसई । असुरा नयन भर्पाकजात अरु
जँभात बारबार कपोलानि छबिछई । धनि मुहाग भागताको गोविन्द
मुरलिके प्रभु संग राय निधि बितई १० मैथा तेरोरी मोहन अतिही
सयानो देत अटपटी गारी । कुञ्ज महल में अचराफारो हँसि हँसि देदे
तारी । गोरम ढारे मनकी जोरे साठ दहीके फोरे । कटाँऊ की डोरी
केसे बाँधोचौ उदय भवन बन्द तरे । अधर पान परिरम्भन चुम्बन

कहो कहा लजानी । शुक्र नारद को लीला योगोचर सुरकिंतकचर
 बानी ११ तुमसों बोलिबकी नाही । घर घर गगन करत गिरिधर प्रिय
 धित नाही इकठाही । कहा कहं सुन्यवन तुमसों जोहोती मनगाही ।
 दयादास धारी के बचनसुनि हृदय सोभा सुसुजाही १२ नन्दजी न-
 आंगन परम सान्नायु अति रति आपरा दयाकोधुं । दयापि वैकुण्ठ
 केलास वहासदन इन्द्रना लोकाधी अधिक कोधुं । सकल तीरथ जहां
 बिटुल वागेदसे इन्द्र अर्जुन जहांदेव मधला । भक्तिबिना भूधरो व-
 प्रयर्नाहें कोयने सकते सकपै अधिक डाला । सात उभाहैं नाथभन्मुख
 धसे राम बिलसे प्यारो प्रेम प्रीते । नरमैयानी स्वामी दयाजी बाल
 लीलार में यह जरीते १३ जिनिजोली प्रियगोमों आज । जहां बसे
 निशि तहीं सिधारे सोतेकहाहें काज । सारी रैन सोहैं मगजोवत
 गई दही मदनकी दाज । कीत स्वामि गिरिधर दूग जोरत आवत ना-
 हिंन लाज १४ अरुना नयन देखियत है आज । बसे जहां निशि तहीं
 सिधारे रसिकन के शिरताज । मगजोवत सोहैं रैनबिहानी तुम्हें
 नहीं कलुलाज । कीतस्वामिसो कहतिभामिनी यहांहीं कछुकाज १५
 हरिचूकी बालकलीला भावति । साखनदूधदहीकीचोरी सोईयशोदा
 गावति । शकट विभङ्गपतना शोयरा दयावत्त बंधकीनों । ऊखलबंधन
 यमलउधारन भक्तनकोसुखदीनो । बच्छ चरावन मुरलिबजावन यमुना
 काछ बिहारी । परमानन्ददासको जीवन वृन्दावन संचारी १६ जागत
 जागत रैनबिहानी । कहिगयेसांभ आवनेमेरे गृहबसेअनत रतिमानी ।
 उरबिच नख सत प्रकट देखियत यहशोभा अतिबानी । भाल महा-
 वर अधरनि अजन पीक कपोल निशानी । निशि मग जोवत बीती
 मेको आये प्रात यहजानी । चतुर्भुजप्रभु गिरिधरा सिधारे तहांजो
 तुम्हरे मनमानी १७ प्रियसुतसुग्ध बिनोद बंद बिपिनेकिंकिंविहितं ।
 पल्लवचयमति बल्लभमधुना कुत्र शिरमिनिहितं । गौरकिचित्र बिचि-
 यत बदनं कुत्रकृतं ललितं । कचचय सतिचय मंचकरूपं दर्हिपिच्छ
 कलितं । पायित सति धर्म निवारणाकृत ये निर्मलनीरे । उपविष्टबिट
 पिच्छाये सुत कुत्र गोपसहितमितोमाया बंदभुक्तंभवता वनसुहितेन ।
 चारत सतिमति कामल दगावति देशे शोकुल मय कुत्र कटकनिचय

गतिं विद्युत्पथिना गतलोभित सधो न च्छ हरिभक्त्या । तन्मा गीत
यत्नतया येन विविध भावभरसंज्ञात भक्तिगुण आश्रये २० पश्यन्
नो ज्ञानयोगेण कृतप्राप्तं । इतर युवतीजनित त्रिसप्त त्रिपदा रदुगां दे
सायां सपदि शोभायागतं । किमुगृहं विस्मृत नाथमणि स्थितं सरोद्धम्य
जन पश्यामागतं । याहि निजभवनमति भायसंत्यजमय । युगादगार-
हित रसमेव गुरुत्वागतं । मानमुन्मूलयितु मुश्रुती भवति वद कथमु
मथारयपि विरहधरि स्वागतं । अधिकमधिकं सपदि हसुदयतिमाचक्षे
दोषगणानं निखिलनाथ कुपयागतं । यत्रतवसानं चित्रकृतलालसं
कृतवैद्य अचक्ररुक्मागतं । तनमन रयसिखिलसायय प्रपद्य हरे विरह
गुरुभर सहर्हावरहागतं । परमहंवेदितनुस्मिरासोश नति विस्मरत्य
तह गोकुलानुष हृदागतं । त्वमपि हिस्मारयतुमागतं गोपलाधीशकर
वीर्यभुत कल्पसुधागतं । सतदेवास्ति विज्ञापनं नाथमम तिस्रहृदये
सततगयतु अधागत । याहि कुरुशयनमति जागरासतापि लोचनैश्च-
मय परिताप यलनागतं । इतिवचन जातमति मानिनी वदन सजात
भाकरार्थ तन्माभन कलनागतं । पुरयतु गोपिकाजन गनोदयसखिलम
नुपाकारमातप्रथित शरणागतं । देहि बलभचरणा राजीव रेणुमति
विद्ययिजनसंग दुर्गात विराधागतं । धर्मरहितं सहितं भतिदोषकारकैर
हहहरिदानमप्र चरणाशरणागतं २१ बंदत बलभचर तरुजं । भक्तिग-
रणा शरणाकृतमाधन साधवरहित सकलमनुजं । सुन्दरद्वय विबोधित
भाव यशोक्त गोकुलनाथं । निरुपमभाव बिभावित चतुरत तंमसवि-
टुलनाथं । हरिसम्बन्धवती समुदाय विविधसम्बन्धसहायं । अतुलवदन
तोयित तरुणीजनजीवनप्रति मतिमायं । मनवचोगोचर कृतिविज्ञा-
पित निजगता महिमानं । निजसेवक सेवित पदकमल युगाहित हृदया
लानं । प्रकटी कृतवत जीव सुखालय रसमय संजुल रूपं । श्रीभागवत
वितृत बोधन निजजनमति शोचन भूषं । निज पीयूष बिजित बिधुसंडल
मंडित मदन शरीजं । अखिलमनोमोहन निजसुखमा विरहित मानम-
नोजं । मृगमद संभसहजतिलकशोभित सौभागनिधिभालं । कंचितचि-
कुर समावृति वदन बिजिर्जितमधुकर मालं । कृपयति समर्थ कदापि
हृदयकिंकरकर हरिदासे । भवतुपुरं गोपीपति चरणाकमल भावंपद

बामे २२ भंडी सखि शोकलेश । नन्दभवन भूयगा जखभूषित तदधेश
ध्रुव ॥ मन्दहात फुलिनाथ रुचिर मुखसरोज । बदनचन्द्र किरणकीर्ति
रहितमान मनोज । वदन कमल मधुप बंदति राजदलक पुंज । वरिमुक्त
तरवितासि बहुविधिप्रभुंज । युवती मुख कमल मधुप चंचलतर नयन
अनुपम निज निहितभाव सततकृतमृगनयन । भूतदधृतमार विहितका
लमपिषिंदु । मुखजितपीथूय भारत चिह्न बिलसिंदु २३ ॥

इति राग कल्पद्रुम नित्यकीर्तनान्तर्गत रागपंचम समाप्तम् ॥

अथ राग ललितप्रारम्भ ॥

राग ललित ॥ जागहु जागहु हो गोपाल । नाचिन अति सोइयनुं प्रा
परम सुचि काल । फिर फिर जात निरखि मुख छिनाछिन सब गोपाल
कै बाल । बिन बिबासे मानो कमल कोशते ते मधुकर की माल । जे
तुम मोहिं पत्थाउ न सूरप्रभु सुन्दर प्रयास नमाल । तो उठये आपु
अवलोकिय तजि निद्रानैनविशाल १ प्रातसमय आवत हरिराजत ।
इन्द्रजटित कुंडल सखि यवगानि ताकी किरण सूर तन लाजत । स
तईराशि मेलि द्वादशमें ता भूयगा अवलंकृत छाजत । जलजतात सुत
कंठनामवरि ताकी पंक्ति मुकुटशिर साजत । पृथ्वीदुहित तात ताके का
मुखसमीप मधुरी धुनि बाजत । सूरदास प्रभु सुनहुं मूढहे भगतन बग
अभगन ते भाजत २ आज अति शोभितहैं तनश्याम । मानहुंरी जीते
नंदनन्दन मनसिज सेा संग्राम । मुकुलित कचन समात मुकुट रुचि रोय
करुणा दोउ नैन । अम सुचतगति भांति अलससब जोलत बनत न बैन ।
नखसत अंगि प्रस्वेद गातते चन्दनगो ककुब्जुटि । सदन सुभट केश
सुदेशमानोंलगे कवच पटफूटि । दशन अंक सहपीक प्रकट भये सन्मुख
सुभग प्रहार । सूरदास प्रभु परम शूर मैं जाने नंदकुमार ३ आये स
तरंग रससाते । मानहुं छिन बिश्राम निमित्तप्रिय श्रमित भयेहैं ताते ।
डगमगात मग धरत परतपग उठत न बेगि तहांते । ज्यों राजमत्त चरग

सूरसागर रागकल्पद्रुम नित्यकीर्तन ।

१६६

संकल करगहि आनत ता ठांते । उर नख छन कंकरा कृत पाछे शो-
भितहै रुहराते । सदन सुभट के बासा लांगि तनु निकसिगये उहि
घांते । सांचे करत बोल अपनेहैं दरत न मठ्यादा ते । सूरप्रयासकाहगये
आयहैं पशुधरे तोहि नाते ४ उनींदे कान्ह आयेरी मेरेनैनभरे रससाते ।
इगमग पायधरत धरगोपर बैन बोलत अरुभाते । सवअंग शीतल
अमजल भीने बारम्बार भूँपाते । काजर रेखरही अधरनपरकाहेको
प्रयासलजाते । बिन गुणामाल बिराजै उरपर नखछत नाहिंछपाते । स-
रदासप्रभु सांचीकहो तुम कौनधिया रंगराते ५ आजु प्रयासाजु के
नैनकी बातें सुनुरी सखि मोपै बरगान जाई । सुधा किरणबिच युग
शुभ खंजन कियेपान मानोसोवत अघाई । चुंबन राग रंगीले रसमसे
कहा कहूं सुन्दरि सुन्दरताई । मरकत बिद्रुम कमल कोशमें लेजावक
की रेखबनाई । आलसतिरछे चाहत बिचहीबिच कहुक बिकशिंत
जब लेतजम्हाई । मन्मथ जैकरि हरिजीतन को दयोबागा ध्रुव धनुष
चढाई । देखि लाललोचन बिद्यकितभये परस चतुरता सर्वाबसराई ।
सूरप्रयास रमरीभिरहे तहं तुम हम सहचरि कौनबडाई ६ भोरहुभये
प्रकट प्रयासाजु तउ रजनी मन आनति । पिय अंग रुचि लोचन पथ
परित निशि अधियारी मानति । अलि गगा अंगिा स्तत निरजनि
पर सुनि रमना रवठानति । पूरबकृत करगो साधवसों आनंद प्रायन
सुनावति । सरदास सहचरि सब प्रमुदित बिरुध यतन करि भानति ।
दिन पुनि प्रकट बिनोद रजनीके तरनि उद्योत न मानति ७ कहां ते
लायेहो इन साथ । आलस भरेरी जम्हात जेअलिनिपुनबसे तुमरेसंग
सधुपगन्वले और न भायत गावत गुणमन साथ । हैं तुमसे सूखे हैं
ब्रूभक्ति तुमतो उलटे होत रहत हमपर हम जो कहां भरिलीने बाय ।
ब्रजपति रसिक २ तुम दोऊवेउ रसिक जिनकी ये चतुर्भुज सुनिपिय
गोकुलनाथ ८ कहांते आयेहो उठिप्रात अङ्ग अङ्ग हो अरसात । सब
अङ्गही अरसात नयना अरुगा रगमगे दोउघूमत आवत सुधि न कहूतन
चिह्नबने सवगात । लटलटोपाग सरगजीमाला पीतांबर उरपर जु बि-
राजत मन्दमन्द मुसकात । यहछवि निरखि निरखिके ब्रजजन हंसति
परस्पर लेति बलैया फूले अङ्ग न समातहआयेहो तुम प्रीतस प्रातही

रैतहिं अनत बसे । रजनी सुख अवाधि बसो हमसों बोल तिहारे नसे ।
 अचरत अचर भात जावकारु प्यारी पम प्रीतिधसे । अटपटे भूषण
 मरगजीमा या आवे शिर पायलसे । आलस बस इगमगत चरतागति
 जित तित जातखसे । ब्रजपति पियललनाको बचन सुनि नगधर नेकु
 हँसे १० आये हो तुम प्रथम कहाँते भोरहि भयन हमारे । कहि गये
 हमसों बसे औरके साँचे बोल तिहारे । मगरीरौनि मोहिं मग जोवत
 रात्र विरह बिद्या भई भारे । ब्रजपति पिय तुम हो बहुनायक तउ मेरे
 नैननकेतार ११ आयेहो मनभावन कहाँतेभोरहिनन्ददुलारे । तुमकियो
 रति सुखहमें दियो अतिदुख माँचेहो बोल तिहारे । तुमकियामधुपान
 हमें तो तिहारो ध्यान ऐसे कैसेबने प्राणाप्यारे । अत्र तो भिन्नारो तहां
 रैन बसे हो जहाँ गोविन्द प्रभु पियहमारे १२ रङ्ग रसिक नन्दनन्दन
 रङ्गरसिक भामिनी मृगनैनी कमलनयननागर नागरी । गिरिधर कल
 हंस हंसनी मानो गोप तमसा दोऊ सम तूल गुमान सागर सागरी ।
 करव केलिबर्नबिहार निरखि जोट लजित नार गावतमिलि बदनचात
 ललित रागरी । खगमृग पशु सुनतनाद पियत अचर सुधास्वाद कृष्ण
 दास बदतवाद सुफल फागरी १३ प्यारी तेरे नयन रङ्गमगे निशिपिय
 संगजागे । अस्ता वरन शोभित आलस भरे अति रति रति रतपागे ।
 पलकपोक भौहैं रमिरहीआली मानोकमल परागे । कृष्णदास गिरि-
 धरनपीयसंगहँसिहँसि सुखलागे १४ नौदनपरी रैनिसिगरी सुंदरिया
 मेरी जुगई । याहीते भटपटात उठि आइ चटपटी जीय में बहुत भई ।
 तुम्हरो कान्ह पनिघट खेलतहैं बभ्रहु महिर हँसिहँसि होइलई । बि-
 सरत नहीं नगीना चोखो जियते तरत न भलक नई । चतुर्भुज प्रभु
 गिरिधर चलो मेरे घर देहों दूधदधि चाहो जितई । मेरी व जीवति
 मोहींको देहे तब चरान की चेरी हैं होंयुगबितई १५ कहिधोरी
 बचबेली कहतें देखे नदनंदन । बभोरी मालती कहाँते पायो तन चंद-
 न । कहिधों कन्द कदम्ब बज्जल चम्पक ताल तमाल । कहिधों कमल
 कहा कमलापति सुंदर नयन बिशाल । कहिधोरी कुमुदिनी कदलि
 कहु कहि कोविद करबीर । कहे तुतती तुम सब जानत हो । कह
 धनप्रियम प्रीति । कहिधों सुधी मयाकरि हमपर कहिधों मधुप र-

साल । सूरदास प्रभुके शर्मातुग सबही दीतइयाल १६ नवललाल वृष-
भान दुलारी आवत कछभवन तेभोर । इन तनवनी सरगनी सारी
पियउरमाल रही विनुडोर । आलसवश अंशनि भुज धरि धरि आवत
अति छवि पावत । सधुपमाल सौरभवश पुञ्जत मुग्रश तिहारे गावत ।
वृषभानपुर गईलाडिली नन्द सुदन राये श्याम । छीतस्त्रामि गिरिध-
रन रंगीले बिलसे चारोंयाम १७ मेरे तुमआये भोरभये पियरैनि कहाँ
गँवाई । कौन नारिके वशपरे मोहन सांचीकहे किन जानिपरी च-
तुराई । उरहिंहार विनुडोर बिराजत शिथिल अङ्ग सब नखछत देत
दिखाई । छीतस्त्रामि गिरिधर कहे मोक्षों रमिक शिरोमणि जावक
पाग रंगाई १८ रोजतदोउ अति रङ्गभरे । सहज प्रीति विपरीति निशा
सब आलस सेजपरे । अति रसावीर परस्पर दोऊ नेकहु कोउ न मुरे ।
अङ्ग अङ्ग अपने अस्त्रनिसों रति संग्रामलरे । सुभट मुराभर रहे सेजखेत
पर इतउत कोउ न डरे । सूरप्रयास प्रथामारति रसाले एक पग पल न
रे १९ करि शृंगार दोऊ अरसाने । प्रथमबोल तमचुर मुनि हरये पुनि
पौढे दोऊ अरसाने । रतिरन जूझियास विद्यनीके सेजपरे उठि पुनि
मुरभाने । मानोंशर खेतसम लीरके गिरेउतत फिरिभिरत लजाने २०
बोलेतमचुर चाख्यो यामको गजरमारव पौनभयो शीतल तामतगमि-
तातई । प्राची अरुणानी भान किरण उजारीनभक्षिपे उडगन चन्द्रमा
मलीनता लई । मुकुलें कमलबद्धबन्धन विछोई रपाल चरचली गाइ
द्विजपातकरकोदई । सूरदास राधिकासरसबाणीबोलिकहैं जगो प्राण
प्रियरेज सबारेकी समय भई २१ छोटी छोटी गोडियां अंगुरियां छोटी
छोली नखड्योति मोती मानो कंज दानि पर । ललित आंगन खेलें
ठुमुकु ठुमुकु डोलें भुनुनु भुनुनु बाजें पैजनी मृदु मुखर । किकिनी
कलित कटि हाटक रतनजड़ी मृदुकर कमलनि पहुँचियों रुचिरवर ।
पियरी पिछौरी छीनी औरन उपमाभीनी बाल दामिनीको मानो ओढे
ठाढाबारिधर । उरबिच नख कंठकटुला भूँडलेबार बेनी लटकन मसि
बंदा मुनि मनहर । अंजन रंजित नयन चितवनि चित चोरै मुख शोभा
परवारों अमित असमतर । चुरकीबजावति नचावति नंद घरनि बाल
केलि गावत मलहावति प्रेमसों भर । किलकि किलकिहँसे दुहुं दूधदंत-

लीलार्थे सूरदासमनबसें ततरोचयनवर २२ आर्द्रतंडुलागमारांदातजगहा-
 तरगमगी रंग भरिदौ । चन्दउदय मुखदेखतहोरी करदर्पण रतिबिम्ब
 निहारि धों पीकलीक नयनछवि परिकै । पिथुरेअलक सुथरेमुख
 ऊपरमनों सुधा पीवति अलि माल आनन्द हरिकै । सूरप्रभु रसिक-
 राइरसवशकीन्हें बनाइ मुखदीन्हों मनअघाइ नवलानव रीझ मनह-
 रिकै २३ नवल निकुंजनवल रसदोऊ राजित रंगहि भीने । कुसुमन सेज
 भोर उठि आवत आलस युत अंशनि भुजदीन्है । अरुणा नयन नखरेख
 बिराजत अमजलबसन पलटि तनु लीन्है । सूरप्रभु पियाप्यारीको मुख-
 निरखत सखिन सहित ललिता दूगकीन्है २४ दोऊ बनते ब्रजधाम गये ।
 रतिसंग्राम जीतिपिय प्यारी भूषणा सजननये । वे ब्रजगये आपु अपने
 गृह चितते कोऊन टारत । मनसा बाचा कर्मना ये दोऊ एकौ पलत
 बिसारत । जैसे मीननीर नहिं त्यागत खांडित हठ परत । सूरप्रयास प्रया-
 मादोउ देखौ इत उत कोउ न अधूरत २५ रामरसि अमित भई ब्रज-
 बाल । निशिसुखदै यमुनाजल ले गये भोरभयो तिहिकाल । मन का-
 मना भये परिपूरणा रही न सकोसाध । थोड़श सहस नारिसा मोहन
 कीन्हों सुखआगाध । यमुनाजल बिहरत नंदनन्दन संगमिले सुकुमारि ।
 सूरधन्य धरणी टुन्दावन रवितनया सुखकारि २६ राधे छिरकत छैल
 छबीली । कुचकुंकुम कंचुकि वंदूटेलटकिरही लटगीली । बंदनशिरता
 टंक गंडपरस्तन जटित मधिलीली । रातिगयंद मृगराज सुकटिपर शोभि-
 त किंकिनि ढीली । मच्चोखेत यमुना जल अंतर प्रेम मुदित रसभी-
 ली । नन्दमुखन भुजग्रीव बिराजत भाग सुहाग भरीली । बरयत सुसन
 देवगणा हरयित दुन्दुभि सरस बजीली । सूरप्रयास प्रयासा रसक्रीड़त
 यमुना तरंग थकीली २७ प्यारी चितैरही मुख पियको । अंजनअधर
 कपोलन बंदन लारयो काहू त्रियको । तुरत उठी दर्पणा कर लीन्हें देखौ
 बदन सुधारौ । अपनोमुख उठि प्रात देखिकै तब तुम अनत सिधारौ ।
 काजर बन्दन अधर कपोलन सकुचे देखि कहवाई । सूरप्रयास नागरि
 मुख जोवत बचन कहेउ नहिं जाई २८ क्यों मोहन दर्पणा नहिं देखो ।
 क्यों धरणी पग नखनकरोवत क्यों मोतन नहिं पखो । क्यों दाढ़े बैहत क्यों
 नाहीं कहापरी हम चूक । पोतांबर गहिकहेउबैठिये रहेकहा हैसक ।

उधरि गयो उरते उपरेना नख छतबिन गुनमाल । सूरदेखि लटपटा
 पागपर जावक की छबिलाल २९ भोरही प्रयासा प्रयास खर । जलद
 नवीन मिली मनोदामिनि बरिय निशान भरे । शिथिल बसन तनु-
 नील पीतद्युति आलस युत पहिरे । कछुक बंद परति यमकानिका
 वादर बरसा करे । भूयसा विविध भांति मिडवारी रतिरस उमंग भरे ।
 काजर अधरतमोर नयनरंग अंग अंग भीलपरे । प्रेम प्रवाह चलीमनो
 मारता दृष्टि मालगरे । शोभा अमित बिलोकि सूरप्रभु क्यों सुखजात
 तरे ३० ऐस्यहि सेमे रैन बिहानी । चन्द्रमलान चिरैया बोलीं सुनी
 काककी बानी । बेलबधे अनतहि काहूके मनकी आश बुलानी ।
 कपटी कुटिल कूर कहजानै प्रयासनाम जियआनी । कोकिल प्रयास
 प्रयास अलिदेखी प्रयासरङ्गहै पानी । प्रयासजलद अहि प्रयास कहावत
 सूरप्रयास में बानी ३१ में जानी जहां रति भानी । तुम आयेहो मेरे
 ललना जब चिरियां चुचुहानी । मुखकी बातकहा कहां ठानी बात
 नहीं पहिंचानी । इतेपर अखिया रसमसानी अरु पगिया लटपटानी ।
 भालरंग बनानी जावक अधर अँजन प्रकटानी । बिनगुन बनी माला
 सब अँगअँग उलटिनिशानी । सूरदास प्रभु गुणानिधानी अन्तरगातकी
 जानी । धनिप्रिय तुमको जो सुखदानी संगजागत रैनबिहानी ३२ सेमेहि
 सुखसब रैन बिहानी । भोर भयो निजधाम चले दोउ मनमन नारि
 सिहानी । प्यारीगई दृयभान पुरातन प्रयासजात नंदधाम । प्रमुदा म-
 हल द्वारही ठाही उनदेखी बहबाम । प्रातचले बनते ब्रजआये मनमन
 करति विचार । बुनहुं सूर सकुचत ठटुकत ता गृहगये नन्दकुमार ३३
 बनतन ते आये अति भोर । रातिरहे कहूँ गायन घेरत आयेहो ज्यों
 चोर । अङ्ग अङ्ग उलटे आभूयसा बनहुं में तुम पावत । बड़भागी तुम ते
 नाहूँकोई कृपा करत जहँ आवत । औचक आयगये घर मेरे दुर्लभ
 दर्शन दोन्हो । सूरप्रयास निशि हो कहूँ जागे पावति अङ्ग अङ्ग ची-
 न्हो ३४ आज अतिरैन उनीदेलाल । तुम पौढों में चरसा पलोदों जिय
 जिनि जानो ख्याल । सुमन सुगन्ध सेजहै डामी देखति अङ्ग बेहाल ।
 मेरेकहे नहाउ कुछ भोजन करो न मदन गोपाल । निशिअम भयो पीर
 मोहिँ आवति सुनति परस्पर बाल । सूरप्रयास सुनि बचन कपटप्रिय

भरिलीन्हों आसाल ३५ राधाहरिके गर्वभरी । सखि प्रगल्भा आग
जब जान्यो बैठीरही खरी । उत्तम जनारि संग जुरिके वे हँसति करी
परिहास । चलो न जाय देखियेरी वा राधाको उजुहास । कैसा न
शिंंगार कौनप्रियि अङ्गदशा भइकौनी । सरश्याम संगनिशि रसकी
निधरक होहै वैसी ३६ शोक्या कपाल कपोनिवि दीनबन्धु दयाल । स
मोदर बनवारी मोहन गोपीनाथ गोपाल । राधारमगा बिहारी नय
सुन्दर यशुसति बाल । साखनचोर गिरिधर सतहारी सुखकारी न
लाल । गोचारन गोविन्द गोपपति जियभावन संजुलखाल । कीतस्त्री
सोई अब प्रकट कतिमें बल्लभलाल ३७ हरिसों त बैठी देकपोतका
मान नाहिँन नयननि नीरुडारति उससति कतिर्या करत धरधर । र
रसानि शीशनाथ मनाथ लईलैलै पड़पड़े निकुंजयर । तेरि गहमा
गोविन्दको प्रभु जानि रतिपतिको मुखद मन इट परिहार केशरी सो
पियापिय मुख करयत । देखत निजरूप नयनन भरिभरि अंगअंग
रसत अरु परखत । बोलत तुतरात लागत मुहावन सींचे ब्रजजन अ
नमन । तेजिब लखनि नयन नयन साखनचोरि जियहोम हरख
३८ प्रातहि आयेहो नन्दलाल । जावक भाल अधर सखिअंजन पीत
लगाये बाल । लटपटि पाग उनीचे नयनन उरखि सरगजी मान । की
स्वामि गिरिधरन बनीकबि चलत मन्दगति चाल ४० शृङ्गकपोललोत
युगुल कुसडलकृत शोभ । हीरककत चिबुक भूषण त्रिरचित बिसोभ
कंठशोभि मुक्तामसि भूषणो द्योतप्रोव । भाव भरतया बशीकृत युवत
जनजीव । कटितट गतपीत बसन शोभित निजरूप । पदनख सुखमा
बिसान सुरनर मुनिभूष । विज्ञापन मेतदेष मानय मस वचन । श्रीबल्ल
चरणा कमल कपयाकृत रसन ४१ प्रिय सखि त्रिरह विपिन विचर
विरहि मनुज वरणा । गोकुल पतिप्रद भावता सतिशायित शोकरणा
धुव । विविध विष्टपयुत लतादृन्द संदर्शत उज्जितानंद । शिशिरित ति
खिल शरीर पवन बिचलित नव कुसुम सकरन्द । सुंदिर मुदित मानस
घननाद विलसिख अवरा । अद्भुत प्रसन्नियुग दर्शकत हृदयदुःख वि
बसा । फलित रमाल प्रीलशाखा सतपिक कूजित कसुख । स्थलकमला
हित शोभोभसित युवतिजन सरसमुख । हरित रमालोक चिन्तितहरि

रूप नाम युगलं । संनिहित हृदया हितराग गनकृति रसितयलं । गगन
 विलसपद्म घनघन वृन्द बिलोकन कृत सुखदानं । कम्पित शाखागत
 मृदुपल्लव च्छाया विहित सम्मानं । विविधस्थल विरचित लीला विजा-
 यत मधुर निपुणा । प्रिय सन्निधि सुखानन्दय विचारणा परमानन्द
 कृपायां । ईदृश दशायुतं हरिदासं दर्शय गहनविहारं । हृदय नितितहरि
 बल्लभ वरपद नख विद्युति मणिहारं ४२ मानिनिधि मासहसे किमिति
 वियोगं कुमहरिणा सम्भोगं । बारयतदधर पयूयेणावियम द्यौतो भव
 रोगं ॥ ध्रुवं ॥ निज इस्ताव चिताति मृदुलतर कुसुम रचित शयनेन ।
 प्रतिपद सबलोकित पदविह्वल चपल चकित नयनेन । भार्वात शयन
 शयित भवती सन्दर्शन जनित सुखेन । कृपशिष्यति दयितेति तोयभ
 सन्तति हसितमुखेन । पुनरतिताल वृन्तकृतपवर्नादेशेय बशित हृदयेन ।
 ध्रुम बिन्दुनि कलयता बदन कमल मनसा सदयेन । कुटलालक ततित-
 यन समागति रतिजागर भीतेन । मारसरैरति परुषतरै रिरहादिरह द-
 शानि तेन । मुख्य कमला हितगन्ध लोभ गुणाभर गतिता यासेन । स्तन
 तट लुलित हीरशोभा भरत ततस्मृत रासेन । सम्बाहित सरसिज सुन्दर
 भावितपद कमल युगेन । सकरुणा हृदय कमल सम्पादित भाव बदेक
 सुगेन । श्रीवल्लभ पदकमल बिमलमति हरिदासे सदयेन । मनसा सखि
 भावय निज भावंभाव वत्तो वियेन ४३ हरिसनुसर सरसिज नयने ।
 कुरुशयनं हरिणासह सुन्दर रचित कुसुमशयने ॥ ध्रुवं ॥ विरहभाव
 मधुदित हृदिताप निवारित गीतगुणां । प्रत्यव टाटागागि निरुपम सु-
 खमा परिभावन निपुणां । चिरवम लोकिता पद कमलाकृति तरु
 पल्लव निचयं । चिन्तित चरणां चमत्कृति चित्रित दृष्टिरचितविल-
 लयं । भाव बशाशय विहित विनोद विशेष निधान विचारं । भावति
 रुचिरावयव बिलोकन विहित नयन संवारं । भावति भवतीपरि
 रम्भणा कृत सम्भ्रमा जनित सुखं । मधुराधर पीयूष प्राणा सम्पुटित
 सुलोल मुख । भावति माना पनयन करयुग धृतपद कमल वरं । नख-
 विधु करणा कौमुदी मोदविनोद विशेषपरं । अनुसंहित निजविरह द-
 शासमुदितमानस संतापं । अन्वययित तनुदाह बिनाशक शीतलकमल
 कलापं । शिशिरी प्रायविधान विहित निजजन्म सफल विनिवासं ।

श्रीवल्लभ वर चरणा कमल परिमल लोभित हरिदासं ४४ मानि-
 तवपद पतिताहं । अंगीकुरु गोकुल पति संगं येनसर्पादि भुविता ह-
 ताहं ॥ ध्रुवं ॥ नानय विनय वचन मति दानंतव मेलन करणोर्मुहताहं
 नैव मुचित मतिरोपयती भवति कृपयादामी विहिताहं । अवलोक्य
 तिपथंतव सुन्दरिमान बारणो सखि निहिताहं । इति जानीहि चरणा
 परि चरणा निरंतर करणा दोषरहिताहं । भवती रतिसंपादनहताहं
 निरुपधिगोकुलपतिरचिताहं । यदिनाथासि वृथैव भवामि तदानि
 नैकमध्य लिखिताहं । त्यजमि न मानमहो कथमपि तदितर युक्ता
 भिरती वज्रिताहं । यदि न भवति ममबिहित मिदं सखि किमु कथया-
 मि मध्य वनिताहं । बदनाभृतकर किरणाचकोरं दर्शय सुखितं भूति-
 तिताहं । इतर सखीजन साहं कृति बहु वचन रचन शोचन मृति-
 दाहं । जीवनमपि मम दुर्लभ मधुनायदिनिज संग भंग गमिताहं । क-
 थमु दर्शयिष्यामि मुखंपुनरपि हरणा बहुधालपिताहं । इति सहर्चा
 वचनानि हृदाकार्य अतिवदति सखिसखि चलिताहं । श्रीवल्ल-
 भ वर चरणा रेणु हरिदास मदीय कृपा वतिताहं ४५ विरहेसुन्दरवर्ण-
 समये । बंद जीवानि कथंमम दोषै रति श्रुतै रिह सखि विपरिते-
 दये । बर्षति जलदे विरहानलदे गोवर्द्धन शिखरे । पर पुष्टे शतवृ-
 कूजति वदति केकि मुखरे । लभति भूमिरति हरितापवन विचलिते
 तृणा निचये । इन्द्रगोप कैतव निजमल बिलसदनु रागमये । विविध-
 शिलासु श्रद्ध निजरूप युतासु विराजितनाथे । निजमुख दर्शन जनित-
 नन्द, बिलास गीत गुणागाथे । नव घनमध्य शोभिता सुमुखि दृश्यतेति
 तववक्र माला । मेघनाथ मनु गर्जितमुरली क्षरति रसमुरशाला । उदय-
 तिबिद्या दतीवचंचला चालयतीहजनं । अमितमेघगराविरचित तमसा
 बहुभीयति बंनं । रंजित रुचिर कुसुंभवसन परिधान विराजितरूपे
 गायति मेघ समागम राग निरूपधि गोकुलभूषे । इति विज्ञापित म-
 तिशय करुणो विरहित हरिदासेन । श्रीवल्लभ पद कमल पराग धा-
 रणा विरचित वासेन ४६ सततं विचरति वृन्दाविधिने । गोकुलपति
 रति गोपाल बाल कैराहृदे पिदिने । निजवदनेन वदतिनामानिगवा
 मति रति वचनेन । मनसि मोदते विपुल रसागत सरस कुञ्जरवनेन ।

निर्मलनीरधौत शिखरोपरिरुचिरशिला सुप्रविश्य । मुक्तेभवनमगागत
मल्लं निज गोपे पुनिविश्य । प्रत्यंगुलिदल विविध कलानि दधाति
रुचिर हस्ते । मध्यमोदन तनुतेदुयं जननी कृत शस्ते । विपाति बिमल
पानीयं यमुना या मञ्जुलिबन्धेन । प्रतिबिम्बपश्यतिरुचिरं निजलोचन
संबन्धेन । मृदुवादशति बेरामतिमधुरं चलातिधनुसंगे । हरतिताप मय
काननदेशे विरचित तृणाभंगे । कनक चपकगतफेन समूहं पिपातिगोप
मथितं । शिशिरयती हवाल कुलहृदयं बहु विरहा व्यथितं । श्रीब-
ल्लभपद कमलपरागारागरञ्जितहृदयं । हरिदासे सुखितं भाषैरपि कुरु
दुर्जन बिलयं ४७ चरणाधेहि सरमहृदये । व्यथित शिला तृणा मूलैरिति
पदमितिचिंतैक मये । नहिं समुचित मिहधरणा विचरणां सुन्दरमति
कमले । उद्धरभाव निरन्तर निर्गत नयननीर बिमले । श्रीरपि कुरुते
मपदि सहायं यद्यपि वन चलने । तदापि बाधते मामक हृदयं चरणा

। इह

यदिगन्तुं क्षणा मुत्सहसे करवै शपदिकरे । व्रज संबंधि गवामनुराकिभु
गोपीजनवृन्दे । यामयचेतसिचिन्तयसे लौकिकमतिमंदे । किमितिबि
भेयतायससृष्टे धातवितुं चरणां । फणाफणाधृतपवपञ्चकिमद्भुतमेवत
वामलकरणां । कर्ह म जनितदुःखमर्हयसितपद जनितानन्देन । भूमेरहह
वियोगे विहितं किमुमयि शोबिंदेन । श्रीबल्लभपद कमल सदागति सं-
गात गन्ध युतेन । योजय निजचरणां करुणामय दाससदय हृदयेन ४८
मित्र मायाहि करवे पयोसंयतं मिह भोजनीयत्वया । पत्र विरचित
रुचिर पात्र निहितं हरेननुबिधेया समोपरिदया । शीतलं मयेति ननु
भाव सुन्दर हरे श्रुताव्रजे यत्न विहितं मया । किमितिह बिलम्बसे
तियममसन्निधौ गोपसुतमण्डली विहितं विनया । दर्शनानन्द गो-
विन्दसम्प्रति यथाभवति दुःखालिरथरचितं बिलया । दृष्टतरनील स-
शामञ्जु मुख लग्न मधुदरध करुण परम शोभैक निचया । तिय कथ
यामिपरमद्भुता मयकथा मयिकिमपि मधुबचन मुदितमय चैकया ।
मामहह कानने करुणया योजय प्रगातपति गोकुलाधीशपद सेवया ।
आयामिकिमपि कथयामि तवकर्णायो रति शयित गुप्त मयलोक
विरचित मया । मञ्जुकुंजरचय संकेत मद्भुतं शीघ्र सह मायामि च-

ररागति कृतया । विजयिष्यामि परमति रमरा संभ्रमे दर्शनीयो
 भक्त कृतया । योजनीयोस्मिन्नु शब्दि भवता कदाकार्य करारो
 सिकजन नायसहितया । दर्शयिष्याति कदासत प्रभु स्वामिनी सत्ता
 बदनं पिहित विपरीत मिच्छया । मदभि नन्दन मथो दत्त मनसा क
 दाकरायिष्याति सुरत संग्राम कृतजया । देहिनिज दास्यमिह बलभा
 धीशपद कमलमेवन विहित भक्तिजफलाशया । सतत महितेपि हरि
 दासके करुणा तम विलस बिपिने सरस जित परातघया ४६ जहाहि
 शृणुमायाहिवनं किमुचित सिति गमनं । चारणीय मिहिगोपे रभि
 तो ब्रजनृपधेनु घनं । ध्रुवं । करनै विविध जमन भूयाभिरलंकरणां तव
 देहे । रहसि बिराजित बिपुल बिताने बलसामकगेहं । आतमुगन्ध सु
 वर्त्तनमतिशय शुद्ध गन्धतैलं । स्नानमथो कुरुनीरैरुष्णौ स्नरी कुरुचैल
 कच्छपटं परिधाह तिलकमपि बिपुल भाले । तनु मुष्णीयं शिरसि
 विधेयं श्रुतिताल कमाले । नूपुर युगयति चपलं पदशो रुतभुजयो रपि
 धेयं । कंकरा चयमथ मध्य संगदं गुच्छ सहित मपिदेयं । हृदय मध्य
 मणिमुक्ता जटितं पदकंनाथ विधेयं । गुक्ताकनक मालिका युगलं
 जयजग दखिल भजेयं । उपविश पर्यंकेमृदुरभो कुरु सुन्दर शायनं । तनु
 बैदर कृतसंगमर्दनं शिशिरीकुरुनयनं । इतिसरसं वचनराधाया रति
 रसभावयुतं । शृणु बलभ वरचरणा कमल तल गत हरिदास नुतं ५०
 हरि रिह दिवसे बसति बने । गोचारणामपि कुरुते गोपै रभितो बिरप
 घने । ध्रुवं । नैव रोचते किमपिसुमुखि मम हरि विरहित मदन । बि
 रह बाह्वरपि तनतेदाहं हृदये नृपमदने । द्रष्टु मही कामयते नयनं गोप
 नय बदनं । अलिकूल संहशाल कर्ताति सहितं मुख दुग्ध रदनं । नासा
 सतत विहित दुरास देहकमल गन्धं । आदातुं तस्याननु तनुते सैवहृदय
 गन्धं । रसना कुरुतेसतत मनोरथ मधुररसं पातुं । वागपि रसमनु रा
 । वती बिदधाति मनोगातुं ५१ ॥

इति रागकल्पद्रुमनित्यकीर्तनान्तर्गतरागललितसमाप्तम् ॥

अथ राग पट् प्रारम्भ ॥

— * —

श्रीकृष्णायनमः ॥

बनेआज नन्दलाल मखि प्रेममादक पिये संग ललसा लिये यमुन तीरे । फूलीकेशर कमल मालती सघन नयनन्द सुगन्ध शीतल समी-
रे । नोनेमाया बरगातन कनकमण्डित बसन परमसुन्दर चरणापरमि
माला । मधुर मृदुहास परकाम दशनावली छविभरे इतरात दृगवि-
शाला । किये चन्दनखौर बदनारबिन्द मकरन्दलुब्ध घमर कुटिल
अलकें । हलत कुण्डल लटकचलत जब प्रथामघन मरिगानकीकांति
गलगण्ड झलकें । एक चंपकतनी कृष्णारममातीकरे राग पञ्चमसंग
लागिसोहे । एक हरिमुख निरखि धरिरहीं ध्यानमन चित्रमम भई
हरि हियोसोहे । एकदामिनिसी भुजमेलि श्रीवा बातकहन मिसआय
मुखमुखसों लायो । एक नवकुञ्ज में खैचिरही कटिबन्ध आपनोला
चितचोर पायो । एकप्रथामहिँ हेरि सुभग लोचन भरि बिहँसि बोली
भलेकान्ह कपटी । एक सोधेभरी छुटेवार नखरी चन्दमुखी बिनकं-
चुकीरीभि लपटी । एकप्रथामा कनक कुञ्जबदनी प्रेम मकरन्द भरी
हरिनिरखि बिकसी । ताकेरस लुभिरह्यो लपटि साँवरो भँवर प्राण
प्यारी भुजनबीचिजुलसी । रसिकमरिा रङ्गभरेबिहरे वृंदाबिपिन संग
सखिमण्डली प्रेमपारी । कहैभगवानहित रामराय प्रभु सुमिरि सोइ
जानेजाहि लगनलागी १ आजनन्दलाल मुखचन्द नयनन निरखिपरम
मंगलभयो भवनमेरे । कोटिकन्दर्प लावण्य एकवकरिवारों तबहीं
जबहीं नेकहेरे । सकलसुखसदन हरयितबदन गोपवर प्रबलदल सदन
जनों संग घेरे । कहोकोऊ कैसेहनाहिँ सुधिविधि रहे गदाधर मिश्रगि-
रिधरनदरे २ नवनवजराजको लालटाढोसखि ललितमंकेतवट निकट
सोहे । देखुरीदेख अनिमेष या वेयको मुकुटकी लटक अभुवनसोहे ।
खेदकाण्डलककहु भुकीसीपलकमानो प्रेमकीललकरसरासकीये ।

परमवडभाग वृषभाननूपनन्वनीराधिकाश्रंशपरवाहुदीये। सगिजासि
भनिराहि नवलता भूमिरसपुंज शुभ कुंजछवि कहि न जाई। नंदनन्क
चरगापर सहित जाँजयह मुनिनके मननमिलि पाँतिलाई। परम
सुतरूप सकलगुण भूष यहमदनमोहन बिना कछु न भावै। धन्यहरि
भक्तजिनकी कृपातेभूषा कृष्णागुण गदाधरसि श्रगावै ३ पाँछिलीगति
परछाहीं पातनकी भेरोलालजी रंगभीनो डोलतद्रमद्रम तराँन। बनहिं
देखतबने लागि अङ्गुतमने जोतकी छोटसो निकसिरहीमबधरनिहण
के दरश को आँकेपरगको भईरीमगतबगई हों मज्जन करनि। नूप
धुनि सुनत चक्रितहैं थकिरही परिगयो दृष्टिगोपाल साँवरैबरनि।
जरकसी पागपर सोर चन्द्रिका बनी कमलदल नयन भूषवक कवि
मनहरन। धार्द्रसय गहन को रसवचन कहनको आवति छविमाँअति
चरगासों धरधरन। रोभरोम रसि रहेउ मेरोमन हरिलिये नाहिं बि
सरत बाँकी भुकिनिमें भुजभरन। कहें भागवान हितगसराय प्रभु सो
मिली लोक लज्जयागई भईहों परबश परन ४ मुकुटमाथेधरे खौरच
न्दन करे मालमुक्ता गरे कृष्ण हेरे। पीतपट कटिकसे कानकुंडल लसे
निशिदिना उरबसे प्रासाधरे। सुरलिका मोहनी करकमल मोहनी ले
कनकदोहनी खरिजनेरे। लाललोचनबने ललित रसमेंमने मेनसे अन
गने खालतेरे। किंकिणी काछनीदेत शोभायनी देखि कोस्तभ मणी
सुर छकेरे। प्रभु छबीलो रंगीलो रसीलो आली लगनकी मगनमें व
सेरे ५ कृष्णकथा बिनु कृष्णनाम बिनु कृष्णभक्ति बिनु दिवस जात। ते
प्राणी काहेको जीवत नहिं मुखबदत कृष्णको बात। अबराकथा न
श्यामसुन्दरकी रामकृष्ण रसना नस्फुरात। मानुयजन्म कहाँ पावेगो
ध्यानधरे धनश्याम गात। जो यह लोक परम सुखराखत असु परलोक
करत प्रतिपाल। परमानन्द दासको ठाकुर अति गँभीर दीनानाथ द
याल ई आज उठिभोर नवकुंज कानन सखी ठाढी भई राधिका रंग
भीनी। बिलसिमुख चन्दसङ्ग नवरङ्गपिय प्रयासघन कामकी सेनसब
जीतिलीनी। सुभग बिकसित बदन नयन अति रसमसे मोरिसुख हँसी
कछु मक्कुच कीनी। श्रीबटुल गिरिधरन संग नागरी जाँगिभबरीन आ
नन्ददीनी ७ हों चलीरीजाऊँ जहाँ मोहनमूरली मधुर मधुर धुनिबाँ

री । यमुना पुलिन सुभग वृन्दावन मदनगोपाल बिराजैरी । मञ्जुलनील
घन वरणा श्यामतन दशन दामिनी छबिछाजैरी । मोरमुकुटकी शोभा
निरखत इन्द्रधनुष द्युति लाजैरी । कुण्डल करण कंठ कौस्तुभसिंहा
आनन्दमुखविह प्रकाशैरी । चरणाधरन कहत न बनिआर्थ कौतुक कुञ्ज
विलासैरी । घुंघरवारे अलकनि भलके चन्दनतितक ललाटेरी । अ-
मल कमलदल मञ्जुलनयना जोहतहै मम बाटेरी । हरिटाढेहे कलपतर-
वर तरे मोहिँ देखि हँसि देहैरी । अति ललचाय लटक सों चलैं जब
सुधिबुधि सब हरिलहैरी । जाकोमन मिलिरहेउ कृपासां ताकी अकथ
कहानीरी । कहें भगवान हित रामरायप्रभु सुमिरन सांभ समानीरी ८
हैं मिलीरी तहां जहां खोरि सांकरि सुन्दरश्याम मलोनारी । इतते
हैं जात उतते वे आवत ओढेपीत उढोनारी । हँसि मुसुकाय लटक
जबबोले प्रकृतहैं मधुको नारी । होंसकूची मोपै उतरु न आये इत दग
ठगी ढटोनारी । चित्र लिखीसी रहगइ तासरा मनो पहिडारोटोनारी ।
घुंघटापि चिबुक चितवनिमें भूलिगइ सखिभोनारी । मातपितासुत
बधु ग्विजोरी मेरोमन मोह्यो मोहनारी । बंशीधर गिरिधर परवारां
अब कछु और न होनारी ९ अरी मोरमुकुट कुण्डल भलकन अलकन
उर मनमेरो मन जुहरी । मुरलीधुनि अवगान सुनि सजनी काम धाम
सबको बिसरो । बावरे लोग सारभटकी घरकी नहिँ जानत पैंडपरेउ ।
भावेसे होय हरिसंग न छाँड्यो यहव्रतजिय निश्चय जुधरेउ । काहेको
लोगलाज आवे सखि काहूसां काहूको काजसरो । चन्द्र सखी सोई
बड़भागिन बालकृष्ण प्रभु बारोबरो १० अरी आजसखी बनते बने आ-
वत गावत श्यामसखा गनमें । गति गुञ्जत अमित गयन्हु की लखि
कौनरहे अपने मनमें । पगिया शिरलाल रही भुकभालसा पीत भूंगा
भलकै तनमें । ये उपाये उपजी जियमें मानो चपला लपटी श्यामघन
में । घुंघरारी लटै लटकै मुखऊपर राजतहैं रज गोधनमें । चित्रलिखीसी
रही गइ ताछिन वृन्दावन प्रभु वृन्दावनमें ११ कान्हारो नन्ददु-
लारो सो नैननिको तारोरी । प्राणापियारो जग उजियारो मोहनसीत
हमारोरी । दृगमें राजत हियमें छाजत एकछिना नहिँ न्यारोरी । सु-
रलीढेर सुनावत निशिदिन रूप अनपम बारोरी । चरणा कमल सकरंद

लुब्ध ह्रीमन् मधुकर गुञ्जारोरी । रसरंग केलि कबीले प्रभुसँरा हितसे
 मदा बिहारोरी १२ आज ब्रजभूमि नवरङ्ग शोभाबली रामखेलत नक
 मङ्ग ध्यारी । माधुरी रूपरस केलि मोहावनी चन्द्रिका सोरकविके
 न्यारी । इलत कुराडल चिलक पीतपट अति सरस करकम न फलली
 बिहारी । लगनमें मगनमोहन निरखिनेह सोरङ्ग रसमूल राधेबिहारी ।
 मगवा नितत घनी बनितनी हितमनी बजत मुरली मधुरमुर सुखारी ।
 युवतिके यूथमें प्रेमपूरन पगे युगुल जल प्राण जीवन आधारी । गगनस
 गगन देखनछयो ये अली शिव विरंचि सबन सुधिबुधि बिहारी । कवि
 कबीली कबीले ककी होइ जब युवतिन आजु सर्वस्वहारी १३ निरखि
 त्रिभुवन धनी प्रेमपूरन सनी माधुरीरूप रसमें लुभानी । कनि ककी सां
 वरी अब कितै जाउँरी लगन मनमोहनी सुधि भुलानी । लागसो कि
 लुभ्यो नेह हियमें खुभ्यो लाज कुलकानि जियते छुडानी । अङ्ग स
 रङ्ग हरिके रंगी ह्वै अंगी कोऊ कहे बावरी कोउसयानी । देखिसुन्य
 बरनमन हरन सुखकरन नागरी नवलहित बनिके डानी । रसिकजीव
 कबीले प्रभु प्राणाधनचरणा वेशरणा सुखमें समानी १४ जयति गोकु
 लानन्द गोविन्द गोपालिका तालिका तालगात नितंकारी । हेमसणि
 मगडलीमध्य घन नीलमणि मोहनी नन्दमन्दिर बिहारी । जयति ब्राल
 गोपाल सुविशाल लोचन युगुल गरे रुचिर व्याघ्र नखमणि मुरारी ।
 सुगत कटि किंकरी नाद उम्माद पद नूपुरा रुगात गति नितंधारी ।
 जयति लल्लाट पटघटित तिलक कस्तूरिका कुटिल अलकावली मुख
 बिकाशी । दच्छ दच्छिन हस्त पूषपर पायस बामकर नवनीत ब्रह्म
 राशी । जयति पतना प्रागाहत शकट उच्चाटकरि असुर तुरावर्त्त धरि
 धरणा आने । नौलगिरि श्रीजगन्नाथ शिशुरूप कृत को नमति दास
 साधव बखाने १५ सरस रसरङ्ग भीने नवलहरि रसिकबर प्रातःी जात
 इतरात सोहे । परम प्रीतिके रेन हिय हुलसिजागे रेनचैन चित्तनिरखि
 युति मनमोहे । मन्दमृदुल हंसनि कबि लसनि मुखमाधुरी ललितकच
 कुटिल दृगबङ्ग मोहे । मदन गोपाल अवलोकि धीरज धरे कहेरी म-
 जनी ऐसी बालकोहे । चक्रित चितवत चित्तकरत चंचल चयनि बिसरि
 गति बिबश बावरी होहे । शोभाको सदन सुख बदनकी ज्योतिलखि

होतिहै कोटि रविशशि लज्जोहे । लपटि उदगार उरहार कंचन बसन
प्रेम शिंगार तनमन लगोहे । केवलराम वृन्दावन जीवनि छकी सब
मखी दृगनिर्गो रूपजोहे १६ शरदरजनी रुचिर शशि सुखद चांदनी
मुदित मोहन रसिक रासनाचे । लेतर्गाति लटक भ्रमटकि मदन माद
मों नवल नटवर ललित मुनप नाचे । रीभि भीजी कुंवरिलाल संग
तालकम उच्चरे मधुरसुर सरस सांचे । उरपति लईहुरमई नईनई गतिमो
संगीतके रंगमाचे । मनमें हितचन्द्र थकित स्वगमृग विवश बांसुरी धुनि
सुनत सुनिन बाचे । केवलराम वृन्दावन जीवन जन युगुलवर सदा बि-
लमत दृगनि दरशयाचे १७ ॥ रागघट । चर्चंगी ॥ राधिकारवन गिरिधरम
गोपीनाथ मदनमोहन कृष्ण नटवर बिहारी । रामलीला रसिकव्रज यु-
वति प्राणापति सकल दुखहरन गो गगानचारी । सुख करन जगतरन
नन्द नन्दन नवल गोपपति नारि बल्लभ मुरारी । छीतस्वामी हरिसकल
उद्धारहित प्रकट बल्लभ सदन दनुजहारी १८ ॥ रागघट ॥ आज दधिजघन
करे भासिनी प्रेमथीहरय आनन्द भरी गीतगाये । रईमाहें करी रज्जु
वेहु करधरी धमरजो शबदते आति सुहाये । प्रेम पुलकित तनी कृष्णारस
मासनी किंकिनीनाते अतिघाय्य घाये । उर जना भारथी कटिते तचका
करे सुन्दरी शोभाते कही न जाये । तेसमय कान्ह जी आवीने आंच
का पेठीघर माहेन वनत खाये । युवति येजारायूको भसीगायुं औरंडे-
मेले संध्यासते चालीधाये । सुन्दरी आवतीजुई श्रीकृष्णजी तजीने भाखन
ते क्षणप लाये । नर सैंयां स्वामी थी गोपी बिनती करे मांजसो मांज
सो चित्त चुराये १९ ॥

इति रागकल्पद्रुमनित्यकीर्तनान्तर्गत रागघटसमाप्तम् ॥

अथ रागदिवगन्धार प्रारम्भ ॥

श्रीकृष्णायनम ॥

आञ्जुअति राजित दम्पति भोर । सुरतरंगके रम में भीने ना
नन्द किशोर । अंशन परभुज दियो बिलोक्त इन्दु बदन विव ओ
करत पानरस मत्त परस्पर लोचन दयित चकोर । कूटी लदन ला
मन करण्यो ये बांके चितचोर । परिरंभन चुंबन आलिंगन सुरमति
कलधोर । पग डगमगत चलत बन बिहरत नव निकुंज घनघोर । हि
हरिबंशलाल ललना मिलि हियो मिरावत मोर १ व्रजनव तरुणाक
दम्ब मुकुटमणि श्यामा आञ्जुवनी । नख शिखलों अंग अंगमाधुरीमो
श्याम धनी । योराजित कवरी गूथति कच कनककंजबदनी । चिक्का
चन्द्रिकन बीचअर्द्धबिधु मानो ग्रसतफनी । सौभाग रसशिर अवतपनी
पिय श्रीमंत दनी । भृकुटी कामको खण्ड नैन शर कज्जलरेख अनी
तरल तिलक तातंक गंड पर नामा जलजमनी । दशन कुंद सरसाय
पल्लव प्रीतम मन सुमनी । चिबुक मध्य अति चारुह सहजसखि श्या
मल बिन्दुकनी । प्रीतम प्राण रतन संपुट कुच कंचुकि कमि बतनी ।
भुज मृणाल बल हरति बलय युत पर समरस अवनी । श्याम शीशत
मनो मिडवारी रचीरुचिर रवनी । नाभिगाँभीर मीनमोहन मन खेल
को हदनी । कशकटि पृथु नितम्ब किंकिनि दृढ कदलिरम्भ जघनी ।
पदअम्बुज जावकयुत भूयसा प्रीतम उर अवनी । नव नवभाव बिलोकि
सामझम बिहरतहै बरकरनी । हित हरिबंश प्रशंसित श्यामा कोरति
विशद धनी । गावत अवगानि सुनत सुखाकर विश्व दुरति दमनी २
देखत नव निकुंजसुति सजनी लागतहै अतिचारु । माधविका केतकी
लताले रच्यो मदन आगारु । शरद मास राकानिशि शीतलमंद सुप
न्ध समीर । परमल लुब्ध सधुवृत बिथकित नबदति कोकिल कीरा
बहुविध रङ्ग मृदुल किशलय दल निर्मित पिय सखि सेज । भाजन
कनक बिबिध मधु पूरित धरे धरनि परहेज । तापर कुशल किशोर

किशोरी करत हास परहास । प्रीतम पागिा उरज बर परसत प्रिया
दुरावात बास । कामिनि कृतिन भृकुटि अवलोकति दिन प्रति पद
प्रतिकूल । आनुर अति अनुराग बिबश हरि धाय धरत भुजमूल ।
नागर नोवी बन्धन मेचत ऐवति नील निचोल । बधूकपट हठिकोप
कहति कल नेति नेतिसधुनोल । परिरम्भन बिपरीत रीतिगति सरस
सुरति निज केलि । इन्द्र नीलमणि मय तस मानो लसत कनक की
बोल । रतिरन सिधुन ललार पटलपर अम जलसीकर संग । ललिता-
दिक अञ्चल भक्तभोरति मत अनुराग अभङ्ग । हित हरिवंश यथा-
मति बराति कृपा रसामृत मार । श्रवणा सुनत प्रात करति राधापद
अम्बुज सुकुमार ३ आजुवन कीडित प्रयाभा प्रयास । सुभगवनी नि-
शि शरदचांदनी रुचिरकुञ्जअभिराम । खराडनअधर करतपरि रंभन
ऐचतजघन दुकूल । उरगय पाततिरेकी चितवनि दम्पति रससमतूल ।
वेभुजपीन पयाधर परसत बामदिशा पियहार । वसननि पीक अलक
आकरयत ससर अशित सतमार । पल पल प्रबल चोपरस लम्पट अ-
तिमुन्दर सुकुमार । हितहरिवंश आणुबनु टुटत होबलि बिशद बिहा-
र ४ आजु बनराजत युगत किशोर । नैर्दनन्दन टुयभानु नन्दिनी छे
उनीदे भोर । डममगात घणघरत शिथिलगति परसतनख शशिछोर ।
दसन बसन रगिडत मुखमंडित भालतिलक ककुथोर । दुरत न कच-
करजनिके रोकेनयन असुता अतिचोर । हितहरिवंश सम्हारन तन
सन सुरति समुद्र भक्कोर ५ बनकी कुञ्जनि कुञ्जनि डोलनि । निक-
सतनिपटसाँकरी बीथिनु परसतवाहि निचोलनि । प्रातकाल रजनी
सबजागे सूचत मुखदुलालनि । आलसबलित असुता अतिव्याकुल
ककु उपजति गतिगोलनि । निरत भृकुटी बदन अम्बुजमृदु सरसहास
मधुबोलनि । अति आसक्त लाल अतिलम्पट बशकीने विनुगोलनि ।
बिलुलित शिथिल प्रयास छूटीलत रोजत रुचिर कपोलनि । रतिबि-
परित चुम्बन परिरम्भन चिबुक चालं टक टोलनि । कबहुँक अशित
किशलय शय्यापर मुख अञ्चल भक्तभोरति । दिन हरिवंशदास
हिय शोचत बारिदकेलि कलोलनि ६ प्रीतम दोउबने मरगजे बागे ।
नवनिकुञ्जते निकसि प्रातही पिय पाछे धन आगे । खण्डित अधर

पयोधर मगिडत गरुडबिराजत दागे । कूटी तट कूटी भांगामाला अ
 धुंधल छविपागे । नखशिख विशिख कुसुम की सना कूटे हेरनबागे
 व्यास स्वामिनीको सुखसर्वम विलस्यो प्रियाम सभागे ७ कहाँलौं अ
 केदेहीओट । चंचल चपल सुरङ्ग कबीलो आनि बन्यो मगजोट । खंज
 मीन कमल अतिलाजत उपमाहीजैकोट । सूरदासप्रभु कहँलग बरगो
 नाहिंन रूपकोटोट ८ भली यह खेलिबेकी बानि । मदनगोपाल लात
 काहकी नाहिंन राखत कानि । देखि यशोमति करतब सुतके यज्ञ
 माट मथानि । फोरिहोरि दधि डारि अजिरमें कौनसहे दिनहानि ।
 अपने हाथले देतबनचरको दूधभात घृतमानि । जो बरजों तौ आनि
 दिखावे परधर कूदनिदानि । ठाढी हंसत नन्दकीरानी मंदिकमल सु
 घानि । परमानन्ददास जानतहैं बोलि बूझिदे आनि ९ ठाढी यशो
 कहे । यह सब ब्रजके लोग लाल के गोहन लाख्यो रहे । जाके भक्त
 जात ना कबहुँ सो जुँटे आनिगहे । एकगाँठ एकवाम बसेबो कैसेजा
 निबहे । तुम जिनस्वीजो मातुयशोदा सर्वानकी जीबनियहे । परमान
 आनिख जरोजाकी जुटेढी दृष्टिचहे १० सुनहुधौं अपने सुतकी बात ।
 देखि यशोमति कानि नराखत ले माखन दधि ख्यात । भाजन भारि
 डारि सब गोरस बाँटतहैं करिपात । जो बरजों तौ उलटि डरावन चपल
 नयनकी घात । जो पावत मोलेत चपलहटि नेकहू नाहिँ डरात । हैं
 सकुचति अंचरकर धरिक्के रही ठाँपि मुखगात । गिरिधरलाल हात
 सेसे करि चलेधाय मुसुकात । चतुर्भुज दास माँहों आयो बूझि सो
 देसात ११ जो तुम सुनहु यशोदागोरी । नंदनन्दन मेरे मन्दिरमें आ
 करतहैं चोरी । हैं भइ आनि अचानक ठाढी कहेउ भवन में कोरी ।
 रहे कृपाय सकुचि सीचकहेय मनहुँ भइ मतिभोरी । मोहि भयो सा
 खन पछतावा रीती देखि कमोरी । जब गहिबाँह कुलाहल कीनों ल
 गहि चर्या निहोरी । लगे लेन नयनजल भरिभरि मैं हरि कानि
 तोरी । सूरदास प्रभुदेव निशर्दिन सेसी अलक सलोरी १२ हाहा औ
 सुनेगो कोऊ । बहुरि खालि मुखते जिनि काहे जो हम जाने दोऊ ।
 बालककान्ह निषट भोरन घायनचलन सिखायो । तासों कहति भक्त
 अपनेमें चोरी माखन खायो । घरहुँ करत कलेऊ क्रमक्रम जो को

बहुत निहारे । सो क्यों अनत सकुचको लरिका कंचुकि के वंदतेरे ।
चतुर्भुज प्रभु गिरिधरन चन्दकी भूठे हलावति खोरे । है है काह और
गोपको इनहीके अनुहारे १३ नितउठि देनउरहनी आवै । यहजुगबालि
घोबन मदमाती भूठेहि दोय लगावै । कहिधौं भाजन धरेपराये कह
मेरो सोहनपावै । लरिका अतिसुकुमार गहेकर हलधर मङ्गखिलावे ।
कबहुँक कहत कंचुकी फारी कबहुँक और बतावे । कबहुँक रई मथा-
नीलेके आंगन शौरमचावे । मन तेरो लाग्यो कमल नयन सों ऊतस
बहुत बनावे । चतुर्भुजप्रभु गिरिधर मुख यहिमिस क्षणाक्षणा देखेभावे
१४ अरी मेरोइ तनकसो गोपाल कहाँ करि जाने दधिकी चोरी । काहे
को आवति हाथनचावति जीभ नकरही थोरी । कब छीकेते माखन
खायो कबदधि मटुकी फोरी । अंगुरिनकरि कबहूँ नहिँ चाखत धरही
भरी कमोरी । इतनी बात सुनी जब ग्वालनि बिहँसि चली मुखमोरी ।
परमानन्द नन्दरानीके सुतसों जो कछु कहे सो थोरी १५ ढोढारंचक
माखनखायो । काहेकोहरुई होतरी ग्वालनि सबबज गाजिहलायो
जाको जितनो तुम जानतहो दूनों मोपै लेहु । मेरो कान्हूरहे इकलो तब
सब अशीय मिलिदेहु । कमलनयन मेरी अखियनतारो कुलदीपकब्रज
रोह । परमानन्द कहति नंदरानी सुतप्रति अधिक सनेह १६ तुमनीके
दुहिजानत गैया । चलिये कुँवररसिक नंदनन्दन लागों तिहारेपैया ।
तुमहिँ जानिकरि कनक दोहनी घरते पठई मैया । निकटहिँहै यह ख-
रिक हमारी नागर लेउँ बलैया । देखियत परमसुदेश लरिकई चित
चुह्यो सुंदरैया । कुंभनदास प्रभु मानलई रति गिरिगोबर्दन रैया १७
मोहनपरेहो संतभाइ । कहतलाल नीके दुहिवेहौं ग्वाल तिहारीमाइ ।
आतुर है दोहनी कनककी करते लीनी भाइ । देखोवेग पाठकी नई
बछरा चोखे जाइ । हँसि हँसि दुहत अस कहत रसीलीबाते बहुत ब-
नाइ । चतुर्भुज प्रभु सहजहि रतिजोरी गिरिगोबर्दन राइ १८ लालतुम
कैसे दुहत हो गाइ । कहूँ बैठे कहूँ दुखि दोहनी धार कहूँ चलजाइ ।
यह दुहिबो हम कबहुँन देख्यो ग्वालिकहत समुभाइ । जो कछु हुतो
तनकसो वामें शिरतो दियो लुंढाइ । मेरी मास खरी रिसहारी अब
स्वहिँ देखि रिसाइ । श्रीबिटूल गिरिधरन लालपै सर्वस चलीहराइ १९

पिक्वोरी बाहन देहां दान । सूधेभन तुमलेहु गोमाई राखोहसारीमान
 सारग रोंकिरहे नंदनन्दन भवगुणा खर्पातधान । ददन मोरि सुसुका
 भासिनी नयनबारा सन्धान । नन्दरायके कुँवर लाडिले सबके जीव
 प्राण । परमानन्द स्वामि मोहनहो तुमते कौन सुजान २० सोहनगु
 कैसेहो दानी । सूधेरहौ गहेपति अपनी तिहारेजीकी में जानी । हा
 गुजरी गँवारि अहीरी तुमहौ शारंगपानी । मटुकीलईउतारि श्रीगो
 सुन्दरि अधिक लजानी । करभाहि चीर कहां सेंचतहो बोलत चतु
 सयानी । सूरदासप्रभुसाखन केहित प्रेम प्रीतिचित्तदानी २१ आजुदी
 देखौतेरो चाखि । कहिधौं मोल किते बैचैगी सखबचन मुखभाखि
 जोतकहेसोई हैंदेहौं संगसखा सबसाखि । जोन पत्याइ ग्यालित ह
 को कंठ थोलैराखि । लेचल संगघर दामदेनको जनायो नेकुकटाहि
 कुम्भनदास प्रभु गोबर्द्धनधर रसवश लियोतताहि २२ रज्जकवाख
 देरीदहेउ । अदभुत स्वाद अत्रसा सुनिमोपै नाहिँन परत रहेउ । ज्यो
 ज्योकर अंबुज कुच भूम्यति त्योत्यां मरम लहेउ । नन्दकुमार छबीतो
 होरा अँचरा धाय गहेउ । हरि हठकरतदास परमानन्द यहमें बहु
 सहेउ । इन बातनिखायो चाहतहो सेतन जात बहेउ २३ किशोरी अ
 अङ्ग भैंतो प्रयासहिँ । कयातमाल तरलभुज शाखा लटकि मिलीज्यो
 दामहिँ । गिरिवर धरन सुरतरतिनायक रतिजीत्यों संग्रामहिँ । मूरत
 हे उभय सुभटविच कोंजुबसे रिपुकामहिँ २४ किशोरी देखत नश
 सिरात । बलि २ जाउँ मुखारविन्द की चन्द मन्द हूँ जात । प्रया
 कंचुकी तामें शोभित कज्जन कलशनमात । मानो मदन दोऊकुच
 ऊपर नीलवस्त्र पहरात । नकबेसरि औ उरभि पिताम्बर देखत
 सुनि सुरभात । या मुखदेखे सूरदास प्रभु उडे पुरानेपात २५ सध
 कज्जते उठेभोरहीं प्रयासा प्रयासखरे । जात नबीन बिया मिलि द
 मिनिबरयि निशा उधरे । मिथिल रसन पदनील पिताम्बर आरमय
 प्रहरे । कलुकबंद परति अस कृपाका बादर बरसा करे । भूयसा नि
 विधहूती सिंडवारी अतिरस लसहि परे । प्रेम प्रवाह कुटी मानो स
 रिता टूटी मालगरे । शोभा अमित बिलोकि सूर मुख नाहिँन जात
 तरे २६ देखिसखिचार चन्द्र एक ठौर । चितवत रही नितम्बनपिप

संगसारभुताकीओर । हैनिभिनीत प्रयाभघन जैसंत्योबिधुकीगतिगार ।
 ताकेमध्य चारशुक राजत द्वैफल आठचकोर । शशि शशिगंग प्रवाल
 कुन्दअलितहाँ अरुभि गो मतमोर । मूरदा न प्रभु उभयछप निभिवलि
 बलि युगल किशोर २७ यशुमति आनंद कन्द नचावति । पुलकि
 पुलकि हुलसाति देख सम अतिसुख पुञ्जहि पावति । बाल बुधवार-
 द्वाकिशोर मिलि नुनकी देई गावति । नूपुरसर मिश्रितधुनि उपजत
 शिव बिरज्जि बिस्मावति । कुञ्चित ग्रान्थत अलक मनोहर भूपकि
 बदन पर आवति । जनु भगवान मनहुं घन विधुर्मालि मकर चौदनी
 लजावति २८ मांगतदधि साखन उठिप्रात । हैंदधि मयन करन को
 बैठी तहाँ आय अरसात । कहेउ यशोदारीयो रोहिणी हँसि हँसि
 बैठेखात । ब्रजपति पिय और मांगत हैं कहि कहि तोतरिबात २९
 तुमपै कौन दुहावत गैया । गढ़भाव मचित अन्तर गति अति सुकाम
 की नैया । गढ़ प्रीति तामोमिलि कौजै जो होय तिहारी दैया । ज्यों
 भावे तों मिलत सर्दानि सो यहाँ सिखाई सैया । लेजुरहे कर कनक
 दोहनी बैठेही अध पैया । परमानन्द स्वामीहठ मांगोउयो घर स्वसम
 गुसैया ३० बसे मेरे नयननि में नंदलाल । सांवरी सूरति माधुरी सू-
 रति राजिय नयन विशाल । मारसुकुट मकराहतकुण्डल चरणा ति-
 लक दियेभाल । शंख चक्रगण्डम निराजत कौस्तुभमणि बनमाल ।
 काजबन्द जरह के भयरा नूपुर शब्द रसाल । दास गोपाल मदनभो-
 हन पिय भक्तनके प्रतिपाल ३१ ॥ युगल गीत वर्णन । रागदेवमन्दार ॥ क्यों
 बिसरै वह गाय चरावनि । बामकपोल बाम भुजपर करि हसिन
 भौंह उचावनि । कोमलकर अंगुलि राहि मुरली अधर सुधा बरयाव-
 नि । चढ़ि बिमानजे सुनत देवतिय तिननु मोह उपजावनि । हारहाम
 उरशिर जपलाउर अद्भुत रूप मिलावनि । दन्तधरे तिनरहति चित्र
 ज्यों गैयनु सुख बिसरावनि । मोर सुकुट अवरानि पल्लव कटि मल्ल
 स्वरूप बनावनि । चरसारेणु बंक्त कम्पत भुज भरितन गमन थम्हा-
 वनि । आदि पुरुष जों अचल भूतिहैं संग सखा गुण गावनि । बन
 बन फिरत कबहुँ मुरलीकर गिरिचढ़ि गाय बुलावनि । लता बिरप
 मन माँह प्रकट ह्वै फलभर भूमि नवावनि । तलसरा हरित होत प्रति

अवयव बहुधारा उपटावनि । सुन्दर रूपदेखि बनमाला मत्त मधु
 सुर गार्वाणि । आदरु देत सरोवर सारस हंस निकट बैठावनि । बत
 संग ग्रन्था पुहुप शोभागिरि शिखरनाद पुरवावनि । विविधभांति
 धन गमन विचक्षणा नूतन तान बतावनि । सुनत नाद ब्रह्मादिक सु
 रागा अधिक चित्त मोहावनि । चलत ललित गतिहरत ताप ब्रजभूति
 शोक बिनशावनि । ब्रजयुवती मनमें न उदयकरि थारत ठहरावनि ।
 दिव्य गन्ध तुलसी माला उर मगिाधर गाय गवावनि । बेगुना
 बंचित करि सब हरिनी भौंह छिड़ावनि । कुन्ददाम शृङ्गार सकल
 यमुनाजल उछरावनि । सुदित सकल गन्धर्व देवरागा सेवा उचित क
 रावनि । गिरिधर बहुहे ब्रज गौयन कै आवत चरगा कुवावनि । बेगु
 बजावत ब्रज सुखदेवे गायनि लै ब्रज आवनि । गावत गोप विशद की
 रति संग मङ्ग फिरत बरभावनि । घूमतमत दूगदेत मान कहु श्रुतिकुंडल
 भूतकावनि । बदर सदृश आनन मबसूचत विधु डयो अङ्ग मिरावनि ।
 गुणागावत होय प्रकरूपसे घोषबियाग दुभावनि । चारियाम हरि
 के संग कीडत लीलाभांह ममावनि । यह लीला चित्त वसो लसेनित
 गोपीजन सुखपावनि । दीजै दास रसिकको यह फल ब्रजजन पदर
 धावनि ३२ जबते श्याम शरगामें पायो । तबते भेंटभई श्रीवल्लभ निज
 पति नाम बतायो । और अविद्या छांड़ि मलिनमति युतिपतिमों दूढ़
 दूढाये । कृष्णादास सबयुग जन खोजत अब निश्चय मनआयो ३३ प्र
 कटे श्रीवल्लभ राजकुमार । जैजै श्री गिरिधर श्रीगोविन्द बालकृष्ण
 उदार । गोकुलपति रघुपति श्रीयदुपति शोभिततन घनप्रियाम । करुणा
 पति श्रीकल्याणारायजू रसिकजननि सुखधाम । श्री सुरलीधर प्रभु
 बालक श्रीवल्लभ कुल सकल समान । विष्णुदास गोपाल लीला बपु
 गावतवेद पुरान ३४ श्रीगोकुल युगयुग राजकरो । या सुख भजन प्र
 तापते क्षरा इतउत्तनदरो । पावनरूपें दिखाय प्राणापति प्रतितन पाव
 हरो । विश्वविदित दीनगति प्रातनिजगतनेउधरो । श्रीवल्लभ कुल कम
 लनि दीपक यश सकरन्दभरो । नन्ददास प्रभु सट्गुरा सम्पन श्रीवि
 दलेश बरो ३५ जेजन शरणागये तेतारे । दीनदयाल प्रकट पुरुषोत्तम
 बिठुलनाथ ललारे । जितनी रबिछाया की किराका तितने दोष ह-

सारे । तुम्हरे चरणा प्रताप तेजतेते ततसरातारे । मालाकंद तिलक
साधे शंख चक्र बपुधारे । साशाकचन्द प्रभुके गुण गेसे महाप्राति
निस्तारे ३६ महा श्रीवल्लभ के होयगाजो । चरणा अम्बुज गहिमान
ग्रन्थतजि स्वामी पदते भाजो । गीता भागवत निगमसे साखी लोकाहे
कोलाजो । गीतगोविंद बिल्व मङ्गल सीवाको कहिसके अनदा जो ।
पुरुषोत्तम इनहीतेपैये यह दृढमति तुममाजो । सपुरादास कहेयुवात
सभामें गिरिधर महल बिहाजो ३७ अपुनपै अपनी सेवा करत । आपुन
प्रभु आपुन सेवक ह्वै अपनोरूप उर धरत । आपुन धरम करम सब
जानत मर्यादा अनुमरत । छीतस्वामि गिरिधरन श्रीबिटुल भक्त ब-
कुल बपुवरत ३८ हमतो श्रीबिटुल नाथाहि जाने । आनदेब सेवन कत
करिये नहिं कछु उरमें आने । कोउ भजो सुरपति कोउ गरापति व्रत
कोउ भजो वेद पुराने । कोउ रविचन्द मंद शिव शंकर कोउ भजो
प्रकट प्रमाने । कोउ भजो सनकादिक मुनिनारद कोउ भजो करम
निदाने । कोउ भजो अंशकला अवतारे कोउ अच्छर सरथाने । कोउ
भजो नेति नेति कहिनिर्गुण कोउ भजो पद निरवाने । कोउ भजो तंत्र
मंत्र यंत्रन को फिरत सबै महराने । कोउ भजो नव अरु सात पदारथ
मुक्तिलेशके दाने । करुणार्निधि गिरिधर भजि दृढ करि हरिलीला
रसपाने ३९ श्रीवल्लभके नन्दन फिरिआये । वेई रूप वेई फिरि क्रीड़ा
करत आपु मनभाये । वेफिरि राजकरत श्रीगोकुल वेई रीति प्रक-
टाये । वेई शृङ्गार भोग सगा सगाके वेईलीलागाये । जे यशुमतिको
आनंद दीनो सो फिरि ब्रजमें आये । श्रीबिटुल गिरिधर पद अम्बुज
गोविंद उरमें लाये ४० प्रकृत्यो प्राचीदिशि पुराचन्द । योंहीप्रकटे
श्रीवल्लभ गृह सुरनर मुनि आनंद । अद्भुत रूप अलौकिक महिमा
जननि तात यों भाख्यो । छीतस्वामि गिरिधर श्रीबिटुल लोकवेद
मतिराख्यो ४१ यह कलि परमसुभग ज्ञान धनि श्रीबिटुलनाथ उपा-
सी । जो प्रकटे ब्रजपति बिटलेचर तो सेवक ब्रजवासी । ब्रजलीला
भूल्यो चतुरासन बल ठारेउ व्रतरासी । अबलौं शठ अब गनत अभागे
करत परस्पर हासी । आत्या सहित आप धायेहैं हितू दियो नर प्र-
कासी । देखियत लोक स्वरूप अलौकिक ज्यों गङ्गा सरितासी । परि

हरि सदन मदाहार यशगावत भक्त मुक्तकीदाम्नी । वदत न कछु भीष
भव वैभव अजनानंद उपासी ४२ यशोदा कहा कहाँहीं जात । तम्हो
मुतके करतव सोपै कहत कही नहिँ जात । भाजन फोरि दोरि स
गोरस लैमाखन दाखवात । जोवर जौं तो आंखि दिखावे रंघहुनाहि
सकाति । और अरपटी कहाँलौं वरगौं छुवत पारिषासों गात । चतुर्भु
प्रभु गिरिधरके गुणहों कहति कहति मकुचात ४३ रबालनि तोहि
कहत क्योंआयो । मेरोकान्हनिपटबालक क्योंचोरी माखनवायो ।
ब्राम्ह विचारि देखिजिय अपने कहाकहाँ हों तोहि । कंचुकिं कं
तारे यह कैसेसा समुझि परति नहिँ मोहि । चतुर्भुजदास लानि गि
रिधरसों भूठी कहाति बनाय । मेरोश्याम मकुच को लरिकी परष
कबहुँ न जाय ४४ बालकहीते चोरीसहो जानत । माखन दूधधरेव ऊ
छाँड्यो बहोरि अचानक भाजन भानत । अबहीं लाल मेरो सर्वसम
स्यो असु उलटे तुम कैसे जानत । कुम्भनदान प्रभु सँगावारी डोलति
गोबर्द्धनधर अजहुँ न मानत ४५ ॥ रागदेव गन्धार ॥ अठतान ॥ माजिसानि
री मोहन द्वारटाहे । तेरी तो प्रकृति आने पियकीपीरो न जाने बाँ
तो बहुत उफाने त्यां त्यांते हृदय आगरे कपाट दिख साहे । दर्पे रौत
कारीतासीं बड़िलग भारी ऐसेरी लालनपर तन मन धन बारि फेरि
प्राणदीजे काहे । सुनत वचन प्यारी कंदलागी गिरिधारी गोविन्द
प्रभुको हृदै प्रेमजलमों बुझायो आयेबिरहानलटाहे ४६ ॥ रागदेव गन्धार ॥
कछुव कहिय न जाइ तेरी उनकी विकटबात । आन आन प्रकृतिके
सेवनि आवे जो तू डारडार तोवे हेरी पात पात । अब कहा कहति
सोई जाय कहीं प्रीतम सों छाँडिदेउ इत उतकी पांच सात । अब सते
पर गोविंद प्रभु सुमुख मनावत तेरी बातनिबार्तनि भयो प्रात ४७ ॥
रागदेव गन्धार ॥ षटताल ॥ लालनमुरली निकबजाइये । बिनती करत प्यारी
की सखी जानतहों सकल कलागुणा निशिरभोर दीठ्या दीजत ताते
घोषराज कंवर हमहुँ तानवै सुनाइये । जैसे खगमृगद्रुम पशुबेली क
रितामोही तैसे हमारी सखिनको मनुरिभाइये । गोविन्दप्रभु सकल
कला प्रवीणा ताते हमारे श्रवणानि सुख उपजाइये ४८ ॥ रागदेव गन्धार ॥
लडैते देमेरो उरहार । जाय कहाँगी नन्दराय सों यह तेरो द्योहार ।

सूरभागर रागकल्पद्रुम नित्यकीर्तन ।

१६३

मेरीदृग्यी मेरी कंकणा मेरी रजराहार । तेरे परको सोल सखी मेरी
सहज शिगार । बहुत तिन को हमारे दान्यो उरगारि कंचाहार ।
भगरति भगरति गंध पुन्यो व्यागकियो निरवार ४६ कुचमलयते
सपन नीतिउठे धनदाभिनिभे भोर । व्रजतरुणी वृषभाननन्दनी जागर
नर्त्तकशोर । राजत हैं वनमाल ग्रीव उर बलीबलाका डोर । रंगहुँ
पाकशासन शशमयी प्रीतिचन्द्रिका मोर । परभृतबेन हंस हाँसी
मन चालक नयन चकोर । मुरली अवर मधुरकल गरजत ललितराग
मिलिघोर । वरसेप्रेमनीर सरसे दरसे अनूपमजोर । देखेप्रभु ऐसेमन-
मोहन आवत व्रजकीखोर ५० भले तुम आये मेरे प्रात । रजनी सुख
कहुँ अनतकियो पियजागे सारीरात । भूपिभूपि आवत नयनउनींदे
कहाकहुँ यहवात । ज्यों जलरुहर्ताक किराणा चन्द्रको अति समीत
हुँदिजात । कहुँचन्दन कहुँचन्दन लारयो देखियत मुन्दरगात । गङ्गा
सरस्वती मानो यमुना अर्द्धहिमांभ लखात । भलीकरी प्रगाढाल नि-
वाहे मेरेगुह परभात । छीतस्वामि गिरिधर मुनिवार्ते बदनमोरि सद्ग-
धात ५१ साँचे भये आये परभात । नंदनन्दन रजनी कहँजागे कहिये
सौवलगात । पीककपोलनिलगे लुहारे जावकभाल लखात । उरहि
बिराजत धिन गुणमाला मोतन लगि सकुचात । भलीकरी आवतहीं
सियारो जहाँ बितार्डे रात । छीतस्वामि गिरिधर काहेको भूडीमोहें
खात ५२ मोहन करते दोहनिजीनी गोपद बकराजोरें । हाथ धेनुयन
वजन घियातन छीर छाछि छलछोरें । आननरही ललित पय कीटें
छाजतछवि लृणातोरें । मानहुँ निकसि कलंक कलानिधि दुग्धसिन्धु
सखिखोरें । दधुघट पट ओट नीलहंसि कुंवर गुदित सुखमोरें । मनहुँ
शरद शशिकोमलि दामिनि घेरिनलियो घघोरें । यहिबिधि रहसत
विलसत दम्पति हेत हिये जहिँ थोरें । मूर उमँगि आनन्द सुवानिधि
मनो विलावलिकोरें ५३ अबहीं देखे नवलकिशोर । घरहीं आवतहि
तनक भयेहैं ऐसे तनके चोर । कलुदिन करि दधिमाखन चोरी अब
चोरत सतमोर । बिषग्रभडे तनसुधि न कम्हारति कहतिवात भइमोर ।
यहवासी कहतहीं लजानी सगुम्भिभडे जिप्रबोर । सूरश्याम मुख गिर-
खि चलीघर आनंद लोचन लोर ५४ युवती एक आवत दे लीखात ।

द्रुमकी ओटराह हैं आपन यमुनातट गङ्गास । जनी उलोहरि गायी
भरि नागरी जवहीं शीशउदायो । घरको चली जाय तापाके शिशे
घट ढरकायो । चतुररवालि करगहेउ प्रयास को कनक लकुटि
पाई । औरनि सों करिरहे अन्नगरी सः सों लगत बन्हाई । भागति
हँसिदेत श्वाँलकर रीतोघट नहिँ लेहीं । सुरप्रयासदां आनिदेहुभी
तबहिँ लकट करदेहीं ५५ गोपिका अति आनन्दभरी । साखन री
हरिखात सखनिमँग अति आनन्दखरी । करलैलै सुखपरश कर
ति उपमा बड़ी सुभाई । जानहुँ कंज मिलत शशिनी लिपे सुधाकौ
करआई । जाकारना शिवध्यान लगावत नैय सहससुख गावत । सो
सुरप्रकट ब्रजभीतर राधामर्नाहिँ चुरावत ५६ सन सन हँसति राधिका
शोरी । ऐसे प्रयासरहत ब्रजभीतर भूभक्तिहै भइभोरी । तुम उनकोकहुँ
देखेहोकी सुनी कहतहो जात । चतुगईनीके गौहरासी मुख सुखै
गुसिकात । कबहुँ तोकहुँ संगपरिहीं तबहिँ लीजै चाल । सुरप्रयासको
पीतांबर मोरिबेमरिलीजीकीलि ५७ तुमकोकैसेप्रयास भो । न्हातरही
जलमें सबतकुरी तबतुम नेगा कहाँ खगे । अङ्गअङ्ग अवलोकन कीने
कौन अङ्गपर रहे पगे । भूल्यो न्हान जानतन भली नन्दबुवन उतते न
डगे । जानति नहीं कहूँ नहिँदेखे मिलिगइ ऐसे मनहुँ भगे । सुरप्रयास
ऐसेते देखे में जानति दुख दूरि भगे ५८ ॥

अथ हिडाला भूले श्रीराधाकृष्ण ॥

रागमलार ॥ हिँडोलनासाई भूतत गोकुलचन्द । सङ्गराधा परमसुंदरि
प्रेमरसगत अनन्द । द्वैत्यम्भ कञ्चनके मनोहर रतनजटित सुरङ्ग । बनी
चारि आँडी परमसुन्दर निरखि लजित अनङ्ग । पटली प्रीति लात
लटकत भूसता बहुरङ्ग । मरुबेसों मारिआक चुनोलागी विचित्रिच हीर
तरङ्ग । कल्पद्रुमतर छाँह शीतल त्रिविध मन्द समीर । बरलता लट
कत भार कुसुमन परसि यमुनानोर । हसमोर चकोर चालक कोकिला
अलिक्लीर । नयनेह नवलकिशोर राधे नवल गिरिधर धोर । ललिता
विशाखा देहिँ भुसदा रीभअङ्ग न समाहि । अतिलाडिली सुकुमारि
डरपति प्रयास उर लपटाहि । गौरप्रयासहिँ अङ्गमिलि दोउभये एकहि
भाँति । नीलपीत दुकूलद्युतिघन दामिनी दूरि जाति । कुंजपुंज कुंजाय

भुगतत गहवरी चहुँओर । मनो कुमुदिति कमलफूले निरखि युगुल
किशोर । व्रजबधू लतातेरि डारति वेंत प्राणा अकोर । जन मूरको व्रज
भागरीजै प्रपात नव किशोर १ ॥ हिंडोलना रागदेवगन्धर्व ॥ हिंडोरे भुगतत
प्रयागा प्रयाग । व्रजयुवतीमंडली चहुँधा निरखत बिद्यकात काम । कोउ
गावत कोउहरथ भु नाथत सब पुरवत मनसाध । कोउ संग सचत कहत
कोउमचहो उपजात रूप अगाध । कोउ डरत हाहाकरि बिनवत ध्यारी
अंकमंलाय । भाटेराजलिपिया अपने भुजपुतकत अकडराय । अबाजिन
मचो पाथ लागतिहों मेको देहु उतारि । यहसुनि हंसत सचत अति
गिरिधर डरत देखि आति नारि । ध्यारी कहति हेरिललितासों मेरी
सों गहिराखि । मूरहंसत ललिता चन्द्रावलि कहाकहत पियभाखि २
रागमलार ॥ यमुना पुलन रचो हिंडोर । घायललना सक तरुणी तरुणा
नन्दकिशोर । सबसङ्ग लेनचत मोहन सकदेति भुलाय । सकनिरखत
अक साधुरि एक एक उठगाय । प्रयाससुन्दर गोपिका गताधेरि रही
नगाय । मनो जलत कुमुदनी गता चहत लिये लुकाय । नारिसंग वन-
वारि गायन कोदिका घनघोर । दन्त भालत मुकुट शिरपर मनो नि-
रत मोर । सुसा तुल्य हुँपास कुंडल निरखि युवती भोर । चक्रवाक
चकोर जोवन करिरे हरिओर । थकितसुर ललना सहित नभप्रयास
निरखि निहार । हरथ सुगन अपार वरयत मुखहि जैजेकार । कहत
मनमन यहै बांछा भईतन डुमडार । देहधरि प्रभुसूर बिलमत ब्रह्मपू-
रता सार ३ ॥ रागकेदारो ॥ हिंडोरे भूलनआई । पंचरंग वरता पाटकी
डडिया अतिहि बनक सों बनाई । भूलत युवती नन्दललन संगसक
बैस इकदाई । मूरदास प्रभु मोहन नागर आपन भूल भुलाई ४ डोलत
नन्दनंदन डोल । कनक खभ जराय पटली लगे रतन असोल । सुभग
सरल मुदेश डंडोरची बिधना गोल । मनहु सुरपति सुरसभातें पदैदयो
हिंडोल । जबहि संपत तबहि कंपत रहसि लगात डरोल । त्रिदशपति
सजि चढे बिमानन निरखि दैद ओल । थके मुखकहि कहु न आवै
सकल सममुख भोल । सखी शतनव साज कीनो बहत मधुरे बोल ।
थको रतिपति देखि यहछबि इन्द्रभयो असभोल । मूर यहसुख गोप
गोपी पिवत असृतओल ५ ॥ राग बिलावल ॥ नितधाम वृन्दावनप्रयाग

नित्त कृपराधा प्रेनबाम । नित्तराम जलनित्त विहार । नित्तपान र्यादित्त
अभिधार । व्रह्मकृप सई करतार । करन हरन ये जेमुजब आर । नित्त
कुचभुख नित्त हिंडोर । नित्त त्रिविध समीर सँकोर । नदा जलमतरहत
अहिषाम । सदा हरय जहँ गहीं उदास । कोकिल कीर तदा अतरोर ।
सदा कृप मनगय चित्तचोर । त्रिविध सुमन बनफूलेडार । उगगत सम-
कार अमत अपार । नव पल्लव बन शोभायक । बिहरत हरिअँग सखी
अनेक । कुह कुह कोकिल सुनाई । सुनि सुनि नारि सवै हरथाई । बार
बार सुनि हरिहि सुनावत । ऋतु बसन्त आई समुझावत । फागुचरित
रस साध हमारे । खेलै सबमिलि सङ्ग तुम्हारे । सुनि सुनि सूर प्रयास
सुसकाने । ऋतु बसन्त आई हरथाने ६ ॥

अथ बसन्तलीला ॥

राग वसन्त ॥ देखत बन ब्रजनाथ आजु अति उपनृतहि अनुराग । मानो
मदन बसन्त मिलि दोऊ खलत फूलेफाग । भाँक भालारन भर नि-
धान रुफ भँवर भेरगुंजार । मानहुँ मदन गंडली रचिधर धीणि । विपुन
बिहार । द्रुमराशमध्य पत्ताश संजरी उडत अगनिकी नाई । अपने अपने
मेर मनोहर होरी हरय लगाई । केकी जाग लपोत और रंग करत
कुलाहल भारी । मानहुँ लैलै नाम परस्पर ऐत दिशाजत भारी । कुं
बाँज प्रति कोकिल गुंजत अति रस विसल धडी । मानो कुलाधु ब-
लजिजत भई गृह गृह गावत अटत चडी । प्रफुलित लता जहाँ जहँ दे-
खियत तहाँ तहाँ अलि जात । मानहुँ विरय बहुत अवलोकत परमत
गरिमा गात । बहुबिध सुमन अनेक रंग ह्यथ उत्तत भाँति धरे । म-
नो रतिनाथ हाथस सबहुन लोने रंग भरे । और कहाँलों कहाँ कृपा-
निधि वृन्दा विपिन विराज । सूरदास प्रभु सब सुख प्रीडित प्रयास तु-
म्हारे राज ७ आयो आयो पिय ऋतु बसन्त । दर्पति मनसुख विरहि
अन्त । फागु खिलावहु संग कन्त । हाहा करि दया रहत दन्त । तुरत
गई हरि लिये मनाई । हरय मिली उर कंठहि लाई । दुखडारो तुरतही
भुलाई । सो सुख दुहुँके उरन समाई । ऋतु बसंतको आगसजानि । वि-
यन राखो मान बानि । सूरदास प्रभु मिले आन । रस राखो रति रंग
दान ८ आयो जान्यो हरि ऋतु बसंत । ललनां सुखदीनो तुरन्त । फूले

बरन सुनन प्रजापति । रात नायक सुखको बिलास । सगनारि चहुँमान
 पाय । सुरली असुत करत भाव । श्यामा श्याम बिजामयक । सुखदा-
 अक गोपी अनेक । तनयनहीं काहू दिनयक । अलख निरजन धोयध
 भेक । पायु रंगरथ करत श्याम । युवती पूरवा करत काम । बास हरे
 सुख नैत याम । सूरश्याम बहु कान्त बाम ६ ॥ धमारि राग आमावरा ॥ डपा
 वाजत लामेहेली । य बहु चबहु जैये तहँरी जहँ खेलत प्रयास सहेली ।
 धिहि धन सुंदर गांधरी नहि मिथ देखनदाउ । ये गुरजन बैरीभयअब
 कीजै कौन उपाउ । आवहु बहुरा भेलिये बनकोदेहिं बिडारि । वेदेहें
 हसही पडे हन देखैं रूप निहारि । अोजत गागरि हारिये यमुना जल
 के काज । इह भिय शहिहर निकसिके जाइ मिलैं ब्रजराज । राग रंग
 रसराग रहो मंदराय दरबार । गावत सकल ग्वालिनो नाचत सकलगु-
 वार । घरी घरी आनंद करि जीवन जान असार । खाय खेलि हंसि
 लीजिये फाय पड़ो त्योहार । मुरली मुकुट बिराजही कटि पटि राजत
 धौत । मुरज प्रभु आनंद भरे गावत होरीगीत १० बल्लभ राजकुमार
 खडीले हो रालजा । धनि धनि नन्द यशोमति धनि धनि गोकुलगाउँ ।
 धन्य कान्तर दोउ लाडिले मोहन जाको नाउँ । सखा नामलै बोलहों सु-
 वल तोय श्री भन । जहँ तहँ तेँ उठि चलैबन बोलत सुंदरश्याम । गिरि-
 वरधारी रसभरे मुरली सधुर बजाय । अवता सुनत गोपी सबै घर घर
 ते चलिजाय । बेध बिचित्र बनायके भूयन सबनि शृंगार । सन्दर ते
 राजि भव चलीं बालक बनवन बार । एक ओर युवती जुरीं एक ओर
 बलवीर । नांसनमारसचीभली मनो रूपेसुभदरगाधीर । सकलनधुआई
 सबैहो अपने अपने होल । भूमसेती गावहींकबिच बिच मीठेधोल ।
 एकसखी तबभैन देहो लीने सुबल बुलाय । हाहा क्योंह भाँति केनक
 सोहन पहराय । बहुरि उलटि ब्रज सुंदरी मनसोहन लीने घेरि । नैनन
 काजर दैचली हंसत बदन तनहेरि । रुंज मुरज डफ दुन्दुभी बाजैं बहु-
 बिधि साज । बिचबिच भेरी भिसभिसी घोष शब्द बहुगाज । यहि
 बिधि होरी खेलहींहो सकल घोष सुखदाय । गिरिवरधारी रूप पर
 मुरज जन बलिजाय ११ ॥ धमारि रागमेरी ॥ गोकुल सकल ग्वालिनोघर
 घर खेलत फाय । तिनमें राधालाडिली जिनको अधिक सुहाय । भुं-

१६४ मूरसागर रागकल्पद्रुम नित्यकौतुक ।

उन मील गावतचलीं भूमत नन्ददुशर । आज धरणी खेले
मिलि मँग नन्दकुमार । मोहन दरग दिखावदरोतो नन्दकी आ
रसिकराय सुंदरवर राधा जीवन प्राण । यशुमात सुत चित चुभिसं
वह तुम्हरी सुमकानि । अबतो अनत रुचा उपजाई मज्ज परायण
नि । दुरत प्रयास धरिपाय राधाभरि अंकवारी । दातक कलश केशी
ले भरि धाई बजनारि । भरहु भरहु मखि प्रयासही पीत पिछोरी पाग
देहगोहसुवि बीसरी नन्दनन्दन अनुराग । मूर गुपाल कपा निना सहस
लहे न कोय । श्रीवृषभान किशोरी प्रयास मगनमनहोय १२ ॥ धम
ग गल्यान ॥ ब्रजराज लहेते राइये हो मोहन जाको जाउँ । खेलतफा
सुहाबनी रँग भोजि रहे सबगाउँ । ताल परवावज बाजहीं हो डफ
हनाई भेरि । अवगा पुनत सब सुन्दरी भुंडन जाई जोरि । तइहि गो
सब राजहीं हो उत सबगोकुल नारि । अति मोठी वे भानता दिहं प
स्पर गारि । चोवा चन्दन छिरकहीं हो उड़त प्रीति गुलाब । बुझि
परस्पर खेलहीं हो होले बोतत खाल । नव गोपिन मीन न हलया
पकरे छांड़े पाँय लगाय । दाऊ आज भले जने जगपे आंखि आंखा
बहुरि समिति सब सुन्दरी मिलि पकरे भाँकु । पाप । नव कुंज
मुख साडिके रचिबेली गुंथी गाय । तब कंदराती दीर्घाकथा बहुभा
दई संगाय । पट भयसा पहराय मवनको नित्य सूर बलिजाय १३
धमरि गगनी ॥ ऊँचो गोकुल नगर जहां हरि खे नत होरी । निसिमि
देखन जाहिं पिया अपने की जोरी । बाजत ताल मृदंग और किचा
की जोरी । गावत दैदगारि परस्पर भासिनि भोरी । बुझा सुरंगअधी
उड़ावत भरि भरि भोरी । इत गोपिनके भुंड उताई हरि हलधरजोरी ।
नवल कबालेलाल तनी चोलीकी तोरी । राधाचली रिसाय दीवो
खेले कोरी । खेलतमें कैसा मान सुनौ वृषभान किशोरी । मूर सली
उरलाय हंसत भुजगहि भकभोरी १४ ॥ धमरि गग नटनगयल ॥ खेलत
फाग कहतहो होरी । बाजत ताल मृदङ्ग भांङ्ग डफ रुत्र सुरज वांछरि
धुनि थोरी । अवगा सुनाय गारिदेगावत ऊँचे तान लेत पियगोरी ।
कुंकुम रंग भरे पिचकारी नौतन छिरकत नवलकिशोरी । यहिबिधि
उमंगिचली रँग जहँ तहँ मन अनरात सरोवर कोरी । भवि कवि आनि

सूरमागर राग कल्पद्रुम नित्यकीर्तन ।

१६६

अभीर उदावत मोहिंदी गकट जाय दुरिचोरी । मनहुँ प्रचंड पवनवशा
पक्ष तनय । सुनि शोभित चहुँओरी । कनक कलश कुंकुम भारलीन्हे
कस्तूरी मालिक धरधारी । खल परस्पर कीचमची घर अधिक सुगंध
भयो प्रजखोरी । ग्वाल बाल सबमङ्ग बुदित मन जाययमुन जलन्हाय
हिलोरी । नय जभन आभूषण पहिरत औरन देत पितम्बर खोरी ।
हैजमसाज सीत करती द्विज तिलक दूधदधिरोचनरोरी । मूरप्रयास
विप्रन बन्दी मन देत रतन कंचन की खोरी १५ ॥

इति श्री कृष्णानन्ददासदेवरागमागरोद्भवसूरमागररागकल्पद्रुम
नित्यकीर्तनान्तर्गतबसन्तलीलासम्पूर्णम् ।

—*—

अथ रागाविलावल प्रारम्भ ॥

श्रीकृष्णायनमः ॥

राग विलायन ॥ जागोहो तुम नन्दकुमार । बतिबतिजाउँ मुखारविन्द
की गोसुतमेली खरिक सँभार । आजु कहा सोवत त्रिभुवनपात और
बार तुम उठसगवार । बारखार जगावतिसाता कमलनयनभयोभवन
उज्यार । दधि भयिहाँ साखन तुम्हें देहैं संग सखा ठाढ़े सिंददुवार ।
उठि क्यों न मोड़िं तुम अदन दिखाबहु मूरदासके प्राणाअवार १ नद
के उठेजत्रोय । देखिमुखारविन्दकी शोभा कहुकाकेमन धीरजहोय ।
सुनि मन हरत युवतिको बपुरी रतिपाति मानजात सब खोय । ईयद
हास दशन द्युतिदामिनि मानिकओपि धर मानो पोय । नागरनन्द
सुवन सुनु सजनी मारगजात लेत मनशोय । मूरप्रयास मनहरन मनो-
हर गोकुलवासि मोहे सबलोय २ सोवत ग्वाल्लिनि कान्ह जगाये ।
भोरभगे हमआये दरशको जीवनजन्म सुफल करिपाये । उत्तम सेज
अरु श्वेत बिकौना चहुँ दिशि रुचि रचि आपु बनाये । मूरदास प्रभु
तुम्हरे दरशको पर ताचन्द्र प्रकट हैआये ३ बाल गोपाल उठो मेरेतात ।
बलि बलि जाउँ मुखारविन्दकी अमिय बचन बोलहू तुतरात । उनिंदे

नैन विशालकि शोभा कहत न आवत मोतेसात । धारगह्वे अजस्र
 पुकारत नैन मीड़ि आये परभात । दुहुँकर साठगहे पदपाज्जन छिटकि
 बुन्द दधि परत अघात । मानहुँ गजमुक्ता सरकात पर प्रोभित सुभा
 सांवरे गात । लीला एक रची मनमोहन दधि ओदन सांगन अरियात ।
 लोटत मूरण्यास पुहुमीपर चारि पदारथ जाकेहाथ ४ कौनपरी नंद
 लालहिबानि । प्रातसमय जागनकीवप्रिया ओटतहेंपीताम्बरतानि ।
 मातप्रशोदा काबकीठाढी भोजनखाहु दूधघृत सानि । उठोगेरे लालक
 लेऊ कीजै सुन्दरबदन दिखावहुआनि । सखाहारसभटाछे शम्भुपनके
 चराबहुखानि । मूरण्यासअतिही अलसानेमोवतहें अजहुँ निर्गजजति
 ५ नन्दनदन रुन्दबनचन्द । यहकाह जननिजगावति लालहि जाग
 गेरे आनंदकन्द । आलस भरेउठे मनमोहन चलत चाल तृणकात अति
 नन्द । पौच्छि बदन अंचरसों यशुमति हृदय लगाइ उपज्या आनन्द ।
 गणव्रज युवति आई देखनको दरशन होत मित्यो दुखनन्द । व्रजपति
 श्रीगोपाल परिपूरसा जाके अशागावत युतिरुन्दहं करत कलेऊ दोइ
 भैया । रोटी तोर सानि साखनमें मिथी सात प्यवावत भैया । काबो
 दूध लये खौरीको तातो करिमथि प्यावति घैया । कागजभयन बोरा
 लै व्रजपति पाछे चले चरावन गैया ७ दोउभैया सांगत भैया । पै दे सा
 साखनरोटी । सुनिकै भावति बात सुतनकी भूँटेहु भासके कासअगोदी
 बल गहेउ बदन नासका मोती कान्ह कुंवर गही डूढ कोर चोटी ।
 मानहुँ हंस मोर भक्ष लीनो काबि उपमा जानहुँ जिन मोटी । यहक
 वि निरखि नन्द आनन्दे प्रेम मगनभये लोट कपोटी । गूरदास यशु
 मति सुख बिलसति भाग बडे कर्मनकी मोटी ८ कान्ह साई सांगत
 हैं दधि रोटी । साखन सहित देहु मेरि साई सुपक सक्रोमल मोटी ।
 काहेको इतनी करतहो मोहन काहेको भूमें लोटी । जोचाहोसोलेहु
 तुरतही छांडो यहमति खोटी । करिमनुहारि कलेऊ दीनो मुखचुप
 रेउ अरु चोटी । गाय चरावन चले मूरप्रभु हाथ लकुटिया छोटी ९
 करहु कलेऊ कान्हर प्यारे । साखनरोटी दयो हाथ पर बलि बलि
 जाउहो खाहुललारे । तेरत द्वार खालहैं टाछे आंख तबके होत सबान
 रे । खेलहु जाइ व्रजहिके भीतर दूरि कहूं जनि जैही बारे । तेर उठे

बलराग प्रयासको आवहु जाहं धेनु वन चारे । मूरप्रयास करजो
सातमां गाइ चरागन चल कहत हहारे १० ॥ गग गहे । वनावन ॥ भो
भयो मेरे लाडिले जागो कुंवर कनगरे । सखा द्वार ठाते सखे खल
यदुराई । मोको मुख दिखराइये वयताप नशावहु । तवमुख चंदन
कार नयन सधुपान करावहु । तत्र हरिमुख पर दूरिओ भक्तान मुखज
री । हंसत उठे प्रभु सेजते सरवलिहारी ११ नंदमहर्षके भावते जाग
मेरे बारे । प्रातभयो उठि देखिये रवि किरण उजारे । खाल बा
सब टेरहि सैयां वनचारन । लालउठो मुखधोइये लागी नदन उधार
न । मुखले पर न्यारो कियो साता करअपने । देखिबदन ललतभई
तुका की भपने । कहा कहां वह रूपका को वरनि बतावे । मूरप्रया
के गुणअपार नन्दसुवन कहावे १२ ॥ गगविलावन ॥ उठे नन्दलाल सु
त जननी मुखवानी । आलस भरे नैन सकल शोभा की खानी
गोपीजन वियकहै चितवलि सब ठाही । नैनकरि चकोर चन्द्र वध
प्रीतिवाही । साता जलभारीलै कमल मुख परावैउ । गोरुर प
करत आलसहि बिमारेउ । सखाद्वार ठाहेसब टेरत हैं वनको । य
नातट चलहु कान्ह चारन भोवनको । सखा सहित जैवहु भोजनजा
कीन्हों । मूरप्रयास हलधर संगसखा धोलि लीन्हों १३ आगिधे रा
पाललाल खाल द्वारठाहें । रैन अंधकार गयो चंद्रमा सलीनभ
राता देखियत नहीं तरनि किरनि छाहें । सुकुलित भये कम
कुंजकरत भृङ्गमाल प्रफुलित वन पुहुपजाल कुमुदित कुंभला
गवर्धनुषा गानकरत मानदान नेमधरत हरत रकल पावसदत विप्रवे
वानी । बोलत नर बारबार मुख देखे तबकुमार गाइनभई बड़ी बा
तुन्दावन जैवे । जननी कहति उठेप्रयास जानत जिय रजनिता
दासप्रभु कृपाल तुमको कहु खेरे १४ जागहु लाल खालसब टेर
कबहुं पिताम्वर डारि बदनपर कबहुं उधारि जननितन हेरत । सो
तमें जागत मनमोहन बात कहत सबकी अब टेरत । बारम्बार ज
वति साता लोचनखोलि पलक पुनि धरत । पुनि कहि उठी थ
दामैया उठहु कान्ह रवि किरण उजेरत । मूरप्रयास हंसि धिते सा
मुख पट करले पुनिपुनि मुख फेरत १५ दोउ भैया जैवत साआगे

पूनि पूनिले दीधियात कण्ठाई ओरि जननिपै सांगे । अति मोदी रति
 आज जसायो दलदल तुमलेह । देखोघों दीधियात आपले ता पात
 भांछे देहु । बलमोहन दोउ जेगत हां वसों सुख लूटात नंदरानी । सूर
 स्थान अब कहत अत्राना अचयन सांगतपाली १६ ॥ गगनगहदिलचन
 जननि जगावत उठी कण्ठाई । प्रकट्यो तरनि किररिगा गगा छोरे
 आवहु चक्षुपदन दिखराई । जारयार जननी बलिजाई । सखा ह्या
 सब तुमहिं बुलावत । तुमकारणा हमघाये आवत । सूरस्थान उठि
 रघन दीन्हों । भातादीक्षित तुदितसन कीण्हों १७ ॥ अथ खजिता गगविन
 यन ॥ नहिं नदरत मैना रतनारे । जनु बंधकसुमन विशालपर सुन्य
 प्रथाम शिली सुखतारे । राजत अलक कुटिल कुंतलपर मोतन चित्त
 त धर्ताह विखारे । शीथलभौह धनुयमदन गुगारहे कोकनद बात
 बियारे । संदेही आवत येतोदन पलक आतुर उधरत न उधारे । सूर
 रगसप्रभु सोइपै कहतिये ऐसीको जासों रति रगाहारे १८ ॥ गगवि
 नावरा ॥ आजुनिशि कहां हुते भोरप्यारे । सोहें तुम्हारी कहिन जात
 अवि उनीरे रैनरतनारे । भंचक अधर निमेष पीक रुं च प्रकट देखि
 यत तुम्हारे । हृदयहार धिनु गगाहि अलंकृत मृगमर्दातलकलिलारे ।
 पोलके सांचे आये भोरभये रमितसेज तुयमान सुतारे । मूरदास चतु
 राई प्रकटभइ आगेते कित होत ननारे १९ अति रसवश नैनारतनारे
 छपत नक्षत्रेछपावत होकत जनु मन्मथ शिरवरत अंगारे । तनपालेहित
 जानिभलीबिधि जेहुते हरिसंवर दीधडारे । जबभये प्रकट प्रवीनतरु
 रातन तरुगाई तासस जनुतारे । पूनि शिव पूरब बैर समुझिकरिम
 दन मुदित सादक बलभारे । अतिरिम भौह शरासन युत करि आनि
 कमल साधत शरन्यारे । समुझि परी सखिरति स्वरूपतुम रति पति
 ज्योंनिशि विलसन हारे । मूरदास धनिधन्य सुभासिति जेहि अनुग
 गतिलक हरिसारे २० ललता आयेहो रैनगांवाय । निशि भइ छीन
 बोलत तनचूर खग ग्वालन ढीलीगाय । अरुणा किररिगा पंकज दल
 विकसित मधुपलये रमजाय । चंद्रमलीन भापुकेप्रकसन कुमुदिनिगाइ
 कुम्हिलाइ । गृहते निकसि आंगनभइ टाढी तुमविनु कहुन सुहाइ ।
 मूरदास प्रभु तुम्हारे मिलनते मिलिके बिहुरिन जाइ २१ आज अति

प्रोक्षित हैं तनश्याम । मानहरी जीत नंदनंदन मनसिज शों मंत्राम ।
 मुकुटित कंचनसमात मुकुट कांचरीथ अरुण रौप्येन । अप्सूचितगात
 भाति अलमयश बोलत बनतन बैन । नखसत शोभा प्रपदेर गातर्तच
 नदनगयो कहू छूटि । मदनसुभट केशर मुखशमानो लगेकावच पटफू-
 टि । दशन अंकुश प्रीतिप्रकट भइ सन्मुख मुभग प्रहार । सुरदासप्रभु
 परमेश्वरमैं जाने नंदफुसार २२ आज ओर छवि नंदकिशोर । मिलि
 रिमरुचि लोचनभयो अंतर चितवत चित तितहारी ओर । प्रकटित
 पांठ बगयकर कंकन देखियत द्वारहिये विनओर । बसननीलउरराते
 अनवरन अंजन नैन तमोर । नख शिख लो गुंवार अरुपटा पाये मनो
 पलायचोर । फलेफिरत दिखावत औरन निडरभगे देहसनिच्छोर ।
 देखतबने कहत नहि आवे बगमधि बरनत कनिन काओर । पाचरन
 कपौन होय इनजातन मृगग्रहन देखेबिन भोर २३ रतिसंग्राम तीररग
 साते । अठोहरी शूरशिरोमणि अजहुं नाहिंन सँभारत जाते । ओर
 धरणा पधे ये लोचन अपने सहजबिनाते । मानोभीर नडाधोधन की
 भयेक्रोध अतिराते । परिमललुब्ध जतां अलि देखत उड़िन सकत ता
 ठांते । मानो मन्मथ शर खूँचि रहे अगपूरध बाहरि धाते । नैठिजात
 अरुणा उनींदे कमकम उड़त तहांते । मानहुं तुलिन कराप नांठपा
 कहत नहीं हियराते । डगरगात घूमत धापराये सभासुभ । कुलजाति
 मरदान प्रभु रति रता ज्ञाते अब सकत हो कोते २४ साधव पीका
 धियसि आवे । नैनउनींदे पागलपटो दिथुरे केश सुझाये । नखरेखा
 उर सँघडतहे जानै द्वितियाचंद्र उगाये । विरलित वसन पग धरत
 डगमगात किहिं यह चाल चलाये । निशा आनके तुम बसे सांवरे
 भोरइहां उठिवाये । रसवश अन्तरहे मूरजप्रभु तऊ भरे मनभाये २५
 अतिहि अरुणा प्रियनैच तुम्हारे । मानहुं रति रस भये रगसगी करत
 केलि पियपलक बिसारे । मंदमंद डोलत शोकितसे शोभित मध्य स-
 नोहर तारे । मानहुं अरुणा कमल संप्रते उड़िन सकत चंचल अलि-
 वारे । भूमिभिभूमात जागरन जनावत अतिरस बसतप्रसत अनियाये ।
 मानहुं सकल युवति जीतनको कामबाशा श्वरमान सँवारे । नैठिजात
 अलसात उनींदे कहुं मूढत कहुंकरत उधारे । मनहुंसत सरकन स-

कतन खँ वत खँजरीन चढसारे । बारबार अपलोकि परमरुति क
 उगेह सगहरन हसारे । सूरप्रधाम देखे बधुपार्थात दुखभाचन लोचन
 नगारे २६ रूपेहो पियखनहो । उत्तरको उत्तर न दैत देखे हितहीन
 कहुसेहो । यहचितवनि न होय नयनकी बचनमेहु उतहसे हो । वह
 मुख कामल पिकास नहीरति गायक शिशिर बिहंगहो । कैंकलुगरे
 पिया दारते कैं दग उगे कहुसेहो । मेरेजानसूरप्रभु साँचेहु मदनचोर
 नील मुखेहो २७ तुमरीभे कीउतहि रिभाये । हाहापिययह प्रक
 तभावहु कोटिक सौहविवाये । जावक भाल चिह्नये जन्मो हठकी
 नखलागाये । प्रजनअवर उरहि नखरेखा लटपटी पागमुहाये । वि
 नाल माल मिली कहँ तुमको कंकसापीठ दिखावहु । सूरप्रधाम हम
 को यो जानति तुमहँ कहिन सुनावहु २८ आजुहरि रति उनींदे आये
 प्रजन अवर लनाट महावर नेम तँवाल खवाय । बिनुपुन माल विरा
 जत उरपर चंदनरेख लागये । सगनदेह शिरवास लटपटी जावक रा
 गाये । हृदय सुभग नखरेख विराजत कंकन पीठि बनाये । सूरदास
 २९ इहै अचंभो तोज तिलक कहँ पाये २९ आजुहरि आलसअगभरे ।
 तबहुँक जाँह जोरि खंडावत बहुत जगहात खरे । बैठोगेकी पाँव धा
 रये देखत नेन मिराने । साँझ आय सक दरशनदीन्हे । की अबहेत
 पहाने । कपके दारभये पियटाटे भोरे बडे कन्हाई । सूरप्रधाम हाँ
 सुतरसी वह टाँ तुम भोरे लगारे ३० सौँह करनकोभोँरहि तुम मेरे
 लगे । ऐनिकरतसुख अन्तहि ताकेमान भाये । अह अह भूयसा औरसे
 लगे कहुं पाये । दीखयकित यहखपको लोचन अरुनाये । पाग लटपरी
 पहइ जावक रँगलाये । मानकियोओहि मानिनो धनिपाँइपराये ।
 ३१ चतुराई कहाँपडी उनीहँ समुझाये । सूरदास प्रभु साँचले उपसा
 विगाये ३१ धन्य आजु यह दरश दिथो । धन्य धन्य जासो अनु
 यो तन जामीनाहँ थोर निथो । हमतो प्रधाम यह मलीभावती भले
 सी मिल मिलीकरी । यह मेरीजय अतिहि अचम्भित तो बिहुरत
 जाँ सक घरी । जाहुतहीं सुखदीन्हे सोको वै सुनिके रिस पावैती ।
 ३२ सूरप्रधाम अतिचतुर कहावत बहुरेउ मन न मिलावैगी ३२ क्यों आये
 भेट भोरयहां । काहेको इतनों सरमाने रैनिरहे फिरिजाहु तहां । हम

को कहाँ प्री गुरुआइ उतहैं वधे संभारीजू । उनआये साँ जाहीं जा-
न्यो अजहँले पग धारीजू । हमहं धोखे उहांहीं लीजो डर उनके ह-
मउं प्रीले । सूरप्रयास तिनहीं सुखदीखे जो बिलसे संग तुमकोले ३३
राँस तरसिकई जानिपरी । नयननते अब न्यारेहूँ तबहींते अतिरिस
न मरी । तुमयोवन अरुसो नवयोवन गते परसब गुणानि भरी । लाज
नहीं भरे गृह आवत जाहु जाहु करि वियभरहरी । अञ्जन अधर क-
पोलनि बंदन पीक पलक छवि देखिडरी । सूरप्रयास रति चिह्न दि-
खावन भरेआये भलेहरी ३४ बारवार मैं कहतिहों प्रियतहीं सिधारी ।
आयेहो मन हरन को हरिनाम तुम्हारो । भली बनी छवि आजु की
नयों लेत जम्हाई । रैन आजु सोये नहीं रतिकाम जगाई । वह रति
तुम रतिनाथहो हमकासैं भाये । सूरप्रयास तुम बहुगुणीजे तुमहिं रि-
भाये ३५ आइगई ब्रजनारि तहां । सोहकरत प्रियप्रारी आगे आनंद
गिरह सों । प्रारी हँसो देखि सखियनको अंतर रिसहै भारी । नैन
सैनदे अरु अरु निरखति प्रियशोभा अधिकारी । प्रयासरहे मुखसुंद
मकुचिके गुणति परस्परहेरै । सूरप्रभु अंग अंग अनूप छवि कहाँ पायो
कहिकरै ३६ तब नागरि कहति सखियनभों गतेपर ये सोहकरै । द-
रशनप्रात देतहैं हमको निशि औरनि के चित्तहरै । तुमहीं देखिलहु
अंगवागक धेते पर क्यों मही परै । कृपा करो आवतहों सिधारी सो
आगते अजुहरै । यहछवि देखि सनाथभई मैं अब ताही परजाइहरै ।
सूरप्रयास रिस देखिचले उठि कहौ सखी अब ह्यां न फिरै ३७ प्रिय
छवि निरखत नागरी अंग दशा भुलानी । अंतर रात आनंद भरी लं-
लित्ता हरया ३८ । सहवरि सों कहि सुमनलै हरि फेंत भराये । अति
अवीन प्रिय ह्वैगये बश परे पराये । सारग सुमन बिछावहीं पग नि-
रखि निहारै । फले फले धर धरे बलिया जुनिडारे । ऐसे बश प्रिय
बागके सुखसूरज जानै । जेजेहि भावनि हरिभजे तेहि तैसे माने ३९
लाल उगीदे भये । राजत हैं रतनारे नयना मानहुं नलिन नये । पीक
कपोल ललाट महोकर बंदन बलित रखये । जसुतन जामे सद्य अरुणा
दल कामके बीजबधे । विनु गुनहार पयोधर मुद्रा हृदय मुदेश ठये ।
अञ्जन अधर सुवासंघ लिख्यो रति दिखालेनगये । सूरप्रयास बिधारे

कच मुखपर नख नाराच हये । ताऊपर आनंद हृन्दजगु मानहुं सम
 जये ३९ नयन उनींदे भये रंगराते । मानहुं सुरङ्ग सुमनपर सजनी वि
 रत मृग सदमाते । प्रेम पराग पांखुरी पलदल प्रफुलित मनन लताते
 सुभग सुवास विशाल बिलोकनि प्रकट प्रीतिकरिताते । तैसोइ सास
 सद जण्हांवरि मिलत मुदित छबिआते । शोचे सूरप्रयास माननकी
 हितसों कैलि कलाते ४० काहेको प्रिय भोरहि मेरेगृह आये । ज्ञाते
 गुण हमपे कहां जो रैन रमाये । ताहीपे पण धारिय भये चकत
 जाने । बिन गुण गडिमाला रही नहि कहुं बिहराने । आये इहां
 खदेनको ऐसो हितकारी । सूरप्रयास तुमकाहे वैसीसी नारी ४१
 करो उतिभोरही मेरे गृहआयो । अब हमभई जडभारिनी मिसिचि
 देखायो । जावक भालमिसोहियो नीक बस पायो । नयन देखि क
 कत भई क्यों पान खवायो । अवरनि पर काजर बन्द्यों बहुरङ्ग क
 द्वायो । बंदन बेंदुली भालक भल आप बनायो । यह सोसों तुमह
 कहे उरकृतअरुनायो । सूरप्रयास यशराशिहो धनिप्रियाहँ लायो ४२
 हरथि प्रयास त्रिय बांहगहीरी । चूकपरी हमको यह बस सो आक
 को कहिगये हरी । रिसनि उठी भहराय भटक भुज लुचत कत
 प्रियसरम नहीं । भवन गई आतुर हूँ नागरि जो आई मुख गबेकही
 मेरे महल आजुते आवो सोह नन्दकी कोटि कही । सुरदान जवलो
 जगजीऊं मिली नहीं, बहूँ कामदही ४३ बहुरि मिलहुगी कादिही
 चित समुझि सयानी । मेरो कहेंउ न क्यों करे होहि अयानी ।
 अनलही औयधि अनल है सब जानरहीहौ । काहेको हठ करतिहौ
 बेकाज बहीहौ । धरणीधर व्याकुल खड़ेरी गर्वगहेली । मूर कहे
 मुनि सानिलैं में कहति सहेली ४४ नंदसुवन बहुनायकी अनर्ताहँ
 जाई । यह अभिलाष करति रही ताको बितराई । बासर ऐसोही
 गयो निशियाम तुलानी । नारिपरी अतिशोच में बिरहा अकुलानी
 आवन कहिगये सांभही अजहँ नहि आये । कीधौं कतहँ रमिरहे
 नन्दपरे पराये । वैहीहँ बहुनायकी लायक गुणभारी । सूरप्रयास कुमु
 भवन सुधिकरि पणवारी ४५ भली कीनी आयेहो ललना हमारे भो
 भये भोरे । हमहि बिवाना रातिके चिह्न जानति हों उनकिये बहु

निधारे । काहेको होत उधारे प्रीतम लोक निहारि देखि हे खोरे ।
 रसिक प्रीतम तुम ह्याई मिथारे जाके निशिवास भये दृगनि लाल
 लात डोरे ४६ भलीकरीजु आये सवारे । बहुरि प्रभातको उदयहोयगो
 प्रकट देखिये अङ्गनिसार । पहिरे पीत नीलपट ओढे सेमी को चतुर
 धनभावत । गते मान देह सुधि भूली तुमहीं आपुन को बिसरावत ।
 पाउँ धारिये बहुत बेरभई करगहि कनक तलय भेटारे । परमानंद
 प्रभु तुमसे औरको सध्या वचन बहेनहिं टारे ४७ रसिक शिरोमणि
 नवलाल रङ्गभीनेहो । लाडलडाई नवल बाल रङ्ग ० । जावक लागी
 मोहे शिथिल पागरङ्ग ० । प्रिया मनायेभूरि भाग रङ्ग ० । रूपरुके
 लोचन घुमात रङ्ग ० । प्रेमउमंगि गेडात गातरङ्ग ० । उरसोहे मरगर्जा
 सालरङ्ग ० । मदनमत्त डगमगी चालरङ्ग ० । बाहु उगड्यो कराफूल
 रङ्ग ० । दिशो है उहीसीमो सुखको मूलरङ्ग ० । अलक निकसिरही
 शोभा देतरङ्ग ० । कामकेलिके विजय केतरङ्ग ० । महकिरही तन
 अति सुवासरङ्ग ० । अलि गावतकीरति सराहरासरङ्ग ० । जाहीसेमिले
 हमें चैतरङ्ग ० । सहनसकत यह गढैनेरङ्ग ० । राम राय प्रभु सुनत
 हँसे रंगभीनेहो । कोउभाव बामके हियेवसे रङ्गभीनेहो ४८ रति रस
 केलिजिलासहास । रंगभीनेहो । कोउसुन्दरि नारिकेलगे गातरंगभीनेहो ।
 अरुगानयनअतिरसमसे । रङ्गभीनेहो । मनोभोरभये जलजात । लाल ।
 रङ्गभीनेहो । बोलतबोलप्रतीतके । सुंदरसाँवलगात । लाल । प्रियाअधर
 रसपानमत्त । रङ्ग ० । कहतकहूँबात । लाल । अतिलोहितदृगरगमगो । रङ्ग ० ।
 मनोभोरजलजात । लाल । चालशिथिलभुवभाल शिथिल । रङ्ग ० । शशि
 मुख शिथिल जम्हात । लाल । केशशिथिलखेसशिथिल । रङ्ग ० । बय
 क्रमशिथिलसिरात । लाल । गोविंद प्रभु नंदसुत किशोर । रङ्गभीनेहो ।
 बहुनायक बिख्यात । लाल । रङ्गभीनेहो ४९ सांभके सांचे बोल ति-
 हारे । रजनी अनंत जागि नंदनंदन आयेहो निपट सवारे । आतुर भये
 नीलपट ओढे पीरे बसन बिसारे । कुम्भनदास प्रभु गोवर्द्धन धर भले
 बचन प्रतिपारे ५० तुम्हारे पूजिये पियपाय । कैसी कैसीउपजत तुम
 पै कहत बनाय बनाय । असन अधर क्यों प्रयास भये द्रियोंपरे पट प-
 लराय । रुचिर कपोल पीक कहँलागी उरजयपत्र लिखाय । गिरधर

लाल जहाँ निशिजागे तहांदेहु सुखजाय । कुम्भनदास प्रभुकांछी :
 पक्षी अबको तुम्हें पतिआय ५१ कहोवां आज कहां बसे लाल भोरा
 आये डगमगत पग । खरेसकारे क्यों उठे मोहन जोलत तमचुरख
 काजूर अधर लटपट पागडर । बिलुलित कुसुममाल कुचपर सा
 अरुणा नयन आलस जम्हातप्रिय रैनिप्रियो जा । रतिके चिह्न
 प्रकार देखियत काहेको दुरावकरत प्रियामनुभा । कुम्भनदास प्रभु
 मिक गिरिधर परचतुरी नागरफग ५२ कहोवां कहां तुम रैनिप्रियो
 लाल अरुणा उदयआये । कौनसँकोच प्रियामधुसुन्दर तमचुर खोल
 उठिवाये । आंखिदेख कहा साखि बूझिय रतिके चिह्न तन प्रक
 लगाये । कुम्भनदाससुजान गिरिधर काहेकोदुरत प्रियजानिपाये
 रोषी बातन लालक्यों मनमाने । उतरु बनाय बनाय तामांकादिये जे
 यह न जाने । रतिकेचिह्न प्रकट देखियतहैं कैसेदुरत दुराने । कुम्भनदा
 प्रभु गोबर्द्धन धरहो तुमखरे सयाने ५४ आज अरुणा अरुणा डोरेलात
 के दूगन लागत हैं भले । दंदन परे पगल अलिमानो कज्ज दलनिपा
 चले । लाल कीर्पणिया में न समात कुटिल अलमारीको । नंददास मधु
 पुंज मानो मोवतते कतमले ५५ आवतलान गोबर्द्धन धारी डगमग
 चाल लटपटी पाग । आलसनेन सरस रस रंजित प्रिया प्रंस नवन
 अनुराग । बिलुलितमाल मरगजी उरपर सुरत समरकी लगी परता
 चुम्बन प्रियाम अधरकल गावतरति सुखभाव बिलाव नराग । पनडि
 परे पटनील सखीके रसगह भीतत सदन तड़ाग । लुन्दाजन दीपि
 अवलोक्त कृष्णदास लोचन बड़भाग ५६ कहां अब दुरतप्रिय जान
 शिरोमणि रतिके चिह्न देखियत है न्यारे । अरुणागयन घुसत आ
 लसमहँ कछुक जम्हात अधर मसिकारे । प्रियाम अंग नन नख पद
 न्यारे चंदन छीट बने मानों तारे । अवर अनेक कहां लों बरसाँ यह
 नागरता जु आये हो सवारे । मोहनलाल गोबर्द्धनधारी कटित
 नील बसन बने न्यारे । कृष्णदास कहूँ धों प्रीतम चतुर पीतप
 कहां बिसारे ५७ मयाकीनो बलवीर आये तमचुर के बोल । नागर
 नंदलाल कुंवर पहिरे नीलनिचोल । मोहन रसमगे अलसात कमल
 नयन अति शोली । अधरनि नख देखघनी अरुणा प्रियाम कपोल ।

सूरमागर रागकल्पद्रुम नित्यकीर्तन ।

२०६

सुगमदको तिलक रच्यो सिंदूर के भाल । ऊपर नखाचिह्नरतन क्याँ
दूरत अगोल । कृष्णादास प्रभु गिरिधर सांगत मनओल । अपनो पी-
ताम्बर देखियो सदनमाल ५८ मोहन कुंदराम उरपर कुचकुसुम रं-
जितवनी । गंधलुब्ध अलि पांति न तजत केलि धनधनी । मोहनअधर
प्रयाममुख जम्हाति संगम प्रवाससनी । अवर चिह्न अगणित पिय
नगनी गातागनी । कृष्णादासप्रभु नवरंग युवतिन चिन्तामनी । गो-
वर्द्धनवारी रसिकति चुड़ामनी ५९ लाल तेरे चपलनयन अनियारे ।
नदकुमार सुरत रसभीने प्रेमरंग रतनारे । कछुअस रोम्मे चकित चहँ
दिशि नवबर यौवनवारे । मानों शरद कमलपर खंजन मधुप अलक
ध्रुवरारे । येजुमीन घनश्याम सिंधुमें बिलमत लेतभुलारे । गोवर्द्धनधर
जान मुकुटमणि कृष्णादास प्रभुप्यारे ६० मोईभली जिन तुम बिरमाये ।
पूजाकरि भासिनि सब निशितव पदउरनख कुसुम चढाये । अरुणा
दिशा अबहीं नहिं देखो रतत मधुप कमलनि समुदाये । रूपनिधान
रसिक नंदनदन कब तसको नमवारे आये । मध्यावदे बोल मनमोहन
कीर्ती भली और अचराये । आलस नयन जम्हात अधरवर रति के
चिह्न नहिं दूरत दुराये । अपने गीतपट दिये सखीको छीनलये नील
बसन परायें । कृष्णादास प्रभु गिरिधरधर पिय युवतिन सदास उदार
कहाये ६१ ॥ रागबिलावल । गतिताल ॥ लालन तहाई जाहु जीके रसल-
म्पटअति । आलस नयन देखियत रसभरेप्रकटकरत प्यारीरति । अ-
धर दशन कृतबसन पीकसह अरु कपोल अम बिंदु देखियति । नख
लेखनि तनलिखी श्यामपट जयपताक रसाजीत्यो रतिपति । कैतव
बदत जोपिय हमसों जैसेतन श्याम तैसेई मनहो अति । गोविंद प्रभु
पियपाग सँवारहु गिरति कुसुमशिर सालति ६२ ॥ राग बिलावल ॥ आ-
जु खरेई शिथिल देखियतहो बहुरसभरे लाल । सब निशिजागे अति
शिथिल अरुणा दोऊ अम्बुजनयन विशाल । शिथिल भूयरा कटि
बसत शिथिल अति शिथिल सरगजी साल । लटपटि पागे शिथिल
अलकावलि बिगलितकुसुमगुलाल । शिथिल शिखण्ड शीश लटकि
रहे आये भोर डगमगत चाल । शिथिलवेरा कछु कहत आनको
आनगोविंदप्रभुपियहोबेहाल ६३ ॥ रागबिलावल । यकताल ॥ जानिपाये हो

लवना धौलवर्णि प्रजमुपनि कंवर । जाके वजन निशि जरी आये
 तहई अनुसर । अपनी प्यारीके धारतके चिह्न हर्गह रिखावत आये
 सेतलोन दाहपर । गोविंद प्रभु सांवल तन तेईहे सन जनमतही बहु
 युवती प्राणाहर ६४ ॥ गगनिलवण ॥ बलिबलि पाउं धारिये आजु कहु
 मेरोलहने । ब्रजमुपसृत भोर आयेहो रसभरे । भई बड़ीबार पाउं धारिये
 हमनिजाउयो वास्यो अरगजा वासे पीराले आयेभरे । कहिन सकतएक
 बात लालनजाके निशि जमे ताके वजन पलतिपरे । गोविंद प्रभु पिय
 शिरागारिकाके बलदोऊकेहरे ६५ ॥ उचिअथननपय ॥ गगनिलवण ॥ प्रातसमय
 दधि मघति यशोदा प्रभुदत्त कमलनयन पुरागायति । अतिहि सधुर
 गति काठमुयर अति नन्दमुयनके चित्ताह बढावति । नीलवमन तन स-
 लिलसजलमनदामिनिविच भुजदाड चलावति । दंदनन्दान लललटकि
 छबीली मनहुं अमृतरस राहुचुरावति । गोरस मयत नादयक उपजत
 किंकशि धुनिमुनि अवगा रसावति । सुरश्याम अंचरा गांढठाढे का-
 मकसोटी कसि दिखरावति ६६ नन्दजुकेबारे कान्हड्यांछिरे मथनियां ।
 जार बार कहै मातायशुमति रनियां । नेकुरहो साखनदेहो भरेप्राणा
 धनियां । आरिजिनकरा बालगई हेन्यो कनियां । सुरनरमुनि जाको
 ध्यावे सुनि जनियां । सुरश्याम देखि सब भूलींगोप धनियां ६७ नेक-
 रहो साखनदेउतुमको । ठाढीमघति जननिदधि आतुर लवनी नन्दसु-
 वनको । मै बलि जाउं श्यामघन सुन्दर भूखलगी तुमेंभारी । बातकहूकी
 बर्भाति प्रयासहिं फेरकरत महतारी । कहत बात हरि कहु न समुक्त
 भूठेहि भरतहुंकारी । सूरदास प्रभुकेगुण तुरतहि बिसरिगई नदनारी ६८
 बातनहीं सुतलायलियो । तबलो मथिदधि जननियशोदा साखनकरि
 हरिहाथदयो । लै लै अधर परसकरि जेवत देखत फूल्यो मातहियो ।
 आपुहिखात प्रशंसत आपुहि साखन रोटी बहुतप्रियो । जो प्रभु शिव
 सनकादिक दुल्लभसुतहित बस नदप्रियो । यहसुखनिरखत सूरप्रभुको
 धन्य धन्यपलसुफल जियो ६९ ॥ गगनसूहे ॥ देरी सैयादोहनी दुहिहैं
 मैगैया । साखनखाये बल भयो करिनंद दुहैया । कजरी सेंदुरीधूसरी
 धोरीमेरीगैया । दुहिल्याऊ मै तुरतहीत करिदेवैया । ग्वालिनिकी सर
 दुहितहुं बभूह बलभैया । सूर निरखि जननी हँसी तबलेति बलैया ७०

॥ बाबा मोको दुहन सिखायो । तरे मन परतीत न आवे
 दुहतअंगारियन भाव बतायो । अंगुरिन भाव देखि जननी तब हँसिके
 प्रयासहिँ कंठ लगायो । आठ बरय को कुंवर कन्हैया इतना बुद्धि
 कइते पायो । सातासौ दोहनी करदीन्हो तब हरि हेमत दुहन को
 धायो । सूरप्रयासको दुहत देखि तब जननी मन अतिहरय बढायो ७१
 जननि मर्यात देखि दुहत कन्हाइ । मखा परस्पर कहत प्रयाससों ह-
 मइते तुम करत चडाई । दुहन देहु कहुदिन अत मोको तब करिहो
 मोसस मरिआई । जबलों सक दुहाये तबलों चारि दुहों तो नन्द दो-
 हाई । भूठहि करत दोहाई प्रात उठि देखिहँगे तुम्हरी अधिकारि ।
 सूरप्रयास कहे कालिह दुहैगे हमहुं तुमहुं मिलिहोउ लगाई ७२ उठी
 प्रातही राधिका दोहनी करलाई । महारि सुतासों तब कहेउ कहाँ
 चली अतुराई । स्वरिक दुहायन जातिहों तुम्हरी सेवकाई । तुम ठकु-
 रायनि घररहो सोहिँ चेरीवाई । रीतीदेखी दोहनीकत खोजतवाई ।
 कालिहगई अचसेर के हूँ उठेरिआई । रायगई सब द्वायके प्रातहि
 नहिँआई । ताकारणा में जातिहों अतिकरतछडाई । यहकहि जननी
 सों चली ब्रजको समुहाई । सूरप्रयास गृह द्वारही गौकरत दुहाई ७३
 मुता महर लृयभानकी नंद सदनहिँ आई । गृह द्वारेही अजिर में गऊ
 दुहत कन्हाइ । प्रयास चितैमुख राधिका मनहरय बढाई । राधामुख
 हरि देखिके तन मुरतिभुलाई । महार देखि कीरति सुतातेहि लियो
 बुलाई । दम्पति को मुख देखिके मूरज बलिजाई ७४ आजु भोरही
 राधिका यशुमति गृह आई । महारि कहेउ हँसि दधि मयो लृयभान
 दुहाई । सुनि आयसु ठाढीभई करनेत सुन्हाई । रीतो माट बिलोवही
 चित जहाँ कन्हाइ । उनकी गतिहों कहा कहेँ जिन दृष्टिचुराई । ल-
 ईया नोई लृयभ सों गइया बिसराई । यशुदा निरखै दूरिपै मनमें सु-
 सकाई । सूरदास दम्पति कथा मोपै बरिणा न जाई ७५ महारि कह-
 तिरी लाँडजी केहि मयन सिखायो । कहूँ मयनी कहुँ माट है चित
 कहाँलगायो । क्यों मेरेघर आयकै तैं सब बिसरायो । मयन नहिँमोहिँ
 आवही तुम सोहदिवायो । तिहिकारणा में आयकै तुव बोलरखायो ।
 तब नन्दघर ना मयिदधियहिभाँतिबतायो । हँसिबोली तब राधिका

का कहेउ अब मोहिँ आयो । सरतिरखि मुखप्रयामको तहँ ध्यान ल
गायो ७६ दधि मर्याति खालि गरपीलीरी । रुनक भुनककर कंका
बाजे बाहु डुलावति ढीलीरी । कया देनदधि माखन सांगत नाहिँ
देति हठीलीरी । भरी गुमान बिलोचनि लागी अघने रङ्ग रंगीलीरी ।
हंसिबोल्यो नन्दलाल लाडिलो कछुयक दातकहीलीरी । परमानन्द
नन्दनन्दनको सर्वस दियोहै छबीलीरी ७७ दधि मथनकरै नन्दरानी
हो । बारे कन्हैया आरि नहिँ कीजे छाँडि न देहु मथाना हो । बारे
मेरे मोहन कर पिरायँगे कौन चित्तमें टानीहो । हरि मुसकाइ जननि
तन चितयो सुधि सागरकी आनीहो । जेगुसा सुर भुति छन्दनि गाये
नेति नेति मधुबानी हो । परमानन्द यशोदरानी सुत सनेह लपटानी
हो ७८ प्रात समय उठि यशोमति दधिमथन कीनी । प्रेममहित नवनी
तले सुतके मुखदीनी । औटि दूध घैया कियो हरि रुनि साँ लीनी ।
मधुमेवा पकवानले हरि आगेकीनी । इहिबिधिनित कीड़ाकर जननी
मुखपावे । गोविंद प्रभु आनन्द में आंगन में धावें ७९ भूतयो दधिको
मथन करिबो । देखत रमिक नन्दनन्दनको डगमगे पगधारिबो । रहि
गइ चित चित्र जैसे यकटक नैन निमेषन धरिबो । चतुर्भुज प्रभु गिरि
धरन जनायो नाहीमें मरिा मागिक हरिबो ८० देखोरी माँ कौसी
है खालिनि उलटीरई मथनियां बिलोचि । बिनुनेतकर चंचल पुनि
पुनि नवनीते टकटोचि । निरखि स्वरूप चोहँट चित लाग्या यकटक
गिरिधर मुखजोचि । कुंभनदास चितैरहीअकबक औरै भाजनधोवे ८१
सरी आनंद में दधि मर्याति यशोदा कनक मथनिआं घूमें । नितंत
कान्ह ललित लोचन पगपरत जटपटेभमें । चारुचौखंडा मध्यकुटिल
कचयस मुक्ताताह में । मनो मकरंद बिन्दुले मधुकर सुतहित प्यावत
भूमें । बोलत प्रयाम तोतरी बतियां हंसि हंसि बतियां दूमें । सूरदास
वारों छवि ऊपर जननि कमल मुख चूमें ८२ ॥ रागललित ॥ आज
सखीरी प्रातसमय दधिमथन उठी अकुलाई । भरिभाजन मरिाखम्भ
निकटधरि नेतालियो करजाई । सुनत शब्द हरिता समीप हंसि उठि
आये हरुवाई । सोही बालबिनोद सोदअति नयननि निरतिदिखाई ।
भूलीतन प्रतिबिम्ब त्रिलोकिती रीभीसहज सुभाई । चितवनि चलनि

हरेव चितचंचल चितैरही चितलाई । माखनपिंड लियो दोऊकरतव
 खालरही मुमकाई । सुरदासप्रभु सर्वसकी सुख सकैन ददयससाई ।
 ८३ ॥ राग बिलावन ॥ छबिसों डोलत भुज छबिसों डोलत कटिपर बेनी
 यों बिलोवनि परवारोंरी कोटि नांच । दधिको घुमर अरुधुनि तचाल
 अरु धुनि त घाँटकाधुनि तजे नूपुर करत सांच । गौरआरुक्त आँत शो-
 भित सुख ग्रमको बदन ऐसी मनहुं कनक लागीआंच । भीधीके प्रभु
 को मन सोहाँति रईकर भेद इहनेतकी खेंच खांच ८४ ॥ अथबान (नाक)
 पद ॥ राग बिलावन ॥ भावत हरिके बालबिनोद । केशवराम निरखि सुख
 प्रहसित प्रमुदित रोहिणी मातयशोद । आंगन पंकराग तन शोभित
 चल नूपुर धुनिमुनि मनमोद । परम सनेह बढ़ावत मातनरंजकि २ बैठ-
 त उदंगोद । अतिशय चपल सदा सुखदायक निशिदिनरहतकोलरम
 ओद । परमानन्दप्रभु अम्बुजलोचन फिरफिरचितवत ब्रजजनकोद ८५
 बालमदा गोपालकी सबकाह भावे । जाके भवनमें जातहैंले गोदखि-
 लावे । श्यामसुन्दर मुख निरखिके अविरल सचुपावे । लालबालकहि
 गोपिका हँसिभलो मनावे । चुरकी देदप्रेमसगन करताल बजावे । पर-
 मानन्द प्रभु नाचहीं शिशु ताहि कृत्तावे ८६ बालबिनोद गोपाल के
 देखत मोहि भावे । प्रेमपुलकि आनन्दभरि यशुमति गुणागावे । बल
 सनेह घनसाँवरो आंगनमें धावे । बदन चूमि केरा लियो सुत जाति
 खिलावे । शिवबिरंचि मुनि देवता जाके पार न पावे । सो परमानन्द
 खालिको हँसिभलो मनावे ८७ हरिको बिमल यश गावतिगोपां-
 ना । मरिामय आंगन नन्दरायके बालगोपाल तहां करे रिंगना । गिर
 गिर उठत घुटुरुअनि टैंकत जानिपाशा मोरो छगनको मङ्गना । घुसर
 धूर उठाइ गोदलै मातयशोदाके प्रेमको भजना । त्रिपद पुर्हासना पीत
 बन आलसभयो अबजु कठिनभयो देहरी को लंघना । परमानन्द प्रभु
 भक्त बहलहरि रुचिर हारवर कंठ-सोहैं बंधना ८८ मरिामैं आंगन
 नन्दके खेलत दोउ भैया । गौरश्याम जोखी बनीबल कुंवर कन्हैया ।
 नूपुर कंकणा किंकरीणी रुन भुनभुन बाजे । सोहि रहैं ब्रजसुंदरी-
 नसासुतलाजे । संगसंग यशुमति रोहिणी हितकारन भैया । चुरकीदे
 देनबाबही सुत जानि कन्हैया । नीलपीतपट ओढ़नी देखतमोहिभावे ।

बाललीला विनोदसौ परमानन्द गावे ८६ यह तनवारि डारां कमल
नयनपर सांवाल्या मोहि भावैरे । चरणाकमलकी रेखा यशोदा लैलै
शिरसि चढावैरे । लै उछंगमुख्य निरखनलागी राईलोनउतारैरे । कौन
निराशी दृष्टि लगाई लैलै अचर भारैरे । तूमेरोबालक तू मेरो ठाकुर
तोहि बिमभर राखैरे । परमानन्द स्तार्मि चिर जीवहु बार बार ओं
भायैरे ८७ तनक कनककी दोहनी देदेरी मैया । तात दुहन सिखवन
कहेउ मोहि धारीभैया । हरि नियमासन बैठिकै मृदुकर यक्ष लीनों ।
धार अटपटी देखिकै ब्रजपति हंसिदीनों । गृह गृहते आई सबदेख-
न ब्रजनारी । सचकित तनसन हरिलियो हँसि घोखबिहारी । द्विज
बुलाइ दक्षिणादई मंगल यशगावे । परमानन्द प्रभुलाडिलो मुखसिं-
धु बढावे ८८ बाबाजी मोहिं दुहन सिखाऊ । गाईयक मूर्धासी मिल
बहु होनीके दुहुंके बलदाऊ । लेनोई मेली चरणानमें लाडिलो कुंवर
नोवत बछराऊ । पारिणा पयोधर धरे धेनुके भाजनबोगि भरेबउबटाऊ
तब नन्दरानी नयन मिरानी द्विजबुलाइ दक्षिणा दिवाऊ । वारिफेरि
पोताम्बर हरिपर परमानन्द दामहि पहिराऊ ८९ बोलन लागेमैया
मैया । बाबाकहत नन्दराईसों अस हलधरसोंभैया । खेलत फिरत स-
कल रोकुलमें घरघर ब्रजत बधैया । परमानन्द दामको ठाकुर ब्रजजन
केलिकरैया ९० नन्दजूके लालनकी छविआछी । चरणा पैजनियां
धुमधुम बाजे चलत पूछ गहिबाछी । अधर अरुणा दधि मुखसों लप-
त्यो अति राजततन छीटेछाछी । परमानन्दप्रभु बालकलीला चितव-
नका फिरि पाछी ९१ हरिलीलागावत गोपीजन आनन्दहीमें निशि
दिन जाइ । बालचरित्र बिचित्र मनोहर कमलनयन ब्रजके सुखदाइ ।
दोहन मंडन खडन लेपन गृह मज्जन सुतपति सेवा । चारियाम अब
कास नहीछिन सुमिरन कृष्ण देवदेवा । भवन भवन प्रति वीप बिरा-
जित करकंकरी नूपुरधार्जै । परमानन्द घोय कुतूहल देखि भांति सुर-
पति लाजै ९२ सोमोबिंद तुम्हरो ब्रजबालक । प्रकटभये घनश्याम च-
तुर्भुज धरे दनुज कुल कालक । कमलापति विभवन पतिनायक भवन
चतुर्दश नायक । सोईउत्पतिप्रलय कालकोकर्ता जाकेकिये सबैकुछ
होई । सुतहुं नंद उपनंद कथाइह ईशकीर समुद्रकी बासी । बसुधाभार

उत्तारन आया परब्रह्म बैकंठानवामो । ब्रह्मा महादेव इन्द्रादिक वि-
नती कै इहाँले आये । परमानंद दासको ठाकुर बहुत प्रणय तपके तुग-
पाये ६६ प्रात समय गोपीनंदरानी । मियत धुनि उपजततिहि औसर
दाध मयन अरुसाठ मयानी । तिष्ठछन लोल कपोल निराजत कंकगा
नूपुर कृन्तित एक रस । रजवा करखत भुज लागति छवि गावत गुदित
प्रयास सुन्दरगश । चंचल चपल कुच शराबलि वेणी चाल खासित
कुसुमाकर । सति प्रकाश नहिं दीप अपेक्षा गहज भावराजत श्वालि-
निघर । च्छिदि विमान देवता गोकुल जलरावती विशेषी । परमानंद
घोय कुतूहल जहां तहां अद्भुत छविपेली ६७ आछे आछे बोल गडे ।
कहा करो उत्तर नहिं निकमत प्रयास मनोहर चतुर बडे । भेरे नेक
आवरीभासिनि रहसि बुलावतखल चडे । परमानंद स्वामी रतिनाथर
प्रीति बेधन कुंवर लडे ६८ देखोमाई हरि जूकी बोटनि । यह छवि
निरखि निरखि नंदरानी अंगुआपूरि दूरि परत करोटनि । परमत
आनन मगुरधि कुंडल अंबुज यवत सीप युत जोटनि । चंचल अधर
चरगा कर चंचल मंचल अंचल गहत वकोटनि । लेत किंडाइ महारि
करसां कर दूरिभई देखति दूरि ओटनि । मूरनिरखि मुसुकाइ यशोदा
मधुर मधुर बोलत मुख बोटनि ६९ भाषय तनिक सी बदन तनिकसे
चरगा भुजतनिक करपर तनिक गाखन । तनिकसे कपोल तनिक सी
भृकुटी तनिक हँसनि हरिलेतहें मन । तनिक से अधरतनिकसी दति-
आं तनिकसे बसन तनिकसे अभरन । तनिकाहि तनिकमूरनिरवारो ।
तनिक कृपाकीजै तनिक शरन १०० बालबिनोदआंगनमंदी डोलनि ।
सगिा मयभूमि सुभग नन्दालय बलिबलि गई तोतरीबोलनि । कटुला
कंठ रुचिरकहरि बज्जमाल लई नंद अमोलनि । बदन सरोज तिलक
गोरोचनलटलटकनि मधुप गगाटोलनि । लोन्योकर परसतआमन पर
कलुकखात कलुलरयो कपोलनि । कहै जन सूर कहाँलोवरगाँअन्य
नन्दजीवन जग तोलनि १०१ गोपाल दुरेहें साखन खात । देखि सखी
शोभा जु बढीहै प्रयास मनोहरगात । उठि अवलोकि ओट दाहीहैं
कहि विधिहै लाखलेत । चकित नयन चहुँदिशि चितवत और सखिन
को देत । सुंदर कर आननसमीप हरि राजत यहिआकार । जनु जल-

२१६ मरसागर रागकल्पद्रुम नित्यकीर्तन ।

तहर्ताज बैरु बिधुसो लिये मिलत उपहार । गिरिगिरि परत बदन ते
र पर है दिविमुतके बिंदु । मानहुं सुभग सुधाकन वरपत प्रिय जन
आगम इन्दु । बाल बिनोद बिलोक मरप्रभु यकितभई वजनारि ।
मुरतनबचन बरजिबेकोमनरही बिचारिबिचरि १०२ देख्योमैर्दाधमुत
मैर्दाध जात । एक अचंभो सुनुरी सजनी रिपुमें रिपुजुसमात । तापर
क्रीउक्रीट परपंकज पंकजकेहैपात । सुंदरबदन बिलोकियामकोचितै
नन्दमुसुकात । ऐसी प्रीति बड़ीपशुपाले कहतकही नहिजात । ऐसी
ध्यान परतजे हरिको तिनहिं मुखलिजात १०३ शोभिभक्त नवनीत-
लिये । घुटुरुनचलतरेगातन मंडित मुखर्दाध लेपकिये । चारु कपोललो-
लसोचन कृबि गोरोचनको तिलकदिये । लट लटकन मानो मत्तसधुप
गगा मादक मुर्धाहिपिये । कटुला कराठ बज केहरि नख राजत रुचिर
हिये । धन्य मर एकोपल यह सुखका शत कलप जिये १०४ बाल
बिनोदखरे जियभावत । मुख्यप्रतिबिंब प्रकारिबे कारराहुलसि घुटुरु-
नानि धावत । कमल नयन साखन के कारगा करि करि सैनवतावत ।
शब्दजोरि बोल्यो चाहतहरि प्रकटवचननहिं आवत । अनेक ब्रह्मांड
खंडकी महिमा शिशुता माहं दुरावत । मुरदास स्वामी सुखधाराय-
शुमति प्रीति बढावत १०५ नंदधाम खेलतहरि डोलत । यशुमति
करतरमोई भीतर आपुन किलकत बोलत । टेरिउठी यशुमति मोहन
कहि आवहु घुटुरुनि धाई । बैन सुनत माता पहिंचानी चले घुटुरुनि
धाई । लै उठाय अंचल गहि पोंछति धूरि भरी सबदेह । मूरजप्रभुयशु-
मति रज भारात कहां भरी यह खेह १०६ धनि यशुमति बड भागनो
लिये कान्ह खेतावै । तनक तनक भुज पकरिकै ठाढ़े होन मिखावै
लखरातगिरिपक्षतहैं चलिघुटुरुनिधावै । पुनि क्रम २ भुज टेकि
पग द्वैक चलावै । अपने पांयन कब चलो मों देखत धावै । मूरदास
यशुमति यहैबिधि सो जुमनावै १०७ ॥ राममूहे । दिलावल ॥ चलन चहत
पांयन गोपाल । लै लगाय अंगुरीनंदरानी मोहनमूरति प्रियाम तमाल ।
डंगमगात गिरिपरत पाशिपर भुज भ्राजत नंदलाल । जनु श्रीधर श्री-
धरत अधोमुख धुकात धरिया मानहुं नमिनाल । धूरिधौत तन नैननि
अंजन चलत अटपटी चाल । चरगा रुगित नूपर धुनि मनोहरबिहरत

है नालमराल । लट लटकरि मातो चारुखवाड़ा सुंदर भाषा शिशु-
भाल । सूरदास रोसा मुख निरखत जो जीजे जग में बहुकाल १०८
गद्यविभाव ॥ गहेअंगुरिया सुवन की नंद चलन सिखावत । अरबराय
गिरिपरतहैं कर नौकि उचावत । बारबार बकि श्यामसों कहु पाल
बोलावत । दुहुधा द्वैदातयां भई कतिछाव सुखपावत । कबहुं कबहुं
कर छांडि नन्द पकरैं फिरि गावत । कबहुं धरिणपर बैठि जात मन
मेकहु आवत । कबहुं गोले हरयिके जियमें बहु भावत । सूरश्याम
मुखदेखि महर मन मोद बढावत १०९ बलिबलि जाउँ मधुरसुरगा-
वहु । अवाकि बेरमेरे कुंवरकन्हैया नन्दहि नाचि दिखावहु । तारीये
दे अपने करकी परमप्रीति उपजावहु । आन जंतुधुनि सुनि डरपतकत
साभुज कठ लगावहु । जिनशका जिय करहु लालमेरे काहेको भर-
सावहु । बाहुउदाय कालिहकी नाई धोरीधनु बूलावहु । नाचहु नेक
जाउँबलि तेरी मेरी साध पुरावहु । रतनजटित किकिरीपगनूपुर अ-
पनेरगबजावहु । कनकवस्त्र प्रतिबिम्ब आपनो नवनवनीतखवावहु ।
परमदयाल सूरके उरते हरिदारे नहिं भावहु ११० चलत श्याम पैरा-
जत पैजनि पगचाय सनोहर । डगमगात डोलत आंगनमें निरखिवि-
नोद मान मोहेसुर । अरुमन मुदित यशोदा जननी पाछे फिरतिगहे
अंगुरीकर । मनहुं धेनुदगा छांडि बच्छति प्रेमपुलकि चित द्रवत प-
योवर । कुंडल लाल कपोल बिराजत कटकन ललित लहुरियाभूपर ।
सूरश्याम सुंदर अवलोकनि बिहरत नाल गोपाल नंदघर १११ कल
बलते हरि हारिपरे । नवतरंग नवीत जतदपर मानहुं द्वै शशि आनि
अरे । तव गिरि कमठ सुरासुर सर्पहि धरत न मनसहं नेकडरे । तिन
भुज भूयता भारपरत कर गोपिनके आधार धरे । बिम्ब बदन मानहुं
मथि काह्यो बिहंसनि मनहुं प्रकाश करे । सूरश्याम दधि भाजन
भीतर निरखत मुख मुखते नर ११२ सिखवति चलन यशोदामैया ।
अरबराय कर पांगी गहावति डगमगाय धरणीधर पैयाकबहुंकसु-
न्दर वदन बिलोकति उरआनंद भरि लेत बलैया । कबहुं क कूलदेवता
मनावति चिरजीवहु मेरो लालकन्हैया । कबहुं क बलकोटिरोलावति
यहि अंगना खेलह दोउ मैया । सूरदास स्वामी मुखमागर अतिप्रताप

बलनत नंदरैया ११३ भावतिहरिके बालनिगोद । श्यामरारागमुखनिर-
 खिनरखिसुख प्रभुतिरंगिनिगाननि यशोद । आंगनपंकधरमतनभ-
 डित चलत कुंगाल नूपुर मनगोद । परसभनेह अछाधत नारिन निर्दि-
 कार बैठत चढिगोद । आनंदकन्द सकल सुखदायक निशिदिन रहत
 केलि रमयोद । सूरदासप्रभु अंजुज लोचन फिरि फिरि चितवत ब्रज
 जन कोद ११४ ॥ रागमूहबिलायल ॥ अंगन श्याम नचावहि यशुमतिनंद-
 रानी । तारी दैद गावहि मधुरे सुरबानी । पांथन नूपुर बाजहीं कदि
 किंकिनि कूजे । नानहीं नानहीं सँझियन अरुनता फल बिम्बन पूजे ।
 यशुमति गानसुने अवसान सोआपुहि गावे । तारी बाजत देखहिपुनि
 तारी बजावे । केहरि नख ऊपर करै छुटि शोभाकारी । मनहुं श्याम
 घन मध्यमें नौशशि उजियारी । गभुदारेशिर केगहैं बने घुघरवारे ।
 लटकन लटके भालपर बिधुमधि गरागारे । कहु ता कंठ बिदक तर
 मुखदशन बिराजे । खंजल बिचशुक आनिके मांथो परै उ हुराजे । य-
 शुमति सुतहि नचावहि छविदेखातिजियते । सूरदासप्रभु श्यामके सुख
 दरत नहिजये ११५ ॥ रागजिलावन ॥ साधय तनक चरगा अरु तनक त-
 नकभुज तनक बदन बोले तनकासे बोल । तनक कपोल तनकासे कर-
 निपर तनक साधन लिये देखत तनक याके सकल भुवन । तनकसुने
 जो यशमो पायत परभगति तनक कहततासो नन्दसुवन । तनक रीझ
 परदेत सकलतन तनक चितोनि चितकेहरन । तनक हँसनि सुतकानि
 तनक पुनि तुतरे बचन उचरन । तनकाहि तनक तनक करिआवै मूर
 हि तनकदीजे तनक शरन ११६ आजंसखी मतिारखंभ निकट जहँ है
 गोरसकी गोरी । विज प्रतिबिम्ब निरखि सिखवत शिशु प्रकट करी
 जिनघोरी । अर्ध बिभाग आजुते हसतुम भलीजनी यहजोरी । साखन
 लेहु कत बिडारत हो तुम बालक सतिभोरी । हीसा न लेहु सबै चाहत
 हो यहैबातहै थोरी । मिथी रुचिर और चाहतहो देउंकहा भरिभो-
 री । सुनिप्रिय बचन धीरज न रहेउतब रसिक हँसी मुखमोरी । सूर-
 दासप्रभु सकृचि चलेहरि सघन कुंजकी खोरी ११७ बाल गोपाल
 बिराजत आज । इन्दुबदन दधिबंदपरे तनकर नवनीत मनोहर साज ।
 किधों प्रकट मकरंद कमल में उदित इन्दु नभसहित समाज । कुंचित

केश भूषण नयलतन शिवा आयेहा करनकोराज । धरुकीहं जुन वा-
नीत सुन्दर कटिकीकीन लूपुर कलबाध । पक्षगोपाल नयनमोहन
। चित्तनत सकत पक्षगोकाज ११४ बद्ध भागिनिगोपलपान्नारि ।
साधनरोटी देजु नचावति जगदाता मुखलेत पसारि । शोभित वदन
कम तद तलोचन शोभितकेशमुखप्रअनुहारि । शोभितसकराकृतकुंडल
कजि शोभित मृगमद तिलक लिलारि । शोभित गीत चरणा भुज
शोभितशोभित किं किनि करतउच्चारि । शोभित नित करत परमानंद
शोषवधू वर भुजा पसारि ११६ खलत घर आंगन गोविंद । निरखि
निरखि यशुमति मुखपावति बदनमनोहर राकाइन्द । कटिकीकीनी
चन्द्रमय मणिगी लट मुक्ताहल लाल । परम सुदेश कंठ केहरि नम
विच विच बज प्रवाल । करपहुं ची पांयन पनमरा तनराजत घटपीत ।
घटुरुनचलतबल्लसंगविहरन मुखसंडितनवनीत । मूरबिचित्रचरितका-
नहरके बानीकहत न आवैं । बालदशा अवलोकित मनकमुनि योगध्यान
। बसरावैं १२० हाँबलिबलि जाउँ कबीलेलालकी । धूमरधूरि घटुरु-
नीन डोलनि डोलनि बचन रसालकी । छिटकिरही बहूँदिशिजु लटु-
रियाँ लटकनि लटकन भालकी । मोतिन सहित नामिका नथुनीकठ
कमलदल मालकी । कल्लुयका हाथ कल्लुय मुखमाखन चितवनि जैन
विशालकी । मूरदास प्रभु प्रेमगगनहैं दिग न तजत ब्रजनालकी १२१
बारबार यशुमतिमुत कीवति आउचन्द तोहिं लाल बलावैं । मधुमेवा
पकवान मिठाई आपुखात पुनितोहिं खवावे । हाथहिपर तोहिंलीने
खेले नेकनहीं धरणा देठावे । जलभाजनमेंकरिके उठावे याहीमेंतु तन
धोरआवे । जलपट आनि धरणापर राख्यो गहि आन्यो वह चन्द
दिखावे । मूरदासप्रभु हैंमि मुसकाने बारबार दोऊंकर नावैं १२२ ल्यों
गोरी मैया चंदहिल्योंगो । कहाकरों जलपट भीतरको बाहिरलपकि
गहोंगो । यह तो कलमलात जल गहिआं कैसे कर जु गहोंगो । वह
तो निपट निकटही देखतबरजेह न रहोंगो । तेरे प्रेम उदितभयो माता
बौराने न बहोंगो । मूरध्यास कहकर गहिल्याऊं शशितन ताप बहों
गो १२३ लेंहों हरि चन्दाले । कमलनयन बलिजांय यशोदा नीचे
नेकचिते । जा कारणा तुम मुनि सुन्दर मुत कीनी इती अने । सोइ

सुधाकर देखि रसोदय या भाजन मेंहे । नभो निकल आनि राख्यो
 हे जलपट यतनजुते । अब अपनेकर काँहि मनोहर जाँहि भावे ताहि
 दे । आगमन गनतें गाँहि आनयो हे एकौगक पटे । मूरदास प्रभु इती
 बालको कत भेरीलाल हटे १२४ सोहत दधिकी छात प्रियाम गात ।
 प्रव्रजलनीके करतेले दोऊकरे कार कछु डारत । उरपर कछुल लेके
 लाँगावान । और माँगतगँहेत बिलम्ब तब धरनीमँलोतिजात । रसिक
 प्रीतस मो करति निहारे रानी यशुमति मात १२५ महामहोत्सव यो-
 द्यलप्राप्त । प्रेम मुदित शोषीयप्र सावति लेले प्रियामसुदर को नाम ।
 जहाँतहाँ लीला अवगाहति खरिक् खोरि दविमंथन धाम । परमक-
 तहल निशि अरु बामर आनन्दहि बीतत खबयाम । नदगोप सुत सब
 सुखदायक माँहनमूरात पूरगाकाम । चतुर्भुजप्रभु गिरिधर आनंदनि-
 पि नगर्वाणच रूप सुगम आभिराम १२६ हावारी नवनीत प्रियादिन
 तँत देन उरतनो आवाँत चोरीलावति घोषधिया । तुम बलराम संग
 निखि जै धनुआंगन खेलो दोउभैया । निरखि निरखि नयननि सचु
 पाई प्रीतिजयन तन लविरिया । जोइभावे सोलेहु मरेप्यारे मधुमेवा
 मँजुष भैया । चतुर्भुजप्रभु गिरिधर काये घर तुमहुँते कछु बहुतग्रि-
 या १२७ आनन्दसौ कहति यशोदा मैया । मेरेमोहन अनत न जइयेधर
 दीखेले दोउभैया । येतसुती योजनमदगाती भदहिदोयलगावेदैया ।
 तुमसो मेरे प्राणजिवन धन मयिके दूध पियाऊँ घैया । चतुर्भुज दास
 गिरिधरन कहैउतब होवग जाउँ चरावनगैया । सुनि जननी मनअति
 हरयाली मुन्दचुंति अरुलेति बलैया १२८ धरधर डोलत साखनखाता
 रनालनाल सबसखा संगलिये सुनेभवन घुसिजात । जबरवालिनजल
 भरि घरआई तबैभजै मुसकात । चतुर्भुज प्रभु गिरिधरन लालसोनाहिं
 नकछु बसात १२९ मोहन चलत बाजत पैजनीपग । शब्दसुनतचक्रित
 है चितवति त्योँत्योँ दुमकि दुमकि धरतहँ डग । मुदितयशोदा चित-
 वति जिशुतन लैउछंग लावेकंद सुभग । चतुर्भुज प्रभु गिरिधरन लाल
 को व्रजजननिरखाति टाहीटगटग १३० मैयामोहिं बडोकरिलेरी । दूध
 दही घृत साखनमेवा जबसांगो तबदेरी । कछु हँस राखहु जिनिमेरी
 जोई जोई मोहिं रुचेरी । होहुँसबल सबहिँनमहँ जैसे सदारहोनिरभे-

। रासभूमिमें कसपकारों धीगिवहाऊं तेरी ।

ला राख्यों मधुराजेरी १३१ कीडत प्रात युगुल यदुबीर । माखन
गांयत मातन मानति भूकृत यशोदातीर मध्यजननि मनमुखसंकरयन
गेंवत कान्ह खिरयो शिरचीर । गतहुँ सरसुनी संगउभय दुजकरमराल
असनील कीर । सुन्दरप्रियाम गहे कसरी कर मुकता माल गही बल-
चीर । तारनभसलप्रो आपापनु मानहुँलेत निबेरेभीर । सूरसुखवि इहं
बरिया न आवे उपगा कही परति नांह धीर । सनक सनदन नित उठि
ध्यावत अरु गावत जाके मुनिकीर १३२ बालदया गोपालकी सबकाह
रप्रारी । लैलै गोद खिलावहीं यशुवति सहतारी । पीत भूगुलि तन
गोहहों शिर कुलह बिराजे । सुद्रघटिका कटिबनीपांयनः पूरबाजे ।
मुरि मुरि नाचे नारज्यों सुरनरमुनि मोहे । कृष्णादास प्रभुनन्दके आं-
गन मे सोहे १३३ मेलेलरिका कतहुँ देखेयाटमुचालि गांयकीमाई । मा-
खन चोरत भाजनफोरत उलटि गारिदे मुरि मुमिकाई । तबहां देनउर-
हनाआई कहाकरोंजो ना कहिआई । सुतहु यशोदा तुम ठकुराइन
तुम में कहत मेरी बीराई । पाछेठाढे मोहन चितवत धीरांहेते चारो
लाई । परमानन्द दासको ठाकुर पचयो चाहत चोरीलाई १३४ तेरो
लालभेरो माखन खायो । द्योत दुपहरा देखि घररूनो दोरि ढँढोरि
अबाहिं घरआयो । खोलि कपाट बैठि मंदिरमें सबदाधि अपने सखनि
खवायो । कींकेहुते चहि ऊखलपर अनभावतो धरनिठरकायो । दिन
दिन हानिकहालों सहिये ये दोराजु भलंढंगलायो । परमानंदप्रभु ब-
हुत बचतिहां पूत अनाखो तोहीं जायो १३५ बहुते उपजतयादोरापे
कैसीधों लेले आवत । हरि हरि हरिदेखोरी माईजानीयुधतिदुरावत ।
विद्यमान बधिदूध चुराये । फिरिफिरि मोहिंबिरावत । चतुरचौरविद्या
संपूरसागडिगाढकोलिबनावत । जो न पतियाहु सोहले मोसों सांची
शपथ करावत । तेरेबच्छजात जेदेशिव तापर हाथ दिवावत । बदन
मोरि मुसकाय चलीहैफिरिउरहनमिसआवत । परमानंददासको ठा-
कुर प्रियाम मनोहर भावत १३६ भाजिगयो मेरो भाजन फोरि । कहा
कहों सुनु सात यशोदा असखायो माखन सब चोरि । लरिका शत
पचास सगलीने रोंके रहत गांउकी खोरि । मारग में कोउ चलन न

पावत लेत दोहनी हाथमरोरि । समुझि न परे याहोटाकी रातिद्योस
 गोरस ढहोरि । आनंद फिरत फायसा खेलत तारीदेदे हंसत मुखमोरि ।
 को यह कुंवर कौनको ढोटा सबव्रजबांधो प्रेमकिडोरि । परमानन्द
 दासको ठाकुर लेत बलैया अंचलकोरि १३७ अथसगुदाय कीर्तन ॥ राग धि-
 लायल ॥ आउगोपालशिंशारबनाऊं । अतिसुगंधकोकरोंउवहनो उष्णो-
 दक नहवाऊं । अंगअंगोछि गुहतेरी बेनी फूलनरचि रुचिभात बना-
 ऊं । सुरंग लाल जरतारी चीरा रतनखाचित शिरपेच बनाऊं । बागो
 लाल सुनहरी छापा हरी इजार चरणा विरचाऊं । पदुकासरमबैरानी
 रँगको हसली हेम हूमेला धराऊं । राजमोतिनके हार मनोहरबनमाला
 लेउरपहिराऊं । लैदर्शादेखोमेरबारेनिरखिनिरखिउरनयनसिराऊं ।
 मधुमेवा एकवान मिटाई अपने करलेतुम्हें जिवाऊं । बिष्णुदास को
 यह कृपाफन बालचरित्र हों निशिदिन गाऊं १३८ पीताम्बरको बोल-
 ना पहिरावति मैया । कनक छाप तापर दियो भीनी इकतैया ।
 मूथन लाल चुनावकी जरकसी चीरा । हसली हेम जरायकी उररा-
 जत हीरा । ठाही निरखे यशोमति फूलीअंग न समाय । काजरलैटि-
 दुकादियो ब्रजजनमुमिकाय । नंदबबामुरलोदई इकतानबजावे । जोइ
 सुने ताकोसनहरे परमानंदगावे १३९ नयन देखुरीगिरिवरधर । सहचरि
 कहति द्वितियसहचरिसों प्रेममुदित प्यारी राधावर । भूषित भूषणा
 अंग मनोहर कनक कान्ति नागरवर । चितवत रहत बिश्वयुवतिनके
 सर्वसु दंत उदार कमलकर । उपमा काहि देऊं को लायक बनोकहा
 किशोर बैमबर । सुरतअंतलटकत ब्रज आवत कृष्णादास बड़भागकल-
 पतर १४० राधे बसन प्रथामतन चीन्ही । सारंग बदन बिलासबिलो-
 चन हरि सारङ्ग जानि रतिकीन्ही । सुधापान करके नीकीबिबिधरहेउ
 शेय मुद्रा फिरिदीन्ही । सुरसुबेध आहिरति नागर भुजआकरख बा-
 सकर लीन्ही १४१ कमलमुख देखत हृत्ति न होय । यहकहाजाने बात
 सुहागिनरही निशा भरसाय । ज्योंचकोर चाहतउउरजे रही चंदमुख-
 जोय । नेक अकोर देति नहिं राधे चाहति पियहि निचोय । हरितो
 अपनेसु सर्वसु दीनो एकप्राण बणुदोय । भजन भेदन्यारी परमानंद जा-
 नत बिरसा कोय १४२ कमलमुख देखत कोन अघाय । सुनरी सखी

लोचन अलि मरि मुदित रहे अरुभाय । सुतागाल लालचर ऊपर
अनुपमलोचनजाय । गोबर्धनपर अङ्गअङ्गपर कृष्णदास बालजाय १४३
गाई कीतगोपकेये दोउ नागर छोटा । इनकी बात कहु कहत न आज
गमानवडे देखतकेछोटा । अग्रज अनुज सहोदर दोऊ गौरप्रियाम ग्रथित
शिरचोटा । सतदासबाल उभय सुरतकी लीला ललित सर्वे श्रि गोदा
१४४ तैमेरीलाज गँवाई हो यशुमतिके छोटा । देहबिदेही हँवाई भिल
धूधतछोटा । कमल नयन तुम कुवरहो हलधर ते छोटा । छैतछबील
रूपमें भई लोट कपोटा । श्री गोपाल तुमचतुरहो हम सतिकी बोटा ।
परमानन्द सो जानहीं जोहिप्रेस कि छोटा १४५ ॥ राग बिलावसुहो ॥ मन्
राजराज कीसीचाल । भुजवर दंड शूडकी शोभा हरि लीनी नँदलाल ।
चूरन कच कुंचित अनेक शंकुश से लटकत भाल । चँवर चार अवतंस
मंजरी मदकन यम जल जाल । रांघअंध आवत अलिघेरे मंजत संजु
रमाल । मोरपक्ष फहरात बात वषा जेना झलकतहै ढाल । धातु
बिचववनी तनशोभा गलगलदा बनमाल । हाँठकृत धर्मढाहडाहत है
रदन कटाक्ष विशाल । घनन घनन घंटिका रुगिात कटि उपजत शब्द
सुताल । खनन खनन संकलसे नूपुर बाजत लजत मराल । युवती हृदय
सरस सरसिज में जनुखेले बहुकाल । सानो अंग अंग लपटाने उनके
मनसे बाल । मुरली रवगंजार सुनतही कपित चित ब्रजबाल । रत रु-
सनो गदाधरयो भयो बनबेली बेहाल १४६ ॥ राग मूहोबिलावल ॥ आज
शिगार निरिखि प्रयाभको नीको बन्यो प्रयास मनभावत । यह छाँब
सनहि लखायो चाहत कर गहिके नखचन्द्र दिखावत । मुख जारे
प्रतिबिंब बिराजत निरिखिनिरिखिसनमें सुसकात । चतुर्भुज प्रभुभिरि-
धर श्रीराधा अरस परस दोउ रीझ रिक्तावत १४७ प्रातसमय नैदनवन
प्रयास आवत देखे कुंजगली । नव घनप्रयास तरुणा दामिनि मिलि
राजत रूप अनपअली । लटपटि पागशीशकर मुरली लोचन घूमत भां-
तिभली । शिथिलितचोर मरगजी अँगिया काम कामिनी देह छली ।
चारयाम निशि जागत बीती उरउमँगयो अनुराग बली । कज्जल अ-
धर नयन रंगबोरी मदन नृपतिकी सेनदली । मूरबदन पंकज रसपिके
अलक मधुपकी पांति चली । प्रफुलित प्रीति परस्पर देखियत तरनि

उदैक्यां कमलकली १४८॥ राग प्रभावमहो ॥ देखुरी काँके चंचल नारे ।
 कमल सीन कहँकहाँ रातीकवि ब्यजनहुनजात उनहारे । ये देखिचारु
 कटित भव ऊपर काँचन अलक मना अलिबारे । विडरत भजत स-
 नहुँ काँडेरथ जुनु मशक शशि लगरडारे । वेदे निमिय नमत मुरलीपर
 कर मुख नयनमक भयचारे । मना जलरुहनों बैस तजे बिधु करत नाद
 बाहन चुचुकारे । हरिको रूप सकल ब्रजमोहन सबयुवती जन प्राणा
 धनवारे । मूरसखी निजरही चितै तन मन क्रम वचन चित अतत न
 टारे १४९ ॥ राग मूहोबिलावन ॥ बनेहैं बिशाल कमलदल नयन । ताहूमें
 अति चारु बिलोकनि गुहभाव सूचित मखिसेन । बदन सरोज निकट
 कूचित मनहुँ मधुष आये रस लेन । तिलक तरुणा शशि कहत कहुक
 हंस मोहन मधुर सगोहर बेन । मदन नृपतिके देश राहामर बुधिवल
 बसित मकतहैंचन । मूरदाम प्रभू दूत दिनर्दिन पढवत चरित सुनीती
 देन १५० मनोहर नयन की यह भांति । मानो हरि करत बल अपने
 शरद कमलकी कांति । इन्दीवर राजाव कुशेप्रथ जात सबैगुरा जाति ।
 अति शोभा आनंदकन्द दुग फूले दिग अरां राति । खजरीट सृगमान
 बिराजत उषाको अकुलाति । चितवनि चारु बिलोकनि चंचल स-
 कोचित न समाति । अन्तर करत निमियलपि अन्तर युगलि समान
 बिहाति । मूरसखी अति रसिक राधिके निमिय खरे अनखाति १५१
 राग बिलावल ॥ आलस्युत देखियत जो भासिनी । राजतहैं रतनारे नय-
 ननि प्रियसँग जागतगई यामिनी । बाँह उठाय जोरि जस्हानी गेंडानी
 कमनीय कामिनी । भुज छूत छवि यों लागत मनु टूटि भई द्वैतक
 कामिनी । कुच उतगपर रची कंचुकी शोभित त्रिवली उदर प्र्यामिनी ।
 मानो मदन नृपतिके तम्बू हरिसन जित्यो राधिकी नामिनी । विधुरी
 अलक शिथिल कचडोरी नखकत कुरिक सराल गामिनी । द्विगुण
 सुरति करि योगोपाल भजि प्रमुदित विद्यादास स्वामिनी १५२ जो
 रस रसिक कीरमुनि गायो । याही रस सराहत निशिवासर शेषसहस
 सुखपार न पायो । गावत शुकनारद मुनिशारद कमल कोसरस तउन
 चखायो । तरनि तनया तर्जनकट बंशीबट वृन्दावन धीधी न बहायो ।
 सो रस रसिकदास परमानंद लेराधा उरधीच दुरायो । यद्यपिरमा रहत

सूरमागार रागकल्पद्रुम नित्यबोर्तन ।

३२५

धरणांतर निगमनि आगम आगम यत्तयो १५३ आनंद के निगम
नन्दकुमार । परब्रह्म नरमेव नराकृत जगत्पति श्री गुरुदेव । प्रक-
रानि शान्तः लोचन आनंद मनमें आनंद आनंद मूर्छित । मोक्षत आनंद
भोषित आनंद आनंद यशुदा आनंद मूर्छित । सर्व दिन आनंद धेनु च-
राश्रत वेशा यशरत आनंद कन्द । खेलात हंसत कृतहल आनंद रा-
गापति वृन्दावनबंद । शुकमुनि आनंद भक्तन आनंद निज जन
आनंद हार्माबिलास । चरणाकमल मकरद पाजकरि अति आनंदपरमा-
नंदरान १५४ सेवा आगोपालकी मेरेसन भावे । मनसावाचा करमना
तर आन न आवे । करि दडवत मनेहसों मनगुख शिरनावे । लोचन
भारभार भावसां हरिदरशन पावे । प्रेसनेम निप्रचयकरि हरिकेशुश-
रावे । ग्रहप्रताप फल परशुराम हरि भक्त दुहावे १५५ ग्रहन होय
जैसे माखनचोरी । जातिकिते बल बांह छडावे मूसंधन सपति सब
चोरी । तवतिन दिनन कुमार कान्हनुन अपने जान हमहुं गति भोरी ।
अवमंथ कृशज किशोर कान्हनुन हमहुं सजरासमान किशोरी । नख
शिखरते चित्तचोरि सकल आँचीन्ह परकात करत मरोरी । एकमुनि
सूर हरेउ मेरो सरवस अरु उलटा डोलों सँग होरी १५६ अवमेरिखे-
लन जात बलैया । जगहीं सोहि देखि तरिकनसँग तवहिं शिखावत
हे वतनैया । सोसोंकहत तात बसुदेवहे देवकी तेरोमैया । सोललप्रो
ककुदेत बसुदेवहिं करिकरि यतन बलैया । अथ बाबाकरि कहत नन्द
सां अरु यशुनातिसों मैया । ऐसे कति कहि सोहिं शिखावत उदतमो-
हिं खिमियैया । पाकेनन्द सुनतहैं दाढ़े तब हँसिहँसि उरलैया । सूर
नन्द बलरामहिं हटकयो सुनिमन हरय कन्हैया १५७ माखन खात
पराये घरको । नितप्रति सहस सधानी मथिये मेघशब्द दधि माठ
यसरको । कितक अहीर जिवत घरमेरे दधिमथि लेत माखन को मठ
को । नव नख धेनुदुहत जिनकोनित बड़ोनागहै नन्दमहर को । ताके
पूत कहावतहो तुमचोरी करत उधारत फरको । सूरप्रियाम तुम कितनो
खेहोदधिमामखन मेरे जहँ तहँ हरको १५८ नन्दघरनि सुत भलोपढायो ।
ब्रजबीधिनपुरघरनि घरनिमें बाटघाटनदशोरमचायो । लरिकन मारि
भजत काहूकी दधिदूध लुंढायो । काहूके घर करत भंडाई भेंडयोंत्यो

करि पकरि जुपायो । अबतो याहिजकरि करिबांधां इनसब तुम्हरो
 गाँउभजायो । सूरश्याम भुजगहि नंदरानी बहुरि कान्ह अपने हित
 लायो १५९ लालनवारी तेरेया मुखऊपर । माईमेरी दीटि जिनलागे
 कबहुँमणि बिंदुकायी भूपर । सरबसु मैं पहिलेही दियो नान्हीनान्ही
 दांतयां दूपर । अबकहा सूरकरो नपाछावर अपनेहे लालन लटूपर
 १६० जब नंदलाल नैनभरि देखे । इकटक रही सँभार न तनकोमोहन
 सरति देखे । प्रयासवरन पातांधर काछे अरु चन्दनका खोर । कटि
 किंकिनि कलराव मनाहर सकल त्रियनके चितकेचोर । कुगडलभ-
 लकपरत गंडनिपर आइअचानक निकसेभोर । श्रीमुखकमल मंदमृदु
 दुषंकांनि लेतकरयिनन लंदकिशोर । मुक्तमाल राजत उरऊपरचितये
 सखी जब इहिओर । परमानंद निरखि अंगशोभा ब्रजबानिता डारत
 ललातोर १६१ बांधांआज तोहिको छोरे । बहुत लंगरयो कीनीमोसों
 भुजगहि अब ऊखलसों जोरे । जननी अतिरिस जानि बँधाये चितैव-
 उन लोचन जलढारे । ऊखलसों कटिमोगहि बांध्यो दास बहुत सब
 तोरे । यहसुनि ब्रजगुबती सब भाई कहतिकान्ह अब काहेन चोरे ।
 सूरश्याम का बहुत सतायो चूकपरी हमते यह भोरे १६२ कहा करो
 हरि बहुत खिभाई । सहनसकी रिसारिसमें भरिगइ दईबहुत हाँदयो
 जुकनहाई । मेरेकहे नाहिं यहमानत करत आपनीटेक । भार उराहना
 लौलै आवति ब्रजकी बधूअनेक । फिरत जहाँ तहँ धूम सचावत घर
 नाहिं रहत सचेत । सूरश्याम विभुवनके कर्ता तासों यशुमति कहतअ-
 येत १६३ यशोदा तेरो मुखहरि जोवे । कमलनैन हरि हलकनिरोवै
 बंधनछोरिरी जननीजसोवै । जोतेरोसुत खरोरीअचगरो आपनीकोख
 कोजायो । कहाभयोजोधरकोढोरा चोरीसाखनखायो । तुरत दोहनी
 दीहि को जमायो जाखन पूजन पायो । ताघर देव पितर काहेको जा
 घर कान्हर आयो । जाकी नामलेत अघ भाजे कर्म फन्द सब काटे ।
 सोइहरि प्रेम दावरी बांधेजननी सांटिलिये डाटे । सुरदासप्रभु भक्तहेत
 हँ देखेरे तुमपाये । दुखितजानि दोउसुतकुवेरके तिनहित आपबँधा-
 ये १६४ जाहुचली अपने अपनेघर । तुमसबहिन मिति दीटरूख्यो यह
 अथआइ बंधनछोरन बर । मोको अपने बाबाकीसों कान्हहि अबनप-

त्याउँ । भवनजाहु अपने अपनेसब लगत तिहारे पाउँ । मोको जिनि
 बरजोरीकोऊ देखो हरिको ख्याल । सूरप्रयास सौकहत यशोदा बड़े
 नन्दकेलाल १६५ तर्पहिं प्रयासइका बर्द्धउपाई । युवतीगई घरान सय
 अपने गृहकारज जगनी अटकाई । आपुनराये यमल अरजुनतर परमत
 पात उठेभहराई । दिगेशिराय धरणि दोउ तरुवर तबकुधैरसुत प्रकटे
 आई । हैकरजोरि करतदोउ अस्तुति चारभुजा तिन प्रकट दिखाई ।
 सूरधन्य व्रजजन्मलियोहरि धरनीकी आपन नयाई १६६ धनिधनि
 धनि ऋयि प्रापहि पाये । आदिअनादि निगसनाहिं जानत तेहरि प्र-
 कट देहधरि आये । धन्य नंद धनिमात यशोदा धनि आंगन जहँभैति
 खिलाये । धन्यप्रशाम जहँदाम बँधाये धनिकुखल धनिमाखन खाये ।
 दीनबंधु करुणानिधान प्रभु राखिलिये शरणागत आये । सूरप्रयास
 के चरणा शीशधरि अस्तुति करि निजधाम तिधाये १६७ कौतमेरे
 आंगनहूँ जुगयो । जगमग उयोति बदनकी साई सपनोसो जुभयो । हो
 दधिमेति भीन छानि मजनी लेनुगई जु मथानी । कमलनैनकीताईँचत-
 यो यह सूरतिमें जानी । करनहिं चलत देहगति थाकी बहुत खेदमें
 पायो । परमानन्दप्रभु चरणाशरणा गहि रहती कित गृह आयो १६८
 नन्दके लाल हरेउ मनमोर । होंअपने सोतिनलर पोहति कांकरडारि
 गये सखिभोर । बंकविलोकिनि चारु छबीली कटिल कमान भौह
 कीकोर । कहू काकोमन रहे अवरालुनि सरन मधुर मुरलीकी घोर ।
 शशोबिचित्र बदनके कारणा तरसतहैं दृग बिहँग चकोर । सूरदासप्र-
 भुके मितिवेको कुवयोफलहो करत अकोर १६९ इन नैननिसेमा-
 नीहारि । अनुदिनही उपरांत आनरुचि बाढीमब लोगनसों रारि ।
 तदपि निहर चलिजात चपलदोउ घूघटमघन कपाट उघारि । निगम
 ज्ञान प्रतिहार महाबल लाज लकुटकर रहत निवारि । श्री गोपाल
 कीतुक मनअपीं तबते चतुरनि भई चिन्हारि । सूरदास लोभनिकेली-
 ने शिरपर सही जगतकी गारि १७० सखीहो जागोतो कोऊ दिग
 नाही उठिलागी अकुलान । मैंजान्यो सांचहि मिले साधव भूलिर-
 ही अनुमान । नोंदहिमें मुरझई मदनहो राखी प्रथमपंचमंधान । तामें
 तिमिर साईरी चपलकुटे छबिबान । कूरशक्ति जैसे लक्ष्मणात

२२८ सूरसागर रातकल्पद्रुम निर्ययवार्तन ।

बहव्रताको कछु अंगान्मान । सपाऊं मजीवनमूरि सुकदहि उथोहरिहे
तवपान १७१ रहींरी रथालि बावन सदमार्ती । मेरे कृपान रागन से
लालहिं कंतले जलन लगावति छाती । खीजतसे अरहीं राखेहै ना-
जहीनानही उठि दूधार्क दांती । खेलनदे घरजार्हि आपने डोलत कहा
इतो इतराती । उठिचला रथालि लाल लगे रोवन तब यशुमतिलाई
बहुभांती । परमानंद आददे अंगल फिरिआई नैननि सुसकाती १७२
गावतगोपीमृदुव्युधानी । आर्कभवनबसत विभुवनपति राजानंदप्रशो-
दाशनी । गावतवेद भारतागायत गावतनारदादिमुनिजानी।गावतशि-
वकालगगांश्व गोकुलनाथ महातमजानी।गावत चतुरानन राजआनन
गावतशेष सहस्र सुखरासा।क्रम बचनप्रीति पदअंबुज अबगावतपर-
मानंददास १७३ आसन मितिलाले दुखदेन । अपनि पिशुनता कहा
कहोंसखि विधना कियोकृदने । लोचनभँवर भये उडिबेको बदनक-
मल सधुलेन । काननेसु व्रतलियो मुननको बिनावदन बिभुवेन । नामा
खसत बचनर्नाह निकरत सनत धरत कछुसेन । पगन चलत इकपेड
नाँठिके तनपुर पभरेउभेन । अबलयाऊं व्रजनाथ तिकदतोहिं नौ ताँइह
सबे सहेन । सूरनिमिष समहेत युगहिधुग कोनिगमाऊरेन १७४ यह
बलि कितकु जार्नि अदुराय । तुमजुचले हम अबलनि पेंते तरकिबांह
छिरकाय । कहियतहैं अति चतुर सकल बिधि जानत अवर उपाय ।
तौजानो जो अब गकोछिनु सको हृदयते जाय । सूरदास स्वामी श्री
पतिको भायत अन्तरभाय । सहि न सके रतिबचन उलटिहँसि लीनो
कंदलगाय १७५ श्यामातू अति श्यामहिं भावै । बैठत उठत चलत गो
चारत तेरोइनाम लैलै गावै । पीतेपीत मुमन भूयसासजि पीताम्ररउर
लावै । चन्द्रवदन मुनिमोरचन्द्रिका शीश मुमुकदबनावै । अतिआस-
क्त दरश संभ्रममिलि आआंगे सचुपावै । बिहुरत तोहिं कासिराखेकः
हि कंजकंज प्रतिधावै । तेरोइछ्यान धरेतन नरखत बामर बिरह न-
भावै । सूरश्याम रसराम रसकमवि कैसेअंतर आवै १७६ सानिमा-
नवो सौनरही । मुकुव समेत सखीउठि आतुर बनकी रौलागही । बिधु
मुय निरखि अंदिकर लोचन पुनिबिधु बदनचही । दरशपरश तदख
प आजुनिज भुसितख लेखिकही।पहुप सूरंग सारंगरिपु आँठिदख

वत चतुरलही । पानि मपररात प्रांश परस्पर मुसकाने तबही । लिन
 तोरे । दिन जात जितेगुणा काळति रेखमही । सूरप्रथाम बहुरी मालि
 बिनसहु जाति अवति अवही १७७ नयार्यादन दूलह हो नंदलाज ।
 रंभिकावकाय तहांबने जहें नबदु वही ब्रजबाल । शिथिलयाग गतिह-
 गमगेहो वसनमरगजे गाताशो भितहा तुमरसभरे मानोद प्रातभये जाणरा-
 ता नयनललोहे घुमरेहो चितवत चितहरिलेता कहे भगवानिहितरासराय
 प्रभुहंसत वधाईदत्त १७८ ॥ रागप्रनाहया ॥ रवालिनी पुरनप्रकट्योनेहु । दधि
 भाजन शिरपरधरे ताहि कहत गोपाललेहु । ब्रजबीथिन ब्रजपुरगलीहा
 जहां तहांहरिनाम । मगभाई समुक्तेनहीं ताहिसिखर्देबधकोगाम ।
 लज्जाहरि तरंगितीहो गुरुजन गहिराधार । दुहकुलनि परमित नहीं
 ताहितुरत न लाईबार । सरितानिकट तडागकेदीनेकुर्लाबदार । नाम
 गिह्या सरिताभई अबकौननिबारेबार । दीपकतो मंदिरजो हाबाहर
 लखै नकोय । तगापरसत प्रजुलितभई अवगुप्त कहांतेहोय । पानकिये
 उयांवारुणीहो मुखबो लतनसंभार । धरनिधरतपगडगमगे वाक्केबिधुरी
 अतकलिलार । कौनसुनेकासोंकहांहो कौनेसुरतिसकोच । कौनेडरपथ
 अपथकोअवको उत्तमकोपोच । विधुभाजनओकोरच्योहरिशोभासिंधु
 अपार । उलटिसगनतामेंभई अबकौनतिकारनहार । चितचुरायो नंद
 केहोपुर तोमधुरबजाय । जिहिलज्जायुगुलाजियेसोलज्जागडहेलजाय ।
 प्रेममगनभइरवालिनीहो मूरदासप्रभुसंग । यवरातयनमुखनासिकाहां
 ड्योंकंचुकी भुञ्ज १७९ ॥ रागबिनावल ॥ कहाकरो बैकुंठहिजाय । जहां
 नहींनंद जहंनयशोदा जहंनहिगोपी रवालनगाय । जहंनहिजल यमुना
 कोनिर्मल औरनहींकदमनकी छाया । परमानंदप्रभुचतुररवालिनी ब्रज
 रजतजि मेरिजायबलाय १८० अद्भुत एकअनूपमवाग । युगुलकमलपर
 गजबरक्रीडत तापरसिंहकरतअनुराग । हरिपरसरवर सरपरगिरिवर
 गिरिपरफूलैकजपराग । रुचिरकपोतवसतताऊपरतापरसकअसी कल
 लाग । फलपरपुहूपपुहुपपरपल्लव तहांरहतशुकपिकमृगराग । खजन
 धनुय चन्द्रसाऊपर तहांवसतइक मणिधरनाग । यहसरविरसहेतनहिं
 कबहूशोभाकिनहुकरतनहंत्याग । मूरदासस्वामिनीरसिकवर तुवहित
 बाह्योसिंधुसहाग १८१ ललितकथाइककहौलडैतेनेमरुकुसुमहू छांडिदे

अरि । सूरजबश नृपति दशरथके भयेहुभट सुदरसुतचारि । तामेंबडो
 रामचन्द्र राजा जनकसुताजाकेबरनारि । पंचवटीको चलेराजतजिता-
 तबचन साधेपरधारि । श्रोवैकुण्ठनाथधरनीधरबिहरत बनतापमअनुहा-
 रि । सारेकुटितमदलराक्षसअतिकाननबसतबिघन सयटारि । कपटरूप
 रावणामीताका लोगोलक सिंधुकेपारि । जानकिहरणामुनतसूरजप्रभु
 चौंकिउठे लियोधनुय संहारि ॥ ८० ॥ सुसुतरककथाकहुँप्यारी । कम-
 लनयन मनआनंद उज्जयिनीसिक शिरोमणिदेतहुँकारी । दशरथनृपति
 हुतेरघुबंशी तिनके प्रकटभयेसुतचारी । तिनमेंरामएकव्रतधारी जनक-
 सुता ताकेबरनारी । तातबचनमानि राजतज्याहैधातासहितचलेबन-
 चारी । तिनउठिजाय कनकमृगमारैउ राजिवलोचन केलि बिहारी ।
 रावणहरण सी शकोकीनो सुनिनंदनंदननोदनिवारी । परमानंदप्रभुचा-
 परतत्करलहमगादेहुजननिधसभारी ॥ ८३ ॥ अथव्याहखेलरागबिलावल ॥ अहो
 मेरीप्राणापियारी । भारहिखेलनकहांप्रयोग्यारी । कसकुसभालतिलक
 किनकीनो । किन मृगसदको विन्दादीनो ॥ ८४ ॥ वेदाजु मृगसददियो
 साधे निरखि गतिमंशयपरेउ । इकशरदानिशिको कलापरगा मानसद
 दर्पेउहरेउ । होरमुखहँसि कहतिजनता अनकबेनीकिनयुई । सूरकेप्रभु
 सोहिअचरजरचीकिनमनमयमई । नन्दसहरघरनोयासोहे । भरोबदन
 जुफिरिफिरि जोहे । खेततबोलि निकट बैठारी । कहु मनमें आनंद
 कियो भारी । मनमें जो आनंद कियोभारी निरखि सुत बिहलभई ।
 बबाजकोनामबुभेउ तोहिहँसि गारीदई । पाटीजो पारिसँवारिभूयगा
 गोदमें सेवाभरी । सूरकेप्रभु हरिय मनमें दिवनासों बिनती करी । यह
 सुनि बात कीर्त्ति सुसकानी । मैं नंदरानी के जियकी जानी । मेरी
 सुताहै रूप कि रासी । वे तो कान्हू बनबसी उदासी । कान्हू उदासी
 बनावसी रंग ढंगा यह कावने । कनक मणि दिग रत्न अमोलिक
 कांव कंचनक्योंसने । ललिताविशाखासों रहेउभक्ति लीतजि तुम
 कितरहो । सूरकेप्रभु तनयारि तानिमि दीजोकही । दिन दशपांच
 अटक जब कीनी । कुँरि को कटाय दिव्याई दीनी । सूरभिपरी तन
 सुधि न संहारे । कुँरि को डी भुजंगम कारे । कारे भुजंगम इसी
 प्यारी गारडू हारे सबै । इक नन्द नन्दन मंत्र विनु अलियह विष

दादयो नाहिं देखै । मनुहारि करि माहन बूलाये सकल विय देखतन-
 से । सूरके प्रभुजोरि अबिचल जियो युग युग सनबसे । बिहँसि उठा
 तन बदन पखारेउ । निरखि मोहन तन अँवरा सँभारेउ । मुरि बैठी
 मनभयो हलसा । कीर्ति गई अपने पति पासा । अपने जु पति पैगई
 कीर्तिन प्रीति रीति बढाइये । सब कीनो क्याहको सबसखा संगलगा-
 डये । वृन्दाबन में रचेउ स्वयंस्वर पुहुप मंडप छाडयो । सूरके प्रभु
 श्याम दूलह राधिकाबर पाडयो । बिबिधतबिधि मदकीनी । मंडल
 भारके भाँवरिदीनी । बिबिध भाँति कुसुमनि बरयावै । रहँ भासिनि
 मिलि संगल गावै । गावैजु भासिनि मिलिके संगलकहँ ककन छो-
 रह । ऐसे नहीं गिरि उच्चकि लीना लात हाँस मनमोरह । छोरेउ न
 छूटे डोरना यह प्रीति रीति अतमन भई । सूरके प्रभु युवति जन मिलि
 गारि मन भावति देखै १८४ जिन व्रत धरिके देवी पूजा । तिनके मन
 अभिताय न दूजी । देवि नन्दसुत होइ पति मेरे । जापै होय अनुग्रह
 तेरे । करि अनुग्रह बर दियो जब बरय भरतों तपकियो । ब्रैलोक
 सुन्दर परन भयगा शीलगुण नाहिंनबियो । उचटि खोरि शिगार
 सखियनि कुँजचोरी आनी । बरयभर जाको तपकियो मोघरी बि-
 धिना बानी । मुकुट रचिके मोर बनायो । सो साथे धरि हरि बर
 आयो । तनसाँवरहे पीतदुकूल । जाँहदेखि घन दामिनिभूले । दामि-
 नीघन छबिकाँटि वारों जब निहारों मुखछबी । कुण्डल बिराजत गंड
 मंडित नहिं न शोभाशिरबी । याछबि की उपमा को नाहींसकलहैं
 गुणजाहीं । मानो मोर निरत संग डोलत मुकुटकी परछाँही । गोपी
 न्योते आई । मुरली धुनि पठेजु बुलाई । तहँ सबमिलि संगल गाये ।
 बहु बिधि फूलन मण्डप छाये । छाये जु फूल निकुञ्ज मण्डप पुलि-
 नमें बन्दीरची । बैठे श्री श्यामा श्याम बर ब्रैलोक की शोभा सची ।
 इत कोकिला गरा करे कुलाहल उत सकल ब्रजनारी । आईजुन्योते
 दुहँ दिशते देत आनन्द गारी । रासमण्डल में सब भुजजोरी । हरिहैं
 साँवल राधा जुगोरी । पाशा ग्रहण बिधि जब कीनो । मण्डल भरि
 भाँवरी दीनो । दीनो जो भाँवरि रासमण्डल प्रीति गाँठि हृदय परी ।
 शरदर्नाशि पून्यो बिललशशि निकटवृन्दाशुभघरी । गायगीत पुनीत

सखियनि बेदहूँच मंगल धुनी । इत नन्दसुत वृथभान तनया राममें
 जोगी बनी । मन मन सैन बराती । द्रुमफूल अनगन अत भांती । बन्दी-
 जन हरि यश गावैं । मयवा बहुबादिब बजावैं । बाजे सु बाजे सकल
 नभसुर पुष्पञ्जलि बगयहीं । सुनि दिवट द्योमनि मान दीपक जैसे
 गधुकर हरयहीं । मुनि मुरदासहि भयोआनंद पूजीमनकीआना । श्री
 नन्द नन्दनलाल दूलह दुलहिनी श्रीराधा १८५ श्रीललिता-जूके आजु
 बधायो श्री वृन्दावन दयाह रचायो । आजी न्योति पठाई । बे मंडल
 निधि न्योते ल्याई । ल्याईजु न्योते साजि सखियनि मंडली अद्भुत
 रची । बांधि वन्दनवार चहुँ दिशि दयाह बिधि बेली रची । सकत
 देवी पूजिललिता रहमि अति आनंद भरी । नवल राधे दुलहिनी को
 दूलहा बर पायोहरी । देवी बहु भांति पुजाई । बिधना यहबिधि आ-
 तिभिलाई । सोइराधे जिनहरि आराधे । प्रेमलखन सोइहरि भूगसाधे ।
 साधि हरिमँग लगनललिता रहसि मंगलगाइयो । विविध कुसुम
 बिचित्रमों रचिमहा संडप छाड्यो । उवाटि राधे दुलहिनी तन श्याम
 केउपतनकियो । शृंगार करि शिर गंथिसौरी मुकुट मोहन केदियो ।
 करमांकरजोरि बैठाये । गांवरि दैदैं हँमिके फिराये । तदहँसललि-
 ताइइहैबधाई । बेतोफूलीअंगनसजाई । फूलीअंगनगमाइललितारंगभरि
 अंगअंग रही । यादयाहकी रमरीति सखिरी जातिनाहि सोपैकही ।
 धनिधान दिन यहराति धनि धनिधानि निजकुल शुभघरी । धनिधान
 नंदकुमार दूलह दुलहिनी राधावरी । दूलहवो हेत मयानो । श्रीराधा
 जूके खपलुभानो । क्लिनसक बिलंब न कीजै । आंवरसों जोरनोकारही-
 जै । कियोअंचरा जोरनोमिलि मखी चारुगौने कियो । करि दिये
 कुंतप्रवेश दोऊधन्य ललिता कोहियो । नवलसखी अनेक छबिपर
 वारने हों बलिाई । आजुअचल सुहागकी कहु जात नहि सोपैकही
 १८६ ब्रजदूलहकी सुघरगौरी । बिधना मानो सांचे दोरी । वाकोल-
 लितबदनमतमोहै । यवराकपोलचमकिचितपोहै । वाकेलोचनचंचल
 तारे । मानो वेनगदीप उज्यारे । वाके कानन की छाबि ऐसी । काम
 कतरनी चंचल जैसी । वाके दन्त बतीसी हीरा । जीभ ललित खाये
 मानोंधीरा । वाके अरुणा अधर अतिदीसे । फलभरे जब हरेहरेहीसे ।

फूलभरी सुंदरहीमत दृगनि अतिशुचिपाइये । मेरेनन्द नन्दन प्राणापति
कीधुप्रधोरी गाइये । वाकेकेश बारसुहार मनोप यत्नलरीलियाही ।
साव रिहावनि मनहु भावन साममें कूली जी । वाकी पीठिकी किन
होति लागी भितरि मोदी पृथी । भित्तिभल प्रतिजिब तापरमानो
मैन घटाउती । वाकी पुंछ चवर अतिभाही । मनमथ मानो सांधे धरि
काही । वाके कंचन नाज बनाये । चरता शरणा चन्दा चलिआये ।
वाके चारोम्बर अतिभक्तके । दृग निरखत लागेनहि पलकें । वाकी
छयल कबी नी क्हाती । सखसल कीसी पसम सुहाती । वाकीचाल
त्रिचक्षणा सोहे । देखतही सबके मन मोहे । वाके नखशिख रूप सु-
हायो । सखसली उर तान बनायो ॥ सखसली उरतान भलमले पर
रतनजटित लगामजी । जीनपरम प्रवी । जगमगो मनोपरति कामजी ।
अम्बार नन्द किशोर दूलइ चित्तमबहिन के हरें । हरिय राई लोन
बारें आरतो यशुमति करे । धनिमन्य यत्नसुखश्याम घन प्रभु दृगनि
अतिशुचिपाइये । मेरेनंद नन्दन प्राणापतिकी सुधर धोरीगाइये १८७
दृग्भक्तिजननी कहहुतीप्यारी किनयहभा गति तकरुचिदोन्हों किनकच
गुंथिमांग शिरपारी । नन्दधरनि यशुमति कहियतहैं मांसो कहेउ
हमारी आरी । तिलचावरी मेलि गंधा में फरिया फारि दई मोहिं
भारी । मेरोनाम बूझि २ बाबाको तेरोनाम बूझिदईहंसिसुगारी । मो-
तनचितैचितैहोटातन कछुसवितातनओलपमारी । बोलिलिय दृग्भान
भावती हंसि हंसि बातें बूझि दुलारी । सुरदास रसमिधु बढ्यो अति
दुष्पति मनमें यहैविचारी १८८ ॥ अथकुवजामंगल । रागचिन्तावल ॥ सैरंध्रीसोई
उति फरकत बाहु सुलोचन बाम । सुन्दर शायनभये आजु सेहमेरे सुन्दर
प्रयास ॥ छन्द ॥ प्रयाससुन्दर आइके रहसाइके शरे ताइ हैं । दैअलिंगन
प्रेमसां मनसुख समूह बरयाइहैं । साहिमन हुलसाति अतिही प्रेम
पंज बढाइहैं । पररा करिहैं मनोरथ सब आ संग लाइहैं । भुशगा
विबिध रचे अंग प्रति कहे न जाई । कंचुकिकसि ओ लई प्रयास
अंग भलके अधिकाई । अधिकाइ भलके सुरंग चूनारि लालरंग सु-
हावनी । पीत लहंगो बढ्यो अतलस देखि मनकी भावनी । दोउ जो
लोचन आंजि सूक्ष्म नयन सेन बनावनी । दूरी दुहं कर पहारि हरी

सुपरम फाब फबावनी । बनिमुभग एर्हासुगन्ध तेल लगाइ के दीह ।
 सबहिं बनाव कियो जाते हरन होय मन पीके । पीय के रत हरौह
 जैसे ऐसी सोलित सांग भरी । टीका बली बहु परम सुन्दर जटित नग
 जग सग करी । बेसरि रुचिर नामा विराजै बनिक् बनी अति कसत
 सरी । नार हाटक जटित नग सब चलत मोती घर थरी । फूलन सेज
 रचो परम मृदुन पयफेनु समान । तकिआरुचिर धरै गलमसुरी साजहं
 चन्द भाज । चन्दमानगम गलमसुरी सागों देतशोभा अतिघनी । चादर
 बिछाय लगाय सौरभ बहुसुगंधन सोसनी । डीहिबिधि मनोहर साजि
 बैठी महासुभट कंचनतनी । हूलभाति पुलकित मनहिंमनमें आइहें थि-
 भुवनधनी । फूलहार जो धरीअपनेहाथ सुधारिसंवारी । नरकाशम्भ रूप
 वनीमनमथ कोटिदेउं बलिहारि ॥ बलिहारि मनमथ कोटिकुनिपर
 और उपमालाजही । छिनभवन छिनबाहर धिलोकाति साजलबिधि
 साजही । मुनकाति मनमन बिबशहैंके अझुत छबिछाजही । मंजुल
 मनोरथ करैति मनमन आइहैं पियआजही । प्राणार्पाति आइगये नि-
 रयतही भट्टेउठि ठाढ़ी । हृदयलगाय लईआनन्द लहरिउभोग आत
 बाड़ी ॥ दायी जु आनन्द लहरि बहुबिध प्रयाससुन्दर बशपरी । रति-
 कैलि भोगबिलास सर्वांगिणि जागियाकेसंगकरी । जोराइहें यहरसि-
 कलीला परमरस आनन्दभरी । कहिसूर वाके सबमनोरथ पूरि हैं
 मधुहाहरी १८६ ॥ आयमुनाजीकेपद ॥ रागबिलावल ॥ श्री यमुना करुणामई
 बिनतो मुनिजीजै । दर्शनते पावन सदा सुमिरत अघडीजै । मंजनतुव
 जलपावनी मलशुद्ध करिलीजै । गावत वेदपुराणा में थमते सुखलीजै ।
 भावभक्ति बरदानहीं मोकोबर दीजै । थीबिटूल गिरिधरन के गाउ-
 गुणा रसभीजै १८७ ॥ श्रीयमुना गोपालहि भावै । जेयमुनाके दर्शन-
 कीने कोटि जनमके पापनशावै । जे यमुना स्नान करत हैं धर्मराज
 लेखी न गनावै । जेयमुनाजलपान करतहैं बहुरो रुकटओर न आवै ।
 पद्मपुराणा कथा सबऊपर धरतीसों बराह यथागावै । तेतीरथ येप्र-
 कट जगत में परमानन्द प्रसादेपावै १८८ ॥ श्रीगंगाजीकेपद ॥ रागबिलावल ॥
 परमेश्वरी देवी मुनिबंदेपावन देवीगंगे । बामनचरणाकमल नखरंजित
 शीतलबारितरंगे । मज्जन पानकरत जे प्राणी त्रिविधताप दुखभंगे ।

तोयराज प्रयाग प्रकट भयाजबबर्ना यमुना बेणीमंगे । भगीरथराज
 सागरकुलतारन बालमीकिप्रयागयो । तबप्रताप हरिभक्त प्रेमरसज-
 लपरसाजन्द पायो १६२ ॥ आता रागबिलावल ॥ बाती कपूरकी इयोति
 जगमगे आरती बिटुलनाथ बिराजे । वटा ताल घवावज आवज सप्त-
 सुरनि सादरभाजे । याद्वर्जकी उघसा कहाकहो कोटिकाम निरखत
 लाजे । श्रीवल्लभ प्रेमप्रताप भरोनत आनन्द मंगल गोकुल गाजे १६३
 श्रीवल्लभ पुरुषोत्तम रूप । सुन्दर नयन विशाल कमलरंग मुख मृदु
 बोलत वचन अनप । कोटिमदन वारीं छंगछंग पर भुजगृहाल अति
 सरस रविरूप । देगेजी बड़वारणा प्रकटी दासशरणा लक्षणा सुतभूष
 १६४ रूपस्वरूपश्रीबिटुलराय । वेदीबिंदित पूरणापुरुषात्तम श्रीवल्लभ
 गृह प्रकटेआय । लटपटापाग सधारमभीने अतिसुन्दरजन सहजसुभा-
 थ । छीतछारिम गिरिधरन श्रीबिटुल अगशित सहिमा कहिनजाय
 १६५ श्रीवल्लभ सुत परम कृपा । तेभेई श्रीगिरिधर श्रीगोविंदबाल
 कृपाजु नयन विशाल । महा मोह दोय दुखीजन प्रकटभये यद्वरदान
 प्रेष । जीवअनेक निजे किरतारथ कोमलकर धरतपरशीश । जाको
 दर्शन सुन्दर को दुर्लभ शरणागतको सुलभ अपार । जनगमरसाभव
 बन्ना ७ छूटे जिन श्रीमुख देख्यो यकवार । श्रीवल्लभ रघुपति श्रीयदु-
 पति भाहन सूरति श्रीघनश्याम । जन भगवान जायबलिहारी यहसुनि
 जपों लिहारा नाम १६६ धनिधनि माता तुलसीबर्द्धा । नारायण ले
 माये चढी । जे कोउ तुलसीकी सेवाकरे । काटिपाप छिनमें परिहरे ।
 जेकोउ तुलसीको फेरीदेत । सद्देजे जनम सुफल करिलेत । दानपुण्य
 मंतुलसी होय । कोटिकफल पावैनरखे याजोधर तुलसी करतनिवास
 सोधर सदा कृपाकोवास । कृपादास कहे बारम्बार । तुलसीकिसहि-
 माअपरम्पार १६७ ॥ सागुदाह रागबिलावल ॥ यमुनाजल घटभरि चली च-
 न्द्रावलिनारि । शारामें खेततमिले घनश्यामसुरारि । नैननिशों नैना
 जुरे मनरहेउ लुभाय । सोहनसरति जियबसी पगधरेउ नजायातबकी
 प्रीति प्रकटभई यह पहिलीभेई । परमानन्द ऐसेमिले जैसुखचेंत १६८
 सुन्दरहोता कौनको सुन्दर मृदुबानी । भेदबतायो भालिन जायोनंदरा-
 नी । सुन्दरभालतिलकादिये सुन्दरमुमकानी । सुन्दरनयननि हरिलियो

कमलनिनी पानी । सुंदरता तिहंलोककी यात्रजमें आनी । परमानंद
 यशोवति सबसुख लपटाणी १६६ कामलनयन कमलावती अभिवनके
 नाथ । एक प्रेमते सबको जो मगहोय हाथ । सकल लोककी संपदा
 जोयाओ धरिये । भक्तिजिवा मानेनहीं जोकेतिक करिये । दासकसा-
 बत कहिनहै जोओ चितराग । परमानन्द प्रभुसांवरों पैयात बहुभाग
 २०० आवतभोर भये कुंजवनते कहंकहुं अरभे कुसुम केशमें । गतिर-
 मरग भीनीजोहे मारीगन कीनी भूयसा अटपटे अंगअंग छविदेखियत
 सुदेशमें । ओप में ओधभई बिरह जो तापगई शरदचन्द नहिं गनत
 लेशमें । अतुभुजप्रभु गिरिधरसंग निशिजागी युवति शिरोमरिा घोष
 देशमें २०१ सांगमरगजी तिलकुआधो अधरनिरगुवाई मगसगाति ।
 अपलनयन आलसहि जनार्थति भोंहभुजंगनि लसलमाति । मान के
 संख रखते चोलीके चन्दटटे बदनकीडियोति ककुअवरहिमाति । कुच
 नख देखे बनी किलकात कामतनी मागहुं कनकघट मानिक कांति ।
 पलटिपरे पट कहहु कहांते बोलत बोलकाहु अटपटाति । केग कुसुम
 शशिपद नख पूजत चलत मधुर गति डजनगाति । सुरत समर जीत्यो
 मदनवृषतिनेताहीने अविक्कफूओअंग न समाति । कृष्णादास स्वामीला-
 लगोबर्द्धन धारी मंगरति बिलास मुखभले बीतोरति २०२ आइरति
 रसाजीते भासिनि बांघीकौंछ कटितटपटपेटक । रिभयो सकलकला
 गुणानागर ककुतेरे नैननिमहँ चेटक । भलेनसध भलेगुणनिमें सखिक-
 लानयन सोरीबदी महेटक । सेतीकही अबहीं आवतिहों आपुनचलो
 जहांयश हेटक । डगमग घरसावरत धरगातिल राजमद वमत निरखि
 गतिकी लटक । प्रसत भुजंग निरखि शिरबेसी भूयसा निरखि वमत
 मरिाहाटक । मोहनलाल गोबर्द्धनधारी करवर कमल गद्दीनुम्हारो
 लट । कामकेलि शरयापर नचाई कृष्णादास प्रभुसुरत रंगनट २०३ या-
 हीगुसाते सुनुहीप्यारी लमोहन गोपालहि भाई । सकलशिगार साजि
 मृगनयनी अवरभले बेगि चलिआई । लहंगालाल भुमुककी सारी
 पचरंग शिरओलनी धनाई । नवरंग उरतन मुखकी चोली कुंभीवरन
 पियहेत रंगाई । सुगमद पर्वतिखित कुचयुगाबिच कुसुमनमाल अनूप
 ननाईनरकर शिरस कनकमणि लंकन निरखत रतिपति रहेउलजा-

३ । कथादास स्वामी सुखसागर तामों मखिननमां असभाई । मोहन
लाल गोवर्द्धनधारी अपनी जार्न हंसि कंठ लगाई २०४ ॥ राग बिलावल
चरंग ॥ तुजुप्रोतमकी भावतो लाल भावती तेरो । मनहीमन मितिरही
रांदिदेवतें क्रियोरति रगाभरे । हिलग हृदय महँकि जार्नये सुभ-
ग दूरिते नेरो । कथादासनि नाथकैल गिरिधर पायो रसिक सुखके
रो २०५ ॥ राग बिलावल ॥ अति रागसी, देविद्यत हे प्यारी हँसति वर्दति
आल गों बोल । दुगमणि चलति प्रकाश दिमकर पद नख पुनत
चंचललोल । गोरछंग महँ अधिकाने सखि कदम्ब कुसुम रंगपीतनि
चो ग । पलटिपरे तेहँनहिँजाने रसमें मगन मानौमदन कलो ॥ कथा
दासस्वामी मंगसजनी निशिभूली पिप्रसुरत हिँडोल । मोहनलालगो-
वर्द्धनधारी देवर्षस तूलीनी सोल २०६ कहांलों वरनों तरे वदन की
इयोति भक्त ऊपरवारों कटिचन्दयवगापाल ताटक सोहत मानों
रतिगति युगुलपरे मनफन्द । उपमा कहत नवनै कमलकी नाकशुक
मोहित भौह स्वच्छन्द । खजन भीतन तजत अतक अतिअति शोभन
लघु सकरन्द । कथादासप्रभु गोवर्द्धन पर अवमिलेमें देखे सुरेकचुकि
बन्द । भिजसेत बिहरत तूकरनी अतिनागर हरि मत्त गयन्द २०७
शोभा बरगान जाइरी माई जोमुख जीभहोई लखकोरी । नन्दराइ
की झंगरीलामे गिरिधरपिय बलरामकी जोरी । बडेभाग देखेनौतन
भई जोतक कहुं तेतीतेती थोरी । कथादास बलिबलि चरगानकी तन
सन फूत गावे नाचेहोरी २०८ कंचनमणि सरकत रसओपी । नन्दसु-
वनके सङ्गसमुखवर अधिक बिराजत गोपी । करत विधातागिरिधर
पियहित सुरतध्वजा सुखरोपी । बदन कांतिके सुनुरी भाषिनि सघन
चन्द्र झीलोपी । प्राणनाथके चितचोरनको भौहभुजंगम कोपी । क-
थादास स्वामी बशकीने प्रेमपुंज की चोपी २०९ कटितट मोहति हे
मणिदास । पीतकाक पर अधिक बिराजित न्याइ लजावत काम ।
कोहै न मोहन काचित मोहति चपल कटित भूवास । अनु छनुरत
बेगुनत कूजित सुनिराधे तवनाम । तेरे नीलपट ओढि रसिकबल्ले-
तदिवसके ग्राम । कथादासप्रभु गोवर्द्धनवर सुभगसीव अभिराम २१०
कैलधौलो लालरंगीलो देखनकिन काननआई । रूपनिधान रसिक

गिरिधरपिप्य हंताको लेनप्रदाई । लखनि छुं अथ न निमग्नवारी वि-
 यवता कदुमनिदाई । पिक्रमलि भंगकरत कोलात । सतय धन
 बहसुखदाई । रतिपति मृगवांछो खलनको कामलपवले संजयि दारि ।
 कृष्णादास प्रभुसुरन सुधानिधि कुर्यात नभायह-कारतिगाई २११ गांवरे
 गोविन्दसँग रङ्गनिशिजापी रोठलोचन उनीदें माजा बंधुकाक फूल ।
 मुनीह सुंदर मुजान गोठछानाय मिले सुरतकीहंठोलनासे लीलाप्रेम
 भूल । मदनकला अतिरसाल संगीतकला सुनि पुनि रूपराशि रोमी
 कौन तेरेमसतल । कृष्णादास स्वामिनी भोजभोग राधिका बदनउ-गेति
 निरखि नभसि मघन चन्द्रभूल २१२ सतेरेतन लागीप्यारे अंगकीओ-
 पमां रगमुनिमखि काहेकौ दुरावति । अपने सपान न गनति अजरको
 जैमेतेमे हमारत नयन चुराधात । योलहार सुहा सुखात न हँभोति-
 नको वातनि बौरावति । घरकभंदन जानात नागरि मनकी प्रीतिआं
 खिन समुझावति । मोहनताल गोवर्द्धनवारी सों रहमि मिलिकोकि
 लपुरगावति । कृष्णादासप्रभु नटवर नाथक रागक शिरोमणिमुनिधरि
 आवाति २१३ सतेरेमन भावत भवजगोपाल । खेलननोर हेमन-तायु
 वतिनि श्यामतमाल । गरीभापुण्य सन्मयके अनु किनु अर्वाधं करत
 प्रतिपाल । टुन्दावनभुवि सुरत सुधानिधि कूजित बंधारपाल । कृष्णा
 दासप्रभु रसिकशिरोमणि हृदुजनयन बिशाल । नदभुयसा कुचविच-
 धरिराख्यो गोवर्द्धनधरजा २१४ अरुताई आबतिहं रसमसी सुमुखि
 उरमिवरलचक्रतहार । पीतकाछनी कटित न बांधे तहभई गानो नन्द
 कुमार । मोरचन्द्रकामुकुटपरे शिरशुभातिभायकोधिगतादिवार । पि-
 यनकासुरली अपने अधरभरे करकूजित लोचनअनुसार । तनमयरसि-
 कलाल गिरिधर सों देखत दुहु नीदधि सुरत बिहार । कृष्णादासप्रभु
 अपने रूपरस वराक्रियो सबसदान उदार २१५ पिथके प्रीतिक्रा फूल
 जनावति रतेरे नवलोचनवल । अरुतोदय सरसारुह की ओजीतन
 चाहत तरुणा तेजवल । लहत नहीं अभ्यास अधर कापुनरभेजकोजी
 सुकंठकल । कृष्णादासप्रभु गिरिधरसंगस भोजउरत निश खुखप्रमजल
 २१६ तेरे उर सोहत सुनु तुंरपरिप्य सगमकी अमजलजुष्ट । कुचनट-
 परमंजरी बिराजत मनहं अमृतजलदीपी रतिमुष्ट । मुदाअभहात जीत-

ति अभ्युन्नत नत गोहति रसि कल न कलि कुन्द कृष्णादास प्रभु गिरिधर
राभीर नज क्रियो सरा उगतपद स्तुम्भ २१७ हरिभजु भासिनी सुत-
रा स प्राति । भरदकालकी घटा सदृश तूकत गरजति अलमानी । हा
पट्टे नररंग रायपाति शीनअमृत मधुबानी । बिरहअनल सशक्ति
प्रीतम रसिकराय सुखदानी । दूनधर्म अतिनिपुणा दूतिकामरत्नमुभा-
वाहअनी । कृष्णादासप्रभु गिरिधर पियको रबिकिकंठ लपटानी २१८
तेरे चपलनयन गुणायजन तैनीके । तापहरणा अतिबिदित बिअमहँ
प्रेमलत प्रातदलनागत पीके । प्रयासपवेत राते अनियारे गिरिधर कुं-
वरारिभद सुखजीके । सुनिकृष्णा गलसुरत कौतुकवश प्यारीदु तरावात
आपने पीके २१९ तेरे चरगाकिहो शरणा । राखो राखो दयाल मू-
रति रसिक गिरिधरधरणा । कानक्रोधज दावदाहेउ कुविधिलारयो-
शरणा । कृपादृष्टिजयावन धनप्रयाभ अबुजचरणा । निरखि नखमगा
उद्योतिनेभव मुदितअःकरणा । कृष्णादामनि तेरोईबलविरहजलनिधि
तरणा २२० अघरचंदितिलक श्रीरधके कुमकोतामहँमृगमद रसबिंदु ।
मानहुं प्रयास मनुलागि रहउ प्रयाससुंदर कोचिबुक मोहनप्रयासबिंदु ।
सखिनते दुराउकरत पोछत बिचकुचयुगमहँ अमजलबिंदु । कृष्णादास
प्रभु गिरिधर जाली रीझिदिप्रो चुंबन मोहत पीकबिंदु २२१ देखुशी
नयननि गिरिधरधर । सहचरि कहति द्वितिय सहचरिसों प्रेममुदित
प्यारी राधावर । भयताभयित अङ्गमनोहर बसनमनोहर कनककांति
हर । चितवत हरतविद्य युवतितके सर्वसुतनउदार कम नाकर । उपमा
कहा कहों को लायक बरगों कहा किशोर बेंयवर । सुरतअन्त ल-
टकत व्रजआवत कृष्णादास बड़भाग कलपतर २२२ राधारङ्गभरी नहिं
बोलति मोहनसुदन गोपाललालनों अपनों जोवति तोलति । चाहति
मिलन प्राणप्यारे को मेरोई मन टकटौलति । छाड़िहँ बहुत चातुरी
भासिनि कत हमसों झकझोलति । प्रातहान लाग्यो मुनुसजनी अबहीं
तमचुर बोलति । कृष्णादासप्रभु गिरिधरधरहित सारंग नयनसलोलति
२२३ सकाहि हायटेके ठाढो दधिमयनियां शीशालिये । भगरति भर
बातें कहतिढीठभडे दूजेकरहरिसुखनिपटनिकर्दकिये । चलतिफरि
चलति जाति नाहीं चलि जानतसतर भौंह किये । कृष्णादास प्रभु तन

भुक्तिपरतति नयनऔर बैन और दिये २२४ चलीजाति उतगैह को
 मुरिमुरिहरि देखतिइत । कबहुं कैर्याहिसस ठाढीहैं लावण्यहि सुधा-
 रांत कबहुं ओढ़ति आंवहु बनाय बनायहिग जितति । भूते शोच
 शोचिशोच रहतिपुनिडगरति फिरिडगरति पुनि डगरतिअतपराति
 कहु भलीती भर्मातिचित । कृष्णादास प्रभुके रूप गुण मन अरुभयो
 तातेसुरभि न सकति सकति अकतिहित २२५ कहेपांघति नाहिने
 कूटेकेश । शाशिसुखपर धनधाराकूटी कहुकजुचनी उरदेश । आंगण
 यहशोभा कहाकहुं निशिजागिआइऔरही । कुम्भनदासअतिओपते
 ओप भई गोबर्द्धनधर मिलव्रजयुवति नरेश २२६ सोतिनसांग बिधुरी
 शाशिसुखपर मनोनक्षत्र आये करन पूजा । अंचल फरहरात उर पर-
 काधी काम भुजा । विरह राहुते कूटि सकल कथा बिसलभई देखत
 मुखजा । कुम्भनदास प्रभु गोबर्द्धनधर अधरसुधा मिथोपान कंठमेनि
 उदारभुजा २२७ तूतोआतस भरीदेखियतहेरीरसी । रज तीचोरिताते
 आंखिनलागी अरुअकेली भामिनि कुंजबसी । धरनिरो रतेकसीकाहु
 जानी भवनको दिनगत हीनसी । कुम्भनदास गिरिधरके कंठकी यह
 जानतिहो तेतो गिरीपाई सोतिनसात लसी २२८ आज देखियतबदन
 डहडहेउ ध्यारी रगसगे नयना तेरे रंगभरे । मानहुं शरद कमल ऊपर
 उमद युगुल खजलरे । रसिक शिरोसांगा लाल सुशीतल कमलकर
 डरधरे । कुम्भनदास कहि काहेन भूले गिरिधर पियसबदुखहरे २२९
 काहेते आज बिधुरी ध्यारी क्यों न बांझहि अतक । भौंह कमान
 नयन रतनारे मानों न लागी पलक । रतिरस सुखकी फल जनाबति
 मदागंधकी चाल मतक । कुम्भनदास मिलीं गिरिधरकों मानों को-
 टिचन्दकी भलक २३० जानीमें आजुमिली ध्यारिसोते अपनो भाव-
 तोहीरीकियो । सकलरैनिरात रसरंग खेलत पलकन लागन दियो ।
 कंठ लागिभुजा देशिरहाने रसिक लालकों अधरसुधा रसपियो । कु-
 म्भनदास प्रभुगिरिधरको अंकभरिभेट जुड़ायो दियो २३१ रसमसे
 मयनतेरे निशि के उनींदे काहेको दुरतिजु-उलटी बातघ्रातही जो
 सुनींदे । बदनआलसमें आलसकी जम्हायबोवति अलसातबचनखीदे ।
 कुम्भनदास प्रभुगिरिधर मिलेतोहिं सकल अंगसेबीदे २३२ सखीरी

जिनिबा मरोवरजाहि । अपने रसजाती नचनकाकी निजुपर चर्चाति
गुनवाहि । सकुवन कथन अकाल पाठके अति व्यापुल गुणवाहि ।
तेरेगहज आनयहगति यह अपराध कहिकारिदायह अद्भुतसोमसदयो
विश्वाता सरसखप अनुमाहि । कुंभनदास प्रभु गिरिवर सागर देवता
उमगेताहि २३३ नदनदन के अकते मुरली तुम्ह चतुर हरीत । नूपर
मुखसूदिके अकनअकन पराधरनि धरति । कानक बलय कंकन भुजा-
नियुगउकेकरति । कुंभनदास गिरिवरके मुद्रित नयन देखति चहान
मंदहास रसजागतते डरति २३४ गगारनन्दबुमार मुरली हरत नजानी ।
गिरिवरधरके अकते अचानक लई राधिका सयाही । ब्रजमुनशीत-
तननि मुद्रित करि नूपर कंकनधानी । कुंभनदास मुरकागी नन्दगति
अकनहि अकनप्रयानो २३५ तेरेतनकी उपगाकोदेख्यो में विचारके
कोउनाहिंन भाँसनी । कहा बपुसों कचन कदलीकहाँ केहरिगज क-
पोत कुंभापक कहांचन्द्रमा और कहांबपुरी दामिनी । कहां कुंभा-
शुक बंधूककेकी कमलया आगे श्रीदेखिये सर्वांग कारिनी । सोदण
रासकरिगिरिवरनकहतराधापरम भावतितूहै कुंभनदासस्वागिनी २३६
तोसोंजो रसमेंकछुहंसिके कहेउसखीरी तू करतिसान । उतनेही को-
काहे कोहूमति गोवर्द्धनधारी प्यारो मुखनिधान । मेरो कहेउ करि-
छाँडिअटपटी सुनुरीतजहि अपनोसपान । कुंभनदास स्वामी सो प्यारी
नकरिनिदान २३७ जो तोसोंबातकही पियतेरेतो तू काहेको रिझानी ।
प्रासानाथगों कीचपारे सोईअयानी । जाचिनु रहेवनपरेछनतासोंको
रूमियेसयानी । कुंभनदास प्रभुगिरिवरनकहे सोईकीजिये ड्योरहि
येहृदय लपटाणी २३८ मुनिगोपाल सकब्रज सुंदरि तुमहिं मिलनको
बहुत करति । बारबार मोसोंकहतिरहतिहै वाकेजीयवा होतअरति ।
तुमहिं जपति रहति निशिबासर औरबात कछु जियन भरति । प्रया
सखखप चहुँटि चितलाग्यो लोकलाजते नाहिंडरति । होतनचैनवाहि
एके छिन अति आतुरचित बिरह भरति । कुंभनदास प्रभु गोवर्द्धन
धर तुमकारन नवयौवन गरति २३९ तेरे नयन चंचलबदन कमलपर
मनायुग खंजन करत कलोल । कुंचित अलक मनोरस लम्पट धरति
आये मधुपनिकलोल । कहाकहों अँगअँगकी शोभा खभीन परमत

भासकपोल । कंभलदास प्रभुसौजन्यपर देखात गार्डे ननु प्रयोजाल २४०
 न्हानका ग्योले कंचुकीके कयना । सन्मुखने पिप अनीकरोखीव
 तबअंगुरीदीनी विनदशना । सोऊत तनकरिषत छैवाइ जीन्हें और
 वसना । कंभलदासप्रभु सौजन्यपर तयहिनाल लगेहें हंसना २४१
 अंबलगीका कहूंकहलागी जयनीन भव्यीकरति सङ्गती । सोहनलाल
 सोतनलपारी सईसुभासिल लियेहैली । जैनारसमसे अवरऔरछाव
 चन्दनयोगातपैसुक । कंभलदासप्रभुसौमिल भासिनीकहतनबनेसुख
 भईमति सुक २४२ पियसंग जागी दृष्टभान दुलारा । अंगअग्यालभ
 जम्हाति अतिकांजअदगते भवनसिचारी । सारगजात मिलीसखिऔरै
 तबहिँ सङ्गचित्तन दशाजिसारी । छीतस्वामिनी मांकह भासिनीतोहिँ
 मिलेनिशि गिरिवरधारी २४३ राधानिशि हरिके संगजागी । यमुना
 पुलिन सवन कंजनमें पियअँत मिलि मिलिके अनुरागी । कुटिल अ-
 लकवगरी जवदनपर दोउकपोल पीकाँलती पागी । छीतस्वामिनी
 उमगि उमगिके गिरिवरलाल उरनिशों लागी २४४ बालकृष्णजाराहु
 मेरेछारे । वैठीसेन कहतिहै जननी बारबार मुखकमल निहारै। सुन्या
 बचनमाताको जयहीं राजक रानिक दोउगेन उधारे । लियेउठायचक्र
 भरि तबहीं उथादकमेंबंदन पायारे । साखनसिओ और मलाई ओ-
 ल्योदूध तुमलेउ दुलारे । बिबधभाति पकवान सिटाई आननमेलअ-
 पुनपोवारे । मुखेपरखारि भँगुली पहिराई शिरऊपर चौतनिजबधारे
 झोलत अजिर मुदित मनमोहन ब्रजजन ओटभई जुनिहारे २४५ सोद
 लिये जननी मुदितमन बालकृष्णको करत शिंंगार । भँगुली लाल
 जरी पहिराई शिरकुलही धारति यकसार । हँसुली कराठजाटित नग
 मानिक अरु सोहत भोतिनके हार । बाजूबन्द लालभुज राजत जगम
 गातहै परमसुहार । पहँची हाथनि परम बिराजत ताकी शोभा को
 नहिँपार । मानों अहिंसुतके फाँरा ऊपर मशिकी डयोतिभई उजि-
 यार । कटिकरवनी बिचिबबनी कवि पगजेहरि नूपुर भनकार । घु-
 दकन घायत सनिआंगनमें ब्रजपति देखि लजानोमार २४६ बालकृष्ण
 को यशुमति लिये गोपसिलावे । सुंदर मुखकवि निरखिके सनमेंसु-
 खपावे । चुचुकावे अँगुलकरे बहुलाह लडावे । कबहूँ अंगरी लायके

प्रमत्तता गिराये। मुदरा चयन उतावला रसमोह गिराये। जो नमो
 जननीतले सग पातकाये। पातक भरी जहिराफा रसमोह गिराये।
 ले। कठकटुला हँसला बर्बादाधी सुधाने। प्रह मुहल खल भावना
 देवनको आवे। अजिबो रिर रसमोह नमो रसमोह गिराये। २५७
 कहं यकहितकी तोतो। आगिबो रिर रसमोह नमो रसमोह गिराये।
 कहिकाहि मानो। सूरज बशमया धूपधरथ तनको प्रथमोद जागि।
 रामभरत लक्ष्मण भद्रकृष्ण लाल गुरुआगनको जारि। निजा निज समर
 साराकारके अरुतारी शोतमकी नारि। बिधिजा जा प्रशिवपनरलोरो
 तनजननमुता माला उरधारि। कर्मा बिबाद परकाजब आगिभरतमये
 मातुलक पास। नृपमन शोचिकाल उगमयागे लेखि। राजरिह पीरगम।
 कंकथि जनन पिताको आधा चलै देवक लागी जगुनारि। लक्ष्मण
 सहित रावरा नारी जोजन जनन आप करनारि। एककटा जिचरत
 वियकेमंग रावरा हरनारयो तिहिकाल। उत्तरो सुनत सुनकीस्यामी
 चौक कहैउडे अनुयतल २५८ सुनसुत सकवाथा कहो ध्योरी। फलन
 नयन मनआनन्द उपज्यो रसिक शिरोमशिसेतहँदारी। नगर गज
 रमनीक अथवाया अनेमहलजहँअवराअटारी। बहुतलो पुरनोआगि
 जव भातिभाति सबएत नजारी। तहां नृपति रसमोह रसमोह जाक
 नारि रतीनि सानकारी। कंकथी कंकथी सुनिना तिनके जलमतरोमुत
 चारी। चारिण्य रागिक प्रकटे तिनमेरक रासमतधारी। जनकपनम
 प्रगाथियो जानकी प्रिभुवनके मजगुपीत हँदारी। राजपुत्र ओऊकथिले
 आये सुनतजनकपनतहँ पसवारी। अनुयतो रिर भुग्यभारि नृपनकोजनक
 सुतार्तिनतबजरनारी। गगच्छगुताजबपार नृपतिके तबकेकियसुखमेला
 निवारी। बचनगांगि नृपहां यहलीनो रघुपतिके अभियेक मन्हारी।
 तातबचन सुनितउया राजाजनभाताघरानमहित बनचारी। उनकेजात
 पितातनुत्याग्यो अतिलयाकुल करिजीव निमारी। चित्रकुटपाय भरम
 मेलन बनपगपावरी है करी हपारी। युवतीहेत कपटभृगु सदिउ ना
 जिय लोचन गर्वप्रहारी। रावराहरसा कियो सीताको सुनि कलया
 मयतींद निवारी। सरपयास तव रक्त चापको लक्ष्मणा देह जननिध
 सभारी २५९ आगिनि जगमंजरेखन गजवकिशोर जवलीकशोरी।

अति अनुपम अनुरागपरम्पर अतिश्रुत भूतल परजोरी । निद्रम
 कर्तक विविध निर्जित धर नवकपूर पराग न शोरी । कोमल कि-
 षा तय सेनसुपेग लतापर श्यामल निर्बोद्ध शोरी । मिथुनहाम परि
 हान परायण पीक कपोल कमल परजोरी । गौरश्याम भुज कलह
 मनोहर जीर्ण वधन मोहनजोरी । हरिउरमुकरविलोकि अपनपो
 विधम विकल मानयुत भोगी । चिबुक सुचारु प्रलोई प्रबोधित पिय
 प्रीतिनिश्चजनाद निहारी । नेति नेतिवचनमृत दुनि सुनि लालता
 दिक नेत्रतदुरेचोरी । हितहरिवंश करतकरधननि प्रयायकोपमाला
 बाल गोभी २५० अतिही अमृतातेरे नयन नलिनरी । आलसयुत इत-
 रात राग मधे निशि जागर मलिन मलिनरी । शिथिल चलकमें
 उरतगोलक गतिविधियां मोहनमृग सकतचलनरी । हितहरिवंशहंस
 कलगांमनि रंभ्रम देत भंवरिन अलिनरी २५१ शोरी राधासोहन की
 जोरी । इन्दुनील मणि प्रयास मनोहर सातकुंभ तनरीरी । भाल बि-
 शालतिलक हरि कार्मनि चिकुर चन्द्रबिम्ब शोरी । गजनायक प्रभु
 चाल गयन्दन रात लुब्धमान क्लेशोरी । नील निचोल युवातिसाहन-
 पट पीतकरुणा शिर खोरी । हित हरिवंश रत्निक राधापति सुरति
 रंगभेजोरी २५२ ॥ गगविनायक । चर्चो ॥ आज्ञा नागरी किशोर भाक्ती
 बिचित्र जोर कटा कहं अंगुष्ठा परग साधुरी । करत केलि कंठमोल
 बाहुदंड गंड मंड परसि सरस राग गंडलीजुरी । प्रयास सुन्दरी बिहार
 वांसुरी मृदंग तारसधुरघोष तूरारिद किकिनीचुरी । देखत हरिवंश
 आलिनित नी सुगंधचारि पारिफेरि देतप्रान देहसें दुरी २५३ मंजुल
 कलकंजदेवा राधाहरि विशद वेधराकानभ कुमुदबंधु शरदयामिनी ।
 सांवल युतिकनक अग बिहरत ललितकसंग नीरदमणि नीलमध्य
 लसति दामिनी । अरुणा पीत नंदकुल अनुपम अनुराग मल सौरभ
 युत शोश अलिनसन्द गामिनी । किशलय दलचित्तसेन बोलित पि-
 यचतुर्वेन भानराहित रातिपद अणुकूल कामिनी । मोहन मन मयत
 मार परसत कुचनी बिहार वेधययुत नेति नेति भासिनी । नर बाहन
 प्रभु सुकेलिबहु विधि शर भरति शैलि सुरति रसरूप नदी जगत पा-
 मिनी २५४ चलोहराधिके सज्जानते हितसख निभान रासबच्चो प्रयास

तत्कलिलं नन्दनी । नृत्याति युरती समह राग रंगआति कृतज्ञ बाजल
रमन्तुग सुरालकान नन्दनी । बंधीवट निकट जहां परम रमया भूमि
तहां सकल सुखदबहै मलयनायुमदनी । जाती ईयद बिकाश कानन
अतिमे सुवासराकारनिशि शरदमासनिमल चांदनी । नरबाहन प्रभुन-
हारिलोचन भरिघोषनारिनखाशख मौंदर्यकातदुख निकंदनी । कि-
शलय भुज प्रीयतेलि भासिनी सुख सिधुभोर्लनवानिकुंज प्र्यामकेलि
जगत बंदनी २५५ ॥ रागविलाकल ॥ निरखसखि विधिमुखनयनसिरात ।
रति विपरीत भीतप्र्यामल परशोभित गोरेगात । लटसे लटपटसे पट
अरुणउरमह नवउरजात । मुखमें अधरबाहुनि में सुदृढबंधबलिजात ।
चन्द्रनदन मा नन्दकिशोर चकोर पिय तन अघात । व्यास स्वासिनी
पियसंग विहरति मानगो गदैलात २५६ प्र्याम राजरी कहाँ अति कोमल
सरल किशोर । मुनि कुमारी महाअति कठिन कूटल नखाशख
अंगतोर । दाह कपोलमृदुल संजुल अतिकहां तुम नखरसकोर । कहाँ
विष्णावरजलधर समकहां दशनअन्यारेओर । कहाँ कुंवरको सदय
हृदय कहाँ तब कुचपीन कटोर । कहाँ निराग सनाहु कहाँदृढबाहन
बंधन जोर । कहाँ दीन आधीन कहाँ तुव बंक चितवनि चितचोर ।
व्यासस्वामिनी रमिक प्रीतज के जाते काहे उषोथोर २५७ ताहे दोऊ
कुंज मङ्गल के द्वारे । राधासोहन मोहिं लागत है तू देखियो नेकु न-
यन भरि शोभित अंग सुहारे । अति आतुर तोहीतन चितवत इकटक
पलक लागत नहिं लोचन मीनलगे उयोंगारे । व्यास स्वामिनी चित-
वतही चुम्बत ललित बिहँसि उरसिपियलई बिहरत राख्यो रंगधारे
२५८ साहनकी देहीउलटीरचीरी । नयन नीर सरबडतते बिरह दहन
ते जगत बचीरी । भई प्र्यामते पीन धरनि दुहि तर्साया प्रताप तची-
री । हा राधेवरश्रवणा सुनतत अजहुन निठुर लचीरी । चन्दन चन्द
अवतवन पाज करि दुखकी राशि रचीरी । तो बिन अनत न शरणा
भीतकह भीत सभा बिरचीरी । इतनी मुनि उठिचली अलीसंग सुगंध
नचीरी । व्यासस्वामिनी रति रसवर्षत सुखमें कीचरचीरी २५९ येसी
कुंवारिकहां पिय पाई । राधाह ते नखाशख सुन्दरि अबलों कहाँदु-
राई । काकीनारि कौनकी बेटीकौन गांउते आई । मुनीन देखी ब्रज

२७६ शूरमागर रागकल्पद्रुम स्थित्यवधिनिर्णय ।

पुनः शून्य भूमि ब्रौंन हरति पराई । याको सुभग सुदान भाग्यवशात् ला-
ग्युर्वति मनसाई । याकी के रस बगहै तुम दृष्यमान सुता प्रिसराई ।
यह बिनोद सुनिदेखन आई रैचिक कंठ लपटाई । दयास खासिनो
बिहँसि मिली तहां मरम मृगधमचाई २६ ० कहे न पत्येत्त कोऊ बात ।
प्रयास काम बग गोरेहै गये राधाकेसे गात । जेनाई ध्यानधरेउ तेसाई
भयेअधर गंडउरजात । नख शिख अंगअंग मोहिइयत देखत बैनभिरा-
त । वह गुणा रूप न ताहमें मखि फूल भरत मुसकात । राज भराल
गत निरखत मोहे रतिमनमिज संघात । अपनी जोरिहि मेल्यो चाहत
ललितादिक बलिजात । तूहीरममें बिरस किया अब कौन काज फ-
ठितात । कंठबाहुबगि चली अली के सुनि अजुत अकलात । दयास
स्वामिनो परमत मोदन धरति गिरे लपटात २७ १ भैरवि प्रियरे बैननि
भोर । बैनकहत कासों पिय हियते बिहँगत कतहि किशोर । दुख
अत भैरत तुमको नहिं चुंबन देतन घोर । काहिदेत ध्यान धन क-
रगहि ले कंचकारअकोर । काकेपाय गहत मेरेप्यारे कामों करा
निहार । कागहि बिकलकिये नदनागर तुमपनिहां तुम चोर । निज
बिहार आरोपि आन पर कोपि सान गह तार । दयास खासिनो
बिहँसि मचाई सुरति मगुर हिलोर २८ २ संदेशोवाहेउ इतिका जानि ।
प्रगबोले सब अग दिखाये नागरि लेहै जानि । बदन पसारि निभयनि
बिनु चितयो शिरऊपर धरिपानि । कानभुक्ताय गायहँपि नाच्यो
धरति गिरी मुरभानि । पुर्लकत कपितखेद भेदतन अंसुबनि आप-
पुचानि । मुद्रित अत्रा उमास कंठ धरि फारति पगु दुखदान । नन-
गाला तोरत करजोरत पांडपरत मुसकानि । शीतल जलभरि कमल
उरहिभरि कदलि खंभ लपटान । दयारो बिपदा सुनि सुनिवत तजि
छाँडि जीयकी बानि । दयास दासके समुक्ति बिनोदानि कंवारी जि-
वायो आनि २९ ३ ये हरि मोक्ष न बिगारन कोतो सेां न संवारनको
मोहि तोहि परी होड । कौनधों जीते कानधों हारेपरी बदिन छोड़ ।
तुमसाया नाजीपसारी बिचित्र मोहिजन मोको भूल्योकोड़ । कहि-
हरि दास हसजीते हारेतुम तऊ न तोड़ २९ ४ प्रिया पिय के उठवेकी
कानि यथा न जाय सवते न्याये । मानो योग बैन इकठारे है न भये

न्यारे । वार लटपटे आलो भौर सुध लरत परस्पर कसल ज्यों न
रश्मिजरीत आभा न्यारे । हरिदासके स्तामीभ्यामा कुंजविहारी पर-
दास कोटि अलग कोटि ब्रह्मांड वारीकथे न्यारे २६५ ॥ जागो
हैं बेरबड़ी । आलने ली खेली पियकेसँग अलक लड़ेकल लाइलही ।
तरनि किरानि रश्मिहैं आइ लगी निवाइ जानिसुकर पर तबहों दोह
रही अही । बिहारी दास रातको बरने काबि जो छवि भोमन सांझ
रही २६६ ॥ गग बिलावत । नवंगे ॥ जिन जगावै युगुल नवल निजुनह
मुख । आगे आसनि सैन नैननि निर्वन प्राणा जीवन मेरेमन भवनद-
वनमुख । अमित अमितबिहार सुरतमुखदसुमारये मुकुमार तनभर्नाह
दिये लियरहे कव । श्रीवराबिहारनि दासिलोललोचन लार्सानराख
मुखरानि हंसिगिलत सुन्दरसुमुख २६७ ॥ गगचितावन ॥ जागोजनहरये
भनमाने । अगारत जुरतकिशोरकिशोरी बड़भोरमें बतवतात उरमाने ।
ओहे उतारि लसन सधर्माश पलटिलेत पहंचाने । बिहारीदास
दपतिकोमुख निरखतसखी वारीत तनमनप्राने २६८ कुंजमें नरसयन
प्रियापिय बनेहैं विचित्र बर बागे । चंदन बदन बिबिध मतरंजन
अजन की छवि भानोंचित्र में किये मृतन अंगअनगनिदागे । अपन
अपनेरम आनन्द बिबश भये आलसबिनु अनुरागे । बिहारनि दा-
सिगायोभायाजु इकमेन पुनि हंसहंसिहंस उरलागे २६९ योहोंम
हंसिकर्हातहैं बातसुनात न तबनेहुंनपत्यात । कोमलकरनसां मुखसूँद
राखत अवगानितनजात । बचन रचनबनतनाह न पुलकतमजगात ।
बिहारनिदासिके नैननिमें मुखसैनिलटपटात २७० आजुकी छविअंग
अंग रहीफबिसेसीमतिकौनकीकीबरमेकगि । उपसा आहिन काह
बताऊं गाऊंइन्हें सुनिजाहिंसवैदबि । हंसतखेततमिलतसकल निशा
गत लटकचलत पशुधरतफबि । बिहारनिदाससंगसमुखसूचतिदेखिरी
देखिआनन्द उदैरबि २७१ भाननी मनहरणा मनोहर । बचन रचन
रुचि राचिरहेजुरि कुंज कूटीतन भगन प्रेमभर । अंगअंग आलिंगन
चंबन हंसत रमात सहज सुंदरवर । बिहारीदासि दुलरावति गावति
युगुलकिशोर सुधश सर्वोपर २७२ तमनमोहनीरी मोहन मोहेरी अंग
अंग । अगसनी अलकें भलकें बरउरपर कूटीलट मुखहंसत लसन दश

नाचलि भजज भृकुटिमंग । शृगमधुपलों प्रयामकाम सवतजे बनवेली
 धाम तौरभसुर शब्दमुनत फिरत भंगसग । बिहारनिधामि स्वामिनी
 मुखरासि रहसि फिरि चितयो हितयोमानिआनि उरअंग रंग अनग
 २७३ सुदित मोहन अंगमोहन को मनमोहतीते मोहेउरी मोहनायदपि
 रहत हंसतखेलत अंगसग निशिदिन दिननु तजिसकत मोहन । अद्भुत
 रीतिजीति प्रियपै मनबच क्रमकिये कहति तुमसो सखी करपद पर
 अरोहन । बिहारीदास कीस्वामिनी सुनिरही मौनचितै मुसिकारि प
 त्याति नसोहन २७४ मोहनलाल रमालसो मोहिँ अनबोलेहु बोल्हो
 भावे । जब कबहुं होरहों मौनहैं हँसि मनमोद बढ़ावे । तान अतीत
 अनागत अंगमँग मिलिमधुरसुर गावे । बिहारीदास स्वामिनीके रस
 रसिक रमहीमें रसउपजावे २७५ बिहारनि लाडिलीहौ लालहिंसक
 ल सुर्वाहिनिकी दानि । चितवत चितपोयित तोयित तन मनमनसा
 रस मानि । दरश परश रसहाम परस्पर बिचित्र तैहारीबानि धन्य
 जनम जानत अनुरागी जब डरलागतआनि । बिहरतबन रतिमानि
 निरन्तर निदरि लोककी कानि । बिहारनि दामि लड़ावति दिन
 दिन हिलाहियेकी जानि २७६ मेरीस्वामिनी प्रसन्न बदन मांवरौख
 खरासि । इनहिं लड़ाऊं अनुदिन दिनदिन लहोमाबाहिफुलीफुली
 टहलकरो मनके मननिहुलामिअनन्य श्रीहरिदासि विपुलबलबिहा
 रनिदामि २७७ सांवरौ नवरंग । तैसी ये तनघन दामिनी द्युतिकुंवरि
 किशोरी गोरीकोसगु । यहरस रसिक उपामित स्वार्तिहिं चालकले
 जलयाचत लगतनंग । बिहारनिदासि अनन्य भजनबिनु सावन आन
 करतन कहुदंगु २७८ प्रिया प्रयामसँग जागीहैशोभित कलककपोल
 ओपपर दशनछाप छबिलागीहै । अवरनिरंगकुटीअलकावलिमुरतरंग
 अनुरागीहै । बिटुलविपुल कुंजकी क्रीडा कामकेलि रसपागीहै २७९
 रसिकरमीलीभांतिछबीलीनयनरंगीली तूपियपैतेआईअलककंचुकी
 छुटीचारुचारि चूरीफूलरी आलसमदन लूरीलेत जम्हाईइगमगचरगा
 धरति मानोपिय अंकीभरति चितनहिं तरति बहि छबिसें लुभाईथी
 बिटुल बयउरवनी नखदेख रजनोके ज्योशिय जानिमेंपाई २८० प्रया
 मचलहु लडैती प्रिया कुंजनि करहु केलि । प्रयाम तमाललाल नव

ईकपारोपाल तुमजू जनजल नथ कनककीर्त्या । ईविष धुधुम धन-
रचित आठुआवन बोलत धुधुधे विल भव । रहें तें भौल । निठुल
विपु नरमिहारीतिहारिभयमुनाकेरीसुखावनासखेलि २८१ आवत
लाटली लाल कूले । कुञ्जकोलि नवरंग बिहारी सुरत हिंडोरे भूले ।
निशिजागे अलसात रंगभगे पदपलते गतिभूले । निठुल विपुल पुनक
ललितार्दिक दिगदखत दुसमूले २८२ सुनहुरासक टुन्नावनको यश ।
कुञ्जकोलिभासिगी मनोहर परबशभयनाहिल अपनेपश । यद्वयगमित्य
नगीन युगल मर दुसदल नित्यअवत सलितालम । बिटुलविपुल विनोद
बिहारी को गुणा किओ चाहति रसनारस २८३ सुन्दरश्याम सुन्दर
बहुली वा सुन्दर बोलत बचनरनाल । सुंदर चारु कपोल आतिसुन्दर
उरज बनी सुन्दर वनमाल । सुन्दर चरगा सुन्दरहै नखसर्गा सुन्दर
कगडल डेनजरात । सुन्दर मोहन नयन चपल किये सुन्दरश्रीवा बाहु
विषाल । सुन्दर गुरली मधुरवजावत सुन्दरराधे हैं गोपाल । सुरदास
दम्पति आतिराजत ब्रजकोआवत सुन्दरबाल २८४ तुमजागे अरेला-
डिले गोकुलमुखदाई । कहति जननि आनंदसों उठो कुंवरकन्दाई ।
तुमको माखन दूध दही मियी हों ल्याई । उठिके भोजन कीजिये
पकवान मिठाई । सखाद्वार परभातसों सबढेर लगाई । बनकोचलि-
ये सांवरे दक्षिर्न दिखाई । सुनतमचन आतिमोदसों जागे यदुराई ।
भोजनकार बन कोदले सूरज दलिजाई २८५ आजु प्रातही तुमरातया
त कहत बल कन्है या । जैमधु तपिक दायि बोलतहै अरमपरस सुनिमु-
निमुखषावत भावत नन्दप्रशोदासैयाबचनरचन कहततमुक्तिसमुक्ति
परतनाहिं कलुषीबीच दाऊजन कहत बेरीगैयारीभिरीभिहरखि
हरखि पुतकि पुलकि उरतावति चूमतिमुखबारवार लेतपुनिबलैया ।
बहुनिवि पकवानपान खीरनीर भोजनघृत साखनमिआखवाय और
प्यावतवैया । बलिबलि ब्रजबनिता जहाँदासोदर हित चितवतहरत
लुरत भूषणपट नटवर दोउभैया २८६ साईकीन गोपके येदाऊ नागर
होता । इनकी बात कहों सखीतोमों गुणानि बड़े देखत के छोटा ।
अग्रज अनुज सहेदर जोरी गौरप्रियाम ग्रन्थित शिरचोटा । गन्तदास
बलिबलि मूरतिपर ललाललित सबही बिधि मोटा २८७ नयननिकी

चंचलता कहा। कोने भीनेरंग कोनके डो प्रथम इससों कत दुरावत।
 और के बदन देखनको नमलियां किधों पलकनि सधिराखि प्यारी
 ताके भारभरेनये आवत। मधुप गन्धलुब्धसेजे समीप निशि बसे स-
 गलागे आवतरति कीरति गावत। मूरदास मदनमोहनतन को प्रीति
 प्रकटभई मुखनहिं बनतचनावत २४८ और भये मुखदंखि लज्जाने। रसकी
 कोलि बालमुख सोहत सरनयनन अरमाने। काजरखे बनीअधरनि
 पर ललितकपोल पीकलपटाने। मधुपमनोकंजनिपरदेहेडि न सकत
 मकरंदलुभाने। देखतिहारअलंकारविनगुण आयेजीति रगाधीर मया-
 ने। मूरदास पियपांवधारिये जानति हांपरहाथ बिकाने २४९ भीने
 पदको धूँघटतामधि दशरेभारे लोइननीके लागैरी जियअंजन। कहु
 कसकव गुरुजनकी ताते ओटादये अवलोकिति पियतन चंचल मानहुं
 जानपरे अकुलातखंजन। कबीलीकी कबीली पंखियांरी जिनकेक-
 राक्ष तरंगनिमें हरिकोमल लयकोकरन मंजरा। अति चतुराईसों चतु-
 रविहारीके चितकोलागैरी निरखनिरखि अनुरजन २५० तुंवमुख
 और राम्रमाविर्निच तुलाकरितोख्यो ओखोअकाश गयोभुकि धर-
 नीरहेउ निकारैको भारोभयोरी पला। याहीते भाष्यहत बढ़तहै
 देखिदेखि तेरो बदन निर्मला। तोसम नाहिंन पूजिये सबजिनि क-
 लंकी नामधरे निशिध्रमग फिरत न रहे अचला। तानसेन प्रभुसरल
 बगकरलियो रूपआगरी रूपकला २५१ अहोटेहीगा गरिनागरिनारि
 शीशधरे जैसेटेहीपागको राखेरहत चिकनियां। दुरिद्वार मुरिमुरि
 बतियां करतिअगिली पकिलीनसों दोउ करतारीभारति सकनिसों
 नयनमैन बतियां। लाहीको लहंगा पचरंगचूनरि कंदहरा और ता-
 बीच सानियां। तानसेनप्रभु रोभियकित भये तुहींसबनि में धानव-
 नियां २५२ चूनरी रो प्यारी पचरंगपहिरे मुपनियां गगरियाभरे
 आयतिहै मुदोजहाय चैंथी धरे। गोरभजनमें गाहेबरा पुनिदंडनिमें
 श्यामचुरी हथेरी नहन मेंहदी सों गहिरोई रंगकरे। प्रवासनि बेसरि
 मो तोहालत मुखप्रस्वेद जैनाभींइ चढाये काननदीरे। गरे मोतिनलर
 कुचउतंग नितंबभारी कटिछोलीचलत लफिफिपरत उरदेनीपाटभी-
 जेरीबहुत फुलेलधरे। जेहरिज्योति मूरज सोहाउपरीपाय महावर

नर्तानन्त्योति अरुगुदनागुवाये तावतरंको गभीरवती करतहंसोहंसि
 बोला हरे हरे २६३ नालपट पहिरे कंचन गान प्राप्त अलसात नवला
 रा आवर बाललाल संग तागीपाती रसकेलिनिकसि ताडीभई गधनदा
 जकेद्वार । भुजनि जोहो सेंडाति जम्हाति मन्त्रपुष्टकाति खोजतनाति
 लजाति सरली लगि मुखशशि बिथुरे नार । अरुगानयन आलस युत
 बैनग्रधर अंजन गी पीकडाप युग मृदुल कपोलनि नखछत उरजड-
 तंग सुभर कंचुकी कवचकसे छुट्टये सांगागगा मुक्ताहार । शिथिल
 बसन कटिगाथिल रसन डगमगी चालउरमाल मरगजीचरगा महा-
 यर कहुंकहुं कृत्यो यहकबि निरग्विनिरग्वि त्रजजन बलिहार २६४
 विभंगअगरगभरे विराजित हरिछबिसो ब्रजवतितानकेकरजारे । तेही
 सांचत गतेलेतरेखा प्रसारा मोहित प्राणचरगा धरत थोर थोर । क-
 लहुं रिक्तान्त श्यामाहि प्यामशेवत नयन ओर भौंहमारे । नटवरभेष
 धरो रामदासकी प्रभु मोहन नायक जाको नितनितंत शिव निरंजि
 सुरनरगुनि भाडभारे २६५ ब्रजते निकसि हरि बनको चलत केती
 शोभाराजत गायनलेत संभारि । अपनी अपनी धेनुपाछे मिलबनमिस
 देखनचली जेचातुरही ब्रजतारि । सबनि पैते लेतबरगा बरगा निटेना
 करत सौंपत सबबाल वृन्दाई आपुनही सुरारि । रामदास प्रभुवे च-
 ले बालक संग भेषधरे जैसे फांदत दादुर बोलत चातक नितंत वही
 अनुहारि २६६ हमपर यहही गईबी बाजत । लेडारें यशुदा के आगे
 जेतुस फोरें भाजन । दुरीनात सब प्रकट करिदेत नेकहु आईलाजन ।
 रामदास प्रभुदुरे भवनमवि आंगन लागी गाजन २६७ मोहन मोहेड
 रीलातन कहिकहि थोरीथोरी बतियासांगतदान दिशो सरवसुरिस
 रायगयो जियते मैनजान्यो हेडगी कौन भतियां । अटपटाय सुरभा-
 यरही देखत किशोर मोको भूलीरी सबै गतियां । रामदास प्रभुको
 अंगअंगनार तातेभुजन चापिलै लगाई छतियां २६८ चितवत क्यों न
 री तेरो चितवतु लागतुकहा । सकनिपै अगारि दान सांगत हारितुइत
 नेहुको अति कठिनकहा । उरध घोवकरि दग सूधेकरि मुखपट उत
 करि निरखि नयनभरि करतहहा । इनहुंको कितनीये कीजे प्यारी
 धोंधीको प्रभुहेरी चतुरचहा २६९ नयनतेरे अति रसमाते अरुगान-

हगा डोर लगात सुहाते । कयहुं लजात कबहुं अतरात कयहुं पुनि पिथ
 सतमुख चितवत इतराते । कयहुं क सकउक देखरहत कयहुक आपु
 नहीं सुँरि सुँरि सुँसिकाते । रसिक प्रातरा मँग निशिदिन विलासत नेक
 नहीं सकाते ३०० खेलत में को काको सुँसैया । हरिहारे जीते श्रीदासा
 परवशाही कत करत हमैया । जातिपाति हमते बडेनाहीं ना हम बसत
 तुम्हारी छैया । अति अधिकार जनावत याते जाते अधिक तुम्हारे
 गैया । छविकारे तासों को खेलै रहेधैठ जहँतहुँ सब सोइया । सूरप्रयास
 प्रभुखेस्यो चाहत दानिदियो करि नन्ददुहेया ३०१ खेलत प्रयास
 पौरिके बाहर ब्रजलरिका मँग सोइतजोरी । तेसैइआपु तेसैइसब बालक
 अतिअज्ञान सबकी मतिभोरी । गावतहांकदेत किलकारत हरिदेखत
 नंदरानी । अति पुलकित गदगद मृदुबानी मनमन हरथि मिहानी ।
 मादीले हरि मेलि बई मुख तवहीं यशोदाजानी । सांतीलिये क्षीर
 भुज पकरेउ प्रयास लागेउ डानी । लारकन को तुम सबदिन भुठवत
 सोमांकहा कहौगो । मैमादी नहिँआई मैया मुखदेखो निबहौगो ।
 बदन उधारि दिखाई विभुवन बतघन नदी सुमेर । नभशाशि रविगुल
 भीतरहैं सब सागर धरणीफेर । यहदेखत जननी मनबयाकुल बालक
 मुखका आदि । नयन उधारि बदन हरिमंछो मातामन अबगाहि ।
 भूतेतोय लगावतमोको मादी सोहिँन सुहावै । मूरदास सब कहति
 यशोदा ब्रजलोकन यहभाषै ३०२ कहतनन्द यशुमति सुनिचात । अ-
 ल अपनेशन शोचकरत कत जाके विभुवन पतिमों तात । गर्गसुनाइ
 कही जीवानी सोइसोइ प्रकट होतहीजात । इनते औरनहीं कोउसम-
 रश पेठैलैं सबहीके नाथ । मायारूप मोहनीलाई डारेभूलेसबयेगाथ ।
 सूरप्रयास खेलत तेआये साखन सांगत देमाहाथ ३०३ तबहिँ यशो-
 दा साखन लयाई । मैमथिके अबहीं धरिराख्यो तुमहिँकाज मेरे कुं-
 जरकापहाई । मांगिलेहु येहीविधि मोसों सोआवै तुमखाहु । बाहर
 कबहु कबहुजनि खैहो डीठ लागी काहु । तनक तनक कबुखाहु ल-
 लाभेरो उयाँबहि आवेदेह । मूरप्रयास अब होहु सयाने बैरिनकमुख
 खेह ३०४ प्रथमकरी हरिमाखनचोरी । खालिनिमन इच्छा पूरणा
 करि आपुभजे हरि ब्रजकीखोरी । मनमन रहेबिचार करतप्रभु ब्रज

घरघर सबगाउँ । गोकुल जन्तुलियो सुखकारण रावकेमाखनखाउ ।
 बालकृष्ण यशुमति माँहजाने गोपिन मिलि सुखभोग । सूरदास प्रभु
 कहत प्रेमसाँ येमेरे ब्रजतोग ३०५ साखामहित गये साखनचोरी । दे-
 खेयाश्याम गौबाल पंथहूँ गोपीसक मथति दाँधभोरी । हरि मथानी
 धरी सास्ते साखनहो उतरात । आपन राई कमोरी सांगन हरिराई
 ओंघात । पैटे साखनमहित घरमूने साखनदाँध सबखाये । कुँकीछाँडि
 मटुकिया दाँधकी हँसि सब बाहरआये । आयाई करलिये कमोरी
 धरते निकमे खाल । साखनकर सुखदाँध लपटानो देखिरहोनँदला-
 ल । कहँआये ब्रजबालनकेसंग साखनमुखलपटानो । खेलतते अतिभ-
 द्यो सखायह यहिघर आय छिपानो । भुज माँहलियो कान्ह यक
 गालक निकरे ब्रजकी खोरी । सूरदास ठगिरही खालिनी मनहरि
 लियो अजोरी ३०६ चक्रितभई खालिनि बगहेरेउ । साखनछाँडिग-
 ई मथियेसे हितते कियो अबरेउदेखेजाइ मटुकियारीती भैराख्यो
 कहँहोर । चक्रितभई खालिनिमनअपने हँदाँतघर फिरफिर । देखत
 पुनिपुनि घरके बामन मन हरिलियो गोपाल । सूरदास रसभरीखा-
 लिनी जान्यो हरिकेख्याल ३०७ ब्रजघरघर प्रकटी ग्रहवान । दाँध
 साखन चोरीकरिलै हरि खालसखा संगखात । ब्रजबनिता यहमनि
 मनहाँयत सदन हमारेआवे । साखनखात अचानकपाये भुजभरि उ-
 रहिछुवावे । मनहींमन अभिलाय करतसब हृदयकरतयहध्यान । स-
 रदास प्रभुको घरतेकहेमेरो साखनखान ३०८ खालिनि घरगयेजानी
 साँभकी अँधेरी । मंदिरगये समाइ श्यामतब लखिनजाइ देहमेह ख-
 पकहौ कोकहै निबेरी । दीपक गृहदान करेउ भुजाचार प्रकटधरेउ
 देखत भईचक्रित खालिनि इतउतकोहेरी । श्यामहृदय अतिबिशा-
 ल साखनदाँध बिंदजाल मनमोहेउ नंदताल बालकही बेरी । युवती
 अति भईबिहाल भुजभरिदै अंकमाल सूरदास प्रभु कपाल डारेउ तन
 फेरी । करसों करलै लगाइ महरिपै गईलिवाइ आनंद उरमेनसमाइ
 बातहै अनेरी ३०९ यशुमतिधौँ देखुआनि आगेहूँ ले पिछानि बहि-
 यांगहि ल्याई कुँवर आनको कि तेरो । अबलौँ मैदारी कानि सही
 दुधदहीहानि अजहँ जिखजानिमानि कान्हहैअनेरी । दीपकहौ धरेउ

बारिदेखत मुख भईचारि हारीहो करति धरति दिनदिन को भरो ।
 देखियत नहिं भवन सांभतैसोइ तनतैभीसांभ छलमां कछुकरन फिरत
 महारिको जठरो । गोररुतनकीटरहीशोभानहिं जातकहीमानोंउलय-
 सुननिबिड उडगगापयफेरो । उरहननहिं देहुंकाहिकहेतु इतनो रिसाइ
 नहींव्रजहिं बासु सासु ऐसी विधिमेरो । यशुदा निरखे कुमार गोपी
 बरगो निहार भूलीधूम रूप मानों आनकोऊ हेरो । मन में बिहंसत
 गोपाल भक्तपाल दुष्टपाल जानैको सुरदास चरितकान्ह केरो ३१०
 महारि तुम मानहु मेरी बात । हँडि हँडोरि गोरस सब घरको हरो
 तुम्हारे तात । कैसे कहति लघोकीकेते ग्वालकांध देलात । घरनहिं
 पियन दूध धोरीको कैसे तेरो खात । असम्भाव बोलन है आँई हीठ
 ग्वालिनी प्रात । रोषो नहीं अचगरो मेरो कहा बनावति बात । का
 में कहां कहति मकचतिहैं कहादेखाऊं गात । हँगुसाउडे सूरके प्रभु-
 के ह्यां लरिकालैजात ३११ गये श्याम तेहि ग्वालिनिकेघर । देखी
 जायमथति दधिटाही आपुलगे खेतनहारंपर । फिरिचितइहरिदृष्टि
 परिगये बोलिलये हरि बे मूनेघर । लिये लगाय कटिन कुचके विच
 गाढे चापिरही आपनकर । उमँगिअंग अँगियाउर दरकी सुधि बि-
 मरी तनकी त्यहि अवसर । तब भये श्याम बर्य दारुण के रोभिलई
 युवती वा छविपर । मनहरि लियो तनकसे हँगये देखिरहीशिशुकूप
 मनोहर । लै साखन मुख धरति श्यामके सूरज प्रभुरति पाति नागर
 वर ३१२ ग्वालनि उरहन के मिसआई । नंद नंदन तनमन हरिली-
 न्हें धिनुदेखे क्षणारह्यो न जाई । सुनहुमहरि अपने सुतके गुणा कहा
 कहा क्यहिभांति बनाई । चोली फारि हारगहिं तारेउ इन बातनि
 कहा होत बडाई । साखन खाय खवावत ग्वालनि जो उबरेउ सो
 दियोलुटाई । सुनहु सूर चोरी सहिलीन्हो अब कैसे सहिजात दि-
 टाई ३१३ कर्वाहं करनगयो साखन चोरी । जानतिहैं जु करास
 तिहारी कमल नयन मेरोइतनकिशोरी । दैदै दगाबुलाय भवनमें भुज
 भरिभेंटति उरज कठोरी । उर नख चिह्न देखावति डोलति श्याम
 चतुरभये तुम अतिभोरी । उरहन के मिस आवतिहो नित चितैरही
 जनु चन्दचकोरी । सूर सनेह ग्वालिसन अटक्यो अन्तरप्रीति जात

नाहँ तोरी ३१४ कहाकहो हरिकेशु तोमों । सुनहु मर्हार अबहीं
 भरेवर जो रंगकीन्हे मोमों । मैं दधि मयति आपने मन्दिर गये तहां
 यहिभाँति । मोमों कहेउ बात सुनुमेरी मैं सुनिके सुगकारि । बाँह
 पकरि चोली गति फारी भरिलीन्ही झंकवारि । कहत न बने सकुच
 की बातें देखी हृदय उधारि । साखनखाय निदरि नीकीबिधि तेरे
 मुखकी घात । सूरदास प्रभु तेरे आगे सकाँचित कहेउ न जात ३१५
 ऐत हाल मेरे घरमें कीन्हेहों लैआईहों तुमहिँ पैपकरिके । फोरे सब
 बामन धरके दधिमाखन खायो जो उबरेउ सा हारउ रिस करिके ।
 लारिका किरिक महीसां देखो उपज्यो पूतसपूत महरिके । बड़ोसाठ
 घरधरो युगनिकोटुक टुक्रिकियो सुखन पकरिके । पारिसपाट चलत
 तब पायेंहों ल्याई तुमहीं पै पकरिके । सूरदास प्रभु गेसे राख्यो य-
 शुदा जैसे रत्निये राजमत्तको जकरिके ३१६ प्रियाममव भाजन फोरि
 पराने । हांकदेत पैतसह पैता नेकन मर्नाहँडराने । छीके छोरिसारि
 लारिकनको साखन दधि सबखाए । भवन रच्यो दधिकान्दो लारिक-
 रि रोवतपाये जाई । सुनु यशुमति सबही के लारिका तेरोमों कहूँ
 नाहिँ । हाटनि बाटनि गलिन कहूँ कोउ चलि नाहिँ सकत दुराहिँ ।
 ऋतु अनऋतुको खेलकन्हैया मर्नादन खेलत पाग । रोंकिरहत गाँह
 गली सांकरी देही बाँधत पाग । बारते सुतये ढंगलाये मनहीं मर्नाहिँ
 सिहाति । सुनहु सूरग्यालिनिकीयातें मकुचि महरि पछितार्ति ३१७
 देमैया भँवरा चक्रडोरी । जाग्रलेहु आरे पौराख्यो कान्ह मोलले रा-
 खीकोरी । लैआये हँसि प्रियाम तुरतही देखि रहे रंग रंग बहुदोरी ।
 मेयाविना औरको ल्यावै बारबार हरिकरत निहोरी । बोलिलये
 सब सखा संगके खेलत कान्हनन्दकी पोरी । तेसेइ हरि तेसेइ ब्रज
 बालककर भँवरा चकरिनकी जोरी । देखत जननि यशोदा यहसुख
 बिहँगति बारबार मुखमोरी । सूरदास प्रभु हँसि हँसि खेलत ब्रज व-
 निता डारत लगानोरी ३१८ कान्हउठे अतिप्रातही तलबेली लागी ।
 प्रिया प्रेमके रतभरे रति अन्तर खागी । प्रियाम उठत अवलोकि कै
 जननी तबजानी । सुन्दर बदन बिलोकिके अंगअंग अनुदागी । माता
 ब्रभक्ति सुवनको बलिगइ मेरेबारे । कहा आज्अचरज कियो तुमउठे

सवारे । झारि जलद तबनाह दिया छबिपर तनुवारेउ । उत्तराजगलौ
 प्रेमतां सुत ददन पखारेउ । करीमुखारी अतुरई नारीरसखाके । सू-
 रप्रयास ऐसीदशा विभुवन ब्रजजाके ३१६ उत दृषभान सुताउठी यह
 भाव विचारे । रैन बिहानी कठिन सां मनसथ बलभारे । श्रीवभोति
 सरितोरिके अँवरामों बांध्यो । इहँबहानो करिलियो हरि गण अनु-
 राध्यो । जननीउठि अकुलाइ कै कों राधा जागी । कहाँचली उठि
 भोरही सोधै न मभागी । अबजननी सोऊं नहीं रबिकिरगा प्रकासी ।
 तुह उठति काहेनहीं जागे ब्रजबासी । आप उठीआंगनगईपर धरही
 आई । कवधौं मिलिहैं प्रयासको पलरहे नजाई । फिरिफिरिअजिरहि
 भयतही ततबेली लारी । मूरप्रयासके रसभरी राधा अनुरागी ३२०
 सुनुरीमाताकालिही मोतीसरी गवाई । सखिनसंग यमुनागईधौंउतहिं
 चुराई । कीधौंजलहीमंगई यहसुधिनहिंरे । तदतेमें पाँवतातिहा कहीं
 नहिंडरतेरे । पलकनहीं निशिकहुंलगीमोहि शपथरितेरी । यहिडरतेमें
 आजही अतिउठीसवेरी । सहरिसुनतवक्रितभईमुखज्यावन आवै । सूर
 राविका गुणभरी कोउ पारन पावै ३२१ धन्यकान्ह अनिराधागोरी ।
 धनिबहभागमुहाग धन्ययहधन्य नवल नवलानव जोरी । धनियहामल-
 निधन्य यह वैठनिधनि अनुराग नहीं रुचिजोरी । धानयह असपर-
 स छबि लूटनि मझाचतुर मुख भारे भोरी । प्यारी अङ्ग अलबेली
 पिय अवलोकत लगत ठगोरी । मूरदास प्रभु रोकि धकित भये
 नारीपर डारत दशातोरी ३२२ ॥ रागमूहो ॥ प्रयासनिरखि प्यारीअंग
 अंग । भर्त्ताच रहति मुखतन नहिं चितवति जेह बसतरहतअनंतअनग ।
 चपलनयन दीरघ अनियारे हावभाव नानागतिभंग । वारीमीनकोटि
 अम्बुज । गख न वारत कोटिकुरग । लोचन नहिं ठहरात प्रयासके
 काहुअं । न प्रभामुखरंगामूरदास प्रभुपिय प्यारीब्रज अंगब्रजडोरफि-
 रत संगअंग ३२३ ॥ रागबिलावल ॥ सुतहुँ महरि तोरोलाडिलो अतिकर-
 त अचगरी । यमुना भरन जहँ हमगई तहँरोकत डगरी । शिरसे नीर
 ढरायदै फोरीमब गगरी । गोडरीदई फटकारिके हरिकरतहँ लँगरी ।
 नितप्रति ऐसे ढाँकके हमसोंकहँ धगरी । अब लसवास नहीं बने यह
 तुनप्रज नगरी । आपुगयो चढि कदमपर चितवत रहैं सगरी । सूर

प्राप्त अमरता हमसो को भोग्यो ३२४ जो सुख प्रयास प्रिया संग की
 ३२५ । नित्यता अमरता की ३२६ । दुःखना हृदय कछु नहिं राख्यो ।
 ३२७ । नित्यता अमरता की ३२८ । अहंकहत तबकी अवगोके । सकृचि
 ३२९ । नित्यता अमरता की ३३० । नयनको प्रिय हृदय निहारैउ । उनपतिर्लोह
 ३३१ । नित्यता अमरता की ३३२ । नयनको अहली वा साहे । हरिपद शरणाभयपद
 ३३३ । नित्यता अमरता की ३३४ । जो उरीभक्तकोउ खोभक्तिवाम ।
 ३३५ । नित्यता अमरता की ३३६ । काहुको प्रिय भक्तवत्सल । काहुभुयछिया आवतजाई । बहुनायक
 ३३७ । नित्यता अमरता की ३३८ । आकोशिव पावै नहिं जाय । ताको व्रजनारी पति
 ३३९ । नित्यता अमरता की ३४० । काहुको कहि आवत सांभ । रहत
 ३४१ । नित्यता अमरता की ३४२ । कछुहुरैसि सब संग बिहात । सुनहुमूर ऐसे नंद
 ३४३ । नित्यता अमरता की ३४४ । अरस परम सनाहन यहजा
 ३४५ । नित्यता अमरता की ३४६ । जादिन जाके भवन न आवत सोमन
 ३४७ । नित्यता अमरता की ३४८ । आशुगये औरहि काहुके रिस पावति कहिब
 ३४९ । नित्यता अमरता की ३५० । नयनको अहली वा साहे । बचनकहत सुखहोत ।
 ३५१ । नित्यता अमरता की ३५२ । सांभ लीगये जगतखरप्रभु ताके आवत होत उद्योत ३५३ । लालिता को
 ३५४ । नित्यता अमरता की ३५५ । आजु वसेमै रैतिनुहारे प्राणाप्रियारीहोतुमवास ।
 ३५६ । नित्यता अमरता की ३५७ । यत्न कहिके अनतहिं प्रयास बहुनायकके भेदअपार । सांभ समय
 ३५८ । नित्यता अमरता की ३५९ । आवन कहिआये सोहबहुत करि नन्दकुमार । वहवैठीमारगहरिजो
 ३६० । नित्यता अमरता की ३६१ । यात एकल पलधीतत थकयाम । सरप्रयास आवनकी आशा सेज
 ३६२ । नित्यता अमरता की ३६३ । अवतरति व्याकुलकोन ३६४ । उवाचनहीं प्रियआवही क्योंकहाठगानो
 ३६५ । नित्यता अमरता की ३६६ । में तबहीकी वक्तिहैं कछु आजुभुलाने । हैंनाहीं नहिंकहतहैंमेरी
 ३६७ । नित्यता अमरता की ३६८ । सांभको रीतिभये साको रिसदाहे । कहारहे कासांवनी
 ३६९ । नित्यता अमरता की ३७० । तहई पगुधारी । सरप्रयास गुणारावरे हृदय बिसारो ३७१ । काहे को
 ३७२ । नित्यता अमरता की ३७३ । कहिगये आईहैं काहेभूँठा सांहेखाये । सेसेमैं जानेनहिं तुमकोयेगुणा
 ३७४ । नित्यता अमरता की ३७५ । करि तुम प्रकट दिखाये । भलीकरी दरशन यहदीन्हें जनसजनस के
 ३७६ । नित्यता अमरता की ३७७ । तापनशाये । तवाचितयेहरिनेक प्रियातन तुमको हिरदयसांभवसाये ।
 ३७८ । नित्यता अमरता की ३७९ । सत्य कहत तोसोहैं भल्यो इतनेहि सब अपराध क्षमाये । सरदाससु
 ३८० । नित्यता अमरता की ३८१ । नंदरी सयानी हंसिहैंसिलीन्हेहरिअंकमिलाये ३८२ । नयनकोरिहरिके
 ३८३ । नित्यता अमरता की ३८४ । प्रियारी बगकीन्ही । भावकरैउ अखियान को लालिता लखिलीन्ही ।

लील । अथवा प्रभुवृत्तपरि वरद्वय कोकिता सुरभक्त । पद्मद्वय वि-
द्रुम धर्मिनी वरसीत वृत्तविभेद । शिवशब्द श्रीकृष्ण रसराजत धर-
णपर वरगाणि । व्रजकुररि गिरधर कंचरपर दूरजन पालिपार ३३७
देखुगोत्र लीलागन पदधरे । ताऊपर चालीन विराजत रवि वरही
काकुभेद । गजं पद्म भक्तते धरणी नाथिदरदे निस्तार । गुरुनिर्गुण
शाश्वरपी प्रेमाभा विनुकपि भयो विभुवार । कोमलकशोभित तरुणी उपजत
योगाद्यपति विजताय । मूरदासप्रभु अकथ कथाको धर्मगतमेवता ३३८
३३८ वरद्वय रसभक्त्यानि विषयार्थित । मेरुसुतापति ताकैर्घातसुतता-
को कपोल सनार्थित । हरिवाहन तावाहन उपमा सेति वरे दृढार्थित ।
नव अरु सातभीम मोहि भोहत काहे गहरु लगायति । शार्ङ्ग प्रभन
कहेउ करिहरिसो शार्ङ्ग वनजन भावति । मूरदास प्रभुद्वयविनायुध
लोचन गिरपतावति ३३९ अहार्थ तनया सुतविषु गतिगमनी सुनि
सुतभा तुलासी । आदुर विषादेषु पतिति प्रतापे शो वतनेन विचारी ।
नातिजाहन विषवाहन विषुकी तर्पितभडे आतिगरी । शाचरुहहारे
प्रभुखेदिहो हौबलिजाहें तिहारी । मारुत सुतपति विषपति पत्नीता
सुत नारि विचारी । मूरदासप्रभु तुम्हरे मिलनको पद्यांहत होतहया-
री ३४० र्याहतेरे वृत्तगदगद । सुनिरागिका कदेल बिटपकीशाखा
गक असीफल लाग । प्रवासअरुता काकुआपक पीतकवि बर्रागजाह
नाहें अंगविभाग । अति सुपक्व मुरलीके परगत सुद्वन्द्व परत उर्माग
अपुगाग । व्रजपतिता वरनारि कनकमय रौंदारहत सयासुर नागाहव
प्रताप छुडसकत न सुंदरि शुकसनि सरकाट कोकिलकाग । मैमालि
नि अतन निजल जुगयो सीवन मुदध परेकारथाग । मूरसुग्रम उठिमे-
दिपरम्पर विपरीपग्रपाय रडभाग ३४१ जगसुत प्रीतस सुतरिपुबंधव
आयुध आगत बिलसव भयोरी । मेरुसुतापति वमतजु माधे क्रीटप्रका
श रिमाधगयोरी । मारुत सुतपति अरि पुरवाली प्रतिवाहन भोजन न
सुहाई । धरिभुत वाहन अपन खनेही मानहुं अनलदेहदीलाई । उरार्थ
सुतापति ताकर जाहन ता वाहन को मैं समुभावे । मूरदास मिलि
वर्मसुग्रम विषु ताग्रवतारहि सलिलबहावे ३४२ हरिसुतपावक प्रकट
भयो । मारुतसुत बंधवपितुप्रोहित ताप्रतिपालहि छांडिपयो । प्रीतस

पति ताको पुनि बाहन ता बाहन धनसुत लगन । सोकरनासुत तात कहतहैं तापर कामत सकलछयो । शरैगसन पातो जलकोतो तातेसे मन सांभ तयो । शैलसुताको रूपन कायत तादिबोझने सुनयो । शारंगसुत वाके सुतको हिलतासुतयो सुतनामयो । सरदस रबिअश रबिकेबस अजहुनमोहन दरशयो ३४३ मलकमुखायकमिरिहिया । जलजसुतको सुत कि रुचित भईसयो हासि । उपनि सुतारतअर्पान उरपर इंद्रआयुध जानि । गिरिपुतापति तिलककरकरु हतत भायक तानि । पिनाकी सुत तामुवाहन भठ को भठ बचानि । शाखासुग रिपु सलयज हुता हुताशतनामि । मरुधर आर के सुभाउहि तजो शिरधर पानि । मूरदास विचित्र विरहिन रूकमतमदसानि ३४४ कहियो अति अवलादुख पावै । हिरन पतगपतिप्रवेत ड्योहैं बारबार समुझावै । शारंग रिपु तापति रिपुना रिपु ता रिपुतर्नाह निआवै । हरिबाहन बाहन पातधाइक तामुतआन बचावै । मूररिपुसुर बाहन तारिपु तार्चाह बेर्यादखावै । मूरदास प्रभुसुखे मिलनका विरहिन तपतिबुझावै ३४५ कहाँलौं मनराखन विरजत । यकायक शिखरभंश न लागत प्रयाससुत धरशिआह । हरिबाहनद्वय तामुसहोदरशरपति उदित मुरखिमहिजाइ । गिरिजापति रिपुनकोशकदय पततामुखपापिय कयासुताइ । रीवरहिन विरहा आपलषाकीनो लैयकमल बिभु पाइनुलाइ । बेगहि मिली मूरके स्वामी उदधि तनया पति मिलिहैं आइ ३४६ गोरिपु तारिपुतासुत आयुधप्रातग तहांनिहारे । सोदिशचि संभव जातन ते तहँ रहे प्राणा हमारे । मोबरजतही गवन कियो हति स्वाद लुब्ध रम आल । कुंती नंद तात मुख जोर्यात कलमलाइ अति पयाल । मोरभये पशु बधन कूटड्यो विरहिनिरति मानै । यहिबोध मिलहिं सरके स्वामीचतुर होइ गोजानै ३४७ प्रोचति राधालिखति नखनि सहि बचन कहत कंठ जलताश । स्निहित पर कमल कमलपर कदली कदली पङ्कज कियो प्रकाश । तापर अलि शारंग शारंगपति शारंग रिपुकिओ ले कुल बाश । तहँ आरपंथ पितायुग ऊदितवारिज विवरंगभव आश । शारंग मुख ते परत अंबुहरि मानोशिव पूजत तपत बिनाश । मूरदास प्रभु बिलु हरि हर रिपु बाहत अंता विजानत

अति सुख पावहीं । गौर भान निशाल लोचन दमस्ति अति कवि
 राजहीं । भोंह काम कमान मंगों बाग मन्मथ साजहीं । आनवना-
 गरी प्यारी । तेरे कोसीकोटी करगज मोतो । बिहारिन लाडिलीप्यारी ।
 तैसिये बीच जंगली पोती । भोतपुंज जराय चौबीरारी उर पर
 जग मगे । द्वै अश पर मखतल फोरा दुष्ट जिनि और की खि । द्वै
 कर ककता जटित दोऊ चाम चौर बिराजहीं । रतन जटित अशोल
 मंदरो अंगुरिया छत्रि छाजहीं । श्री नवनागरी प्यारी । तेरे पांय
 नूपुर भनकार । बिहारिन लाडिली प्यारी । तैसिये सपुरी चरणा
 बिहार । मधुरी चरणा बिहार यह गति राजहर्ना अरपिये । जघन
 मघन मरोज भारी देखि सिंह कटि उर पिये । नितम्बनी किंकिनी
 प्यारी निरुदही नीवीनी । भवा भलकेदेखि दोऊ रीझि रहे श्या-
 मलवनी । श्रीनवनागरी प्यारी । तू पिय तन दंति मुर सुसिक्तानी ।
 बिहारिन लाडिलीप्यारी । उन बंशीह गिरतय जाकी । गजाली बशी
 गिरत करने पीत पर जखि भों परेड । रहेजैस पिय केते घगन पुहसी
 ते परेड । भुक्तिजात कहु आगतकी एभि आश्रम आतलमये । सुपति
 राज कुमारही साखिभुजाभरि भासिनगहे । अर्पित गायरी प्यारी ।
 तेरे सुबम बसेजु कन्हाइ । बिहारिन लाडिलीप्यारी । अज्ञा अङ्ग रहे
 अरुभाई । अङ्गअङ्ग लाल लुभायराखं रसिक शिरमुकुट मनी । श्या
 रूपशालसुहाग सुन्दर और सखि तुराभतानी । अजरान नवलकि-
 शोरकेकोउ और चित नहि आवहीं । बलिजाउ श्रीमृगभानु नन्दान
 तवहेतवेरावजावहीं । श्रीनवनागरीप्यारी । तो कोषधामसनोहरबोली ।
 बिहारिन लाडिली प्यारी । तू उठिचलु नवल किशोरी । उठिचलु
 नवलकिशोर राधेनवललाल बुलावहीं । सुन्दर श्याम सुजानहीं स-
 खिवारवार कहावहीं । कांड़िमान सन्हारिप्यारी बारबार सनावहीं ।
 बलिजाउ श्रीमृगभानु नन्दानितो हेतमोहिं पठावहीं । श्री नवनागरी
 प्यारी । यशतेरो ही पियमनभावे बिहारिन लाडिली प्यारी । तो
 यश आपुहि श्रीमुखभावे । गाय तोयश आपु श्रीमुखतुही तनमन रसि
 रही । धन्यतू धनिप्राणा जीवन शपथकरि मोहों कही । अबकरोबि-
 बिध बिहार भासिनि इतो गहरुन कीजिये । बलि विष्णुदास वि

चित्र शरीर शीतल शिखरीजिरी । ३५१ ॥ गगनविजय ॥ वज्रकीर्ति
 च शरीर शीतल । जो केशव नन्द भवन में आवे ताको गहहरि लेत
 कालि । कंधाधन शिखरी सावनशीले तनकी कटा कहीं जानकाई ।
 भरतुन बला छांड पदारत गलकात हंसत खलत अंगनाई । सात
 गोपाय लेखनाया समसे जोदबहो न मसाई । प्रभुकल्याण विविध
 की यशकाय पलकदी छोड सहेउ नहिंजाई ३५२ हरिभूति विनुदेखे
 कलनपर । जादिते मेरी दुष्टिपर मेरे नयननते न टरे । प्रियाम रुंदर
 मनगोहन ललना प्राणजीवन धन क्यों बिधरे । रसिक गोपाल मनेह
 न लहे देहभूति लखिकौन करे ३५३ भोजनभयो भावतेमोहन । तातो
 शिखरी जाहुगोहन । खीरखंड खीचरी सबारी । मधुर महेर गोपनि
 पदारी । राय भोनालियो भातपसाय । संग हरहरी हींगलगाय । मद
 गावा तुमसी देकायो । दूत सुताग कवोरनिनायो । पापरबरी अचार
 पसरायुधि । अद्रक अरु तिलुवाग ह्वे हें नाच । मूरत करि तरितरस
 रोराई । सेसप्रागरी भगकि शोरई । भरता भटा खटाईदीनी । भाजी
 भली भांति दशकीनी । साणुचना मरसा चौराई । सोवा अरु सरसों
 सरभाई । बधुवा भलीभांति रचिरांध्या । हींग लगाय लायदधि
 सांध्यो । पोईपरवरसागफरीचनि । टेंहीटेंडम छौंकिलये पुनि । कंदूरी
 और कौराकौरे । कचरी चारि चचेडा भोरे । बने बनाय करेला
 कीन्हे । लोज लगाय तुरत ततिलीन्हे । फूले फूल सहिंजना छौंकि ।
 मनरुचि होय नाजके औंकि । फूल करीतकली पाकरिचम । फरी
 अमस्तिकरी अमृतसम । अरु यहि औंबिलोदई खटाई । जेवत कटु
 रसजाग लटाई । पेठा बहुत प्रकारनि कीन्हे । तिनतौ सबै स्वाद हरि
 लीन्हे । खीरारामतोरैया तामे । अरु बिनरुचि अंकुर जियजामे । सु-
 न्दररूप रतालू रातो । तरिहें लीन्हे अबहीं तातो । ककरी कचरा
 अरु कचनारेउ । सरसनिमानति स्वादसँवारेउ । कयुकभांति केराकरि
 लीनों । देकरीब हरदी रंगभीनों । बरी बारिल अरुबरा बहुत विधि ।
 खारे खांटे मोटे पयनिधि । पानी नारायतो पकोरी । डभकौरी सुं-
 गडी सुठिभौरी । अमृत डडरह रहें रससागर । बेसन सालन अधिकौ
 नागर । खाटीकडी बिचित्र बनाई । बहूतबार जेवतरुचिआई । रोटी

रुतार कनिक बेसन करि । अजवाइत सेंधो मिलयो घोर । अर्धाह
 कंगकरि तुरत बनाई । जेअजिअति बजावति सँगदारी । अं मेजोउ
 दोरे दूपरो । बहु धृतपाठ जापूरी उवरी । पूरिदूरी यो गेरो वीनी ।
 गजलस उज्ज्वल सुन्दर सारी । सुखे ननिन राखी सोने । आर सु-
 यात सहज मनमोहे । साजपुजा नारयन सधिजीयो । आ अमित राज
 सामर लान्हे । लावन लाडू लावतपीके । सेव सुहाती देवर्थाके भू-
 भागोदे लाग मसरी । मेवाभले कपूरन पूरी । शशिसर सुन्दर सजल
 अंदरसों । ऊपरकतीअजनु जनुवरसों । बहुत जलेन जलधीधोरी । ना-
 हिन घटत सुधाते थोरी । देवत हरयल हातहे खमी । अगहें बुद बुदा
 उपजेअमी । फेनीमिली घुरी पयसंगा । शिथीसिअत भई अकरजा ।
 गाउया दहेउ अत्रिक सुखदाई । ताऊपर पुनि मधुर सलाई । ग्योवा
 खोई अवति ह्वै राख्यो । सुहैमधुर सीतोरसचाख्यो । बासोंडी सिद्ध-
 रन अतिखोवा । मिलेनिरिख जेतत चकधोंची । काछि कुबली धवी
 धगारी । भरहे उठत भारकीन्यारी । इनने यतन दशोदाकीन्हें । तब
 मोहन बालक मंगलीन्हें । देहेआय हँतत बोउथोया । प्रेमपुदित परशति
 है मैया । थारकतारा जटित रतनके । भरि सभसाला दीयेन यतन
 के । पहिले पनवारो परमायो । तब आपुन करकोर उठायो । जेवत
 रुचि अघको अघिकेया । भोजनअहु बिसरा नाहंगीरा । श्रीतलजल
 कपूर रसरचयो । ममोहन निजकर रुचिअचयो । सहारि सुदितमन
 लाडलडावे । तेसुगकहां देवकीपाये । वरितथी गडुआ जल ख्याई ।
 भरेउचुलू खरिकालेआई । पोरिपाल पुरानेकीरा । खातभई छुतिदांत
 निरीरा । मृग मदकनकपूर करलीन्हें । बांति बांति खालन को
 दीन्हें । चन्दन और अरगजा आन्यो । अपनेकर वलके अंगवान्यो ।
 तापाछे आपनहं नायो । उबरेउ बहुत सखन पुनिपायो । सूरदास दे-
 ख्यो गिरिधारी । बोलिदई हँति जटनियारी । वह जेवनार सुनै जो
 गावै । सोनिज भक्ति अभय पदपावै ३५४ ॥ रामविलावल ॥ देखिसखी
 ब्रजते बनजात । रानिहिं यशुमति सुतकीछवि गोरप्रयास हरि हल-
 धरगात । नीलाम्बर पीताम्बरओहे शोभाकछू कहीनहिंजात । युगल
 जलद्युग तडित मनहं मिलि अरस परस जोडित हैं नात । श्रीशमुकट

मकराक्षतकण्डल भलव्रत त्रिबिध कपोल इहिभाँति । मानहुं जलद
गुण त रवितापरवन्द धनुशर्का काँति । कटकछनोकर लकट मनोहर
गोचारन चले मनप्रभुआनि । खालसखाबिच श्री नंदनंदन बोलत ब-
चन मधुर भुक्तानि । जितैरहीं ब्रजकी युवती सब आपुसहीमें करत
बिचार । गोपन तुम्हलिये सूरजप्रभु वृन्दाबनगये करत बिहार ३५५

अघायुरजो यथ ॥ गगनवनवन ॥ नंदसुत लाडिले हो सबव्रज जीवन प्रान ।

वारवार माता कहैहो जागहु प्रयागसुजान ॥ ध्रुव ॥ यशुमति जैतिब-
लाइ भारभयो उठो कन्हारै । संगलिये सबसखा हारटाइ बलभाई ।
सुन्दरबदन देखाइयो हरोनयनकैताप । नयन कमल मुख धोइये कहु
करोकलेंऊआप । माखनरोटी लेहु सरभर्निधि रैनजमायो । यदरसकै
मिथानसोइ जेबहु सचिआयो । मोसोलीजै मांगके जोइजोइ भाये तो-
हिं । संगजेबहु बलराम तुमहोसुचि उपजावहु मोहिं । तबहंसिचितये
प्रयाससेजते बदन उघारेउ । मानहुं पयनिधि मयत फेनफट चन्दउजा-
रेउ । मध्यासुमत देखनचले मानहुं नयन चकोर । युगल कमलजनु इंदु
परहो पैदिशहेअतिभोर । तबउठिआये कान्हमातजल बदनपरवारउ ।
बोलिउठे बलराम प्रयासकत उठ्यो सँवारेउ । दाऊजकहि हंसिमिले
बाँहगही बैठाइ । माखनरोटी मददेउ हो जेवतरुचि उपजाइ । जल
अँचयो मुखधोइउठे बलमोहन भाई । गाइलई सबघेरि चलेबन कुंवर
कन्हारै । हेरसुनत बलरामकी आयेबालक धाय । लैआये सब जोरि
केहो घरते बकरागाइ । सखनि कान्हसोकही आजु वृन्दाबन गये ।
यमुनातट लखा बहुत सुरभि गरा तहां चरैये । खाल गाय सब लोगये
वृन्दाबन समुहाइ । अतिहि मघनवन देखिके हो हरखिउठे सबगाइ ।
कोउ तेरत कोउ हाँकि सुरभिगारा जोरि चलावत । कोउ कोउ हेरी
देत परस्पर प्रयास सिखावत । अंतरयामी कहतजीयमें हमहिंसिखा-
वत ऐरि । कान्हकहत अबकेगईहो पुनिधौं लीजोफेरि । कोउसुरली
कोउबेगा शब्दशृङ्गी कोउपूरे । कृष्णाकियो मनध्यान असुरयक बस्यो
अधरे । बालबछरुवाँन राखिहैं सकबरे लैजाउ । कहुक जनाऊँ अ-
पुनपोहो अबलौं रहेउ सुभाउ । असुरकुलहि संहारि घरगाँ को भार
उतारौं । कपररूप रचिरहेउ दनुज यहि सुरत पछारौं । गिरि समान

वारप्रगमन बेहो पदपतारि । सुखभितर सतप्रमननीहो गागातल
 कारभारि । पीताम्ब सुखपाग धेनु बटल गवताये । लोभनतायाजन
 भालरहे तगाद्रग क्षीयकीये । कदमलमे खयआपुने सुरभीचने अगाय ।
 मानहुं पर्वत कनरराहा सुखमचगयेसमाय । तब सुखनयेनगा ॥ अतुर
 तब चींचतकोरेउ । अन्यकार इमिभयो मनोनिशि बादर जोरेउ ।
 आतिहिमे नकु गाडयो रवालबच्छ मबगाइ । बाहि बाहि कान्हिकहि
 लोतीपरे कहां दगआइ । धीर धीर कान्हि कान्हि अतर यह कन्दल
 गारी । अनभानतमपरे अघामुखभीतरमाही । जियत्यायो यदसुनतही
 अन्धका पकी उबारि । वातदूनी देहधरी तब अतुरन मक्यो मन्हारि ।
 भाउकरेउ आयात अयातुर हेरि पुकारेउ । रहेउ अमर दोउचापि ब-
 दिवल सुरति पभारेउ । ब्रह्मधार शिरपोरिके निकामे शाकुल राइ ।
 लाहेर आवह निजानकैहा में करिलियो सहाइ । बालक बकराचो
 सबे आति मनाहबबाये । अन्यकार गिरिगया देखि कहैतह अतुराने ।
 आये बाहर निकमिके मनमबकियो हुलाम । हमअज्ञान कतडरत हैं
 होकान्ह सदाहमपाग । धन्यकान्ह ननिनन्द धन्ययशुभति सहतारी ।
 धन्यप्रलयो अवतार कोखिधनि जिहिबडतारी । गिरि कसान तनुआति
 आग पन्नगको अनुहारि । हमदेखत पल सकमेंहो सारेउशुभ पछा-
 रि । हरि हंसिबोले येन संगजोतुम नहिहोते । तुम सख किया सहाय
 भयो तबकारज साते । हमहूमिलि देखिके बन भोगोकरेजाइ । लंकी-
 बर भोजन बहुत हो यशुमति दियो पढाइ । रवालपरल सुखपाइ
 कोटिमुख करत प्रशमा । कहा बहुत जोभये सयत सदाइलंभा । चहि
 यिसाग सुरदेखहों गानरहे भरिछाय । जेजे धुनिनभ करत ते हो ह-
 रायपुन्य वरसाइ । ब्रह्मसुनो यहबात अमरघर घरनि कहानी । गो-
 कुल लीन्हंजन्म कौनयह हम नहिजानी । देखोइनको खोजलै शाच
 परेउ मनमाहि । सूरश्याम रवालनलये छले बंशीबटकी छारिइ५६
 दरसहराप्रहमेहनलीया ॥ रागयिलावल ॥ हरयभये नंदलालबैठतरु छांहकी ॥
 ध्रुव ॥ बंशीबट सुखदयो और द्रुमपाम चहूँहै । सखालये तहंगये धेनु
 बतचरत कहूँहै । बैठगये सुखपाइके रवालबाल लयेसाथ । कांवरि
 भोरी लयेसखाहोआनि नवायोसाथ । आनदये मधुकाकतुरत रुंदा-

बनगये । उभंजन सहस्रप्रकार नशोदा बने पड़ाये । श्यामकहंड बन
 चगनही सातासों भगुनाउ । उतते बेआयेमने हो देखतही सुखपाउ ।
 कान्हदेवि मधुह्वाक पुलाक झंगमल बनायो । हरिहंसि बोलत धेन
 प्रेमजननी पहुँचायो । ताँकेहुँचे आबतुस भगोपन्योपयो । पारजा
 रतिहस्तनरो हो आबतरो सुखराग । बनसाजी विदिकरत कमल
 के पातगँगाये । तोरे पात प्रताप सरमदेना बूलाये । भाँति भाँति
 भाँजननरे जगितबनी सिद्धान । बनकरतये सँगायेकेहो लागेकुचिक्
 रिग्यात दगभोजन हरिकरत संगमिलि सुखन पुखाया । श्याम कंवर
 प्रखेन सहस्रतुत अरु थोदासा । कान्हसबान मिलिजात ऐ लोही कोर
 छिडाप्र । औरनदेत बुलाइके हो डहाँकआपु मुदनाय । प्रह्ला देखि
 बिचारि स्तुति कोउ नईचलाई । सोहँपठयो जेहिसेपितादि लहके
 होजाई । देखोधो यहकोनहै बालकबच्छ हरिलेउ । ब्रह्मलोक लेजाउ
 गो हाप्रहिविधि करि दुखदेउ । अन्तरथामी नाथ तुरतधाँध राजकी
 जाजी । बालकहै दिखपठै धेनुबन कहां हिरानी । जहाँ तहाँ बनहुँडि
 के फिरिआये हरिपाम । सखासबन बैठारिके हो आमुनगये उद्यम ।
 हरिले बालक बच्छ ब्रह्मलोकाहि पँचायो । फिरिआये जो कान्ह
 नहँकोउ नहीं बतायो । जानघोरे सनमैतये विविलेगयो हराय । प्रभु
 तबही तेहिरुप्रकाहो बालकबच्छ बनाय । तासेधीन्हें और ब्रह्महदि
 नाजउपायो । अपनो करितेहि जानिकियो ताँको सनभायो । उचा
 दन सारन सनयसन हरिकोना जान । अनजाने धाँध यहकरी होनये
 रखे भगवान । उहेबुहि उहे प्रकृति उहे पोरुयतन सबके । उहेनाम उहे
 भये धेनुवकरा मिलिसबके । श्यामकहेउ मवसखनको दयाबहुगोवन
 फेरि । संध्याको आगम भयो हो ब्रज तगहाँको घेरि । सुतत ग्वाल्लै
 धेनुचलेघन वृन्दावनते । कान्हहि बालक जानिउरे सब ग्वाल्लिसन
 ते । संध्याकियेलै प्रप्रासको मखाभये चहुँपाम । व्रजधेनु आगे दियेहो
 आवत करत बिलास । बाजतबेराबियारा सबैअपने रँगगावतामुरली
 धुनि गोरेभि चलत पगधूरि उड़ावत । मोरमुकुट शिरनोहई मनहुँचंद
 कनशीत । आगपास नाचत सरयाहो बिचहरि भावतरात । देखहर
 यि ब्रजनारि श्यामपर तनमन वारति । एकटक रूप निहारि रहीमे-

प्रति चित्तआरति । कहाकहे कबिआजकी मुखगोडत खुरधूरि । मा-
 नहुँ पूरया चंद्रमाहो कहुरहेउ अपूरि । गोकुल पहुंचेजाय शायबालक
 अपनेघर । गोसुत अरु नरनारि भाल करिहँ अतिआदर । प्रेमसहित
 वेमिलतहँ नेउपजाये आजु । यशुमात मिलि रातमें कछतिहेरैनक-
 रत किहिकाज । मैंघर आवन कहेउ मखासंग कोउन आवे । देखतवन
 अतिअगमडरां बेनोहिँडरावे । बारबार डरबाइके लेबलाइ पछिताय ।
 कालिहुते वेईसबे होल्यावाहँ गाइ बराय । यहसुनिके हरिहँसेका-
 लिहमेरी जायबलैया । भूखलगी मोहिं बहुत तुरत दाहुदे कछुभैया ।
 माखन दीनो हाथके यह तबलों तुमखाहु । तातो जलहँ घामको हो
 तनकलेत सोन्हाहु । तब यशुमात गहिबांइ वहींहरि लेनइबाये । रो-
 हिंसा करि जेवनार प्रयाग बलराम नुलाये । जेवतअति सुखपावही
 परसति माताहेतु । जेइउहे अँचवन लियोहो दुहंकर बीरादेत । प्रया-
 मउनींदे देखि मातराव सेजबिछायो । तापर पौढेलाल अतिहि मन
 हरय बढ़ायो । अघमदन बिधिगर्भ हरत करत न लागीवार । सूरदास
 प्रभुचरितको पावतकोउ न पार ३५७ ब्रजकी लीलार्थेखगर्भबिधिको
 गयो ॥ ध्रुव ॥ त्रिभुवननायक आनिभये गोकुल औतारी । खेउतरवालन
 संगरंग आनंदमुरारी । घरघरते काकेचलीं मानसरोवरतीर । नंदनंदन
 के संगचलेहो बालकमखाअहीर । व्यंजनमकलमँगाय मखनके आगे
 राख्यो । खाटेमीठेखादसबै रमलैलैचाख्यो । रुचिसोंजेवतखाल सब
 लैलै आपुनखात । भोजनको सबखादलहो कहन परस्परबात । देखत
 गरा गंधर्व सकल सुरपुरके बासी । आपुतमें बे कहतहँमत येई अबि-
 नासी । देखिसबैअचरजभये कहेउब्रह्मर्षाजाय । जाकोअबिनाशीकहे
 हो सो ग्वालनसंगखाय । यहसुनिब्रह्माचल्यो तुरतवृन्दावन आयो ।
 देखिसरोवर सलिल कमलतेहिसध्य सुहायो । परमसुभग यमुना बहै
 तहांहे त्रिविधसमीर । पहुपलता द्रुमदेखिकैहो शक्तिभयो सतिधो-
 र । अति रमणीय कदम्ब छांइ रचिपरम सुहाई । राजत मोहनमध्य
 अबलि बालक कबिपाई । प्रेममगन ह्वैपरस्पर भोजनकरत गोपाल ।
 लावहुगो सुतहेरिके होप्रभु पठयेद्वैखाल । बनउपवनसबहुँहिसखाहेरि
 फिरि आये । बकराभये अइसकोउ खोजत नहिंपाये । सबैसखा बैटे

रहोमैंदेवोबौजाय । वरकहरन हरिजान जियहो आपगयेबहराय ।
 जलगाविंद गयेदूर बालकनिहरेय बिधाता । लंहैतुरत मंगाइ आपुके
 जैहाताता । ब्रह्मलोकब्रह्मागयो लैबालक बहरासग । प्रभुकीलीला-
 गम नहीं बिधिकियोगर्व अतिअङ्ग । तबचिन्तामरिा चितैचित्त एक
 सुखिबिचारी । बालकचरकबनापरचओही अनुहारी । करतकुलाहल
 सबगये ब्रजघरअपनेघाय । अतिआदरकरिकरिलियेहोअपनीअपनी
 माय । ब्रह्माक्रिया बिचार जायनिजगोकूल देखो । करिहै शोकसंताप
 जाडपितु मातहिपेखो । आयेतहँविधना चलेघरघर देखोआय । संभ्रा
 ममय होत कौतुहल जहांतहां दुहियाय । कीयह गोकुलऔर किधौं
 मेंही भ्रम भूल्यो । यहि अविनाशी होहिज्ञानमेरोभ्रमभूल्यो । अंतर-
 यामीजानिधौं हरेबचलैआइ । जगतपितामह संभ्रम्यो हागधालोक
 फिरिआइ । देख्यो जाय जगाय बाल गोसुत जहँ राख्यो । बिधिमन
 नकृपभयो बहुरिब्रजको अभिलाख्यो । छिनुभूतल छिनुलोक मेंछि-
 नुआवेछिनु जाय । सेसेहिकरत वरयदिन बीते थकितभये बिधिपाय ।
 तब जान्यो हारप्रकट ज्ञानचितमें जबआयो । धिगाधिगमेरी बुद्धि कृपा
 सों बैर बढ़ायो । लैगोसुत गोपाल शिशुशरणा गयोहैमाध । चारहु
 मुखअस्तूतिकरै प्रभु क्षमोमोर अपराध । अनजानतही करीतुमहिंसों
 मेंबारिआई । येमेरेअपराधक्षमहु विभुवन केराई । ज्योंबालकअपराध
 शतजननी लोतिसम्हारि । शरणागये राखतसदा औपरासकलबिसा-
 रि । ज्यों खद्योत उडिजाइ ताहि क्योँ तिमिर नशावै । दीपक बहुत
 प्रकाश तरंगिसमक्यों कहिआवै । मैं ब्रह्माइकलोक कोज्यों गलरि
 फलजीव । प्रभुतुम्हरे इकरोम प्रतिहो कोटिव्रह्म अरु शीव । मिथ्या
 यह सभार और मिथ्या यह माया । मिथ्याहै यहदेह कहोकोँ हरि
 बिसराया । तुमबिनुजानैजीवसब उत्पत्तिप्रलय समाहि । शरणागोहिं
 प्रभुराखिये होचरगानकी छहि । कीजैस्वाहं ब्रजरेगु देहु दृन्दावन
 बासा । सांगोंइहै प्रसाद औरनहिं मोरे आमा । जोइभावे सोइकरो
 लतासलिल द्रुमगेह । बालबालकी भृत्यकरोहो मनहिं सत्यव्रतजेह ।
 जो वरदान नरनाग अमर सुरपतिहु न पायो । खोजत युगागये बीति
 अन्तमोहं न देखायो । यह ब्रजपारस नित्य है मैं अब समुझी आय ।

वृन्दावन रजहैरहा मोहिं प्रह्लादलोक न मुदाय । सांगत सारध्वार प्रेय
 रगलनि को पाऊं । आर्जा नया कहुजाति मच्छकरि उदर पुराऊं ।
 अबमेरेनिज ध्यानयह रहे जूठनित स्वाय । और विद्याता कीजयेहो
 मैं नहिं छाँडौं पाय । तबप्रभु बाले आप बचनभरो अब सगो । और
 काहिविधिकरौं तुमहिंते कौन सगानो । तुम ज्ञाताकर्माधर के तुमते
 सब ससार । मेरी माया अतिअरास कोउ न पावै धार । श्रीमुख बा-
 रीकहत बिलब अलगदा न लावहु । ब्रजपरिकर्मा करहु देहके पाप
 नशावहु । तुरतजाहु वाँहलोकको विधिकीन्हीं सनुहार । ब्रह्माकरि
 अस्तुति चलेहो हारदीन्हों उरहार । धनिबछरा धनिवाल जिनहिंते
 दर्शन पाये । रोसराम भयोधन्यकृपा माला पहिरायो । धनिशु-
 मति जिन बश किये अविनाशी अवतारि । भानगोपी जिनके सदन
 हो माखन खातसुरारि । मथुरा आदिअनादि देहधरि आपुन आये ।
 धनिदेवै बसुदेव पुत्रमांगे तुमपाये । चारिबदन में कह कहैं तुम्हरी
 सहमागाय । सहमानननिशिदिन रतेहो तऊ न गाँड़जाय । साथ च-
 रावत रवाल संगकरत जेहिं ध्यान लगायो । ते ब्रजवाँसन राग रहत
 अतिप्रेमब्रह्मायो । वृन्दावनब्रजकोमहतकार्ये बरन्धो जाय । चतुरानन
 पदपरशिके होगो लोक सुखपाय । हरिलीन्हों अवतार पारशारद
 नहिं पावै । सतगुरु कृपाप्रताप कहुताते कहिआवे । सूरदास कैसेकहै
 महापतितअवतार । शेषतहम मुखजपत सदाहोरोउत पावतपार ३५८
 माधोज जो जनते बिगरे । मुनिकृपाल करुणामय कबहुप्रभु नहिंचि-
 त्तधरै । ज्यों शिशुजननि जठरअंतरगत शत अपराध करै । तऊ तनय
 तनुपोयि पोथिचित बिगमित छंकभरै । द्विजरतना दालि दुखित होत
 तबतौ रिसकाहि करै । क्षमिसत कोभखीर मधु मिश्रित मुख समीप
 संचरै । यदापिबहप जरहतन हेतकरि करकटार पकरै । तदापिमुभाव
 सुशील सुशीतल रिपुतन माहिंपरै । घरविध्वंसि हलहतन कृषीकरि
 बैरधीजसंचरै । सोमन्मुख सुखसहित सतोगुणा शशिवहु फरनिफरै ।
 कारणाकरनअनन्त अजितकहि केहिअविचरसापरै । यहकलिकाल
 चलत नहिंसोपै सूरशरसाहिं धरै ३५९ ॥ अथ कान्दमन बखी लोला ॥ रागवि-
 लावल । नारदकहि समुभावे कंसनृपराजको । तबपठयो ब्रज दूत पृहुप

नि जागयो ॥ भुव ॥ तब पठयो व्रजदूत सुनत नारदमुख बानी । बार
बार भक्तवत्सल जनि मुख आगति भानी । धन्य धन्य सुनिराज तुम
भना भविष्य कोरि । दूतवत्सलो तुरतहीहो अर्धाङ्गजाय व्रज जोरि ।
जह कोहिये तु जाय कमल नृप कोटि मंगायो । पण्डितो लिखि नाथ
काह्यो बहुभांति जनायो । कालिह कमलनहिं आवहीं तौतुमकोर्नाहिं
चैन । शिरनवाइ करजोरिके होचल्यो दूतसुनिबैन । तुरतपढायो दूत
नन्दघरहीमें पायो । कमलपुहुपकेभार कसनृपबेगिमंगायो । कालिह
न पढेचें याइके तबबसिहो व्रजलोग । गोकुलमें जो सुखाकयो हो ते
धारिहो होशोस । जो न पढाबहु पुहुप कहौगे तैसी गोकों । मारेगे नृप
होर बसन पैठोहि ओकों । यह जानहुं गोपनिर्साहतपकरि भंगाबहु
काति । पुहुप बेगि पढये बनेहा जोरे बसहुव्रजपालि । यह सुनि नन्द
डराय आतिहसन मन अकुलनि । यह कारज क्योंहोय कान अपनो
कारजाने । और महर सब बालिके लोकेसी करैउपाय । कालिह प्रात
व्रज गारि हैं हो बांधि सबन लै जाय । बरमोहनको नामधरेउ कोहि
पकरि मंगावन । ताते अति भयो शोच लगात सुनि मोहिं डरावन ।
यह सुनि शिरनाये सबनि मुखहि न आवै बात । कहो कहाअबकी-
जिये हो कैसे मिदिहै घात । कै बालकनि भगाय जाइलैं आनभमि
पर । बरहसकोलैजाय प्रयागचलराम बचैधर । महरिसबैव्रजनारिमें
कहिपूजातिको उपाउ । जनमहिं ते करवरठरी हो अबकेनहीं बचाउ ।
कोउकहीरैदामनृपति जितनोधनचाहै । कोउ कहै जेयेशरगामद्वैमिलि
बुधि अबगाहै । यहीशोचसबपरिहै कहूंनहीं निरवार । व्रजभीतर
नदभवलगे हो घरघर यहै बिवार । अन्तरयामी जानि नन्दसें ब्रूकत
बात । कहाकरतहोशोच कहांकछुमोसांतात । कहाकहांमेरेलाडिले
कहत बड़ो सताप । मधुरापतिके जियकछू हो तुमपर उपज्यो पाप ।
कालीदहके पुहुप मांगपढये हमसेंउन । तबते मो जियशोच जबहिं
ते बातपरी सुन । जो नहिं पढवहुं कालिहही तौ गोकुल देउ लगाय ।
मो समेत दोउ बंधुतुम कालिहहिं लेय बैधाय । यहकहि पढयो कंस
तबहिं ते शोच परैउम्बहिं । प्रथम पतना आय बहुत दुखदैजू गई
त्वहिं । लग्गावर्तके घातते बहुत बच्चो दुखपाय । शकटा केशीते बचे

हा अबका करेमहाय । अघाउदारसे बच्चोबहुत दुख सहेउकन्हारि ।
 बकारहेउ मुखबाइ तहां भयोधर्म सहाइ । इतने करवर हैरे देवनि
 क्रियेमहाय । तथेअवगाढीपरीहोमोकोकलु न सहाय । बानातुमहीं
 कहतजोनधौं तोहिउबारि । सोइव्रजभीतर प्रकट कमगाहिकेशपकारि ।
 यह जबहीं हरिमां सुनी नन्द मनहिं पतिआय । मगन भिरत जोसंग
 रहेउहो सो करि लेय सहाय । नन्दहि यहसमुभाय कान्ह उति खे-
 लन बाये । जहँ व्रजबालकहुते तुरत तहँ आपुन आये । गोप सुतनिमां
 यह कहेउ खलें गेबसँगाय । ओदामा यह सुनतही हो घरते लायो
 जाय । मखा परस्पर मार करौ कोउ कानि न माने । कौन बडो को
 छाट भेद भेगनहिं आने । खेलत यमुना तटगये आपुहि लायेदारि ।
 ओदामा के हाथतें लैगेद बड़े दहडारि । ओदामा गाहि फेंत कहउहम
 तुम एकजोटा । कहाभयो जोनन्द बडेतिनकेतुमढोटा । खेलतमें कह
 ओतबडो हमहुं महरके पूत । गेददियोही पै बनेहो छांछिदेहुमतिधूत ।
 तुममां धूत्यो कहाकरो धूत्यो नहिंदेख्यो । प्रथम पूतना नारिकागण-
 कटासुर पख्यो । लतावर्त पटक्या गिला अघा बकासंहारि । तुम ता
 दिन संगहि रहे अकधूत न कहत मम्हारि । रंहे कहा बतात कस को
 कमल देहुअब । कालिहहिपठयेमांनि एहुपअब लेदेहोतब । बहुत अ-
 चारीजिन करो अजहं तजोभवारि । पकरि कंस लैजायगो हा का-
 लिहहि परेखभारि । कमल पठाऊं कोटि कंसको दोय निवारों । तुम
 देखत फनिजाउं कंसजीवतधरिमारां । फेंत लियो तब भटकि के चढ़े
 कदम परजाय । मखा हंसत ठाढ़े सबै हो मोहन गयेपराय । ओदामा
 चलेरोयजायकहिहौं नंदआगे । गेदलेहुतुम आय मोहिंडरपावनलागे ।
 यहकहिकूदिपरे सलिलक्रीन्हें नटवरसाज । कोमल तनवरिकेगयो हो
 अहंसोवत अहिराज । यहिअंतर नंदधरनिकहेउहरिमखेहैंहैं । खेलतते
 अब आय भूखकहि मोहिंसुनेहैं । अतिआतुर भीतरचली जेवनकारणा
 आपा छौं कसुनतकसगुन कहेउहोकहाभयोयहपाप । अजिरचलीपछि-
 तातहीं कं कोदोषनिवारन । मंजारीगडकाटितबाहिनिकसतही वारन ।
 अननीजिय क्याकुलभई कान्हअवेरलगाय । कसगुनआजु बहुतभयेबो
 कथिलरहैं दोउभाय । श्यामपरे दहकूदि मातृजियगयोजनाई । आतुर

आये नन्दधरहि बृक्षत दोउभाई । नन्दधरनिमों थोंकहत मोकोलगत
उदाम । यहद्वतरहारतहँगयेंहाजहँकालीकोवाम । देख्योपन्नगजायअति
हिनिभय हँगोवत । बैठीतहँ अहिनागर डरी बालकके जोवत । भागु
भागु मत कौनको अतिकोमल तेरोगत । एकहुँकको नहीतू होबिध
जवाला अतितात । तब हरिकडेउ प्रभारि नारि पति देहुजगाई । आ
योदेखन याहि कम मोहिदयो पठाई । कंसकोटि जरिजाहिंगे बिष
कीएक फुंकार । कडेउ पहरि फिरिजाहिहू होअति बालकमुकुमार ।
यदिअतर संगसखा जाहिब्रज नन्दमुनायो । हमसंग खेलतश्याम जा
इ दहमाँझ धँसायो । बूझियाँ उचक्योनहीं तावातहि बड़िबेर । कुदि
परेउ चहिकदँबते होखबरि नकरो मबर । प्राहिजाहि करि नन्दमुनत
दोहे थमुनात । यमुनाति मुनियह बात चलीरोवति तोरतिलट । ब्रज
बासी नरनारिसब शिरतपरत चलेवाइ । बूझेकान्ह मबनि सुनि हो
अतिव्याकुल मुरभाइ । जहँतहँ परीपुकार कान्हबिन भई उदासी ।
कौन काहिसों कहै अतिहि व्याकुल ब्रजबासी । नंदयशोदा अतिबि-
कल परतयमुनमेधाय । और गोप उपनंद मिलिहोबाँहपकरिलैआय ।
धेनुफिरतविललाति बछुअनकोउतलगावै । नंदयशोदा कहत कान्ह
बिनकौनचरावै । यहमुनिब्रजबासीसबैपरधरिआ अकुलाय । हाथहाथ
करि कहत सबै हो कान्हरहेउकहँजाय । नन्दपुकारत रोइबुढाईमो-
हिंछुहायो । कहुदिन मोहलगाइ जाइ जल बीच भँझायो । यहकाहि
कौधरणी गिरत जनु तरुकाटि गिराइ । नंदधरनि तबदेखिके होका-
न्हहिं टेरि बुझाइ । निदुरभये सुतगात तातकी छोहन आवति । यह
काहिके अकुलाइ जलहि भीतरको धायति । परतिजाय यमुनासल-
ल गहि आनति ब्रजनारि । नेकरहीनअरहिंभी होकोहै जीवनहारि ।
श्यामगये जलबूझि लुथा धृग जीवनजयको । शिरफोरति गिरिजाति
अभयगातोरतिअँगको । मूर्च्छिपरी तनसुनिगई प्राणारहेउ कहँजाय ।
हलधरआये धाइके होजननी गई मुरभाय । नाकर्णद जलसींचि ज-
ननि जननी करिटेरेउ । बारबार भक्तकोरि नेक हलधर तन हेरेउ ।
कहत उठी बलरामसों बनिहँ तज्यो लघुधात । कान्ह तुमहिं बिनरहत
नहिं हो तुमसों क्यों रहिजात । अब तुमह जिनि जाहु मखा इक देहु

पराई । काम्हिहि लखावै आहि आज अवशेर करारि । काक पठाऊँ
 जरिकी मनमन प्रोक्त समाज । प्राण कलूषाये गरीहो भय छै गड
 सांभ । कहहुँ कहति वनगये कहहुँ कहि परीह बतावति । कहँ खलत
 हो लालटेरि अह कहति बुलावति । जाशि परी दुख मोहते रोवत देखे
 स्त्रीग । तब जान्यो हरिह गिरेउहो उपज्यो बहुरि बियाग । धृगधृगन-
 दहि कहेउ और कितो दिन जीहो । मरत नहीँ स्वहिंमारि बहुरि व्रज
 बसिहो कीलो । येस दुखमें शरम सुखमन करि देखहु जान । व्याकुल
 परगो गिरि परेहो नदभय बिनुप्राण । हरिको अग्रज दंभ तुरतही पिता
 जगायो । माताका परगोधि दुहुन भीरज धरवायो । मोहिँ दुहाइ नंद
 की अपहीँ आवतइयास । नाथिनागलै आइहै होतव कहियो बलराम ।
 हलवर कड़ेउ सुनाइ लद यगमात बजवासी । लूथा मरत केहि काज
 करै क्यों वह अविनाश । आदि पुरुष में कहतहीं गये कमलके काज ।
 गिरिधरको तुम डरतहो हो वह देवन शिरताज । वह अयिनाशी आहि
 कश भीरज अपभोमन । काली कंदे नाक लिये आवत निरतफन ।
 काम्हि कमल पठाथहै कालिहि पठवै दीप । सकधरी भीरज धरौहो
 धैरो कय तरुनीप । सुनिहो अहिकी वामश्यास अहि क्योंन जगावै ।
 बाजक बालक करति कहापति क्योंन उठावै । कहाँ कंस काँ उरा
 यह अबाहिँ दिखाऊँ तोहिँ । दे जगाइ मैं कहतहीं हो त नहिं जानति
 मोहिँ । मैं जानतिहो बाल फूंक यकमें जरिजैहो । छोटे मुख बड़िवात
 कहत अबहीं मरिजैहो । छोह लगति तोहिँ देखि स्वहिंकाको बालक
 आहि । खगपति सों सरवर करीहो त बपुरो को आहि । बपुरो सों
 सों कहति तोहिँ बपुरी करि डारों । एक लात सों चापि खसम तेरे
 को मारों । सोवत काहुन मारिये चलिआइ यहवात । खगपति को
 मैंहीं क्रियोहो कहति कहातू वात । तुमहिँ बिधाता भये और कर्ता
 कोउनाहीं । अहिमारोगे आपु तनक से तनक सिबाहीं । कहा करौ
 कहत न बने अतिकोमल सुकुमार । देती अबाहिँ जगाइके हो जरिबि
 हैहोहार । तंधोदेहि जगाइ तोहिंदूयरा कहुनाहीं । परी कहा तोहिं
 नारि पाप अपने जरिजाहीं । हमको बालक कहतिहै आपु बड़ेको
 नारि । बादत है विन काजही हो लूथा बढ़ावति रारि । तू नहिं

देत जगाय बहुत जो करतोहटाई । पुनिमरिहैं प्रकृतिहि भातुपतु तेरे
भार । अग्रह फिर करिजाहि तू गरि लैहै सुख कौन । पांच बरय
के सात को होआगे तोकोहोन । भिरकि नारि देगारि आपु अहि
जाय जगायो । पगसों चापी पूछ सगै औगान भुलायो । चरगा
मसकिधर नीकली उरग गयो अकूलाय । काली सरमें तब कही हो
यह आयो खगाराय । देखयो नयनउधारि तहां बालक डकटाहो ।
बियबर भरकी पूछ परकि सरसौ फगा काहो । बारबार फगाघात
करि बिय ज्वाला की भारि । सरसौ फगा फगा पूछरे हो नेक
न तनाह लगायि । तबकाली सनकहत पूछ चापी यहिपगसों । अति-
हिउठयो अकूलाय डरेउ बाहन हरि खगसों । यह बालकधौं कौनको
कीन्हें युद्ध आघाय । दौवघात बहुतैं कियो हो मुरत नहीं सधुराय ।
पुनिदेखै हरिओर पूछचापी यहि मेरी । मनमन करत बिचार लेउ
याको मैं धेरी । दौव परेउ अहिजानिके लियो अंगलपटाय । चरगा
लपेटे भिगवालों हो यहि अतिकरी दिटाय । कहति उरग की नारि
गर्व अतिही करिआयो । आयपहुंचयोहै कालवश्य पगइतहि चला-
यो । अहिनारिन सों यहकही सोहिं मसमरि कोउनाहिं । एक फूंक
बियउबालवै हो जल डूंगरि जरिजाहिं । गर्बधचन प्रभु सुनत तुरतही
तन निस्तारिउ । हाय हाय करि उरग बारहीबार पुकारिउ । शरगा
शरगा अब सरत हैं मैं नहिं जान्यों तोहिं । चट चटात अंग फूटही
हो राखु राखु प्रभु सोहिं । अबगा शरगा धुनि सुनत लियो प्रभु तन
सकचाई । समहु मोर अपराध न जाने करी दिटाई । ब्रज में कृष्ण
अवतार है मैं जानी प्रभुआज । बहुतकिये फगाघात मैं हो बदनदुराबत
लाज । रहेउ आनि इहिठौर गरुड़की शस गोसाई । बहुत कृपामोहिं
करी दरश दीन्हों जगसाई । नाकफोरि फगापर चढे कृपाकरी दिव-
राय । फगा फगा प्रतिप्रति चरगा धरेहे निरत हरय बढ़ाय । धन्य
कृष्ण धनि उरग जानिजन कृपाकरी हरि । धन्यधन्य दिनआजु दरश
सों पापगदजरि । धन्यकंस धनि कमलये धन्य कृष्ण अवतार । बड़ी
कृपा उरगाहिकरी हो फगाप्रति चरगा बिहार । श्रेय करत जिय गर्व
अंडकोभार शीशधरि । पूरताब्रह्म अनंतनामको सकैपारकरि । फगा

फराप्रति अति भारभर अमित अगड में गात । उरगनारि करजोरिके
 हो कहति कृष्णसोंबात । देखत ब्रज नरनारि नंद यशुदा समेत सब ।
 संकर्षणसों कहत सुनोसुत कान्ह नहीं अब । यहि अन्तरजल कमल
 बिच उठ्यो कछू अकलाय । रोवतते बरजे सबैहो मोहन अग्रजभाय ।
 आवत हैं बहूश्याम पुहुप काली शिरलीन्है । मात पिता ब्रज दुखित
 जानि हरि दर्शनदीन्है । निरत काली फरानिपर दिवदुंदुभी बजाय ।
 नटवर वपुकाके रहैहो सबदेखे बहूभाय । आवतदेखे श्याम हरयकीन्है
 ब्रजबामी । शोकसिन्धु गयो उतरि सिंधु आनंद प्रकासी । जल बहत
 नीकामिलै ज्यों तनहोत अनंद । ज्यों ब्रजजन हूलस सबैहो आवतहैं नंद
 नंद । सुतदेखत पितुमातु रास गच्छाद पुलकित भये । उरउपज्यो आ-
 नंद प्रेमजल लोचन दुहुयये । दिव दुंदुभी बजावहि फराप्रति निरत
 श्याम । ब्रजबामी सब कहत है धन्य धन्य बलराम । उरगनारि कर
 जोरि करतिअस्तुतिमुखदासी । गोपीजन अवलोकि रूपवद अतिरति
 गाढी । सुर अम्बर लज्जा सहितजय धुनि मुख मुखगाय । बड़ीकृपा
 यहि उरगकोहो रेसीकाहु न पाय । कृपाकरी प्रह्लाद स्वम्भते प्रकर
 भयेतब । कृपाकरी भजराज रासुइ तजिधाय गये जन । द्रुपद सुताको
 करिकृपा वसन समुद्र बढाय । नन्द यशोदाह जो कृपा हो मोइकृपा
 अहिपाय । तब काली करजोरि कहेउ प्रभुगरुड वासमोहिं । अवक-
 रिहैं दराडवत नयन भंरि जव देख तोहिं । चरगा चिह्न दरशन करत
 गहिरेहैं तेरेपाय । उरग दीपको करिबिदाहो कहेउ करहुसुखजाय ।
 प्रभुयाते सुखकहां जे चरगा फरा फराप्रतिपरसे । रमाहृदय जो बसत
 सुरसरी शिरबहे हरसे । जनम जनम पावनभयो फरापद चिह्नधराय ।
 प्रायंपरेउ उरगनि सहित हो चलयोदीप समुहाय । कालीपटयोदीप
 सुरनि सुरलोक पढाये । आपन आये निकसि कमल सब तरहि ध-
 राये । जलतेआये निकसितब मिलैसखा सबधाय । मात पिता दोउ
 धाइके होलीने कंठलगाय । फेरिजन्म भयोकान्ह हृदयलोचन भंरि
 आये । जहां तहां ब्रजलोपनारि आतुर हूँ धाये । अंकम भारभरि मि-
 लत हैं मनो निधन धनपाय । मिलीवाय रोहिणी जननि चंबत ले
 बलाय । सखादौरि के मिले गयेहरि हमपर रिसकरि । धनिमाता

धनिपिता धन्यसो दिन ज्यहि अवतरि । तुमब्रज जीवन प्रागाहो यह
 सुनि हँस गोपाल । कूदिपरि चढ़ि कदमते हो तुम देखत ये ख्याल ।
 कालील्याये नाथ कमलताही परल्याये । जैसी कहिगये प्रयास प्र-
 काट सो हमहिँ दिखाये । कम मरेउ निप्रचय भई हमजानी ब्रजराज ।
 सिहिनि को छौलाभलो हो कहा बड़ो गजराज । हारि हलधरतर्वागले
 हँसे मनहीं मनदोऊ । बन्ध मिलत सब कहत भेद नाहिँ जानै कोऊ ।
 मातापिता ब्रजलोग सो हराय कहै नँदलाल । आजु रहे बसि सब
 इहां हो मेटहुदुख जजाल । मुनि सर्वाहिन सुखक्रियो आजुराहिय यमु-
 नातट । शीतल सलिल सुगन्धपवन सुखतरु बशीबट । नँदघरते मियान्न
 बहुत यटरम लियेसँगाइ । महरमोप उपनन्दजे हो सबको दियेबँटाइ ।
 दुखकीन्हों सबदूरि तुरतसुख दियोकन्हाइ । हरयभये सबलोग कमको
 डरबिसराइ । कमलकाज ब्रजमारतो कितनो लेयगनाय । नृपगजको
 अबडर कहा हो प्रकट्यो शिंकन्हाय । नन्द कहँउकरि गर्ब कम को
 कमल पटावहु । और कमल घरधरहु कमल कोटिकदै आवहु यह
 कार्यो मेरीकही कमल पटायै कोटि । कोटिक जलहीधरेहो यह
 विनती इकछोति । अपने मम जे गोप कमल तेहि साथ चलाये । मन
 सबके आनन्द कान्ह जलते बाँचआये । खेलतखात घन्हातही बातर
 गयो बिहाय । मूरप्रयास ब्रजलोग को हो जहाँ तहाँ सुखदाय ३६१
 अथ चारहरण लीला ॥ राग बिनायन ॥ नन्द नँदनवर गिरिवर धारी । देखत
 रीभी घोयकुमारी । मोरमुकुट पीताम्बर काळे । आवत देख गायन
 पाळे । कोटि इन्दुछवि बदन बिराजै । निरखि अङ्गप्रति मनमथताजै ।
 रविशत छविकुंडल नहिँ तूले । दशन दमक द्युतिदामिनि भूले । नयन
 कमल मृगशावकमोहै । शुकनासा पटतरको कोहै । अधर बिम्बफल
 पटतरनाहीं । विद्रुम अरु बंधूक लजाहों । देखत रीभिरहीं ब्रजनारी ।
 देहगेहकी सुरतिबिसारी । यह मनमें अनुमान कियोतब । जपतप संयम
 नियमकरैं जब । बारबार सर्बिताहि मनावति । नन्दनँदन पतिदेहु सु-
 नावति । नेमधर्म तपसाधन काजै । शिव सो मांगि कृष्णार्पित लीजै ।
 वरमदिवसको नेमलियो सब । रुद्राहि सेवहु मनबच क्रमअब । इहवि-
 श्वाम व्रतहिको कीन्हों । गौरीपति पूजा मनदीन्हों । यदशसहसजुरीं

सुकुमारी। व्रतसाधन नीके तनुगारी। प्रातः उठै यमुना जलखोर्गे। शीत भीत कहूँ अंग न मेरीं। पतिके हेत नेम व्रतसाधै। शङ्करसों यह कहि अवराधै। कमलपत्र तू मोल चढ़ावै। नैनमंदि यह ध्यान लगावै। हम को पतिदीजै गिरिधारी। बड़े देव तुमहो धिपूराही। और कहूँ नाहूँ तुमसों मांगीं। कृपा हेतु यह कहि पालागीं। ऐसहि करत बहुत दिन बीते। प्रभुअंतरयासी मनचीते। एकदिवस आपुन आयेतहँ। सबतरुणी अस्नान करति जहँ। बमनधरे जल तीर उतारी। आपु न जल पैठीं सु-कुमारी। कृपाहेतु अस्नान करै जहँ। सबके पाछे आपुनहँ तहँ। मीजत पीतिप्रेम अतिवादी। चक्रितभई युवती फिरिठाही। देखे नंदनंदन गिरिधारी। व्रतफल प्रकटभये बनवारी। सकुचिअंग जलबैठि लुकावै। बार बार हार अंगमलावै। लाजनहीं आवतिहै तुमको। देखत बसन बिना सबहमको। हँसतचले तब नन्दकुमारा। लोगन सुनवति करति पुकारा। हारचीर लैचले पराई। हाँकिदियो कहि नन्ददुहाई। डारि बसन भूयसा तबभागे। श्याम करन अब हीठौलागे। भागेकहांवचौगे मोहन। पाछे आइगई तुवशोहन। तनकी सुधि सम्हार कहूँ नाहीं। बसन अभूयसा पहिरत जाहीं। चीर फट्यो कंचुकि बँद छूटे। लेत न बनत हार लरट्टे। प्रेमसहित मुख खीझत जाहीं। भूँटाह बार बार पछिताहीं। गईसबै बिय नन्दसहर घर। यशुमति पामगई सबदरदर। देखहु महरि श्यामके येगुन। जैसे हाल करे सबके उन। चोली छोर हारिदखराये। आपुन भाजि इतहिको आये। यमुनातट कोउ जान न पावै। संगसखा लिय पाछेधावै। सुतको बरजहु हो नंदरानी। गिरिधर करतभली नहिंवानी। लाजलगत इकबात सुनावति। अञ्चल छोरि हियो दिखरावति। यहदेखत हँसिउठी यशोदा। कछुरिसकछु मनमें करिमोदा। आयगयेतेहिममय कन्हई। बांहगहीलै तुरतदिखाई। तनक तनककर तनक अँगुरिया। तुमथौबन भर नवलबहुरिया। जाहु घरहि तुमको मैं चीन्हीं। तुम्हरी जाति जानि मैं लीन्हीं। तुम चाहति सो यहां न ये हैं। और बहुत ब्रजभीतर लैंहैं। बार बार कहि कहा सुनावति। इनबातनि कछुलाज न आवति। देखोरी ये भाव कन्हई। कहांगई तबकी तरुणाई। महरि तुमहिँ कछुदूखरानाहीं। इ-

मको देखि देखि मुसुकाहीं । तन गुराकोसे कोउ जाने । ओरै करत ओर
 धारताने । देन उरहना तुमको आई । नीकी पहिरावनि हमपाई । चलीं
 मयैयुक्ती घरघरकी । मनमें ध्यानकरतहैं हरिकी । बरसादवस तप पर-
 राकीनो । नदसुवनको तनमन दीनो । प्रातहोत यमुना फिरिआई । प्र-
 थमरहे चढिकदम कन्हाई । तीर आई युवती भईठाही । उरसंतरहरि
 कीरतिबाही । कह्योचलीं यमुनाजल खोरै । आगआग अभयरा सबकोरै ।
 चोलीकांरै हारउतारै । करसों शिथिल केशनिरवारै । इतउत चित-
 वति लोगनिहार । कह्यो मबनि अबचीर उतारै । बमन अभयरा धरे
 उतारी । जलभीतर सबगई कुमारी । माघ शीतको भीत न मानो । यह
 इतुके गुरा समकरि जानो । बारबार बूड़े जलमाहीं । नेकहु जलको
 धरपात नाहीं । प्रातहुते इकयाम नहाहीं । नेमधर्मही गे दिनजाहीं ।
 इतनोकथ करै सुकुमारी । पतिके हेतु गोबर्द्धनधारी । अतितप करत
 देखितापाला । मनमें कहेउ धन्य ब्रजबाला । हरि अन्तरयामी सब
 जानै । सरासराकी यह सेवामानै । बतफल उनीहैं प्रकट दिखराज ।
 बमन हरींलै कदमचढाऊं । तनमाधे तप कियो तुमारी । भजी मोहि
 कामातुरनारी । सीरह सहसगोप सुकुमारी । सबके बसन हरे बनवा-
 री । हरत बसन कछुबार न लागी । जलभीतर युवती सब नांगी । भू-
 यरा बमनसबै हरिलाये । कदमडार जहँतहँ लटकाये । ऐमानीप वृक्ष
 बिस्तारा । चीरहार धौं कितकहजारा । सबै समाने तरुप्रति डारा ।
 यहलीला रचि नन्दकुमारा । हारचीर मानहुँ तरु फूल्यो । निरखि
 प्रयामआपुन अनुकूल्यो । नेमसहित युवती सब नहाहीं । मन मन स-
 विता विनय मुनाहीं । भूंदै नैन ध्यान उरधारे । नंदनन्दन प्रति होहि
 हमारे । रबिकारि विनय शिर्वाहँ मनदीन्हां । हृदयमांभ अवलोकन
 कीन्हां । विपुलदेहन विपूरारि विलोचन । गौरीपति पशुपति अघ
 मोचन । गरल अशन अहिभूयरा धारी । जटाधररा गङ्गाशरधारी ।
 करति विनय यहमांगत तुमसों । करहुकृपा हंसिके आपुनसों । हम
 पावें सुत यशुमति कोपति । यह देहु करिकृपा देवरति । नित्यनेम
 करिचलीं कुमारी । एकयाम तनको हिमजारी । ब्रजललना कह्यो
 नीर जडाई । अतिआतुर होइ तटकोधाई । जलतें निकसि तरुणासब

आई । चीरअभूयता तहां न पाई । सकुचगई जलभीतर धाई । देखि
 हंस तस चहे कन्हाइ । बारबार युवती पछिताहीं । सबके बसन अ-
 भूयतानाहीं । ऐसोकौन सबैलेभाग्यो । लेतहुताहि बिलम्बन लारयो ।
 साधतुथार युवति अकलाहीं । ह्यांकहुँ नंद सुवनतीनाहीं । हमजानति
 यहबात बनाई । अम्बर हरिलैगये कन्हाइ । होकहुँ प्रयास बिनय
 सुनिलीजे । अम्बरदेहु कृपाकरि जीजे । थरथर अङ्गकंपति सुकुमारी ।
 देखि प्रयासतहिँ सकसम्हारी । यहिअन्तर प्रभु बचन सुनायो । व्रत
 कोफल दरशन सबपाथो । कहा कहति मोसों ब्रजबाल । साध शीत
 कत होतिबिहाल । अम्बर जहां बताऊं तुमको । तोतुम कहा देहुगो
 हमको । तनमन अर्पता तुमहीं कीनो । जा कलहुतो सो तुमहींदीनो ।
 और कहाजु लैहो हमसों । हम सांगति हैं अम्बर तुमसों । यह सुनि
 हंस दयाल मुरारी । मेरो कद्यो करो सुकुमारी । जलते निकसि सबै
 तट आवहु । तबहिँ भलेतुम अम्बर पावहु । भुजापसारि दीतहुँ भाय-
 हु । रोउकर जोरि जोरि तुमराखहु । सुनहु प्रयास यकवात हमारी ।
 नगनकहं देखिये न नारी । यहमति आपकहाधों पाई । आजुतुनीयह
 बात नवाई । ऐसीसाध मनहिँ में राखहु । यहबानी मुखते जिनि भा-
 यहु । हम तरुणी तुम तरुणा कन्हाइ । बिनाबसन क्यों देहदिखाई ।
 पुस्त्यजाति तुम तहँका जानो । हाहा यह मुखमें जिनि आनो । तौ
 तुम पैठोरहो जलहि सब । बसन अभूयता नाहिँ चहति अब । तबहिँ
 देखै जब बाहिर आवहु । बिनुबाहर आये नाहिँ पावहु । कतहो शीत
 सहित सुकुमारी । सकुचदेहु जलहीमें डारी । करेउ कदमव्रत फरनि
 तुमारी । अबकहं लज्जा करतिहमारी । लेहुनआनि आपने व्रतकों ।
 में जानत या व्रतके व्रतकों । नीके व्रतकीना तनुगारी । व्रत त्याग्यो
 धरि गिरिवरवारो । तुममन कामत पूरणा करिहैं । रास रंग रचि
 रति सुखभरिहैं । यह सुनिकै मनहरय बढायो । व्रतको परना हम
 फलपायो । छोड़हु तुम यह टेक कन्हाइ । नीरसांभहमगई जडाई ।
 भूयता सब आपुनाह लेहो । चीर कृपाकरि हमको देहो । हाहालागै
 पाय तुम्हारे । पाप होतहै जाइनमारे । अजहूँते हम दासि तुम्हारी ।
 कैसेछंग दिखावै नारी । छंग दिग्यायहि अम्बर पैंहो । जातरु वैसेहि

घोसगँवहो । मेरे कहे निकसि सब आवहु । थोरहि हमको भलो स-
 नावहु । मुहावरी तरुणी मुसकानी । यह आपुन थोरी कार जानी ।
 जो जो कहोसो तुमको मोहे । आजु तुम्हारे पदुतरकोहे । हमरीपति
 सब तुम्हरे हाथा । तुमहि कहौ येसी ब्रजनाथा । तपतनुगार कियो
 जेष्काररा । सोफललख्यो नीपतरु डारन । आवहु निकसि लेहुपट
 भूषणा । यह लागै हमको सब दूषणा । अब अन्तरकत राखति हम
 साँ । बारम्बार कहतहैं तुमसाँ । गोपिन माल यह बात विचारी ।
 अबतो तेक परे बनवारी । चलहुन जाय चीर अबलीजै । लाजकाँडि
 उनको मुखदीजै । जलते निकसि तीरसबआई । बारबार हरि हरखि
 बुलाई । बैठगई तरुनी सकुचानी । देहुश्याम हम अतिहि लजानी ।
 काँडिदेहु यह बात मयानी । बैसहि करी कही जो बानी । करकुच
 अंगदाकि भइंटाडी । बदन नवाय लाजअति बाढी । देहुश्याम अम्बर
 अबडारी । हाहा दासी सबै तिहारी । गेसेनहीं बसन तुम पावहु । बाँ
 ह उठाय अग दिखरावहु । कहेउ मारि युवतिन करजोर । पुनि पुनि
 युवती करत तिहारे । धन्यधन्य जोइ श्रीगोपाला । निश्चय व्रतकीन
 ब्रजबाला । आवहु निकट लेहु सब अम्बर । चोलीहार सुरंग पटम्बर ।
 निकट गई सुनिके यह बात । तरुणी नगन अंग अकुलानी । भूषणा
 बसन सबन को दीने । ब्रियके कहत कृपा हरि कीने । चीर अभूषणा
 पहिरेनारी । कहेउ तबहिं गेसेगिरिधारी । तब हँसिबोले कृष्णामुरारी ।
 मैं पति तुम मेरी सब प्यारी । तुमहि हेतु मैं बपु ब्रज धारेउ । तुम
 कारणा बैकुण्ठ बिसारुं । अब व्रतकरि तुम नाहिं तनगारौ । मैं तुमते
 कहुं होत न न्यारौ । अहिं कारन तुम अतितप साधयो । तन मनकरि
 सोका अवराधयो । जाउमदन अब सब ब्रजबाला । अंगपरशि सेतेजंजा
 ला । युवतिन बिदादई गिरिधारी । गई घरनि सब धोयकुमारी । बख
 हरणा लीला प्रभुकीन्हो । ब्रजतरुगान व्रतकोफलदीन्हो । यहलीला
 अवगानि सुनि भावै । और न सिखवै आपुन गावै । सूरश्याम जनके
 मुखदाई । दृढताई मैं प्रकटकन्हई ३६० बसनहरे सबकदम चढायो ।
 सोरह सहस गोप कन्यन के अंग अभूषणा सहित चुरायो । अति बि-
 स्तार नीपतरु तामे लैलै जहां तहां लटकायो । मनि आभरणा दाख

डार प्रतिदेखत छबिसनहों अटकायो । नीलाञ्जर पाटञ्जर सारिधेत
 पीत चून्नी अरु पायो । सूरप्रयास यवतिन व्रत पूरणाकोफ न कदम डारि
 फल लायो ३६१ ॥ रागमूहो ॥ आपुकदम चहै देखन प्रयास । नसन अभू-
 धन सब हारे लीने बिनावसन जल भीतर बास । मंदत नयन ध्यानधरि
 हरिको अंतर्प्रीमी लीनी जानि । बारबार सवितासों सांगत हमपादें पति
 राख पाणि । जलते निकसि आय तट देख्यो भूषणाधीर तहां कहुनाहीं ।
 इतउत हरि अकित भई सुन्दरि मुकुटाचरई फिरि जगही माहीं । गभि
 प्रघनतनीर में टाढी थर थर अंग कपत मुकुमारि । कालै गयो वसन आ-
 भूषण सूरप्रयास जर प्रीति बिचारि ३६२ ॥ रागविलायन ॥ खोजत जात
 साखन श्यात । अरुणा लोचन भोंहरे दे बार बार जम्हारां । कबहुं रुनु भुनु
 चलत घुटुरुन धूर धूसरगात । कबहुं भुकि को अलगव खैचत नयन जल
 भरि जात । कबहुं तोतर बोलबोलत कबहुं बोलत तात । सूरहरिकी निर-
 खि शोभा निर्मिय तजत न मात १ साखन तनिक दैरीसाथ । खैलत
 घुटुरुन फिरत आंगन धावत चरगा चलाय । सुन्दर दर्शन आं अलिबिरा-
 जत बोलत हैं तुतराय । मोरमुकुट की शोभा निरखत सरबलि बालजाय २
 आज सुफल नखि जनम हमारा । नयन भार देख्यो गी नन्द दुलारे ।
 नामकपोल जाम भुजदीन । अवरमधुर मुरली करलीने । नयन कुरंग
 रूप रस भेदो । आज हरि हम अपना करिले खयो । नादबेद संगति
 सुनावै । जलत भुवन शिर शिखर दुलावै । जनम जनम कीं पूजी देरी
 आग । जगन्नाथ मुख देख्यो माधोदास ३ बलि गई वाल रूप मुरारि ।
 आंघ पैजनि बाजत रुनु भुनु नचावति नन्द नारि । कबहुं हरिको लिये
 अंगुरिया चलन सिखावत श्वारि । कबहुं हृदय लगाय हितकरि लेत
 अचला डारि । कबहुं हरिको चितै चूमत कबहुं सिखवत गारि । कबहुं
 लेकर पाछे दुरावति यहाँ नही बनवारि । कबहुं अंगभूषणा बनावति
 राइ लोन उतारि । सूर सुर दुनि सवै सोहे निरखि यह अनुहारि ४
 नन्दरा प्रेजे जहारे भोरहि उठि पहाऊं । निरवध आनन्द सरति निर-
 खिनयन भिराऊं । उज्जल तन थोरी थोदी रातो अंबर सोहै । अरुणा
 यनसे निकसि पूरणा चन्द्रकी छबिको कहै । ब्रह्म घनीभूत पूतकर अंग-
 रिया लायो । मन्द मन्द चलन सिखवति लोखन फल पायो । रिद्धि

मिद्ध निद्धि सहित रमा टहलकरति फिर । अर्थ धर्म काम मोक्षभीष्य
 भिन्नान्तर पर । नन्दजू कहत कहा मागत तजहो तेरि सुनात । नन्ददास
 नन्दताल को नेकर तीर न पाउ ५ खेलत प्रियाम रवात्मन संग । भुवस
 हलधर अरु श्रीदासा करत नाना संग । हाथ तारीइत भाजतयो क-
 रकार होइ । वरजेजू हलधर प्रियाम तवहीं आँदलागे गोइ । तब कहउ
 मैदौर जानत बहुत बलसोंगात । मेरी जोरहि श्रीदासादायगारे जात ।
 जोलि तजे नठि श्रीदासा जाहु तारी मार । आगे हरि पाछे श्रीदासा
 धखो प्रियाम हँकारि । जानिक मै रहउं ठाढ़ो कुवत कहा तब मोंह ।
 मूरप्रियाम खीझे मुखनिमों मनेहों कीन्हो तोहि ६ मैयामै नहिं साख
 न जायो । ख्याल परे ये सखा सबै मिलि मेरे मुखलपटायो । देखतुहीं
 कींके पर भाजन ऊँचेधर लरकायो । हो जू कहत नान्हे कर मेरे सो
 कैसे करि पायो । मुख दधिपोंछि बुद्धि यकनीकी दोना पाछे दुरायो ।
 डारिमाटी मुसिकात यशोदा प्रियामहिं कंठ तगायो । बालाबिनोद भाय
 करि मोहउं आतामनाहिं रिक्कायो । मूरदास यह यशुमतिको मुख दे-
 वन दुर्लभ गायो ७ देखो भाई या बालककी बात । वन उपवन सरिता
 सब मोहे देखत साँवलगात । मारग चलत अनीत करत हरि हठि करि
 माखन खात । पीताम्बर वह शिरस ओढत अचलदे मुसिकात । तेरी
 मोह कहा कहूँ उरतन दैतन जात । जब हरि आवत तेरे आगे सकुच-
 नि कहेंउ न जात । कौन कौन गुणा कहों प्रियाम के नेक न काहु डरात ।
 मूरप्रियाम मुख निरभि यशोदा कहति कहा ये बात ८ नेक मरेबारे
 कान्हडाँडिदे मर्यानियां । देखि देखि मुख लेत नन्दजूकी रनियां ॥ कंठ
 बधूलीमोहै नाकनयुनियां । नयननते नीर मानों मोंतनकी मरियां
 नेकुरहोइँ साखन मरेप्राणाधनियां । आरिजनि करोमरेछगनमगनि-
 यां । मूरनरमुनिकाहूँके ध्यान न आवनियां । मूर सुतदेखि रागी भूली
 धामधनियां ९ ॥

इति रागकल्पद्रुमनित्यकीर्तनान्तर्गतरागविलावलसमाप्त ॥

अथ सूरसागर राग सागर संग्रहकृत ॥

राग गंगोद्भव तथा बपाई राग कल्याण प्रारम्भ ॥

— ३ —

श्रीकृष्णायनमः ॥

राग कल्याण तालातिताला ॥ पद पंकज बंदि शिभुवन स्वामी । मन
घट द्यापक जगत उधारन सूर नर मुनि जाको पार न पामी । सूककरे
बाचाल पंगुगिरि लंघैअंधरे को सब कह्यु दरसामी । सूरदास प्रभुआश
पुजावो देहो सुसतिहरि गरुड़ागामी ॥ रागिनी धनाश्री तालधामा तिताग ॥ चर
शाकमल बंदिहरिराई । जाकीकृपा पंगुगिरिलंघै अंधरेको सब कह्यु
दरसाई । बहिरोमुने गंगपुनि बोले रंकचलै शिरछव धराई । सूरदास
स्वामी करुणामय बारबार नमोपद जाई ॥ श्रीभागवत वर्णन ॥ श्रीहरिभक्ति
माहात्म्य ॥ गंगसारंग ॥ ताल धमाल ॥ कहोशुक श्रीभागवत विचार । हरिकी
भक्तियुग युग बरते आनधरन दिनचार । चिन्ता तजो परीक्षितरा-
जामुनि शुक्शीय हमारि । कमल नयन की लीलागावत कटेअनेक
बिकारि । खट्वांग दितीप महरतमें तरिगयेतुमरे हैं दिन सात सुमार ।
दृढ बिश्वास करोउर अंतर हरिकोनाम आधार । सतयुग सतचेता तप
कीये हापर पूजामार । सूरभजन कलि केवलकीजै लज्जाकाननिवार ॥
अथ दशम कथा प्रारम्भ ॥ कथा प्रमंग वर्णन ॥ रागिनीआसावरी ॥ तालधमाल ॥ बालबिनोद
भावती ली ना अति पुनीत मुनि भायोहो । सावधान हूँ सुनो परीक्षित
सकल देवमुनि साखीहो । कालिन्दीके कूल बसतहै मधुपुरि नगर र-
सालाहो । कालनेम उग्रसेन बंशकुल उपजे कंस भुपालाहो । आदिब्रह्म
जननी सुरदेवी नामदेवकी बालाहो । दई बिवाह कंस बसुदेवहि अघ
भंजन उरशालाहो । हयगज रतनहेम पाटम्बर आनंद मंगलचाराहो ।
समुदित भई अनाहद बाणी कंसकान भनकारा हो । याके गर्भ अव-
तरे जोसुत करिहै प्राण प्रहाराहो । रथतेउतरि केशवहिराजा कियो
खड्ग पटताराहो । तब बसुदेव दीनहूँभाये पुरुष न वियबध करई हो ।
मोकोभई अनाहद बाणी ताते शोच न टरईहो । आगे वृक्षभले जो बि-

यफल वृक्षई बिर्निकि निमरईहो । याहिमारि तंहिऔर बिबाहं अग्र
 गोच को मरईहो । बालक काज धर्मजनि छांडौराग्रन येभीकी जैहो ।
 याक्षेगर्भ औतरेजेसुत भावधानहै लीजैहो । वाचाबन्ध कंसकारि छांडे
 लग बसुदेव पतीजैहो । मानहुं मृगी चरत गहवत गे नयन नीर उर भीजे
 हे । पाहिलीपुत्र देवकी जायोलै बसुदेव दिखायोहो । बालकदेखिकंस
 हँसिदीन्हें । सबअपराध क्षमायोहो । कंसकहा लरिकारि कीनी कहि
 नारद ममुभायोहो । जाकोभरमकरत हो राजा सतिपाहिलेही आयो
 हो । यहसुनि कंसपुत्र फिरिमांग्यो यहिविधि सबन संधारेउहो । तब
 देवकी भईतनु व्याकूल कहँलैं प्राणप्रहारेउहो । कंसवंशको नाशक-
 रतुहै कहँलैंजीव उबारौहो । यहदुख कबहों मिरिहो श्रीपति अरुहां
 काहं संहारौहो । धेनुरूपधारि पुहुमि पुकारी शिवविरंचिके द्वारा-
 हो । सबमिलि गयेजहां पुरुषोत्तम सेवत आगमअपाराहो । क्षीरसमुद्र
 मध्यतें यों कहि दीरघबचन उचाराहो । उधरौवरशि आसुरकुल मा-
 रौंधरि नरतनु अवताराहो । कूळी मूसक पवनपानि ज्यों तैसाइजनम
 बिकारीहो । पाखंड धरम करत हैं पांवर नाहिन चलततुम्हारीहो ।
 मारगछांडि अमारग सों रति बुधविपरीत बिचारीहो । असृतछांडि
 बिययबिय अचवत देतअधम पतिगारीहो । सुरनरनागतथा पशुपक्षी
 सबको आयसुदीनोंहो । गोकुलजनमले उमंगमेरिजो चाहत सुखकीना
 हो । जिहि माया विरंचि शिव मोहे सोई ब्रह्म करचीन्होहो । देवी
 गर्भअकर्षि रोहिणीआपुबास करिलीन्हेंहो । हरिके गर्भवासजननी
 को बदन उजारौ लाग्योहो । मानहुं शरद चन्द्रमा प्रकट्योशोच ति-
 मिरतनभायोहो । तिहिक्षणकंसआनिभयोठाढो देखिमहातमजाग्यो
 हो । अबकीबेरमेरोअरिआयो आपुअपनयो त्यागोहो । दिनदश गये
 देवकी अपनो बदन निहारन लागीहो । कंसकाल जियजानि गर्भमें
 अतिआनन्दसभागीहो । सुरनर देवबंदना आयेसेवतते उठिजागीहो ।
 अविनाशीको आगम जान्यो सकलदेव अनुरागीहो । कहु दिन गये
 गर्भ को आगम उर देवकी जनायोहो । कासोंकहों सखि कोउ नाहीं
 चाहतगर्भदुरायोहो । बुधरोहिणी अष्टसीसंगम बसुदेव निकट बोलाये
 हो । सकललोक नायक सुखदायक अजन जन्मधरि आयेहो । साथे

मुकुट सुभग पीतांबर उरसोहत भृगुरेखाहो । शंखचक्र भुजचारि नि-
 राजत अतिप्रताप शिशुभेयाहो । जननी निरखिभई तनव्याकुल यह
 न चरितकहुं देख्योहो । बैठासकुचनिकटपतिबोलेदुहुनपुत्र मुख देख्यो
 हो । सुनोदेव यकआन जनम की तोसोंकथा चलाऊहो । तुमसांगंधा
 में दयोनाथ है तुमसों बालक पाऊहो । शिव सनकादि आदि ब्रह्मा-
 दिक योग जापहुन आऊ हो । भक्तिबहुलमेरोहैवानो बिरदहि कहा
 लजाऊहो । यहकहि माया मोहअस्तभाये शिशु है रोवन लागेहो ।
 अहोवसुदेव जाउलै गोकुल तुमहो परमसभागेहो । घनदामिनि धरनी
 मिलिगारजेमहाकटिन दुखभारेहो । लैवसुदेव धसेदहि मामहि तीन
 लोकउजियारेहो । आगेजानु यमुनाजलबूझौ पाछेसिंहदहाड़ेहो । जा-
 नुजंघ कटिग्रीव नामिका वसुदेव मनहि बिचारेहो । चरणापसारिप-
 रशि कार्लिन्दीतरवा नीरतेआगेहो । शेषसहसफनऊपर कायोगोकुल
 को अतिभागेहो । पहुचेजाय महारिमंदिरमें मनहि न शंकाकीनीहो ।
 देखि पर्यंक योगमाया वसुदेवगोदकरलीनी हो । तुरतहिबेग मधुपुरी
 पहुंचे सकलप्रकट पुरकीनीहो । देवीगरभ जाइहै कन्या रायन बात
 पतानीहो । यहसुनिकसखइ लैधाग्रोतब दंभीआधीनीहो । यह कन्या
 मोहिबकसि बन्धुत दाही जानिकर दीनीहो । क्रूरकंस समवंश बिना-
 शत समझेबिनारिसकीन्हीहो । नहिं जानिये होयकल कीनोंअबिगत
 गतिकिन चीन्हीहो । पकरतकन्यागई अकाशहि दोउभुजचरणालगाई
 हो । गगनगई बोली सुरदेवी कंसमृत्यु नियराईहो । जैसे मीन जालमें
 क्रीडत गनेनआपुलखाईहो । तैसेइकंस कालढूक्योहै ब्रजमेंयादवराई
 हो । जैसे व्याल बेगको ढूके बेगइ चारोंताकेहो । जैसेसिंह आपुमुख
 निरखे परे कूप में डाकेहो । तैसेइ कंस परमअभिनायक भूत्यो राज
 सभाके हो । गतिकीगतिपतितेरी जाकेहाथ मृत्युहैताकेहो । यहसुनि
 कसदेवकी आगेरहे चरणा शिरनाये हो । बहुअपराध करे शिशुमार
 लिखो न मेल्योजायेहो । काकेशावु जन्मलीनोहै बभ्रुहुमतोदुभाईहो ।
 चारिपहर सुखसेजपर निशिनेकहुं नींदनहिंआई हो । देशदेशके दूत
 बुलायो कामोहै कलकैसीहो । अबगतिअजर अजीतअमरना करता
 को बलजैसीहो । दिनहींदिनसों पुरुषहोतहै बहतअसुर बलवैसोहो ।

बभूवर्तनाह तगासार बुभायोर्पालकामाखनजेसोहो । जागी महारिपुत्र
 सुख दंदगा आनंद नरबजाईहा । कंचनकनक होमोद्विज पूजा चन्दन
 शननालपाई हो । बरसावरगा रंग बवालबने भिल्लिगोपिनमंगल गायो
 हो । बहुविधि द्योम कुसुमसुर बरयत फलन मडपछायोहो । आनंद
 भरि भरि करत कृतहलप्रेमसगन नर नारी हो । अभय नृभय निगान
 बजावत देत महरका गारी हो । नाचत महारि मुदित मनकीने बवाल
 बजावततारी हो । मूरदास प्रभु शोकूलप्रकटे मथुराकंस प्रहारीहो ॥
 राग बिहाग ॥ आनंदे आनंदबन्धो अति । देवनिर्दिष्ट दुन्दुभी बजाई
 सुनिभधूपुरी प्रकटेआदव पति । विद्याधरकिन्नरी कंठधर उपजावत
 अनुराग असितगति । गावत गगन धरशिधुनि मुनियतगरजत घनते-
 हिकानजतनजति । बरयतमुसन सुदेश सरम सुर जयजय करतमानत
 रति । शिवविचित्रिचन्द्रादि मनकमुनि फलसुख न समात मुदितमति २
 राग वेदांग ॥ अहो पति कछु उपावसो कीजे । जेहि उपाव यहबालक
 अपनो राखिकंस मो लीजे । मनसा बाचा करमना नरपात कहेउ न
 पतीजे । अश्रिबल छल करि यतन युगति यह काहि अनतही दीजे ।
 नाहिनइतनां भागसुयशरम नितलोचन पटपीजे । बालकगयेकहातुम
 करिहो तत्र बहुते दुखभीजे । कंसदुष्ट नहिबूझे दुख सुखदूत कोउ न
 पीजे । ताते कहति पुकारि अबहितेपाकेकहा ज्योंकीजे । मुनहुजो
 पियसमुतकामुखनिरखिनिरखि सुखलीजे । मूरदासप्रभु मोहनभूरति
 कैसे जानीदीजे ३ ॥ राग बिहाग ॥ मुनु देवकीको हितहमारे । असुरकंस
 अपवशबिनाशन शिरपरबैठे रखवारे । ऐसोको समरथ त्रिभुवनमेंजो
 यहबालक नेक उवारे । खड्गधरेआयो मोदेखन अपने करिऊनमोह
 पछारे । यहमुनतहि अकुलायगिरी धरणीनयन नीर भरिभरि दोउ-
 टारे । दुखित देखि बसुदेव देवकी प्रकट भये धरिक्के भुजचारे । बोलत
 उठे प्रतिज्ञाप्रभु यह मोतेउबरे तत्रमोहिंमारे । अतिदुखमें सुखमातहि
 सूरकोप्रभुनन्दभुवन सिधारे ४ ॥ राग वेदांग ॥ देवकी मनमन चक्रितभई ।
 देखहुआय पुत्रसुख काहेन ऐसीकहूं देखीनदई । शिरपर मुकुट पीत
 उपरना भृगुपद उरभुजचारिकरे । परबकथासुनाइकहीहरितुमसांयो
 यहिभेयधरे । कोरेनिगड सोवाये पहरु द्वारे कपाट उघारेउ । तुरत

मोहिं गोकुलहि जाहुलै यह कहनहि शिशुभेषधरउ । तबहीरोइउठे
 बसुदेव मुनि हरखवन्तनंद भवनगये । बालकधरि लैसुरदेवीको आय
 सुर सधुपुरीभये ५ भादोंकी राति अधियारी । द्वार कपाट कोटिभट
 रीके दुहुं दिश कन्त कंस भय भारी । गरजत मेघ महा डरलागत
 कीच बड़ी यमुनाजल कारी । तब तेइहै शोच जियमेरे क्योंदुरहैश-
 शिवदन उज्यारी । कंसपय बोलवचन करिराखी बरुदेत हैनतादिन
 जियमारी । कहिजाको ऐसोसुतबिचुरेसोकैसे जीवैमहतारी । कदि-
 न बिलाप देवकी सो कहिदीनदयाल सीत भै हारी । कुटिगये निगड़
 तबहिं गये गोकुल सुरसुसतिहै विपतिनिचारी ॥ चोटा ॥ हरिसुखदेखि
 होबसुदेव । कोटिकाम स्वरूपबालक कोउन पायोभेव । भरैतारा प-
 रेपहरू नींदआइगेह । दामिनी चहुंओरचमकै सघन वरयैमेह । चारि
 भुजके चारिआयुध निमयके न पत्थाउ । अजहुंसनपरतीत नाहीं नन्द-
 धर लेजाउ । सिंहआगेशेयपाळे नदीहैभरूपूरि । नामिकालोनीरआयो
 पारुपैलो दूरि । सोदते हुंकारि कीनो यमुन जान्यो भेव । पुलकिके
 हरिचरणा परसीतगियबसुदेव । महरिद्विग मनजानिराखेअमरअति
 आनंद । सुरदाम हुलाम ब्रजहित प्रकटे आनंदकंद ७ ॥ रागभारग ॥ गौरी
 गगोश सुर बिनऊहो देवीशारद तोहिं । गाऊंहरिजीको सोहरो मन
 आनन्दआवैसोहिं बधावोहरिजूकोमसरहिबो रानीजायहैसोहनपूत ।
 आनन्देसुरनरमुनिभयेनन्दसपूत । आठमासो चन्दनपियोहेनवमैंपिया
 कपूर । दशयैमास सोहनभयेमेरे अँगनारी बाजे आछेतर । हरयी पार
 परोसनीनये हरय नगरकेलोग । हरयी सखिय सहेलरी सब आनन्द
 भयोशुभयोग । बाजनबाजैगहराहोमलिबाजैमंदिरभेरि । मालिनीबांघे
 तोरनेमेरेअँगनाबीरोपै आछेफेरि । अतगाढ मोनोढोलनागदिल्यायो
 चतुरसुनार । बीच बीच हीरालगे नंदलाल गरेकोहार । यशुभतिभाग
 सुहागिनीजिनजायोहरिसोपूता करहुललनकीआरतीरीअनुदधिकादों
 सुत । नावनिबोलहु नवरगी लैआव महावरबेग । लाखटकाअरुभूमका
 सारी देखंदाइको नेग । आगरचंदनको पालनो गदिईगुरु द्वारसुदार ।
 लैआयोगादि होवनीविष्वकर्मासो सुतिहार । धन्यसुदिन धन्यसुघरि
 धनिधन्य सु जोतिययोग । धन्यधन्य सथुरापुरीहो धनिधनि महरिके

जाग । धीरे धीरेमाता देवकी धन्यतनय दसकुलपुमान । बालकाना भरी
 प्रहसी धनिजननलिया जयकान । काहुकोरे कोपरा जगाना मीने
 गोपि । जाति गोति प्रहमयके सब गरीर कसिपी मोनि । दान
 गोरी आनोरी मिलि करहु छटी को दार । गणकदीपी सुवली का
 नाचियन कियोहे शिगार । झोट सुहुत जागवनी शुभ भोग्येन कहु
 बरमात । भूरदासप्रभुगोकुलजनमे मोहनभवन मोपालक ॥ गनगन ॥
 प्रजभयो महरिके पूत तबयह द्यातहुती । लुनिआनन्दे सबलोक गोपुन
 यनित गुनी । अतिपूरब पुंर पुण्य रूपद्वारा अवलगुनी । प्रह दान नमय
 बलशोपिकोन्ही वेदवुनी । भुनिसुनिनार्द्ध नगौर सहस्र शिवायनि लं
 गनु पहिरा नूतनचीरकज्जल नयनदिये । कौसिकंचुकी तिलक तिलार
 शोभित हारहिये । कर कंकरा कंचनधार मंगल भाजिये । शुभाभयसा
 नितरल तरिबना बेनी शिचिल रही । पुरपरयत लगन सुप्रेमगयी जेध
 फुही । उरअञ्जलउदतन जार्जहंसागीसंगसुही । सुखमोगन रा गेरभा
 मंदुर सांगकुही । ते अपने अपने गेरलिकसी भातिभही । सांगोपाल
 नगिनकी पांती पिंजरा चुरिचली । गुतागावहहि मंगलगीता गलिदषा
 पांचअली । सानोभोर भंयरेविदेखि फुलीकसल कली । प्रियमे रहिले
 हि पहंचीजाइ भाति आनन्दभरी । लहरीतर सखनमुखाय सखीपिपु पा
 परी । सप्रबदन उघारिनिहाये बेनि अपाव्यभरी । चिरजीयो यथो
 नंदन परवा कामकारी । धनिधन्य गहरीकी कोमिभास सुखभास
 जिन जेधा शेहेरत नमसुख फलनि परी । शिरसाग्यो घोरवार
 की झूलहरी । सुनिस्वालीन सायबहोरि बालका गोखिलये । गोहरोय
 र्यासधातु अङ्गनि चित्रये । शिरदधिसाखनपाह गावती गीतनये । कर
 भांग भृदङ्ग बजावत वा नंदभवन गये । मिलि लाघत करत कलाय
 छिरकत हरदिदही । मानों बरयत भादोंनास नदीपूत दूधबही । जही
 जहां चितजाइ कौतुक तहींतहीं । सबआनंद मगनगोपाल कामधन
 नहीं । इकधाइ नन्दपै जाहिँ पुनि पुनि पायँपरै । एक आप आपकी
 मांभ हंसिहंसि अङ्ग भरै । एकअम्वर सकल उतारि देतनहिं भंजयनि
 एकदधि अक्षत अहु दूध सबनिके शीशधरै । तब न्हाइ ननर नादय
 असकुश हाथलिये । घसिचन्दन चाससंगाइ विप्रन तिलककि

दोसुख पियपुजाय अन्तर शोचहरे । गुरुजन द्विज पहिराय सबनिके
 पायँपरे । गध्यांगनी न जाहिं तनुनि सबच्छबही । ते चरहिं यमुनके
 कल्लू हूनेदूधचही । खुरताँबे रूपेपीठ मोने सींगमही । तेदीन्हीं द्विजन
 अनेक हरथि आशीयपही । तबअपने मित्रसुबन्धु हँसिहँसि बोलिलयो
 मथि भृगमद मलय कपूर सबनिके तिलक दये । उरमाला पहिराय
 वसन बिचित्र दये । दानगान परिधान पूरगा काम किये । बर मागध
 बन्दोसत आंगन भवनभरे । तेथेलहिं लेलेनाम कोऊ न बिसरि परे ।
 जिन जो याचेउ जायरम नंदरायलरे । मानों बरयत मासअथाह दा-
 दुर मोरररे । तबअम्बर और मँगायसारी सुरँगघनी । तेदीन्ही बधूनि
 बुलाइ जैसी जाहिबनी । अतआनन्दते बहुरि निजगृह गोपधनी । नि-
 कसी देतअशीय रुचि अपनी अपनी । धरधर भरिमृदङ्ग पटहनिशान
 बजे । तब बांध्यो बन्दनवार ध्वजापर कलश सजे । ता दिनते वै लोग
 सुख सम्पति न तजे । कहिसूर सबनिकी यहगति जेहरिचरगाभजे ।
 गोकुल प्रगतभये हरिआथ । अमर उधारन असुर संहारन अन्तरयाभी
 त्रिभुवनराय । माथेपर धरि बसुदेव ल्याये नन्दमहर घरगये पहुँचाय ।
 जागी महारि प्रभु सुख देखत पुलक अङ्ग उर में न समाय । गदगदकगत
 बोलिनहिं आवै हरथवन्तिहै नन्दबुलाय । आवहुकन्तदेव परसनभयो
 पुत्रभयो सुखदेख्यो धाय । दौरिनन्दगे सुतसुख देख्यो सो प्रोभा मोपै
 वरगान न जाय । सूरदास पहिलेहि यहसांग्यो दूध पिवावन अशोमति
 माय १० नन्दरायके नवनिधि आई । माथेमुकुट अवगामागि कुण्डल
 पीत वसन भुजचारु सुहाई । बाजत तालमृदङ्ग यंत्रगति चरचि अरगजा
 अङ्गचढाई । अक्षत दूब लिये शिरवन्दत धर धर वन्दनिवार बँधाई ।
 छिरकत हरदि दही हियहरयत गिरत अङ्गभरि लेत उठाई । सूरदास
 सबमिलत परस्पर दानदेत नहिं नन्दअघाई ११ ॥ रागमूजरी ॥ आजुवन
 कोऊ बेगि न जाई । सौ गैयां नकरा समेतसब आवहु चिबबनाई । ढोटा
 हैरे भयो महरके कहत सुनाय सुनाई । अपने अपने मनकोचिंत्यो नै-
 ननिदेखैआई । एकफिरत दधि दूध बन्दवत राकचलत उठिधाई । एक
 परस्पर कहत बधाईआनंदउरनसमाई । तनकिशोरकोमल अरुबालक
 चहे चौपुनेबाई । सूरदास प्रभु गोकुल जनमे गनत न रानेराई १२ ॥

गङ्गागङ्गा ॥ होसक नईवान भूनिआई । सहार यथोपा होसजाथा घर
 घर होतबधाई । द्वारेभीर गापगोपिनकी साहसा बरोपान जाई । आत
 आनन्द होत गोकुलमें रतनभूमि नीच छाई । नाचत तरुगावस अरु
 बालक गोरम कीचमचाई । मूरदास स्नासी सुखसागर सुन्दरप्रयाग
 कन्हारी १३ होसखि नईचाह इकपाय उपज्यो पुतकन्हारी । बाजत
 वज्रनिशान पंचविध रजगुरज सहनारी । महरितहर वज्रहात लुटावत
 आनंद उर न समाई । चलहु सखी हमहूं मिलिजैये बंगिकरी अतुराई ।
 कोउ भयगा पहिरो कोउ पहिरत कोउ ऐसेहि उठिआई । कंचनथार
 दूध दधिरोचन गावत चलीं बधाई । भांति भांति बनिचलीं युधिगंगा
 यह उपमा मोपेनिहूं आई । असर बिमानचढ़ मूरदेखत जैधनि शब्द
 सोहारी । मूरदासप्रभु भगतहेतहित दुष्टान के दुखदाई १४ ॥ गगूजी ॥
 सखीरी काहेको गहभ लगावति । सुधौंकोहो इतनोंमुख मुनिके क्यों
 नाहिन उठि भावति । आजुहि माय पिधाता कीनो मनभुहुती अति
 भावति । सुतको जनक प्रशोदांकें गृह तालगि तुमाहं बुलावति । क-
 नकथार भरिले दधिरोचन बंगिचलीं मिलिगावति । सांचहु मुदिन
 नन्दनायकको होनाहिन बीरावति । आनंदउर अज्वल न संहारति
 श्रीशमुसन बरयावति । मूरदासशोभा त्यहिअवसर जहांतहांति आवति
 १५ ॥ राम कन्हारी ॥ गोपी गौराहं मङ्गलचार बधावो ब्रजराज के । अब
 भयो असर सबकाजबधावो ब्रजराजके । रानीजायोहै मोहनपूतबधावो
 ब्रजराज के । बहुतनारिसुहाग सुन्दरि और घोयकुमारि । सजन प्रीतम
 नाउँ लेलै देहिं परस्पर गारि । आनन्द अतिशय भयो घर घर निर्त
 ठांविहिं ठांवि । नन्दद्वारे भेंटलैलै उमड्योहै गोकुलगांव । साथियेप्रयासा
 देहिंद्वारे सातसींक बनाय । नवकिशोरी मुदित होहै गहति यशोदाज
 केपांय । चौकचन्दन लीपके आरतीधरी संजोय । कहति घोयकुमारि
 ऐसो आनंद जो नितहोय । करिकरि अलंकृत गोपिका पहिरे अभू-
 यगाचीर । गायबच्छ सँवारिल्याये ग्वालनिकी भईभीर । मुदितमङ्गल
 सहितलीला करहिं गोपीगवाल । हरद अक्षत दूबदधिदै तिलककरहिं
 ब्रजबाल । एकहेरी देहिं गावहिं एकभेंटहिं धाय । एक एक न गनत
 काहुहिं सक खेलावत गाय । एक रुद्ध किशोर बालक एक यौवन

सूरदास ने सुन्दरमान चट्टनहर पहरके । सूरदास प्रभु काउ गोकुल
 प्रभु काउ सनतन हरण दृष्ट जन मत धरके १९ ॥ ॥ गम आवरी ॥ अन्य
 मंथन सागरप्रतिहारो जिन येसो मृतजायोहो । जाके दरशपरशमुख
 तनयन पुन्य हो निर्गिर नशायोहो । विप्रसुजन बंदी औचारगासर्वेनंद
 मृहआयेहो । करितन मुभग हरदिर्दाध छिरके हरय अशीय बधायो
 हो । गरजीन खपकहेउ सबलच्छन आबिगत हैं आविनाशीहो । सूर-
 दास प्रभुनाम सनिमुनि आनंदित व्रजवासीहो २० आजबधावो श्री-
 नारायणके जायोहो मोहनपूत । कृष्णपक्ष भादौनिशि आठे नक्षत्र रो-
 उत्ती शुभकृत । बहुत नारि शोभाग सुंदरि और धीयकुमारि । सजन
 पीतम नामलैलै देत परशपर मारि । आनन्द अतिशय भयो घर घर
 निरत टांवाहिं टांवा । नन्ददुआरे भेंटलैलै उमड्योहो गोकुलगांव । द्वार
 दधिया ऐहिं प्रयागा सातसीक बनाय । नवकिशोरी सुदित हैंहैं गहति
 यथोग पाय । चारुचन्दन लीप के जो आरति धरेउ सँजोय । कहत
 मंगलसुमार आनन्द संगल जो नित होय । सुदित मङ्गल सहित लीला
 करति गोपीबाल । हरद अक्षत दूब दधिलै तिलक करत व्रजबाल ।
 २१ कहेरी दीहिं गावहिं एक भेंटहिं धाय । एक एक न गनत न काहु
 गल गेलावत गाथ । एक वृद्ध किशोर बालक एक यौवन योग ।
 क्षया जनम सु प्रेमनागर प्रीडित है व्रजलोग । प्रभु मुकुन्द को होत
 नीतन करत भोग बिलास । देखि व्रजकी सम्पदा जनफले हैं सूरदास
 २२ ॥ ॥ गम आवरी ॥ पालनो अतिपरम सुंदरगति लयावरे बढैया । शीतल
 चन्दन कटाउ धरि खरादि रंगलाव बिबिध चौकरी बनाव पचरङ्ग
 रेशम लगाव हीरा मोतीलाल सढैया । विश्वकर्मा सुतिसार रच्यो
 हे काम सेनार सियागगा लागै अपार नन्दमहर सतकाज अढैया ।
 आनि धरेउ नंदद्वार अतिही सुन्दर सुदार व्रजबध देखै बार बार शोभा
 नहीं बारबार धनिधनि अन्यहै गढैया । पालनो आन्यो अति मनसा-
 न्यो नीकी सुदिन धरेया । सखियन संग लगवाय रंगसहलमें पौढ्योहै
 जारी कन्हैया । सूरदास प्रभुकीमैया यशुमति नन्दरानी जोइसांगत
 सोइलैत पढैया २२ ॥ ॥ गम आवरी ॥ कनक रतनमया पालनोगढ्योका-
 मसुतिहार । विविध खिलौना भांतिके गजमुक्ता चहुंधार । जननी

उबलिनहवाय के अति क्रमसों लयेगोद । पौढाये पटपालने शिशु निरख
जननी मन मोद । देखो नन्दलाल मात सुकृत फल नन्दलाल । अति
कोमल दिन मातके अधरचरणा करलाल । सूरश्याम कवि असुगाता
निरख हरय ब्रजबाल २३ ॥ रागधनायो ॥ यशोदा हरिपालनोंभुलावै ।
हलरावैदुलरायमल्हावै जोइसोइसोइ कहुगावै । मेरेलालको आवनिद-
रिया काहेन आनिसुवावै । तू काहेन बेगरी आवै तोको कान्ह ब-
लावै । कबहुं पलक हरिमुंदिलैतहैं कबहुंअधर फरकावै । सोवतजाति
मौनहैंकैरही करिकरि सैनबतावै । यहिछांतर अकलाय उठेहरि यशु-
मति सधुरेगावै । जोसुख सूरसुर मुनिदुर्लभ सोनित यशुमतिपावै २४
रागजैतयो ॥ कन्हैया हालरोहों बारी । तेरेबदन इंदुपर अमिऊबि अल-
सनिमारी । कमलनयन कोकपर्ताकये माइयहिब्रज आवैगो । पालागों
विधिताहि बकीज्यों तूतेहि तुरतविगो । मुनिदेवता बडेजगपावन तू
पतिया कूलको । पैपूजिहों बेगि यहबालक करदेमोहिंबडोको । यह
सुख सरदास के नयननिदिनादन दूनोहो । दुतिया के शशिलौंहि बहै
शिशु देखैजननी गूनोंहो २५ भैरवको टाढीवाहिको मोसरिकरैनआन ।
सोइलेहों जोइमनभाई नन्दमहरकी आन । धन्यनन्दधनिधन्य यशोदा
धनिधनिजायोपूत । धन्यतुम ब्रजबासी धनिधनि आनंदकरतअकूत ।
घरघरहोतअनंदबधाई जहँतहँभागधसत । मरिामारिकापाटम्बरअंबर
लेतनवनत बहूत । हौमहन भंडारदियँ सबफेरिभरे सैभांति । तयहीदेत
तवाहँ फिरिदेखत सम्पति घरन अमाति । तेमोहिंमिले जातघरअपने
मैंबभी तवजाति । हंसिहंसि दौरिमिले अंकमभरि हस्तुम सकैजाति ।
सम्पातदेहुलेहु नहिंरको अन्नबस्त्रकैहिकाज । जोमैंतुमसों सांगनआयों
सोइलेहों नन्दराज । अपनेसुत को बदन देखावहु बडेसहर शिरताज ।
तुम साहिब मैं टाढी तेरो प्रभुमेरे ब्रजराज । चन्द्रबदन दरशान संपति
दे सोलैमैंबरजाउं । जोसंपति सनकादिक दुर्लभ सोसब तुम्हरे टाउं ।
जाकोनेतिनेति अति गायत तेइक्रमल पदधयाउं । हों तेरेजनम जनम-
कोढाढी सूरजदास कहाउरैनन्दजु मेरे मनआनंद भयोहो गोबर्द्धनतै
आया । तुम्हरे पुत्र भयोहो सुनि के अति आतुर ह्वैधायो । बंदीजन
अर्हभक्षक सुनिसुनि जहांतहांते आये । एक पहिलेही आशालागी

बहुत दिनों तक छाये । तेपहिर कंचनमणि भूयसा नाना बसन अनूप ।
 मोहंमिले मारगमें मानों जात कहूँके भूप । तुमतो परम उदार नन्दजी
 जिनजोमांग्यो मोदीन्हों । रोषो और कौन विभुवनमें तुमसरिमातो
 कीन्हों । कोटिदेहु तोपरेउ रहंगो विनदेखे नहिंजैहों । नन्दराय सुनि
 विनतीमेरी तबहींबिदा भलैहूँहों । दीजैबेगि कृपाकरिमोको जेहोंआ-
 यो मांगन । यशुमतिमुत अपने पार्यन चलिलेखत आवैआंगन । मदन
 मोहन मैयाकरिदरें यहसुनिकी घरजाउं । हाँतौतुम्हरेघरकोहाही सुर-
 दास तोहिं नाउ २७ ॥ रागबिलावल ॥ महरभवन ऋयिराजगयो । चरसा
 धोय चरसादकलीन्हो अरधासन करिहेतदयो । धन्य आजु बड़भाग
 हमारे ऋयिआये अतिकृपाकरी । हमकहूँ धन्यधन्य नन्दयशुदाधनि
 यहव्रज जहूँ प्रकटहरी । आदि अनारिद रूपरेखा नहिं इनते नहिं प्रभु
 और बियो । देवकी उरअवतार लेनकह्यो दूधपिवनतुममांगिलयो ।
 बालककरि इनकीजिनजानो कंसविध्वंस यईकरिहैं । सुरदेहधरिपुरन
 उधारन पुहुमीभारयई हरिहैं २८ ॥ अथपूतनाकावध ॥ रागआसावरा ॥ प्रथम
 कंसपतनापटाई । नंदघरनिमुतलिये जहूँबैठीचलीचलीनिजवामाहिंआ-
 ई । अति मोहनीरूप धरिलीन्हों देखत सबही के मनभाई । यशुमति
 देखिहरी वाकोमुख काकी बधू कौनधौंआई । नन्दमुवनतबहीं पहिं-
 चानी असुरघरनि असुरनकीजाई । आपुन ब्रजसमान भयेहरि माता
 दुखित भईभरपाई । अहोमहरि पालागन मेरी में तुम्हरो सुत देखन
 आई । यह कहि गोदलियो अपने तबविभुवन पतिमनमन मुमकाई
 मुखचूस्यों गहिकंटलगायो बिखलपत्थोअस्तनमुखनाई । पयसंगप्रास
 अंचै हरिलीन्हों योजन एक गिरी मुरभाई । चाहि चाहि करि ब्रज
 गगा धाये अति बालक कथों बचे कन्हाई । अति आनन्द सहित सुत
 पाये हृदय सांभरहो लपटाई । करवर बड़ी तरी मेरेकी घरघर करत
 आनंद बधाई । सुरश्याम पूतना पट्टारी यह सुनि जिय डरग्यो नृप
 राई २९ ॥ रागबिलावल ॥ उबरेउ श्याम महर बड़भागी । बहुत दूरि रे
 परेउआइघर देखोमैंकहुं चोटनलागी । रोगजाउबलिजाउ कन्हैयाय
 हकहि कंटलगाई । तुमहींहोव्रजको जीवनधन देखतनैनसिराई । भली
 नहींतेरी प्रकृतिथोदा कहांडिअकेलेजाति । गृहकोकाम इनहंतेप्यारे

नेकहुनहीं डराति । भली भई अबकेहरिबाचे अजहं सुरति भग्यहारि ।
 मरदास भक्तिकहेउ खालिनी मनमनसहरिविचारि३० ॥ पतितागणे ॥
 देखहुयह बिपरीतिभई । अद्भुतखप नारि यकआई बपदेतदयो भई
 दई । कान्हहि लेन सुमतिको रातेरुचिकारि कंठलगाई । तबपहिं दे-
 हधरी योजनलीं श्यामरहे लपटाई । बड़ेभागहैं नंदमहरके बड़भारिगनि
 नंदरानी । मरप्रयाम उरऊपर उबरे यहसन घरघरजानी३१ नेकलोपा-
 लहि भाकेदेरी । देखोंकमल बदन नीकेकरि तापाछे तकरिनीकीरी ।
 अति कोमलकर चरगारोजमु अधर दशननाशा सोईरी । लटकनि-
 शीरा कंठमारा भ्राजित मनमथ कोटिबारनेगेरी । दोहुनिशा यमान
 विलोकत यहछवि कबहुन पाईमेरी । निगम निअगमसुभातम बालक
 बड़ेभागपायेहैं तेरी । जिनकोरूप जगतके लोचन चन्द्र कोटिरवि आ-
 लयहैंरी । मरदास बलिजाय यशोदा गोकुलनाथ पूतनाबैरी३२ खप
 मोहनी धरिअजआई । अद्भुतसाजि शिंगार मनोहर असुरकंसदै पान-
 पटाई । कुचदियलाइ पीसकपटकरि बालघातिनीपरममोहाई । बैठी-
 हुती यशोदामंदिर हलरावति सुतप्रयाम कन्हआई । प्रगट भई तहं आनि
 पूतनाप्रेरितकाल अर्वाधनियराई । आवतिपीठ बैठनीदीनोंकभालपुंछि
 अति निकट बोलाई । पौढेहरिअति सुभापालने नै नारी नालकाज
 सिधाई । बालकलयो उछंग दृष्टमति हरथित अस्तन पावकाराई । बदन
 निहारि प्रासाहरिलीन्हें परदेतनी योजनहयाई । सूरअधु गतिताको
 दीन्हें मातुमानिसुखभास पटाई३३ राजको काज आजकरिजाउं ।
 बेगिसंहारो सकल घोथ शिशु जोमुख आय सुपाउं । मोहन धुरलि
 बसीठी पठयो मतिमनुख ह्वैधायो । झंगसुभग राजे द्वैमधु मूरति नैननि
 माह समायो । घसि चंदन कंकोल उरोजनिलैं रुचिसों पथ पयायो ।
 मूरशोचमन करेअबहींतो पूतनानामकहायो३४ ॥ रागसागर ॥ अथका-
 गासुरआयो । कपटधरेव कागरूपसक दनुजधख्यो । नृपशायसुलैकरि
 साथेदे हरयवन्तउरगरबभख्यो । कितकवातप्रभुतुमआयसुतेयहजानेव
 सोंजातगख्यो । इतनीकहि गोकुलउड्डिआयो आनंदगृह छाजरख्यो ।
 पलनापर पौढे हरिदेखे तुरतआनि नैननिगहिअख्यो । कंठचापिबहुबार
 फिरायोगहि पटवयो नृप पासपख्यो । तुरतकंस पुंछनतेहिलारयोवियो

आपों नाहंकाजमखो । बीते याम बोलितवआयो सुनहुंवांसेरो आत
मखो । परेअवतार महाबलकोऊ सकाहिकार मेरो गल्लख्यो । भुरवाय
प्रभुक्रमनिंकंदन भक्तहेत अवतार खख्यो ३५ ॥ रागविलावन ॥ रागसापरी
जिय अतिहि डरानो । सभामांभअसुरनिके आयेबारवार शिर धूअ
पछितानो । त्रजभीतर उपज्यो रिपु मेरो में जाभी यह बात । दिनही
दिन वह बढत जातुहें सोको करिहैं पात । वृजसुता पतन पठाई
क्षणाकसांभसंहारी । चोंच सरोरि कागसर दीन्हें भेरिहिण फटकारी ।
अबहीं ते यह हाल करतुहैं दिन दिन होत प्रकास । सेनापतिन सुनाय
बात यह नृप मन भये उदाम । मेसो कौन सारिहैं ताको मोहिं करे
सोआई । बाकोमारि अपुनपै राखै सरबजहि सो आई ३६ ॥ रागमुह्ये ॥
नृपति बात यह सवन सुनायो । सुहां बहीसेनापति कीन्ही शकटावर
सुनि गर्ब बढायो । दोउकर जोरिभयोतब दाहो प्रभुआयसु में पाऊं ।
यहांते जाय तुरतही सारैं कहौ तो जीवत ल्याऊं । यहसुनि नृपति
हरयसनकीन्हें तुरतहि बीरादीन्हें । बारम्बार सूर कहैं ताको आप
प्रशंसाकीन्हें ३७ ॥ राग गूढमलार ॥ पलमेंचल्यो नृपअनिकीन्हें । सरो
शिर नायकै गर्वाहि बढाय के शकट को रूप धरि अवर लीन्हें ।
सुनत नहरान ब्रजलोग चहुतभये कहा आघातधुनिकरतआवैं । देखि
आकाश चहुंपास दशहंदिशा डरेगर नारि तनुमुधि भलावैं । आपगयो
जहां तहां प्रभुपरेपालने करगहे चररा अंगुठा चघोरैं । किलकि किल
कत हंसत बालशोभा लखत जानि तहि कसतरिपु आयोभोरैं । ने-
कफटक्योलात भयो अति आघातगिरेउ भहरातशकटासंहारैउ । सूर
प्रभुनन्दलालदनुज सारेउख्याल मेदिजंजालब्रजजनउबारैउ ३८ ॥ यहाँ-
तथकटामुरमाते ॥ रागविलावन ॥ करपग गहि अंगुठा मुख मेलत । प्रभु पौढे
पालने अकेले हरयि हरयि अपने रंगखेलत । शिवशोचत बिधि बुद्धि
बिचारत व्रतवाढ्यो सायर जल भेरत । बिडरि चले युग प्रलय जानि
करिदिगपति दिगदन्तेनसकेलत । सुनिमन भीतभये भुवकन्धित जेप
सकुचि महसौफरापेलत । सोमुख सूरभयो सबगोकुल किलकत कान्ह
शकट पगलेलत ३९ चररागहे अंगुठा मुख मेलत । जन्दघरनि गायति
हुलरावत पलनापर किलकत हरिखेलत । जो चररागरबिन्द श्रीभयगा

उगते नेका न दारोत । देखी भौंदा रस चरगानमें मुखसेलतकार आरति ।
 जो चरगार विनयके रसको धरनर सुनि करत बियाद । यह बसहे मोहूं
 को दुर्लभ माने लेत सघाद । उकलीत भिन्धु धराधर काँधो कसत
 पीठि अकलाये । प्रथमहय फगा डोलन लाग्यो हरिपीवत जबपाये ।
 बह्याहृदा बहस्य अकलाने भगवतो रूपात । महाप्रलय के मेघउठे
 करि जहांतहां आधात । कसगाकरी छाँडि पगदीन्हों जानि सुरनि
 मज हरया । हंठांशुगी रहत सूरप्रभु सुरसुनि भरत प्रभांसा ४० ॥ रागवि
 द्यामने ॥ यशोदा मदनशोषाल भाववै । देखि हृदयगति शिभुदनकांपत
 ईश चिच्छि भभावै । अमित अरुणामित आलस लोचन उभय पलक
 परिआवै । जनु रवि शशि गत होत महानिशि दुर्धसिंधु छविपावै ।
 सांस उदर उस शतयोजन जगप्रवेत भँडार समावै । नाभिसरोज प्रकट
 पद्मासन उत्तरि तालपङ्कितवै । करशिर तरकरि प्रयागमनोहर अलक
 अधिक सो भावै । सुरदास मानहुँ पन्नगपति प्रभुऊपर फगाछावै ४१
 राग सोमठ ॥ नान्हरिया गोपाल वैरा बड़ेसो काहे न होहु । यहि मुख
 मधुर वचन हँसि कबहुँ जननि कह्यो मोहु । यह लालसा बहुत भरे
 जिय जो जगदीशकरै । मोदेखत कान्हर यहिआँगन पदवै धरगाधरी
 खेलाहँ हलधर सङ्करङ्ग रुचिनेन निरखि मुखपाऊं । सखासखा आरि
 करै मनमोहन हँसिहँसि कराठलगाऊं । जाके शिव विरञ्चि सनका-
 दिक मुनिजन ध्यान न पावै । मूरदास तिनको यशुमतिधुत हित अभि-
 लाय बढावै ४२ ॥ यहितेवृषावर्नव्रजको गयो । रागसोमठ ॥ यशुमति मन अभि-
 लायकरै । कब मेरे लाल घुटुरुबनिरेगे कब धरणी पगहैक धरै । कब
 हौंदांत दूधके देखौं कब तुतरेमुख बचनभरै । कब नन्दाह बाबाकरि
 बोलै कबजननी कहि मोहिरै । कबमोरो अँचरागाहि मोहनजोइसाइ
 कहि मोसों भगरै । कबधौं तनकतनक कछुखैहै अपने करलै मुखहि
 भरै । कबहँसि बात कह्यो मोसों वाछविते दुखदूरि हरै । प्रयागअकेले
 आँगन छाँडे आप गई कछु काज घरै । यहि अन्तर अंधवाहि उठ्यो
 यक गरजत गगन सहित धरै । मूरदास ब्रजलोग कुनतधुनि जो जहँ
 तहँ सब आतिहिरै ४३ ॥ रागमूहो ॥ अति बिपरीत लग्यावर्त आयो ।
 बात चक्रमिस ब्रज ऊपर परिनन्द पौरिके भीतर धायो । प्रौढिप्रयास

नन्दकं आंगन लैत उह्योआकाश धरायो । अन्धायंभ भयासवरो। कूल
जो जहँरहेउ सुतहँई धरायो । यशुमान धायआय जो देखै प्रयासप्रयास
कहिं तर लगायो । भावहु नन्दधरारि कर्णोकाँन तेरोगत धंजयाँह
उहायो । यहि अन्तर आकाशते आवत पर्वतसभ कहिं सबानितायो ।
मारो असुर शिलासों पटव्यो आपजहँ ना ऊपर भायो । दोर नन्द य-
शोदा दोरी तरताह लै हित कंटलागायो । सूरदास यहकहति यशोदा
नाजानोबिधनाहँ काभायो ४४ ॥ रागजिलावल ॥ उतरेउ प्रयासमहरिबद्ध-
भार्या । बहुतद्वारते परौ आयधर देखौं मैं कहूँ चोटनलागी । रोगजाउ
जलिजाउँ कन्हैया यहकहि कंटलगाई । तुमहीरो ब्रजको जीवनधन
देव्यत नयन सिराई । भलीनहीं तेरी प्रकृति यशोदा छाँडि अकेलेजाति ।
गृहको काम इनहँते ध्यारा बेकहु नहीं डराति । भली भई कैमे हरि
बाचे अजहँ शरीर सहाय । सूरदास रियभक्त कहत रजालिनी मदमें
महरि बिचार ४५ ॥ अथवा गजालाप्रसङ्ग ॥ रागधन ॥ हरिकलकत यशु-
मानकी कानियां । निरखि निरखि मुख कहति लालणों मोनधनोके
धनियां । अतिकामल तनुचितै प्रयास को बार बार पछितात । कैसे
बच्यो जाउँकलि तेरी लगायरत के पात । ना जानो भौं कोनपुण्य ते
कोकार लेत महाई । बैसोकाम पूतना कोन्हों यह ऐसी करिआई ।
माता दुखित जानि हरि निहँने नन्ही नन्ही दँगुलि दिखारि । सूरदास
प्रभु माता चिततं दुखदारेउ विषराई ४६ सुतमुख दोहा यशोदाफूली ।
हरयति निरखात दूधकी बँतली प्रेममगन तनकी सुविभूली । बाहिर
ते तबनन्दबुलाये देखोधौं सुखदाई । तनकतनकसी दूधचुलियादेखहु
नैन सुफल करौआई । आनंद साहितमहरतब आये सुखवितवत दोउ
नैन अघाई । सूरप्रयास किलकत द्विज देख्यो मनो कमल पर बीजू
जमाई ४७ ॥ अथ अन्नप्रासनलीला ॥ रागजिलावल ॥ कान्ह कुंवरकी करेपासनी
कछुदिन घटि यरमासभये । नन्द महर यहसुनि पुर्लाकत जिय हरि
अन्नप्रासनयोगभये । विप्रनुत्तायनाउँलैबुझियो राशिशोधियकसुदिन
धरो । आछोदिन सुनि महरि यशोदा सखिन बोलि शुभ गानकरो ।
युवतिमहरिकोगारीगावति और महरिकोनाउँलिये । ब्रजघरघरआ-
नन्दबळ्यो अति प्रेमपुलक न समातहिये । जाको नेति नेतिश्रुति गावत

व्यावत शिवहुनि ध्यानधरै । सूरदास तिनको ब्रजवनिता भक्तभारति
 अरु प्रेमभरै ४८ ॥ रागमाध ॥ आज कान्ह करिहैं आग्रासन । मरि
 कंदनके पार भरायो भाँतिभाँति के बासन । नन्दधरनि ब्रजवधूजुलाई
 जे सब अपनी प्राँति । कोउ जेवनार करति मउधृतपक्ष कटुरगके बहु
 भाँति । बहुत प्रकारकिये सबदयंजन अनेकवरन मिसान । आँतउज्जव-
 लकोमल सुठिसुन्दर महरि देखि मनमान । यशुमतिनंदहि बोलिक-
 हेउ तब महर जुलावहु जाति । आपराये नंदमहरघर लैआये सबदाति ।
 आदर के बैठारि सबनका भीतरगये नंदराय । यशुमतिउवहि न्हवाय
 कान्हको पट भूषरा पहिराय । तनुभूषली शिरलाल चौतनी करचूरा
 दुहुं पाय । बार बार मुख निरखि अयोदा पुनिपुनि लेतबलाय । घरी
 जानि सुतमुख जुतरावन नन्द बैठलै गोद । महरि बोलि बैठारिमंडलो
 आनंद करत विनोद । कनक पार करि खीरधरो लै तापर धृतमधुला-
 ई । नंद लैलै दरि मुख जुतरावत नारि उठीं सब राई । यतरस के प-
 रकार जहां लागि लैलै अघर जुवावत । विश्वंभर जगदीश जगत गुरु
 परसत मुख करुवावत । तनक तनकजल अघर पोंछिके यशुमति पै
 पहुंचाये । हरखवन्त युवती सब लैलै मुख चूमत उरलाये । महर गोप
 सब हिलि निल बैठे पनवारेपरुसाये । भोजन करत आँधकरुचिउ-
 पजी जो जेहि जेहि मन भाये । यहि विधि सुख बिलसत ब्रजबासी
 धनिगोकुलनर नारि । नंदमुखनके याद्विकुपर सूरदास बलिहारि ४९
 हरिको मुख गोहिंसाय अनुदिन अतिभावै । चितवत ब्रज युवतिन के
 सबकत बिसरावै । बारबार लैउछंगरहतिलोभ लागे । निरखति निंदत
 निमेषकरत बोटआगे । शोभित सुकपोल अघर अलपअलप दसना ।
 किलकत चिहँसत सुदेश मोहन मृदु रसना । नासा लोचन विशाल
 सन्तग मुखकारी । सूरदासधन्यभाग जोबत ब्रजनारी ५० ॥ रागधनायो ॥
 लाल तेरे मुख ऊपर वारी । बल कैसे मेरे नयननि लागे रोगान लाइ
 सुन्दारी । सुन्दरताको पार न पावति रूपदेखि सहतारी । उरअंतर
 आनन्द बढावन हँसतदेत किलकारी । अलपदशन सुतरातबोलबिच
 तहानजातिबिचारी । सूरसिंधुकी तंदभई मिलिसनसामगन हमारी ५१
 बलनमैयाकवि ऊपरवारी । बलगोपाल लगेइत नयननिरोम बलाय

गम्भीरी । कांडल अलक सोइनमुख बिहँसनि भृकुटीबिकट तिलारी ।
 सरहुँसना अलिशायक पद्मतिउड़त मधुपर्कनि भारी । लोचनललित
 दायाँलनि काजर छवि उपनिधि अधिकारी । मुखमहँ मुखओरीनीचि
 लाहत हँसत देत किलकारी । अलप दशन कलबल करि बोलन दुभि
 गीहँ परनि विचारी । निकसति इयोति अधरनकेबिच मानो बिधुगै
 भिज्जुज्जयारी । सुन्दरताकोपारनपावति रूपदेखि सहतारी । सूरामिभू
 की तंद भई तिलि सतिगति दृष्टिहमारी ५२ ॥ रागजैतथी ॥ ललना हों
 दारी तरे या मुखपर । माई मेरे हृदयबिच बिलगौ ताते मर्मिबंदा धों
 भूपर । दमकतहँ दूधदँतुलिया बिहँसत मानों सीपजघरकियो बारि-
 गपर । लमूलघलदशिरधूपरवारै लटकनतराकरहेउलिलार पर य-
 हउपमाकापैकाँदआवै कलुक कहौ सकुचतहौ जियपर । नवतन चन्द्र
 रेख सधिराजत सुरगुरु शुक्रउदोत परस्पर । मैयाकबि पर तनमनवारै
 तनक मृदुसबहू होतहै भूपर । सूरकहा में करौं निछावर अपने लाल
 बोलितलार खरपर ५३ ॥ रागआसावरी ॥ जवते मैखेलतदेख्योआंगन य-
 शुदाको पतरी । तबतेगृहमें नातोदूगो जैसीकाचो सुतरी । अतिविशाल
 बारिजलाचन पर शोभित काजर रेखरी । राखेद्वै मकरन्दपालि मनो
 अलिकोकिलके बेयरी । राजतद्वैदूधकीदँतियांजगमगजगमगहोतरी ।
 मनहुँमनोहर बिधुमंड तमें सीपरतनकीज्योतिरी । अबरासुगतउतकंठा
 लककलुबोलतहै तुतरायरी । सरप्रयाससुंदर मुखनिरखत आनंदउर न
 मसायरी ५४ अद्भुत एक चित्तैधों सजनी नंदमहरके आंगनरी । मोमें
 निरखि अपुनपौखोयो गईमथानीमांगनरी । बालदशा मुखकमलबि-
 लोकेत कलु जननीसों बोलैरी । प्रकटतहँसतदंत मनुसिपजामनिदूरैकल
 बोलैरी । सुंदरभाल तिलकगोरोचन मिलिमसि बंदका लाग्योरी । मनो
 मकरंदअन्नैसचिकै अलिशायकसोइनजाग्योरी । कांडललोलकपोलनि
 भलकत मनो दर्पनमेंभाँडैरी । रहीबिलोकिबिचारि चारुछवि परमित
 कातहुँ न पाईरी । मंजुलतारिन की चपलाई चित चतुरानन करयेरी ।
 मनोपरासन समर धरेकरभोंह चढोशर बरयेरी । जलधि धाकित जनु
 काग कपोत इयो कलन कहु आयोरी । नाजानो केद्विधंग मगनमन
 चाहि रहे नहिं पायोरी । कहलसि कहेंबनाय बरणि जितनी छवि

निरखि लहारीरी । सूरश्यामबो मकरोसपरदेउ प्रागावाँलहारीरी ५५
 (गद्यनाथ) ॥ यशोदा चिरुजीवो गोपाल । बेगिबहै बलसहित बिरबल-
 महरि मनोहर बाल । उपजिपरे शिशुकर्म पुण्यफल समुदसीप ज्यों
 लाल । सब गोकुलके प्रागाजिवन धन बैरनिके उरगाल । सूर किती
 मुखपावत लोचन निरखत घुटुरुन चाल । भारतरज लागहिँ मेरे उर
 भागहि रोगदोष जंजाल ५६ ॥ रागबिलायल ॥ खेलत नंदआँगनगोबिन्द ।
 निरखि निरखि यशुमति मुखपावति वदनमनोहर चन्द । कटि किं-
 किती चन्द्रमसिकी लट मुतावाँल भलिभाल । परस सुदेश कंठकेहरि
 नखनिच निच बज्र प्रवाल । करपहुँचिया पायपससूरा तनुरंजित रज
 सीत । घुटुरुन चलत अजिर सहँ बिहरत मुख मगिडत नवनीत । सूर
 निचिच कान्हकी बानिक बाराँकहत न आवे । बालदशा अवलोक
 सनकभुनि योगबिरति बिसरावे ५७ ॥ रागआधावरी ॥ घुटुरुनचलत प्रथाम
 मसिआ आँगन सात पिता दोउदेवतरी । कबहुँक किलकिलात मुख
 हेरत कबहुँ जननि मुख पेशवतरी । लटकन लटकत ललित भाल पर
 कानरबिंदु भुवजवररी । यह शोभानयननि देखै जे बरहि उपमातिहुँ
 भूपररी । कबहुँक दौरि घुटुरुन लटकत गिरत उठत फारि धावत
 री । इतते नंद बोलायलेत हैं उतते जननि बुलावतिरी । दम्पति हाउ
 करत आपुसमें प्रथाम खेलौना कीन्होरी । सूरदास प्रभु ब्रह्म सनातन
 सुत हित करि दोउ लीन्होरी ५८ ॥ रागबिलायल ॥ अथ वषगाठि कन्हैयाकी ॥
 आजु भोर तमचुरकी काँइरील । गोकुलमें आनन्द होतहै मङ्गलधुनि
 घहराने होल । फूलें फिरत नन्द अतिमुख भयो हरयि मँगावत फूल
 तँबोल । तनकबदन दोउ तनक कर तनक चरगा पोंछति पट भोल ।
 कान्हगले सोहत कंठभाला आँभूयरा अरु अंगुरिन्ह रोल । शिर चौं-
 तरी डिठौना दिय आँखि अँजि पहिराइनि चोल । प्रथामकरत माता
 सों भगरो अटपटात कलबल करि बोल । दोउ कपोल गहिँकै मुख
 चुंबत बरयद्योस कहि करति कलोल । सूरश्याम ब्रजजन मनमोहन
 आनंद उठत हिलोल ५९ वरय गाँठि सब सखिन बुलायो मुख करि
 मङ्गल गान करावो । चन्दन आँगन सर्बहिँ लिपावो मोतियनि तुम
 चौँक पुरावो । उमग अँगनि आनन्द तूर बजावो । मेरे कहे तुम बिप्र

बुनावा शुभघरि गके आनिभरावो । बागेबीर बनि बनि बनावो आ-
भयगा पहिरावो । अक्षतहूब पँधवा लतनकी बरयगाँठि जरावो हे
साहिं नैननि लावो दिनावो । पंचरंग सारि सँगांग मूयगा पहिरावो
नचं खन ठमझअझ बटावो । नँदरानी मबरबालि बुलावति यहै रीति
कहिंकहि गुनार्थति । बागकरो किनि बिलम्ब काटे लगानो यशुमति
तब नननलजावति । लाललियं कानियां दिखावति लगनकीधरी तुरत
आवति मैतो न्हवाइ बनावो । सूरश्याम मुखडायि निहाराति तनमन
युवर्ताजन वारति अतिसुख भयो बरयगाँठि जरावो ६० ॥ राग कलावग ॥
उमगनि उमझहैं ब्रजनारि कान्हकी बरयगाँठि तरय परान । गावत
मङ्गलगान नीके सुर नीकीतान आनंद हरयानि । कञ्चनमर्या जोरत
थार दधिरोचत फूलडार देखत चली नंदकुमार मिलिदेकी तरयानि ।
सूरदास प्रभुकी बरयगाँठि जोरत बहडवि परविन तोरति अरसपर-
सनि ६१ शोभितकर नवनीत लिये । घुटुरुन चलत रेगातनु मगिडत
मुखदधि लेपकिये । चारुकपोल लोललोचन हउ गोरोचनको तिलक
दिये । लटलटकन मनमत्त मधुपगरा मादक मधुनिपिये । कटुलाकंठ
बज्ज केहरिनख राजत रुचिरहिये । धन्य मूर सकौपल यहिसुखका
शतकलप जिये ६२ बालबिनोद खरे जिय भावत । मुखप्रति विम्ब
पकरिबे कारणा हुलसि घुटुरुवानि भावत । शब्दचोर बोल्यो है चाहत
प्रकट बचन नहिं आवत । अनेक ब्रह्मखण्डकी महिमा शिशुतासांभ
दुरावत । मूरदास स्वामीमुखसागर यशुमति प्रीति बढावत ६३ आंगन
खेलत घुटुरुनि धाये । नीलजलद तनुश्याम राममुख निरखि जननि
दोउ निकट बुलाये । बंधुक सुमन अरुणा पदपङ्कज अंकुश प्रमुखचिह्न
बसिआये । नूपुर कलख मनो सुतहंसलि कर बेनी उदै बाँहयसाये ।
कटि किंकिरी बरहार शीवदर रुचिरबाहु भूयगा पहिराये । सुभग
चिबुक डिज अधर नासिका अवरण कपोल साहिं सुदिभाये । धूसं-
दर करुणारस पूरगा लोचनमनहुँ युगल जलजाये । भालविशाल ल-
लित लटकन मर्या बालदशाके चिकुर सुहाये । मानहुँ गुरु शनि कुज
आगेकरि शशिहि मिलन तुमते गया आये । उपमा एक अद्भुत भइ
तब जब जननी पदपीत उढाये । नील जलद ऊपर यों निरखत तजि

सुभाव मनुतडित छपाये । अङ्गअङ्ग प्रतिमारति कर गंगिल छविमसूह
 लै लै मनुछाये । सूरदाम सो क्यों करि बरसौ जो छवि निगम नेति
 करिगाये ६४ ॥ राग कान्हरो ॥ सादर सहित बिलोकि प्रियाम सुखनन्द
 अनन्दरूप लिये कनियां । सुंदर श्याम सरोज नीलतनु आंगआंग सुभग
 सकल सुखदनियां । असुरा तराशा नख ज्योति जगमगाति रनु भनु
 करति पांय पैजनियां । कनकरतन मणिजडित रचित कटिकिर्किया
 कुनित पीतपट भनियां । पटुंचीकर पदिक उर हरि नख दातुलाकंद
 जुमनियां । कुटिल भृकुटि सुखकीनिधि आनत कलकपोल की छवि
 न उपनियां । रुचिर चिबुकद्विज अवर नासिका अति सुन्दर राजत
 सो बनियां । भालातिलक मसिविन्दु विराजत शोभत शीशलाल चौ-
 तनियां । मनमोहन की तोतरि बोलनि मुनिमन हरत सहस गुसकनि-
 यां । बालसुभाव बिलोकि बिलोचन चोरतचितहि चारुवतबनियां ।
 निरखति ब्रजयुवती सबराही नन्दसुवन छवि चन्दबदनियां । सूरदाम
 अब निरखि मगनभये प्रेमविवश कहुसुधि न अपनियां ६५ ॥ राग घनाशी ॥
 कहाँलंगि बरसौं सुन्दरताई । खेलतकुंवर कनक आंगनमें नैननिरखि
 छविपाई । कुलहि लमत शिरश्याम सुभग अति जहुपिधि रङ्गजनाई ।
 मानहुँ नवधन ऊपर राजत मधवा धनुय चढाई । अतिखुदेश मृदुहरत
 चिकुर मनमोहन मुख बगराई । मानहुँ मंजुल प्रकट काज पर अलि
 अबली फिरिआई । नीलश्वेतपर पीतलाल मणि लटकन भालसराई ।
 मुनि गुरु अमर देवगुरु मिलि मनोंभौन सहित समुदाई । दूबदन्त द्युति
 काइन जाति अति अद्भुत इक उपमाई । किलकत हंसत दुरत प्रकटत
 मनोधनमें बिज्जुकराई । खगिडत बचन देत परत सुख अलप जलप
 जलपाई । धुदुरुन चलत रेगातनु मगिडत सूरदाम बलिजाई ६६ ॥ राग
 नट नारायण ॥ हरि जूकी बालछवि कोटि मनोज शोभाहरनि । भुज
 भुजङ्ग सरोज नैननि बदन बिधुजित लरनि । रहे बिबरनि मलिलनभ
 उपमा अपन द्युति उरनि । मंजुमेचक मृदुलतनु अनुहरति भूयण भर-
 नि । मनहुँ सुभग शुङ्गार शिशुतरुफखो अद्भुत फरनि । चलतपद प्रति
 बिम्बमणि आंगन घुदुरुवनि करनि । जलज सम्पुट सुभग छविभरि
 लेत उरुजनु धरनि । पुराय फल अनुभवति सुतहि बिलोकि के नन्द

धरति । मुरप्रभुकी बसी उर किलकनि ललित लखवरीन ६७ ॥ राग
धनाशा ॥ किलकतकान्ह घुटुरुनि आवत । मरिामय कनक नन्दके
आंगन मुखप्रतिविम्ब पकरिबेह धावत । कबहुं निरखि आपकांती
का करों पकरन चाहत । किलकि हंसत राजतहै दंतुली पुनि पुनि
तेहि अवगाहत । कनक भूमिपर करपगकाया यह उपसाइकराजत ।
करकर प्रतिपद प्रतिसिगाबमुधा कमलबैरकी राजत । बालदशा शुभ
निरखियशोदा पुनि पुनि नन्द बुलावत । अचरातरलैं ठांकि मूरके प्रभु
का दूध पियावत ६८ ॥ रागविलासज ॥ नन्दधाम खेलत हरिडोलत । य-
शुमति करत रसोई भीतर आपुन किलकत बोलत । तेरति उति यशु-
मति मोपनकाहि आबहु घुटुरुनिधाय । बचन मुनत साता पहिंचानीचल
घुटुरुनि पाय । लियेउठाय अंचलगहि पौठ्यो धूरिभरी सबदेह । मूरज
प्रभु यशुमति रज भारति कहां भरी यह खेह ६९ ॥ रागमूहे ॥ धनि
यशुमति बड़भागिनी लिये कान्ह खिलावै । तनक तनक भुज पकरिके
नादहोन धिखावै । लखरात गिरिपरत हैं चलि घुटुरुनि धावै । पुनि
काम काम भुजदिके पगहैंक चलावै । अपने पायँन कबहिन चलो में
देखत धावै । मूरदास यशुमति यहैबिधि मोंजु मनावै ७० ॥ रागकान्हग ॥
हरिके बिसलयश गावति गोपांगना । मरिामय आंगन नन्दरायके
बाल गोपाल तहांकरैं रङ्गना । गिरि गिरि परत घुटुरुनि टेकत खेलत
हैं दोउ छंगन मंगना । धूसर धूरि धौत तन मरिाइत मात यशोदालेति
उछंगना । बमुधा विपद करतनहिँ आलस तिनहिँ कठिन देहरी उलं-
घना । मूरदासप्रभु ब्रजबधु निरखति रुचिर हारहिय सोहत बंधना ७१
अथ श्रीकृष्णपद चलन लोला ॥ राग मूहे ॥ चलनचहत पायँनगोपाल । लयेलगाय
अँधुरी नंदरानी मोहन मूरति प्रयास तमाल । डगमगात गिरि परत
पाशापर भुज भाजित नंदलाल । जनु श्रीधर श्रीधरत अधोमुख धुक्त
धरति मानहुँ नमिताल । धूरिधौत तनुनैननि अंजन चलत अटपटीचाल ।
चरणारुणात नूपुर धुनिमानों सरबिहरतहै बालमराल । लट लटकन
शिर चारु चौखड़ा सुठिशोभा शिशुभाल । मूरदास सेसो मुखनिरख-
त जो जीजै जगमें बहुकाल ७२ ॥ रागमूहे चिन्तावल ॥ मरिामय आंगन
नंदके खेलत दोउभैया । गौर प्रवेत प्रयासजोरीबनी बलकुवैरकन्हैया ।

नचायत गन्द नारि । कनहुंहरको लायखंगरी चलल मिखरति रघावि ।
 कनहुंहरदयलगा रीतिनकारितीत अंचलहारि । कनहुंहरको रीतिनचायत
 कनहुंगावतिगारि । कनहुंलेपाके दुरावति अहाँनाहे मयवारि । का ६
 अग भूयगावनावति राईलीनउतारि । सरनरगुनि खबसोटे गिरिगियर
 अनुहारि ७८ ॥ गग बिनाथल ॥ भावतहरिकेनालबिनाद । प्रयागराममुख
 निरगि प्रसोदित गीतिगजनिनयगोद । आनंद पंकपरस तनुमोडित
 चतनरुगिगत नूपुरसगमोद । परस सनेहबडावत सनसलनिर्विकार बैठत
 चरिदगोद । आनंदकंद संकल मुगवदायक दिशिादनरहतकेलिरगवोद ।
 सूरदासप्रभु खंजलोचन किरिफिरि चितवत तजजनको ७९ बाल
 रिनोदधंगनिकी डोलनि । मगिसय भूससुभगनन्द आलस बलिबलि-
 जाउं तोतरीयो लनि । रुचिरकंद कंदुला के हरि नखवज्रभास बहुलाल
 अमोलनि । बदनमरोज तिलकगोराचन लट लटकन अनुकर गीतलो
 लनि । करनरनीत परसआननसों कलकलजानककु लभ्या कपोलनि ।
 कतिजननूर कहांलगियरगो धन्यनन्द जीवनजग मोलनि ८० गहंश्च-
 नरिया सुवनकी नन्दचलन मिखावन । अरवराय गारि परतहैं कर
 ठेकि उठावत । बारबार बिक्रियासमों ककुनीत बुलावत । दुहुंया द्वै
 दैनुतीभई अतिमुख कविपावत । कनहुंकान्त करकादि नंदगंग हूँकरि
 गावत । कनहुंजलति चलेधामको घुटुकन कमिवावत । सूरप्रयास मुख
 देखि सहरिमन हरय बडावत ८१ ॥ गगधनाथ ॥ कान्हचलत परा हैवै
 धरनी । जोमनमें अभिलाय करतिही सोदेखाति नंदधरनी । रुनुकुभु-
 नुकु नूपुरधुनिबाजत यहआंतहै मनहरनी । बैठिजात पुनिउठत तुरत
 ही सोखवि जायन बरनी । ब्रजयुवतीसवदेखि थकितभइ सुंदरताकी
 गरनी । चिरजीवो यशुदाको नन्दन सूरदासकीतरनी ८२ ॥ रागमोरी ॥
 भीतरपे बाहिरलौ आवत । घरआंगन अतिचलत सुगममंथ देहरिमें
 अहकावत । गिरिगिरि परतजात नहिं उलंधी अतिश्रमहोत नकाव-
 त । अहुठ परगबसुधा सवकीन्ही धामअर्वाधि बिरमावत । मनहींमन
 बलबीर कहतहैं खेसैंग बतावत । सूरदासप्रभु आपनिमहिमा भगतन
 के मनभावत ८३ ॥ राग धनाथी ॥ चलतदेखि यशुमति मुखपाये । दुमुक
 दुमुकधरि धरणीरैगत जननी देवि दिखावै । देहरिलौं चलिजातबहुरि

फिर फिर इतहीको आवैं । गिरि गिरि परत बलत नहिं ताकत सुर
 गुनि प्रोचकरावैं । क्रांतिवह्नांडकरत किनतीतरहरत बिलंब नलावैं ।
 ताकोलिये नंदकीनारी नानारूपखेलावैं । तब यशुमति करटेकिप्रियाम
 को क्रसक्रमकरि उतरावैं । मूरदासप्रभु देखिदोख सुरगुनिसनबुधिहि
 बंधावैं ८४ ॥ राम भेते ॥ सोबल कहाभयो भगवान । जोहबल सोनरूप
 जलथाहेउ जियेनिगम हतिअसुरपरान । जोहबल कमठपोठपर गिरि
 धर सजलसिंधु सधिकियो विधान । जोह बलरूप बराहदशनपरधरी
 धराकरि पुष्पसमान । जोह बल हिरसाकशिपु उरफारे भयेभक्त को
 रूपनिधान । जोहबल बलिबंधनकरि पठये वसुधात्रैपद करीप्रमान ।
 जोहबल रावगाकेशिरतोर कियोविभीषणा नृपति समान । जोहबल
 जामवन्त मदमर्द्यो जोहबल भूप बिपति मुनिकान । मूरप्रियाम अब्रधाम
 अर्वाधपर चहिनसकत प्रमुखरे अजान ८५ ॥ रामप्रासावरी ॥ देखो अद्भुत
 आबिगातिकी गतिकेतिक रूपधरे हरिहो । जलथल पंचचतुर त्रयउरमें
 सोअबकौन परेहैंहो । जाकेसाल भयेब्रह्मादिक सकलबिषय वसुसाधेहो ।
 जिनकेखोज बिरंचि बिकलहैगहीअंत कहु साध्योहो । तिनको नार-
 छिनो व्रजयुवती बांढित शासों बांध्यो हो । जिनअवगानि जनकी वि-
 यदासुनि गरुडामन तजिधायो हो । तिन अवगानिहरि सुनत यशोदा
 हलरावैं गुणागायो हो । बिचभरसा पोथरा सब समरथ माखन काज
 अरेहैंहो । रूपविराट रोगप्रतिकोठिखों पलनामांझ परेहैंहो । जिन भु-
 जबरगाहि रावगा सारेउ हिररायकप्रयप उदर बिदारहो । सोभुज पकरि
 यकरि व्रजयुवती ठाढ़ेहोहु पियारेहो । जामुखको ब्रह्मादिक लोचन
 शंभुसमाधि लगायेहो । सोमुख छुम्बति सहारयशोदा दूधलार लपटाये
 हो । सुरनरमुनिजाको ध्याननपावत शेषसहसमुख गायेहो । सोई मूर
 देहधरिआये गोकुलगोप कहायेहो ८६ आनंदप्रेम उमगियशोदा ला-
 लरी खेलावैं । शिवसनकादिशुकादिब्रह्मादिक खोजत अंतनपावैं ।
 गोदलिये हंसिके हलरावति तुतरेबाल बोलावैं । दैकरतारि बजावति
 गावति राग अनूपमगावैं । कहुंकरपल्लव आनिगहावति आंगनमांझ
 रिगावैं । गतिपंगुभई बिसरीसांध शारददिननाथननेकू चलावैं । कबहूँ
 हिलकैं किलकैं जननी मनका सुखसिंधु बढावैं । सोहि रहीं व्रजकी

युवती यश सूरदास बलि ॥ अर्थ ६७ ॥ रागमहो ॥ आंगन प्रयाग नचावई
यशुमति नदरानी । तारीदैशाबई सधुरी सुरधानी । पायन नूपुरवाजई
कर्तिकीकरी कजै । नन्हींनन्हींसडिअनि अरुणाताफलधिभवन पूजै ।
यशुमतिगानसुने अवगान तव आपहुगावै । तारीबा जतदेखईपुनि आ-
धुवजावै । केहरिनग्यउरपरतुसुति शोभाकारी । मनहुंप्रयास धनमध्यमे
नवशशि उजिआरी । गभुवार शिरकेशहैं वरधूंघरधारे । लटकनलटके
भालपर विधुमधि गनतारे । कलाकंठ चिबुकतरे मुखदशन विराजे ।
खंजनविचशुक आनिके मनो परेउ दुराजे । यशुमति मुर्तहैं नचावई
ह्वाबदेखत जयते । सूरदास प्रयागकेमुखतरन न हियते ६८ ॥ रागमलित
छोटीछोटीगोडियां अशुरियाकोटि छबीली नचवज्योति सोति मानो
कंज दलनिपर । ललित आंगन खेलैं तुमुकु तुमुकुडोलैं भुंभुनु भुंभुनु
बाजैपैजनी मुदुमुखर । किंकिकी कलित काटि हाटकरतन जटित मृदु
कारकमलनि पहुंचिया रुचिरवर । पियरी पिछोरी भीनी और न
उपमा कीनी बालक दामिनी मानों ओहे बारों बारिधर । उरबधनख
कंठ कबल कुंडलवारबेनीलटकनमसिविंदामुनिमनहर । अजन रंजित
नैनचितवनि चितचोरै मुखशोभा परवारों अमित असमसर । चटकी
बजावति नचावति नन्दधरनि बालकैलि गावति मलहावति प्रेमसों
भर । किलकिलकिलकि हंमै द्वेद्वैतुलीलसै सूरदास मनवसैतातरे बचन
वर ६९ ॥ रागबिलावल ॥ माधवतनकमो बदन तनकसे चरगाभुज तनक
करनिपरतनकमाखन । तनकवातकोरहततनकसे तनकराभमें लागे
तनकमोदन । तनककपोल तनकसीदतियां तनकहंसनिपरहरतहोमत ।
तनकहितनक जु सूरनिकटआवै तनकमयाकैदीजे तनकशरन ७० मा-
धवतनक चरगाअरु तनकभुज तनकबदनबोलै तनकसेबोल । तनकक-
पोल तनकसी दतियां तनकहंसनिपर लेतहोमोल । तनक करनिपर
तनकमाखन लियेदेखत तनकजाके सकलभुवन । तनकसुने सुयशपा-
वत परमाति तनक कहततासों नन्दसुवन । तनकरीभपर देतसकल-
तनु तनकचितौनी चित वितके हरन । तनकहितनक तनककरिआवै
सूरतमक कहिदीजै तनकशरन ७१ ॥ रागयुकोप्रताव ॥ रागधनखी ॥ सह-
राने ते पांडे आयो । ब्रज घरधर बभूत नंदरावर पवभयो सुनके उठि

धायो । पहुंच्यो आय नन्दके द्वारे यशुमति देखि अनन्दबधायो । पांथ
 धोय भोतर बैठारेउ भोजन वो निजु भवनालियो । जो भावै सो जेवन
 कीजै विप्र मनाहिं अति हर्य बहायो । बही बैस बिधि भयो दाहिनो
 धनि यशुदा सेसो सुत जायो । धेनु दुहाय दूध लैआई पांढे रुचिकरि
 खीर चहायो । घृत मिथान खीर मिश्रितकर परसि कृष्णाहित ध्यान
 लगायो । नयनउघारि चिप्र जो देखे स्वातकन्हेया देखन पायो । देवहु
 आय यशोदा सुतकृत सिद्धपाक यह आनि जुठायो । सहार विनय
 करिदोउ करजोरो घृत मधु पय फिरिबहुत मंगायो । सूरप्रियाम कत
 करतअचकरी बार बार ब्राह्मणाहिंखिभायो ६२ ॥ रागरामकली ॥ पांढे
 भोगन लावनपावै । करिके पाक जबहिं अरपतु हैं तबहिं ताहि छुड़
 आवै । इच्छाकरिमें ब्राह्मणनिबन्धों ताकोश्याम खिभावै । वहअपने
 ठाकुरहि जेवावे तू तबहीं छुड़आवै । जननी दोष देति कतमोका बिधि
 बिधान करि ध्यावै । नयन सुंदि करजोरि नामलै बारम्बार बुलावै ।
 कहि अन्तर क्यों होयभक्तको क्यों मेरे मनभावै । सूरदाम बलि बलि
 ताकी जो जनम पाय यशगावै ६३ ॥ राग विलायल ॥ सुफलजन्म हरि
 आजुभयो । धनिगोकुल धनि नन्द यशोदा जाके हरि अवतारलयो ।
 प्रगट भयो अब पुण्य सुकृतफल दीनबन्धु मोहिं दरशायो । बारम्बार
 नन्दके आंगन लोटत द्विज आनन्दभयो । में अपराध किया विनजाने
 को जाने केहि भयजयो । सूरदास प्रभु जगत हेतवश यशुमति हित
 अवतार लयो ६४ ॥ रागधनप्री ॥ अहोनाथ जेइ जेइ तेरे शरणा आये
 तेइ तेइ भये पावन । महापतित कुलतारणा सकनाम अघहजार तारणा
 दुख बिसरावन । मोते कोहै अनाथ दरशनते भयोसनाथ देखत नयन
 जुडावन । भक्तहेत देह धरणा पुहुमी को भारहरणा जनम जनमको मु-
 कृतावन । अशरणा शरणादीन बन्धु यशुमति सुखकारणा देहधरावन ।
 हितके चितके मानत सबके जियकीजानत सूरदासप्रभु मनभावन ६५
 दयाकरिये कृपाल प्रतिपाल संसार उदधि जंजालते पारम्पार । काह
 के बह्म काहकेमहेश काहके गणेश प्रभुमेरे तौ तुमहिं आधार । दीन
 दयाल कृपाकरो मोको यह कहिकहि लोटत बारम्बार । सूरप्रियाम
 अन्तरयामी स्वामीहो जगत के कहा कहांकरो निरवार ६६ ॥ राग

॥ वृत्तान्त ॥ नन्दजके बारेकान्हा काँडिदे मयनियां । बारम्बार कहैमात
यशुमति रमनियां । नेकाहौ साखनल्यौ मेरे प्राणा धनियां । आरि
भिनि करौ बलिगई हेन न्याऊनियां । सुरनर जाके ध्यान धौ मुनि
ननियां । ताके नन्दरानी मुखचूँबि लीन्हें कनियां । सहमाननपुरा
गोलन बनियां । सूरश्याम देखिसब भूलींगोप धनियां ६७ यशुमति
रधिसयन करतिबैठी बरधाम अजिरदाहे हरि हँसत नान्हींसी दन्ति-
अग्निकबिछाजै । चितवत चितलेतचोराय शोभा बरसानजाय मुनिन
के गनहरणा को भनमोहनी दलसाजै । जननी कहतिनाचो तुम देहों
नयनीत मोहन रुनुक भुनुक चलत पायँन चारु नूपुर बाजै । गावत
गुणा मरदास यशवाढ्यो भुव अकाश नाचत पैलोकनाथ साखन के
काजै ६८ प्रातसमय दधि मथति यशोदा अतिमुख कमलनयन गुणा
भावति । नीलबसन तनुधजल जलदमनो दामिनि दिविभुज दगडचला-
वति । चन्दनदन लटलटाँक छवीली मनहुँ अमृत रसराहु चोरावति ।
गारम मथति नादयक उपजत किंकिसि धुनि मुनि अवत रमावति ।
सूरश्याम अँचरा धरिदाहे कामकसेरी कसि दिखरावति ६९ ॥ राग
कांगे ॥ गोद खिलावत काहुमुनि बडिभागिनिहो नन्दरानी । आनन्द
की निधिमुख लालको ताँहत निरखत है निशिवासर सेतो छबि
क्योंहुन जात बखानी । गुणाअपार बहु विस्तार कहि न परत निराम
बानी । सूरदास प्रभुकोलिये यशुमतिगोद खेलावति चितै चितै मुपु-
कानी १०० ॥ रागमेरी ॥ मेरो भाई श्याम मनोहर जीवनि । निरखि
नयन भूलेते बदनछवि मधुर हँसनि पयपीवनि । कुन्तल कुटिल मकर
कुण्डल भुव नयन बिलोकनिबक । सिन्धु मुधाते निकसिनयो शशि
राजित मनोमृगक । शोभित सुमन मयूर चन्द्रिका नीलनलिन तनु
श्याम । मानहुँ छत्रमेत इन्द्रधनु सुभगमेघ अभिराम । परम कुशल
कोबिद लीलानट मुसुकनिमन हरिलेत । कृपाकटाक्ष कमलकर फेरत
सूर जननि सुखदेत १०१ शोभा मेरे श्यामहिँपै सोहै । बलिबलि जाउँ
छवीले मुखकी पदतर को कोहै । या छविकी उपमा देवेको कबिन
कहाहोहै । निरखत अङ्ग अङ्ग प्रतिबानिक कोटिबदन कोहै । शशि
गुणा गाररचो बिधिआनन बंकनयन जोहै । सूरदास बलिजाय निर

खि सब मुरनर मुनि मोहै १०२ ॥ राग बिलावल ॥ बालगोपाल खेली मेरे
 तात । बलिबलिजाँउ मुखारदिन्द की यमति बचन बोलहु तुरात ।
 छोंडोमाट मयाँदधि मोहन उवटि बंद तनपरत अघात । मानहु राज
 मुक्ता मरकत परशोभित सुभग साँवरे गात । जननी प्रीति सांगत जग
 जीवन दैसाखनरोटी उठिप्रात । लोटत मूरश्याम पुहुसी पर चारि प-
 दारय जिनके हात १०३ दोउ भैया भैया सों सांगत देरी माखन अरु
 रोटी । सुनिमाता यहभाँति दुहुनकी भुँठहिधामके कामझँगाटी । बल
 गहेउ बलनि नासिका मोतीकान्ह गहीकर दुहसों चोटी । मानहुँहंस
 मोरभख लीनोकबि उपमा बरगौ कहाछोटी । यहछवि देख नन्दमन
 आनन्द अतिसुख हँसत जातिहैं लोटी । मूरदाम यशुमति प्रमुदित भइ
 भाग बड़े करमनि की मोटी १०४ ॥ राग नटनारायण ॥ बरगो बाल भेय
 मुरारि । थकित जित तित अमरमुनि गरा नन्दलाल निहारि । केश
 शिरबिनबपनके चहुँदिशा छिटकेभारि । शीशपरवर जटासानांरूपरु-
 चित्रिपुरारि । तिलकललित ललाटकेशरिबिंदुशोभाकारि । रोयअरु-
 शातृतीय लोचन रहेउअनु त्रिपुरारि । कंटकंटुला नीलमरिा अम्भोज
 माल संचारि । गरलप्रीव कपोलउर यहि भावभये मदनारि । कुटिल
 हरि नखहियेहार के देख हरयीनारि । ईशजनु रजनीशराख्यो भा-
 लहूते उतारि । मदन रजतनु प्रयासमंडित शोभयहि अनुहारि । मनहुं
 आँ बिभूतिभाजित सिंधु सोमधि आरि । अदृशपति यशुमति सता-
 वति असनको करैआरि । मूरदास बिरंचिजाकोजपत यशमुख चारि
 १०५ सखीरो नन्द नन्दनदेख । धूरिधूसर जटाजरुली हरिके तन हर
 भेय । नीलकटुला पोहिमरिा गगाफरिाकज्यों लपटाय । खन खनाकर
 हंसत हरिहर नचत डमरुबजाय । जलजमाल गोपालपरिहरे कहाकहों
 बनाय । मुंडमाला मनोहरगरलशोभापाय । स्वातिसुतमालाबिराजति
 प्रयासतनु यहिभाय । गौरिउर हरमनो गंगालईकंटलगाय । केहरिनख
 देखिहरयित रहीमनहिं बिचारि । बाल शशिमनों भालतेलैं उरधरेउ
 त्रिपुरारि । अरुप्रति अवलोकि युवतीकरति हैं यहध्यान । मूरप्रया-
 म बिलोकि भक्तको नंगम नहिंसकान १०६ ॥ राग घनाश्री ॥ दधि मृत
 जामें नन्ददुवार । निरखिनयन अरुभो मनमोहन रतदेह बारम्बार ।

दीरघमोल कहे उषेपारी रहेओ सबकीतुकहार । करउपमा लैरागदरह
हरिहेतन मुक्तापरसहृदार । भोक्तुलनाथ राये यशुनरिके आँखन भीतर
भवनसंस्कार । शाखापत्रमय जलमिलत फूलनकरत न पावौ पार । जल
नतनी सरससुरनरमुनि ब्रह्मादिक नहिपरतपचार । राखदास गमकी
बहलीला ब्रजवर्जिता गुणिगहिरे द्वार १०७ काजरि कोपे पापहुलाक
तेरी येनीहे बहै । जैसे देखि और ब्रजवालक सोंपस बैगचहै । यह
मुनिके द्वार पीवनलाग ज्यों ज्यों लखी लहै । अचबतये ताते जब
लाग्यो रोवत जीभ उहै । पुनि पीवतही कचह कटोरि भूँठ जनान
रहै । सूर निरखि मुख हँसति यशोदा सो मुख उर न कहै १०८ ॥
राग रागकी ॥ मैयाकब नहिहै मेरी चोटी । द्वितीयेर मोति दूध प्रियत
भई यह अजहूँ है छोटी । तुजो कहति बलकीबनी ज्यों है है लंबी
मेरी । काहत गहत न्हवावत जैहं नागनिधी भुँद लोटी । काचो दुध
पिवावत रोहन देत न भावनरोटी ॥ सूरमेया याहीरस रिभायो द्वार
हलधरकीजोटी १०९ ॥ रागआवाग ॥ यशुमति जबहीं कहेंउ अन्हवापन
रोयगयेहर लोतरती । तेलउबतनो लैआमेवरि लालहि चोटति पोतरि
री । मैबलिजाउं रहाँकिनमोहनकतरबलबिनकाजैरी । पाछेवारे रा
ख्योचुरायके उबतन तेलसमाजैरी । सहारिबहुत बिनती वारि रानरी ।
सानत नहीं कन्हारिरी । सूरप्रयास अतिही बिरभाने सूर मुनि द्यत
पाईरी ११० ॥ रागमारग ॥ कान्ह बलिगईआरिन कीजैहो । जोईजोईभा
वै सोई लीजैहो । कहति यशोदा रानीहो । कोखभवेभारं गपानीहो ।
जोमेरोलाल खिभावैहो । सोअपनोकियो भलैपावैहो । तेहि देहोदेश
निकारीहो । ताको ब्रजनाहन शारीहो । अति रिसते तनुकीजैहो ।
मुठिकोमल अंग पसीजैहो । बरजत बरजत बिरुभानेहो । करिकोभ
मनहिं अकुलानेहो । धरत धरत भुँदलोटेहो । माता को चीर निवडेहो ।
अंग आभूयरा सब तोरेहो । नवनिधि भाजनफोरिहो । देखितनजलतर
खेहो । यशुदा के पायन परसेहो । सहारि बांहगई आनेहो । तबतो
उबतनो मानेहो । तबगिरतपरत उठिभागेहो । कहुनेकनिकट नहिं लगे
हो । तबनंदधरनि चुचकारैहो । आवहुबलिजाउंतुम्हारैहो । नहिंआवहु
तौभलेलालहो । पुनि जानौगे सदनगोपालहो । तुममेरी रिसनहिं जानत

ॐ । भौं । तुम नहि पहिंचानत हो । मैं आज तुमहि गौहवांजो हो ।
 हाहा करि करि अनुराधो हो । बाबानंद उतहि ते आये हो । कौने हरि
 अतिठि स्निहाये हो । मुख चूनि हरि लै आये हो । लै यशुमति
 पहंचाये हो । मोहन कत स्निहति अयाजी हो । हिय लाय लिये नंद-
 रानी हो । ज्योंहं चतन चतन करि पाये हो । तन उवटन तेल लगाये हो
 तारो जल प्राति सगोई हो । अन्हवाइ दिथो धांधोई हो । अतिमर-
 स गभन तनु प्रोखो हो । लैकर मुख कमल अंगोछो हो । अंजन दोर
 इगारि दीजहो हो । भुव जात चख्योटा कीन्हो हो । अंगआभुषण
 पहिराये हो । लावहि कमल उहराये हो । ऐसी रिस न करौ मेरे
 जान्हा हो । अब ग्वाहु कुंवर कहु नान्हा हो । तुतराय कहेउ का हैरी
 हो । जो गोहिं भावै सोदेरी हो । जोइ जोइ भावै मेरे प्यारे हो । सोइ
 सोइ देखोैं ललारे हो । करोहै मिरावति मीरा हो । कहु हठ न करौ
 अदुबीरा हो । सद्यर्षि माखनयो आनी हो । तापरमधुमिश्रीसानी हो ।
 ग्वावागैं मधुरमिठाई हो । सो देखत अति रुचि पाई हो । कहु बलदाज
 कोदीजो हो । अरु दूध अघोरा पीजो हो । सबहेरि धरीहे साढो हो । लै
 उपर उपरते काढी हो । अतिधोमरि सरमसनाई हो । तेहि सोठि मि-
 रचरचि नाई हो । दूधवरा दाहरौरी हो । जोखात अमृतयक कौरी हो ।
 सुठि सुरम जलेनी बोरी हो । जेहि जेवत नहिं रुचिधोरी हो । अरु स्फु-
 रुमा नरमसँवारे हो । जे मुख मेलत सुकुमारो हो । सोती लडू सुठि सोठे
 हो । वह खात न कावहुं जीठे हो । सितलडू लबंगन नाथे हो । येते
 करि बहु धतन बनाये हो । गुंभा बहु पूरणा पूरे हो । भरिभरि कपूर
 रसचूरे हो । अरु तीसय दालमसूरी हो । जो चाखत मुखदुख दूरी हो ।
 अरु हेसमिसुरम सँवारे हो । अतिस्वाद परमसुखकारे हो । चावरबरने
 नहिं जाई हो । जेहि देखत अतिसुख पाई हो । मालपुवा मनुसाने हो ।
 बैततुरत करि आने हो । सुन्दर अतिसरस अंदरसे हो । ते घृत दधिमधु
 मिलिसरसे हो । घेवर अति धिरव चभोरि हो । लैखांडडारतर बोरे हो ।
 माधुनि अतिशय रसजूरी हो । सद्य परुसि घृत बोरी हो । जब पूरी सुनी
 हरि हरयो हो । तब भोजन परमद करयो हो । सुनि तुरत यशोदा
 ल्याई हो । अतिरुचि समेत हरि खाई हो । बलदाउहि टेरि बुलाई हो ।

यहसुनि हलधर तहै आयेहा । यहरनपरकाय रागमेहे । जगसागरो-
दागायेहे । मनमोहन हल धर धीराहे । जगत रवि राखनी गीराहे ।
प्रीतलजल लिंगा संगीरेहा । भरिआरी यशुमति लयायेहा । अचवत
नंद नयनजुड़ायेहा । दोउहरियहरयि गुनवानेहे । हँसि जननी चहभ-
रायो हे । तबकहुकहुभुवधनरायेहे । धीरी तनकतनकभावनयेहे ।
अनिलालअधरहैआयेहे । कनिमूरदागपविहारीहे । सांगतकहुजुंठान
धारीहे । हरितनकतनक अदरसखायेहा । सुंदनिभक्तनिपायेहे १११
गगधनाथ ॥ पाहुनी करिदैतनक गहेउ । हो जगो यहकाज रंगई य-
शुमति विनय कहेउ । आरिकरत जनमोहन सेरोधवल आनि गहेउ ।
व्याकुल मयांत मयानी सीती रवि भुव डरिआ रहेउ । साग्वन जात
जानि नन्दरानी सखिन सखारि कहेउ । सखायन सुरप्रनिरवि सगन
भइ दुहुनिमँकोचमहेउ ११२ ॥ गगनामकला ॥ हरिअनन आगेकहुगावत ।
तनक तनक चरसाग सों नाचत मनहींमयाहिं रिखावत । बाँह उठाय
काजरी धीरी सेयनि हेरि बुलावत । कबहुंका पायो नन्दगुकारत क-
वहुंका धरहीआवत । सायन तनकलेत करअधन तनकधनमें गावत ।
कबहुंकाचतै प्रतिबिम्ब स्वम्भकी लखी लै दिखरावत । देखि देखि
यशुमति यह लीला हरय अतनद बढायन । सुरप्रयास कं बालचरित
नितही नित देखतभावत ११३ ॥ रगविनायक ॥ बलिबलिजाउं मधुसुर
गावह । अर्वाकगार मेरेकुंवरकन्हैया नन्दिहना न देखावह । गारीदेहु
आपने करकी परसप्रीति उपजावह । आन अन्तरुनि गविडरपत कत
मोभुअ कंठगावह । जनिमँका जियकरहु लासभने काहेको भरमा-
वह । बाँहउठायकालिहकी नाई धीरीधेनु बुलावह । नाचहुनेक जाउं
बलि तेरी मेरी साथ पुरावह । रतनजति किछ्छीता पगनूपुर अपन
रंग बजावह । कनक खंभ प्रतिबिंबित शिशुयक लोनीताहि खनावह ।
सुरप्रयास मेरेउरते कहुंठारे नेक न भावह ११४ अथ कनछेदन को प्रस्ताव ॥
गगधनाथ ॥ कान्हू को कनछेदन हाथसुहारी भेलीगुरकी । विधिवि-
हँसत हरिहँसत हेरिहेरि यशुमतिके थकवकी उरकी । रोचनभरिलै
देतसींकोसों युयुत्तानिकट अतिही चातुरकी । कंचनके देहुरसंगाय लि-
येकहा कहोछेदन आतुरकी । लोचन भरिभरि दोउ साताके कनछेदन

देनात प्रियमुरको । रोवतदेखि जननि अकुलानी लियोतुरत नउबांका
 भूरकी । हंसतनन्द युवतीखबिहंसीभक्तिकि चलीक्याब भीतर दुरकी ।
 हारदात नन्दकरत बघाई अति आनन्द बालाव्रज परकी ११५ जवाहिं
 गंधा कलछेदन हरिको । मुरननितासब कहति परस्परव्रजवासी दासी
 ममसरिको । गोपी जगन भाई सबगावति हलरावति सुत लेति महरि
 को । जोशुख मुनि जनप्रधान पावतसोख करतनंद शुभघरि को । म-
 शामुक्ता गगाकरत न्योछातरि तुरतहिदेत बिलसनिद्वितनिको । मूरनंद
 व्रजजन पांहावावत उमगिचन्धोमुख सिंधुलहरिको ११६ ॥ प्रयनन्दको
 प्रस्ताव ॥ रागकान्हो ॥ दाही आंजर यथोदा अपने हरिहि लिये चंदा दिख-
 रावत । रंकतकत बलिजाउं तुम्हारी देख्यो धौं भरिनयन जुझावत ।
 विधे रंक तब थापुन शशि तन अपने करलै लैजुबतावत । सीढो लगत
 किधौं यहखासो देखग अति सुन्दरसन भावत । मनहींमन रुधि करत
 रुशितासो को कहिताहि संगावत । लागीभूखचन्द रेंखैहौं देहुदेहुरिस
 करि बिभुक्तावत । यशुमति कहतिक्कहा मै कीन्तोकातगोइनअतिदुख
 पावत । सूरप्रयासको यशुमतिबोधति गगनतरङ्गया उदर दिखावत ११७
 कोहिपाव करिकान्होहंगमुकैहौं । मैभूलीचंदबादिखरायो ताहिक्क-
 हतमोहिदेखैहौं । अनहोतीकहुं भईकन्हैया देखीसुनी न यात । यह
 तो आहिखिलौना सबको खान कहत तेहितात । यहदेत नवनीनित
 मोको किनकिनसांभनवारे । बारबार तुमसाखन मांगतदेउं कहां ते
 प्यारे । देखत रहौं खिलौना चंदाआरि न करोकन्हाइ । सूर प्रयास
 लिखे हंसति यथोदा नंदहि कहति जुझाई ११८ ॥ रागधनाथी ॥ आछो
 मोरो लाल हो ऐसी आरि न कीजै । मधु मेवा पकवान मिठाई जोइ
 भावै सोइ लीजै । सदसाखन साज्यो दहेउ घृत असु सीढो पय पीजै ।
 पालागौं हठ जिनि करौ अति रोसन तनु कीजै । आनबतावत आन
 ही इनबार्तानि कैसे जीजै । सूरप्रयास हठि चंदा मांगे चंदकहांते दीजै
 ११९ ॥ रागकान्हो ॥ बारबार यशुमति सुत बोधति आउ चन्द तोहिं
 लाल बुलावै । मधु मेवा पकवान मिठाई आपु न खैहैं तोहिं खबावै ।
 हाथीहपर तोहिं लीन्हैं खेलैनेक नहींधरगो बैठावै । जलबासन करि
 कीजो उगावति यहिमें तनवरिआवै । जलपटआनि धरियापर राख्यो

गर्ह आनंदोदहचंदेदिखावै । मुरदाम प्रभुहंस मुसकाने बारबारदोउ
करनाये १२० ॥ रागगामकती ॥ ल्योंगो री सा चंदाल्योंगो । कहाकरोजल
पूत पीतरकोजाहिर चौकिगहोंगो । यह तो भलमलातभक्त भोरतवै
रो काशिल लोंगो । बहतो निपट निकटही देखत बरजें हैंत रहोंगो
तुम्हरो प्रेम प्रकट में जान्यों बोराये न चहोंगो । मुरश्याम कहें कर
शक्तिग्याऊं प्राशितनदाप दहोंगो १२१ ॥ रागधनाथी ॥ लालयहचंदालेंलें
कमलनयन बलिजाय यशोदातीचौनेक चितैहो । जाकारसा तुमसुनि
सुन्दरनर कीन्हींयेति अनैहो । सोईसुधाकर देखि दमोदरया भाजनमें
हैं के । नभतेनिकटआनि राख्योहै जलपूत यतनजगै हो । लैअपनेकर
काहि चन्दको जो भावैमोकेहो । गगन मंडलते गर्ह आन्योहो पक्षी
सक पठैहो । मुरदासप्रभु इतिअ बात को कत सेरो लाल हठैहो १२२
रागबिनावन ॥ तुमसुखदेखि डरत शशिभारी । करकरिकै हरि देख्योई
छाहत शीजपताज गयो अपहारी । बह शशितो कैसेहु नहिआवत
यह गतो कछु बुद्धि बिचारी । बदन लखे दिखु दिखु शोक्कत मनभैर
कंजकुण्डतउजियारी । सुनहुं प्रयास तुहिं शशि डरपतहै कहतयेश-
रगतुम्हारी । मुरश्याम विरुभाने गोथे लिये लगाय छतिग्या सहता-
री १२३ ॥ रागकेदारो ॥ यशुमतिलैपलिका पौढावात । मेरी आहु अ-
तिहि खिरभानो यह कांहि मधुरे सुरसां गावति । पौढि गई आपुन
हरत्रेकरि अंग मोरि तनहरिजबुहाने । करसों ठोंकि सुतहिदुलरावति
लटपरायबैठे अतुराने । पौढहु लालकथायक कहिहैं अतिमीठीयव-
गानिको ध्यारी । यह सुनि मुरश्याम मनहर्षे पौढिराये हंसिदेतहुंका-
री १२४ सुनुसुत सककथाकहैं ध्यारी । कमलनयनमन आनंद उपज्यो
रभिक शिरोमणि देत हुंकारी । नगर सकरमणीकअयोध्या बडेमहल
जहंअगमअटारी । बहुत गलीपुर बीच विराजति भांति भांति सबहाट
बजारी । तहांनृपति दशरथ रघुवंशी जाकेनारि तीनिमुखकारी । कौ-
शल्या केकईसुमित्रा तिनकेजनम भयेसुत चारी । चारि पुत्र राजाके
प्रकटे तिनमें सकराम व्रतधारी । जनक धनुष व्रतदेखि जानकी विभु-
वन केसबनृपति हंकारी । राजपुत्र दोउकथि लैआये सुनतजनक प्रगा
तहंपगुधारी । धनुष तोरि मुखमोरि नृपति को जनकसुता तिन लिये

वारिनारी । पटञ्जुटो जयपीरघुपतिके तबकेकयो मुखमेलि निवारी ।
 बचन मांगि नृपसों यहलीन्हों रघुपतिके अभियेक सन्हारी । तात ब-
 चन मुनि तज्यो राजाजनि आता घरनि सहित बनचारी । उनकेजात
 पितातनुत्यागो अति दयाकुल कारजीय विनारी । चित्रकोट गये भरत
 मिलत जब प्रग पांधारि दै करीकपारी । युवती हेतकपट मृगमास्योरा-
 जिव लोचन सब प्रहारी । रावसाहरसा क्रियोसीताको मुनि करुणा-
 मयनींद बिसारी । सूरप्रथाम तब रत चापको लक्ष्मसादेहु जननि भू-
 मभारी १२५ यशुमति मनमन यहैविचारति । भक्तिकि उठ्यो सेवात
 हारि अनहीं कहू पढ़ि पढ़ि तनुदोष निवारति । खेततमें को उडीहि
 लगाई लैलै राईलोन उतारति । सांभहिने अतिही बिरभानो चन्दहि
 देखि करी अति आरति । बार बार कुलदेव मनावति दोउकरजीरि
 शिरहि लै धारति । सूरदास यशुमति नंदरानी निरखि बदन धैताप
 निवारति १२६ ॥ गगनमकली ॥ प्रातसमय उठिसेवतसुतको बदन उया-
 रेउनन्द । रहिनभक्त देखनको आतुर नयन निगाके दंड । स्वच्छसे
 में ते सुखनिकसतगयो तिसिर सिद्धिमंद । मनपैनिधिमुन मथतफेनफा
 दयो दिखाईचन्द । धारो चतुरचक्रोर सूरमुनि सब सखिसखासुखन
 रही न सुधि शरीर धीरमति पिबत किरिया सकरंद । आलस ब
 अलकशुचिउयों अतिपानकरतसकरंद १२७ ॥ गगनमेरवा ॥ उठहु नन्दकुसा
 भयो भिनुसार जगावति नंदरानी । भारीके जल बदन परवारौ कति
 कहि शारङ्गपानी । साखनरोटी अरु मधुमेवा जो भावै सो ल्योआनी
 सूरप्रथाम मुख निरखि यशोदा मनहीं मनहिँ सिहानी १२८ ॥ गगनवि-
 यन ॥ भोरभयेनिरखत हरिकोमुख प्रमुदित यशुमति हरयितनन्द । कि-
 कार किरिया कसलजनु बिकसति निरखति अति उपजत आनन्द । बर-
 उधारि जगावत जननी जागहु मेरे आनंदकन्द । मानहुँ मथि सूरसि-
 फेन फाटि देखि दिखाई नतनवन्द । जाको ईश शेष ब्रह्मादिक गाव-
 नेति नेति युतिकन्द । सोई गोपाल सुगोकुल भीतर सूरसो प्रगटेपरम
 नन्द १२९ नन्दको लालउठै जबसोई । निरखि मुखारविन्द की शो-
 काहि काकेमन धीरजहोई । मुनिमन हरत युयतिजन केतुक रति पा-
 नान जातसम खोई । ईयदहाम दशनद्युति दासिनि सानिक बोधि

अनु पोई । नागर नन्द मृदत सुनि जननी सारग जात लेत मन गोई ।
सूरप्रयास मन हरया मनोहर गोकुल नाखोहं सबलोई १३० ॥

अथ सूरसागर बाललीला रागकल्पद्रुम ॥

अथ माटी भक्त्या सुप्रसङ्ग ॥

श्रीकृष्णायनमः

। गविलायल ॥ खेलत प्रयास पौरिके बाहर व्रज लरिका संग सोहत
जोगी । तैसेइ आपु तैसेइ सब बालक अति अज्ञान सबकी मतिभोरी ।
गावत हांकसेत कलकारत द्युतिदेखत नंदरानी । अति पुत्तकित गढ़
गढ़ मृदुबागी मन मन हरयि सिहानी । माटीलै हरिमति दई मुख त-
र्पहि यशोदा जानी । सांटीलिये दौरि भजपकरेउ प्रयास लंगरेउठानी ।
लरिकनको तुम सर्वादिन भुठवत भोसो कहा कहोगो । में माटी नहिं
खाई मैया मुख देखे निबहोगो । बदन उघारि दिखायो विभुवन बन
घर नदी सुमेर । नभशशिरवि मुखभीतरहैं मयसागर धरणी फेर । यह
देखत जननी मन दयाकुल बालक मुखका आहि । नयन उघारि बदन
हरिमुंघो सात्तामन अवगाहि । भूंदेलोग लगावत सोको माटीम्वहिं
न सुहावै । सूरदास तब कहति यशोदा ब्रजलोगन यह भावै १ ॥ राग
धनाश्री ॥ सोहन क्यों नहिं उगिलै माटी । बार बार अनुराच उपजावति
सहारि हाथ लियेसांटी । सहतारीसों मानत नाहीं कपट चतुरईटाटी ।
बदन उघारि देखाय आपनो नाटककी परिपाटी । बड़ीवार भइलोचन
सुंदे भसति जननि मनफाटी । सूर निरखि ब्रजगारि धकितभइ कहत
न सोटी खाटी २ ॥ राग रामकली ॥ सो देखत अशुभति तेरेटोटा अबहीं
गाटीखाई । यह सुनिकै रिमकै उठिवाई बांहपकरि लैआई । एककर
सों मुख गहिकै गाढे एककर लीन्हींसांटी । सारतिहैं त्वहिं अर्बाहं
कन्हैया बेगि न उगिलौ माटी । ब्रजलरिका सबतेरे आगे भूंटी कहत
बनाई । मेरेकहे नहीं तू मानत दिखरावहु मुखबाई । अखिल ब्रह्मांड

लपडकी महिमा दिखरायो मुखमाहां । सिंधु सुमेर नदी बगपर्वत ध-
 क्तभई मनमाहीं । करतेसांठि गिरानहिं जान्यां भुजा छांड़ि अकलानी ।
 मूर कहै यशुमति मुँह मंदहु बलिगई शारंगपानी ३ ॥ राग धनाश्री ॥ न-
 र्नाह कहौ यशोदरानी । माठो के मिस मुख दिखरायो तिहूँ तोकर
 रजधानी । स्वर्ग पताल धरति बगपर्वत बदनमांफहै आनी । नरीसु-
 मेरु देखि चढ़तभई याकी अकथ कहानी । चितै रहे तब नन्द सुवति
 मुख मन मन करत विनानी । मूरदास तब कहति यशोदा राग कहौ यह
 यानी ४ ॥ राग बनावल ॥ कहत नन्द यशुमति सुनि बौरी । ना जानिये
 कहांते देख्यो मेरे कान्होह लावतिदौरी । पांचवरयको मेरोकन्हैया
 अचरित तेरीबात । बेकाजहि सांठी लै धावति ता पाछे बिललात ।
 कुशल रहैं बलराम श्याम दोउ खेलत खात अन्हात । मूरप्रयास को
 कहा लगावति बालक कोमल गात ५ कान्ह नन्द सुबिकरी श्याम
 की ल्याबहु बोलि कान्ह बलराम । खेलत बड़ीवार कहूँ लाई ब्रज
 भीतर कान्हके धाम । मेरे सङ्ग आय दोउ बैठे उन दिन भोजन कौने
 काम । यशुमति सुनत चली अतिआतुर ब्रज घर घर टेरत लै नाम ।
 आजु अबेर भई कहूँ खेलत बोलि लेहु हारको काउबाम । छूँड़िफिरी
 नहिं पावति हरिको अति अकलानी चितवत धाम । बारबार पछि-
 तात यशोदा बामर बोति गये युगयाम । मूरप्रयासको कहूँन पावति
 देखे बहुबालक यकठाम ६ ॥ राग नटना रायण ॥ काउमाई बोलि लेहु गो-
 पालहि । मैं अपने को पन्थ निहारति खेलत बेर भई नँदलालहि ।
 टेरत बड़ीबेर भई मोको नहिं पावत धनप्रयास तमालहि । सिधजैवन
 मिरात नँदबैठे ल्याबहु कान्हबोलि तवकालहि । भोजन करहि नन्द
 संग मिलिके भूखलगी हूँहै मेरेबालहि । मूरप्रयास मगजोवति यशु-
 मति आयगये सुनि बचन रमालहि ७ ॥ राग सारङ्ग ॥ नन्द बुलावत हैं
 गोपाल । आवहुबेगि बलैयालेहीं मोहनप्रयास तमाल । परुसेथारखरेउ
 मगजोवत बोलत वचनरमाल । भातसिरात तातदुखपावत क्योँनचलो
 तवकाल । होवारी इन प्रतिपायँत पर दौरि दिखाबहु चाल । छांड़ि
 देहु तुमलाल लटपटी यहगति मन्दमराल । सो राजा जोअगम न प-
 हूँचै मूरभवनउताल । जोजैहै बलराम अगमने तौहँसिहैं सबबालढ

... ..

[illegible]

कत साँवलापात । चुहकी रें भालननानत हँसमयै भुमकात । तुमही
 का गारनगीरकी पीडीह कतहँ न कीरकी । मोडनको सुहारिन गलेत ये
 धातै सुनि सुनिरागे । यकीकान्ह जगज्ज चवारे जनमहि का बहभूत ।
 मरप्रयाम मोहि गोधनकी खंड में सातालू पत ॥ रागबिलावल ॥ खेलन
 अन मेरीजाय बलैया । जहाँ मोहि देखत लोरकनमग तवहिं विभात
 बलभैया । मोगों कहत तात बसदेवको देवकी तेरी मैया । मालबयो
 कलुहै बसदेवाँ करिकारि घतन बडैया । अबबाब कहिकहत नदसों
 यशुगतिषों कहैभैया । रोमे कहि राख मोहिं विभायत तब उठिचल्या
 गवसैया । पाहुँनद सुनत हैं ठाहें हँसत हँसत उरलैया । मूरनन्द बल-
 राभाहें धरयो सुनिमन हरथ कन्हैया ॥ रागराम कला ॥ खेलनचलो
 बालगोबिन्द । मखा प्रियद्वारे बुलावत धीय चालक रुन्द । तयित
 हैं सब दरश कारणा चतुर चातुकदास । बरथि छवि नौवारि घरतन
 हरत लोचन म्यास । बिनय वचन सुनत कृपानिधि चले मनु हरि
 बाल । ललित लघु लघु चरणा कर उर बाहु नयन बिशाल । अजिर
 पद प्रतिबिम्ब राजत चलत उपमा पुञ्ज । प्रतिचरसा मानोहेमबसुधा
 देत आसन कुञ्ज । मूरप्रभुकी निरखि गोभा रहेसुर अबलौकिक । शरद
 चन्द चकोर गानो रहे थकितबदन बिलौकिक ॥ रागधनार्थ ॥ खेलन
 को हरि दूरिगयोरी । संगसंगधावत डोलतकहधौं बहुतअबेरभयोरी ।
 पलकओट भावतनहिं मेको कहाकहाँ तोहिंवात । नन्दहितात तात
 कहिबोलत मोहिं कहत हैं मात । इतनी कहत प्रयागधन आये खाल
 सखा सबचीन्हे । दूरिजाय उरलाय मूरप्रभु हरथि यशोदालीन्हे ।
 रागबिहागो ॥ खेलनदूरिजात कतकान्हा । आजु सुन्यों में हाऊ आयो
 तुमनहिं जानतनान्हा । यकलरिका अबहीं भजिआयो रोवत देख्यों
 ताहि । कान्होरि वह लेत सर्वानको लरिका जानतजाहि । चलो न
 बेगि सबेरैजैभार्जि आपनधाम । मूरप्रयाम यह बात सुनतही बोलि
 लिये बलराम ७ ॥ राग जैतथा ॥ दूरि खेलन जनिजाउ ललन मरे हाऊ
 आयेहैं । तबहंसि बोले कान्हारिसैया इनको किन्हें पहाये हैं । यमुना
 केतत धेनुचरावत जहां मघन बनभाऊ । पैठिपताल व्याल गहिनाथ्यो
 तहां न देखेहाऊ । अबडरपत सुनि सुनियेवार्ते कहत हँसत बलदाऊ ।

सप्त रमानल प्रेयसमनरहित तबकी सुरत भुलाऊ । चारखेर लैगयो प्रसव-
सुर जलमें शेटेउ लुकाऊ । मीनरूप धरिके जगगारेउ तवाहँ रहे कहँ
हाऊ । मथितमुद्रसुर असुरनर्जात संदर तर्जान लामाऊ । कामगमप
वरि बरिया पीनवर सुखपाया सुरराऊ । अब हिरण्मयाय कत अभि-
लाख्यो मनां आति गरबाऊ । धरिआराहलख रिधुसायेन लौंजातदन्त
अयाऊ । धिकतरूप अरतार धरेउ अवसे। अववाद बताऊ । भोरजुसिंह
अब असुर बिकारेउ तहाँ न देख्यो हाऊ । बालनरूप धरेउबलि काल
कर तीनपरग बतायाऊ । अमजलप्रह्ला कामगदल राख्यो दरशिचरगा
गरमाऊ । माँउबुनि विनही अपराधाह कामधेनुलै आऊ । इजाइस
वार करीनिछवसिति तहाँ न देख्योहाऊ । रागरूप राचगा जवभा-
रेउ दशशिर बीसभुजाऊ । लकजराथ क्षारजव कीनो तहाँ रहे कहँ
हाऊ । मातेप्रोमस धवन विकारेउ अब जलनी घरपाऊ । मुख्यभीतर
बदलोक देख्यायो तवहुँ प्रतीत न आऊ । धृप्रति भीमपों युठ परस्पर
तहँ वह भाव बताऊ । तुरत चीरदुष्टूक किप्रोवर सेसे शिशुवनराऊ ।
भक्तहेत अवतार धरेउ अब असुराभसारि बहाऊ । सूरदाम प्रभुकीचह
लीला निगमनेति कहिगाऊ ८ ॥ रागगमकला ॥ दशभुजांत कान्होहँ यह
समुभावति । सुनहु प्रयासतुम बने भवेअप यहकाहँ स्तन लुकावति ।
ब्रजलरिकावर्वाहँ पीयत देखेँ हँसत नाच नहिँ आवति । जैहँ जिगारि
दांतहँआके तातेकाहँ समुभावति । अजहुँ काँड कहँउ करिगोरी सेसी
बात नभावति । सूरप्रयास यह सुनि मुसकानेँ संवल मुखिलुकावतहँ
रागसागर ॥ खेलन जाहु ग्वाल तोहिँ देरत । यह सुनि कान्ह मयो अति
आतुर द्वारेतन फिरि फिरि जव हेरत । बारबार हरि मातहि बूझत
काहँ चौगान कहाँहै । दधि सयानिकं पाके देख्यो लै मैं धरेउ तहाँहै ।
लैचौगान बडो अपनेकर प्रभुआये घर बाहर । सूरप्रयास बूझत सब
ग्वालनि खेलहिँगे केहिठाहर १० ॥ रागनट ॥ खेलतबने धोयनिकास ।
सुनहुप्रयास चतुरशिरोमणि यहाँहँ घरपास । कान्ह हलधरबीरदेऊ
अतिभुजा दुहुँजोर । सबल प्रीदामा सहित अरु सखभये दकओर ।
और सखा बरायलीन्हें गोपबालक वृन्द । चलेब्रजकी खोरि खेलत
अति उमगि नंदनन्द । बडा धरणी डारिदीनीं लैचले हरकाय । आप

आधीनप्रातः त्वरमात खेलेख्येया जगत् । खेलाजोता अमलप्रातः तं
 करो काकुपेल । सुरदास कहत सुदासा बोनमेतो खेत ११ ॥ गतिविना
 न ॥ खेलत में को काकोशुमेया । जातिपाति हमलेनडा नाहिन हम
 धमत तुम्हारीयेया । अतग्रमिन्कार नायतयार्ते जाते अधिक तुम्हारे
 गैया । कहिको पायो कहाखेलें रहेबोत जहें तहें सबसोइया । हार
 हार जातेथीवभा बरबतही जत करत रुमैया । सुरप्रथम प्रभुखेलोइ
 आहत दीर्घदिपो करि जगदुलियां १२ ॥ अथ वेगो को बध ॥ रामदास ॥ अथ
 पात आनि अति गर्जारेड । यभायांभत बैठत गरजनु है बोलत रोय
 भरेड । सहा सहा जं सुभत देखबाल बैठे सब उभराज । तिहूं भुवनभरि
 गत्यहें मरी मोचनमुखको आय । भाभमान मेरे सेवकनाही जाहि
 कहों कहुदाय । कोइ कहोंको सेवोलायक ताते भोहिं पाठताव ।
 नृपतिराज आअहुंदे मोको ऐसो जोभापिदार । तुम अपनेसन शोचत
 जाको असुरनके सरदार । जोकरि मोवजाहि तनताको तिलकोहोत
 संहार । मशुरापाति चहुपाति उरायतभयो सर्जहिधरो अतिभार । प्रवेत
 छव फहरातप्रीतपर भवजगताजतहुयाज । ऐसोको जो मोहिं न जानत
 तिहंभुवन मेरिआन । असुरभंघात भहावली सन कहो कारिहों जान ।
 तनक तनकसों सहरदोना करिमाकां विगप्राप । सरकांउ कंगीचतें
 केशीतन कहेंउजाय करिकाज । तगापतें शकतागुर पुतया उनकहत
 सुनिलाज । तोतें कहुहेंहैं जेजानत धरिधार्नाहैं स्यांजाज । कलबलकल
 करिमरि तुरतही लैआपहु अजआन । अतिगर्वित छैकहेड असुरभुत
 कितकबात यहआहि । कहोमारों जीवन धरिलाऊं एक पलक महं
 ताहि । आज्ञापाय असुर तब धायो मनमें यह अवगार्ह । देखोंजाय
 कौनवह ऐसो कंसडरपतहैं जाहि । अशुभात तबअकलायपरीगिरितन
 की सुधि न रहाय । नन्दप्रकारत आरत व्याकुल देरतफिरतकन्हाय ।
 नयोचरित कहुगोप पुत्रभयो व्रजसन्मुख गयोधाय । बलमोहन ग्वालन
 बालकसंग खेलत देखेजाय । धार्यामल्यो कोउरूप निशाचर हलधर
 सेनबताय । सनमोहन सनहींमुसकाने खेलत फलनि जनाय । द्वै बालक
 बैठारि मचाने खलरचयो व्रजखोरि । औरसखा सयजुरिजुरिठाहै आपु
 इनज संगजोरि । फलकोनाम जनावननाश हरिकार्हादयो अभोरि । कं

नचह्यो निर्जामसिंह महाबल तुरतहिं दीर्घजिह्वी । तनकेगो हयद-
बपु काढ्यो लैगयो पीठिचढाय । उतरिपरो रजितकुपर ते क्रीन्दाधु-
अयाय । दाउघाउ सबभातिवारतुहे तब हरिकरतमरोरी । तनहिंअधु-
कोपकरपीठघरघरणीपकरपकारी । कलबल करसोहनपकरनकेहर्ष
जीबुद्धिउपाये । सकहायसुग्यभीतरनायेपकारिकेशधरिदाये । बहुरयो
फोर असुरगाहपटक्यो शब्दउठ्यो आघात । चौकिपरो वगसासुर मति
के भीतर चल्थोपरात । यहकोउ भलोअहींव्रजजनयो यातेवहतउरात ।
आन्याकंसअसुरगाह पटक्यो नंदमहरकेताग । प्रीतसवारयशैयलधाये
आयसयेनरनारि । धायेनन्द यशोदावार्नेजितधर्त कहाभोहारि । स्वा-
ललाप सँग खेलतहो यकलैगयो कांथेडारि । गाजानिये आहसो को
यह कपटरूप बपुधारि । देखसँतारि हृष्टात्मा आये व्रजजन सरतज-
वाथ । दौरिनन्द उरलाय मिलेसुत मिलीयथोदा भाय । खेलत रहेउ
संग मिलिगेरे लै उडिगयो अकास । आपुनहीं गिरिपरो भर्गसापर भै
उपरैउ लोहपाम । उरडरात जियवात कहतयोह आय हैं कारनाम ।
सूरप्रयाम घरयशुमति लै गइ व्रजजन दियेहुलास १ ॥ रागमाग ॥ यशु-
मति बभूतिहै गोपालाह । सांगहिकी बेरियाभड शस्त्रि मेहरपीत
जंजालीह । जबते लयावर्त व्रजआयो तबने गो जियशंक । गैर्भानयोउ
होयप्रलको में मन मनकरति अशक । यदि अन्तर बालक रावआये
नंदहकरत गोहारि । सूरप्रयाम को आय कावन पौलैगयो कांथेड-
रि २ खेलन दूरिजातकतप्रारै । जबते अन्याभयो हे तेरो तबहीते य-
हिभाति ललारे । कोउआवत युवती मिसकारके कोउलैजात बतास
कलारि । अबलगि बचेहृपा देवानकी बहुतगये सरिशव तुम्हारे । हा
हा करति पायँतेरे लागति अबजनि दूरिजाहु मेरेवारै । सुतहुसूर यशु-
मति सुतबोधति विधिके चरितसबै हैं न्यारे ३ ॥ रागकान्दरी ॥ आजुक-
न्हैयाबहुतबच्योरी । खेलत रहेउ घोयकेबाहिर कोउआयो शिशुरूप
रच्योरी । धर्मसहाय होत हैं जहँतहँ थमकरि पूरबपुण्य बच्योरी ।
सूरप्रयाम अबकेबचिआये व्रजघरघर सुगमिंधु मच्योरी ४ बडेभाग्य
हैं महर महरिकी । लैगयो पीठिचढाय असुरयक कहाकहो उबरन
आ हरिकी । नन्दधरनि कुलदेव मनावति तुमहिंलाज सुतधरि पह

की । जहाँतहँ तुमहि सहाय मया हो जीवन है यहँ प्रथम सहरकी ।
हरथ भरे नय करत वधायँ दानदेत कहाकहँ अवरकी । पंचशङ्खधुनि
वाजत गावत गावत भंगलवार चहरकी । दंभम भारभार सेत श्या-
मको व्रजतरनारि अतिहिमन हरयी । दूरप्रयास सान सुन्दरअक दु-
खन केउरगा जल करयो ॥ गगन ॥ खेजतप्रयास अपनेरंग । नन्दलाल
निहारिषोभा निरखि घटितअंग । चरखाकी छविनिरखि डरयो
अरुणा गगन छपाय । जाबुरम्भा की सर्वे कवि निदरितइ छँदाय ।
युगलअर्पित स्वभरम्भा नहिनसमसरताहि काँठनिरखि केठरिलजाने
रहेवन घनचाहि । हृदय हरितय अतिविराजत छवि न बरसीजाय ।
सनोंबालक बारिघननव चंददई देखाय । मुकुतमाल निधाल उरपर
कछु कहौ उपमाय । सनोंलारा गगनवेधित निशिगगल रहेउ छाथ ।
अधरअरुणा अल्प नामा निरखिजन सुखदाय । सनों सुख फलबिम्ब
कारणा लेन धैल्योआय । कुटिल अलकबिना प्रबलके सनोंअलि शि-
शुजाल । दूरप्रभुकी ललितशोभा निरखु ही ब्रजवाल है ॥ गगनमकली ॥
करिस्नान नन्दघर आये । लैजलयधुना देत पारोभरि कंजघुमन क-
हुंपाये । पायँधोय मंदिरपगवाये प्रभु पूजा जियजानि । अस्पल लो-
पिपात्र सबधोये काज देवके कानि । लैडेनन्द करतहरिषु ना निरि प्रवत
सों बहुभाँति । सूरप्रयास खेलत ते आये देखत पूजा भाँति ७ ॥ गग-
गुर्बरी ॥ नन्दकरत पूजाहरि देखतघंटबजाय देवअन्हवायो । दलवन्दन
लेपतताकोपट अंतरदेके भोगलगायो । अँवदन दै बीरा आगेधरि आ-
रतिकरीबनाई । कहतकान्ह ब्याबाहुम अरयो देव नहीं कछुखाई ।
चितैरहे तब नन्द महारिमुख सुनहु कान्ह की बात । सूरप्रयास देवन
करजोरों कुशलरहँ जैसेगात ८ ॥ गगधनाथी ॥ यशुदाधरतहीदिगाठाही ।
बालदशा अवलोकि श्यामकी प्रेममगन चितवाही । पूजाकरतनंदजहँ
बैठे ध्यान समाधि लगाय । चुपही आनि कान्हमुख मेल्यो देखो देव
बढ़ाय । देखे नन्द शिलानहि आगे तजमन अचरजआय । कहाँ गयो
मेरे आगेहीतेको लैगयो उठाय । तब यशुमतिमुतबदन दिखावतदेखो
बदन कन्हाय । मुखकत मेलिदेवता राख्यो घाले सबै नशाय । बदनप-
सारि शिलाजबदीनीं तीनोंलोक दिखाये । सूर निरखिमुखनन्द चहत

भये कलश में ही कह्यु आये ८ ॥ गगनाभावा ॥ हँसते गोपाल नन्दके आगे
 नन्दके मुख में आनन्द रा । चिरगता ब्रह्म सगुणालीला धरे सोई सुत कार्य
 मान्योरी । एकसमय पञ्चाङ्ग अवसार नन्दमार्ग धरि गार्हरी । शालग्राम
 मणि मुख भीतर में दरे अरगार्हरी । ध्यानार्जमर्जन कीन्हों नन्द ज म-
 र्ति आगे नाहीं री । कहे गोपाल देवता का भय अर्हा वरसमय मनभावे
 री । सुखते काङ्क्षितो यदुनन्दन तर्वाहं नन्दके हाथरी । सुरदासस्वामी
 सुरभागर खेलरचयो ब्रजनाथरी १० ॥ अथ नन्दजु को वरगले जान लीला ॥ रागाव-
 लावन ॥ उत्तमशुक्ल यकादश आई । विधिबतवत कीन्हों नन्द आई । नि-
 राहार जलपान बिबर्जित । पापरहितफल धर्मार्ह आर्जित । नारायण
 हित ध्यान लगायो । और नहीं कह्यु मर्नावरमायो । काम ध्यानकारत
 सब वीत्यो । निशि जागरण करत मन चीत्यो । पारम्पर दिव्य मन्दिर
 कायो । पुठपमाल सगुली बनायो । देवसहस्र चन्दर्माङ्ग लिपायो ।
 चौकदेश जैतकी बनायो । शालग्राम तहां बैठाये । भूपतीप भेदेय चढाये ।
 प्रेमसहित करि भोग लगायो । आरति करि तब साधो नायो । बह्मज-
 नती करि देव मनायो । पूजो आश जो जो मनभायो । मादरसहित करी
 नन्द पूजा । तुमर्ताज और न जानो दूजा । तृतीय पहर जब रैतिनितीडे ।
 नन्दमर्हार सां कहेउ बुलाई । दगड सक द्वादशी मकारे । पारन की
 विधि करहु सवारो । यहर्काह नन्दगये अमुनातह । लै धोतीभारी विधि
 कसयट । भारीभरि अमुनाजल लीन्हों । बाहर जाय देखकत कीन्हों ।
 लै मृत्तिका कर चरणापवारी । अति उत्तमसों करी सुधारी । अँचवन
 लेन निहुरे नन्दपानी । जल वाजत दूतन तब जानी । नन्दगार्ध लै गये
 पतालहि । बरुण पास ल्याये तत्कालहि । जान्यों बरुण कृपा के
 तातहि । मनहींमन हरयित हिय चातहि । भीतर लै राखे नन्दनीके ।
 अन्तःपुर महलनि रानिन के । रानी सबै नन्दकी देख्यो । धन्य जन्म
 अपनो करि लेख्यो । इनके सुत बैलोक गुमाई । सुर नर मुनि सबके हैं
 साई । बरुण कहेउ मनहर्षबढाये । बड़ीवातभड नन्दहित्याये । अंतर-
 यामी जानहिं वाता । अबहीं आवत हैं जगवाता । जाको ब्रह्मा अन्तन पायो ।
 ताको मुनिजन ध्यान लगायो । जाको नेति निगम गावत हैं । जाको
 मुनिवर बनध्यावत हैं । जाको ध्यानधरे शिवयोगी । जाको सेवत सुर-

गीतगोपी । आश्रम जलधनही सब दयापक । जोहि कस राखको द-
 पक । पुताश्रितो आबगत आबनाशी । सो ब्रजमें खेलत सुखराशी ।
 धन्यपरेसुत नन्दहलधाये । करुणामय अब आवतदाये । सहारकही
 तबसब भवालनको । बडा वारभइ नन्दमहरको । राये भवालतब नन्द
 बुलावन । देख्यो जाय यमुनजलपावन । जहँतहँ हुँडि भवालमगआये ।
 धोती अरु भारी तहँ पाये । मनमन जोचकरत अकुलाये । कही य-
 शोदाह नन्द न पाये । धोतीभारी ततमहँपाई । सुनत सहारमुख गयो
 सुरभाई । निशा अकेले आजुसिधाये । दाह धौजलचर खरिखाये ।
 यहकाह यशुमति रौद्र पुकारे । भो बरजतकत रेनिमिधारे । ब्रजजन
 लोगसबै उठिधाये । यमुनाके तटकहूँनपाये । बनबन हुँहतगांवमभारें ।
 नन्दनन्दकहिलोगपुकारे । खेलतते हरिहलधरआये । रोवतगातुदेखि
 दुखपाये । कत रोवतिहे यशुदामैया । बूझत जननी सों दोउ भैया ।
 कहतप्रयाम जनिरोवै माता । अबहीं आयत है नंदताता । मोते काह
 मे अबहीं आवन । रोवै जनि में जात बुलावन । सबके अन्तर्दयासी
 हैं हरि । लैगयो बांधि बरुणा नन्दहि धार । यह कारज बाको हम
 दीन्हें । बाके दूतनि नन्दन चीन्हें । बरुणालोक तबहीं प्रभुआये । सुनत
 बरुणा आतुरहैं धाये । आनंदकियो देखि हरिकोमुख । कोटिजन्मके
 गये सबैदुख । धन्यभाग मेरेबडे आजू । चरणाकमल दरशन शुभकाज ।
 पादस्वर पांवडे डमाये । महलनि बदनवार बंधाये । रतन ग्वचितसिं-
 हासन धारेउ । तेहि पर कृपाहिं लै बैठारैउ । अपने कर प्रभु चरणा
 पगारै । जे कमला उरते नहिंदारे । जे पदपरसि सुरसरी आई । तिहं
 लोक हे बिदित बडाई । ते पदबरुणाहायलै धोये । जन्मजन्मके पातक
 खोये कृपासिंधु अवशरणा तुम्हारी । यहिकारणा अपराध बिचारी ।
 आपु चले हरि नन्दहिदेखत । बैठे नन्दराज बरभेखत । नृप रानी सब
 आगेठाहीं । मुखमुखते सबअस्तुति काहीं । पांयनपरीं कृपाकेरानी ।
 धन्यजन्म सबही कह बानी । धन्यनंद धनिधन्य यशोदा । धनि धनि
 तुमहिं खेलावत गोदा । धनि ब्रज धनि गोकुल की नारी । परणाब्रह्म
 जहां बपुधारी । श्रेय सहस मुख बरशि न जाई । सहजरूप को करै
 बडाई । देखि नन्दतबकरतबिचारा । यह कोउ आहि ब्रह्मो अवतारा ।

अबमहार ग्रीत हयै नदायो । कृपासंभूतै पत आया । बरगारहदीनी
 लोकवडाई । नन्ददावन नकरी सदाई । बरगारयाप गंदाह लै आये ।
 गहगोप सबदेखनवाये । नन्दहि ब्रूकतहै सबवाला । हमभौत हृदयत
 भयमुनिगाता । कालिह अकाशीश व्रतमें कोन्हों । निशि जागरसानेन
 यह लीन्हों । तीरपहर निशि जाग बिहाई । तब लीन्हों में गहोर
 बूलाई । सदाख हावगी सुनाई । ता कारणा में करी चँडाई । रौन न
 हान रागो यमुनाजल । सकदंड द्वापरी कयुकपल । रागो यमुन भीतर
 काहलौ भगि । नरगदून तब मुहिलैगो धोर । तहांते जाय कृपा मोहिं
 ल्यायो । यह कोउ बड़ोप्रसन्न अयो । इनकी साहसा कोउ न जाने ।
 बरगार काहलु सुन इनहिं चखाने । रागी सहित पयो चरगानि तर ।
 अवनचारबधं मरुतनिघर । गंगकाशा नृत्यकारि मानो । इनको नरदेही
 जनिजानो । यशुमतिबाग चक्रत यहवानी । कहत कहत यह अकथ
 कहाणी । ब्रजनर नारि सुनत यहवाथा । इनते हमसब भयेमनाथा ।
 भाया मोहकारि सबैभुलाये । नन्दहि बरुगालोकते लाये । नन्दयकाह-
 शि बरगार सुनाई । कहत सुनत सबकेमनभाई । यहप्रताप नन्दहिदि-
 खराई । मूरदामप्रभुगोकुलराई ११ ॥ रगकान्हरो ॥ नन्दहि कहांत यशोदा
 रानी । मोहिं ब्रजत निशिगये यमुनतर पैठे जाय अकेलेपानी । अबकी
 कुशलपरी पुरायनिते द्विजनिकरीकहुदान । बोलिलेहु बाजने बजावहिं
 देहु मिटाई पान । रावति मंगल नारि बधाई बाजत नन्दखुवार । सु-
 नहु मूर यह कहति यशोदा नन्दबधे यहिवार १२ ॥ गणबिलावल ॥ कहत
 नंद यशुमति सुनिवात । अब अपने मन शोचकरत कित जाके विभुवन
 पतिमों तात । गगमुनाय कही जो बारागो सोइसोइ प्रकट होतहीजात ।
 इनते औरनहीं कोउ समरथ येई हैं सबहीके नाथ । मायारूप मोहनी
 लाई डारेभुलै सबै येगाथ । मूरप्रथाम खेलतते आये माखनमांगत दे मा
 हाथ १३ तबहिं यशोदा माखनल्याई । मैं माथिके अबहीं धरिराख्यो
 तुमहिंकाज मेरे कुंवरकन्हई । मांगिलेहु येही बिधि मोसों सो आगे
 तुमखाहु । बाहिरकबहुं कहुंजनिखेयो डीठिलगौगीकाहु । तनकतनक
 कहु खाहु लला मेरे ज्यों बहिआबै देह । मूरप्रथाम अब होहु मयाने
 बैरिनके मुखखेहु १४ हरिके बालचरित्र अनूप । निरखिरहीं ब्रजनारी

एकदक भगवत प्रोत्तम । निजरी अलकें रही बदनपर बिना भवन
 सुभाय । दोख कर्जनि चंदक लक्ष मधुपकरत सहाय । सजल लोचन
 चास नास । परमहीचर बनाय । गुणलखंजन करत अबनित बोर्वाकय
 बनराय । अरुता अधर दशाननि भाई कहों उपमा धोरि । नीलपट
 बिच मोतिभाषों भरे बंदनधोरि । सुभग बालमुकुंदकी कवि बरोंगाकापे
 जाय । भृकृति घर मर्सानन्दसोक्यों सके मुरजगाय १५ ॥ रागकंदो ॥
 सांभभई धरआवह प्यारे । दौरत कहाचोटपान लंगिहें पान खेलहुने
 होत सकारे । आपुन जाय बांहगहिल्याई खेलरही लपटाई । धीर
 भारितातौ जललयाई तेलपरसि अन्हवाई । सरसबसनतनपोंछि श्याम
 को भीतर गई लिवाई । मूरश्याम कछु करोवियारी पुनि राख्योपी-
 डाई १६ ॥ रागकंदो ॥ बलमोहन दोउकरत बियारी । प्रेममहित दोउ
 सुतनिजवाँवति रोहिणिअरु यमुमतिमहतारी । दोउभैया मिलिवात
 गकसंग रतनजाटत कंचनकीधारी । आलससों करकौर उठावत तय-
 ननि नौंद भूमिकरहिभारी । दोउभाता निरखत आलसमुख कविपर
 तन मन डारतिधारी । बारबारजमुहात मूर प्रभु यहउपमा कवि कहें
 कहारी १७ ॥ रागकंदो ॥ कीजैपानललारिदूध ल्याइहो यशोदागैया ।
 कनककटोरा भरिलीजै यहपय पीजै अतिमुखदेयकन्हैया । आँके में
 आवत्योसुठिनीके अरुमिलीमिठैया । रुजिकरछंचयतक्यों न नन्हैया ।
 बहुत यतकरिकै राख्यो ब्रजराज लडैते तुम कारणा बलभैया । फुँक
 फुँकजननी पयप्यावति राखपावति आनंदउर न समैया । मूरदास
 प्रभुपयपीवत बलराम प्रथाम दोउजगनी लेतबलैया १८ ॥ रागकंदो ॥
 कमलनयनहार करौवियारी । लुचुईलपसी सद्यजलेवी सोइजैवहु जोइ
 लगे पियारी । घेवर मालपुवा मोती लाडु सुघरहुँजरी सरस सवारी ।
 दूधबरा उत्तम दधिराठी गोल ममूरी कीरुचि न्यारी । आँखी दूध
 औठि धौरीको लै आई रोहिणिमहतारी । मूरदासबलरामश्याम दोउ
 जैवहु जननि जाय बलिहारी १९ ॥ रागकंदो ॥ बलमोहन दोउ अति
 अलसाने । कछु कछुखाहु दूध लैआऊं मुखजम्हात जननी जियजाने ।
 उठहुलात कहिमुख पखरायोतुमकोलै पौडाऊं । तुमसोवहु मैं तुमहिं
 सुवाऊं कछुमधुरेसुरगाऊं । तुरतजाय पौढेदोउ भैयासोवत आईनिन्द ।

गायचरत ग्वालन सँभलोलत मापुनवायो । बलदाक भोक्ता जिनहाँ-
 इह संग तुन्हारेआयो हों । कैतेहुआजु यशोदाकाँडयोकाँलिह न आवन
 पैयो हों । सोवतभोको टोरिलेहुगे बानानन्ददुहाई । सुप्रथाम बिनती
 करेबलसों सर्वान समेतसुनाई २७ ॥ रागगोरी ॥ आजुहरि धेनुचरायेआ-
 वत । मोरमुकुट बनभालाविराजत पीतांबर फहरायत । जेहिजोहि भाँत
 ग्वाल सनबालत ननिअवताइँ मनराखत । आपुन टोरिलेत नान्हेसुर
 हरयतमुख पानिभायत । देखतलन्द यशोदा रोहिहासा अरु देखतब्रजलो-
 ग । सुरश्याम गायनसँग आये मैथालीन्होरोग २८ यशुसति दोरिलिये
 हार कनियां । आजुगयो भोगेगाय चरावन हों धालनाउँ निहकनियां ।
 भोकारगा कछुआन्या नाही बलफल तोरि कान्हैया । तुमहिं भिले में
 अतिस्वपपायो भरे कंठयकन्हैया । कछुकखाहु जोभावैमोक्षरक्षिमा-
 खन अरु रोटी । सुरदासप्रभु युगयुग जोबह हरिहलधर की जोटी २९
 साखन रोटी लेहु कान्हवारे । ताता तातो रुचि उपजावै विभुवन के
 उजियारे । और लेहु पकवान मिठाई मेवा बहुबिधि सार । औठ्यो दूज
 मद्यदधि धृत मधुसूत्यों ग्वाहु मेरेप्यारे । तबहरि उठिकैकरी बिया-
 रीभक्तन प्राणा पियारे । भरश्याम भोजनकरिके शुचि जलसों बदनप-
 न्वावे ३० ॥ रागकान्हरा ॥ पौढेश्याम जननिगुना गावति । आजुगयो भरे
 गाय चरावन कहि कहि मन हुलमावति । कौनपुगय तपते में पायो
 संसेधुन्दरबाल । हराय हरायिके देतिमखिनको मूरमुमन कीमाल ३१
 अशमाखननारीकरन ॥ रागगोरी ॥ मैयारी मोहि साखन भावे । जोमेवा पकवान
 कहत तू मोहि नहींरुचि आवे । ब्रजयुवती पकवाके ताढीसुनात श्या-
 मकीबात । मनमन कहातकयहु अपनेघर देखौ साखनखात । बैठजाय
 मयनिद्यांके ढिग में तबरहोछिपानी । सुरदास प्रभुअंतरयामी ग्वाले
 मनाहंकीजानी १ गयेश्याम तेहि ग्वालिन केघर । देख्योजाय द्वार
 नाहंकोऊ इतउत्थितैचले तबभीतर । हरिआवत गोपीजब जान्यो आ-
 पुन रहीछपाय । सुनेसदनमयनिद्यांके ढिगबैठिगयेअरगाय । साखन
 भरीकमोरी देखत लैलै लागेखान । चितैरहे मरिारखम्भ छाँहतनतासों
 कोरेसयान । प्रथमआजुमें चोरी आयों भलोबन्योहै संग । आपुखात
 प्रीतिबिब खवावत गिरत कहन का रंग । जोचाहौसबदेउ कमोरीअति

सीतोजित दारत । तुमहिंदोख में प्रीतिमुख पाशांतुर्माजय कर्ताबना-
रत । सुनिमुनिवानश्यामके मुखकी रसगिहँरा लकुमारी । सूरदासप्रभु
निरखिखालिमुख तव भाँजचलेमुरारी २ फुलताँफरतखालि मनमेंरी ।
पूकतिसखी परस्परनाते पायोपरैउ कहुब्रह्म तेरी । एलकितरोमरोम
गदगद मुख बाणी कहत न आवै । गंभाकहाआहि मौ भाँखरी मोका
नयों न मुनावै । तनुन्यारी जो एक हमारी हसतम गकैरूप । सूरदास
कहैं खालिनि सखियों देखेयां रूप अनूप ३ ॥ रागगुण ॥ आज्ञा सखी
सगिगवम्भ निकट हरि जहँ गोरम की गोरी । निज प्रीतिबिम्ब सि-
आवतयां शिशुप्रकटकरै जिन चोरी । अधरबिभाग आजुते दग तुम
भली गनीहै जोरी । साखनखाहु कर्तहिद्वारतहो छाँडदेह सतिभारी ।
हिसन लेहुसबै चाहतहो इहोबातहै थोरी । सीतोंपरम अधिक सखि
लागेदेहों काटिकमोरी । प्रेमउर्माग धीरज न रहेउ तव प्रकटहँसीमुख
भारी । सूरदासप्रभु सकृचि निरखि मुख धले कंजकीगोरी ४ ॥ राग
बिलावल ॥ प्रथमकरी हरि साखनचोरी । खालिनि मन इच्छा पूरना
कारआपुभजे हरि ब्रजकीखोरी । मनमन यहै विचार करतप्रभु ब्रज
घर घर सब गाउँ । गोकुल जनम लयोमुख कारना सबके साखन
खाउँ । नालरूप यशुमति मोहिं जानै गोपिन मिलि सुखभोग । सूरदास
प्रभु कहत प्रेम सों ये मेरे ब्रजलोग ५ ॥ रागगुणकली ॥ करतहरि खाल
संग विचार । चोरीसाखन खाहु सबमिलिकरी बालबिहार । यह सु-
नत सबसखाहरये भली कहीकन्हाय । हँसि परस्पर देततारी सौंहक-
रि नैदराय । कहांतुमयह बुद्धिपाई प्रियाम चतुरसुजान । सूरप्रभु मिलि
खाल बालक करत हैं अनुमान ६ ॥ रागबिलावल ॥ सखा सहित गये
साखनचोरी । देख्यो प्रियाम गवाक्षपंथ हूँगोपी एकमयति दधिभोरी ।
होरमथानी धरीमाते साखनहो उतरात । आपुन गई कमोरी सांगन
हरि पाई ह्यां घात । पैटे सखन सहितघरमूने साखन दधि सब खाये ।
कुंकीछाँडि मटुकियादधिकी हँसिमन बाहरआये । आयगई करलिये
कमोरी घरते निकसेखाल । साखनकर दधिमुख लपटानो देखि रही
नैदलाल । कहँआयेब्रजबालक लैसंग साखनमुख लपटानो । देखे खे-
लततेउठि भाज्योसखायही घर आय छपानो । भुज गहिलियो कान्ह

यक बालक निकरेव्रजकीरिगारि । सूरदासठगारही ग्यालीला नागकल्प
 लियो अजोरि ७ चकृतभङ्गगालिनितनुहेउ । माखन कीरणी पय
 वैसाह तबते कियो अवेरेउ । देखैजाय महुकिया रीती में राख्यो कहु
 हेरि । चकृतभङ्गगालिनिसनअपने हंढतिघरफिरिफेरि । देखति धुनि
 धुनिघरकेवासन मन हरिलियो गोपाल । सूरदास सगरी ध्यालीला नजा-
 न्यों हरिके खयालठव्रज घरघर प्रकटी यहवात । दधि माखन चोरी
 करि लै हरि खाल राखसँग ग्यात । व्रज बनिता यह धुनि मन हर-
 यित गदन हमारे आवै । माखन ग्यात अचानक पाथे भुज भारि डरहि
 डिपावै । मनहीमन अभिलाष करतभाव हृदयकरत यहध्यान । सूरदास
 प्रभुको घरते लैदेहां माखनवात ६ ॥ अथयेनुगावन ॥ गगमाग ॥ मैयाअप-
 नोसब गायचरैहैं । प्रातहेतबलकेसँगाजैहैंतेरेकहे नरैहैं । खालवा-
 लगैधनिकेभीतर नेकहु डरनहिंलागत । आजु न सोऊं नन्ददोहाडैरैनि
 रहोंगो जागत । और खालसब गाय चरैहैं में घरबैठैरैहैं । सूरश्याम
 अबसोयरहेतुस प्रातजान मैदैहैं १ ॥ गगमेदारा ॥ बहुतै दुख हरि सोथ
 गयोरी । सांझहिते लाग्यो यहिबार्तिह क्रमक्रम कारि मनबोधलयोरी ।
 सक दिवसगयो गाय चरावन खालन साथ सवारै । अबतौ सोधरहैं
 कहि कैसेहुं प्रातहि काहु बिचारै । यहतौ सब वनरायाह लागै सँगा
 लैगयलियाई । सरनन्द यहकहतमहरिमां आवन दीफारिवाई २ ॥ गग
 कनित ॥ जागिये गोपाल लाल आनंद निधि नन्दवाल यशुसति कहै
 बारबार भोरभयो ध्यारे । नयनकमलसे विशाल प्रीति बांधिका सरा-
 ल बदनचन्द मदनउपर कोटिधारिडारे । उगतअरुणा विगत शर्वरीश
 शक्ति किरण हीनदीन मलिन कीन द्युति समूह तारे । मनहुं ज्ञानघन
 प्रकास बीते सबभवबिलास आसवास तिमिरि तोय तराता तेज जारे ।
 बोलत खग मुखर निकर मधुकर ह्वैप्रेतीति सुनहु प्राण जीवन धनि
 मेरे तुमवारै । मनोवेद बंदिमुनि सुतवृन्द मागध गरा विरद बंदत जैजै
 जैजैतकैठारै । विगसित कमलावली चले प्रपुज चंचरीक गुंजत कल
 कोमलधुनि त्यागिकंजग्यारे । मनो विराग पाथ सकल शोककूपगृह
 बिहाय प्रेममत्तफिरत भृत्यगुनत गुणातिहारे । सुनतबचन प्रिय रसाल
 जागे अतिशय दयाल भागेजंजाल विपुलदुखकदम्ब टारे । त्यागभूम

मन नंदीन रीतिवकी सुखारवि सुखदाग अति अनन्द भटमदभारे ३॥ गाय
 १०००॥ ॥ करहु कलंक कान्ह भरभ्यारे । साखन गेलो दयो छापपर बाल
 प्रीतिजाय हो खाल न गारे । देरतछार खाल ते हाते आये तबको होत
 सवारे । खलीजाय बर्जाहके भीतर हरिकह जौनि जैहोवारे । होगते
 बलराम प्रयास को आवहु जाहिं धेनु बनचारे । सूरप्रयास करजोरि
 सात गों गाय चरावन कहत हहारे ४ ॥ रागपारंग ॥ मैया री मोहिं
 दाऊ रगत । माको बन फल तोरि दंत हैं आपुन मैयनि घेरत । और
 खाल भोग कबहुं न जैहों ये सब मोहिं खिभायत । मैं अपने दाऊ संग
 जैहों बनदेखत सुखपावत । आगे दै पूनि ल्यावत घरको तू माहिं जान
 न दैति । सूरप्रयास कहै यशुमति मैया हाहाकर करिकैति ५ बोलि
 लियो बलरामहिं यशुमति । आवहु लालखनु हरिकेगुना काल्हहि
 ते लंगरेउ करत अति । प्रयासहिं जानदौह मेरे संग तू काहे डरपावत ।
 मैं अपने दूगतेनाहिं दारत जिय प्रतीतिनाहिं आवत । हँसीमहारबलकी
 प्रीतिनि बालहारी यामुखकी । जाहुलिवाय सूरकेप्रभुको कहतबीर
 के रुखकी द अति आनन्दभयो हरिधाये । देरत खाल लालमय आवहु
 मैया मोहिं पढाये । उतते सखा हंसतसब आवत चलहु कान्ह बनदेखहु ।
 बनमाला तुमको पहिरावत धातु चित्रतनु रेखहु । गाय लई संगघोर
 घरनते महरगोपके बालक । सूरप्रयासचले गायचरावन कंसउरहिं जे
 शालक ७ चले बन धेनुचरावन कान्ह । गोप बालक ककुसुमाने नन्द
 के सुतनान्ह । हरय मों यशुमति पढाये प्रयास सनाहिं अनन्द । चले
 बल के साथ मोहन सङ्ग बालक वृन्द । सखा हरिको यह सिखावत
 छांडिकहुं जिनिजाहु । सघन वृन्दावन अगमअति जाहुकहुं भुलाहु ।
 नेकहुं जिनि सङ्ग छांडी बनिहिं बहुत डरात । सूरके प्रभुहंसत मनमें सु-
 नतही यहवात ८ ॥ रागधनाग ॥ हेरीदेत चले बनबालक । आनंदसहित
 जात हरिखेलत सङ्गचले पशुपालक । कोउ गावत कोउ बेराबजावत
 कोउ नाचत कोउ धावत । कलकत कान्ह देखियह कौतुक हरयि
 सखा उर लावत । भलीकरी तुममोको ल्याये मैया हरयिपढाये । गो-
 धनवृन्द लियेब्रजबालक यमुनातट पहुँचाये । चरति धेनु अपने अपने
 संग अतिहि सघन बनचारो । सूरसङ्ग मिलि गाय चरावत यशुमति

को सुत बारा ६ ॥ अथ प्रथमः बन्ध ॥ रामधनया ॥ यहि अन्तर दृयभासुर
 आयो । देख्यो नन्दसुवन बालकसँग यहै घातहै पायो । राघे समाय
 धेनुपति हँके मनमें दाँवबिचारे । हरि तबहीं लाख लियो असुर को
 डोलत धेनुबिडारै । गैया घिजुकि चलीं जितकिन सों मखा जहाँ तहँ
 धरे । दृयभग्न सों धरिगो उकासत बलमोहन तनहेरे । आपुहि चल्थो
 प्रयासके मन्सुव निदरि आपु अगुसारी । कूदि परेउ हरि ऊपरआय
 के कियो युद्ध अतिभारी । धायपरे सबसखा हाँकदै बृधभ प्रयासको
 मारेउ । पाँय पकरि भुजसों गहि फेरेउ भूतल माहिं पछारेउ । परेउ
 असुर पर्वत समान कै चकृत भये सब खाल । दृयभ जानिकै हम सब
 धाये यहतो कोउ बिकराल । देखि चरित यशुमतिके सुतको मनमें
 करत विचार । सूरदास प्रभु असुर निकन्दन सन्तनि प्राणा अधार १
 धनगौरी ॥ धन्य कान्ह धनि धनि ब्रजआये । आजु सबनि धरिके यह
 खायो धनितुम हमहिं बचाये । यहयेसो तुम अतिहि तनकमे कैसे भु-
 जनि फिरायो । पलकाहि मांभ सबनिके देखत मारेउ धरिगिरायो ।
 अबलौं हम तुमको नहिं जान्यो तुमहो जग प्रतिपालक । सूरदासप्रभु
 दुष्टनिकन्दन ब्रजजनके दुखघालक २ ॥ रामकल्याण ॥ आवत मोहन धेनु
 चराये । कति किंकिरी धुनि कंकणा बाजत चलत चरगा नूपुर ख-
 राये । खालमराडली मङ्ग प्रयासघन पीत बसन दामिनिहिं लगाये ।
 गोरज बदन बिराजत मानों पङ्कज पर पराग उडिछाये । गोप सखा
 आवत गुणागावत मध्य श्याम हलधर छनिछाये । सूरदास प्रभु असुर
 निकन्दन ब्रजआवत मन हरय बढाये ३ ये गोरगा रजित आवत मो-
 हन लाल । प्रयाससुभग तन तडित बसन सुर राज चाप बनमाल । गो-
 रज रज मुखपर छाँव लागत कुराडल नयन विशाल । बलमोहन बनते
 बन्यो आवत लीन्हें गैयाजाल । खाल मराडली मध्यबिराजत बाजत
 बेगारसाल । सुरप्रयास बनते ब्रजआये जननि लये अंकमाल ४ ॥ राम
 रामकली ॥ तेरोमाई गोपाल रसाशूरो । जहँ तहँ भिरत प्रचारि पैजकरि
 तहीं परतहै पूरो । दृयभरूप दानव यकआयो सो सखामाहिं सँहारेउ ।
 पायँपकरि भुजसों गहिवाको भूतलमांभ पछारेउ । कहत खाल य-
 शुमति धनि मैया बडो पूततैं जायो । यह कोउ आदिपुरुष अवतारी

सातसमार आखी । नरस दामलरज बन्त रीहये प्रपादत मयाकी ।
 बार बार शूरके प्रभुका उगीये बलेया लीजे ५ ॥ गंगा ॥ यशुनील
 बार बार पीछतगी । हुरीकरगी दृष्टभासुरकी जब श्यामनकी राग
 बानी । सोयछेन गीतर आय बगाना काहहिँ सारन तादरी । से गीत
 काहिको कह्य आदये पुरायीनकर धर नायया । सुनि यशुभास गीत
 कतवीभक्त हरिकभासखाल । पबततुल्य देहभासिको पलमें विरोध
 बेहाल । तुम्हरीरमाको यहनाही यहबुजको रखवार । मूरदास तन
 मोहेउ सबका मोहन नन्दकुमार ६ ॥ गंगा ॥ हँस जननी सों बात
 कहत हरि देख्यों में रुन्दावन नीके । अति रसगीत भूसि इसलिये
 कृत्रमघन निरखत सुखजीके । यमुनाकेतव घेनु बराई कहत बात गात
 मननीके । भगवमिरी वनफलके खाये मिठी प्याम यमुनाजल पीके ।
 सुनति यशोमति सुत की बातें अति आनन्द मगन तनहीके । मूरदास
 प्रभु विश्वभरता जे चोर भये ब्रजजन करहीके ७ ॥ अथमायनतगी ॥ गंगा
 काहिकी ॥ चली ब्रज घरघरनि यहबात । नन्दसुत श्यामखा लीन्हें चोरी
 माखन खात । कोउ कहति मेरे भवन गीतर आवहिँ पैदे भाय । कोउ
 कहति माहिँ देखिद्वारे उताहंगये पराय । कोउकाहति केहिभाति हरि
 को देखों अपेधास । हेरिसाम्पन रीह आजी खाहिँ जितवस्थाम ।
 कोउकाहति में देखिपाऊँ भाँवरों धकवार । कोउकाहति में जाँय
 राखों काँसके निरवार । शूरप्रभुके मिलनकारता करतबुझाववार ।
 जोरिगरविधिका सनावाति पुरुष नन्दकुमार १ ॥ गंगालियन ॥ गवा-
 लीनि घरगये जानी साँभकी आवरी । मन्दिरमें गयेसमाय प्यासलतन
 लखिनजाय देहमह रूपकही कोकहे निचेरी । दीपक पृष्ठदान करेउ
 भुजाचार प्रकटवरेउ देखतभइ चकत खालि इत उत कोहेरी । प्यास
 हृदय अतिविशाल माखनद्वि विन्दुजाल मनमोहेउ नन्दलाल बाल-
 कही बेरी । युवती अति भइविहाल भुजभारदे अङ्गलाल मूरदास प्रभु
 कृपाल डारेउ तनफेरी । करमों करले लगाय सहारिपे गईलिवाय आ-
 नंद उरमें नममाय बातहे अनेरी २ यशुभास त देखिआनि आगेहैलें
 पिछानि बहियां गहिल्याइ कुँवरआनि काँकितेरी । अबलों मेंकरी
 कानि सहीदूध दहीहानि अजहँ जिय जानि मानि कान्ह है अनेरी ।

सोयका ही परी सोनि देवतन ३ ॥ सोनि हावनीं अर्घत करीत दिव
 दिवता पंतवा निरखता ॥ यही पंतवायेक सोनी हाव सोनीसायत नसता
 कहत करत पिबत मरा ॥ ३ ॥ जेमे ॥ आर्यातन छानि रदा सोसा ननि
 आतकही नानी जल लज्जुनोवधु उदमल ॥ यधनोरो उरमन ननि देहका
 काहि त इतनी रिपाय नाही वधामोसुत ऐलो विधि कर ॥ अशुवा
 निरख देवतन सोनीकर पो निहार भलीधमखव मानो आनि को अहेरो ॥
 बनयो विहसतनामान पतवाय दृष्टात जाने को भुग्दास चरित कान्त
 केरो ॥ ४ ॥ गणपति ॥ सोनी करे अहेरावोपि उपाये ॥ तब यह बुद्धि रची
 अपने मन सोतव जाणिअरे पिबवारे ॥ मुने भवत अहं कोउ नाही समु
 याहीको रान ॥ सोडवत उपायत दुखत अधिमाखन क काज ॥ रीन
 असाय पंगहेन मोनय परउ प्यामको हाथ ॥ लैलैखात अकेलो आपुन
 भवतानही सोडवान ॥ आसतभुनि युवतीघर आई देख्यो रजदकुमार ॥
 मूरप्रयास मन्दिर धूमिअरे निरखत वारम्बार ४ छविअरे घरश्याम
 रहेदुरि ॥ अतही में देखे में सदनलज्ज अगितभयो सनहीमन भूरि ॥ पुनि
 पुनि अउलहासि अपनेपिय मोगीते यहात ॥ मंद्रीको दिग बोढरहं
 होरिअरे आपलायाय ॥ यहातजोय अलापनको ग्यामी चींठीदेई उभाय ॥
 मूरप्रयास तादेनिवराजिली भुजवकरे अपचाय ५ प्रयास तहा जाहन
 में सोतत ॥ नृकहते यदनदुरावत रूखेपोत न बावत ॥ मुनिपट चमथारि
 मन्दिर अधिभावनमें पाय ॥ अवकाजो तुम उत्तर करिहो नाकीउमक
 नसाय ॥ ये जाण्यो यह भेरोपाय है तिनोपवे लो आयो ॥ नैय तुही
 सोरागो चींठी दाढन का करमायो ॥ भुनि तनि अतुरबचन मोहन के
 ग्यालिनिपुरि गुतयाली ॥ मूरदासप्रल रोरीतनागर योवात मेंजानीह
 आपुगये हरये सनेघर ॥ गव्यागवे बाहिरहो छांडे देख्यो दधि माखन
 हरिभीतर ॥ हातमथ्या दधिमाखन पायो लैलैखात धरत अधरानपर ॥
 सैनदेइ भवसाखा बुलाये तिनाहंदेत भरिभार अपनेकर ॥ छितक रहे
 दाघपिन्दु हृदयमें इत उत चितवत करि मनमें डर ॥ उतत ओढलै लयत
 सर्वातको पुनि लैलात देत ग्यालिनि वर ॥ उतभइ रवालि बहुरिदेखति
 हरि भगनभई अति उर आनंदभर ॥ मूरप्रयासको निरखि याकित भइ
 कहत न बनै रही मनमेंयर ७ ॥ गणपति ॥ गोपाल दरेहें माखनखात ॥

मेला वहीं अजमेरा मेरी कला बनायात बात । कहा कहीं मैं कहाँत
 गल्लुचीतहाँ लाला गिरवा जँवाल । हैं पुरावें दुरखेप्रभुनो धाँवरिका
 लैजान २१ ॥ गग काग ॥ अशुभति अवसोपासलहि नरजात नभोजनहीं ।
 कहाकरै मित्रप्रतिकी बातेंवाहीं परतसही । माखनखात दूधलै हारत
 लेपत देहदही । तापाके घरहु के लरिकन भारत छिराक सही । जो
 कलुषराह दुरायद्वारलै जनत तहीतहीं । सुनोमहरितरे यामुतसोहम
 पथिगारिहीं । जववनजात छिदायमृत्किया रचिरुचि बात कही ।
 अपने जिक्रके डरतेतब जो कलूकही सोसही । चोरि अधिक चतुराई
 सीधी जाहि न कथा कही । तापरसरवछरुअनि होलत बनवन फिरत
 वही २२ ॥ गग काग ॥ अबये भूटेइ बोलतलोग । पांचवरय अरुककुक
 किलको कबभयो चोरी योग । यहि मिस देखन आवात ग्वालनि
 मुँह फाटे जुगवारि । अनदोयेको दोयलगावति दईदेइगो टारि । कैसे
 कर याकी भुजपहुँची कौन बेग ह्याग्राये । ऊखल ऊपर आनि पीठ
 सार तापर सखा चढाये । जो न पत्याहु चलासँग अशुभति देखोनयन
 निहारि । सरदास प्रभु नेकु न नरजाँ मनपं सहारि विचारि २४ इन
 अखियन आतेतेहो गौहन पलजिनि होहु न न्यारे । बलि बलि जाउँ
 वदन देखेविनु तरसत हैं नग्रनकेतारे । ये सवागखा बलाप्र सकुकारि
 यहि अंगना खिलो दोउजारे । निरखति रहेन फाँसक की मणि ज्यों
 सुन्दरप्रयास विनोद तिहारे । दूधदही माखन सधमेवा ड्यञ्जन सीठे
 खातेखारे सरदासप्रभु जाउँ जाँध भाँधे सोइसोइ नांगिलेहु मेरेधारे २५
 गग नटनगायक ॥ बेरे लापिले हो जिनिजाहु बाहं । तेरेह काजे गोपाल
 भुनहु लाडिलाल राखे भाजनतरि सुरसकहं । काहेको पराये जाय
 करत येतेउपायदूधदही घृत पाखनचह । करत कलू न कानि बकत
 कलुक बानि निपट निल नयन बलहुबहू । ब्रजकीबाही गवारि हाटकी
 बंचतहारि सकुचन दत्तगारि भागरकहं । कहाँलों कहाँ रिस बकत
 भईहीं कृष्ण यहीसिध सुरप्रयास बदनलहँ २६ ॥ गगधनार्थ ॥ चोरी करत
 कान्ह परिपाये । निशिवासर मोहिं बहुत सतायो अब हरि हायहि
 आये । माखनदधि बेरामब खायो वहन । अचकरी कीन्हें । अब तो
 धातपरेहो ललना तुनाहँ भले मैं चीन्हें । होउभुज पकरि कहेउ कह

रीतान भन मोड़े रीतैरही अकलकाह निर्यारि ॥ कवीर कारनगंधा
 प्रायन चारो । आवरिहो जु कदास तिहारी कमल जगन मेरोतन न
 सोरी । देदेगा बुला प्र भुवनां भुजभरि भैरति उरज कतारी । उरज
 रीचह देखावति डोलाति प्रयाग जतुर भये तुम अति भारी । उरज
 रीमम आवतिहे तित प्रितैरहे अनु चनवदारी । सरभनेह स्वातिन
 अतको अन्तर प्रीतिनति अतिहारी ॥ २३ ॥ कहीं हरिकेश लोखों ।
 सुनहु महरि अवीं भरे धर भैरत कीन्हें जासों । मैराध रायति आ-
 यने रानिध राये तहां गी भाँति । मोसों कहेउपात मुगोरी में सुनि
 भुवकाति । गाँह प्रकार खोलीगाँह पारी भरि लान्हों अँकधारि ।
 कहत न बने सकलकीमतें देखो हृदय उधारि । सायनखाय निर्यारि
 नीकीविनि तेरे सुनकी यात । कुरदान प्रभु तेरे आगे सकवति कहेउ
 न जात २४ ॥ राग रागकानो । चर्चरा ॥ स्वातिनि आपुतन देखि मेरे लाल
 तन देखुरी । भीति जो होय तो चित्र अवरखुरी ॥ ध्रुव ॥ कहां मेरो
 साँवर पाँवही बरखको अजहं यह रायपय पानि माँगै । तुमहागस्त
 अति होटिमीसुनरी फेरति पैंडाँत गोपालरागे । कहांमेरेलालकी
 तनकसी अँगुरियां सते बडे नयनके दिह तेरे । मरुकारि सुदेगे जाँ ॥
 अगवारें को भुजा पाँव कहां प्रयाग करे । तगदगे नयन बैनीजहँही
 स्वातिनो सुखदेखे प्रोभा अधिक बाहो । सकलुनि सूरसरयस रहेउ
 साँवरे अनउत्तर महरिके हारटारी २५ ॥ अथ गोचारन ममय ॥ राग रागकानो ।
 चर्चरा ॥ जागिये गोपाललाल प्रकटभये हृदयलाल निटिजुगयो अन्धकार
 उठो जगनि मुख दिखारि । सुकलित भय कमल जाल कुमुद तुन्द वन
 बिहाल भेटहु अँजाल विविधताय तन नगई । दाहे सब सखादार क-
 हत नन्दके कुमार टेरत हैं बारबार आइये कन्हारि । गैयनिभइ बड़ी
 बार भरि भोर पयधनि भार बहरायना करै पुकार तुम बिनु यदु-
 राई । ताते यह अटकपरी दोहनकाज साँहकरी उठि आवहु क्यों न
 हरी बोलत बलभाई । सुखतेपट भटकि डारि चन्द्रबदन दै उधारि
 यगुमति धलिहारि बारि लोचन सुखदाई । धेनु दुहन चलेघाय रो-
 हिणी खोलई बुलाय दोहनी मोहिँदै मँगाय तबहीं लैआई । बहरा
 दियो अनलगाय दुहतनैठके कन्हाय हँसत नन्दराय तहां मातां दो ।

प्राप्त । दंडनकोहैं हनुप्रार तिलसंगत नंद नानप्रार वन आनसों प्रार
 पार नन्दप्रार बधाई । तब नानप्रार कोहैंउ सुनाय विमुक्त बली नितवाय
 मेधा लोन्हीं मंगाय विविध रस सहाई । जेवत नलराम प्रयास नतन
 न सख्यप्रार विमुक्त न लोहैं निजान प्रपूजा लल हवाई । प्रयासराम
 मुखप्रारि ग्यालपाललैं हँकार मरनात नवीन नवीन गायन रँक-
 राई । सुगदेता नादकरत मुरलीसुरसरत अलतलनरत अत्रालबालपायत
 सुघराई । बृन्दावन तुरतजाय विनु चरति लयाअयाय प्रयास हरषपाय
 निराग्य सुरत बलिजाई १ ॥ राम राग ॥ चगरत बृन्दावन हारमाय ।
 लयालिय रँगमुखल सुदाता दालत हैं मुखपाय । जीजा करत जहाँ
 तहें सब मिलि अति आनन्द बढाय । जगिराई गैया वनधीयत
 देखी अति बहुताय । कोउसथे बाल पाय वन घोरत को पाये लछल
 लवाय । आपुन हँ अलत वन में कहु हनुप्रार रहेजाय । अंशोवट
 शीतल लानातत अतिरत प्रेम सुखपाय । सुरप्र राम तहें उठि प्रचारत
 गरर कहां विनमाय २ ॥ अथ ब्रह्मसु की प्रह ॥ राम नंदनामग ॥ चलेवन
 बछल चरावन ग्वाल । बृन्दावन सब छाँड़ि के लगये जहें बनताल ।
 परममुन्दर भूमिदेखत हरय तनहिं बढाय । अपललागे तहांखेलनबक
 दिखे बाराय । जानिके हनुप्रारपाये तहें बालबछरा याम । रोहिणी
 नन्दनहिं देखत हरयभये हुलास । तालरम बलराम बालबो नंदनन्दन
 के भाय । कहेउ बछरा हाँकलपावहु चलहु जहां दन्दाय । तालखव
 तरुनुअ आयो घरे बछराभेय । फिरत हुँहत प्रयासको अति प्रबल
 बलकोदेय । सबे बछल घेरिल्याये वहन घेरलजाय । दाऊकहे बाल-
 कनि टेरेउ बृधम सुरन धराय । कहेउमन यह अबाहँसारी उठे बलाहि
 सन्धारि । टेरिलये सब ग्वालबालक आपुगाय प्रचारि । आगेहैं इत
 को बिडारेउ पूँछ हाथ लगाय । पकरिके भुजमों फिरायो तालकतर
 आय । असुरलैं तरुमों पछारेउ गिरेउ तरु अहराय । तालसों तरुताल
 लाग्यो उठ्योवन धरराय । बत्सासुर को मारि हलधर चलै सबनि
 लवाय । सुरप्रभु को बीरजाकी तिहूमवन बढाय ३ ॥ राम राग ॥ बार
 बार हरिकहत मनहिंमन अबहीं रहे संग चारतवेगु । ग्वालबाल को
 कहुवनदेखों टेरतनाम लेतसेन । आलसगात जानि मनमोहन बैठेछाँह

करतनचेनु । अक्रान्ति रहत कहुं सुनत नहीं कहुं नहिं गउरांभन बालक
 बेनु । लयावन्त सुरभी बालकगणा कालीइह अँचयो जलजाय । निक-
 सिआय सब तदभये दाहे बौंदगये जहँ तहँ अकुलाय । बन घन हँहि
 प्रथाम तहँ आये गोसुत ग्वालरहे मुरभाय । मनमें ध्यानकरतही जान्यों
 काली उरगरहत ह्यां आय । गसुडग्रामकार आयरहेउदुरि अन्तर्यामी
 सबके नाथ । अमृतदुष्टि करिचितै सूरप्रभु बोलिउठे गावत हरिगाथ ४
 राग नटनारायण ॥ मोहिँबन छाँड़िआयेरवाल । कहाँहुते कहाँ आयनि
 कैसेकरे कैसे ख्याल । मुरछिकाहे गिरेधरणी कहाँ यह जंजाल । मैं
 यहां जो आयदेखों परे सर्वाह बेहाल । आनिअँचयो जल यमुन को
 तबहिँ राये अकुलाय । निकनिके जब कूलआये गिरेपरे सब आय ।
 प्राणाबिन हम सबभयेते तुमहिँ दियो जिवाय । सूरके प्रभु तुम जहँ तहँ
 हमहिलेत बचाय ५ ॥ राग गौरी ॥ बलदाऊकहि प्रथामपुकारेउ । आवहु
 बेगि चलो धरजैये बनहीं में पुनि होत अँध्यारेउ । लयाये बोलिसखा
 हलधरको हँसे प्रथाममुखचाहि । बडीदेरमें तुमहिँ कन्हैया गाइन लेहु
 निवाहि । हेरीदेत चले सब बनते गोवनदियो चलाय । सूरदास प्रभु
 प्रथामरांसदाउ ब्रजजनके सुखदाय देवेमुरलीको टेरसुनावत । वृन्दावन
 बसि वासरासनिशि आगम जानि चले ब्रजआवत । सुवल सुदासा
 श्रीदासासँग सखासध्य मोहन छबिपावत । सुरभीगरा सबले आगेकरि
 कोऊदेरत बेसाबजावत । केकीपच्छमुकुट गिरभ्राजत गौरीराग मिले
 रसगावत । मर प्रथामके ललित बदनपर गोरज छबिकहँ चन्द छि-
 पावत ७ हरिआवत गाइनके पाछे । मोरमुकुट सकराकृतकुण्डल नैन
 विशाल कमलते आछे । मुरली अवरधरन सीखतहँ बनमाला पीता-
 म्बरकाडे । ग्वालबाल सब बरसा बरसा बने कोटिमदन की छबिको
 बाछे । पहुँचेजाय प्रथाम ब्रजपुर में घरहिँचले मोहनबल आछे । सूर-
 दासप्रभु दीऊ जननी लेति बलाय बोलि मुखबाछे ८ ॥ राग कल्याण ॥
 आनंद सहित सबै ब्रज आये । धन्ययशोदा तेरोबारी हम सब सरत
 जिवाये । नरबपुधरे देव यहकोऊ आयलियो अवतार । गोकुलग्वाल
 गाथ गोसुतको यहही राखतहार । पयपीवत पूतना निघाती लृणा-
 वर्त्त बहिँभाँति । वृषभासुर बत्सासुर मारेउ बलमोहन दोउ भाँति ।

कल्याण मा. न. जी. ला. रा. न. ला. १५/११/१९५०।

۱۳۰۰ ۱۳۰۱ ۱۳۰۲

[illegible]

चकोरचन्द्र बदनप्रीतिबाड़ी । माता जलभारीलै कमलमुख परखारेड ।
नीरनूर परसकरत आलसहि बिसारेड । सखा द्वारटाड़े सबटेरतहैं बन-
को । यमुनातट चलहु कान्ह चारन गोधन को । सखा सहित जेबहु
भोजन कछुकीन्हें । सूरप्रयाम हलधरसंग सखाबोलिलीन्हें १४ भोजन
भयो भावते मोहन । तातोई जेयजाहुगे गोहन । खीर खांड खीचरी
सम्हारी । मधुर महेरी गोपनि प्यारी । राय भोग लियो भात प-
माय । मंग दरहरी हींग लगाय । सदमाखन तुलसीदे छायो । घृत सु-
वास सु कचौरनिनायो । पापरबरीअचार परमशुचि । अद्रकअरु नींबू
अतिह्वैहै रुचि । सूरनकरि तरिसरस तराई । सेमसौगरी भूमकिभ-
रोई । भरताभटा खटाई दीनी । भाजीभली भांतिनमकीनी । सागचना
सरसा चौराई । सोजा अरु सरसों सरसाई । बधुवा भलीभांतिरचिरां-
धयो । हींगलगाय लायदधि सांघ्यो । प्रोईपरवर साग फरीचुनि । हेंटी
हेंडसि छौंकिलिये पुनि । कंदूरी और ककोरा कौर । कचरी चारि
चचेडा सौर । बनेबनाय करेला कीन्हें । लोनलगाय तुरततलिलीन्हें ।
फूलफूल सहिजना छौंकि । मनरुचि होयनाजके औंकि । फलकरील
कली पाकरिधम । फरी अगस्ति करी अमृतसम । अरु यहि अंबिली
दईखटाई । जेवतयटरसजातलजाई । पेठाबहुत प्रकारनिकीन्हें । तिनती
सबै स्वाद हरिलीन्हें । खोरा रामतुरैया तामें । अरु बिन रुचि अंकुर
जियजामें । सुंदररूप रतालूरातौ । तरिहैंलीन्हेंअबहीं तातो । ककरी
कचरा अरु कचनारो । सरस निमोननि स्वादसवारो । कयुकभांतिकेरा
करिलीनों । दै करोव हरदीरंग भीनो । बरीबरिल अरुबराबहुतविधि ।
खारे खाटे मोठे पयनिधि । पानी नारायतौ पकीरी । डभकौरी मुंगकी
सुठिसौरी । अमृत इडरहरहै रससागर । बेसनसालन अधिकौ नागर ।
खाटी कडी विचित्र बनाई । बहुतबार जेवत रुचि आई । रोटी रुचिर
कनिक बेसनकरि । अजवाइन सेंधेमिलयोवरि । अबहि मंगाकरतुरत
बनाई । जे भजिभजि खालन संगखाई । मांझो मर्तडि दुनैरे चुपरो । बहु
घृतपाय आपुहि उपरौ । पूरी सूपर कचौरी कौरी । सदन सउज्ज्वल
सुंदर सौरी । लुचई ललित लापसीसोहै । स्वादसुवास सहज मनमोहै ।
माल पुत्रा माखनमथि कीन्हें । ग्राह ग्रसित रवि सामर लीन्हें । लावन

लाडु लागत नीके । सेवसुहारी घेवरघोके । गुंभांगदे गोलमसूरी । मेवा
मिले कपूरनूपरी । शशिसस सुन्दर सजल अदरसौ । ऊपर कली अजनु
जनु बरसौ । बहुत जलेव जलेबी बोरी । नाहिंन घटत सुधाते थोरी ।
देखत हरयिहोत हैं सभी । मनहुं बुदबुदा उपजे समी । फेरीधुरी मिली
पयसंगा । मिथी मिथितभद्र यकरंगा । साज्यो दहेउ अधिक सुखदा-
ई । ता ऊपर पुनि मधुर मलाई । खोवाखोई अबति कै राख्यो । सुहे
मधुर मीठो रसचाख्यो । बासौंधी भिखरनि अतिसौंधी । मिलेमिरचि
मेरति चकचौंधी । छांकि छबीली धरीधुंगारी । भरहेउठत भारकी
न्यारी । इतनेयतनयशोदाकीनों । तबमोहन बालकसंगलीनों । बैठेआय
हंसत दोउभैया । प्रेमसुदित परसति है मैया । धारकटोरा जटित रतन-
के । भरि सब सालन बिबिध यतनके । पहिले पनवारो परसयायो । तब
आपुनकर कौर उढायो । जेवत रुचि अधिकौ अधिकैया । भोजनबहु
विसरत नहिंगैया । शीतल जल कपूर रस रचयो । सो मोहन निजकर
रुचि चूचयो । महारि सुदित मन लाडु लडावै । ते सुख कहां देवकी
पावै । धारियसि गडुआ जल ल्याई । भरेउ चुलू खरिका लै लाई ।
पीरेपान पुराने बीरा । खातभई द्युति दांतनि हीरा । मृगसद कनकपूर
करलीनों । बांढिबांढि ग्वालनकोदीनों । चन्दन और अरगजाआन्यो ।
अपने कर बलके अगवान्यो । ता पाछे आपुन हुलरायो । उवरेउ
बहुत सखनिपुनिपायो । सुरदास देख्यो गिरिधारी । बोलि दई हंसि
जूठन थारी । यहजेवनार सुनै जो गावै । सो निजभक्ति अभयपद पावै
२५ देखिसखी ब्रजते बनजात । रोहिणी यशुमति सुतकी छवि और
गौर श्यामहरी हलधर गात । नीलाम्बर पीताम्बर ओढे शोभा कछु
कही नहिंजात । युगलजलद युगतडित मनहुंसिलि अरस परस जोडत
है नात । शशमुकुट मकराकृत कुण्डल भलकत बिम्बकपोल यहि
भांति । मानहुं जलद युगलरवि तापर चन्द्रधनुयकी कांति । कटिक-
छनी करलकृत मनोहर गोचारनचले मन अनुमानि । ग्वालसखाविच
श्रीनन्दनन्दन बोलत वचन मधुर सुसकानि । चितैरहीं सबब्रजकी युवती
आपुसहीमें करत विचार । गोधन वृन्दलिये सूरजप्रभु वृन्दावन गये
करत बिहार १६ ॥ अथ ब्रकासुर अथ विराम सारंग ॥ बन बन फिरत चराबत

लोधापि जलजम्बूनि व्रजवन्ते बनिआवत । गुंजाउर वनमाल गुकुटागिर
 पैगु रमल न जावत । कोटि किरणि मणि सुख परकाशित बडपति
 कोटि राजाजस । कोटिगवा सबनदन निहारत उर आनंदन समावत ।
 यमल खौरि काटनीकाछे देखतही मनभावत । सूरप्रयास नागर ना-
 रितको बागिर पिरइ नयावत २० ॥ रागकान्हो ॥ आजु बने बनते व्रज
 आवत । नागारइ सुमनकी माला नन्दनन्द उरपर छवि पावत । सङ्ग
 भोग भोधन राशालीन्हें नानागति कौतुक उपजावत । कोउगावत कोउ
 झुत्य करत कोउ कोउ धँः कोउ करताल बजावत । रांभति गाय ब-
 काहित सुविजरि प्रेमउमँगि यनदूध चुचावत । यशुमति बोलि उठी
 हरथितहैं कान्हर धेनु चराये आवत । इतनी कहत आयगये गोहन
 जनगीदोज दिये लैलावत । सूरप्रयासके कृत यशुमतिखों ग्वाल बाल
 कान्हि प्रकट पुतावत २१ व्रजबालक सबजाय तुरतहीं सहिर राहरिके
 पाथँधरे । कैसे पूत जन्मो जगमाहीं धन्यकोख जेहि एखानधरे । गाय
 लिवागये लुन्दावन चरतचली यमुनातट हेरि । अखर एक बलगरुण
 जरिरह्यो बैठ्यो तीरआय मुखधेरि । चौंचरक पुहसो करिराखी एक
 रहेउ तो गगन लगाय । इस बरजल पहिले हरिधायो बदनचीर पल
 साहिं गिराय । पुनत नन्दयशुमति चकतचित मुनतचकत गोकुल नर
 नारि । सूरदासप्रभु मन हरिलीन्हों तबजतनी भरिलइ अँअवारि २२
 रागमौरा ॥ तुमकत गाय चरावन जात । पिता तुम्हारे नन्दसहरसो जाके
 मों यशुमति सी मात । खेलतरहैं आपने घरमें साखनदधि भावैं सो
 खात । असृतबचन कहो मुख अपने रोमरोम पुलकित सबगात । अब
 काइके जाहु कबहुँ जनि आवतिहैं युवती इतरात । सूरप्रयास मेरे न-
 यजनि आगेत कबहुँ कतहि जातहो तात २३ ॥ रागधारग ॥ मैया हैंन
 चरैहैं गाय । सिंगरि ग्वाल घिरावत मोखों मेरे पायँ पिरांय । जो न
 पत्युय पूंछि बलडाउहि अपनी सौंहदिवाय । यहसुनि माय यषोदा
 ग्वालन गारी देत रिसाय । मैं पठवति अपने लरिक्राक्री आवैं मन बह
 राय । सूरप्रयास मेरीअति बालक मारत ताहि रेंगाय २४ ॥

अथ सूरसागर माखनचोरी राग कल्पद्रुम

—*—
श्रीकृष्णायनमः ॥

रागधनाथी ॥ मथुरा जातिहैं बेंचन दहियो । मेरे घरको द्वारसखीरी
तबलों देखे रहियो । दधि माखन द्वैमासभरेहैं तोहिंसैंपि हँसहियो ।
अवर नहींयाब्रजमें कोऊनन्दको आवत लहियो । बाकेबचन सुनत हैं
बैठे मनहींमन दे बहियो । सूरदास लौं गईन खालिनि कूदिपरै देखिह-
यो १ ॥ रागनट ॥ देख्यो जायप्रयाम घरभीतर । अबहीं निकसि कहत
भइ सोईफिर आई तुम्हारेडर । मखा साथके चमकिगये सब गहेउ
प्रयाम करवाइ । औरनिजानिजानमें दीन्हेंतुमकहां जाहुपराइ । बहुत
अचगरी करत फिरतहौ मैं पायेकरि घात । बांहपकरि लैचली मह-
रिपै करतरहत उतपात । देखौ महारि आपने सुतको कबहु नहिं न प-
त्यात । बैठे प्रयाम भव नहीं अपने चितैचितै पछितात । बांह पकरि
तु ल्याई का को अतिहि बेशरम खारि । सुरश्याम मेरे आगे खेलत
थौवन मद मतवारि २ रही खालिनि हरिको मुखचाहि । कैसेचरित
कियेहरि अबहीं बार बार सुमिरति करताहि । बांहपकरि घरते में
ल्याई कहांचरितकीन्हें हैं प्रयाम । जात न बनेकहि न कछुआधै क-
हति महारितू सेसीबास । जाहिखारि थौवनमदमाती भूँटेदोयलगावति
याहि । सूरदास प्रभुकेगुण ऐसे बुद्धिकरी तबजीतोताहि ३ ॥ रागभोरी ॥
प्रयामगये खारिघरसूने । माखन खाय डारिसब गोरम बासन फोरि
सौरहूकूने । बड़ो माठ एक बहुत दिननि कोताहिकरेउ दशहूक । सो-
वतलरिकनि छिरकि महीसों हँसतचले दैकूक । आयगई खालिनि
त्यहि अवसर निकसत हरि धरिपाये । देखे घर बासन सबफोरे दहीं
दूध ढरकाये । दोउभुजधरिगाढे कर लीन्हें गई महारिके आगे । सूर-
दास अबबसेकौन यहां पतिरहिहै ब्रजत्यागे ४ ॥ राग बिलावल ॥ सेसेहाल
मेरे घरमें कीन्हेंहैं लैआईहैं तुमहिंपै पकरि के । फोरे सबबासनघर
के दधि माखन खायो जो उबरेउ सो हारेउरिसकरिके । लरिककि-
रकि महीसों देखौ उपज्यो पूत सपूत महारिके । बड़ो माठ घरधरेउहो

युगनि को टुकटुक कियो संखनि पकरि के । पारि सपाट चलत तब
 पाये हैं ल्याई तुमहीं पै पकरिके । सुरदास प्रभु ऐसे राखी यशोदा
 जैसेरखिये राजमद को जकरिके ५ रागकान्हरो ॥ करत कान्ह ब्रज घरनि
 अचगरी । खीजत महरि कान्हसों फिरि फिरि उरहन लै आवतिहैं
 सिगरी । बड़ेबापको पूत कहावत हम वै वासवसत यकनगरी । नन्दहु
 ते येबड़े कहैहैं फेरि बसैहैं यहब्रज नगरी । जननी के खीजत हरि रोय
 भूँढहि मोहिं लगावत धगरी । सुरप्रयास मुख पोंछि यशोदा कहति
 सबै युवतीहैं लंगरी ६ ॥ रागसारंग ॥ नितहि नितहि उठि आवतिसबभोर ।
 मेरे बारेहि दोय लगावति भ्वातिनि यौवन जोर । दूध दहीमाखनके
 कारणा कबगयो तेरी ओर । धनसांती इतराती डोलति सकुचनहींकरै
 शोर । मेरोकन्हैया तनकसी तूहै कुचनिकदोर । तेरेमनको यही कौनहैं
 पायो आजकटकको छोर । कापर नयन चलावति आवति जाति नहीं
 ब्रज तिनको तोर । सुनहुसूर खालिनिकी बातें बसति कान्ह जीवनधन
 सोर ७ ॥ रागरामकली ॥ अपनोगांव लेहु नंदरानी । बड़ेबापकी बेटो ताते
 पतहिं भलेपटावति पानी । सखाभीर लैपैठतघरमें आपखायतोसहिये ।
 मैं जबवली सासुहैं पकरन तबके एसा कह कहिये । भाजिगये दुरिदे-
 खत कतहूं मैं घरपौढी आई । हरे हरे बेनोगहि पाछेबांधेपाटीलाई ।
 सुनिमैया याकेएसा मोसों इनमोहिलयोबुलाई । दधिमेंपरीसेतकीची-
 रों सोपै सबैकड़ाई । टहल करत याके घरकी मैं यहपतिसँग मिलि
 सोई । सुरबचन सुनिहूँसी यशोदा खालरही सुंहसोई ८ ॥ रागसारंग ॥
 महरि तुम चहत कहुब्रज और । अंतएक मैं कहींकिनाहीं आपु ल-
 गावति भौर । जहां बसे पतिनहों आपनी तजन कहेउ सोठौर । सुत
 के भये बधाई पाईलोगनि खेदत होर । कान्हपटाय देतिघरलूटनकह-
 त करेउ यागोर । ब्रज घर समुझि लेहुमहरिजो कहतिकियेकरजोर ।
 नितप्रति हानि कहांलौं सहिये कहौ महरि तुमबात । और कहा कहैं
 सुरश्यामके सबएसा कहत लजात ९ ॥ रागनट ॥ लोगनिकहति भुक्ति
 तबोरी । दधिमाखन गढबन्ध दै राखति करत फिरत सुतचोरी । जा
 के घरके हानिहोत नितसे नहिं आनि कहैरी । जाति पांतिके लोगनि
 देखत और बसेहैं नैरी । घरघर कान्हखानकी डोलत अतिहि कृपिणी

तेहरी । सूरप्रयासको जब जो भावै सोई तबहीं तूहरी १० ॥ राग रासका ॥
 सहरि तोहिं वही कपिशि में पाई । दूधदहीहै मिथिदी दीनों सुतल
 धरत कृपाई । बालक बहुत नहीरी तेरे सकैकंवर काजराई । घोऊती
 घरहीघर डोलत साखनखात चुराई । लुब्धबैस पूरे राखनते तैयारीनिधि
 पाई । ताहूके खैबे पीबेको कहाइती चतुराई । सुनहु न सखन चखुरनापर
 को यशुमति नन्दतु गाई । सूरप्रयासको चोरीकेमिस देखनकीय ॥ अर्द्ध ॥
 ११ ॥ राग नट ॥ अनत सुत गोरसको कतजात । घरघरभी नवलख दु-
 धारी औरानीनाहँ जात । नितप्रति सबे ओरहनकेमिस आवतहैं उठि
 प्रात । अबला ते अपराध लगावति बिकटबनावति वात । निपटनिधक
 निबादति सन्मुख सुनि म्त्रहिं नन्दरिसात । मोसों कपिशि कहत तेरे
 घर ढोटा कतअघात । करि मनुहारि उठाय गोदलै बरजत सुतकोसात ।
 सूरप्रयास नित सुनत उरहनो दुखघाघत तेरोतात १२ ॥ राग धनाची ॥ प-
 हिलो साखन सांगिलियो यशुमतिसों । माता सुनि तुरतहि लै आई
 देखि खजाय समतमन रतिसों । मैया मैं अपने कर खैहों चरिदे भेरे
 हाथ । साखन खात चले उठि खेतन सखाजुरे सबसाथ । मथुरा जात
 ग्यालिनी देखी चरचिलई हरिआय । सूरप्रयास ता घरके पाछे पैठि
 रहे अरगाय १३ ॥ राग धनाची ॥ भाजिगयो मेरी भाजनकोरि । पारिका
 सहस सकसँग लीन्हें नाचत फिरत सांकरी खोरि । मारग तौ कपु
 चलन न पावै धावत गोरसलेत अजोरि । मकुचन करत फाथुपी खेत
 तारीदेत हँगत मुखमोरि । बातकहों तेरेढोटाकी गबजको बँधयोप्रेम
 की डोरि । तौनासों पढिनावत शिर पर जो भावै सो लेत हँ डोरि ।
 आप खायसे सब हस मानो औरनि देत सिकदरे टोरि । सूर सुतहि
 बरजो नँदरानी अब तोरत चोली बँदडोरि १४ ॥ राग बिलावन ॥ श्याम
 सब भाजन फोरिपराने । हाँकदेत पैठत पैलाने नेक न सनहिँ डराने ।
 सीके डोरि सारि लरिकनको साखन दधि सब खाई । भवन सच्यो
 दधिकान्दौ लरिकन रोवत पायेजाई । सुनि यशुमति सबहीके लरिका
 तेरोसों कहूँ नाहिं । हारनि वारनि गलिनकहूँ कोउ चलि नहिँ सकत
 डराहिं । जहतु आयेको खेल कन्हैया सब दिन खेलत फार । रोक
 रहत गहिगली सांकरी टेडीनाँधत पाग । बारीते सुत ये हँगलाये मनहीं

सुरसागर साखनचोरी रागकल्पद्रुम ।

३५३

सर्नहिँ सिहाति । सुनहुँ सूरखालिनिकी बातें सकुँचि महरि पछिताति १५ ॥ राग सारंग ॥ कन्हैया तू नहिँ मोहिँ डरात । यटरस परेउ छाँड़िकत
घरघर चोरी करि करि खात । बकत बकत तोसों पचिहारी नेकहु
लाज न आई । ब्रजपरगन सिकदार महर तू ताकी करत नन्हई । प्रत
सपूत भयो कुलमेरे अब मैं जानी बात । सूरश्याम अबलों तोहिँ बकसी
तेरी जानीघात १६ ॥ राग गौरी ॥ सुनुरी ग्वारि कहैं यक बात । मेरी
सों तुमयाहि मारियो जबहीं पावहु घात । अब मैं याहि जकरि बांधैं
भी बहुते मोहिँ खिभाई । साँटिन मारि करौं । पहुँनाई चितवत बदन
कन्हई । अजहं मानुकहेउ करि मेरो घरघर तू जनि जाहि । सूरश्याम
कह्यो कहूँ न जेहो माता मुखतन चाहि १७ ॥

*

अथ सुरसागर यमलार्जुन रागकल्पद्रुम ॥

अथ दामोदर लीला ॥

*

श्रीकृष्णायनमः ॥

रागधिलावल ॥ ऐसीरिसमें जो धरिपाऊं । कैसे हालकरौं धरिहरिके
तुम को प्रकट दिखाऊं । सँदिया लिये हाथ नँदरानी धरधरात सब
गात । मारेबिना आजुजो छाँड़ैं लागे मेरेतात । यहि अन्तर खालिन
यक औरि धरेबाँह हरिल्यावति । भली महरि सुधो सुतजायो बोली
हार बतावति । रिसमें रिसअतिही उपजायो जानिजननि अभिलाय ।
सूरश्याम भुजगहे यशोदा अबबाँधैं कहि भाय १ ॥ राग धनाश्री ॥ यशुमति
रिसकरि रज्जुअकरये । सुतहि क्रोधदेखि माताको मनहीं मन अति
हरये । उफनत कीर जननि करि दुचिती यहि बिधि भुजा छुड़ायो ।
भाजन फोरि दही सब डालेउ साखन मुखलपटायो । लै आई जेवरि
अब बाँधैं मरम जानि न बँधावै । आंगुरद्वै घटिहात सबनि सों पनि
पुनि और मँगावै । नारदशाप भये यमलार्जुन इनकी अबजु उधारौं ।
सरदासप्रभु कहत भक्तहित जन्मजन्म तनुधारौं २ देखि संखी यशुदा
बौरानी । घरघर डोलतिलोतिदावरी बाँहगहे हरिकी बितंतानी । जा-

नत नाहिं जगतपात भाधव जिनते सब आपदा नशानी । जाकोनाम
 सकति पुनिताकी ताहिदेखि बांधतनैदरानी । अखिल ब्रह्मांडउदररहे
 जाके जिनकी ज्योतिजलप्रलहुमसानी । मुखजम्हात त्रिभुवन दिखरा-
 यो अचरज कथा न जात बखानी । ब्रह्मादिक सनकादि शुकादिक
 भूत रहत इनहुं नाहिंजानी । सूरदासस्वहिं वैसिये लागति जो कछु
 कहि गर्गमुखबानी ३ बांधीं आजु कवनतोहिं कोरे । बहुत लंगरयो
 कीनींतेसों भुजगहिरज्जुखलसोंजोरे । जननीअतिरिसजानि बंधाये
 चितै बदन लोचन जलधारे । यह सुनिब्रजयुवतीसबधार्ई कहति कान्ह
 अब क्योंतहिं कोरे । ऊखलसों गहिबांधि यशोदा सारनको सांटीकर
 तोरे । सांटीदेखि ग्वालिप्रछितानी बिकलभई जहँ तहँ मुखमोरे । सुनहुं
 महरि ऐसी न बूझिये सुतबांधति माखनदाधयोरे । सूरप्रयासको बहुत
 सतायो चूकपरी हमतेयहभोरे४ ॥ रागबिलावल ॥ यशोदा तेरो मुख हरि
 जोवे । कमलनयन हरि हिचकित रोवै बंधन छोड़िज सोवै । जो तेरो
 सुतखरो अचगरो अपनीकोखको जायो । कहाभयो जो घरकेढोटा
 चोरीमाखनखायो । तुरतदोहनी दहेउजमायो जावन पूजन पायो । ता
 घरदेवपितरकाहेको जो घर ऐसोजायो । जाकोनामलेत भूमछूटैकर्म
 फनदख काटे । सो हरि प्रेमजेवरी बांधे जननि सांठउये डारे । सूर-
 दास प्रभु भक्तहेत ते देहधरतही आये । दुखितजानि दोउसुत कुबेरके
 ताहित आपुबँधाये ५ ॥ रागसारंग ॥ माईनेकहु न दरद करतिहिचकित
 हरि रोवै । बज्रहूते कठिनहियो तेरोहै जसोवै । पलना पौदाहि जि-
 नहिं बिकरबाउकाटै । उलटे भुज बांधि तिनहिं लकट लिये डारै ।
 नेकहु न थकित पारिा निरदई अहीरी । अहो नन्दरानी सीख कौन
 पै लहीरी । जाको शिव सनकादिक सदा रहत लोभा । सूरदास प्रभु
 को मुख निरखि देखि प्रोभा ६ ॥ रागबिहागरे ॥ कुंवर जल भरि भरि
 लोचन लेत । बारिज बदन बिलोकि यशोदा कतरिस करति अचेत ।
 कोरि उदरते दुसह दावरी डारिकठिन करबेत । कहि धौं तोहिं कैसे
 करिआवत शिशुपर तामस वेत । मुखआंगू उरमाखनके फरानिरखि
 बदन छबिदेत । मानहुँ अवत सुधानिधि मोती उडुगगा अवलि समेत ।
 सरबस तन मन धन न्याछावरि कीजै सूरप्रयाससे हेत । नाजानों केहि

पुण्य प्रकटभये यहि ब्रजनन्द निकेत ७ ॥ राग नट ॥ हरिके बदनतन धौं
 चाहि । तनक दधिकारणा यशोदा इतो कहा रिसाहि । लकुट के डर
 डरत जैसे सजल शोभित डोल । नील नीरज दलमले अलि ओसकन
 कृतलोल । वातकेवश मालजैसे प्रातपङ्कजकोस । नमितमुख बसिअधर
 सूचत सकुचमें कहुरोस । कितिक गोरस हानिजाको करतिहै अप-
 मान । सूरप्रभुके रोम ऊपर वारिये तनप्रान ८ मुखकृवि निरखि हो
 नन्दधरनि । शरद निशिको अंशअगागात इन्दुआभा हरनि । ललित
 श्रीगोपाल लोचनलोल आंशु ढरनि । मनहुं वारिज विथकि बिभ्रमपर
 परवश परनि । कनक मरिणामय जटितकुण्डल ज्योति जगमग करनि ।
 मित्रलोचन मनहुं आये तरलगतिहै तरनि । कुरिल कुन्तल मधुपमिलि
 मानों कियो चाहत तरनि । बदनकांति बिलोकि शोभा सके मूर न
 बरनि ९ ॥ राग धनाश्री ॥ कइौतौ माखन ल्याऊँ धरते । जा कारणा तू
 छोरति नाहिंन लकुट न डारति करते । सुनहिं महारि ऐसी न बुझिये
 सकुचि गयो मुखडरते । मनहुं कमल दधिमुत समयोतकि फूलत नाहिं
 न सरते । ऊखललाय भुजाधरि बांधे मोहन मूरति बरते । मूरप्रयाम
 लोचन जलबयंत जनुमुक्ता हिमकरते १० कहनलागी बढि बढि अब
 वात । ढोटा मेरो तुमहिं बंधायो तनकहिं माखन खात । अब मोहिं
 माखन देतिमगाये मेरेधर कहु नाहिं । उरहन कहिकहि सांभसवारे
 तुमहीं बंधायो याहि । रिसहीमें मोको गहिदीनों अबलागी पछितान ।
 मूरवास अब कहति यशोदा बुझियो सबको ज्ञान ११ सुचितदैं चितैं
 तनैतन ओर । सकुचित शीत भीत ज्यों जलरुह तुवकर लकुट निरखि
 सखिधोर । आनन ललित अवत अंशुवन अति अरुणा चपल लोचन
 की कोर । डारत मनो गंडुलक सुधाविधु मगडलते भरिउभय चकोर ।
 कमलनालते कलित युगनभुज ऊखलबांधे दाम कटोर । मनहुं भुजक
 भरत बांधीपर असभिरहे कंचूरि गरजोर । लघु अपराध देखि मन
 शोचतहै समकुलिष कठिन उरतोर । मूरकहा सुतसों इतनी रिस बि-
 लखति कहति न माखन चोर १२ चितैं धौं कमल नयन की ओर ।
 कोटिचन्द्र वारों मुखकृविपर येहैं शाहकि चोर । उज्ज्वल अरुणा अ-
 सित दीप्तहैं दोउ नयननि की डोर । मानहुं सुधापान के कारणा बढे

निकट चकोर । काहे रिसाति यशोदा इनसों कौन जानहै तोर । सूर
 प्रयास बालक मनमोहन नाहिँन तसुगाकिशोर १३ कबके बाँधे ऊखल
 दास । कमलनयन बाहिरकरि राखे तू बैठीसुखधाम । हैनिरदई दया
 कछुनाहीं लागिरही घरकाम । देखि सुधाते मुख कुम्हिलाने अति
 कोमल तनप्रयास । छोरहुबेगि बड़ी बिरिया भई बीतिगये युगयाम ।
 तेरीशस निकट नहिँ आवत बोलि सकत नहिँराम । जन कारणाभुज
 आय बँधाई बचनकियो ऋयिताम । तादिनमें यह प्रकट सूरप्रभु दा-
 मोदरसो नाम १४ यशोदातेरो भलोहियो है माई । कमलनयन माखन
 के कारण बाँधे ऊखल लाई । जो सम्पदा देवमुनि दुर्लभ स्वप्न्यहुँ
 दे न दिखाई । याहीते तू गर्वभरीहै घरबैठे निधिपाई । तबकाहूको सुत
 रोवत सुनिके दौरिलेति हियलाई । अब काहे घरके लरिकासों करति
 इती जड़ताई । बारम्बार सजल लोचनभरि रोवत कुँवरकन्हाई । कहा
 करौं बलिजाउ छोरती तेरीसौंह दिवाई । जो मरति जलथलमें व्यापक
 निगम न खोजतपाई । सो यशुमति अपने आँगनमें दै करताल नचाई ।
 सुरपालक सबअमुर सँहारक विभुवन जाहि डराई । सूरदास प्रभुकी
 यह लीला निगमनेति नितगाई १५ ॥ राग नट ॥ देखुरी नँदनन्दनओर ।
 वासते तनवासितभै हरितकत आनन तोर । बारबार डेरात तोको ब-
 रगा बदनहिँथोर । मुखरमुख दोउनयन ढारत क्षणाहिँक्षणाकबिछोर ।
 सजल चपलकर नयनकीपल अरुणा ऐसेडोल । रसभरे अम्बुज भीतर
 भ्रमतजनु भयभोर । कछुक करुणाकर यशोदा कहतिनिपटिनिहारि ।
 मूरप्रयास बिलोकि यशुमति कहति माखन चोरि १६ तबते बाँधे
 ऊखल आनि । बालमुकुन्दहि कततरसावति अति अँगकोमलजानि ।
 प्रातकालते बाँधे मोहन तराणि चढ्यो मधिआनि । कुम्हिलानेमुख
 चन्द्र दिखावति देखहुधौं नँदरानि । तेरीवासते कोउन छोरत अबछोरहु
 तुमआनि । कमलनयन बाँधेई छाँडे तुमबैठी मनमानि । यशुमति के
 मन सुखकारणाको आपुबँधावति पानि । यमलाअर्जुन मुक्तकरनको
 सूरप्रयास यहठानि १७ कान्हसों आवत क्यों न सात । लै लै लकट
 कठिन अपनेकर परसति कोमलगात । वे देखिया तू चुवतनयन ते यों
 राजत उरजात । मनोमुक्ता चुगतते खञ्जनचोंच फटी न समात । डरनि

सुरसागर यम तार्जुन राग कल्पद्रुम ।

३५७

डोल डोलत है यहि बिधि निरखि सुमुख सुनिवात । मनो मूर भृङ्गशंक
 प्रारसन उडिबेको अकुलात १८ ॥ राग रामकली ॥ यशोदा यहि न बन्धिये
 काम । कमलनयनकी भुजा देखिते बांधे हैंदाम । पुत्रहुते प्यारी कोउ
 हैरी कुलदीपक मणिधाम । देखहु चन्द्रवदन कुम्हिलानो है निरमोही
 बास । तू बैठी मन्दिर सुखछहियां सुखदुख पावतधाम । अतिसुकुमारि
 मनोहर मूरति ताहि करति तू ताम । यहि है सब ब्रजको जीवन मुख
 पावति है लै नाम । सुरदास प्रभु भक्ति बश हैं सब जगके विश्राम १९
 राग धनपथी ॥ ऐसी रिसतोको नंदरानी । भली बुद्धि तेरेजिय उपजी बड़ी
 ब्रैस अब भई सयानी । ढोटा एक भयो कैसेहुं करि कौन कौन कर बर
 बिधिबानी । करम करम करि अब लै उबरैउ ताको मारि पितर दे
 पानी । को निरदई रहैं तेरे घर को तेरेसंग बैठे आनी । सुनहु सूरकाहि
 काहि पचिहारीं युवतीचलों धरन बिसुभानी २० ॥ राग सारंग ॥ हलधर
 सो काहि खालि सुनायो । प्रातिहते तुम्हरी लघुभैया यशुमति ऊखल
 बांधि लगायो । काहू के लरिकहि हारि सारेउ भोरहि आनि रोवत
 गुहिरायो । तबहीते बांधे हरिबैठे सो हम तुमको आनि जनायो । हम
 बरजी बरज्यो नहिं मानति सुनतहिं बल आतुर ह्वै धायो । सुरश्याम
 बैठे ऊखललागि माताडरंत न अतिहि प्रसायो २१ यह सुनिके हलधर
 तहँ आये । देखि श्याम ऊखलसों बांधे तबहीं दोउ लोचन भरि आये ।
 मैं बरज्यों कैबेर कन्हैया भली करी दोउ हाथ बँधाये । अजहूँ छाँडहु गो
 लँगरायो दोउकर जोरि जननिपै आयो । श्यामहिं छोरि मोहि बरु
 बांधो निकसत सगुण भलेनहिं पायो । मेरो प्राण जीवनधन कान्हा
 तिनके भुज मोहि बंधे दिखायो । मातासों कहा करौं छिटाई श्रेयलूप
 काहि नाम सुनायो । सुरदास तब कहति यशोदा दोउ भैया तुम एक ह्वै
 आयो २२ काहेको इतना हरिबास्यो । सुनुरी भैया मेरे भैया कितनो
 गोरस नास्यो । जबरज्जु सों करगाहे बांधे छर छर मारी सांठी । सुने
 घर बाबानंद नाहीं ऐसे करि हरि डांठी । और नेकु छरि देखहि श्याम-
 हिं याको करौं निपात । तू जो करै बातसे सांची कहा कहैं तोहिं
 मात । गाढे वदत बात सब हलधर माखन प्यारी तोहिं । ब्रज प्यारी
 जाको मोहिंगारो छोरति काहे न जोहि । काको ब्रज माखन दधिकाको

कहिबांधे जकारि बनाय । सुनतसूर हलधरकी बागोजननी सेजबताय २३
 सुनहु बात मेरी बलराम । करन देहु मोहि इनकी पूजा चोरी प्रकट
 नाम । तुमहीं कहौ कमी काहेकी नवनिधि मेरे धाम । मैं बरजौं सुत
 जाहु कहूँ जिनि कहिहारी निशियाम । तुमहुँ मोहि अपराध लगायो
 माखन प्यारो प्रियाम । सुनिमैया तोहिं छाँड़िकहौं कहि को राखेतेरे
 नाम । तेरीसों उरहनलै आवति भूँटी ब्रजकी वाम । सूरप्रियाम अतिहो
 अकलानि कबबांधेहैं दाम २४ कहाकरोँ हरि बहुत खिभाई । सहिन
 सकी रिसही रिस भरनई बहुतै ठोठ कन्हाई । मेरो कहेउ नेकु नहिं
 मानत करत आपनीटेक । भोरहेत उरहन लै आवत ब्रजकी बधू अ-
 नेक । फिरत जहँ तहँ धूम मचावत घर नहिं रहत सगोक । सूरप्रियाम
 विभुवनको कर्ता यशुमति कहति जनेक २५ निरखि प्रियाम हलधर
 सुसुकाने । कोबांधे कोकोरै इनको बहमहिमा येहिपै जाने । उतपति
 प्रलय करतहैं येइ शेष सहस मुखसुयश बखाने । यमलार्जुन तोरि उ-
 धारणा कारणा करत आप मन माने । असुर सँहारन भक्ताहि तारन
 पावन पति कहवत बाने । सूरदासप्रभु भावभक्तके अतिमति यशु-
 मति हाथबिकाने २६ ॥ राग रामकली ॥ यशुदा ऊखल बांधेप्रियाम । मन
 मोहन बाहरही छाँड़े आपुगई गृहकाम । दहौ मयति मुखपै कछु ब-
 करति गारी दै दै नाम । घरघर डोलत माखन चोरत घरस मेरेधाम ।
 ब्रजके लरिकन मारि भजतुहँ जाहु तुमहुँ बलराम । सूरप्रियाम ऊखल
 सौं बांधे निरखति ब्रजकी वाम २७ ॥ राग गूजरी ॥ यशोदा कान्हडूते
 दधिप्यारो । डारिदेहि कर मयति मथानी तरमत नन्ददुलारो । दूध
 दही माखन लै बारै जाहि करति तू गारो । कुम्हिलानो मुखचन्द्रदेखि
 छवि काहेन नेक निहारो । ब्रह्मस्मिन्काशिव ध्यान न पावत सो ब्रजसै-
 यनि चारो । सूरप्रियामपर बलिबलि जैये जीवनप्राण हमारो २८ ॥
 रागध नाग्यी ॥ यशुमति किन यह सीखदई । सुतहिबांधि तू मयति मथानी
 मेसी नितुरभई । हरेबोलि युवतिनको लीन्हों तुमसब तरुसानई । ल-
 रिकन वास दिखावत रहिये कत मुरझाय गई । मेरे प्राणजीवन धन
 माधव बांधे बेर भई । सूरप्रियामको वास दिखावति तुमकहा कहत दई
 २९ यशोदा तोहिं बांधत क्यों आयो । कसकयो नहीं नेकु मन तेरो

सुरसागर ब्रह्मलार्जुन रागकल्पद्रुम ।

३५६

याहीको हँ जायो । शिवचिरंघ्रि महिमा नहिं जाने सोतो गाय संग
 आयो । तातेत पहिंचानत नाहिंनकौन पुरायते पायो । इतनीकहिं उस
 कारत बाँहेंगौरमहित बलकायो । कहाभयो जो घरके लरिका चोरी
 माखन खायो । अपनेकरकरि बन्धनकोरो प्रेमसहित उरलायो । सुर
 सुबचनमनोहर कहिकहिं अनुजशूल बिसरायो ३० ॥ रागआसावरी ॥ जाहु
 चली अपने अपने घर । तुमहीं सर्वासिलि ढीठकरायो अब आई बंधन
 छोरनवर । मोहिंअपने बाबाकी सौंहे कान्हिअब न पत्याऊं । भवन
 जाहु अपने अपने सब लागतिहों में पाऊं । मोको जिन बरजो कोउ
 युवती देखोहरिके ख्याल । सुरप्रयास सों कहति यशोदा बड़ेनन्द के
 लाल ३१ ॥ राग घनाभी ॥ हरिचित्रये यमलार्जुन तन । अबहीं आज्ञाइनहिं
 उद्धारों येहैंमेरेनिजजन । इनकेहेतु भुजाबँधवाई अबबिलब नहिंलाऊं ।
 परस करौ तनुतुहहिं गिराऊं मुनिवर शाय मिटाऊं । येसुकुमार बहुत
 दुखपायो सनकादिक सुतचारों । सुरदास प्रभुकहतमनिहंसन करबध-
 न निरवारों ३२ तबहिंप्रयास यक्षबुद्धि उपाई । युवती गई घरनि सब
 अपने गृहकारज जननी अटकाई । आपुणये ब्रह्मलार्जुन तरु पर परसत
 पातउठे कहराई । दियेगिराय धरिगोदोड तत्वरहै कुबेरसुत प्रकटे
 आई । द्वैकरजोरि करतदोउ अस्तुति चारिभुजा तिनहप्रकटदिखाई । सुर
 अन्य ब्रजजनम लियोहरि धरणीको आपदानशाय ३३ ॥ रागविलावल ॥
 धनिगोविंद धनिगोकुल आये । धनिधनि नन्द धन्य निशिवासर धनि
 अशुमति जिनगोद खिलाये । धनिवह बालकैलि यमुनातट धनिवन
 सुरभीरुन्दचराये । धनिधन सस्य धन्य ब्रजबासी धनिधनिबेगामधुर
 सुतिगाये । धनिधनि अनख उरहनेधनिधनि धनि माखन धनिमोह-
 न खाये । धन्यसूर कखलतरु मोविंद हमहिं हेतुधनि भुजाबँधाय ३४
 मोविंद तुम्हारे स्वरूप निरामनेति नेतिगोविं । भक्तकेबश प्रयाससुन्दर
 देहधारे आवैं । गोपीजन ध्यानधरत सपनेहूँ न पावैं । नन्दधरनि बांधि
 बांधि कपिप्रदों नचावैं । गोपीजन प्रेमआतुर तिनको सुखदीन्हों । अ-
 पने अपने रसविलास काहूँनहिं चीन्हों । श्रुतिस्मृति सबपुराकाहतमन
 बिचारी । सुरदास प्रेमकथा सबहीं ले न्यारी ३५ ॥ राग सोढ ॥ जाको
 ब्रह्मा अंत न पावैं । तामोचन्द कि लारि यशोदा घरकी दहल करारैं । शो

यसनक नारद गंगाशमुनि जाके गुण नितगावैं । निशिबासर खोजत प-
चिहारे मुनिमन ध्यान न आवैं । धनिधनिगोकुल धनि ब्रजबनिता निर-
खत प्रथाम बंधावैं । सुरदासप्रभुप्रेमहिंके वश संतन दरश दिखावैं ३६ ॥
रागकान्हरो ॥ धनिधनि धनिब्रह्मि शापहमारे । आदिअनादि निगमनहिं
जानत तेहरि प्रकटदेह ब्रंजधारे । धन्यनन्द धनिमात यशोदा धनि आं-
गन में खेलत बारे । धन्यप्रथाम धनिदासबंधाये धनिऊखलधनिमाखन
त्यारे । दीनबंधु करुणानिधिहो प्रभु राखिलेहु हमशरणातुम्हारे । सुर
प्रथाम के चरणा शीशधरि अस्तुतिकरि निजधाम पधारे । ३७ ॥ रागगुम-
कली ॥ तरु दोउ धरिगिरे भहराय । जरसहित अररायके अघातशब्द
सुनाय । भये चकृत लोग ब्रजके सकुचिरहे डरपाय । कोउरहे आकाश
देखत कोउ रहे शिरनाय । धरीलौं तकिगये जहँतहँ देहगतिबिसराय
निरखि यशुमति अजिर देखैं जहँबंधे सु कन्हाय । तृसदोउ धरापर
देखे महारि कियोपुकार । अबहिंआंगन काँडिआई चप्योततुकेहार ।
मैं अभागिनि बांधिराखे नन्दप्राणा आधार । शोर मुनि नंदद्वार आये
बिकल गोपीगवाल । देखितरु मनअति डराने हैं बडे विस्तार । गिरे
कैसे बड़ोअचरज नेकु नहीं बयार । दुहुं तरु बिच प्रथाम बैठेरहे ऊखल
लागि । भुजाछोर उठाय लीन्हों महारि के हैं भागि । निरखि युवती
अंग हरिक चोट जनि कहंलागि । कबहुंबांधति कबहुं मारति महारि
बड़ी अभागि । नयनजलभरि ढारि यशुमति सुतहि कट लगाय । जरै
रिस जिहिं तुमहिंबांधे लगे मोहिं बलाय । नन्द मोहिं कहाकहेंगे देखि
तरु दोउआय । मैंमखंतुमकृशालरहो दोउप्रथाम हलधर भाय । आय जो
घर नन्द देखैं तरुगिरे दोउभारि । बांधिराखति सुतहि मेरेदेत महारिहि
गारि । तातहित वंश प्रथामदोरे महारिलयो अंकवारि । कैसेउबरे कृष्ण
तरुते सुर लै बलिहारि ३८ ॥ रागसारंग ॥ अबधर काहूके जनिजाहु । तुम्हरे
आजु कमीकाहेकी कततुम अनतहिखाहु । जरैजेवरी जिनतुम बांधे
वरैंहाय महाराय । नन्द मोहिं अतिवसतहैं तू बांधे कुंवरकन्हाय । बेगि
जाउ अपने हलधर की छोरतहैं तबप्रथाम । सुरदास प्रभुखात फिरो-
जनिमाखनदधितुवधास ३९ ब्रजयुवती प्रथामहिंउरलावति । बारम्बार
निरखि कोमलतनु करिबिनती बिधिको जु मनावति । कैसेबचेअगम

तसु के तसु मुखचूमति यह कहि पछितावति । उरहन लैआवति जेहि
कारण सो मुखफूलपूरणकरि पावति । सुनहुंमहरि इनको तुमवांधति
भुजगहि बंधन चिह्न देखावति । सूरदास प्रभु अतिरति नागर गोपीह-
रयि हृदय लपटावति ४० ॥ पुनः यमलार्जुनकीनीना ॥ राग बिलावल ॥ खालि
उरहनो भोरहि ल्याई । यशुमति कहुं तेरोगयो कन्हाई । भलेकामें
मुतहि पढायो । बारहीते मुडचढायो । माखनमथि भरिधरीकमोरी ।
अबहीं सो हरिलैगयो चोरी । यहसुनतहि यशुमति रिसमानी । कहां
गयो कहिशारंग पानी । खेलत तेओचक हरिआये । जननी बांहपकरि
बैठाये । मुखदेखत तवयशुमति जानो । माखन बदन कहां लपटानो ।
फिरिदेखे तो खालिनि पाछे । मातामुख चितवतनहिआछे । चोरीके-
सब भाव बताये । माता सँटियाद्वैक लगाये । माखन खात जातपर घर
को । बांधोतोहि नेकनहिंधरको । बांहगहेहुं हतफिरतडोरी । बांधोतोहि
सकै को छोरी । बांधिपचीडोरी नहिंपरै बारबार खीजति रिसभरै ।
घरघर ते जेवरी लै आई । मिसहीमिसकरि देखनधाई । चकतभईदे-
खातिहिगढाढी । मनोचितेरे लिखलिख काढी । यशुमति जोरिजोरि
रजुबांध्यो । अंगुरिद्वै जेवरियतिमाध्यो । जबजान्यो जननीअकलानी ।
आपुबँवाये शारंग पानी । भक्तहेत दाबरीबँधाई । मनकादिकसुतकी
सुधिथाई । माताहेत जनहिं मुख कारी । जानि बँवायो श्री बनवारी ।
मुखजमुहाइ अभुवनदिखरायो । चकतहितुरतभये बिसरायो । बांधि
प्रग्राम बाहरलैआई । गोरसघरघर खातचुराई । ऊखलसों गहिबांधि
कन्हाई । नितहिउरहनो सहेउ न जाई । यह कहिजात सक फिरिआ-
वै । रैन दिन तू मोहिं न चावै । माखन दधि तेरे घरनाहीं । धामभ-
रेउ चोरी करिखाहीं । नवलखुधेनु दुहतघरमेरे । केतेरवाल रहत गौ
घरे । मयत नन्दधर सहस मथानी । ताकेसुत चोरी की बानी । सोसों
कहति आनि जब नारी । बोलिजात नहिं लाजनमारी । नन्दसहरकी
करत नन्हाई । विरधबेय सुतभयो कन्हाई । तुम्हरेगुण सबनीके जानै ।
नित बरजो कबहू नहिंमानै । को छोरे जिनि ढोठ कन्हाई । बांधोदोउ
भुज ऊखलजाई । भवनकाजको गइ नँदरानी । आंगनकोडे प्रग्राम बि-
जे आई । तिनहिं यशोदा दयोबराई । चलीं

सबैमिलि शोचति सनमें । प्र्यामहिं गहि बांध्यो यहि सरा में । हंसत
 वात यह कहो कि नाही । ऊखलसों बांध्यो सुत बाहीं । कहा कहीं
 वा छबिकी माई । बांवी पर अहि करत तराई । कान्ह बदन अतिही
 कुम्हिलानो । मानहुं कमलहि महिं तरसानो । दुरते दीरघ नैनचपल
 अति । बदन सुधासर मोनकरत गति । यह सुनि और युवाँत सबआई ।
 यशुमति बांधे कतहि कन्हाइ । भलीबुद्धि तेरेकहु उपजी । ज्यों ज्यों
 दिनीभई त्योंनिपजी । कोरौ प्र्यामकरेउ मनलाही । अति निर्दयीभई
 तुमकाही । देखोप्र्याम और नंदरानी । सकुच रहेउ मुखशारंगपानी ।
 बाहिर बांधि सुतहि बैठाये । मथतिदही माखन तोहिं ध्यारो । छांडि
 देहु बहिजाय मथानी । सौंह दिवावति कोरहु आनी । हांसी करन
 सबै तुमआई । अब कोरों नहिं कुंवर कन्हाइ । तुमहीं मिलि रसवाद
 बढाये । उरहन दैदै मुहुपिराये । सबहिन गोधनसौंह दिवाई । चितै
 रहे मुख कुंदरकन्हाइ । कब तुमको बोलाबोलाई । कहिकारण तुम
 धाई आई । कहाकरों बलिजाउँ कन्हाइ । हसरेबश न तुम्हारी माई ।
 मरखको कोउकहा सिखावै । याकी मति कहुकहत न आवै । नारि
 गई गिरिभवन आतुरी । नन्दधरनि अबभई चातुरी । ओछी बुद्धि य-
 शोदा कीन्हीं । याकीजाति अबै हमचीन्हीं । यहै कहति अपने घर
 आई । मानैनहिं कितनो समुझाई । मथति यशोदा दही मथानी । त-
 थहिं कान्ह ऐसी मतिठानी । भक्तवद्धत हरि अन्तर्दृष्टीमी । सनकादिक
 सुतसे दोउकामी । यहि अवतार कहेउ इन तारणा । इनको दुख अब
 करों निवारणा । जो यहिहँगा त्र्यहिहँगा सबलाये । यमलार्जुन पै प्रभु
 तबआये । लक्ष्मीच ऊखलमें अटक्यो । आगे निकसि नेकगहिभूँटक्यो ।
 अरररात दोउवृक्ष गिरेधर । अति आत्मात भयो ब्रजऊपर । भयेचकत
 ब्रजके सब बासी । यहि अन्तर दोउ कुंवर प्रकासी । शंख चक्र कर
 शारंगधारी । भक्तहेत प्रकटे बनधारी । देखिदरश मन हरखबढाये ।
 तुमहिं बिना प्रभु कवन सहाये । धनिब्रज जहां कृष्ण बपुधारी । धनि
 यशुमति ब्रह्महिं अवतारी । धन्यनन्द धनिधनि गोपाल । धनि धनि
 सब गोकुलकी बाल । धन्यगाय धनिद्रुम बनधारन । धनियमुना हरि
 करत बिहारन । धन्य उरहनो प्रातिहिं ल्याइ । धनि माखन जोरत

दिविराई । धन्यमुजन ऊखल गहिलायो । धन्यदाम भुजकृष्णबन्धायो ।
 गदगद कंठ चरगा मुख भारी । शरगा राखिलै गर्वप्रहारी । बार बार
 चरगान पर धाई । कृपाकरो भक्तन सुखदाई । साधुसाधु कहि श्रीमुख
 बानी । बिदा भये मनकादि बखानी । यमलार्जुन को तारि पठाये ।
 नन्दद्वार दोउटस गिराये । निरखि यशोदा आंगन आई । दुहूँ टस
 बिचबचे कन्हाई । दौरिपरे प्रजके नरनारी । नन्दद्वार कछुहोत गो-
 हारी । देखे आनि टसदोउ डारे । ये गुगा यशुमति आहिँ तुम्हारे ।
 तुरतछोरि ऊखलले लयाये । देखत जननि नयन भरि आये । बज्रदेह
 हरिकीहै माई । जहांतहां बिधिहोत सहाई । प्रथम पतना मारनआई ।
 पयपीवत बहु तहां नगाई । लूणावर्त लैगयो उड़ाई । आपुहि गिरेउ
 शिलापर आई । कागासुर आवतनहिँ जान्यो । सुनीकहत ज्यों लेत
 परान्यों । शकटासुर पलनाहिग आयो । कोजानै किन ताहिगिरायो ।
 खेलत में केशी यक मारेउ । धींचत्तोरि तेहि धरगा पछारेउ । खालन
 सङ्गाये गोचारन । तहां बकासुर लाग्यो मारन । कौनकौन करवरहै
 धारौ । यशुमति बांधि अजिरलै डारौ । बहुतै उबरेउ आजु कन्हाई ।
 ऊपर टस गिरेभहराई । काह कहौ कहत न बनिआवै । तुरतआय
 हरिकौन बचावै । सबहित मिलि यक्रमति मनभाई । पुगयनन्दके बचे
 कन्हाई । मुखचूंबति उर लैलै आये । युवतिन किये आप मन भाये ।
 जननीलै सुतकंठ लगावति । चोरीकी बातें समुझावति । मैं रिसहीरिस
 करति लालसे । भुजबांधे मन हँसति ख्यालसे । मैं बरज्यों तुम कैरत
 अचगारी । उरहनको टाढीहैं सिमरी । बारबार देखत तनमाई । गिरत
 टस कहूँ चोट न आई । कहत श्याम मैं अतिहि डरानो । ऊखलमें मैं
 रहेउँ छिपानो । बात सुतहि ब्रह्मति नंदरानी । कान्ह कहै मुखडरकी
 बानी । हरिके चरित कथा कोजानै । यशुमति अतिबालक करिमानै ।
 अखिल ब्रह्माण्ड जीवके दाता । साखन को बांधति है साता । गुगा
 अपार अखिलत अविनाशी । सो प्रभु घरघर घोष बिलाशी । ऊखल
 बँधो हेत भक्तनके । यइसाता यइपिता जगतके । यमलार्जुनको मोक्ष
 कराये । पुनहेत यशुदा घरआये । ऐसे हरिजनके मुखकारी । प्रकटे
 रूप चतुर्भुज धारी । जो जेहिभाव भजे हरितैसो । प्रेमबश्य दुष्टनिको

जैसा । सूरदास यहलीला गावै । कहत सुनत सबके मनभावै । जोहरि
 चरित ध्यान उरराखै । आनंदमदा दुरित दुखनाशै १ ॥ राग धनाश्री ॥ सा-
 खनखात प्रराये घरको । नितप्रति सहस मथानी मथिये मेघशब्द दधि
 मात घसरको । कितने अहिर जिवत घर मेरे दधिमथि लै देंचत सहि
 ढरको । नवलखधेनु दुहतही नितप्रति बड़ोनामहै नन्दमहरको । ताके
 पुत कहावतहो तुम चोरी करत उधारत घरको । सूरप्रधाम कितनो
 तुम खेहो दधि माखन मेरे जहँ तहँ ढरको २ ॥ रागधामकली ॥ सैया मैं
 साखन नहिँ खायो । ख्याल परे स सखा सबैलै मेरे मुख लपटायो ।
 देखितुही छीकेपर भाजन ऊंचेघर लटकायो । तुही देखि नान्हे कर
 अपने मैं कैसे सो पायो । मुखदधि पोंछि बुद्धि अककीन्हों दोनापाछे
 दुरायो । डारि सांति मुखचूमि यशोदा प्रथामहिँ कटलगायो । बाल
 बिनोद भावकरि मोहन माता मनहिँ रिझायो । सूरदास यह यशु-
 मतिकोमुख देवन दुर्लभायो ३ यशुमति तेरोबारो अतिही अचगरो ।
 दूध दही साखनलै डारिदेत सगरो । भोर उठि नितप्रतिकरै मोलों भू-
 गरो । खाल बाल सँगलिये घेरिरहे बगरो । हम तुम ये सबै सककोन
 ते अगरो । लिये दियो कछु मोउ डारिदेहु कगरो । सूरप्रधान तेरोसुत
 गुणमें अति अगरो । श्रीली हार तोरि चोरलायो मेरोखगरो ४ देखो
 माई या बालककी बात । बन उपवन सरिता सरमोहै देखत सांवल
 गात । मारग चलत अनीत करत हरि हठिके साखनखात । पीतांबर
 शिरति वह ओढ़त अञ्जलदै मुसकात । तेरोसों कहकहों यशोदा उर-
 हन देत लजात । जब हरि आवत तेरेहि आगे सकुचि तनक ह्वै जात ।
 कौन गुहा कहूँ प्रथामके नेक न काहु डरात । सूरप्रधाम मुख निरखि
 यशोदा कहति कहां ये तात ५ ॥ राग बिलावज ॥ नन्दघरनि सुत भलो
 पढायो । ब्रजवीथिन-पुरगतिन घरनिघर घाट बाट सब शोरमचायो ।
 लारिकनि मारि भजंतकाहूके काहूके दधि दूध लुगायो । काहूकेघर
 करत भँडाई मैं ज्यों ज्यों करि पकरि नंघायो । अब तौ इनाहतकरि
 वरिवांधी यहिसब तुम्हरो गांव मँगायो । सूर सकभुज गहि नंदरानी
 बहुरि कान्ह अपने दिगआयो ६ ॥ राग सारंग ॥ भूखो भयो आजु मेरो
 बारो । भोरहि खालि उरहने ल्याई बहिँ यहकियो पमारो । पहिले

रोहिणीसे कहिराख्यो तुरत करी जिवनार । खाल बाल सब बोलि
लये मिलि बैठे नन्दकुमार । भोजन बेगि ल्याव कछु मैया भूखलगी
मोहिं भारी । आजु सबारे कछुव न खायो सुनत हँसी सहतारी । रो-
हिणी चितेरही यशुमति तन शिर धुनिधुनि पछितानी । परुस न बेगि
बेर कत लावत भूखोशारंग पानी । बहु व्यञ्जन बहुभांति रमोई यट
रसके परकार । सूरश्याम हलधर दोउ मैया और सखा सबगवार ७
नन्दभवनमें कान्ह अरोगे । यशुदा ल्यावै यटरस भोगे । आसनदे चौकी
आगे धरि । यमुनाजल मेल्यो भारीभरि । कनकधारमें हाथ घोवायो ।
सहस्र यह भोजन तहँ आयो । लै लै धरति सबनके आगे । मातपरोसे
जो हरि मांगे । खीर खाइ घृत लावन लाडू । ऐसे होहिं नहीं अमृत
पाडू । और लेहु कछु सुत ब्रजराज । लुचुई लपसी घेवर खाज । पेटा
पाणु जलेबी पेरा । गोद पाकती नगिनि गिदेरा । गुंभा इलाचीपाक
अभिरती । सीरासँजाव लेहु ब्रजपती । छोलिवरे खरबूजा केरा । घृत
जो बातकियो मुखभेरा । खारक दाख गरीचा रौरी । पीड बदासलेत
बनबौरी । बेसन पुरी सुखपुरी बीजै । आछोदूध कसल सुखपीजै । मैया
मोहिं और किनग्यावै । बौरी को पय अति मोहिंभावै । बेला भरि
हलधरको दीनों । प्रीवतपय अस्तुति बलकीनों । खालसखा सबहिन
पै अँचयो । नीके औंठि यशोदा रँचयो । देना मेलि धरीहै जुबा । हास
होय तो ल्याऊँ पुवा । मोटे अति कोमलहैं नीके । ताते तुरत चभारे
धीके । फेनीसेव अतरसे न्यारे । लैआऊँ जेवहु मेरबारे । हलधर कहैंउ
ल्याउरी मैया । मोको दै नहिं लेत कन्हैया । यशुमति हरय भरी लै
परुसति । जेवतहैं अपनी रुचिसों अति । कान्हमांगि शीतलजलखियो ।
भोजन बीच नीरलै पियो । भात पसाय रोहिणी ल्याई । घृतसुगंध तुर-
तहि दै ताई । लीलवती चाँवर दिबि दुर्लभ । भात परोसे साता सुर्लभ ।
सूरासूर उरइ चना दारी । कनकबरसाधरि फःकि पछारी । रोटीवांटी
पारीभारी । यककोरी यकधिर्बान चभारी । गाग्री धिब भरि धरेउक-
चरेउ । कछुसांग्यो कछुफेंटा छारेउ । सीदेतैल चनाकीभाजी । एकसकूना
देमोहिं साजी । सीदे चरफरे उज्ज्वलकीर । हास होयतो मांगे और । मु-
गोहा पनौरा पनौरा पकौरा । येकौरे भीजे गुरबौरा । पापरबरीमिथौरी

फूलौरी । कूरवरी काचरी पिठौरी । बहुत मिरचदैं किये निमोना । बेसन
 के दशबीसक देना । बनकौरी पीडिसा चिचीडों । खीप पिंडाल को-
 मल भींडी । चौलाई लाहुर अरुपोई । मध्यमेति निंबुबनि सु निचोई ।
 रुचितल जाल लोनिका पागी । कढी दयाल दूसरे मांगी । सरसोंमेथी
 सेवा पालिक । बथुवारांवि लियो जु उतालिक । हींग हरदमूच छोंके
 तेले । अदरख और आंवले मेले । सातन सकल कपूर सुवासित । खाद
 लेतसुन्दर हरिग्रामित । अम्ब आदि दै सगेसँवाने । सबचाखे गोबर्द्धन
 राने । कान्हकहैहैं मातअधानों । अन्नमेकोशीतलजल आनों । अचवन
 लेतधोयकर मुख । शेष न बरने भोजनको मुख । उज्ज्वलपान कपूर
 कस्तूरी । आरोगतिमुखकीछबिछरी । चन्दनअंग सखिनके चरच्यो ।
 यशुमतिके मुखको नहिंपरच्यो । मांगिजेंट सूरजनलीन्हें । बाँटिप्रसाद
 सबनकहँदीन्हें । जन्मजन्मबाह्यो जंतनको । चैरोनन्दमहरकेधरको ६
 रागकान्हो ॥ यशुमतिकहत कान्हसों मेरेअपनेआंगनहींतुमखेलो । बोलि
 लेहु सब मखा संगके मेरो कहेउ बहुरि जिनि देतो । ब्रजबनिता सब
 यों कहति लाजनि सकुचिजात मुखमेरो । आजुमोहिं बलराम कहत
 हैं भूँटे नामवरतहै तेरो । जब मोहिं रिसलागति तब श्रामति बांवाति
 मारति जैसेवरो । सूरहँसति खाखिनिदेतारी चोरनाउ कैतेहुहरि के-
 रो ६ मोहिं कहत युवतीसब चोर । खेलतकहंरहों मैंबाहर चितैरहत
 सब मेरीओर । बोलिलेत भीतरघरअपने मुखचूमति भरिलेत अंकोर ।
 माखनहेरि देत अपनेकर कछुकहिकै बिधिकरतनिहार । अहँ मोहिं
 देखति तहांटेरति मैं नहिंजात दुहाइतेर । सूरश्यामहँसि कंदलगाये
 वे तरुणीकहं बालकमेर १० बोलिलेहु हलधरभैयाको । मेरेआंगन
 खेलकरहु कछु नयनन सुखबीझैमैयाको । मैं सुंदों हरि आंखतुम्हारी
 बालकरहँ लुकाई । हरश्याम सबसखाबूलाये खेलहिंआंखिमुँदाई ।
 हलधरकहेउ आंखिकोसुंदे हरिकहेउ सुंदे मातयशोदा । सूरश्यामको
 जननि खिलावति हरिसहित मवमोदा ११ हरि अपनी तब आंखि
 मुँदाई । सखासहित बलराम छुपाने जहँतहँ गये भगाई । कानलागि
 कहेउ जननिशोदा वा घरमें बलराम । बलदाऊको आवनदेहों श्री-
 दामा सों काम । दौरिदौरि बालक सबआवत छुवत महरिको गात ।

सब आयेरहे सुबल सुदामा हारे अबके तात । भोर परिहरि सुबलहि
 धायो गहेउ श्रीदामा जाय । देई सोहनन्दबाबाकी जननी ये लेआय ।
 हंसि हंसि तारी देतखा सब भये श्रीदामा चोर । सूरदास हंसिकहति
 यशोदा जीत्योहैसुतमोर १२ ॥ रागकेदारो ॥ चलो लाल कछु करो बिया-
 री । रुचि नाही काहू पर मेरी तू कहि भोजन करेउ कहारी । बसन
 मिलै सरस मैदासों अतिकोमल पूरीहैभारी । जेबहु श्याम मोहिंसुख
 दीजै तातकरी तुम लिये बियारी । निबुआ सूरन आव अथानो और
 करौदनकी रुचि न्यारी । बारबार तू कहति यशोदा कहिल्यावै रो-
 हिगामहतारी । जननीसुनततुरतलैआई तनकतनकबरि कंचनथारी ।
 सूरप्रयास कछुकछुलैखायो जलअचयो अरु बदनपखारी १३ पौडिये
 लालमैं रचिसेजबिछाई । अतिउज्ज्वलहै सेजतुन्हारी सोबत अतिमुख
 दाई । खेतततुमहिं निशि अधिकसईहै नयननि नोद हमाई । बदनज-
 म्हात अंगसेहात जननि पलोटाति पाई । मधुरेसुर गावतिकेदारो सुनत
 प्रयास चितलाई । सूरदास प्रभु नन्दसुवनको नोदसई तब आई १४ ॥
 राग बिलावल ॥ आभिये गोपाललाल बवाल हारठाढे । रैनअंधकारगयो
 चन्द्रमा मलीन भयो तारेगारा देखियत नहीं तरागा किरागा चाढे ।
 सुकुलितभये कमलजाल गुञ्जकरत भृङ्गमाल प्रफुलित बन पुहुपजाल
 कुमुदिनि कुम्हिलाभी । गन्धर्वगुरा गान करत स्नान दान नम धरत
 हरत सकलपाप बहत विप्र वेदबानी । बोलत नंद बारबार मुख देखै
 तुव कुमार गायन भइ बड़ी बार तुम्हावन जेबे । जननि कहति उठो
 प्रयास जानतजिय रजनि याम सूरदास प्रभु कपाल तुमको कछु खैबे
 १५ कौन परी नंदलालहि बानि । प्रात मसख जागन की बिरिया
 सोबत हैं पीतान्बर सानि । मात यशोदा कबकी टाढी बधि ओदन
 भोजन धृतसनि । उठो प्रयास कछु करो कलेऊ सुन्दरबदन दिखावहु
 आवि । संग सखा सब हारिठाढे सुबन बैनु चरावन जानि । सूरप्रयास
 अतिही अलसाने सोबत हैं अजहं निशि सानि १६ ॥

अथ सूरसागर अध्यासुर वध राग कल्पद्रुम ॥

श्रीकृष्णायनमः ॥

राग बिन्नावल ॥ रन्दसुत लाडिलेहे सब ब्रजजीवन प्राणा । बार बार
साता कहेहे जागहु श्यामसुजान ॥ ध्रुव ॥ यशुमति लेतिबलाइ भोर
भयो उठोकन्हारै । संगलिये सबसखा द्वारदाहे बलभाई । सुन्दरबदन
दिखाइये हरो नैनकेताप । नयनकमल मुखधोइये कछु करो कलेऊ
आप । साखनरोटी लैहां सद्यदधि रैनजमायो । यदरमकेमिथान सोय
जैवहु रुचिआयो । मोपैलीजै मांगिके जोइजोइ भावै तोहिं । संगजै-
बहु बलराम तुम हो रुचि उपजावहु मोहिं । तब हँसि चितये प्रथाम
सेजते बदन उधारेउ । मानहुं पयनिधि मथत फेन फटि चन्द उजारेउ ।
मखासुनत देखनचले मानहुं नयनचकोर । युगलकमल जनु इन्दुपरहो
बैठिरहेअतिभोर । तब उठिआयेकान्ह सात जल बदनपखारेउ । बोलि
उठे बलराम श्याम कत उठ्यो सवारैउ । दाऊज कहि हँसिमिले बांह
गही बैठाय । साखन रोटी सद्यदही हो जैवत रुचिउपजाय । जल अं-
चयो मुखधोय उठे बलमोहन भाई । गायतई सबघोर चले बन कुंवर-
कन्हारै । तेर सुनत बलरामकी आये बालकवाय । लैआये सब जोरि
कै हो घरते बहारा गाय । सखन कान्हसों कही आजु रुन्दावनजैये ।
यमुनातट तरा बहुत सूरभिगता तहां चरैये । खाल गाय सब लैगये
रुन्दावन समुहाय । अतिहि सघनवन देखिके हो हरयिउठे सबगाय ।
कोउटेरतकोउ हांकि सूरभिगता जोरि चलावत । कोउ कोउ हे
परस्पर प्रथाम सिखावत । अन्तरयासी कहतजियहि मोहिंसिखावत
देरि । कान्ह कहत अबकेगई हो पुनि धौली जो फेरि । कोउ हुरली
कोउ बेरा शब्द शृङ्गीकोपरे । कृष्णकियो मनध्यान असुर यकबस्थो
अधूरे । बाल बछरुवनि राखिहों एकबेरलैजाउं । कछुकजनाउं अपन-
पो हो अबलों रहेउं सुभाउं । असुर कुलहि संहारि धरणा को भार
उतारौं । कपट रूप रचिरहेउं दनुज यहि तुरत पछारौं । गिरि समान

धरि अगसवन बैँह्यो बदन पसारि । मुखभीतर बनयन नदी हो साया
 छलकरि भारि । पैँटाये मुख ग्वाल धेनु बकरासब लीये । देखि साया
 बनभूमि रहे हृषीकेश कृषिकीये । कहनलगे सबआपुस में सुरभी चरे
 अधाय । मानहुंपर्वत कन्दरा हो मुखगये समाय । सबमुखगये समाय
 असुरतव चोंचसकोरेउ । अंधकार इमिभयो मनहुंनिशि बादर जोरेउ ।
 अतिहिउठे अकुलाय कै ग्वालबच्छ सबगाय । कहिवाहि कहिकहि
 उठे हो परे कहांसब आय । धीर धीर कहि कान्ह असुर यह कन्दर
 नाहीं । अनजानत सबपरे अधासुर भीतर माहीं । जिय त्याग्यो यह
 सुनतही अबको सकै उबारि । वातेदूनी देहधरी तब असुर न सक्यो
 सँभारि । शब्दकरेउ आघात अधासुर टेरि पुकारेउ । रहेउअधर दोऊ
 चापि बुद्धिबलसुरति पसारेउ । ब्रह्मद्वार शिरकोरिकै निकसे गोकुल
 राय । बाहिर आवहु निकसिकै हो मैं करिलियो सहाय । बालक
 बछरा धेनुसबैअति मनहिंसकाने । अंधकार सिमिग्यो देखि जहँ तहँ
 अतुराने । आयेबाहिर निकसिकै मनसब कियेहुलास । हमअज्ञानकत
 डरतहैं हो कान्ह हमारेपास । धन्य कान्ह धनि नन्द धन्य यशुमति
 सहतारी । धन्यलयो अवतार कोखधनि जिहिदइतारी । गिरिसमान
 तनुअतिअगमपन्नगकी अनुहारि । हमदेखतपलसकमें हो मारेउ दनुज
 प्रचारि । हरिहंसि बोले बैनसंगजो तुमनहिंहेते । तुमसबकियो सहाय
 भयोतबकारजमोते । हमहुं तुमहुं मिलि बैँठिकैबनभोगिकरैं सबजाय ।
 बंशीबत्भोजन बहुतहो यशुमतिदयो पठाय । ग्वालपरस मुखपाय
 कोटिमुखकरत प्रशंसा । कहाबहुतजोभयो सपत येकुई बंसा । चिट्ठिबि-
 मान सुरदेखहीं गगनरहे भरिछाय । जै जै ध्वनिनभ करतहैं हो हरधि
 पुहुष बरयाय । ब्रह्म सुनी यह बात असुर घर घरनि कहानी । गोकुल
 लीन्होंजन्म कौनयह मैं नहिं जानी । देखोंइनको खोजलै शोचपरेउ
 मनमाहिं । सूरश्याम ग्वालन लिये चले बंशीबत्की छाहिं ॥ १ ॥

अथ सूरसागर बत्सहरण रागकल्पद्रुम ॥

ब्रह्मा मोहनलीला ॥



राम बिलावल ॥ हरयभये नंदलाल बैठि तरु कांहकी ॥ ध्रुव ॥ बंशीवर

अति सुखद और द्रुम पासचहूँ हैं । सखा लिये तहंगये धेनु बन चरत
कहूँ हैं । बैठिगये सुखपायके खालवाल लियेसाथ । कांवरि भोरीलये
सखाहो आन नवायो माथ । आनंद है मधुकाक तुरत वृन्दावन आये ।
व्यंजन सहस प्रकार यशोदा बनेपढाये । श्याम कहेउ बनचलतहीं माता
सों समुभाय । उतते वे आये सबै हो देखतही सुखपाय । कान्ह देखि
मधुकाक पुलकअंग अङ्ग बढ़ाये । हरिहंसि बोलत बैन प्रेमजननी प-
हुँचायो । नीके पहुँचे आय तुम भलो बन्यो संयोग । बार बार कहि
सखनिसें हो आज्जरै सुखभोग । बनभोजी बिधिकरत कमलके पात
मँगाये । तोरे पानपलाश सरस दोना बहुलाये । भाँति भाँति भोजनधरे
दक्षिणवनी मिथान । बनफल लये मँगायके हो लागे रुचिकरिखान ।
बनभोजन हरिकरत सङ्गमलि सुबलसुदामा । श्यामकुंजर प्रसेन महर
सुत अरु शोदामा । कान्ह सबनि मिलिखातहैं लै लै कौर कँडाय ।
औरत देत बुलायके हो डहकि आपु मुखनाय । ब्रह्मादेखि बिचारि
सृष्टि कोउ नई चलाई । मोहिं पठयो जेहिसौंपि ताहिकह कैहोंजाई ।
देखौं धौं यहकौन है बाल बच्छ हरिलेउं । ब्रह्मलोक लै जाउँगो हो
यहि बुद्धिकरि दुखदेउं । अन्तर्दयामीनाथ तुरत विधि मनकी जानी ।
बालकहैं दियेपठै धेनुबन कहाँ हिरानी । जहां तहां बतहुँदिके फिरि
आये हरिपास । सखा सबनि बैठारिके हो आपुनगाये उदास । हरिलै
बालकबच्छ ब्रह्मलोकहि पहुँचायो । फिरि आवै जो कौनकहूँ कोउ
नाहिँ बतयो । जान्यो यह मनमें तबै विधि लैगयो द्वाराय । प्रभु तबहीं
त्यहिरङ्ग रूपके हो बालक बच्छ बनाय । ताते कीन्हे और ब्रह्महृदि
नाल उपायो । अपना करि तेहिजानि कियो ताको मन भायो । उ-
घाटन सारन समर्थ मनहरि कीन्हां जान । अनजाने विधि यह करी
हो नये रचे भगवान । उहै बुद्धि उहै प्रकृति उहै प्रीत्य तन सबके । उहै

नाम उहै बेय धेनु बछरा मिलि सबके । प्र्याम कह्यो सब सखन को
 ल्यावहु शोधन फेरि । संध्याको आगम भयो हो ब्रजतन हांको घेरि ।
 सुनतगवाल लै धेनुचले ब्रज वृन्दावन ते । कान्हहि बालक जानि डरे
 सब खालहि मनते । मध्य किये लै प्र्याम को सखा भये चहुं पास ।
 बच्छ धेनु आगे कियेहो आवत करत बिलास । वाजत बेगा बियागा
 सबै अपने रंगगावत । मुरलीध्वनि गोरभि चलतपग धूरिउडावत । मोर
 मुकुट शिरसोइई मनहुं चन्द्रकराशीत । आसपास नाचतसखा हो बिच
 हरि गावतगीत । देखिहरयि ब्रजनारि प्र्यामपर तनमन वारति । यक
 टक रूपनिहारि रहीमेरति चितआरति । कहाकहैं छवि आजुकी मुख
 मण्डित खूरधूरि । मानहुं पूरगा चन्द्रमा हो कुहूँ रहेउ आपूरि । गोकुल
 पहुँचे जाय गाय बालक अपनेघर । गोसुत अरु नरनारि मिलींअतिही
 करि आदर । प्रेमसहित वे मिलतहैं जे उपजाये आजु । यशुमतिमिलि
 सुतसों कहति हो रैनिकरत किहिकाजु । मैं घर आवन कहेउँ सखा
 संग कोउनहि आवै । देखत बन अति आगमडरावै मोहिं डरपावै । बार
 बार उरलायकै लै बलाय पछिताय । कालिहुते वेईसबै हो ल्यावहि
 गायचराय । यह सुनिकै हरिहंसे कालिह मेरोजाय बलैया । भूखलगी
 मोहिं बहुत तुरतही दे कछुमैया । माखन दीनों हाथपै यह तबलों तुम
 खाहु । तातोजलहै घामको हो तनिकतेलसों न्हाहु । तबयशुमतिगाहि
 बाँह वहाँ हरिलै अन्हवाये । रोहिगाकरि जिवनार प्र्याम बलराम
 बुलाये । जैवति अति रुचिपावहीं परुसति माताहेत । जैयउटे अँचवन
 लियो हो दुहुँकर बीरादेत । प्र्यामउनींदे देखि मातरचि सेजबिछायो ।
 तापर पौढे लाल अतिहि मनहरय बढ़ायो । अब मर्दन विविगर्ब हरत
 करत न लागीबार । सूरदास प्रभुचरितको पावत कोउन पार २ ॥ राग
 मठ ॥ बिधि सनहींमन शोचपरेउ । गोकुलकी रचना सब देखत अति
 जियसाहिं डरेउ । मैं विरज्जि विरच्यो जममेरो यहकहि गर्बबढायो ।
 ब्रजनरनारि खालबालक कहि कौनेटाट रचायो । वृन्दावन बटसघन
 तसुवर तर मोहन सबै बुलायो । सखा सङ्ग मिलि करत बन भोगि
 बिधि सन भर्मउपायो । याते प्र्याम अतिहि अतुराने तुरत तहां उठि
 बालक बच्छहरे चतुरानन ब्रह्मलोक पहुँचायो । यह बिचारि

सबभये आपुही बचरंग प्रकृति करायो । सुरदास प्रभुगर्व विनाशननव
 कति फेरिबनायो ३ तबहार हरेउ बिधिकीगर्व । बच्छवालक लैगयो
 धरि तुरत कीन्होंसर्व । ब्रह्मलोक दुरायआयो चरित देखतआप । ब-
 च्छवालक देखिकैमन करत पश्चाताप । जबगयो बिधिलोक अपने
 दृष्टिकै फिरिआय । जानिजिय अवतार पूरणा परेउ पांयनिधाय ।
 बहुत में अपराध कीन्हों समा कीजैनाथ । जानियह में नहीं कीनी
 जोरिकर रहेउसाथ । बच्छवालक आनिसन्मुख शरणाहरणा पुकारि ।
 सुरप्रभुके चरणागहि कहेउ निकट राखुमुरारि ४ ॥ रामगौरी ॥ कौनसुकृत
 इन ब्रजवासिनको बढत बिरंचि विशेष । श्रीहरि जिनके हेत प्रकटे
 मानुषदेय ॥ ध्रुव ॥ उद्योतिरूप जगदाम जगतगुरु जगतपिता जगदीश ।
 योग यज्ञजपतपव्रतदुर्लभसे हरिगोकुलईश । यकयकरोमविराटकोटि
 सम अनन्तकोटि ब्रह्मण्ड । ताहिउछंग लियेमात यशोदा अपने भरि
 भुजदण्ड । जाकेउदर लोकवय जलथल पंचतत्त्व चौखानि । सोबाल-
 कह्वै भूलत पलना यशुमति भवनहिंआनि । क्षिति मिति त्रिपदकरी
 करुणामय बलिछलि दयोपतार । देहरीउलंघि सकतर्नाहिं से प्रभु
 खेलतनंद दुवार । अनुदिन सुरतरु पंचसुधारस चिंतामणि सुरधेनु ।
 सोतजि यशुमति को पयपीवत भक्तनको मुखदेनु । रविशशिकोटि
 कल्प अवलोकत बिबिधताप क्षयजाय । सोअंजत करलैसुत कहिकहु
 आजति यशुमति माय । दाताभोक्ता कर्ता हर्ता विश्वम्भर जगजानि ।
 ताहिलाय साखन की चोरी बांधे यशुमति रानि । वेदवेदान्त उपनि-
 यद यटरस अर्पत भुगते नाहिं । सोहरिवाल बालमण्डलमें हँसिहँसि
 जूठनिखाहिं । कमलानायक त्रिभुवनदायक सुख दुख जिनकेहाथ ।
 कांधकमरिया हाथलकटिया बिहरत बछरासाथ । बकीबकासुर श-
 कट लगावर्त अघ धेनुक वृषभास । कंसकेशि को यहगति दीन्हो
 राखेउ चरणा निवास । भक्तबडल हरिअंतर्यामी रहेसकल भरिपूर ।
 मारगरोकि रहेउ द्वारेपर प्रतित शिरोमणिसूर ५ ॥ रामगौंडमलार ॥ अ-
 चरज यकदेखौ रेभाई । निर्गुणाब्रह्म सगुणा ह्वै जाई । आदिसनातन
 घटघट बासी । पूरणाब्रह्मपूराणाब्रह्मन्यो ।
 चतुराननहुं अंत न जान्यो । गुणागुणा अगम निगम नहिंपावै । ताहि

यशोदा गोदखिलावै । सकनिरंतर ध्यावै ध्यानी । पुरुष पुरातन हैं नि-
 बानी । जपतप संयम ध्यान न आवै । सोइ नंदके आंगन धावै । लोचन
 श्रवण रसना नासा । नापदपाणि न तलुपरगासा । विचभरणा नि-
 जनामकहावै । घरघर गोरस जायचुरावै । शुक्लशारदसोकरहिं बिचा-
 र । नारद से पार्वहिं नहिं पार । अवरणा बरणा सुरति नहिं वारै । सो
 गोपिन के बदननिहारै । जरामरणा ते रहेअसाया । मातपिता सुतबंधु
 न जाया । ज्ञानरूपहिरदै में बोलै । सो बछरुनके पाछेडोलै । धरजल
 अनल पवन नभछाया । पंचतत्त्व मिलिजगत उपाया । कालडरै जाकेडर
 भारी । सो ऊखलबांध्यो महतारी । मायाप्रकट सकल जगसोहै । का-
 रणा करणाकरै सो सोहै । ब्रह्मादिक जाकोपार न पावै । सो गोकुल
 में गायचरावै । अद्वैतरहेसदा जलशायी । परमानन्द परम सुखदायी ।
 लोकरचै राखै प्रतिपारै । सोखालन संगलीलाधारै । गुणातीत अवि-
 गति न जनावै । यशअपार श्रुतिपार न पावै । जाकीमहिमा कहत न
 आवै । सोगोपिन निशिबासरभावे । जाकीमहिमालखै न कोइ । निर्गुण
 मयुशाधरेवपुदेई । चौदहभुवन पलकमेंडारै । सोवन बीथिन कुटीसंवारै ।
 चरणाकमल नितरसापलोवै । चाहतनेकनयनभरिजोवै । अगम अगोचर
 लीलाधारी । सोराधावश कुंजबिहारी । भागबडे जुसकल ब्रजवासी ।
 जिनकेसंगरमें अविनासी । सुरसुयश कहिकहा बखानै । गोबिंद की
 गति गोबिंद जानै ६ ॥ रागविनावन ॥ ब्रजकी लीलादेखि गर्व बिबिको
 गयो ॥ ध्रुव ॥ त्रिभुवन नायक आनिभये गोकुल ओतारी । खेलत
 खालन संगरंग आनंद मुरारी । घर घर ते छाकेवलीं मानसरोवर
 तीर । नन्दनंदन के संगचले हो बालक संखाअहोर । व्यञ्जन सकल
 संगायसखन के आगेराख्यो । खाटेमोटेस्वाद सबैरस लै लैछाख्यो ।
 रुचिसों जैवत खाल सबलैलै आपुन खात । भोजन को सबस्वाद ले
 हो कहत परस्परबात । देखतगारा गच्छबं सकल सुरपुर के बासी ।
 आपुसमेंवैकहत हंसत येई अविनासी । देखि सबै अचरज भये कहेउ
 ब्रह्मसंजाय । जाको अविनाशीकहैं हो सो खालनसंग खाय । यह
 मुनिब्रह्माचल्यो तुरत वृन्दावन आयो । देखिसरोवर सलिल कमल
 तेहिसंध्य सुहायो । परमसुभग यमुना बहै तहँ बहै विविध समीर ।

पुहुप लताद्रुम देखिके हो यकितभयो मतिधीर । अति रमणीक
 कदम्ब छांहसुचि परमसुहाई । राजत मोहन मध्य अवलिबालक
 छबिपाई । प्रेममगन हूँ परस्पर भोजन करत गोपाल । लाबहु गोसुत
 हेरिके हो प्रभु पटये हैरवाल । बन उपवन सबहुँहि सखाहेरि फिरि
 आये । बछराभये अदृष्ट केहुखोजत नहिँपाये । सबै सखा बैठे रहे में
 देखोधीं जाय । बच्छहरण हरिजानिजिय हो आपगये बहराय । जब
 गोबिंद गये दूरि बालकन हरेउ बिधाता । लैंहें तुरत मंगाय आपुके
 जैहांताता । ब्रह्मलोक ब्रह्मागये लैंबालक बछरासंग । प्रभुकीलीला
 गनी नहीं बिधिकियो गर्व अतिअंग । तब चिन्तामणि चितैचित्तयक
 बुद्धिबिचारी । बालकबच्छवनाय रचेवेही अनुहारी । करत कुलाहल
 सबगये ब्रजघर अपने धाय । अतिआदर करि करि लिये हो अपनी
 अपनी माय । ब्रह्मा कियो बिचार जाय निज गोकुल देखों । करिहें
 शोकसन्ताप जायपितु मातहिं पेखों । आये तहां बिधिजाचले घरघर
 देख्योआय । संध्या समयहोत कोतहल जहां तहां दुहिगाय । की यह
 गोकुलऔर किधों मेंहीं भ्रमभूत्यो । यह अविनाशी होहिँज्ञान मेरो
 भ्रम भूत्यो । अन्तरयामी जानिधों हरेबच्छ लैंआय । जगत पितामह
 संधम्यो हो गयेलोक फिरिधाय । देख्योजाय जगायबाल गोसुतजहँ
 राख्यो । बिधिमन चकृतभयोबहुरि ब्रजको अभिलाख्यो । छिनभूतल
 छिनलोक में छिन आवैं छिनजाय । ऐसेहिं करत बरय दिनबीते य-
 कितभये बिधिपाय । तब जान्योहरि प्रकट ज्ञान चित में जब आयो ।
 विगविग मेरोबुद्धि कृपासें बैरबढायो । लैंगोसुत गोपाल शिशुशरणा
 गयो हूँसाध । चारिहुमुख अस्तुति करे प्रभुसमो मोर अपराध । अब
 जानत हैं करी तुमाहें सो में बरिआई । येमेरे अपराध समहु विभुवन
 केराई । ज्योंबीलक अपराधगत जननी लेतिसँभारि । शरसागये रा-
 खत सदाहो औगुन सकल बिसारि । ज्यों खद्योत उडिजाय ताहिं
 क्योंतिमिर नशावै । दीपक बहुत प्रकाश तरंगिसम क्यों कहिआवैं ।
 में ब्रह्मा यकलोकको ज्योंगलर फलजीव । प्रभुतुम्हरे एक रोसप्रति
 हो कोटि ब्रह्मा असशीव । मिथ्यायह संसार और मिथ्या यहसाया ।
 मिथ्याहै यह देह कहे क्योंहरि बिसराया । तुमबिन जाने जीवसब

उत्पति प्रलय समाहिं । शरणा मोहिं प्रभुराखिये हो चरणा कमलकी
 छाहिं । कीजै मोहिं ब्रजरेणु देहु वृन्दावनवासा । मांगौं यहै प्रसाद
 और नाहीं मेरिआसा । जोइ भावै सोइ करो लतासलिल दुमगोह ।
 ग्वाल बालको भृत्यकरो हो मर्नहिं सत्यव्रत जेह । जो दरशन नर नाग
 असर सुरपतिहु न पायो । खोजत युगागये बीति अन्तमोह न दिखि-
 यो । यह ब्रजपारस नित्यहै मैं अब समुझीआय । वृन्दावन रज हौरहों
 स्वहिं ब्रह्मलोक न सुहाय । मांगत बारम्बार शेष ग्वालन को पाऊं ।
 आजुलियो कछुजानि भसकरि उदर पुराऊं । अब मेरे निजु ध्यानयहै
 रहों जठ नितखाय । और बिधाता कीजिये हो मैं नहिं छाड़ों पांय ।
 तब बोलै प्रभु आप बचन मेरो अबमानों । और काहि बिधि करौं
 तुमहिंते कौनसयानों । तुमजाता कर्म धर्मके तुमते सबसंसार । मेरी
 माया अतिअगम बहिकोऊ न पावैपार । श्रीमुखबाराणी कहत बिलंब
 अब नेकु न लावहु । ब्रजपरिक्रमा करहु देहके पाप नशावहु । तुरत
 जाहु बहिलोकको बिधिकीन्हों मनुहारि । ब्रह्माकरि अस्तुति चलेहो
 हरिदीन्हों उरहारि । धनिबहुरा धनिबाल जिनहिंते दरशनपाये । उर
 मेरोभयो धन्य कृष्णमाला पहिराये । धनि यशुमति जिन बशकिये
 अविनाशी अवतारि । धनिगोपी जिनके सदनहो साखनखात मुरारि ।
 मथुराआदि अनादि देहधरि आपनआये । धनिदेवै बसुदेव पुत्र सांगे
 तुम पाये । चारिबदन मैं कहा कहाँ तुम्हरी सहिमागाई । सहसानन
 निशिदिन रूँ हो तऊ न गाई जाई । गाय चरावत ग्वालन संग करत
 जेहि ध्यानलगायो । तेब्रजवासिन संगरहत अतिप्रेम बढ़ाये । वृन्दा-
 वन ब्रजको सहत कार्ये बरगयोजाय । चतुरानन पदपरसि कै होगयो
 लोक सुखपाय । हरिलीन्हों अवतारपार शारद नहिं पावै । सतपुरु
 कृपा प्रताप कछुक ताते कहिआवै । सूरदास कैसे कहैं मंहापतित
 अवतार । शेषसहसमुख जपतसदाहो सोऊ न घावतपार ॥ रागअनयो ॥
 साधवज जो जनसों बिगारै । सुनिछापल करुणामय कबहू प्रभुनहिं
 चित्त धरै । जो शिशु जननी जठर अन्तरगत शत अपराध करै । तऊ
 तनय तनु तोयि पोयि चित बिगशित अझ भरै । द्विज रसना दलि
 दुखित होन तब तो रिस काहिकरै । समिद्धत कोभखीर मधुमिश्रित

सुखसमीप सँचरै । यदपि बिटप जरहतनहेतु करि कर कुठार पकरै ।
 तदपि सुभाव सुशील सुशीतल रिपुतनतापहरै । धर बिध्वंसिहल हतत
 कथीकरि बैर बीज सँचरै । सो सन्मुख सुखसहित सतोयुता शशि बहु
 फरनिफरै । कारणा करणा अनन्तअजित कहिकहि बिधिचरणापरै ।
 यह कलिकाल चलतनहिं मोपै सूरशरणाहि धरै ॥ रागभारंग ॥ माधव
 भवहिं दीजै वृन्दावन की रेनु । जिन चरणानि डोलत नंदनन्दन दिन
 प्रति चारत फिरत धेनु । कहाभयो यह देव देह धरि श्रु ऊँचो पद
 पायोयेन । सब जीवनि लै उदरसांभ प्रभु महाप्रलय जलकरत सैन ।
 हमते धन्य सदा ये तृणा द्रुम बालक बच्छ बियान बेन । सूरप्रयास
 जिनके संग डोलत हंसि बोलत मथिरावत फेन ६ ऐसे बसिये ब्रजकी
 बीथनि । साधुनिके पनबारे चुनि चुनि उदरजु भरिये शीथनि । पैहें
 के सबवृक्ष बिराजत छायापरम पुनीतनि । कुञ्ज कुञ्जप्रति लोटिलोटि
 रति रजलागे रंगरीतनि । निशिदिन निरखि यशोदानन्दन असु यमुना
 जल पीतनि । परसतसूर हेत तन पावन दरशन करत अनीतनि १०
 धन्य यह वृन्दावनकी रेणा । नन्दकिशोर चराईगैयां मुखहि बजायो
 बेरा । मदनमोहन को ध्यानधरे जो अति सुखप्रावत धेनु । चलतकहा
 मन बसिन पुरीतन जहांलेनु नहिं देनु । यहां रहउ जहँ जूटनि पावहुं
 ब्रजबासीके रेनु । सूरदास ह्यांकी सरवर नहिं कलपवृक्ष सुर धेनु ११
 राग बिलावल ॥ आजु यशोदा जायु कन्हैया महादुख यकमारैउ । पन्नग
 रूप मिले शिशु गोमूत याहि सबसाथ उबारैउ । गिरिकन्दरा समान
 भयो बड़ बड़ो अघबदन पसारैउ । निदरि गोपालपैठि मुखभीतर खराड
 खराड करिडारैउ । जाके बल हम गनत न काह सकलभुवन तृणाचा-
 रैउ । जीतेसबै असुर हम आगे हरि कबहुं नहिं हारैउ । बरयगये सब
 कहत महरिसों अवाहिं अघासुरमारैउ । सूरदास प्रभु की लीला को
 काऊ भुलै न पारैउ १२ ॥ राग भोरठ ॥ गोबिंद चलत देखियत नीके ।
 मध्यगोपाल मण्डली बिराजत कांधेधरि लियेछीके । बहुरावृन्दधरि
 आगे करि जनजन शृङ्खवजाये । जनु बन क्रमल सरोवर तजिकै सधुप
 उनींदे आये । वृन्दावन प्रवेश अघमारैउ बालक यशुमति तेरो । सूर-
 दास यह सुनत यशोदा चितै बदन सुत हेरो १३ ॥ राग नट ॥ यशुमति

मुनिमुनि चकतभई । भैं बरजति बनजात कन्हैया काधैं करैदई । कहँ कहँ उबरेउ मोहन नेक न तऊडरात । आप कहो तनय सों बातें सुनहु बनहुँ में घात । मेरो कहेउ सुने जो श्रवणाति कहत यशोदा खीभति । सुरश्याम कहेउ मनहिँ में तेहों यह कहि मन मन रोभति १४ हरि की लीला कहत न आवै । कोटि ब्रह्मांड सराहिँ में नाशै सराहीं में उपजावै । बालक बच्छ ब्रह्महरि लैगयो ताको राबनशायै । ऐसो पुन्यारथ मुनि यशुमति खीभति पुनि समुभावै । शिव सनकादिक अन्त न पावै भक्तबद्धत कहवावै । सुरदास प्रभु गोकुलमें सो घर घर गाय चरावै १५ ॥ राग गौरी ॥ अध्यासारि आये नंदलाल । ब्रजयुवती मुनिके उठिघाई घर घर कहत फिरत यह खाल । निरखत बदन चकत भई सुन्दरि मनहीं मन यह करि अनुमान । कहति परस्पर सत्य बात यह कौनकरै इनकी सरिआन । येईहैं रतिपतिके मोहन येईहैं हमरे पति प्रान । सुरश्याम जननी मनमोहन बार बार सांगत कछु खान १६ सांगिलेहु जो भावहिँ प्यारे । बहुत भांति मेवा सबमेरे यटरसके प्रकार हैं न्यारे । सबै जोरि राखति हित तुम्हरे में जानति तुव बानि । तुरत मध्योमाखन दधि आछो खाहो देखको आनि । साखन दधि मोहिँ लागतप्यारो और न भावै मोहिँ । सुर जननि साखन दधिदीन्हीं खात हंसत मुख जोहिँ १७ ॥

इति बत्सहरण मोहलीला सम्पूर्णम् ॥



अथ सुरसागर राधा कृष्ण जूके ॥

प्रथम मिलन लीला प्रारम्भ ॥



अथ चकई भँवरा को खेल ॥

श्रीगोपीजनवल्लभायनमः ॥

राग बिलावलन ॥ देमैया भँवरा चकडोरी । जायलेहु आरपर राख्यो काल्हि मोललै राख्यो कोरी । लैआये हंसिश्याम तुरतही देखिरहे

३७८ मरसागर राधाजूके प्रथम मिलन लीला राग कल्पद्रुम ।

रङ्ग रङ्ग बहुदोरी । मैया बिना और को ल्यावे बारबार हरि करत
निहोरी । बोलिलये सब सखा संगके खेलत कान्ह नन्दकी पोरी ।
तैसेइ हरि तैसेइ ब्रजबालक कर भँवरा चकरिन की जोरी । देखति
जननि यशोदा यहसुख बिहँसति बारबार मुखमोरी । सूरदास प्रभु
हँसि हँसि खेलत ब्रजवनिता डारति दयातोरी १ ॥ राग कान्हो ॥ मेरे
हियरे सांभलागे मनमोहन लैगये मनचोरि । अबहीं यह मारग ह्वै
निकसे छबि निरखत दयातेरि । मोरमुकुट अवगानि मणिक्कुण्डल
उर बनमाला पीत पिछोरि । दशन चमक अधरनि अरुणाई देखत
परी ठगोरि । ब्रजतरिकन सँग खेलत डोलत हाथ लये फिरत चक-
डोरि । सूरप्रयामचित्तवत गौ मोतन मननभईरी तनमनलयो अजोरि २
राग टोड़ी तबते मेरो जित न रहिसकत । जित देखों तितहीं ब्रह्म मूरति
नयननि में नितलख्योई रहत । खालवाल सब संगलये खेलतमें करि
भाव चलत । अरुभिक्षो मेरोमन तबते करचटकत चकडोरी हलत ।
अब मैं कहा करौं मेरी सजनी सुरतिहात तब सदन दहत । सूरप्रयाम
मेरोचित हरिलियो मकुच छाँड़ि अब तोहिसें कहत ३ खेलत हरि
निकसे ब्रजखोरि । कटि काऊनी पितांबर ओढ़े हाथलिये भँवरा
चकडोरि । मोरमुकुट कुण्डल अवगानिबर दशनदमक दामिनि छबि
थोरि । गये प्रयाम रचितनया के तट अंगलसत चन्दन की खोरि ।
औचकही देखी तहँराधा नयनविशाल भातदिये रोरि । नीलवसन
फरिया कटिपीहरे बेगीपीठि हरति भकभोरि । संगलडिकनी चली
इत आवति दिनथोरी अतिछबि तनगोरि । सूरप्रयाम देखतही रोभे
नयननि मिलि शिर परी ठगोरि ४ ब्रह्मतप्रयाम कौन तगोरी । कहाँ
रहति काकीहैं बेटी देखों नहीं कहं ब्रजखोरी । काहेको हम ब्रजतन
आवति खेलति रहति आपनी पोरी । मुनति रहति अवगानि नंद
ढोटा करत रहत माखन दधिचोरी । तुम्हरो कहा चोरि हमलैंहैं खे-
लन चलो संगमिलि जोरी । सूरदासप्रभु रसिक शिरोमणि बानि
भुरै राधिका भोरी ५ ॥ राग धनप्री ॥ प्रथम सनेह दुहुन मनमान्यो ।
नयन नयन बातें सब कीन्ही गुप्तप्रीति शिशुता प्रगटान्यो । खेलन
हमारे आवहु नन्दसदन ब्रजगाँव । द्वारेआय हरि मोहिं लीजे

मूरसमगर राधाजूके प्रथम मिलन लीला राग कल्याणसुम । ३७६
 कान्होहै मोनाव । जो कहिये घरदूर तुम्हारो दोलत छिनिये तेर ।
 तुमहिं सौंह वृषभान बबाकी प्रात सांभ यकफेर । मूखे निपट देखि-
 यत तुमको ताते करियतु साथ । सुरप्रथाम नागर उतनागर राधा
 हरि दोऊ मिलि गाय ६ सैननि में नागरि समुझाय । खरिक आवहु
 दोहनीलै यहीमिस छललाय । गायगनती करनजैहैं मोहिलै नंदराय ।
 बोलि बचन प्रसारा कीन्हों दुहुन आतुरताय । कनक बरगा सुधार
 सुन्दार सकुचि मुख मुसकाय । प्रथामप्यारी नयनराचे अति विशाल
 चलाय । गुप्तप्रीति न प्रकट कीन्ही हृदय दुहुनि छिपाय । मूरप्रभुके
 बचन सुनि सुनि कुंवारि रही लजाय ७ ॥ रागसारंग ॥ राई वृषभानसुता
 अपनेघर । सङ्ग सखिनसों कहतिचली यहको जैहैं खेलन इनके तर ।
 बड़ीबेर भई यमुनाआये स्वीकृत ह्वैहैं मैया । बचन बाहतिमुख हृदय
 प्रेमदुख मनहरिलियो कन्हैया । माताकही कहरही प्यारी कहां
 अवेरलगई । मूरदास तब कहति राधिका खरिक देखिहैंआई ८
रागरामकली ॥ नागरि सनगई अरुभाय । अति विरहा तनभई व्याकुल
 घर न नेक सुहाय । श्यामसुन्दर मदन मोहन मोहनीसीलाय । चित
 चंचल कुंवारि राधा खानपान भुलाय । कबहुं विहँसति कबहुं बिल-
 पति सकुचि रहति लजाय । मात पितुको वासमानति भई चिन्ता
 वाय । जननिसों दोहनी सांगत बेगिदेरी माय । मूरप्रभुको खरिक
 मिलिहैं गये मोहिं बुलाय ९ ॥ रागधनाश्र ॥ मोहिं दोहनी देरीमैया ।
 खरिकसांभ अवहीं ह्वैआई अहिर दुहत अपनी सब गैया । बाल
 दुहत सबगाय हमारी अपनी दुहि जब लेत । घरिक मोहिलायै खरि-
 का में तू आवै जनिहेत । शोचति चली कुंवारि घरहीते खरिकगई
 समुझाय । कबदेखों वह मोहन मूरति जिनमन लियो चुराय । देखे
 जाय तहां हरिनाहीं चकतभईसुकमारि । कबहुंइत कबहुंउत डोलति
 लागीप्रीति खुमारि । नन्दलिये हरि आवत देखे तबपायो विश्राम ।
 मूरदासप्रभु अन्तर्दयामी कीन्हों पूरणाकास १० नन्दगये खरिकाहि
 हरिलीन्हें । देखी तहां राधिका दाढ़ी प्रथाम बलायलई तेहिचीन्हें ।
 महर कहैउ खेलो तुम दोऊदूरि कतहुं जनिजैहैं । गनती करतबाल
 गैयनिको मोहिं निखर तुमरैहै । मुनिवेदी वृषभान महरकी कान्होहि

१८० सूरसागर राधाजके प्रथम सितनलीला रागकल्पद्रुम ।

लिये खिलाय । सूरश्यामको देखेरै हैं मारै जनिकहुं गाय ११ ॥ राग

नट ॥ नन्दबवाकी बात सुनौहरि । मोहिं छाँड़ि जो कहं जाहु गेल्याऊंगी

तुमको धरि । भलीभई तुम्हें सौं पिगये मोहिं जान न देहैं तुमको ।

बाँह तुम्हारी नेक न छाँड़ों महर खीझि हैं मोको । मेरी बाँह छाँड़ि दे

राधाकरत उपर फटघातैं । सूरश्याम नागर नागरि सों कहत प्रेमकी

बातैं १२ बात निलई राधेलाय । चलहु जैये बिपिनवृन्दा कहत श्याम

बुझाय । जब जहां तनवेयधारों तहां तुमहीं पाय । नेक कहुं नहिं करों

अन्तरनिगमभेदन पाय । तुवपरशितनतपतिमेठों कामदेह गँवाय । चतुर

नागरि हँसिरही सुनिचन्द्रवदन नवाय । मदनमोहन भावजान्यो गगन

मेघछवाय । प्रयास प्रयासा गुप्तलीला सूरको कहै गाय १३ ॥ रागमलार ॥

गगन गरज घहराय जुरीघटा कारी । पवन टुक भोरचपला चमकि

चहुं ओर मुखनतन चितै नन्द डरत भारी । कहै उ वृषभान की कुंवरि

सों बोलिकै राधिका कान्ह धरलिये जारी । दोऊ गृह जाहु संगगगन

भयो श्यामरंग कुंवरकर करगह्यो वृषभानवारी । गयेवन धनओर न-

वल नन्दकिशोर नवलराधा नवलकुंज भारी । अङ्ग पुलकितभये मदन

तनमें गये सूर प्रभु श्याम प्रयासा बिहारी १४ ॥ रागकामोद ॥ नयो नेह

नयो मेह नयोरस नवलकुंवर वृषभान किशोरी । नयो पीताम्बर नई

चूनरी नई नई बदन भीजति गोरी । नयेकुंज अतिपूज नये इम शुभग

यमुन जल पवनहिलोरी । सूरदास प्रभु नवरस विलसत नवलराधिका

यौवनभोरी १५ ॥ राग नट ॥ नवल गोपाल नवलराधिका नवलप्रेमरस

पागे । अंतर बनवन बिहार दोउ कीड़ आपु आपु अनुरागे । शोभित

शिथिल बसन मनमोहन मुखवत अमके बागे । मानहुं बूझी मदनकी

डवाला बहुरि प्रजारनलागे । कबहुं क बैठि अंशभुज धरिके पीक क-

पोलनिपागे । अति रसरसि लुटावत लूटत लालचलालशुभागे । मानहुं

सूरकल्पद्रुम की सखि लै उतरी फलआगे । कहिं खूटति रति सचिर

भामिनी तामुखमें दोउखागे १६ ॥ रागमलार ॥ उतारत हैं कंठहि तेहार ।

हरि गर मिलत होतहैं अन्तर यह मनकियो बिचार । भुजाबाम पर

कर छवि लागत उपमा अंत न पार । मनहुं कमलदल कमल मध्यते

यह अद्भुत आकार । चुबन अंग परस्पर जुनुयुग चन्दकरत हितबार ।

सुरसागर राधाजूके प्रथम मिलन लीला राग कल्पद्रुम । ३८१
 रसन बमन भरिचापि चतुर अतिकरत रङ्गविस्तार । गुणातागरनिधिरस
 सागरनिधि मानत मुख व्यवहार । सुरश्याम मानो रत्नरमिके रीभेनन्द
 कुमार १७ ॥ रागकान्धरी ॥ नवलकिशोर नवल नागरिया । अपनीभुजा
 प्रयासभुज ऊपर प्रयास भुजा अपने उर धरिया । क्रीडा करत तमाल
 तरुणातर श्यामाप्रयास उमंगिरस भरिया । मिलि लपटायरहे उर
 उयों सरकतमरिा कंचनमरिा जरिया । उपमा काहि देहुं को लायक
 मनमथकोटि वारने करिया । सूरदास बलिबलि जोरीपरनन्द कुंवर
 वृषभान कुंवरिया १८ ॥ रागमेरी ॥ आज नन्दनन्दन रङ्गभरे । बिबिध
 लोचनविशाल कोऊ के मनहीं मन चित्तहरे । भामिनि मिले परम
 सचुपाये संगल प्रथम करे । करसों कर जकरे कंचन उयों अंजु उरज
 धरे । आलिंगन दे अधर पानकरि खञ्जनकंजलरे । हठकरि मानक्रियो
 भामिनि जबतबगाहि पायँपरे । पुहुप मंजरी मुक्तमाल अंगअंग अनुराग
 भरे । रचना सूररची वृन्दावन आनंदकाज करे १९ ॥ राग नट ॥ हरि
 हंसि भामिनि उरलाई । सुरतअंश गोपाल रीभेजानि अति सुखदाई ।
 हरख प्यारी अंगभरिभरि पियहि कंठलाई । हाव भाव कटाक्ष लो-
 चन कोऊ कला सुभाई । देखि बाला अतिहि कोमल मुख निरखि
 मुमुकाई । सूरप्रभु रतिपातके नायक राविकासमुभाई २० ॥ रागमेरी ॥
 श्रीराधा नागरि घरआई । तुरतगये नंदसदन कन्हआई । अंकुसदौराधा
 घरपठई बादर जहं तहं दयो उड़ाई । प्यारीकी सारी आपुनलै पीता-
 म्बर राधाहिओढ़ाई । उयोदेखे यशुमति हरि ओढ़े मनयह कहति
 कहांधौं पाई । जननी नेतो तुरत लखिलीनो तबहिं प्रयास यकबुद्धि
 उपाई । सूरदास सुतसों यशुमतिकहे पेरि ओढ़नियां कहां गंवाई २१
 रागसारंग ॥ पीत ओढ़नी कहां बिसारी । यहतो लाल दिगन की ओरै
 है काहूकीसारी । हेगोवन लैगयो यमुनातट जहांहुती पनिहारी । भी-
 रभई सुरभी सब बिहरीं मुरली भली सभारी । है लैभाज्यो औरका-
 हुकी सो लै गई हमारी । सूरदास प्रभुभली बनाई बलि यशुमति स-
 हतारी २२ ॥ राग धनाश्री ॥ मैयारी में जानत वाको । पीतओढ़नियांजो
 मेरी लैगई लै आनों धरि ताको । हरिकी माया कोउन जानत आं-
 खिभूरि मीदीनी । लालदिगनकी सारीताको पीत ओढ़नी कीनी ।

३८२ सुरसागर राधाजूके प्रथम मिलनलीला रागकल्पद्रुम ।

पीतांबर लै जननि देखावत लै आन्यो तेहिपास । सुर मनहिं मन
कहति यशोदा तनिकपड़ावत गास २३ श्यामहिंदेखिसहरि सुसकानी ।
पीतांबर काकेघरबिसरेउ काहूकी दिगसारी आनी । ओढ़नी आनि
देखाई सोको तरुगानकी सिखई बुधिठानी । घर लैलै मेरो सुतभो-
रवतिये सेसी सबदिन कीजानी । हरि अन्तर्दर्यामी रतिनागर जानि
लई जननीपहिंचानी । सुरनिरखमुख सकुचि भगाने यहिलीलाकी
यहै सयानी २४ ॥ रागकल्याण ॥ सुन्दरि गई गृह समुहाय । दोहनी
कर दूध लीने जननि टेरि बूलाय । प्रेम प्रीति निचोल हरिको क-
हुंधरेउ छिपाय । और की और कहति कहु सात मनहिं डराय ।
कुंवरको कहु डीठि लागी निरखि के पछिताय । सुरतव नृपभान घ-
रनी राविका उरलाय २५ ॥ रागकान्हरो ॥ जननी कहति कहा भयो
प्यारी । अबहीं खरिक गई तू नोके आवतही भई कौन बिथारी ।
सकबिटिनियां संगहूतीमेरे कारेखाई ताहि तहारी । मोदेखत वहधर-
णा परीगिरि मेंडरपी अपनेजियभारी । प्रयासपररा एकढोटाआयो
यहनहिं जानति रहत कहांरी । कहतसुन्यों नंदको वहबारी कहुप-
ढिकै तुरतहि वहिभारी । मेरोमन भरिगयो घासते अबनीको मोहिं
लागत भारी । सुरदास अति चतुर राविका यहकहि समुझाई मह-
तारी २६ ॥ रागगोडमलार ॥ कुंवरिसों कहत वृंभयान घरनि । नेकुनहिं
घररहति तोहिं कितकहति रिसनि मोहिं दहति बनभई हरनि । ल-
रिक्कनि सबनि घरतोसी नाहिं कोऊ निडर चलति नभ चितै नतकै
धरनि । बड़ीकर बरदरी सांपसों उबरीबातें कर तोहिं लगति जरनि ।
लिखिमेदै कौककर्ता जौन सोईह्वैहै होनहारीकरनि । सुताउरलाय
तन निरखि पछिताय डरसिगई कुन्हिलाय सुर बरनि २७ ॥ रागगोड
महर वृंभयानके यहै कुसारी । देवधामी करत द्वारद्वारे फिरत पुत्रहै
तीसरे यहैवारी । भई बरय सातकी शुभघरीजातकी प्यारी दुहुआ-
तकी बची भारी । कुंवार दैअन्हवायगई तनसुरभायबसनप्राहराय
कहुकहति खारी । जाइजनिखरिकतन खलिअपनेसदन यह सुतन
हंसति मन प्रयासनारी । सुरप्रभु ध्यानधरि हरथि आनन्दभरि गांव
घरखलिहो कहति कारी २८ ॥ रागआसावरी ॥ खेलनके जिसि कुंवरि

मूरसागर राधाजूकेप्रथममिंजनलीला रागकल्पद्रुम । ३८३
 राविका नन्दसहरि के आईहो । सकुच सहितसधुरे करिचोलीघर
 हो कुंवर कन्हआईहो । सुनत प्रथामकोकिल धनिबानी निकसे अति
 अतुराई हो । माता सोंकछु कलह करतरहे रिमडारेउ बिमराईहो ।
 मैयारी तू इनको चीन्हति बारम्बार बताईहो । यमुनातीरकाल्हि में
 भूल्यो बाँहपकरि लैआईहो । अबतो इहां तोहिंस हृचतिहो मैदेहोह
 बुलाई हो । सूर प्रथाम ऐसे गुण अगार नागरि बहुत रिभाई हो २६
 को जाने हरिकी चतुराई । नयन सैन संभायणाकीन्ही प्यारीकी उर
 तपति सिटाई । मनहीं मन दोउ रीझि मगनभयेअति आनन्द उरमें
 न ससाई । करपल्लव हरि भाववतावत यकद्वै देहवनाई । जननी हृदय
 प्रेस उपजायो कहति कान्ह सों लेहु बुलाई । मूरप्रथाम गहि बाँह
 राविका ल्याये सहरि बिहसिबैटाई ३० ॥ रागमट ॥ देखि महरि स-
 नहीं जो सिहानी । बोलिलई वृक्षति नंदरानी कुंवर कहतिमधुरे मधु-
 बानी । ब्रजमें तोहिंनहीं कहूंदेखीकौनगांवहेतेरो । भलीकरी कान्ह-
 हि गहिराई भलोतो सुतमेरो । नयन बिशालवदन अतिसुन्दर देखत
 नोकीछोटी । मूरसहरिमखिताको बिनवति भलीप्रथामकी जोटी ३१
 रागमट ॥ नाम कहातेरोरी प्यारी । बेटीकौन सहरकी है तू कहिसोसों
 को तेरी महतारी । धन्यकोख जेहि तो कोराखी धन्य धरीजेहि तू
 अवतारी । धन्यपितामाता धनितेरी छबिनिरखति हरिकोमहतारी ।
 मैं बैटी वृषभान सहरकी मैया तुमको जानति । यमुनातट बहुबेर मि-
 लन भयो तुम नाहिन पहिंचानति । ऐसीकहि वाको मैं जान्यो वह
 तोबहुभरतारि । सहरबड़ोलंगरमबदिनको हंसतदेतमुखगारि । राधा
 बोलिउठी बाबाकछु तुमसों होख्यो कीनी । ऐसे समरथ कब मैं देखे
 हंसि प्यारी उरलीनी । सहरि कुंवर सों यहकरि भायति आउकरो
 तेरीचोटी । सूरदाम हरिय नंदरानी कहतिमहरिहमजोटी ३२ ॥ रागगोरी
 यशुमति राधा कुंवरसंवारति । बड़ेबार श्रीमन्त श्री गके प्रेससहित
 लै लैनिरवारति । मांगपारि बेबीहि संवारति शून्धी सुन्दर भाति । गोरे
 भालबिन्द बन्दत मानों इन्दु प्रान्त रविकांति । सारीचीर नई फरि-
 यालै अपने हाथवनाई । अंचल सोंमुखपांछि अंग सब आपुडि लै पहि-
 राई । तिलचांवरी बताशेमेवादिये कुंवरिकी गोद । मूरप्रथाम राधातन

३८४ सुरसागर राधाजूके प्रथम मिलन लीला राग कल्पद्रुम ।

चितवत यशुमति मनमन मोद ३३ ॥ राग कल्याण ॥ खेलोजाय प्रथम संग
राधा । यह सुनि कुंवरि हरियमन राधा कीन्हो मिदिगई अंतरबाधा ।
जननी निरखि चक्रत रीठाढी दम्पति रूप अगाधा । देखति भाव दुहु-
निको सोई जो चितकरि अवराधा । संग खेलत दोउ भगरन लागे शो-
भा बढी उपाधा । मनहुं तडित घनइन्दु तरनि है बालक रतरस साधा ।
निरखत बिधि तन भलि परेउतब मनमन करत समाधा । सुरदास प्रभु
और रच्यो बिधि शोच भयो तन दाधा ३४ ॥ राग बिहागरे ॥ बिधि के
आन बिधिके शोच । निरखि तनु वृषभान तनया सकल मत कहु पोच ।
रमागौरी उर्वशीरति इन्द्रबिभौ समेत । तुल्यदिन मन कहि सारंगउ-
पैसा नहिं देत । चरगानि निरखि निहारि नख छवि अजित देख्यो तोकि ।
चित्तगुणा सहिमा न जानत धीर राखन रोकि । सुर आनि बिचरि चि-
रच्यो भक्तिनिजु अवतार । अबल के बल सबल देखि अधीन सकल
अंगार ३५ ॥ राग नट ॥ राधेमहरि सों कहि चली । आनि खेलत रही
प्यारी श्यामतुम हिलि मिली । बोलिउठे गोपाल राधा सकाचि जिय
कत करति । मैं बुलाऊं नहीं आवति जननि को कत डरति । मैया
यशोदा देखितो को करति कितनो छोड़ । सुनति हरिकी बात प्यारी
रही मुखतन जोड़ । हंसि चली वृषभान तनया भई बहुत अवार । सुर प्रभु
चितते दरत नहिं गई घरके द्वार ३६ ॥ राग बिहागरे ॥ ब्रभूति जननि
कहां हुती प्यारी । कौन तेरे भालतिलक रचि दीन्हे किन कच गुंथि
सांग शिर पारी । खेलत रही नन्दके आंगन यशुमति कहेउ कुंवरि ह्या
आरी । तिलचांवरि गोदादेख रावति फरियादई फारि नई सारी ।
मेरो नाम ब्रभूति बाबा को तेरो नाम ब्रभूति दई हंसि गारी । मोतन चितै
चितै दोटा तन कहु सविता तन गोद पसारी । यह सुनि सुनि वृषभान मुदित
चितै हंसि हंसि ब्रभूत बात दुलारी । सुर सुनत रस सिंधु बढ्यो अति
दम्पति मनमन यहै बिचारी ३७ मेरे आगे महरि यशोदा मैयारी तोहिं
सारी दीन्हीं । वाकी घात सबै तू जानति वे जैसी मैं चीन्हीं । तोको
कहि पुन कहैउ बबाको बड़ो धूत वृषभान । तब मैं कह्यउ दग्यो कहु
तुमको हंसि लागी लपटान । भली कही तू मेरी बेटी लियो आपनो दाव ।
जा मोहिं कहेउ सबै गुणा उनके हंसि हंसि कहति सुभाव । फेरि फेरि

सूरसागर राधाजूके प्रथम मिलन लीला राग कल्पद्रुम । ३८५
 ब्रह्मति राधा सेां सुनति हंसति सब नारि । सूरदास वृथभान धरनि
 यशुसति को गावति गारि ३८ ॥ राग गौरी ॥ कहत कान्ह यशुसति
 समुझाय । जहांतहां डारे रहति खिलौना राधाजिनि लै जाय चुराय ।
 सांभसवारे आवन लागी चितै रहति मुरलीतन आय । इनहीं में मेरे प्रारा
 बसत हैं तेरे भाये नेक न माय । राखि छिपाय कहै उ करि मेरी बलदाऊ
 को जिनि पतियाय । सूरदास यह कहति यशोदाको लै है मोहि लगे
 बलाय ३९ ॥ राग आसावरी ॥ मेरे लाल को प्रेम खिलौना ऐसे को लै जे-
 हैरी । नेक सुनत जो पैहां ताको सो कैसे ब्रज रै हैरी । अजहं राखु उदा-
 यरी मैया मांगेते कह दै हैरी । आवत ही लै जे है राधा पुनि पाके पछि-
 तै हैरी । बिनु देखे त कहा करैगी सो कैसे प्रकटै हैरी । सूरदास तब
 कहति यशोदा बहुरि प्रियाम बिरुझै हैरी ४० ॥ राग नट ॥ सैतति हरि
 खिलौना हरिके । जानति टेव आपने सुत की रोवत है पुनिलरिके ।
 धरि चौगान बेध मुरलीधरि अरु भंवरा चकडोरी । प्रेम सहित लै लै धरि
 राखति ये सब मेरे कोरी । अवरान सुनत अधिक रुचि लागति हरिकी
 वतियां भोरी । सूरप्रियाम को कहति यशोदा दूधपियहु बलितोरी ४१
 राग आसावरी ॥ आजु सवारे धेनुदुही में बहै दूध मोहि प्यावैरी । सुनि
 मैया में तो पय पीयो मोहि अधिक रुचि आवैरी । और धेनुको दूध न
 पीऊं जो करिकोटि बनावैरी । जननी कहति दूधधोरी को सो को मोह
 करावैरी । तुमैं और कौन मोहि प्यारो बारम्बार सजावैरी । सूर-
 प्रियाम को पयधोरी को माता ही लै आवैरी ४२ ॥ राग गौरी ॥ आछो दूध
 पियहु मेरे तात । तातो लागत बदन नहिं परसत फूँकि दीत है यशुदा मात ।
 औटि धरेउ अबहीं ही मोहन तुम्हरे ही हेत बनाई । तुम पीवहु में नय-
 ननि देखों मेरे कंवर कन्हाइ । दूध अकेली धोरी को यह तन को अति
 हितकारी । सूरप्रियाम पय पीवन लागे अति तातो दियो डारी ४३ ॥ राग
 बिलावल ॥ पय पीवत देखत बलराम । तातो लागत डारि तुम दीन्हें दावा-
 न लहि अंचवत नहिं ताम । कबहुं रहत सौन धरि जल में कबहुं फिरत
 बंधावत दाम । कबहुं अधासुर बदन समाने कबहुं अधारे जात न धाम ।
 कबहुं करत बसुधा सब प्रैपट कबहुं देहरी उलंघि न जाय । यह दशसहस
 गोपिका बिलसत वृन्दावन निशि राम रमाय । यहै जानि अवतार

३८६ सूरसागर राधाजूके प्रथम मिलन लीला राग कल्पद्रुम ।

धरत ब्रज सुरनर मुनि यह भेद न पाय । राजाछोरि बन्दिते ल्याये तिहुं
भुवनमें बिदित बढाय । यइगोपी यइगवाल यहैसुख यह लीला कहुं
तजत न साथ । युगयुग ब्रज अवतार लेत हरि अखिल ब्रह्माण्ड खण्ड
के नाथ । येईठाँव यह वृन्दावन यह यमुना यह कुंजबिहार । यहैबिहार
बिहरत नितहीनित येईहैं जनके प्रतिपार । येईहैं श्रीपति बहुनायक
येईहैं कर्त्तासंसार । रोमरोम प्रतिअण्ड कोटिरिबि सुखचूर्मति यशुसति
कइबार । यहै कंस कइबेर संहारेउ ब्रह्मधरेउ कृष्ण अवतार । माखन
खात चुराय घरनि तें बहुत बार भये नन्दकुमार । आदि अन्त नहिँ
कोऊ जानत हर्त्ता कर्त्ता सबकेसार । सूरदास प्रभु बालअवस्था तरुणा
वृद्धको करे निवार ॥ ४४ ॥ राग केदारो ॥ बलि बलि चरित गोकुलराय ।
दावानल को पानकोन्हों पिवत दूधसिराय । पूतनाहठि प्राणा सोखे
अफन उर लपटाय । कहत जननी दूधडारत खिभत कहु अनखाय ।
धरेउ गिरिवर दोहनीकर धरत बाँहपिराय । शकट भंजन प्रसत कुच
युग कठिन लागत पाय । तृणावर्त्त अकाशतें पटक्यो शिलापर आय ।
डरत ललन हिंडोलभूलत खरेदेत बुलाय । बकासुर की चौंच फारी
सखन प्रकट दिखाय । कीरपीजर गहतअँगुरी लाललेत भजाय । बिना
दीपक सदनसूने कबहुँ वरत नपाय । अघासुर सुख पैठि निकसे बाल
बच्छ जिवाय । यमला अर्जुन तोरितारे हृदय प्रेमबढाय । हठत तोरि
पलाश पल्लव देहुदेत दिखाय । हरे निधि बछबाल नवकृत हेत दौरी
साय । चरत धेनु न मिली तिनको आप दौरे धाय । लिखो काजर
नाग द्वारे प्रयास देखि डराय । नचत कालीनाग फनफन मुहत ताल
बजाय । घोष नारि समेत मोहन रच्यो रास बनाय । व्याह की जब
कहत माता हँसत बदन दुराय । कहा बर्गो कोटि रसना भलीबुद्धि उ-
पाय । सर बालबिनोद बनकृत अङ्ग अङ्ग सुभाय ॥ ४५ ॥

अथ सुरसागरगोबर्धनलीला रागकल्याणम् ॥

श्रीकृष्णाय नमः ॥

राग बिनावल ॥ नन्दसहरसों कहति यशोदा सुरपतिकी पूजाबिसराई । जाकीकृपा बसत ब्रजभीतर जाकी दीन्हीं भई बड़ाई । जाकीकृपा अभै धन मेरे जाकीकृपा नवीनिधि आई । जाकीकृपा दूध दधि पूरणा सहस मथानी मथत सदाई । जिनकी कृपा पुत्रभयो मेरे कुशल रहे बलराम कन्हाई । सुरनन्दसों कहति यशोमति दिनआयो अबकरो चँडाई १ ॥ राग गौरी ॥ येइहैं कुलदेव हमारे । काहू नहीं और मैं जानति गोधन हैं ब्रजके रखवारे । दीपमालिकाके दिन पाँचक गोपनि कहौ बुलाई । बलि सामग्री करहिँ चँडाई अबहीं कहौ सुनाई । लई बुलाय महर महरानी सुनतहि आई धाई । नन्दधरनि तब कहति सखिन सों कतहो रही भुलाई । भूलीकहा कहैसो हमसों कहति कहाडरपाई । सुरदास सुरपतिकी पूजा तुम सर्वाहिन बिसराई २ चौकिपरीं सब गोकुलनारि । भली कही सबहीं सुधि भूली तुमहीं करो सुधारि । कहेउ महरि सों करो चँडाई हम अपने घरजाति । तुमहूँ करौ भोग सामग्री कुलदेवता अमाति । यशुमति कहेउ अकेली हँ मैं तुमहूँ संग मोहिं दीजौ । सुर हँसति ब्रजनारि महरि सों येहैं साँच पतीजौ ३ ॥ राग कल्याण ॥ कहि मोहिं भली कीन्हीं महरि । राजकाजहि रहेउ डोलत लोभही के लहरि । समाकीजै मोहिं हो प्रभु तुमहिं गयो भुलाय । रवालसों कहि तुरत पठयो ल्याउमहर बुलाय । नन्दकहेउ उपनन्द ब्रजके अरु महर दृयभान । अबहिँजाय बुलायल्यावहिँ करत दिन अनुमान । आयगये दिन अबहिँनेरे करतमन यहज्ञान । सुरनन्दबिनयकरत करजोरि सुरपति ध्यान ४ ॥ राग बिनावल ॥ नन्दमहरि उपनन्द बुलाये । बहु आदर करि बैठकदीन्हीं महर महरिमिलि शीश नवाये । मनहींमन सबशोच करतहैं कंसनृपति कहु सांगि पठाये । राजअंश धन जो कहु उनको विनुसांगे सो दै हमआये । ब्रह्मत महर बात नन्दमहरहि कौनकाज हम सबनि बुलाये । सुर नन्द यह कहि गोपिन सों सुरपति पूजा के दिन

आये ५ हँसत गोप कहि नन्दमंहरसों भलीभाँई यहबात सुनाई । हमहिं
 सबनि तुम बोलिपठाये अपने हिय सब गये डराई । काहे को डरपौ
 हम बोलत हँसि तब बात कहत नँदराई । बड़ोसँदेह कियो तुम हमको
 ब्रजवासी हमतुम सबभाई । करौ विचार इन्द्रपूजा को जो चाहै सो
 लेहु मँगाई । बरखद्योस को द्योस हमारो घरघर नेवज करहु चँडाई ।
 अन्नकूट विधिकरत लोगसब नेमसहित करि करि पकवान्ह । महारि
 बिनय करजोरि इन्द्रसों सूरअसरकरदीजै कान्ह ६ गावत मङ्गलचार
 महरघर । यशुमति भोजन करत चँडाई नेवज करिकरि धरत प्रयास
 डर । देखेरहो कुवैनकन्हैया कहाजाने वह देवकाज पर । और नहीं
 कुलदेव हमारे को गोधन को ये सुरपति बर । करत बिनय करजोरि
 यशोदा कान्हहि कृपाकरो करुणाकर । और देव तुमसम कोउनाहीं
 सुरकरो सेवा चरणानि तर ७ ॥ रागसूहे ॥ वाजत नन्द अवास बधाई ।
 बैठे खेलतहार आपने सातबरखके कुंवरकन्हारै । बैठे नन्दसहित वृष-
 भान्हि और गोपबैठे सबआई । थापेदेत धरनिके द्वारे गावति मङ्गल
 नारिबधाई । पूजा करति इन्द्रकी जान्यो आये प्रयास तहांअतुराई ।
 बार बार वृक्षत हरि नन्दहि कौन देवकी करत पूजाई । इन्द्रबडे कुल-
 देव हमारे उनते सब यह होत बडाई । सूरप्रयास तुम्हरे हित कारणा
 यह पूजा मेंकरत सदाई ८ ॥ राग आसावरी ॥ नन्दकहेउ घरजाहु कन्हारै ।
 ऐसेमें तुमजाहु जिनि कहूँ अहो महीसुत लेहु बुलाई । सोय रहे मेरे
 पलिकापर कहत महारि हरिसों समुभाई । बरखद्योसको महा सहा-
 त्सव को आवै कौनेमिह भाई । और महारिदिग प्रयासबैठिके कीनों
 सक विचार बनाई । सपनोंआजु मिल्यो मेको एक बड़ोपुरुष अव-
 तार जनाई । कहनलगे मेसों ये बातें पूजतहो तुमकाहि मनाई । गिरि
 गोवर्द्धन देवनकी मनसे बहु ताको भोगचढाई । भोजनकरै सबनिके
 आगे कहत प्रयास यह मन उपजाई । सूरदास प्रभु गोपन आगे यह
 लीला कहि प्रकट सुनाई ९ ॥ राग यनायी ॥ सुनी रवाज़ यह कहत क-
 न्हारै । सुरपतिकी पूजाको मेरत गोवर्द्धनकी करत बडाई । फौलगाई
 यहबात धरनिधर हरि कहजाने देव पुजाई । हलधर कहतसुनहु ब्रज-
 वासी यह सहिसा तुम काहु न पाई । कोउ कोउ कहत करौ ऐसेरै

कोउ यह कहत कहै को भाई । सूरदास कोउ सुनिमुख पावत कोउ
 बरजत सुरपतिहि डराई १० मेरो कहेउ सत्यकै जानो । जो चाहेब्रज
 की कुशलाई तो तुमगिरि गोवर्द्धन मानो । दूधदही तुमकितनो लेहो
 गोसुत बहैं अनेक । कहा पूजि सुरपतिसों पायो छाँडि देव यह टेक ।
 मुँहसांगे फल जो तुमपावहु तो तुम मानों मोहिं । सूरदास प्रभु कहत
 ग्वाल सों सत्यवचन करिदाहिं ११ छाँडिदेहु सुरपतिकी पूजा । कान्ह
 कहेउ गिरि गोवर्द्धनते और देवनहिं दूजा । गोपनि सत्य मानि यह
 लीनों बड़ो देव गिरिराज । मोहिं छाँडिये पर्वतपूजत गर्वकियो सुर-
 राज । पर्वत सहित धोय ब्रजडारों देहु समुद्र बहाय । मेरीबलि औरहि
 लै अर्पत इनकी करों सजाय । राखौ नहीं इनहिं भूतलमें गोकुलदेउ
 बहाय । सूरदास प्रभु याके रसक संगहिसंग रहाय १२ ॥ रागविभावल ॥
 गोकुलको कुलदेवता श्रीगिरिधारीलाल । कमलनयन धनसांवरो वपु
 अति बाहु बिशाल । हस्त धरत ठाढ़ेकरत येहैं हरिके ख्याल । कर्ता
 हर्ता आपुहि आपुहिहैं प्रतिपाल । बेगिकरो मेरेकहे रचि पकवान
 रसाल । यह मधवा बलिलेतहै करत करत गतगाल । गिरि गोवर्द्धन
 पजिये ब्रजजीवन गोपाल । जाके दोने होतहै धनगैयां गनजाल । सँग
 मिलि भोजन करतहैं जैसे पशुके पाल । सूरदास डरपत रहैं जातेंयस
 और काल १३ ब्रज घरघर अति होत कुलाहल । ग्वाल फिरत उसंगे
 जहँतहैं सब अतिआनन्द भरे जु उमाहल । मिलत परस्पर अङ्गुल देदैं
 शकटनि भोजन साजत । दधि लवनी मधुमाद धरतलै प्रयास संग सँग
 राजत । मन्दिरते लै धरत अजिरपर यदरसके जेवतार । डालनिभरि
 अस कलशलये भरि जोरत हैं परकार । सहसशकट मिष्टान्न अन्नबहु
 नन्दमहर घरहीको । सूरचले सब लै गृहगृहते सँगसुवन नंदजीको १४
 अति आनंद ब्रजवासी लोग । भांति भांति पकवान शकटभरि लैचले
 छहों रसभोग । तीनलोकको ठाकुर संगहि तासों कहत सखाहमयोग ।
 आवत जातहि डर नहिंपावत गोवर्द्धन पूजा संयोग । कोउ पहुँचे कोउ
 सगमें रंगत कोउ घरते निकसे कोउनाहिं । कोउ पहुँचाय शकट घर
 आवत कोउ घरते भोजन लैजाहिं । मारगमें कोउ निरत आवत कोउ
 अपने रस गावत जाय । सूरप्रयासको यशुमति ढेरत बहुत भीरहै हरि

न भुलाय १५ ॥ राग कान्हरो ॥ शकट साजि सबगवाल चले गिरि गोव-
 र्द्धन पूजाके काज । घर घरते मियाऊ चले लै भांति भांति बहु बाजन
 बाज । अति आनन्द भरे गुतागावत उसड़े फिरत अहीर । पैडो नहिं
 पावत तहँ कोऊ ब्रजवासिन की भीर । एक चले आवत ब्रज तन को
 एक ब्रजते बनकाज । सूरदास तहँ प्रयास सबनि में देखतुहँ शिरताज
 १६ ॥ राग नट ॥ चलीं घरघरनिते ब्रजनारि । मनहुँ इन्दु बधुनि पङ्कति
 लगति शोभाभारि । पहिरिसारि सुरंग पचरंग यष्टदश-शृङ्गारि । इहे
 रक्षा सर्वानके चित प्रयास रूप निहारि । ललिता चन्द्रावलि सहित
 राधासंग कीरति महतारि । चले पूजा करन गिरि की सुर संग नर
 नारि १७ बहुतजुरे ब्रजबासी लोग । सुरपति पूजिमेदि गोवर्द्धन पूजा
 के संयोग । योजनबीस संक अरु अगरो डेरयाह अनुमान । ब्रजबासी
 नरनामरि अन्तनहिं मानों सिंधु समान । इक आवत ब्रजहीते इतही
 इक इतते ब्रजजात । नन्दलिये तबगवाल सुरप्रभु आयगये तहँ प्रात ।
 १८ ॥ राग आसावरी ॥ नन्दकरत गिरिपूजाकी विधि । भोजन लै सबधरे
 छहेरस कान्हसङ्ग अष्टौसिधि । लैलै आवति गवाल घरनि ते भोजन
 बहुतप्रकार । व्यञ्जन देखि नन्द मुखपावत तुरत करौं जनिवार । जोइ
 जोइ हरि कहत करत सोइ सोइ पूजाकी बहुभांति । साखन दधि पै
 तक्रधरतलै जोरि जोरि सबपांति । को बरगौं नानाविधि व्यञ्जनजैवन
 ये ब्रजनारि । सुरप्रयासकी लीला अद्भुत कह बरगौं मुखचारि १९ ॥
 राग नट ॥ विप्रबुलाय लियेनंदराय । प्रथमारम्भ यज्ञको कीनों उठेवेद
 धुनिगाय । गोवर्द्धन शिर तिलकबन्दयो मेदिइन्द्र ठकुराई । अन्नक
 सेसरचिराख्यो गिरिकी उपमापाई । भांतिभांति व्यञ्जनपरुसायेकार्य
 बरगयो जाय । सुरप्रयाससौं कहत गवाल गिरि जेवहिंकहूँ बुझाय २०
 राग बिलावल ॥ इन्द्र शोचकरि मनहिंमन अपनेचक्रतहेत पुनिबुद्धि वि-
 चारत । कहाकरत देखोमैं इनको मोको बिलम्ब लगत नहिं मारत ।
 अबयेकरैं आपनेमनमुख मोको अव न संभारे । तबलौरहोपूजनिबरेये
 बचिहि न बैरहमारे । इतनोंमुख इनकेकरि रहिहै दुखहै बहुतअगाध ।
 सूरदास सुरपतिकी बानीमनहीं मनकी साध २१ ॥ राग गौरी ॥ चढ़ि बि-
 मान सुरगारा नभदेखत । लीलाकरत प्रयासनूतन यह फिरि फिरि

गिरिगोवर्द्धन देखत । थकितभये सब जहँ तहँ मुनिगगा दौर दौर नर
नारी । चितवतहें सब प्रयास बदनतन गतिमति सुरतिविसारी । पूजा
मेति इन्द्रकी पूजत गिरिगोवर्द्धन राज । सूरदास सुरपति गर्वितभयो में
देवन शिरताज २२ कहत कान्ह नंदबाबा आवहु । भोजनधरौ परु-
सि सब आगे प्रेमसहित गिरिराज मनावहु । औरनन्द उपनन्द बूलाये
कहेउ सबनिसों भोग लगावहु । स्वप्ने में देख्यो मेरि मूरति यहै रूप
धरि ध्यानमनावहु । यकमन यक चितके अपंगा करौ प्रकटलेत दिख-
रावहु । सूरदासप्रभु कहत सबनिसों अपने कर लैलें न जिवावहु २३
रामकेदारी ॥ बिनती करत सकल अधीर । कलश भरिभरि ग्वाल लैलें
शिखर द्वारतक्षीर । चलयो बहिचरु पासतेंपय सुरसरी जलहारि ।
बसन भूयन लैचढाये भीर अति नरनारि । मंदि लोचन भोग अर्घ्यो
प्रेमसों रुचिभारि । सबनिदेख्यो प्रकटमूरति सहसभुजा पसारि । रुचि
सहित गिरि सबनिआगे करनि लैलैखाय । नन्दसुत महिमा अगोचर
सूरकों करगाय २४ ॥ राग नट ॥ गिरिवर प्रयासकी अनुहारि । करत
भोजन अति अधिकई सहसभुजा पसारि । नन्दकोकर गहेटाढो यहै
गिरिकोरूप । सखीललिता राधिका सों कहति देखि स्वरूप । यहै
कुण्डल यहै माला यहै पीतपिच्छोरि । शिखर शोभा प्रयासकी छवि
प्रयासछवि गिरिगोरि । नारि बढरौलारही वृषभान घर रखवारि ।
तहांते वह भोग अर्पति लियो भुजापसारि । राधिकाछवि देखिभूली
प्रयास निरखीताहि । सूरप्रभुवश भईप्यारी चकोर लोचनचाहि २५
राग धनाश्री ॥ देखौरी हरिभोजनखात । सहसभुजा धरेउत जैवतहें इतहि
कहत गोपनिसोंबाल । ललिता कहति देखिहोराधा ज्योतेरेमन बात
समाय । धन्यसमय गोकुलकेवासी संगरहत विभूवनकेराय । जैवत
देखि नन्दसुखपायो अतिआनंद गोकुल नरनारि । सूरदास स्वामी
सुरसागर गुहाआगर नागर दैतारि २६ ॥ राग बिलावल ॥ यहलीला सब
करत कन्हई । उत जैवत गिरि गोवर्द्धनसंग इतराधासंग प्रीतिलगाई ।
इत गोपिन सों कहत जिवावहु उत आपुन जैवत मनलाई । आगे धरे
छहोरस वयंजन बढरोला को लियो मंगाई । असर बिसान चढे सब
करि सुमननि बरयाई । सुरप्रयास सबके मुखदाता भक्त

हेत अवतार सदाई २७ ॥ रागगोरी ॥ गोपिन सेां यह कहत कन्हाइ ।
 जो में कहत रहत भयोसेई सपनान्तरकी प्रकट बताई । जो सांग्यो
 चाहेसो सांगो पावोये जो जा मन आई । कहतनन्द सब तुमहीं दीनों
 सांगत हैं हरिकी कुशलाई । करजोरे नंद आगे ठाढ़े गोवर्द्धन की
 करतबड़ाई । सेसो देव नहीं कहूँ देख्यो सहसभुजा धरिखात मिठाई ।
 सदातुम्हारी सेवाकरिहैं और देवनाहिं करों पुजाई । सुरप्रियाम को
 नीकेराख्यो कहति सहारि ये हलधर भाई २८ ॥ रागनटनारायण ॥ अपने
 अपने टोल कहत ब्रजवासियां ॥ ध्रुव ॥ शरद सुभग ऋतु जानि दीप
 मालिका बनाई । गोपिनके उनमाद फिरत आनन्द कन्हाइ । घरघर
 थापे दीजिये घरघर सङ्गलचार । सातबरयको सांवरोहे खेलत नन्द
 दुवार । बैठनन्द उपनन्द बोलि वृथभान पढाये । सुरपति पूजादेत
 जानि तहँ गोबिंद आये । बारबार हाहा करें कहि बाबा यह बात ।
 घरघर नेवज. होतहैं हो कौनदेवकी जात । कान्हतुम्हारी कुशललागि
 यक यतन बढाऊं । यतरस भोजनअन्नभोग सुरपतिहि चढाऊं । नंद
 कहेउ चुचुकारि के जायदामोदर सोय । बरष दिवसको द्योस हैहो
 सहामहोत्सव होय । तब हरिमन्त्र विचारि तुरत गोपनिसेां कीनों ।
 एक पुरुषते आजुबोहिं सपनान्तर दीनों । सबदेवनिको देवतागिरि
 गोवर्द्धनराज । ताहि भोग किनि देहुलै सुरपतिको कहकाज । बाढ़ै
 गोसुतगाय दूधदविको कहलेखो । यहपरचौ बिद्यमान नयन अपने
 सब देखो । तुम देखत बलखायगो मुँहसांगे फलदेय । गोपकुशल सब
 चाहिये तो गिरि गोवर्द्धन सेय । गोपन करी बिचार सकल सबही
 ब्रजसाजे । बहुबिधिलै पकवान चलेसंग बाजनबाजे । एकबाटते उब-
 टिचले सकनदी सुरभीर । एकनपैडो पावहींहो उमड़े फिरत अहीर ।
 एक घरते उटिचले एक गृहको फिरि जाहिं । गावत गुणगोपाल
 उमंगि अङ्ग अङ्ग न समाहिं । गोपनिका सागरभयो गिरिभयो सन्द-
 रसार । रतनभई सब गोपिका हो कान्ह बिलोवनहार । एकचौरासी
 कोशधरे गोपन के डेरा । लावों चौवनकोश आजु ब्रजबासबसेरा ।
 सर्वहितके मन सांवरो देखो सबनि मँझारि । कौतुक भूले देवता हो
 आयेलोक बिसारि । प्रथमदूध अन्हवाय बहूरि गङ्गाजल ढारेउ ।

बड़ो देवताजानि कान्हको मतो बिचारैउ । देवदिवाले सासुही नर
नारी सबजाय । नन्दप्रतोत न मानहीं तुमदेवत बलखाय । लीजिविप्र
बुलाइ यज्ञ आरम्भन कीन्हो । सुरपति पूजामेति राज गोबर्धन दीन्हो ।
जैसेहै गिरिराजजु तैसेई अन्नकोट । मगनभये पूजा करैहो नरनारी
बहुकोट । बहुविधि व्यंजनकिये कहां लोनाम बखानों । भयोभातको
कोट ओट गिरिराज छिपानों । बरा बिराजै भातपर चन्दहि परतर
सोय । यज्ञपुस्य भोजन करैहो सब देवनि सुखहोय । जहां तहां दधि
धरेउ कहो कह उज्जलताई । गिखर उदधि ह्वै रहेउ भात में देह
छिपाई । बदरीला रुयभान के रही बिलोवन हारि । ताकी बलि
वोही देवता हो लीन्हो भुजापसारि । सहस्रभुजा गिरिधरकरै भोजन
अधिकारि । नखशिख सक अनुहारि मनहुँ दूसरो कन्हाई । राधासों
ललिता कहैं तरे हृदय समाय । गहे अँपुरिया नन्दकी हो ढोटा भो-
जन खाय । पीतदुमाली प्रवेतकंठ मोतिन की माला । भूयसा भुजा
अनप प्रयामतन नयन बिशाला । प्रयामहि शोभा गिरिबनी गिरिकी
शोभा प्रयाम । जैसे पर्वत भात को हो हिम भैया बलराम । लै सब
भोजन अरपिगोप गोपिन करजोरे । बहुविधि कीन्होंस्वाद दास कछु
बरसो थोरे । ग्रहिविधि पूजा पूजिके बूझी गोविन्द जाय । सूरप्रयाम
सबसों कही हो लीला प्रकट सुनाय २६ ॥ राग मेरी ॥ प्रयाम कहत
पूजा गिरिमानी । जो तुम भाव भगतिसें अपर्या देवराज सब जानी ।
तुम देखत भोजन सब कीन्हें अबतुम मोहिँ प्रत्याने । बड़ो देव गिरि-
राज गोबर्धन इनाहिँ रहे तुम माने । सेवा भली करी तुम मेरी देव
कही यहबाणी । सूरनन्द मुखचूबत हरिको यह पूजा तुम टानी ३०
और कछु सांगहु नन्द मेंसे । जो चाहो सो देहुँ तुरतही कहत सबै
गोपिनसों बलमोहन दोऊ सुत तेरे कुशल सदा ये रहैं । बाहेंछुरभी
बच्छयनेरे चरत्तया बहुतअर्थहैं । इनकेकहे करी मेरीपूजा अब तुमसब
घर जाहु । भोगप्रसाद लेहुकछु मेरो गोपसबै मिलिखाहु । सपनेमेंही
कहेउ प्रयामसों करहुहमारी पूजा । सुरपति कौन बापुरो सोते देव
नहीं अरुद्रजा । इन्द्रआय बर्यो जो ब्रजपर तुमजनि जाहुडराई । सुनहु
सूरसुत कान्हतुम्हारे कहिके मोहिसुनाई ३१ ॥ रागमेरी ॥ भलीकरीपूजा

तुमभेरी । बहुतभावकरि भोजनअर्घ्या यहसबमानिलई मैं तेरी । सहस्र
 भुजा धरि भोजनकीन्हों तुम देखत विद्यमान । मोहिं जानत यह कुं-
 वर कन्हैया यहै नहीं कोउआन । पूजासबकी मानलई मैं जाहुधरन
 ब्रजलोग । सूरप्रयास अपने कर लीन्हें वांछत जूठोभोग ३२ ॥ रागवि-
 लावल ॥ बिनती करत नन्द करजोरे पूजाहम कह जानेनाथ । हमहैं
 जो असदामायाके दास दियो मोहिं कियोसनाथ । महापतितमें तुम
 पावनप्रभु दरशन तुम्हरे पायोतात । तुमते और देवनाहं दूजा कोटि
 ब्रह्माण्ड रोमप्रतिगात । तुम दाता तुमहीहौ भुगता हर्ताकर्ता तुमही
 सार । सूरकहा हमभोग लगावैं तुमहीं लैदीयो संसार ३३ यह पूजा
 मोहिं कान्हवताई । भूल्यो फिरत द्वारदेवनिके त्रिभुवनपति तुम को
 बिसराई । आपुहि कृपाकरी सपनांतर श्यामहिं दर्शादियो तुमआई ।
 ऐसेप्रभु कृपाल कसंतासय बालककी अति करीबडाई । गिरिपायन
 हरिको लै पारतहलधरको पायनतर नाई । सूरप्रयास बलराम तुम्हारे
 इनपर कृपा करो गिरिराई ३४ ग्वाल कहत धनि धन्य कन्हैया ।
 बड़ोदेवता प्रकटबतायो यह कहि कहि सबलेत बलैया । धन्य धन्य
 गिरिराजनकी मतिा तुमसम और न दूजा । तुमलायक कछु नाहिं
 हमारे को जानेतुम पूजा । गोपसबै मिलि कहत श्यामसों जो कछु
 कहेउ सो कीन्हों । सूरप्रयास कहिकहि यहबाणी देवमानि सुखली-
 न्हों ३५ ॥ रागसारंग । तालचंचरी ॥ गोपउपनन्द दृयभानआये । बिनय
 सबकरत गिरिराजसों जोरि करगये तनपाप तुवदरश पाये । देवदेवी
 बडेप्रकटदर्शनदियो प्रकटभोजनकिये सबनिदेख्यो । प्रकट बाणीकही
 गिरिराज तुमसही औरनाहिं तिहुंभुवन कहूँपेख्यो । हंसतहरि मनहिं
 मन तकत गिरिराजतन देवपरसनभय करोकाज । सूरप्रभु प्रकटलीला
 कही सबनिसीं चलेघरघरनि अपनेसमाज ३६ ॥ रागधनाथी ॥ देखिय-
 कित गंगा गन्धर्व सुर मुनि । धन्य नन्द को सुकृतपुरातन धन्य धन्य
 कहिकहि जयजयधनि । धनिधनि श्रीगोवर्द्धनपर्वत करत प्रशंसा सुर
 सुखमुनिपुनि । आपुहिंखात कहतहैं गिरिको यहमहिमा देखी न
 कहसुनि । इहै कहत अपने आँकनि धनि ब्रजवासी सबकीन्है उनि ।
 सूरप्रयास धनि धनि ब्रज बिहरत धन्य धन्य सबकहत जगुनिपुनि ३७

गगनट ॥ चले व्रजधरनि को नर नारि । इन्द्र की पूजा विटाई तिलक
गिरिजेनारि । पुलक अंग न मात उरमें महरिसहित समाज । अबबहो
हमदेव पायोगिरिशोवर्द्धनराज । इनहिंते व्रजचैनरैहैं सांगिभोजनखात ।
इहैं घेरा चलत व्रजजन सबनिमुख यह बात । सबैसदननि आय पहुंचे
करत केलि बिलास । सूरप्रभु यहकरी लीला इन्द्र रिसि परकास ३८

रागसारंग ॥ व्रजवासिन मोको बिसरायो । भलीकरी मेरी बलिजो कछु
सो सब लै पर्वतहि चढायो । मोसों गर्ब कियो लघु प्रतिमा जानिये
कहामनआयो । विदश कोटिदेवनिको नायक जानिवृष्णिके इननभु-
लायो । अब गोपन भूतलनहिं राखों मेरी बलि सोकों न चढायो ।
सुनहु सूर मेरे मारत धों पर्वत कैसे होत सहायो ३९ प्रथमहिं देहों
गिरिहि बहाय । बजाघातहु करों चित्रकूट देउं धरिणा मिलाय । मेरी
इन सहिसा न जानी प्रकट देउं दिखाय । जल बरिय व्रजधोइ डारों
लोग देउं बहाय । खात खेलत रहे नीके करिउपाधि बनाय । बरय
दिन मोहिंदेत पूजा सोइ दई मिटाय । रिससहित सुरपति कहतपुनि
परौ व्रजपरधाय । सुनहु सूर कहतहै मधवा बेगिपरो भहराय ४० ॥

रागसारंग । चर्चरी ॥ सुनत मेघवर्त साजि सेन आये । जलवर्तधारि तबप-
वनवर्त ध्वजवर्त अग्निवर्त जलद संग आये । घट रात गररात दरशात
घहरात तररात महारात साथनाये । कौन ऐसो काजबोलै हमैंसुरराज
प्रलयके साजहमकोबुलाये । बरयदिन संयोगदेत मोकों भोगछुद्र अति
व्रजलोग गर्वकीन्हें । मोहिं दियो बिसराय पड़्यो गिरिवरजायपरो
व्रजधाय आयसु दीन्हें । कितिक व्रजके लोग रिसकरत केहियोग
गिरिलियो भोगफल तुरतपैहै । सूर सुरपति सुन्योबयो जैसे लुन्यो
प्रभुकहा एसी गिरिसहितबैहै ४१ ॥ रागसारंग ॥ बिनती सुनहु देव म-
धवापति । केतिकवात गोकुल व्रजवासी बार बार रिस करत जाहि
अति । आपुन बैठिदेखिये कौतुक बहुते आयसुदीन्हें । द्विनैमैबरयि
प्रलयजलपौढ़े खोजरहे नहिंचोन्हें । महाप्रलय हमरेजलवरयै गगन
रहे भरिछाई । अछै दृस बर वचननिरंतर कहाव्रज गोकुलगाई । च-
लेमेघ साथे कर धरिके लनमें क्रोधबढायो । उमड़तचले इन्द्रके पा-
यक सूरगगन रहे छायो ४२ ॥ रागगोडमलार ॥ मेघ बल प्रबल व्रजलोग

देखे । चकत जहैतहँ भये निरखि बादरनये ग्वालगोपाल डरि गगन-
 घेखे । सेमे बादर सजलकरत अति महाबल घहरात करिचहल दशो-
 दिश अंधकाल । चकतभयेनन्द सब महरचकतभये चकतनरनारिहरि
 करतख्याल । घटाघनघोर घहरात अररात गररात दररात ब्रजलोग
 डरये । तडित आघात तररात उतपातसुनि नारिनर सकुच तन प्राणा
 अरये । कहाचाहत हों न भई न कबहुं जो न कबहुं आंगन भौन वि-
 कल डोलै । मेतिपूजा इन्द्रनन्द सुतगोविन्द सूरप्रभु अनन्दकरै कलो-
 लै ४३ ॥ रागमलार ॥ सैनसाजि ब्रजपरचडि धावहिं । प्रथमबहाय देहिं
 गोबर्धन ता पाछे ब्रजखोदि बहावहिं । अहिरनि करी अवज्ञाप्रभुकी
 सोफल उनकोहुरत दिखावहिं । इन्द्रहिपेलिकरी गिरिपूजा सलिल
 बरखि ब्रजनाममिटावहिं । बलसमेत निशि बासर बरखहु गोकुल बेरि
 पताल पटावहिं । सूरदास सुरपति आज्ञा यह भूतल कतहुं रहननहिं
 पावहिं ४४ बादर घुमडिउमडि आये ब्रजपर बरखन कारे घुमरेघटा
 अतिही जल । चपलाअति चमचमात ब्रजजन सबडरतगात डेरतशिशु
 पिता मात ब्रजगलबल । गरजतधुनि प्रलयकाल गोकुल भयोअंधकाल
 चकतभये ग्वालबाल घहरातनभ करतचहल । पूजामेटी गोपाल इन्द्र
 करत यहहाल सूरश्याम राखहुअब गिरिवरबल ४५ गिरिपरवरख-
 नलागेबादर । मेघवत्त सैनसाजि आय लैलै आदर । सलिल अखंड
 धार डुंदतहँ कीयेई मनसादर । मेघपरसपर यहैकहतहँ घोर करौ
 गिरि कादर । देखिदेखि डरपत ब्रज बासी अतिहीभये मनकादर ।
 यहैकहत ब्रज कौन उबारै सुरपति कियो निरादर । मनसन शोच
 करत नर नारी कहा भई रहगादर । सूरश्याम देखेगिरिअपने मेघन
 कीन्हों दादर ४६ गये बिललाय ब्रजे नर नारि । धरतसैतत धाम-
 बासन नहींसुरति सन्हारि । पूजिआये गिरि गोबर्धन देति पुस्यनि
 गारि । आपुनोकुलदेव सुरपतिधरेउ ताहिबिसारि । दियो फल यह
 गिरिगोबर्धन लेहु गोदपसारि । सूर कौन उबारि लेहै इन्द्रचढेउ प्र-
 चारि ४७ ॥ रागसांगठ ॥ ब्रजकेलोग फिरत बिललाने । सौयनि लै वन
 ग्वाल गये ते धावत आवत ब्रजहि पराने । कोउ चितवत नभतन च-
 कतरहेउ कोउ गिरिपरत धरिगा अकुलाने । कोउलैरहत ओटवृक्षनकी

अब धुन्धदिशि विदिशि भुलाने । कोउ पहुंचे जैसे तैसे घर कोउ हूँडत
 गृह नहिं पहिचाने । सूरदास गोवर्द्धन पूजा कीनीकरि फल लहेउ वि-
 हाने ४८ ॥ रागगोरी ॥ तरपत नभ डरपत सबलोग । सुरपति की पूजा
 विसराई लैदीनों पर्वतको को भोग । नंदसुवन यहबुधि उपजाई कौन
 देवकहे पर्वत योग । सूरदास गिरिवहोदेवता प्रकट होहिं ऐसे संयोग
 ४९ ॥ रागमलार ॥ ब्रज नरनारि नन्द यशुमतिसों कहत प्रथाम एकाज
 करे । कुल देवता हमारो सुरपति तिन को मिलि मेढिधरे । इन्द्रहि
 मेदि गोवर्द्धन थाप्यो उनकी पूजा कहा सरे । सैतति धरति जहां तहं
 वासन लरिकन लै लै गोदकरे । कोकरि लेखहाय हमारो प्रलय-
 कालके मेघअरे । सूरदास सबकहत नारिनरक्यों सुरपति पूजा विस-
 रे ५० ॥ रागविलावल ॥ राखिलेहु गोकुलके नायक । भोजत खालं गाय
 गोसुतसब वियस बूंदलागत जुनु शायक । बर्यत सुगलधार सेनापति
 सहामेघ सघबाके पायक । तुमबिनु सेना कौन नन्दसुत यहदुख दुसह
 मेढिबे लायक । अधमर्दन बक बदन बिदारन बकी बिनाशन सुर सु-
 खदायक । सूरदास तिनको काकोडर जिनके तुमसेसदा सहायक ५१
 रागगोडमलार ॥ शरणा राखिले नन्दतात । घटाआई गरजि युवति गई
 तरजिबीज चमकत तरजि डरत गात । और कोउनहीं तुमबनी जहां
 तहां बिकल ह्वै के कहीतुमहिं तात । सूरप्रभु सुनि हंसत प्रीति उरमें
 बसत इन्द्रको कसत हरि जगत धात ५२ ॥ रागविलावल ॥ राखिलेहु अब
 नन्द किशोर । तुमजो इन्द्रकी पूजामेरी बरयत हैअतिजोर । ब्रज
 वासी सब यों चितवत हैं ज्यों करि चन्द्रचक्रोर । जिनि जिय डरहु
 नयन जिनि मूँदहु धरिहीं नखकी कोर । करि अभिमान इन्द्रचहि
 आयो करत घटा धनघोर । सूरप्रथाम कहितुसब राखे बूंदन आवै
 छोर ५३ ॥ रागगोडमलार ॥ गगन मेघ घहरात घबरात गात । चपला
 चम चमात चमकि चम भहरात राखिले कयों न ब्रजनन्दतात । सुनत
 करुणा बैनउठे हरि बल सेन नयनकी सैन गिरितन निहाख्यो । सबनि
 धीरजदियो उर्चाक संदरलियो कह्यो गिरिराज तुमको उवाख्यो । क-
 रजकेअग्र भुजबास गिरिवर धरेउ नाम गिरिवर पखोभक्तकाजे । सू-
 रप्रभुकहत ब्रजवासि बासीन सोंतुन्हें राखि लियो गिरिराज राजे ५४

रागगोरी ॥ श्याम लयो गिरिराज उदाय । धीर धरी हरि कहत सबनि
 सों गिरि गोवर्द्धन कियो सहाय । नन्द गोप ग्वालनि के आगे देउ
 कहेउ यशप्रकट मुनाय । काहे को व्याकुल भये डोलत रक्षाकरेउ दे-
 वता आय । सत्यवचन गिरिदेव कहतहैं कान्हमोहिं करलोहि बनाय ।
 सूरदास नारीनर व्रजके कहतधन्य तुम कुंवर कन्हाय ५५ ॥ रागमलार
 बासकरजु टेक्यो व्रजराज । गोपी ग्वालगाय गोसुत को दुखविषरेउ
 मुख करत समाज । आनंद करत सबै गिरिवरतर दुख डारेउ सबही
 बिसराय । चकत भये देखत यहलीला परशत सबै हरिचरगान धाय ।
 गिरिवरटेकिरहे बायेंकर दक्षिणा करलिये मुखनि उठाय । कान्हक-
 हतऐसोगोवर्द्धन देखो कैसेाकियोसहाय । गोप ग्वालनन्ददिक्क जहँ
 लौं नन्दसुवन लिये निकट बुलाय । सूरदासप्रभु कहत सबनिसों तुमहँ
 मिलिदे को गिरिआय ५६ नीकेधरो नंदनन्दनबलबीर । गिरिजिलिपरै
 तरै नखते जिनि कौन सहे गोपीर । चहुंदिशिपवन भकीरत घोरतमेघ
 घटागंभीर । बनै बनै बरयत गिरिकुपर धार अखगिडत नीर । अन्ध
 धुन्ध अम्बरते गिरि पर परत बज्र के तीर । चमकि चमकि चपला
 चकचौंधति श्याम कहत मनधीर । करजोरत कुलदेवमनावत व्रजके
 लोग अहीर । पथ पकवान बिहान पूजि हैं लै दधि मधु घृत क्षीर ।
 गोपी ग्वाल गाय गोसुत सब रहे मुखसहित शरीर । सूरप्रश्याम गिरि
 धरेउ बासकर मेघ भये अति भीर ५७ गिरिवर नीके धरो कन्हैया ।
 देखे रहै तरै जिनि नखते भुजा तनकसी भैया । जबहीं गाढ़ परत
 व्रज लोगनि तब करि लेत सहेया । जननि यशोदा करलै चापति
 अति अम होत न कन्हैया । देखत प्रकट धरे गोवर्द्धन चकत भये नंद
 रैया । पिता देखि व्याकुल मनमोहन तब एक बुद्धि उपैया । आवहु
 तात गहौ गोवर्द्धन गोपिन संग लेवैया । जहां तहां सबहिनि गिरि
 टेक्यो कान्हहि औत करैया । श्याम कहत सब नन्द गोप सों भले
 लयो उचकैया । सूरदास प्रभु अन्तर्दयासी नन्दहि हरय बढैया ५८ ॥
 रागकान्हरी ॥ गिरिवर धरों सखाकर करते । रे भैया ग्वाललकुटियनि
 टेकी अपने अपनेभुजनके बलते । सात दिवस मृगाल जलधारा बरयत
 है निशिदिनअम्बरते । अंतरिक्ष जलजात कहाँ यह क्रोधसहितफिरि

वर्धत भरते । रायगोप नन्दादिक राख्यो वृथाबूंद सबनेक न थरते ।
 मूर गोपाल राखि गिरिवरतर गोकुल ब्रजनारी नर घरते ५६ ॥
 रागमलार ॥ बरयत मेघ बर्त धरणीपर । मृगलधार सलिल बर्यत हैं हृद
 न आवत भूषर । चपला चर्मकि चर्मकि चकचौधति करति शब्द
 आघात । अवाधुन्ध पवन बर्तत घन करतफिरत उत्पात । निशिसम
 गगन भयो अच्छादिक बरयि बरयि भरइन्द्र । ब्रजबासी सुख चैन
 करत करगिरिवर धरिगोविन्द । मेघवरयि जलसबैबुढाने दिबिगुन-
 गये शिषय । वैसइ गिरि वैसइ ब्रजबासी दूनोहरय बढाय । सातदि-
 वस जल बरयि निशादिन ब्रज घरघर आनन्द । सूरदास ब्रजराखि-
 लियो हरि गिरिवर कर नंदनन्द ई० बरयि बरयि घन ब्रजतन हेरत ।
 मेघबर्त अपनीसेना को खीजतहैं फिरि टेरत । कहा बरयि अवलोतुम
 कीने राखत जलहि छिपाय । मृगलधार बरयि ब्रजपादौ सातदिवस
 भयेआय । रिस करिकारि गरजत नभतरपत चाहत ब्रजहिबहाय । सूर
 प्रयासगिरिगोवर्द्धन धरि ब्रजजनको सुखदाय । बरयिबरयि सबहारि
 वादर । ब्रजके लोगनि धोय बहावहु इन्द्र हमहिं कहि आदर । कहा
 जायकैहैं प्रभुआगे करिहैं बहुत निरादर । हमपर्यंत पर्वत जलसोखत
 ब्रजबासी सब सादर । पुनि रिस करत प्रलय जलवर्धत कहंत भयेसब
 कादर । सुरगाय गोमुत सबराख्यो गिरिवरधरब्रज आदर ई२ ॥ राग
 घनाभी ॥ कहा होतजल महाप्रलयको । राख्यों सैंति जेहि कारजजल
 को वचत नहीं बहुतनको । भुवपर एक बूंदनहिं पहुंच्यो निभरि गये
 सब मेह । वासरसात अखंडित धारा बरयत हारेदेह । नूरभयो बिनु
 नीरसबनिको नाम रहेउहै वादर । सूरचले फिरि अमर राजपै ब्रजते
 भये निरादर ई३ रागमलार ॥ मघवनि हरिमानि सुखफेरेउ । नीकी धोय
 बडो गोवर्द्धन जबनोके ब्रज हेरेउ । नीकी गाय बच्छ सब नीके नीके
 वालगोपाल । नीकीवन बैसी ये यमुना मन मन भये बिहाल । गोकुल
 ब्रज वृन्दावन सारग नेकनहीं जल धार । सूरप्रभु अगागात सहिमा
 कहाभयो जलसार ई४ ॥ रागनट ॥ मघवनि जाय कहीपुकारि । दोनहैं
 सुरराज आगे अख दीन्हे डारि । सात दिन भरि बरयि ब्रजपर गई
 करी नेकनभारि । अखंड धारासलिल निभरेउ मिटीनहीं लगायि ।

धरणि नेक नन्द पहुंच्यो हरय ब्रज नरनारि । सूर मेघनि इन्द्र आगे
 करी यहै गोहारि ६५ ॥ रागगोरी ॥ तुम बर्यत ब्रज कुशल परेउ । तुम
 बर्यत जल महाप्रलयको यह कहि मनमन शोचकरेउ । एकधरीजाके
 बर्यते गगन आच्छादित होय । ते मघवा बिह्वलसो आगे बात कहत है
 रोय । सातदिवस भरिवरयि सिराने तातेभयो निरास । सूरदाससुर-
 पति शंकितभये सुरनि बुलाये पास ६६ असरराज सब असरबुलाये ।
 आज्ञासुनत सकलघरघरते आयगये कहु बिलंबनलाये । कौनकाजसुर-
 राजहंकारे हमको आयसुहोय । देखहु मेघ बर्तकनिकी गति ब्रजते
 आये रोय । गोवर्द्धनकी करी पूजाई मोहिं डारेउ बिसराय । मेघबर्त
 जलवर्तपढायेआवे ब्रजहिबहाय । धारअखंडित बर्यसातदिन ब्रजप-
 हुंच्यो नहिं बुन्द । सुरन कही गोकुल प्रकटेहैं पूरणाब्रह्म सकुन्द । मो
 सां क्यों न कहे तुम तबहीं गोकुलहैं ब्रजराज । सूरदासप्रभु कृपाकर-
 हिंगे शरणा चलौ दिविराज ६७ ॥ राग सोरठ ॥ शरणा गये जो होय
 सुहोय । वेकर्त्ता बेईहैंहर्त्ता अबनरहों मुखगोय । ब्रजअवतार कहेउहो
 श्रीमुख तेईकरत बिहार । पूरणाब्रह्म सनातन सही में भूख्यों संसार ।
 उनकेआगे चाहूं पूजा इयोंमरिा दीपप्रकाश । रविआगे खद्योत उजा-
 री चन्दनसंग कुबाश । कोटिइन्द्र सगहीमेंराचै छिनमेंकरै बिनाश ।
 सूररच्यौ ननहींसुरपति में भूख्योंतेहि आश ६८ रागसारंग ॥ प्रकट भये
 ब्रज त्रिभुवनराई । युगपुरा दीति त्रिगुणाबुधिव्यापी शरणा चल्योसुर-
 पति अकुताई । स्वपनेकोधन जागिपरैइयों त्योंजानी अपनी ठकुराई ।
 कहत चल्योयह कहाकियो में जगत पितासों करीढिटाई । शिववि-
 रंचि रविचन्द्र बरुणा यम लिये असरसब संगलगाई । बारबार शिर
 घुनतजात मग कैहों कहा बदन दिखराई । वेहैं परम कृपाल महाप्रभु
 रेहैं शीशचरणा परनाई । सूरदास प्रभु पितुमाता में ओछीबुझि करी
 लरकाई ६९ ॥ रागकांन्हरो ॥ सुरगगासहित इन्द्रब्रजआवत । धौलवरणा
 सेरावत देख्योउतरि गगनसे धरणि धसावत । असराशिव रविशशि
 चतुरानन हयगय बसहुहंस मृगजावत । धर्मराजवनराजअनलदिव शा-
 रदनारद शिवसुत भावत । मेढामढी मगरगुडरारौ मोर आयुमन बा-
 हनगावत । ब्रजकेलोगदेखि डरपेमन हरिआगे कहिकहि जुसुनावत ।

सातदोसजल वरियवहानों आवतचल्यो बजअचावत । घोराकरतजहाँ
तहँटाहे ब्रजवासिन को नहींबचावत । दूरिहिते बाहन ते उतरेउ देवन
सहित चले शिर नावत । आय परेउ चरगाति तर आतुर सुरवास प्रभु
शीशउठावत ७० मुरपति चरगापरो गहिधाय । युग गुगु छोड़ शेष
गुगु जान्यों आयो शरगा राखि शरगाय । तुम बिसरेउ तुम्हरीही
साया मो तुम बिनु नाहीं और सहाय । शरगा शरगा पुनि पुनि कहि
कहि स्वाहिं राखु राखु त्रिभुवनपति राय । मोते चूक परी बिनुजाने
मैं कीन्हों अपराध बनाय । तुम माता तुमहीं जगधाता तुम धाता
अपराधसमाय । बालक जननी सोविरुभैज्यों माताताकोलेतमनाय ।
येभेहि मोहिंकरो करुणाअब मूरप्रयास ज्यों सुतहितमाय ७१ ॥ राग
बिनावल ॥ दयाकुल देखि इन्द्रको श्रीपति उभय भुजाभरि लियो उठा-
य । अभै नृभैकर माघेदीनों श्रीमुखवचन कहेउ मुसकाय । कहाभयो
करिकोव चढे ब्रज में तुरतहि करिलियो सहाय । हमको जानि नहीं
तुम कीनी बिन जानेयह करी ढिठाय । अब अपने जियशोच करो
जिनि यह मेरीदीनी ठकुराय । मूरप्रयास गिरिधर खबलायक इन्द्रहि
कहेउ करो सुखजाय ७२ ॥ रागनट ॥ मुरगगा करत अस्तुति सुखनि ।
दरशते तनताप खोये मिटे अघके दुखनि । अंगुलकित रोस गदगद
कहतबानी सुखनि । बामभुज गिरिटेकिराख्यो करजलधुके नखनि ।
प्रेमके बश तुमहिं कीन्हों खाल बालक सुखनि । योगि जन बन तपत
जपत नहिं पावतसुखनि । दन्यनन्द धनि मात दशुमति चलत जाके
सुखनि । मूरप्रभु महिमा अगोचर जातकाधै लखनि ७३ ॥ राग भैरों ॥
जै गोविन्द माधवहुकुन्दहरि । कृपासिन्धु कल्याण कंसअरि । कृपनि
पाल केशव कमलापति । कृष्णकमल लोचन अर्गातिन गति । रामचन्द्र
राजीव नयनवर । शरगा राधु श्रीपति शारंग धर । बनमाली बावन
बिटुलबल । बासुदेवबासी ब्रजभूतल । खरदूधरा विशिरा शिरखण्डन ।
चरगाचिह्न दण्डक भुवमण्डन । बकीदवन बकबदन बिदारगा । बरुगा
बिद्याद नन्दनिस्तारगा । ऋयिसखवान ताड़का तारक । बनवास तात
बचन प्रतिपारक । गोकुलपति गिरिधर गुगुसागर । गोपीरमगारास
रतिनागर । रघुपति द्रबल पिनाक बिभञ्जन । जगहित जनकसुतामन

रञ्जन । कालीदमन केशिकर पातन । अथग्रथित धेनुक अनुघातन ।
 कस्तुरामय कपिकुल हितकारी । बालिविरोध कपट मृगहारी । गुप्त
 गोप कन्या ब्रजपूरणा । द्विजनारी दर्शन दुख चूरणा । रावणा कुम्भ-
 करणा शिरच्छेदन । तरवर सात सक शर भेदन । शंखचूड़ चाणूर सं-
 हारन । शक्रकहै मेरोरक्षा कारन । उत्तर कृपा गीध कृतकारी । दर्शन
 दै शवरी उच्चारि । जेपद सदा शम्भु हितकारी । जेपद परसि सुरसरी
 गारी । जे पद रमा हृदय नहिंठारी । जिन पदते तिहुंभुवन तियारी ।
 जे पद वृन्दावनहिं बिहारी । जेपद पांडव गृह पगुधारी । जिन पद
 शकटासुर संहारी । जे पद अहिफणाफणा प्रतिधारी । जेपद भक्तनके
 मुखकारी । जिन पदरज गौतम विय तारी । सुरदास सुरयाचत वेइ
 पद । करहु कृपा अपने जनपर सद ७४ ॥ राग आसावरी ॥ अस्तुतिकारि
 सुर धरनिचो । यहै कहत सबजात परस्पर मुकत हमारे प्रकटफले ।
 शिव बिरजिब सुरपति यह भायत पूरणा ब्रह्माहि प्रकट मिले । धन्य
 धन्य यहदिवस आजुको जातहै मारग करतगिले । पहुँचेजाय आपने
 ओकनि अमरनारि अति हरख भरे । सुरध्याम की लीला सुनि सुनि
 अतिहित मङ्गल गानकरे ७५ ॥ राग मंगार ॥ देखियत द्वै धनहैं उनये ।
 उत मधवावश भक्तवश्य इतअति रोषभये । उत सुरचाप कलापचन्द्र
 इत तद्धितपट पीतनये । उत सेनापति बरयत येइत असृतधार चितये ।
 अति उत्तंग गिरिराज विराजत करज उठायलयै । मनो बिम्बमरकत
 बिच सहानग चतुरनारि बनये । लुटत शक्रको शीशचरणातर युगल
 गुगानते समये । मानहुँ कनकपुरी पतिके शिर रघुपति फेरिदये । भये
 प्रसन्न सकल सुरपुरके प्रभुदत्त फेरिदये । सुरदास गिरिधर कस्तुरामय
 इन्द्रयापि पठये ७६ देखोमाई बादरकी बरियाई । सदनगोपाल धरो
 कर गिरिवर इन्द्रहीठ भरलाई । जाके राज सदासुख कीन्हों ताको
 सबन बढाई । सेवककरे स्वामिसों सरवरि इनबातन पतिजाई । इन्द्र
 हीठ बलिखात हमारी देखे अखिल गँबाई । सुरदास तिनको काको
 डर जेहिवन सिंह कन्हाई ७७ ॥ रागमोरठ ॥ जहाँ तहाँ तुम हमहिं उ-
 बारो । बालसखा सबकहत प्रथामसों धनि यशुमति अवतारो । हृणा-
 वर्त्त ब्रजपर चढ़िआयो लामोदेन उझाय । अति शिशुतामें ताहि संहारो

गिरी शिला पर आय । फल जनाय बालक संग खेलत केशी आये।
 साथ । वाहि सारि तुम हमहिँ उबारो सेसे विभुवन नाथ । कागासुर
 शकटासुर सारो पयपीवत दनुनारि । अघाउदरतें हमहिँ बचाये बका
 बदन धरिफारि । कालीदह जल अँदौगयेसरि तबतुम लियो जिवाय ।
 सूरश्याम सुरपतिते राख्यो देतो सबनि बहाय ७८ ॥ राग बिलावल ॥ ब्रज
 युवती ब्रजनर ब्रजबासी कहत श्यामसरि कौन करै । ब्रज सारत ब्रज
 नाथहिँ आगे बजायुध मन कोपकरै । बलसमेत बरठयो ब्रजऊपर बल
 मोहनकी सुधि न करै । हारिमानि हहरो हरिचरणान हरयि हरयि
 अब हेतुकरै । गरज गरज गहराय गुसाकरि गिरिबो रोकाहि पयज
 करै । सूरश्याम गिरिधर कसरासय तुम बिनुको प्रभु क्षमाकरै ७९
 राग मलार ॥ श्याम गिरिराजको धरो करसों । अतिहि विस्तार अति
 भार अति तुमवार ब्रामभुज टेकि लघुजात करसों । कहत सब ग्वाल
 धनि धन्य नंदलाल ब्रज धन्य गोपाल बल केतिक करसों । धन्यय-
 शुमति मात जन्योजिनि तुम तात चोरी साखन खात बांधे करसों ।
 कान्ह हंसिके कहेउ तुम सबनि गिरि गहेउ रेहेउ ब्रजको बहेउ लकुट
 करसों । सूरप्रभुके चरित कहावल गिरिधरत चरणा रज लेत सुरराज
 करसों ८० ॥ राग बेगठ ॥ जब करते गिरि धरो उतारि । श्याम कहेउ
 बहुरो गिरि पूजहु ब्रजजन इन सब लयो उबारि । यह मुनतहि मन
 हरय बढायो कियेपकवान सँवारि । बहुमिथान बहुतविधि भोजनबहु
 व्यंजन अनुहारि । परूसि धरो गोवर्द्धन आगे जैवत अति रुचि भारि ।
 सूरश्याम गिरिधर बर मांगत रवि सों घोयकुमारि ८१ ॥ राग नट ॥
 करतें धरो धरणी धरनि । देखि ब्रजजन यकित ह्वैरहे रूप रतिपति
 हरनि । लेत बैरन धरतजान्यों कहत ब्रजनर धरनि । तनुललित भुज
 अतिहि कोमल कियो अति बलकरनि । मोर मुकुट विशाल लोचन
 अबरा कुराडल बरनि । नवजलद सुरचापकीछवि युगल खंजनतरनि ।
 बरयनिभरे मेघपायक बहुतकीन्हीं धरनि । सूर सुरपति हारिमान्यो
 परो तब हरिचरनि ८२ ॥ राग बेगठ ॥ नीके धरणी धरो गोपाल । प्र-
 लय जल धन बरयि सुरपति चरणापरो बेहाल । करत अस्तुति नारि
 नर ब्रजनन्द अरु सबरवाल । जहांतहां सहाय हमको होतहैं नंदलाल ।

जाति पूजत डरत मनमें ताहि देख्योदीन । विदग्धपति सुरनिको ना-
यक सो तुमहिं आधीन । सूरप्रभु करते गोवर्द्धन धरणि धरेउ उतारि ।
देखि छवि अति नन्दसुतकी नारि तन मनवारि ८३ ॥ रागमलार ॥ मेरे
सोहन जल प्रवाह क्यों टारेउ । मेघवर्त्त जल बरषि सातदिन नेक न
नयन उधारेउ । ब्रूभूति मुदित यशोदा जननी इद्र कोप करि हारेउ ।
बारबार यह कहत कान्हसों कैसे गिरि नख धारेउ । सुरपति आय
परेउ गहिपांयन ताकी शरणाउबारेउ । सूरप्रयाम जनकी मुख दाता
करतेधरणि उतारेउ ८४ ॥ रागमोरठ ॥ मेरे सांवरे मैं बलिबलि गई स
भुजा की । क्यों गिरि सबल धरेउ कोमल कर ब्रूभूतिहैं गतिताकी ।
इन्द्रकोप बरष्यो ब्रजऊपर यह सब हे हठमारे । गोपी बवाल कहत
नंद ढोढा मैं हम सबनि उबारे । थारतमोर दूध दधि रोचन हरषि
यशोदा लाई । करि शिरतिलक चरगा रज बन्धित मनोरंक निधि
पाई । सब ब्रज नारि चलीं गोकुल ते मांभ मांभ मुसकानी । फिरि
फिरि दरशकरत येही मिस प्रेम दया न ब्रूभूतानी । सूरदास सुरपति
शंकित है सुरनि लिये संग आयो । हो अज्ञान तुम हो अविनाशी प्रभु
मैं तेरोसरन न पायो ८५ गिरिकर क्यों राख्यो दिनसात । अतिही
कोमल भुजा तुम्हारी चापति यशुमति सात । ऊंचो अति बिस्तार
भारबहु यह कहि कहि पछितात । वह अगाध तेरे तनक तनक कर
कैसेराखों तात । मुखचूमति हरिकंठ लगावति देख हँसत बलभ्रात ।
सूरप्रयाम को केतिकवात यह जननी जोरति है नात ८६ ॥ रागमोरी ॥
पितामात इनके नहिं कोई । आपुहि कर्ता आपुहिहर्त्ताविगुणागयेते
रहतहैं जोई । कितकवार अवतारलियो ब्रजयेहैं ऐसें वोई । जलथल
कोटब्रह्म के व्यापक और न इनसर होई । बसुधा भार उतारन का-
रन आपु रहत तन रोई । सूरप्रयाम माता हितकारी भोजन मांगत
रोई ८७ ॥ रागकान्हरो ॥ जननी चापति भुजाश्यामकी ढाढ़े देखि हँसत
बलराम । चौदह भुवन उदरजाके कहुं गिरिवर धरेउ बहुत करबाम ।
कोटि ब्रह्माराड रोम रोमनि प्रति तहां तहां निशि बासर धाम । जो
आवत सो देखि चकत है कहतकरे हरिसेमे काम । नाभिकमल ब्रह्मा
जनावत जो विश्राम । आवत जात बीचही भटक्यो

दुखितभयो खोजत निज धाम । तिन सों कहत सकल ब्रजवासी कैसे
गिरि राख्यो करग्राम । सूरदास प्रभु जल थल व्यापक फिरि फिरि
जनसलेत नंदधाम ८८ ॥

— * —

अथ सुरसागर रागकल्पद्रुम ॥

अथ श्री गोवर्द्धनकी दूसरी लीला ॥

श्रीकृष्णाय नमः ॥

रागविलावल ॥ नन्दहि कहति यशोदा रानी । सुरपति पूजातुमहिं भु-
लानी । यहनहिं भली तुम्हारी बानी । मैं गृहकाज रहिउँ लपटानी ।
लोभहिलोभ रहीहो सानी । देवकाजकी सुधिविसरानी । महरिकहति
पुनि पुनि यहबानी । पूजाके दिनपहुंचे आनी । सूरदास यशुमतिकी
बानी । नन्दहि खीझि खीझि पछितानी १ नन्द कहेउ सुधिभली
दिवाइ । मैं तो राज काज मनलाई । नितप्रति करत बहै अघमाइ ।
कुलदेवता सुरनि विसराइ । कंसदई यहलाग बडाइ । गांवदशक सर-
दार कहाइ । जलधिबुन्द ज्यों जलधिसमाइ । मायाजहँकी तहांबि-
लाई । सूरदास यह कह नंदराइ । चरणां तुम्हारे सदासहाइ २ कहति
महरि तब येसीबानी । इन्द्रहि कीदीनी रजधानी । कंसकरत तुम्हरी
अतिकानी । यहप्रभुकीहै आशिय बानी । गोपिन बहुत बडाइमानी ।
जहां तहां यह चलति कहानी । तुमघरमें मथियेमंथानी । खालिनि
रहति सदा बिततानी । अनउपजत उनहींके पानी । येसेप्रभुकी सुरति
भुलानी । सूरनन्द मनमेंतब आनी । सत्यकही तुम देवकहानी ३ स-
हरिलियो यकवाल बुलाई । गोप मन्द उपनन्द बुलाई । असुआनहु
वृथभानलिवाइ । तुरतजाहु तुमकरहु चँडाइ । यह सुनि खाल चल्यो
तहं धाई । नन्दमहरि को कही सुनाइ । बेककरहु अबजनि बिलमा-
इ । मोहिं कह्यो सबदेहु पटाइ । यहसुनिके सबचले अतुराई । मनमन
षोच करत पछिताइ । कंस काज जिय मांझ डराइ । राजअंश धन
दियोचलाई । सूरनन्द गृहपहुंचे आइ । आदरकरि बैठेनंदराइ ४ गोप

४०६ सूरसागर गोबर्धनलीलादूसरी रागकल्पद्रुम ।

सबै उपनन्द बुलाये । कौन काज को हम हँकाराये । सुनतहि तहँ
सब आतुर आये । कंस कहू कहिमांगि पढाये । यहैजानि अतिआ-
तुर आये । सब मिलि कह्यो बहुत डरपाये । राजहिराज अंशदे आये ।
रवाल कहत तुरतहि उठिपाये । महरकह्यो हमतुम डरवाये । हँसिहँसि
कहत अनन्द बढ़ाये । हमतुम कहँ सुखकाज मँगाये । बारबार यह
कहिदुखपाये । सूरनन्द पूजाबिसराये । यहसुनतहि शिर सबनि नवा-
ये ५ पूजासुनत मनहिंसुख कीन्हें । भलीकरी हमको सुधिदीन्हें । यह
बानी सबसुखते कीन्हें । बड़ोदेव सबदिन को चीन्हें । इनहींते ब्रज-
वासवसीन्हें । हमसब अहिरजाति मतिहीन्हें । पूजाकी बिधिकरत
सबैमिलि । जौसिंहिभांति सदाआईचलि । बिदामांगिनंदसोंघरआये ।
घरनि घरनियहबातचलाये । सूरदास गोपनिकीबानी । ब्रजनरनारि
सबनि यह जानी ६ नन्दघरनि ब्रजबधूबुलाई । यह सुनतहि तुरतहि
सबआई । कौनकाज हममहरि हँकारी । तुम नहिंजानत यौवनभारी ।
विहँसि कहति कहदेतिहो गारी । सुरपति पूजाकरोसँवारी । देखो
हमसब सुरति बिसारी । औरो हमहिं बूझिये गारी । यहसुनि हरित
भद्र नँदनारी । सखियन बचन कह्यो जबप्यारी । सूर इन्द्रपूजा अनु-
सारी । तुरतकरहु सबभोग सँभारी ७ घरनिचलीं सबकहि यशुमति
सों । देवमनावत बचन बिनतसों । तुमबिनु और नहीं हमजाने । मुख
मुख अस्तुति करति बखाने । जहां तहां ब्रजसंगल गाने । बाजतहोल
मृदंग निशाने । बहुबहुभांति करतपकवाने । नेवजकरि धरिसाँझबि-
हाने । छुवतनहीं देवकाजसकाने । देवभोगको रहतडराने । सूरदासहम
सुरपति जाने । और कौन सेषो ज्यहिमाने ८ नन्दमहर घरहोतबवाई ।
करत सबैबिधिदेवपुजाई । नेवज करति यशोदा आतुर । अष्टसिद्धि
घरही अति चातुर । मैदा उज्ज्वल करिके छान्यो । बेसनदारि चना
करबान्यो । घृत मिष्ठान्न सबै परिपूरया । मिथी करति पाक को चू-
रया । कन्दकरति मिठाईघृतपक । रोहिणी करति अन्न भोजन तक ।
संग और ब्रजनारी लासी । भोजन करती हैं बड़भागी । महरि करत
ऊपर तरकारी । जोरत सबबिधिन्यारीन्यारी । सूरदास जो माँगत
जबहीं । भीतरते लै देतहैं सबहीं ९ महरि सबै नेवजलै सेंटति । प्रयास

छुवै कहूँ ताको डरपति । कान्हहि कहति यहां जनिआवै । लड्डि-
 बनको यह देव डरावै । श्याम रहे आँगनहिं डराई । मनमन कान्ह
 हंसत मुखदाई । मैया री स्वहिं देव दिखै हैं । इतनो भोजन सब वै
 खेहैं । यह सुनि खीभक्ति है नंदरानी । बारबार सुतसों बिरुभानी ।
 ऐसी बात न कहौ कन्हाई । तूकत करत श्याम लंगराई । करजोरति
 अपराध क्षमावति । बालकको यह दोय मिटावति । मूरदास प्रभुको
 नहिंजाने । हंसतचले मनमें न रिसाने १० युवती कहति कान्ह रिस
 पायो । जानदेव मुरकाज बतायो । बालक आय छुवै कहूँ भोजन ।
 उनकी पूजा जाने कोजत । यह कहि कहि देवता मनावति । भोज
 सामग्री धरति उठावति । उनकी कृपाधाम धनमेरे । उनकी कृपा गऊ
 घनघेरे । उनकी कृपा पुत्र फलपायों । देखहु श्यामहिं खीभि पटा-
 यों । मूरदास प्रभु अन्तर्यामी । ब्रह्मा कीट आदिके स्वामी ११ रूंद
 निकट तब गये कन्हाई । सुनतबात जहँ इन्द्र पुजाई । महरनन्द उप-
 नन्द तहांखव । बोलिलये वृषभान महर तब । दीपमालिका रचिरचि
 साजत । पुहुपमाल मंडली विराजत । बरय सात के कुंवर कन्हाई ।
 खेलतमन आनन्द बढाई । घर घर देति युवति जनहाय । पंजा देखि
 हंसत ब्रजनाथ । मो आगे मुरपतिकी पूजा । मोते और देवका दूजा ।
 शतशत इन्द्र रोमप्रति रोमनि । शतरौमनि मेरे एक रोमनि । मूर-
 श्याम ये मनमो बातें । लीन्हों भोग बहुतदिन जातें १२ मुरपति पूजा
 जानि कन्हाई । बारबार दूभक्त नंदराई । कौनदेवकी करत पूजाई ।
 महर कह्यो तब कान्ह सुनाई । मुरपति सब देवनको राई । तिनकी
 पूजा करत सदाई । तुम्हरोहि हित में करत सदाई । जाते तुमरहो कु-
 शल कन्हाई । मूर नन्दकहि भेदबताई । भीर बहुत घरजाहु कन्हा-
 ई १३ जाहु घरहि बलिहारी तेरी । सेजजाय सोवहु तुम मेरी । मैं
 आवत हौं तुम्हरोहि पाछे । भवन जाहु तुम मेरे बाछे । गोपिन लीन्हें
 कान्ह बुलाई । मंध कहौ एक मनहिं समाई । आजु एक सपने कोउ
 आयो । शंख चक्र भुज चारिबनायो । मोसों यह कहिकहि समुभा-
 यो । यह पूजा किन्ह तुमहिं सिखायो । मूरश्याम कहि प्रकट सुना-
 यो । गिरि गोवर्द्धन देव बतायो १४ यह तब कहनलगे दिखिराई ।

४०८ मुरसागर गोबर्द्धनलीलादूसरी रागकल्पद्रुम ।

इन्द्रहि पूजे कौन बडाई । कोटि इन्द्र हम सगल में सारैं । सगलही में
पुनि कोटि सँवारैं । जाके पूजे फल तुम पावहु । ता देवहि तुम भोग
लगावहु । तुम आगे यह भोजन खै है । मुख सांगे फल तुम को देहै ।
ऐसा देव प्रकट गोबर्द्धन । जाके पूजे बाढ़ै गोधन । समुझिपरी कैसी
यह बानी । खाल कही यह अकथ कहानी । सूरश्याम यह सपना
पायो । भोजन कौने देवहि खायो १५ मानहु कहेउसत्य ममबानी ।
जो चाहै ब्रजकीरजधानी । जो तु मुंहसांगे फल पावहु । तौ तुम अ-
पने करहि जिँवावहु । भोजन सबखैहैं मुंहसांगे । पूजतसुरपति तिनके
आगे । मेरीकही सत्यके मानहु । गोबर्द्धनकी पूजा ठानहु । सूरश्याम
कहिकहि समुझायो । नन्दगोप सबके मनआयो १६ सुरपति पूजा
मेदि कन्हाई । गोबर्द्धनकी करत पुजाई । पाँचदिनालीं करीमिटाई ।
नन्दमहर घरकी ठकुराई । जाके घर धनि महरियशोदा । अष्टसिद्धि
नवनिधि चहुँकोदा । घृतपकबहुतभांति पकवाना । व्यंजनबहुको करै
बखाना । भोगअन्न बहुभार सजाई । अपने कुल सब अहिर बुलाई ।
सहस शकटभरि भरतमिटाई । गोबर्द्धन की प्रथम पुजाई । सूरश्याम
यह पूजाठानी । गिरिगोबर्द्धन की रजधानी १७ ब्रजघरघर सब भोजन
साजत । सबकेद्वार बधाई बाजत । शकटजोरि लैचले देवबलि । गो-
कुल ब्रजबासी सब हिलिमिलि । दधिलीन्ही मधुसाजिमिटाई । कहै
लगी कहीं सबैबहुताई । घरघरते पकवान चलायै । निकसि गांवके
खैहै आयै । ब्रजबासी तहँ जुरे अपारा । सिंधुसमान न वार न पारा ।
पैछेचलन नहीं कोउपावत । शकटचले सबभोजन आवत । सहसशकट
चले नन्दमहरके । अवर शकट कितने घरघरके । मूरदासप्रभु सहिमा
सागर । गोकुल प्रकटहैं हरिनागर १८ एक आवतघरते चलिधाय ।
एकजात फिरि घरसमुदाय । एकटेरत एक दोरे आवत । एकगिरावत
एक उठावत । एककहत आवहुरेभाई । बैलदेतहैं शकट गिराई । कौन
काहिको कहै सँभारैं । जहाँ तहाँ सबलोग पुकारैं । कोउ गावै कोउ
निर्ततआवै । श्याम सखासंग खेलतभावै । मूरदासप्रभु सबकेनायक ।
जो मनधरैं सो करिबे लायक १९ सजिअङ्गारचलीं ब्रजनारी । युव-
तिन भीरभईअतिभारी । जगमगात अगाधत प्रतिगहने । सबकेभाव

दरश हरि लेहने । यहिसम देखन को सब आई । देखति यकरक
कुंवरकन्हाई । वहनहिं जानति देवपुजाई । केवल प्रयासहिं में लव
लाई । को मगजात कहाँको बोलत । नन्दसुवनते चित नहिं डोलत ।
सूर भजै हरि जो उग्रहि भाऊ । मिततताहि प्रभु तेहि सुभाऊ २०
नन्दगोप उपनंद गये तहँ । गिरि गोवर्द्धन देव बड़े जहँ । शिखर देखि
सब रीझे अनमन । रंगलकहत आजुहि अचरज बन । अति ऊँचे गि-
रिराज बिराजत । कोटि मदन निरखत कवि लाजत । पहुँचेशकर्तन
भरिभरि भोजन । कोउ आये कोउ नहिं कहूँ खोजन । तिनको काज
अहीर पढाये । बिलंब करहु जनि तुरत धवाये । आवत सारग पाये
तिनको । आतुर ह्वै बोले नंदजिनको । तुरत लिवाय तिनहिं तहँ आये ।
महर मनहिं अतिहृय बढ़ाये । सूरदास प्रभु तहँ अधिकारी । पूजत हैं
पूजा परकारी २१ आय जुरे सब ब्रजके बासी । डेरापखड कोश चौ-
रासी । एक फिरत कहूँ ठौर न पावैं । रस्तेपर आनन्द बढ़ावैं । कोउ
काइसों बैरन ताके । बैठन मन भावत जहँ जाके । खेलत हंसत करत
हल । जुरे लोग जहतहां अकूहल । नंद कछो सब भोगसंगावहु ।
अपने अपने सबलै आवहु । भोग बहुत दृषभानहिं घरको । को कहि
वरगौ अतिहिअवरको । सूरप्रयास जब आयसु दीन्हों । बिप्रबोलाय
नंद तब लीन्हों २२ तुरततहां सब बिप्रबोलाये । यज्ञारम्भन तहां क-
राये । सामवेद द्विज गाव करत तहँ । देखत सूर बिषके अम्बर महँ ।
सुरपति पूजा तबहिं मिराई । गिरि गोवर्द्धन तिलक चढ़ाई । कान्ह
कछुगिरि दूध न्हवावहु । बड़े देवता इनहिं मनावहु । गोवर्द्धन दूधहि
नहवाये । देवराजकहि माथ नवाये । नयोदेवता कान्ह पुजावत । नर
नारी सब देखन आवत । सूरप्रयास गोवर्द्धन थाप्यो । इन्द्र देखि रिस
करि तब काँप्यो २३ देखि इन्द्र मन गर्वबढ़ाये । ब्रजजोगति मेको
बिसरायो । अहिर जाति ओकी मति कीन्ही । मेरी पूजा गिरि को
दीन्ही । पूजत गिरिहि कहा मति आई । गिरि समेत ब्रजदेउ बहाई ।
देखौधौं कितनो सुख पैहें । मेरे मारत काहि मनैहें । पर्वत तब इनको
को राखत । बारबार यह कहि कहि भाँयत । पूजा गिरि अति प्रेम
बढ़ाये । सपने को सुखलेत मनाये । सूरदास सुरपति की बानी । ब्रज-

४२० सरसागर गोवर्धनलीलादूसरी रागकल्पद्रुम ।

बोरो परलैकेपानी २४ प्रयाम कह्यो तब भोजन लयावहु । गिरि आगे
सब आनि धरावहु । सुनत नन्द तहँ खाल बुलाये । भोग सामग्री सबै
संगाये । यदरसके बहु भांति मिठाई । अन्नभोग अतिही बहुताई । दण्ड-
जन बहुत भांति पकसायो । दधिलोनी मधुमाठ धरायो । दहीबरा ब-
हुते पकसायो । चन्दहिंसम पटरते पायो । अन्नकूट जैसा गोवर्धन ।
अस पकवान धरेचहुँकोदन । पकसे भोजन प्रार्तिह ते सब । रबि साथे
ते हरकिगयो अब । गोपनि कह्यउप्रयाम ह्यां आवहु । भोगधखउ सब
गिरिहि जेवावहु । सुरप्रयाम आपुनहीं भोगी । आपुहिंसाया आपुहि
योगी २५ कान्ह कह्यउ नंद भोग लगावहु । गोप सहा उपनन्द बुला-
वहु । नयन मंदि करजोरि मनावहु । प्रेमसहित देखेहि चढावहु । मन
में जेक खटुक जिनि राखहु । दीन बचन मुखते तुम भावहु । सेही
बिबि गिरि परसन ह्वै हैं । सहस भुजाधरि भोजन खैहैं । सूरदास प्रभु
आप पुजावत । यह महिमा कैसे काउ पावत २६ प्रयाम कही सोई
सोइमानी । पूजाकी बिबि अब हमजानी । नयनमंदि करजोरि बुला-
यो । भगव भक्तियों भोग लगायो । बहो देव गिरिराज सर्वानके । भो-
जनकरहु कृपाकरि करिके । सहसभुजाधरिदर्शनदीनों । जैजै धुनितव
देवनकीनों । भोजन करत सर्वानकेआये । सुर नर मुनिसब देखनलागे ।
देखि थकितसब ब्रजकी बाला । देखत नन्द गोपसब खाल । सुरप्रयाम
जनके सुखदाई । सहस भुजा धरे भोजन खाई २७ जेवत देवनन्द मुख
पाये । कान्ह देवता प्रकट दिखाये । ब्रजबासी गिरि जेवत देखैं । जीवन
जन्म सुफल करि लेखैं । ललिता कहति राधिका आगे । जेवत कान्ह
नन्द करलागे । मैं जानीहरिकी चतुराई । सुरपति मेरि आपुबलिपाई ।
उत जेवत इत बातन लागे । कहत प्रयाम गिरि जेवन लागे । मैं जो बात
कही सो आई । सहसभुजा धरे भोजनखाई । औरदेवइनकी सरिनाहीं ।
इत बोधत उतभोजनखाहीं । सूरदासप्रभुकी यहलीला । सदाकरतब्रजमें
यहकीला २८ यह कबिदेखि राधिका भली । बातकहति सखियानिसों
फूली । आपुहि देवाआप पुजेरी । आपुहि जेवत भोजन हेरी । अति आ-
सुर जेवतहैं भारी । एक दृयभानि बिलोचनि हारी । नासताहि बद-
रौला नारी । तांकी बलि लइ भजापसारी । उतगिरि सबैखात बलि

सूरसागर गोवर्द्धनलीलादूसरी रागकल्पद्रुम । ४१२

भारी । बदरौला की बाल सचिकारी । सूरदास प्रभुजेंबन हारी । गिरि
वपुरे सां कौन अधिकारी २६ इतिह प्रयाग गोपनि भंग टाढ़े । भो-
जन करत प्रभिक सचिवाढ़े । गिरितन शोभा प्रयास बिराजै । प्रया-
सहिं छवि गिरिवर की छाजै । गिरिवर उरहि पितांबर डारै । मोलिन
की माला उरभारै । अंगभूषण प्रवर्णनि मणि कुण्डल । मोरसुकुटांशर
अलक हैं भुण्डल । छवि निरखति सब गोपकुमारी । गोवर्द्धन छवि
प्रयास तुम्हारी । सूरप्रयास लीला रसनायक । जन्म जन्म भक्तन सु-
खदायक ३० भोजन करत देवभये परसन । सांगहु नन्द तुम्हारे जो
मन । भलीकरी तुमसेरी पूजा । सेवक तुमसे और न दूजा । जोइ सांगै
साइफत हम देंहैं । जहाँ भोव ताही पैरै हैं । मैं सेवावश भयों तुम्हारे ।
जोफलचाहो लेहुसवारे । यह सुनि चकतभये नरनारी । भोजन कियो
प्रथमही भारी । अवदेखौ सुखदात कहत हैं । सेसे देव कहीं त्रिभुवन
हैं । कान्ह कह्यो कछु सांगहु इनसों । गिरि देवता देव परसन सों ।
सूरप्रयास देवता आपुहैं । ब्रजजनके ये हरत ताप हैं ३१ नंद कह्यउ कह
सांगै स्वामी । तुम जानत सब अन्तर्यामी । अष्ट सिद्धि नवनिधि तुम
दीनो । कहा सिंधु तुम्हरोई कीनो । कुशल रहैं बलराम कन्हारै ।
इनहीं कारणा करत पुजाइ । देवनि की मति गिरिवर तुमहो । जहाँ
तहां व्यापक परगा हो । तुम हर्षी तुमकर्ता सबके । देखि थकित
नरनारि नगरके । बड़ो देवता प्रयास बतायो । प्रकट भयेसब भोजन
खायो । सूरप्रयास के जो मनआवै । स्वइ स्वइ नाना रूप बनावै ३२
सांगिलेहु कछु और पदारथ । सेवा सबैभई अबस्वारथ । फल सांग्यो
बलराम कन्हारै । ये दोऊ रहैं कुशल सदाइ । इनहीं ते तुम हमको
जान्यो । तब तुम गिरि गोवर्द्धन जान्यो । करत अबिधा इन्द्र पुजाइ ।
सेरी दीनी है ठकुराई । कान्ह तुम्हारो मोक्षो जाने । इनको रहै तुम
सबमाने । इन्द्र आयचाहिहैं ब्रज ऊपर । यह कहिहैं नहिं राखों भूपर ।
नेक कछु नहिं वासों हैंहैं । प्रयास उठाय मोहिं तब कहैं । सूरप्रयास
गिरिवर की बानी । ब्रजजन सुनत सत्य करि मानो ३३ कौतुकदेखत
सुरनर भूले । रोस रोस गद गदसबफूले । सुरबिमान सुमननि बर्याये ।
अथ धुनि शब्द देस नर गाये । देव कह्यो ब्रज वासिन सों तब । पूजा

४१२ सुरसागर गोवर्द्धनलीलादूसरी रागकल्पद्रुम ।

भलीकरी मेरीसब । जाहु सबै मिलिसदन करौसुख । प्रयास कहे गिरि
गोवर्द्धन सुख । खाल करत अस्तुति सब ठाढ़े । भाव प्रेमसबके चित
बाढ़े । भवन जाहु कहे श्री मुखबानी । भोजन शेष प्रयास करआनी ।
वांछि-प्रसाद सबनिकोदीनी । ब्रजनारी नर आनंद कीनी । सूरश्याम
गोपनि सुखकारी । चली कह्यो ब्रजकी नरनारी ३४ दोउ करजोरि
भये सबठाढ़े । धन्यधन्य भक्तनको चाढ़े । तुम भोक्ता तुमही प्रभुदाता ।
अखिल ब्रह्माराड लोकके ज्ञाता । तुम को भोजन कौन करावै । हित
केबश तुम को कोउ पावै । तुम लायक हमरे कह्यु नाही । सुनत
श्याम ठाढ़े सुसकाहीं । ललितसखी देवता चीन्हें । चन्द्रावलि राधे
कहि दीन्हें । देव बड्यो यह कुंवर कन्हाई । कृपाजानि हरि ताहि
चिन्है । सूरश्याम कहिप्रकट सुनाई । भये तत्त भोजन बनराई ३५
परसत चरणा चलत सब धरको । जातचले सब घोष शहरको । मुख
समेत मग जात चलेसब । दूनी भीर भई तबते अब । कोउ आगे कोउ
पाछे आशत । मारग में कहूँ ठौर न पावत । प्रथमहि गये ठहर तिन
पाये । पाछे लोगनिजिय पछिताये । घर पहुँचे अबहीं नहिंकोई ।
मारगमें अटके सबलोई । डेरा देखउ कोश चौरासी । इतनेलोग जुरे
ब्रजबासी । पैड़े चलननहीं कोउपावत । कतिकदूरिब्रजपूछत आवत ।
सूरश्याम सुरसागर नागर । नूतन लीलाकरी उजागर ३६ कोउ पहुँचे
कोउमारग माहीं । बहुत गयेघर बहुतक जाहीं । काहूकेमन कहूँ दुख
नाहीं । परस्परहि हँसि हँसि लपटाहीं । आनंद करत सबै ब्रज आये ।
निकटहि आयलोग नियराये । भीरबहुत भइखोरि जहां तहँ । जैसे नदी
मिलत सागर सहँ । नर नारी सरिता सब आगर । सिंधु मनों यह भयो
उजागर । गोप महारि सब रतन कुमारी । चन्द्रवर्दान राधा सुकुमारी ।
सूरश्याम आये नंदबाला । पहुँचे घरनि आय नंदबाला ३७ बड्यो देवता
कान्ह पुजायो । खाल गोप हँसि अंक सितायो । कान्ह धन्य धनि
यशुमति जायो । धन्य नन्द जिन तुम सुतपायो । धनिधनि देवप्रकट
दरशाये । सांगि सांगिके भोजनखाये । पूजा मेटि इन्द्र गिरि पड्यो ।
परसन हमहिं सदा प्रभु हूज्यो । कहा इन्द्र बपुरो कहि लायक । गिरि
देवता सर्वाहि के नायक । सूरदास प्रभुके सुरा सेसे । भक्तनि बश दु-

सुनि को जैसे उठ हरि सबके मनयह उपजाई । सुरपति निन्दत गिरि-
रिहि बड़ाई । बरय बरय प्रति इन्द्र पुजाई । कवहुं परसन भये न
आई । पूजिरहे सुअबिर्या मुरपति । सब मुख यह बानी घरघर प्रति ।
दडे देखे ये गिरिगोवर्द्धन । यहै कहत गोकुल ब्रजपुरजन । तहां दूतयक
इन्द्र पठायो । ब्रजको मुख देखनवह आयो । घरघर बात कहत नर
नारी । दूत सुन्योक्षो श्रवणा पसारी । मानत गिरि निन्दति सुरपति
को । हंसत दूत ब्रज लोगनि मति को । मूरसुनत दूतनि रिसपायो ।
उठितुरतहि सुरलोकाहि आयो ३९ ब्रह्म दई जाको ठकुराई । ताकी
मति इनके मन आई । शिव बिरंचि जाको कहें लायक । जाके हैं
मघवा से पायक । यह कहतहि आये सुरलोकाहि । पहुंचे जाय
इन्द्र के ओकाहि । दूतनि बैसिय जाय सुनाई । पंछि उठे ब्रज की
कुशलाई । दूतनि ब्रजकी बात सुनाई । तुमहिं मेरि पड़यो गिरिजाई ।
तुमहिं निन्दि गिरिवरहि बड़ाई । यह सुनतहि रिस देहकँपाई । सुर-
प्रयास यह बुद्धि उपाई । ज्योंजाने ब्रजमें यदुराई ४० ग्वालनिमोसां
करी ढिठाई । मोको अपनी जाति दिखाई । तीतिसकोरि सुरनि को
राई । तीनभुवन भरि चलति बड़ाई । साहिव सेां जोरो करे धाई ।
ताको नहिंकोऊ पतियाई । इन अपनी परतीति चलाई । काहूइनहिं
दियो बहँकाई । ऐसी मति इन अबकेपाई । काके शरणा रहेंगेजाई ।
इन दीनों सोकों बिसराई । नन्द आपनी प्रकृत गाँवाई । जानी बात
बुढाई आई । अहिर जाति कोऊ नहिं पतियाई । सात पिता नहिं
माने भाई । जानिबूझि इनकरी ढिठाई । मेरोबलि पर्वतहि चढाई ।
मुरदास सुरपति रिसपाई । कीड़ीतनज्यों पाँख उपाई ४१ मोको निंद
पर्वतहि बंस्त । घाराकपट पंछिज्यों फन्दत । मरणाकाल सेसी बुधि
होय । कछू करत कछू वेवह होय । खेलत खात रहे ब्रज भीतर ।
नान्हे लोग तनिक धन इतर । समय समय बरयों प्रतिपालों । इनकी
बुधि इनको अबधालों । मेरे मारत कौन राखिहै । अहिरन के मन
यहै काखिहै । जो मन जाके सोइफल पावै । नीब लगाय आंव क्यों
खावै । बियको ठूस बियहिफल फलिहै । तामेंदाख लहौ क्यों मिलि
है । अग्नि बरत देखत करनावै । कहा करै तेहि अग्नि जरावै । सुर-

४१४ सुरसागर गोवर्द्धनलीलादूसरी रागकल्पद्रुम ।

दास यह सब कोउजानै । जो जाको सो ताको मानै ४२ पर्वत पहि-
लहि खोदि बहाऊं । बज्रनि गारि पताल पठाऊं । फूलि फूलि उग्रहि
पजा कीन्हों । नेक न राखों ताको चीन्हों । नन्दगोप न प्रननि यह
देखैं । बड़े देवता को सुखपेखैं । निन्दत मोहिं करैं गिरिपूजा । जासों
कहत औरनहिं पूजा । गर्वकरत गोवर्द्धनगिरिको । पर्वतमांझ आहि
वह फिरिको । डूंगर को बल उतहिं दिखाऊं । तापाछे ब्रजखोदि
बहाऊं । राखोंनहिं काहू सब मारों । ब्रजगोकुल को खोजनिवारों ।
को जानै कहैं गिरि कहैं गोकुल । भुवपर नहिं राखों उनको कुल ।
सूरदास यह इन्द्र प्रतिज्ञा । ब्रजवासिन सबकरी अवज्ञा ४३ सुरपति
क्रोधकियो अतिभारी । फरकत अधरनयन रतनारी । भूतनि बुलाये
दे दे गारी । मेघन ल्याबहु तुरत हंकारी । सक कहत धाये सैचारी ।
अति डरपैं तनकी सुविहारी । मेघवर्त्त जलवर्त्त बुलावहु । सेनासाजि
तुरतलैआवहु । कापर क्रोधकियो असरापति । महाप्रलय जियजानि
डरेअति । मेघन सों यह बात सुनाई । तुरत चुलो बोले सुरराई । सेना
सहित बुलायेतुमको । रिमकरि तुरत पठाये हमको । बेगिचलहु कहु
बिलम्ब न लावहु । हमहिं कह्यउ अबहीं लै आवहु । मेघवर्त्त सब सैन
बुलाये । महाप्रलय के जे सब आये । कहुहरये कहु मनहिं सकाने ।
प्रलय आयकी हमहिं भुलाने । मेघवर्त्त जलवर्त्त बारिवर्त्त । अनिल-
वर्त्त नलवर्त्त बजवर्त्त । बोलतचले आपन बानी । प्रभु सन्धुरख सब प-
हुँचे आनी । गरजि तरजि घहरातहि आये । सूरदेव कहि साधनवा-
ये ४४ चितवत हे सब गये भुराई । सकुच कह्यो कापर रिसराई ।
समाकरहु आयसु हम पावहिं । जापर कहे ताहिपर धावहिं । सैन
सहित प्रभु हमहिं बुलाये । आज्ञा सुनत तुरत उठिवाये । सेना कौन
जाहि प्रभु कोपे । जीवनाम सब तुम्हरोह रोपे । सूरकही यह मेघनि
बानी । यह सुनि सुनि रिस कहुकबभानी ४५ मेघनिसें बोलेसुरराई ।
अहिरनि मोसों करी ढिठाई । मेरी दीनी करत बडाई । जानि बुझि
म्वहिं दियो भुलाई । सदाकरत मेरी सेवकाई । अब सेवत पर्वत को
जाई । यहीकाज तुमको हँकसायो । भली करी सेनालै आयो । गाय
गोप ब्रज सबै बहावहु । पहिले पर्वत खोदि ढहावहु । जब यह सुनी

इन्द्रकीवानी । मेघनिकेसन धीरजआनी । सूरदास यहसुनिघनतमके ।
 कापर कोधकारत प्रभु यमके धर् रिसलायकतापर रिमकीजै । जेहि
 रिनते प्रभु देहीं छीजै । तुमप्रभु हमसेसेवकजाके । सेला औनरहे तुम
 ताके । छिनहींमित्रजधोयवहावै । डुंगरको नहिँनाउवचावै । आपससा
 करिये दिविराई । हमकरि हैं उनकी पहुनाई । यह सुनि कै हरियत
 चितकीनों । आदर सहित पानफिरदीनों । प्रथमहि देहुपहारवहाई ।
 मेरीवलि उनहीं सबखाई । सूर इन्द्र मेघनि समुभावत । हरयि चले
 घन आदर पावत ४७ आयसुपाय तुरतही वाये । अपनी सेना सबनि
 बुलाये । कह्यो सबनि ब्रजऊपरधावहु । घटाछोर करिगगनछपावहु ।
 मेघवर्त जलवर्तक आगे । और मेघ सब पाछेलागे । गरजि उठे ब्रज
 ऊपर जाई । शब्दकियो आघातसुनाई । ब्रजके लोगडरे अतिभारी ।
 आजुघटा दिखियतहै कारी । देखत देखत अतिअधिकायो । नेकहि
 में रबिगगन छपायो । सेसे मेघ कबहुँ नहिँदेखे । अतिकारे काजरअ-
 वरेखे । सुनहुँसूर यहमेघडरावन । ब्रजवासीसबकहतभयावन ४८ गरजि
 गरजि ब्रज घेरत आवै । तडपि तडपि चंपला चमकावै । नरनारी सब
 दखतटाढ़ । यहवादर परलयक काढ़ । दरदरात घह
 गोपीरवाल भये औरै गति । कहा होन अबहीं अब चाहत । जहंतहुँ
 लोगयहै अवगाहत । खन भीतर खनबाहर आवत । गगनदेखि धी-
 रज बिसरावत । सूरश्याम बहकरी पुजाय । ताते सुरपति चढेउ रि-
 साय ४९ फिरत लोग जहँ तहँ बितताने । कोहै अपने कौन बिराने ।
 रवालगाये जे धेनु चरावन । तिनहिँ पखुउ बनसंभपरावन । गायबच्छ
 कोउ नहीं सँभारै । प्रलयकालके जलद निहारै । भागे आवत ब्रजही
 तनको । बिपतिपरी अतिबब रवालनको । अन्वधुन्धमगकहूँ न सूझै ।
 ब्रजभीतर ब्रजही को बुझै । जैसे तैसे ब्रज पहुँचानत । अटकरही अट-
 कर करिआनत । खोजत फिरैं आपने घरको । कहा भयो आघोय
 शहरको । सेवत डोलैं घरहि न पावैं । घरदारे घरको बिसरावैं । सूर-
 श्याम सुरपति बिसरायो । गिरिके पूजे यह फलपायो ५० यमुना
 जलहि गईजे नारी । डारिचलीं शिर सागरि भारी । देखों में बालक
 कतकाड्यो । सक कहति आंगन दबिसाड्यो । सक कहति मारग

४१६ सूरसागर गोवर्द्धनलीलादूसरी रागकल्पद्रुम ।

नहिं पावति । एकसामुहे बोलि बतावति । ब्रजकेबासी सब अकुलाने ।
कालिहि पूज्यो फल्यो बिद्वाने । कहारहे अब कुंवर कन्हाइ । गिरि
गोवर्द्धन लेहु बूलाई । जेवन सहस भुजाधर आवै । आवहु भुज हमको
दिखरावै । येदेवता खातही लोके । पाछे पुनि तुम कौनकहांके ।
सुरप्रयास सपने प्रकराये । घरको देव सबनि बिसराये ५१ गरजत
घन अतिही घहरावत । कान्ह सुनत आनन्द बढावत । कौतुक देखत
ब्रज लोगन के । निकट रहत संगही संग जनके । यकसेतत घरके सब
बासन । लीने फिरत घरहि के पासन । एक कहति जियकी नहिं
आशा । देखत सबै दुष्टकी नाशा । सुरप्रयास जानत ये गासा । कह
पानी कह करे हुतासा ५२ मेघवर्त्त मेघन समुझावत । बारबार गिरि
तनहि बतावत । पर्वत पर बर्यहु तुमजाई । यहै कहो हमपर सुरराई ।
सेसेदेहु पहाड़ बढाई । नाउँ रहे नहिं ठौर जनाई । ताकोफल पावै गिरि-
राई । जेवत कालिह अधिक रुचिपाई । सलिल देहुजे लया बुझाई ।
खायोहै बहुपेट अघाई । दिनाचारि रहते जग ऊपर अब न रहन
पावैगे भूपर । सूरमेघ सुरपतिहि पढाये । ब्रजके लोगनि तुमहिं बि-
हाये ५३ बरखत है घन गिरिके ऊपर । देखि देखि ब्रजलोग करत
डर । ब्रजबासी सबकान्ह बतावत । महाप्रलय जलगिरिहि ढहावत ।
भरहरात भरपत भरलावत । गिरिहिधाय ब्रजऊपर आवत । बिकल
देखि गोकुलके बासी । दर्शदियो सबकोअबिनाशी । अबिनाशीको
दर्शनधायो । तबसबमन परतीत बढायो । नन्दयशोदा सुतहित जाने ।
औरसबै मुखअस्तुतिगाने । बर्यतगिरि भरपतब्रजऊपर । सो जलजहँ
तहँ परत है भूपर । सूरदास प्रभु राखिलेय अब । जैसेराखे अघावदन
तब ५४ राखिलेहु अब नन्दकुमार । गोसुत गाय फिरत बिकरार ।
बर्यतबुन्द लगतजनु शायक । राखिलेहु ब्रज गोकुल नायक । तुमबिन
कौन सहाय हमारे । नन्दसुधन अब शरणा तुम्हारे । शरणा शरणा जब
ब्रजजन बोले । धीरवचन देने दुख सोले । तब हँसिबोले कृष्णामुरारी
गिरि करधरि राखीं नरनारी । सुरप्रयास चितये गिरिवर तन । बि-
कलदेखिगो गोसुतब्रजजन ५५ गोवर्द्धन लीनों उचकाई । देखि बिकल
नरनारि कन्हाइ । अपने मुख ब्रजजन बितताये । बूंद क्युक ब्रजपर

सूरसागर गोवर्द्धनलीलादूसरी रागकल्पद्रुम । ४१७

बर्षाये । वे डरपत आपुन बर्षतमन । राखेरहे जहांतहँ ब्रजजन । घरि-
क देखि मनहीं मुखदीन्हें । वामभुजा गिरिवर करलीन्हें । सूरश्याम
गिरिकर ज्यहिराख्यो । धीर धीरकाहि सबसों भाख्यो ५६ श्याम
धख्यो गिरिगोवर्द्धन कर । राखिलिये ब्रजके नारीनर । गोकुल ब्रज
राख्यो सब घर घर । आनंद करत सबै ताहीतर । बर्षत मुशलधार ।
सघबाबर । बूंद न आवत नेकहु भूषर । धार अखगिडत बर्षतहै भर ।
कहतमेघ धौं बहुब्रज गिरिवर । सलिल प्रलयको दूस्त तरतर । बजत
शब्द बदरनको घर घर । वे जानत जलजात है दरदर । बीचाहि जरत
जात जल अस्वर । सूरदासप्रभु कान्ह गर्बहर । बर्षत कहतगयो गिरि
को जर ५७ बोलिलिये सब ग्वाल कन्हाइ । टेकहुगिरि गोवर्द्धनराई ।
आजु सबैमिलि होहु सहाई । हंसतदेखि बलराम कन्हाइ । लकुट लये
करटेक न जाई । कहत परस्पर लेहु उठाई । बर्षत इन्द्र महाझरलाई ।
अतिजल देखि सखा डरपाई । नंद नंदन बिनको गिरिधारे । सेसे बल
बिनु कौन सँभारे नखके सिरे कौन पुनि राखै । बारबार कहि कहि
यह भाखै । सूरश्याम गिरिवर करलीनों । बर्षतमेघचक्रत मनकीनों ५८
वात कहत आपुस में बादर । इन्द्र पढाये करिहम आदर । अब देखि-
यत कछु होत निरादर । बर्षि बर्षि घनभे मन कादर । खीभत कहत
मेघ सबहीसों । बर्षि कहा कीन्हें तबहीसों । महाप्रलयके जलकहँ
सोवत । डारिदेहु ब्रजपर कहतोक्त । क्रोध सहितफिर बर्षनलाये ।
ब्रजबासी आनंद अनुरागे । ग्वालकहत तुम धन्यकन्हैया । वाम भुजा
गिरि तियो उठैया । सूरश्याम सरि कोऊनाहीं । बर्षत घन गिरिदेखि
खिसाहीं ५९ प्रलयमेघ आये उमडाने । आपसहीमें सबैरिसाने । सात
दिवस जल बर्षि बुढाने । चक्रत भये तन सुरति भुलाने । फिरि देखत
जलकहां डराने । महाप्रलयको सबनिभराने । भूरिभूरि बादर बि-
तताने । बूंदनहीं घननेक वचाने । जलद आपुनको धृगकर माने । फिरि
सबचले अतिहि बिकलाने । सूरश्याम गोवर्द्धनराने । मूरखइन्द्र अजहुं
नहिँमाने ६० मेघचले मुखफेरि अमरपुर । करीपुकार जाय आगेसुर ।
अमते टूटि गये सबके उर । जलबिन भये सबै धनधंधुर । कामारोकी
प्ररसा गवारो । हमसों कहा कहेउ अवगारो । जहँ तहँ बादर रोवत

४१८ मूरसागर गोवर्द्धनलीलादूसरी रागकल्पद्रुम ।
 बोले । अमअपनों प्रभु आगे खोले । सातदिवस नहिं मिटी लगारा ।
 बर्षा सलिल अखगिडत धारा । महाप्रलय जलनेक न उबरेउ । ब्रज
 बासिन नीके अब निधरेउ । वैसेइ गिरि वैसेइ ब्रजबासी । नेकबंदनहिं
 धरणा प्रकासी । मूर सुनत मूरपति परेउ उदासी । देखहु यों आये
 जलरासी ६१ चकृतभयो ब्रजबात सुनाई । पुनि पुनि पंकृत मेघबुलाई ।
 कहां गयो जल प्रलय कालको । कहा कहीं सब तन बिहालको ।
 कहाकरैं अपनो बलकीनो । व्याकुल रोय रोय तबदीनो । दराड सक
 बरखे मनलाई । पूरगाहोत गगन लों आई । पर्वतमें कोहै अवतारा ।
 मूरपति मन यहकरत बिचारा । मूरइन्द्र मूरगाहा हंकराये । आज्ञा सु
 नत तुरत सबआये ६२ मूरपति आगे भये सबटाढ़े । चिन्ता सबहिनके
 मन बाढ़े । कौनकाज मूरराज बुलाये । सकुच सहित पंकृत सबआये ।
 कहाकहों कछु कहत न आवैं । मघवनि की गति मूरनि बतावैं । ब्रज
 बासी मोको बिसरायो । भोजनहै अब गिरिहि चढायो । मोको मेरि
 पर्वतहि थाप्यो । तब मैं थरथराय रिसिकांथ्यो । मूरदास यहमूरनि
 सुनाई । ताकारज तुम लिये बुलाई ६३ मूरनिकही मूरपतिके आगे ।
 सन्मुख होत सकुच हमें लागे । सकुचत कतसो बात सुनावहु । नीके
 करि मोको समुभावहु । नीकी भांति सुनौ मूरराई । ब्रजमें ब्रह्म प्रक
 भयेआई । तुम जानत जब धरणा पुकारी । पापहिपाप भई अतिभारी ।
 पौढे शेषसंग श्रीधारी । ते ब्रजभीतर रहे वपुधारी । ब्रह्मकथा कहि
 आदि पसारी । तिनसों हम कीनी अधिकारी । मूरदासप्रभु गिरिका
 धारी । यह सुनि इन्द्र डरेउ अतिभारी ६४ यहमोको तबहीं न सुनाई ।
 मैं बहुते कीनी अवसाई । पूरगाब्रह्म रहे ब्रज आई । काहूने मोहिंसुनि
 न दिवाई । मूरनिकही नहिं करी भलाई । यहसुनि अमरगाये सरसाई ।
 सुनहु राज हम जानि न पाई । अब सुनिये आपन मन लाई । ब्रजहि
 चलो नहिं और उपाई । समिहैं प्रभु देवनके राई । वैहैं कृपासिंधु क
 रूणाकर । समा करहिंगे श्रीसुन्दरवर । और कछु मनमें जितनगनद
 हम जो कहैं सत्य करि मानहु । मूर मूरनि यह बात सुनाई ।
 मूरगा चल्या अकुलाई ६५ जब जान्यो ब्रजदेव मूरारी । उतरि गा
 तब गर्वसुमारी । व्याकुल भयो डरेउ जिय भारी । अनजानत की

आविकारी । बेठिरहे ते नहिं बनिआवै । सेसो को अब मोहिंबचावै ।
 बारबार यह कहि पकतावै । जाउं शरणा बलमनहि धरावै । जायघरों
 चरगानि शिरधारों । कीमारे कीमोहिं उबारों । अमरनि कहेउ करहु
 असवारी । मेरावतको लेहु हँकारी । सुरशरणा सुरपति चलयो धाई ।
 लिये असरगगा संग लगाई दँद करत विचार चलयो सनमुख ब्रज ।
 लटपटात पगधरत धरसागज । कोटि इन्द्र वाकेरे मगिरज । ब्रजअ-
 वतार लियो सायातज । उतरि गगनपुहुसीपर आये । ब्रजबासिनसब
 देखन पाये । चकृतभये मन सबनि भसाये । सधैं कौन कहान्ते आये ।
 कहतहुनी लोगन मुखवाता । येई हैं सुरपति सुरजाता । देखि सैन्य
 ब्रजलोग सकाता । यह आयो कीने कहुधाता । सुरपति सैन्य साजि
 ब्रजआयो । सुरप्रयासको देख डरायो ६७ निकटजानि त्यारयो बान्नव
 को । ब्रजबाहर राखे ताहन को । सकुचत चलयो कृष्ण के सन्मुख ।
 कहु आनन्द कहुक मनमें दुख । परेउधाय चरगान सुरराई । कृपासिंधु
 राखो शरणाई । किये अपराध बहुत बिनजाने । प्रभु उठाय लै हँसि
 मुसकाने । श्रीमुख कहेउ उठहु सुरराज । बदन उठाय सकत नहिंलाज ।
 ये दिन वृथा गये बे काज । तुमको नहिं जान्यों ब्रजराज । सुरप्रयास
 लीनों उरलाई । अशरणा शरणा निगम यहगाई ६८ हँसिहँसि कहत
 कृष्ण मुख बानी । हमनाहीं रिस तुमपर आनी । तुम कत अति शंका
 जियजानी । भलीकरी ब्रज बर्ण्योपानी । यहमुनि इन्द्र अतिहि सकु-
 चान्यों । ब्रज अवतार नहीं मैं जान्यों । राखिराखि त्रिभुवनकेनाथा ।
 नहिं मोते कोउ और अनाथा । फिरि फिरि चरणा धरत लै साथ ।
 समा करहु मोहिं राखहु साथ । रविआगे खद्योत प्रकाशा । मगि
 आगेज्यों दीपकनाशा । कोटिइन्द्ररचि कोटिविनाशा । मोहिंगरीब
 की केतिक आशा । दीनबचन मुनि भवकेबासा । समाभरेजल परेउ
 हुतासा । अमरापति चरगानि तर लोटत । रहीं नहीं उर में कहु
 खोटत । उभय भुजा करिलियो उठाई । सुरपतिशीश अभय कर
 नाई । हँसिदीनी प्रभु लोग बड़ाई । श्रीमुख कहु करहु मुखजाई ।
 जय जय धुनि देवनि मुखगाई । धन्य धन्य जनके मुखदाई । शिव
 बिरंचि चतुरानन कारद । गौरी सुत दोऊ संग शारद । रविशशि

४२० मूरसागर गोवर्द्धनलीलादूसरी रागकल्पद्रुम ।

बरुणा अनल यमराजा । आजुभये सब पूरणाकाजा । अशरणा शरणा
सदातुव बानों । यहलीला प्रभु तुमहीं जानों । माता सेां सुतकरै दि-
ठाई । माताफिर ताको मुखदाई । ज्यों धरणी हलखोदि बिनाशै ।
सनमुख शतगुणा फलहि प्रकाशै । कर कुटारलै तरुहि गिरावै । वह
काटै वह छायाकावै । जैसे दशनजीभ दलिजाई । तब कासेां वहकरै
रिसाई । धनिव्रज गोकुल धनि वृन्दावन । धनियमुना धनिलता कुंज
धन । धन्यनंद धनि जननि यशोदा । बालकेलि हरिके रस मोदा ।
अस्तुति सुनि मन हर्य बढ़ायो । साधु साधु कहि सुरनि सुनायो ।
तुमहिं जाय जब मोहिं जगायो । तुमरेहि काज देह धरिआयो । तुम
राखौ असुरनि संहारों । तनुधरि धरणी भार उतारों । आवत जात
बहुत अमपायो । जाहुभवन करि कृपापढायो । कर शिरधरिधरि चले
देवगन । पहुँचे अमरलोक आनंद मन । यहलीला सुरधरनि सुनाई ।
गाइ उठीं सुरनारि बधाई । अमरलोक आनंद भये सब । हर्य सहित
सुरपति आये जब । सुरदास सुरपति अति हरख्यो । जयजय धुनिमुम-
ननि ब्रजवरख्यो ईह हरि करते गिरिराज उतारेउ । सातदिवस जल
प्रलय संहारेउ । ग्वाल कहत कैसे गिरि धारेउ । कैसे सुरपति गर्व
निवारेउ । बजायुव जल बरिय सिरान्यो । परेउ चरणा जब प्रभुकरि
जान्यो । यह करतूति करत तुम कैसे । हमसँग सदारहतहै ऐसे । हमहिं
मिले तुम गाय चरावत । नंद यशोदा सुवन कहावत । देखिरही सब
गोपकुमारी । कोटिकास छविपर बलिहारी । करजोरति रवि गोद
पसारे । गिरिवरधर पतिहोहिं हमारे । ऐसा गिरि गोवर्द्धन भारी ।
कबलीन्हेां कब धरेउ उतारी । तनक तनक भुज तनक कन्हारै । यह
कहि उठीं यशोदा माई । कैसे पर्वत लियो उठाई । भुजचापति चुंबति
बलिजाई । गिरिवरधर पतिहोहिं हमारे । हस्त धरि पद बसनाइ ।
इनकी सहिमा काहु न पाई । गिरिवर धरो यहै बहुताई । इक इक
रोम कोटि ब्रह्मगडा । रविशशि धरणा धरति नखखगडा । सबज
जनम लियोके बारा । जहां तहां जल थल अवतारा । प्रकट होत
भक्तन के काजा । ब्रह्मकीटसम सबके राजा । जहँ जहँ गाढ परै तहँ
आवै । गरुड कांछि ता सनमुख धावै । ब्रजही में नितकरत बिहारणा ।

सूरसागर गोबर्धनलीलादूसरी रागकल्पद्रुम । ४२१

यशुमति भावभक्ति हितकारण । यहलीला इनको अतिभावे । देह
धरत पुनि पुनिप्रकटावै । नेक तजतनहिं ब्रजनरनारी । इनकेसुखागिरि
धरत मुरारी । गर्बवन्त मुरपति चढ़ि आयो । बाम करज गिरि टेक
दिखायो । ऐसे हैं भुज गर्व प्रहारी । भुज चुंबति यशुमति सहतारी ।
यह लीला जो नित प्रति गावै । आपन सीखै और सिखावै । मुने
लिखै पढ़ि मनमें राखै । प्रेम सहित मुखते पुनि भाखै । भक्ति मुक्ति
की केतिक आसा । सदारहत हरि तिनके पासा । सहसानन जाको
यश जानै । शेष सहस मुख जाहि बखानै । आदि अन्त कोऊ नहिं
पावै । जाको निगम नेति नितगावै । सूरदास प्रभु सबके स्वामी । श-
रणा राखि मोहिं अन्तर्दयासी ७० ॥ राग सारंग गिरिवर कैसे लियो
उठाय । कोमल कर चापति सहतारी यहकहि लेत बलाय । महा-
प्रलय जलतापर राख्यो ये गोबर्धन भारी । नेकनहीं डोल्यो करपरते
मेरो सुत अहंकारी । कंचनधार दूबदधि रोचन सजितमोर लै आई ।
हरयित तिलक करतिमुख निरखति भुजभरि कंठ लगाई । रिसकरिके
मुरपति चढ़िआयो देतो ब्रजहि बहाई । सुरश्यामसों कहति यशोदा
गिरिधर बड़ो कन्हैया १ तेरे भुजनि बहुतबल होत कन्हैया । बारबार
भुज देखि तनक से कहति यशोदा मैया । प्रियाम कहत नहिं भुजा
पिरानी ग्वालनि कियो सहैया । लकृटनि टेकि सबनि मिलिराख्यो
अरु बाबा नंदरैया । मोसों क्यों रहतो गोबर्धन अतिहि बड़ो वहभारी ।
सुरश्याम यह कहि परमोध्यो देखि चक्षुत सहतारी २ ॥ रागकान्हरो ॥
घर घरते ब्रजयुवती आवति । दधि अक्षत रोचन धरिधारनि हरयि
श्याम ।

एखति छवि अंत अंग श्याम

रूप उरसाहिं दुरावति । नंदसुवन गिरिधरेउ बामकर यह कहिके मन
हरय बढावति । उथहि पूजत सब जन्म गांवायो सो कैसेहु पग लुवन
न पावति । सुरश्याम गिरिधरणा सांगिवर करजोरत कहि ब्रिधिहि
सनावति ३ ॥ राग बिलावल ॥ घरनि घरनि ब्रज होत बधाई । सातबरय
को कंवर कन्हैया गिरिवर धरिजीयो मुरराई । गर्व सहित आयो
ब्रजबोरन यह कहि कहि मेरी भक्ति घटाई । सातदिवस भरि बरधि
सिरानों तब आयो पायत संधाई । कहां कहां नहिं संकट मेटत नर

४२२ मुरसागर गोवर्द्धनलीलादूसरी रागकल्पद्रुम ।

नारी सब करत बड़ाई । मुरश्याय अबके ब्रजराख्यो ग्वाल्करत सब
नंद दुहाई ४ ॥ रागनट ॥ क्यों राख्यो गोवर्द्धन श्याम । अतिऊंचो बिस्तार
अतिहि बह लीनों उचकि करज भुज बाम । वह आघात महापरलय
जल डरआवति मुखलेते नाम । नीकेराखि लियोब्रज सिंगरो ताको
तुमहिं पढायो धाम । ब्रजअवतार लियो जबते तुम इहेकरत निशि
वासरथाम । मुरश्याम बन बन हम कारणा बहुत करत अमनहिं वि-
श्याम ५ राखिलियो ब्रजनंद किशोर । आयो इन्द्र गर्ब करिके बह
सातदिवस बर्यत भयो भोर । बाम भुजा गोवर्द्धन धारेउ अति कोमल
नखहीकी केर । गोपी ग्वाल्गाय ब्रजराखे नेक न आई बंदभकेर ।
अमरापति तब चरगा परोलै जब बातें गइँ युग गुगाजोर । मुरश्याम
कसगाकरि ताको पढैदियो घरमानि निहार ६ ॥ श्रीहरि कान्हरो ॥ आज
दीपति दिव्यदीप मालिका । मनहुँ कोटिरवि चन्द्रकोटि कबिमिति
जोगई निशिकालिका । गोकुल सकल बिचित्रमणि संहित शोभित
भाक भव मालिका । गजमोतिन के चौक पुराय बिच बिच लाल
प्रवालिका । बर शृङ्गार बिरचि राधाज चली सकल ब्रजवालिका ।
भलमलदीप समीप सोंजभरि लेकर कञ्चन थालिका । करि प्रकट
मदन मोहन पियथकित बिलोकि विशालिका । गावत हँसत गवाय
हँसावत पटक पटक करतालिका । नंदहार आनंद बढ्यो अति
देखियत परम रसालिका । मुरदास कुसुमनि मुरबसत करसंपुट करि
मालिका ७ ॥ रागकान्हरो ॥ मुरभी कान्ह जगाय खरि कहि बलमोहन
बैठेहँ हठरी । पिस्तादाख बदास छुहारा खरमा खाभागुंभा मटरी ।
घर घरते नरनारि मुदित मनगोपी ग्वालजुरे बहुठटरी । टरि टरि जब
देत सबनिको लै लै नाम बुलाय निकटरी । देति अशीय सकल ब्रज
भामिनि यशुमति देतिहरय बहु पटरी । मुर रसिक गिरिधर चिर-
जीवो नंदमहर को नाराज नटरी ८ कान्ह जगाय गोपाल मुदित मन
हटरी बैठे गोवर्द्धनधारी । हलधर संग सुबल श्रीदामा गोपगवाल सब
गये सिंगारी । देखन को उसहे मुरनर मुनिरावर सांभभीर भइभारी ।
जय जयकार होत चहुँदिशिते मुरपति करत कुसुम बधारी । कंचन
रतन जटितहीरा नग बिसकरमाराच सुबिधि सवारी । परम

बनी अति सुन्दरि जगमगाति कुहु तिमिर बिदारी । नन्दभवन भरि
धरे बिबिधपक अगन्ति मेवागरी कुहारी । टेरिटेरि जब देति सबनि
को शिव ब्रह्मादिक गोदपसारी । करति आरती मातयशेदा संगल
गावाति सब व्रजनारी । मूररसिक गिरिधर सुख बिलसत वरय वरय
प्रतिपरब दिवारी ६ तातगोवर्द्धन पूजो जाय । मधु मेवा पकवान
मिठाई व्यंजन बहुत बनाय । यह पर्वततृणा ललित मनोहर सदा चरै
सुखगाय । जैसे कान्ह कहैसो कीजै मधवा जाठ खिसाय । भरि भरि
शकटचले गिरि सन्मुख अपने अपने चाय । सुरदास प्रभु आप बल-
भोगि धरि स्तब्ध हरिराय १० ॥ राग बिनाव ॥ कहत गोपाल नन्द
सों पूजहु गिरिराय । बहुबिधि व्यंजन साजिके पकवान बनाय । करो
सतो सब गोपते तुम बोलिपढाय । उपनन्द सहित व्यंभानज सब बैठे
आय । कान्हकहेउ मोसों सपनेमें बोले गिरिराय । अरपो बलिमोको
सबै बाढ़ि हैं बच्छगाय । सबहिन मन आनंद भयो यह भलो उपाय ।
जाकेदने बाढ़िहैं गोधन सुखपाय । चले सबैमिलि सौंजले बहुशकट
जुराय । बिधिसों पूजापजिके सब भोगधराय । देखिइन्द्र अतिकोपि
कै मेघनि झरलाय । मूरश्याम रक्षाकरि गिरिलियो उढाय ११ पूजा
बिधि गिरिराजकी नंदलाल बतावैं । झुंडनि झुंडनि गोपिका मिलि
संगल गावैं । गङ्गाजल सों न्दवाइके दूध धौरी को नावैं । बिबिध
बसन पहिराय के चन्दन लपटावैं । धूपदीप करि आरती बहु भोग
भरावैं । तिलक कियो बीरादिये माला पहिरावैं । खरिकचले लहुरे
बड़ेबेगि खिलावैं । फिरि गिरिधर भोजनकियो सुखसूर दिखावैं १२
रागमाह ॥ साधवजू कांपत डरते अधिक हियो । तुम जु इन्द्रकी पूजा
मेटी ताते कोप कियो । दामिनि खड्ग बंद शायक जनु धन योधा
लौ संग । हूँगयो सरस समीरे हुहं दिशि धनुष ध्वजा बहुरस । शोभित
सुभट पट्टारि पैज कर भरित । न मारत अंग । तुम्हरे कहत कियो
नंदनंदन सुरपति को वत भंग । बर्यत प्रलय मेघ धरि अम्बर डरपत
शोकल गांउ । सुमिरत नाथप्रारता तुम बिनु हम और कौनपै जांउ ।
इशों तुम अनख ब्याल सुखराखे अप्रति मुहद सुभाय । हमरे तौ तु-
महीं चिन्तामणि सब बिधि दौरउपाय । बालसमेत गोपाल बलायो

४२४ सुरसागर गोवर्द्धनलीलादूसरी रागकल्पद्रुम ।

अभैकिये दै बांह । जनि डरकरहु सबैमिलि आवहु या पर्वतकी छांह ।
सकहाथ गोवर्द्धन राखो सातदिवस बलबीर । सुरदासप्रभु ब्रजवासिन
के किये सकल दुखकीर १३ ॥ रागमलार ॥ आजु ब्रज महा घटन घन
घेरो । राखहु नन्दनन्दन यहि अवसर सब चितवत मुखतेरो । आये
मेघ महापरलयके ब्रजपर कीन्हे डेरो । बर्यत महा असम सेनापति
दिनते कियो छँधेरो । इतनी सुनत यशोदानन्दन गोवर्द्धन तनहेरो ।
चितगहि रहे सँभारि आपकर क्षितिते पकरि उखेरो । सात द्योस
बर्ण्या निशिबासर हारिमानि मुख फेरो । औपति सुर सहायभये जब
बंद न आयो नेरो १४ ॥ राग कान्हरो ॥ गोकुल जीवनि गोविंदमेरो । जाय
लगाय रही तनसनधन दुख भूलत मुखहेरे । जाके बल हम गन्यो न
सुरपति रहेउ सातदिन घेरे । जनहित नाथ गोवर्द्धन धारेउ राख्योकर
नखकेरे । यश जाके ऋषिगर्ग बखानत निगम कहत नित टेरे । सोइ
अब मूर सहित संकर्षणा सेबहु यतन घनेरे १५ ॥ राग सारंगचंचरी ॥ बिनय
सब करत गिरिराज सों करजोरि कर गये तनपाप तब दरश पायो ।
बहुत ढीठ्योकरी शरशाराखो हरी शक्र यों कहतहैं शररा आयो ।
देवाधिदेव तुम प्रकट दर्शनदियो प्रकट भोजन कियो सबनि देख्यो ।
प्रकट बाणी कही गिरिराज तुमसही औरनाहैं तिहूँभुवन कहूँपेख्यो ।
हँसतहरि मनहँसन तकत गिरिराजतन देवपरसनभयो करोकाजा ।
सुर हरि प्रकटलीला कही सबनिसें चले घरघरनि अपने समाजा १६
राग सारंग ॥ सबैमिलिके कहे पूजो साँवरेकी बांहि । खालगोपी गाय
राखे सातदिन करि छांहि । इन्द्र कहा रिसाय कीन्हे गयो आपन
बलगाहि । आय तिनहुं पायं पकरे समुझिके मनमाहि । पूतनादिक
कितिक लीला करीहैं सबचाहि । हमारे घनप्रयाम राम हम और न
जानैं काहि । सबै बात आपचर्यते इनकी बिबिहू जाने नाहि । मूर
प्रभु की प्रबल माया जानि ब्रुमि भुलाहि १७ ॥ राग केदारी ॥ निहारो
सबैमिलि कान्ह निहारो । यशुमति उर लावति करपल्लव गहि सात
दिवस गिरिधरो । प्रजाबिधि मेरीजुशक्रकी विनजिय द्रोहविचारो ।
छाँडे मेघसत्त परलयके गरजिअनन्द मुँडिधरो । अति आरति जानि
ब्रजवासी शिशुगितितन नेकु निहारो । अनयास असिद्ध सराक में

सूरसागर गोबर्धनलीलादूसरी रागकल्पद्रुम । ४२५
 खेलत मांझ उपारौ । सुरपति को कियो मानभङ्ग हरिब्रज आपनो
 उबारो । सूरदास को जीवनि गिरिधर यशुवर्ति प्राणा दुलारौ १८ ॥
 राग मलार ॥ सुनहुँरी मेहते आयो । घरको गाय बहोरौ हो मोहन स्वा-
 लन टेरि सुनायो । कारीघटा सधम देखियत अतिगति पवनचलायो ।
 चारों दिशा चितै किन देखहु दामिन को धौंलायो । अति घनप्रयास
 सुदेश सूरप्रभु करगहि शैल उठायो । राखे सकल सुखाहि में ब्रज जन
 इन्द्र को सब गँवायो १९ ॥ राग बिलावल ॥ हमारी बात सुनौ ब्रजराज ।
 सुरपतिको बलिभाग न दीजै पूजो यह गिरिराज । बर्यमेह गायसुख
 पैहैं हौंहे ब्रज सुखकाज । सूरदासप्रभु नन्दकंवर कहै बेही कीजैराज ॥

✽

सूरसागर रागकल्पद्रुम ॥

अथ फेरि गोचारन लीला ॥

श्रीकृष्णायनमः ॥

राग बिलावल ॥ जागहु लाल खाल सब टेरत । कबहुँ पीतांबर डारि
 बदनपर कबहुँ उधारि जननितन हेरत । सेवतमें जागत मनमोहन बात
 कहत अबकी सबटेरत । बारम्बार जगावति माता लोचनखोलि पलक
 पुनिधेरत । पुनि कहिउठो यशोदा मैया उठहुकान्ह रविकिरिया उजे-
 रत । सुरप्रयास हँसिचितै मातमुख पदकरल पुनिपुनि मुखफेरत १ ॥
 राग रामकली ॥ कबको टेरति कुंवरकन्हारि । टाढे खाल सखा सबटेरत
 अरु अग्रज बलभारि । दाऊज त ह्यां नहिं आवत करौ सुखारीआइ ।
 माता दुइँकरनि दतुनिदै जलभारी भरिल्याइ । उत्तम विधिसों मुख
 पखरायो ओदे बसन अँगौछि । दोऊभैया कछुकरौ कलेऊ ले बलाय
 कर अँगौछि । सब साखन दधि तुरत जमायो मधु मेवा मिष्ठान । सुर
 प्रयास बलिराल सङ्गमिलि रुचिकरि लागेखान २ ॥ राग बिलावल ॥ दोउ
 भैया जेवत सा आगे । पुनि पुनिलै रविखात कन्हारि और जननि पै
 मांगे । अति सीढो दधि आज जमायो बलदाऊ तुमलोह । देखो धौं दधि

स्वाद आपुलै तापाछे मोहिं देहु । बलमोहन दोउ जैवत रुचिसें सुख
 लूटति नंदरानी । मुरप्रयास अब कहत अघाने अंचबन सांगतपाली ३
 राग रामकली ॥ द्वारे टेरत हैं सबखाल कन्हैया आवहु बारभई । आवहु
 बेगि बिलंब जनि लावहु गैयां दूरिगई । यह सुनतहि दोऊ उठिधायै
 कछु अंचयो कछु नाहिं । कितक दूरि मुरभी तुमकाड़ी बनतौ पहुँची
 नाहिं । खालकहेउ कछु पहुँची है हैं कछु मिलि हैं मगसाहिं । मुर-
 प्रयास बलमोहन भैया गैयानि पूंछति जाहिं ४ ॥ राग बिलावल ॥ बनपहुं-
 चत मुरभी लइजाई । जैहै कहां सखनिको टेरत हलधरसंगकन्हई ।
 जैवत परखिलिये नहिं हमको तुम अतिकरी चँडाई । अब हम जैहैं
 दूरिचरावन तुम संगरहै बलाई । यहसुनि खालधाय तहँ आये श्या-
 महिं अङ्ग मिलाई । सखा कहत यह नंदसुवनसैं तुमसबके सुखदाई ।
 आजुचले वृन्दावन जैयेगैयां चरैं अघाई । मुरदास प्रभु सुनिहर्षितभये
 घरते काक मँगाई ५ चलेसब वृन्दावन समुहाई । नंदसुवन सब खालन
 टेरत ल्यावहु गाय फिराई । अति आतुर हूँ फिरे सखा सब जहँतहँ
 आयेधाई । भक्त खालवात केहिकारगबोलेकुंवर कन्हई । मुरभी
 वृन्द इतहि को हाँको औरनि लेहुबुलाई । मुरप्रयास यहकही सबति
 सैं आपचले अतुराई ६ ॥ राग धनाश्री ॥ गैयानि घेरि सखा सबलयाये।
 देखौ कान्हजात वृन्दावन यातेमन अतिहरख बढाये । आपसमें सब
 करत कुलाहल घोंरी धूमरि धेनु बुलाये । मुरभी हाँकदेत सब जहँतहँ
 टेरि टेरि हेरीमुर गाये । पहुँचेआय बिपिन घनवृन्दा देखत द्रुम दुख
 सबनि गँवाये । मुरप्रयास गये अघामारि जब तादिनते यहिबन अब
 आये ७ ॥ राग मारंग ॥ चरावत वृन्दावन हरि धेनु । खाल सखा सब
 संगलगाये खेलतहैं करिचेनु । कोउ गावत कोउ मुरलि बजावत कोउ
 बियागा कोउबेनु । कोउ निरत कोउ उघटि तारिदै जुरि ब्रजबालक
 सेनु । विविधि पवन जहँ तहँ बहे निशिदिन सुभग कुंजघनसनु । मुर-
 प्रयास निजधाम बिसारत आवत यहसुखलेनु ८ ॥ राग धनाश्री ॥ वृन्दा-
 वन मोको अतिभावत । सुनहुसखा तुम सबल सुदामा ब्रजते बन गोचा-
 रगा आवत । कामधेनु संतरु सुख जितने रमासहित बैकुंठभुलावत ।
 यह वृन्दावन यह यमुना तट ये मुरभी अति सुखद चरावत । पुनिपुति

कहत प्रियामयी मुखसें तुम मेरे मन अतिहि सुहावत । सुरदास सुनि
 खाल चकत भये यहलीला हरि प्रकट दिखावत ॥ राग बिलावन ॥ खाल
 सखा करजोरि कहत हैं हमहिं कान्ह तुम जनि बिसरावहु । जहाँजहाँ
 तुम देह धरत हो तहीं तहीं जनि चरगा छिड़ावहु । ब्रजते हमहिं कहूं
 नाहिं प्यारी यह पाय मेंहूं ब्रज आवत । यहसुख नाहिं कहूं भुवन चतु-
 र्दश यह ब्रजमें अवतार बतावत । और गोप जोबहुरि चलेधर तिनसें
 कहि ब्रज छांक संगीत । सुरदास प्रभु गुप्त बातसब खालनसें कहि
 कहि सुख पावत १० ॥ राग गौरी ॥ छबीले मुरली नेक बजावो । बलि
 बलि जातसखा यह कहि कहि अवर सुधारस प्यावो । दुर्लभ जन्म
 दुर्लभ मुन्दान दुर्लभ प्रेम तरङ्ग । नाजानिये बहुरि सबहैं हैं प्रियाम
 तुम्हारे संग । बिनती करत सुबल श्रीदामा सुनहुं प्रियाम देकान । या
 यशको सनकादि शुकादिक करत असुर मुनि ध्यान । कब पुनि गोप
 भये ब्रज धरिहैं फिरिहैं सुरभिन साथ । कबतुम छाक छीनके खेहैं
 श्रीगोकुलके नाथ । अपनी अपनी कांध कमरिया खालन दई डसाई ।
 सोह दिवाय नन्दबाबा की रहे सकल गहिपाई । सुनि सुनि दीन गिरा
 मुरलीधर चितये सुख सुसकाई । गुरागम्भीर गोपाल मुरलिका लीनी
 कंठ लगाई । धरिकर बेनु अवर मनमोहन कियो मधुर धुनि गान ।
 मोहे सकलजीव जल धलके सुनि वारों तनप्रान । चपल नयन भृकुटी
 नासापट सुनि सुन्दर मुख बैन । मानहुं निरर्त भाव दिखावत गतिलिये
 नायक मैं । चमकत मोर चन्द्रिका साथे कुंचित अलक सुभाल ।
 मानों कमल कोशरस चाखन उडि आये अलिमाल । कण्डल लोल
 कपोलनि झलकति ऐसी शोभा देत । मानहुं सुधा सिंधुमें क्रीडत म-
 कर पानके हेत । उपजावत गावतगति सुन्दर अनाघात के ताल । रस
 सब दियो मदन मोहन को प्रेम हरय सब खाल । लोलित बैजन्ती
 चरणानि पर आसा पवन झकोरि । मानहुं सुवापियन अहिं आये
 ब्रह्म कमण्डल फोरि । डोलति लता मरुत मन्दगति सुनि सुन्दर मुख
 बैन । खग मृगसीन अधीन भये सब कियो यमुन जलमैन । झल-
 मलात भृकुटी पद रेखा सुभा सांवरे गात । मनो यत्नवध एक रथ बैठी
 उदय कियो अधरात । बाँके चरण कमल भुजबाँके अवलोकनि जू-

अनूप । मानहुँ कल्प तरोवर बिरवा आनि रच्यो सुरभूष । अति सुख
 दियो शोपाल सबनिको सुखदायक जियजान । सूरदास चरसानिरज
 सांगत निरखत रूपनिधान ११ ॥ राग बिलावल ॥ ग्वाल बिहार करतहैं
 कन्हैया हेरीदै । शुभगसांवरे गतकी में शोभा कहत लजाहि । मोरपंख
 शिर मुकुटकी सुखमटकनि की बलि जाहि । कुण्डललो ल कपोलनि
 भाँडि बिहसनि चितहि चुरावे । दशन दमकि मोतिन लर ग्रीवा शोभा
 कहत न आवै । उर पर पदिक कुसुम बनमाला अङ्गद पाय बिराजै ।
 चित्र बाहुपर रतन पहुँचिया हाथ मुरलिका छाजै । कटि पटपीत मे-
 खला मुकुलित पैरनि नूपुरसेहै । आसपास सबग्वाल मगडेली देखत
 विभुवन मोहै । सर्वाभिल आनंद प्रेम बढावत गावत गुणगोपाल । यह
 सुख देखत प्रयाससङ्गके सूरदास मगग्वाल १२ ॥ राग नट ॥ प्रयास कर
 मुरली अतिहि बिराजत । परमत अधर सुधारस प्रकटत मधुर मधुर
 सुरबाजत । लटकत मुकुट भौंह छबि मटकत नयन सैन अति राजत ।
 ग्रीव नवाय अटक बंशीपर कोटि मदन छबि लाजत । लोल कपोल
 झलक कुण्डलकी यह उपमा कहलुलागत । मानहुँ मेकर सुधासर की-
 दित आपु नहीं अनुरागत । तुन्दावन बिहरत नंदनन्दन ग्वालसखा संग
 मोहत । सूरदास प्रभुकी छबि निरखत सुरनर मुनि सब मोहत १३ ॥
 राग सारंग ॥ रीझत ग्वाल रिझावत प्रयास । मुरली बजावत सखनि बु-
 लावत सुबल सुदामा लैलैनाम । हंसतसखा करतारी दैदै नामहमारो
 मुरलीलेत । प्रयास कहत अब तुमहुँ बुलावहु अपने करते ग्वालनि देत ।
 मुरली लै लै सबै बजावत काहूपै नहि आवै रूप । सूर प्रयास तुमरेहि
 सुखबाजति कैसे देखो रागअनूप १४ ॥ राग टोड़ी ॥ हरिसमान को बेनु
 बजावत । जगजीवनी बिदित मुनि नाचत बेनु सो बजावै । चतुरानन
 पञ्चानन सहसानन ध्यावै । ग्वाल बाल लिये यमुना कच्छ बच्छ च-
 रावै । सुर नर मुनि अखिल लोक कोउ पार न पावै । तारणा तरणा
 अगणित गुण निगम नेतिगावै । तिनको यशुसति अतिआनंददे कर
 ताल नचावै । सूरदासप्रभु कपाल भक्तवश कहावै १५ ॥ कान्ह कांछि
 कामरी लकुट लिये कर धरेहो । तुन्दावनमें गाऊचरावै धौरी घुमि
 टरेहो । लिये लवाय गौअनि बुलाय जहँ तहँ बन बन हेरेहो । सूरदास

प्रभु सकल लोकपति पीतांबर कर फरेहो १६ सोई हरिकांध कामरी
 छाक लिये नांगेपायन गाथन की रहल करत हैं । रनहं पति दीशान
 पति नारीनर पति पसिनपति रविशशि जोहि डरतहैं । शिव विरञ्चि
 ध्यानधरत भक्तविविध तापहरत तेहिहित बपु धरतहैं । सूरदास प्रभुके
 गुणानिगमनति गावत तेइवन बिहरतहैं १७ ॥ राग नट ॥ छाकलेन जो
 बाल पढाये । तिनमें ब्रह्मति महारि यशोमति छांहि कन्हैयाहि आये ।
 हमहिं पढायदया नंदनन्दन भूखे अति अकूलाये । धेनु चरावतहैं वृ-
 न्दाबन हम यहि कारणा आय । यहकाहि खालगये अपने गृह बनहीं
 खबर सुनाये । सूरप्रयास बलराम प्रातही अधर्जवत उठि धाये १८ ॥
 राग सारंग ॥ और खालगृह आय गोपालहि बेरभई । अतिहि बार भई
 लालनको अजहं छाक न गई । तबहीते भोजन करिराख्यो उत्तमदूध
 जमाई । ना जानों कान्ह कौने बनचारत अतिहि अबेर लगाई । राज
 करें वे धेनु तुम्हारी नन्दाहि कहति सुनाई । पोचकीभीख सूरबल मो-
 हन कहति यशोदा माई १९ जोरति छाक प्रेम सों मैया । खालनि
 बोलि लिये अधर्जवत उठि दौरे दोउ मैया । तबहीते में भोजनकीन्हों
 चाहति दियो पढाई । भूखेभये आजु दोउ मैया आपहि बोलि मंगाई ।
 दधि माखन साजो दधिमीठो मधुमेवा पकवान । सूरप्रयासको छाक
 पढावति कहति खाल यों जान २० घरहीकी इक खालि बुलाई ।
 छाक सामग्री सबै जोरि कै वाके करदौतरत पढाई । कहेउ ताहि वृ-
 न्दाबन जैये त जानति सब प्रकृति कन्हाइ । प्रेम सहित लैचली छाक
 यह कहि ह्वै भूखे दोउभाई । तुरत जाय वृन्दाबन पहुँची खालबाल
 कहुं कोउ न बताई । सूरप्रयासको ढेरतिबोलति कितेहो लालछाक
 मैं लाई २१ ॥ राग टोड़ी ॥ आजुकौने धौं बन चरावत गाय कहां धौं भई
 बड़ी बेर । बैठे कान्हसुधिलेहु कौनबिधि खालि करति अवसर । वृन्दा
 बन आदि सकल बनहुँह्यो जहं गायनकी ढेर । सूरदासप्रभु रसिकाशि-
 रोंमगिाकैमेदुरायेदुरतडुंगारितकी ओढसुमेर २२ ॥ राग सारंग ॥ छाकलिये
 शिरप्रयास बोलावति । हंढतिफिरति खालिनीहरिको कहं भेद तहिं
 पावति । ढेरखनंत काहकी अवगानितहीं तुरत उठि धावति । पावति
 नहीं प्रयासबलरामहिब्याकुलहै प्रकृतावति । वृन्दाबन फिरि फिरि

देखतिहँ बोलिउठे तबबाल । सूरप्रयाम बलराम यहाँ हौं छाकलेहुं किन
 लाल२३हरिको ढेरति फिरतिगवारि। आयलेहु तुमछाक आपनीबालक
 बलवनवारि। आजुकलेऊ करत बन्यों नहिँ गैयनसँग उठिवाये। तुम
 कारणावनछाक यशोदा मेरेहि हाथपठाये। यहबानी जबसुनी कन्हैया
 दौरिगये तेहिकाजु। सूरप्रयामकहेउ नीकेआई भूखबहुतही आजु२४
 राग सारंग ॥ आई छाक बोलाये प्रयाम। यहसुनि सखा सबै जुरिआये
 सुबल सुदामा अरु श्रीदाम। कमलपत्र देनापलास के सब आगे धरि
 परसुन जात। खाल मराडली मध्य प्रयामघन सर्बमिलि भोजन रुचि
 करिखात। ऐसी भूखसांभत यह भोजन पठै दियो करि यशुदामात।
 सूरप्रयाम अपनों नहिँ जेवत खालनि करतें लैलैखात२५ ॥ राग नट ॥ वि
 हारीलाल आवहु आईछाक। भई अबारगाइ बहरावहु बगदैगी दै
 हांक। अर्जुनभोज सुबल श्रीदामा मधु नङ्गल सकताक। मिलिबैठे सब
 जेवन लागे बहुतबन्यों कहेंपाक। अपनी पचावति सबदेखत जहँ तहँ
 फनीपिराक। सूरदास प्रभुखात खालसँग ब्रह्मलोक यहवाक २६ ॥
 राग कान्हरो ॥ फिरतवन वंशीबट संकेत बट नट नागर कटि काछे खौर
 केशरि की किये। पीतवसन चन्दन तिलक मोरमुकुट कुण्डल प्रयाम
 घन यह छबिलिये। तन विभक्त शुभाग्रक्त निरखि लजितरति अनङ्ग
 खालबाल लिये संग प्रमुदित सर्बहिये। सूरप्रयाम अतिमुजान मुरली
 धुनि करतगान ब्रजजन मनको मुखदिये २७ ॥ राग सारंग ॥ बहुतफिरी
 तुमकाज कन्हआई। टेरि टेरि में भई बावरी दोउभैया तुमरहे लुकाई।
 जे सबखाल गये ब्रजघरको तिनसें कहि तुम छाक मँगाई। नैनदधि
 मिथान जोरिकै यशुमति मेरेहाथ पठाई। ऐसी भूखसांभतलाई तेरी
 किहि बिधि करों बडाई। सूरप्रयाम सब सखनि पुकारत आवत को
 न छाकहै आई २८ सखनि संगहरि जेवत हैं छाक। प्रेमसहित मैयादै
 पठये सबै बनाये हैं इकताक। सुबल सुदामा श्रीदामा संग सब मिलि
 भोजन रुचिकरि खात। खालनि करतें छाक छिडावत मुखलै मेलि
 सराहतजात। जो मुखकान्ह करत दृन्दावन सोमुख नहीं लोकहसाथ।
 सूरप्रयाम भक्तन बग ऐसे ब्रह्मकहावत हैं नैस्तात २९ खालमराडली
 में बैठे हैं मोहन बटकी कैयां दुपहर की बेरियां संगलीने। एक मयत

दाहनीदूध एक बटावत फव्वेना सकनि कर हरिभगारि भगारि लेत
 असबलि आपनि कमरिन के आसनकीने । जेवतहैं अरुगावत कान्ह
 सारङ्गकी तानलेत करखीने । सूरदास प्रभुकोमुख निरखतसुरभी
 रीभि सुमननि वर्यत रसभीने ३० ग्वालनि करतेंकोर छिडावत । जटौ
 लेत सबनिके मुखको अपनेमुखलै नावत । यंतरस के पकवान धरे मव
 तामें नाहैं रुचियावत । हाहाकरिकरि मांगि लेतहैं कहत मोहिं अति
 भावत । यहसहिमा सईपैजानैं जातेंआपुबँवावत । सूरप्रयामसपनेनाहैं
 दर्शत मुनिजन ध्यान लगावत ३१ ब्रजबासी पदर कोउनाहैं । ब्रह्म-
 मनक शिवध्यान न पावत इनकीजूठनि लैलै खाहैं । धन्यनन्द धनि
 जननि थशोदा धन्य जहां अवतारकन्हारै । धन्य धन्य वृन्दावन के
 तरु जहैं बिहरत शिभुवनराई । हलधर कहतछाक जेवत संग मीठो
 लगात सराहत जाई । सूरदासप्रभु बिचम्भर ह्वै ग्वालनिकोर अघारै ३२
 शीतल छहियां श्याम बैठेजानि भोजन की बिरियां । बामभुजा सखा
 छंश दीने अरु दक्षिणाकर द्रुम डरियां । चलिजुनेक गाइन धेरोटेरो
 जू बलराम सों कहत बोलि लेहु अपने अरियां । सूरदास प्रभु बैठे
 कदमतर पीवतमथिमथिघरियां ३३ जेवत छाकगायबिसराई । सखा
 श्रीदामा कहति सबनिसों छाकहि में तुमरहे भुलाई । धेनु नहींदेखि-
 यत काहूं नेरे भोजनही में सांभ लगाई । सुरभीकाज जहंतहैं उठिवाये
 आपु तहां उठिचले कन्हारै । ल्यायेग्वाल घोरियो गोसुत देखिप्रयाम
 मन हर्य बढ़ाई । सूरदास प्रभुकहत चलोघर बनमें आजु अवार करा-
 ई ३४ ॥ रागमेरी ॥ ब्रजहि चलोआई अब सांभ । सुरभी सबै लेहुआगे
 करि रैनिहोइ पुनि बनहीसांभ । भलीकही यहबात कन्हारै अतिही
 सघनरैन उजियारी । गैयां हांकि चलाई ब्रजकोऔरवाल सबलिये
 पुकारी । निकसिगये बनतें सब बाहिर अतिआनन्द भये सबगवाल ।
 सूरदास प्रभु मुरलि बजावत ब्रजआवत नदवर गोपाल ३५ नदवर भेय
 धरे ब्रज आवत । मोरमुकुट मकराकृत कुण्डल कुटिल अलकमुखपर
 छविपावत । भृकुटी बिकट नयन अतिचंचल यइछविपर उपसा एक
 धावत । धनुयदेखि खंजनबिबिडरपत उडि न सकत छहनेअकलावत ।
 अधर अनूप मुरलिसुरपूरत गौरीरामअलापिबजावत । सुरभीवन्द्योप

बालकसंगगावतअति आनंदबढावत । कनकमेखला कटिपीतांबरभूषित
मंद मंद सुरगावत । सूरप्रयास प्रतिअंग माधुरी निरखत ब्रजजनके मन
भावत ३६ ॥ राग कल्याण ॥ ब्रजतरुणी सबकहत परस्पर बनतेप्रयासबने
घरआवत । ऐसीछवि में कबहुँ न पाई सखी सखीषोंप्रकट दिखावत ।
मोरमुकुट शिर जलजमाल उरकटित पीतांबर छविषावत । नवजल-
धरपर इन्द्रचाप मनोदामिनिछवि बज्रक घनधावत । जेहि जुअङ्ग अ-
वलोकन कीन्हों सोतनमनतहँई बिरमावत । सूरदासप्रभु मुरली अधर
धरे आवत राग कल्याण बजावत ३७ कमलमुख शोभित सुन्दरबेनु ।
मोहनराग अलापत गावत आवत चरयेधेनु । कुंचितकेश मुदेश बदन
पर अनुसाइयो अलिसेनु । सहि न सकति मुरलीमधु पीवत चाहत अ-
पनो सेनु । भृकुटिमनोंकर चाप आपुलै भयो सहायक सेनु । सूरदास
प्रभु अधर मुवालागि उपज्यो कटिनकुचैनु ३८ ॥ राग नट ॥ साधो जूकी
बदनकी शोभा । कुटिल कुन्तल कमल प्रति मनोमधुप रसलोभ । भृ-
कुटि इमिनव कंज पारस मदुश चंचलमीन । मुकुट कुराडल किरसि
रविछवि परस बिगशित कीन । सुरभिरेणु पराग रञ्जित मुरलिधुनि
अलिगुञ्ज । निरखि सुभग सरोज मुदित मरालसंग शिशुपुञ्ज । दशन
दामिनि बिम्बमिलि मनो जलदमध्य प्रकास । निगमवानी नेति कों
कहिसके सूरजदास । ३९ देखिरी देखि मोहन ओर ॥ प्रयास सुभग
सरोज आनन चारु चितके चोर । नीलतनु मनोजलदकीछवि मुरलि
सुरघनघोर । दशन दामिनि लसत बसननि चितवन भक्तभोर । अवाग
कुराडल गराडमराडल उदित ज्यो रविभोर । बरहि मुकुट बिशालमाला
इन्द्रधनु छविथोर । बनधातु चित्रित बेध नटवर मुदित नवलकिशोर ।
सूरप्रयास सुभाइ आतुर चितै लोजनकोर ४० ॥ राग गौरी ॥ रजनीमुख
बनते बने आवत भावत मत्तगायन्दकी लटकनि । बालकचन्द्र विनोद
हँसावत करतल लकुटधेनुकी हटकनि । बिकसित गोपी मानों कुमुद
रसछप सदा लोचनपट घटकनि । पूरणाकला उदितमन उडुपति तेहि
सरा बिरह व्यथाकी चटकनि । लज्जित मनमहँ निरखि बिमलछवि
रसिकरङ्ग भौंहनकी मटकनि । मोहनलाल कबीले गिरिवर सूरदास
बलिबागर नटकनि ४१ ॥ हमोर ॥ ग्रहै कौड जानैरी बाकी चितवनि

में की चन्द्रिका में किधौं सुरलीमांभ ठगोरी । देखत सुनत मोहिजात
 सुरसर सुनिधुग और सीन खगोरी । अरीमाय जबते दृष्टिपर मनमोहन
 गृहमेरो मनु न लगोरी । सूरश्याम विनु क्षणा न रहों मेरोमन उनहाथ
 पगोरी ४२ ॥ र.ग.कल्याण ॥ लाल की रूप माधुरी नयननि निरखु नेक
 सखीरी । मनसिज मनहरणादास सांवरी सुकुमार रास नखशिख अङ्ग
 अङ्गकी छवि शोभा कीसी बनखीरी । रंगमगी शिरसुरंग पागलटाकि
 रही बामभाग चम्पकली कुटिल अलक बीच बीच रखीरी । आयत
 दृग असुगा लोलकुण्डल मण्डित कपोल अधर दशन दीपतिकी छवि
 क्योंहं न जाति लखीरी । उभय उभय भुजदण्ड मूलपीन अंशसानुकूल
 कनक भेखला दुकूल दामिनी धरखीरी । उरपर मन्दार माल मुक्ता
 लर बर सुहार मत्तद्विरद हति त्रयनिकी देहसदा करखीरी । मुकुलित
 बय नवकिशोर रचनबचन चितके चोर माधुरी प्रकाश अनुप संजुरी
 चखीरी । सूरश्याम अतिमुजान गावतकल्याणा तान सप्तसुरनि कल
 इते पर मुरलिका बरखीरी ४३ ॥ राग गौरी ॥ ठोठा कौन को यहरी ।
 अतिमण्डल मकराकृत कुण्डल कनककराठ दुलरी । घन तन प्रयाम
 कमलदल लोचन चारुचपल दुलरी । इन्द्रबदन सुसकानि माधुरी अ-
 लकनि अलि कुलरी । उरपर मुक्तामाल पीतपट सुरली सुरगौरी । पग
 नूपुर मणि जटित रुचिर अति कटि किङ्किणि रौरी । बालक रुन्द
 मध्यराजतहें छविनिरखत हुररी । सोई सजीवनि सूरदास की महरि
 रहे उररी ४४ यह ठोठा नन्दको हैरी । नहिं जानत बस ब्रजमें प्रकटो
 गोकुलरी । धरेउ गिरिवर बामकर जेहिं सोईहै यहरी । दैत्यसब इनहीं
 संहारे आपु भुजबलरी । ब्रजधरनि जो करत चोरीखात माखनरी ।
 नन्दधरनी जाहिबांध्यो अजिर ऊखलरी । सुरभिगणालिये बनते आ-
 वतसबै गुणाइनरी । सूरप्रभु ये सबहिं लायक कंसडरै जिनरी ४५ य-
 शुभतिको सुत यहै कन्हाइ । इन्हीं गोवर्द्धन लियो उठाई । इन्द्र परेउ
 इनहींके पाई । इनहींकी ब्रज चलति बडाई । बकी पिआवन इनहीं
 आई । योजन एक परी मुरझाई । इनहीं तृणावर्त लियो उठाई । प-
 ठक्यो द्वारशिलापर आई । केशीअसुर इन्हीं संहारेउ । अघाबकासुर
 इनहीं सारेउ । प्रयाम बरगा तनपीत पिछौरी । सुरली राग बजावत

गौरी । देखिरूप चकृतभई बाला । तनकी सुधि न रही तेहिकाला ।
 सूरश्याम सो जानतितीके । मंगनिभई पकृतिमुखजीके ४६ ॥ रागअगने ॥
 प्रयामसुंदर आवैबनते बनेआजु देखि देखि नैनरीभे । शीशमुकुटडोल
 अबगाकुण्डल लोलभृकुटीधनुनैना खच्चखीभे । दशनदामिनि ज्योति
 उरपर मालमोतिन खालबाल सङ्ग आवै रङ्गभीजे । सूरप्रभु प्रयाम राम
 सन्तनि सुखदधाम अंगअंग प्रतिछवि निरखिजीजे ४७ ॥ रागकान्हरो ॥
 बिराजतरी बनमालगरे हरिआवत बनते । पृहुपनिसी पागलटाकिरही
 वामभाग सो छबिदरत न मनते । मौरमुकुट शिरशिखराड गोरज मुख
 पर मरिडतनवर बपुवेषधरे आवतछबिते । सूरदास प्रभुकीछवि ब्रज
 ललना निरखि थकिततनमन न्योछावरि करति आनन्दवरते ४८ ॥
 रागसुधार्ध ॥ आवत बनते देख्यों में गाइनमांभ काहूको ढोतारी एकशी-
 शमोर पखियां । अतिही कुसुम अतिशीर जैसे दीरघ चंचल नयन
 मानोरसभरी डोलतयुगल भुकियां । केसरकी खौरिकिये गुंजावन-
 माल हिये उपमा न कहिआवै जेतीतेती नखियां । राजतपीतपिछौरी
 मुरलीबजावे गौरी धुनि सुनिभई चौरीरही एकअखियां । चलयो न
 परतपग गिरिपरी सूधेमग भामिनि भवनल्याई करगहे कखियां ।
 सूरदास प्रभुचित चोरिलियोमेरे जान और न उपाय दायमुनों मेरी-
 सखियां ४९ ॥ रागगोरी ॥ बलमोहन दोऊ बनतेआये । जननि यशोदा
 मातरोहिणी हरयिदुहुनिदोउ कंटतगाये । काहेआजु अबारलुगाई
 काहे कमलबदन कुंभिलाये । भूखे भये आजुदोउभैया प्रातकलेऊक-
 रन न पाये । देखहुजाय कहाजैवनकियो यशुमति रोहिणि तुरतप-
 टाई । मैं अन्हवायदेति दुहुनिको तुमभीतर अति करौचंडाई । लकुट
 लियो मुरलीकर लोन्हें हलधरदियो बियाया । नीलाम्बर पीताम्बर
 दोन्हों सेंटिधरति करिप्राया । मुकुटउतारि धरेउमंदिर लै पोंकति है
 अंगदात । अरु बनमाल उतारतिगरते सूरश्याम की सात ५० ॥ रागक-
 ल्याण ॥ अंग आभूषण जननि उतारति । दुलरीयोव मालमोतिन की
 नूपुरलै मुजश्याम निहारति । छुद्रावली उतारतिकटिते सेंटि धरति
 मनहींमन वारति । रोहिणि भोजनकरहु चंडाई बारवार कहिकहि
 कर आरति । भूखेभये श्यामहलधर आपुहिकहि अन्तरप्रेस बिचा-

रत । सूरदास प्रभुमात यशोदा पटलेदुहुनि अंग रज झारति ५१ रा
 दोऊमेरेगाय चरैया । मोलबेसाहि लिये मैं तुम को तबदोऊ रहे न-
 न्हैया । तुमसों रहल करावति निशिदिन और न रहलकरैया । यह
 सुनि प्रियामहँसे कहि दाऊ भूठेहि कहति है मैया । जानि परतनहिं
 साँचि भुटाई धेनुचरावत रहैभुरैया । सूरदास प्रभुहँसति यशोदा में
 चरो कहिलेतबलैया ५२ यहकहि जननि दुहुन उरलावति । सुमना
 सुत अंगपरशि तरिताजल बलि बलि गईकहि कहि के न्हवावति ।
 शीतलजल कपूररस रचयो भारीकनक लये अंचवावति । भरेउचस्र
 मुखधोयतुरतही पीरेपान बीरोमुखनावति । सूरप्रियाम मुखजानि सु-
 दितमन शब्दापर संगलै पौढावति ५३ ॥ रागविहागरे ॥ सोवतनोद आ-
 यगइ प्रियामहिं । महरिउठी पौढाय दुहुनिको आएलगी गृहकामहिं ।
 बरजतिहै धरकेलोगनिको असुये लैलै नामहिं । गाढे बोलन पावत-
 कोऊ डरमोहन बलरामहिं । शिव सनकादिक अन्त न पावत ध्यावत
 हैं निशियामहिं । सूरदास प्रभु ब्रह्मसनातन सोवतनंदके धामहिं ५४
 देखत नन्द कान्ह अति सोवत । मुखेभये आजु वनभीतर यह कहि
 कहि मुखजोवत । कहेउ नहीं मानतकाहकोआपुहठो दोउबीर । बार
 बार करसों तनपाँछत अतिहिप्रेमकी पीर । सेजमंगाय लई तहँ अपनी
 जहां प्रियाम बलराम । सूरदासप्रभुके ढिगसोये संगपौढि नंदवाम ५५
 जागिउठेतबकुंवरकन्हाई । मैया कहाँगई मोढिगते संगसोवत जान्यो
 बल भाई । जागे नन्द यशोदा जागी बोलिलये हरिपास । सोवत भ-
 भक्तिउठे काहेते दीपककियो प्रकाश । सपने कूदि परेउ यमुना दह
 काहदियो गिराई । सूरप्रियामसों कहतियशोदा जिनिहो लालडराई
 ५६ ॥ रागमोरी ॥ मैं बरजु यमुनातट जात । सुधिरहिगई न्हातकी जिनि
 डरपौ मेरेतात । नन्दउठाय लियोकोराकरि अपनेसंगपौढाई । वृन्दा-
 वतमें फिरतजहांतहँ केहिकारण तू जाई । अर्वाजनि जैहो गायचूरा-
 वन तहँ कोउरहत बलाई । सूरप्रियाम दम्पतिबिच सोये नोंदगई तब
 आई ५७ ॥ रागकल्याण ॥ सपनों सुनिजननी अकुलानी । दम्पतिवात कहत
 आपसमेंसोवतसारंग पानी । याव्रजको जीवनिथह ढोटा कहादेखयो
 । गाय चरावनजाय न दीजै जाकोहै यहकाजु । गृह सम्पति

४३६ सूरसागर गोचारनलीला रागकल्पद्रुम ।

है तनकटिदौना इन्होंने लो मुखभोग । सूरप्रयास बनजात चरावन हँसी
करत सबलोग ५८ ॥ रागभैरव ॥ यहिअन्तर भिनुसार भयो । तारागगा
सब गगनछुपाने अरुणा उदित अंधकारगयो । जागीसहरि काजगृह-
लागी निशिको दुखसब भूलिगयो । प्रातस्नान करन यमुनाको नन्द-
हितुरत उठायदयो । मथन हारि सब खालिबुलाई भोरभयो उठिसथो
दहेउ । सूरनन्दधरनी आपुनहं मथति मथानी नेकगहेउ ५९ ॥ राग सूहे
बिलावल ॥ जननि जगावति उठोकन्हाई । प्रकृत्यो तराशा किरशि गरा
छाई । आवहु चन्द्रबदन दिखराई । बारवार जननी बलिजाई । सखा-
हार सब तुमहिं बुलावत । तुम कारणा हम धाये आवत । सूरप्रयास
उठि दर्शनदीन्हों । माता देखि मुदित मन कीन्हों ६० ॥ रागरामकली ॥
दाऊजकहि प्रयासपुकारेउ । नीलाम्बरपट सँचिलियो हरि मानोंवा-
दरते चन्द्रउजारेउ । हंसतहंसत दोउ बाहरआये मातालै जलबदनपखा-
रेउ । दंतवनलैदुहुकरी मुखारीनयननिके आलसजु बिसारेउ । माखन
खाहु दुहुनकर दीन्हों तुरत मथयो मीठोअतिभारेउ । सूरदास प्रभुखात
परस्पर माता अंतरहेत बिचारेउ ६१ ॥

अथ सूरसागर राग कल्पद्रुम ॥

अथकालीदमनलीलाकोप्रसंग ॥

श्रीकृष्णायनमः ॥

रागबिलावल ॥ नारदसों नृपकरत बिचार । ब्रजभेये दोऊकोउअवता-
र । नन्दसुवन बलराम कन्हाई । इनकीगति में कछु न पाई । तगावर्त
से दूतपठाये । तापाछे केशी चढ़िवाये । बकीपटाइ दई पहिलेही ।
सेसेनि कोबल वैसेहि लेही । उनतेकछु भयोनिहिं काजा । यहसुनिमुनि
मोहिं आवतलाजा । अब मनमेंतुम एकबिचारो । सूरप्रयास बलरामहि
मारो १ नारदमुनि नृपसों यहभायत । वैहँकाल तुम्हारे प्रकटे काहेको
तुमउनको राखत । कालीउरग रहेउ यमुनामें तहांके कसल संगावहु ।
दूतपठायदेहु ब्रजऊपर नन्दहि अतिडर पावहु । यह सुनिके ब्रजला

डरौं गे बोउ मुनिहैं यहवात । नन्दयशोदा बहुतडरौं गे येहै कहै । उपघात ।
 यहमुनिकंस बहुत सुखपायो भलीकही यह मोहि । मूरदास प्रभु को
 मुनिजानत ध्यान करत मनजोहि २ ॥ रागमूढो ॥ कंस बुलाय दूत एक
 लीन्हें । कालीदहके फूलमंगाये पत्रलिखाय ताहिकर दीन्हें । यह
 कहियो ब्रजजाय नंदसौं कंसराज अतिकाज मंगाये । तुरतपढाय दि-
 येही बनिहै भली भांति कहिकहि समुभाये । यह अन्तर्यामी जिय
 जानी आपुरहे बनगवालपढाये । मूरप्रयाम ब्रजजन सुखदायक कंस
 काल जियहरय बढ़ाये ३ ॥ रागरामकली ॥ खेलनचले नन्दकुमार । दूत
 आवतजानिब्रजमें आपु दीन्हेंटार । नन्दयमुना न्हायआये महरिटाढी
 द्वार । नृपतिदूत पढाय दीन्हें चलो ब्रज अहंकार । महरपैठत सदन
 भीतर कींकबाईवार । मूरनन्दकहत महरिसौं आजुकहा बिचार ४ ॥
राग सारंग ॥ यहमुनि कंस मुदित मनकीन्हें । दूतहिप्रकटकही यहबाराी
 पत्रलिखाय नन्दको दीन्हें । कालीदहके कमल पढावहु तुरतदेखि
 यहपाती । जैसेकमल कालिहवां पहुंचे तूकहियो यह भांती । यहमुनि
 दूततुरतही धायो तबपहुंच्यो ब्रज जाई । मूरनन्द करपाती दीन्हें दू-
 तकहेउ समुभाई ५ ॥ रागमूढो ॥ पाती बांचत नन्दडराने । कालीदह के
 फूलपढावहु मुनीसबनि ब्रजलोग घराने । जोमोको नहिं फूलपढावहु
 तो ब्रज करौंउजारि । महरगोपउपनन्द न राखैंसबहिनडारोंमारि ।
 पुहुपदेहु तो बनें तुम्हारी नातरुगाये बिलाय । मूरप्रयाम बलमोहनतेरे
 मांगों उनहिं धराय ६ ॥ रागबिलावल ॥ नन्दमुनत मूरभाय गये । पाती
 बांची मुनीदूत मुख यहबाराी मुनि चकृत भये । बल मोहन खुटकत
 वाकेमन आजुकही यह बात । कालीदह के फूल कहैंधौं को आनै
 पछितात । और गोपसबनन्दबुलायेकहतमुनों यहवात । मूरमुनोंनृपयहि
 ढंगआयो बलमोहनपरघात ७ ॥ रागजयतभी ॥ आपुचहेब्रजऊपरकालि ।
 कहांनिकसि जैयेको राखै नन्दकहत हैं भालि । मोहिंनहीं जियको-
 डर नेकहुं दोउसुतको डरपाऊं । गाउंतजों कहूं जाउं निकसिलै इनहीं
 काजपराऊं । अबउबार देखतनहिं कतहंशरगाराखि कोलेई । मूरप्रयाम
 को बरजतिमाता बाहरजान न देई ८ ॥ रागआसावरी ॥ नन्दधरनि ब्रज
 नारि बिचारति । ब्रजहिबसत सबजन्म सिरानो सेसेकंस करी नहिं

४३८ मरसागर कालीदमनलीला रागकल्पद्रुम ।

आरति । कालीदहके फूलमंगावत को आनेधौं जाई । ब्रजबासी नातस
सबमारों बांधोंबलहि कन्हाइ । यह कहतहि दोऊ नयन ढराने नन्द
घरनि दुखपाई । मूरश्याम चितवतमातामुख ब्रूँक्षत बातबनाई ॥ बुँक्षत
जाय तातसोंबात । मैंबलिजाउं मुखारबिन्दकी तुमहिं काजकंस अकु-
लात । आयेप्रथाम नन्दपैधाये जान्यो मातपिता अकुलात । अबहों
दूरिकरोंदुखइनको कंसहि पठयदेहुंजलजात । मोसों कहहुबातबाबा
यहबहुतकरत तुमशोचबिचार । कहाकहां मैंतुमसेप्रयारिकंसकरतकहु
तुमसोंभार । जबसों जन्मभयोहरितेरोकितनों करवररकरे कन्हाइ । मूर
प्रथाम कुलदेवनि तोको जहांतहां करिलियो सहाई १० ॥ राग बिलावल ॥
तुमहिं कहत कोकरै महाई । सो देवता मङ्गही मेरे ब्रजते अनतकबहुं
नहिंजाई । बड़ेदेवगिरिगोवर्द्धनहे जो पुरवै आशा मनभाई । वह देवता
मनावहु सबमिलि तुरत कमल जो देइ पढाई । बाबानन्द भूखत क्याहि
कारणा यहकहि माया मोह अरुभाई । मूरदासप्रभु मातपिताको तु-
रतहि दुख डारेउ बिसराई ११ ॥ रागनेट ॥ खेलन चले कुँवरकन्हाइ ।
कहत घायनिकासजैये जहांखेलैधाइ । गेंदखेलत बहुतबनिहै आभानों
कोउजाइ । घरहिगये सखा श्रीरामा गेंद तुरंतहिल्याइ । अपनेकरले
श्याम देख्यो अतिहि हर्य बढाय । मूरके प्रभु सखा लीन्हे करतखेल
बनाय १२ खेलतश्यामसखालियेसंग । एकमारत एकलोकोतगेंदहि एक
सांगत करि नानारङ्ग । मार परस्पर करत आपु में अति आनन्दभये
मनमाहिं । खेलतहीमेंश्याम सबनको यमुनातटकोलीन्हेजाहिं । सारि
भजत जो जाहि ताहिसें मारतलेत आपनोदाव । मूरप्रथाम के गुणाको
जानै कहत और कहु और उपाव १३ ॥ रागमेरी ॥ लैगयेदारियमुनतट
खालनि । आपुनजात कमल के काजहि सखा लियेसंग खयालनि ।
जोरीमारि भजत उतहीको जाय यमुनकेतीर । एकधावतपाछे उनहीं
के पावत नहींअधीर । रैंडीकरत तुम खेलतहीमें परीकहा यहबानि ।
मूरश्यामसोंकहत खालयह तुमहिं भलेकर जानि १४ ॥ रागनेट ॥ प्रथाम
सखा सों गेंद चलाई । श्रीरामा मुरि अङ्गवचायो गेंदपखो कालीदह
जाई । धायगह्यउ तब फेंदप्रथामको देहु मेरो तुम गेंदमँगाई । औरसखा
जनि मोको जानहुँ मोसों जनि तुमकरो दिटाई । जानिबूझि तुमसों

गिरायो अब दीन्हेही बनेकन्हारै । सूरसखा सब हँसत परस्पर भली
 करी-हरिगोद गवारै १५ ॥ राग गोरठ ॥ फेंत छाँड़ि मोरिदेहु थोदामा ।
 काहेको तुम रारि बढावत तनकबावके कामा । मेरीगोद लेहुताबदले
 बाहँ गहतहौ धारै । छोटीबडो न जानत काहूकरत बराबर आइ । हम
 काहेके तुमहिं बराबरि बडेनन्दके पूत । सूरप्रयास दीन्हेही बनिहै व-
 हुत कडावत धूत १६ ॥ राग कल्याण ॥ तोसों कहा धूताइ करिहैं । जहां
 करी तहँदेखीनाहीं कह तोसों में लरिहैं । मुखसभारि त बोलत नाहीं
 दाहत बराबरि बात । पावहु गे अपनो कियो अबहीं रिमनि कँपावत
 गात । सुनहु प्रयास तुमहँ मरिनाहीं सेसगये बिलाइ । हमसोंमरतहोत
 सूरजप्रभुकमलदेहु अब जाइ १७ ॥ राग गौरी ॥ हमहीं परसत रातकन्हारै ।
 प्रथमहिं कमल कंठको दीजै डारै हमहिं मराइ । सांच कहाँ में तुमहि
 थोदामा कमल काज में आयो । कहेकंस बपुरो केहि लायक जाके
 मोहिं डरायो । अघा बका केरी शकटासुर लग्याशिला पर डारैउँ ।
 बकी कपटकरि मारनआइ ताका तुरत पछारैउँ । कालीदहजलकुबत
 मरेसब सोइ कालीधरि लयाऊँ । सूरदास प्रभु देहधरेकी गुण प्रकट्यो
 यहिटाऊँ १८ ॥ राग गोरठ ॥ रिसकरि लीनों फेंतछिड़ाइ । सखासबै देखत
 हैं टाढ़े आपुहि चढ़े कदम्बपर धारै । तारीदैदै हँसत सबै मिलि प्रयास
 गये तुमभांगि डराइ । रोवतचले थोदामाघरको यशुमतिआगे कहिहैं
 जाइ । सखा सखा कहि प्रयास पुकार्यो गेद आपनी लेह न आइ । सूर
 प्रयास पीताम्बर काँछे कूदिपरे दहमें भहराइ १९ ॥ राग गौरी ॥ हायहाय
 कहि सखनि पुकार्यो । गेदकाज यहकरी थोदामा नन्सहरको ढोटा
 माख्यो । यशुमति चली रसेईभीतर तबहिं खाल यहछींकी । ठुठकि
 रही द्वारेपर टाढी बात नहीं कहुनीकी । आय अजिर निकसी नंदरानी
 बहुरो दोयूमिटाइ । मंजारी आगेहै निकसी पुनिफिर आंगन आइ ।
 व्याकुलभई निकसिगइ बाह्यर कहांधौं गयो कन्हारै । बायें कागदा-
 हिने खरसुर व्याकुल घर फिरिआइ । सराभीतर सरा बाह्यरआवति
 सरा आंगन यहिभांति । सूरप्रयासको टेरतिजननी नेक नहीं मनशांति
 २० देखे नन्दचले घरअवित । पैठतपौरि छींकभइ बायें रोय दाहिनी
 बाय सुनावत । फरकत अवरण ज्ञान द्वारेपर गररीकरत लराइ । साथे

४४० सूरसागर कालीदमनलीला रागकल्पद्रुम ।

पर है काग उड़ानो कुसगुन बहुतक पाई । आये नन्द घरहि मनमारे
व्याकुल देखीनारि । मूर नन्द युवतीसों बूझतबिनुछवि बदननिहारि
२१ ॥ राग नट ॥ नन्दघरनीसों बूझतबात । बदन भूझायगयो क्यों तेरो
कहां गयो बलमोहन तात । भीतर चली रसाई कारणा छींक परीतव
आंगनआय । पुनि आगे हैगई मञ्जारी और बहुत में कुसगुनपाय ।
मेराहैं भये कुसगुन घरपैठत आजु कहा यहसमुझि नजाय । मूरश्याम
कहंगये अ जुधों बारबार बूझत नंदराय २२ ॥ राग गौरी ॥ महरि महरमन
गये जनाय । क्षणाभीतर क्षणा आंगनठाढे क्षणाबाह्य देखतहैं जाय ।
यहि अवसर सब सखा पुकारत रोवत आये ब्रजको धाय । आतुर
भये नन्द घरहीको महरि महरसों बातसुनाय । चकतभये दोर बूझत
लागेकहे बात हमको समुझाय । मूरश्याम खेलतहि कदमचढ़ि कदि
परे कालीदह जाय २३ ॥ राग सोरठ ॥ सपने परगट कियो कन्हई । सो-
वतही निशि आजु डरानो हमसों कहि यहबात सुनाई । धरिगपरी
मुरझाय यशोदा नन्दगये यमुनातट धाई । बालकसब नंदमङ्गहि धाये
ब्रजघर जहँ तहँ शोरमचाई । बाहिबाहि करि नन्दपुकारत देखतदौर
गिरे भहराई । लोटत धरिगपरीत जलभीतर मूरश्यामदुखदियो बुढा-
ई ॥२४॥ राग गौरी ॥ ब्रजबासी यहसुनि सबआये कहांपखो गिरि कुँवर
कन्हई । बालकलै सोइ दौर दिखाये सुनोगोकुल कियो प्रियाम तुम
यहकहि लोगउठे सबरोई । नन्दगिरत सबही धरिराख्यो पोंछत बदन
नीरलै धोई । ब्रजबासी तबकहत नन्दसों मरणाभयो सबहीको आई ।
मूरश्याम बिनु को बसि है ब्रज धृगजीनिन तिहुँभुवन कन्हई २५ म-
हरि पुकारत कुँवरकन्हई । साखन धख्यो तिहारैहि कारणा आजु
कहां अवसर लगाई । अति कोमल तुम्हरेहि मुखलायक तुमजेंबहु मेरी
नयन जुड़ाई । धौरी दूध औटही राख्यो अपने कर दुहि गये बनाई ।
बरजति ग्वालि यशोदाके सब यहकहि नीकेहैं यदुराई । मूरश्यामसुत
बिरह मातके यह बियोग बरगयो नाहंजाई २६ साखन खाहु लाल
मेरेआई । खेलत आजु अवार लगाई । बैठहुआय सङ्ग दोउभाई । तुम
जेंबहु मैया बलिजाई । सदसाखन अति हित में राख्यो । आजु नहीं
नेकहु तैं चाख्यो । प्रातहिते मैं दिये जगाई । दंतबनि करि जो गये

दोउ भाई । मैं बैठी तब पंथ निहारी । आवहु तुम पर तनसन बारी ।
 अजयुवती मुनिमुनि यहबानी । रोवति धरणापरीं अकुलानी । शोक
 सिंधु बूझी नंदरानी । मुधिवुधि तनकी सबै भुलानी । सूरश्याम लीला
 यहकीन्हो । मुखकेहेत जननि दुखदीन्हो २७ ॥ राग नट ॥ चौंकिपरी
 तन की मुधिआई । आजु कहां व्रजशोर सचायो तबजान्यो दह गिख्यो
 कन्हआई । पुत्रपुत्र कहिके उठिदौरी व्याकुल यमुनातीरहि धाई । व्रज
 खनिता सब सङ्गहिलागी आयगये बल अग्रज भाई । जननी व्याकुल
 देखि प्रबोधत धीरजकरु नीके यदुराई । सूरश्यामको नेकुनहीं डर जनि
 तू रोवै यशुमति साई २८ ॥ राग विलावज ॥ व्रजवासी सब उठे पुकारी ।
 जलभीतर कहकरत मुरारी । संकटमें तुम करत सहाई । अब क्यों नहीं
 बचावत आई । मातपिता अतिही दुखपावत । रोयरोय सबकथा बो-
 लावत । हलधर कहत सुनहु व्रजवासी । वे अन्तर्दुर्गामी अविनाशी ।
 मूरदासप्रभु आनंदरासी । रमा सहित जलहीके बासी २९ ॥ रागसूहे ॥
 अतिकोमल तनु धख्यो कन्हआई । गये तहां जहँ काली सेवत उरगनारि
 देखत अकुलाई । कह्यउ कौनको बालकहे तू बारबार कहि भागिन
 जाई । सराकहिमें जरिभस्म होइगो जबदेखै उठिजागि जम्हाई । उरग
 नारिकी वाणी सुनिके आपु हँसे मनमें मुसकाई । मोक्षो कंस पढायो
 देखन तू याको अब देहि जगाई । कहा कंस दिखरावत इनको एक
 फूंकहीमें जरिजाई । पुनि पुनि कहति सूर के प्रभुको तू अब काह्यन
 जाइपराई ३० ॥ राग गोडमलार ॥ कहा डरकरों यहि फाँगाकको बावरी ।
 कह्यउ मेरोमानि छांडि अपनीबानि अबहि परिहै जानि टेक सबरा-
 वरी । तोहि देखि मोहिं मया अतिहीभई कौनको सुवन तू कहां आयो ।
 मरो यहकंस निरबंश वाको होय कखो यह कंस तोको पढायो । कंस
 को मारिहैं धरणा निरवारिहैं अमर उधारिहैं उरगधरती । सूरप्रभु
 के वचन सुनत उरगिनि कहेउ जाय अब क्यों न मति भई सरनी ३१
 रागमाह ॥ भिरकिके नारिदैगारि मिरिधारि तब पंछपर लात दै अहि
 जगायो । उख्यो अकुलाय डरपाय खगारायको देखिबालक अतिगर्व
 बढायो । पूंछराखी चापि रिसनि कालीकांपि देखै सब सांपि औ-
 सान भूले । पूंछलीनी भर्त्तिक धरणिमो गहि पटाकि फूंकरेउ लटकि

धरि करकोय फुले । करत फलाघात बियजात अतुरातअति नीरजरी-
 जात नहिं गात परसै । सूरके प्रभु श्याम लोकाभिराम बिनु जान अहि-
 राज बियज्वाल बरसै ३२ ॥ राग नट ॥ इनको लै ब्रजलोक दिखाऊँ ।
 कमलभार इनहीं पर लावैं इनको आपु जनाऊँ । मातपिता अतिही
 दुखपावत दरशन काललहेउ ब्रजऊपर धाऊँ । मन मन करत बिचार
 श्याम यह अबकी काली को वै मन हर्य बढ़ाऊँ । कमल पढाय देहु
 अबहीं नृपराजहि दावि दिखाऊँ । सूरदासप्रभुकी यहबाणी ब्रजवा-
 सिनको दुखबिसराऊँ ३३ ॥ राग कान्हरो ॥ उरगनारि सबकहत परस्पर
 देखहु यह बालककी बात । बियज्वाला जलजरत यमुनको याकेतन
 लागत नहिं तात । यहकहु संवतबहे जानत अतिही सुंदर कोमल गात ।
 यह अहिराज महाबियज्वाला कितनेकरत सहसफरा घात । छुवतनहीं
 तन याकेबियकहुँ अबलौबच्यो पुगय पितुमात । सूरप्रयासों दावबता-
 यो कालीअङ्ग लपेटत जात ३४ ॥ राग विलावन ॥ उरग लियो हरिको
 लपटाई । गर्वबचन कहिकहि मुख भायत मोको नहिं जानत अहिराई ।
 लियो लपेटि चरगाते शिखलों अति यह मौसे करीठठाई । चापापूंक
 लुकावत अपली युवतिनको नहिंसकत दिखाई । प्रभु अन्तदर्यामी सब
 जानत अवगासैं यह सकुचि मिराई । सूरदासप्रभु तनबिस्ताख्यो काली
 बिकलभयो तनजाई ३५ ॥ राग कान्हरो ॥ जबहि श्याम तन अति बिस्ता-
 रयो । परपटात दूरत आंग जान्यों शरणा शरणा अहिराज पुकाख्यो ।
 यहबाणी सुनतहि कसगामय तवहिगये सकुचाई । यहै बचनमुनि द्रुपद
 सुता मुखदीनों बसन बढ़ाई । यहै बचन गजरज सुनायो गरुड छाँड़ि
 तहँ धाये । यहै बचन मुनि लाक्षागृहमें पांडव जरत बचाये । यहबाणी
 सहिजातन प्रभुसों सेसे परसकपाल । सूरदासप्रभु अङ्ग सकोख्यो दया-
 कुल देख्यो दयाल ३६ ॥ राग गौरी ॥ नाथत दयाल बिलम्ब न कीनों ।
 पगसोंचापि धाँचि बलतोख्यो फोरि नाक करसों गहि लीनों । कूदि
 चढे ताकेमाथेपर काली करत बिचार । अबगाहि सुनीरही यहबाणी
 ब्रजहैहै अवतार । त्यइ अवतरे आइ गोकुलमें मैं जानी यहबात । अ-
 स्तुति करन लग्यो सहसहुमुख धन्य धन्य जग तात । बार बार कहि
 शरणा पुकारेउ राखिराखि गोपाल । सूरदासप्रभु प्रकटभये जबदेख्यो

व्याल बिहाल ३७ ॥ राग जिधावल ॥ देखि परत रनहरय भयो । पुरया
 ब्रह्म सनातन तुमहीं व्रजकृपा आवतार लयो । श्रीमुख कहैं व्रजहुँ लो
 तुमनाहिँ जान्यो व्रज अवतार । और कौन जो तुमसो नचिहँ महस फा-
 रान के भार । अनजानत अपराधकिये बहुराखि शरणा मोहिँलेहु ।
 भुरदासप्रभु धनि मेरेफरा चरणाकमल जेदेहु ३८ ॥ रागमेरी ॥ अबकीन्हा
 प्रभु मोहिँ अनाथ । कोटि कोटि कीटहु समनाहीं दरशन दियो जगत
 के नाथ । अशरणा शरणा कहावतहो तुम कहतमुनी भक्तनि दुखबात ।
 ये अपराध समासब कीजै धृगमेरी बुधि कहत डरात । दीनबचनसुनि
 काली मुखते चरसाधरे फरिा फरिाप्रतिआय । सूरप्रयास देख्यो अहि
 व्याकुल मुख दीने मेढ्यो बैठाप ३९ यशुमति टेरत कुँवर कन्हैया ।
 आये देखि कहत बलरामाहिँ कहां रहेउ तुमभैया । मेरो भैया आवत
 अबहीं तोहिँ दिखाऊँ मैया । धीरजकरहु नेकतुम देखहु यहसुनि लेति
 बलैया । पुनि यहकहति मोहिँ परमोषत धरणागिरी सुरभैया । सुर
 बिनासुत भइअति व्याकुल मेरो बाल कन्हैया ४० ॥ राग सोरठ ॥ ब्रज-
 वासी सबभये बिहाल । कान्ह कान्ह कहि टेरतहैं व्याकुल गोपीरयाल ।
 अब को बसै जाय व्रज हरि बिनु धृगजीवन नर नारी । तुम बिनु यह
 गति भइ सबनकी कहांगये बनवारी । प्रातहिते जलभीतर पैठे होन
 लग्यो युगयाम । कमललिये सूरजप्रभु आवत सबसो कहिबलराम ४१
 राग नट ॥ आवत उरगनाथे प्रयास । नन्द यशोदा गोप गोपन कहत हैं
 बलराम । मोरमुकुट विशाल लोचन अवराकुराडल लोल । कटि पीतां-
 वर बेध नटवर नटतफरा प्रति डोल । देविदिवि दुन्दुभि बजावत सुमन
 गगा बरयाय । सूरप्रयास बिलोकि व्रज जन हरय सनाहिँ ब्रह्माय ४२
 हलधर कहत श्याम यहआये । मोर मुकुट पीतांबर काळे देख्यो अ-
 धिक निकट जबआये । दिवि दुन्दुभी बजावत गावत फरिाप्रति निरत
 प्रयास । व्रजवासी सबसरत जिवाये हरयि उठों सबवाम । शोकसिंधु
 बहिगयो तुरतही मुखको सिंधुबढायो । सूरदासप्रभु कंसनिकन्दन क-
 मल उरगपर लयायो ४३ ॥ राग कान्हये ॥ फाराप्रति प्रतिनिरत नन्दन-
 नन्दन । जलभीतर युगयाम रहेकहुँ मित्यो नहीँ तनुचन्दन । उहैकाछनी
 कटि पीतांबर श्रीशमुकुट अति मोहत । सनेग गिरि ऊपर मोर अन-

४४४ मूरसागर कालीदमनलीला रामकल्पद्रुम ।

नन्दित देखत ब्रजजन मोहत । अम्बरथके अमर ललनासँग जयजयधुनि
तिहुँलोक । मूरश्याम कालीपर निरत आबतहैं ब्रजओक ४४ ॥ राग
मोह ॥ गोपाल राय निरत फरा पर सेसे । मनो गिरिवर पर बारिद
आये मोर अनन्दित जैसे । डोलत मुकुट शीशपर हरि के कुराडल म-
गिडत गराड । पीतवसन दामिनि तनुघनपर तापर मुरकोदराड । उरग
नारि आगे ठाढीहैं मुखमुख अस्तुति गावैं । मूरश्याम अपराधक्षमहु
अब हम सांगे पतिपावैं ४५ ॥ राग कान्हरो ॥ बहुतकृपा यहकरी गुसाई ।
इतनी कृपाकरी नहिं काहू जिनते राखि लिये शरणाई । कृपाकरी
प्रह्लाद भक्त को द्रुपदसुता पतिराखी । ग्राहू मुखहि गजराज छुड़ाये
वेद पुराण भायी । जो कुछ कृपाकरी कालीसें सो काहू नहिं
कीनों । कोटि ब्रह्मांड अङ्गप्रति रोमणि ते पग फराप्रति दीनों ।
धरणी शिर धरि शेषगर्ब करि यहिभरि अधिक संभारेउ । पूरणा
कृपा करी मूरज प्रभु फरा फराप्रति पगधारेउ ४६ ॥ राग मोह ॥ ठाढे
देखनहैं ब्रजवासी । करजोरे अहिनारि बिनयकर कहति धन्यअवि-
नाशी । जे पदकमल रमाउरराखति परशिमुरसरी आई । जे पदक-
मल शम्भुकीसम्पति ते फराफरा प्रतिधरे कन्हाई । जे पदपरशि शिला
उद्धरिगई पाण्डव गृह फिरिआये । जे पदकमल भजन महिसाते जन
प्रह्लाद बचाये । जे पद ब्रजयुवतिन मुखदायंक बैपद तिहुं भुवन किये
बावन । मूरश्याम तेपद फराफरा प्रति निरत अहिक्रियो पावन ४७
सेसी कृपा करी नहिंकाहू । खम्भप्रगटि प्रह्लाद बचायो सेसीकृपा न
ताहू । सेसी कृपाकरी नहिं गजको पायँपियादे धाये । सेसी कृपातब
हूँ नहिंकीनी नृपति न बंदिछुड़ाये । सेसी कृपाकरी नहिं तबहूँ द्रौप-
दिनगिन समयपति राखी । सेसी कृपा करी न भीष्मपर सत्यप्रतिज्ञा
भाखी । पूरणाकृपा नन्द यशुमति को सो पूरणा यहिपायो । मूरदास
प्रभुधन्य कंसजनि तुमसों कमलमंगायो ४८ ॥ राग कान्हरो ॥ सुनहुकृपा-
निधि जिती कृपा तुम या कालीको कीनी । इतीबडाई कबहूँ कैसी
नहिं काहूको दीनी । जिनपद कमल मुकत जल परस्यो अजहूँ धरेउ
शिरशीश । तेपद प्रकट धरे फराफराप्रति धन्य कृपाजगदीश । एक
अण्डको भारबहत है गर्बधरेउ जियशेष । यहिभरअधिक सहेउअपने

शिर अमित अगडभय मेय । सुर नर असुर कीट पशु पक्षी सब सेवक
प्रभुतेरे । सूरश्याम अपराध समहुअब या अपने जन केरे ४६ चरणा
कमल बन्दों जगदीश जेगोधन के संगधारे । जेपदकमल धूरिलपटाने
करगहि गोपिन उरलाये । जेपद कमल युधिष्ठिरपूजे राजसूयमें च-
लिआये । जे पदकमल पितामहभीयम भारतमें देखनपाये । जेपदक-
मल रमाउर भूयरा वेदभागवत मुनिभाये । जे पदकमल शंभुचतुरानन
हृदय कमल अंतर राखे । जे पदकमल लोकपावन त्रयबलिराजाकी
पीठधरे । तेपदकमल सूरके स्वामी कालीफराप्रतिवृत्त्यकरे ५० बन्दों
चरणा सरोज तुम्हारे । सुन्दरश्याम कमल दललोचन ललित त्रिभङ्गी
प्राणाप्यारे । जे पदपद्म सदाशिवके धनसिंधुसुता उरते नहिं टारे ।
जे पदपद्म तात रिस वासत मन बच क्रम प्रह्लाद संभारे । जे पद पद्म
फिरत वृन्दावन अहि शिर धरि अगंगात रिपु मारे । जे पदपद्म प-
रशि ब्रजयुवती सर्वसु दै सुत सदन बिसारे । जे पद पद्म लोक त्रयपा-
वन सुरसरि दरश करत अघ भारे । जे पद पद्म परशि ऋषिपत्नी
नृप अरु दयाध अमित खल तारे । जे पदपद्म फिरत पागडब गृह दूत
भये सब काज संवारे । तेइ पदपद्म सूरदास सुख करणा बचनअहि
फराप्रति धारे ५१ गिरिधर ब्रजधर मुरलीधर । माधव पीताम्बर-
धर मुकुटधर गोपधर डगधर । शंखधर शारंगधर चक्रधर गदाधर
रसधर । अधरसुधाधर कंबुकंठधर कौस्तुभमणिधर वनमालधर । मो-
तीमालधर कटिकोंधनीधर भृगुरेखाधर पद्महस्तधर । लक्ष्मीधर अरु
गुंज मालधर कालीफरा प्रति चरणा कमलधर । सूरदासके प्रभुजगत
धर भगतधर दुष्टकंसके केशधर ५२ सबैब्रजयमुनाके तीर । कालीनाग
के फरापर निरतसंकर्षणा कोबीर । लाग गान थैथैथै करत उघटत
तालमृदंग गंभीर । प्रेमसगन गावतगाया गन्धर्व द्योम बिमाननिभीर ।
उरग नारिआगे भइटाढी नैननि हारतिनीर । हमको दानदेहु पतिछा-
डहु सुन्दरश्याम शरीर । आये निकसि पहिरिमणि भूयरा पीतवसन
कटिचीर । सूरश्याम को भुजभरि भेंटत अंकुस देत अहीर ५३ गरुड
वासते जो यहाँआये । ती प्रभु चरणाकमल फराफरा प्रति अपने शी-
शधराये । धरि ऋषि शापदियो खगपतिको यहाँतब रहेउं छिपाई ।

४४६ सूरसागर कालीदमनलीला रागकल्पद्रुम ।

प्रभुवाहन डरभाजि वच्योअहि नातसु लेतेखाई । यहसुनि हाथा करी
नंदनन्दन चरणा चिन्ह प्रकटाये । सूरदास प्रभुअभय ताहि करिउरग
हीप पहुँचाये ५४ ॥ राग कल्याण ॥ जय जय धुनि अमरन नभ कीनों ।
धन्यधन्य जगदीश गुमाई अपनोंकरि अहिलीनों । अभयकियोफला
चिन्ह चरणाधरि जानि आपनोंदास । जलते काटि कृपाकरि पठयो
मेति गरुड को ग्राम । अस्तुति करि अहिपति कुटुंब लैचल्यो आपने
ओक । सूरप्रयास मिलि मात पिता को दूरिकियो तनशोक ५५
रागनट ॥ लीनोजननी कंटलगाई । अंग पुलकित रोस गदगद सुखद
आंसुबहाई । मैं तुमहिं बरजतिरहों हरियमुन तद जिनिजाय । कंस
कमल मँगाइ पठये तात गये डराय । मैं कह्यउं निशि सयन तोषों
प्रकट भई सुआय । तात तू असगुण जो देखे सोऊ प्रकट लखाय ।
ग्वाल संग मिलि गेद खेलत आये यमुना तीर । काहुलै मोहिं डारि
दीनों कालिया दहनीर । यह कही तब उरग मोसों कित पठाये
तोहिं । मैं कही नृप कंस पठयो कमल कारणा मोहिं । यह सुनत
डारि कमल दीनों मोहिं लियो बढाय । सूर यह कहि जननि लोभो
देख्यो तुमहीं आय ५६ रागमेरी ॥ ब्रजवासिन सो कहत कन्हारै । यमु-
ना तीर आजुमुख कोजै यह मेरे मन आई । गोपन सुनि अति हरख
बढायो सुखपायो नँदराई । घर घरते पकवान मँगाये ग्वालनिदियो
पठाई । दधिमाखन यटरस के भोजन तुरतहि ल्यायेजाई । मातपिता
गोपी ग्वालिनिको सूरजप्रभु सुखदाई ५७ तुरत कमल अबदेहु पठाई ।
सुनहु तात अब बिलम्ब न कीजै कंस चहै ब्रज ऊपर आई । कमल
मँगाय लिये तटऊपर कोटि कमल तब दिये पठाई । बहुत बिनयकरि
पाती पठई नृपलीजै सब पुहुप गनाई । तैसी हमको आज्ञा दीजै बहुत
धरे जलमांभ सजाई । सूरदासनृप तुव प्रतापते काली आय गयो प-
हुँचाई ५८ ॥ राग सोढा ॥ सहस शकट भरि कमल चलाये । अपनी संस
सर और गोप जे तिनके साथ पंढाये । और बहुत कांवरि दधि माखन
अहिरा कांधे जोरि । नृपकेहाथ पत्र यहदीजो विनती कीजोभारि ।
मेरोनाम नृपतिसें लीजो प्रयास कमल लैआयो । कोटि कमल आपन
नृपसांगे तीनकोटिहैं पायो । नृपति हमहिं अपना करिजानो तुम ला-

एक सुखताही । मूरदास यह कहे नृपआगे तुमहिं कीडि कहैं जाहीं ॥ ५६ ॥
 राग नट ॥ कमलनक भार दवि भार माखन भार लिये ग्वाल नृप द्वार
 आये । तुरतहि देरि गनि कोटि शकटनि जोरि भये टाढे पौरितब सु-
 नाये । सुनत यह बात अनुरात और डरात मन सहलते निकसि नृपआपु
 आये । देखि दरबार सबगाल नहिं कहूँ पार कमल के भार शकटनि
 सजाये । अतिहि चकृत भयो ज्ञान हरिहर लयो शोच सनमेंदयो कहा
 कीनों । गोप शिरहोरि नृपबोरि करजोरिके पुष्प के काज प्रभु पत्र
 दीनों । यह कहेउ नन्द नृपबन्दि अहि इन्द्रपै गयो मेरो नन्दनाम लीनों ।
 उखी अकुलाय डरपाय तुरतहि धाय गयो पहुँचाय तट आय दीनों ।
 यह कहेउ प्रथम बलराम लीजोनाम राजको काम यह हमहिं कीन्हे ।
 और सबगोप आवतजात नृपवात कहत सब सूरमोहिं नहीं चीन्हे ॥ ६० ॥
 राग विगावन ॥ ग्वालनि हरि की बात सुनाई । यह सुनि कंस गयो मुर-
 भाई । तब सनहीं मनकरत विचारा । यहकोउ भलो नहीं अवतारा ।
 याकों मेरो जहाँ उबार । मोहिं मारव मारे परिवार । दैत्यगयेते बहुरि
 न आये । कालीते ये क्यों बचिआये । ताहीपर धरि कमल लदाये ।
 शकट सहस्रभरि व्याल पठाये । एक व्याल में उठाहि बताये । कोटि
 व्याल मेरेसदन चलाये । ग्वालन देखि मनहिं रिसकापै । पुनि मनमें
 यह आकर नापै । आपुहि आपु नृपति तन त्याग्यो । सूरदेखि कंस-
 लनि डरभाग्यो ॥ ६१ ॥ राग नट ॥ भीतरलिये गोप बुलाय । हृदय दुख
 मुख हलभली करि ब्रजहिदिये पठाय । नन्दके शिर पांवदीनों गोप
 सब पहिराय । यहकहेउ बलराम श्यामहि देखिहैं दोउ भाय । अति
 पुस्तकारथ कहौरे उनि कमल उनहीलाय । सूरप्रभुको देखिहैंमें एक
 दिवस बुलाय ॥ ६२ ॥ रागमाह ॥ कमल शकटनिभरे व्याकुलसानो । प्रथम
 के बचन सुनि मनहिंमन रहेउगुनि काटज्यों गयो घुनि तनु भुलानो ।
 भयो बेहाल नंदलालके ख्याल ये उरगते बाँचिफिरि ब्रजहि आये ।
 कहेउ दावानलहि देखो तरवरहि भस्मकरि ब्रजपलहि कहिपठाये ।
 चल्यो रिसपाय अतुराय तबबाँधको ब्रजजनन वनसहित जारिजाऊँ ।
 नृपतिके लिये पान मनकियो अभिमान करत अनुमान चहुँपासवाऊँ ।
 तुम्हावन आदि ब्रजआदि गोकुलआदि आदिवन्यादि सबहीनजारों ।

४४८ मूरसागर कालीदमनलीला रागकल्पद्रुम ।

चल्यो मगजात कहिवात इतरात अतिमूर प्रभुसहित संहारिडारों ई३
 गगगोंड ॥ कमल पहुँचायसब गोपआये । गयो यमुनातीर भई अतिही
 भीर देखि नँदतीर तुरतहि बुलाये । दियो शिरपाँव नृपराव ने महर
 को आपु पहरावनी मर्बादखाये । अतिहि सुख पाइके लियो शिर
 नायके हरय नँदरायके मनबढाये । प्रयास बलरामको नाम जब हम
 लियो सुनत सुखकियो उनकमललाये । मूर नन्दसुवनदोऊ एक दि-
 वस देखिहैं एहुप लिये सुख पाय इन बुलाये ई४ ॥ रागधनायो ॥ यह
 मुनि नन्द बहुत सुखपाये । कमल पढाय दये नृपलीन्हें देखनको दोउ
 सुतन बुलाये । सेवा बहुत मानिही लीनो ब्रजनारी नर हरय बढाये ।
 वहीवात भइ कमल पढाये मानहुँ आपुन जलते लयाये । आनँदकरत
 यमुनतट ब्रजजन खेलत खातहि दिवस बिहाये । यहसुख प्रयास बचे
 कालीते यहसुख कंसहि कमल चलाये । हंसतकान्ह बलराम सुनत
 यह हमको देखन नृपति मँगाये । मूरदासप्रभु मातपितां हित कमल
 कोटि दै ब्रजहि बचाये ई५ ॥

अथकाली दमनवडी लीला ॥

राग धिलावल ॥

नारदकहिं समुझाय कंस नृपराजको । तबपठयोब्रज
 दूत एहुपके काजको ॥ ध्रुव ॥ तबपठयो ब्रजदूतसुनी नारदमुख बानी ।
 बार बार क्यिराज कंसमुख अस्तुति गानी । धन्य धन्य मुनिराज तुम
 भलोमंत्र दियोमोहिं । दूतचलायो तुरतहि हो अबहिजाय ब्रजजोहि ।
 यहकहियो तू जाय कमल नृप कोटि मँगायो । पत्रदियो लिखि हाथ
 कह्यो बहुभाँति जनायो । काल्हिकमल बहिं आवहिं तो तुमकोनहिं
 चैन । शिरनवाय करजोरिके हो चल्योदूत सुनिबैन । तुरतपढायोदूत
 नन्द घरहीमें पायो । कमल एहुपके भार कंसनृप बेगिमँगायो । का-
 लिहनपहुँचै आयके तबबसिहो ब्रजलोग । गोकुलमें जे सुखकिये हो ते
 करिहोहो शोग । जो न पढाबहु एहुप कह्योगे तैसेमोको । तारैगे नृपतीर
 बसनपैहानहिंओको । यहजानहु गोपनिसमेत पकरिसंगाबहिकालि ।
 एहुपबेगि पढायेबनेहो जौरेबसे ब्रजपालि । यहसुनिनन्दडराय अतिहि
 मनमन अकुलाने । यहकारज कों होयकाल अपनेा करिजाने । और
 महर सब बोलिलै कैसाकरें उपाय । काल्हप्रात ब्रजमारिहैहो बाँधि

सबनि लैजाय । बलमोहन को नामधर्यो कहि पकरि मँगावन । ताते
 अति भयोशोचलगत मुनि मोहिं डरावन । यहमुनि शिरनाथे सबनि
 मुखहि न आवैवात । कहो कहा अब कीजिये हो कैसे मितिहै घात ।
 कोउ बालकन भगाय जाहि लै आन भूमिपर । बसहम को लै जाय
 प्रथम बलराम बचैधर । महरि सबै ब्रजनारिसों कहिपुंक्त कोउपाउ ।
 जन्महिते करवर तरीहो अबकी नहींबचाउ । कोउकहै देदेदाम नृपति
 जितनो धनचाहै । कोउ कहै जैयेशरणा सबैमिलि बुधिअवगाहै । यही
 शोच सबपगिरहे कहनहीं निरवार । ब्रज भीतर नंदभवनमेंहो घरघर
 यहै विचार । अन्तर्दुर्गामी जानि नंदसों बूझत वात । कहा करत है
 शोचकहो कहु मोसोंतात । कहाकहों मेरेलाडिले कहतबडो संताप ।
 मथुरापतिके जियकछूहो तुमपरउपज्योपाप । कालीदहके पुहुपसांगि
 पठये हमसोंउनि । तबते मोजियशोच जबहिं तेबात परीमुनि । जों नहिं
 पठवाहै कालिहहीतो गोकुलदेउं लगाय । मोसमेत दोउबंधु तुमहो का-
 लिहिलेइ बंधाय । यह कहि पठयोकंस तबहिं ते शोच परेउ मोहिं ।
 प्रथम पूतनाआय बहुत दुखदै जुगई तोहिं । तृणावर्त के घातते बहुत
 बच्चो दुखपाय । शकटाकेशीते बच्चोहो अबको करैसहाय । अघा-
 उदरते बच्चो बहुत दुख सहेउ कन्हाई । बकारहेउ मुखबाय तहांभयो
 धर्मसहाई । इतने करवरहैं ररे देवनाकिये सहाय । तबते अबगाढी प-
 रीहो मोको कहु न सहाय । बाबातुमहीं कहतकौन धौ तोहिं उबारै ।
 सोइब्रज भीतर प्रकटकंस राहिकेश पधारै । यह जबहीं हरिसों मुनी
 नन्दमनहिं पतिआय । गगनगिरत जो सँगरहेउ होसो करिलेइ सहा-
 य । नन्दहि यहसमुझाय कान्हउठि खेलनधाये । जहं ब्रज बालक हुते
 तुरत तहँ आपुन आये । गोपसुतन सों यह कहेउ खेलें गेंद मँगाय ।
 श्रीदामा यह सुनतही हो घरते ल्यायोजाय । सरवा घरस्पर सारकरै
 कोउ कानि न मानै । कौन बडोको छोट भेद भेदानहिं जानै । खेलत
 यमुना तटाग्ये आपुहि ल्यायेतारि । श्रीदामाके हाथते लै गेंदइ दह-
 डारि । श्रीदामागहि फेंत कहैउ हमतुम एकजोटा । कहाभयो जो नन्द
 बडे तिनके तुमढोटा । खेलतमें कहछोट बडो हमहुं महरके पत । गेंद
 दियेही पै बने हो कांड़िदेहु मतिधूत । तुमसों धूत्यों कहांकरी धूत्यों

४५० सूरसागर कालीदसनवड्डीलीला रागकल्पद्रुम ।

नहिं देख्यो । प्रसथ पूतना नारि काग शटकाधुर पेख्यो । तृणावर्त
पटव्यो शिला अघा बका संहारि । तुम तादिन संगही रहे अब धूत
कहत न संभारि । देखे कहा बतात कंसको कमलदेहु अब । कालिहिहि
पटये सांगि पुहुप अवलै देहो जब । बहुत अचगरी जिनकरौ अजहं
तजौ भवारि । पकरि कंस लै जायगो कालिहिहि परेखभारि । कमल
पटाऊं कोटिकंसको दोयनिवारो । तुमदेखत पुनिजाउं कंसजीवत ध-
रिमारे । फेटलियो तबभट्टिकके चढेकदमपर जाय । सखा हंसत ठाढ़े
सबै हो मोहनगयेपराय । श्रीदामा चलेरोय जायकहिहौं नन्द आगे ।
गँदलेहु तुम आय मोहिं डरपावन लागे । यहकहि कूदि परे खलिल
कीने नदवर साज । कोमलतनु धरि के गये जहँसेवत अहिराज । यहि
अन्तर नंद घरनि कहेउ हरि भूखेहैं हैं । खेलतते अब आय भखकहि
मोहिं सुनेहैं । अतिआतुर भीतरचली जेवन कारणाआप । छींक सुनत
कुशगुन कहेउ हो कहाभयो यहपाप । अजिर चली पछितात छींक
को दोय निवारणा । संजारी गइ काटि तबहि निकसत ही वारणा ।
जननी जिय व्याकुल भई कान्ह अबरलगाय । कुशगुन आजुबहुतभये
हो कुशलरहें दोउभाय । प्रयास परे दहकूदि सात जिय गयो जनाई ।
आतुर आयेनन्द घरहि बूझत दोउभाई । नंदघरनिषों योंकहत मोको
लगत उदास । यहिअन्तर हरितहं गयेहो जहँकालीको बास । देख्यो
पद्मा जाय अतिहि निर्भय ह्वै सेवत । बैठी तहं अहिनारि डरी बा-
लकके जोवत । भागु भागु सुत कौनको अतिकोमल तेरो गात । एक
फुंकको नहीं तू हो विषज्वाला अति तात । तब हरि कहेउ प्रचारि
पतिहिको देहि जगाई । आयो देखन याहि कंसमोहिं दियो पटाई ।
कंसकोटि जरिजाहिंगेबियकी एकफुंकार । कहेउकरिफिरि जाहिहू
हो अति बालक सुकुमार । यहिअन्तर संग सखाजाय ब्रजनंद सुना-
यो । हमसंग खेलत प्रयास जाय दह मांभक्षसायो । बडि गयो उचक्यो
नहीं ता बातहि बडिबेर । कूदिपरेउ चडि कदमते हो खबरि न करी
सबेर । बाहिबाहिकरि नन्द सुनत दोरे यमुना तट । यशुमति सुनि यह
बात चलीरोवत तोरतिलट । ब्रजवासी नरनारि सबगिरत परत चले
धाय । बूझे कान्ह सबनि सुनिहो अति व्याकुल मुरझाय । जहँ तहँ

परी पुकार कान्ह बिन भये उदासी । कौन काहि सों कहे अतिहि
व्याकुल ब्रजवासी । नंद यशोदा अति विकल परत यमुन में धाई ।
और गोप उपनंद मिलि हो बांहपकरि लैआई । धेनु फिरति बिल-
लानि बच्छयन कोउ न लगावै । नंद यशोदा कहत कान्ह बिनकौन
चरावै । यहसुनि ब्रजवासी सबै परेधरणी अकुलाय । हाय हायकरि
कहति सबैहो कान्ह रहेउ कहँ जाय । नंद पुकारत रोयबुडाई मोहिँ
छुड़ायो । कछुदिन मोहलगाय जायजल भितर भंडाये । यह कहिके
धरणी गिरत जुनु तरुकाटि गिराय । नन्दधरनि तब देखिकैहो का-
न्हहि टेरि बुलाय । नितुर भये सुत आजु तातकी छोड़ न आवति ।
यह कहिके अकुलाय जलहि भीतर को आवति । परति जाय यमुना
सलिल गहिआनति । ब्रजनारि नेकरहौ सब सरहिँगी हो कोहै जीव-
नहारि । प्रयास गयो जलबूझि वृथाधृग जीवन जगको । शिर फोरति
गिरिजाति अभूयरा तोरति अङ्गको । मुरछिपरी तन सुधिगई प्राण
रहेउ कहँजाय । हलधर आये घायकै हो जननीगइ मुरभाय । नाक
मुँदि जल सींचि जननि जननी करि टेरै । बारबार भूभकोरि नेक
हलधर तन हेरेउ । कहतउठी बलरामसों बनहिँ तज्यो लघुभात । का-
न्ह तुमहिँ बिनरहत नहिँ हो तुनसों क्यों रहिजात । अब तुमहं जिनि
जाहुसखा एक देहुपटाई । कान्हहि ल्यावैजाहि आजुअबसेरि कराई ।
छाक पटाऊं जोरिकै मन मन शोकसमाज । प्रातकछु खायो नहीं हो
भूखे हूँ गई सांज । कबहुँ कहति बनगये कबहुँ कहिधरहि बतावति ।
कहँ खेलत हो लाल टेरियह कहति बुलावति । जागिपरी दुखमोह
ते रोवत देखे लोग । तब जान्यो हरि दहगिरेउ हो उपज्यो बहुरि बि-
योग । धृग धृग नन्दहि कहेउ और कितने दिन जीहो । मरत नहीं
मोहिँमारि बहुरि ब्रजबसिहो कोहो । ऐसे दुखमें मरगासुख मनकरि
देखहु जान । व्याकुल धरणी गिरिपरे हो नन्द भये बिन प्रान । हरि
को अग्रज बंधु तुरतही पिता जगायो । माताको परबोधि दुहुनि धी-
रज धरवायो । मोहिँ दुहाई नन्दकी अबहीं आवत प्रयास । नाथिनारा
ले आयहँ हो तब कहियो बलराम । हलधर कहेउ सुनाय नन्द यशु-
मति ब्रजवासी । वृथामरत कहि काज मरै क्यों वह अविनाशी । आदि

४५२ सूरसागर कालीदमनबडौलीला रागकल्पद्रुम ।

पुस्य में कहत हैं गये कमल के काज । गिरिधरको तुम डरतहो हो
वह देवन शिरताज । वह अविनाशी आहिकरौ धीरज अपने मन ।
कालीछेदे नाक लिये आवत नितत फन । कंसहि कमल पटाय हैं का-
लिहि घटवैं दीप । एक घरी धीरज धरौ हो बैठौ सब तस्नीप । मुनि
हो अहिकी वासश्याम अहि क्यों न जगावै । बालक बालक करति
कहापति क्यों न उठावै । कहाँ कंस कहँ उरग यह अबहुँ दिखाऊँ तो-
हिँ । देजगाय में कहतहैं हो तुनहिँ जानति मोहिँ । मैं जानति हैं
बालफूंक यकमें जरिजैहो । छोटेमुख बडिवात कहत अबहीं मरिजैहो ।
छोह लगति तोहिँ देख मोहिँ काकोबालक आहि । खगपति सेां
सरवरि करीहो तूबपुरो को आहि । बपुरो मेसेां कहति तोहिँ बपुरो
करिहारों । एक लातसेां चापि खसम तेरेको मारों । सेावत काहु न
मारिये चलिआई यहवात । खगपतिको मैंहीं कियो हो कहति कहा
तू वात । तुमहिँ बिधाताभये और कर्ता कोउनाहीं । अहिमारोगे आपु
तनक से तनकसी बाहीं । कहाँ कहैं कहत न बनै अतिकोमल मुकु-
मार । देती अबहिँ जगायके हो जरिवरि ह्वै हाँकार । तूधोदेहिजगाय
तोहिँ दूयगा कछुनाहीं । परी कहा तोहिँ नारिपाप अपनेजरिजाहीं ।
इसको बालक कहतिहै आपु बडेकी नारि । बाद करत बिनकाजहीं
हो रुधा बडावति रारि । तूहीं न लेहिजगाहि बहुत जो करत दिटाई ।
पुनिमरि हैं पछिताय सात पितु तेरे भाई । अजहँ फिरि करिजाहि तू
मपिलैहैं सुखकोन । पांच बरखकी सातको हो आगेतोकोहो न । भि-
रकि नारिदे गारि आपु अहि जाय जगायो । पगसेां चापि पूंछ सबै
औसान भुलायो । चरगा मसकि धरणी दली उरग गयो अकुलाय ।
काली मनमें तब कही हो यह आयो खगराय । देख्यो नयन उधारि
तहां बालक यकटाढ्यो । बियवर भटकीपूँछ परकि सहसौ फरा का-
ढ्यो । बारबार फराघातकरि बिय ज्वालाकीभारि । सहसौ फराफरा
फुंकरैहो नेक न तनहि लगायि । तब कालीमन कहत पूंछ चापी यहि
पगसेां । अतिहि उढ्यो अकुलाय डरेउ बाहन हरिखगसेां । यहबालक
धौं कौनको कौनो युद्ध अगाय । दांभ घात बहुते कियो हो मुरत जहीं
यदुराय । पुनिदेखै हरिऔर पूंछ चापी यहिमैरी । मत्तमन करत बि-

चार लेउँ याको मैं घेरी । दांवपरेउ अहिजानिके लियो अङ्ग लपटाय ।
 चरगा लपेटे शिखालों हो यहिअति करी ढिटाय । कहति उरग की
 नारि गर्व अतिही करिआयो । अयो पहुँच्यों कालबप्रथ पग इतिहि
 चलायो । अहिनारिन सेां यह कही मोहिँ समसरि कोउनाहिँ । एक
 फूँक बियज्वालके हो जल डूंगर जरिजाहिँ । गर्व बचन प्रभु सुनत तुर-
 तही तनु बिस्तारेउ । हाय हायकरि उरग बारहीबार पुकारेउ । शरणा
 शरणा अब मरतहीं मैं नहिँ जान्यों तोहिँ । चटचटात अङ्ग फूटही हो
 राखु राखु प्रभु मोहिँ । अवरगा शरणा धुनि सुनत लियोप्रभु तन सकु-
 चाई । समहु मोहिँ अपराध न जानेकरी ढिटाई । व्रजमें कृष्णअवतार
 है मैं जानी प्रभुआज । बहुतकिये फराघात मैं हो बदन दुरावतलाज ।
 रहां आनि यहिदौर गरुडकी वासगुमाई । बहुत कृपामोहिँकरी दरश
 दीनोजगमाई । नाकफोरिफरापरचढे कृपाकरी दिवराय । फराफरा
 प्रति प्रति चरगा धरेहो निरत हरय बढ़ाय । धन्य कृष्ण धनि उरग
 जानिजन कृपाकरीहरि । धन्यधन्य दिनआजु दरशमें पापगयेजरि ।
 धन्यकंस धनिकमल येधन्यकृष्ण अवतार । बडौकृपा उरगाहिकरीहो
 फराप्रति चरगा बिहार । शेषकरत जियगर्व अगडको भारशीशधरि ।
 पूराब्रह्म अनन्तनामकोसकौ पार करि । फराफराप्रति अतिभार भर
 अमित अङ्गमें गात । उरग नारि करजोरिके हो कहति कृष्णसेांवात ।
 देखत ब्रजनर नारि नन्द यशुदा समेत सब । कंसमें कहत रखत सुन
 हो सुतकान्ह नहींअब । यहि अन्तर जलकमल विचउर्यो कछुअकु-
 लाय । रोवतते बरजे सबै हो मोहन अग्रजभाय । आवत हैं वहश्याम
 पुहुप काली शिरलीने । मातपिता ब्रजदुखित जानि हरि दर्शनदीने ।
 निरतकाली फरानपर दिवदुन्दुभी बजाय । नरवर बपुकाछे रहैं हो
 सबदेखैं वहभाय । आवत देखे श्यामहरय कीन्हों ब्रजवासी । शोक-
 सिन्धु गयो उत्तरि सिन्धुआनन्द प्रकासी । जल बूझत नौका मिलै जो
 न होत आनन्द । त्यों ब्रजजन हुलसे सबैहोआवतहैं नन्दनंद । सुत देखत
 पितु मात रोम गडगद पुलकित भये । उर उपज्यो आनन्द प्रेम जल
 लोचनदुहुअये । देव दुन्दुभी बजावहीं फराप्रति निरतश्याम । ब्रजवासी
 सब कहत हैं हो धन्य धन्य बलराम । उरगनारि करजोरि करति अ-

४५६ मूरसागर दावानलपानलीला रागकल्पद्रुम ।

कन्हैया अब न बाचिहैं मारतजारे । जेवनकरा चली जब भीतर कींक
परीती आजुसबारे । ताकोफल तुरतहि यकपायो सो उबरेउ भयो धर्म
सहारे । अब सबको संहार होतहै कींकिये येकाज बिचारे । कैसेहु
ये बालक दोउ उबरें पुनि पुनि शोचति परी खंभारे । मूरश्याम यह
कहत जननिसें रहुरीमा धीरज उरधारे ५ ॥ रागगोड ॥ भहरात हहरात
दावानल आयो । घेरि चहुँ ओर करिशोर अंधेर बन धरिआ आकाश
चहुँपास छायो । बरत बनबांस थर हरत कुशकास जरि उड़तहैं भांस
अति प्रबलधायो । भूपति तलपट पटक फलफुटतफटि चटक चटक
द्रुम द्रुम नवायो । अति अग्नि भारभंभार धंधकारकरि उचटि अंगार
भंभारधायो । बरतवनपात भहरात अररात तरुमहा धरणीगिरायो ।
भये बेहाल सब बवाल ब्रजबाल तब शरणागोपाल कहिके पुकारेउ ।
तगाकेशीशकट बकीबक अधासुर बामकर राखिगिरिज्योउबारेउ ।
नेकधीरजकरी जियहि कोउ जनिडरी कहैयह सरे लोचन मुदायो ।
मूठी भरिलियो सबनाथ मुखहींदियो मूरप्रभुपियो ब्रजजनबचायो ६
रागकान्होरे ॥ अबकी राखिलेहु गोपाल । दशहुं दिशातें दुसह दावागिन
उपजीहै यहिकाल । पटकतबांस कांसकुश चटकतलटकत तालतमाल ।
उचरत अति अंगार फुटतफर भूपत लपट कराल । धूम धूखि बाढी
धुरअम्बर चमकत बिचबिच ज्वाल । हरनि बहार मोर चातक पिक
जरतजीव बेहाल । जिनजिय डरहुनयन मंदहुसब हंसिबोले नंदलाल ।
मूरअनल सबसदन समानी अभय करे ब्रजबाल ७ ॥ रागगोड ॥ दावानल
अचै ब्रजजन बचायो । धरिआ आकाशलो ज्वालमालाप्रबल घेरिचहुँ
पास ब्रजबास आयो । भयेबेहाल सब देख नंदलाल तब हंसतही खयाल
ततकाल वीना । सबन मंदे नयन नाहिं चितये सैन त्रयाज्यों नीरदब
अचैलीनां । देखोअब नयनभरि बुझिगई अगिनिभार चितैनरनारि
आनन्द भारी । मूरप्रभु मुखदियो दावानल पीलियो कहत सबखाल
धनिधनि मुरारी ८ ॥ रागविहागरे ॥ चकत देखि यहकहि नरनारि ।
धरिआ अकाश बराबर ज्वाला भरती लपटि करारि । नहिं बरख्यो
नहिंछिरक्यो काहूकहांधौंगयो बिलाई । अतिआघातकरतबनभीतर
कैसेगयो बुझाई । तगाकी आग बरतनहिं बुझिगई हंसि हंसि कहत

गोपाल । सुनहुसूर वहकरनि कहनि यह ऐसे प्रभुके खयाल ६ ॥ राग
बिलावल ॥ जाकोसदा महाइ कन्हारै । ताहि कहौ काकोडर साई । बन
घर जहां संगहीडोलै । खेलतखात सबनिसों बोलै । जाकोध्यान न पावै
योगी । सो ब्रजमें साखनकोभोगी । जाकीमाया विभुवनकावै । सोय-
शुभतिके प्रेमबन्धवै । मुनिजन जाकोध्यान न पावै । ब्रजजनलैलै नाम
बुलावै । सूरताहि सुरअंबरदेखो । जीवनजन्म ब्रजहि को लेखो १० ॥
राग कान्हरो ॥ ब्रजबनिता सब कहति परस्पर नन्दमहरकोसुत बड्ढबीर ।
देखीधौं पुरुषारथ इनकोअतिकोमल तनुश्याम शरीर । गयोपताल-
उरग गहिआन्यो लयायो तापर कमल लदाय । कमलकाज नृपब्रज
मारतहौ कोटि जलज त्यहिदिये पढाय । दावागनि नभ धरिआवरा-
वर दशहुंदिशाते लीनोघेरि । नयनमुंदाय कहा तेहि कीनों कहं नहीं
जो देखेहेरि । येउतपात मित्त इनहींते कंसकहा बपुरोहैकार । सूर-
श्याम अवतार बड्डो ब्रज येही हैं कर्त्ता संसार ११ ॥ राग सोरठ ॥ अति
सुन्दर नंदमहर ढिटौना । कपट रूपकी विद्यानिपाती तबहिरहे अति
छौना । डार शिखापर पटकि तगावर्त्त हैआये वहपौना । अघावका-
सुर तबहिंसंहारेउ प्रथमकियोबनगौना । कमल काज नृपब्रज मारतहौ
दवा अचैकियोखौना । सूरप्रकट गिरिधरेउ बामकर में जानति बलि-
घौना १२ ॥ रागमाह ॥ दवते जरत ब्रजजन उबारैउ । पैतिजल गयेगहि उरग
आन्यो नाथि प्रकट फराफराति प्रतिचरगा धारेउ । देखै मुनिलोक सुर-
लोक शिवलोकके नंदयशुमतिहेत बशमुरारी । जहांतहां करतअस्तुति
मुखन देव नरधन्य जैशब्द तिहुं भुवनधारी । मुखकियो यमुनतट सक
बासर रैन प्रातहि ब्रजगये गोपनारी । सूरश्याम बलराम नंदधामगाये
सात पित ब्रज जनहि मुखद कारी १३ ॥ राग रामकली ॥ हरि ब्रज जनके
दुखबिसरावन । कहाकंस कब कमलसंगायेकह दावानल दावन । जल
कबगिरे उरग कबनाष्ट्यो नहिं जानत ब्रजलोग । कहांबसे यकदिवस
रैनभरि कबहिं भयो यहशोग । यह जानतहमऐसेहि ब्रजमें वैसेहि
करत बिहार । सूरश्याम जननी सों सांगत साखन बारम्बार १४ ॥ राग
बिलावल ॥ नेकरहो साखनद्यों तुमको । ठाढी मथति जननि दधिआतुर
लवनी नंदसुवनको । मैबलिजाउं श्यामघनसुन्दर भुंखलगी तुम्हेंभारी ।

४५८ सूरसागर दावानलपानलोला रागकल्पद्रुम ।

बातकहंकी बूझति प्रथमहि करिकरत महतारी । कहत बातहरि क-
हुनहिं समुझत भूतेहि भरत हंकारी । सूरदास प्रभु के गुण तुरतहि
विसरिगई नंदनारी १५ बातनहीसुत लायतयो । तबलोंमथिदधिजननि
यशोदा माखन करिहरि हाथदियो । लैलैअधर परस करिजेवत दे-
खतफूलयो सातहियो । आपुहिखात प्रशंसत आपुहि माखनरोटी बहु-
तदियो । जोप्रभु शिवसनकादिक दुर्लभ सुतहित बशकरि नंदत्रियो ।
यहसुख निरखत सूरप्रभुको धन्यधन्यफत सुफज्जिजयो १६ ॥ रागभूषे ॥
देरीमैया दोहनी दुहि हों में गैया । माखन खायां बल भयोकरि नंद
दुहैया । कजरी सेंदुरी धूमरी धौरी मेरीगैया । दुहिल्याऊंमेंतुरतहीतू
करिदैया । खालनिकी सरदुहतहं बूझहु बलभैया । सूरनिरखि ज-
ननीहंसी तबलोति बलैया १७ ॥ राग बिलावल ॥ बाबामोको दुहन सिखा-
यो । तेरेसत परतीत न आवैदुहत अंगुरियन भाव बतायो । अंगुरियन
भाव देखिजननी तबहंसिके प्रथामहि कंठलगायो । आठवर्थ को कुं-
वरकन्हई इतनी बुद्धि कहांतेपायो । साता लै दोहनी करदीन्ही तब
हरिहंसत दुहनकोधायो । सूरप्रथामको दुहत देखितब जननी मनअति
हर्ष बढ़ाये १८ जननि मथतिदधि दुहतकन्हई । सखापरस्पर कहत
प्रथामसां हमहंते तुमकर चंड़ाई । दुहनदेहु कछु दिन असुकोको तब
करिहौ मोसम सरिआई । जबलों सकदुहागे तबलों चारि दुहैंतौ नंद
दोहाई । भूतेही करत दोहाई प्रातउठि देखहिंगे तुम्हरी अधिकाई ।
सूरप्रथाम कहेउ काल्हि दुहेंगे हमहुं तुमहुं मिलि होइ लगाई १९ ॥

अथ सूरसागर रागकल्पद्रुम ॥

अथ सोदुहनलीलाको प्रसंग ॥

राग बिलावल ॥ उठी प्रातही राधिका दोहनी करलाई । महारि सुता
सां तब कहेउ कहां चली चतुराई । खरिक दुहावन जातहों तुम्हरी
सेवकाई । तुम ठकुराइनि घररहौ मोहिं चेरीपाई । रीतीदेखी दोहनी
कत खीझतवाई । काल्हिगई अवसेरके ह्वांउठे रिसाई । गाइगई सब
प्यायके प्रातहि नहिंआई । ताकारणा में जातिहैं अतिकरतचंड़ाई ।
यहकहि जननी सां चली व्रजको समुहाई । सूरप्रथाम गृहद्वारहि गौ

करत दुहाई । १ सुता महर वृथभान की नन्दमदनहि आई । गृहद्वार-
ही अजिर में गौ दुहत कन्हआई । श्याम चितै मुख राधिका मन हरय
बढ़ाई । राधा हरिमुख देखिकै तनसुरति भुलाई । महरिदेखि कीर-
तिसुता तेहिलियो बुलाई । दम्पतिको मुख देखिकै सूरज बलिजाई २
आजु राधिका भोरहीं यशुमतिके आई । महरिमुदित हंसियों कहेउ
मथुभान दुहाई । आयसु लै ठाढ़ी भई करनेति मुहाई । रीती माट
बिलोवही चित जहां कन्हआई । उनके मनकी कहा कहां ज्यों दृष्टि
लगाई । लैयानोई वृथभसों गैया बिसराई । नैननि में यशुमति लखी
दुहुंकी चतुराई । सूरदास दम्पति कथाकापै कहिजाई ३ महर कह-
तिरी लाडिलीको तोहिंसमथन सिखायो । कहूंमथनी कहूंमाटहै चित
कहां लगायो । क्यों मेरेघर आयकैतैं सबबिसरायो । मथन नहींमोहिं
आवही तुम सोह दिवायो । तिहि कारणा में आयके तुवबोल रखा-
यो । तब नन्दघरनी मधिदहेउ यहिभांति बतायो । हंसि बोली तब
राधिका कहेउअब मोहिंआयो । सूरनिरखि मुखश्याम को तहंध्यान
लगायो ४ ॥ रागमूहो ॥ दुहतप्रयाम गैयां बिसराई । लैया लै पगवांछि
वृथभके दुहुनी मांगत कुंवर कन्हआई । ग्वालएक दुहनीलै दीनी दुहौ
श्याम अबकरो चँडाई । हंसत परस्पर तारीदैँ आजु कहां तुम रहे
लुभाई । कहत सखा हरिसुनत नहींसो प्यारीसोरहे चित अरुभाई ।
सूरप्रयाम राधातन चितबत बड़ेचतुरकी गइचतुराई ५ ॥ रागरामकली ॥
राधाढंग हैंरीतेरे । बेसेहाल मथत दविकीन्हें हरिमनो लिखेचितेरे ।
तेरोमुख देखत शशिलाजै और कहौ क्योंबाचै । नयनातेरे जलजजीत
हैं खंजन ते अतिनाचै । चपलाते चमकत अतिप्यारी कहा करैगौ
प्रयामहिं । सुनहु सूर सेसेहि दिनखोवत काजनहीं तेरेधामहिं ६ ॥ राग
गूंजरी ॥ मेरो कहेउ नाहिं सुनति । तबहींते इकठक रहिहै कहा मनवों
सुनति । अबहींते तू करति येढंग तोहिंहै अब हैन । प्रयामकोतू सेसे
ठगिलियो कहु न जानैजौन । सुताहै वृथभानकीरी बड़ो उनकोनाउ ।
सूरप्रभु नन्दसुवन निरखत जननि कहति सुभाउ ७ ॥ रागमूहो ॥ प्रकट
प्रीति नहिंरही छिपाई । परीदृष्टि वृथभान सुताकी दोउअरुभे सो
निवारि न जाई । बहुराखीरि खरिकको कीन्हों आपुकान्हतन सुधि

४६० सूरसागर गोदुहनलीला रागकल्पद्रुम ।

बिसराई । नेवतवृथभ निकशि गैयागई हंसतसखा कहादुहत कन्हाई ।
चारेउनयन भयेसकटाहर मनहींमन दुहुरुचि उपजाई । सूरदासस्वामी
रतिनागर नागरिदेखि गई नगराई ८ ॥ रागसारंग ॥ चितैबो छांड़िदैरी
राधा । हिलिमिलिखेलि श्यामसुन्दरसें करति कामको बाधा । की
बैठीरही भवन आपने ह्यांकाहेको आवै । मृगनयनी हरिको मन मो-
हति जबतूदेखि दुहावै । कबहुं करते गिरति दोहनी कबहुं बिसरति
नेई । कबहुं वृथभ दुहत हैं मोहन नाजानों काहेई । कौनमंज जानति
सूप्यारी पछिडारति हरिगात । सूरश्यामको धेनुदुहनदे कहति यशोदा
मात ९ ॥ रागचनारी ॥ धेनुदुहनदे मेरे श्यामहिं । जौंआवै सहस रूपों
बनिआवति बेकामहिं । सुधेआय श्याम संगखेलौ बोलौबैठे धामहिं ।
सेमेहंग मोहिंनहिंभावै लेउ न ताकेनामहिं । घरअपने तूजाहि राधिका
कहति महारि मनतामहिं । सूरआय तू करति अचगरी कोबकि है
निशियामहिं १० ॥ रागजैतथी ॥ बारबारतू जिनिह्यां आवै । मैं कहा
करों सुतहिंनहिं बरजति घरतेमोहिं बुलावै । मोसोंकहत तोहिं बिनु
देखे रहत न मेरोप्रान । छोहलगत मोको सुनि बासी महारि तुम्हारी
आन । मुहपावति तबहींलों आवति औरें लावति मोहिं । सूरसमुक्ति
यशुमति उनलाई हंसति कहति मैं तोहिं ११ ॥ राग गैरी ॥ हंसतकहेउ
मैं तोसों प्यारी । मनमें कछु बिलगु जिनिमाने मैंतेरी महतारी । ब-
हुतेंद्योस आजतूआई राधे मेरेधाम । महारिबड़ी मैं सुघर सुनीहै कछु
सिखवो गृहकाम । मैयाजब मोहिंदहल कहतिकछु खीभत तब बाबा
वृथभान । सूर महारिसों कहति राधिका मानों अतिहि अजान १२ ॥
राग रामकली ॥ दूधदोहनी लैरीमैया । दाऊटेरत सुनि मैंआऊं तबलोंकरि
बिधि धैया । मुरली मुकुट पीतांबर दे मोहिं लै आई महतारी । मुकुट
धरेउशिर कटिपीतांबर मुरलीकर लियोधारी । राधाराधा कहिमुरली
में खरिकहि लईबुलाई । सूरदासप्रभु चतुरशिरोमणि ऐसीबुद्धि उ-
पजाई १३ कुंवरिकहेउ मैंजाति महारिघर । प्रातहिआई खरिकदुहा-
वन कहति दोहनी लैकर । तब खरिकहि कोउ ग्वालापये नहिं तिहि
कारण ब्रजआई । जो देखोते अजिरहिबैठे गैयादुहत कन्हाई । तनक
दोहनी तनक दुहत मोहिं देखत अति रुचि लागी । तनक राधिका

तनक मूर प्रभु देखि महरि अनुरागी १४ ॥ राग गुजरी ॥ जाघर प्यारी
 आवत रहियो । महरिहमारी बातचलावत मिलन हमारो कहियो ।
 एकदिवस मैं गई यमुनतट जहँ उनि देखी आई । मोको देखि बहुत सुख
 पायो मिलिअंकम लपटाई । यह मुनि के चली कुंवरि राधिका मनमें
 हर्य अपार । सुरदास प्रभु करी सेनगति मोहन नन्दकुमार १५ सैन दे
 प्यारी लईबुलाई । खेलनके मिस करिके निकसे खरि कहि गये क-
 न्हाई । यशुमतिसें कहि प्यारी निकसी घरको नाम सुनाई । कर दोहनी
 लिये तहँ आई जहँ हलधरको भाई । तहां मिली सबसङ्ग सहेली कुंवरि
 कहां तू आई । प्रातहि धेनु दुहावन आई अहिरनहीं तहँ पाई । तबहिं
 गई मैं ब्रज उतावली ल्याई खाल बुलाई । सुरश्याम दुहिदेन कहे उमुनि
 राधागइ मुरभाई १६ ॥ राग धनाश्री ॥ धेनु दुहावन प्रियाम बुलाई । अबरा
 सुनत तहँ गई राधिका मनहरि लियो कन्हाई । सखी सङ्ग की कहति
 परस्पर कहँ यह प्रीतिलगाई । कहां वृषभान पराये ब्रजमें कहां दुहा-
 वन आई । मुख देखत हरिको चकृत भई तनकी सुधि बिसराई । सुरदास
 प्रभु के रसबश भई काम करी कठिनाई १७ ॥ राग गुजरी ॥ गांव बसत ये
 ते द्योमनमें आजु मैं देखे । जे दिन गये बिन ब्रज नार्थाहि तेई वृथा करि
 लेखे । कहिये जो कूट होय सयानी कहिबेको अनुमाने । सुन्दर प्रियाम
 निकारि को सुख मैं नाहीं येजाने । तब ते रूप ठगौरी लागी युग समान
 पल बितवति । तजि कुललाज मूर प्रभु के फिरि फिरि मुखतन चित-
 वति १८ ॥ राग देवगन्धार ॥ मोहन करते दोहनि लीन्ही गोपद बछराजोरे ।
 हाथ धेनु थन बदन घियातन सीरकांछि छलछोरे । आनन रही ललित
 पय कीटें छाजत छवि दगातोरे । मानहुं निकसि कलंक कलानिधि दुग्ध
 सिंधु मथिखोरे । दे धुंधुटपट ओट नीलहंस कुंवर मुदित मुखमोरे । म-
 नहुं शरदशशिके मिलि दामिनि घेरि लियो घनघोरे । यहि बिधि रह-
 सत बिलसति दम्पति हेत हिये नहिं थोरे । मूर उमँहि आनन्द सुवानिधि
 मनो बिलावल फोरे १९ ॥ राग रामकली ॥ हरिसों धेनु दुहावत प्यारी ।
 करत मनोरथ पूरगामन वृषभान महर की बारी । दूधधार मुख पर
 छबिलागत सो उपमा अति भारी । मनो चन्द कलंकहि धावत जहँ
 तहँ बुंदसुधारी । हावभाव रसमगन हैं दोऊ छवि निरखति ललितारी ।

गोदोहन मुख करत सूरप्रभु तीनहुँ भुवन कहारी २० ॥ रागसूहे ॥ धेनु
 दुहत अतिही रतिबाढी । एक धार दोहनि पहुँचावति एक धार जहँ
 प्यारीटाढी । मोहन करतेधर चलतपय मोहनमुख अतिही छबिगाढी । सखी
 सककी निरखत यहछवि भईव्याकुल मनमथकी जाढी । सूरदासप्रभु
 के बगभई सबभवन काजते भईउचाढी २१ ॥ राग बिनावल ॥ दुहिदीनी
 राधाकी गैयां । दुहनी नहींदेत करतेहरि हाहाकरति परतिहैपैयां ।
 ज्यों ज्यों प्यारी हाहाबोलति त्यों त्यों हँसत कन्हैया । बहुरि करो
 प्यारी तुम हाहा देहों नन्ददुहैया । तबदीनी प्यारीकर दोहनि हाहा
 बहुरि करैया । सूरप्रयासरस हावभावकर दीनीकुँवरि पढैया २२ चलन
 चहत पगचलै न घरको । छांडत बनत नहीं कैसेहु मोहनसुन्दरबरको ।
 अन्तरनेक करौं नहिँ कबहुँ सकुचतहैं पुरनरको । कहुदिन जैसे तैसे
 खोजँ दूरि करौं पुनि डरको । मनमें यह बिचार करि सुन्दरि चली
 आपने पुरको । सूरदासप्रभु कहेउ जाउघर घातकरेउ नखउरको २३
 शिरदोहनी चली लैप्यारी । फिरि चितवति हरिसों निरखति मुख
 मोहन मोहनी डारी । व्याकुलभई गईसखियनलों ब्रजको गये कन्हवाई ।
 और अहिरसब कहों तुम्हारे हरिसों धेनुदुहाई । यहसुनिके चकतभई
 प्यारी घरगापरी मुरझाई । सूरदासप्रभु तब सखियनउर भरि करि
 कुँवरि उटाई २४ ॥

राग रामकली

॥ कोहो कुँवरि गिरी मुरझाई । यह बाणी कहि स-
 खियन आगे मेको कारेखाई । चलीलिवाय सुता लयभानहि घरही
 तन समुहाई । डारि दियो भरिदुख दुहनियां अबहीं नीके आई । यह
 कारोसुत नन्दमहरको सबहम फूलगाई । सूरसखिन मुख सुनी यह
 बाणी तब यहबात सुनाई २५ ॥ राग सारंग ॥ मोहिलई नयननिकीसैन ।
 अवरण सुनत मुधि बिसरी सबहों लुब्धीमोहन मुखकेबैन । आवतहुते
 कुमार खरिंकते तब अनुमानकियो सखिसैन । निरखत अङ्गअधिक
 रुचि उपजी नखशिख सुन्दर ताको ऐन । मृदुमुसकानि हरेउ मनमो-
 हन तबते क्षण न रहत चितचैन । सूरप्रयास यह बचन सुनायो मेरी
 धेनुकही दुहिदेन २६ ॥ राग धनाशी ॥ सखियनि मिलि राधाघर ल्याई ।

देखहु सहारि छेता अपनीको कहूँ यहिकारे खाई । हम आगेआवति यहपाके धरणिपरो भहराई । शिरतेगई दोहनी धरिके आपुरही मुरभ्राई । प्रियामभुवङ्ग डरेउहम देखत लावहु गुणीबुलाई । रोवति जननि कंठ लपशनी मूरप्रियाम गुगाराई २७ ॥ राग सारंग ॥ प्रातगई नीके उठिधरते । मैं बरजी कहांजातिरी प्यारी तब खीझोरिम भरते । शीतल अङ्ग स्वेदसें बूझी शोचपरेउ मनडरते । अतिहि हठीती कहीनहिं मानति करति आपने मनते । औरै दशा भई सखा भीतर बोले गुणी नगरते । सूरसासुरी गुणाकरि थाके मंत्र न लागत धरते २८ ॥ रागमट ॥ चलेसब गारुरी पछिताई । नेक न मंत्रलगत काहूको समुझिनेकु नहिं जाई । बात बूझति संग सखियन कहा हमहिं बुझाय । कहा कहि राधा सुनायो तुमसबनि सें आय । महा विषधर प्रियाम अहिबर देख सबहींधाय । फूंक ज्वाला हमहुं लागी कुंवरि उर पर खाय । गिरी धरणी मुरछि तबहीं लई तुरत उदाय । सूरप्रभुको बेग लियावहु बड़े गारुडि राय २९ ॥ राग आसावरी ॥ नन्दसुवन गारुरी बुलावहु । कहेउ हमारो सुनत न कोऊ तुरतजाहु ब्रज अब लै आवहु । ऐसे गुणी नहीं त्रिभुवन कहूँ हमजानतिहैं नीके । आवहिं जोतो तुरत जिवाविहं नेकु छुवतही उठिहैं जीके । देखौधौं यहवात हमारी एकहि मंत्रजिवावै । नन्दसहरको सुत सूरजप्रभु जो कैसेहु करि यहांलों आवै ३० इसी है प्रियाम भुवंगम कारे । मोहनमुख मुसकानि मनहुबिय जात मैरसें मारे । फुरै न मंत्रयंत्र गदनाहीं चले गुणी गुगा डारे । प्रेम प्रीति विष हृदय सुलागी डारतहैं तनुजारि । निरबिय नहींहेति कैसेहु करि बहुतगुणी पचिहारे । सूरप्रियाम गारुरी बिनाको जो शिरगाडूडारे ३१ ॥ रागधनाश्री ॥ बेगिचलोप्रिय कुंवरकन्हाई । जाकारणा तुमयह बन सेयो सो विष मदन भुवंगम खाई । नयन शिथिल शीतल नासापट अंगतपतिकछु सुधि न रहाई । सक सकात तनुभीजि पसीना उलटि पलटि तनु तोरि जम्हाई ३२ बिन देखी मूरतिको जितकित उठिदौरी जिनिजहां बताई । ताहि कछु उपचारणालागत करमीडैं सइचरि पछिताई । बार बार बूझतिहैं ऐसे कमल नयनकी सुन्दरताई । जोपै सूरजिवायो चाहततो ताकोनेक देहु दिखाई ३३ ॥ राग सारंग ॥ तनु बियरह्योहै कहारि । नन्द

सुवन गारुरी कहतहैं पठवैं धौं महरि । गई अवसान भीर नहिं भावै
 नहीं चहरि । ल्याऊँ गुणीजाय गोबिंदको बाढीहै लहरि । देखिउरहि
 बीचहीं खाई मतिहै जहरि । सूरप्रियाम बियहर कहूँखाय यहकलि
 चलीडहरि ३ ॥ राग रामकली ॥ चर्चरी ॥ दृयभानकी महरि यशुमति पुका-
 रेउ । पठै सुतकाज में कहति हैं तजिलाज पांय परति महरि करति
 आरेउ । प्रात खरि कहि गई आय बिह्वल भई राधिका कुंवरि कहूँ
 डस्योकारो । सुनो यहबात में आय अतुरात ह्यां गारुरी बडो है सुत
 तुम्हारो । यह बडो धर्म नन्दधरनि तुमपायहो नेक काहेन हो सुत हँ-
 कारो । सूरसुनि महरि यह कहि उठी सहजही कहा तुम कहत मम
 अतिहिबारो ४ ॥ राग सुधगाँह ॥ कान्हारहपठै महरि कहति पांयनपरि ।
 आजु कहूँकारे काहूँखायहै कामकुंवरि । सब दिन आवै जाहि जहां
 तहां फेरि फेरि अबहिं खरि कहि गईआय जियबिसरि । निशिके उनींदे
 मैना तैसेरहे दरिदरि । किधौंकहूँ प्यारीकोरी लटकी लागी जननजरि ।
 तेरोसुत गारुरीमुन्योहै बातरी महरि सूरदास प्रभु देखै जैहैरी गरल
 भरि ५ ॥ राग आसावरी ॥ यंवमंच कहाजाने मेरो । यह तुमजाय गुणान
 को बूझहु बिनकारणा तुमकरतिहै भरो । आठवरयको कुंवरकन्हारि
 कहाकहत तुमताहि । किन बहकाय दईहै तुमको पकरि ले आवहु
 बाहि । घरमें रहत में कछु नहिं जानति अतिअचरज यह बात । सूर
 प्रियाम गारुरी कहाँको कहूँआई बितताते ६ ॥ राग टोड़ी ॥ महरि गा-
 रुरी कुंवरकन्हारि । एक बिरनियां कारेखाई ताको श्याम तुरतही
 जयाई । बोलिलेहु अपने ढोटाको तुम कहिके नेकदेहु पठाई । कुंवरि
 राधिका प्रातखरि कहि गई तहांकहां धौं कारेखाई । यह सुनि महरि
 मनहिं मुसकानी अबहिरही मेरे गृहआई । सूरप्रियाम राधहि कछु
 कारणा यशुमति समुभिरही अरगाई ७ ॥ राग आसावरी ॥ तबहरिको दे-
 रत नंदरानी । भलीभई सुतभयो गारुरीआजुसुनो अवसानि यहबानी ।
 जननी देरिसुनत हरिआये कहाकहतरी मैया । कीरतिमहरि बुलान
 आईजाहु न कुंवर कन्हैया । कहूंराधिका कारेखाई जाहु न आवहु
 भारि । यंवमंच कछुजानतहौ तुम सूरप्रियाम बनवारि ८ ॥ रागगुजरी ॥
 मैयाएक मंचमोहिं आवै । बियहर खाय सरैजो कोऊ मोसों सरगा

न पावै । सकदिवस राधासंग आईखरिक बिटीनी और । तहां ताहि
 बियहरनेखाई गिरीधरसि वहिदोर । यहबागी वृथभान घरनिकहि
 यशुमति तब पतिआई । मूरश्याम मेरो बडो गारुरी राधा ज्यावहु
 जाई ६ ॥ राग मुघराई ॥ यशुमति कहेउसुत जाहुकन्हआई । कुंवरिजिवाये
 अतिहि भलाई । अजहुं मेरेघर खेलनआई । जातकहुं कारेतेहि खाई ।
 कीरति महारि लिवावनआई । जाहु न श्यामकरो अतुराई । मूरश्याम
 को चली लिवाई । गयेवृथभान पुरहि समुहाई १० ॥ रागरामकली ॥ रो-
 वति महारि फिरति बिततानी । बारबारलै कंठ लगावति अतिहि
 शिथिल भईयानी । नन्दसुवन के पांयपरीलै दौरि महारि तब आई ।
 वयाकुलभई लाडिजी मेरी मोहनदेहु जियाई । कछु पडिपडि करअंग
 परसकरि बिय अपनो लियोभारि । मूरदास प्रभुबडे गारुरी शिरपर
 गाडुहारि ११ ॥ राग देवगन्धार ॥ हरिगारुरी तहां तब आये । यहबागी
 वृथभान सुतासुनि मनमन हरय बढाये । धन्य धन्य आपुनको कीनों
 अतिहि गईमूरभाय । तन पुलकित रोसांच प्रकटभयो आनन्द आंसु
 बहाय । बिह्वलदेखि जननिभई वयाकुल अंग बियगयो समाय । मूर-
 श्याम प्यारीदोउ जानत अन्तरगतको भाय १२ ॥ रागरामकली ॥ लोचन
 दियो कुंवरि उधारि । कुंवरिदेख्यो नन्दकोतब सकुच अंग संहारि ।
 बातबूझति जननिसेंरी कहाहै यहआजु । मरतते तूबचीप्यारी करति
 है कहलाजु । तबकहति मोहिं कारेखाई कछु न रही सुधिगात । मूर
 प्रभु तोहिंजाय लीनोकही कुंवरिसेंमात १३ तबजोमन्त्रकियो कुंवर
 कन्हआई । बारबारलै कंठलगायो मुखचंदयो दियोधरहि पढाई । धन्य
 कोखि ब्रह्महारि यशोमति जहां अवतरेउ यहैसुत आई । सेसाचरित
 तुरतही कीन्हेंकुंवरि हमारी भलीजिवाई । मनहीमन अनुमानकियो
 यहिनिधना जोरीभली बनाई । मूरदास प्रभु बडो गारुरी ब्रजधरधर
 यहधेर चलाई १४ ॥ रागमुघराई ॥ भले भले हो कान्ह बियहि उतारेउ ।
 आजुते गारुरीनाम प्रगत्यो तिहारेउ । जननी कहति मेरो सुतबारो ।
 युवति कहति हमतनधों निहारो । अबको निकरै साँझसबारो । जा-
 न्योब्रज बसतकैदिन सेसाकारो । यहनिज मन्त्रजिनि हियतेबिसारो ।
 बहुरिकारोकहुं करोगोपसारो । मूरदास प्रभुसबहिन प्यारो । ताहीको

४६६ सुरसागर भुवङ्गडसनलीला रागकल्पद्रुम ।

इसेजाके हियेहै उज्यारो१५॥ रागरामकनी ॥ नीकेबिधाहि उतारैउ प्रयास ।
बड़ोगारुरी अबहींजान्यो संगहिरहतएकहीगाम । ऐसेमन्त्र कहांतुम
पायोबहुतक्रियोहैकाम । मेरीअतिराधिकाजियाई ढेरतयोंकहिनाम ।
हमसमुझी यहवाततुम्हारीजाहुआपने धाम । सुरप्रयासमनमोहननागर
हंसिबश कीनीबाम १६ हंसिबश कीनी घोयकुमारि । बिबशभई तन
कीसुधि बिलरी मन हरिलियो मुरारि । गये प्रयास ब्रजधाम आपने
युवति मदन शरमारि । लहरि उतारि राधिका शिरते दई तरुगान पै-
डारि । करतबिचार सुन्दरी सर्बमिलि अबसेबहु विपूरारि । बिबिधत
भांतिकरोसबपूजा नेमधर्म संयमतनुगारि । मांगहु हरिहिंदेहुप्रति हम
को मुरशरणा बनवारि १७ ॥ रागजैतथी ॥ भवनरवन सबही बिसरायो ।
नन्दनन्दन जवते मनहरिलियो कहति वृथायह जन्मगाँवायो । जपतंप्र
ब्रज संयम साधन ते प्रकट होतपायान । जैवैहि मिलहिं प्रयाससुन्दर
वर सोकीजै नहिंआन । यहैमन्त्र दृढाकियो सबनिमिलि याते होयसो
होई । वृथाजन्म जनमैजनि खोवहु यहां अपनो नहिंकोई । तब पर-
तीति सबनिके आई कीनो दृढबिश्वास । सुरप्रयाससुन्दर पतिपावै यह
है मेरी आस १८ ॥

अथ सुरसागरवस्त्राहरणरागकल्पद्रुम ॥

अथव्रतचरिया ॥

अन्तर उरहन प्रत्युत्तर ॥

रागआसावरी ॥ गौरीप्रति पूजत ब्रजनारि । नेम धर्मसों रहत क्रिया
जित बहुत करति मनुहारि । यहै कहति पतिदेहु उमापति गिरिवर
नंदकुमार । शरणा राखिलीजै शिवशंकर तन तरसावतमार । कमल
पुहुप मातूल पत्रफल नानासुमन सुवास । महादेव पूजति मन बचकारि
सुरप्रयासकी आस १ ॥ राग रामकनी ॥ शिवसों बिनय करति कुमारि ।
शीतभीतर जोरिकर मुख स्तुति करति विपूरारि । व्रत संयम करति
सुन्दरि कृशभई मुकुमारि । ऊहौकृतु तपकरतनीके गृहको नेह बिसा-
रि । ध्यान धरिकर जोरिलोचन मंदि यक यक याम । बिनय अंचल
छोरि रबिसों करति हैं सबवाम । हमहिं होहु कपाल दिनमरिा तुम

विदित संसार । कामअति तनदहत दीजे सूरप्रयास भर्त्तार २ ॥ रागनट ॥
 रविसें बिनय करति करजोरें । प्रभुअन्तर्द्वारमी यहजानी हमकारणा
 जप तप जलखोरें । प्रकटभये प्रभुजलही भीतर देखि सखिनको प्रेम ।
 मीजत पीठि सबनि के पाछे पूरणा कीनोनेम । फिर देखे तो कुंवर
 कन्हारै मीजत रुचि सें पीठि । सूर निरखि सकुचीं ब्रजयुवती परी
 प्रयासतन डीठि ३ ॥ राग देवगन्धार ॥ अति तप देखि कृपा हरि कीनो ।
 तनकी जरनि दूरिभइ सबकी मिलि तरुणान सुखदीनो । नवल कि-
 शोर ध्यान युवतीमन मीजत पीठ जनायो । बिबश भई कहु सुधि न
 संभारति भयोसबनि मनभायो । मनमन कहति भयो तपपूरणा आनंद
 उर न समाई । सूरदासप्रभु लाज न आवति युवतिन सांभकन्हारै ४ ॥
 राग सारंग ॥ हंसत प्रयास ब्रजघरको भागे । लीगनिको यहकहि सुना-
 वति मोहन करन लंगरई लागे । हम स्नान करति जल भीतर आपुन
 मीजत पीठि कन्हारै । कहाभयो जो नन्दमहर सुत हमसें करत अ-
 धिकहै ढिठाई । लरिकाई तबहींलों नीकी चारवरय की पांच । सूर
 प्रयास जाइ कहैं यशुमतिसें प्रयास करत येनाच ५ प्रेम बिबश सब
 श्वालनिभई । उरहत देनचलीं यशुमतिको मनमोहनके रूपरई । पुलक
 अङ्ग अंगिया उरदरकी द्वारतोरिकर आपुलई । अंचल चीरि घातनख
 उरकरि यह मिसकरि नंद सदनगई । यशुमति नाइ कहासुत सिखयो
 हमको जैसे हालकिये । चोलीफारि हार गहि तोखो देखो उर नख
 घातदिये । अंचलचीरि अभयरा तोरे घेरिधरत डठि भागि गये । सूर
 महरि मन कहति प्रयासधौं ऐसेलायक कबहूँभये ६ ॥ रागमेरी ॥ म-
 हरि प्रयासको बरजति काहेन । ऐसे हालकिये हरिहमको भईन कहूँ
 जग आहेन । और बातयक सुनहुँ प्रयास की अतिही भयेहैं ढीठ । बसन
 बिना अस्नान करतिहम आपुन मीजत पीठ । आपुकहति मेरोसुतबारो
 हियो उधारि दिखाऊँ । सुनेहुँ न कहूँ कहतिहुन आवैं तुमको कहा
 लजाऊँ । यहबाणी युवतिन मुखसुनिके हंसिबोली नंदरानी । सूरप्रयास
 तुमलायक नाहीं बात तुम्हारी जानी ७ बातकही सोलहैबहैरी । बिना
 भीति तुम चित्र लिखतिहौ सो कैसे निबहैरी । तुम चाहति हौ गगन
 तरैया मांगे कैसेहु पावहु । आवतही मैं तुमलाख लीन्ही कहि मोहिं

४६८ सुरसागर बख्ताहरगालीला रागकल्पद्रुम ।

कहा सुनावहु । चोरीरही छिनाखो अब भई जान्यो जानतुम्हारी ।
और गोपसुत तिनहिं न देखो सुरश्यामहै बारो ८ यहि अन्तर हरि
आयगये । मोरमुकुट पीतांबर काँछे अतिकोमल छबिअङ्गभये । जननि
बुलाय बांहगहि लीनी देखहुरी मदमाती । इनहींको अपराध लगा-
वति कहा फिरहि इतराती । सुनिहैं लोग मद्यअबहुँ रहु तुमहिँ कहां
की लाज । सुरश्याम मेरो माखनभोगी तुम आवति बेकाज ९ ॥ राग
देवगन्धार ॥ अबहिँ देखे नवलकिशोर । घर आवतही तनक भये हैं खेसे
तनकेचोर । कछुदिन करी दधिमाखनचोरी अब चोरत मनमोर । बि-
बशभई तनसुधि न संभारति कहति बात भई भोर । यह बाराणी कहत
लजानी समुझिभई जियबोर । सुरश्याम मुख निरखि चलींघर आ-
नँद लोचनलोर १० ॥ राग गौरी ॥ ब्रजघर गई गोपकुमारि । नेकहुकुहुँ
मननहिँ लागत कामधाम बिसारि । मात पितुको डरु न मानति बढति
नाहिँन गारि । हठकरति बिरुभाति तबजिय जननि जानति बारि ।
प्रातही उठिचलीं सबमिलि यमुनतट मुकुमारि । सुरप्रभु व्रतदेखि इन
को नाहिँ न परति संभारि ११ यमुनातट देखे नँदनन्दन । मोर मुकुट
मकराकृत कुण्डल पीतवसन तनचन्दन । लोचन हृषित भयेदरशनते
उरकी तपनि बुझानी । प्रेममगन तबभई रवालिख तनकी दशा हि-
रानी । कमलनयन तटपरहैं टाढे सकुचिमिलीं ब्रजनारी । सुरदासप्रभु
अन्तर्दर्यामी ब्रजपूरगा प्रसाद्वारी १२ ॥ राग नट ॥ बनतनहिँ नदीयमुना
को खेबो । सुन्दरश्याम घाटपर टाढे कहौकौन विधिजैबो । कैसेबसन
उतारि धरैहम कैसे जलहि समैबो । नन्द नँदन हमको देखहिँगे कैसे
करि जु नहैबो । चोलीचीर हारलै भाजत सो कैसे करिपैबो । अंक में
भरि भरि लेत सुरप्रभु कालिहन यहिपथखेबो १३ ॥ राग रामकली ॥ कैसे
बनै यमुनखान । नन्दको सुत तीरबैठ्यो बड़ो चतुर मुजान । हारतोरै
चीरफारै नयन चलेचराय । कालिहोखे कान्हमेरी पीठसींजो आय ।
कहति युवती बात सुनि सब थकित भई ब्रजनारि । सुरप्रभु को ध्यान
धरिसज रबिहिँ बाँहपसारि १४ ॥ राग गूजरती ॥ अति तपकरति घोषकु-
मारि । कृष्णापति हम तुरतपावैं कामआतुर नारि । नयनमंदति दरश
कारणा अवशा शब्द बिचारि । भुजाजोरति अंकभरि हरि ध्यान उर

अँकवारि । शरद ग्रीष्म ढरतिनाहीं करतितप तनुगारि । मूरप्रभु सर्वज्ञ स्वामी देखिरीकें नारि १५ ॥ राग यनाथी ॥ ब्रजललना रबिको कर जोरें । शीतभीत नहिँकरत छहोऋतु त्रिविधिकाल यमुनाजल खोरें । गौरीपति पज्जति तपसाधति करति रहति नितनेम । भागरहित निशि जागी चतुर्दशी यशुमति सुतके प्रेम । हमको देहु कृष्णपति ईश्वर और नहीं मन्त्रान । मनसिवचसि कर्मग्राहमारे सूरश्यामको ध्यान १६ राग रामकली ॥ नीके तपकीन्हें तनुगारि । आपदेखत कदम पर चढि मानिलेय मुरारि । बरखभरि व्रतनेम संयम इमिकियो मोहिँ काज । कैसेहू मोहिँभजै कोऊ मोहिँ बिरदकी लाज । धन्य ब्रज इन कियो पूरणा शीततपति निवारि । कामआतुर भजी मोको नवतरुणि ब्रज नारि । कृपानाथ कृपालभये तबजानि जनकी पीर । मूरप्रभु अनुमान कीन्हें हरीं इनकेचीर १७ ॥ राग विलावल ॥ बसनहरे सब कदमचढाये । मूर हँसिहँसि गोपकन्यनिके अभूषणा सहित चुराये । अति बिस्तार नीपतरु तामें लैलै जहांतहां लटकाये । मरिणा आभरिणा डार डारप्रति देखतछबिमनहीं अटकाये । नीलांबर पीताम्बरसारी श्वेतफेते चुनरी अरुणाये । मूरश्याम युवतिन व्रतपूरणाको फलकदम डार फल लाये १८ ॥ रागसूहे ॥ आपु कदमचढि देखत श्याम । बसन अभूषणा सब हरि लीने बिनाबसन जलभीतर बाम । मंदिनयन ध्यानधरि हरिको अन्तर्यामी लीन्हें जानि । बारबार सबितासों मांगति हमपावें पतिशारंग पारि । जलते निकसि आय तटदेख्यो भूषणाचीर तहां कछुनाहिँ । इतउत हेरि चकतभई सुन्दरि सकुचिगई फिरि जलही माहिँ । नाभि प्रयन्त नीरमें टाढीं थरथर अंगकपत सुकुमारि । कोलैगये बसन आभूषणा मूरश्याम उरप्रीति बिचारि १९ ॥ राग रामकली ॥ आवहु निकसि धौयकुमारि । कदम परते दरशदीन्हें गिरिधरणावनवारि । नैनभरि मैं तुमहिँ देखौं करौंकृपा अपार । व्रत तुम्हारो भयोपूरणा कहेउ नन्द कुमार । सलिलते सबनिकसि आवहु वृथासहति तुयार । देतहू किन लेहु मोसों चीरचोली हार । बांढेदेकि बिनयकरौ मोहिँ कहौ बार-बार । मूरप्रभु कहेउ मेरेहीआगे आनिकरौ अङ्गार २० ॥ रागविलावल ॥ ग्वालनि अपने चीर लेउरी । जलनिकसितटहै करजोरि शीशदेउरी ।

४७० सुरसागर बन्नाहरणालीला रागकल्पद्रुम ।

कतहे शीत सहति व्रजसुन्दरि व्रतपरणा भैरी । मेरेकहे आनि पहिरी
पटुकुश तनुहेम जैरी । हैं अन्तर्दयासी जानतमव अतिथहपैज करी ।
करिहैं पूरणाकाम तुम्हारो शरदरात ढरैरी । सन्तत सूरसुभावहमारो
कतभै कामडरैरी । कौनहु भावभजै कोउ हमको तिनतनतापहरैरी २१
राग रामकली ॥ हमारो अम्बर देहुमुरारी । लैमव चीर कदम चढिबैठे हम
जलमांभ उधारी । तटपर बिना बसन क्योंआवैं लाजलगातिहै भारी ।
चोलीहार तुमहिंको दीनों चीरहमहिं देहुडारी । सुन्दरप्रियाम कमल
दललोचन हमहैं दासि तुम्हारो । जो कछु कहौ सोइ हम करिहैं चरणा
कमलपर वारी । अंग अंग कम्पत मन मोहन बिनती सुनहु हमारी ।
सूरप्रियाम कछुछोड़ करौजू शीतगई तनमारी २२ हाहा कहति घोष
कुमारि । शीतते तनु कपत थर थर बसन देहु मुरारि । मनहिंसन अ-
तिही भयो मुख देखिकै गिरिवारि । पुरुष स्त्री अंगदेखैं कहत दोयन
भारि । नेकनहिं तुम छोड़ आवत गई हमसब सारि । सूरप्रभु अतिही
नितुरहौ नन्दसुत बनवारि २३ ॥ राग बिलावल ॥ लाज ओटयह दूरिकरौ ।
जोइ मैकहैं करहुतुमसोइ सकुचिवापुरेइकहाकरौ । जलनेतीरआय
करजोरेहुमें देखहुं तुमबिनयकरौ । पूरणाव्रतअवभयोतुम्हारो गुरुजन
शंकादूरिकरौ । अबअन्तरमोसों जिनराखहु बारबारहट टुथाकरौ ।
सूरप्रियाम कहेउ चीरदेतहों मोआगे अङ्कार करौ २४ ॥ रागगुजरी ॥ ज-
लते निकसि तीरसब आवहु । जैसे सबितासो करजोरैं तैसेहि जोरि
दिखावहु । नवबाला हम तरुणा कान्ह तुम कैसे अङ्गदिखावैं । येज-
लहीते बांइहेकि के देखहुप्रियाम रिभावैं । ऐसे नहीं रीझु मैं तुमको
तटही बांइ उठावहु । सूरदास प्रभु कहतहार चोली बस्तर तब पावहु
२५ ॥ राग रामकली ॥ हमारो देहु मनोहर चीर । कांपत दशन शीततन
व्यापत हम अति यमुनातीर । मानहिंगी उपकार रावरो करहु कृपा
बलबीर । अतिहि दुखित बपु परसत मोहन प्रबलप्रचण्ड समीर । हम
दासी तुमनाथ हमारे बिनती करति जलभीतर टाढी । मानहुं बिकशि
कुमोर्दिनि शशिसें अधिक प्रीतिउरबाढी । जो तुमहमहिं नाथकरि
मानहु यहमांगे हम देहु । जलते निकसि आय बाहेर ह्वै बसन आपने
लेहु । करधर शीशगई संमुखहरि मनमहँ करि आनन्द । होयकृपाल

सूरप्रभु खविबोध अम्बरदीनों नन्दनन्द २६ ॥ रागजैतया ॥ तसुखी निकसि
निकसि तटआई । पुनिपुनि कहत लेहु पटभूषणा युवती प्रथामबुलाई ।
जलते निकसिभई सबटाढी करअङ्ग उरपर दीने । बसन देहुआभूषणा
राखहु हाहा पुनिपुनि कीने । ऐसे कहा बतावतिहो मोहिं बांहउदाय
निहारो । करसोंकर अङ्गउर नहिं मुंदो मेरे कहे उधारो । सूरप्रथाम
सोइसोइ हय करिहैं जोइजोइ तुम सबकैहो । लागेदांउ कबहूँ तुमसों
हम बहुरि कहाँ तुम जैहो २७ ॥ रागनट ॥ सोरह सहस धोयकुमारि ।
देखि सबको प्रथामरीभे रही भुजा पसारि । बोलितीन्हें कदमकेतर
यहां आवहु नारि । प्रकटभई सबनिकौ हरि कामदंद निवारि । बसन
भूषणा सबनि पहिरे हरयभई सुकुमारि । सूरप्रभु गुणभरे हैं सब ऐसे
तुम बनवारि २८ दृढ व्रतकियो मेरे हेत । धन्य धनिकहि नन्दनन्दन
जाहुसबै निकेत । करों पूरणा काम तुम्हरो शरदरास रमाय । हरय
भई यहसुनत शोषी शोशरहीं नवाय । सबनिको अङ्गपरश कीनोंव्रत
कियो तनुगारि । सूरप्रभु सुखदियो मिलिके ब्रजचलीं सुकुमारि २९
रागमूढो ॥ व्रत पूरणाकियो नन्दकुमार । युवतिनके मेटे जंजाल । जपतप
करि तनजिनि अबगारो । तुमघरनी मैं स्वामि तुम्हारो । अन्तर शोच
दूरि करिडारहु । मेरोकहे सत्य उरधारहु । सूरदास तुम आसपुराऊं ।
अंकमभरि सबको उरलाऊं । यहसुनि सब मनहर्य बढ़ायो । मन मन
कहेउ कथा पतिपायो । जाहु सबै घरको सुकुमारी । शरदरास देहीं
सुखभारी । सूरप्रथाम प्रकटे गिरिधारी । आनंद सहितगई घरनारी ३०
राग आसावरी ॥ शिवशंकर हमको फलदीनों । पुहुपपान नानाफल मेवा
यदरस अर्पणा लैलै कीनों । पांयपरी युवती सब यहकहि धन्य धन्य
त्रिपुरारि । तुरतहि फलपूरणा हमपायो नन्दसुवन गिरिधारि । बिनय
करतिभविता तुम सरिको पय अंजलि करजोरि । सूरप्रथाम पतितुम
ते पायो यहकहि घरहि बहोरि ॥ ३१ ॥

अथ सूरसागर राग कल्पद्रुम ॥

अथचीरहरणालीला ॥

रागबिलास ॥ नन्दनन्दन बरगिरिवरधारी । देखतरीभेधोयकुमारी ।

४७२ सूरसागर चीरहरणालीला रागकल्पद्रुम ।

मेरमुकुट पीताम्बर काँके । आवत देखे गायन पाँके । कोटि इन्दु
 कबिबदन विराजै । निरखि अङ्गप्रति मनमय लाजै । रविशत कवि
 कुराइल नहिँ तुलै । दशन दमकद्युति दामिनिमलै । नयन कमलमृग
 शावकमोहै । शुकनाशा पटतरको कोहै । अधरबिम्बफल पटतरनाहीं ।
 दिद्रुम अरु बंधूक लजाहीं । देखत रीभिरहीं ब्रजनारी । देह गेहकी
 सुरति बिसारी । यह मनमें अनुमान कियोतब । जपतप संयम नियम
 करै अब । बारबार सबिताहि मनावति । नन्दनन्दन पतिदेहु सुभावति ।
 नेमधर्म तप साधनकीजै । शिवसों सांगिकृष्णा पतिलीजै । बरय दिवस
 को नेम लियोसब । रुद्रहि सेवहु मनबच क्रमअब । दृढविश्वास ब्रतहि
 कोकीन्हें । गौरीपति पूजामनदीन्हें । यददश सहसजुरीं सुकुमारी ।
 ब्रतसाधति नोकेतनु गारी । प्रातउठे यमुना जलखोरै । शीतभीत कहँ
 अँग न मेरै । पतिके हेतनेम ब्रतसाधै । शङ्करसों यहकरि अवराधै ।
 कमलपत्र सालती चढ़ावै । नयनमंदि यहध्यान लगावै । इसको पति
 दीजै गिरिधारी । बड़ेदेव तुमहो विपुरारी । और कछुनाहंतुमसोंमाँगै ।
 कृष्णाहेत यहकहिपा लागै । ऐसेहिकरतबहुत दिनबीते । प्रभुअन्तर्ध्यामी
 मनजीते । एकदिवस आपुनछाये तहां । नवतरुणीस्नान करतिजहां ।
 बसनधरे जलतीर उतारी । आपुन जलपैठों सुकुमारी । कृष्णाहेतस्नान
 करै जहां । सबकेषाँके आपु रहैतहां । मींजतपोटि प्रीतिअतिबाढी ।
 चकतभई युवती फिरिटाढी । देखेनन्दनंदनगिरिधारी । ब्रतफल प्रकट
 भयेवनवारी । सुकुचिअंग जलपैठिलुकावै । बारबारहरि अंकमलावै ।
 लाज नहीं आवतहै तुमको । देखत बसनबिना सबहमको । हँसतचले
 तब नंदकुमार । लोगन सुनवति करतिपुकार । हारचीरलैचले पराई ।
 हाँकदियो कहि नन्ददुहाई । डारिबसनभूषण तबभागे । प्रयासकरन
 अबढीढो लागे । भागे कहां बचोगे मोहन । पाँकेआयगई तुमगोहन ।
 तनकीसुधि सँभारि कछु नाहीं । बसन अभूषण पहिरत जाहीं । चीर
 फट्यो कंचुकिबँदढूटे । लेत न बनतहारलरूटे । प्रेमसहित मुखखीभूत
 जाहीं । भूठेहि बारबार पछिताहीं । गई सबैत्रिय नन्दमहरघर । यशु-
 मति पासगई सब दरदर । देखहु महिर प्रयासके येगुन । जैसेहाल करे
 सबके उन । चोली चीरहार दिखराये । आपुनभागि इतहिको आये ।

यमुनातट कोउजान न पावै । संगसखा लिये पाछेधावै । सुतको बर-
जहु हे नन्दरानी । गिरिवर करत भली नहिं बानी । लाज लगति
यकवात सुनावति । अंचल छोरिहियो दिखरावति । यहदेखति हंसि
उठो यशोदा । कछुरिस कछु मनमें करि मोदा । आग्रगये तेहि समय
कन्हाइ । बांहपकरिले तुरत दिखाइ । तनक तनक कर तनक अंगु-
रिया । तुमयौवन भरनवल बहुरिया । जाहुघरहि तुमकोमें चीन्हीं ।
तुन्हरी जानिजाति में लीन्हीं । तुमचाहत सो इहांन पैहौ । और बहुत
ब्रजभीतर लैहौ । बारबार कहिकहा सुनावति । इन बातन कछु लाज न
आवति । देखौरी येभाव कन्हाइ । कहांगई तबकी तरुणाई । महारि
तुन्हहिं कछु दूयगानाहीं । हमको देखिदेखि मुसकाहीं । उनके गुण
केसे कोउजानै । औरकरत औरै धरिदानै । देन उरहने तुमकोआई ।
नीकी पहिरावनि हमपाई । चलींसबै युवतीघर घरको । मनमें ध्यान
करतिहैं हरिको । बरयदिवस तप पूराकीन्हीं । नंदसुवनको तनमन
दीन्हीं । प्रातहोत यमुना फिरिआई । प्रथम रहेवादि कदम कन्हाइ ।
तीरआय युवती भईटाढी । उर अंतर हरिसों रतिवाढी । कहेउचली
यमुना जलखोरै । आंग्रंग अभयगा सबछोरै । चोलीछोरै हारउतारै ।
करसों शिथिलकेश निरवारै । इतउत चितवति लोगनिहारै । कहेउ
सबन अब चौर उतारै । बसन अभयगा धरे उतारी । जलभीतरसबगई
कुमारी । साधशीतको भीतनमानै । यदकहतके गुण समकरिजानै ।
बारबार बूडे जलमाहीं । नेकहु जलसों डरपत नाहीं । प्रातहुते यक-
याम नहाहीं । नेम धर्मही में दिनजाहीं । इतनो कष्टकरै सुकुमारी ।
पतिकेहेत गोवर्द्धन धारी । अतितपकरत देखि गोपाल । मनमें कहेउ
धन्यब्रजबाल । हरिअंतरयामीसबजानै । सगासगाकी यहसेवामानै ।
व्रतफल इनहिं प्रकट दिखराऊं । बसन हरीलै कदम चढाऊं । तन
साधे तपकियो कुमारी । भजोमोहिं कामातुर नारी । सोरहसहस गोप
सुकुमारी । सबके बसन हरे बनवारी । हरत बसन कछुबार न लागी ।
जलभीतर युवती सबनौगी । भूयगा बसन सबै हरिल्याये । कदमडार
जहंतह लटकाये । सेषानीप वृक्ष बिस्तारा । चौरहारधौं कितक ह-
जारा । सबै समाने तरुप्रति डारा । यह लीलारत्नि नंदकुमारा । हार-

चीर जानहुँ तरुफूल्यो । निरखिप्रियाम आपुनि अनुकूल्यो । नेम सहित
 युवती सबजाहीं । मनमन सबिता बिनय सुनाहीं । सुंदे नयन ध्यान
 उरधारे । नंदनन्दन पतिहोई हमारे । रविकरि बिनय शिवाहि मनदी-
 न्हें । हृदयसांभ अलोकन कीन्हें । त्रिपुर वदन त्रिपुरारि त्रिलो-
 चन । गौरीपति पशुपति अघमोचन । गरल अशन अहिभूषण धारी ।
 जटाधरणा गंगाशिर प्यारी । करति बिनय यहसांगत तुमसों । करहु
 कृपा हंसिके आपुनसों । हमपावें सुत यशुमतिको पति । इहैदेहु करि
 कृपादेवरति । नित्यनेम करिचलीं कुमारी । एक याम तनको हिंस-
 जारी । ब्रजललना कहेउ नीर जडाई । अति आतुर हूँ तटको धाई ।
 जलतें निकसि तरुणा सबआई । चीरअभूषण तहां न पाई । सकुचि
 गईजल भीतरधाई । देखिहंसै तरुचढ़े कन्हाई । बारबार युवती पछि-
 ताहीं । सबके बसन अभूषण नाहीं । ऐसीकौन सबैलै भाग्यो । लेतहु
 ताहि बिलम्ब न लाग्यो । माघतुयार युवति अकुलाहीं । यहँकहुँ नंद
 सुवन तौ नाहीं । हमजानति यहबात नवाई । अम्बरहरि लैगये क-
 न्हाई । हो कहँप्रियाम बिनय सुनिलीजै । अम्बरदेहु कृपाकरि दीजै ।
 थरथर अंगकंपत सुकुमारी । देखिप्रियाम नहिँसके सँभारी । यहिअंतर
 प्रभुबचन सुनायो । व्रतकोफल दर्शन सबपायो । कहाकहति मोसों
 ब्रजबाल । माघशीत कतहोत बिहाल । अम्बर जहां बताऊं तुमको ।
 तौ तुम कहा देहुगीहमको । तनमनअर्पण तुमहींकीनों । जो कहुहुतो
 सो तुमहीं दीनों । और कहा जूलेहो हमसों । हमसांगति हैं अम्बरतुम
 सों । यह सुनि हँसेदयाल मुरारी । मेरो कहेउ करौ सुकुमारी । जलते
 निकसि सबैतट आवहु । तबहिँ भले तुम अम्बर पावहु । भुजा पसारि
 दीनहूँ भायहु । दोउकर जोरिजोरि तुम राखहु । सुनहुँप्रियाम यकबात
 हमारी । नगनकहँद्यखियत नहिँनारी । यहमति आप कहाँ धौं पाई ।
 आजुसुनी यहबात नवाई । ऐसीतुम मनहींमें राखहु । यहबाणी सुखते
 जिनि भायहु । हमतरुणी तुम तरुणा कन्हाई । बिनाबसन क्यों देखि
 दिखाई । पुस्यजाति तुमयहका जानों । हाहायह सुखमें जिनिआनों ।
 तौतुम पैठरहो जलही सब । बसन अभूषण नाहिँचहति अब । तबहिँ
 देउ जब बाहेर आवहु । बिनबाहेर आयेनहिँ पावहु । कतहोशीत स-

हति सुकुमारी । सकृच्चिदेहु जलही में डारी । फरेउ कदमगत फरनि
तुम्हारी । अब कह लज्जा करति हमारी । लेहौआनि आपने व्रतको ।
में जानत या व्रतके फलको । नीकेव्रतकीनों तनुगारी । व्रतलायोवरि
गिरिवरधारी । तुममन कामन पूरण करिहैं । रासरङ्ग रचिरति सुख
भरिहैं । यहसुनिके मनहर्ष बढ़ाये । व्रतको परण फलहम पाये ।
छांडहु तुम यहदेक कन्हाइ । नीरमांभ हमगई जडाई । आभूयरा
आपुनहीं लैहै । चीरकपाकरि हमकोदेहै । हाहालागें पायँतुम्हारे ।
पापुहातहै जाइनमारे । आजहुते हमदामि तुम्हारी । कैसेअङ्ग दिखावें
नारी । अङ्गदेखायेहि अम्बरपैहौ । नातरु ऐसेहि द्योसगँवहौ । मेरेकहे
निकसि सबआवहु । थोरोहिहमको भलोमनावहु । मुहां चहीं तरुणी
मुसुकानी । यह आपुन थोरीकरि जानी । जोइजोइ कहौसो तुमको
सोहै । आजुतुम्हारे पटतर कोहै । हमरीपति सब तुम्हारेहाया । तुमहिं
कहौ ऐसी व्रजनाथा । तपतनुगारि कियो जेहिकारन । सोफललग्यो
नीपतरु डारन । आवहु निकसि लेहु पटभूयरा । यहलागें हमको सब
दूयरा । अबअन्तर कतराखाति हमसों । बारम्बार कहतहैं तुमसों ।
गोपिनमिलि यहबात विचारी । अबतो टेकपरे बनवारी । चलहु न
जायचीर अबलीजै । लाजछाँडि उनको सुखदीजै । जलते निकसितीर
सबआई । बारबार हरि हरियबुलाई । बैठिगई तरुणी सकुचानी । देहु
श्याम हमअतिहि लजानी । छाँडिदेहु यहबात सयानी । वैसेहि करौ
कहीजोवानी । करकुच अंगडांकि भईठाढी । बदन नवाय लाजअति
बाढी । देहु श्यामअम्बर अबडारी । हाहादासी सबैतिहारी । ऐसे नहीं
बसन तुम पावहु । बांहउठाय अङ्ग दिखरावहु । कहेउमानि युवतिन
करजोरे । पुनिपुनि युवती करति निहोरे । धन्य धन्य कहि श्रीगो-
पाल । निश्चय व्रतकीन्हें व्रजबाल । आवहु निकट लेहुसब अम्बर ।
चोलीहार सुरङ्ग पटम्बर । निकटगई सुनिकै यहबानी । तरुणी नरन
अङ्ग अकुलानी । भूयरा बसन सबनिको दीन्हें । वियके कहत कृपा
हरिकीन्हें । चीरअभूयरा पहिरनारी । कहेउ तबहिं ऐसे गिरिधारी ।
तबहंसिबोले कृष्णामुरारी । मैंपति तुम मेरीसबधारी । तुमहिंहेत यह
व्रज बपुधारेउ । तुमकारण बैकंठ बिसारेउ । अबव्रतकरि तुमहिततन

४७६ सूरसागर बीरहरालीला रागकल्पद्रुम ।
 गारो । मैं तुमते कहूँ होत न न्यारो । मोहिँ कारुणा तुमअति तपसाध्यो ।
 तनमनकरि मोँकोअवराध्यो । जाउसदन अबसबव्रजबाला । अङ्गपरिसि
 मेरे जंजाला । युवतिन बिदादई गिरिधारी । गई घरनि सब घोयकुमा-
 री । बखहरा लीलाप्रभुकीन्हें । व्रजतरुगान ब्रतको फलदीन्हें । यह
 लीला अवरान सुनिभावैं । औरन सिखवैं आपुनगावैं । सूरश्याम जनके
 सुखदाई । दृढताई में प्रकट कन्हाई ३२ ॥

अथ सूरसागर रागकल्पद्रुम ॥

अथपनिघटकीलीला ॥

रागअङ्गाने ॥ हैंगई यमुनजल लेनसाईहों सांवरे सेमोही । सुरंगके-
 शरि खोरि कुसुमकीदाम अभिराम कंठकनक की दुलरी दुलकति
 पीतांबर कीखोही । नान्ही नान्ही ब्रंदिनमें दाढोरी बंसुरिया बजावैं
 गावैं माला करी सीटीतानने तोलाकीछवि नेकहूनजोही । सूरश्याम
 सुरिसुसकानि छविरी अंखियनिमें रहीतवन जानोहोकोही १ चटकी-
 लोपट लटपटानों कटिबंशीबट यमुनाकेतट नागरनट । मुकुटलटक अरु
 भृकुटी मटकादेखें कुण्डलकी चटकसों अटकपरी डगन लपटे आछो
 चरणानिकंचनलकुट । चटकीली बनमाल करकेके द्रुमडाल टेढ़े दाढ़े
 नन्दलाल छबिछाईघटघट । मुरदासप्रभुकी बानकदेखे गोपीबाल टारे
 न टरत निपटनिकट आवैं सौंधेकीलपट २ ॥ रागमुघराई ॥ बजावैं मुरली
 की तानसुनावैं यहिविधि कान्हरिभावैं । नटवरभेष बनाये चटकसों
 दाढेरहे यमुना के तीर नितवन मृगनिकट बुलावैं । सेसोको जोजाय
 यमुनाते जलभरि घरहि लैआवैं । मोरमुकुट कुण्डल बनमाला पीतांबर
 फहरावैं । सकअंग शोभाअवलोकत लोचनजल भरिआवैं । सूरश्याम
 के अंगअंगप्रति कोटिकास छबिछावैं ३ ॥ रागपूवी ॥ पनिघट रोँकेहि
 रहतकन्हाई । यमुनाजलकोउभरन न पावतदेखतही फिरिजाई । तबहिं
 प्रयास यक बुद्धि उपाई आपुनरहे छिपाई । तट दाढ़ेजे सरवा संगके
 तिनको लियो बुलाई । बैठारे खालन को द्रुमतर आपुन फिरि फिरि
 देखत । बड़ीबारभइ कोउनआई सूरश्याम मनलेखत ४ ॥ रागदेवगन्धार ॥
 युवतीएक आवतदेखी प्रयास । द्रुमकी ओट रहे हैं आपुन यमुना तट

गइवाम । जलहलोरिगागरिभरि नागरिजबहीं शोश उठायो । घरको
 चलीजाय तापाछे शिरतेघट ढरकायो । चतुरग्वालिकर गहेउ श्याम
 को कनक लकुटियापाई । औरनिसों करिरहे अचगरी मोसों लगत
 कन्हाई । गागरिलैहंसिदेत ग्वालिकर रीतोघटनहिलेहैं । सूरश्याम
 ह्यां आनिदेहुभरि तबहिं लकुट करदेहैं ५ ॥ रागकल्याण ॥ लकुट करकी
 हों तबदेहैं जबमेरोघट भरिदेहैं । कहाभयो जोनन्दबड टयभान आ-
 नहमहं तुमसोहैं समसरिमिलि करिकैहैं । एक गांव यकठांव बास
 यक तुमकोहैं क्योंमैंसैंहैं । सूरश्याम मैं तुमनडरैहों फेरिज्वाबमें दे-
 हैं ६ घटभरिदेहु लकुट तबदेहैं । हमहं बडे महरिकीबेटी तुम कोनहीं
 डरैहैं । मेरीकनक लकुटियादेरी मैं भरिदेहैं नीर । बिसरिगई सुधि
 तादिनकी तोहिं हरेसवन के चीर । यह बाणीसुनि ग्वारिबिबशभई
 तनकीसुधि बिसराई । सूरलकुट करगिरत न जानीश्याम टगौरीलाई
 ७ ॥ रागहमीर ॥ घटभरिदियो श्यामउठाई । नेकुतनकी सुधिनताके चली
 ब्रज समुहाई । श्यामसुन्दर नयन भीतर रहे आनि समाई । जहां जहां
 भरि दृष्टि देखे तहांतहां कन्हाई । उतहिते यक सखीआई कहति
 कहा भुलाई । सूर अबहीं हंसति आई चलीकहां गँवाई ८ ॥ रागढोडो ॥
 अरीहों श्याम मोहनी घालीरी । अबहिं गई जलभरन अकेली नंदन-
 नदन दृष्टि मेरीपरे आली फिरि चितवतिउर सालीरी । कहारी कहैं
 कछु कहत न बनिआवैलगी मरमकी भालीरी । सूरदासप्रभु मन हरि
 लीन्हें बिबश भईहैं कासों कहैं यह आलीरी ९ ॥ रागधनाश्री ॥ सु-
 नत बात यह सखि अतुरानी । ताहि बांहगहिधर पहुंचाई आपचली
 यमुना के पानी । देखे आय तहाँ हरि नाहीं चितवति जहाँ तहां
 बिततानी । जलभरि ठिठुकत चली घरहितन बार बार हरिको पाछि-
 तानी । ग्वालिन बिकल देखिप्रभु प्रकटेहर्यभयो तन तपति बुझानी ।
 सूरदास अंकम भरिलीनों गोपी अन्तर गतिकी जानी १० ॥ रागभासावरी
 मिलिहरि मुख दियोतेहि बाला । तपतिमिटिगई प्रेमछाकी भई सबै
 हाला । सगनहीं डगभरति नागरी भवनगईभुलाई । जलभरन ब्रजनारि
 आवति देखि ताहि बुलाई । जातिकित है इसर छांझे कह्यो इतको
 आई । सूरप्रभु के रंगराचीचितै हरि चितलाई ११ ॥ रागधनाश्री ॥ काहु

तोहिं दगौरीलाई । वृक्षति सखी सुनति नहिं नेकहु तुही किधौं दग
 भूरीखाई । चैंकिपरी स्वप्नेजनुजागी तबबाणीकाहिं सखिन सुनाई ।
 प्रयासबरसा यकमिल्यो दुठौना तेहिं मोको मोहनो लगाई । मैं जल
 भरे इतहिकों आवतिआनि अचानकअंकम जाताई । सुरगवाल सखियानि
 के आगे बातकहहिं सब लाजगँवाई १२ ॥ रागठोड़ी ॥ आवतही यमुना
 भरे पानी । प्रयासबरसा काहूको ढोटा निरखि बदनधरगौल भुलानी ।
 उन मोतनमें उततन चितयो तबहीते उनहाथ बिकानी । उरधकधकी
 लगी तन दयाकुल सुखसों फुरति न बानी । तब कहेउ मोहन मोहनोतू
 को है या व्रजमेंही पहिंचानी । सुरदास प्रभु मोहन देखत जनु बारिद
 जलबूंदहिराती १३ ॥ रागधनाशी ॥ नेक न मनते तरत कन्हआई । एक ऐसेहि
 छकिरही प्रयासरस तापर यहिं यहबातसुनाई । दाको सावधानकरि
 पठयो चली आपुजलको अतुराई । मोर मुकुट पोतांबर काछे देख्यो
 कुंवर नंदकोजाई । कुराडलभूतकत ललितकपोलन सुन्दर नयन बि-
 शाल सोहाई । कह्यो सुरप्रभुये ढंगसीखे दगत फिरत है नारि पराई
 १४ कहा दियो तुमरो दगि लीन्हों । क्योंहिं दियो और कह दगि
 है औरहि के दग तुमको चीन्हों । कहौ नाम धरि कहा दगायो सु-
 निराखी यहबात । दगके लक्षणा मोहिं बतावहु कैसे दगनकेघात ।
 दगलक्षणा हमसों सुनिये मृदु मुसकनि मन चोरत । नैन सैन दे चलत
 सुरप्रभु अङ्ग विभङ्गकरि मोरत १५ ॥ रागमूहो ॥ अतिहिं करत तुमकान्ह
 अचगरी । काहूकी छीनत है गिंदुरी काहूकी फोरत है गगरी । भ-
 रतदेहु यमुना जल हमकोदूरिकरो बातेंये लंगरी । पैछेचलन न पावत
 काऊ रोंकि रहत लरिकन लै डगरी । बाटघाट सबदेखत आवत युव-
 ती डरनि मरति हैं सिगरी । सुरप्रयास तेहिगारी दीजै जो कोउ आवै
 तुम्हरीबगरी १६ ॥ रागसामकली ॥ नीके देहु न मेरी गिंदुरी । लैजैहैं धरि
 यशुमतिआगे आवहुरी सबमिलि यकभुंडरी । काहूनाहिं डरात क-
 न्हआई बाटघाट तुम करत अचगरी । यमुनादह इंदुरी फटकारी फोरी
 सब मटुकी अरु गगरी । भली करी यह कुंवर कन्हआई आजु मेदिहैं
 तुम्हरी लंगरी । चलीं सुरयशुमति के आगे उरहन लै तरुणी व्रज स-
 गरी १७ ॥ रागठोड़ी ॥ आनि न देहु छिठौना ढोटा इंदुरी पराई । तेरो

कोउ कहा करैगो लरिहै हमसों बहिनो माई । भरेसंग की और गई
 ते जलभरि धरिघरते फिरिआई । सूरप्रयामइंडुरी दीजै न तौ प्रभुमति
 सों हमकेहैं जाई १८ ॥ रागधनाथी ॥ आपुन चढे कदमपर धाई । वदन
 संकोरि भौंह मोरतिहैं हांकदेति करि नंददुहाई । जाय कहौ मैया के
 आगे लेहुमवै मिलिसोहिं बंधाई । मोको जरि मारन जबआई तब
 दोनों गिंडुरीफटकाई । ऐसेकरि सोको तुमपायोमानों इनकीमैंकरों
 चेराई । सूरप्रयाम वेदिन धिमराये जब बांधेते ऊखल लाई १९ ॥ राग
 आसावरी ॥ यहांई रहौ तौ बंदों कन्हाई । आपुगई यशु मतिहि सुनावन
 दै गई प्रयामहिं नंददुहाई । महरि मथतिदधि सदन आपने यहि अंतर
 युवतोलवआई । चितैरही युवतिनको आवतकहाँ आवती भीरलगाई ।
 मैजानति इनको हरि खिभई ताते सबउरहन लै धाई । सूरदास रिस-
 भरी खालिनी ऐसोढीठ कियोसुतमाई २० ॥ राग बिलावल ॥ सुनहुं महरि
 तेरोलाझिलो अतिकरत अचगरी । यमुनभरन जलहमसाई तहारोकरत
 डगरी । शिरतैनीर हरायवै फीरी सब गगरी । गिंडुरीदई फटकारिके
 हरि करतहैं लंगरी । नित प्रतिऐसेहि ढंगकरैहम सों कहेधगरी । अब
 बसबासनहीं बने यहतुव बजनगरी । आपु गयो चढ़ि कदम कि चि-
 तवत रहैसिगरी । सूरप्रयामऐसेसदा हमसों करैभगरी २१ ॥ रागरामकली
 सुतकोवरजिराखहुमहरि । डगरचलननदेत काहुहि फोरिडारतदहरि ।
 प्रयामके गुण कहु न जानति जाति हमसों गहरि । यहैलालच गाय
 दशलियेबसतिहैब्रजथहरि । यमुनतदहरि देखिटाढे डरनिआवैवहरि ।
 सूरप्रयामहिं नेकवरजहु करतहैं अतिचहरि २२ तुमसों कहतिसकूचति
 महरि । प्रयामके गुणनहीं जानतिजाति हमसों गहरि । नेकहूनिहिसु-
 नत श्रवणानि करतिहैं हमचहरि । जलभरनकोउ नहींपावत रोंकिरा-
 खतडहरि । अतिअचगरीकरतमोहन फटक गुंडरीदहरि । सूरप्रभुको
 कहा सिखयो रिसनियुवतीभूहरि २३ ॥ रागधनाथी ॥ कहाकरों मोसों
 कहेतुमहीं । जोपाऊंते तुमहिं दिखाऊंहाहा करितबहीं । तुमहंगुण
 जानतिहौ हरिके ऊखलबांधे जबहीं । सँटियालै मारनजबलागी तबब-
 रज्योमोहिसबहीं । लरिकाईते करतअचगरी मै जानेगुणतबहीं । सूर
 प्रयामके हालकरोसो देखोगीतुम अबहीं २४ ॥ रागसारंग ॥ मै जानतहैं

ढीठकन्हैया । आवनधों घरदेहु प्रयाम को जैसी करों सजैया । मोसों
 करत ढिठाईमोहन भैंवाकी है । मैया । और न काहकोबह मानेकहु
 सकुचत बलभैया । अब जो जाउं कहां तेहि पाऊं कासों देइ धरैया ।
 सूरप्रयाम दिन दिन लंगर भयो दूरि करों लंगरैया १५ ॥ रागमूढे ॥
 युवतिबोधि सबघराह पढाई । यह अपराध मोहबकसोरी यहै कहतहैं
 मेरीमाई । इततेचली घरनि सबगोपी उतते आवत कुँवर कन्हारै ।
 बीचहि भेंटभई युवतिनहरि नयननजोरत गयेलजाई । जाहुकान्ह सह-
 तारी टेरतिबहुत बड़ाई करिहम आई । सूरप्रयाम मुखनिरखि सिहारी
 में कैहैं जननी समुझाई २६ ॥ रागनट ॥ सकुचतगये घरको प्रयाम । डा-
 रहीते निरखिदेख्यो जननिजागी काम । यहैबाणी कहत मुखतेकहां
 गयोकन्हारै । आपुटाढे जननिपाछेमुनतहैंचितलाई । जलभरनयुवती न
 पावैं घाटरोंकत जाय । सूरसबकी फोरिगागरि प्रयामगयो पराय २७
 यशुमति यहकहिहैं रिसपावति । रोहिणिाकरति रसाई भीतर कहि
 कहि तिनहैं सुनावति । गारीदेत बहूबेटीको वेधार्ह्यां आवति । हाहा
 करति सबनिसों मेंहीं कैसेहुखूंछ छुडावति । जातिपांतिसों कहाअच-
 गरी यह कहिसुतहि धरावति । सूरप्रयाम को सिखवतहारी मारेहु
 लाज न आवति २८ ॥ रागसारंग ॥ तूमोहीको मारनजानति । उनकेचरित
 कहा कोउजाने उनहिकही तुमानति । कदमतीरते मोहिबुलायो गहि
 गहि बात बनावति । मटकतीगारि गागरि शिरते अब ऐसी बुद्धिहि
 ठानति । फिरि चितईत कहांरहेउ कहि में नहिँ तोको जानति । सूर
 सुतहि देखतही रिसगइ मुखचूवति उरआनति २९ भूँटेहि सुतहिलगा-
 वति खोरि । में जानति उनके ढंगनिकी बातेंमिलवत जोरि । वेथीवन
 मदसब मदमातीं कहमेरो तनक कन्हारै । आपुहिफोरि गागरीशिरते
 उरहन लीन्हेंआई । तू उनके ढंगजात कहतिहैं वे पापिनि सबनारि ।
 सूरप्रयाम तूकहेउमानि अबहैं सबढीठ गँवारि ३१ ॥ रागअडानो ॥ मोहन
 बाल्योबिन्दा साई मेरोकहा जानेचोरि । उरहनलै युवती सब आवति
 भूटीवतियां जोरि । कोऊ कहति गिंडुरी मेरीलीन्हीं कोउ कहति
 गगरीगयेफोरि । कोऊ चोलीहार बतावति कान्हहु हयेभोरि । अब
 आवैं जो उरहनलैकै तौ पठऊं मुहँभोरि । सूरकहा मेरोतनककन्हैया

आपुन यौवनजोरि ३१ ॥ रागकान्हरो ॥ ब्रज घरघर यहवात चलावत ।
यशुमति कोसुत करत अचगरी यमुनाजलकोउ भरननपावत । श्याम
बरगा नटवर बपुकाळे मुरलीराग मलार बजावत । कुण्डल छविरवि
किरगिाहुते छुति मुकुटइन्द्र धनुते सोभावत । मानत काहुन करतअ-
चगरी गगारिधरि जलभुई ढरकावत । सूरश्यामको सात पितादोउ
सेधेढंग आपुनहिं पढावत ३२ ॥ रागगोरी ॥ करतअचगरी नन्दमहरको ।
सखाखिये यमुनातटवैठो निबहतनहिं सबलोग डगरको । कोउखीजौ
कोऊकिन बरजौ युवतितके मनध्यान । मन क्रमबचन श्यामबरततहें
और न दूजोजान । सुरतरु कामधेनु सुखत्यागो ब्रजयुवतित के हेत ।
मूरभजे जहिभाव कृष्णको ताकोसोइ फलदेत ३३ यमुनाजल कोउभ-
रन न पावै । आपुन बैर्यो कदमडारिचिह्न गारी दैवै सबन बुलावै
काहुकी गगरी गहिके फोरत काहूशिरते नीरढरावै । काहूसें करि
प्रीति मिलतुहे नयन सैनदै चितहि चुरावै । बरबशही अंकवार भरत
धरि काहूसें अपने मनलावै । सूरश्याम अतिकरत अचगरी कैसेहु
काहू हाथ न आवै ३४ ॥ रागधनाश्री ॥ ब्रजरवैठे कोउ चलन न पावत ।
खालसखा सबलीन्हें डोलत दैदेहांक जहांतहें धावत । काहूकी गिं-
डरी फटकारत काहूकी गगरी ढरकावत । काहू को गारीदै भाजत
काहूकोउठि अंक मिलावत । काहूनाहिं मानत ब्रजभीतर नंदमहरको
कुंवर कहावत । सूरश्याम नटवर बपुकाळे यमुनाके तट मुरलि बजा-
वत ३५ ॥ रागढोड़ी ॥ गोकुलके गवैडैयक सांवरोसो ढोटांमाई आखिन
के पैडेपैठि जीकेपैडे परेउ है । कलनपरति क्षणा गृहभयो समबनतन
मन धन प्राणा सर्वमुख हरेउ है । भवन न भावै माई अंगन न रहेउजाय
करैं हायहाय देखो जैसेहाल करेउहै । सूरदासप्रभु नीकेगावत सधुर
सुरमानहुंमुरलि में पीयूषरस भरेउहै ३६ ॥ रागगोरी ॥ राधासखिनलई
बुलाय । चलहु यमुना जलहिजैये चलींसब सुखपाय । सबनि मिलि-
यक कलश लीन्हें तुरत पहुंचींजाय । तहां देख्यो श्यामसुन्दरकुंवरि
मनहरयाय । नंदनंदनदेखिरीभैं चितैरहे चितलाय । सूरप्रभुकीप्रिया
राधा भरतिजल मुमुकाय ३७ घरहिचलीं यमुनाजलभरिके । सखिन
बीच नागरीविराजति भईप्रीतिउरहरिके । मंदमंद गतिचलत अधिक

छवि अञ्चल रहेउफहरिके । मोहनको मोहनीलगाई संगहिचलेडगारि
 के । बेगीकीछवि कहतनआवै रहीनितम्बनिडरिके । सूरप्र्यामप्यारी
 केबश भयेरोमरोस रसभरिके ३८ ॥ रागजैतथी ॥ गागरि नागरि लिये
 पनिघटतेचलिआवै । ग्रीवडोलत लोचनलोलत हरिके चितहि चुरावै ।
 लटकातिचले सटाकिभुंहोरे लंकटभौहचलावै मनहुं कामसेना अङ्गशोभा
 अञ्चलध्वज फहरावै । गतिगयंदकुच कुंभाकिंकिराी मनहुं घंटभहनावै ।
 मोतिनहार जलाजलमानों खुभीनवत झलकावै । मानहुं चन्द महावत
 मुखको अंकुशकर बेशरिके लावै । रोमावली सडितरनीलो नाभिस-
 रोवरआवै । पगजेहरि अंजीरनि जकरेउ यहउपमा कहुपावै । घटजल
 छलाकि कपोलन केकी मानहुं मर्दाह चुवावै । बेगीडुलति दुहुनके तब
 बिच मानों पूछ हलावै । राज शिरदार सूरको स्वामी देखि देखि मुख
 पावै ३९ गागरिनागरि जलभरि घरलीन्हें आवै । सखियन बीचध-
 रेउ घटशिरपर तापर नयन चलावै । डुलतिग्रीव लटकाति नकबेशरि
 मन्दमन्द गतिआवै । भृकुटीधनुष कटाक्ष बागामनों पुनिपुनि हरिहि
 लगावै । जाको निरखि अनङ्ग अनङ्गत ताहि अनङ्ग चढावै । सूरप्र्याम
 प्यारीछवि निरखत आपुहि धन्य कहावै ४० सखियनि बीचनागरी
 आवै । छवि निरखत रीभेनंदनन्दन प्यारीमनहिँ रिभावै । कबहुं क
 आगे कबहुं कपाछे नानाभाव बतावै । राधा यह अनुमान कियो हरि
 मेरे चितहि चुरावै । आगेजाय कनक लकुटीलै पंथ सँवारि बतावै ।
 निरखत जहां छांहप्यारीकी तहँलै छांह छुवावै । छवि निरखत तनु
 वारि आपनें नागरि जियहिजनावै । ओढिओढनियां चलन देखा-
 वत यहिसिस निकटहि आवै । बारवार शिरपर करं धरिधरि अति
 अधीन ह्वैजावै । सूरप्र्याम ऐसे भावनिसें राधामनहिँ रिभावै ४१ ॥
 राग सारंग ॥ लगलागन नहिँपावत प्र्याम । तब यकभाव कियेकहु ऐसे
 प्यारीतब उपजायो काम । मिसकारि निकट आय मुखहेरेउ पीतांबर
 डारेउ शिरधारि । यह छलकरि मनहेरेउ कन्हाइ कामबिबश कीनीं
 सकुमारि । पुलक अंग अंगिया दरकानी उर आनंद अंचल फहरात ।
 गागरितार्कि कांकीरीसारे उचटि उचटि लागत प्रियगात । मोहनमन
 मोहनी लगाई सखिनसंग पहुँची घरजाय । सूरदास प्रभुसों मन अटक्यो

देहदेहकी मुक्ति बिसराय ४२ ॥ राग नट ॥ अजालिनि चली अमुनबहोरि ।
 ताहिमव मिलि कहति आवहु कछु कहति निहोरि । अजय देति न
 हसहि नागरि रही ददन निहोरि । उगिरही मन कहा शेषचति दाह
 लियो कछुचोरि । भुजाधारि करिरहेउ चलहि न आवै आवहींचोरि ।
 सूरप्रभुके चरित मखियन कहति लोचनिहोरि ४३ ॥ राग मलार ॥ मेरी
 गैलन छांडो सांवरो मैं क्योंकरि पनिघट जाउँरी । ग्रहि सकुचनि डर-
 पतिरहीं मोहिँधरै न कोऊ नाउँरी । जितदेखीं तित देखियेरी रसिया
 नन्दकुमार । इतउत नयन चुरायकै मोहिँ पलकनि करत जोहाररी ।
 लकुटलिये आगे चलेहो पंथसँवारत जाय । मोहिँ निहारो लायकैयह
 फिरि चितवै मुसकायरी । यमुनाजलभरि गागरी लैशिर चलीउचाय ।
 सो कंचुकि अचरा उचै मेरो हियरा तकि लजचायरी । गागरि सारै
 कांकरिसों लागैमेरे गात । गैलसांभू ठाढोरहै मोहिँपंकुत आवतजात
 री । हांसकुचनि बोलौंनहीं लोकलाजकी शंक । मोतनकुँ वैहरि चलै
 वहताहि भरतहै अंकरी । निकट आय मुख निरखिकै चितवै बहुरि
 निहारि । अबहँ अओढीओढनी पीतांबर मोपर बाररी । जबकहुँ लग
 लागेनहीं तब वाको ज्योअकुलाय । तबहटि मेरी छांह सेां वह राखै
 छांह हुवायरी । कोजानै कित होतहैरी घरन गुरुजनसार । मेरोज्यो
 गांठी बँधो वा पीतांबर की छोररी । अबलौं सकुच अटक रही अब
 प्रकटकरौं अनुराग । हिलिमिलिसे सँखेलिहीं सानि आपनो भाग
 री । घरघर ब्रजबासी सबै कोउकित कहै पुकारि । गुन प्रीति प्रकट
 करौं कुलकीकानि निवारिरी । जबलगिमन मिलयोनहीं नट्योचोप
 को नाँव । सूरदासप्रभु मिलिरहै सबकरौं मनोरथ सांचरी ४४ ॥ राग
 काफी ॥ मोहनदिनु अनरहे कहा करौं साईरी । कोटिभाति करिकरि
 रही समुभाईरी । लोकलाज कौनकाज मनमें नहींआई । हृदयते टरत
 नाहिँन सेसी मोहनी लगाई । सुन्दरवर विभङ्गी नवरंगी मुखदाई । सूर
 दास प्रभु बिनमोसों कहेउ नेकन जाई ४५ ॥ रागमूढो ॥ नन्दको नन्दन
 सांवरो मेरो चितचोरे जाय । रूपअनूप दिखायकै बहुऔचक मिलयो
 आय । मोरमुकुट अवराकपाडल ओढनी फहराय । अधरन पर मुरली
 धरे मधुरतान बजाय । चन्दन की खोरिकिये काढनी बनाइ । सूरदास

प्रभु बैठे यमुनातट कन्हाइ ४६ ॥ राग गौरी ॥ परी तबते ठंगसुरि ठगौरी ।
 देख्यो मैं यमुनातट बैख्यो ढोटा यशुसतिकोरी । अतिसाँवरो भरेउसो
 साँचे कीन्हें चन्दबदन खोरी । मनमथ कोटि कोटि गहि वारों ओहे
 पीत पिछौरी । दुलरीकंठ नयन रतनारे मोँसन चितै हरेउरी । बिकर
 भृकुटिकी वारकोरते मनमथबाराधरेउरी । दमकतदशनकनक कुगडल
 मुख मुरलीगावत गौरी । अवगान सुनत देहगतिभती भईबिकल सति
 बौरी । नहिँ कलपरतबिना दर्शनते नयननिलागि गढोरी । सूरश्याम
 चिततरत न नेकहुँ निशिदिनरहतलगोरी ४७ ॥ राग कल्याण ॥ युवती एक
 यमुनाजलको आई । निरखत अंगअंग प्रतिशोभा रीभेकुंवरकन्हाई ।
 गोरेबदन चूनरीसारी अलकें मुखवगराई । डारनि चारिचारि चुरी
 बिराजत करकंकन झलकाई । सहज अङ्गारउठत योवनतन बिधिसे
 हाथबनाई । सूरश्याम आयेढिग आपुन घरभरि चलिहुमकाई ४८ ॥
 ग्वारिघट शिरधरि चली भ्रमकाई । श्यामअचानक लटगहि कहि-
 अति कहाँचली अतुराई । मोहनकरि वियमुखकी अलकेंयह उपमा
 अधिकाई । माँभसमय सकुचत मानोपंकज बीचपरे अतिसमुदाई ।
 मनहुंसुधा शशिराहु चुरावत धरेउताहि कर बरिआई । कुच परसे
 अङ्गभरि लीनीं दुहुँ मन हरय बढाई । सूरश्याम अनाँ अमृत घटनि
 को देखतहै करलाई ४९ छाँडिदेहु मेरीलट मोहन । कुचपरसत पुनि
 पुनि सकुचत नहिँकत आईतजि मोहन । युवती आनिदेखि हैं कोऊ
 कहति वंककरि भौंहन । बारबार कहिबीर दोहाई तुम मानत नहिँ
 सौंहन । इतनेहीं को सौंहदिवावत मैं आयोमुख जोहन । सूरश्याम
 नागरिवश कीन्हों विवश चलीघर कोहन ५० ॥ रागधनार्थी ॥ चलीभ-
 वन मनहरिहर लीन्हें । पगडैजाति ठटुकि फिरि हेरति जिय यह
 कहति कहा हरिकीन्हें । मारग भलिगई जेहि आई आवत कोनहिँ
 पावति चीन्हें । रिसकरि खिभि खिभि के लट भटकति प्रियाम
 भुजनि छुटकायइन्हें । प्रेमसिंधु में मंगनभई वियहरिके रंगभई अति
 लीन्हें । सूरदास प्रभुसों चित अटक्यो आवत नहिँइत उतही पतीन्हें
 ५१ ॥ रागगौरी ॥ घरगुरुजनकी दाससुधि जवआई । तबमारग सुभियो
 नयननि कहुँजिय अपनेविय गईलजाई । पहुँचीआय सदनज्यों त्यो

करि नेकनहीं चिततरत कन्हाइ । सखीसंगकी बूझनलागीं यमुनातट
 अतिभरे लगाई । औरैदशा भईकछु तेरीकहति नहींहमसों समुझाई ।
 कहाकहां कहत न बनिआवै सुरप्रयास मोहनी लगाई ५२ ॥ रागचोगठ ॥
 कैसेजल भरन में जाउँ । गैलमेरी परेउ सखीरी कान्ह जाको नाउँ ।
 घरहिते निकसत बनतनहिँ लोकलाज लजाउँ । तनइहाँमनजायअट-
 क्यो नंदनन्दनटाउँ । जो रहैंघरवैठिके तौरहेउनाहिँनजाय । सीखतैसी
 देहुतुमहीं करौंकहा उपाय । जातबाहिरबनतनाहींघर न नेकसीहाय ।
 मोहनी मोहनलगाईकहतिसखिनमुनाय । लाजकानिमदर्याद जियलों
 करतिहैं यहशोच । जाहिबिनतन प्राणाछाँड़ै कौनबिधि यहपोच ।
 सनहिँ यहपरतीत आनीदूरिकरिहैंशोच । मूरप्रभुहिलिमिलिरहैंगी
 लाज डारों मोच ५३ ॥ रागगोरी ॥ सखी वा यमुना के तट । हैं जल
 भरतिअकेली पनिघट गहीप्रयास मेरीलट । लैगरी शिरमारग डगरी
 उतपहिरेपीरेपट । देखतरूप अधिकरुचि उपजीका छविबनिकंकिया
 रट । फूलसक ग्वालिनिके भेंटतज्यौरगा जीतेफिरै महाभट । मूरलहेउ
 गोपाल अलिंगन सुफल कियो कञ्चन घट ५४ ॥ रागआसावरी ॥ कहा
 कहां सखिकहत बनेनहिँ नंदनंदन मेरोमन जुहरेउ । मातपिता पतिबंधु
 सकुचतजि मगनभई नहिँसिंधुतरेउ । अरुगा अधर युगनयन रुचिर शर
 मदन मुरितमन संग लरेउ । देहदशा कुलकानिलाज रजसहज सुभाव
 रहेउ सुधरेउ । आनंद कंदचंद सुखनिशिदिन अबलोकत यह असल
 परेउ । मूरदास प्रभुसों मेरी गतिजनु लुब्धक करमीन चरेउ ५५ ॥
 ॥ रागनट ॥ मेरोहरि नागरसों मनमान्यो । मनमोहेउ सुन्दरवरनायक
 भलीभई जगजान्यो । बिसरीदेह गेहसुधि बिसरी बिसरिगई कुलकी
 कान्यो । मूरआशपूरे या मनकी तबभावै भोजनपान्यो ॥ ५६ ॥ राग-
 काफी ॥ मोहिँ साँवरे सजनबिन गृहबन कछु न सोहाय । यमुना भरन
 जल में गइतहांप्रयास मोहनीलाय । ओढेपीरी पामरी पहिरे लाल-
 निचोल । भौहैंकाट कटीलियां मोहिँमोल लयेबिनुमोल । मोर मुकुट
 शिर राजत हो अधरधरे मुखबैन । हरिकी मूरति साधुरी तातेलागि
 रहेदोउनैन । मदनमूरति के बशभई अबभलो बुरोकही कोइ । मूरदास
 प्रभुकोमिलि करिसन एकैतनु दोइ ५७ ॥ रागरामकली ॥ मेरेजिय रोसी

आनि बनिबिना गोपाल और नहिँ जानो मुनिमोसों सजनी । कहां
 कांच संग्रहके कीन्हेडारि असोलसनी । बियसुमेर कहुकाम न आवै
 अमृत सककनी । मनबच क्रममोहिँ और न भावैअब मेरेप्रयासधनी ।
 मुरदास स्वासीके कारणातजी जाति अपनी ५८ ॥ रागगुर्जरो ॥ अब्रदुह
 करिधरि यहबानि । कहाकीजै सो न कजिहि होय जियकी हानि ।
 लोकलज्जा काचकिरचा प्रयासकंचन खानि । कौनलीजै कौनतजिये
 सखितुम कहेजानि । मोहिँतौ नहिँऔर सभत बिना मृदुमुसुकानि ।
 रंगकापे होतन्यारे हरद चुनोसानि । यहै करिहैं और तजिहैं परी
 रोसीआनि । मूरप्रमु पतिवर्त्त राख्यो मेठिकैकुलकानि ५९ ॥ रागबिनावल ॥
 भक्तानिके सुखदायक प्रयास । स्त्रीपुरुष नहींकहुनाम । संकट में जिनि
 जहांपुकारेउ । तहां प्रकटितिनको उच्चारैउ । सुखभीतर जिनसुमिररा
 कीन्हे। तिनको दरगतहां हरि दीन्हे। दुखमुखमें जे हरिको ध्यावैं ।
 तिनकोनेक न हरिबिसरावैं । चितदैभजै कौनहूभाउ । ताकोतैसेइबिभु-
 वनराउ । कामातुरगोपी हरिध्यायो । मन बच क्रमहरिसोमन लायो ।
 यत्कृतु तपकीर्त्तितनुगारी । होहिँ हमारे पति गिरिवारी । अन्तर्यामी
 जानतमबकी । प्रीतिपुरातन सालीतबकी । बसनहरे गोपिनसुखदीनों ।
 सुखदै सबकोदुखहरिलीनों । युवतितनके यहध्यान सदाई । नेक न अन्तर
 होय कन्हाई । घाटवाट यमुना तट रोकै । मारगचलत जहांतहँ टोकै ।
 काहकी गागरि धरिफोरै । काहसो हंसिबदन संकोरै । काहको अङ्गम
 भरि भेटै । काम बिधा तरुगानकी मेटै । ब्रह्माकीट आदिके स्वासी ।
 प्रभुहैनिलोभीनिःकामी । भाववश्यसंगहिँसंगडोलै । खेलैहंसैतिननिसें
 बोलै । ब्रजयुवती नहिँनेकबिसारै । भवनकाजचितहरिसोवारी । गोरस
 लैनिकरी ब्रजबाला । तहांतिनहिँ देखेगोपाला । अङ्ग २ सजिष्णुहारवर
 कामिनिचलीमनहुँ यूथनिजुरिदामिनि । कटिकिकिरानूपुरबिडिया
 धुनि । मनहुँमदनके गजघंटासुनि । जातिमाट सटुकीशिरधरिकै । सुख
 सुख गानकरनि गुणहरिकै । चन्द्रबदन तनअतिसुकुमारी । अपनेमन-
 सा कृष्णापियारी । देखिसबनि रीभेवनवारी । तब मनमें एकबुद्धि बि-
 चारी । अब दधिदान रचौं एकलीला । युवतिसंग करौं एक क्रीला ।
 मरप्र्यास संग सखिन बुलायो । यह लीला कहिसुख उपजायो ६० ॥

अथ सरसागर राग कल्पद्रुम ॥

अथ राग सांगरोडव दानलीला के कीर्तन ॥

गान बिलावल

॥ सुनतहँ सी सुखहोय दानदहीको लगयो ॥ ध्रुव ॥ प्रात
 हेत उठि कान्हटेरि सबसखन बुलायो । तेइतेइ लीन्हेंसाथ मिलैं जे
 प्रकृति नवायो । डगरिगये अनजानही गहेउजाय बनघाट । पेंडपेड़ तरु
 के लगोहो करे ठगनिको ठाट । इतहिगवाल बनजुरे चलीं सबसखी सु-
 हेली । शिरनिलिये दधिदूध सबैयोवन अलबेली । हँसतपरस्परआपु
 में चलीजाहिँ जियमोर । जबहिँ आनि घातहि परी तब छेकि लिये
 चहुँओर । देखि अचानक भीरभई सबचकत किशोरी । गईउतहिँको
 सुरकिदई घुंघट सुखमोरी । शंकितहैं ठाढ़ीभई हाथपांव नहिँडोल ।
 मनहुँ चित्रकीसी लिखी हैं मुखहि न आवैं बोल । तब उठि बोलेगवाल
 डरो जिनि कान्ह दुहाई । ठगतस्कर कोउनाहिँ दान यदुपति सुखदाई ।
 आवतजात नितहिरहो श्यामराज भैं नाहिँ । जो कछु लागै दान को
 तुम घाटिदेहु तेहिमाहिँ । तब हँसि बोलीगवालि नाम जब कान्ह सु-
 नायो । चोरीभरेउ न पेट आनि अबदान लगायो । तब उलटी पलटीफबी
 जब शिशुरहे कन्हाय । अब कछु वह धोखेकरौ तौ सराकमाहिंपति
 जाय । तबउठि बोलेकान्ह रही तुम पोचि सदाई । महर महरि मुख
 पाय शंकतजि करहुढिटाई । अबवह धोखो मेठिकै छांड़िदेहु अभि-
 मान । करिलेखो अबदान कोहो दियहि पायहोजान । तबहँसि बोली
 गवालि डरनि तुमतजो ढिठाय । बहुतै नन्दनि काजभयो तुवतप अधि-
 काय । कालिहहि धरधर डोलते खातेदहेउ चुराय । रातिहिकछुसपनो
 भयो हें प्रातभई ठकुराय । भलीकही नहिँगवालि बातकोभेदनपायो ।
 योवनके सदमत्त बातबोलत अधिकायो । तुमसेप्रजावसायके राखेहैं
 यहिपाय । तेतुमहम सरवरभई अब मिलहुछांड़िचतुराय । तबभुकि
 बोलीगवालिबातकिन कहौसम्हारे । ऐसीको बहिययोप्रजाह्वै बसै तु-
 म्हारे । हसहुंतुमहुं नृपकंसके बसेवासयहटाउँ । देखौधौधरजायके हम
 तजे तुम्हारेगाउँ । गाउँहमारै छांड़िजायबसिहौ कहिकेरे । तीनिलोकमें
 कौन जो अबनाहिँनब्रह्मरे । कंसहिको गनतीगनै जाकोहमाहिँ कहा-

हु । दियेदानये बाँचिहौहो नातरुनहीं निबाहु । छोटेमुँह बड़िबात कहौ
 किनि आप सन्हारे । तीनि लोक अरु कंस कर्वाहैं ब्रशभये तुम्हारे ।
 यहवाणी तिनसें कहौ जो कोउहोय अजान । जैसेहो जो राबरे हो
 हमजानति परिमान । लेखी जैहौभूलि कहूँकी बातचलावत । सुनीन
 कबहूँ बातयहै मग आवत जावत । सुटी में लीजै दानके दामसबै पर
 खाय । थैलीसांगि पठाइयेहो पीताम्बर फटिजाय । काहेको सतराति
 बातमें साँचीभायत । झूठीतुम सबगवारि बातमेरी गहिनाखत । कहेउ
 मानि लेखीकरोदेहु हमारोदान । सौंह बबा मोहिं नंदकीहो ऐसे देहुन
 जान । नंददुहाइ दैत कहा तुम कंस दुहाइ । काहेको अठिलात कान्ह
 छांडो लरिकाइ । पहिली परिपाटी चलोनईचले क्योंआज । नृपति
 जानिजो पावईहो पुनिपै होय अकाज । लरिका मोसों कहति नहीं
 देखी लरिकाइ । पयपीवत संहारि पतना स्वर्गपठाइ । अघा बका
 शकटा तृणा केशी मुखकरनाय । गिरिगोबर्द्धन कर धरेउ हो यह
 मेरी लरिकाय । सबै भली तुमकरी हमहिं अब कहत कहांहौ । हम
 कोहोति अबार दहीलै जाहि तहांहौ । हँसीपलक द्वैचारिकी बीतन
 लागेयाम । वनमें राखी रोंकिकैहो नारिपराइ प्रियाम । हाँसी करति
 हों तुमहिं भलीगई बुधि ब्रजनारी । तुम हमको हम तुमहिंदई बिन
 काजहि गारी । बात कहौ कछुजानिकै लृथा बढावति शोर । सदा
 जाहु चोरतिभई हो आजुपरी फगभोर । सांगिलेहु दधि देहिं दान
 को नाम मिटावहु । ऐसेदेहिं न नेक कहा हमको डरपावहु । हमहिं
 कहतहै चोरटी आपुभये अबसाहु । चोरीकरत बड़ेभयेहो महीछाँडलै
 खाहु । दहीलेतहौ छीनि दान अंगनिको लैहौ । लेहौ रूप निदान दान
 येवनपै कैहौ । तुमसब कंचनभारलै मेरेमारगजाहु । महीदही देखरावहु
 हो कैसेहोत निबाहु । जाहुभलेहो कान्हदान अंगअंगको सांगत । हमरो
 येवनरूप आंखि इनके गड़िलागत । सबैचलीं भहरायके मटुकीशीश
 उटाय । रिसकरि कसि कसि पीतपटहो गवारिगही हरिधाय । मटुकी
 लई छिडाय हारचोली बंदतोरेउ । भुजधरि भरि अंकवारि बांहगहि
 कै भ्रूभोरेउ । माखन दधिलिये छीनिकै कहेउ ग्वालसब खाहु ।
 मुख भगरति आनन्द उरहिहो धिरवतहैं घरजाहु । देखो हरिके काम

हार चोलीबंदतोरों । इनको भरि अंकवारि बांहवारिके भक्तभोरी ।
यशुमतिसें कहिये चलो अबप्रकटी तरुणाय । दधिमाखन सबछी-
निलिये हो खालन दिये खवाय । जाय कहे ज भलीबात जेबा के
आये । तुमको यावन रूपदान देहां नहिं मांगे । तुमजो कहे जायके
जननीनहिं पतियाय । सूरसुनहुँरी खालिनीहो आवहुगी प्रखिताय १
रगकाफी ॥ सेसो दान न मांगिये जेतो हमपै दियो न जाय हो । बन में
प्राय अकेली युवतिन मारग रोकत धाय हो । बादघाट औघट यमुना
तह बातें कहत बनाय । कोऊ सेसोदान लेतहै कौरे सिखै पढाय । हम
जानति तुमयो नहिंरहौ रहौ गारीखाय । जोरसचाँही मोरस नाहीं
गोरस पियहु अघाय । औरनिसों लैलीजै गिरिवर तब हम देखिं बु-
लाय । सूरश्याम कत करत अचगरी हमसों कंवर कन्हाय २ ॥ राग
नट ॥ दानहुलेहु जान काहेको कान्हदेत हौ गारो । जो कोउकहेउकरै
हठ याही मारग आवै दै मारी । भलीकरी दधिमाखन खाया चोली
हार तोरिडारी । यादन दानकहं कोउमांगत यहसुनिकै अतिलाज-
निमारी । हाति अवार देहु घरजान हो पैयांलाग डरति हैं भारी ।
हसहिं तुमहिं कैसेहैं भागरो सूरश्यामहम खारिगंवारी ३ ॥ रागभैरव ॥
भोरहीसें कान्ह करत सोसें भागरो । औरनि छांड़िपरे हठ हमसों
नितप्रति कलह करत गहिडगरो । बिन बोहनी तनकनहिं देहां ये-
स्यहि छीनिलेहु किनसगरो । सबकोउजात मधुपरीबेंचन कौनदियो
दिखरावहु कगरो । मुखचूंबति हंसि कंठलगावति आपुहि कहाहिन
लाल अचगरो । सूरमनेह खारि मन अटको छांड़िहुवियो परतनहिं
पगरो ४ ॥ रागकान्हो ॥ दानलेहैं सबअंगनिको । अतिमद गलितताल
फलतेगुर इनयुगउरज उतङ्गनिको । खंजन कंज सीतमृग-शावक भँवर
जवर भुव भंगनिको । कुन्दकली बंधूक बिम्बफल बरतांक तरंगनि-
को । कोकिल कीर कपोत किशनता हाटक हंस फलंगनिको । सूर-
दासप्रभु हंसि बशकी हों नायक कोटि अनंगनि को ५ ॥ रागकाफी ॥
कान्ह भलेहो भलेहौ । अंगदान हमसों तुममांगत उलटी रीति चलेहौ ।
कौन दोषकियो माखन छीनों काहेको तुम औरहिभाव मिलेहौ ।
दानलेहु कहू और कहतहैं कौनहिं प्रकृति मिलेहौ । हारतोरिउ चीर

फारेउ बोलत छिलेहौ । ऐसे हाल हमारे कीन्हें जातिहुती दहि लेहौ ।
 हमहैं तुम्हरेगाँवकीकछुयाले गहिगहिलेहौ । सूरदासप्रभु औरभयेअब
 तुमनहेहुपहिलेहौ ६ ॥ रागपूर्वी ॥ तूमेसों दानमाँगिकिनलेहौनंदकेलाला ।
 ऐसीबातनि भगरो टानति हो मारग रोंको नहिँवाला । नन्दमहरकी
 कानिकरतहैं छाँड़िदेहुऐसाख्याला । मेरोकह्योमानसनमोहननीकी
 नहीं यहैचाला । सूरदास प्रभु मनहरि लीन्हें नेक हँसत भई ग्वाल
 बेहाला ७ यौबनदान लेहुँगो तुमसों । जाके बल तुमबदति न काहुहि
 कहादुरावति हमसों । ऐमेधन तुमलिये फिरतिहो दानदेति स्तराति ।
 अतिहि गर्वते कहेउ न मेसों नितप्रति आवतिजाति । कंचन कलश
 महारसभारे हमहुन तनक चखाबहु । सूर सुनहुं कतभार मरतिहौ ह-
 महिं न माल दिखाबहु ८ ॥ रागकान्हरो ॥ कहाकहत तूनन्दहुदौना । सखी
 सुनहुंरी बातें जैसीकरत अतिहि अचभौना । बदन सकोरत भौंह मरो-
 रत नयननि में कछुदौना । यौबनदान कहा धौं मांगत भई कहं नहिँ
 हौना । हमकहैबात सुनहुंसनमोहन कालिहरहे तुम छौना । सूरश्याम
 गारीकहदीजै यहसुधिहै घरखौना ९ ॥ रागपूर्वी ॥ ऐसे जिनिबोलो नंद
 के लाला । छाँड़िदेहु अचरा मेरोमेको जानत और सिवाला । बार-
 बारमैं तुमहिं कहतिहों परिहौ बहुरि जंजाला । यौबनरूप देखि ल-
 लचाने अबहीते ये ख्याला । तरुणार्जितन आवन दीजै कतजिय हात
 बिहाला । सूरश्याम उरतेकर टारहु टूटैगी मोतिनकी माला १० ॥ राग
 सुधराव ॥ कहागति प्रकृति परीहो कान्ह तुम्हारेधरत कहा कतराखत
 धरे । अबलौं नहिँ यहबात आजुकी बनमें श्याम युवति सब नेरे । स-
 कुचतिहैं घरघर घेराको नेकलाज नहिँतेरे । भक्तभोरत बहियां अं-
 कमदेकुच परसतहौ मेरे । अतिहि अबेरभई घरछाँड़े चितैहँसत मुख
 तन हरिहेरे सूरदास प्रभु भुक्तकहाहौ चेरीहैं काहूकरे ११ ॥ रागटोड़ी ॥
 कहाकहत तुमसों मैग्वालनि । दानदेहु घरजाहु चली सब अतिकत
 हात गँवारनि । कबहुं बात नहीं घर खेवतकबहुं उठतदै गारनि ।
 लीन्हे फिरति रूप विभुवन की ये नोखी बनिजारनि । पलाकरति
 देतिनहिं नीकेतुमहौ बड़ीबंजारनि । सूरदास ऐसा गयजाकेताकेबुद्धि
 पसारनि १२ ॥ रागपूरिया कान्हरो ॥ कान्हअब नागयोहैदानी । मांगत

दानदही को अवलौले कहु औरैदानी । औरनि सों तुमकहा लहउहे
 सो सब हमहिं दिखावहुआनी । मांगतहौ दधिसो हमदेहें कहाकहत
 यहानी । छाँडिदेहु अंचरा फटि जैहै तुमको हम नीके पहिंचानी ।
 सूरप्रथाम तुसरतिप्रति नागर नागरि अतिहि मयानी १३ ॥ रागकान्हो ॥
 लैहां दान अंग अंगको । गोरेभाल लालसेन्दुर छवि मुक्तावर शिर
 सुभग संगको । नक्रवेशरि कुटिलातरि बनकोगरहमेल कुचयुग उत्तंग
 को । कंद यौदुलरी तिलरी उरसागाक्र मोतीहार अतिरंगको । बहु
 नगलगे जराउनी अंगिया भुजबाजूबंद बहुटनको । दाननलेहां तरुणी
 रीभूतमन कहा बहु अङ्ग अङ्गनि को । जेहरिपग जकरेउगाढे मने
 मंद मंदगति यह मंतगको । यौवनरूप अंगपाटम्बर सुनहुं सूर सबयह
 प्रसंगको १४ ॥ रागटोड़ी ॥ अरीयह ठीठकान्हर बोलि न जाने बरबश
 भगरो ठाने । जोइ भावत सोइ कहि डारत ऐसेो निधरक नहिं कहुं
 देख्यो रूप यौवन अनुमाने । अङ्गअङ्गको दानलेत नहिं घरके को प-
 हिंचाने । हम दधिब्रेचन जातिहैं मथुरा मारग रींकिरहत गहिअंचल
 कंस कि आनि न माने । ऐसीबात सम्हारिकहौ हरिहसतुमकोपहिं-
 चाने । सूरप्रथाम जो हमसेमांगतसो पैहौ कहुं और वियनपै यहबाते
 गहिबाने १५ ॥ रागमलार ॥ पीतबसन दुहुं करनोलासी ताहि कांसरी
 लकुटि भूलिगई । गोकुल के गायनको चुरायबो छाँडिदीन्हें नवव-
 धूनि संग नवलनेह आयो परम बिसामी । लकुटिया भूलिगई गोरस
 चुरायखाय बंदन दुराय राखे मनन धरत तुन्दावनको बासी । सूर-
 प्रथाम त्वहिं घरघर सबजाने यहां कोहै तिहारीदासी १६ ॥ रागमलार ॥
 नंदमहरके सुवन करत हो अचगरी । वेबार्ते भूलिगई बनवन धेनुचरा-
 वत फिरत निशि बासर गावत बेराबजावत दानी भये बाहर डगरी ।
 बार्ते भूलिगई बनमें पराई नारि रींकि राखी बनचारि जानत नहिं
 देतहोकोन ऐसीलंगरी । मांगत यौवनदान भलेहौ जू भलेकान्ह मान-
 तन कंसआन कोवसिहै ब्रजनगरी । कबहुं गहत दधिमटुकि अचानक
 कबहुं गहतहौ अचानक गगरी । सूरप्रथाम जहांतहां खिभावन जोसन
 भावतदूरिकरो लंगराई सगरी १७ ॥ रागपूबी ॥ दधिमटकी हरिछीनिलई ।
 हारतोरिचोलीबंदतोरै यौवनकेवलहोठभई । ज्योंहींज्यों हमसूखे बोलैं

त्योत्यो अति सतरायगई । बादकरति अबहीं रावहुगी बारबार कहि
 दई । मेरो कहै उन मानति सुधे तुम्हरे मन की जानि लई । सूरसुनहु मैं कहत
 अजहुं लो प्रीतिकरी जो भई सो भई १८ तुमकबसों भये हौजू दानि दानि
 दानी । मटुकी फोरि हार गहि तोरे उ इन बातनि पहिँ छानी । नन्दसहर
 की कानि करत हौं न तुकरती सहि मानी । भलिगई सुवितादिन की जब
 बांवे यशुदरानी । अब लौं मही तुम्हारी डौटी तुम यह कहत डरानी ।
 सूरप्रथम कहु कहत न बनि है नृपपावै कहु जानी १९ ॥ राग काफ़ी ॥ क-
 न्हैया हारहसारी देहु । दधि लवनी घृत जो कहु चाहौ हो तुम से सेहि
 लेहु । कहा करौं दधि दूध तुम्हारे मोसों ताहीं काम । योवन रूप दुराय
 धरे उहै ताहि को लेत न नाम । नीके मन ह्वै मांगत तुमसों बैर नहीं उर
 नाखाति । सूरसुनहुरी खारि अयानी अन्तर हमसों राखाति २० ॥ राग
 गौरी ॥ हमको लाज न तुमहिँ कन्हाइ । जो हम यह मारग सब आई
 तौ तुम हमसों करत ढिठाई । हाहाकरति पायँ तुम लागति रीजी मटुकी
 देहु मँगाई । काको बदन प्रातही देख्यो घरते हम छीं कतहु न आई । उ-
 ताह जाति ही सखी नहे ती में ही सबको इतहिँ फिराई । सूरप्रथम अध-
 मई हमहिँ सब लागौ तुमहिँ भलाई २१ ॥ राग बिलावल ॥ मैं भरहाये पां
 लागति हौं । कनककलश रसमोहिँ चखावहु जो मैं तुमसों मांगति हौं ।
 वोही ठग तुम रहे कन्हाइ सबै उठी भिभकारि । लेहु अर्थाय सब नि के
 सुखते कितहिँ दिवावत गारि । नीके देहु हार दधि मटुकी बात कहनि
 नहिँ जानत । कैहें जाय यशोदासों प्रभु सूर अन्नगरी दानत २२ हार तोरि
 बिधुराय दयो । मैया ऐतुम कहन चली कत दधि साखन सब छीनिलयो ।
 रिस करि वाय कंचुकी फारी अब तौ मेरो नाम भयो । काल्हि नहीँ यहि
 मारग ऐही ऐसो मोसों बैसठयो । भली बात घर जाहु आजु तुम मांगत
 योवन दान नयो । सूरदास मुखही रिस युवतिन उर उर अन्तर काम जयो
 २३ ॥ राग नट ॥ मोहिँ तोहिँ जानिबी नंदनन्दन जब तुम्हावनते गोकुल
 जैबो । सखिन कहत छीनिले मेरी मटुकी या मुँह मोरिबो गारि देबो ।
 आय अधिक आई सो लैबो एक गाँव एक हि सँग बसिये कैसीरी यह मग
 ऐबो । कैसे हार तोरि मैं डारे उ बसत नहीँ रिस करि खैबो । युवतिन को
 मुख देखि रहत है ललचाने को खैबो । सूरप्रथम दधि साखन लीन्हें हार

नदेहीं कनिहीं बैर समुझि कहबो २४ ॥ राग बिजावल ॥ सुनहु प्रियाम हम
 अबचली यशुमतिके आगे। तौ नदियो हमको अबहिं तुमको धार लागे।
 सकसक करि दियुरायके मोतिन लरतारेउ। हंसि भैंटी कुच परसिके
 गहि अंग भंभोरेउ। चली महरिपै सुन्दरी उरहन लै हरिको। अबहीं
 बोलि बँधाइये लंगर यह लरिको। गई नन्द यशुमति जहँ भीतर। देखि
 महरिको कहि उठी सुतकीन्हें इतर। माइगचलत न पाइयेरी हरिके
 आगे। मूरदास प्रभु वासतें ब्रजतजिहमभागे २५ ॥ राग नट ॥ अपनेरी कुं-
 वर कन्हारि सों माइत कहिन। बहुत बचति ब्रजकी कानिन हंसति कहा
 यहांते जाहिन। ऐसी भयो कृत कौन तिहारे योवन दान लियो मोपै
 चाहिन। अति उत्पात कहाँ लौं दीजै पीपरको बन दाहिन। आन कि
 आन कहत नित हमसों उनके मनकी कछु जानत नाहिन। काहू बि-
 लोकिन बानसिखायो मैं अब पहिंचानति ताहिन। बूझि धौं देखि
 इहां कौन-मयानी हरि सेरोमन चुरवायो का पाहिन। जाइनमिलो
 मूरके प्रभुको असुझे मनसों असुझाइन २६ ॥ राग सुघराव ॥ यशुमति तेरो
 वारो अतिहै अचगरो। दूधदही मारखनलैं डारि दियो मगरो। भारहोत
 नितप्रति करै अति भूगरो। रवाल बाल संग लये जाय गहै डगरो।
 नितहीं नित आयघेरै हमरोई मगरो। लियोदियो कछु सोउ डारि देहु
 कगरो। मूरदास प्रभु सब गुगान में आगरो। और कहुं जाय रहे छांड़ि
 ब्रजबगरो २७ ॥ राग सूडो ॥ मैं तुम्हरे मनकी सबजानी। आपस में इत-
 राति फिरतहौ देय देतिहौ श्याम को आनी। सेरोहरि कहँ दशहि
 बरयको तुम्हरो योवन उमदानी। लाज नहीं आवति इन लंगरिनि
 कैसेधौं कहि आवति बानी। आपुहिहारै तोरि चोलीबंद उरनखघात
 बनाय निखानी। कहँ कान्हाकी तनक अँगुरिया यह कहि बारबार
 पछितानी। देखहु जाय और काहू को हरि पर रहत सबै डरानी।
 मूरदास प्रभु सेरोनान्हे तुमतरुणी डोलत अटिलानी २८ ॥ राग बलावल ॥
 जबदधि बँचन जाहि तब मारग रोंकि रहै। रवालिनि देखत धायरी
 अंचल आयगहै ॥ ध्रुव ॥ अहो नन्दकी नागरि ऐसी क्यों दीजै। एक
 ठौर बसिवास सुनहु ऐसी नहिं कीजै। सुतचैसो तुमतौ खीझतिहो कोरैहै
 यहिगाउँ। जैहँ ब्रजतजि अनतहीहो बहुरि सुनो नहिं नाउँ। कहा क-

हति डरपाय कछु मेरो घटिजैहै । तुमबांधति आकाश बातभूँटी को
 सैहै । योवन दिनदे सर्वाहिको तुमऐसी इतराति । भूँटे कान्हहिं दोष
 देहौ तुमहीं व्रजतजि जाति । हमयह भूँटोकहति औरसों बूझिगदेखा ।
 हमसों सांगतदान करत कौडिनको लेखो । सटुकीढारेशीशते सरकट
 लेइ बुलाय । महाढोठ मानेनहीहो सखन सहित दधिखाय । श्वारिनि
 ढोठि गँवारि कान्हमेरो अतिभरो । तेरेगोरस बहुत भयोरी मेरेथोरो ।
 बोलिन जानत बावरीतुम सबभई गँवारि । ऐसी कैसे हरिकरैहो क-
 हति बढावति रारि । अहो यशोदा-महरि पूतकी-मामीपीवै ! हमहिं
 कहाहैहोत बहुतदिन मोहन जीवै । सुतके कर्म न जानई करै आपनी
 रेक । हमभूँटी सबरवालिनीहो सांचेकान्हर सक । कह गैयनकी चली
 कहा अब चली जातिकी । चकत भईमें तुमहिं कहति अनमिलन बात
 की । जैसी मोसों कहतिहौ सुनिके को पतिआय । कौन प्रकृति तुम
 को परीहो मोहिंकहौ समुभाय । अहोयशोदा बात काल्हिकी सुनी
 कि नाही । बंशीबटकी छांहि गहीहरि मेरीवाहीं । हैं सकुची बेली
 नहीं बहुमखियनकी भीर । गहिबहियां मोहिं लैचलोहो हंससुताके
 तीर । रीतेरुत गुवालिफिरत योवन मदमाती । गोरस बैचनहारि गर्ब
 गुजरि इतराती । अनमिलती बातेंकहति सुनिहै तेरोनाह । कहमोहन
 कह तू रहेहो कबहिंगही तेरीबांह । सांचीसब्र में कहति भूँट नहिं क-
 हिहैं तुमसों । सुतकी राखतिकानि बिलग मानतिहौ हमसों । कुंजन
 में क्रीडाकरै मनो वाहिको राज । कंस सकुचिनहिं मानईहो रहतभयो
 शिरताज । ऐसी बातें कहति मनहुं हरि बरय तीस को । दुसह सहेउ
 नहिंजाय नेक डरकरि रडिईशको । धनिधनि तुमयह कहतिहौ मोको
 आवतिलाज । माखन सांगत रोइके तेहि दोषदेत बिनुकाज । हमजा-
 नतहैं संव यंत्र सीख्यो कहूँ टोना । दनमें तसुगा कन्हाइ घरहि आवत
 हूँकोना । सकदिवस किन देखहु अंतररहौ छिपाय । दशकोहैधौ तीस
 को हो नयननि देखहुजाय । जाहु चली घर आपु नयनभरि हमदेख्यो
 है । तीसबीस दशबय एकयक दिन लेख्योहै । डोठि लगावतिकान्हको
 जरेबरेवे आंखि । धिंगरीधिंगचाचरि करेहो मोहिं बुलावति सांखि ।
 धींग लुहारेपत धींगरी हमको कीनी । सुतको हसकति नहिं कोटि

यह गारीदीनीं । महतारीसुतदोउ बने वे मगारोंकत जाय । इनहिंकहन
 दुख आइये तो सबको उठति रिसाय । कहाकरो तुमवात कहूँकी कहूँ
 लगावति । तरुणान यह सोहाय मोहिँ कैसे यहभावति । बहुत उरहना
 मोहिँदियो अब सेमे जिनिदेह । तुम तरुणी हरि तरुणा नहींहे मन
 अपने गनिलेहु । निरउत्तर भइ खालि बहुरि कहत न कछुआयो । मन
 उपजी कछु ताज गुप्त हरिसें चितलायो । लीला ललित गोपाल की
 कहतसुनत सुखदाय । दानचरित सुखदेखिकैहे सूरदास बतजाय२६॥
 पुनः रागरामकला ॥ नंदनन्दन यकबुद्धिउपाई । जेजे सखा प्रकृतके जाने ते
 सब लिये बुलाई । सुवल सुदामा श्रीदामा मिलि और नहरसुत आये ।
 जोकछु मंत्रहृदय हरिकीनें खालन प्रकट सुनाये । ब्रजयुवती नितप्रति
 दधि बेचन बन बन मथुरा जाति । राधा चन्द्रावलि ललितादिक बहु
 तरुणी यकभांति । कालिन्दीतट कालिह प्रातहीद्रुमचटि रहेलुकाई ।
 गोरसलै जवहों सबआर्वे मारग रोंकहुजाई । भलीबुद्धि यह रची क-
 न्हाई सखन कहेउ सुखपाई । सूरदास प्रभु प्रातहृदयही सब मन गये
 जनाई ३० प्रातहि उठी गोपकुमारी । परस्पर बोलत जहाँतहँ यहसुनी
 बनवारि । प्रथमहीं उठि सखा आये नन्दके दरबार । आइये उठिकै
 कन्हाई कहेउ बारम्बार । खालि टेहन सुनत यशुदा कुंवर दियो ज-
 गाय । रहे आपुन मौनसाधे उठे तब अकुलाय । मुकट शिर कटि पीत
 अम्बर मुरलि लीनींहाथ । सूरप्रभु कालिन्दि तटगये सखा लीन्हें साथ
 ३१ भलीकरी उठि प्रातहि आये । मैजानत सब खालि उठों जव तब
 तुम मोहिँ बुलाये । अब आवति ह्वैहँ दधिलीन्हें घरघरते ब्रजनारि ।
 हँसे सबे करतारी दै दै आनंद कौतुक भारि । प्रकृति प्रकृतिके जेसब
 राखे संगी पांचहजार । और पढाय बिये सूरज प्रभु जेजे अतिहि कु-
 मार ३२ ॥ रघु बिलवल ॥ हँसत सखन यह कहत कन्हाई । जाय चढी
 तुम सघन द्रुमन पर जहँ तहँ रहौ छिपाई । तबलौं बैठिरहौ सुख मुंदे
 जबजानहुँ सबआई । कूदिपरोगे द्रुमन द्रुमनते दै दै नन्ददुहाई । चकत
 होहिँ जैसे युवतीगम डरनिजाहिँ अकुलाई । बेरा बिद्याशा मुरलि धुनि
 कीजै शंखशब्द घहनाई । नितप्रति जाति हमारैहि मारग यह कहियो
 समुझाई । सूरश्याम माखन दधिदानी यहसुधि नाहिन पाई ३३ श्याम

सखन ऐसी समुझावत । व्रजवनिता राधा ललितादिक इनको देखि
बहुत सुख पावत । काल्हि जात यहि मारग देखी तब यह बुद्धिउ-
पाई । अब आवति हैं हैं वनि वनि सब मोहीं सों चितलाई । तुमसों
कछु दुरावत नाही कहत प्रकट करिबात । मुनहुसूर लोचन मेरे बिनु
राधामुख अकलात ३४ व्रजयुवती मिलि करत विचार । चलहु
आजु प्रातहि दधि बेचन नित तुम करति अवार । तुरत चली अवहीं
फिरि आर्थे गोरस बेचि सवार । साखन दधि घृत साजति मटुकिन
मथुरा जानबिचार । यद्दश सहित शृंगार करति है अंग अंगतिरखि
संवारति । सूरदास प्रभु प्रीति सबन के नेकु न हृदय बिसारति ३५ ॥

रागधनाश्री ॥

युवतीश्रंग शृंगार संवारति । बेगीगुंथसांग मोतिनकी शीश
फूलशिरधारति । गोरेभाल बिंदुभेदुरपर टीकाधरेउ जराव । बदनचन्द
पर रविपर तारागया उदित सुभाव । सुभगश्रवणा तरिवन मणिभूषणा
यहउपमा नहिंपार । मनुहुकाम बिबफांद बषाये कारणा नंदकुमार ।
नासानथ मुक्ताकी शोभा रहेउ अधर नटजाय । दाडिमकन शुक्लेत
बन्योतहि कनक फंदरहेउ आय । दसकत दशन अरुणा अधरनि तर
चिबुक दिठौना भ्राजत । तुलरी अरु तिलरी बंदनतर सुभग हमेल बि-
बिराजत । कुच कंचुकी द्वारमोतिनकी भुजनिबिजैठा सोहत । डारनि
चुरीकरनिफुंदनावनि कंजआशअलिजोहत । सुद्रघटिकाकटिलहंगार-
गतनुतनु मुखहोसारी । सूरखालि दधिबेचन निकसी पग नूपुर धुनि
भारी ३६ ॥ रागनट ॥ दधिबेचन चली व्रजनारि । शीशधरि धरिमाट
मटुकी बड़ीशोभाभारि । निकसि व्रजकेगई खैंडे हरयभई सुकुमारि ।
चली गावति कृष्णको गुणहृदय ध्यानविचारि । सबनिके मनजोमिलैं
हरिकोउ न कहतिउधारि । सूरप्रभु घट घट सुव्यापी जानिलइ बन-
वारि ३७ ॥ रागजैतश्री ॥ हरिदेखी युवती आवति जव । सबनि कहेउतुम
जाय चढौद्रुम बैठिरहौ जहँतहँ दुरिदुरि सब । चढे सबै द्रुमडारखाल
गसामुनत प्रयाममुखबानी । थोखेहि धोखेहि रहे सबै हमप्रयाम भली
यहजानी । नौसतसाजि शिंगार युवति सबदधि मटुकी लिये आवत ।
सूरप्रयाम कविदेखत रीके मनमन हर्यबद्धावत ३८ ॥ रागधनाश्री ॥ सुखा
अवर संगलिये कन्हई । आपन निकसि गये आगेको मारग रोक्यो

जाई । यहिअन्तर युवती सबआई बनलागयो कहुभारी । पाछे युवति
रही तिनटेरति अर्वाहँगई तूहारी । तरुणीजुरीं एक संगभई सब इत
उत चलीं निहारत । सुरदामप्रभु सखालिये संगठाहे इहे बिचारत३६
रागमौरी ॥ ग्वालनि जवदेखे नंदनदन । मोरमुखट पीताम्बर काढेखोरि
किये तन चंदन । तब यह कहेउ कहां अब जैहौ आगे कुंवरकन्हाइ ।
यह सुनिमन आनंद बढ़ायो मुखकहे बातडराई । कोउ कोउ कहति
चलीरी जैयकाहे फिरघर जैये । कोउ कोउ कहतचलीरी आगे इनसों
कहाडरैये । कोउ-कोउ कहति कालिहरी हमको लूटिलियो नंदलाल ।
सूरप्रियामके सेसेगुणाहे धरहि फिरी ब्रजबाल४० ॥ रागमोठ ॥ ग्वालनसे
नदियो तब प्रियाम । कूदिकूदि तुम परहु द्रुमनि ते जातचली घरबाम ।
सैनजानि सबगवाल जहाँतहँ द्रुमद्रुम डारहलाये । बेरा बियाग शांख
सुरलीधुनि सबथक शब्द बजाय । चकतभई तरुतरु प्रति देखत डारनि
डारनि ग्वाल । कूदि कूदिसब परेधरिग में घेरिलई ब्रजबाल । नित
प्रतिजाति दूधदधि बेंचन आजुपकरि हमपाई । सूरप्रियामको दानदेहु
तब जैहौ नंददुहाई ४१ ॥ राग नट ॥ ग्वालनि यह भलीनाहिँ करति । दूध
दधि घृत नितहि बेंचति दान देवे डरति । प्रातही लैजात गोरस बेंचि
आवति राति । कहौकैसे जानिये तुम दानसारै जाति । कालिन्दी के
तटप्रियाम बैठे हमहिँ दियो पढाय । यहकह्यो हरिदान सांगहु जाति नि-
तहि चुराय । तुमसुता वृथभान की येबड़े नंदकुमार । सूरप्रभु को नहीं
जानतदान हाटवजार ४२ ॥ रागकान्हरी ॥ यहसुनि हँसीं सकल ब्रजनारी ।
आनि सुनहुरी बात एकइन सिखईहै महतारी । दधिमाखन खैबेको
चाहत सांगिलेहु हमपाश । सूधेबातकहो मुखपावें बांवनकहत अकाश ।
अबसमझी हमबात तुम्हारी पढेसक चटसार । सुनहु सूरयह बातकहौ
जिनि जानति नन्दकुमार ४३ ॥ रागधनाथी ॥ बात कहत ग्वालनि स-
तरति । अब जानी हम भांति तुम्हारी सूधे नहीं बताति । यह बडो
दुख गांववासको चीन्हे कोउ न सकाति । हरिसांगतिहै दान आपनो
कहति सांगिकनि खाति । हाटबाट सब हमहिँ उगाहत, अपने दान
जगात । सूरदासको लेखोदीजै कोउन कहै पुनिबात ४४ ॥ रागकान्हरी ॥
कौनकान्हको तुमकह सांगत । नीकेकरि सबको हमजानत बाँते क-

हत अनागत । छाँड़िदेहु हमको जिनिरोकहु तृथाबद्धावति रारि । जैहै
 बात दूरिलौं ऐसीपरिहै बहुरिखमारि । आजुहिदान पहिरि यहँआये
 कहा दिखावहुछाप । सूरप्रयाम वैसही चलो ज्योंचलत तुम्हारोबाप ।
 ४५ कान्हकहत दधिदान न दैहौ । लैहौंछोनि दूधदधि माखन देखत
 ही तुमपरैहौ । सर्वादनको भरिलेहुं आजुही तबछाँड़ोगो तुमको । उध-
 रति हौ तुममातु पितालों नहिजानौं तुमहमको । हमजानतिहैंतुमको
 मोहन लैलै गोद खिलाये । सूरप्रयाम अबभये जगाती वे दिनसब बि-
 सराये ४६ आजहूँ मांगिलेहु दधिदैहैं । दूधदही माखन जो चाहौ स-
 हजखाहु सुखपैहैं । तुमदानो ह्वैआये हमपर यहहमको नहिंभावति ।
 करो तहांलौं निबहैजोई जाते सबसुख पावति । हमको जानदेहु दधि
 बेंचन पुनि कोऊ नहिंलैहौ । गोरसलेत प्रातहीसबकोउसूर धरेउपुनि
 रैहौ ४७ दानदिये बिनजान न पैहौ । जबदेहैं ढरकाय सबगोरसतबहिं
 दान तुम देहौ । तुमसों बहुतलेबहै मोको यहलै ताहिमुनायो । चोरी
 आवति बेंचजाति गोरस सब बंहुख्यो कहँपायो । मांगति छाप कहा
 दिखराऊं को नहिं हमकोजानत । सूरप्रयाम तब कहेउ ग्वारिसोंतुम
 मोको क्यों मानत ४८ ॥ राग रामकली ॥ कहाहमहिं रिसकरत कन्हाइ ।
 यहरिस जायकरो मथुरापर जहांहै कंसकसाई । हम अब कहाजाय
 गहरावें बसति तुम्हारे गांव । ऐसेहाल करत लोगनिके कौनरहेयहि
 टांव । अपनेही घरके तुम राजा सबको राजाकंस । सूरप्रयाम हम दे-
 खतबाढे तबसीखे यहगंस ४९ ॥ राग सूहे ॥ जायसबै कंसहि गोहरा-
 वहु । दधिमाखन घृत लेत छिड़ाये आजुहि मोहिं बुलावहु । ऐसे को
 कह मोहिंबतावति पलभीतरगहिसारों । मथुरापतिहि मुनहुंगीतुमहीं
 जब वाके धरिकेशपछारों । बारबारदिन हमहिंबतावति अपनोदिन
 न बिचारो । सुर इन्द्र ब्रज तबहिकहावत करगिरिराखि उबारो ५० ॥
 राग गुजरी ॥ गिरिवरधख्यो आपनेघरको । ताहीकेबल दानलेतहौ रोंकि
 रहतहौ हमको । अपनेहीमुख बड़ेकहावत हमहंजानति तुमको । यह
 जानति पुनि गायचरावत नितप्रति जातहो बनको । मोरमुकुट मुरली
 पीताम्बर देखे आभूषणको । सूरकांठ कामरिहू जानति हाथ लकु-
 दियाकरको ५१ ॥ राग बिलावल ॥ यहकमरी कमरीकरिजानति । जाके

जितनी बुद्धि हृदयमें सी तितनोइ अनुमानति । याकमरीके सकरोम
पर वारों चीरपटम्बर । सोकमरी तुम निन्दतिगोपी तीनिलोक आ-
डम्बर । कमरीके बल असुरसंहारे कमरिहिते सबभाग । जातिपांति
कमरी सबमेरी सुर सर्वाह यहयोग५२ धनिधनि यह कामरीहो मो-
हनलाल श्यामकी । यहैओरिह बनकोजातरहे सेजकरतहो तुम मेहबं-
दनिवारनरहै छांहघामकी । यहै ऊनकरतहो पुनि शिशिरशीत यहै
हरति गहनैलैहैधरति ओटकोट वामकी । यहैजाति यहैपांति परपाटी
यहै सिखवति सुरदासप्रभुको यहै सबबिग्रामकी ५३ अब तुमसांची
बातकही । येतेपर युवतिनकोरोंकब सांगत दानदही । जोहम तुमहिं
कहेउ चाहतही सो श्रीमुख प्रगटायो । नीके जाति उधारी अपनी युव-
तिन भलेहैसाथो । तुम कमरीके ओढन हारे पीतांबर नहिं छाजत ।
सुरप्रियाम कारे तन ऊपर कारी कमरी धाजत ५४ सोसों बात सुनहुं
ब्रजनारी । एक उपखान चलत त्रिभुवनमें तुमसों आजु उधारी । क-
बहुं बालकमुंह न दीजिये मुंह न दीजिये नारी । जोइ मन करै सोई
करिडारै मूढचढ़ति है भारी । बातकहति अटिलाति जाति सब हंसत
देतिकरतारी । सुरकहा ये हमकोजनिं छांछहि बैचनहारी ५५ यह
जानति तुम नंदमहरिसुत । धेनुदुहत तुमको हमदेखति जबहिजात खरि
कहि उत । चोरीकरत यहौपुनि जानति घरघरहुंढतभांडे । मारगरोकि
भये अबदानो वेढैग कबतेछांडे । और सुनहुं यशुमति जबबांधे तबहम
कियो सहाय । सुरदासप्रभु यहजानति हमतुमब्रज रहत कन्हाय ५६
राग आसावरी ॥ कोमाता कोपिता हमारे । कबजन्मत हमको तुमदेख्यो
हंसी लगति सुनिबाततुंहारे । कबमाखन चोरीकरि खायो कबबांधे
सहतारी । दुहतकीन गैयाको चारत बातकही यहभारी । तुमजानति
मोहिंनन्ददुखीना नन्दकहांतेआये । मैपूरा अविगति अविनाशीमाया
सबनिभुलाये । यहसुनि ग्वारिसबै मुसकानी सेसेऊ गुंगा जानत । सुर
प्रियाम जो निदरेउ सबही मात पिता नहिं मानत ५७ ॥ रामधोरठ ॥ तुम
को नन्दमहरि भुहाये । माता गर्भनहीं उपजेतौ कहौ कहांते आये
घरघर माखन नहीं चुरायो ऊखल नहीं बंवाये । हाहाकरि यशुमति
के आगे तुम को हमहिं छुड़ाये । ग्वालन संग संग वृन्दावन तुमनहिं

गाय चराये । सूरप्रयास दशमास गर्भवति जननी नहिं तुमजाये ५८ ॥
 रागटोड़ी ॥ भक्तहंत अवतारधरो । कर्मवर्मके बशमें नाहीं योगयज्ञमनमें
 न करो । दिनगौ हरि सुनौ अवगानि भरि गर्भवचन सुनि दयनजरो ।
 भाव अधीनरहो सबही और न काहूते नेकडरो । ब्रह्माकीट आदिलौ
 व्यापक सबको सुखदुखहिहरो । सूरप्रयासतबकही प्रकटही जहांभाव
 तहंते नटरो ५९ ॥ रागधनायी ॥ कान्ह कहांकी बात चलावत । स्वर्ग पताल
 सककरिराख्यो युवतिनको कहिकहावतावत । जो लायक तौ अपने
 घरकोवनभीतरडरपावत । कहा दान गोरसके ह्वैहै सबै नलोहुदिखावत ।
 रीती जानि देहु घरहमको इतनेहीं सुखपावत । सूरप्रयास माखनदाधि
 लीजै युवतिन कत अरुभावत ६० माखनदाधि कहकरौं तुम्हारो । या
 ब्रजमें तुम बरिाज करतिहौ नहिं जानति मोको घटवारो । मैंमनमें अ-
 नुमानकरौं नितभौ मोकहं तुमबरिाज पमारो । काहेको तुममोहिं क-
 हतिहौ योवनधन ताको करिगारो । कतकैसे घरजानि पायहौ मोको
 यह समुभाय सिधारो । सूरबरिाज तुमकरति नवाई लेखालेहीं आज
 तिहारो ६१ ॥ राग मूने । ॥ सेसीकहौ बरिाजको अटकी । सुखसुख हेरि
 तरुणा मुसकानी नैनसैन दैदे सब मटकी । हमहूँ कहेउ दान दाधि को
 कहमांगत कुंदर कन्हई । अबलौं कहा मौनधरि बैठे तबहीं क्यों न
 सुनाई । हंसि दृग्भानसुता तबबोली कौनबरिाज हमपास । सूरप्रयास
 लेखौ करि लीजै जाहिं सबै ब्रजबास ६२ ॥ राग बिलावल ॥ कहां तुमहीं
 हमको कहा बभूति । लैलैनाम सुनावहु तुमहीं मोसोकहा अरुभूति ।
 तुमजानति सैंहूँ कहुजानति जो जो मालतुम्हारे । डारिदेहु जापर जो
 लागै मारगचली हमारे । इतनेहींको शेरलगायो अब समुझौ यहबाता
 सूरप्रयासके बचन सुनहुरी कहु समुभूतिहौ घात ६३ इनहींधौं बभूहु
 यहलेखो । कहा कहेंगे अवगानि सुनिये चरितनेक किनिदेखो । मन
 मन हर्यभई सबयुवती मुख ये बात चलावति । ज्योंज्यों प्रयास कहत
 मृदुबाराणी त्योंत्यों अति सुखपावति । कोउ काहूके भेद न जानति लोक
 सकुच उर मानत । सूरदास प्रभु अन्तर्यामी अन्तर्गत की जानत ६४
 कहां कान्ह कहां गयहै हमसों । जा कारणा युवतीसब अटकीं सो बू-
 भूतिहैं तुमसों । लौंग दाख नारियर सुपारी कहलादे हमआवैं । गहीं

मिरच पीपरि अजवाइन यहमब बरिाज कहावै । कूट कायफर सेांदि
चिरैता करजीरा कहूँ देखत । आल मजीठ लाखसेंदुर कहूँ सेसेहिवुधि
अवरेखत । बाइबिड़ंग बड़ेरा हरी कहूँ बैलगोन बैपारी । सुरश्याम ल-
रिकाई भूली योवन भये मुरारी ६५ ॥ रागमूहो ॥ कौन बरिाज कहि
मोहिं सुनावति । तुम्हरो गद्य लादो गयन्दपर हींग मिरच पीपरिकह
गावति । अपना बरिाज दुरावतिहो में आगे सब जानति तुवगाहि ।
ज्यों त्यां करि अवलोहि दुराये प्रकटकरौ अबताहि । बहुत मोलकी
बस्तु तुम्हारी कैसेदुरत दुराये । सुनहुँ सूर कछुमोल लेहिंगे कछुयक
दान भराये ६६ ॥ राग टोड़ी ॥ दधिको दानमेदि यहटान्यों । सुनहुँ श्याम
अतिचतुर भयेहो आजुतुमहिं हमजान्यों । जो कछु दूधदही हमदेतीं
लैजाते मिलिगवाल । साऊखोय हाथसेबैठे हंसति कहति ब्रजबाल ।
यहसुनि श्याम सबनि करते दधिमतुकी लई छिंडाय । आपन खाय
मखनिको दीन्हेां अतिमन हर्यबढाय । कछुखायो कछु भूढरकायो
चिहैरही ब्रजनारि । सुरश्याम बनभीतर युवती नयेढङ्ग करत मुरारि ६७
राग र मकली ॥ प्यारी पीतांबर उरभटको । हरितोरी मोतिनकी माला
कछुगर कछुकर लटक्यो । दीख्योकरन श्याम तुमलागे जायगहो कटि
फेंत । आपु श्याम रिसकरि अंकमभरि भईप्रेमकी भेंट । युवतिन धेरि
लियो हरिको तब भरि भरि धरि अँकवारि । सखा परस्पर देखत
टाढे हंसत देत किलकारि । हांकदियो करि नन्ददुहाई आयगये सब
गवाल । सुरश्यामको जानतनाहीं ढीठभईहै बाल ६८ ॥ राग भैरव ॥ हम
भई ढीठ भले तुमगवाल । दीन्हेां जवाब दई को चैहौ देखोरी यह है
जंजाल । बनभीतर युवतिनको रोकत हमखोटी तुम्हरे येहाल । बात
कहनको येऊ आवत बड़ेसुधर्मा धर्महिंपाल । साखिसखाकी ऐसिय
भरिहो तब आवहुगे जीत भुवाल । आयेहैं चढिरिस करिहम पर सूर
हमें जानत बेहाल ६९ ॥ राग बिलावल ॥ जानी बात तुम्हारी सबकी ।
लरिकाई को खयालतजौ अबगई बातवह तबकी । मारग रोकि रहे
यसुनाको तिहि धोखेहो आये । पावहुगे पुनिकियो आपनो युवतिन
हाथ लगाये । जो सुनिहैं यहबात मातपितु तौ हमसेां कह कैहैं । सूर
श्याम मोतिन लरतोरी कौनजवाब धरदैहैं ७० ॥ रागनट ॥ आपन भई

सबै अबभोरी । तुमहरिको पीतांबर भट्ठक्यो उन तुम्हरी मोतिनलर
 तोरी । सांगत दानज्वाब नहिंदेती ऐसी तुम योवनकी जोरी । डरनहिं
 मानत नन्दनदनको करत आनियक भोराभोरी । यकतुम नारि गं-
 वारि भलीहो विभुवनमें इनकी सरिकोरी । सूर सुनहु लैहैं छंझायसब
 सर्वाहि फिरहुगी दौरीदौरी ७१ कहाबडाई इनकी सरमें । नन्दयशोदा
 के प्रतिपाले जानति नीकेकरमें । बसुदेवडारि रातिही भागे आयेहैं
 शुभघरमें । तुम्हरेकहे सबनि डरमान्यो ढंरकिगई अति उरमें । अङ्ग
 अङ्गको दानकहतहैं सुनत उठी उरजरिमें । तब पीतांबर भट्ठक लयो
 में सूरप्रथामको भरिमें ७२ ॥ राग जेरी ॥ याते तुमको ढीठकही । प्रथा-
 माहिं तुमभइ भिरक निहारी येते परपुनि हारिनहीं । तबते हमको
 पारिदेतिहौ कहाकहैं हमबहुतसही । बनिजकरति हमसों भगतिहौ
 हमकोदाहत आपु दही । समुझिपरीअब कहुजिय जान्योताते ह्वैसब
 मौनरही । सूरप्रथाम ब्रजऊपरदानीयह मारगअब तुमनिबही ७३ ॥ राग
 कल्याण ॥ तुम देखत रैहौ हमजैहैं । गोरस बैचि मधुपुरीतेपुनि येही मा-
 रग सेहैं । ऐसेही बैठेसब रैहौ बोलेज्वाब न देहैं । घेरि लैजैहैं यशुमति
 पैहरितबधां कैसी कैहैं । काहेको मोतिनलर तोरी हम पीतांबर लैहैं ।
 सूरप्रथाम सतरात येते परघर बैठेतबरैहैं ७४ मेरेहठक्यों निबहन पैहौ ।
 अबतौ रौकिसवनकोराखो कैसेकरि सबजैहौ । सोहकरतहैं नंदबबाकी
 मैकहिहैंतबजैहैं । जो न मानिहौ कहेउ हमारो तो पाछे पकितैहौ ।
 आवतजात रहतियेही पथमोसों बैरबदैहौ । सुनहु सूरहमसों हठमांडति
 कौन नफाकरि लैहौ ७५ ॥ रागकान्हरी ॥ कौनबात यहकहत कन्हारै ।
 समुझति नहीं कहा तुम सांगत डरपावत कहि नंद दुहाई । डरपायो
 तिनको जो डरपैतुमतेघटि हमनाहीं । मारगछांडिदेहु मनमोहन दधि
 बैचन हमजाहीं । भलीकरी मोतिनलर तोरी यशुमतिते हमलै हैं ।
 सूरदास प्रभुयहै बनति नहिं इतनाधन कह पैहैं ७६ एक हार मोहिं
 कहाबतावति । नखाशाखते अंगअंग निहारहु येसब कहति दुरावति ।
 मोतिनसांग जराय कोटिको करणफूल नकबेशरि । कंठसिरीदुलरी
 तिलरीतर अवर हार यकनोसरि । सुभगहमेलकटावकी अंगिया नगन
 जरितकी देखो । सुद्रघटिकापगनूपुर जेहरि बिछिया सबलेखो । नख

शिखलों अङ्गारसकल अंग एक बतावति हार । कहत मूर लैहीं दान
 सबनिके भावेतहां प्रकार ७७ ॥ रागजेत श्री ॥ याहमें कछु बांटातिहारो ।
 अचरज आय सुनहुरी माईभूषणा देखि न सकत हमारो । कहागढाय
 दियेतुम आपुनकी यथुमतिकीनंद । घाटवरेउतुम यहैजानिके करति
 ठगनिकेछन्द । जितनोपहिरे आजुहम आईघरहैयाते दूनो । मूरप्रयास
 हो बहुतलुभाने बनदेख्यो धों सुनो ७८ ॥ रागगोरी ॥ बाटकहा अबसबै
 हमारो । जबलों दाननहीं हमपायेतबलोंकैसेहोत तुम्हारो । आभूषणा
 की कौन चलावत कंचनघट काहे न उधारो । मदनदूति मोहिं बाततु-
 लाई इनमेंभरेउ महारस भारो । एकअर अंगआभूषणा सबसक और
 यह दान बिचारो । सुनहुंमूर कहाबाट करैहम दानदेहु पुनि जहांसि-
 धारो ७९ ॥ रागकल्याण ॥ प्रयासभये सेसेतुमनागर । येतेदिवस रहेअति
 छौता अबहो भये उजागर । कांधेकामरिहायलकुटिया गायचरावन
 जाते । दही भातकी छाकसंगावत ग्वालनमिलि संगखाते । अब तुम
 कर नौलासीलीन्हें पीतांबरकंठि सोहत । मूरप्रयासअबनवलभयेतुम
 नवल नारि मनमोहत ८० ॥ रागगोरी ॥ दानदेत की भगरो करि है ।
 प्रथमहिं यह जंजाल मिटावहु तापाछे तुम हमहिं निदरि है । कहत
 कहा निदरेसोहो तुम सहज कहति हमबात । आदिबुन्यादि सबै हम
 जानति काहको सतरात । रिस करिकरि मटुकी शिर धरिधरि डगरि
 चलींसब ग्वालिन । मूरप्रयास अंचल गार्हभिरको जैहो कहां बंजारिन
 ८१ ॥ रागकल्याण ॥ अबतुमको मैं जानन देहीं । बहुत अचगरी करीनंद
 सुत जो कछुगयोसो तुमपैलैहीं । गोरस खाय बच्चयोसो डारेउ मटुकी-
 डारी फोरि । दैगारिनारि भक्तभोरी चोलीकेबन्दतोरि । हंसतसखा
 सब तारी दैदें बनमेंरोंकीनारि । सुनत लोग घरके आवहिंगे सकिहो
 नहींसंभारि । घर केलोगनि कहा डरावति कंसहि आनिबुलाई । मूर
 सबै युवतितनके देखत पूजाकरो बनावै ८२ ॥ रागगोरी ॥ जोतुमहींहैसब
 के राजा । तौ बैठौ सिंहासन चढ़िके चमर छत्र शिरभाजा । मोरमु-
 क्तमुरली पीतांबर छोड़हु नटवर साजा । बेरा बिद्यारा शंखकोंपूर-
 तबाजै नौबति बाजा । यहजोसुनै हमहु मुखपार्वहिसंगकरै मुखकाजा ।
 मूरप्रयास सेसीबातें सुनिहम का आवतिलाजा ८३ ॥ रागकल्याण ॥ तु-

म्हरे चित रजधानी नीकी । मेरे दास दास दासिन के तिनको लागति
 फीकी । ऐसीकाहे मोहिं सुनावति तुमको यहैअगाध । कंसहिमारि
 छत्र शिरधारों कहातुच्छ यहसाध । तबहीं लागि यह संगतिहारो जव
 लों जीवतकंस । सुरश्यामके मुख यहसुनितव मनसंन कीन्होसंस ८४
 राग जेतथी ॥ भलीकरी हरिमाखनखायो । यहैमानि लीन्हों अपने शिर
 उबरेउ सो ढरकायो । राखीरही दुराय कमोरी सोलैं प्रकट देखायो ।
 यहतीजो कछुऔर मगर्वेद नमुनत रिसपायो । दान दिये बिन जान
 न पैहो कबमें दानकिंहायो । सुरश्याम हठपरे हमारे कहौन काहल-
 दायो ८५ ॥ रागघनाथी ॥ लैहांदान इननिको तुमसों । मत्तायंद हंसतुम
 सोहै कहादुरावति मोसों । केहरिकनक कलसअमृतकेकैसे दुरेदुराव-
 ति । बिद्रु मयहै बजूके किराका काहिनहमहिं सुनावति । खगकपोत
 कोकिलाकीर खंजनचंचल मृगजानत । मरिाकंचनके चक्रजुरेहैं येते
 पर नहिंमानत । शायकचाप तुरै बनजतिहौ नितप्रति आवहु जाहु ।
 दानदिये बिनु जान न पैहो दियेहि होत निर्वाहु । यह बनिजातिरुय-
 भानसुता तुम हमसों बैसबढावति । सुनहुँ मूर येतेपर कहति हैं हमसों
 कहालदावति ८६ ॥ रागधोरठ ॥ यहसुनि चकृतभई ब्रजबाला । तरुणी
 सब आपुसमें बूझति कहाकहत गोपाला । कहातुरङ्ग कहा गजकेहरि
 कहा हंस सरबस सुनिये । कञ्चनकलश गढाये कबहम देखे धौं यह
 सुनिये । कोकिलकीर कपोत बननिमें मृगाखञ्जन यकसङ्ग । तिनकेदान
 लेतहै हमसों देखहु इनके रङ्ग ॥ चन्दन और सुगन्ध बतावत कहा ह-
 सारे पास । सुरश्याम जो ऐसेदानी देखिलेहु हमपास ८७ ॥ रागगुणकरी ॥
 भूलिरहे तुमकहा कन्हाइ । ताकेनाम लेतहम आगे जे सपनेहं इष्टि
 न आई । हैबर गैबरसिंह हंसखग मृग कहहैं हमलीन्हें । शायकचाप
 तुरेसुनि चकृतचमरन देखेचीन्हें । चन्दन और सुगन्ध कहतहौ कंचन
 कलश बतावहु । सुरश्याम ये सब जो ह्वैहैं तबहिंदान तुमपावहु ८८ ॥
 रागगुर्जरी ॥ इतनसबै तुम्हारेपास । निरखि देखहु अङ्ग अङ्ग चतुराई के
 गात । तुरतही निरवारि डारहु करति कहति अबेर । तुमकहौ कछु
 हमहुँ बोले घरीहि जाउसबेर । कनक तरुपर तसदेखहु सजे नवसतअंग ।
 सूरतुमसों रूपयोवन धरेउ सकहिसंग ८९ ॥ राग बिलावल ॥ प्रकट करौ

सब तुमहिं बताऊँ । चिकुरचौर घुंघटहे बरबर भुव सारंग दिखाऊँ ।
 बाराकटाक्ष नयनखंजन मृगनासा शुक उपमाऊँ । तरवन जय अधर
 बिद्रुम छवि दशन बज्र कनठाऊँ । ग्रीव कपोत कोकिला बाराणी कुच
 घटकनक समाऊँ । थोवन मदरस अमृतभरेहैं छपरङ्ग भलकाऊँ । अंग
 सुगन्ध बासपाटम्बर गनिगनि तुमहिं सुनाऊँ । कटिकेहरि गयन्दगाति
 शोभा हंससहित यकताऊँ । फेरिकिये कैसे निबहतिहौ घरहिगये कहँ
 पाऊँ । सुनहुँसूर यहबनिज तुम्हारे फिरि फिरि तुमहिं सुनाऊँ ६० ॥
 रागनट ॥ सांगत सेसोदान कन्हारै । अब समुझी हमबात तुम्हारो प्रकटी
 है कछुधौं तरारै । यहलालच अँकवारि भतरहौ हारतोरि चोली
 भटकाई । अपनीओर देखिधौं लीजै तापाछे करिये बरिभाई । सखा
 लिये तुमघेरत पुनिपुनि बनभीतर सब नारि पराई । सुरप्रयास सेसो
 न बूझिये इनवातन मद्यार्द्र नशाई ६१ हमपर रिसकरति ब्रजनारि ।
 बात सुखे हमबतावत आपुउठति पुकारि । कबहुँ मर्यादा घटावतक-
 बहुँ देदेगारि । प्रातते भगरो पसारैउ दान देहु नेवारि । बडेघरकी
 बडीबेटी करति दृष्टा भवारि । सुरअपनों अंशपावै जाहुघर भखमारि ।
 ६२ ॥ रागसारंग ॥ तुमहिं उलटिहम परसतराने । जो कछु हमको कहन
 बूझिये सो तुमकहिआगे अतराने । यहचतुराई कहांपढी हरिथोरहि
 दिन अतिभये सयाने । तुमकोलाज हेत की हमको बात परै जो कहुँ
 सहराने । सेसोदान और पै सांगहु जो हमसोकहो छानेछाने । सुरदास
 प्रभुजान देहु अब बहुरि कहौगो कालिहनिहाने ६३ श्यामहिंबोलिलिये
 दिगप्यारी । सेसीबात प्रकट कहुँ कहिये सखनमांझ कतलाजनिमारी ।
 यक सेसेहि उपहास करतसब तापरतुम यहबात पसारी । जातिपांति
 के लोग हँसहिंगे प्रकट जानि हैं श्यामभतारी । लाजनि मारत कतही
 हमको हाहाकरति जाति बलिहारी । सुरश्याम सर्वज्ञ कहावत मात
 पितासों पावतगारी ६४ जबहिं ग्वालि यहबात सुनाई । सखासबनि
 तबहीं लखिलीन्हौं सदाश्यामकी प्रकृति सुभाई । सुनहु ग्वालि यक
 बात सुनावै जो तुम्हरे मनआवै । तबप्रति अङ्गअङ्गकी शोभा देखतहरि
 मुखपावै । तुमनागरी नवल नागर कै दोउमिलि करौबिहार । सुरश्याम
 प्रथमा तुमसकै कहहँसिहै संसार ६५ ॥ रागनट ॥ नन्दसुवन यह बात

कहावत । आपुन योवन दानलेतहैं तापर जोइ सोइ सखन बतावत ।
वे दिन भूलिगये हरितुमको चोरोमाखन खाते । खीजतही भरिनयन
लेतहैं डरडरात भजिजाते । यशुमति तब ऊखल सेां बांजतिहमहिं छो-
डतीजाइ । सूरप्रयास अबबड़े भयेहौ योवनदान सोहाइ ६६ ॥ रागटोड़ी ॥
लरिक्राईकी बात चलावति । कैसीभई कहाहम जाने नेकहु सुधिनहिं
आवति । कबसाखन चोरीकरि खायो कब बांधे धौं मैया । भलेबुरे
को मानपमानत हरयत हृदय कन्हैया । अपनीबात खबरिकरि देखो
न्हात यमुनके तीर । सूरप्रयास तबकहत सबनके कदम चढायेचीर ६७
राग गुजरी ॥ सबैरहीं जलसांभ उधारी । बारबार हाहा करि थाकीं में
तटदिये हँकारी । आई निकसि बसनविनु तरुणी बहुतकरी मनुहारी ।
कैसेहाल भयेतब सबके सो दिन सुरति बिसारी । हमहिं कहात दधि
दूध चुरायो अरु बांधे सहतारी । सूरप्रयासके भेदबचन सुनि हँसी स-
कुचि ब्रजनारी ६८ ॥ राग सारंग ॥ कहाभये अतिढोढ कन्हाइ । ऐसीबात
कहत सकुचै नहिं कहधौं अपनीलाज गँवाई । जाहु चले लोगनि के
आगे भूठीबारागी कहतसुनाइ । तुमहंसि कहत खालसुनिके सब घर
घरकहि हैं जाइ । बहुरि होहुगे दशहि वरयके बातकहतहौ बनैबनाइ ।
सूरप्रयासयशुमति के आगे यहैबात सबकहैं सुनाइ ६९ ॥ राग हमीर ॥
भूठीबात कहा मैंजानों । जो हमको जैसेहि भजैरी ताको तैसेहिमानों ।
तुम तपकियो मोहिंको मनदै मैंहुँ अन्तर्यामी । योगीको योगी ह्वैदरशौं
कामीको ह्वै कामी । हमकोतुम भूठेकरि जानति तौकाहे तपुकीनों ।
सुनहुसूर कतनिदुर भईअब दानजात नहिंदीनों १०० ॥ रागगौरी ॥ दान
सुनत रिसहात कन्हाइ । औरै कहौ सोसब सहिलैहैं जो कछुभली बु-
राइ । सहतारी तुम्हरीके वैगण उरहन देतरिसाइ । तातेतुम दूनेशिर
चढ़िके तेईचाल प्रकटाइ । तुमनीके ढँगसीखे बनमें रोंकत नारिपराइ ।
सूरप्रयास हमको विरसावत खोजत बहिनीमाइ १०१ काहे को तुम
भेरि लगावति । दानदेहु घरजाहु बैचिदधि तुमहीं को यह भावति ।
प्रीतिकरौ मोसोंतुम काहेन बरिाजकरति ब्रजगांड । आवहुजाहु सबै
यहमारग लेत हमारो नांड । लेखाकरौ तुमहिं अपनेमन जोइ देहौ
सोइलौहों । सूरसुभाव चलहुगी जब तुम पुनिधौं मैं कह कैहां १०२ ॥

राग कान्हो ॥ सुनहु आनि हरिके गुणमाई । हमभई बनिजारनि आपुन
 भये दानी कुंवर कन्हाइ । कहा बरिगज ले आई हमधौं मांगत ताका
 दान । कालिहिके ढंगपुनिआयेहैं नहिं जानत कछु आन । तुमखातिनि
 येही मग आवति जानिबूझि गुणइनको । सूरप्रियाम सुन्दर बहुनायक
 सुखदायक सर्वाहनको १०३ ॥ रागटोड़ी ॥ काहेको हमसों हरिलागत ।
 बातहि कछुलेखा सरनाहीं कोजानै कह मांगत । कहा सुभाव परेउ
 अबहींते इनबातन कहपावत । दानदान कहिकहा कहतहैं मन्द मन्द
 सुरगावत । पुरोदेहु बहुत अब कीनों सुनत हँसहिगे लोग । सूरप्रियाम
 मारग जनिरोकहु घरते लीजहुवोग १०४ ॥ राग सूक्ष्म ॥ अबलों यहै करौ
 तुमलेखौ । मोको ऐसीबुद्धि बतावति करकङ्करा दर्पणलेखौ । आपुहि
 चतुरि आपुनी सबकछु हमको कहति गँवार । औरहिलेत फिरौ इनके
 घर टाढे हूँहैं द्वार । घाटछाँड़ि जैहैं तबलेहैं ज्वाबनृपति कहदैहैं ।
 जादिनते यहमारग आवति तादिनते भरिलैंहैं । इनकेबुद्धि दानहम
 पहिरेउ काहेन घरघर जैहैं । सूरप्रियाम तबकहत सखनसों जानकीन
 बिधिपैहौ १०५ ॥ रागटोड़ी ॥ भलीभई नृपमान्यों तुमहूँ । लेख्यो करौ
 जायकं हिपे चलैसङ्ग तुमहमहूँ । अबलों हम यह जानीही घरहीं प-
 हिरेउ तुमदान । कालिह कहैउहे दानलेनको नन्दमहरकी आन । तौ
 तुम कंस पढायेहौ हे अबजानी यह बात । सूरप्रियाम सुनि सुनि यह
 बाणी भौंह मोरि मुसुकात १०६ ॥ राग आसवरी ॥ कहा हँसत मोरतहौ
 भौंह । सोई कहौ मनाहैं कह आई तुमहिं नन्द की सोंह । और सोंह
 तुमहिं गोधनकी सोंहमाय यशुमति की । सोंह तुमहिं बलदाऊकी है
 कहौ आपने चितकी । बारबार तुमभौंह सकारेउ कहा आपहँसि रीभे ।
 सूरप्रियाम हमपर सुखपायो की मनहींमन खोभे १०७ ॥ राग रामकली ॥
 हँसत सखनिसों कहत मैयाकी बाबाकी दाऊजूकी सोंहदिवाई । क-
 हति काहे हँसिहेरेउ काहेभौंह सकारेउ । यह अचरज देखोतुम इनको
 कबहम बदन सरोरेउ । ऐसी बातनि सोंह दिवावत अधिक हँसीमोहिं
 आवति । सूरप्रियाम कहि श्रीदामासों तुमकाहेन समुभावि १०८ ॥
 राग धनाश्री ॥ श्रीदामा गोपिन समुभावत । नंदलालसों कतभगरतिहौ
 काहेको रारिबढावत । हँसतप्रियामके तुमकहँ जान्यों काहेसोंह दि-

बाबै । तरुणानकी यह प्रकृति अनैसी थोरहि बात खिसावै । नान्हे
 मुखसों सोहिदिबावहु वे दानी प्रभु सबके । सूरप्रग्रामको दानदेहुरी मा-
 नहुं ठाढ़े कबके १०६ ॥ राग जैतथी ॥ हम जानति वे कंवर कन्होई । प्रभु
 तुम्हरे मुख आजु सुनी हम तुम जानत प्रभुताई । प्रभुतानहीं होत इन
 बातनि मांगत सहिकेदान । वे ठाकुर तुम सेवक उनके जान्यो सबको
 जाना दधिखायो मोतिन लरतारेउ घृतमाखन सोउलीजै । सूरदास प्रभु
 अपना सदिक्का घरहिजान हम दीजै ११० ॥ राग सोरठ ॥ तुमघरजाहुदान
 को दैहै । जिहिबीरा दै मोहिंपढायो सो मोसों कहलैहै । तुमगृह जाय
 बैठि मुखकरिहौ नृपगारीकोखैहै । अबहीं बोलिपढावै गोरी तासन्मुख-
 को जैहै । जानकहै तुमसों तुमजैहो बिधना कैसीसैहै । सुरमोहिं अटक्यो
 है नृपवर तुमबिन कौन छुडैहै १११ ॥ राग जैतथी ॥ नृपको नाम लेततेही
 मुख ज्यहिमुख निन्दा कालिहकरी । आपुन तौ राजनके राजा आजु
 कहा सुधि मनाहंपरी । भलेप्रग्राम सेसी तुमकीनी कहा कंसका नाम
 लियो । जबहमसोंहिदिवावनलागी तबहिं कंसपर रोखकियो । जाको
 निन्दबन्दि वैसापुनि यहताको बहुते निदरै । सूरसुनी यहबात का-
 लिहकीतबजानी इनकंसडरै ११२ ॥ रागआसावरी ॥ कहाकहति कहुजान
 न पायो । कब कंसहिधौं हमकरजोरे कबवाको हम साथ तवायो ।
 कबहुं सोहि करत देखेमोहिं लेत कबहुं मुखगांउ । निपटहिं गवारि
 गवारिभई तुवबसति हमारेगांउ । कहाकंस कितने लायकको जाको
 मोहिं दिखावति । सुनहुसूर यहिनृपके हमहैं यह तुम्हरे मनआवति
 ११३ ॥ रागटोड़ी ॥ कौन नृपति जाके तुमहैं । ताकोनाम सुनावहु हम
 को यह सुनिकै अति पावतिभौ । यहसंसार भुवन चौदहभरि कसहि
 ते नहीं दूजोअौ । सोनृप कहांरहत सुनिपावे तब ताहीको मानैजो ।
 कहानाम केहिगांउ कहैबनौगी भूदेहसहिं कहत धौंहा । सूरदास प्रभु
 बसतहै ताहीके ह्वै रहियेतो ११४ ॥ रागधनाश्री ॥ मोसों सुनी नृपतिके
 नाम । तिहंभुवन में गमहै जाको नरनारी सबगाम । गणागन्धर्ववश्य-
 वाहीके और नहीं सरिताहि । उनकी अस्तुतिकरैं कहांली में सकु-
 चतहैंजाहि । तिनहींको पढयोहांआयो दियोदानको बीरा । सुररूप
 योवनधन सुनिकै देखत भयो अधीरा ११५ ॥ रागगेरी ॥ पाई जाति

तिहारे नृपकी जैसेतुम तैसेबोऊ हैं । कहां रहे दुरिजाय आललों हम
तुम यकदिन जनमें दोऊ हैं । चीरी अपमारग घटबारेउ इनपदतर के
नहिँकोऊहैं । प्रयासबनी अब जोरी नीकी सुनहुसखी मानत तोऊहैं ।
यह अनुमान कियो ढंगगुणके सोऊ हैं । सुरश्याम जितने रंगकाकृत
युवतीजन मनके जोऊहैं ११६ ठगति फिरति ठगनी तुमनारि । जोइ
आवति सोइसोइ कहिडारति जाति जनावति देदेंगारि । फँसिहारनि
बटपारिनि हमभइ आपुनभये सुधर्माभारि । फंदाफाँसि कमान बान
सां काहुडारत देख्योमारि । जाकेमन जैसेबरते मुखसोवाणी करिदेत
उवारि । सुनहुसूर प्रभुनीकेजान्यो ब्रजयुवती तुमसब बटपारि ११७
अपने नृपकोयहें सुनायो । ब्रजनारी बटपारिनिहैं सबचुगुली आपुहि
जाय लगायो । राधाबडीबात यहसमुझी तुमकोहमपर धौंसिपढायो ।
फँसिहारिनि कैसे तुमजानी हमकहैं प्रकट दिखायो । ब्रजबनिता फँ-
सिहारिनिज्यों सबसह्तारी काहेन गनायो । फाँदिफाँसि धनुषबिय
लाइ सुरश्यामनहिँ हमहिँ बतायो ११८ ॥ र ग भरेव ॥ फंदाफाँसिबताऊं
जो । आगनिधरे छपाइ जहें जो प्रकटकरीं सब बदिहैंतो । प्रथमहिँ
शीश मोहनो डारति ऐसेताहि करत बशहो । बियलाडू दरशावति
लैपुनि देहदशामुधि बिसरतज्यों । तापाके फंदागर डारति अहिभाँ-
तिन करि मारतिहो । सुनहुसूर ऐसेगुण हरहरे मोसां कहा उचारति
हो ११९ ॥ रागमूढो ॥ प्रकट करौ यहबात कन्हाइ । बानकमान कहां
कोहिमारिउ काकेगरहन फाँसिलगाइ । काकेशिर हम मंत्रादियोपहि
कहांहमारे पासदिनाइ । मिलवत कहां कहांकी बातें हँसति कहति
अति राइसकुचाइ । तबमानेसब हमहिँ बतावहु कहौनहीं तो नन्ददो-
हाइ । सुरश्याम तबकहेउ सुनहुगो एकएक करिदेउं बताइ १२० ॥ राग
ढोढी ॥ मोसांकहा दुरावति नारि । नयनसैनदै चितहि चारावति यहै
मंत्रदोना शिरडारि । भौंहधनुष अंजनगुण भृकुटी बाराकटाक्षनि डा-
रतिमारि । तरबनि अवरण फाँसिगर डारति कैसेहु नहीं सकति तस-
वारि । पीनउरज मुखनयन चखावति यह बिय मोदक जातनभारि ।
घाततछुरी प्रेमकीबाणी सुरदास को सके सँभारि १२१ अपना गुण
औरनि शिरडारत । मोहनजोहन जंत्रमंत्रदोना तुमपर सबवारत । तनु

विभङ्ग अङ्गअङ्गमोरनि भौंहवंक करिहेरत । मुरली अधरवजाय मधुर
 मुर तरुणीमन मृगधेरत । नटवरभेय पितांबरकाछे खेलभये तुमडोलत ।
 मुरप्रयास रावर दंसेसे औरनि को टगबोलत १२२ जानीबात मौन-
 धरि रहिये । इहैजानि हमपर चढ़िआये जोभावे सो कहिये । हमनहिं
 बिलग तुम्हारोमान्यो तुमजनि कहु मनआनौ । देखोसक दोइजनि
 भायहु चारिदेख दुइजानौ । दोखलदेति सबै मोहींको उन पठयो मैं
 आयो । मूररूप योवनकी चुगलीनयनन जायसुनायो १२३ ॥ रागबिनावल ॥
 तवरिस करिके मोहिं बुलायो । लोचनदूत तुमहिं यह मारग देखत
 जाय सुनायो । सोमब महलनिते सुनिबाराी योवन महलनिआयो ।
 अपनेकर धीरामोहिं दीन्हें तुरतदान पहिरायो । बेटे हैं सिंहासन
 चढ़िके चतुराई उपजायो । मंतरङ्ग अज्ञाकरि मृततिनको तुमहिं
 लगायो । तिनकोनामअनङ्ग नृपतिवर सुनहुवात मुखपायो । मूरप्रयास
 मुखवात सुनत यह युवतिनतनु विसरायो १२४ ॥ रागमूढा ॥ ब्रजयुवती
 सुनि सगनभई । यहबाराी सुनि नन्दसुवन मुखमन व्याकुलतन सुधिहु
 गई । कोहम कहारहति कहंआई युवतिन के यहशेच परेउ । लागी
 काम नृपतिकी सबसों योवन रूपहिं आनि अरेउ । वसित भईतरुणी
 अनङ्गडर सकुचिरूप योवनहिं दियो । मूरप्रयास अब शरणा तुम्हारे
 हृदय सबनि यह ध्यानकियो १२५ ॥ रागजैतभी ॥ मन यह कहति देह
 विसरायो । यहधन तुमहीं को सँचिराख्यो तिहिलीजो मुखपायो ।
 योवनरूप नहीं तुमलायक तुमकोदेति लजाति । ज्यों बारिधि आगे
 जलकिराका बिनय करति यहिभांति । अमृतसर आगे मधुरंचक म-
 नहिं करति अनुमान । मूरप्रयास शोभाकी सीवांको वाके पटतरको
 आन १२६ अन्तर्यामी जानिलई । मनमेंमिलै सबनि सुखदीन्हें तब
 तनकी कहु मुरतिभई । तबजानों मनमें हमटाढी तनु निरख्यो मन
 सकुचिगई । कहति परस्पर आपुस में सब बाहरही हम काहिरई ।
 प्रयासबिना येचरित करैको यह कहिके तनु सौंपिदई । मूरदासप्रभु
 अन्तर्यामी गुप्तहिं योवन दानलई १२७ ॥ रागरामकली ॥ यहकहि उठेनंद
 कुमार । कहाठगिसी रहीवालापरौकौन विचार । दानको कहुकियो
 लेखो रही जहँतहँशेच । प्रकटकरि हमकोसुनावहुमेदि जोरोदीचि ।

बहुरि तेहिमग जाहु आबहु रातिमांभ सकारि । सूर सेमो कौनजो
 पुनि तुमहिं रोकनिहार १२८ ॥ रागगुजरी ॥ हमहिं औरसें रोकैकौन ।
 रोकनहारे नन्दमहरसुत कान्हनाम जाकोहै तौन । जाकोहैवल काम
 नृपतिको उगतफिरत युवतिनकोजौन । रोनाडारिदेत शिरऊपर आपु
 रहत ठाढो हैमौन । सुनहुप्रियाम ऐसीनबूभिये बानिपरी तुमको यह
 कौन । सूरदासप्रभु कृपाकरहु अबकैसेहिजाहि आपनेभौन १२९ ॥ राग
 सूहे ॥ दानमान घरकोसबजाहु । लेखो मैं कहुकहु जानतहैं तुमसमुझे
 सबहेत निबाहु । पछिलोदेहु निबाहि आजुसब पुनिदीजो जब जानहु
 कालि । अक्षमें भली कहत हैं तुमसें तुमसबमोको मानहुँ ग्वाल ।
 रुन्दावन तुमआवत डरपति में देहंतुमकोपहुँचाया सुनहुसूर त्रिभुवन
 बश जाके सो प्रभु भये युवतिन बश आय १३० ॥ रागटोड़ी ॥ को जानै
 हरिचरित तुम्हारो । अजहूंदान नहीं तुम पायो मनहरिलियो हमारो
 लेखोकरिलीजै मनमोहन दूधदही कछु खाहु । सदासाखन तुम्हरेहि
 मुखलायक लीजैदान उगाहु । तुमखैहौ साखनदधि रुचिसें हम सब
 देखि महासुख पावैं । सूरप्रियाम तुमअब दधिदानी कहि कहि प्रकट
 सुनावैं १३१ ॥ रागगोड़ ॥ कान्ह साखनखाहु हम सब देखैं । सद्यदधि
 दुग्धल्याई औटि अबहिं हमखाहु तुम सुफलकरि जनमलेखैं । सखा
 सबबोलि बैठारि हरिमराडली बनहिं के पातदोना लगाये । देतदधि
 परुसि ब्रजनारि जैवतकान्ह ग्वाल संगबैठि अतिरुचि बढ़ाये । धन्य
 दधि धन्यसाखन धन्य गोपिका धन्यराधावश हैं मुरारी । सूरप्रभुके
 चरितदेखिसुरगगा यकित कृष्णसंग सुखकरतिधोय नारी १३२ ॥ राग
 जेतपरी ॥ साखन दधि हरिखात ग्वालसंग । पातन के दोना सबके कर
 लेपतुखित सुखमेलत रंग । मटुकिनते लैलै परुसति हैं हरयभरी ब्रज-
 नारि । यहसुखातिहंभुवनकहुँ नाहीं दधि जैवत बनवारि । गोपीधन्य
 कहति आपुनिको धन्यदूध दधिमाखन । जाकोकान्ह लेतमुखमेलत
 कियो सर्वांन संभायगा । जो हम साधकरति अपनेमन सोसुखपायो
 नीके । सूरप्रियामपर तनमन वारति आनन्दजिय सबहीके १३३ ॥ राग
 देवगन्धार ॥ गोपिका अति आनन्दभरी । साखनदधि हरिखात प्रेमसें
 निरखति नारिखरी । करलैलै मुखपरस करावति उपमा बड़ीसुभाई ।

मानहुँकंज मिलत शशिकीलिये सुधाकौर करआई । जाकारसाशिव
 ध्यानलगावत शेषसहसमुख गावत । सोइसूर प्रकट ब्रजभीतर राधास-
 नहिँ चुरावत १३४ ॥ रागरामकली ॥ राधासौं माखन हरिमांगत । और-
 निकी मटुकिनकोखायो तुम्हरो कैसे लागत । लैआई दृढभानसुता
 हंसि सदलवनीहै मेरो । लैदीन्हें अपनेकर हरिमुखखात अलप हंसि
 हेरो । सर्वाहनते सीटोदधिहै यहमधुरे कहेउ सुनाई । सूरदास प्रभुमुख
 उपजायो ब्रजललना मनभाई १३५ ॥ रागनट ॥ गोपिनहेत माखनखात ।
 प्रेमकेवश नन्दनन्दन नेकतहीँ अघात । सबैमटुकी भरीवेसेहि प्रेमनहीं
 क्षिरात । भावहृदय जानिमोहन खातमाखनजात । एकनिकरदधिदूध
 लीन्हें एकनि करदधिजात । सूरप्रभुको निरखि गोपी मनहिँ मनहिँ
 सिहात १३६ ॥ रागविहागरी ॥ गोपीकहति धन्यहमनारि । धन्यदूधधनि
 धनिधनिमाखन हमपरुसति जेवतगिरिवारि । धन्यदिवस धनि निशा
 धन्यवह धनिगोकुलप्रकटेवनवारि । धन्यसुकुतपाखिलो धन्यधनिनंद-
 तात यशुमति महतारि । धनिधनिगवाल धन्यटुन्दाबन धन्यभूमि यह
 अति सुखकारि । धन्यदान धनिकान्ह धन्यसग धन्य सूर तृणा द्रुम-
 वनडारि १३७ ॥ रागनट ॥ गरागंधर्व देखिसिहारि । धन्यब्रज ललनानि-
 करते ब्रह्ममाखन खात । नहिनरेख न रूपनहिँ तनु बरगानहिँ अनु-
 हारि । मातपितु दोउनाहिँ जाकेहरत सरतनजारि । आपुकरता आपु
 हरता आपुबिभूवननाथ । आपुसब घटकेविआपी निगम गावतगाथ ।
 अंग प्रतिप्रति रोमजाके कोटि कोटि ब्रह्मांड । कीटब्रह्म पर्यंत जल
 थल इनहिँतेयहमांड । बिच्यबिच्यम्भर सईगवाल संगविलास । सोइप्रभु
 दधिदान मांगत धन्यसूरजदास १३८ ॥ रागरामकली ॥ कंसहेतहरि जनम
 लियो । पापहिपाप धराभइभारी तब हमसबनि पुकारकियो । शेष
 सैन जहँरसा संगमिलि तहँ अकाश भइयकवानी । असुरमारि भुव-
 भार उतारो गोकुल प्रकटैआनी । गर्भदेवकी के तनुधरिहैं यशुमति
 को पयपीहैं । पूरवतप बहुकियो कष्टकरि इनको बहुत श्रमाहैं ।
 यहवारागी कहिसूर सूरनिका अब कृष्णावतार । कहेउ सबनि ब्रज
 जन्म लेहुसंगमेरे करहु बिहार १३९ ॥ रागगौरी ॥ ब्रह्माजिनहिँ यहआ-
 वसुदीन्हैं । तिनतिन संगजनम लियो ब्रजमें सखीसखा करि परगट

कीन्हे। गोपीग्वाल कान्हद्वैनाहीं एकहु नेक न न्यारे। जहाँ जहाँ
 अवतार धरत हरियेनहिं नेकुबिसारे। एकैदेह बहुतकरि राखे गोपी
 ग्वालमुरारि। यहसुखदेखिसूरके प्रभुकोयार्थित असरसंगनारि १४०
 अमरनारि अस्तुति करेंभारी। एकनिमिय ब्रजवासिन को सुखनहिं
 तिहुंभुवन बिचारी। धन्यकान्ह नरवर बपुकाळे धन्यगोपिकानारी।
 यक यकते गुणरूप उक्तागारि श्यामभावतीं प्यारी। परुसति ग्वालि
 ग्वाल सबजैवत मध्यकृष्ण सुखकारी। सूरप्रयाम दधिदानी कहिकहि
 आनन्दघोष कुसारी १४१ ॥ रागविलावल ॥ धन्यकृष्ण अवतारते ब्रह्म-
 लियो। देख न रूप प्रकट दर्शन दियो। जल यलवें कोउ औरनहिं
 बियो। दुष्टनि बधि संतनि सुख दियो। जो प्रभु नरदेही नहिं धरते।
 देवैगर्भ नहीं अवतरते। कंस शोक कैसे उर तरते। माता पिता दुरित
 को हरते। जो प्रभु ब्रजभीतर नहिं आवैं। नन्दयशोदा क्यों सुखपावैं।
 पूरब तप कैसे प्रकटावैं। वेदबचन कैसे ठहरावैं। जो प्रभुवेय धरेंनहिं
 बालक। कैसे मारहिं पतना घालक। अंगुठा पिबत शकट संहारत।
 दगा अकाश शिलापर डारत। जो प्रभु ब्रजमाखन न चुरावैं। क्यों
 गोपिन को आपु जनावैं। भुजा उलूखल नहीं बंधावैं। यमलामोक्ष
 कौनबिधि पावैं। सो प्रभु दधिदानी कहवावैं। गोपिन को मारग अट
 कावैं। करि करि लेखौ दान चुकावैं। आपुन खोभैं उनहिं खि-
 भावैं। ब्रजवासीयो धन्य कहावैं। जहाँ श्याम दधि दान लगावैं।
 सांगिखात आनन्द बढ़ावैं। युवतिनसों कहिकहि परुसावैं। तेईहरि
 नरवरबपुकाळे। मोरमुकुट पीताम्बरआळे। ग्वालसखाटाढे सबपाळे।
 सूरप्रयाम गोपिन सुख साळे १४२ ॥ रागसुखे ॥ यह सहिसा सई पै जानै।
 योगयज्ञ तपु ध्यान न आवत सो दधिदानलेत सुख मानै। खातपरस्पर
 ग्वालनमिलिके मीठो कहिकहि आपुबखानैं। विश्वंभरजगवीश कहा-
 वत ते दधिदोना सांभ अघानैं। आपुहिकरता आपुहिहरता आपु व-
 नावत आपुहिभाने। सेसे सूरदासकेस्वामी तेगोपिन के हाथ बिकाने
 १४३ ॥ रागसमकली ॥ धनिबद्धभारिणी ब्रजनारि। खातलैं दधिदूध सा-
 खन प्रकट जहाँ मुरारि। नहींजानत भेदजाको ब्रह्मअरु त्रिपुरारि।
 शुक्र सनकमुनि सउ न जानत निगमगावतचारि। देखिसुख ब्रजनारि

हरिसंग अमर रहेभुलाय । सुरप्रभु के चरित अगशिात वरशिाकापे
जाय १४४ ॥ रामविलावल ॥ ब्रजबनितायह कहति प्रथामसें साखनदूध
दहेउ असुलयावे । मटुकिनते हमदेहिं खाहुतुम देखि देखि नयननि
मुखपावे । गोरस बहुत हमारे घरघर दानपाछिलो लेहु । खायेजौन
दानआजुहिहको सांगतहैं सबदेहु । सबैलेहु राखहुजनिबाकी पुनिनपा-
यहोसांगे । आजुहिलेहुसबैभरि देहैं कहति तुम्हारेआगे । कहोप्रथाम
अवभाय हमारी मनहोभइ परतीत । जबचैहैं तबसांगि लेहिंगे हमहिं
तुमहिं भईप्रीत । बेंचहुजाय दूधदाध निधरक घाटवार डरनाहिं । सुर
प्रथामबशभई खालिनी जातबनत घरनाहिं १४५ ॥ रागटोड़ी ॥ सुनहु
सखीमोहन कहकीन्हें । सकसकसोंकहति बातयह दानलियोकीमन
हरिलीन्हें । यहती नहींबदी हम उनसें बूझहुधों यहबात । चकतभई
बिचारकरति यहबिसरिगई सुधिगात । ठमचिजात तबहींसबसकुचति
बहुरि मगन होयजाति । सुरप्रथामसें कहौ कहा यह कहत न बनति
लजाति १४६ ॥ रागधनाथी ॥ प्रथाम सुनहु इकबात हमारी । ढीठोबहुत
दईहसतुमसें सेवकशोहरि चूकहमारी मुखहीकही कटुक सबबाशी
हृदय हसारिनाहिं । हंसिहंसिकहतिखिभाबति तुमकोअति आनंदमन
साहिं । दधिमाखनकोदान औरजो जानोंसबैतुम्हारो । सुरप्रथाम तुमको
सबदीनों जीवन प्राणाहमारो १४७ नन्दकुमार कहायह कीन्हें । लू-
भत तुमहिं कहौधों हमसेंवान लियोकैमन हरिलीन्हें । कछु दुराव
नहीं हमराख्यो निकट तुम्हारे आई । तनमनप्राणा समर्पणा कीन्हें
कुलकीकानिगँवाई । जोजासेंअन्तरनहिंराख्येसो क्योंअन्तरराख्योसूर
प्रथाम तुम अन्तरयामी वेदउपनिषद भाख्ये १४८ ॥ रागटोड़ी ॥ सुनहुबात
धुवती इकमेरी । तुमतेदूर होतनाहिं कतहं तुमराख्यो मोहिंधेरी । तुम
कारणा बैकुण्ठतजतहों जनमलेत ब्रजआय । लुन्दावनराधा संगगोपी यह
न बिसारेउगाय । तुम अन्तरअन्तर कहभायति एकप्राणाद्वै देह । क्यों
राधा ब्रजवसे बिसारी सुमिरि पुरातन नेह । अबघरजाहु दानमेंपाये
लेखोकियो न जाई । सुरप्रथाम हंसिहंसि धुवतिनसें ऐसी कहत ब-
नाई १४९ ॥ रागनटनायक ॥ धरतन मनहिं बिनानहिंजात । आपुहंसि
हंसि कहतहौजू चतुरईकी बात । तनहिपरहै मनैराजा जोइकरै सोइ

होय । कहौघर हमजाहिँकैसे मनधरेउ तुमगोय । नयनअवगानिचोर
सुधिबुधि रहे मनहिँ लुभाय । जाहिँ अबहोत नहिँलै घरपरत नाहिँन
पाय । प्रीतिकरि दुबिधा करीकत तुमहिँ जान्योनाथ । सूरके प्रभु
दीजिये मनजाय घरलों साथ १५० ॥ रागकान्हरो ॥ बनभीतर है बास
हमारो । हमकोलैकरितुमहिँ छिपायो कहाकहति यहदेय तुम्हारो ।
अजहं कहौरहैं हरिअनतहि तुमअपनें मनलेहु । अबपाछितानी लोक
लाज डरहमहिँ छाँडितोदेहु । घटतीहोय जाहिते अपनी ताको कीजै
त्याज । धोखेदियो बासमन भीतर अब समुझे भइलाज । मनदीन्हें
मोको तबलीन्हें मनलैहों मैं जाय । सूरप्रयास ऐसीजिनिकहिये हम
यह कहीहुभाय १५१ तुमहिँबिना मनधृग अरु धृगधर । तुमहिँबिना
धृगधृग मातापितु धृगधृग कुलकी कानि लाज डर । धृग सुतपति धृग
जीवन जगको धृग तुम बिन संसार । धृग निशि द्यौसपहर घरी पल
धृग यह कहिये नन्दकुमार । धृग धृग अवरा कथा बिनहरिकी धृग
लोचन बिनरूप । सूरदास प्रभुतुम बिनुघरज्यों बनभीतर केकूप १५२ ॥

अथ बड़ी दानलीला ॥

रागबिलावल

॥ सुनि तमचुरकोशेर द्यौसभयो जागरी । नवसतसाजि
अङ्गारचलीं नवनागरी ॥ ध्रुव ॥ नवसत साजिशृङ्गार अंगपाटम्बरसोहै ।
सकतेसक बिचित्ररूप त्रिभुवन मनमोहै । इन्द्रावृन्दा राधिकाश्यामा
कामानारि । ललिताअरु चन्द्रावलीहो सखिनमध्य सुकुमारि १ कोऊ
दूध कोउदही महेउलै चली सयानी । कोउमटुकी कोउमाटभरी नव-
नीत सयानी । गृह गृहते सबनिकसि चलींजुरीं यमुनतटजाय । सबनि
हर्य मनमें कियोहो उठींप्रयास गुणागाय २ यहसुनि नन्दकुमार सैनदे
सखाबुलाये । मनहरित भयेआपु जाय सबखाल जगाये । सैन बैनदे
सांवरे राखे द्रुमन चढाय । और सखा कछु संग लैहो रोंकिरहे मग
जाय ३ सक सखी अबलोकित बहिँ सब अली बुलाई । यहि बन में
यकवार लूटि हम लईकन्हाई । तनक फेरि फिरिआइये अपने सुख-
हि बिलास । यह भगरो सुनिहोय गो हो गोकुल में उपहास ४ उलटि
चलीं जब सखी तहाँ कोउ जान न पावै । रोंकिरहे सब सखा और
वार्तनिबिरसावै सुबल सखा उटि बोलियो तुम खालिनिहरियोग ।

५१६ सुरसागर दानलीलाबड़ी रागकल्पद्रुम ।

कैसे बात दुशति है हो तुम उनके संयोग ५ किनहुं अङ्ग कोउ बेरा
कोऊबनपत्र बजाये । छाँड़ि छाँड़ि द्रुमडार कूदिधरणी धंसिधाये ।
सखिनमध्य इतराधिका सखनमध्यबलबीर । भगरोठान्यो दानकोहों
कालिन्दीकेतीरई कहतनन्दलाल लाडिले । देनागारि दधिदान कान्ह
ठाढ़े रुन्दावन । औरसखा हरिसंग बच्छचारत असुगोधन । वैबडेनंद
के लाडिले तुमवृथमान दुलारि । दहेउ महेउके कारणी होकतहिब-
ढावाति रारि ७ कहति ब्रजनागरी । माँगे गोरसलेहु कान्ह हमसोले
खाह । सेसे ढोढेरवाल कान्ह बरजत नाहँकाह । यहमग गोरस बेचते
दिनप्रति आवनजान । हमहिँछाप दिखरावहु तुमकापर पहिरेउदान ८
कहत नंदलाडिले । इतेमान सतराति खारिहम जानि न पाये । अन
उत्तरकी खोरिवैकत कहति कठाये । इतनी हमसोकी कहै या रु-
न्दावन बीव । पुहुमिमात ढरकायहों तो मचैदहोकी कीच ९ कहति
ब्रजनागरी । अहोकर न्हैया ढोढआहि तुम अजहँधारे । गायचरावन
जातभये कबते अधिकारे । मात पिता जैसेचले तैसे चलिये आपु । क-
ठिन कंस मथुरावसे होको कहिलेय संतापु १० कहत नंदलाडिले ।
कहै न जाय उताल जहाँभूपाल तिहारो । हाँरुन्दावन चन्दकहाकरि
करै हमरो । शेषसहस फगानाथियो सुरपाति कियोनिरंस । अनिल
पानकियो सौवरे हो केतक बपुरोकंस ११ कहति ब्रजनागरी । जाके
तुम सुकुमारताहि हमनीकेजानै । जोपूँछी मतिभाव आदि अद्यावधि
भाँनै । बातनिबडे न हूजिये सुनहु प्र्यास उतपाति । गर्भसाठि यशुदा
कियो हो तब तुम आये राति १२ कहत नंदलाडिले । अरी खारि में
मत्तकहतिकत बचन अनेरे । कबहारि बालकभये गर्भकब लियेबसेरे ।
असुरभारपुहुसी भयो बिधि कीन्हें ये खयाल । कमल कोश अलि
भोर ये त्योंहीं तुम भोरये गोपाल १३ कहति ब्रजनागरी । तुमभोर
ये ही मंद कहत हैं तुमसों ढोढा । दधि ओदन के काज देहधरि आये
ढोढा । गाँड़ि गाँड़ि कोलहु रावरे भली बनति है प्र्यास । ऐसी बातें
कहि कहि होभुरवत बनमें वाम १४ कहतनंद लाडिले । जौ प्रभुदेहन
धरै दीनखलकोन उधारै । कंसकेश को गेहबिधन को कोटिक टारै ।
कहानिगम कहिध्यावते कह मुनिजन धरते ध्यान । दरश परश बिनु

नाम शुभाको पावैपदनिर्बान १५ कहति ब्रज नागरी । जोदैदरशश्रु
परश नाम शुभाकेलि कन्हारै । तुम निरभय पददेत दियेहैं वेदबताई ।
योग युगति तप ध्यावहीं अनगन दीनदयाल । जलतरंगज्यों मीनगति
हो बंधेकरम के जाल १६ कहत नन्दलाडिले । जटाभस्म तनदहै वृ-
थाकरि कर्म बंधावै । पुहुमि प्रदक्षिणा देहिगुफाबसि मोहिं न पावै ।
तजिअभिमानजे गावहीं गदगद गिरा प्रकाश । तासों मगनहों ग्वा-
लिनी होतेहि घटमेरोवास १७ कहति ब्रजनागरी । जोपैचांडिलैश्याम
करत उपहास घनेरे । हमअहोर गृहनागरी लोकलाजकेजेरे । तादिन
हमभईबावरी दियो कंठतेहार । तबते घरघेरा चलयोहोश्याम तुम्हारे
जार १८ कहत नंदलाडिले । सखा सबनि मिलिकहेउ ग्वारि यकवात
घुनावै । तीतन ज्योतिषभाव रूप उपमाकोपावै । गुप्तप्रीति विधना-
करी रसिक लांवरे योग । यहसंयोग मुनि ग्वालिनी हास्याव हंसैगे
लोग १९ कहत ब्रजनागरी । ऐसीबार्ते कान्ह कहत हम सों काहेते ।
चोरीखाते छांड नयन भरिलेतगाहेते । मुख ऊपर कहअनिये अन
ऊपरकी खोरि । जब यशुमति ऊखल बांधयोहो तबहम दीनों छोरि
२० कहत नंदलाडिले । बालक रूप अजान कहा काहु पहिंचानै ।
अनउत्तरकोउ कहैभली अनभली न मानै । वे दिन समझू ग्वालिनी
साखियमुन कोपानि । सबनि इहानोंसों कियो जबबसनदुरायेआनि ।
२१ कहति ब्रजनागरी । बहुत भयेहो ढीठदेत मुखऊपर गारी । जेहि
छाजै तेहि कहै कहाँकोउ दासि तुम्हारी । तुमसों अब दधि कारने
कौनबढावैरारि । यावन में इतरातहै रोंकिपराई नारि २२ कहत
नंद लाडिले । लियो उपरैनाखीनिदूरिडारनिअटकायो । दयो सखन
दधिबांतिमाटपुहसी ढरकायो । पटपीतांबर सांवरेकरपलासके पात ।
हंसत परस्पर ग्वाल सबहो बिसल बिसल दधिखात २३ कहत ब्रज
नागरी । कान्ह बहेरी देहु मही योवन कोमाते । बसिये एकहि गांव
कानि राखतहैं ताते । तब न कछु बनिआइहै ह्वै है बिरचिनिहारि ।
इनग्वालिनी कोबल देखिहौ जबधरिहैलाडउतारि २४ कहत नंदला-
डिले । गहिअंचल भकभोरितोरि हाराबलिडारी । मटुकीलईउतारि
मोरिभूज कंचुकि प्यारी । गुप्तसैन दै सांवरे कामरि धरीदुराय । वा-

कामरि केकारणो हो अभरणा लियो छिंडाय २५ कहत ब्रजनागरी ।
 भीनी कामरि काज कान्ह सेसी नहिं लीजै । कांचपोत गिरिजाय
 नंदधरगयो न पूजै । बिनहीं लीन्हैआपिसेसा कामरिको तोल । शंख
 मुंदरिका जाय गिरिहो कान्ह तुम्हारो मोल २६ कहत नंदलाडिले ।
 शिव बिरंचि सनकादिआदि तिनहुंनहिंजानी । शेषसहसफरा थकयो
 निगमकीरति न बखानी । तेरीसों मुनि ग्वालिनी जो मेरेमत माहिं ।
 भुवनचतुर्दश देखियेहो वा कामरिकी छाहिं २७ कहत ब्रजनागरी
 जिनहीं इतो प्रताप गायसोकहति चरावै । परदाराके जायआपु कतु
 लज्जा पावै । घरके बाढेराधरेवार्ते कहत बनाय । ग्वालन पैलै खात
 हौहौ जुंठीछाक छिनाय २८ कहत नंदलाडिले । धेनुखपसमदेहु करत
 कूतहलन्यारे । गोकुल गुप्तबिलास जानि कोसकै हमारे । यहवृन्दा-
 बन ग्वालिनी कित कित अमृत बेलि । तिहुंलोकमें जाइये हो मेरी
 रसकी केलि २९ कहति ब्रजनागरी । अबलों कीन्हीं कानि कान्ह
 अबतुमसोंलरिहैं । अधरनयन रसकोप बिरंचि अनतै उरकरिहैं । सों
 आगेको छोहरा जीत्योचाहै मोहिं । काकेबल इतरातहो काढ़ेहोगी
 नखशिखतोहिं ३० कहतनन्द लाडिले । चितैबदनमुमुकात हाथदधि
 पूरणा देना । इत मुन्दरी बिचित्र उतहि घनश्याम सलोना । अति-
 तामस तोहिं ग्वारिनी में सबजानत आदि । खोटी करनी जाहिकी
 हो सोइकरै उपादि ३१ कहतिब्रज नागरी । तोहिं न छांडों कान्ह
 दानतुमको नहिंदेहैं । बिना कहे ब्रजलोग कहाकाहू पतिसेहैं । ला-
 जबही तुमआवहीं बोलत जबसतराय । कतहुं कंस मुनि पावई हो है
 गहत फिरहुगे पाय ३२ कहतनन्द लाडिले । सुनतहंसे चन्दलाल ग्वालि
 जिय तामसमान्यों । सींचतअमृतबैनकोप करयतनहिं जान्यों । कहाँ
 बसतिहै बावरो मुरीपर मुखगंवारि । ब्रजबासी कहजान हीं हो ता-
 मसको ब्योहारि ३३ कहति ब्रजनागरी । जननी जनि परिहरी तात
 कुलधर्म नभायो । गोपराय केगेहपुत्र ह्वै नामधरायो । इतनेते इतना
 कियो खोटीछांछ पिवाय । तुमहिं दोयनहिं लाडिले हो ओछो गुणा
 द्यों जाय ३४ कहत नन्दलाडिले । अविगत अगमअपार आदिनाहीं
 अविनासी । परम पुरुष अवतार है मायाजाकी दासी । तुमहिं मिले-

ओछे भये कहा रही करिमौन । तुमहारिआगे न्यावहै हो द्वैमहं ओछो
 कौन ३५ कहत ब्रज नागरी । हमहिं ओछाई भई जबहिं तुमको प्रति
 पाल्यो । तुमपूरे सब भांति मात पितु संकट घाल्यो । कहा चलत उपरावहे
 अजहं खिसीन गात । कंससोंहदै पूजिजै हो जिनि परकेहै सात ३६
 कहत नन्दलाडिले । कंसकेश सुनिगहैं पुहुमि को भार उतारौ । उ-
 ग्रसे न शिर छत्र चमर अपने कर डारौ मथुरा सुरनि बसायहों असुर करौ
 यमहाथ । दनुज दमन विरदावली हों सांचो विभुवन नाथ ३७ कहति ब्रज
 नागरी । तब न कंस निग्रह्यो पुहुमिको भार उतारेउ । चोरी जाये मातु
 गोद गोकुल पशुधारेउ । अब बहुत बनि आवती दूधदही के मात । जो ऐसे
 बलवन्त हो तो मथुरा काहेन जात ३८ कहत नन्दलाडिले । जो जैहों
 मधुपुरी बहुरि गोकुल नहिं सेहों । यह अपनों परताप नन्द यशुमति-
 हि सुनैहों । बचन लागि मैहं कियो यशुमतिको पयपान । मोहि ग्वाल
 जानि जानहुं हो ग्वाल नि सुनहुं निदाब ३९ कहति ब्रज नागरी ॥ तब
 दधि आगे धरेउ कान्हलीजे जो भावै । खाय जाय मंजार काजसको
 नहिं आवै । हम अनखीया बात को लेत दान को नाउ । सहज भाव नित
 लाडिले हो बसत सकही गाउ ४० कहत नन्दलाडिले ॥ अभरणादियो
 मँगाय कियो गोपिन मन भायो । हिलि मिलि बड़ो बिलास आपु हरि
 साठ उठायो । नंदनन्दन छवि देखि कै गोपिन वारेउ प्राप्त । कुंज कील
 मन में बसी हो अति गाई सूरसुजान ४१ ॥ राग बिलावल ॥ जबहिं कान्हयह
 बात सुनाई । ब्रज युवती अति गाई सुरभाई । कंस संहारण मथुरा जैहों ।
 बहुरोफिरि ब्रजको नहिं सेहों । देव किम भवासहों लीन्हों । तुमको गो-
 कुल दर्शन दीन्हें । नन्दयशोदा अति तप कीन्हें । मोसों पुत्र मांगित ब-
 लीन्हें । मोसों दूजे और न कोई । हरता करता मैहीं सोई । तुमसों
 सुतमें पान कराऊं । यह तुमसेमैं मांगे पाऊं । मोसों सुत तुमको मै दै
 हों । मथुरा जन्म गोकुलहि सेहों । नन्दयशोदा बदन बँधाये । ताका-
 रण देही धरि आये । यह बानी सुनि ग्वाल भुरानी । मीन भयो मानों
 बिनु पानी । यहै कथा तब गार्ग सुनाई । सोई आपु कहतरी माई । नर देही
 करि मोहि न जानो । ब्रह्म रूप करि मोको मानो । योइ शवर्य मिलै सुख
 करिहों । मथुरा जाय देव उद्धरिहों । केश गहों अरि कंस पकारों । असुर

कङ्कोरियमुनमहं डारों । रंगभूमिकरि मल्लनिमारों । प्रबलकुबलियादंत
 उखारों । सुनहुनारिहरि मुखकीबानी । यहमुनिमुनि तरुणी अकुला-
 नी । तनमनधन इनपर सबवारहुं । योबनदान देहुं रिस पारहुं । थोड़श
 बरस गये धों जैहैं । ब्रजते जाय मधुपुरी रहैं । राजाउग्रसेन को करि
 हैं । कनकदण्डआपुन करधारिहैं । मातपिताबसुदेव देवकी । यशुमति
 धाय कहतहैं इनकी । अब तिनके बंधन मोचहिंगे । दरश बिना पुनि
 हम लोचहिंगे । मथुरानारिनको मुखदेहैं । तबघटप्राणाकहो बरुरहैं ।
 कहत सखीयहबातसयानी । जानतिनहिं तुमकछुअयानी । योबनदान
 लेहिंगेतुमसों । चतुराई मिलवतहैं हमसों । इनकेगांस कहारीजानों ।
 इनकी कही सकजिनि मानों । जोचाहै सो दीजैइनकी । ज्यों बिन
 देखे रहत न जिनको । आपुआपु यहबात बिचारों । नारि नारि मन
 धीरज धारों । आगेधरौ दूधदधिमाखन । प्रथमहिं यहकीजैसंभाखन ।
 बड़ेचतुर तुम कुंवर कन्हाई । तरुणि सबनि कहियहै सुनाई । जानी
 बाततुम्हारे मनकी । दूरिनकीजै यहरिस तनकी । सबनि धख्यो दधि
 माखन आगे । लेहुसबैतुमबिनहींमांगे । तुम रिस करत देखिसुखपावें ।
 याते बारम्बार खिभावें । तन योबन धन अर्पणा कीन्हें । मतदैमन
 हरिको मुखदीन्हें । सुभग पात दोनालै हाथनि । बैठेसखा प्रथामयक
 साथनि । मोहन खातखवावतनारी । मांगिलेत दधिगिरिवर धारी ।
 आपुहि धन्यकहत ब्रजनारी । रुचिकरि मांगिखात बनवारी । और
 खाहु मोहनदधिदानी । यह कहि कहितरुणी मुमुकानी । सुखदीन्हें
 हरि अंतर्थासी । ब्रजयुवतिन के पूरणा कामी । देखतरूप थकित ब्रज
 नारी । देहगेहकीमुधिहु बिसारी । सूरप्रयाम सबकोहितकारी । कहेंउ
 जाहुधर घोयकुमारी १५४ ॥ रागरामकली ॥ भुवती ब्रजधरजानविचारति ।
 कबहुं मटुकी लेतशीशपर कबहुं धरणि फिरिधारति । देखतप्रयाम
 सखासब देखत चितैरहै ब्रजनारि । रीती मटुकिन में कछु नाहीं स-
 कुची मनहिं विधारि । तब हँसिबोले प्रयाम जाहुधर तुमको भई अ-
 बार । सकुचति दान पाडिले को तुममें करिहैं निरवार । यह कहि
 कै हरि जबहिं सिधारे युवतिनदान मनाई । सूरप्रयाम नागर नारिनके
 चितलैगये चुराई १५५ ॥

अथ दानलाळा का प्रस्ताव ॥

रागपल्लविया ॥

रीतो मटुकी शीशलै चलीं घोयकुमारी । एक सक
की सुधिनहीं को कैसेनारी । बनहींमें बैचतिफिरै घरकीसुधि डारी ।
लोकवेद कुलकानिकी मध्यादा टारी । लेहुलेहुदधि कहतहैं बनशोर
पसारी । द्रुमसब थिरकरि जानहीं तिनको बैशारी । दूधदहेउ नहिं
लेहुरी कहि कहि पचिहारी । कहतसूर घरको नहीं कहां गई दई-
मारी १ ॥ रागटोडी ॥ याघरमें कोउहैकी नाहीं । बारबार बूझति ठुसन
को गोरसलै हमजाहीं । आपुनि कहति लेहु नाहीं दधि और द्रुमनि
तरजाति । मिलत परस्पर बिबश देखि लेहि कहति कहा इतराति ।
ताको कहति आपुसुधि नाहिंन सोपुनि जानतिनाहिं । सूरश्याम रस
भरी गोपिका बनमें जोवति ताहि २ ॥ रागबिलावल ॥ रीती मटुकीशीश-
धरै । बनकीघरकी सुरति न काहू लेहुदही यह कहतिफिरै । कबहुं क
जाति कुंजभीतरको तहाँ श्यामकी सुरतिकरै । चौंकिपरति कछु तब
सुधिआवति जहाँ तहाँसखि सुनतरै । तबग्रह कहति कहांमें इनसों
भ्रमि भ्रमि बनमें ठुथामरै । सूरश्याम के रसपुनि छाकति दैसैह ढंग
बहुरि न रै ३ ॥ रागनट ॥ तरुगो श्यामरस मतवारि । प्रथम यौवनरस
चढाये अतिहिभई कुमारि । दूध नहिं दधि नहीं साखन नहीं रीती
माट । महारस अङ्ग अङ्ग पूरा कहांघर कहँबाट । मात पित गुरुजन
कहांको कौनपतिको नारि । सूरप्रभुके प्रेमपूरा छकिरहीं ब्रजना-
रि ४ ॥ राग रामकली ॥ गोरस लेहुरी कोउआय । द्रुमन सों यह कहति
डोलति कौमलेहि बुलाय । कबहुं वंशीबट निकटजुरि होतटाढी धाय ।
लेहु गोरसदान मोहन कहां रहे छिपाय । डरन तुम्हरे जाति नाहिंन
लेत दहगि छँडाय । माँगिलीजै दानअपनो कहतिहैं समुभाय । आइ
हौ पुनि रिसकरत हरिदहेउ देतबहाय । एक सकहिबात बूझतिकहां
गये कन्हाय । भईरस उन्मत्तगोपी तनकिसुधि बिसराय । सूरप्रभु के
रङ्गराची जियगयो भरमाय ५ ॥ रागबेलथी ॥ बैठिगईमटुकी सबधरिकै ।
यहजानत अबहीं हैं आवत खालसखा संग हरिकै । आँचरसों दधि
माट दुरावति दुखिगई तहँ परिकै । सबनि मटुकिया रीतीदेखी तरु-
गीगई भभरिकै । कहिकहि उठीं जहाँतहँ सबमिलि गोरसगयो कहूँ

५२२ सुरसागर दानलीलाबड़ी रागकल्पद्रुम ।

ढरिक्के । कोउकोउ कहति श्याम ढरकाये जानदेहुरी जरिक्के । यहि मारग कोऊजनि आवहु रिसकरि चलीं डगरिक्के । सुरसुरतितनकी कछुआई उतरतकाम लहरिक्के ६ ॥ रागनट ॥ चक्रतभई धोयकुमारि । हम बहीं घरगई तबतेरहीं बिचारि बिचारि । घरहि ते हमप्रातआई सकुचि बदन निहारि । कछु हँसति कछु डरति गुरुजन देतहैं गारि । जोभई सोभई हमकहँ रहीं इतनीनारि । सखा सँगमिलि खायदधि तबहीं गये बनवारि । यहांलौंकी बात जानत यह अचम्भव भारि । यहै जानति सुरकेप्रभु गयेशिर कछु डारि ७ ॥ रागधनाधी ॥ श्यामबिना यह कौनकरै । चितवतही मोहनी लगावत नेकहँसनपर मनहि हरे । रोंकिरह्यो प्रातहि गहि मारग लेखो करि दधिदान लियो । तनकी सुधि तबहींते भूली कछु पढ़िक्के शिरनाथ दियो । मनके करत मनो-रथ परगा चतुर नारि यहि भाँति कहै । सुरश्याम मनहरो हमारो तेहिबिनु कहि कैसे निबहै ८ मनहरिसें तन घरहि चलावत । ज्यों गजसत्त जाल अंकुशकर घर गुरुजन सुधि आवत । हरि रसरूप यहै मदआवत डरडारेउ जुमहावत । गेहनेह बन्धन पगतेरेउ प्रेम सरोवर धावत । रोमावली शुण्डिबिच कुचमनों कुम्भस्थल छविपावत । सुर श्याम केहरि सुनिके योबन गजदाप न पावत ९ युवति गई घर नेकु न भावत । मात पिता गुरुजन पूछत कछु औरै और बतावत । गारी देत सुनतनहिं नेकहु अवगाशब्द हरिपूरे । नयन नहीं देखत काहूको जोकहुं होहि अधूरे । वचन कहति हरिहीके गुणको उतहीबचन चलावै । सुरश्याम बिनु और न भावै कोउ कितनो समुभावै १० ॥ राग गेरठ ॥ लोक सकुच कुलकानि तजी । जैसे नदी सिंधुको धावै वैसेहि श्यामभजी । मातपिता बहुवास दिखायो नेकु न डरीलजी । हरिमानि बैठेनहिं लागत बहुते बुद्धिसजी । मानत नहीं लोक मर्यादा हरिके रङ्ग मजी । सुरश्यामको मिली खालिनी चूनहरद ज्यों रङ्गरजी ११ बारबार जननी समुभावति । काहेको तुम जहँ तहँ डोलति हमको अ-तिहि लजावति । अपने कुलकी खबरि करोधों सकुचनहीं जिय पा-वति । दधिबैचहु घरसूधे आवहु काहे भोर लमावति । यहसुनिके सन हर्ष बढ़ावति तबयकबुद्धि बनावति । सुनमैया दधिपलाट लदायो तेहि

डरवात न आवति । जानदेहु कितने दविडारेउ ऐसे तब न सुनावति ।
 सुनहुँसूर यहवात डरानी माताउरलै लावति १२ ॥ रागमार्ग ॥ नेक नहीं
 मनघरसों लागत । पितामातु गुरुजन परमोधत नीके वचन बागसस
 लागत । तिनको धृगधृग कहत मतहिँमन इनको बने भलेही त्यागत ।
 प्रथामबिमुख नरनारि वृथासब कैसेमन इनसों अनुरागत । इनको व-
 दन प्रात दरशोंजनि बारबार बिधिसों यहमाँगत । यहतन सूरप्रथाम
 को अप्रिया नेकटरत नहिँ सोवत जागत १३ ॥ रागधनाम्नी ॥ पलक ओट
 नहिँ होतकन्हाई । घरगुरुजन बहुतीबिधि वासत लाजकरावति लाज
 न आई । नैन जहाँ दरशन हरि अटके वैन थके मुनि वचन मुहाई ।
 रसना औरकछु नहिँ भायति प्रथाम प्रथाम रटयहै लगाई । चितचं-
 चल संगहि सँग डोलत लोकलाज मर्याद मिटाई । मन हरिलियो
 सूरप्रभु तबहीं ता वपुरेकी कहावसाई १४ ॥ रागविलावल ॥ चलीप्रातही
 गोपिका मटुकिनलै गोरस । नैन अबगा मन चित बुद्धि ये नहिँ काह
 बश । तनुलीन्हें डोलत फिरै रसना अटक्यो यश । गोरसनाम न आ-
 वही को लेहै हरिरस । जीवपरेउ या ख्यालमें असुगयो दिशा दस ।
 बूझैजाय खग वृन्दइयों पियछबि लटकनि लस । छाँड़िहु दिये उड़त
 नहीं कीन्हे पावतस । सूरदास प्रभु भौंहकी मटकनि फाँसी गस १५
 रागकान्हो ॥ दविबेचन ब्रजगालिनफिरै । गोरसलेन बुलावत कोऊताकी
 सुधि नेकहु न करै । उनकी बात सुनत नहिँ अबगान कहति कहा ये
 घरनिजै । दूधदही यहांलेत न कोऊ प्रातहिते शिरलियेरै । बोलि
 उठति पुनिलेहीं गोपालहि थर थर लोकलाज निदरै । सूरप्रथाम की
 रूप महारस जाकेवल काह न डरै १६ गोरसको निजनाम भुलायो ।
 लेहुलेहु कोऊ गोपालहि गलिन गलिन यहशोर लगायो । कोउकहै
 प्रथाम कथाहैं काहूँ आजु दरश नाहीँ हम पायो । जाके सुधि तनकी
 कछु आवति लेहुदही कहि तिन्हहिँ सुनायो । यहकहि उठति दान
 माँगत हरि काहूँभई कि तुमहिँ चलायो । सुनहुँसूर तरुणी योवनमद
 तापर प्रथाम महारस खायो १७ भालिफिरति बेहालहि सों । बधि
 मटुकी शिरलीन्हें डोलति रसना तटगोपालहिसों । गेह नेह सुधि देह
 विपरेउ हरि ख्यालिहिसों । प्रथाम धाम निज वास रच्यो

मन रहित भई जंजालहि सों । छलकत तक्रउफनि अङ्ग आवत नहिं
 जानति रोहि कालहि सों । सूरदास चिततौर नहीं कहूँ मन लाख्यो नंद-
 लालहि सों १८ ॥ रागमलार ॥ कोऊ माईलेहैरी गोपालहि । दधिकोनाम
 प्रयाससुन्दर रस बिसरिगयो ब्रजनालहि । मटुकी शीश फिरति ब्रज
 बीथिन बोलत बचन रसालहि । उफनत तक्रचहूँदिशि चितवति चित
 लाख्यो नंदलालहि । हँसति रिसति बुलावति बरजति देखहु उलही
 चालहि । सूरप्रयास बिनु अवर न भावत या बिरहनि बेहालहि १९
 रागमुवरा ॥ छोटी मटुकीया मधुरलै चलीरी गोरसबेचन रसाल । हर-
 बराय उठिआइ प्रातसे विथूरी अलक अस बसन मरगजे तैसिय सो-
 हति कुभिलानी साल । जेह नेह सुधि नेक न आवति मोहिरही तजि
 भुवन जंजाल । औरै कहति और कहि आवत मनमोहन के परी सु-
 खयाल । जोइ जोइ बूझतिहैरी कहाहै यामें कहति फिरति कोउलेहु
 गोपाल । तन मनकी सब सुरत भुलानी रतना लगी कृष्णारमाल । सूर
 दासप्रभुके रसबशभई चतुर खालिनी तनमन गतिमति भईबेहाल २०
 रागकान्हो ॥ दधि मटुकी शिर लिये खालिनी कान्ह कान्ह करती
 डोलैरी । बिजय भई तनु न स्महारेरी गोरस सुधि बिसरिगई आपु
 बिकानी बिनुमोलैरी । जोइजोइ पूछत यामेंहैरी कहा लेहुलेहु करति
 फिरति टोल टोलैरी । सूरदासप्रभुके रसबशभई खालिन बिरहाबश
 तनुगति भईलैरी २१ ॥ रागधनार्थी ॥ बँचतही दधि ब्रजकी खोरी । शिर
 को भारसुरत कहिआवत प्रयासप्रयास टेरत भइभोरी । घरघरफिरति
 गोपालहि बँचति मानभई सबखालि किशोरी । सुन्दर बदन निहा-
 रन कारन अन्तरलगी सुरतिकी डोरी । ठाढ़ी रहति बिर्याकि मारग
 में माँझहाट मटुकी शिरफोरी । सूरदासप्रभु रसिक शिरोमणि चित
 चिन्तामणि लियो अजोरी २२ ॥ रागविलावल ॥ नरनारी सब बूझति
 आई दहीमही मटुकी शिरलीन्हे बोलतिहौ गोपाल सुनाई । हेमहिं
 कहौ तुम करत कहायंह फिरतिहै प्रातिहते हौआई । गृहदारा कहूँ
 हैकी नाहीं पिता सातु पति बंधु न भाई । इतते उत उततेइत आवति
 विधि मर्यादा सबैसटाई । सूरप्रयास मनहरेउ तुम्हारो हम जानी यह
 बात बनाई २३ ॥ रागधनार्थी ॥ कहति नन्दधर मोहिं बतावहु । डारहि

नाभवातयकूभति बारबारकहे कहां देखावहु । येहीगांव किधोंओरै
 कहुं जहां महरकोगेहु । बहुतदूरतेमें आईहो कहिकाहित यशलेहु ।
 अतिहीसंप्रलभई रवालीनी छारेहीपरठाढी । मुरदास स्वामीसोंअरकी
 प्रीतिप्रकट अतिबाढी २४ ॥ राग गमकला । चर्चरी ॥ रवालीनी नन्दद्वारे
 नन्दसोह बूझै । इतहीतेजातिउतउतहीते फिरतिइत निकटहैजातिनाहं
 नेकमझै । भई बेहाल ब्रजबाल नंदलालहित अर्पितनमन सबै तिनहिं
 कीन्हों । लोकलज्जा तजी लाजदेखत लजी प्रयासकोभजी कछुडर न
 कीन्हों । भूलिगया दधिनाम कहति लेहोप्रयास नहींसुविधामकहुंहे
 कि नाही । मूरप्रभुकोमिलीभेटि भलीअनभली भेटि चून हरदीरंगदेइ
 छाहीं २५ तब यकसावी प्रीतमकहति । प्रेम ऐसे प्रकट कीन्हों धीर
 काहेनगहति । ब्रजधरन उपहामजहँतहँ समुक्ति मनकिनरहति । बात
 मेरी सुनतनाहिंन कहति जिन्दा सहति । मातृपितु गुरुजननि जान्यों
 भलीखोई नहति । मूरप्रभुको ध्यानचितधरि अतिहिकाहेनहति २६
 राग धनार्था ॥ आपुकहावति बडीसयानी । अबतकहति सबनि सोंहँसि
 हँसिअबत प्रकटहिभईदिबानी । कहांगईचतुराईतेरी अतिहीकाहेभई
 अयानी । गुप्तप्रीतिप्रकटतेकीन्हों सुनतकछू धरधरकीबानी । सकहि
 बेर तजीमर्यादा मातृपिता गुरुजनहिंभुलानी । सुनहुमूर सेसीनबुभुक्षे
 श्रीराधेरे मटुकीविततानी २७ ॥ राग नट ॥ सुनुरीरवालीनि मुरधगवारि ।
 प्रयाससोंहित भलेकीन्हों अबकोसके उबारि । कृष्णधनकह प्रकटकी
 जै दियोताहिउधारि । अजहुंकाहेन समुक्तिदेखत कछोसुनिरीनारि ।
 ओछिबुविनै करीमजनी लाजदीन्होंडारि । लाजआवत मोहिंसुनिरी
 तोहिंकहति गँवारि । ज्वाबनाहिंन आवईमुख कहतिहोंजु पुकारि ।
 मूरप्रभुको पाइकैयह ज्ञानहृदय विचारि २८ ॥ राग कान्हरो ॥ कछुकैहे
 की सोनिहं रैहे । कहाकहतहों तोसों तबते ताको ज्वाब कछू मोहिं
 दैहे । सुनिहँमातृपिता लोगनिमुख यहलीलाउनसबनिजनैहे । प्रातहि
 ते आईधधिबेचन धरहिआजु जैहे किनजैहे । मेरोकहेउ मानिहैनाहीं
 सेसेहिधमिभ्रमि धौसबितैहे । मुखतोखोलि सुनों तेरीबानी भलीबुरी
 कैसीधों कैहे । गुप्तप्रीति काहेनकरि हरि सों प्रकटकिये कछुनफाव-
 डैहे । मूरप्रयाससों प्रीति निरंतर लाजकिये अन्तरकछुहैहे २९ कहा

५२६ सुरसागर दानलीलाबड़ी रागकल्पद्रुम ।

कहति तू मोहिरीमाई । नन्दनन्दन मनहरिलिये मेरो तब ते मोको कहु
न सोहाई । अबलों नहिं जानत मैं कोहै कब ते तू मेरो दिग आई । कहां
रोह कहँ मात पिता हैं कहाँ मजन गुरुजन कहँ भाई । कैसी लाज कानि
है कैसी कहा कहति है हरिसहाई । अब तो सूर भजो नन्दनालहि की
लघुता की होय बड़ाई ३० ॥ राग धनाश्री ॥ बार बार मोहिं कहा सुनाव-
ति । नेकहुं नाहिं ठरति हरि दयते बहुत भांति मन को समुझावति । दूयगा
कहा देति मोहिं सजनी तू तो बड़ी सुजान । अपनी सी मैं बहुतै कीन्हि र-
हत न तेरी आन । लोचन और न देखत काहू और सुनत नहिं कान ।
सूरश्यामको बेगिमिलावहु कहतरहत घटपान ३१ ॥ राग नट ॥ मेरे कहै
मैं कोउ नाहिं । कहा कहँ कहु कहिनहिं आवै नेकहु नाहिं डराहिं ।
नयनये हरि दरशलोभे अवरागदरसाल । प्रथमहीं मन गयो तन तजि
तब भई बेहाल । इन्द्रियनि पर भूपमन है सब निलिये बुलाय । सूरप्रभु को
मिले सब ये मोहिं कहि गये वाय ३२ ॥ राग गौरी ॥ कहा करौं मनहीं थिर
नाहीं । तू मोसें यह कहत भलीरी अपनोचित मोहिं देति नहीं । नयन
रूप अटके नहिं आवत अवगारहे मुनि बाततहीं । इन्द्रिवायमिलीं सब
उनके तनमें जीवरहे उ संगहीं । मेरे हाथ नहीं ये कोऊ घटलीन्हें यकरही
महीं । सूरश्याम संगते कहुं तारत आनि देहु जो मोहितहीं ३३ ॥ राग सारंग
बिकानी हरिमुख की सुसकानी । परवश भई फिरत संग निशि दिन
सहज परी यह बानी । नयन नानि रखि बसीठी कीन्हें मन मिलयो पय
पानी । गहिरति नाथ लाज निजपुरते हरि को सौं पी आनी । मुनि सखि
सुमुख नन्दनन्दन की दासी सब जग जानी । जोइ जोइ कहत करत सोई
कृत आयसु साथे मानी । गई जाति अभिमान मोह मद पति परिजन
पहिंचानी । सूरसिन्धु सरिता मिलि जैसे मदसाबुंद हिरानी ३४ ॥ राग गौरी ॥
अब तो प्रकट भई जग जानी । वामोहन से प्रीति निरंतर क्योंबर है तो
छानी । कंहा करौं सुन्दर मूरति इन नयन न मां भस मानी । निकसत नहीं
बहुत पचिहारी रोस रोम अरु भानी । अब कैसे निवारि जाति है मिले
दुख ज्यों पानी । सूरदास प्रभु अन्तर्यामी उर अन्तर की जानी ३५ ॥ कहा
करै सो कोऊ मेरो । हौं अपने पतिव्रताहि न ठरि हौं जग उपहास करै बहु
तेरो । कोउ किनिले पाछे मुख मोरै कोउ कहै अवरा मुनायन तेरो । हौं

मतिकुशल नाहिनेकाचो हरिसँगकांडि फिरों भवफेरो । अबतों जिय
 येमिय बनिआई प्रयासवाममें करोबमेरो । तिहिरङ्ग मूररहेउ मिलि
 कैसन होय न पुवेतअरुता फिरि पेरो ३६ ॥ रागधनार्था ॥ माईरी गोविंदा
 सों प्रीति करत तबहीं काहेन हटकीरी । यह तौ अब बात फेली भई
 कुंजबटकीरी । घरघर नितयहै घेरबागी घट घटकी । में तौ यह सबै
 मही लोकलाज पटकी । मदके हस्ती समान फिरत प्रेम लटकी । खे-
 लतमें चूकिजात होत कलानटकी । जल रजु मिलिगाँडि परी रमना
 हरिरटकी । छोरेते नहीं छुटति कयुक्बार भटकी । भेटे क्योंहीं न
 मिततिछाप परीटकी । सुरदास प्रभुकीछवि हृदयमाँझ अटकी ३७
 राग आसावरी ॥ में अपनो मनहरिसों जोरेउ । हरिमोंजोरि सबनिसों तो-
 रेउ । नाचनचौ तब घंघट छोरेउ । आगे पाछे नीकेहेरेउ । लोकलाज
 सब फटक पछोरेउ । माँझबाट मटुकीशिर फोरेउ । कहिकहिकामों
 करति निहारेउ । कहाभयो कोऊमुख मोरेउ । सुरदाम प्रभुसों चित
 जोरेउ । लोकवन्द तिनकासों तोरेउ ३८ सखीरी प्रयाससों मनमान्यों ।
 नीकेकरि चित कमलनयनसों घालि सकटोसान्यो । लोकलाज उप-
 हास न मान्यो न्योति आपनेहिँ आन्यो । यागोविन्द नन्दके कारणा
 बैर सबनसों टान्यो । अबक्यों जाति निबेरिसखीरी मिल्यो एक पय
 पान्यो । सुरदासप्रभु मेरेजीवनहैं पहिलेहिँ पहिँचान्यो ३९ नन्दलाल
 सों मेरो मनमान्यो कहाकरैगो कोईरी । मैंतो चरणाकमल लपटानी
 जोभावै सो होईरी । बापरिसाय माय घरमार हूँसे बिराने लोईरी ।
 अब तो प्रयासहिँ सों रतिबाढी बिधनारचेउ संजोईरी । जातिमहति
 पतिजाइ न मेरी अरुपरलोक नशाईरी । गिरिधरवर मैं नेक न छाड्यो
 मिलौं निशान बजाईरी । बहुरि कबहिँ यहतनु धरि येहो कहँ पुनि
 श्रीबनवारीरी । सुरदास स्वामीकेऊपर यहतनुडारों वारीरी ४० ॥ राग
 आराग ॥ करनदे लोगनको उपहास । मन क्रम बचन नन्दनन्दनको नेक
 न छाड्योपास । सब मधुवनको लोगचिकनिथा मेरेभाये घास । अबढी
 यहै बसीरी माई नहिँ मानों सुखास । कैसे रहेउ परैरी सजनी एक
 गाँवको बास । प्रयासमिलनकी प्रीति सखीरी जानत सुरजदास ४१
 राग रामकली ॥ एकगाँवको बास धीरजकैसेके धरौं । लोचन मधुप अटक

५२८ सुरमागर दानलीलावडी रागकल्पद्रुम ।

नहिँमानत यद्याप यतनकरौं । वेयेहीनग नितप्रति आवतहैं हो दखि
निकरौं । पुलकित रोमरोम गदगद सुरआनंद उमँगभरौं । पलअन्तर
चलिजात कलपजर धिरहा अनल जरौं । मुरमकुचि कुलकानि कहां
लगि आरज पयहि डरौं ४२ मेरो मन हरि चित्तबनि असुभानो ।
फेरत कमलद्वार छैनिकमे करत शिंगार भुलानो । अरुआ अधर द-
शाननि द्युतिराजत मोतनसुरि मुखकानो । उदधि तनयसुत पांतिकमल
के वन्दन भुरवे सानो । गहिरस मगन रहति निशि बामर हरि तजि
ओरन जानो । सुरदास चितभङ्ग होत क्यों जो डयहिखप ससानो ४३
हांसंग साँवरेके जेहैं । होनीहोय होयसो अकहाँ यश अपयश काह
न डेरहैं । कहा रिसायकरै कोउमेरो कछु जो कहै प्राणतिहि देहैं ।
देहों त्यागि राखिहों यह व्रतहरि रतिबीजबहुरि कब बैहैं । कायह
सुरअजिर अबनी तनुतजि अकाश पियभौन समैहैं । कायह ब्रजबासी
क्रीडाजल भजि नन्दनन्दन सबसुख लैहैं ४४ ॥ रागधनारी ॥ तू मेरे हित
कहाँत सहीरी । यहमोकोसुधि भलीदिवाई तनबिसरे में बहुत बहीरी ।
जबते दानलियो हरिदमरां हंसि हँसिरी कछु बात कहीरी । काके
घर काके पितुमाता काके तरकी सुरति रहीरी । अब समुभक्ति कछु
तेरीबाणी आईहैं लैमही दहीरी । सुनहुसूरप्रातहि तेआई यहकहि
कहि जियलाज गहीरी ४५ सुनुरीसखी बात इक मेरी । तोसों धरौं
दुराय काहेको हितुजानहि सब चितकी मेरी । मैं गोरसलिये जाति
अकेली कालिहकान्ह बहियां गहिमेरी । हारसहित अंचरागहेउ गाहे
यक करगही मटुक्रिया मेरी । तबमें कहेउ खीभिहारि छाँड़हु टूटैगी
मोतिन लरमेरी । सुरप्रयामसेसे मोहिरिभई कहाकहति तूमेसों मेरी
४६ तौन गोरसछाँड़ियो । चहुँफल भवतगहेउ शारंगरिपु बाजिधुरा
अथयो । अमिय बचनरुचिरचित कपटहठि भगरो फेरिठयो । कुमु-
दिनप्रफुलित होजिय सकुचति लै मृगचन्द नयो । जानिनिशा शिशु
रूप बिलोक्त नवल किशोरभयो । तबते सुरनेकनहिँ छूटत मनअप-
नायलयो ४७ ॥ रागरामकली ॥ यह कहिसौन साध्योगवारि । श्यामरस
घटपूरि उछलित बहुत धरेउ सन्हारि । बैसही ढंग बहुरिआईदेहदशा
बिसारि । लेहुरी कोउ नन्दनन्दन कहै पुकारिपुकारि । सखी सो तब

कहति तरी कोकहांकी नारि । नन्दके घरजाहुँ कितहैं जहां हैं जन-
वारि । देखिबाको चकत भइसखि विकल भ्रम गहसारि । सुरप्र-
महिँ कहि सुनाऊं गये शिरकह डारि ४८ ॥ रागनट ॥ साखि लंकगई
हरिपैवाय । तुरतही हरिमिले ताको प्रकट कही सुनाय । नारि यक
अति परमसुन्दरि बरगि कापैजाय । प्रातते शिरधरे मटुकी नन्दधर
भरमाय । लेहुगोपालको कहिदह्योगईभुलाय । सुरप्रभुकहुँ मिलेताको
कहति करिचतुराय ४९ ॥ रागकान्हो ॥ नन्दग्राम को सारग बूझै कोउ
दधिबेचन हारी । सुनुहु न प्रयासकठिन तनुगोरे विषुवदनी असहायक
हारी । अपयाको सुतताहि बिरंचै ताहिबिरंचि शीशपर धारी । क-
मल करइ चलत अरुणा भव राख्यो निकट निखग सँवारी । गति
मराल शावक तापाछे जावक मुकता चुनत बिसारी । सुरदास प्रभु
कहत बनेगहिँ सुखसम्पति नृपभान दुलारी ५० ॥ रागबिलावल ॥ शिर
मटुकी मुख सौन गही । भ्रमि भ्रमि बिबश भई नवरवालिनि नवल
कान्हके रसउसही । तनकी सुधि आवति जब सनहीं तर्जहिँ कहति
कोउलेहु दही । द्वारेआय नन्दके बोलति कान्ह लेहुकिन सरसही ।
इत उत ह्वैआवतिफिर यहँहीमहरि तहांगलिहारिही । और बुला
वति काहेन हेरति बोलति आनि नन्ददरही । अङ्गअङ्गयशुलति तोहि
चरची कहाकरति यह ग्वारिवहो । सुनुहुँ सुर यइ ग्वारि बिबानी
कवकी येही ठंगरही ५१ ॥ रागरामकली ॥ कबकी महेडलिये शिरडोलै ।
भूटेही इतउत फिरआवति यहां आनिपैबोलै । मुँहलोभरी सयनियां
तेरी तोहिँ रततभइ साँझ । जानति हैं गोरसको लैबो याहीबाखरि
साँझ । इततो आइबात सुनुमेरी काहेबिलग जिनिमानै । तेरेघरमेंतुही
सयानी और बैचनहिँ जानै । भ्रमतहिँ भ्रमत भरमिगइ ग्वारिलिबि-
कलभई बेहाल । सुरदासप्रभु अन्तर्यामी आयमिले गोपाल ५२ भई
मन साधवकी अवसेरि । सौनधरे मुख चितवत टाढी ज्वाब न आवै
फेरि । तब अकलाय चली उठि बनको बोले सुनत न टोरि । बिरहा
बिबश चहुँधाभरमति प्रयासकहा कियभोरि । आवहुबोग मिलहुनंद
नंदन दाननकरो निबोरि । सुरप्रयास अङ्गम भरिलीनीं दूरिकियो दुख
देरि ५३ ॥ रागबिलावल ॥ साँचीप्रीति जानि हरिआये । पूरया नेह प्रकट

दरशाये । लइ उठाय अङ्गुल भरिप्यारी । भ्रमि भ्रमि अम कोन्हा तनु
 भारी । मुखमुख जोरि अलिङ्गन कीन्हों । बारबार भुजभरि उरलीन्हों ।
 रुन्दावन घन कुंजलता तर । प्रयामा प्रयामनवल नवलाबर । मनमोहन
 मोहनि मुखकारी । कोककला गुणाप्रकटे भारी । छूटेबन्द अलकशिर
 छूटे । मोतिनहार टूटि मुख लूटे । सूरश्याम बिपरीति बढ़ाई । नागरि
 सकुचि रही लपटाई ५४ ॥ रागनट ॥ प्रयामा प्रयाम करत बिहार । कुंज
 गृह रचि कुसुम शय्या छवि बरणा कोपार । सुरति मुखकरि अङ्ग
 आलस सकुचि बसन संभारि । परस्पर भुजकंठ दीन्हे बैठिहैं बरनारि ।
 पीनकज्ज्वल बरन भासिनि प्रयामतनु अनुहारि । सुरघर अरु दामिनी
 मिलिब्रकट मुख विस्तारि ५५ ॥ रागकान्हो ॥ राधेबसन प्रयामतन ची-
 न्हों । शारंग बदन बिलास बिलोचन हरिशारङ्ग जानिरति कीन्हों ।
 शारङ्ग बचन कहति शारङ्गरिपु दौराखति पटझीनी । शारङ्ग पाणि
 गहति रिपु शारङ्ग करते लीन्हों छीनी । सुधापान करि कुछ नीकी
 बिधिरहेउ शेषमुद्राफिरिदीन्हों । सुरसुदेश आहि रतिनागरभुजआ-
 करयि नामकर लीन्हों । ५६ तुमसों कहा कहीं सुन्दरघन । याव्रजमें
 उपहास चलतहै मुनिमुनि अवगा रहत मनहीं मन । जादिन सबनबा-
 छरानोये करि मो दुहिदईधेनु बंशीवन । तुम गहिबाह सुभाय आपने
 हेांचितइ हंसि नेक बदन तन । तादिनते घरमारग जित तित करति
 चबाब सकल गोपीजन । सुरप्रयामसों साँचिपारिहौ यह पति बरत
 सुनहु नन्दनन्दन ५७ ॥ रागभैरव ॥ कहाकहीं सुन्दर घनतुमसों । घेरायहै
 चलावत घरघर अवगा सुनत जियमें खूनसों । बहिनी मातपिता बाँ-
 धव गुरुजन यहकहै मोसों । राधाकान्ह एकसंग विलसत मनहींमन
 अपसोसों । कबहुँक कहै सबन परित्यागौ बभूतिहैं अबगोसों । सूर
 प्रयाम दरशन बिनपाये नयनदेत मोहिँदोसों ५८ ॥ रागयामकली ॥ बात
 ये तुमसों कहत लजाऊं । मुनि न जात घरघरको घेरा कान्हा मुखन
 समाऊं । नरनारी सबयहै चलावत राधामोहन एक । मातपिता मुनि
 मुनि अतिश्रासत मैं इक वै जु अनेक । आपु जबहैं द्वारेहैं निकसत दे-
 खत सबै सुगात । नीदति तुमहिँ सुनावत मोको सुनत न नेक सुहात ।
 धृगनर धृगनारी धृगजीवन तुमहिँ बिमुख धृगदेह । सूरप्रयाम यहकोऊ

न जानत तनुहैगयो जरिखेह ५६ ॥ रागगुजरी ॥ प्रथाम यह तुमसों क्यों
न कहैं । जहाँ तहाँ घरघरको घेरा कौने भाँतिसहीं । पिता कोपकर
वारलेतकर बन्धु बधनको धावै । मात कहै कन्या कुलको दुखजिनि
कोऊ जगजावै । विनती एककरों करजोरे यहिबीथी जिनिआवहु ।
जो आवहु तौ मुरलि मधुरधुनि मेजिनि कानसुनावहु । मन क्रम बचन
कहतिहों साँची में मन तुमहिँ लगायो । मूरदासप्रभु अन्तर्दयासी क्यों
न करहु मनभायो ६० ॥ रागरामकली ॥ हँसि बोले गिरिधर रसबानी ।
गुरजन खिभूत कितीहि रिसपावति काहेको पछितानी । देहधरेको
धर्मयहैहै सजन कुटुम्ब गृहपानी । कहन देहुकहि कहाकरैगे आगेहि
सुरति हिरानी । लोकलाजकाहेको छोड़ति ब्रजहीबसे भुलानी । मूर
दास घटद्वैकरि बनये भेदजहीं कहुमानी ६१ ॥ रागजैतथी ॥ ब्रजबसिका-
के बोलसहीं । तुमबिनु प्रथाम औरनहिँ जानौं सकुचनि तुमहिँ कहैं ।
कुलकी कानि कहालै करिहैं तुमको कहा लहैं । धृग माता धृग
पिता बिमुख तुवभावै तहां बहैं । कोउ कहुकरै कहैकहुकोऊ हरख
न शोकगहैं । मूरप्रथाम तुमको बिनुदेखे तनमन जीवदहैं ६२ ब्रजहि
बसै आपहि बिसरायो । प्रकृति पुरुष एकैकरि जानहु बातनि भेद
करायो । जलथल जहंरहैं तुमबिनुनहिँ वेद उपनिषद गायो । हैतन
जीव एकहम तुमदोउ सुखकारणा उपजायो । ब्रह्मरूप द्वितियानहिँ
कोई तनमन त्रियाजनायो । मूरप्रथाम मुखदेखि अलपहँसि आनन्द
पुंजबढायो ६३ तबनागर मनहर्यभई । नेहपरातन जानिप्रथामको अति
आनन्दमई । प्रकृति पुरुषनारी में वेपतिकाहे भूलिगई । कोमाता को
पिता बन्धुको यह तौ भेंटिलई । जनम जनम युग युग यहलीला प्यारी
जानिलई । मूरदास प्रभुकी यहमहिमा यातेविवश भई ६४ ॥ रागबूहे ॥
सुनहुप्रथाम मेरीबिनती । तुमहर्ता तुमकर्ता प्रभुज मात पिता कौनेगि-
नती । मैंबर भेंटि चढावत रामभ प्रभुता मेरिकरत विनती । अबलोकरी
लोक मर्यादा मानहु थोरेही दिनती । बहुरि बहुरि ब्रजजन्म लेतहो
यहलीला जानी किनती । मूरप्रथाम चरणानते माकोराखत रहेकहाँ
भिनती ६५ ॥ रागधनाबी ॥ देहधरेको फल यह प्यारी । लोकलाज कुल
कानि मानिये डरिये बन्धुपिता महतारी । श्रीमुख कहेउ जाहु घर सु-

नहर लड़े महर दृषभान दुलारी । तुव अवसेर करत सब हूँ जाहु बेगि
 दैहँ पुनिगारी । हमहु जहिँ प्रजतुमहुँ जाहु अवशेह नेहक्यों बीजै डारी ।
 सूरदास प्रभु कहत प्रियाखीं नेकनहीं मोते तुमन्यारी ६६ देह धरेको
 कारणा सोई । लोकलाज कुलकारनि न तजिये जाते भलो कहै सब
 कोइ । मातपिता को मानेमाने मान कुटुम्ब सबलोई । तात मातहू को
 भावत तनुवरिकै मायावश होई । सुनि दृषभान सुता मेरीबाणी प्री-
 तित पुरातन राखी गोई । सूरप्रयास नागरीहि सुनावत मैं तुम एक न
 हूँ हों दोई ६७ ॥ रागभारंग ॥ अबकैसे दूजेहाथ बिकाऊं । मन मधुकर
 कीन्हों धा दिनते चरसा कमज जिनिठाऊं । जो जानो औरैकोउकर्ता
 तऊ न मन पछिताऊं । जोइकाको सोइसोई जानै अघतारणा नरनाऊं ।
 यापरतीति होय या युगकी परमित छुटत डराऊं । सूरदास प्रभुसिंधु
 चरणातजि बधीशरणा कत द्वाऊं ६८ ॥

निज गृहगमन

रागविलावल ॥ घरपठइध्यारी अंकुसभरि । करअपने मुखपरसिधिया
 के प्रेममदित दोऊ भुज धरिधरि । संगमुख लूहिहर्षभरि हिरदय चली
 भवन भासिनि गजगतिहरि । अङ्गमरगजी सारीराजति छबिनिरखत
 रीकत टाढेहरि । बेनीडुलति चितवनि पर दोउछीन लंकपर वारों के
 हरि । फिरचितयो ध्यारीतब पियतन दुहनसन आनन्द हर्यकरि । रा-
 धा हरि आधा आधातन एकैद्वै ब्रजमें हैं अवतरि । सूरप्रयास रसभरै
 उमंगि अङ्ग वहछवि देखिरहेउ रतिपतिडरि ६९ घरहिजात मनहर्य
 बढ़ायो । दुखडारेउ मुखअङ्ग भारिभरि चलीलूटिषो पायो । कुंजभ-
 वन हरिसंग बिलसिरस मनको सुफल करायो । तहँयक सखीमिली
 राधाको कहति भई मनभायो । भौंसकोरति चलति मन्दगाति नेकु
 बदन सुसुकायो । सूर सुगन्ध चुरावनहारो कैसेदुरत दुरायो ७० ॥ राग
 जितेशी ॥ कहफूली आवतिरी राधा । मानहुँ मिली अङ्गभरिसाधो प्रक-
 रति प्रेम अगाधा । भृकुटी मनुयनयन शरसाधे बदन बिकासतिआधा ।
 चंचल चपल बंक अवलोकनि काम नचावत ताधा । जेहिरस शिव
 मनकादि मगनभये शेष रहन दिनसाधा । सोरस दियो सूरप्रभु तोको
 शिवा न लहति आराधा ७१ ॥ रागभैरव ॥ राधेसो रसवरिगानजाय ।

जोरमको सुरभान शीश दियो सुते पियो अकलाय । पचिहारे सब
 खाल कमलमुख चन्द वदन ठहराय । अजहुं कवन्ध फिरत तेहिला-
 लच सुन्दरिसेन बुझाय । मोहनते रसरूप आगरी कटिदिन जानुनि-
 काय । सूरजदास पपीहाकेमुख कैसे सिन्धुलमाय ७२ ॥ रागमट ॥ मोसें
 कहादुरावति राधा । कहामिली नंदनंदनको जिन पुरई मनकीसाधा ।
 व्याकुल भई फिरतिही अबहींकामबिधा तनखाधा । पुलकित रोम
 रोम गदगद अब अङ्ग अङ्ग रूपअगाधा । नहिंपावत जोरस योगीजन
 जप तप करत समाधा । सुनहु सूरतेहि रस परिपूरण दूरकियो तन
 दाधा ७३ ॥ रागआसावरी ॥ कहाकहति तूभई बावरी । तोसें कहत सुने
 कोउऔरे कह कीन्हे चाहत उपावरी । सोतो साँचिमानि यहलैहै
 हमहिं तुमहिं बातें सुभावरी । मेरी प्रकृति भलेकरि जानति में तोसें
 करिहां दुरावरी । ऐसे कैसे होयसखीरी घरपुनि मेरोहै बचावरी ।
 सूरकहति राधासखि आगे चकतभई सुनि कथा रावरी ७४ ॥ रागमारंग
 प्रयासकीन कारेकौ गोरे । कहाँरहत काकेवह ढोटा वृद्धतरुण कीधौं
 हैं भोरे । यहँही रहत कि और गाँवकहुं मैं देखे नाहीं कहूँ उनको ।
 कहैनहीं समुझाय बात यहमोहिं लगावतिहौ तुमजनको । कहाँरहां
 मैंबैसाकिहिके तुम मिलवतिहौ काहेऐसी । सुनहु सूरमोसी भोरीको
 जोरिजोरि लावतिहौ कैसी ७५ जाहिचली मैं जानीतोको । आजुहि
 पढ़िलीनीं चतुराई कहाँ दुरावति मोको । यहिव्रज हमतुम नन्दनन्दन
 ते दूरिकहुं नहिंजैहैं । मेरेफन्द कबहुँतौपरिहै मुजरा तबहींदैहैं । उनहिं
 मिले बितपन्नभई अब वे दिनगये भुलाय । सूरप्रयास संगते उठिआई
 मोसें कहति दुराय ७६ ॥ रागघोष ॥ हँसति कहति धौंकी सतभाव ।
 तेरीसें मैं कछु मन समुझति कहा कहेउ मोहिं बहुरि सुनाव । मेरी
 प्रपथ तोहिंरी सजनी कबहूँ कछुपायो यहभाव । देख्यो नयनसुन्यो
 कहूँ अबगान भूँतेसहति फिरतिहौ दाव । यह कहती औरैं जो कोऊ
 तासीं मैं करती अफड़ाव । सूरदास यहमोहिं लगावति सपनेहुं जासें
 नहिं दरशाव ७७ ॥ रागधनाशी ॥ राधेतेरो बरणा बिराजत नीको । जब
 तू इतउत बंकाबिलोक्ति होतनिशापतिफीको । भृकुटीधनुय नयनशर
 साधे शिरकेशरिको दीको । मनघुघुट पततेदुरिबैदो पारिधि रतिपाति-

हीको । गतिमें मत्तनागज्यों नागरि करेकहति हौलीको । सूरदासप्रभु
 विविध भौति करि मनरिभयो हरिपीको ७८ ॥ रागबिहागरी ॥ राजति
 राधे अलक भलीरी । मुक्तामौग तिलक पन्नागिनि शिर सुतसमेत भखु
 लेन चलीरी । कुंकुम आइ श्रवणा श्रमजल मिलि मधुपीवत छबिछोज
 भलीरी । चारुउरीज उपरयो राजत अरुभे अलिकूल कमल कलीरी ।
 रोमावली बिबलि उरपरसत बंसचहै नटकास बलीरी । प्रीति सुहाग
 भुजाशिर सगडल जघन मघन बिपरति कदलीरी । जावक चरणा पंच
 शर शायक समर जीतिले शरणा चलीरी । सूरदासप्रभुको सुखदीन्हें
 नखशिख राधे सुखनि फलीरी ७९ ॥ रागरामकली ॥ सजनीकत यह बात
 दुरैहैं । ऐसीमोहि कहैं जिनिकबहूं भूटेपर दुखपैहैं । तोतेप्रीतम और
 कौनहै जाकेआगेकैहैं । मोको उचटाये कछुपैहैं बहुरिनाउ नहिंलैहैं ।
 यह परतीति नहींजिय तेरेसोकह तोहिं चुरैहैं । सूरश्याम धोंकहां र-
 हतहैं मैकाहेकोजैहैं ८० ॥ रागधनाश्री ॥ चतुरसखी मनजानि लई । मोसों
 तौ दुराव यहकीन्हें याके जियकछु शसभई । तब यह कहेउ हंसतिरी
 तोसों जनिमन में कछु आनै । मानीबात कहावै कहूँ तू हमहूं उनीहिन
 जानै । अबहिं तनिक तूभई सयानी हम आगेकी बारी । सूरश्याम ब्रजमें
 नहिंदेखे हंसत कहेउ घरजारी ८१ ॥ रागबिलावल ॥ सकुच सहित घरको
 गई वृषभान दुलारी । सहारिदेखि तासों कहेउ कहां रहीरी प्यारी ।
 घरतोहिनेक न देखेउं मेरीमहतारी । डोलतलाज न आवईअजहूं हैबारी ।
 पिताआजु रिसकरत हैं देहकहतहैं गारी । सुताबडे वृषभानकी कुल
 खावनिहारी । बन्धव मारन कहत हों तेरे ढंगकारी । सूरश्याम संग
 फिरति है योवन मत्तवारी ८२ ॥ रागरामकली । चर्चरी ॥ कहां कहति हैरी
 माता मोसों । ऐसे बहिगई को श्यामसंग फिरै जो वृथा रिस करति
 कहकहूं तोसों । कही कौनेबात बोलिथैं तेहिमात मेरेआगे कहैताहि
 देखो । तात रिस करत आत कहै सारिहैं भीति बिन चित्र तुम करत
 रेखो । तुमहिं रिस करति कछु कहा मोहिं सारिहौ धन्य पितु मात
 आता तुमहीं । ऐसोलायक बन्दसहरको सुतभयो तिनहिं मोहिंकहति
 प्रभु सूर सुनहीं ८३ ॥ रागगुजरी ॥ काहेको परघर क्षणाक्षणाजाति । घर
 में डांढिदेति शिख जननी नाहिन नेक डराति । राधा कान्ह कान्ह

राधा व्रज है रहेउ अतिहि लजाति । अबगोकुलको जेबो छाँडो अप-
यशह न अघाति । तूतयभान बड़ेकी बेटी उनके जाति न पाँति । सूर
सुता समुभावाति जननी सकुचति नहिं मुसुकाति ८४ ॥ रागकान्हरो ॥
खेलन को मैं जाँउनहीं । और लरकिनी घरघर खेलति मोहीं कोपै
करति तुहीं । उनके मातपिता नहिंकोई खेलति डोलति जहींतहीं ।
तोसी महतारी बहिजाय न मैरहां तुमहीं बिनहीं । कबहूँ मोसों कछू
लगावति कबहूँ कहति जिनिजाउ कहीं । सूरदास बातें अनखौही
नाहिन मोपै जाति सही ८५ ॥ रागसारंग ॥ मनमन जानिगई महतारी ।
कहाभई जो बाढ़िनेक राइ अबहीं तौ मेरीहै बारी । भूठीही यहबात
उड़ीहै राधाकान्हू कहत नर नारी । रिसकी बात सुताके मुख की
सुनत हँसत मनहींमन भारी । अबलों नहीं कछू यह जान्यो खेलत
देखि लगावै गारी । सूरजदास जननि उरलावति मुखचूंबति पोंछति
रिसदारी ८६ ॥ राग सुहो ॥ सुतालये जननीसमुभावति । संगविटीननि
को मिलि खेलौ श्याम साथ सुनि सुनि रिस पावति । जाते निन्दा
हेत आपनी जाते कुलको गारी आवति । सुनिलाडिली कहति यह
तोसों याते रिसकरिके हाँधावति । अबसमुझीमें बातसबनिकी भू-
ढेही ये बातउडावति । सूरदास सुनि सुनि येबातें राधामन अति हर्य
बढ़ावति ८७ ॥ राग नट ॥ राधा बिनयकरत मनहींमन सुनहु श्यामअं-
तरकेयामी । मात पिता कुलकानिहिं मानत तुमहिं न जानतहैं जग
स्वामी । तुम्हरो नामलेत सकुचतहैं ऐसेतौर रहीहैं आनी । गुरुपति
जनकी कानिमानियो बारम्बार कहीमुखबानी । कैसे संगरही बिभु-
खनिके यहकहिकहि नागरिपछितानी । सूरदास प्रभुकोहिरदयधरि
गृहजन देखदेखि मुसकानी ८८ राग धनाश्री ॥ जब प्यारी मन ध्यान
धरेउ । पुलकितउररोमांचप्रकटभयो अंचलढरि मुखउधरिपरेउ । प्रेम
बिषय भईसुकुमारी कैसेहु मनधीरज नहिं आवै । चकतभई अंग अङ्ग
बिलोकत दुखमुख दोऊ मनउपजावै । पुनि मनकहाति सुता काहकी
कीधौं यह मेरीहै जाई । राधा हरिकेरंगहिरांची जननीरही जियहि
भरमाई । तबजानी मेरीं यहबेटी जिय अपने तब जानलियो । सूरदास
प्रभुप्यारीकी छवि देखिचहति कछूसीखदियो ८९ ॥ राग सोरठ ॥ राधा

दधिसुत क्योँनदुरावति । हैंजुकहति वृथभाननन्दनी काहे जीवसता-
वति । जलसुतदुखी दुखीहैमधुकर द्वैपच्ची दुखपावत । शारंग दुखी
हेत शारंगबिन तोहिं दयानहिंआवत । शारंगरिपुकी नेकओटकारि
ज्योँशारंग सुखपावत । सूरदास शारंग केहिकारना शारंगकुलहिल-
जावत ६० ॥ राग बिहागरो ॥ मेरीसीख काहेनकरति । अजहुँभोरीभईरैहे
कहतितोसोँडरति । शशिनिरखमुख चलतनाहीं नयननिरखिकुँग ।
कमल खंजन मीन मधुकर हेतहैचितभङ्ग । देखिनासा कीरलज्जित
अधर दशननिहारि । बिंब अरु बंधुक बिद्रुम दासिनीडर भारि । उर
निरखिचक्रबाक बिथके कटिनिरखि मृगराज । चालनिरखि मराल
भूले चलतते गजराज । अंगअंग अवलोकिशोभा मनहिंदेखि बिचारि।
सूरमुख पटदेति काहेन बरयदशयुगभारि ६१ ॥ राग सूहा बिलावल ॥ अब
राधा तू भईसयानी । मेरीसीखमानि हिरदयधरि जहंतहंडोलातिबुद्धि
अयानी । भईलाजकी सामा तन में मुनि यहबात कुँवरि सुसकानी ।
हँसतिकहामें कहति भलोतोहिं सुनतिनहीं लोगनकीबानी । आजुहि
ते कहुं जान न देहां मतितेरीकहु अकथ कहानी । सूरप्रथामके संगन
जैहां जाकारना तू मोहिं सुगानी ६२ ॥ राग नट ॥ भलीबात बाबा आ-
वनदेवै । कान्ह लगायदेत मोहिंगारी मेसेबड़े भये कबते वै । काल्हि
मोहिं मारगमेंरोकी जातिरही सखियन संग दखिलै । कहनलगी मेरी
देहखिलौना तादिनलैभगी चुरायकै । छटिआठै मोहिं कान्ह कुँवरसों
तिवको कहति प्रीति तोसोंहै । सरजननि मुनि यहबासी प्रिय पुनि
पुनि मुखनिरखति बिहँसतिहै ६३ ॥ रागगेरी ॥ बड़ीभई नहिं गइलरि-
काई । बारीहीके ढंग आजुलों सदा आपनी टेकचलाई । अबहीं सच-
लिजायगी तब पुनि कैसे सोसों जातिबुझाई । मानी हारि मानि मन
अपने बोलिलई हँसिकै दुलराई । कगदलगायलई अतिहितसों पुनि
पुनि कहि मेरी रिसहाई । सूरदास अति चतुर राधिका राखिलई
नीके चतुराई ६४ ॥

इति दानलीलावली समाप्त ॥

अथ सूरसागर राग कल्पद्रुम ॥

अथराधाजीकी अनुरागलीलाका प्रसंग ॥

रागरामकली । चर्चरा ॥

प्रयाम नग जानि हृदय चुराये । चतुर वर
नागरी महामाशा लखिलियो प्रियसखी संगतेहि नहिं जनाये । क-
पिराज्यों धरतधन ऐसे दुर्दकियोमन जननिखनि बातहंसि कंठलाये ।
गाँसदियो डारिकहि कुंवरि मेरीवारी सूरप्रभुनामभूटे उढाये १ ॥ राग
कल्पद्रुम ॥ सखियन यहै विचार परेउ । राधाकान्ह सक भयेदोऊ हम
सें गोपकरेउ । कृन्दावनते अबहींआइ अतिजिय हरयबढाये । औरै
भाव अङ्गद्वि औरै प्रयामहिंसिलि मनभायो तबवह सखीकहति में
बुझी मोतन फिरहंसि हेरेउ । जबहि कही सखिसिले तोहिहरि तब
रिसकरि मुखमारेउ । औरैबात चलावनखागी में वाको पहिंचानी ।
सूरप्रयामके मिलत आजुही ऐसीभई सयानी २ ॥ रागवारठ ॥ सुनहुसखी
राधाकी बातें । मोसेंकहति प्रयामहें कैसे ऐसी मिलई घातें । कैगारे
कैकारे रङ्गहरि कैगोवन के भोरे । साँचकही मोसेंतुम सब मिलिहैं
अतिकरति निहारे । कैतूकहति बातहंसि मोसें कहिबूझति सतभाव ।
सपनेहं उनको नहिंदेखे वाकेसुनहु उपाव । मोसें कहति कौनतोसी
प्रिय तोसेंबात दुरैहों । सूरकही राधामें आगे कैसे मुख दर्शैहों ३
रागगौरा ॥ बहनिधरक में लक्ष्मी गई । तबयह कहेउ जाय घरराधा में
भूठी तैं साँचिभई । लोरीभौंहनि मोतनचित्तवै नेकरहौ तो करैखई ।
कामभंडार लूटिनीकेकरि निदरि गईमें चकृतभई । घरघों जायकहा
अब कैहें अबकहु औरैबुद्धिनई । सूरप्रयाम अँगसँग रंगराची मनमाने
मुखलूटिलई ४ ॥ रागसूहोविलवल ॥ सुनिखनि बातसखी सुसकावी । अ-
वहीं जायप्रकट करिदैहें कहांरहै यहबातद्विपानी । औरनिसों दुराव
जो करते तौ हम कहतीभली सयानी । दोइनआगे पेटदुरावति बाकी
बुद्धि आजुमें जानी । मोहिंजातहि वह उधरि परैगी दूधदूध पानीसें
पानी । सूरदास अबकरि चतुराई हमहिं दुरावति बातनटानी ५ ॥ राग
रामकली ॥ अपनेभेद तुमहिनिहिं कैहै । देखोजाय चरित तुमवाके जैसे
गाल बजैहै । बड़ेगुलकी बुद्धिपही वह काहको न पत्यैहै । एकोबात

मानिहैं नाहीं सबकीसोंहैं खैहै । मैं नीकेकरि बूझिरही हों अबबूझै
 रिसपैहै । सुनहुं मूर रख्यकी राधिका बातनि बैरबहैहै ६ ॥ रागबिलावल ॥
 कहाबैस वह हमसों करिहै । बाकीजाति भलेकरि पाई हमको कहा
 निदरिहै । कैहै कहा चोरसो हमसों बातहिबात उघरिहै । दूरिकरों
 लंगराईवाकी भरेकंद जबपरिहै । हमसों बैरकियेका पैहै काजकहा
 पुनि सरिहै । मुरदास मटुकी शिरलीन्हे बहुरेउ वैसाहि ररिहै ७ ॥ राग
 गौरी ॥ चलहुसखी जैये राधाघर । बूझैबात कहाधों कैहै निधरकहैकी
 मनमेंडर । कीधों हमहिं देखि भजिजैहैकी हमकोउठि मिलिहै । की-
 धोंबात उघारि कहैगी कीं मनहींमन गिलिहै । कीधों हंसि बोलैकी
 रिसकरि कीधों सहज सुभाई । कीधों मुरश्याम रसमाती योवनगर्ब
 बढ़ाई ८ युवतोजुरि राधादिग आई । लखिलीन्ही तब चतुर नागरी
 ये मोपर सबई रिसहाई । आदर नहींकियो काहूको मनमें एकबुद्धि
 उपजाई । मौनगद्यो नहिं बोलत तिनसों बैठिरही करिके चतुराई ।
 आपुहि बैठिगई दिगसिगरी जंबजानी यहतो सुघराई । मुरदास बैस-
 खी सयानी और कहूँकी बातचलाई ९ ॥ रागजैतथी ॥ चतुर चतुरकी
 भेंटभई । बहतौ नितुर मौनहैबैठी इन सबहिन लखिताहि । मुहाचही
 युवतिन तबकीम्हे देखो उलटीरीति भई । कहा हमारोमन यहराखै
 अरु हमहोंपर सतराई । बूझियाहि खूँधरिक्के तू कहा आज यह
 मौन लई । सुनहुं मूर हमसों कह परदा हमकरि दीनों सौंरि सई १०
 राग सारंग । चर्चरी ॥ राधिका मौनव्रत किनि सधाये । धन्य ऐसेा गुरु
 कानके लागतहि संवदै आजुहीयह लखाये । कालिह कछुऔर प्रा-
 तहिकछु औरही अबहिं कछु औरहैगई प्यारी । सुनत यहबात हम
 दोरि आईसबै तोहिंदेखत चकत भईभारी । अब कहौबात यामौनको
 फल कहा सुनि जुलीजै कछु हमहिंजानै । कहौ संगमभई सबै योवन
 नई अबहोहु गुरुहम तुमहिंमानै । देहि उपदेश हमहुंधरें मौनसब संघ
 जबलियो तब हम न बोली । मूर प्रभुकीनारि राधिका नागरी चर्च
 लीनों म्वहिंकरत ठाली ११ ॥ रागसारंग । चर्चरी ॥ कीगुरु को कहौकी
 मौनछाड़ौ । हमहिं मुरुख बदति आप ये ढंगसदति पायअब मदति
 हटिकहति साड़ौ । सकहिसंग हमतुम सदारहति हैं आजुही चटकत

भईन्यारी । भेद हमसों कियो मौनव्रत कहँलियो औरदो कहायो
 देहिगारी । कहा त्वहिं भयो तेरीप्रकृति कौनहरी रीतिग्रह नईतैहीं
 चलाई । सूरसुनि नागरी गुणानि की आगरी सिद्धुरई सों बातकहि
 सुनाई १२ ॥ रागमौरी ॥ तुम प्रीतमकी बैरिनिमेरी । वासोंकहति मिली
 जो मारग यहिमेसों अतिकहौ अनैरी । कहतिकहा श्यामहिं मिलि
 आई भौचकिरही सोंहस्वहिं तेरी । मेरे अङ्गकवि और कहत कछु
 युवती सुनतरही मुखहेरी । मैं जिनको सपने नहिं देखौं तिनकी बात
 कहति फिरिफेरी । सूरदास गुणभरी राधिका सहसा को जानै यहि
 केरी १३ ॥ रागकल्याण ॥ तुमसों कछु दुरावहै मेरो । कहांकान्ह कहँमें
 सुनुसजनी ब्रजघरघर यह चलतहै धेरो । और कहतसब मोहिंनव्यापै
 तुमहुं कहौ यहबानी । आदर नहींकियो याहीते तुमपर अतिहि रि-
 सानी । हमतौ नहीं कहेउकछु तोसों ताहीपर रिसकरवी । सूरतबहिं
 हमसों जोकहती तेरीधौं ह्वै लरती १४ ॥ रागरामकली ॥ सखीतु राधहि
 दोयलगावति । तेरोश्याम कहां इनदेख्यो बातनिबैर बढ़ावति । हम
 आगे भूटीनहिं कैहें सखियन सैन बतावति । ऐसीबात अरीमुख तेरे
 कैसेधौं कहि आवति । भेदहिभेद कहतिहै बातें ऐसे सनहिं जनावति ।
 सूरप्रयामतें देखेनाहीं कीवों हमहिं दुरावति १५ ॥ राग नट ॥ काको
 काको मुखमाई बातनिकोगहिये । पाँचकीसात लगावो भूटी किव-
 नावो साँची जो तनक होय तौलोंसब सहिये । बातनि नहौ अकाश
 सुनत न आवैसाँस बोलतकछु न आवै तातेमौन रहिये । ऐसेकहें नर
 नारि बिनाभीति चित्रकारि काहेको देखेमेंकान्ह कहाकहौ सहिये ।
 घरघर यहैबैर दृष्टामोसों करैबैर यहसुनि अवरानि हृदयसहि दहिये ।
 सूरदासकरुणपदास होयशिरमेरे नन्दसुवन मिलेतौतापै कहाचहिये ।
 रागसारंग । चर्चरी ॥ दुरतनहिं नेह अरु सुगन्ध चोरी । कहा कोउ कहै त
 सुनतकाहे न रहैतनहिं कतदहै सुनिसखी मोरी । लोगह्वहिं कहतहैं
 पापको गहतहैं कहाधौं लहतहैं सुनहुंभोरी । खरिक्छु नहिंमिलै कहै
 कह अनभले करतहैं मिलै तू दिननि थोरी । नन्दको सुवन अरुसुता
 दृष्टभानकी हँसत सबकहै चिरंजीवजोरी । सूरप्रभु कहांतु कहांअपने
 भवनमें लखीतोहिं तोसी न औरी १७ ॥ रागबिलावल ॥ कैसेहैं नन्दसुवन

कान्हारि । देखेनहीं नयनभरि कबहुं ब्रजमें रहत सदाई । सकृच्चति हैं
 एकदात कहति सो नाहींजात सुनाई । कैस्यहु मोहिं देखावहु उनको
 यहमेरे मनआई । अतिही सुन्दर कहियत हैं वै मोको देहि बताई ।
 सूरदास राधाकीबाणी सुनतसंखी भरमाई १८ ॥ रागधनाथी ॥ सुनहुसखी
 राधाकी बानी । ब्रजबसिहरि देखेनहिं कबहुं लोगहंसत कछु अकथ
 कहानी । येअबकहति दिखावहु हरिको देखोरी यहअतिहि अया-
 नी । जोहस सुनतरही सोनाहीं अबसेसेहि यहबायु बहानी । जवाब न
 देत बनेकाहूबों मनमें काहुनमानी । सूरसबै तरुणी मुखचाहति चतुर
 चतुरईदानी १९ ॥ रागबिलावल ॥ सुनिराधे तोहिंप्रियाम दिखैहैं । जहंतहं
 ब्रज ग्वालिन फिरत हैं जबहींवे यहिमाराग औहैं । जबहीं हम उनको
 देखहिंभी तबहीं तोहिंबुलै हैं । उनहुंकहलालसा बहुत यहतो देखेमुख
 पैहैं । दरशनसे धीरजजब रहैतब हमतोहिं पत्यैहैं । तुमकोदेखि प्रियाम
 घनसुन्दर मुरली मधुर बजैहैं । तनुविभङ्ग करि अङ्गविभङ्गी नानाभाव
 जनेहैं । सूरदास प्रभुनवल कान्हबर पीताम्बर फहरै हैं २० ॥ राग केदार
 चर्चनी ॥ नन्दनन्दन दरश जबहिंपैहै । एकद्वैतीनितजि चारबानी मेति
 पाँचछः निदरि सातै भुलैहै । आठहूगाँठि परिहैं नवहु दशहु दिशि
 भूलिहै ग्यारहौ स्रजसे । बारहौ कलाते तपनितनते मितति तेरहौ
 रत्न मुखछवि न तैसे । निपुणा चौदह वरणापन्द्रहौ सुभग अति बर्य
 योइशस्रहौनरैहै । जपतअठारहु भेदउनीस नहिंबीसहू दिशातेमुखहि
 पैहैं । नयन भरिदेखि जीवन सुफल करिलेखि ब्रजहि में रहतिते नहीं
 जाने । सूरप्रभु चतुर तुमहं महाचतुरहौ जैसीतुम तैसेवेऊ सयाने २१
 राग देवगन्धार ॥ मनमन हंसति राधिकागोरी । सेसेश्याम रहत ब्रजभी-
 तर ब्रभक्तिहै भइभोरी । तुमउनको कहूँदेखेहीकी सुनीकहति हौबात ।
 चतुराईनीकेगहि राखी मुखमुरिकेमुसकात । कबहुंतौ कहूँफंद परिहौ
 तबहीं लीजैचीन्ह । सूरश्यामको पीताम्बरमेरी बेसरि लीजौछीन २२
 रागनट ॥ यहसुनि हंसिचली ब्रजनारि । अतिहिआई गर्वकीन्हें गइघर
 भक्तमारि । कबहुं तौ हम देखि हैं एकसंग राधाकान । भेद हमसे
 कियोराधा नितुरभई निदान । बसरसबदिन चारको कहूँहातहै निर-
 साहु । कालिहदेखेंगी सबैसुनि सूरदुलहिनि नाहु २३ ॥ रागकान्हरी ॥ भेद

लियो चाहत राधासों । बैठीरहु अपनेघर चुपकी कामकहा काहूबा-
धासों । जनयह दूरिधरौ अपनेले अतिबर बालिगईकह कीन्हे ।
कैसे निर्भयरही सबनिसों भेद न काहुनि दीन्हे । वह कैसे फंद परै
तुम्हारे बाकेघात न जानो । सुरसबै तुम बड़ी सयानी मोहिं नहीं तुम
मानो २४ ॥ राग विलावल ॥ फेरिपारि देखो मैं धरिहैं । सुनिरी सखी
प्रतिजामेरी तेहिदिन तासोंलरिहैं । हमको निदरि रहीहै राधारिस
न रहीमैंजरिहैं । रातिद्योस मोहिंचैननहीं अबउनके देखतफिरिहैं ।
सब मेरेसन धीरजयेहै चोरीकरत पकरिहैं । सूरदास स्वामीके आगे
नीकेताहि निदरिहैं २५ ॥ रागनट ॥ गोपी यहैकरति चवाव । देखोधौं
चतुराई बाकी हमहिं कियो दुराव । लरिकईते करति येढंग बबरहे
सतिभाव । अबकरति चतुराई जानो श्यामपाये दाव । कहांतों करि
है अचखरी सबै एक उपजाव । आजु बाची सौनधरि ज्यों सदाहेत
बचाव । द्योषचारिक भोरपारहु रहौ सक सुभाव । सूर कालिहहि
प्रकर हूँहै करनदे अफडाव २६ ॥ रागमूहे विलावल ॥ कहाकहति त बात
अग्रानी । तुमहीं कहति सबै वह जानति हमसबते वे बड़ी सयानी ।
सातवर्यते यहढंगसीखी तुमतो यह आजुहिहै जानी । बाकेछन्द भेद
को जानेमीन कबहिभों पीवतपानी । हरिके चरितसबै उनसीखे दोऊ
हैं वे बारह बानी । कालिहगई बाकेघर सबमिलि कैसीबुद्धि मोहनी
ठानी । कितीकही नेकहु नहिंबोली फिरिआई तबहमहिं खिसानी ।
सूरप्रधान संगतिकी सहिमा कहं कौनहोहं न पत्यानी २७ ॥ रागमाह ॥
तबहिंराधा सखियन पैआई । आवतदेखि सबनि मुखमूंछो जहँ तहँ
रही अरगाई । मुखदेखत सब सकुच गई यह कहां अचानक आई ।
करतिरही चुगली हमयाकी तरुणी गई लजाई । अति आदर करि
बैठकदीन्हें कहेउ कहा तुमआई । कहांआजु सुधिकरी हमारी सूर-
श्याम मुखदाई २८ ॥ रागधनासी ॥ मैं कहा आजु न बैरी आई । बहुते
आदर करति सबैमिलि पहुनेकी करिये पहुनाई । कैसीवात कहति
तु राधाबैठन को नहिं कहिये । तुमआई अपने घरते यहँ हमहुं सौन
हूँरहिये । जानिलई दृयभानसुता हंसि कहेउ तरकतुमकीने । सूर-
दास तादिन को बदलो दाँव आपनो लीनो २९ दावघाव सबही तुम

जानति । सदासानि तुमको हमआइ अबहं तैसे मानति । तुमयह बात
 गाँसि करिराख्यो हमको गई भुलाई । तादिन कहेउ नहीं मैं जानो
 मानिलई सतिभाई । चोरसबनि चोरैकरिजानै जानीमन सबजानो ।
 सूरदास गोपिनकी बाणी राधासुनि सुसुकानी ३० ॥ रागमाह । चर्चरी ॥
 सखी यहबात कहीतुम साँची । जाके हृदय जौनहे सुखते तीन कैसे
 हरिकौनकहि लीकखाँची । हरिय ब्रजनारि भरिलेति अंकवारि सब
 कहति तू कहा यहबातजानै । हमहंसत कहति तरिस कहा गहतिरी
 नागरी राधिका बिलगुमानै । तुमहिँ उलटी कहाँ तुमहिँ पलटी कहाँ
 तुमहिँ रिसकरति मैं कहुनजानो । सूरकेप्रभुको नाममोहिँ तुमकहेउ
 अबगायह सुन्यो तुम कहु न मानो ३१ ॥ रागटोड़ी ॥ पुनिकहियो अब
 न्हान चलौगी । तब अपनी मनभायो कीजोजब मोको हरिसंग मि-
 लौगी । वहैबात मनमें गहिराखी मैं जानति कबहुँन बिसरैगी । बड़ी
 बार मोकोभइ आये न्हान चलतकी बहुरि लरौगी । गहि गहिबाँह
 सबनिकरि टाढी कैसेहु घरतेनिकरौगी । सूरराधिका कहैसखिनसों
 बहुरि आयघर काजकरौगी ३२ ॥ राग सारंग । चर्चरी ॥ राधिका मिलि
 गोपनारी । चलीं हिलिमिलि सबैरहसि बिहँसति सबै परस्पर कुतू-
 हल करतभारी । मध्यब्रजनागरी रूपरस आगरी घोषऊजागरी चलि
 कुमारी । बदनद्युति इन्दुरी दन्तछवि कुन्दरी कामतन सुन्दरी करति
 हारी । अङ्गअङ्गसुभग अतिचलत गजराजगति कृष्णसों एकमति यमुन
 जाही । निकसि कोउजात कोउ ठटुक टाढी रहति कोउ कहतिसंग
 मिलिचलहु नाही । युवतीआनन्दभरी सबहिजुरिके खरीनई छरहरी
 उठिवैसथोरी । सूरप्रभुसुनि अबगा तहाँकीन्हों गवन तरुणा मनरवन
 सब ब्रजकिशोरी ३३ ॥

अथ यमुना स्नान तहाँ भगवद्दर्शन ॥

रागनट ॥ गईब्रजनारि यमुनातीर । संगराजति कुंवरीराधा भईशोभा
 भीर । देखिलहरि तरङ्गहर्षी रहतनहिँ मनधीर । स्नानको वेभईआतुर
 सुभग जलगम्भीर । कोउगई जलपैठि तरुणी और टाढीतीर । तिनहिँ
 लईबुलायराधा करति सुखतनुकीर । एकसकहि धरति भुजभरि एक
 छिरकरति नीर । सूरराधा हंसतिटाढी भीजिब्रित्तनुचीर १ ॥ रागजैत

राधा जलविहरति मखियनिमंग । ग्रीवप्रग्रन्त नीरमेंटाढी किरकति
जल अपनेअपने रंग । मुखभरिनीर परस्पर डारति शोभाआय अनूप
बद्धीतव । मनहुं चन्दगागा मुधागंडुकनि डारतहें आनन्दभरेसब । आई
निकसि जानुहटिलोसव अंजुरिनते लैलै जलडारत । मानहुसूर कनक
बलीजुरि अमृत पवन मिस भारत २ ॥ राग नट ॥ यमुनाजल विहरत
व्रजनारी । तटदाढे देखत नंदनन्दन मधुरसुरलि करधारी । मोरमुकुट
अवगानि मणिगुण्डल जलजमाल अतिभ्राजत । सुन्दरसुभगश्यामतन
नवधन बिचवक पांति विराजत । उरबनमाल सुमन बहुभांतिन प्रवेत
लाल सित पीत । मनुसुरसरीतीर शुक्बैठे बरगावरण तजिभीत । पी-
ताम्बर कटितट सुद्रावलि बाजति परमरमाल । सूरदास मनो कनक
भूमिदिगबोलत रुचिरमराल ३ ॥ राग बिहागरी ॥ नटवरवेयकाछेश्याम ।
पदकमलनख इन्दुशोभा ध्यान पूरगाकाम । जानु जंघ मुघटनिकरभा
नहीरम्भातुल । पीतकटि काछनीमानहु जलजकेसर भुल । कनकसु-
द्रावलीपंगति नाभिकटिकेभीर । मनहुं हंस रसालपंगति रहेहें हृदतीर ।
भलकरोमावली शोभा ग्रीवमोतिनहार । मनहुगङ्गाबीच यमुनाचली
मिलि अयधार । बाहुदंड विशाल तटोड अंगचन्दनरेनु । तीरअस्तन
मालतीछविब्रजयुवति मुखदेनु । चिबुकपर अधरनि दशनद्युति बिम्ब
बिज्ज लजाय । नासिकाशुक नयनखञ्जन कहतकवि शरमाय । अ-
वगाकुण्डल कोटि रविछवि भृकुटि कामकोदण्ड । सूरप्रभुहैं तीप के
तट शीशवरै शिखण्ड ४ ॥ राग भूषणी ॥ उपमा भीरजतज्यो निरखिछवि ।
कोटिमदन अपनेबल हारेउ कुंडल किरणाछप्यो रवि । खंजनकंज
सधुप बिद्रुमबिषु तडित न दीनरहत कहूं येदवि । हरिपटतर दै बाहि
लजावति सकुचनहीं खोटेकवि । अरुणअधर दशननि द्युतिनिरखत
बिद्रुम शिखरलजाने । सुरश्यामइच्छाबपुकहुयो पटतरमेटिबिराने ५
रागमेरी ॥ उपमा हरितन देखि लजाने । कोउजलमें कोउ बननिरहेदुरि
कोउकोउ गगनसमाने । मुखनिरखत शशिगयो अंबरको तडितदशन
छविहेरि । मीनकमल कर चरणा नयनडर बनमेंकियो बसेरि । भुजा
देखि अहिराज लजाने बिवरनिपैठे धाय । कटि निरखत केहरि डर
मान्यो बनवनरहेदुराय । गारीदेहिं कबिनको बर्रातग्रीअंग पटतरदेत ।

मुरदास हमको बिरमावत नामहमारोलेतई ॥ रागसारंग ॥ ऐसोसोपाल
 निरखि तिल तिल तनवारों । नवकिशोर मधुरमूरति शोभा डरधा-
 रों । अरुणा तरुणा कंजनयन मुरली करराजें । व्रजजन मनहरणाबेरा
 मधुरमधुर बाजें । ललितवर विभंग सुतनु बनमाला सोहै । अतिमुदेश
 कुशुमपाग उपमा कोकोहै । चरणासुगात नूपुर कटि किंकिनि कल
 कुंजें । सकराहत कुंडलछवि सूरको न पुंजै ७ ॥ रागकान्हो ॥ सोतितकी
 माल मनोहर । शोभित श्याम सुभागडर ऊपर मनो गिरिते सुरमरी
 घसीधर । तदभुजदंड भँवर भृगुरेखाचन्दन चिधतरङ्गनि सुन्दर । मरिणा
 की किरिणा मोनतनु लाजत मकरमनहुँ आवत त्यागेसर । यशोपवीत
 विचित्र सूरसुनिमध्यधार धाराजु बनीवर । शंख चक्र गदपद्म पाशा
 मनो कमल कुलहंसनि कीनेधर ८ ॥ रागमठ ॥ राधेनिरखि भूलीअङ्ग ।
 नन्दनन्दन छपपरगति मतिभई तनुपंग । इतसकुच अति सखिन को
 उतहात अपनी हानि । ज्ञानकरि अनुमानकीन्हे अर्बाह लोहेंजानि ।
 चतुर सखियन परखिलीन्ही समुझिभई गवारि । सबैमिलि इतन्हान
 लागीं ताहिदियो बिसारि । नागरीमुखश्याम निरखति कबहुँ सखि
 यनि हेरि । सुरराधा लखति नाहीं इनदई अबटेरि ९ ॥ राग कान्हो ॥
 तबजान्यो येन्हाति सबै । हरिप्रति अङ्गअङ्गकी शोभाअखियनि मग
 ह्वै लेउ सबै । कमल कोशमें आनि दुराऊं बहुरि दरशधौं होयकबै ।
 यहमन करि युवतिन तनहेरति सकुचतिहैं पुनि नाहिँफवै । कहूं कहै
 तजौ मर्यादा इनमें मैं करि गोप तवै । सूरश्याम तबहीं मनमान्यो
 संगहिरेहैं जायजबै १० ॥ राग मोरी ॥ चितैराधा रतिनागरओर । नयन
 बदन छवियों उपजत मनोंशशि अनुराग चकोर । सारस रस अचवन
 को मानों फिरत मधुप युगजोर । पानकरत कहूँ तजि न मानत पल
 कनि देतअकोर । लियेमनोरथ मानिसकलज्योरजनि गयेपुनिभोर ।
 सूर परस्पर प्रीतिनिरन्तर दीपतिहै चितचोर ११ ॥ राग कल्याण ॥ यह
 कहुभोरेहि भायभई । निरखति बदन नन्दनन्दनको और हतीसुगई ।
 हृदयजानि प्रेमांकर जान्यो मत्त पतालगाई । सोइ स पसरि शिखर
 अम्बरलों सबजग छायालई । बचन सुपव मुकुर अवलोकनि गुणनिधि
 पुहुपमई । परस्परहि अनुराग सींचिसुख लगीप्रमोदजई । मनकोसकल

सुनोरथ एरुषा सोभर भारनई । सूरदास फल गिरिवर नागर मिलि
रत्नरीति उई १२ ॥ राग बिलावली ॥ चहुँईसन आनंद अवधिसत्र । निरखि
खलप बिबेक नयनभरि यासुखते नहिँ और कछु अब । चीत चरणा
भृदुआरु चंदनख चलत चिह्न चहुँदिशि शोभा । चित चकोर रति
करि सोईमति तजि समसघन दिययलोभा । जानु जवनकर भाकर आ-
कति कटि प्रदेश किंकिशो राजै । हृदविधु नाभि उदर बिल्ली बर
अवलोकित भवभय भाजै । उरग इंद्र अनुमान सुभग भुज पाशापत्र
आयुध साजै । कनक बलय मुद्रिका भोदप्रद सदासुखद संतनिजाजै ।
उर बनमाल बिचित्र विमोहन भृगु भ्रमरी भ्रमको नाशै । तडित बसन
घनश्याम सदृश तन तेज पुंज तमको दाशै । परस सचिर मणि कंद
किरगागशा कण्डल मुकुट प्रभान्यारी । मृदु मुख मधुसुकानि अमृत
सम सकललोक लोचनधारी । सत्यशील संपन्न सुमरति सुरनरहुनि
भक्तनभावै । अङ्गअङ्ग प्रतिद्वि तरङ्गसो सूरवरणा क्यों कहिआवै ॥
१३ ॥ राग रामकली ॥ चितवनि रोकेह न रही । प्रयाससुन्दर सिन्धुसन्मुख
सरिता उमगि बही । प्रेमसलिल प्रवाह भौरति मिति न कहूँ कही ।
लोभलहरि कटाक्षघूँघट पटकाररहही । थकेपलपथ जावधीरज परत
नहिँ न गही । मिलीसूर सुभाव प्रयासहिँ फेरिहूँ न चही १४ ॥ राग जेतथी ॥
देखहुरी राधा उत अटकी । कालिह हमहिँ कैसे निदरतिही मेरेचित
वह तरत न खटकी । चितैरही थकटक हरिछीतन ना जानिये कवन
अङ्गलटकी । न्हातरही कैसेसंग मिलिके चित चंचल बिरहाकी चट-
की । बातकइति तुलसी मुखमेलै नयन सैनदौँ मुहमटकी । सूरप्रयास
के रूपभुलानी राधाके चित सुधिनहिँ घटकी १५ ॥ राग बिलावली ॥ चितै
रहीराधा हरिकोमुख । भृङ्गरी बिकट बिशाल नयनयुग देखत तनहिँ
भयो रतिपति दुख । उतहिँ प्रयासकटक प्यारीद्वि अङ्गअङ्ग अव-
लोकत । रीझि रहे उतहरि इतराधा अरस परस दोऊमिलि नोकत ।
सखिन कहेउ दयमान सुतासों देखे कुंवर कन्हाइ । सूरप्रयास घेई हैं
ब्रजमें जिनकी होत बढाइ १६ ॥ राग रामकली ॥ हमहिँ कहेउहो प्रयास
दिखावहु । देखहु दरश नयनभरिनीके पुनिपुनि दरशन पावहु । बहुत
जालसा करतिरहीतुम वे तुम कारणा आवैं । पूरीसाधमिली तुम उन

५४६ सुरसागर अनुरागलीला रागकल्पद्रुम ।

को याते हमहिं बुलावैं । नीकेसगुन आजु यहाँ आई भये तुम्हारे काज ।
 सुनहुँसूर हमको कछु देहौ तुमहिं मिलैं ब्रजराज १७ राधाकहेउ आजु
 इन्हें जानी । बारबार मैं हरितन चितई तबहीं ये सुसकानी । कालिह
 कहेउ मैं इनसों वैसे अबतो बात न ठानी । यह चतुरई परी मोहींपर
 मनमन अतिहि लजानी । मेरी बातगई इनआगे अबहिं करति बिन
 पानी । सुरदासप्रभु कहाकहीं मैं अबतुम हाथबिकानी १८ मैं अतिही
 यह पोचिकरी । येमेरी मर्यादा लेहैं तादिन इनसों बहुत लरी । सुन्दर
 प्रयास कमलदललोचन तुमअबहोहु सहाई । ऐसी कहौबात इनआगे
 मेरीपति जनिजाई । तबइकबुद्धिची मनहींमन अतिआनन्दहुलास ।
 सूरप्रयास राधा आधातनु कीन्हीबुद्धि प्रकास १९ राधाचलहु भवनिहिं
 जाहिं । कबहींकी हम यमुनाआई कहतिअरु पछिताहिं । कियोदर
 शन प्रयासको तुम चलहुगीकी नाहिं । बहुरि मिलिहैं चाहिराखौ
 कबहुँ सबसुसकाहिं । हमचली घर तुमहुँ आवहु शोचभयो मनमाहिं ।
 सुरराधा सहित गोपी चलीब्रज समुहाहिं २० ॥ राग बिलावल ॥ कहि
 राधा हरिकैसेहैं । तेरेमन भायेकी नाहीं कीसुन्दरकी नैसेहैं । की पुनि
 हमहिं दुराव करौगीकी कैहौवैं जैसे हैं । कीहम तुमसों कहति रही
 ज्यों सौचकहौ कीतैसे हैं । नटवर भेय काऊनी काछे अङ्गन रतिपति
 जैसेहैं । सूरप्रयास तुमनीकेदेखे हमजानत हरि ऐसे हैं २१ राधा मन में
 यहै बिचारति । येसबमेरेखयाल परीहैं अबमें बातनिलैं निरवारति ।
 मोहूँते ये चतुर कहावति ये मनहीं मनमोको नारति । येसेबचन क-
 हेांगी इनसों चतुराई इनकी मैं भारति । जाके नन्दनन्दन शिरसम-
 रथ बारबार तन मन धन वारति । सूरप्रयासकेगर्व राधिका सूधेकाह
 तन न निहारति २२ राधाहरिके गर्बगहीली । मन्दमन्द गति मतमत्तंग
 ज्यों अङ्गअङ्ग सुखपुंज भरीली । पगद्वै चलति टटुकि रहेटाढ़ी सौन
 धरे हरिके रसगीली । वरगी नख चरगान कुरुवावति सौतिन भाग
 मुहाग डहीली । नेकनहीं पियतेकहुँ बिछुरति तातेनाहिन कामदही-
 ली । सूरसखी बूझे यह कहिहैं आजुभई यहभेंट पहीली २३ ॥ राग
 आसावरी ॥ क्यों राधा फिरि सौनधरेउरी । जैसे नौवा अम्ब भवावर
 तैसेहिते यहसौन करेउरी । बातनहीं मुखते कहिआवति कातेरोभन

प्रयास हरेउरी । जानिनहीं पहिँचानि न कबहूँ देखतही चित तिनिहँ
 डरेउरी । साँची बात कहौ तुम हमसों सुनि यहशोच परेउरी । सूर
 प्रयास तनदेखिरहीकह लोचन यकटकते न टरेउरी २५ ॥ रागधनार्थ ॥
 कहाकहति तुमबात अलेखी । मोसों कहति श्यामतुम देखे तुमनीके
 करिदेखो । कैसेा बरगा भेयहै कैसेा कैसेा अङ्ग विभङ्ग । मोंचागे वह
 भेद कहौधौं कैसेाहै तनुरङ्ग । मैं देखेकी नाही देखेतुमते बारहजार ।
 सूरश्यामहै अँखियन देखति जाकोवार न पार २६ ॥ रागकान्तरो ॥ हम
 देखेयहिभांति कन्हाइ । शीशशिखण्ड अलक विद्युरमुख अवगानि
 कुण्डल चारुमुहाई । कुटिल भृकुटि लोचन अनियारे सुभग नासिका
 राजत । अरुगा अधर दशनावलि की द्युति दाडिम कनतनु लाजत ।
 ग्रीवहार मुक्ता बनमाला बाहुदण्ड गजशुण्ड । रोमावली सुभग बग
 पंगति जातनाभ हृदभुंड । कटिपटपीत मेखला कंचन सुभग जंघयुग
 जानु । चरगा कमल नखचन्द्रनहीं समसे सूरसुजान २६ ॥ रागबिलावल ॥
 बनेहैं विशाल कमल दलनैन । ताहूमें अति चारु बिलोकनि गूढभाव
 सूचत सखिसैन । बदनसरोज निकट कुंचितकच मनहुँ मधुपआये मधु
 लैन । तिलक तरागा शशि कहत कहुँक हँसि बोलत मधुर मनोहर
 बैन । मदन नृपति को देश महामद बुबिबल बसि न सकत उरचैन ।
 सूरदास प्रभुदूत दिनहिँदिन पठवत चरित चुनौतीदैन २७ ॥ रागवसन्त ॥
 मोहन बदन बिलोकत अँखियनि उपजतहै अनुराग । तरागाताप तल-
 फत चकोर शशि पियत पियूष पराग । लोचन नलिन नये राजत
 सखिपूरगा मधुकर भाग । मानहुँ अलि आनन्दमिले मकरन्द पीवत
 ऋतुफाग । भवैरिभाग भृकुटीपरकुंकुम चन्दनविन्दु विभाग । चाविक
 सोम शुक्र धनुघनमें निरखत मनबैराग । कुंचितकेश मयूरचन्द्रिका
 मण्डल सुमन सुपाग । मानहुँमदन धनुष शरलीन्हें बरखतहै बनबाग ।
 अधर बिम्बते अरुगा मनोहर मोहन मुरलीराग । मानहुँ मुधा पयोधि
 घोरिघन व्रजपर बरखन लाग । कुण्डल मकर कपोलन भलकतअम
 शीकरके दाग । मानोंसीन मकरमिलि क्रीडत शोभित सदन तडाग ।
 नासा तिलप्रसून पदवीपर चिबुकचारु चितलाग । दाडिम दशन मंद
 गति मुमुक्तनि मोहन मुर नर नाग । श्रीगोपाल रसरूप भरीहैं सूरसनेह

सुहाग । ऐसे गोपालसिंधु अवलोकति इनअखियन के भाग २८ ॥ राग
धनाश्री ॥ हमदेखे यहिभाँति गोपाल । छन्दकपट कछु जानत नाहीं मूखी
हम ब्रजवाल । भूँटीकीसाँची नहिं भावै साँचीभूँटी कबहुँ न होइ । साँ-
चीकी भूँटी करि डारै यह तासोइ जानै धनिजोइ । इति नन में दुराव
कछु नाहीं नाहीं भेदाभेद बिचार । सूरदासजे भूँटीमिलवैं तिनकी ग-
तिजानै करतार २९ ॥ राग आसावरी ॥ भूँटी बातनि होति भलाई । चोर
जुंवारि संग बहु करिये भूँटेको नहिं कोउ पतियाई । साँचीकी भूँटी
करि डारै पंचन में मर्यादा जाई । बोलि उठी यकसरखी बीचते कहयह
जाने लाजबझाई । यामें कछु नफा है उनको जातेमन ऐसीये आई । सूर
सुभाव परेउ ऐसोई को जानैरी बुद्धि पराई ३० ॥ राग धनाश्री ॥ ऐसे हम
देखे नन्दनन्दन । प्रियामसुभग तन पीतवसनजनु सनहु जलद परतडित
सुखन्दन । मन्द मन्द मुरलीरव गरजनि सुधावृष्टि बर्यत आनन्दन । मु-
बिबिध सुमन बनमाला उरमनु सुरपति धनुष नहीं यहि छन्दन । मु-
कुतावली बीच बगपंगति सुभगअङ्ग चरचित छवि चन्दन । सूरदास
अम् नीपतरोवरतर ठाढ़ सुरनर मुनिवन्दन ३१ ॥ राग देवगन्धार ॥ तुमको
कैसे प्रियामलगे । न्हातरहीं जलमें सबतरुणी तब तुमनेना कहाँ खगे ।
अङ्गअङ्ग अवलोकन कीन्हांकीन अङ्गपर रहेपगे । भलो न्हान जान
तनुभूल्यो नन्दसुवन तहँतेन डगे । जानति नहीं कहँतहिं देखे मिलिगइ
ऐसे सनहुसगे । सुरप्रियाम ऐसेतेंपेखे में जानति दुख दूरिभगे ३२ ॥ राग
मेरी ॥ तुमदेखे मैं नहीं पत्यानी । मैं जानति मेरीगति सबही यहै साँच
अपने मनआनी । जोतुम अङ्गअङ्ग अवलोक्यो धन्यधन्य सुख अस्तुति
गानी । मैं तो एक अङ्ग अवलोकत दोऊनयनगये भरिपानी । कुंडल
भलक कपोलनि आभा इतनहिं साँभ बिकानी । यकटकरही नयन
दोउहँधे सूरप्रियामको नहिंपहिंचानी ३३ ॥ राग नट ॥ अखिया अजान
भई । एकअङ्ग अवलोकत हरिके औरहुती सोगई । येभलींउयो चोर
घरघर निधिनलई । करत पलटत भोरभयो छुटकाय दई । पहिलेहि
रतिकरकन आरति करि ताहिरई । सूर सकति हठिदोय लगावति
पीरतई ३४ ॥ राग सारंग ॥ बिधातहिचक परी मैं जानी । आजुगोबिंदहि
देखिहों इहे समुक्ति पाछितानी । रचिपचि शोचिसँवारि सकल अङ्ग

चतुर चतुरङ्गदानी । दृष्टि न दई रोमरोमनिप्रति तितनेहिं कलानशानी ।
 कहाकरों अति मुख द्वैनयना उमंगि चलत पलपानी । सूरसुमेर समाय
 कहाधों बुद्धिनंशानि पुरानी ३५ दृष्टोनिटुर बिधनायहदेख्यो । जबतैं
 आजु नन्दनन्दन छवि बारबार करिपेख्यो । नखअंगुरी पगजानु जंघ
 कटि रचिकीन्हें गिरमान । हृदय बाहु करहस्त अङ्गअङ्ग मुखअति
 सुन्दरवान । अधर दशन रसना रसबाराओ अवराजयन अरुभाल । सूर
 रोमभरि लोचनदेतो देखत बनत गोपाल ३६ ॥ राग धनाश्री ॥ द्वै लोचन
 तुम्हरे द्वैमेरे । तुमप्रतिअङ्ग बिलोकन कीन्हें मैं भइमगन एकअङ्गहि
 हेरे । अपनेभाग्य सखीरी तुमतनमें मैं कहूँ गनेरे । जोबोइये सोइपै-
 लुनिये औरनहीं विभुवन भटभरे । प्रियारूप अवगाह सिंधुते पारहेत
 चढि डोंगिनकेरे । सूरदास तैसेयेलोचन किरपानाय बिनाकोपेरे ३७
 राग बिलावल ॥ सखी कैसेकै कहैं हरिके रूपके रसही । अपनेहिं तनमें
 भेद बहुतविधि रसना न जानत नयननकी दशही । जिनदेखेते आहि
 बचनानना जिनहिं बचन दरशन न तिसही । बिनबारी अतिउमंगि
 प्रेमजल सुमिरि सुमिरि वा रूपयशही । यहैसमुझि पछितात मनहिं
 मन कहाकरोंनो विधि न सही । सूरसकल अङ्गनिकी यहगति कहा
 रच्योविधि छापदपसुही ३८ ॥ राग आसावरी ॥ पावैकौन लिखेबिनुभाल ।
 काहको यदरस नहिंभावत कोउ भोजनको फिरत बिहाल । तुम ल-
 ख्योहरि अङ्गमाधुरी मेंनहिंदेखे कौनगोपाल । जैसेरंक तनक धनपावै
 ताहीमें वहहेतनिहाल । तुमहिंमोहिं इतने अंतरहै धन्यधन्य ब्रजकी
 तुमबाल । सूरदास प्रभुकी तुम संगिनि तुमहिंमिले वहदरश गोपाल
 ३९ ॥ राग कल्याण ॥ सुनहु सखी रावाकी बानी । हमको धन्य कहति
 आपुनधृग तहनिर्मल अतिजानी । आपुन रङ्गभई हरि धृगको हमहिं
 कहति धनवंत । यहपूरसाहमनिपट अधूरी हमअसंत यहसंत । धृगधृग
 हम धृग बुद्धि हमारी धन्य राधिका नारि । सूरश्यामको यह पहिं-
 चान्यो हम भइअन्त गँवारि ४० ॥ रागकेदारि । चंचरी ॥ धन्यराधा धन्य
 बुद्धि हेरी । धन्यमाता धन्यपिता धन्यभगति तुवधृग हमहिंनहिं सम-
 दासि तेरी । धन्यतुवज्ञान धनिध्यानधनि परमाननाहिं जानति आन
 ब्रह्मरूपी । धन्यअनुराग धनिभाग धन्यसौभाग धन्ययोवन रूपअति

अनूपी । हमबिमुख तुम समुख कृष्णाप्यारी सदानिगम मुख सहस्र अ-
 स्तुति बखानै । मूरप्रयामां श्याम नवलजोरी अटल तुमहिं विनुकान्ह
 धीरज न आलै ४१ ॥ राग बिहागरे ॥ जैसेकहे श्याम हैं तैसे । कृष्णारूप
 अवलोकनि सखिरीनयन होयजोसेसे । तैजुकहति लोचन भरिआये
 प्रयामकियोतहँदौर । पुण्यस्थल जानिके बिराजे बातनहीं यह और ।
 तेरेनयन बास हरिकीन्हों राधा आधाजानि । मूरप्रयाम नटवर बपु
 काछे निकसे उहिमगआनि ४२ अचानक आयगये तहँश्याम । कृष्णा
 कथा सबकहत परस्पर राधासिलि ब्रजबास । मुरली अबरधरे नटवर
 बपु कटिकछनी परवारों काम । सुभगमेर चन्द्रिका शीशपर आय
 गये पूरणा मुखवास । तरुतमालतर तरुणाकन्हई दूरिकरन युवतिन
 तनुकाम । मूरप्रयाम बंशीधुनि पूरत राधा राधा लैलै नाम ४३ ॥ राग
 बिलावल ॥ थकितभई राधा व्रजनारी । जोमन ध्याम करति अवलोकन
 तेइअन्तर्दर्यानी बनवारी । रतन जटितपग सुभग पाँवरी नूपुरधुनि कल
 परमरसाल । मानहु चरणा कमल दललोभी निकटहिबैठे बालमराल ।
 युगलजंघ मरकत मणिशोभा बिपरित भाँति सँवारे । कटि काछनी
 कनक सुद्धावलि पहिरे नन्ददुलारे । हृदय विशालमाल मोतिनबिच
 कौस्तुभमणि अति भ्राजत । मानहुनभ निर्मल तारागगा तामधिचन्द्र
 बिराजत । दुहुंकर मुरलिअवर परसाये मोहनराग बजावत । चमकत
 दशन मर्कट नासापुट लटकनैन मुख गावत । कुण्डल भलक कपो-
 लनि मानहुमीन सुधारस क्रीडत । शृङ्गटीधनुय नयन खंजनमनु उडति
 नहीं मनव्रीडत । देखिरूप व्रजनारि थकितभई क्रीटमुकुट शिरसेहत ।
 सेसे मूरप्रयाम शोभानिधि गोपीजनमन मोहत ४४ ॥ रागकल्याण ॥ जब
 ते निरखे चारु कपोल । तबते लोकलाज सुधि बिसरी दौराखे मन
 ओल । निकसे आनि अचानक तिरछे पहिरेपीत निचोल । रतन
 जटित शिरमुकुट बिराजत मणिमय कुण्डललोल । कहाकरो बरिज
 मुख ऊपर बिथके यदृपद गोल । मूरकहा करिये उतकर्षा बशकीने
 विनुमाल ४५ बनेहैं विशाल मुलोचन लोल । चितै चितै हरि चारु
 बिलोकनि मानहुं माँगत हैं मनओल । अवर अनूप नासिका सुन्दर
 कुण्डल मिलत सुदेशकपोल । मुखमुसकात महाछवि लागति अवर

सुनतधुति मोठेबोल । चितवतरहत चकोरचन्द्रज्यां नेक न पलक ल-
गावतडोल । सूरदास प्रभुकेवश ऐसे दासीसकल भईबिनमोल ४६ ॥
राग पूर्वी ॥ तरुतमाल तरि विभंगी तरुणा कान्हकुंवरटाढेहैं लांवरेवरन ।
मोरमुकुट पीटान्बर वनमालाविराजित देखतब्रजजन मनहरन । सरखा
अंश पर बासभुज दीन्हे मुरली अधरसालन बिश्वंभरन । प्रयासकसल
नयनको कौकौन्हांवश बिलोकनि श्रीगोवर्द्धनधरन ४७ ॥ राग भेरी ॥
जैसीजैसी बातकरै कहत न आवैरी । प्रयाससुन्दर अति मनभावैरी ।
मदनमोहन मृदवेरा बजावैरी । तानतरंग सरस करिकरि रिभावैरी ।
जंगम थावरकरै थावर चलावैरी । लहरि भुवंगतजिरुनुखआवैरी ।
वयोमजन अतिगति फूलवरयावैरी । कामिनि धीरजधरि सुकोजुक-
हावैरी । नन्दलाल ललना ललचावैरी । सूरदास प्रेमहरि हिये न स-
मावैरी ४८ ॥ राग पूर्वी ॥ चारुचितौनि चंचल डोल । कहिन जात मन
में अतिभावत कछु जो एक उपजत गतिगोल । मुरली मधुर बजावत
गावत चलत करज अरुकुण्डललोल । सब छविमलि प्रतिबिम्बवि-
राजत इन्द्र नीलमणि मुकुट कपोल । कुञ्चित केश सुगन्ध सुवसनो
उडिआये मधुपनिकेतोल । सूर शुभ्रनासिका मनोहर अनुमानत अनु-
राग अमोल ४९ ॥ राग गौरी ॥ नन्दनन्दन नन्दावन चन्द । यदुकुल नभ
तिथिदुतिय देवकी प्रकटे त्रिभुवनचन्द । जठर कुहते विथुर वारुणी
दिशि मधुपुरी सुखन्द । बसुदेव शम्भु श्रीशधरि आने गोकुल आनन्द
कन्द । ब्रजप्राची राकातिथि यशुमति शरदसरिसञ्चतु नन्द । उडगारा
सकलसखा संकर्यगा तम दनुकुलज निकन्द । गोपीजनतहँ धरिचकोर
गति निरखिमेति पलदन्द । सूर सुदेश कलायोद्धश परिपरणा परमा-
नन्द ५० नन्दनन्दन मुखदेखौ माई । अङ्गअङ्गछवि मनहुँउयेरवि शशि
अरु अमर लजाई । खंजन भीन कुरंग भृङ्ग बारिजपर अतिरुचिपाई ।
अतिमण्डलङ्गण्डल विबिसकरहि बिलसतमदन सदाई । कराठकपोत
कीर विद्रुम पर दाडिम कनन चुनाई । दुइशारंगबाहनपरमुरली आई
देतदुहाई । मोहे थिर चर बिरप बिहंगम वयोमबिमान थकाई । कु-
सुमांजलि बर्यत सूर मुनिसब सूरदास बलिजाई ५१ ॥ राग केदारो ॥ देखि
री देखि आनन्दकन्द । चित्त चातक प्रेमघन लोचन चकोर सुचन्द ।

चलतकुण्डल गण्डमण्डल भलक ललितकपोल । सुधासर जनुमकर
 क्रीडत इन्दु दराड हिंडोल । सुभग कर आनन समीप हरि मुरलिका
 यहिभाय । मनोउभैअभोज भाजन लेतसुधाभराय । प्रयासदेहदुकूल
 द्युति छवि लसत तुलसीमाल । तडित धन संयोग मानों सैनका शुक्र
 जाल । अलक अविरल चारु हांस बिलास भृकुटी भङ्ग । सूर हरिकी
 निरखिशोभा भई मनसाभङ्ग ५२ ॥ राग मलार ॥ देखोसाई सुन्दरता को
 सागर । बुधिविवेक बल पार न पावत मगनहात मननागर । तनुअति
 प्रयास अगाध अम्बुनिधि कटिपटपीत तरंग । चितवत चलत अधिक
 छवि उपजत भँवरपरत प्रतिध्वंग । नयनमीन मकराकृत कुण्डल भुज
 बल सुभग भुजङ्ग । सुक्तामाल सिलीमनो मुरसरि द्वैसरिता लिये संग ।
 कनकमुकुट किंकिया शशि भूयरा अवलोकनि मुखदेत । जनु जल-
 निधिमथि प्रकर्तकयो शशि थी अरु सुधासमेत । देखिस्वरूप सकल
 गोपीजन रहीं बिचारि बिचारि । तदपि सूर तरिसकी न शोभा रही
 प्रेम पचिहारि ५३ ॥ राग नट ॥ साधवजू के बदनकी शोभा । कुटिल
 कुन्तल कमलप्रति मनो मधुपरसलोभा । भृकुटि इसि नवकंज परसत
 सदृश चंचल मीन । मुकुटकुण्डल किरिया रवि छवि परम बिगसित
 कीन । मुरभिरैरा परागसजित मुरलिधुनि अलिगुंज । निरखि सुभग
 सरोज मुदित मरालसम शिशुपुंज । दशनदामिनि बिम्ब मिलि मनो
 जलजमध्य अकास । निगमबाराी नेति क्यों कहिसकै मुरजदास ५४
 राग गौरी ॥ देखिसखी हरिको मुखचास । मनहुं छुडायलियो नंदनन्दन
 वा शशिको सतसास । रूप तिलक कच कुटिल किरियाछवि कुंडल
 कल बिस्तार । पत्रावलि परिवेय सुमनशशिमिलयो मनहुं गुडदार ।
 नयनचकोर बिहंग सूरसुनि पियत न पावत पास । अब अबसु सेमो
 लागतुहै जैसे भूँदायारु ५५ ॥ राग कान्हरो ॥ देखुरी हरिके चंचलतारे ।
 कमल मीनकी कहाइतीछवि खंजनहू न जात अनुहारे । वे देखिनि-
 रखि नमित मुरलीपर करमुखनयन एकभयेचारे । मनो सरोज बिधु
 बरु बंचिकारि करतनाद बाहनचुचुकारे । उपसाएक अनूपसउपजति
 कंचित अलक मनोहरभारे । बिडरत बिभुकिजाति रथतेमृग जनुस-
 शक्ति शशिलंगारसारे । हरिप्रति अंगबिलोकिमानिरुचि ब्रजबनितानि

प्राणा धनदारे । सूरप्रयाम मुख निरखि मगनभई यह बिचारि चित
 अनत न दारे ५६ ॥ रागपूरबी ॥ हरिमुख निरखत नयन भुलाने । ये सधु-
 कर रुचिपंकज लोभी ताहीते जुडवाने । कण्डल मकर कपोलनि के
 दिग जनुरवि रैन विहाने । भुवसुन्दर नयनि गति निरखत खञ्जरी
 सीनलजाने । अरुणा अधर द्विजकोटि वज्रयुति शशिगणा रूपसमाने ।
 कंचित अलक शिलीमुख मिलि मानों लैमकरंद निदाने । तिलक
 तिलाट कराट मुकुतावालि भूषणा मणि में खाने । सुरदासस्वामी अङ्ग
 नागरते गुणाजात न जाने ५७ ॥ रागकेदारी ॥ देखिरी नवल नन्द कि-
 शोर । लकुट सेां लपटाय दाढे युवतिजन मनचोर । चारुलोचन हंसि
 बिलोकनि देखिके चितभोर । मोहनी मोहन लगावत लटक मुकुट
 भुकोर । अवरुण धुनिधुनि नाद मोहत करत हिरदय फोर । सूरअङ्ग
 विभङ्ग सुन्दर छवि निरखि दगातोर ५८ ॥ राग कान्हरी ॥ ब्रजबनिता
 देखति नंद नन्दन । नवधन नीलबरगा ता ऊपर खोरिकिये तनु चं-
 दन । कनक बरगा कटिपीत पिछौरी उर भ्राजित बनमाल । निर्मल
 गगन प्रवेतबादर तापर मनो दामिनी जाल । मुकुतामाल बिपुलवग
 पंगति उडत एकभङ्ग ज्योति । सूरप्रयाम छविनिरखत युवती हरय प-
 ररपर होति ५९ ॥ रागमूछा विलवल ॥ प्रातसमय आवत हरिराजत । रतन
 जटित कण्डल मखि अवरुण तिनकी किरिया मूरतन लाजत । सातें
 रासि मेलिद्वादश में कटिमेखला अलंकृत साजत । पृथ्वी मयो पिता
 सेां लैकर मुख समीप मुरलीधुनि बाजत । जलधि ताततेहि नामकराट
 के तिनकेपंख मुकुट शिरसाजत । सुरदास कहै सुनहुं गूढहरि भक्तनि
 भजति अभक्तनभ्राजत ६० ॥ रागनट ॥ हरितन मोहनीमाई । अङ्गअङ्ग
 अनङ्ग सतसत बरगा नहिं जाई । कोउ निरखि बिधुरी अलकमुख
 अधिक सुखदाई । कोउ निरखि रहि भाल चन्दन एक चितलाई ।
 कोउनिरखि रहिचारु लोचन निमिय भरसाई । सूरप्रभुकी निरखि
 शोभा कहत नहिं आई ६१ ॥ राग गुजरी ॥ प्रयाम अङ्ग युवती निरखि
 भुलानी । कोउ निरखति कण्डलकी आभा इतनोहिं माँझदिकानी ।
 ललित कपोल देखिकोउ अटकी शिथिलभई ज्योपानी । देह रोहकी
 छविनहिं काहू हरपाति कोउ पडितानी । कोउ निरखतही ललित

नासिका यहकाहू नहिँजानी । कोउनिरखति अवरनकी शोभा फुर-
 तिनहीं मुखवानी । कोउ चकत भइ दशन चमकपर चकचौंधी अकु-
 लानी । कोउनिरखति द्युतिचिबुक चारुकी सूरतरुणा विततानी ६२
 राग विलावल ॥ प्रयामहृदय वरमेतिन माला । विर्यकित भई निरखि
 ब्रजवाला । अवरया थके मुनि बचन रसाला । नयन थके दरशन नंद-
 लाला । कंबुकंठ भुजदंड विशाला । करकेयूर कुचन नगभाला । प-
 ल्लवहस्त सुद्रिका भाजै । कौस्तुभमणि हृदयस्थल छाजै । रोमावली
 वरिगानहिँजाई । नाभिस्थलकी सुन्दरताई । कटिकिंकिणी चारुमणि
 संयुत । पीतांबर कटि तट छवि अद्भुत । युगल जंघकी पट्टर कोहै ।
 तरुणी मनधीरजको जोहै । जानुजघनकी छवि न सँवारै । नारिनिकर
 मनबुद्धि विचारै । रतन जटित कंचनकल नूपुर । मंद मंद गति चलत
 मधुरसुर । युगल कमल पदनख मणिशोभा । संतनमन संतत जहँलो-
 भा । जोजहि अंगसु तहाँ भुलानी । सूरप्रयाम गतिकाहु न जानी ६३॥
 राग केदारी । चर्वरी ॥ प्रयाममुख राशिरस राशिभारी । रूपकीराशि मुख
 राशियोवनवती थकितभइ निरखिनव तरुणानारी । शीलकीराशि
 यश राशि आनंद राशि नोलनव जलद छवि बदनकारी । दयाकी
 राशि विद्याराशि नर्दयराशि दनुजकुल प्रहारी । चतुराईराशि छल
 राशिकलराशि हरिभजहिँ जेहिहेत तेहिदेनहारी । सूरप्रभुप्रयाममुख
 धाम पूरणाकाम लसत कटिपीत मुख मुरलिधारी ६४ ॥ रागबिहागरे ॥
 सुन्दरबोलत आवतबैन । नामाने तेहिंसमै सखीरी सबतनु अवरया कि
 बैन । रोमरोम में शब्द सुरति की नखशिखलों चखयेन । इतेमाननी
 औचंचलता सुनी न समुझीसैन । तबते विथकि ह्वै रही चित्रसी पलन
 लगत चितचैन । सुनहुसूर यहसाँच कि संधमसपन किधौं दिनरैन ६५
 राग मलार ॥ नयनासाई भूले अनत न जात । देखु सखी शोभाजु बनीहै
 साधव तन मुसकात । दाहिम दशन निकट नासाशुक चौंचचलाय न
 खात । मनोरतिनाथ हाथ भृकरीधनु तेहिअवलोकित डेरात । बदन प्रभा
 मुखचंचल लोचन आनंद उर नसमात । मानहुँ भौंहजुवारत जीतेशशि
 न चलत मृगमात । कुंचितकेश मधुरधुनि मुरली सूरदास सुरसात । म-
 नहुँ कमलपर कोकिल कंजत अलिगारा उपर उड़ात ६६ राग कान्हरी ॥

प्र्यामकमल पदनखकी शोभा । जेनख चन्द्रइन्द्र शिरपरसे शिव वि-
रंचिमन लोभा । जेनखचन्द्र सनकमुनि ध्यावत नहिँ पावत भरमाहीं ।
तेनखचन्द्र प्रकट व्रजयुवती निरखि निरखि हरयाहीं । जे नखचन्द्र
कसिान्द्र हृदयते सकेनिमिय न टारत । जेनखचन्द्र महाशुनि तारत प-
लक न कहूँ बिसारत । जेनखचन्द्र भजन खलनाशन रसाहृदय जे पर-
सति । सूरप्र्याम नखचन्द्र बिमलछवि गोपीजन मिलि दरशाति ६७ ॥
राग धनानी ॥ व्रजयुवतीहरि चरणा मनावैं । जेपद कमल महाशुनि दुर्लभ
ते सपनेहुँ नहिँ पावैं । तनु त्रिभङ्ग युगजान सकपद ठाढे यकदरशाये ।
अंकुश कुलिस बज्रध्वज परगट तरुणी मन भरमाये । बड़ छवि देखि
रही यकटकही यहमन करति बिचार । सुरदास मनो अरुणा कमल
परमुखमा करत बिहार ६८ ॥ राग रामकली ॥ पियपद कमलको मकरंद ।
मलिन मत्तमनो लघुपद हरिदियय निरसकुसुंद । असृतहंते असलअति
निजद्रव्यैरूप अनन्द । परमशीतल जालि शंकर शिरधरेउ तजिचन्द ।
सर्पशैल न कमलसागर नहिँ असुर सुरदंद । सुरपावन लोक बैजल सुर
सरी जमुकन्द ६९ ॥ राग विलावल ॥ देखिसखी हरि अङ्ग अनूप । जानु
युगल शुठि जंघबिराजत कोवरगौ यहरूप । लकटो लयेलटकि भयेठाढे
एकचरणाधरवारै । मनहुनीलमसिादम्भ कामरचि एकलपेटि सुधारै ।
कबहुँ लकटते जानुलौं हरि अपने सहज चलावत । सुरदास मानहुँ कर
भाकर बारम्बार डुलावत ७० ॥ राग नट ॥ कटितटपीत वसन सुदेश ।
मनहुँ नवघन दासिनी तजिरही सहज सुवेश । कनकमसिा मेखला
राजत सुभग साँवल अङ्ग । मनोहंस रसाल पंगति नारि बालक संग ।
सुभग कटि काठनी राजतिजलज केशरखगड । मूरप्रभु अङ्ग निरखि
साधुर मदनतन बरेउदंड ७१ तरुणी निरखि हरिप्रति अङ्ग । कोउनि-
रखि नखइन्दु भूली कोउचरणा युगरङ्ग । कोउनिरखि नूपुर रहीथकि
कोउनिरखि युगजान । कोउ निरखि युगजंघ शोभा करति मन अनु-
मान । कोउ निरखि कटिपीत कठनी मेखला रुचिकारि । कोउनि-
रखि हृदनाभि की थकिडारि तनमन वारि । चारु रोसावली हरिके
चारुउदर सुदेश । मनहुँ अलिश्रेणी बिराजतबने सकहिभेय । रही यक
टक नारिठाढी करति ब्रुद्धि बिचारि । मूरआगम कियो नभते यमुन

५५६ सूरसागर अनुरागलीला रागकल्पद्रुम ।

सहस्रमधारि ७२ रंजित रोमराजिव रेख । नीलघनमनु धूमधारा रही
सहस्रशेष । निरखि सुन्दर हृदयपर भृगुपाद परम सुलेख । मनहुं शो-
भित अश्र अन्तर शंभुभूषणा भेष । मुकुटमाल नक्षत्रगणा सम अर्द्धचन्द्र
विशेष । मज्जल उज्ज्वल जलदमलयज प्रबल निरन अलेख । केकिकच
सुरचापकीछवि दशन तडित छुपेख । सूरप्रभु अवलोकि आतुर तजेनैन
निमेष ७३ ॥ रागमौरी ॥ हरिप्रतिअङ्ग नागरि निरखि । दृष्टि रोमावली
पररहि परत नाहिँन परखि । कोउ कहति यहकाम सरनी कोउ कहति
नाहिँयोग । कोउ कहति अलिवाल पंगति जुरेसक संयोग । कोउ कहति
यहिकाम पठयो डसेजिनिये काहु । श्यामरोमावलीकी छवि सूरनाहिँ
निबाहु ७४ ॥ राग आसावरी ॥ चतुरनारि सबकहतविचारी । रोमावली
अनूप विराजै यमुनाकी अनुहारी । उरकलिंगते धंसि जलधारा उदर
धरिणा परबाह । जातिचली अतितेजधारहै नाभीहृद अवगाह । भुजा
दंद तट सुभय घाटघट बनमाला तलकूल । मोतिनसाज दुहंधा मानों
फेनलहरि रसफूल । श्यामरोमावलीकी छवि देखति करति विचारि ।
बुद्धिरचति तरिसकति न शोभा प्रेमबिषय ब्रजनारि ७५ ॥ रागकल्याण ॥
रोमावलीरेख अतिराजत । सूससशेष धूमकीधारा नवघन ऊपर भ्रा-
जत । भृगुपद रेख श्यामउर सजनी कहा कहां ड्योँकाजत । मनहुं मेघ
भीतर शशिदुतिआ कोटिकाम तनुलाजत । मुक्तामाल नंदनंदनउर अर्द्ध
सुखा घटकांति । तनुयीखशड मेघ उज्ज्वल अति देखि महाबलभाँति ।
बरहा मुकुट इन्द्रधनु मानहुंतडित दशन छवि लाजत । यकटकर रही
विलोकि सूरप्रभुके तनुकी कहहाजत ७६ ॥ राग आसावरी ॥ श्यामहृदय
जलसुतकीमाला अतिहि अनूपस छाजैरी । मनहुं बलाक पातिनवघन
पर यह उपमा कछु भ्राजैरी । पीत हरितशित अरुणा मालबन राजत
हृदय विशालैरी । मानहु इन्द्रधनुय नभसंडल प्रकट भयोतेहि कालैरी ।
भृगुपद चिह्न उरस्थल प्रकटै कौस्तुभमणि दिग दरशातरी । बैठी जनु
यदबन्धु सकसंग अर्द्धनिशा मिलि बिहरतरी । भुजा विशाल श्याम
सुन्दरकी चन्दनखौरि चढायेरी । सुरसुभग अंग अङ्गकी शोभा ब्रज
ललना ललचायेरी ४७ ॥ रागमलार ॥ निरखिसखी सुन्दरताकी सींव ।
अवर अनूपसुरलिका राजत लटक रहति अवधींव । मंदमंद सुरपूरत

कोहन रागललार बजावत । कचहुँक रीक्षिमुर्लिपर गिरिधर आपुहि
रत्नभरि गावत । हँत लसत दशनावलि पङ्कति व्रजवनिता मनमोहत ।
मरकत मरिापुटविच मुक्ताहल बदनभरेमनुमाहत । मुखविगसत शोभा
यकआवत मनोराजीव प्रकास । मूरअरुता आगमन देखिकै प्रफुलित
भये हुलास ७८ ॥ राग टोड़ी ॥ गोपीजन हरिबदन निहारति । कुञ्चित
अलक विद्युरिरहे भुवपर तापर तनमन वारति । बदन सुधासरसीरुह
लोचन भृकुटीदोउ रखवारे । मनहुँ मधुप मधुपानहिँ आवत देखिडरत
जियभारे । यकयक अलक लटक लोचनपर यह उपमाइकआवति ।
मनहुँ पन्नगिनि उतरि गगनते दलपर फराहिँ रसावति । मुरलीअधर
धरेकल पूरित मंदमंद सुरगावत । मूरश्याम नागर नारिन के चंचल
चितहिँ चुरावत ७९ ॥ राग बिलावल ॥ देखि सखी यह सुन्दरताई ।
चपलनयनविच चारुनाशिका यकटक नयनरही तहँ लाई । करति
बिचार परस्पर युवती उपमाआनति बुद्धिवनाई । मानहुँखञ्जन विच
शुकबैदोयहकहिँकै मगजातलजाई । कहुयकतिलप्रसूनकी आभा मद
सधुकर जहँ रहेउ लुभाई । मूरश्याम नासिका मनोहर यह सुन्दरता
उनकहँ पाई ८० मनोहरहँ नयननकी भाँति । मानहुँ दूर करत बल
अपने शरदकमलकी काँति । इन्दीवर राजीवकुमंशय जीते सबगुणा
जाति । अतिआनन्द सब्रीडाताते विगसत दिन अस राति । खञ्जरीट
मृगमीन बिचारत उपमाको अकुलाति । चञ्चलचपल चारु अवलो-
कनि चित्त न सकसमाति । जबलागि परत निषेय अन्तरा युगसमान
पलजाति । मूरदास यह रसिकराविका निमिपर अतिअनखाति ८१
राग रामकली ॥ आजु सखि देखे प्रथाम नयेरी । निकसे आय अचानक
अबहीं इत फिरिफिरि चितयेरी । मैं तबते पछिताति यहैतनु नय-
नन बहुतभयेरी । जो बिबना इतनीजानतहै कतदृगदोय दयेरी । सब
देलेउं लाखलोचनकहँ जो कोउ करत नयेरी । हरि प्रतिअंग बिलो-
कन को मन आपुन वे पठयेरी । अपनीचोप बहुतकहँपैये ये हरिसंग
गयेरी । थकेचरणा सुनि मूर मनोगुणा मदनबारा विधयेरी ८२ ॥ राग
गुजरी ॥ देखिरी हरिके चञ्चलनयन । खञ्जन मीन मृगज चपला इन
पटतर सकैसैन । राजिबदल इन्दीवर सतदल कमल कुशेशय जाति ।

निशि मुद्रित प्रातिहि ये बिगसत ये बिगसत दिनराति । अरुणा प्रवेत
सित भलक पुलकप्रति कोबरगौ उपमाई । मनो सरस्वती गंग यमुन
मिलि आगम कीन्हे आई । अवलोकनि जलधार तेजअति तहां न
मन ठहरात । सूरश्याम लोचन अपारछवि उपमासुनि सरसात ८३ ॥

राग मोरठ ॥ देखिसखी मनमोहन मनचोरत । नयनकटाक्ष बिलोकनि
मधुरी सुभग भृकुटि बिचि मोरत । चन्दनखौरि लिलाट प्रयासकेनि-
रखत अतिमुखदाई । मानहुं अर्द्धचन्द्रतट अहिनी सुधाचुरावनआई ।
मलयजभाल भृकुटिकीरेखा कबिउपमा यकल्यावत । मानों यकसँग
गंगा यमुन नभ तिरछीधार बहावत । भृकुटी चारु निरखि ब्रजसुन्दरि
यह मनकरति बिचार । सूरदासप्रभु शोभासागर पावत कोउ न पार

८४ ॥ राग रामकली ॥ देखिरी देखि कुगडललोल । चारुश्रवणान ग्रहित
कीन्हे भलक ललितकपोल । बदनमण्डल सुधासरवर निरखि मन
भयो भीर । मकर क्रीडत गुप्तप्रगटत रूप जल भक्तभीर । नयनमीन
भुवंगिनी भ्रुव नासिकास्थलबीच । सरसमृगमद तिलकशोभा लसति
हैं लगकीच । मुखबिकान सरोज मानहु युवति लोचनभृङ्ग । बिश्रुति
अलकें परीमानों प्रेमलहरितरङ्ग । प्रयासमुखछवि अमृतपूरणा रच्यो
काम तड़ाग । सूर प्रभुकी निरखि शोभा ब्रजतरुणा बड्ढभाग ८५ ॥

रागधनाश्री ॥ हरिमुख निरखि नागरनारि । कमलनयनके कमल बदन
पर बारिज बारिज बारि । सुमतिमुन्दरी परमि प्रियारस लम्पटमां-
डोआरि । हारिजोहारि जो करतिवसीठी प्रथमहिँ प्रथम चिन्हारि ।
राखतिओट कोटियतननिकरि भुकिभुमि नाखति भारि । खञ्जन
मनहु उडनकहँआतुर सकत न पंखपसारि । देखित्तरूप प्रयासमुन्दर
को रही न पलकसम्हारि । देखहु सूर अधिक सूरत्वन तऊ न माना
हारि ८६ हरिमुख किधौं मोहनीमाई । बोलत वचन मंत्रसो लागत
गति मति जातिभुलाई । कुटिल अलक राजत भुव ऊपर जहँ तहँ रहे
बगराई । प्रयासफाँसि मनफँस्यो हमारो अबसमुझी चतुराई । कुगडल
ललित कपोलन भलकनि इनकीमति में पाई । सूरश्याम युवतीमन
मोहत ये सब करतसदाई ८७ ॥ राग नट ॥ निरखिरूप नागरिनारि ।
मुकुटपर मनअटकिलटक्यो जातनहिँ निरवारि । प्रयासतनकी भलक

आभा चन्द्रिका भलकाय । बारवार बिलोकि थकिरहि नयननहिं
 ठहराय । प्रयास सरकतमणि सहानग शिखानुत्थत मोर । देखिजल-
 धर हरयउरपर नहीं आनँदधोर । कोउ कहति सुरचाप मानों गगन
 भरो प्रकाश । थकित ब्रजलललना जहाँतहँ हरय कबहुं उदास । नि-
 रखि जो जेहिअंगाराची तहीं रहीभुलाय । सूरप्रभु गुराराशि शोभा
 राशि जन सुखदाय ८८ ॥ राग केदारे ॥ देखिरी देखि शोभा राशि ।
 कामपटतर कहादीजे रमा जिनकी दासि । मुकुटशीश शिखराडसेहैं
 निरखिरही ब्रजनारि । कोटिसुरको दगडआभा भरकिडारोंजारि ।
 केशकुञ्चित विथुरधुवपर बीचशोभाभाल । मनहुँचन्दहि अबैजान्यो
 राहुधरेउ जाल । चारुकुण्डल सुभगयवगान कोरुके उपमाय । कोटि
 कोटि कला तरनि छवि देखि तनु भरमाय । सुभग मुखपर चारुलो-
 चन नासिका यहि भांति । मनो खञ्जन बीच शुक्र मिलि बैठहैं यक
 पांति । सुभग नासा तर अधर छवि रस भरे अरुणाय । मनो बिम्ब
 निहारि मुखभुव धनुयदेखि डराय । हँसत दशननि चमकताई बज्रकन
 रचिपांति । दामिनी दडिमनहीं समकियो अतिमन भांति । चिबुक
 पर चितचित चोरावत नवल नंदकिशोर । सूरप्रभुकी निरखिशोभा
 भई तरुणीभोर ८९ तनुमन नारिडारतवारि । प्रयासशोभा सिंधुजान्यो
 अङ्गअङ्ग निहारि । पचिरहीं मनजान करिकरि लहति नाहिनतीर ।
 प्रयासतनु जलरासि पूरगा महागुण गम्भीर । पीत पट फहराति मानों
 लहारि उठत अपार । निरखिछवि थकितीर बैठीकहं बारनपार । च-
 लत अङ्गविभङ्ग करिके भौंहभाव चढाय । मनोबिचबिच भौंहडोलत
 चित परत भरमाय । अवरण कुण्डल मकरमानों नयनमीन विशाल ।
 सलिल भलकनि रूपआभा देखुरी नँदलाल । बाहुदराड भुजङ्गमानों
 जलविमध्य बिहार । मुकुट मालमनो सुरसरी लेचली है धार । अङ्ग
 अङ्ग भूयगाबिराजत कनकमुकुट प्रभास । उदधिमथिनवप्रकट कीन्हों
 श्रीसुधापरगास । चकतभईब्रियनिरखिशोभा देहगति बिसराय । सूर
 प्रभु छबिराशि नागरजाति जाननिराय ९० करिमन नँदनन्दन ध्यान ।
 सेइचरणा सरोज शीतल तजिबियय रसपान । जानुजंघ विभङ्ग सुन्दर
 कलित कञ्चनदराड । काछिनी कटिपीत पटद्यति कमल केसरखंड ।

मनुसराल प्रबालछौना किङ्किरी कलराव । नाभिहृद रोमावली अ-
 लिचले येनसुभाव । मरिाकशठ मुक्तामाल मलयज अङ्गुलर बनमाल ।
 सुरसरी शशिनीर सानहु लताप्रयाम तमाल । बाहुपरिा सरोजपल्लव
 राहेमुख सृष्टवेरा । अतिविराजत बदन विधुपर सुरभि मरिाडत रेरा ।
 अरुणा अधर कपोल नासा परम सुन्दर नयन । चलत कुण्डल गराड
 मराडलमतहुं निरत मयन । कुटिल कुचभ्रुव तिलकरेखा शीशसिखी
 शिखराड । मनोदमन हैशर संधाने देखि धनको अराड । सूरश्रीगोपाल
 की छविदृष्टि भरिभरिलेत । प्राणार्पितकी निरखिशोभा पलक परत
 नदेत ६१ ॥ रागनट ॥ सजनी निरखिहरिकोरूप । मनसिबचसिबिचारि
 देखो अङ्गअङ्ग अनूप । कुटिलकेश सुदेश अलिगारा बदन शरदसरोज ।
 मकर कुंडल किराणाकी छवि दुरत फिरत मनोज । अरुणाअधर क-
 पोल नासा सुभग ईशदहास । दशन की द्युतितडित नवशशि भृकुटि
 मदनविलास । अङ्गअङ्ग अनङ्गजीते रुचिर उरवनमाल । सूरशोभा ह-
 दय पूरा देत मुखगोपाल ६२ नयनन ध्याननन्दकुमार । शीशमुकुट
 नियङ्गराजत नहिँन उपमापार । कुटिलकेश सुदेश भाजतमनहुंमधुकर
 जाल । रुचिरकेशरि तिलकदीन्हें परमशोभाभाल । भृकुटि बङ्कटचारु
 लोचन नहीं युवती देखि । मनो खञ्जन चापडरडर उडतनहिं तेहि
 लेखि । मकर कुंडल गराड भलमल निरखिलज्जितकाम । नासिका
 छविकीर लज्जित कविन वरणात नाम । अधर बिद्रुम दशन दाडिम
 चिबुक है चितचोर । सूरप्रभु मुखचन्द्र पूरा नारिनयन चकोर ६३
 राग कान्हो ॥ अलकनिकी छवि अलिक लगावत । खञ्जनमीन मृगज
 लज्जित भये नयन नचावत गतिनहिंपावत । मुखमुसकानि आनिउर
 अन्तर अंबुज बुधिउपजावत । सकुचतअरुबिकसतवा छविपर अनुदिन
 जन्म गवाँवत । पूरानहीं सुभग प्रयामल कोयवपि जलधर ध्यावत ।
 बसन समान होत नहिंहादक अङ्गन भाप दै आवत । मुक्तादामबिलो-
 कि बिलखि किरअराल बलाकवनावत । सूरदासप्रभु ललितत्रिभङ्गी
 सन्मय मन्तहिं लजावत ६४ ॥ राग केदारो ॥ राय सो हमारे श्यामलाल
 हो नयन विशालहों । मोहीतेरी चालहो तुमपूरा श्रीगोपाल हो ॥
 भ्रुव ॥ मोरमुकुटडोलनिमुखमुरली कलमन्द । मनोतमाल सिखाशिखी

नाचत आनन्द । मकराक्षत कुराडल कबिराजत लोलकपोल । इयद
 अधर मुसकनि बिच मधुरबोल । चपल चितवनि मनोहर राजत ध्रुव
 भङ्ग । धनुषबाणा डारिके वशहेत कोटिअनङ्ग । वदन सुधाको सरोवर
 कुटिल अलकपारि । व्रज युवती मृगनीर चितिन को फँदवारि । पी-
 ताम्बर कबि निरखत दामिनि द्युति लजाई । चमकि चमकि सावन
 मनुघनमें दुरिजाई । चरणा कमल अवलम्बित राजित बनमाल । प्रफु-
 लित ह्वै लतामानेचढीतस्तमाल । सूरदास वा कबिपर वारों तनुप्रान ।
 गिरिधर पिय देखिदेखि कहाकरौ अनुमान ६५ ॥ रागसारंग ॥ सुन्दर
 मुखकी हौ बलिबलि जाउं । लावनिनिधि गुणानिधि शोभानिधि नि-
 रखि निरखि जीवत सबगाउं । अङ्गअङ्ग अतिअमित माधुरी प्रकटित
 रस्मि रुचिर ठाउंठाउं । तामें मृदुमुसकानि मनोहर न्याय कहत कवि
 मोहननाउं । लैनसैन देदैजब हेरत ता कबिपर बिनमोल बिकाउं । सूर-
 दासप्रभु मतमोहन कबि यह शोभा उपमा नहिंपाउं ६६ देखिसखी
 सुन्दर घनश्याम । सुन्दर मुकुट कुटिल कच सुन्दर सुन्दरभाल तिलक
 कबिधास । सुन्दर ध्रुवसुन्दर अतिलोचन सुन्दरअवलोकनि बियास ।
 अति सुन्दर कुराडल श्रवणानवर सुन्दर भलकनि रीभूतकाम । सुन्दर
 चारु नामिका सुन्दर सुन्दर हृदय बिराजत दाम । सुन्दरभुजा पीन
 कटि सुन्दर सुन्दरजटित मेखलाग्राम । सुन्दर जंघजानु युगसुन्दर सुन्दर
 पदहिरदै बियास । सुन्दरभक्त मनोरथ पूरणा सुन्दर सुरउधारननाम ।
 ६७ ॥ रागसूत्र ॥ मैं बलिजाउं श्याममुख कबिपर । बलिबलि जाउं कु-
 टिल कचबिद्युरी बलिबलिजाउं भृकुटी ललाटतर । बलिबलिजाउं चारु
 अवलोकनि बलिहारीकुराडलकी । बलिबलिजाउं नामिका सुललित
 बलिहारी वा कबिकी । बलिबलिजाउं अरुणा अधरनकी बिद्रुमबि-
 म्बलजावन । मैं बलिजाउं दशन चमकनिकी वारों तडित निवासन ।
 मैं बलिजाउं ललितढोड़ीपर बलिमोतिनकी माल सूरनिरखि तनमन
 बलिहारीबलिबलि यशुमातिलाल ६८ ॥ रागसारंग । चर्चरी ॥ देखिदेखिरी
 नन्दकुलके उधारी । मातपितु दुरित उद्धरन व्रजउद्धरन धरणा उद्धरन
 शिरमुकुटधारी । पतितउद्धरन अपभक्तउद्धरन प्रभुदीनउद्धरन कुराडल-
 निधारी । जगत उद्धरन तिहंलोक के उद्धरन गलहि उद्धरन पशुपीडि

धारी । पूतना उद्धरन दनुजकुल उद्धरनदरणा उद्धरन सुखसुरलिधारी । शकट उद्धरन केशी प्रलम्ब उद्धरन बका उद्धरन अरुणा अवर धारी । अधा उद्धरन ग्वालगायके उद्धरन वृषभउद्धरन बनमालधारी । बच्छ उद्धरन ब्रह्मउद्धरन येई प्रभुयज्ञ उद्धरन धरणी उवारी । कालीउद्धरन फनफन सहित उद्धरन दावाउद्धरन अगमलयधारी । ग्राहउद्धरन गज-राज उद्धरन ये शिलाउद्धरन कटिपीतधारी । यदुकुल उद्धरन द्रौपदी उद्धरन आपगतजय विजयके धारी । वासउद्धरन प्रह्लादके उद्धरन प्रबलनरसिंह अवतारधारी । हिरण्यकशिपु उद्धरन हिरणयाक्षके उद्धरन वेदउद्धरन नवभुजाधारी । रावणउद्धरन कूम्भकरणा उद्धरन येत्रिशिर उद्धरन प्रभुचक्रधारी । धर्मउद्धरन येइकर्मउद्धरन येसुभगकटिकिङ्किनी पीतधारी । सुरउद्धरन सुरलोकउद्धरन हरिवंश उद्धरन येईसुरारी ६६
 राग धनाश्री ॥ नदनंदन मुखदेखीनोके । अङ्गअङ्ग प्रतिकोटि साधुरी निरखिहोत सुखजीके । सुभगाग्रवगा मणिगुराडल आभाभलककपोल-न पीके । दहदह अमृतमकर क्रीडत मनोयह उपमा कछुहीके । और अङ्गकी सुधिनाहं जानैकरै कहतिहैनीके । सुरदासप्रभु नटवरकाछे रहतहै रतिपतिबीके १०० ॥ रागरामकली ॥ देखुरीदेखि कुराडलभलक । नयन द्वैछबि धरोकैसे लगततापरपलक । लसत चारुनूपोल दुहुंविच सजल लोचनचारु । मुखसुधासरमीनमानो मकरसंगविहारु । कुटिल अलक सुभायहरिके भुवनिपररहेआय । मनोमन्मथ फाँदफंदनिमीन बिबितरसयाय । चपललोचन चपलकुराडल चपलभृकुटी बंक । सखा व्याकुल देखिअपने लेतवनत न शंक । सुरभुनंदसुवनकी छविबरणा कापैजाय । निरखिगोपी निकरविथकी विधिहि अतिरिसपाय १०१
 रागजेतश्री ॥ विधना अतिही पोचकियोरी । कहाबिगारकियो हमबा-को ब्रजकाहे अवतार दियोरी । यहतीमन अपने जानतहै सते घर क्यों निदुर हियोरी । रोमरोमलोचन यकटककरि युवतिन प्रतिकाहे नठियोरी । अँगियां द्वैछबिकी चमकनि वह हमती बाहति सबै पि-योरी । सुनसजनी यहकरनी अपनी अपनेही रिसमानिलियोरी । हम ती पापकियो भुगतेको पुण्यप्रकट क्यों जात छियोरी । सुरदास प्रभु रूपसुधानिधि पुठ्योरीबिधिहीनबियोरी १०२ ॥ रागधनाश्री ॥ सुनरीसखी

वचन यक मोषों । रोमरोम प्रतिलोचन चाहति है साबित हैं तोसों ।
 में त्रिधनासों कहां कहुनाहीं नितप्रति तिनकोकोसों । येऊजो नीके
 दोउ रहते निरखि निरखि रतिहोसों । यकयक अङ्गअङ्ग छवि धरती
 में जु कहतितेरीसों । सूरकहातुम कहतिअयानी कासपरेउ सबजीसों ।
 १०३ ॥ राग कान्हरो ॥ कहकाहको दोयलगावैं । निमिसों कहाकहति
 कहिविधिसों कहनयननि पछितावैं । श्यामहिं तुमकैसे करिजानति
 येऊ नितुर कहावैं । सरा में और और छंगशोभा जो ये देखन पावैं ।
 जबहीं यकटक करि अवलोकति तबहीं वै भलकावैं । सूरप्रथाम को
 चरितलखैको येई बैरबहावैं १०४ ॥ राग नट ॥ लहनी कर्मके पाछे ।
 दिभो आपनो लहैसाई मिलै नाहिंवाछे । प्रकटहीहैं श्याम टाढे कौन
 अङ्ग किहिरूप । लहेउकाह कहोमोसों प्रथाम हैं टगरूप । प्रेमयाचक
 धनी हरिके रतनपुटकहलेहि । अमृतसिंधु हिलोरिपूरगा कृपादरशन
 देहि । पाइये सोई संखीरी लिख्योजितनो भाल । सूरउत कहु कभी
 नाहीं छविसमई भोपाल १०५ ॥ राग सूहा ॥ देखुसखी अवरनकीला-
 ली । सरासरकत ते सुभग कलेवर येसेहैंबनमाली । मनों प्रातकीघटा
 सांवरी तापर अरुणाप्रकाश । ज्यों दामिनि बिच चमकिरहतिहै फह-
 रत पीतसुबाश । कीधौंतरुतमाल बेलीचाहि युगफल बिम्बसुपाक्यो ।
 नासीकीर आय मनो बैठोलेत बनतनहिं ताक्यो । हँसत दशन यक
 आभा उपजत उपमा यदपि लजाई । मनों नीलमरिा पुट मुक्तागण
 वदनभरीबगराई । किधौंत्रजकनलालनगनि खचितापरविद्रुम पांति ।
 किधौंसुभग बंधूक सुमनतरु भलकत जलकनि कांति । किधौंअरुणा
 अम्बुजबिच बैठी सुन्दरताई आई । सूरअरुणा अधरनकी शोभा बर-
 शात बरशिा न जाई १०६ ॥ राग धनाश्री ॥ प्रथामरूप देखनकी साधमेरी
 साई । कितनो पचिहारी रही देतनहिं देखाई । मनतो निरखत सु-
 अङ्ग में रही भुलाई । मोसों यह भेदकहौ कैसे यह पाई । आपन अङ्ग
 अङ्ग विलोकि मोको विसराई । बारबार कहत यहै तू क्यों नहिं
 आई । कबहूँ न जात साथ बाँह बुलाई । सूरश्याम छवि आगाध निर-
 खत भरसाई १०७ ॥ राग विलावल ॥ सुनहुसखी में बूझति तुमसों काहू
 हरिको देखोहै । कैसेतनु कैसेरंग देखियत कैसे विधिकर लेखोहै ।

कैसेमुकुट तिलकहै कैसे। सुभग भालध्रुव नीकोहै। कैसेनयन नासिका
 कैसे अवगानि कुण्डल पीकेहैं। कैसे अधर दशनद्युति कैसे चिबुक
 चारु चितचोरतहैं। कैसे निरखि हंसत काहूतन हंसतहुबदनसकोरत
 हैं। कैसे उरमाला है कैसे कैसे भुजा बिराजत हैं। कैसे करणहुंची
 हैं कैसे कैसे अंगुरी राजत हैं। कैसे रोमावली श्याम की नाभिचास
 कटि सुनियतु हैं। कैसे कनक मेखला कैसे कछनी यहमन सुनियत
 हैं। कैसे जंघजानु कैसेदोड कैसे पदनख जानतिहैं। सूरश्याम अंगअंग
 की शोभा देखेकी अनुमानति हैं १०८ ॥ राग रामकली ॥ ऐसे सुने नन्द
 कुमार । नखनिरखि शशिकोटि वारति चरणा कमल अपार । जानु
 जंघनि हारिकर भाकरनि डारतवारि । काछनीपर प्राणावारत देखि
 शोभामारि । कटिनिरखि तनु सिंहवारत किंकिनी जुमराल । नाभि
 हृदलखि आपु वारतरोमवलि अलिमाल । हृदय मुक्तामाल निरखत
 वारिअवलि बलाक । करजकर परकमल वारतचलति जहतहैं साक ।
 भुजनिपर वरनाग वारत गयेभागि प्रताल । ग्रीवकी उपमा नहीं कहूँ
 लसति परभ रसाल । चिबुकपर चित वारिडारत अधर अंबुजलाल ।
 बंधूक बिद्रुम बिम्बवारत तेभये बेहाल । बचन सुनि कोकिला वारत
 दशन दासिनि कांति । नासिका पर कीर वारत चारु लोचनभांति ।
 कञ्ज खञ्जन मीन मृग शीवकनि डारति वारि । भृकुटि पर सुरचाप
 वारत तरंगि कुण्डल हारि । अलकपर वारत अंधारी तिलकभाल
 सुदेश । सूरप्रभुशिर मुकुटधारी धरेनटवर भेष १०९ ॥ राग सारंग ॥ ऐसी
 बिधि नंदलाल कहतसुने माईरी । देखै जो नयन रोमरोम प्रति सुभा
 ईरी । बिधना द्वैनयनरचे अङ्ग ठानिबान्यों । लोचन नहिं बहुत दिये
 जानिके भुलान्यों । चतुरता प्रवीणाता बिधाताकी जान्यों । अबकैसे
 लागत हमहिं बताव अग्रान्यों । त्रिभुवन पति तरुणा कान्ह नटवर
 बपुकाहे । हमको द्वैनयन दियेतेऊ नहिं आके । ऐसे बिधिके बिबेक
 कहाकहाँवाके । सूरकाहुँ पाऊँजोकर अपनेताको ११० ॥ राग नट्य ॥
 मुखपरचन्द्रदरौवारि । कुटिलकच भँवरवारोभौंहपर धनुवारि । भाल
 के शरितिलक छविपर मदनशतशतवारि । मनोँ चलिवहिसुधाधारा
 निरखिमनदेउ वारि । नयनखञ्जन मृग जुवारोँ कमलके कुलवारि ।

चिबुकपर चित्तोवतवारों प्रासावारोंवारि । निरखिकुंडल तरसावा-
 रों कुचा यवगानि बारि । भलक ललितकपोल छवि पर मुकट शत
 शतवारि । नासिकापरकीश्वारों अवर बिद्रुमवारि । दशनशक नवज
 वारों बीज दाडिमवारि । सनोंसुरसरि यमुन गङ्गा उपमा डारोंवारि ।
 सूरहारिकी अङ्गशोभा कोसकै निरवारि १११ ॥ राग सोरठ ॥ श्यामउर
 सुवर्निधि देहमानों । मलय चन्दनतन लेप कीन्हें बरसा बरसा यह
 जानों । मलयतनु मिलिलसति शोभा महाजल गम्भीर । निरखिलो-
 चन धर्मित पुनि पुनि धरतिनहिं मनंधीर । उरज भँवरी भँवर मानो
 नीलमणिाकी कांति । भृगुचरसा हृद चिह्नये सब जीवजल बहुभांति ।
 श्यामबाहु विशाल केशरिखौर बिबिध बनाय । सहज निकसे मगर
 मानो कुलजखेलत आय । सुभग रोमावलीकी छबिबली दहतेधार ।
 सूरप्रभुकी निरखिशोभा स्तुवति बारम्बार ११२ मनमधुकर पदकमल
 लोभानों । चित्तचक्र अरु चन्दनख अटक्यो यकटक पलक भुलानों । बि-
 नहीकहे गइये उठिगेते जातनहीं में जान्यों । अबदेखौ तनमें वैनाहीं
 कहा जियहिधौं आन्यों । तबतू फेरि तके नहिं मोतन नख चरणानि
 हितसान्यों । सूरदास वैआप स्वारथी परवेदन नहिं जान्यों ११३ ॥ राग
 गौरी ॥ ब्रजलंलना देखति गिरिधरको । यकयक अङ्ग अङ्ग पररीभी
 अरुरीभी सुरली धरको । मानोचित्र कीसीलिखि काढी सुधिनाहीं
 मनधरको । लोकलाज कुलकानिभुलानी लपटी श्यामसुंदर को । कोउ
 रिसाय कोउकहेजायकहु न डरीकाहूडरको । सूरदास प्रभुसंमनमानों
 जनम जतम परतरको ११४ ॥ रागधनाश्री ॥ गोपी श्यामरंग भूली । प्रेरणा
 मुख चन्द देखि नयन कमल फूली । कीधौं नवजलद स्वाति चातक
 मनलाये । कीधौंनारि वृन्दही पहर बुन्दपाये । रबिछवि कुंडल नि-
 हारि पङ्कज बिकसाने । कीधौं चक्रवाकनि रतिके रसही रतिमाने ।
 कीधौं मृगयूथजुरे सुरलीधुनि रोभे । सूरश्याम मुखकुराडल छविभीजे
 ११५ ॥ राग बिहागरी ॥ श्यामभुजाकी सुन्दरताई । चन्दनखौरि अनूपम
 राजत सो छविकही न जाई । बड़े विशाल जानुलों परसत यक उपमा
 मनआई । मनो भुजङ्ग गगनते उत्तरत अघमुख रहेउभलाई । रतनजटित
 पहुँचीकर राजत अंगुरी सुन्दर भारी । सुरमनो फरिा शिरमणि सोहत

५६६ सुरसागर अनुरागलीला रागकल्पद्रुम ।

फनफनकी छबिन्यारी ११६ ॥ रागमाह ॥ प्र्यामसखि नीके देखेनाहिं ।
चितवतही लोचनभरि आवत बारबार पछिताहिं । कैसेहु करि यक-
टक मैं राखति नेकहिमें अकुलाहिं । निमिष भनो छबि पर रखवारे
ताते अधिकै डराहिं । कहाकरै इनका कह दूयगा इनतौ अपनीकीन्हीं ।
सूरप्र्याम छबिपर मन अटक्यो उनसब शोभालीन्हीं ११७ ॥ रागगौरी ॥
मनलोभ्यो हरिरूप निहारि । जादिनप्र्याम अचानक आये तबतेभौहिं
बिसारि । इन्द्रनसंग लगायगयो ह्वै डेरा निकस्यो भारि । ऐसे हाल
करतरी कोऊ रही अकेली नारि । फेरि न मेरीह सुधि लीन्हीं आप
करत सुखभारि । सूरप्र्याम उरइनोदेहीं पठवत कहेनहमारि ११८ ॥

अथ रागलीला ॥

राग रामकली ॥ पुनिपुनि कहतिहै ब्रजनारि । धन्य बड़भागिनी राधा
तेरेबश गिरिधारि । धन्य नन्दकुमार धनितुम धन्यतेरी प्रीति । धन्य
दोउतुम नबलजोरी कोककलानि जीति । हमबिमुख तुमकया सङ्गिनि
प्राणायक द्वै देह । एकमन यकबुद्धि यकचित दुहुन एक सनेह । एक
सया विनु तुमहिं देखे प्र्यामघरत न धीर । सुरलिमें तुवनाम पुनिपुनि
कहतहैं बलबीर । प्र्यामसगाते परखिलीन्हीं महाचतुर सुजान । सूर
के प्रभु प्रेसबश कौन तो सरिआन १ ॥ राग बिहानरो ॥ राधापरसु निर्मल
नारि । कहतिहैं मनकर्मना करिहृदय दुबिधा टारि । प्र्यामकोयक
तुमहिं जान्यों दुराचार न ओर । जैसेघट पूरगा न डोलै अधखुल्योडग
डोर । धनीधन कबहूँ न प्रकटै परै अनत छपाइ । तौ महानग प्र्याम
पायो प्रकटि कैसेजाइ । कहतिहैं यहबात तोसों प्रकट करिहैंनाहिं ।
सूरसखी सुजान राधा परस्पर मुसकाहिं २ ॥ रागगौरी ॥ प्र्यामकोतैंही
पहिंचाने । सांचीप्रीति जानि मनमोहन तेरेहाथ बिकाने । हमअप-
राध कियो कहि तुमसों हमहीं कुलटानारि । तुमसों उनसों बीचनहीं
कहु तुमदोऊ बरनारि । धन्यसोहाग भायहै तेरो धनि बड़भागीप्र्याम ।
सूरदासप्रभुसो पतिजाके तैंसी जाकेबाम ३ ॥ रागवोरठ ॥ राधा प्र्याम
की प्यारी । कृष्णपति सर्वदातेरे तू सदानारी । सुनतबाणी सखीमुख
की जियभयो अनुराग । प्रेमगडगड रामपुलकित समुक्ति अपना भाग ।
प्रीतिप्रकरन कियोचाहै बचनबोलि न जाय । नंदनन्दन कामना यक

रहै नयननि छाये । हृदयते कहूँ तरतनाहीं कियो निश्चलवाम । सूर
 प्रभु रसभरी राधा दुरत नहीं प्रकास ४ ॥ राग जेतयो ॥ सुनि मजनी मेरी
 इकबात । तूतौ करति बड़ाई मन मेरो शरमात । मोसों कहति प्रयास
 तुमएकै यह सुनिकै शरमाति । सक अङ्गको पार न पावति ब्रह्मते होति
 भरमाति । यह मरति द्वै नयन हमारे लिखी नहीं करमाति । सूर रोस
 प्रतिलोचन देतो बिधनापर तरमाति ५ ॥ राग कन्यान ॥ जो बिधना अप
 बश करि पाऊँ । तीसखि कहेउ होय कछु तेरो अपनी साध पुराऊँ ।
 लोचन रोमरोम प्रति माँगों पुनि पुनि वास दिखाऊँ । यकट करहै प-
 लकनहिं लागै पडति नई चलाऊँ । कहा करौं छवि राशि प्रयास घन
 लोचन द्वै नहिं टाऊँ । सते पर ये निमिय सूर सुनि यह दुख कहा सुनाऊँ
 ६ ॥ राग बिलावल ॥ कहा करौं बिधि हाथ नहीं । वह सुख यह तनु दशा
 हमारी नैननके रिस मरत महीं । अङ्ग अङ्ग कौनी बिधि बनरे द्वै नैना
 देखति जबहीं । ऐसो कौन ताहि धरि आनै कहा करौं खी भूत मनहीं ।
 बड़ो सुजान चतुरई नीकी जगत पिता कहियत सबहीं । सूर श्याम अव-
 तार जानि ब्रज लोचन बहु न दिये हमहीं ७ अवसमुक्ती यह निदुर बि-
 धाता । ऐसेहि जगत पिता कहवावत ऐसे घातक सोहै धाता । कैसे
 जान चतुरई कैसे कौन बिबेक कहाँको ज्ञाता । जैसे दुख हमको यह
 दीन्हों तैसे याको होय निपाता । द्वै लोचन तन में कर दीन्हें याही ते
 जान्यो पितु माता । सूर श्याम छबिते अघात नहिं बार बार आवत
 अकूलाता ८ ॥ राग मूहो ॥ द्वै लोचन साबित नहिं तेऊ । बिनु देखे
 कल परत नहीं सरा ऐसे पर कीन्हों यह टेऊ । बारबार छवि देख्यो
 चाहत साथी निमिय मिलेहैं तेऊ । तूतौ ओट करत सराहीं सरा देखत
 ही भरि आवत द्वैऊ । कैसे मैं उनको पहिंचानों नयन बिना लिखिये क्यों
 भेऊ । येतौ निमिय परत भरि आवत निदुर बिधाता दीन्हें जेऊ । कहा
 भई जो मिली प्रयासको तू जान्यो जाने सबकेऊ । सूर श्यामको नाम
 श्रवण सुनि दर्शन नीके देत न वेऊ ९ प्रयासहिं मैं कैसे पहिंचानों ।
 क्रमक्रमसों इक अङ्ग निहारति पलक ओट ताको नहिं जानों । पुनिलो-
 चन ठहराय निहारति निमिय मेदि वह छवि अनुमानों । और भाव
 औरै कछु शोभा कहा सखी कैसे उर आनों । सरा सरा अङ्ग अङ्ग छवि

अगणित पुनि देख्यो फिरिके हठानों । सूरदास स्वामीकी सहसा
 कैसे रसना सकबखानों १० ॥ रागस रंग ॥ प्रयास सेां काहेकी पहिँचा-
 नि । निमित्यनिमित्य बहुरूप नईकबिररतिकीजै जेहिजानि । यकटक
 रहति निरन्तर निशिदिन मनमति शोचतिसानि । एकौपल शोभाकी
 सीमा सकति न उरमहिं आनि । समुक्ति न परै प्रकटही निरखतआ-
 नंदकी निधिखानि । सखियह बिरह संयोगकी समरस दुखसुखला-
 भकी हानि । मिरति न घृतते होम अग्नि रुचिसूर सुलोचन बानि ।
 इतलोभी उतरूप परमनिधि कोउनरहत नितसानि ११ ॥ राग रामकली ॥
 कहाकरों नीकेकरि हरिको रूपरेख नहिँपावति । संगहि संग फिर-
 ति निशिबासर नयन निमेष न लावति । बँधो दुष्टिज्यो गुडीडोरि
 वशपाछे लासीधावति । निकटभयेमेरीकाया मोकोदुखउपजावति ।
 नखशिख निरखि निहारेउचाहति मन पूरति अति भावति । जाने
 नहीं कहाँते निजकृवि अङ्गअङ्ग में आवति । अपनीदेह आपुको बैरनि
 दुरत न दुरे दुरावति । सूरश्याम सेां प्रीति निरन्तर अन्तर मोहिँ क-
 रावति १२ ॥ राग धनाश्री ॥ जो देखों तौ प्रीति करोंरी । संगहि रह्यो
 फिख्यो निशिबासर चिततेनेक नहीं बिसरोंरी । कैसे दुरत दुराये मेरे
 उनबिनु धीरज नहीं धरोंरी । जाउ तहीं जहँरहे प्रयास धन निरखति
 यकटक ते न दरोरी । सुनिरी सखी दशा यह मेरी सो कहि धौं अब
 कहा करोंरी । सूरश्याम लोचन भरि देखों कैसे इतनी साध पुरोंरी
 १३ ॥ राग विलावल ॥ हरि दरशनकी साधमुई । उडिये उडीफिरति नय
 ननि संग फरफूटे ज्यों आकरुई । जान्यों नहीं कहाँ ते आवति वह
 मुरति मनमाँह उई । बिन देखेकी बिद्या बिरहिनी अतिज्वर जरति न
 जातिहुई । कहुव कहतिकहु कहिआवति प्रेमपलक असस्वेदचुई । सु-
 खति सूरधान अंकुरसेां त्रिनु बर्या ज्यों मूलतुई १४ ॥ राग धनाश्री ॥ सु-
 निरी सखीदशा यहमेरी । जबतेमिले प्रयासधन सुन्दर तबतेसब बिस-
 रेरी । तत्सखाउनकेसंगहि मोकोअंगनि प्रतिअनङ्गकीढेरी । चपलातस
 अतिहीचंचलतादशन चमक चकचौंधि धनेरी । चमकत अङ्ग पीत
 पर चमकत चमकत माला मोतिनकेरी । सूरसमुक्ति विधनाकी कर
 णी अतिरिसकरति सोई मोहितेरी १५ ॥ राग सारंग । चर्चरी ॥ आजुके

घोयको सखी अनितनीं जो लाखलोचन अंगअङ्ग होते । परती साव
मेरेहृदय साँझकी देखती सबैछवि प्रयासकोते । चितलोभीनयनधार
अतिहीखच्छकड़ाबह सिंधु छविहै अगाधा । रोमजितने अङ्गननहोते
संगरूपततीनिदरि कहतिराधा । अवगामुनिमुनिरूपदहैकैसे लहेनयन
कछुगहैरसना न ताके । देखिकोऊहे कोउहुनिकेरहे जीभबिनु सोका
कहानाहँनयननजाके । अङ्गबिनुहै सबैनहींखेकोवैमुनतदेखत जबैकहे
न लोरे । कहैरसना सुजत अवगा देखत नयन मूरखब भेदगुणि मनीहँ
तेरे १६ ॥ राग थनाथी ॥ इतनेहु में घडिलाई कीन्ही । रसना अवगा न-
यनके होतेकी रसनाहीको नहिंदीन्ही । बैरकियो बिधना रचि हम
सां बाकी जाति अबैहम चीन्ही । जड़ते प्रकट भयोहै छुनियत तैसिय
जड़ता आपुन लीन्ही । वारसही में सगनराधिका चतुर सखी तबहीं
लिखलीनी । सूरप्रयासके रङ्गहिराची तरति नहीं जलते ज्यों सीनी
१७ ॥ राग मोरठ ॥ धन्यधन्य बड़भारिनि राधा । नबलप्रयासनबलातुम
हंहौ दोउतुम रूपअगाधा । मैं जानी यहबात हृदयकी रहीनहीं कछु
साधा । संगहि रहति सदा पियप्यारी कोड़ा करति उपाधा । कोक
कला व्युत्पन्न भईहौ कान्हरूप तनूआधा । प्रेम उमँगि तेरेमुख प्रक-
त्यो अरसपरस अवराधा । मूरदास प्रभुमिले कृपाकरि गयेदुरित दुख
दाधा ॥ राग थनाथी ॥ कहिराधिका बातअब साँची । तुमअब प्रकटकही
मोआगे प्रयासप्रेम रसमाची । तुमको कहां मिले नंदनंजन जब उनके
रंगराची । खरिंक मिलेकी गोरस बेंचत की बियहरते बाची । कहे
बनै काँड़हु चतुराई बातनहीं यह काची । मूरदास राधिका सयानी
रूपराशि रसपाँची १८ ॥ राग गौरी ॥ कबरीमिले प्रयासनहिँ जानों ।
तेरीसां करि कहति सखीरी अजहूं नहिँ पहिँचानों । खरिंक मिले
की गोरस बेंचतकी अंबहींकी कालि । नयननि अन्तरहोत न कबहूं
कहति कहारी आलि । सकौ पलहरि होतनन्यारे नीकेदेखी नाहिँ ।
मूरदास प्रभु तरत न टारे नयननि सदा बसाहिँ २० ॥ राग कासावरी ॥
प्रयासमिले स्वीहँ सेसेमाई । मैंजलको यमुनातट आई । औचक आये
तहां कन्हाई । देखतही मोहनी लगाई । तबहींते तन मुरति गाँवाई ।
सूखेसारग गई भुलाई । बिनदेखे कलपरै न माई । मूरप्रयास मोहनी

लगाई २१ ॥ राग टोड़ी ॥ तबहीते हरिहाथ बिकानो । देहगेह सुधिसवै
 भुलानी । अङ्गअङ्ग शिथिलभई जैसेपानी । ज्यों त्यों करि गृहपहुंची
 आती । बोलेतहाँ अचानकबानी । दारेदेखे प्रयासबिलानी । कहाकहाँ
 सुनसखी सशानी । सूरप्रयास ऐसी सतिदानी २२ ॥ राग धनाषी ॥ जादिन
 ते हरिदृष्टिपरैरी । तादिनतेइनमेरेनैननि दुखसुख सबबिसरेरी । मोहन
 अङ्ग गोपाललालके प्रेमपियुधभरेरी । बसेउहाँ मुसुकानि बाँहलै रचि
 रुचि भवन करेरी । पठवति हौ मन तिनहिँ मनावन निशिदिन रहत
 अरेरी । ज्यों ज्यों सानकरति उलटावति त्योंत्यों हात खरेरी । पचि
 हारी समुझाई शोचिपचि मुनिपुनि पाँथपरेरी । सो सुखसूर कहाँलों
 बरगों यकटकते न टरेरी २३ ॥ राग अडाना ॥ कोजानेहरिकहा कियोरी ।
 मनसमुझे मुखकहत न आवै कहु यकरस लोचन जुपियोरी । टाढी
 हुती अकेली आँगना आनि अचानक दरश दियोरी । सुधिबुधि कहु
 न रही तेहि अवसर मेरो मनउन पलटि लियोरी । तासुखहेत दहत
 दुखदासुया क्षयाक्षया जरत जुझात हियोरी । सूरसकल आनन उरअ-
 न्तर उपमाकोपावति न बियोरी २४ मेरोमन गोपाल हरेउरी । चित-
 वतही उरपैठि नयनमगकाजानों बहिकहा करेउरी । मातपिता पति
 बन्धु सजनसखि आँगनलों सबभवनभरेउरी । लोक वेद प्रतिहार पह-
 रुआ तिनहुँपै राख्यो न परेउरी । धरमधोर कुलकानि कुंचीकरि ते-
 हितारो देहूरि धरेउरी । पलककपाट कदिन उरअन्तर येते यतनकहु
 न सरेउरी । बुधिविवेक बलसहित सँध्योमचि सुधन अचल कबहुँ न
 टरेउरी । लियोचुराय चितैचित सजनी सूरशोच तनुजात जरेउरी २५
 मेरोमन तबते न फिरेउरी । भयो जोसंग प्रयाससुन्दरके तहँतेकहुँ न
 टरेउरी । यौवनरूप गर्वधनु सचि सचि हाँउरमें रुचिसों जो धरेउरी ।
 कहाकहाँ कुलशील सकुचसखि सर्वस हाथ परेउरी । बिनुदेखे सुख
 मन हरिको यह निशिदिन रहे अरेउरी । सूरदास अबकहा करौँहाँ
 हृदय अतिप्रेमभरेउरी २६ ॥ राग सारंग ॥ यहसब मैंहीं पोचकरी । प्रयास
 रूप निरखति नैननिभरि मोहनफंदपरी । वयकिशोर कमनया सुख
 मैं लुब्धतहू न डरी । अबछाबि गईसमाय हियेमें ठौरतहूँ न टरी । अति
 सुखदुख संभ्रम व्याकुलता बिधुमुख सनमुखरी । बुधिविवेक बल ब-

चन विवर्णहै आनंद उमगिभरो । यद्यपिभील सततसुनि सुरज संगहु
 देनअरी । तद्यपिसुख दुरलिका बिलोदति उतति अपनउरी २७ ॥
 राग आभापरी ॥ सखिरानाजानोतवहीति नोको प्रयास कहावो कीन्हारी ।
 मेरेहुँछपरे जादिते जानधान हरिलीन्हारी । द्वारे आयगये ओचक
 ही में अङ्गनहीं ठाढीरी । जनमोहन मुखदेखि रहीतव कामउपयातनु
 बाढीरी । नयन सैन देदै हरिभोतन कहुयकभावबतायोरी । पीताम्बर
 उपरैती करगहि अपने शीशफिरायोरी । लोकलाज गुरुजनकीशंका
 कहत न आवै बानीरी । सूरप्रयासमेरे आँगन आये जातबहुत पछि-
 तानीरी २८ ॥ राग केरठ ॥ सनहरिलीन्हों कुंवरकन्हई । जवतेप्रयास
 द्वारहूँ निकसे तवतेरोस्वहिँ घरन सुहाई । मेरे हेत आयभयेठाढे मोते
 कहुनभईरीमाई । तवहींतेव्याकुल भइडोलति बैरीभये मानपितुभाई ।
 मोदेखत शिरपाग सँवारी हँसिचितये छबिकही न जाई । सूरप्रयास
 गिरिवर वरनागर मेरोमन लेगयेछुभाई २९ ॥ राग धनार्था ॥ प्रेमसाहित
 हरितेआये । कहुसेवा लैकरी कि नाहीं क्रिषोवैसही उनाहँ पढाये ।
 काहेते हरिपाग सँवारी क्योंपीताम्बर शीशफिराये । गुप्तभाव तोसों
 कहु कीन्हों घरआये काहे दिखराये । अतिही चतुर कहाअतिरादा
 बातनहीं हरिक्यों न भोराये । सूरप्रयास को बशकरिलेती काहेको
 रहते पछिताये ३० ॥ गुरुजन में बैठेआये हरिविन्दी सँवारनसिसपाइ
 लागी । चतुर नाथकहु पागमशकी मनहीं मन रोके गुप्तभेद प्रीति न
 जागी । हस्तकमल हरिहेरि हृदय धरै भासिनी उत आपु कंदलागी ।
 सूरदास अतिचतुरनागरी पियअतिनगरि दुहुकहेउ मनमें सुहागभागी
 ३१ प्रयास अचानक आयगयोरी । होंअपने गुरुजन में बैठी देखतही
 अनुराग भयोरी । तव यकबुद्धि करीमें ऐसी विन्दीसोंकर परस कि-
 योरी । आपु हँसे उतपाग मसकिहरि अन्तय्याभी जानि लियोरी ।
 लैकर कमलअधर परसायो देखिहर्ष पुनिहृदय धरेउरी । चरसाकुये
 दोउ नयन लगाये में अपने भुजअंक भरेउरी । ठाढेरहे द्वारअति हित
 करि तवहींते मनचोरि गयोरी । सुरजप्रभु कहुदोय न मेरो उत गुरु
 जन इतहेत नयोरी ३२ करत कहुवै नाहिं बनी । हरिआये चितवतही
 रहिसखि जैसे चित्रवनी । अतिआनन्द हरयि आसन उर कमलकुली

५७२ सूरसागर अनुरागलीला रागकल्पद्रुम ।

अपनी । न्योछावरि अंचलकी फरहति अर्धनयन जलधारधनी । गुरु
जन लाजकछू न सक्यो कहिछुनि सनमुवि सजनी । हृदय उमगि कुच
कलश प्रकटभये दूरीतरकि तनी । अब उपजति अतिलाज सनहिंसन
समुभक्त निजकरनी । सूरदास मेरीजइ सतिगति प्रभुमग सांभगानी ३३
सेवासानिलई हरिमेरी । अबकाहे पछितति राधिका प्रीतिजातकर
फेरी । गुरुजनमें भावहिकीपूजा औरकहोंकछुहेरी । मोहन अतिमुख
पायगयेरी चाहतिहैं कहमेरी । तेरेबशभये कुंवरकन्हई करतिकहा
औसेरी । सूरप्रियाम तुमको अतिचाहत तुमप्यारी हरिकेरी ३४ ॥ राग
कल्याण । आसावरी ॥ राधाभाव कियेयह नीको तुम बेदी उनपाग छुही ।
सेसेभेद कहाकोउ जानै तुमजानोंके गुनबही । तुमजुहार उनको जब
कीन्हें तुमको उनहुं जुहारकियो । सकैप्राग देहद्वै कीन्हे तुमवे एक
नहींबियो । तुमपग परसि नयनपर राख्यो उनकरकमल हृदयधरेउ ।
सूरप्रियाम हिरदै तुम्हंराखे तुम उबकोलै कंठभरेउ ३५ ॥ राग बिहागरी ॥
अरीसाई सकगाँवके बसत एकवार हरिकीन्हें पहिचानि । निशि
दिन रहत दरशकी आशामिले अचानकआनि । भागदशा आँगनही
आये सुन्दर सर्वहुजानि । नीकेकरि देखनहुं न पाये बहि न जायकुल
कानि । कल न परत हरिदरशन विनुरी मोहिंपरी यहवानि । सूरज
दास बिकालीरीहें नन्दसुवनके पानिईकहाकरीं गुरुजनडरमान्यो ।
आयेप्रियाम कौनहित करिके मैं अपराधिन कछू न जान्यो । ठाढ़े
प्रियामरहे मेरे आँगन तवतैं सन उनहाथ बिकान्यो । चूकपरी मोको
सबही अह कहान्करीं गइभूलि सयान्यो । बै उतहीको गयेहरथि सन
मेरी करणी समुक्ति अयान्यो । सूरप्रियाम संगम उठिलाख्यो मोपर
वारम्बार रिसान्यो ३७ ॥ राग सारंग ॥ अचानक आयेरी हरिमेरे चि-
तैतब होरीछवि निहारि । कुण्डल लोल कपोल रहेकच अमजलसों
सनु मकरकंजडारि । गुरुजन बिचमें आँगनठाही अति दरशन दीयो
सायाकरि । सूरदास प्रभु अंतरयामी वेहँसि चितयेमुखकरि ३८ ॥ राग
काफी ॥ मैं अपने कुलकानि डरानी । कैसेप्रियाम अचानक आये मैं से-
वानहिंजानी । बहैचूक जियजानि सखीछुनि मनलैगये चुराई । तनते
जातनहीं मैं जान्यो लियोप्रियाम अपनाई । सेसेदगत फिस्तहरि घर

घर भुलिकियो अपराध । सूरप्रयास मनदेहि न मेरो पुनिकरिहौ अनु-
 राध ३६ ॥ मोहिंसवारे सजनी तवते गृहमोको न सुहाई । द्वार अचानक
 कहूँ निकरेरी सुन्दरबदन दिखाई । ओढ़ेपीरी पामरीरी पहिरेलाल
 निचोल । भौहें काट कटीलियां सखि वह कीन्ही विनुमाल । मोरमु-
 कूट शिरसोहई अरु अधरधरे मुखवेन । मोहन मूरति हृदयबसे छवि
 लागि रहि दुहनैन । प्रयास रूप मेरो मनगीधयो भलोदुरो कहैकोय । सूर
 दास प्रभु संगगये मनमनु उनहींको होय ४० ॥ राग मोरी ॥ मोहनविन
 मन न रहे कहा करौं साईरी । कोटिभाँतिकरि करिकरि रही समु-
 भ्ताईरी । लोकलाज कौनकाज मानत यदुराईरी । हृदयते वह तरत
 नहींमुख सुन्दरताईरी । सेसेहैं विभङ्गी नवरङ्गी मुखदाईरी । सूरप्रयास
 विनुरहैं ऐसी बनिआईरी ४१ ॥ मनमेरो हरिमाथ गयोरी । द्वारेआय
 प्रयासघर सजनी हंसि मोतनतें संगलयोरी । सेसो मिल्योजाय मोको
 तजिमानों उतहिन पोधि जयोरी । सेवा चूकपरी जोमोतें मनउनको
 धौं कहाकियोरी । मोकोदेखि रिसात कहत यह तेरेजिय कछु गर्व
 भयोरी । सूरप्रयास छविअङ्ग भुलानो मनकमबच मोहिं छाँडि दयो-
 री ४२ ॥ राग रामकली ॥ मैं मन बहुतभाँति समुभायो । कहाकरों दर-
 शन रस अटक्यो बहुरि नहीं घटिआयो । इननयननि के भेद रूपरस
 उरमें आनि दुरायो । बरजतही बैकाज सुखतज्यों पलट्यो जो न सि-
 द्दायो । लोकवेद कुलनिदरि निडरहैं करत आपनोभायो । मुखछवि
 निरखि चौंधि निशि खगज्यों हटि आपुनपौ बंधायो । हरिकोदेख
 कहा कहिदीजै यह अपने बलवायो । अति विपरीत भईसुनि सरज
 मुरझामदनजगायो ४३ ॥ राग बिलावल ॥ मनाहिं बिनाकह करौंसहीरी ।
 घरतजिके कोउरहत परायें मैं तबहीते फिरति बहीरी । आयअचा-
 नकही लैगयेहरि बारबार मैं हटाकि रहीरी । मेरो कहेउ सुनत काहे
 को गैलगये हरिके उतहीरी । ऐसीकरत कहंरी कोऊ करौं मैं हारि
 रहीरी । सूरप्रयास को यह न बभिये दीठ किये मन को उनही
 री ४४ ॥ राग टोड़ी ॥ साखन चोरीतैंसीखे करनलागे अबचितहकी
 चोरी । जाके दृष्टिपरे नंदनन्दन फिरति सो मोहन डोरीडोरी । लोक
 लाज कुलकानि मेढिकरि बनबन डोलत नवलकिशोरी । सूरदास प्रभु

रसिक शिरोमणि देखेनिगम बानि भइभोरी ४५ ॥ राग आसावरी ॥ कथों
 सुरभाऊरी नन्दलालसों अरुभि रहेउ मन मेरो । मोहन सुरति कहूँ
 नेक बिसरति कहिकहि द्वारिरही कैसेहुँ करत न फेरो । बहुतयतनकरि
 घेरिघेरि राखति फेरिफेरि लरति सुनत नहिंतेरो । सुरदास प्रभुकेसँग
 रसभये डोलत निशिबासर कहूँ निरखत बायों न डेरो ४६ ॥ रागविला-
 वल ॥ मैं आन्यो मनुखतन जान्यो । कदवों गयो सङ्गहरिके वह कीधों
 पंथ भुलान्यो । कीधों श्याम हठकिहै राख्यो कीधों आप रतान्यो ।
 काहेको सुखिकरी न मेरी मोपर कहा रिसान्यो । जबहीते हरि ह्यां
 ह्वै निकरे बैस तबहिंते ठान्यो । सुरश्यामसँग चलन कहे भविहँ कहेउ
 नहीं तबमान्यो ४७ ॥ राग गुजरी ॥ श्याम करत हैं मनकी चोरी । कैसे
 मिलत आनि पहिलेही कहिकहि बतियां भोरी । लोकलाजकी कानि
 गँवाई फिरति गुडी बगडोरी । सेषेदङ्ग श्याम अबसीखे चोरभये चित
 कोरी । माखनकी चोरी सहिलीन्हीं वातरही यह थोरी । सुरश्याम
 भये निडर तबहिंते गोरसलेत अजोरी ४८ ॥ राग टोड़ी ॥ सुनहुँसखीहरि
 करत न नीकी । आपु स्वारथीहैं मनमोहन पीरनहीं अरुनीकी । बेते
 निटुर सदा मैं जानति बात कहति मनहीकी । कैसेहुँ उनहिं हाथकरि
 पाऊँ रिसमेरी सबजीकी । चितवत नहीं मोहिं सपनेहुँ कोजानै उनही
 की । ऐसे मिले सुरके प्रभुको मानों मोललै बीकी ४९ ॥ रागआसावरी ॥
 माईरी कृष्णनाम जबते थवरा हुन्योरी । तबते भूलीरी भवन बावरी
 सी भईरी । भरिभरि आवैं नयन चित न रहतचैन बैननहिं सुधो भूली
 मनकीदशा सब ओरे ह्वैगईरी । कौनसाता कौनपिता कोबहिनी कौन
 भ्राता कौन ज्ञान कौनध्यान मदन हईरी । सुरश्याम जबते परेरी मेरी
 दृष्टिबाम कामधाम निशियाम लोकलाज कुलकानि नईरी ५० ॥ राग
 रामकली ॥ राधातैं हरिके रंगराची । तेतैं और चतुर नहिं कोऊ बात
 कहैं मैं सांची । तैं उनको मननहीं चुरायेो ऐसी है तू कांची । हरि
 तेरो मन अबहिं चुरायेो प्रथमहिं तूहेनाची । तुम अरु प्रथाम एकहै
 दोऊबाकीनाहीं बांची । सुरश्याम तेरेबग राधा कहत लीक मैंखांची
 ५१ ॥ राग जैतत्री ॥ तू काहेको करति सयानी । श्यामभये बग पहिले
 तेरे तबतू हाथ बिकाती । बाकीनहीं रही तेकह अब मिलीदूध ज्यों

पानी । नन्दनन्दन गिरिधर बहुनायक तू तिनकी पटरानी । तोमीको
बहभासिनि राधा यह नीके कर जानी । सूरप्रियाम सँग हिलि मिलि
खेलौ अजहँ रहति दिवानी ५२ ॥ रागमोह ॥ मन हरि लीन्हे कंठ
कन्हाई । तदहीते में भई दिवानी कहा करौंरी माई । कुटिलअलक
भीतर असभालों अब निरुवारि न जाई । नयन कटाक्ष चारु अवलो-
कनि मोतन गये बसाई । निलज भई कुलकानि राँवाई कहा ठगौरी
लाई । बारम्बार कहति में तोकों तेरे हिये न आई । अपनीसी बुधि
मेरी जानति उतनी में कहँपाई । सूरप्रियाम ऐसी सतिकीन्ही देहदशा
विसराई ५३ ॥ रागरामकली ॥ राधा हरि अनुरागभरी । गदगद मुखबाणी
परकाशित देह दशा विसरी । कहति यहै मन हरि हरि लैगये सही
परनिपरी । लोकसकुच शंका नाहिं मानत प्रियामहिं रङ्गदरी । सखी
सखीसों कहति बावरी यहिहमको निदरी । सूरदासप्रभु सूरतिसानी
भुरई हम सिगरी ५४ ॥ रागमोह ॥ तुमजानति राधाहँछोटी । चतुराई
अंगअङ्ग भरी है पूरणजान ब्रह्मकी मोटी । हमसों सदा दुराव करेउ
यहि वातकहैं मुखचोटी पोटी । कबहुँ प्रियामते नेक न बिहुरति किये
रहति हमसों हटओटी । नन्दनन्दन याहीके बशहैं बिवशदेखि बिन्दी
छविचोटी । सूरदासप्रभु वे अतिखोटे यह उन्हते अतिहीखोटी ५५
राग बिलबन ॥ सखीकहै तू वात राँवारी । याकी सरि कैसे कोउ ह्वै है
जावशहैं बनवारी । ब्रजभीतर यहछप आगरी व्रतलीन्हे दृढ़ गिरिवर
धारी । प्रीतिगुप्तहै नीकी उनहीं या पर में रीझी हैं भारी । साँची
कहौ नाहिँ ऐसोई पाछे मोको दीजै गारी । सूरदास राधा जो खोटी
देखौ तो यह कृष्णपियारी ५६ ॥ रागगुजरी ॥ सुनहुँसखी राधासरिको
है । जेहरिहैं रतिपरि मनमोहन याकोमुख से जोहै । जैसे प्रियामनारि
यह तैसी सुन्दर जोरीसोहै । यह द्वादश बेऊ दशद्वैके ब्रजयुवतिनमन
सोहै । में इनको घटिबढ़ि नाहिँ जानति भेदकरै सो कोहै । सूरप्रियाम
नागर यह नागरिसक प्राण तनदोहै ५७ सुनु सजनी ये ऐसे लागत ।
सकप्राण युगतनु मुखकारणसकौनिमियन त्यागत । बिहुरतनहींसंग
ते दोऊ बैठेसोवत जागत । पूरबनेह आजुकहुनाहीं मोसोंसुनहुँ अनागता
मेरोकहेउ साँच तुमजानहँ कीजै आगत स्वागत । सूरप्रियाम राधाबरसे

५७६ सूरसागर अनुरागलीला रागकल्पद्रुम ।

प्रीतिहि ते अनुरागत ५८ ॥ राग जेतथी ॥ सखी सखी सें धनि धनि
 कहैं । इनको हम ऐसे नहिं जाने व्रज भीतर ये गुप्त रहैं । धन्य धन्य
 तेरी मति सांची हमइनको कहु औरकहैं । राधा कान्ह एकहैं दोऊ
 तो इतनो उपहाम सहैं । वे दोउ एक दूसरी तूहं तोहंको सखि प्र्याम
 चहैं । मूरश्याम धनिधनि अरु राधा धनि तुमहूं उनभेदलहैं ५९ धन्य
 धन्य यह तेरीबानी । तैनीके हरिको पहिचाने अबहम तोकोजानी ।
 राधा आधा देह प्र्याम की तू नीकी बिचवानी । राधाहू तैं अधिक
 प्र्यामसें तेरीप्रीति पुरानी । जो हरिको संगतिन तू नाहीं आदि नेह
 क्यों गानी । मूरदास प्रभु रसिकशिरोमणि यह रसकथाबखानी ६०
 राग पूर्वी ॥ साई राधामोहन सहजसनेही । सहजरूपगुणा सहजलाडिली
 एकप्राणा द्वै देही । सहज साधुरी अङ्गअङ्ग प्रति सहज सदा बनगेही ।
 मूरश्याम प्र्यामा दोउसहजी सहजप्रीतिकरिलेही ६१ ॥ राग आसावरी ॥
 राधा नंदनन्दन अनुरागी । भव चिन्ता हिरदय नहिं सकी प्र्यामरंग
 रसपागी । हृदचून रंगधै पानीज्यों दुबिधदुहकी भागी । तनमव प्राणा
 समर्पणा कीन्हो अङ्ग अङ्ग रतिखागी । व्रजवनिता अवलोकनि करि
 करि प्रेमबिबश तनत्यागी । मूरदास प्रभुसें चितलाग्यो सोवतते मनु
 जागी ६२ ॥ राग माह ॥ गोपी प्र्यामरङ्ग राची । देहगेह सुधि बिसारि
 बह्नीप्रीतिसांची । दुबिधाउर दूरिगई उघरिअङ्ग नाची । हरितजिजो
 औरभजै पहुमिलीकखांची । मातपिता लोकभीत बांचीनाहंसांची ।
 सकुच जबाहं आवैं उर बारबार भांची । अबतौ झगाहू न छांडै ना-
 हिन मत्तिकांची । मूरश्याम पदपराग ताही में सांची ६३ ॥ राग माह
 चर्चरी ॥ प्र्यामजल मुजल व्रजनारि खोरैं । नदी माला जलजटित भुजा
 अति सबलधार रोमावली यमुनमोरैं । नयन टहरात नहिं बहत अति
 तेजसें तहांगयोचित्त धीरजसंहारैं । मनगयोतहीं आपुनरहीनिकट
 जल एक अङ्गअङ्ग कृबि सुधि बिचारैं । करत अस्नान सब प्रेम बुझकी
 देहिं समुझिजिय होय भजितीरआवैं । मूरप्रभु प्र्याम जलराशि व्रज
 भासिनी करतिअनुमान नहिंपारपावैं ६४ ॥ राग बिलावल ॥ प्र्यामरंग
 राचीं व्रजनारी । और रंगसब दीन्होडारी । कुसुम रंग गुरुजन पितु
 माता । हरि तरंग बहिनी अरु धाता । दिना चारि में सब मिटिजैहै ।

प्रयामरंग अजरामर रहे । उज्ज्वलरंग गोपिकानारी । श्यामरंगगिरि-
वरके धारी । प्रयामहि में सबरंग बसेरो । प्रकटावती हृदयकह भरो ।
अरुणा प्रवेत सित सुन्दर तारे । प्रीतिरंग पीताम्बर धारे । नाना रंग
श्याम गुणाकारी । मूरप्रयाम रंग घोष कुमारी ६५ ॥ राग. विहागरे ॥
प्रयाम सतीनेखमें अरी मन हरेउ । ऐसे लेहु है अक्यो तेहिते फिरि
नहिं मरक्यो बहुतयतन मेंकरेउ । ज्योंज्यों खैंचतित्योंत्यों मननहोत
येभीवरनि धरेउ । मोक्षों बैरकरत उनकी धौं देखौ जाय हरेउ । ज्यों
शिवकृत दर्शन रवि पाये देहीं गरनिपरेउ । मूरदास प्रभुरूप थक्यो
मनु कुंजरपंकपरेउ ६६ ॥ राग. देसाव ॥ निशिदिन यहै परी टेक माई ।
इननयननिकोरी नन्दलाल की लागीरहै लालसाई । मुरली रसभरी
यवगानि जबतेरी परीकैसेहु तरतिनई । हृदयतेबिहरीपरी कैसेहुं तरति
नहीं हिरदेते बिहारी यदुराई । कहाकहाँ तोसों यह सजनी मनमेरो
लैगधा चुराई । मूरश्यामको नामधरेउ पुनि धरेउ न जाय सुधि न रहै
तनुमाई ६७ देखु सखी मेरोमन न रहै श्यामबिना । अतिहि चतुरजानि
जाननिमनि वह छविपर में भईलिना । अपनीदशा कहैं मैं कासों बन
बन डोलति रैनदिना । मनतो चोरि लियो पहिलेही भूरिभूरि ह्वै
रहैं छिना । वै मोहन मनहरत सहजही हरिलेताको करबछिना । मूर
दासप्रभु रसिकरसीले बहुनायकहैं नावजिना ६८ ॥ राग. सारंग ॥ नयननि
नींदगई रैनदिन पलपल छतियां लाग्योअरहै धरको । उतमोहन मुख
मुरलि सुनत सुधि न रही इतधरा घरघरको । ननदी तौ न दिये बिन
गारी नेकहु रहति सास सपनेहुमें आनि गोवति काननिमें लयेरहै मेरे
पाइको खरको । निकसनहूं ना पाइयेरी कासोंदुख कहिये देखहुना
पाइयेरी मूरदासके प्रभुतन मेरो जो सेसोभयो जैसेहाथ पाथर तरको
६९ ॥ राग. सुधराई ॥ मोहन मुरली बजाईहो रिभाई तिनहां मोहीरी ।
सांभसमय देखेकन्हैया निकसेमेरे आंगन ह्वै तबतें चितवत पहपीरी
भईरी । काकोदेह गोहसुधि काको कोहै हरि कैसे मेंहीरी । तेरे कहे
कहत हैं बांगी में हरि हाथ बिकानी तबतें यकटकही जु रहीरी ।
सिलतनहीं नहिंसंगते त्यागत कहाकरीं बूझौं तोहीरी । मूरप्रयाम तब
तें नहिंआये मन जबते हरिलीन्है वेतो ऐसे हैं द्रोहीरी ७० ॥ राग. अडाना ॥

५७८ सूरसागर अनुरागलीला रागकल्पद्रुम ।

ब्रजकी खोरि ठाढ़ो सांवरौ डिठौना तिनहों मोहीरीहोंमोंही । जबतेमैं देखे प्रयाससुन्दररी चलि न सकत पग यहैकास नृपद्रोही । कोलैआई कौने चरगा चलाई कौने बहियांगही सोधौं कोहेरी । सूरप्रयास प्रभु देखे सुधिबुधि रहीनहिं अति विदेह भई अब मैं ब्रभक्ति तोही ७१ ॥

राग सुघराई ॥ आखिनमेंबसै जियरेमेंबसै हियरेमेंबसत निशिदिनप्रयारौ । मनमेंबसै तनमेंबसै रसनामेंबसै अङ्गअङ्ग बसत नन्दवारौ । सुधिमें बसै बुधिहमें बसै उरमें बसत प्रियप्रेम दुलारौ । सूरप्रयास बनहूँमें बसत घरहूँमें बसत संग इयों ह्वाँ जलनहोत न्यारौ ७२ ॥ रागसेरूठ ॥ नंदनन्दन विनु कल न परै । अतिअनुराग भरीं युवतीसब जहांप्रयास तहँ चित्त दुरै । भवनगई मनतहां न लागै सुरगुरुजन अतिवास करै । वे कछुकहैं करै कछुऔरै सासु ननदि तिनपर भहरै । यहै तुमहिं पितमात सिखायो बोलकरति नहिं रिसनि जरै । सूरदास प्रभुसों चितअरुभेउ यहसमुझै जियज्ञान धरै ७३ ॥ राग जेतथी ॥ सासु ननद घरवास दिखावै । तुमकुल बधू लाजनिहँ आवति बारवार यहकहि समुभावै । कबकीगई न्हान तुम यमुना यहकहि २ रिसपावै । राधाको तुमसङ्ग करतिहौ ब्रजउपहास उड़ावै । वेहें बड़े महरकी बेटो तौ ऐसी कहवावै । सुनहुँसूर यह उनहीं भावै ऐसे कहति डरावै ७४ ॥ राग सारंग ॥ हमअहीर ब्रजबासी लोग । ऐसेचली हँसेनहिं कोऊ घरमें बैठिकरौ सुखभोग । दही मही लवनी घृतबेंचो सबैकरौ अपना उद्योग । शिरपर कंस मधुपुरीबैठ्यो क्षयाकहिमें करिडारै सेग । फूंकिफूंकि धरणी पगधारौ अब लागी तुमकरनअयोग । सुनहुँसूर यह जानहुगी तब जबदेखो राधासंयोग ७५ ॥ राग धनश्री ॥ तुम कुलबधू निलज जिनिहूँहो । राधा कान्हकथा ब्रजघर घर सेसे जिनि कहवैहो । यहकरणी अननई चलाई तुमजिनि इसहिं हँसैहो । तुमहो बड़े महरकी बेटो कुलजिनि नामधरैहो । यह करणी उनहीको छाजै उनके सङ्ग न जैहो । सूरप्रयास राधा की सहिमा यहै जानि शरमैहो ७६ ॥ रागटोड़ी ॥ यह सुनिकै हँसि मौन रहीरी । ब्रज उपहास कान्हराधाको यहसहिमा जानी उनहीरी । जैसीबुद्धि हृदय इनकीमां तैसिय सुखते वाप्त कहीरी । रविको तेज उलूकनजानैतरण सदा पूरणा न भईरी । बियकोकीट बियहि रुचिमानै जानैकहा सुधा

रमहीरी । मूरदास तिलतेल मवादी खाद कहा जानै घृतहीरी ७७ ॥
 राग मूढा ॥ अरी जानि गोधनको मानै । नंदनन्दन नरसुर सुनिवन्दन तिन
 की महिमा कोउ न जानै । धनिरावा उपहाम धन्य यह सदा प्रयासही
 के गुणागानै । परमपूनीत हृदय अति निर्मल बारबार वा यशहि व-
 खानै । श्याम कामकी पूरणाहारी ताको कलटाकरि पहिंचानै । मूर-
 दास ऐसे लोचन को नाम न लीजै हेत बिहानै ७८ ॥ राग निद्रा मग ॥
 विवना यह संगति क्यों दीनी । इनको नाम प्रात नहिं लीजै कहा
 निदुरई कीनी । मतमोहन गोहन बिनु अबलौं मनुवीतै युगचारि । बि-
 मुग्धानमें ते कबधौं छूटौं कब मिलिहौ बनवारि । सकलक क्षणविहात
 कैमेहुं अब जो रह्यो न जाई । मूरप्रयास दरशन बिनु पाये बार बार
 अकुलाई ७९ ॥ राग मोरठ ॥ विमुख जननको संझ न कीजै । इनके विमुख
 वचनसुनि अवसानि दिनदिन देही कीजै । मोको नेक नहीं ये भावत
 परवशको कह कीजै । धृग जीवन ऐसा बहुदिनको प्रयासजन पल
 जीजै । धृगयह गृह धृग ये गुरुजनको इसमें नहीं बसीजै । मूरदास प्रभु
 अन्तर्यामी यहैजानि मनलीजै ८० ॥ राग नट ॥ राधा प्रयासरङ्ग रंगी ।
 रोमरोमनि भिदिगयो सब अङ्गअङ्ग पगी । प्रीतिदै मनलैगये हरिनन्द-
 नन्दन आपु । कृष्णारस उनमत्त नागरि दुरतनहिं परतापु । चलीयमुना
 जाति सारग हृदय यहै विचार । मूरप्रभु के दरशपाऊं बिगम अगम
 अपार ८१ ॥ राग धन्याथी ॥ चितको चौर अवाहिं जो पाऊं । हृदयकपाट
 लगाय यतनकरि अपने सनहिं सनाऊं । जवहिं निशंकहोति गुरुजन
 ते तेहिऔसर जो आवै । भुजनिधरौं भरि सुदृढ मनोहर बहुतदिननि
 को फल वे पावै । लै राखौं कुचबीच चापिकारि प्रतिदिनको तनताप
 बिसारौं । मूरजदास नन्दनन्दनको गृहगृह डोलनिको यमसारौं ८२ ॥
 राग विलावल ॥ इतते राधाजाति यमुनतट उतते हरिआवत घरको । काटि
 काकनी भेय नटवरको धीचमिली मुरलीवरको । चितैरही मुखइन्दु
 मनोहर वा छविपर वारतितनको । दूरिहुंते देखतही जानै प्रारानाथ
 सुन्दर धनको । रोथपुलक गदगद बाणीकिहि कहां जात चोरमनको ।
 मूरदासप्रभु चोरीसीखे साखनते चितवत धनको ८३ भुजापकरि ठाढ़े
 हरिकीन्हे । बाँहमशोरि जाहूगे कैसे मैं तुमको नीकेधरि चीन्हे । मा-

खनचोरी करतरहे तुम अबतौ भये मनचोर । मनतरही मन चोरत है
 हरि प्रकटलियो मनचोर । सेमेढीठ भये तुमडोलत निदरे ब्रजकीनारि ।
 सूरश्याम मोहूँ निदरौगेदेहु प्रेम की गारि ८४ ॥ राग ईमन ॥ मैं तुम्हरे
 गुणजाने प्रियाम । औरनिकी मनचोरि रहेहौ मोरो मनचोरेउ किहि
 काम । वे डरपति तुमको धौंकाहे मोकोजानत वैसियबाम । मैं तुमको
 अबहीं बांधोंगी मोहिं बूझि जैहौ तब धाम । मैं लैहौं पहुनाइ करि
 हौं राखौअटक घोय असजाम । सूरश्याम यहकौन भलाईचोरजहां
 तहँ तुम्हरोनाम ८५ ॥ राग कल्याण ॥ ब्रजमें ढीठभये तुमडोलत । अबतौ
 प्रियाम परेफँदमेरे मूखे काहेनबोलत । मनदीजे मरियादाजैहै रहतचतुर
 ई कीन्ह । दुखकरिदेहु कि सुखकरिदीजै अबतौ बनिहैदीन्हे । सेमे
 ढँग तुम करतकन्हाइ जीतिरहे ब्रजगाँउ । मूरआज बहुतैदुखपावै मन
 कारणा पछितांव ८६ ॥ राग गोंडमलार ॥ मुनिरी कुलकीकानि ललनसों
 मैं भगरी मांडोंगी । मेरेइनके काउबीच परीजनि लैकरि अधरखां-
 डोंगी । चतुर नायकसों कामपरैउहै कैसेके छांडोंगी । सूरदास प्रभु
 नंदनन्दनको रसलै डांडोंगी ८७ ॥ रागकान्हरी ॥ चोरीको फलतुमहिंदि-
 खाऊं । कञ्चन खम्भडोर कञ्चनके देखौ तुमहिं बँधाऊं । खंडोसक
 अङ्गकछु तुम्हरोचोरी नाँउमिटाऊं । जो चाहौं सोइसोइ सबलैहोयह
 कहि डांडबनाऊं । बीच करनजो आवैकोऊ ताको सौह दिवाऊं ।
 सूरश्याम चोरनिके राजा बहुरि कहाँमैंपाऊं ८८ ॥ रागगन्धर्व ॥ रहुरी
 लाजनहिंकाज आजहरि पायेकरनचोरी । मूसिमूसिलैगये मनमाखन
 जो मेरेवनहोरी । बाँधौंकञ्चन खम्भकलेवर उभयभुजा दुदडोरी । चा
 पौंकटिन कुलिशकुच अन्तर सकै कौनधौंछोरी । खराडोंअधर भूलि
 रसगोरस हरै न काहूकोरी । डंडोंकाम डंडपरघरको नाउँ न लेय ब-
 होरी । तब कुलकानि बनिभइ तिरछी ससि अपराध किशोरी ।
 शिवपरपानि धराय सूरउरसकुचि मोहिंशिरहोरी ८९ ॥ रागविहागरी ॥
 बीचकियोकुललज्जाआई । मुनिनागरी बकसयहमोको सन्मुखआये
 धाई । चूकपरीहरिते मैं जानी मन लैगयेचुराई । टाढेरहे सकुचि तो
 आगेराख्यो बदनदुराई । तुमहौ बडेमहरकी बेटी काहेगई भुलाई ।
 सूरश्यामहैं चोर तुम्हारेछाँडिदेहु डरपाई ९० ॥ रागगौरी ॥ कुलकी लाज

अक्राज क्रियो । तुमबिनु प्र्याममुहात नहीं कछु कहा करौं अतिजरत
 हियो । आपगुप्त करिराखी मोको मैं आयसु शिरमानि लियो । देह
 मोह मुधिरहत बिसारे तुमते हितनहिं ओरबियो । अबमोको चरगान
 तरराखौ हंसिनंदनन्दन अङ्गुछियो । सूरश्याम श्रीमुखकी बानी तुम
 पै प्यारीबास जियो ६१ ॥ रागजैनथी ॥ मातपिता अतिवास दिखावत ।
 भ्राताभारणा को मोहिधिरवे देखेमोहिं न भावत । जननी कहति बड़े
 की बेटी तोकोलाज न आवत । पिताकहे कैसीकूल उपजी मनहींमन
 रिसपावत । बहिनी देखि देतिम्वहिंगारी काहेकूलहि लजावत । सूर
 दासप्रभुसों यह कहिकहि अपनी बिपति जनावत ६२ ॥ रागबिहागरी ॥
 सुन्दरश्याम कमलदल लोचन । त्रिमुख जननको संगतिको दुख कब
 धौं करिहो सोचन । भवत मोहिं भाठोसोंलागत मरतशोचहीशोचन ।
 ऐसीगति मेरी तुम आगे करत कहाजिय दोचन । धृग मातपिता धृग
 भ्राता देखतरहत मोहिंभरिलोचन । सूरश्याममनतुमहिं लुभानोहर्दचू-
 नरँग रोचन ६३ ॥ रागरामकली ॥ कुलकी लाज कहालै करिहैं । तुम
 आगे मैं कहौ न सांची अबकाहुनहिं डरिहैं । लोग कुटुम्बजगतजे क-
 हियत पहिले सबहिनिदरिहैं । अवयहदुख सहिजात न मोपै बिमुख
 बचन सुनि मरिहैं । आपुमुखी तौ सबहीकेहैं उनके मुखकहसरिहैं ।
 सूरदास प्रभुचतुरशिरोमार्गा अबकैहो कहुलरिहैं ६४ ॥ रागकान्हरी ॥
 प्राणानाथहो मेरीसुरति करौ । क्यों न मैं जु दुखपावति हैं अपने तन
 मन मेरीसुरतिकरौ । दीनदयाल कृपाकरौ मोको कामदन्द दुख और
 विरहहरौ । तुमबहुरबनि रवन मैं जानति ओहीकेधोखे मोसोंकहेको
 लरौ । तन धन तुमहीं मेरेमोहन तेरोध्यान हृदयधरौ । सूरदासस्वामी
 तुमहो अन्तर्यामी मनसावाचा ध्यान तुमसों धरौ ६५ ॥ होया मायाही
 लागी तुमकत तोरत । मेरो तौ मन तिहारे चरणनिही लागौ धीरज
 क्यों रहै रावरे मुखमोएत । कोऊसै बनाइबातें मिलबति तुम आगे सो
 कनिआय मोसों अबजोरत । सूरश्याम प्रियमेरे तो तुमहीं जिय तुम
 बिन देखे मेरोहियो कोरत ६६ ॥ राग बिलावल ॥ सुनहुँ श्याम मेरी इक
 बात । हरिप्यारीके मुखतन चितवत मनहींमनहिं सिद्धात । कहाक
 हति वृथभाननन्दिनी बूझतिहेमुमुकात । कनकबरणा सुन्दरीराधिका

कटिक्कश कोमलगात । तुमहीं मेरेप्राणा जिवनवन अहोचन्द तुमधात ।
 सुनहुं सूरजो कहतिरही तुमकहौ न कहा लजात ६७ ॥ रागभारंग । चर्चरी ॥
 नागरी प्रयाससों कहतिबाराणी । सुनहुं गिरिवरज बर शीशशिखण्डधर
 जपत सुरनाग नर सहस बाराणी । रुद्रपति सुद्रपतिलोकपति बोक्रपति
 धरणिपति गगनपति वेदबाराणी । सिंहके शरणा जंबक वासहिकरैजन
 कृष्णाराधा यंकजगतबाराणी । अखिलब्रह्मांडपति तिहुंभुवन अधिपती
 सकल युति सारपति अगम बाराणी । सूर प्रभु प्रयास तुमहीं करुणा
 धाम करौ मनकाम सुनि दीनबाराणी ६८ बिहंसि राधा कृष्ण अङ्ग
 लीन्हों । अधरसों अधर जुरि नयनसों नयनमिलि हृदयसों हृदयलगि
 हरयकीन्ही । कराठ भुजभुज जोरि उच्छल्लीन्ही नारिभवन दुखटारि
 सुखदियो भारी । हरिबोले प्रयासकुंज मनवन धाम तहां हमतुमसंग
 मिलैप्यारी । जाहुगृह परमवन हमहुं जैहंसदन आयकहुं पास मोहिं
 सैन देहौ । सूर यहभावदै तुरतही गमनकरि कुञ्जगृह सदन तुम जाय
 रैहौ ६९ यहसुनत नागरी मायनायो । प्रयास रसवशभरे सदन जिय
 दुरिडरे सुन्दरी बातको भेदपायो । खडे ब्रजयसुन बिच दुहुनमनअति
 सकुच और कछु बनैन्हिं बुद्धिठानी । तबहिं ब्रज नारि आवत देखि
 यमुनते एक ब्रजहिते राधा लजानी । प्रयास हंसिके चले तुरत स्वा-
 लनिमिले कहां सबरहे कहिहांकदीन्हों । भाव यह करिगये सूरप्रभु
 गुणानये नागरीरसिकजिय जानिलीन्हों १०० ॥ राग टोड़ी ॥ राधाहरि
 केभावहिं जान्यो । यहैवात कहैंइनआगे मनहींमनअनुमान्यो । उन्हें
 देखि राधा संग ठाढ़ी प्रयासपठाये टारि । बूझतही कछु बुद्धिरचैगी
 बडौचतुर यहनारि । इतवृथभानसुता मनसौचति मोहिंदेखिहरिसंग ।
 सूरअबहिं बातनि करिधरिहै जानतिइनकरंग १०१ ॥ रागभारंग । चर्चरी ॥
 चतुरवरनागरीबुद्धिठानी । अबहिंसोहिंबूझिहैं इनहिंकैहौकहा प्रयास
 संग आजुमोहिं अकटजानी । भावकरिगयेहरि खालबूझतरहै जानि
 जियलई अतिचतुर रासी । यहरचौ बुद्धियक कहाये कहैं मोहिं मेरे
 मन येसबै घोषबासी । इतहुकी उतहुकी सबैजुरि एकटी कहतिराधा
 कहांजातिहैरी । सूरप्रभुको अबहिंदेखे हम तेरेढिग कहांगये तिनहिं
 पकिततिहैरी १०२ ॥ राग गुर्जरी ॥ कान्ह कहाबूझतहैं तुमको । ह्वारै

ते लखिलीन्हों तबहीं कहा दुरावति हमको । मनलैगयो चुराय तु-
म्हारो सो अपना तुमपायो । अपनाकाज सारि तुमलीन्हों हम देख-
तिहि पटायो । सदा चतुरई फबती नाहीं अतिही निदरि रहीहो । मूर
प्रयास धों कहांरहतहें यहकहिकहि जु तहीहो १०३ ॥ राग अलहिया ॥
कहतरी तब राधिका जब हरिसंगदेखी । बेसरिलीजो कीनिकैमुख
तन कहापेखी । देहोबेसरि कीनहीं कीलेहिं किंदाई । चतुराईप्रकटी
अबै सेसोही साई । बारबार नागरिहंसै तरुणी वै हानी । ऐसेहि बे-
सरिलेहुगी सबभईअयानी । इससूरख तुमचतुरहो कहुलाज नआवे ।
सूरश्यामसंग नहिंरही अबकहा दुरावे १०४ ॥ राग मोरठ ॥ यहैकहन
सोंको तुम आई । इतते ये उतते तुमसबमिलि काहे ऐसेवाई । बेसरि
एक लेहुगीकोको पीताम्बर नदेखावहु । बेसरि अरु पीताम्बरलै तब
घरघर जायसुनावहु । तारीएक बजतिकीटोऊ इतनाइजानविचारो ।
सुनहुमूर ये बेसरिलेहें जान्यों ज्ञान तुम्हारो १०५ ॥ राग जैतथी ॥ सुनि
राधा तोसों हमहारी । तेरेचरितनहींकोउजानै वशकीन्हें गिरिधा-
री । अबहीं कान्ह टारिकरिपठये चतुरइ आपसँवारी । अबहींप्रकट
दुहुनि हम देखयो जानति देहोगारी । तोमेंबुद्धि अधिकहमदेखी बड़ी
सयानी नारी । मूरश्यामके यहबुधिनाहीं जितनीहै तोंका री १०६
राग बिलावल ॥ प्रयास भले अरु तुमहुँ भलीहो । बेसरि कीनतिहो बिन
काजहि जाहु न घरहिचलीहो । कैसेदौरिपरी मेरेपर मानहुसंगमिली
हो । और भई सब वनकी बेली आपुन कमल कलीहो । तब कहतो
साहिबाहँ दुहुन की जोतुम चतुर अलीहो । सूरदास राधा ग्राग्रागारि
नागरि नारिखलीहो १०७ अबहमसों सांचाकहो वृषभान दुहारी ।
कहुतौ तोसों कहतहें ठाढ़े गिरिधारी । हाहाहमसों सोइकहो देहो
जनि गारी । हमको देखतहीगये उत ग्वालहँकारी । भेदकरै जोला-
डिली ताहिं सौंह इसारी । तू ठाढ़ी काहेरही मगमेंरीधारी । सहज
होयतूकहिअबै उरतेरिसदारी । मूरश्यामकी भावतीकहै कहाँकहा
री १०८ ॥ राग पूछे ॥ मैं यहुनातन जातसहीरी । उतते आनतदेखिस-
खितको इनकारण ह्वांपरखिरहीरी । इततेआयगये हरि तिरछे में
तिनहींतनचितैरहीरी । बभनलगेकान्ह ग्वालनको तुमतोदेखे उनहिं

नहींरी । कछुउनसों बोलीनहिं सन्मुख नाहीं हां कछु वे न कहोरी ।
 सूरप्रियाम गये खालनि ढेरत ना जानों तुम कहागद्दीरी १०९ ॥ राग
 टोड़ी ॥ तुम मेरीबेसरिको धाई । सकुचिगई मुनिमुनि यहबाणी तरु-
 शान राधा भलेलजाई । यहतौ बात लगति कछुसांची हमपरन्याय
 रिसाई । ढेरतकान्ह गये खालनिको अवरापरी धुनि आई । बेसरि
 नामलेत प्ररमानी तब राधा भूहरानी । सूरदास ब्रजनारि मनहिंसन
 यह गुनिगुनि पकितानी ११० ॥ राग गुजरी ॥ राधा तू अतिही है भो-
 री । भूँढहि लोग उडावत घर घर हम जान्यों अब तोरी । कराट
 लगाय लई रिस छांडो चुकपरी हम ओरी । तुम निर्मल गङ्गाजल-
 हते दुरति नहीं वह चोरी । घर जैहो की यमुना जैहो हम आबैं संग
 गोरी । सूरदास प्रभु प्यारी राधा चतुर दिननि की थोरी १११ ॥
 राग जोसावरी ॥ अहो सखी तुम ऐसीहो । अबलों तुम कुलटाकरि जानति
 मोंकोरी सब नैसीहो । अपनेइ मन जैसी तैसेइ सब मोहं जानति तैसी
 हो । जोरीभली बनैगी हरिसों छाँह निहारो कैसीहो । अबलागीमो
 को दुलरावन प्रेमकरति ढरि पैसीहो । मुनहुँसूर तुम्हरे सगासगामति
 बड़ी पटकी जैसीहो ११२ ॥ रागटोड़ी ॥ हँसति नारि सब घरहि चली ।
 हमजानी राधाहै खोटी हम खोटी राधिका भली । इतते युवतिजाति
 यमुना जे तिनको सगमें परखिरही । श्याम कहँते आयकहे ह्वां चले
 गये उतहेरतही । इतनी तबहिं नहीं यहजानी भूँढही सब अतिखगही ।
 सूरप्रियाम अपनेरंग आये हम बाको नहिं भलीकही ११३ ॥ रागबिला-
 वली ॥ राधा प्रियामहें नेहनी हरि राधा नेही । राधा हरिके तनुबसे हरि
 राधा देही । राधा हरिके नयनमें हरि राधा नैननि । कुञ्जभवन रति
 युद्धको जोरत बल सैननि । और न काहको रुचै घरघर गये दोऊ ।
 मातपिता रतिभावसों जानें नहिं कोऊ । कैसेहु करि करि दिन गयो
 निशि घटति न क्योंहं । दोउरस बिरह सगन भये निशि भई अगोहं ।
 बिरह सरोवर बूझही अन्धकारसे बारा । सुधि अवलंबन टेकही कहूं
 वार न पारा । तमचुर ढेर पुकारई बड़ो जिन कोई । सूरप्रात नौका
 मिली आनंद मनहोई ११४ ॥ राग घनाथी ॥ मनमृग बेधो मोहन नयन
 बाणसों । गूढ भावकी सैन अचानक तकितान्यो भृकुटी कमानसों ।

प्रथम नादबल धरि निकटलै सुरली सप्तक सुर बंधानसों । पाके बंक
चित्तै सधुरे हँसि घात कियो उलडी सुठान सों । सूर सुमार बिद्या या
तनकी घटतिनहीं औयधी आनसों । ह्वैहै मुख तबहीं उर अन्तर आ-
लिङ्गन गिरिवर सुजानसों ११५ ॥ राग बिलावल ॥ कान्हउठे अतिप्रातही
तलबेली लागी । प्रिया प्रेमके रसभरे रतिअन्तर खासी । श्याम उठत
अवलोकिके जननी तबजागी । सुंदरवदन त्रिलोकिके अङ्ग अङ्ग अनु-
रागी । माता ब्रूभक्त सुवनको बलिगई मेरे वारे । कहा आजु अचरज
कियो तुमउठे सवारे । भ्तारी जल दँतवन दियो छवि पर तनुवाख्यो ।
उत्तम जललै प्रेमसों सुत बदन पखाख्यो । करी मुखारी अतुरई नागरि
रसछाके । सुरश्याम ऐसी दशा विभुवनवश जाके ११६ उत दृषभान
सुता उठी यहभाव विचारै । रैन बिहानी कठिनसों मन्मथ बलभारै ।
ग्रीव मोति सरितोरिके अँचरा सों बांध्यो । यह बहानो करिलियो
हरि मनु अनुराधो । जननि उठी अकुलायके क्योंराधा जागी । कहा
चली उठि भोरही सोधन सभागी । अब जननी सोऊनहीं रविकिरणि
प्रकासी । तुहँ उठति काहे नहीं जागे ब्रजबासी । आपउठी आँगन गई
फिरि घरही आई । अबधौं मिलिहैं श्यामको पलरहेउ नजाई । फिरि
फिरि अजिरहि भवनहीं तलबेली लागी । सुरश्यामके रसभरी राधा
अनुरागी ११७ ॥ राग रामकली । चर्चनी ॥ सुतासों कहति दृषभान घरनी ।
कहां त राधिका भोरते फिरतिहै तेरी गति मोपै नहिं जाति बरनी ।
तोरि मोतिनसरी तव शुभकरि धरेउ कहूँ यहीमिस सकुचिरही मुख
न बोलै । मनोखंजन चपलचन्द फन्दा परे उडत नहिं ताहिते कहूँ न
डोलै । कहातेरी प्रकृति परीहै लाडिली अबहंते कहाँतू जाहिगीरी ।
सूरकह जननिबोलै नहीं आजु त पसुधि धरिहै आग्रखायगीरी ११८
रागनट ॥ जननी पुनिपुनि ग्रीवनिहारै । देखौं नहीं मोतिसरि मालासो
जिन कतहूँ डारै । बोलै नहीं बातथह सुनिरहि मत लागी मुसकाज ।
अबहीं मोकों खीझिपठैहै बनिहै ह्वाँको जान । भली बुद्धि मेरे चित
आई कृष्णप्रीतिहै साँची । सुरदास राधिकानागरी नागरके रंगराची
११९ ॥ राग सोरठ ॥ जननी अतिहिभई रिसहाई । बारबार कहै कुँवरि
राधिकारी मोतिनसरि कहाँगवाई । ब्रूभक्ते तोहिँ उवाच न आवै कहाँ

रही अरगाई । नौसरहार अनेलगरे कहँदेहु न मेरी माई । कालिहि
तेरी तौगर तेरो डारि कहँ तू आई । मुनहुँसूर माता रिसदेखत राधा
हँसति डेराई १२० ॥ राग बिलावल ॥ मुनुरी माता कालिही मोतीसरी
गँवाई । सखिन मिलि यमुनागई धौं उनहिँ चुराई । कीधौं जलहीमें
गई यह सुधि नहिँ मेरे । तबते में पछितातिहौं कहति नहीं डर तेरे ।
पलकनहीं निशि कहँलगी मोहिं प्रपथरी तेरी । यहिडरते में आजुही
अति उठी सबेरी । महारि मुनत चकतभई मुखजवाब न आवै । सूर रा-
धिका गुणभरी कोउ पार न पावै १२१ ॥ राग सारंग । चर्चरी ॥ क्रोधकरि
सुतासें कहति माता । तोहिं बरजति मेरी अचगरी शिरपरी गर्वगंजन
नाम है विधाता । तेरो दोष नहीं अमति तू जहँतहीं नदी डूगरनिवन
पातपाता । मात पितु लोककी कानमानै नहीं निलज भइ रहन नहिँ
लाजगाता । भली नहिँ उनकरी प्रीति तोकों धरी जगतमें सुतात महर
ताता । बात सुनिहैं अघरा भाई बिनहीं भवन सूर डारै मारि आजु
आता १२२ ॥ राग धनाशी ॥ जाहु तहीं मोतिसरी गँवाई । तबहीं तो घर
पैठनपैठा अब सेसेढाँ आई । जो बरजौं आपुन सोइ सोइ करै देखोरी
गुणमाई । एक एक नग शत शत दामन लाख टका बैलयाई । जाके
हाथ परेउ सो देखै घरबैठे निधिप्राई । सूर मुनतरी कुंवरिराधिका तो
को नहीं भलाई १२३ ॥ रागटोड़ी ॥ भरिभरि नयन लेतिहै माता । मुख
ते नहिँ आवै कहुबाता । रीती प्रीति निहारति जबहीं । हियो उमगि
आवतहै तबहीं । मोतिसरी मुखपरम बिराजै । मानेशशि पारसविच
भाजै । मोतिसरि माला कहौं गँवाई । प्रीति बिना करिहै वह माई ।
माधव देखि कहँधौं पावै । सूर जोरि कर विधिहि मनावै १२४ ॥
रागगोडमलार ॥ कहाँ वह मोतिसरी जो गँवाईरी । बाबासें और लैहौं
सँगाईरी । वे कहा करौगी भँतिराखैरी । तादिना तुहीं धौं रिकतिक
भाखैरी । नयनन भरिलेत कहा और नाहींरी । छाँड़ि मोतिसरि को
मोहिँ रिसाहींरी । सँदूखनि भरि धरे जेते न खोलैरी । कहा मोसें
स्त्रीभि बोलैरी । सुता दुखभानकी हर्य सबहींरी । सूरप्रभु सैतदे बोलै
बनहींरी १२५ ॥ राग गैरी ॥ मुनुराधा अब तोहिँ न प्रत्येहौं । औरहार
छोकीहमेल अब तेरे कंठ न नैहौं । लाख टकाकी हानिकरी तँसोजव

तोमें लेंहीं । हार बिना ल्याये लड़बौरी घरनहिं पैठनदेहीं । जब देखोंगी यहै मोतिमरि तबहीं तौ मचुपेहीं । नातरु सूर जन्मभरि तोरो नाम नहीं मुखलेहीं १२६ ॥ राग कल्याण ॥ सुनुरी राधा अति लड़बौरी यमुनगई जब सङ्ग कोनही । बूमतिनहीं जाय अपननिको न्हातरही तब जीन जीनही । काकोनाम धरौ तो आगे ललिता चन्द्रावलीनहीं ही । बहुतरहीं संग सखीसहेलो कहा काहि में सैनसैनही । देखोंजात यमुनतटही में जहँ धरिक्के में न्हातरहीही । सूर जननिषों कहति राधिका मोतीसरि मेरिजाय नहींही १२७ जैहै कहां मोतिसरि मोरी । अब सुधिताहिं लईवाहीने हंसतचली वृषभान किशोरी । अबहीं में लीन्हें आवतिहैं मेरेसंग आवैं जिनि कोरी । देखों धौं कह करिहैं वाके वडेलोग सिखकरत हैं चोरी । मोको आजु अबेर लागिहै हू-होंगी घर घर ब्रजखोरी । सूर चली निधरक ह्वै सबसों चतुरराधिका बातन भोरी १२८ नन्दनन्दन वार वार रवनि पंथ जोहैरी । लोचन हरि करि चकोर राधामुखं चन्दओर देखत नहिं तिमिरभोर मनहीं मन मोहैरी । नयन दोऊ भृङ्गरूप बदन कमल शरदनूप तरणिको प्रकाश मिलन बिना चपल डोलैरी । लोचन मृग सुभग जौर जागरूप भयेभोर भौंह धनुष शरकटाक्ष हरति व्याधि तोलैरी । कीधौं ये चक्षु चारु प्यारी मुखरूप सारु प्र्याम देखि रोभै मन यहै सांच मानी । सूरप्र्याम मुखद धाम राधाहै जाहिनाम आतुरपिय जानिगसन प्यारी अतुरातो १२९ ॥ राग देवगन्धार ॥ प्र्याम अति राधा बिरह भरे । कब सदन कबहुँ अंगनाही कबहुँ पौरि खरे । जननी आतुर करति रसो देखिदेखि हरिजात । कहा अबेर करति तू अबरी भुखलगीअतिमात । में बलिजाउं प्र्याम घनमुन्दर अब दैतो तुमआई । सूरसखा संग सबै बुलावहु हलधर नहीं बताई १३० ॥ राग बिलावल ॥ सहारि कहेउ नंद लाडिले सगसखा बोलावहु । करो कसेऊ आयकै हलधरहु बोलावहु । हलधर लये बोलायकै मोहनकरि आदर । दाऊजू चलि जेइये यहकहे मनसादर । कान्हजाय तुम जेवहु मोको रुचिनाहीं । सखा संग हरि लौगये बैठे यकटाहीं । यदरस अंगजनको गिनै बहुभाति रसोई । सरस कान्तिक वसन मिलै सचि रोही पौई । प्रेमसाहित परसनलगी हलधर

की माता । खालसखा सब जोरि कै बैठे नंदताता । सखासबहि जेवन
 लगे हरि आयसुदीन्हें । सूरदासप्रभु आपह कर कौरहि लीन्हें १३१
 राग आसावरी ॥ नन्दमहरके घर पिछवारे राधा आय बत्थानीहो । मनो
 आबुदल सौर देखिके कुहुँकि कोकिला बानीहो । भूटेहि नामलेति
 ललितकाको काहेजाहु परानीहो । रुन्दावन मगजाति अकेली शिरलिये
 दही मथानीहो । मैं बैठीपरखति द्वारेहैं प्रयासतबहिं तोहिजानीहो ।
 कोककला गुण आगरि नागरि सूरचतुरई ठानीहो १३२ ॥ रागरामकली ॥
 धौरी मेरी गाय बियानी । सखन कहेउ तुम जेवहुबैठे प्रयास चतुरई
 ठानी । गाय नहीं हूँ बछरा नहीं हूँहै राधा रानी । सखा हँसत म-
 नहीमन कहिकहि ऐसे गुणनिधि धानी । जननी भेद कछूनहिं जानै
 बारबार अकुलानी । सूरप्रयास भूखो उठि धायो मरै न गायबियानी
 १३३ ॥ राग कल्याण । चवरी ॥ सैनदै नागरी गई बन धामको । तबहिंकर
 कौर दियो डारिनिहँ रहसको खालबाल जेवत तजे मोहिगई प्रयास
 को । चले अकुलाय बन धाय दयाली गाय देखिहैं जाय मन हरय
 कीन्हें । प्रिया निरखतिपंथ मिलैकव हरिकंथ गयेहरिअन्त हँसिअंक
 लीन्हें । अतिहि मुखपाय अनुरायमिले धायदोउ मनो अतिरंक नव
 निधिहिपाई । सूरप्रभुकी प्रिया राबिका अतिनवल नवलनंदलालके
 सखहिं भाई १३४ ॥ राग धनाश्री ॥ पिछवारे हूँ बोलि सुनायो । कमल
 नयन हरि करतकलेऊ कर नाहिन आननलों आयो । गाय एक बन
 व्याथरहीहै यहिमिसि आतुर उठिधायो । बेसा न लयो लकुट नहिं
 लीन्ही हरबराय कोउ सखा न बुलायो । चौंकि परे चकित हूँ जित
 कित सत्यआहिको सपन भयायो । फलेफिरतअंकनहिं गावत मानहुँ
 सुधा किरण कबिछायो । मिलिबैठे संकेतलतातर कियेसबै जितनो
 मनभायो । सूरदाससुन्दरीसथानी उलटिअंक गिरिधर बियपायो १३५
 राग देवगन्धार ॥ येदोउ राजत रतिरगाधीर । महासुभट प्रकटे भूतल वृष-
 भानसुता बलबीर । भौंहनि धनुचढाय परस्पर सजे कौंचतनधीर ।
 गुणसन्धाननि प्रोथ सुस्तनहिं छुकेकटासनिबीर । खलनेजा आकृतउर
 लागे नेक न सातनि सीर । सूरवी अंधरनिहारि प्रियुबलों सहि सुभज
 भटभीर । प्रेमसमुद्र कंडिसयादि समंगिमिले तजितीर । करत बिहार

दुहं दिशिते मनो सींचलमुवाशरीर । अतिबल यौवन धायरुधिरचिर
 बन्दनमिलि ग्रमनीर । मुरदास स्वामी अरु प्यारी बिहरत कुञ्जकूटी-
 र १३६ ॥ राग कान्हो ॥ नवलनिकुञ्ज नवलनवलामिलि नवलनिकेतनि
 रुचिर बनाये । बिलसतविपिन विलास विविधिवर बारिजबदन वि-
 कससन्नुपाये । लागतचन्द्र मयूयसुतौतनु लताभवनि रंघनि मगआये ।
 मनहुं सदनबलीपर हिमकर सींचत मुवाधारसतनाये । मुनिमुनिशो-
 घति थवरा सुन्दरी सौनिकयो सोदति मनलाये । मुरसखी राधाभा-
 धवमिलि कीडतहें रतिपतिहिलजाये १३७ ॥ राग कल्याण । चर्चरी ॥ हरयि
 प्रियप्रेम प्रियचंकलीन्हो । प्रियाधिनवसनकाहिउलटिहारि भजनिभरि
 सुरत रतिपूर अतिनिबल कीन्हो । अपने करनखनसों अलक कुरवा-
 रही कबहुं बांधे अतिहि लगतलोभा । कबहुं मुखमोरि चुम्बनदेतहरय
 हें अधरभरि दशन वह उनहिंशोभा । बहुरि उपडयो काम राधिका
 पति प्रथाम मगनरसताम नहिं तनुसम्हारै । मुरप्र । नवल नवलानवल
 कुञ्जगृह अन्त नहिं लहत दोउ रति बिहारै १३८ ॥ राग नट ॥ नागर
 प्रथाम नगारिनारि । सुरतरति रराजीति दोऊ अङ्गमन्मथवारि । प्रथाम
 तन घननीलमानो तडिततनुकुमारि । मनोमरकतकनकसंयुत खच्यो
 कामसँवारि । कोकगुणाकरि कुशल प्रथामा उतकुशल नंदलाल । मुर-
 प्रथाम अनङ्गनायक विवश कीन्हो बाल १३९ ॥ राग मलार ॥ उलटि
 आयो शीतलबूंद पवनपूरवाई ॥ बाढेद्रुमसघनवन चहुं ओर घटाछाई ।
 तहां हरिआय सेज पातनकी बिछाय अनमने भये कन्हाई । भीजत
 देखी राधासाधव-कारीकामरीओझाई । अतिदरेरकी भरेर टपकतसब
 अम्बरकांपत तनुवियको प्रिय हंसिके ग्रीवलगाई । भये एकदौर मुर
 प्रथाम-भरीकौर अरशपरश रीभत उपरेनाहीं में समाई १४० दीजे
 कान्ह कांधेउको कम्बर । नान्हीनान्ही बंद बरैयतलारयो भीजतवार
 कार अङ्गलाव राधिका देखि मेघ अङ्गम्बर । हंसि हंसि रीभत बैठ
 रहे दोऊ ओहि सुभग पीताम्बर । शिव सेनकाधिक नारद शारद अंत
 न पावै तुम्बर । मुरप्रथाम गति लखि न परत कहु खात खाल तजे
 सम्बर १४१ ॥ राग कौंसी ॥ सुरतअन्त बैठे बनवारी । प्यारीनयन जुरति
 सन्मुख सकुचि हंसत गिरिबारी । बसन सम्हारि लेत गसे दोऊ

आनंदउर न समाई । चितवत दुर्गिदुर नयन लजौंहीं सो छविबरगि
 न जाई । नागरि अङ्ग मरगजी मारी कान्ह मरगजे अङ्ग । सूरज प्रभु
 प्यारी बशकीन्ही हावभाव रतिरङ्ग १४२ ॥ राग सोरठ ॥ रीभे प्रयास
 नागरी छविपर । प्यारी एकअङ्गपरअटकी यहगतिभई परस्पर । देह
 दशाकी सुधि बहिं काहू नयन नयन मिलि अटके । इन्द्रीवर राजीव
 कमलपर युगखञ्जन युगलटके । चकतभये तनकी सुधि आई बनहीमें
 भइराति । सूरप्रयास प्रयासा विहारकरि सोछविकी इकभांति १४३ ॥
 राग आसावरी ॥ कान्ह कहेउ बनरैति न कीजै सुनहु राविकाप्यारीहो ।
 अति हित सों उरलाय कहेउ अक भवन आपने जारीहो । मात पिता
 जियजानै न कोऊ गुप्तप्रीति रखमारीहो । करते कौरडारि में आयो
 देखति दोउ सहतारीहो । तुम जैसी मोहिं प्यारीलागति चन्द्र चकोर
 कहारीहो । मूरदास स्वामी इनबातनि नागरिरिभई भारीहो १४४ ॥
 राग कल्याण ॥ प्यारी उठि पिय के उर लागी । आलस अंग लटकि लह
 छूरी देखि प्रयास बद्धभागी । सुरत मोति निशि धीती मानो हँसनि
 प्रात भयो जागी । अति मुख कराठ लगायलई हरि अरश परश अ-
 नुरागी । नूतन मेघ नबेली दामिनि सहज मेति मिलि पागी । सूरदास
 प्रभुको अङ्गसभरि कामदम्द तनुत्यागी १४५ ॥ राग गौरी ॥ कहा करौं
 पगचलत न घरको । नयन विमुखजन देखन जात न लुब्धे अरुणा अ-
 धरको । अवगा कहत वे वचन सुनेनहिं रिसपावत मोपरको । मनअ-
 टक्यो रसमधुर हँसनिपर डरत न काहू डरको । इन्द्री अङ्गअङ्ग अरु-
 भानी प्रयासरङ्ग तटवर को । सुनहुं सूरप्रभु रही अकेली कहा कहों
 सुन्दरवरको १४६ ॥ प्रयास आपनी चितवनिवरजौ अरुमुखकी मुसुकानि ।
 तुम्हरे तनक सहज के कारणा सङ्गित्त सर्वस हानि । नयनन निरखि
 बसीठी कीन्ही मनुसिलप्रोपबन्धनि । गहि रतिनाथ लाज जिजुपरते
 हरिको सौंपी आनि । सुनिखि कहति नन्दनन्दनकी दासी सबजान
 जानि । जोइजोइ कहत करति सोईकित आयसु साथेसाँचि । मईत्यार
 गिअभिमान मोहसह प्रतिपरिजन यहिँचानि । सूरसिंधु सरितामिलि
 जैसे मनसा वुन्द हिरानि १४७ ॥ राग विहगरो ॥ अति हित प्रयास बोले
 बैन । तुबबदन देखेबिना येदुष्ट होत न नयन । पलकनहिं चितते दरति

तू प्राणा बल्लभ नारि । सुनत अवसान वचन अमृत हरय अन्तरभारि ।
 सात पितु अवसेर करिहँ गमन कीजै गेह । सूरप्रभु प्रिय विद्या आगे
 प्रकटि पूरसानेह १४८ प्रथाम प्रकटकीन्हें अनुराग । अति आनन्द
 मतिहँसन नागरि बढति आपनो भाग । सुन्दर घन उत्तवर्जहि सिधारे
 इतिहँ गवन करिनारि । दम्पति नयन रहेदोउ भरिभरि गये सुरतरति
 सारि । जननीमन अवसेर करतिही हरि पहुँचे तेहिकाल । सूरप्रथाम
 को सात अङ्गुभरि कहति जाउँबलि लाल १४९ ॥ राग रमन ॥ मैबलि
 जाउँ कन्हैयाकी । करते कौरडारि उठिवाये बातसुनी बनगैयाकी ।
 दौरीगाय आपनी जानी उपजी प्रीति लवैयाकी । तातो जल समोय
 पगधोवति प्रथामदेखि हित मैयाकी । जो अनुराग यशोदा के उर
 मुखकी कहनि नन्हैयाकी । यहमुख सूर और कहुनाहीं सौंह करत
 बल मैयाकी १५० कान्हा प्यारे वारनजाउँ प्रथामसुन्दर सूरति पर ।
 कविसेँ छवोली लटक बदनपर चन्द्रिका की लटकनि अति बिरा-
 जत मुरली सुभग धरेकर । सुन्दर नयन बिद्याल भौंह मुख चापमानो
 तिलक बिराजत ललित भाल पर । सूरप्रथाम मेरे अति वानक बन्यो
 बनसाला अतिही उरराजत कटितट सोहत पीताम्बर १५१ ॥ रागबिहा-
 गरो ॥ वहती मेरीगाय न होई । सुन मैया में तथा धन्यों बन जो देखौं
 नयननिभरि जोई । तुन्दावनदुंध्यों यमुनातट देख्योवन डुंगरन मझा-
 रि । सखासंग कोउ नहीं अकेला कांधकसरि करलकुटी धारि । वह
 तीधेनु और काहूकी युवती सकमिलीधौं कौन । सूरसंग मेरे बहुआई
 मोको बहि पहुँचायो भौन १५२ ॥ राग रामकली ॥ राधा अतिही चतुर
 प्रवीन । कथाको मुखदे चलीगृह हंसगति कटिकीन । हारकेमिस यहां
 आई प्रथामसगिके काज । भयोसबपरसा मनोरथ मिले श्रीबजरज ।
 गाँठि अंचर छोरिके मोतिसरी लीन्हो डाय । सखी आवत देखिराखा
 लई तनकोसाथ । युवति बभूति कहां नागरि निशिगई अकयाम । सूर
 द्योरो कहिसुनायो मैं गइतेहिकाम १५३ ॥ राग कान्हो ॥ ऐसीरीनिवरक
 तू राधा । ब्रज घरघर बनवन डोली तू नहीं कियो कहूँबाधा । मोकोसंग
 बोलि तूलेती करणीकरी अगाधा । प्रातहिते तअब आवतिहैरैनियाम
 लगआधा । पायोहार कियोँ पुनिबाहीं देखौरी मोहिँ साधा । आचर

हेरिग्रीव दिखरायो दामिनि मोल उपाधा । मन मन कहति बातयह
मिलवति गई श्याम अवरधा । सुरसखी लखिलीन्ही ताको यह तो
है कछुदाधा १५४ ॥ राग धनाशी ॥ कहिराधा किनहार चुरायो । वज्र
युवती सबही में जानति घरघर लैलै नाम बतायो । श्यामा कामा रसि-
काचतुरा नवला प्रमुदानारि । सुखमा शीला अवध अनन्दा रुन्दा य-
मुतासारि । कमला तारा बिमला चन्द्रा चन्द्रावलि सुकुमारि । अमला
अवला कुंजा मुकुता हीरा नीलाप्यारि । सुमना बहुला चम्पा जुहिला
ज्ञाना भाना भाम । प्रमा दामा रूपा हंसा रङ्गा हरया नाम । द्रुमिला
रम्भा कृष्णाध्याना मैना नयना रूप । रत्ना कुबुदा मोहा करुणा ललना
लोभानूप । इतनि में कहुकौने लीन्हां ताको नाउँ बताव । सुरश्याम
हैं चोर तुम्हारे में जानति सबदाव १५५ ॥ राग रंजराभरण ॥ सुरतरतिमानि
आइ पियपै तौ गजगति गामिनी । मरगजे हार बियुरे बार देखियत
आयगये याम यामिनी । और शोभासुहाई अङ्गअङ्ग अरसाई बोलति
है अलसामिनी । सुरदास प्रभु छवि निरखतरही रसवस हैरी धन्य
धन्य तूभामिनी १५६ ॥ राग कान्हरी ॥ उरधारीलटै छुटि आननपर भीजी
फुलेलनिषों आली हरिसंगकेलि । सोधे अरगजा अरुमरगजीसारीरी
केशरिखौरबिरज कहूँ कहूँ कुचनपर दरकीअंगिया घनबेलि । आलसहै
भरेनैन बैन अटपटात जात सेंदत जम्हात गात अङ्गमोरि बहियांभेलि
सुरप्रभु प्यारी प्यारे संग करि रस विलास अरश परश दोऊ आंको
मेलि १५७ ॥ रागललित ॥ आइतु डगमगाति सेंडाति जम्हाति रगमगी
रङ्गभरिकै । चन्द्रउदय मुख देखतिहैरी दर्पणा प्रतिबिम्ब निहारिधौं
पीक लीक नैनछवि परिकै । बियुरे अलक सुथरे मुखऊपर सुधामनो
पीवत अलिमाल अनंद भरिकै । सुरज प्रभु रसिकराय रसव्रशकीन्हे
बनाय सुख दीन्ह मन अघाय नवला नवरीभे मनहरिकै १५८ ॥ राग
विलावल ॥ सुनरी राधा अबहि नई । बातें कहा बनावति मोसों हमहूँते
तू चतुरदई । कहां ग्वाल कहँ हार तुम्हारो कहौ जहां तू आजगई ।
मनहीं जानिलेहु में जान्यो जाके रंगतु सदारई । तेरेमनपर कटकरीधौं
में सेसीरी कबहुँ न भई । सुरश्याम संग जबते कीन्हे तबहींते मेंजनि
लई १५९ इन बातनि कछु पावतिरी । बिनदेखे लोगनसों सुनिसुनि

काहे बैर बड़ावतिरी । मेको जहां अकेली देखति तवहीं ये उपजा-
वतिरी । ब्रजयुवतिन की सङ्गति त्यागो पुनिपुनि क्रोध करावतिरी ।
कैसी बुद्धि तुम्हारी सबकी ऐसिय तुम्को भावतिरी । सूरशीश दया
वैवर्धनहीं कहततुम्हुं कहनावतिरी १६० ॥ रागकेदारो । चर्चरी ॥ करति
अवसेर वृषभानु नारी । प्रातते गई बासरगयो बीति सब याम निशि
गई धौं कहां बारी । हारके बासमें कुंवरिबासी बहुत तेहिडर अजहुं
गहिं सदन आई । कहां में जाऊं कहूं धौं रही स्मिकै सखिनसों क-
हति कहं मिलीमाई । हार बहिजाय अतिगई अकुलाय के सुता के
नाह सकहिहे मेरे । सूर यहवात जो सुनै अबहीं महर कहेंगे मोहिंये
ढङ्ग तेरे १६१ ॥ राग सोरठ ॥ राधा डरडराति गृहआई । देखतही कीरति
महतारी हरयि कुंवरि उरलाई । धीरज भयो सुता माता जिय दूरि
भयो तन शोच । मेरीको में काहेबासी कहा कियो यहपोच । लेरी
सैया हार मोतिमरि जाकारण मोहिंबासी । सूर राधिकाके गुण सेसे
मिली आय अविनासी १६२ ॥ राग बिहागरो ॥ परस चतुर वृषभानु
दुलारी । यह सति रची कृपा मिलिबे को परस पुनीत महारी । उत
मुख दियो नन्दनन्दन को इतिहि हर्य महतारी । हार इतो उपकार
करायो कबहुं न उरते टारो । जे शिव सनक सनातन दुर्लभ ते वश
किये कुमारी । सूरदासप्रभु कृपा अगोचर निगमनिहंते न्यारी १६३
रागसारंग । चर्चरी ॥ निगमते अगम हरिकृपा न्यारी । प्रीतिबश प्रयास
की रायकीरङ्ग कोउ पुरुष की नारि नहिं भेदकारी । प्रीति बसुदेव
की गर्भ लीन्हे बास प्रीतिके हेत ब्रजवेय कीन्हे । प्रीतिकेहेत यशु
सति कियो पयपान प्रीतिकेहेत अवतार लीन्हे । प्रीतिकेहेत बनधेनु
चारत कान्ह प्रीतिकेहेत नंदसुवन नामा । सूरप्रभुको प्रीति राधिका
जिय प्रीति प्रीतिके हेत दोउ प्रयास प्रयासा १६४ प्रीतिके वषय येहें
सुरारी । प्रीतिके वषय नटवर बेय धरेउहै प्रीतिबश करज गिरिराज
धारी । प्रीतिके वषय ब्रज भये माखनचोर प्रीतिके वषय दाँवरि बँ-
धाई । प्रीतिके वषय गोपी रमणा नाम प्रिय प्रीतिबश तरु यमल मो-
खदाई । प्रीतिबश नन्द बन्धन बरुणा सदनगये प्रीतिके वषय बनधाम
कामी । प्रीतिके वषय प्रभुसूर जिभवन बिदित प्रीतिबश सदा राधिका

स्वामी १६५ ॥ राग भैरव ॥ प्रयासभये वश नागरिके । नयनकटाक्ष बंक
अवलोकनिरीक्षे घोष उजागरिके । चितमधुकररसकमलकोशको
प्यारी बदन सुधागरिके । लोकलाज सम्पुट नहिँ छूटत फिरिफिरि
आवत नागरिके । मिलन प्रकाश मनावत मनमन कहाकहाँ अनुरा-
गनिके । सूरप्रयास वशवास भयेहैं धनि ऐसी बह्मभागनिके १६६ ॥ राग
आसावरी ॥ प्रयास भये वृथभानु सुतावश और नहीं कह्यु भावै हो । जो
प्रभु तिहंभुवनको नायक सूरमुनि अन्त न पावैहो । जाको शिवध्या-
वत निशिवासर सहसानन जेहि गावैहो । सोहरिराधा बदनचन्दको न-
यन चकोर तयावैहो । जाको देखि अनङ्ग अनङ्गत नागरि छवि भर-
मावैहो । सूरप्रयास प्रयासावश ऐसेज्यों संग छाँह डुलावैहो १६७ ॥

राग जैतन्त्री ॥ कबहुँ प्रयास यमुना तदजात । कबहुँ कदम्ब चढत देखतमा
राधाबिनु अतिही अकुलात । कबहुँ जात बन कुंजधामको देखि रहत
कछुनहीं सुहात । तब आवत वृथभानु पुराको अतिअनुराग भरेउ न-
तात । प्यारी हृदय प्रकटही जानति तबमन माँझ सिहात । सूरदास
प्रभु नागरिके उर नागर प्रयासलगात १६८ ॥ राग गुजरी ॥ राधाप्रयास
प्रयास राधारङ्ग । पिय प्यारीको हिरदय राखत प्यारी रहति सर-
हरिसंग । नागरि नयनचकोर बदनशशि पियमधुकर अम्बुज मुन्द-
मुख । चाहत अरश परश ऐसेकरि हरिनागरि नागरि नागर मुख
उध्रमुख शोचि रहत मनहींमन तब जानत तनको यहकारन ।

सूर कुलकानि मानिजिय दुखमुख दोउफल करत बिचारन १६९

अथ यमुनाजी गमन स्वामिनीजी को तथा युगल समागम ॥

राग मूढो ॥ यमुनाचली राधिकागोरी । युवति वृन्दबिच चतुर नागरी
देखे नन्दसुवन तेहिखोरी । व्याकुल दशा जानि मोहनकी मनहींमन
डरपी उन ओरी । चतुर कामफंद परेकन्हारि अबधौं इनहिँ बुझावै
कोरी । इत सखियन सों बात बनावति अति ह्वै गई तनकसो भोरी ।
सूर उतहि हरिभाव बतावति धीर धरौ मिलिहो दोउ जोरी १ ॥ राग
धनाश्री ॥ तब राधायक भाव बनावति । मुखमुमुकाय सकुचि पुनिलीन्हे
सहज चली अलकै निरवारति । एक सखी आवत जल लीन्हे तासों
कहाति सुनावति । टेरिकहेउ तेरे जैसे मैंहीं यमुनाते आवति । तब मुख

पाय चलेहरि घरको हरिप्रीतमहिँ मनावति । सूरजप्रभु व्युत्पन्नकोक
 गुणा ताते हरिहरि ध्यावति २ ॥ राग सारंग चर्चरी ॥ श्यामकी भाव दैगई
 राधा । नारि नागरिन काहू लख्यो कोउ नहीं कान्हू कछु करत है
 बहुत अनुराधा । चितै हरिबदन याको हँसत में लखीवै उतहिगये कछु
 हयकीये । भावतौ भावके साँगनाहीं सुने ये महाचतुर चतुरई लीये ।
 आजुही रैन दोउ संग ये मिलहिंगे हरेकाहि परस्पर नहिँ जानी ।
 सर ब्रजनागरी नारि नागरि फिरी ब्रजतुरत लैगई यमुनपानी ३ ॥ राग
 टोड़ी ॥ भावदियो आवैंगे प्रयास । अङ्गअङ्ग आभूषण साजति राजति
 अपने धास । रतिरसा जामि अनङ्ग नृपतिसें आपनृपति बलजोरति ।
 अति सुगन्ध मईत अँग अङ्गनि उवटनभूषण खोलति । वीराहार चीर
 चोली छवि सैना साजि अङ्गार । पान बचन संतास कवचदै जोरे सूर
 अपार ४ ॥ राग कान्हो ॥ प्यारी अङ्ग अङ्गारकियो । बेसी रची सुभग
 कर अपने टीकोभाल दियो । मोतियन साँगसँवारि प्रथमहीं केशरि
 आइ सँवारी । लोचन आजिग्रवण तरिबनि छविको कविकहैनिर-
 वारी । नाला नथ अतिही छवि राजति वीरा अधरनि रङ्ग । नवसत
 साजि चीर चोलीबनि सूर मिलन हरिसंग ५ ॥ राग कान्या ॥ नागरि
 नागर पण्य निहारै । उदयबाल शशि अस्तभयो अब जियजिय यहै
 बिचारै । कीबौ अवहीं आवत हूँ की आवनहिँ पैं । मात पिता
 की वास उतहि इत मेरे घरहि डरै । अङ्ग अङ्गार प्रयास हित कोन्हे
 वृथाहोन चेचाहत । सूरप्रयास आवैकी नाहीं मनमन यह अवगाहत
 ६ ॥ राग बिहाग ॥ राधा रचिरचि सेज सँवारति । भवन गवन करिहैं
 हरि मेरे हरयि दुखहि निरवारति । तापर सुमन सुगन्ध बिछावति
 बारम्बार निहारति । आवैकबहुँ अचानकही जो सुभग पाँवड़े डार-
 ति । यह अभिलाषहि में हरिप्रकटे पुस्त्य भवन सकुचानी । वहसुख
 ग्रीराधामाधव को सूर उतहिँ यहजानी ७ कहा कहीं सुखकहेउ न
 जाय । वह अभिलाष प्रयासकी आवनिदुहुँ उर आनंद नहीं समाय ।
 द्वादशकान्ह द्वादशी आपन वहनिशि वै हरिराधा योग । बहरसकी
 भुभुक्कनि वहमहिमा वह मुमुक्कनि बेसोसंयोग । वेहितबोल परस्पर
 दोऊ ठठुकत कहत प्रेम सकुचानि । सूर प्रयासकर बामभुजा धरि उ-

५६६ सूरसागर अनुरागलीला रागकल्पद्रुम ।

ऊँगलई बह मुख पहिँचानि ठ ॥ राग कान्हरो ॥ प्रयास सकुचि प्यारी
उरजानी । उऊँगलई बामाभुजकरिकै बारबार कहिबानी । निरखति
सकुच बदन हरिप्यारी प्रेमसहित जुहरानी । करत कहा पिय अति
उतायली मैं कहजाति परानी । कुटिल कटाक्ष बंककरि भृकुटी आ-
नन मुरिमुसकानी । सूरप्रयास गिरिधर रतिनागर नागरि राधारानी
६ ॥ राग विहागरो ॥ नागर नागरि करत बिहार । काम नृपति सेनादुहुं
अङ्गनि शोभावार न पार । अधर अधर नयननि नयननि भ्रुवभाल
क्रियो यकठौर । मनो इन्दिर कमल कुशेशय चारिभँवर रँगऔर ।
बदन भाल चिनिकै सम दोऊ अरश परश बरनारि । मनो बिबिचंद
चकोर परस्पर कमल असल रबिवारि । रतिआगम हित अतिउप-
जायो पियप्यारी मनसक । सूरदास स्वासी स्वामिनि मिलि कोक
कलाजु अनेक १० ॥ राग केदारो । चर्चरी ॥ प्रयास प्रयासा परस कुशल
जोरी । मनो नव जलद पर दासिनी की कला सहज गति मेदि अति
भई भोरी । अलक आतुर बिथुरि प्रयास मुख पर रहे मनो बल राहु
शशि घेरि लीन्हे । चितैमुख चारु चुम्बन करति सकुच तजि दशन
छतअधर पिय सगन दीन्हे । परतअस बंददप टपकि आनन बाल भई
बेहालरति मोहभारी । बिधु परसदन्त बिभुतुगाउ अमृत चुबत सुर बि-
परीतरति पीउचारी ११ ॥ राग कुरंग ॥ कुञ्जके निकट कञ्जसुरत निरत सों
सेजरा मुखगात । टूटिगई तनी चोली दरकि तरकिगई चारो यास
रजनी बिहानीभोरे भोरे प्रात । आलस सों उठि बैठे अरश परश दोउ
दम्पति मनमन अतिमुसकात । सूरआश पूरी प्रयासाप्रयास बनी जोरी
निशिरस सुधिआये नयन नयनन लजात १२ ॥ राग ललित ॥ राजत दोउ
रतिरङ्ग भरे । सहजप्रीति बिपरीति निशासब आलस सेज परे । अति
रगाबीर परस्पर दोऊ नेकहु कोउ न मुरे । अँगअँग बल अपने अस्वति
सों रतिसंग्राम लरे । सगन मुरभिरहे सेज खेतपर इतउत कोउ न ठरे ।
सूरप्रयास प्रयासा रतिरगाते यकपग पल न ठरे १३ ॥ रागविभास ॥ प्रयासा
प्रयाससेज उठिबैठे अरशपरश पर करत बिहार । उन उनकी पहिरी
मेतिनकी माला उन उनको पहिरेउ नौसर को हार । लटपट घेच स-
म्हारति प्यारी अलक संहारत नन्दकुमार । सूरदासप्रभु नागरिनागर

विपरिति भूषण करत युगार १४ ॥ रागललित ॥ करि युद्धारदोउ अ-
रसाने । प्रथमदोउ तमचुर सुनिहरये पुनि पौढे दोउ लपटाने ॥ रति
रगायुक्त याम प्रियलीके सेजपरे उटिपुनि मुरझाने । सानो मूरखेतसम
लारिके गिरे उठ ॥ फिरि गिरत लजाने १५ ॥ बोले तमचुर चौखो याम
को गजर मारेउ पवनभयो शीतल तमितगमिता गई । प्राची अरुणानी
भानकिरणा उतारीतम छपैउडुगारा चन्द्रमा मलीनतालाई । मुकुलेकमल
बच्छबन्धन विछोहीबाल चर चली गाय दुजपैती करकोदई । मूर-
दास राविका सरसवाणी बोलि कहै जागो प्राणप्यारे जु सवारे की
समग्रभई १६ ॥ रागविभाम ॥ चिरई चुहचुहानी चन्दकी ज्योति परानी
रजनी बिहानी प्राची पियरी प्रवान की । तारिका दुरानी तमघट्यो
तमचुरबोले शबराभनकपरी रागललितके तानकी । भृङ्गमिले भार्या
विछुरि जोरीकोक मिले उतरी पनिचअब कामकेकमानकी । अथ-
वत आयेगृह बहुरि उवनभानु उठो प्राणानाथ महाजासन मणिजानकी ।
व्रजघर घर यहै करत चवावलोग बारबार कहनिकरनि डरनिघरनि
घरनिपरा आनकी । मूरदासप्रभु नन्दसुवन सिधारौधम सुनतउठे कवि
कृपाल कृपाके निधानकी १७ ॥ राग रामकली । चर्चरी ॥ प्राणिये प्राणपति
रैनि बीती । चन्दकी द्युतिगई पहैपीरी भई सकुच गहीं दई अतिहि
भीती । मातृपितृ बन्धुगुरुजन अबहिंजानिहैं लखैं जिनिकहुं यहलाज
भारी । सखिन आगेनहीं नहीं सबदिन कही मोहिंछे रहति सबैनारी ।
उठे मुसुकाय अकुलाय अतुरायके निकसिगये श्यामव्रजनारि जान्यो ।
सूरप्रभु नन्दनन्दन रस दैगये निरखि यकटक रहिप्रल भुलान्यो १८
राग बिलावल ॥ प्रकट दरश दैगये कन्हाइ । रावागृहरे निकसतदेखे यह
उनकी मनसाव पुराई । शीघ्रमुकुट मोतिन उरमाल पीतांबरपट सहज
फिराई । श्यामबरदातन निरखिभुलानी अङ्गअङ्ग बिकहेउ न जाई ।
करति शोच मन राधा अपने आलस भरे गये हनि माई । सूर श्याम
निशिनेक न सोये यहै कहति पुनिपुनि पछिताई १९ ॥ श्यामगये देखे
जिनि कोई । सखियनिसों निबहन पुनिपैहीं जिनि आगे राख्योसर
गोई । देखे आय द्वार ह्वैनागरि जहां तहां व्रजनार । सकाचिगई युव-
तितके देखतदेख कीन्हे जिय भाषी । मन चिन्ताअतिही उपजायो

बारबार पछितानी । सूरप्रयामसें प्रीति गुप्तहीं आजु सबान यहजा-
 नी२० बारबार राधापछितानी । निकसेप्रयामसदन मेरे ते इनअटकारि
 पहिँचानी । नितहीनित बभूति ये मोसें में इनपर सतराति । अबतौ
 हरि परकटहीदेखे पुनिपुनि कहति लजाति । यकऐसेहि भक्तभोरति
 मोसें पायो बीकोदाव । सूरआजु केहिभांति दुरावैं शोचति करति
 उपाव २१ शोचपरेउ मन राधिका कहुकहत न आवैं । कहुहरवैं कहु
 दुखकरैं मनमौज बढ़ावैं । निशि रसरङ्गहिमें परी तनमुधि बिसरावैं ।
 कबहुँ बिचारति नितुर हूँ सखि उवाच बनावैं । अबहीं मोको बूझिहैं
 युवती चतुरावैं । तिन सन्मुख कैहीं कहा प्रभु सूरमनावैं २२ ॥ रागनट ॥
 कबहुँ मगन हरिके नेह । प्रयामसंग निशिसुरतको मुख भूलि अपनी
 देह । जबहिँ आवति मुधि सखिनकी रहति अति शरमाय । तबकरति
 हरिध्यान हिरदय चरणाकमल मनाय । होयउयों परमोध उनको मेरी
 पति जिनजाय । निदरि निदरि सबको रहीहैं आजुलौं यहिभाय ।
 अबहिँ अब जुरिचायहैं यहां तुमबिना न उपाय । सूर प्रभु ऐसी करौ
 कहु बहुरि जाहिँ लजाय २३ ॥ रागटोड़ी ॥ उवाचकहा देहों में उनको ।
 की आवति अबहींकी क्षणाकहि चोर कहेंगी मोको । कैसेहु पातिरहैं
 विधाता अब यहकरो सम्हारि । घेरेहि रहति दुरावैं कबलौं ऐसी
 नागरिनारि । नयनाभये चकोररहतहैं मुखशशि पूरणा काम । सुनहु
 सूर यहदशा हमारे ये सब ब्रजकीबाम २४ ॥ रागजैतथी ॥ ये सबमेरोहि
 खोजपरी । मैतौ श्याममिली नहिनीके आजुरहीं निशिसङ्ग हरी । यु-
 वतीहैं संबद्धे सवारी घरबनहुँ में रहतिभरी । कैसेधौं यहसाध मिटैगी
 कहाँमिलैं जो राखरी । प्रकटकरैं तौ बनति नहीं कहु रोक सकुच
 कुललाज मरी । तेपरकट अबहीं इनदेखे सूरजप्रभु ब्रजराजहरी २५
 राग धनाश्री ॥ तब नगरि मन हरय बढ़ायो । परम कुशल राधा हरि
 प्यारी हिरदय बुद्धि उपायो । अब आवैं कैसेहु अंगबूझैं उवाचमनाहिं
 ठहरायो । अति अनन्द पुलकतन कीन्हे शोच मोह बिसरायो । प्र-
 कटगये जैसे नंदनदन बहैध्यान उपजायो । सूरदासप्रभु रूप बखान्यो
 इनको जो दरशायो २६ ॥ रागललित ॥ राधा हरिके गर्वहरो । सखि-
 यनको आगम जाजान्यो बैठीरही खरी । उत ब्रजनारि सङ्ग जुरिके

वै हँसति करति परिहास । चलौ न जाय देखियेरी वा राधाको उज्ज-
हास । कैसेो बदन अँगार कौनविधि अङ्गदशा भइकैसेी । सुरश्यामसंग
निशि रसकीये निधरक ह्वै हैवैसी २७ ॥ राग जैगंधी ॥ सुनौं सखी राधा
के सनकी यहकरणी सखिनहिं जान्यो । जब हम जाति चलीयमुना
को तबहीं मैं बाको पहिंचान्यो । तबहिं सैनदे प्रियामबुलाये गृह आ-
वनको भाव । उनके गुण धौं कौनहिं जानत चतुर शिरोमणि राव ।
सुनहु सखी अति नहीं कीजिये मूढ़परे अपनेहीं । सुरश्याम मुखहमहिं
दुरावति आजुमिले सपनेहीं २८ ॥ राग सारंग ॥ तुम जो कहति राधिका
भोरी । आजुरहै अब कहाँ भुराई कौन दिननकी थोरी । जे छोटी तेई
हैं खोटी साजति साजति जोरी । बिन्दी भाल नयननि त आंजति नि-
रखि रहति तनगोरी । चमकति चलै बदन मदकावै ऐसी घोबनजोरी ।
सूरसखी तेहिकहति अयानी मन मोहनहिं ठगोरी २९ ॥ राग रामकली ॥
राधाको मैं तबहीं जानी । अपने करके सांग सँवारै रचि रचि बेगी
बानी । मुखभरि पान मुकूर लै देखति तिनसों करति अयानी । लोचन
आंजि सुधारति करजनि छांह निरखि मुमुकानी । बारबार उरजनि
अवलोकति उनते कौन सयानी । सुरदास जैसीहै राधा तैसी मैं पहिं-
चानी ३० ॥ राग गोंडमलार ॥ राधिका सदन ब्रजनारि आई । रही मुख
मंदिकै बचनबोलै नहीं नयन की सैनदे वै बुलाई । इन तबहिं लखि
लई रचतिहै चतुरई बुद्धि रचिकै अबहिं और कैहें । चोर चोरी करै
आपने जांघ बल प्रकट कैहैं तुम्हें नहिं पत्येहैं । भौंह देखौं निरखि
जवाब करिहै कौन तुमहुं राखति गर्बबोली देखौ । सुरप्रभु संगते अ-
तिहि निधरकभई नयनमुख और तुमनहीं देखौ ३१ ॥ राग मूढ़ी ॥ आजु
कहा मुख मंदि रहीरी । सुनति नहींहे कुंवारि राधिका कापर रिस
करि मौनगहीरी । हमको यहकाहेन सुनावति हमहँतेरी सङ्गसखीरी ।
यह कहिकहिं मुमुकात परस्पर चतुरनारि वह तबहिं लखीसी । की
धौं ध्यान करति देवनको कीधौं ऐसी प्रकृति परीरी । सूरजबहिं आ-
वति हमतेरे तबतब ऐसी धरणा धरीरी ३२ ॥ राग बिलावल ॥ बार बार
युवती सब राधासों भाखें । तुम दुराव कत करतिहो हम तुमसों नहिं
राखें । इतनेो शोचपरेड कहा मुख जवाब न आवै । हमतोहैं तेरीसखी

६०० सुरसागर अनुरागलीला रागकल्पद्रुम ।

सो कहि न सुनावै । कहु दिनते तेरीदशा तन रहति भुलाये । निदुर भई
कापर इतो कहि सुर सुभाये ३३ ॥ राग गोंडमलार ॥ राधिका कहति ये
करतिहांसी । रहति मुखमुख हेरिनयनकी सैन दै कहति मोसों कृपा
की उपासी । सुनहुरी सखी मैं तुमसों कहाँ कहा बूझति मोहिं कहति
राधा । आजुहि प्रात एक चरित देख्यो नयो तबहिंते मोहिं यह भई
बाधा । कहाँ जो एककरि देखति नयनभरि भोरते भोर ह्वैरही माई ।
सुरप्रभु प्रयामकी प्रयामता मेघकीयहै जियशोच कहुनहिं सोहाई ३४
राग रामकली ॥ कन्धरकी घरमेर सखीरी । की सगसीपजकी बगपंगति
की मयूरकी पीड पखीरी । की सुरचाप किधौं बनमाला तडित कि-
धौं पटपोत । किधौं मन्द गरजनि जलधरकी पगनूपुर रवनीत । की
जलधरकी प्रयाम सुभागतन यहै भोरते शोचति । सुरश्याम रस भरी
राधिका उमंगि उमंगि रसमोचति ३५ ॥ तथा ॥ आजु सखी अरुणो-
दय मेरे नयननि धोखभयो । की हरि आजु पंथ यहिगवने कीसखि
प्रयाम जलद उनयो । की बगपाँति भाँति उर पर की मुकुतमाल बहु
मोल । कीधौं मोरमुदित नाचत की वरुह मुकुटकी डोल । कीघनघोर
गँभीर प्रात उठि की श्वालनि की टेरनि । की दामिनि कौंधति चहुं
दिशिकी सुभग पीतपट फेरनि । कीबनमालाहै उरराजत की सुरपति
धनुचास । सुरदासप्रभु रसभरि उमंगी राधाकहति बिचारु ३६ ॥ राग
विलावल ॥ सुनहुसखी राधा कहनावति । हमआई याके जेहिकाररा सो
यह प्रकार सुनावति । हमदेख्यो सोई इनदेखे सेसोहि देखलगावति । यह
पुनीत हमहीं अपराधिनितन अपराध बढ़ावति । इतनेहिं रहौ औरजनि
भायहु अजहंलाज न आवति । सुरश्याम राधा जो सकै उनहिंनहीं कहि
आवति ३७ ॥ रागमूजे ॥ राधाको कहु और स्वभाव । हमदेखति हरिको
औरहिअंग यह निरखति सतिभाव । यहहै बिनकलंककी साँची हम
कलंकमेंसानी । हम हरिकीदासी सरिनाहीं यहहरिकीपटरानी । याकी
अस्तुति हमकह करिहैं रसना एक न आवै । सुरश्याम कोइ नहिंजानै
भजनप्रताप बतावै ३८ ॥ रागगोंडमलार ॥ राधिकाहृदयतेधोखदारौ । नन्द
केलाल देखे प्रातकालतेमेघनहिं प्रयामतनुकबिबिचारौ । इन्द्रधनुनहीं
बनदास बहुसुमन के नहीं बगधरति बर मोरतिमाला । सखी वह नहीं

शिरमुकट शीखशिख पटु तडितनहिं पीत पटुर्छाबि रमाला । मंद गर-
जति लहीं चरखालूपुरशब्द भोरहीं आजु हरिगवन कीन्हों । मूरप्रभु भा-
सिली भवनकर गवनमन रवन दुखके दवन जानि लीन्हों ३६ भोरजे
गये तेइग्यामबैरी । धोखमोहिं भयो तबलखेनहिं गककरि नीलनव
मेघछाबि चिह्न लैरी । शिखीकी भांति शिरपीड डोलत सुभग चापते
अधिक बनमाल शोभा । सांवरी घटापर पांतिबगते रुचिर मोतिवर
दाज उनदेखि लोभा । तडित ते पीत पटुकी चमक राजई गरज नहिं
प्रातही रवान कोलें । मूरप्रभु मखी यहवात साँचीकही भवनवश मेघ
उयो अङ्गडोलें ४० ॥ राग कल्याण ॥ धन्यहो धन्यतुम घोयनारी । मोहिं
धोखोगयो दरश तुमकोभयो तुमहिंस्वहिं देखिरी बीच भारी । जा-
दिना संगमें गई अस्नानको यमुनकेतीर देखे कन्हाई । पीड शीखगड
शिरवेय नतवर कछेअङ्ग यकछटा में रहि भुलाई । यकादिवस आय
ठाह्ये भये द्वारहरि आजुकी द्वार ह्वै गये मेरे । मूरप्रभु तादिना तुमहिं
कहिदियो स्वहिं आजुमें लखे सोउ कहेतेरे ४१ ॥ राग आसावरी ॥ तुम
कैसे दरशन पावतिरी । कैसे प्रयास अङ्ग अवलोकति क्यों नयननि
ठहरावतिरी । कैसेरूप हृदय राखति हौं वै अतिहैं झलकावतिरी ।
सोको जहाँ मिलतहैं माई तहैं तहैं अति भरमावतिरी । मैंकबहुंनकी
नाहेंदेखे कहकहीं कहत न आवतिरी । मूरप्रयास कैसे तुम देखति मोहुं
दरशन नहिं आवतिरी ४२ ॥ तथा ॥ धन्यधन्य दृयभानकुमारी । धनि
माता धनिपिता धन्य तुव जिनतोसी उपजाईवारी । धन्यादिवस धनि
निशा तबहिंकी धन्यवरी धनि याम । धन्य कान्ह तेरेवश जेहैं धनि
कीन्हे बश प्रयास । धनिमति धनिरति धनि तेरोहित धन्यभक्ति धनि
भाव । मूरप्रयास पतिधन्य नारितु धनि धनि एक सुभाव ४३ ॥ राग
चेतश्री ॥ तौहिं प्रयास हमकहा देखौवैं । तुमतेन्यारे रहतकहूँ वै नैकनहीं
बिसरावैं । सकैजीव देह द्वैराची यहकहि कहि जु सुनावैं । उनकी पट-
तर तुमकोदीजै तुव पटतर वै पावैं । अमृत कहा अमृत गुण प्रगटै सो
हम कहा बतावैं । मूरदास उयो गंगोको गुण दक्षति कहांबुझावैं ४४
रागटींडी ॥ मुनि राधा यह कहा बिचारै । वैतेरे रंगतु उनके रंग अपना
मुखको कौन निहारै । जो देखै तौ कहां आपनी प्रयासहृदय झांकाया ।

सेसीदशा नन्दनन्दनकी तुमदोउ निर्मल काया । नीलाम्बर श्यामल
तनुकीछवि तुबछवि पीतसुवास । घनभीतर दामिनी प्रकाशित दामिनि
घन चहुँवास । सुनरी सखी बिलछकहीं तोसें चाहति हरिको रूप ।
सूरसुनहुँ तुमदोउ समजोरी यकयक रूप अनूप ४५ ॥ रागधनाश्री ॥ सुन
ललिता चन्द्रावलि बात । मोसें श्याम नेहमानतहें तुमसें कहति ल-
जात । तुमतो सदा रहति हरिसंगहि भेदकहे यहमोहिं । हाहाकरति
पायँहैं लागति शपथहै मेरीतोहिं । काहेको इतराति सखीरी तोते
प्यारी कौन । सुरप्रियाम तेरेबश सेसे ज्यों पंखा बश पौन ४६ ॥ राग
नटनारायण ॥ पिय तेरेबश योरीमाई । ज्यों संगही संग छाँह देहबश प्रेम
कहेउ नहिं जाई । ज्यों चकोरबश शरद चन्द्रके चक्रवाक बशभान ।
जैसे मधुकर कमल कोशपर ल्योबश श्याम सुजान । ज्योंचातक बश
स्वाति बंदके तनके बश ज्योंजीव । सूरदास प्रभु अति बशतेरे समुक्ति
देखि धौं हीव ४७ तूरीछाँह किये हरिराखति । अपनेमन न जानति
नीके मुख मेंसें यह भाखति । अति बश रहत कान्हरी तोको मुकुट
हाथलै देखौ । तैसियहै मनमोहनकी गति उहैभावमनलेखौ । तुमबा-
सांग अङ्गदक्षिण वै सेसे करि एक देह । सूरमीन मधुकर चकोर के
इतनेो नहीं सनेह ४८ ॥

इहांते ठकुरायन सोभाय गर्बमन कीन्हें प्रभुदारेते फिरे
विरह कथा ललितादिकसें ॥

राग देसाख ॥ नंदनन्दन बश तेरेरी । सुनु राधिका परस बहभागिनि
अनुरागिति हरिकेरेरी । जादिते तोहिं खरिक्मिले हरि धेनु दुहा-
वन आईरी । तादिते बशभये कन्हाई कहा ठगौरी लाईरी । अब तू
कहति कहा में आगे बातनि मोहिं भुलावैरी । सूरदास ललिता को
बाणी सुनि सुनि हर्य बहवैरी ४९ ॥ रागटोड़ी ॥ ललितामुख सुनिसुनि
वै बानी । मैं सेसी जियमें यहआनी । औरनहीं मोसरि कोउ ब्रजकी ।
हैं राधा आधा अंग हरिको । अपनेहीं बश पिय को करिहैं । कहूं
जात देखौं तब लरिहैं । घरघर सबैगई ब्रजनारी । यहि अन्तर आये
गिरिधारी । हरि अन्तर्यामी अबिनासी । जानि राधिका गर्बउदासी ।
सूरप्रियाम राधातन हेरेउ । नागरि देखतही मुखफेरेउ ५० ॥ रागसारंग ॥

वरज्यो नहिं मानत उभक्तत फिरत है कान्ह घर घर । तुम मिसही
 मिस देखत फिरत युवतनके बदन कौनके बर । कोउ अपनेघर काम
 काज जैसे तैसे तुम आवतहो हो दरदर । सूरदासप्रभु अतिहि अचगरी
 देत डोलत नेकनहीं जियमेंडर ५१ ॥ राग बिलावल ॥ यह जान्यो जिय
 राधिकाद्वारे हरिलागे । गर्बकियो जिय प्रेमको सेसे अनुरागे । बैठि
 रही अभिमानसें यहठौर न पायो । हृदय प्रयाम सुखधामने अभिमान
 बसायो । जहां गर्ब अभिमानहै तहँ गोविंदनाहीं । राधाके यह जानि
 के आपुन पछिताहीं । तहां नेकहु नहिं रहे नहिं दर्शन दीन्हें । सूर
 प्रयाम अन्तरभये जबगर्बहि चीन्हें ५२ ॥ रागधनाश्री ॥ राधा चकत भई
 मनमाहीं । अबहीं प्रयाम द्वारह्वै भांकीो यहँ आये क्यों नाहीं । आपु
 न आय तहां जो देखे मिले न नन्दकुमार । आवतहैं फिरि गये प्रयाम
 घन अतिही भयो बिचार । सुनोभवन अकेलीमेंही नीके उभक्ति नि-
 हारेउ । मोते चूकपरी में जानो तातेमोहिं बिसारेउ । यक अभिमान
 हृदयकरि बैठी येतेपर भहरानी । सूरदासप्रभु गये द्वारह्वै तब व्याकुल
 पछितानी ५३ ॥ रागगोडसारंग ॥ मैं अपने जिय गर्बकियो । वै अन्तर्यामी
 सबजानत देखतही उन चरचिलियो । कासें कहीं मिलावै को अब
 नेक न धीरजु धरत जियो । वैतौनितुर भये या बुधिते अहङ्कार फल
 यहैदियो । तब आपुनको नितुर करावति प्रीतिमुखि भरिलेतिहियो ।
 सूरदासप्रभु वे बहुनायक मोसी उनको कोटिदियो ५४ ॥ रागबिहागरे ॥
 प्रयाम बिरह बन मांझ हिरानी । संगी गये संग सब तजिकै आपुन
 भई दिवानी । प्रयाम धाममें गर्बहि राखति दुराचारणी जानी । ताते
 त्यागि गये आपुहि सब अङ्ग अङ्ग रतिमानी । अहङ्कार लम्पट अप-
 काजी सङ्ग न रहेउ चिदानी । सूरप्रयाम बिनु नागरिराधा नागरचित्र
 भुलानी ५५ महा बिरहके मांझपरी । चकतभई ज्यों चित्रपूतरी हरि
 मारग बिसरी । संग बटपार गर्ब जब देख्यो साथीछोड़ि पराने । प्रयाम
 शहर अंग साधुरी तहँ वै जाय लुकाने । यह बनमांझ अकेली व्या-
 कुल सम्पति गर्ब छुड़ायो । सूरप्रयाम सुधिरति न उरते यहमनो जीव
 बचायो ५६ ॥ रागमाह ॥ बिरहबन मिलनिमुधि शसभारी । नयनजल
 नदीपर्वत उरजभई मनोसुभा बेनीभई अहिनिकारी । नयनमृग अवरा

बनकूप जहँतहँ मिलै असगली सघन नहिं पारपावै । सिंहकटि व्याघ्र
 अंग अङ्गभूषणा सनो दुनहभये भार अतिही डरावै । शरणा कर अख
 हरि डर लहत कोउनहिं अङ्गमुख प्रयासबिनु भयेसे । सूर प्रभु नाम
 कससाधाम जाउँ क्यों कृपामारा बहुरि मिलै कैसे ५७ ॥ रागटोड़ी ॥
 राधाभवन सखीमिलि आई । अतिव्याकुल सुधिबुधि कछुनाहीं देह
 दशा बिसराई । बांहगही तेहि बूझनलागी कहाभयोरी माई । सेसी
 बिबश भई तुम काहे कहा न हमहिं सुनाई । काल्हिहि और बरणा
 तोहिं देखी आजुगई मुरझाई । सूरप्रयास देखेकी बहुरेउ उनहिं ठगौरी
 लाई ५८ ॥ रागहमीरी ॥ प्रयासनाम चकतभई अवरा सुनतजागी । आये
 हरि यहै कहिकहि सखिन कंठलागी । मोतेयह चूकपरी मैंबड़ी अ-
 भागी । अबके अपराध समहु गयेमोहिं त्यागी । चरणा कलल शरणा
 देहु बारबार मांगी । सूरदास प्रभुकेवश राधा अनुरागी ५९ ॥ रागबि-
 हागरी ॥ सखीरही राधामुख हेरि । चकतभई कछुकहत न आवै करन
 लगी अवसेरि । बारबार जलपरसि बदनसों बचन सुनावत टेरि । आजु
 भई कैसी गतितेरी ब्रजमें चतुरि निवेरि । तबजान्यो यहतौ चन्द्रावलि
 लाजसहित मुखफेरि । सूर तबहिं सुधिभई आपनी मेदीमोह अंधेरि ६०
 रागजैतथी ॥ कहाभई तू आज अयानी । अतिही चतुर प्रवीणा राधिका
 सखियनमें तुमबड़ी सयानी । कहिधौं बात हृदयकी मोसों सेसीतुकाहे
 विततागी । मुखसलीन तनकी गति औरै बूझति बारबार सों बानी ।
 कहा दुराव करौंरी तोसों मैंतो हरिके हाथ बिकानी । सूरप्रयास मो
 को परित्यागी जाकारणा मैंभई दिवानी ६१ कृष्णाकृष्ण कहति फिरे
 राधेआपहिकृष्णाहोरही । आपहिकृष्णआयहीराधा कृष्णाराधाहोरही ॥

इति श्रीकृष्णानन्दव्यासदेव रागसागरोद्भव सूरसागरराधाजूके

अनुरागलीला रागकल्पद्रुम संपूर्णम् ॥

अथ सूरसागर रागकल्पद्रुम ॥

श्रीकृष्णानन्दव्यासदेवरागसागरोद्भवश्रीप्यारीजीके

प्रेमअनुरागलीला ॥

तथा ॥ अब मैं तोसों कहा दुराऊँ । अपनीकथा प्रयासकी करणी

तो आगे कहि प्रकट सुनाऊँ । मैं बैठी ही भवन आपने आपुन द्वार दियो
 दरशाऊँ । जानिलई मेरे जिय की उन गर्व प्रहारणा उनको नाऊँ । तब
 हीते ब्याकुल भइ डोलति चित न रहै कितनो समुझाऊँ । सुनहु सुर
 गृह वनभयो मोको अब कैसे हरिदर्शन पाऊँ ६२ ॥ राग नटनारायण ॥ सखि
 मिलि करौ कछु उपाव । मार मारन चढेउ बिरहिनि निदरि पाये
 दाव । हुताशनध्वज जात उन्नत बहेउ हरिदिशि बाव । कुसुमशर ऋतु
 नन्दबाहन हरयि हरयित गाव । बारिभव सुत तामुभवरी अब न क-
 रिहैं काव । बार अबकी प्राणा प्रीतम बिजय सखा मिलाव । ऋतु
 बिचारि जुमानकीजें सोउ बहिकनि जाव । सुरसखी सुभावरैहैं संग
 शिरोमणि नाव ६३ ॥ राग नट ॥ मिलबहु पार्य मित्रहि आनि । जलज
 सुतके सुत कि रुचिकर भई हितकी हानि । उदधि सुता सुत अवलि
 उरपर इन्द्र आयुधजानि । गिरिसुता पतितितक कर्कस हनत शायक
 तानि । पिनाकीसुत तामु बाहन भस्मख बियखानि । शाखा मृगारिपु
 बसन मलयज हितहुताशन बानि । धर्मसुतके अरिसुभावहि तजत धरि
 शिर पानि । सुरदास बिचित्र बिरहिनि चूक मन मन मानि ६४ ॥
 राग टोड़ी ॥ सुन सजनी करणी यहतेरी । हमसें भेदकरै हित उनसें ऐसे
 गुना उनकेरी । आजुहिते ऐसेहुँ आये अबहींतौ दिन हैरी । ऐसे टूटि
 परी उन ऊपर तुमहीं कीन्हे बैरी । अजहूँ कहेउ मानि है मेरो कीधौनहीं
 करैरी । सुरप्रियामेसं मानुकरै किनि काहे वृथासरैरी ६५ ॥ राग सोरठ ॥
 तैंहीं उनको मूड चढाये । भवन बिपिन संगहि संग डोलै ऐसेहि भेद
 लखाये । पुरुष भवर दिनचारि आपने अपने चाड सराये । नन्दनन्दन
 बहुरबनि रवन वे यहै जानि विसराये । अपनी बात आपने करहैं हम
 को तब न सुनाये । सुनहु सुर बिनु मानु कहै किनि अपने पिय अप-
 नाये ६६ ॥ राग कान्हरो ॥ रैनमो जागत बिहानी मोहनसें मैं मानकियो
 ताते भई अधिक तनतपति । सेज सुगन्ध तलपबियु लागत पावकहते
 दाव सखीरी बिबिधि पवन उडपति । ऐसे अति ब्याप्यो हो मन्मथ
 मेरोई जियजानै मोहिं प्रियाम प्रियाम कहि रैनजपति । बेगि मिलाव
 सुरके प्रभुको भूलि अभिमान करी अबहूँ नाहिं मदनवामते कम्पति ६७
 राग धनाशी ॥ मानबिना नहिं प्रीति रहैरी । धायमिलेकी गतितेरीसी प्र-

६०६ सूरसागर अनुरागलीला रागकल्पद्रुम ।

कत देखिभोहिँ कहाकहैरी । अपनी चाडमारि उनलीन्हों तूकाहे अब
वृथा बहैरी । बेठीरहै नरी दुदह्वै फिरिफिरि काहे न तू मानगहैरी ।
अपनोपेट दियो तैं उनको नाक बुद्धि ब्रियसबै कहैरी । सूरप्रयास सेसे
हैं माई उनको बिन अभिमान लहैरी ६८ ॥ रागमलार ॥ सजों क्योमानु
मनु न मेरेहाथ सुरातकारि उमगि भरत । मोसों मानत वामश्याम गुणा
गुणा अभिलाष करत । जोमेको बिनमान आनबरत तिनबिनु सरत ।
अपमान चहँ मुदितमूढ यश अपयशह न डरत । रिसमें रसबिषुदे वि-
रचति हठिप्राणा हरत । अब मैतो रिस करत न रसबश मोहिंसों उलटी
लरत । स्वारथ सबइन्द्री इन्द्रिनको समूहपर बिरहा धीरधरत । सूरदास
बिरहा धीरजदेहौघरही फटैरी कैसेरहेउ परत ६९ ॥ रागकान्हो ॥ चारि
चारि दिन सबै सुहागिलरी ह्वैचुकी वेस्वस्वप अपनि । सोउ अपनेजिय
मानकरै माईहे मोहिंतो ह्वति अतिकपनि । मेरो कहेउ करि मान
हृदयधरि छाँडिदेहु अतितपनि । सूरप्रयास तबहीं मानेंगे तबबहि क-
रेंगे जपनि ७० ॥ रागटोड़ी ॥ हमारी सुराति यों बिसारी बनवारी हम
सबस दैदेहारी । पवनभये अपने सपनेहू बेसुरारि गिरिधारी । वे मो-
हन मधुकर समान अनंगबेली मनलावत धावत हम व्याकुल बिरह
व्यापि दिनप्रति नीरजनयना डारिदारी । हम तन मन दै हाथबिकाती
वे अतिनिठुर रहत मुरारी । सूरदास प्रभु सुनहु खखी बहु खनि खन
पिय हमएक व्रतधरि मदनअग्नि तनु जारि जारी ७१ ॥ राग गौरी ॥ मैं
अपनीसी बहुत करीरी । मोसों कहाकहति तू माई मनकसँग मैंबहुत
लरीरी । राखौं अटक उतहिको धावै उनके बौसिय परनि परीरी ।
मोसों बर करै रति उनसों मोको छाँडी दार खरीरी । अजहँ मान
करै मनपाऊँ यहकहि इतउत चितैडरीरी । सुनहुसूर पांचनि मतएकै
मोहमें मैंहीरहीपरीरी ७२ मनहं जिनिछुनै बातग्रह माई । कैरेलगयो
हाथगो कतहूंकहिदेहैं इहांजाई । सेवेडरतिरहतिहैंवाकोचुगुलीजाय
करैगो । उनसोंकहिफिरि ह्याँआवैगोमोसेआनिलरैगो । पंचसंगलीन्हे
बह डोलत कोऊनोहिंन मानै । सूरप्रयासको उनहिं सिखायो वे इत
नो कहजानै ७३ ॥ रागहर्मन ॥ मेरोमन कहिबेकेहैं । जबहींते हरिदर्शन
कीन्हेउनैनि भेदकियो पहले । इन्द्रिन सहित चितहूलैमाये रही अ-

केलीमैंहीं । येतेपर तुममानकरावति तौ मनदेहुं न तुमहीं । मोको दू-
 यरा देतिकहाहो तुमतौ सबै अथानि । सूरप्रियाम को बेगि भिलावहु
 हारि आपनी मानि ७४ ॥ राग रामकनी शारंगशारंग धरहि भिलावहु ।
 शारंगबिनयकरत शारंगसें शारंगदुख बिसरावहु । शारंगसमयदहत
 अतिशारंग शारंगतिनहिं दिखावहु । शारंगपतिशारंगधर जैहै शारंग
 जाइसनावहु । शारंगचररा सुभगकरशारंग शारंगनाम बुलावहु । सूर
 दास शारंग उपकारिगिा शारंग मरत जियावहु ७५ ॥ राग बिहागरी ॥
 मोतेग्रह अपराध परेउ । आये प्रियाम द्वारभये ठाढे में अपने जियगर्व
 धरेउ । जानिबूझि में यहकत कीन्हों सो मेरेही शीशपरेउ । मन अ-
 पने ढंगहि में मोसो बारम्बार लरेउ । में अति बिमुख रहे ये सन्मुख
 नीके उनहिं ढरेउ । सूरदास मन आप स्वारथी अपना काजकरेउ ७६
 राग सोरठ ॥ मनइयों कहेउ करैरी साई । तेरी कही बात सबहोती मि-
 लोंगि उनको धाई । निलजभई तनु सुधि बिसराई गुरुजन करत ल-
 राई । इत कुलकानि उतहि हरिको रसमनतो अति अपडाई । आप
 स्वारथी सबै देखियत हैं मोको दुखदाई । सूरदास प्रभु चित्त अपनी
 करि तनकाई गये रिसाई ७७ ॥ राग देसाब ॥ में अवहींकरौं मनपैमन
 न रहै । कोटियतन करिकरि पचिहारी मोहिं बिसरिगये को उनसें
 जुकहै । मोकोनिदरि मिल्योहै हरिको येतेपरतनमदनदहै । सूरप्रियाम
 संगनेक न त्यागत अतिजग बरु अपमान सहै ७८ सनहिं कहौ करि
 मानुप्रेम तुम कहेउ करै । बारवार हरियों गुहिरावत मोहिं संगावत
 पुनिपुनि आनिलरै । घटहू में इन्दीवश वाकेलै निकस्यो मोहिंकोउ न
 डरै । मुबसजनी में रहीअकेली बिरहु दहेली इत गुरुजन अहरै । अब
 बिनु मिले बनतनहिं आलीनिशिदिन पलपल रहेउ न परै । सूरप्रियाम
 बहुरबनि रवनइयों भलहीरहैवै चित्तग्रह नहींधरै ७९ ॥ राग बिलावल ॥
 भूलनहिं अबमानु करौंरी । जातेहोय अकाज आपनो काहेटथा सरौं
 री । ऐसे तनमें गर्व न राखों चिन्तामगिा बिसरौंरी । ऐसी बात कहै
 अबकोऊ ताके संगलरौंरी । आरजपन्थ चलेकह सरिहै प्रियामहिंसंग
 फिरौंरी । सूरप्रियामजोआपस्वारथी दर्शननयन भरौंरी ८० ॥ रागआसा
 बरी ॥ चूकपरीमोते मेंजानी मिलै प्रियामबकसाऊंरी । हाहाकरि दश-

नन दृगाधरिधरि लोचन जलनि ढराऊंरी । चरसागहीं गाढेकरि कर
 सेां पुनिपुनि शीशछुवाऊंरी । मुखचितऊं फिरिधरिगा निहारौं सेसे
 रुचि उपजाऊंरी । मिलौंघाय अकुलाय भुजनभरि उरकीतपनिजना-
 ऊंरी । सूरश्याम अपराध ससहुअब यह कहिकहि जुसुनाऊंरी ८१ ॥

राग-गौरी ॥ साईमेरोमन पियसेां योलग्यो ज्योँ ढरिलागीछाहिँ । मेरो
 मन पियकेजीमें बसतु है पीको जिय मोमें नाहिँ । ज्योँचकेर चन्दा
 को निरखै इतउत दृष्टि न जाहि । सूरश्याम बिनु सखासखा युग सम
 क्योंकरि रैन बिहाहि ८२ ॥ राग-जेतथी ॥ उनको यह अपराध नहीं ।
 वै आवत हैं नीकेमेरे मेंहीं गर्बकियो तनहीं । करेगर्बते सरेउ कछूनहिँ
 सकभई तनुदशा नहीं । मुखमिटिगयोहिये दुखपूरगा अबरेहां इनहीं
 बिनहीं । अबजो दरशदेहिँ कैसेहू फिरतरहां संगही संगहीं । सूरदास
 प्रभुको हियरेते अन्तर करौं नहीं सखाहीं ८३ ॥ राग-बिलावल ॥ अबके
 जोपाऊं तौहरिदय साँझ दुगाऊं । हरिको दर्शनपाऊं आभूषणा अंग
 बनाऊं । सेसाको आनि मिलावे ताहिनिहाल कराऊं । जो पाऊं तौ
 संगलगऊं मोतियनचौक पुराऊं । रसकरि नाचौंगाउँ बजाऊं चन्दन
 भवन लिपाऊं । सखा साँगाक न्यौछावरि करिहां सोदिन सुदिन
 कहाऊं । केतकि करणा बोलि चमेली फूलनिसेज बिछाऊं । तापर
 पिय पौढाऊं मैं अँचला बायु डोलाऊं । चन्दन अगर अपर अरगजा
 प्रभुके खौरिबनाऊं । जोबिधना कबहूँ यहकरै तौ कामको काम पु-
 राऊं । सूरश्याम बिनुदेखे सजनी कैसे मन अपनाऊं ८४ ॥ राग-संकीर्ण ॥
 अरीमोहिँ पिउभावैको ऐसी जोआनि मिलावै । चौदहबिद्या प्रबीरा
 अतिही सुन्दर नबीन बहुनायक कौन सनावै । नेकदृष्टि भरि चितवै
 मोबिरहिनि कोसाई कामदन्द बिरह तपनि तनते बुझावै । सूरदास
 प्रभुमोको करहिँ कृपाअब नितप्रति बिरह जलावै ८५ ॥ राग-बिलावल ॥
 धीरजकरुरी नागरी अब प्रयासहिँ लाऊं । अतिव्याकुल जनिहोहिरी
 मुखअबहिँ कराऊं । देखिदशा सहिनाहिसकी मनहीं अकुलानी । मैं
 राधाकी प्रियसखी यहकहि पछितानी । झुरिझुरि पियरीभईयहतौ
 सुकुमारी । ऐसीचूकपरीकहा कैहीं गिरिधारी । प्यारीकोमुखधोयकै
 पटु पोंछिसँवारेउ । तरकवातबहुतैकही कछुसुधि नसँभारेउ । सावधान

करिकैगई ल्याऊंगी घरको । सूरतहाँआतुरगई पायेहरिवरको ८६ ॥
 रंगटोड़ी ॥ ललितामुख चितवतमुखकाने । आपुहँसी पियमुखअवलोकत
 दुहुन मनहिंसन जाने । अतिआतुरधाई कहँआई काहेबदनभुराये । वृ-
 भक्तहै पुनि पुनि नंदनन्दन चितवत नयन चुराये । तबबोली बह चतुर
 नागरी अचरजकथा सुनाऊँ । सूरप्रयामजोचलहु तुरतही नयननिजाय
 दिखाऊँ ८७ अद्भुत सक अनूपमबाग । युगलकमलपर गजवरक्रीडत ता
 पर सिंहकरतअनुराग । हरिपरसरवर गिरिवर गिरिपर फूले कंजप-
 राग । रुचिरकपोत बसत ताऊपर ताऊपर अमृत फललाग । फलपर
 पुहुपपुहुपर पल्लव तापर शुक्रपिकसृगमदकाग । खञ्जनधनुयचन्द्रमा
 राजतताऊपर यक्रमर्गाधर नाग । अङ्गअङ्ग प्रति बौर बौर छवि उपमा
 ताकोकरत न त्याग । सूरदासप्रभु पिवहु सुधारस मानो अधरनिके बड्ड
 भाग ८८ विराजित सकअङ्ग इतिवात । अपनेकरकरि धरेविधाता यद
 खम्भ नव जलजात । द्वैपतङ्ग शशिशीस सकफरिा चारि बिबिधि रँग
 धात । द्वैपक्ष बिम्बवती सबजकरा सकजलज परयात । एक शायक
 एकचाप चपलअति चिबुकमें चित्तबिकात । द्वैमृगाल मालूर उभय
 द्वै कदलिखम्भ बिनपात । एककैहरि एकहंस गुप्तरहै तिनहिंलग्यो
 यहगात । सूरदासप्रभु तुम्हरे मिलनको अति आतुर अकुलात ८९ ॥
 रागसारंग ॥ बरौं श्रीवृषभानकुमारी । चितदैसुनहुँ प्रयाम सादर छवि
 रतिनाहीं अनुहारी । प्रथमहिँ सुभग प्रयामबेणीकी शोभा कहैं बि-
 चारि । मानो फरिाक रहेउ पीवनको शशिमुख सुधानिहारि । कहिये
 कहा शोशसेंदुरको कितोरही पचिहारि । मानो अरुण किरणदिन
 करकी पसरी तिमिर बिदारि । भुक्तो बिकट निकट नयननके राजत
 अति बरुनारि । मनहुँ मदन जगजीति जेरकरि राख्यो धनुय उतारि ।
 ताबिचबनी आइकेशरिकी दीन्ही सखिन सँवारि । मानो बँधी इन्दु
 मण्डलमें रूपसुधाकी पारि । चपलनयन नासाविच शोभा अधर सुरंग
 सुहार । मनोमध्य खंजन शुक्रबैठो लुब्धयो बिनिहिँ बिचार । तरिवन
 सुधर अधर नकबेशरि चिबुकचारु रुचिकारि । कंदसरी दुलरी ति-
 लरीपर नहिँउपमा कहँचारि । सुरंगगुलाल मालकूच मण्डल निरखत
 तनु मनुवारि । मानो दिशिदिशि निधुम अग्निनके तप बँटे त्रिपुरारि ।

जोमेरो कृत मानहुमोहन करिल्याऊँ मनुहारि । सूर रसिक तबहीं पै
 बदिहौं बुरली सकी सन्हारि ६० ॥ रागधनाश्री ॥ प्रियामुख देखोश्याम
 निहारि । कहि न जाय आननकी शोभा रहीबिचारि बिचारि । नी-
 लाश्वर घीरोदिक धूधूट सन्मुख कियो सुधारि । मनो सुधाकर दुग्ध
 सिंधुते कह्यो कलंक परवारि । भाललाल सेंदुर बिन्दीपर मृगमदकी
 छवि न्यारि । मनो बँधूक कुसुम ऊपरअलि बैठो पंखपसारि । चंचल
 नयन चहूँ दिशि चितवत जनु खंजन अनुहारि । मनहु परस्पर करत
 लराई कीर बचायेरारि । बेशरिके मुक्तामेंभाई बर्राबिराजति चारि ।
 मानो सुर गुरु शक्र भौम शनि चमकत चन्दमभारि । तरिवन अबशा
 रत्नमणि भूषित शिर श्रीसन्त सँवारि । जनु युगभानु दुहूँदिशि उगये
 भयोद्विधा तमहारि । सन्मुखदृष्टिपर मनमोहन लज्जितभइ छकुमारि ।
 लीनहीं उसगि उठाय अंकभरि सूरदास बलिहारि ६१ ॥ राग नट ॥ भुज
 भरिलई हिरदयलाय । बिरहब्याकुल देखिबाला नयनदोउ भरिआय ।
 रैनबासर बीचही में दोउगये मुरभाय । मनोदृष्ट तमालबेली कनक
 सुवा सिँचाय । हर्यडहडह मुसकिफूले प्रेमफलनि लगाय । काममुख-
 भनि बेलितरुकी तुरतही बिसराय । देखिललिता मिलनि वह आ-
 नन्द नहीं ससाय । सूरकेप्रभु प्रथाम श्यामा त्रिविधि तापनशाय ६२
 राग रामकली ॥ ललिताप्रेम बिबश भइभारी । वहचितवनि वह मिलनि
 परस्पर अतिशोभा बरनारी । यकटक अङ्ग अङ्ग अबलोकाति उतब्रश
 भई बिहारी । वह आतुर छवि लेति देतिवै यकते यक अधिकारी ।
 ललितासंग सखिन सों भायत देखीछवि पियधारी । मुनहु सूरज्यों
 होम अग्निघृत ताहूते यहन्यारी ६३ ॥ राग धनाश्री ॥ देखिसखी राधा
 अकुलानी । तैसे अङ्गअङ्ग छबिलूटति मिलेहु प्रयासको नहीं पत्यानी ।
 जैसे तयावन्त जलअँचवत वह तोपुनि ठहरात । यहआतुर छबिलै उर
 धारति नेकनहीं तप्तात । ज्योंचकोर यकटक निशि चितवत याकी
 सरिसो नाहिँ । ज्योंघृत होम बन्हि की सहिसासूर प्रकट यामाहिँ
 ६४ ॥ राग केदारो ॥ यद्यपि राधिकाहरिसंग । हावभाव कटाक्ष लोचन
 करति नानारङ्ग । हृदय ब्याकुल धीरनाहीं बदन कमल बिलास ।
 तयामें जलनाम मुनिज्यों अधिक अधिकहि प्यास । श्यामरूप अपार

इतउत लोमपुट बिस्तार । सूरमिति नहिँ लहत कोऊदुहुन बल अधि-
कार ६५ राधेहि मिलेहु प्रतीति न आवति । यदपि नाथ बिधुबदन
बिलोकीति दर्शनको मुखपावति । भरिभरि लोचनरूप परमनिधि उर
में आनि दुरावति । बिरह बिकल मतिदृष्टि दुह्मदिशि सचि सरधा
उयो धावति । चितवति चकृत रहतिचित अंतर नैननिमेष न लावति ।
सपनो आहि कि सत्य ईश यहवृद्धि बितर्क बनावति । कबहुँ करति
बिचार कौनहीं को हरिकेहि भावति । सूरप्रेमकी बात अटपटी मन
तरङ्ग उपजावति ६६ ॥ राग रामकली ॥ देखेहु अनदेखेसे लागत । यद्यपि
हुँ रतिरङ्गभरेहँ यकटककरहे निमियनहिँत्यागत । इतसुचि दृष्टि मनोज
महासुख उतशोभागरा अमित अनागत । बाढेउबैस कररा अर्जुनउयो
दोमें एक भूलिनहिँ भागत । उत सन्मुख सी सावधानसजि इत सनाह
अङ्गअङ्ग अनुरागत । ऐसे सुरसुभट येलोचन अधिकाधिक्य प्रयाससुख
मांगत ६७ ॥ राग कान्हरो ॥ देखियत दोउ अहँकार परे । उत हरिरूप
नयन याकेइत मानहुँ सुभट अरे । रुचिर सुदृष्टि मनोज महासुख इन
इत एककरे । उनउत भयराभेद व्यहरचि अङ्गअङ्ग धनुष धरे । येअति
रतिरगा रोय न मानत निमिय नियंगहरे । बाहु बिथहिँ न बढत पुल
कारुह सबअङ्ग सुरसचरे । वैसी ये अनुराग सूरसजि छिनुछिनु बढत
खरे ६८ ॥ राग बिहगरो ॥ नख शिखते अंग अंगरूप छबिदेखि नयन न
अधाने । निशि अरुदिन यकटकहीराखे पलकलगाय न जाने । छवि
तरङ्ग अगशिात सरिता ये जलनिधि लोचनदृप्त न माने । सूरदास प्रभु
की शोभाको अतिहीजालाचि रहललचाने ६९ ॥ राग बिभास ॥ ललिता
संग सखियनको लीन्हे । दम्पति मुखदेखत अतिभावत यकटक लो-
चन दीन्हे । प्यारीश्याम अङ्गकी शोभानिदरे देखयोचाहति । उतना-
गर नागरि नयननि को निदरिरूप अवगाहति । उत उदार शोभाकी
सीवा इतलोभहि नहिँपार । सुरश्याम अङ्ग अङ्गकी शोभा निरखति
बारम्बार ७० ॥ राग गोंड मलार ॥ निदरि अङ्गछवि लेतिराधा । यहक-
हत कितिक शोभा करेंगे श्याम मेदिहैं आजु मनसबै साधा । उतहि
हरिरूपकी राशिनिहिँ पारकहुँ दुहुन मन परस्पर होइकीन्ही । ये इ-
तहि लब्ध वे उतही उदारचित दुहुन बल अंतनहिँ परतचीन्ही । जुरे

रसाबीर उद्यो सकते यकसरस मुरत कोउ नहीं दोउरूप भारी । सूर
 स्वासी स्वासिनी राधिकासरस निरसकोउ नहीं लखिलई नारी १०१
 रागमाह ॥ सुपेरति संग्रामखेत नीके । एक एक रसाबीरयोधा प्रबल मु-
 रत नहिनेक अति सबलजीके । भौंहको बड़ शर नयन धानुकी काम
 छटाति मानो कटाक्षनि निहारै । हँसनि द्विज चमककरि बरनिलोहेन
 भलक नखनि छत घातनेजा सम्हारै । पीतपट डारि कंज की मोचि
 करनिसों कवच सच्चाहये टूटतनते । भुजाभुज धरत मानो द्विरद शूंडन
 लरत उरउरनिभिरे दोउजुरे मरते । लटाकि लपटाति मानो सुभट लरि
 परे खेतर्तिसेज रुचितामकीन्हे । सूरप्रभुरसिकंप्रिया राधिका रसि-
 किनी कोकगुणा सहित सुखलूटि लीन्हे १०२ ॥ रागनट ॥ रसनायुगुल
 रसनिधि बोलि । कनक बेलि तमाल असुभी सुभुज बन्ध अखोलि ।
 भृङ्गयूथ सुधाकिरनि मनो घनमें आवतजात । सुरसरीपर तरशातनया
 उमगितत न समात । कोकनदपर तरशातांडव मीनखच्चनसङ्ग । करति
 लज्जा शिखर युगमिलि युगम संगम संग । जलदते तारा गिरत मनो
 परत पयनिधि साहिँ । युगभुजङ्ग प्रसन्न सुखहूँ कनक घट लपटाहिँ ।
 कनक संपुट कोकिलारव बिबश हूँ देदान । बिकच कंच अनारमिय
 धर लसिकरत पयपांन । दामिनी शिर घनघटाचर कबहुँहूँ यहिभांति ।
 कबहुँ दिन उद्योत कबहुँ हेत अति कहूँ राति । सिंह मध्य सनादमुनि
 गगा सरस सरकेतीर । कमलमनो बिननाल उलटे कछुक तीक्ष्णानीर ।
 अंशुशाखा शिखर चंडि चंडि करत नानानाद । मकर निजु पद नि-
 कर बिहरत मीनपति अस्त्राद । प्रेम हितकरि मिली साधार भईमानस
 एक । श्यामसर्निके अङ्गचन्दन अमीके अभियेक । सुरदास सखीशोभा
 मिलि करत बुद्धिबिचार । समीशोभा लगिरही मनो सुमनको संसार
 १०३ ॥ राग रामकली ॥ शोभा सुभग आननवोर । वासतेतनु ब्रसिततिरके
 चितैदेत अकोर । निरखिसम करिकियो चाहत बदन बिधुकी जोर ।
 तुलाबिच लोकेश तोले गरुअ आनन गोर । दरश पतिसुचि मुदितमन
 सिज चपल दृगहि चकोर । कोशक्रीडत मीनमानो नीरनीरज भोर ।
 श्यामसुन्दर नयन युगवर भलक कज्जलबोर । सुधा शशिसंकेतमानो
 कूपदानवचोर । अवरण मरिणाताटक मंजुल कुटिल कुन्तलकोर । मसर

संकट काम व्याकुल अलक फंदनिडोर । चिकुर अभिनव मोतिसंजुल
तरललटि ह्यातोरे । जनु बिध्वंसित दयाल बालक असीकी भक्तभोर ।
स्वेद सीकर रागड मगिडत रूप अम्बुजधोर । उमगि ईयद यों अवत
पीयूष कुम्भभक्कोर । हंसत दशनन चमकतनु पिय लसत कठिनकठोर ।
सुदित मधुकर बिन्दुगगा मकरन्द मध्य न थोर । निरखि शोभा समर
लज्जित इन्दुभयो भ्रमभोर । सूरधन्य सुनवकिशोरी धन्य नन्दकिशोर
१०४ ॥ रागविलावल ॥ धन्यकाम्ह धनि राधागोरी । धनि वहभाग सो-
हाग धन्ययह धन्यनवलमवला नधजोरी । धनि यहमिलति धन्ययह
बैठनि धनिअनुराग नहीं रुचिथोरी । धनि यह अरश परशब्दबि लट-
कनि सहाचतुर मुख भोरे भोरी । प्यारी अङ्ग अङ्ग अवलोकति पिय
अवलोकत लगत ठगोरी । सूरदासप्रभु रीझि थकित भये नागरि पर
डारत ह्यातोरी १०५ ॥ रागधनाश्री ॥ नागरि छविपर रीझेप्रयाम । क-
बहुंक वारतहैं पीताम्बर कबहुंक वारत मुक्तादाम । कबहुंक वारतिहैं
करमुरली कबहुंक वारत मोहननाम । निरखि रूपमुख अन्तलहतनहिं
तन मन वारत पूरणाकाम । बारम्बार सिहात सूरप्रभु देखिदेखि राधा
सीबाम । इनको पलक ओट नहिं करिहैं मन यह कहत दिवस अरु
याम १०६ ॥ रागमूढो विलावल ॥ प्रयामनिरखि प्यारी अंगअङ्ग । सङ्गचि
रहत मुखतन नहिं चितवत जेहिबश रहत अनन्त अनङ्ग । चपलनयन
दीर्घ अनियारे हावभाव नानागति भङ्ग । वारोंमीन कोटिअम्बुजगगा
खंजन वारत कोटिकुरङ्ग । लोचन नहिं ठहरात प्रयाम के कबहुं अङ्ग
नयन मुखरङ्ग । सूरदासप्रभु योंप्यारी ज्यों बशडोर फिरत संगचङ्ग ।
१०७ ॥ रागढोड़ी ॥ प्रयाम भये राधा बश सेसे । चाटक स्वाति चकोर
रहतज्यों चक्रवाक रबिजैसे । नादकरङ्ग मीन जलकीगति ज्यों तनुके
बशछाया । एकटक नयन अङ्गछवि पोहे थकितभये पतिजाया । उठे
उठत बैठे बैठत दोउचले चलत सुधिनाहीं । सूरदास बडिभागिनिराधा
समुझि सनहिं मुसुकाहीं १०८ ॥ राग आसावरी ॥ निरखि प्रयाम प्यारी
अंग शोभा मन अभिलाष बढ़ावति हैं । प्रिया अभूयता सांगत पुनि
पुनि अपने अङ्ग बनावतिहैं । कुरङ्कतत तरिवन लैसाजतनासा बेशरि
धारतहैं । बैदीभाल सांगशिर पारत बेनी गंथि सँवारतहैं । प्यारीनय-

६१४ सुरसागर अनुरागलीला रागकल्पद्रुम ।

नन को अंजनलै अपने लोचन अंजतहैं । पीतांबर वोढनीशीशदै राधा
को मन रंजतहैं । कंचुकि भुजनि भरत उरधारत कंठहमेल भ्रजावतहैं ।
सूरप्रियाम लालच वियतनुपर करि अंगार मुख पावतहैं १०६ ॥ रागनद ॥
प्रियामा प्रियाम छबिकी साध । मुकूट कण्डल पीतपट छबि देखि रूप
अगाध । प्रिया हाहा करत पुनि पुनि देहु प्रीतम मोहिं । अङ्ग अङ्ग
सँवारि भूषण रहति वह छबि जोहिं । काळि कछुनी पीत पट कटि
किंकिणी अतिशोभ । हृदय वनमाला बनावति देखि छबि मनलोभ ।
अवगा कण्डल धारिशोभा शीश रचि श्रीखण्ड । सूरप्रियाम मुहागिनी
रुचि कनक करलै दण्ड ११० तिहारी लाल मुरली नेकबजाऊं । जैसी
तान तुम्हारे मुखकी तैसिय मधुर सुनाऊं । जैसे फिरति रंभमा अंगुरी
तैसे सहं फिराऊं । जैसेहि आपु अधरधरि फूंकत मैं अवरनि परसाऊं ।
हाहा करति पायँ हैं लागति बांस बँसुरिया पाऊं । सारंग नदपूर्वी
मिलैके राग अनप उपाऊं । अपने भूषण मोको दीजै अपने तुमहिं
बनाऊं । तुमबैठो दूढ़ मानसाजिके मैं गहिचरण मनाऊं । यह अभि-
लाष बहुत मेरेजिय नयननि यहै देखेऊं । सूरप्रियाम गिरिधरन छवीले
भुजधरि कंठ लगाऊं १११ ॥ रागगुजरी ॥ मुरलीलई करते छीनि । ता
समय छबिकही जातिन चतुरि नारि नबीनि । कहति पुनिपुनि प्रियाम
आगे मोहिंदेहु सिखाय । मुरलिपर मुखजोरि दोऊ अरण परण ब-
जाय । कृष्ण पूरति नाद उद्धरत प्यारि रिस करिगात । बार बारहि
अधर धरि धुनिबजत नहिं अकुलात । प्रिया भूषण श्याम पहिरत
प्रियामभूषण नारि । सूरप्रभु करि मानबैठे वियकरत मनुहारि ११२ ॥
राग बिलावल ॥ कहति नागारि प्रियामसें तजो मानुहठीली । हमते चक
कहापरी वियगबं गहीली । हँसतहिमें तुम रिसकियो कहप्रकृति तु-
म्हारी । बारबार करधरतिहै कहिकहि मुकुमारी । वृथा मानु नहिं
कीजिये शिर चरान धारति । आनन आनन जोरिके पिय सुखहि
निहारति । निदुरभई है लाडिली कबके हसठाडे । तुम हमपर रिस
करतिहै हमहैं तुवचाडे । श्यामकियो हठजानिके यकचरितबनाऊं ।
सुनहु सूर प्यारी हृदय रस बिरह उपाऊं ११३ ॥ राग बिलावल ॥ लाल
निदुरहैं बैठिरहै । प्यारी हाहाकरति न मानत पुनिपुनि चरसा गहै ।

नहिं बोलत नहिं चितवत मुख तनधरणी नखनि करोवति । आपु हँ-
सति पुनिपुनि उर लागति चकृत होति मुख जोवति । कहा करत ये
बोलतनाहीं पिययह खेल मिटावहु । सुरप्रयास मुखचन्द कोटि छवि
हँसिके मोहिं दिखावहु ॥ ११४ ॥ रागधनाशी ॥ नागरी हँसति हृदय डर
भारी । कबहुं अङ्गभरि लीति उरजबिच कबहुं करति मनुहारी । मानु
करत नीकेनहिं लागै दूरकरी यह खयाल । नेक नहीं चितवत राधा
तन निदुरभये नंदलाल । श्रीशधरति चरसानलै पुनिपुनि त्रियको रूप
निहारत । सुरदासप्रभु मानुधरेउ दूढ धरणी नखनि बिदारत ॥ ११५ ॥
रागगोडमलार ॥ निरखि त्रिय रूपपिय चकृत भारी । किधौं वे पुस्य में
नारिकी वे नारि सहीहैं पुस्यतनु धरिबिसारी । आपतन चितैशिर
मुकुट कुण्डल अवरा अधर हुरलीमाल वनविराजै । उतहि पिय रूप
शिर सांग बेनी सुभग भाल बेदी महा बिन्द छाजै । नागरी हठ तजौ
कपाकारि मोहिं भजौ परी कहचूकसो कहा प्यारी । सुर प्रभु नागरी
रसबिरह मगनभइ देखिछवि हँसत गिरिराज धारी ॥ ११६ ॥ रागधनाशी ॥
निरखत पियप्यारी अङ्ग अङ्ग बिरहशोभा । कबहुं पिय चरणापरति
कबहुं भुज अङ्ग भरति कबहुं जिय डरति बचन सुनिबेकी लोभा । क-
बहुं कहति पियासों पिय कबहुं कहत प्यारीहे हाहाकरि पायँपरत
बिकलभई बाला । कबहुं उठति कबहुं बैठि पाछे ह्वैरहति कबहुं आगे
ह्वै बदनहेरि परीबिरह ज्वाला । काहे तुम कियोमान बोलेबिनजात
प्रागा दम्पतिहैं संग दशा सेसी उपजाई । रीकेपिय सुरप्रयास अंकम
भरि भईबाम बिरहदन्द मेदिहरय हिरदय इपजाई ॥ ११७ ॥ प्रिया पिय
लीन्ही अंकम लाय । खेलतमें तुम बिरह बढ़ाये गईकहा बितताय ।
तुमहीं कहेउ मानु करिबेको आपुहि बुद्धि उपाय । काहे बिबश भई
बिनकारणा सेसीगई डराय । सुनिप्यारी यहभाव बताये अन्तरगये
जनाय । बारबार आसिंहहा दीन्हे अर्बाहरहीसुरभाय । सींचीकन-
कलता सुरजप्रभु असृत बचन सुनाय । अति सुखदै दुखयो बिसराये
राधारमगाकन्हाय ॥ ११८ ॥ रागगोडमलार ॥ प्रयासतन प्रियामूयरा बिराजै ।
कनकमुरा मुकुटकुण्डल अवरावनमाल अधर मुरलीधरे नारिकाजै ।
निरखि छवि परस्पर रीकेदेउ नारिबर गयोतजि बिरहडर प्रेमपागे ।

६१६ सूरसागर अनुरागलीला रागकल्पद्रुम ।

सूरप्रभु नागरी हंसति मनमन रसति बसतिमन प्रयामके बड़ीभागे ११६
रागनट ॥ नागरि भूयगा प्रयाम बनावत । श्रीनागर नागरि अंग शोभा
क्रियो निरखि मनभावत । प्रयामाकनक लकुटकर लीन्हे पीताम्बर
उरधारे । उत गिरिधर नीलाम्बरसारी धूधुट ओट निहारै । वचनपर-
स्पर कोकिलवाणी प्रयामनारिपतिराधा । सूरस्वरूप नारिपतिकछे
पतिनारी तनुसाधा १२० नीकेश्याम मानुतुमधाख्यो । तुमबैठे दृढमानु
ठानि मैं मेल्योमानु तुम्हाख्यो । यह मनसाध बहुतहीमेरे तुमबिनु कौन
निदारै । नागरिपिय तन अपनीशोभा बारहिबार निहारै । बेनीमांग
भाल बेदीछबि नैननिअंजनरङ्ग । सूरनिरखि पिय धूधटक्रीछबि पुल-
कन सावति अङ्ग १२१ ॥ रागधनंभी ॥ कुञ्जवन गवन दम्पति विचारै ।
नारिको वेयकारि नारिके मनहिंदरि मुकरलै भावती छबि निहारै ।
भामिनीअंग वहनिरखि नटवरवेय हंसतहीहंसत सबमेडिडारे । सहज
अपनो रूपधरौ मनभावती और भूयगा तुरत अंगधारे । बियाकोरूप
धरि सङ्ग राधा कुँवरि जात ब्रजखोर नहिं लखत कोऊ । सूरस्वामी
स्वामिनी बने सकसे कौन पतर अरश परश दोऊ १२२ ॥ राग गौरी ॥
नंदनन्दन बियछबि तनुकाछे । मानो गोवि सांवरीनारी दोउजात स-
हजमें आछे । प्रयामअङ्ग कुसुमीनइसारी फल गुञ्जा की भांति । इत
नागरि नीलाम्बर पहिरे जनुदामिनि घनकांति । आतुरचलेजात बन
धामहिं अतिमनहर्यबढाये । सूरप्रयाम वा छबिको नागरि निरखति
नैन चुराये १२३ ॥ राग कान्हो ॥ मनहीमन रीभति है राधा बारबार
पियरूप निहारै । निरखति भालविन्द मेंदुरको वा छविपर तनु मनु
धनु वारै । यहमनकहति सखी जनदेखैं बूझसे कहकैहैं । तिहूं भुवन
शोभा मुखकीनिधि कैसें उनहिं दुरैहैं । पग जे हरि बिछियनि की
भसकनि चलत परस्पर बाजत । सूरप्रयाम प्रयामा मुख जोरी मरिा
कञ्चनछबिलाजत १२४ ॥ राग कल्याण ॥ प्रयामाप्रयाम कुञ्जवनआवत ।
भुजभुज कंठ परस्पर दीन्हे यहछबि उनहीं चावत । इतते चन्द्रावली
जातिव्रज उतते ये दोउआये । दूरिहिते चितवति उनहीं तन यकटक
नयन लगाये । यकराधिका दूसरीकोहै याको नहिंपहिंचानो । ब्रज
दयमान पुरायुवतितनको सकसककरि मैं जानो । यहआई कहँ और

गांवते छवि सांवरी सलोनी । सूर आजु यह नईवतानी एकअङ्ग नव
लोनी १२५ ॥ राग मोरठ ॥ राधासकुचि प्रयासमुख हेरति । चन्द्रावली
देखिके आवत ब्रजहीको पियफेरति । जाहुजाहु मुखतेकहि भायति
करते कर नहिं छुटति । उतहि सखी आवत सकुचानी इतिह प्रयास
सुखलूटति । दुख सुख हर्य कछु नहिं जानति श्याम सहारम माती ।
सूरउतिह चन्द्रावलि यकटक उतहीके रंगराती १२६ ॥ रागगोरी ॥ यह
वृथभानसुता बहकोहै । याकी सरि युवती कोउनाहीं यह त्रिभुवन मन
मोहै । अतिआतुर देखनको आवति निकटजाय पहिंचानी । ब्रज में
रहति किधों कहूँ औरै बूझते तब जानी । यह मोहनी कहां ते आई
परमसलोनी नारी । सूरश्याम देखत मुसकानी करीचतुरई भारी १२७
इतते निधरक और न कोइ । कैसी बुद्धि रची है नाखी देखी सुनी न
होई । यहराधासे हाथविधाता बुद्धिचतुरई बानी । कैसेश्याम चुराय
चलीलै अपने भूषणाटानी । और कहा इनको पहिंचानै मोपैलखे न
जात । सूरश्याम चन्द्रावलिजाने मनहीं मन मुसकात १२८ ॥ रागकान्हरो ॥
सकुच छांड़ि अब इनहिं जनाऊं । येतो चले आपने काजहि में का-
हेन समुझाऊं । मनहीं मन ये जीति जाहिगे जानि बूझि निदराऊं ।
यह चतुरई काछिके आये सो अब प्रकट देखाऊं । बड़े एराज्ञकहा-
वत दोऊ इनको लाजत जाऊं । सूरश्याम राधा की करणी महिमा
प्रकट सुताऊं १२९ ॥ राग गौड़सारंग ॥ कहिराधा ये कोहैरी । अति सु-
न्दरि सांवरीसलोनी त्रिभुवनजन मनमोहैरी । और नारि इनकी सरि
नाहीं कहौ न हम तन जोहैरी । काकी सुता बधू है काकी काकी यु-
वतीधों हैरी । जैसी तुम तैसीहैं येऊ भलीबनी तुम सोहैरी । सुनहु सूर
अति चतुर राधिका ये चतुर नीकि गोहैरी १३० ॥ राग हैमन ॥ मथु-
राते ये आईहै । कछु सम्बन्ध हमारी इनसों ताते इनहिं बोलाईहै ।
ललिता सकु गईदधिबेचन उनहीं इन्हें चिन्हआई है । उहै सनेह जानि
री सजनी भवन आजुहम पाईहै । तबहींकी पहिंचानि हमारी ऐसी
सहज सुभाईहै । सूरमोहि देखि यहांआवत आपुसंग उठिआईहै १३१
रागमोरठ ॥ इनको ब्रजही क्योंन बुलावहु । कीवृथभान पुराकी गोकुल
निकटहि आनि बसावहु । वोऊ नवलनवला तुमहुँहो मोहनको दोउ

भावहु । मोको देखिकियो अतिधूधत काहे न लाज छुडावहु । यहअ-
 चरज देखो नहिं कबहुं युवतिहि युवति दुरावहु । सूर सखी राधा सेां
 पुनि पुनि कहति जु हमैं मिलावहु १३२ ॥ हमीर ॥ सांवरे तनु कुसुमि
 सारि सौहतिहै नीकीरी । मानो रतिपति सँवारि बनीरबनि जीकीरी ।
 राधाते अतिहि सरस प्रयासदेखि पावैरी । ऐसी यह नारि औरनारि
 मन चुरावैरी । धूधत पटबदन दाँकिकाहे इन राख्योरी । चितवहु मो
 तन कुमारि चन्द्रावलि भाष्योरी । आपुहि पटदूरिकियो तरुणि बदन
 देख्योरी । मनहींमन मुफल जानि जीवनजग लेख्योरी । नयन नयन
 जोरतमहि भावसेां लजानेरी । सूरप्रयास नागरि मुखचितवत मुमुकाने
 री १३३ ॥ राग बिहागरो ॥ मथुरामें बसवास तुम्हारो । राधाते उपकार
 भयो यह दुर्लभ दरशन भयो तुम्हारो । बारबार करगहि गहि निर-
 खति धूधत ओढकरो किनिन्यारो । कबहुं ककर परशति कपोलछुइ
 चुटकिलोति ह्यां हमहिं निहारो । कहु मैहूं पहिंचानति तुमको तुमहिं
 मिलाऊं नन्ददुलारो । काहेको तुम सकुचतिहै जूकहौ कहाहै नाउँ
 तुम्हारो । ऐसीसखी मिली तोहिं राधा तौ हमको काहे न बिसारो ।
 सूरदास दम्पति मनजान्यो यासेां कैसेहात उबारो १३४ ॥ रागरामकली ॥
 राधासखि मिलिमन भाई । जबते इनसेां नेहलगायो बहुतभई चतुराई ।
 औरभई इनते तुमको सखि गृहजनसेां नितुराई । काहूको मनमें नहिं
 आनति हमहुं सबनि बिसराई । तुमहौ कुशल कुशलहैं येऊआप स्वा-
 रथी माई । सूरपरस्पर दम्पति आतुर चतुरसखी लखिपाई १३५ यह
 सखि अबलौ कहादुराई । येते घोय हमकबहुं न देखे अबजु कहां ते
 आई । बिभुवनकी शोभा सबगुणा बिधि है बिधि एक उपाई । बिद्य-
 मान लयभान नन्दनी सहचरि सबसुखदाई । अपनेमन तकितकि तनु
 तोलति बियजनि सुन्दरताई । दुसहस्रपकी राशि राधिका कहौकौन
 पुरजाई । राचिरहे रससुरत सूरदेउ निरखति नयन निकाई । चीन्हे
 हौ चलिजाहु कुंजगृह छाँडिदेहु चतुराई १३६ ऐसी कुंवरि कहांतुम
 पाई । राधाहते नखशिख सुन्दरि अबलौ कहांदुराई । काकी नारि
 कौनकी बेटो कौन गांवते आई । देखीसुनी न ब्रजतुन्दावन सुधिबुधि
 हरति पराई । धन्य सहागभाग याको यह युवतिनके मनभाई । सूर-

दासप्रभु हरि मिले हँसि लैउन कंठलगाई १३७ ॥ रागगौड़मलार ॥ नंदनन्दन
हँसे नागरी मुखचित्रै हरि चन्द्रावलि कराठलाई । बामभुज बनी दक्षिणा
भुजा सखीपर चले बनधाम मुख कहि न जाई । मनो बिम्ब दामिनी
बीच नवधन सुभग देखि छबिकामरति सहित लाजै । किधौं कञ्चन लता
बीच तमालतरु भामिनीबीच गिरिधरविराजै । गयेगृह कुञ्ज अलिगुञ्ज
सुमननि पुंज देखि आनन्दभरे सूरस्वामी । राधिकारवन युवती रवन मन
रवन निरखि छबि होत मन काम कामी १३८ ॥ राग केदारो ॥ कुञ्ज सोहावने
भवन । बनिदनि बैठे राधारवन । बरगा बरगा कुसुम प्रफुलित शशिकी
किरगि जगमगात तैसेई बहै त्रिविध पवन । अलिगारा पिक मङ्गल
गावति धुनि मुनि २ मनिहँ भावत देखत दम्पति बिबिसयन । सूरदास
प्रभु पियप्यारी दोउराजत वारत रतिपति सयन १३९ ॥ राग बिलावल ॥
संग शोभित दृढभान किशोरी । शारंग नयन बयनवर शारंग शारंग
बदन कहै छबिकोरी । शारंग अघर सुधरकर शारंग शारंगजति शा-
रंग सतिभोरी । शारंग बरगा पीठिपर शारंग शारंग गतिशारंग कटि
थोरी । शारंग पुलिन रजनि रुचि शारंग शारंग अङ्गसुभग भुजजोरी ।
बिहरत सघनकुंज सखि निरखति सूरश्यामवन दामिनि गोरी १४०
कुञ्जभवन राधा सब मोहन । रतिबिलास करिसगन भयेअति निरख-
ति नयन लजोहन । वियतनुको दुखदूरि कियोपिय दैद अपनी सो-
हन । बारबार भुजधरि अङ्गसभरि मिलिबैठे दोउ गोहन । पीताम्बर
पटुसौं मुखपोंकत हरि परस्पर जोहन । सूरश्याम प्रयासासन रिभ-
वत पीन कुचनि टकटोहन १४१ ॥ राग बिहागरो ॥ बनिहँधाम सुखरैनि
सुहाई । तैसिय नवल राधिका नागरि तैसेइ नवल कन्हाई । तैसेइ
पुलिन पवित्र यमुनको तैसेइ मन्दसुगन्ध । तैसियकंठ कोकिलाकुह-
कनि तैसेइ मुखसनबन्ध । रतिबिहार करिपिय अरुप्यारी प्रातचले
ब्रजधाम । सूरदास दोऊबहजोरी राजतप्रयासा प्रयास १४२ ॥ रागललित ॥
नवल निकुञ्ज नवलरस दोऊराजत रङ्ग भीने । कुसुमनि सेजभोर उठि
आवत आलसयुत अंशनि भुजदीने । अरुणा नयन कुचरेख बिराजति
अमजल बरुनपलटि तनुलीने । सूरजप्रभु पियप्यारीको मुखनिरखत
सखिनसहित ललिताद्वगदीने १४३ ॥ राग केदारो ॥ बरगा बरगा बादरसनह-

रगा उटेकरगा बनवासते निकसतदोउ येसेलागे । प्रयासघटासध्यमानो
 दामिनीभामिनी राजति लाजति दुरिजातिकबहुँ प्रकट होतिहारीतामें
 अस्तुरा भये नयन सबै निशिके जागे । मोरमुकुट पीतबसन इन्द्र वनुय
 बीचबीच सन्द सन्द गरजि बोलनि पियरङ्ग अनुरागे । सूरदासप्रभु
 पिय प्यारीकी कवि गावत पावत कवि उपमाजेतेउबड़भागे १४४ ॥

राग अञ्जना ॥

वहजोरी निकसे कुञ्जते प्रात रीझि रीझि कहैजात । कु-
 गडल झलमलात झलकत बिबिगात चकाचौंधीसी लगति मेरे इन
 नयनन आलीरपट पगनहिँ टहरात । राधामोहन बनेबन चपलाज्यों
 चमकि चमकि परीपूतरीन में समात । सूरदासप्रभु के वै बचन सुनहु
 सधुर सधुर अबमोहिँ भूलीरी पाँचऔसात १४५ ॥ राग बिलावल ॥ नवल
 किशोर किशोरी बहौजोरी आवत हैं रतिरङ्ग अनुरागे । कबहुँचरगा
 गति डगति लगति छबिनयन बेन अलसात जम्हात सँझात गातआनंद
 निशिसुख जागे । बानक देखत रीझिरहीहां चन्दनबन्दन मालबिना
 गुगाअञ्जन पीकपलटिलागे । सूरदास प्रभुप्यारी राजत आवतधाजत
 बनेहैं सरगजेबागे १४६ ॥ राग भैरव ॥ सोहत घूंघरवालेबार अरुभिरहे मुक्ता
 फल निरवारत हैबार । रतिमानी संगनन्दनंदनके कूटेबन्द कंचुकीटूटे
 हार । निशिके जागेदोउनयना ढरकिरहे चलति योवन मदभार । सूर
 प्रयास संगयह सुखदेखत रीझे बारम्बार १४७ ॥ रागमूढा ॥ नवलप्रयास
 नवलासीश्यामा । दोउराजत वहाँ जोरीचलेजात ब्रजधामा । याकवि
 कीउपमादेबेको त्रिभुवननहीं उपासा । दामिनि घन पटतर देबेको सकु-
 चत कबिलिये नामा । सुधाशरीर परस्परदोऊ सुखदायक दिनयासा ।
 सूरदास प्रभुनागर नागरि जीते रति प्रति कामा १४८ ॥ राग ललित ॥
 दोउबनते ब्रजधाम गये । रति संग्राम जीतिपिय प्यारी भूषणा सजति
 नये । वे ब्रजगये आपु अपनेगृह चितते कोउ न टारत । मनबाचा क-
 रसाए एकदोउ एकौपल न बिसारत । जैसे मीननीर नहिँ त्यागत ये
 खसिडत हैं खूरा । सूरप्रयास प्रयासा दोउदेखौ इतउत कोउ न अधू-
 रगा १४९ ॥ राग धनाश्री ॥ बहुरि फिरिराधा सजति शिङ्गार । मनहुँसु-
 हय पहिरावति अंगरज जीते मुरतअपार । कवितरु सुभटनि देत रसन
 पट मुज भूषणा उरहार । करकंकसा काजर नकबेशरि दीन्हे तिलक

सूरसागर अनुरागलीला रागकल्पद्रुम ।

६२१

लिलार । बीरा बिहँसि देति अधरनिको सन्मुख सहे प्रहार । सूरदास प्रभुकोजु बिमुखभये बाँधत कायरबार १५० ॥ राग कान्हो ॥ आजु अति राधा नारि बनी । प्रतिप्रति अङ्ग अनङ्ग जीतिरति बश बैलोक्यधनी । शोभित केश बिचित्र भाँतिद्युति शिख शिखगड हरनी । रची साँग सम भाग रागनिधि कामधाम सरनी १५१ ॥

इति श्रीकृष्णानन्दव्यासदेवरागसागरोद्भवसूरसागररागकल्पद्रुम

प्यारीजीके अनुरागलीला सम्पूर्ण ॥

अथ सूरसागर रागकल्पद्रुम ॥

सुरलीनाद समय के कीर्तन ॥

राग बिहागरो ॥

अँखियनकी सुधि भलिगई । श्याम अधरमृदु मुनत सुरलिका चक्रित नारिभई । जोजैसे सो तैसेहि रहिगई सुख दुखकहेउ न जाई । लिखीचित्रकीसी सबहूँगई यकटक पलबिसराई । काहू सुधि काहूसुधि नाहीं सहज सुरलिका आन । भवन रवनको सुधि न रहीतनु मुनतशब्द बहुकान । अँखियनते सुरली अतिप्यारी बहवैरनि यहसौति । सुरपरस्पर कहत गोपिका जहँउपजी उदभौति १ ॥ रागसारंग ॥ अधर सुरली रदनलागी । जारस को यत्कृतु तनु गारेउ सो रस पिवत सभागी । कहाँरही कहँते यहआई कौनेयाहि बुलाई । चक्रित कहाभई ब्रजबासनि यहतौ भली न आई । सावधान क्योंहेति नहीं तुम उपजी बुरीबलाय । सूरदास प्रभु हमपर याको कीन्हे सौति बजाय २ आवतही याके येदंग । मनमोहन बशभये तुरतही हूँगये अङ्ग बिभङ्ग । नाजानोयहदोना जानति करिहै नानारङ्ग । देखौचरित सजे हरि कैसे या सुरलीके संग । बातनिमें कहसुनि उपजावति शिरतजितान तरङ्ग । सूरदासप्रभु इन्दु बदन में पैठोबडो भुजङ्ग ३ ॥ राग टोड़ी ॥ सुरली मुनतदेह गतिभूली । गोपीप्रेम हिंडोले भूली । कबहुं चक्रितहै रहति सयानी । स्वेदचल्योहै जैसे पानी । धीरज धरियक इकाहि सुनावैं । यहकहिकाहि आपुहि बिसरावैं । कबहुंसुधि कबहुंसुधिनाहीं । कबहुं सुरलीनाद समाहीं । कबहुं तरुणि तरुणि मिलिबोलैं । कबहुं रहैधोर नहिंडोलैं । कबहुंचलति कबहुं फिरिआवैं । कबहुंलाजतजि

लाज लंजावैं । मुरलीप्रयाम मुहागिनिभारी । सूरकहति ऐसे ब्रजनारी
 ४ ॥ राग बिहागरो ॥ अधरधरि मुरली प्रयाम बजावत । शारंगगौर नाद
 नट करिकै गौरीराग सुनावत । आपुभये रसबस ताहीके औरनिबप्रय
 करावत । ऐसेको विभुवन जलथल में जो शिरनहीं धुनावत । सुभग
 मुकुट कुंडलमणि अवगानि देखत नारिन भावत । सूरदासप्रभु गिरि-
 धर नागर मुरलीधरता कहावत ५ ॥ राग पूर्वी ॥ प्रयाममुखमुरली अनु-
 पम राजत । सुभग शिखण्ड पीडाशिर मोहत अवगानि कुंडल धाजत ।
 नीलजलद तन सुभग चापसुर मन्दमन्द रवगाजति । पीतांबर कसित-
 दित भावजनु नारिबिबश मनलाजति । टाढ़े तरु तमालतर सुन्दर नन्द
 नन्दन बनमाली । सूरनिरखि ब्रजनारि चकतभई लगीमदनको भाली
 ६ ॥ राग बिहागरो ॥ मुरलीके बश प्रयाम भयेरी । अधरनते नहिँ करत न
 न्यारी वाके रङ्गरयेरी । रहत सदा तनमुधि बिसराये कहा करनधौं
 चाहति । देखीमुनी न भई आजुलो बाँसबसुरिया दाहति । प्रयामहिँ
 निदरि निदरि हमहूँ को अबहीँते येरूप । मुनहु सूरहरिको मुहपाये
 बीलतबचन अनूप ७ मुरलीप्रयाम कहाँते पाई । करतनहीं अधरनते
 न्यारीकहा टगोरीलाई । ऐसीढीठ मिलतहीहूँगाइ उनके मनहीं भाई ।
 हमदेखत यहपिबति सुधारस देखौरी अधिकाई । कहाभयो मुहलागी
 हरिके बचनन लियो रिझाई । मुरप्रयाम को बिबश करावति कहा
 सौतिसी आई ८ ॥ राग गुजरी ॥ प्रयाम मुरलीके मनहिँ ढरे । करपल्लव
 ताको बैठारत आपुन रहतखरे । बारम्बार अधर परसावत उपजावत
 अनुराग । जेबश करत देवमुनि गन्धर्व ते करि मानत भाग । बनमें र-
 हति डरीको जानै कबआनीधौं जाय । मुरज प्रभुकी बड़ी मुहागिनि
 उपजीसौति बजाय ९ ॥ राग नट ॥ मुरलीभई सौतिबजाय । कबहुँ बन
 में रहतिडारी ताहियह सुधराय । बचनहीं हरिरिभै लीन्हे अधर प-
 रित नाद । दिनहिँ दिन अधिकान लागी अब करैगी बाद । मुनहुरी
 यहि दूरकीजै इहै करहु बिचार । अबहिँ ते करनी करी यह बहुरि
 कहा लगार । ढंग याके भलेनाहीं बहुतगई डराय । मुरप्रयाम सुजान
 रीभे देहगति बिसराय १० ॥ राग खेरठ ॥ मुरली दूरि कराये बनिहै ।
 अबहीँते सेसेढँगयाके बहुरि काहि वह गनिहै । लागी हरिकर पल्लव

बैठन दिनदिन बाढ़ति जाति । अबहींते तुमसजग होहुरी मेंजु कहति
 अकुलाति । यहिब्रजमें नहिंभली बतानी देख्यो हृदय बिचारि । सुर
 प्र्याम बाहीके ह्वै गये सब ब्रजनारि बिसारि ११ ॥ राग बिहागरो ॥ अबहीं
 ते हमसबनि बिसारि । ऐसेवश्यभये हरिबाके जाति न दशाबिचारि ।
 कबहुंकर पल्लव पर राखत कबहुं अधरलै धारी । कबहुं लगाय लेत
 हिरदयसें नेकहु करत न न्यारी । मुरली प्र्यामहिं अपने कीन्हे जे
 कहियत गिरिधारी । सुरदासप्रभुके तन मन धन बांस बँसिरियाप्या-
 री १२ ॥ राग रामकली ॥ मुरलीभई प्र्याम तन मन धन । अबवाको तुम
 दूरिकरावति जाकेवश्य भये नंदनंदन । कबहुं अधर कबहुं राखतकर
 कबहुं गावत कबहुं हृदयधरि । कबहुं बजाय मगन आपुनहीं लटकि
 रहत मुखधरि तापर हरि । ऐसेपगे रहतहैं जासों ताहिकरति कैसेतुम
 न्यारी । सुरप्र्याम हमसबनि बिसारी यहकैसे अबजाति बिसारी १३
 राग मूढो ॥ मुरली हरिको भावैरी । सदारहति मुखही सें लागी नाना
 रङ्ग बजावैरी । छहराग छत्तीसरागिनी यकयकनीके गावैरी । जैसेही
 मनरीभूत हरिको तैमेहि भांति रिभावैरी । अधरन को अमृत पुनि
 चवति हरिके मनहिं चुरावैरी । गिरिधरको सेसो बश कीन्हे रङ्ग
 भरे बचन सुनावैरी । उनको मनकर अपने कीन्हे नानानाच नचा-
 वैरी । सुरजप्रभु दिगते कहिबाको सेसो कौन टरावैरी १४ ॥ रागभैरव ॥
 मुरली हरिते छूटति है । बाहीके वशभये निरन्तर वह अधरनि रस
 लूटति है । तुमते नितुरभई वह बोलति तनते मन उबटावति है । आ-
 रजपथ कुलकानि मिटावति सबको निलज करावतिहै । निदरे रहति
 डरति नहिंकाहू मुखपाये बहुफूलतिहै । अब यहहरिते होति न न्यारी
 तू काहेको भूलति है । रोमरोम नखाशख रसपागी अनुरागिनिहरि
 प्यारी है । सुरप्र्याम बाकेरस लुब्धेजानी सौतिहमारी है १५ ॥ राग
 बिहागरो ॥ मुरली हमको सौतिभई । नेक न होति अधरते न्यारी जैसे
 लयाडई । यहां चवति यह डारत लैलै जलथलवननिबई । पुनि पुनि
 लेत सकुच नहिं मानति कैसेी भईदई । जारस को ब्रतकरि तनु गारे
 उकीन्ही रईरई । कहावरे वहबांस बासकीआस निरासगई । सेसीकहं
 भईनहिं देखी जैसेीभई नई । सुरबचन बाकेटोनासे ग्रथमनोज जई १६ ॥

राग सौरभ ॥ मुरली बचन कहति जनु होना । जल थलजीव बध्मकरि
लीनहे रिभ्ये प्रियाम सलोना । नेक अधरते करति न न्यारी प्यारी
वियनि लजोना । ऐसीढीठ बढति नहिं काहू रहति बननि बनजोना ।
ताकी प्रभुता जातिकही नहिं ऐसीभई न होना । सूरप्रियाम मुखनाद
प्रकाशत थकितहोत सुनि पौना १७ ॥ राग सारंग ॥ मुरली हमपर रोय
भरी । अंश हमारो पुनि पुनि अंचवति नेकहु नहिंन डरी । बारबार
अधरनिसों परसति देखति सबैखरी । ऐसी ढीठरी नहिंह्यातेज्यों
हम रिसनिजरी । यहतौ किधौं अकाज हमारो अब हमें जानिपरी ।
सूरजप्रभु यहनिटुर कराये ऐसी करनिकरी १८ ॥ राग धनाशी ॥ मुरली
के सेसे ढंग माई । जवते प्रियामपरे बंशवाके हमहिं सबनि बिसराई ।
अपनो गुण यह प्रकट करायो निटुर काठकीजाई । अपनेहिं आगि
दह्यो कुल अपनोसो गुणगुणो पछिताई । जैसे निटुर आपने घरको
औरनि क्यों ज्यों मानै । सूरबडो यह आपु स्वारथी निपट रागकरि
गानै १९ ॥ राग कल्याण ॥ बांस बंश बंशी सबबध्म जगत स्वामी । जाके
बंश सुरतर सुनि ब्रह्मादिक गुण गुण गुणान बासर निशि कथत
निगम नेतिनेति बानी । याकीमहिसा अपार शिव न लहत बारबार
करता संसारसार ब्रह्मरूप येहैं । सुरतन्दसुवन प्रियामजे कहियत तत्त्व
नाम अतिही आधीन बध्म मुरली केतेहैं २० मुरलीनहिं करत प्रियाम
अधरनिते न्यारी । टाढे हूँ रहत सकपायँ तनुबिभङ्ग करत भरत नाद
मुरली सुनि पुहुमी बध्मसारी । थावर चराचर थावर जंगम जड जड
जङ्गम सरिता उलटीप्रवाह पवन थकितभारी । सुनि सुनि धुनिअवरा
तान स्वेद गयेहूँ पयारा तखु डगर खग मृगनि सुधि बिसारी । उकटे
तरुभये पात पाथरपर कमलजात आरज पथ तज्योनात व्याकुल नर
नारी । रोभे प्रभु सूरप्रियाम बंशीख मुखद धाम बासरह याम नहीं
जाति कतहुँ टारी २१ ॥ राग सारंग ॥ यह मुरली मोहनी कहावै । सप्त
सुरन मधुरी कहिबागी जल थल जीव रिभावै । बहिरिभ्ये सुरअ-
सुर निपटरचि तिनको बध्म करावै । पुटकी इतमद उतअमृत आपु
अँचै अँचवाये । याके गुण ये सब सुखपावत हमको बिरह बढावै ।
सूरप्रियाम याकी यह करणी प्रियामहिं नीके भावै २२ मुरलीते हरि

सबनि बिसारी । बनकीव्याधि कहाँ यहआई देतिसबैभिलि गारी ।
घरघरते अब निदुर कराई महा अपत यहनारी । कहाभयो जो हरि
मुखलागीअपनो प्रकृति न पारी । सकृचतिहौं काहेतुम सजनी कहान
बात उघारी । नोखी सौति भईयहहमको और नहींकहुँकारी । इनहूँते
अरु निदुरकहाबति यहआई कुलजारी । सुरदासऐसी कौविभवन जैसी
यह अन प्यारी २३ ॥ रागमाक ॥ आई कुलदाहि निदुर सुरली माय ।
याको रीझे गोपाल काहु न लखाय । जैसी यह करणीकरी तहींयह
बताय । कैसे बशरहतभये यह तो दुनहाय । दिन दिन यह प्रबलहोत
अधराभृतखाय । मोहन को यह तौ कछु मोहनी लगाय । कबहुँअधर
कबहुँ कर टारत न कन्हाय । सुरप्रभुको कछु ता बिनु और न साहाय
२४ ॥ राग बिलावल ॥ सुरली हरिको अपने बश कीन्हे माय । जोइ जोइ
कहति सो करतहैं अति हरथ बढ़ाय । घर बन सङ्ग फिरै सदा कबहुँ
करत न न्यारी । राधा आधा देहहैं ताते यहप्यारी । सेवत जागत च-
लतहूँ बैठत रसवासों । दूरि कौन सों हायगी लुब्ध हरि जासों । अब
काहेको भुखतिहो यह भई लज्जैती । सुरप्रियाम की भावती यह अन्त
घडैती २५ ॥ राग वैतशी ॥ सुरली भय रहति लज्जै बीरी । देखति नहींनयन
निशियामर लावति कैसी ठौरी । कर पर धरि अधरनि आगे करि
राखत ग्रीव निहारी । पूरतनाद स्वाद सुखपावत तान बढ़ावतगौरी ।
आयसु लिये रहति ताहीको डारी शोश टगौरी । सुरप्रियामकी बुधि
चतुराई लीनी सबै अजौरी २६ ॥ रागमेरी ॥ सुरली प्रकटभई सो कैसी ।
कहा रहति कैसे यहआई गीधे श्याम अनेसी । मात पिता कैसेहैं बाके
याकी गति प्रतिसेसी । ऐसे निदुर होहिंगेतैऊ जैसीकी यहतैसी । यह
तुम नहीं सुनीहो सजनी याके कुलको धर्म । सुरसुनहुँ अबहीं सुखपैहो
करणी उत्तम कर्म २७ ॥ रागमेरी ॥ याकोशुण में जानति हैं । अब तो
आय भई ह्यां सुरली वोही नातो मानति हैं । हरिकी कानि करति
वह कोहै कहाकरों उनमानति हैं । अबहीं दूरिकरों शुणार्थहिके नेक
सकृच जिय आनतिहैं । यातेलगी रहति सुखहरिके सुखपावति प-
हिंचानतिहैं । सुरदास यहनिदुर जातिकिन अब मैं यासों ठानति हैं
२८ ॥ रागनट ॥ सुनहुरी सुरली की उत्पत्ति । बनमें रहति बांसकुल या

को यह तो याकी जाति । जलधर पिता धरणिहै माता अबधरा कहैं
 उधारी । बनहैं ते याको धरन्यारी निपटाहि जहां उजारी । एकते एक
 गुणानि हैं पूरे सात पिता अस आप । ना जानिये कौन फल प्रकट्यो
 अतिही कृपा प्रताप । बिचासी परकाज न जानै याके कुलको धर्म ।
 सुनहुसूर मेघनिकी करणी अस धरणीको कर्म २९ ॥ रागगौरी ॥ सुनहु
 सखी याको कुलधर्म । रहतप्रयाम अधरनते लागी को जानै यहसर्म ।
 वे बर्यतजल धरणा संपूरणा सरस लेत अवगाह । चाहक सदा निराश
 रहत हैं एकबुन्दको चाह । धरणी जनम देति सबही को आपुन सदा
 कुमारी । उपजत फिरिताहीमें बिनशत छोहनको सहतारी । जा कुल
 में यहकन्या उपजी याके गुणानि सुनाऊँ । सूरसुनहु सुखहोय तिहारे
 में कहिके सुखपाऊँ ३० ॥ राग जेतथी ॥ मातापिता गुणकहैं बुझाय ।
 अब इनहूँ के गुणानि लेहु न जाते अवगा सिराय । उनके वे गुण नि-
 दुर कहावत सुरली के गुण देखौ । तब याको तुम औगुण मानो अब
 कहु अचरज पेखौ । जाकुलते उपजी ता कुलको जारिकरतिहै छार ।
 तनहीं तनते अगिनि प्रकाशति ऐसी याकीभार । वह जो प्रयाम सुनै
 अवगानिभरि करते देहेंडार । सूरदासप्रभु बोखे याको राखत धरणी
 धार ३१ ॥ रागगोडमलार ॥ यहसुरली सखि ऐसीहै । रीझे प्रयाम बात
 सुनि सीटी नहिं जानत यह नैसीहै । देखौ याके भेद सखीरी कैसेमन
 है ऐसीहै । हमपर रहति भौंह सतराये चतुर चतुरई जैसीहै । योंगुण
 रहत चुराये हरिसैं देखौ तुमऐसी सीहै । सुनहुसूर बैरिनि यहहमको
 प्रकटति हूँ वैसीहै ३२ ॥ रागनट ॥ यह तो भली उपजी नाहिं । निदरि
 बैठी सौति हूँके देखिदेखि रिसाहिं । कहा यांकी सकुचमानति कहे
 घात सुनाय । तबहिं बश करि लियो हरिको हम सबनि बिसराय ।
 प्रबल पावस शरब प्रीयम कियो तप तनगारि । तिनहिं तूले आपबैठी
 प्राणापति बनवारि । जो भई सो भईअब यह छोडिदे रसबाद । सूरप्रभु
 के अधर लगिलगि कहाबोलति नाद ३३ ॥ रागकान्हो ॥ ऐसीकहो नि-
 दरि सुरलीसों कृपा तो अबबहुत भई । सकुचनहीं बनति री माई घर
 घर करिहीं दईदई । देखतिनहिं चतुराई वाकी सुह पाये ज्यों फूल
 गई । अधर सुधा सर्वस जो हमारे सो याने सबलूटि लई । ओकी जाति

डोमके धरकी कहा संवकरि हरिवश भये । सूरदासप्रभु बड़े कहावत
 ऐसी को धरि अधर लये ३४ ॥ रागबिहारी ॥ याकी जाति प्रयास नहिं
 जानी । बिन ब्रह्मे बिनहीं अनुमाने करि बैठे पटरानी । बारम्बार लेत
 आलिङ्गन मुनिमुनि मधुरी बानी । गावँ नावँ नहिं बासवंशीको याहि
 कहाँते आनी । जिन कुलदाहत बिलंब न कीन्हे कौनधर्म ठहरानी ।
 सुनहुसूर वहकरणी यहमुख जाति न कहू बखानी ३५ ॥ राग धनाशी ॥
 मुरली आप स्वारथिनि नारि । ताकी हरि परतीत करत हैं जीति न
 जानत हारि । ऐसे बश्यभये हरिवाके कहाठगौरी डारि । लटतिहै अ-
 धरनिको असृत खाति देतिहै डारि । को बकिमरै बनीहै जोरी तया
 तोरतिहै बारि । सूरप्रयासको भले कहतिहैं देउँ कहा अबगारि ३६
 रागबोरठ ॥ हम तपकरि तनुगारेउ जाके । सो फलतुरत मुरलियापाये
 करी कृपा हरिताके । कपटी कटित और नहिंकोऊ जैसेहैं ब्रजराज ।
 जो सन्मुख सो बिमुख कहावै बिमुख करै मुखराज । ब्रह्मी बात नन्द
 नन्दनकी मुरलीके रंगपाये । सूरअधर रसआहि हमारे ताके बकसन
 लाये ३७ ॥ रागरमकली ॥ मुरली हमसों बैर दूढाये । चली निपट इत-
 राय नेकही हरि अधरनि परसाये । फूली फिरति श्याम कर बैठी
 योहीं गर्व बढ़ाये । ज्यों निधनी धनपाय अचानक नयन अकाश च-
 ढाये । सूरप्रयास देखत सिहातहैं ताकोजाय रिझाये । जिभुवन पति
 ओपति जे कहावत तिन मुरली बश पाये ३८ ॥ रागनट ॥ मुरली अति
 चली इतराय । अक्षयनिवि जनुलुटिपाई क्यों नहीं सतराय । आदि
 ज्यों यहबड़ी होती चलति शीश नवाय । सबनि को लैसङ्ग चलती
 दौरि मिलतीधाय । बांसते उत्पत्ति जाकी कहाबुधि ठहराय । सूरप्र-
 मुता बश्य जैसे रहे तन बिसराय ३९ ॥ रागबिहारी ॥ प्रयास मुहागिनी
 मुरली । भेदनाना करति हरयति मुनि हरयि उरली । सदातासों रहत
 पाये मन्दसधु मुरली । रैनबासर दरति नाहीं रहति जहँ दुरली । भई
 क्याकुल चरित देखत नारिब्रज पुरली । सूर आरजपथ बिसारेउ भवन
 डर मुरली ४० ॥ राग केदारी ॥ मुरली सतेपर अतिधारी । यद्यपि जाना
 भाँति नचावति सुखपावत गिरिधारी । रहत हजूर सकपग ठाढ़े आ-
 नतहैं अतिदास । करते कबहँ नेकनहिं टारत सदारहत तापास । बार-

स्वार देत आयसु हरिपर राखति अधिकार । सूरप्रयास को अपवश
 कीन्हे रहतरही बनभार ४१ ॥ रागगोरी ॥ मुरली प्रयासहिं मूढ़चलाई ।
 बारम्बार अधर धरियाको कान्हा गर्वकराई । तबते गर्नति नहीं यह
 काहू जबते उनमुहलाई । ना जानिये और कहकरिहे देखतनहीं भलाई ।
 अपने बण्य कियो नंदनन्दन बैरिनि हमको आई । सुरजप्रभु सते पर
 साई मानत बहुत बड़ाई ४२ ॥ रागनट ॥ बड़ेकी जोमानियेकानि । कहा
 ओछे की बड़ाई जाहि ओछी वानि । बड़ो निदरै नहीं काहू ओछोई
 इतराय । नीरवारी नीचहीको चलै जैसेजाय । रहीबनमें घरहिल्याये
 महाबरी बलाय । निदरि करि यहसबनि बैठी सौति उपजीआय । दि-
 नहिदिन अधिकार बाढ्यो आगे रहत कन्हाय । सुरदास उपाधि बि-
 धना कहारची बनाय ४३ ॥ राग गोरी ॥ मुरली हमहिं उपाधि भई । नंद
 नन्दन हमसबनि भुलाई उपजी कहादई । कैसे अब यह दूरि होति है
 नेखी मिलीमई । देखोरी सम्बन्ध पाड़िलो वरनिब बेलि बई । जारे
 जरे न काटे सुखे हूँगई अमृत मई । सूरप्रयास भरुहाई याको व्रज में
 आनिछई ४४ दिनहिंदिन मुरली ढीठभई । रहति रही बनभार पात
 में सोई सुधामई । प्रकटहि भाग सुहागिनि हरिकी अनुरागीहरियाके ।
 धन्यधन्य बशभये रहतहैं प्रयासमंदररी जाके । बाकोभाग सुहाग सां-
 चिलो कबहुंसङ्ग नहिंत्यागतु । सूरप्रयास राजा वह रानी बाको सरि
 को लागतु ४५ ॥ रागहमीर ॥ मुरलीकी सरि कौनकरै । नंदनन्दन विभु-
 वनपति नागरसो जो बण्यकरै । जबहीं जगमन आवति तबतब अधरनि
 पानकरै । रहत प्रयास आधीन सदाई आयसु तिनहिं करै । ऐसी भई
 मोहनीमाई मोहन मोहकरै । सुनहुसूर याकेपुण ऐसे ऐसीकरनिकरै ४६
 रागगोरी ॥ मुरली आपन काज कियो । आपन लूरात अधर सुधा हरि
 हमको दूरिकियो । नंदनन्दन सबभये बचनमुनि तिनहिं बिमोहकियो ।
 थावरचर जङ्गम जङ्गकीने मदन बिमोह कियो । जाकीदशा रही नहिं
 तासों सबही चक्रतकियो । सुरदासप्रभु चतुर शिरोमणि तिनकी हाथ
 कियो ४७ मुरलिया प्रयासहिं और कियो । और दशा औरै हूँमति
 गइ और बिबेकहियो । तबते निरुभये हरिहमसों जबतेहि हाथलई ।
 निशिदिन हम उनके संग रहती मनो हूँगई नई । यहिऔरै करिडारे

भारे हसकी दूरिकरी । घरकी बन बनकी घरकीन्ही सूरसुजान हरी
 ४६ ॥ राग कल्याण ॥ सजनी प्रयास सदारी सेसे । एक अङ्गकी प्रीति ह-
 मारी वे जैसेके तैसे । उयो चकोर चन्दाकोचाहे चन्दा नेकु न मानै ।
 जलके तीर सीन तनत्यागे नीरनिदुर नहिं जानै । उयो पतंग उडिपरत
 उयोति तकि बाके नेकु न भाय । चातक रटि रटि जलद मनावै
 जल वो डारत जाय । उनह ते बिदशी बडे बै तैसिय मुरली पाय ।
 सूरप्रयास जैसे तैसी वह भली बनी अब आय ४६ ॥ राग रामकली ॥
 मुरलीको मन हरिषों मान्यो । हरिकोमत मुरलीषों मिलिगयो जैसे
 पय अरु पान्यो । जैसे चोरचोर सों तैषो टगटाग एकैजानि । कुटिल
 कुटिल मिलिचले एकहूँ दुहुनबनी पहिंचानि । ये बनबननित धेनु च-
 रावत वह बनहीं की चाहि । मुरगदी जोड़ी बिधना की जैसी तैसी
 ताहि ४७ ॥ रागधनायी ॥ काहेन मुरलीषों हरि जारै । काहेन अवरनि
 धारै पुनिपुनि मिलीअचानकभोरै । काहेन तेहि करधरि राखैक्यों
 नहिं प्रीवनवावै । काहेनतनुविभङ्ग करिधारै ताकेमनहिं चुरावै । काहे
 न यों आधीन रहैं हूँये अहीर वहवेनु । सूरप्रयास करते नहिं टारत
 रीबनचारत धेनु ४८ ॥ रागविलावल ॥ वाहीके बल धेनुचरावत । वहै ल-
 कुटजाकी वह मुरली वार्ते वे सुखपावत । वह अतिनिदुर वै वार्तेअति-
 ही मिलिकैघात बनावत । बनहीं बनमें रहत निरन्तर ताहि बजावत
 गावत । बाकेबचन असृतहैं इनको ताहिअवररसप्यावत । सूरप्रयास
 बनवारी कहियत वह बनवास कहावत ४९ ॥ रागरामकली ॥ बैरुसदा
 हमसोंहरिकीन्हे । प्रथमहिं रोकिरहे गहिमारग दधिलैजान न दी-
 न्हे । पुनिमनहरैउ भेदहीभेदहि इन्दीसंगहिलीन्हे । तापाछे ये नयन
 बुलाये उनउनहींको चीन्हे । अब मुरलीबैरनि उपजाई निपटभईहम
 भीन्हे । मुरपरे हरिखोजहमारे सेसे परमनगीन्हे ५० ॥ रागविलावल ॥
 सुनिसजनी यह सांचीबागीवारैते नगावर कहवायो । धन्यधन्यकवि-
 ता पितुमाता जिनकहिंकहि उपमा वहगायो । इन्दुवदन तनप्रयास
 सुभगधन तीव्रतबसन सतभाय बतायो । अलकभृङ्ग पदतरको सांचेकर
 सुखचरणाकमल करिगायो । ये उपमा इनहींकोछाजै अबमुरलीअव-
 रनि परसायो । सूरअङ्ग यहआहि हमारी मुरलीसबै अकेलेपायो ५१

रागरासकली ॥ सजनी अदम्बहिं समुक्तिपरी । अङ्गअङ्ग उपमा जे हरिके
 कविताबनैधरी । भवैरकुटिल कुन्तलकीशोभा सो हमसहीकरी । मुख
 छवि शशि पटतर धरि दीन्ही यह मुनि अधिक डरी । नवजलधर तनु
 कहियतशोभा दामिनि पटफहरी । मूरसहाय भलीयहमुरली अपने
 कुलहिजरी ५५ ताते मुरलीके वशप्रयास । जैसेको तैसोय मिलाई ये
 विधनाके काम । नेक न करत नियारी करते कुलचारिनिभइबास
 निशिबासरवाकेरसपागे बैठे टाढ़ेयाम । मूरदासप्रभुकी हितकारिणि
 हमपर राखतिताम । ५६ ॥ रागधनाथी ॥ विधना मुरलीसौतिबनाई । कु-
 टिल बाँसकी वंश बिनाशिनि सबहि निराश कराई । जो यहटाट
 टाटि बहिराख्योकुलकी होतीकोऊ । तो इतनो दुखहमहिं न होत्यो
 औगुना आखर दोऊ । ये निर्दयी नितुर वह बनकी घरअबनहीं प्र-
 काश । मूरदास ब्रजनाथ हमारे जैसेभये उदाश ५७ ॥ रागवोरठ ॥ अब
 मुरलीपति क्यों न कहावत । राधापति काहेको कहिये सुनतलाज
 जियआवत । वह अनखाति नाममुनि हमरो इतहमको नहिंभावत ।
 कै मिलिलवले फेरिहमहीं को कै बनहीं किनछावत । का ओछेकी
 नाव चढबहै अपनी बिपतिकरावत । सुनहु सूरयह कौन भलाईहँसि
 हँसि बैर बढावत ५८ ॥ रागनट ॥ और कहौ हरिको समुभाय । तब
 यह दुविधा काहेराखत बाहीमिलिबेजाय । हमअपने मननितुर क-
 रायो बात तुम्हारेहाय । भलीभई अब सकुचनलागी कविगावतब्रज-
 नाथ । अब मुरली पतिजाय कहाबहु वह बाँसनि तुमकाठ । मूरदास
 प्रभुनहिं चतुराई मुरलीपढयो पाठ ५९ ॥ रागभैरव ॥ मुरलीको कह
 लागैरी । देख्यो चरित यशोदा सुतको बहयुवती अनुरागैरी । इतसद
 उनहिं कहतही दोबल दैउचढी वहपागैरी । करधरि अधरपरसिआ-
 लिङ्गन देत कहांगठि भागैरी । वहलम्पट दूतिनि टुनहाई जानिबूझि
 जोखागैरी । सुनहु मूरबह यहईचाहे तापर येरिसपागैरी ६० ॥ राग
 सारंग ॥ बावरी जोबाँसरी सोलरै । बहउमसों प्रेमनेमसों तुमसोंनाहिंन
 आली याते गिरिधारीलाल लैलैअधरधरै । जौलो मधुप्रिवति रहति
 तौलो जीवतिहै घरीघरी पलपल सरासरा नहिंबिसरै । मूरदास प्रभु
 बाके रखबशभये रहतअली तातेबाकी सरवर कहौधौं कौनकरै ६१

रागविलावल ॥ वह मुरली बनभारकी विनुल्याये आई । हमहींको दुख
 देनेको ब्रजभयोकन्हाई । औरहितेहमसेंलरै करतेबरिआई । गागरि
 फोरे घाटमें दधिसाट टराई । पुनिरोंकतिहैं दानको अंगभूयसासाई ।
 सीखीचोरीआदिते मनलयोचुराई । पुनिलोचन अटकेरहे आजहुंनहिं
 आये । हमसें उचटेरहत हैं मुरली चितलाये । दोय कहावाको सखी
 इनको गुणसेसे । मूरपरस्पर नागरी कहैं प्रयासअनैसे ६२ ॥ रागवेरठ ॥
 सखीरीनखशिखिते हरिखोंटे । ये गुणतबहीं तेजानत हमजब जननी
 कहैंकोटे । अबरहरेजाय यमुनातराखेकदमचढाय । तबको चरितसबै
 जानतिहैंकी हैनिलजबनाय । जबहम तपकरिकरि तनुगारेउ अवर
 सुधारसकाज । सो मुरलीनिदरे अचवतिहैं ऐसे येव्रजराज । हमकोयां
 औरनिको ऐसेनिधरक दोनाडारि । मुरइतेपर चतुरकहावतकहादी-
 जियेगारि ६३ ॥ राग केदारी ॥ यहिबांसुरीमाई सबैचुराये हरितौचुराये
 अकेले चीर । मनहिंचोरि चितवतहि चुराये गई लोकलाज कुलधर्म
 धीर । तबतेभईव्याकुल अतिअकुलताआधीर । मूरदासप्रभु निदुरनि-
 दुरवह नहिंजानत परहदयधीर ६४ ॥ राग गेरी ॥ तुमअब हरिको दोय
 लगावति । नंदनन्दनखोंटेतुकीन्हे मुरली भलीकहावति । यहिछिनहरि
 लरूपटअन्याइनि कुलदाहतिनहिंवार । मधुरमधुर बाणीकहिरिभिये
 तीन साजिअङ्गार । वहैआय तोना शिरडारति मत्तमुरनि कल गान ।
 ऐसेबनमिलि आयके ह्वैगयेप्रयासअजान । पुस्त्यभंवर उनकोकहलारौ
 नारिभजै जबआय । मूरजप्रभु तब कहाकरैरी ऐसीमिली बलाय ६५
 राग बिहागरी ॥ मुरलीको करिसाधुधरी । जिनरिभये मनहरा हमारो
 है मोहनीढरी । ऐसेकहूं भई नहिंहोनी जैसी इनहिंकरी । अबजहतहैं
 धनिधन्य कहावति यह मुनि रिसनजरी । मूरप्रयास अवरन के लागे
 खोंटीभई खरी ६६ ॥ राग माह ॥ मुरली नहिं धरत धरिगा करते कहूं
 तरत नहीं अधरनि धरे रहत खरदरत प्रयासभारी । कबहुं नाद भरत
 करत अपनोमन वश्य कहा कबहुं रीभि मगनहात देखत ब्रजनारी ।
 कबहुं लटक जातगात ताननि जबकहति बात सुनत अबरा रसअघात
 लागति अतिप्यारी । जा हित तप कियो गारि सोरसलै देत डारि ध-
 रिया जल बिडूंगरबन दुसनिये बिधारी । ऐसेढंग करै आय हमको उ-

उपजी बलाय ताको तुम भलीकहति नाहिं आदि जानी । देखो याके
 उपाय जयजय तिहुंभवनगाय सुरप्रियाम अपनोकरि दिनदिन इतरा-
 नी ६७ ॥ राग धनाश्री ॥ वृथा तुम प्रियामहिं दोय न देत । जो कछुकहौ
 सब मुरलीको मनदेखो चेत । पहिलेहिआनि सुप्रोतिबढाई कोजानै
 यहघात बनबोली हम धाईआई गृहजनतजि पितु सात । जैसे मधुपर-
 बालपटाने घैसइ याकेबोल । मुरमिली यहिभांति आयकै त्यों रहती
 निर्मोल ६८ ॥ राग नट ॥ मुरली प्रकटकीन्हींजाति । तबकही इतराय
 बोली बांसवंश कुजाति । अहे निशि रसअधर अंचवत तऊनहिं ल-
 ष्णाति । निररिबैठी सबनिको यह पुलकि अंग न समाति । छवोअतु
 तपकरिपची हम अधररसके कोभ । सुरप्रभुसो याहिबकस्यो कछु न
 कीन्हेसोभई ६९ ॥ राग सारंग ॥ क्यों तुम प्रियामहिं दोयलगावति । क्यों
 मुरलीकी करतप्रशंसा यहतो मोहिं न भावति । याकीजरनि नहींजो
 जानति कहिकहि में समुभावति । कपटनि कुटिल काठकी संगिनि
 ताको कहावतावति । सुरप्रियाम इनहीं बहकाये भई उदासिनिगाव-
 ति ७० ॥ राग धनाश्री ॥ यहमुरली जरिगई न तबहीं । जब अपनो कुल
 दाह करायो तब कैसेनिबही । ऐसीचतुर चतुरईकीन्ही आपबची सब
 जारी । कैसेमिली सुरकेप्रभुकी विधनाकी गतिन्यारी ७१ ॥ रागसारंग ॥
 यह हमको विधना लिखिराखी । नाम न गावँ कहाँ ते आई प्रियाम
 अधररस छाखी । यहदुख काहिकहीं कोजानै ऐसी कौननिधारे । जो
 रसधरेउ कपिगाकीनाई सोसबसेसेहिडारै । यहदूयशा बाहीकोकहिये
 केहरिहूलोदीजै । सुनहुसुरकछुबच्यो अधररस सो कैसेकरिलीजै ७२
 राग नट ॥ अधररस अपनोई करिलीन्हे । जोभावै सो अंचवति निध-
 रक और सबनिको दीन्हे । मुरली हमहिं तुच्छकरि मानति बैरइते
 परमानै । जैसी वह तैसी सबजानति कुटिलकुटिल पहिंचानै । औगुगा
 साधिगढी नखशिखते तैसिय बुद्धिविकासै । सुरदास प्रभुके मुखआगे
 मोढेब्रचन प्रकासै ७३ ॥ राग गौरी ॥ यहमुरली ऐसीहै साई । निदरसौति
 यहभई हमारी कहाकहीं अधिकई । ऐसे पियति अधररस निधरक
 फेरति आपुहुइ । हमदेखति वह गरजतिबैठी जैसे बदनलगाई । या
 की प्रियाम प्रतीति करत हैं कछु पढि टोनालाई । सुर सुनत ये वचन

साधुरी प्रयामदशा विसराई ७४ मुरली मोहनीभई । कीन्ही करणीदेव
 दनुजपतिसो बिधिउलटिदई । उतपयनिधिहमव्रत सागरसाथपाईपियु-
 यनई । सिद्धि सुधा हरिवदन इन्दु छवि सों छलि छीनिलई । आपु
 अँवै अँचवाय सप्तसुर कीन्ही दिग्बजई । सकहिपुट उतअसी सूरइत
 सदिरा सदनसई ७५ मुरलिया कपट चतुरईटानी । कैसे मिलिगइनंद
 नन्दनको उन नाहिंन पहिंचानी । इकवहनारि बचन मुखमीठे सुनत
 प्रयामललचाने । जातिपांतिकी कौनचलावै वाकेअङ्गभुलाने । जाको
 मनमानतहै तासों सो तहई मुखमाने । मुरप्रयाम वाके गुणागावत वह
 हरिके गुणागाने ७६ मुरली यहतीभली न कीन्ही । कहा भयो जो
 प्रयाम हेतसों अधरनपर धरि लीन्ही । अँगुरी कुवत गहो यकपहुँचो
 कैसे दुरति दुराये । ओछी तनकहि में भरुहानी तनकहि बदनलगाये ।
 जोकुल नेम धर्मकी होती दिनदिन होतोभार । मुरदास न्यारेभये ह-
 मते डोलत नन्दकुमार ७७ यह मुरली कछु भली न कीन्ही । अधर
 सुधारस अङ्ग हमारो बाँटि बाँटि सबहिन को दीन्हे । बारिधि तारा
 द्रुमशील सलिलपर खग सींचति बसुधा मृग मीनो । जाने स्वाद कहा
 श्रीमुखसों छुँछोहियो मारखिन हीनो । जारसको कालिन्दी के तट
 पूजतिगौरि भयोतन छीन्हे । सूरसे रस यहिपरसि कुटिल मति सब
 हिन के देखत हरिलीन्हे ७८ ॥ राग कान्हो ॥ मुरली जो अधरन रट
 लागी । ज्यों मर्कटकर होत नारियर तैसे यही अभागी । अमृत लेति
 रहै कह हिरदय द्रवत साँसके मारग । बैरु विषय अँचवावति है यह
 लै डारति बनसागर । यह बिपरीति नहीं कहूँ देखी प्रयाम चढ़ाई
 शीश । नातरु सूर देखित मुरलीको कहा बाहि करबीश ७९ ॥ राग
 गेरी ॥ अधर रस मुरली लूटि करावति । आपन बारवार लै अँववति
 जहाँ तहाँ ढरकावति । आजु महाचढ़ि बाजी वाकी जोइ जोइ करै
 विराजै । करिसिंहासन बैठिअधर शिरछंधरे बहगाजै । गनति नहीं
 अपनेबल काहू प्रयासहिं ढोट कराई । सुनहुसुर बनकी बन बासिनि
 ब्रजमें भई रजाई ८० ॥ राग बिलावल ॥ यह मुरली कुल बाहनि हारी ।
 सुनहु अवशा देवै सबनारी । कपटी कुटिल बाँसकी जाई । बनते कहा
 यह यहआई । जो अपने घर बैरु बढावै । तनकी तन अति आधि

लगावै । ऐसीकी संगति हरिकीन्ही । जातिनहीं बाकी उन चीन्ही ।
 जैसे वे तैसी बहआई । बिधना जोरी भलीबनाई । मुरली के संगमिले
 मुरारी । भाग मुहागिनि पिय अनुप्यारी । ये कुलटा कलीटहें दोऊ ।
 एकते सकनहीं घटिकोऊ । अधरन धरत सबनि के आगे । करते नेक
 कहूँ नहिँत्यागे । इनकेपुणकहियेसो थोरे । सूरप्रयासबंशीबधमोरे ८१
 हरि मुरलीके हाथ बिकाने । वह अपमान करति न लजाने । वहऐसे
 करिलिये दिवाने । बारबार वा यशहि बखाने । ठाढ़े रहत न पाथँ
 पिराने । सेतेपर मन रहत डराने । आयमुदेत मुनत मुसकाने । जीवन
 जन्म सुफलके माने । वह गरजति वेहरे बताने । बारबार अधरन पर
 ठाने । प्रभुवनपति जे कहियत बाने । ताते सबतनु दशा भुलाने । वा
 आगेहम सबनि सुगाने । वहगावति वेसुनत पगाने । सूरनेति निगमनि
 जेगाने । ते मुरली के नादगाने ८२ मुरली निदरे प्रयास के प्रयासहिँ
 निदराई । मधुर बचन मुनिके ठगे ठग मुरली खाई । रहतबप्रय वाके
 भयेसब मेदि बड़ाई । वह तन मन धन ह्वैरही रसनारटमाई । वह तन
 कर वह अधरनि रहै देखो अधिकाई । वहै कहति सो मुनतहैं ये कुं-
 वरकन्हआई । बनकी बापुरी घर वह ठकुराई । सूरप्रयासको ता बिना
 कछु नहीं सुहाई ८३ ॥ राग रामकली ॥ सखी री साधोहि दोय न दीजै
 जो कछुकरि सकिये सोईसब यामुरलीको कीजै । बारबार बनबोलि
 मधुरधुनि अति प्रतीति उपजाई । मिलि अवगानि मनमोहिँ सहारस
 तनहु कि सुधि बिसराई । मुखमृदु बचन कंपटचित्त अन्तरहम यहबात
 न जानी । तजितजि लोकलाज बिधिको वह बिधियहकही सुसानी ।
 अब समुझी मिलि एकप्रकृति मुनिबिधिके सङ्गतिसाधी । सुरदास क्यों
 हँ करुणामय परति नहीं आराधी ८४ ॥ राग धनयो ॥ प्रयासहिँ दोयदेहु
 जनिसाई । कहौजाहिरी बाँस जातिकिन कौने तोहिँ बुलाई । उनकी
 कथा मनहिँ देखावौ याकी चलत ढिटाई । वे जो बरे भले तौ अपने
 यह लंगरि टुनिहाई । ऐसीरिस आवति है सोकोटूरि करों कहराई ।
 सूरप्रयासकी कानि करतिहैं नातस करति बड़ाई ८५ प्रयासहिँ दोय
 कहा कहिदीजै । कहाबात मुरलीसों कहिये सब अपनेहिँ शिरदीजै ।
 हमहीं कहति बजावहु मोहन यहनाहीं हमजानी । हमजानी यह बां-

मुरियाकोहरि जोने पटरानी । बारीते मुह लागत लागत अब ह्वैगई
 सयाजी । सुनहुसुर हम भोरीभारी याकीअकथ कहानी ८६ सुनसखि
 बात एक तुम सोसों । तुमअपने शिरमानलई क्यों मैं बाहीकोकोसों ।
 जो वहभली नेकहू होती तौमिलि सबनि बताती । वहपापिनी दाहि
 कुलआई देखि जरति भेरिछाती । वैसीको कहकानि मानिये वह ह-
 त्यारिनि नारी । मुरप्रयाम ये गुण कहजानै धोखे कीनी प्यारी ८७
 राग आसावरी ॥ बिनजाने हरियाहि बढाई । वहतौ मिली बचन मधुरे
 कहिसुनतहि दईबडाई । रिझैलियो हरिको टोना करि तुरतहि बि-
 लंबुन लाई । उन लैकर अधरन परधारी अनुपम राग बजाई । मानो
 एकहि संगरहेते सेसेसिले कन्हाई । मुरप्रयाम हमसबनिबिसारीजबहीं
 तेवह आई ८८ ॥ राग बिलावल ॥ सुनसजनी एककथा कहेारी प्रयामकरैसो
 कोऊ न करै । यहसाहिमा कर्ताकी आगात कौनेबिधि जो काहितरै ।
 बनभारनिकी घर बैठारी श्याम अधर शिर छवधरै । हमको घर कु-
 लकानि कोडाई सेसी उलसी रीतिजरै । अधर सुधारस अपना जानति
 दिनहींदिन यहआश भरै । मुरप्रयाम ताको करलीन्हे वहे सुधा सब
 ताहि भरै ८९ ॥ राग आसावरी ॥ यह मुरली बहिगई न न्यारे । निदरे
 हमहि सुधारस अचवति दरति नहींकहुं टारे । देखो भाग जरतते उबरी
 मिलीआनि हरिपास । इनतौ ताहि लूटिसोपाई हमकरिदई निरास ।
 अब यहभई प्रयाम पटरानी श्यामभयो बशवाके । सुनहुसुर येचरित
 करतिहै लखै कौनगति ताके ९० ॥ राग कान्हरो ॥ मुरलीकहै सो श्याम
 करैरी । बाहीके बशभये रहतहैं वाक्रे रङ्ग ढरैरी । घरबन रैन दिन
 संग डोलति करते करत न न्यारी । आईबन बलाय यहहमको कहा
 दीजिये गारी । अबलौंरहे हमारे माई यहि अपना अब कीन्हे । मुर
 प्रयाम नागर वहनारारि दुहुति भलेकर चीन्हे ९१ ॥ राग मोरी ॥ मुरलिया
 हरिको कहाकियो । इनका नहीं और कहुभावे यों अपनायलियो ।
 औरै दशाभई मोहनकी कहा मोहनी लाई । अधर सुधारस देत निर-
 न्तर राखत जीवनवाई । करजोरे अज्ञा प्रतिपालत कहारही दुखहाई ।
 सुनहुसुर सेसीनान्ही को काहे लाइलडाई ९२ ज्योंज्यों मुरली सहत
 दियो । त्यांत्यों निदरि प्रयामको मिलितन बदन प्रियूपियो । राखे

रहत पाणिपल्लव गंहिहेत न काजबियो । पौढति आपु अधर शय्या
 पर सकुचत नहींहियो । जगजान्यो रतिपति शिवजारो सो यहिशब्द
 जियो । मेटीविधि मर्याद सूर यहि जोइ जोइ कहेउ सो कियो ८३
 मुरली सहतदियो इतरानी । निदरि पियति पीयूष अवरको प्रयास
 नहीं यहजानी । करगहि रही ररति नहिं नेकहु दूजो काम न होई ।
 लाजनहीं आवति अति निधरक रहति बदनपर सोई । शिवकोदहेउ
 कामयहि जायो शब्दसुनत अकुलायो । आरजपथ विधिको मर्यादा
 सूर सबनि बिसरायो ८४ जबजब मुरलीके मुखलागत । तबतबकान्ह
 कमल दललोचन नखशिखते रसपागत । पलकहि मांभपलटि सेली
 धत प्रकटत प्रीति अनागत । दसन बसन फरकत नासापुट सुधि अरु
 चितवत त्यागत । बात न कहत रहत ठाढ़ेहैं नहिं आलिङ्गन सांगत ।
 सूरदास स्वामी वंशीवश मुरखे नेक न जागत ८५ ॥ राग रामकली ॥ जबहीं
 मुरली अधर लगावत । अङ्ग अङ्ग रसभरि उमगति है ताते पुनि पुनि
 भावत । औरै दशा होति पलकहिमें अगमप्रीति परकाशत । तब चि-
 तवत काहतन नाहीं जवहि नादमुख भायत । प्रीवनवाय देतहै चुंबन
 सुनि धुनि दशा बिसारत । सूर मुरखि लटकत ताही पर ताही रसहि
 बिचारत ८६ ॥ रागधनाम्नी ॥ मुरलीतऊ गोपालहि भावति । सुनरीसखा
 यदपि नंदलालहि नानाभाँति नचावति । राखति सकपावँ ठाढ़ेकरि
 अति अधिकार जनावति । कोमलतनु अज्ञा करवावति कटिटेढ़ेहैं
 आवति । भृकुटीनयन अधर नासापुट हसपर कोपकरावति । सूरप्राप्तनो
 जानिकोपख धरते शीश डुलावति ८७ ॥ रागरामकली ॥ मुरलीहरिको
 नाच नचावति । सतेपर यहबाँख बंसुरिया नंदनन्दनको भावति । ठाढ़े
 रहत वप्रयसेहैं सकुचत बोलत बात । वह निदरे आज्ञा करवावति
 नेकहु नहिं न लजात । जब जानति आधीन भयेहैं देखतप्रीव नचावत ।
 पौढत अधर चलत करपल्लवरंघ्र चरणा पलटावत । हसपर रिसकरि
 करि अवलोकति नासापुट फरकावत । सूरश्याम जब जब रीभूतहैं
 तब तब शीश डुलावत ८८ ॥ रागमोरी ॥ मुरली मोहे कुंवर कन्होई ।
 छंचवत अधर सुधाबश कीन्है अब हम कहाकरैरी साई । सर्वसहरि
 लै धरौ सबनिको सेसे नाहिंन देत दिखाई । गाजति बाजति बैठिदुई

कर अपने काननि सुनत पराई । जेहि तनु अगिनि दहेउ अपनो कुल
तासों कैसे होत भलाई । अब सुन सूरकवन बिधिकीजै बनकी व्याधि
सांझ घर आई ८६ ॥ राग जेतपी ॥ मुरलीमोहि लियो गोपाल । बशकरि
आप अधर रस अँचवति करि पाये हरिख्याल । सर्वस अधर सुधारस
सबको कोउ देखन नहिं पावति । आपुहि पियति अघात न तामें पुनि
पुनि लोभबद्धावति । दुहु कर बैठि गर्बसों गरजति बादति सुनि तिन
बात । या कुल दाहिनि डरैतेकाते अतिहि निर्दईगात । बरैतेतपकियो
जौनहित सो गँवाइ पछितानी । सूरदास प्रभु व्याधि सांझ घर देखि
देखि अकुलानी १०० ॥ रागजोषी ॥ सखी मुरली भई पटरानी । अधर
सुवासुख परत प्रयासके सो पीवति इतरानी । मोहे पशुपत्नी द्रुमबेली
यसुना उलटि बहानी । सरनर सुनि बगभये नाद के सबै वषय मन
ध्यानी । तिहँभवनमें चलति बड़ाई अस्तुति मुखमुख गानी । सूरश्याम
की अब अर्धङ्गिनि रहीरिभै लपटानी १०१ प्रयासनृपति मुरली भइ
रानी । बनते ल्याय मुहागिनि कीनी और नारि उनको न सुहानी ।
कबहुँ अधर आलिङ्गन कबहुँ बचन सुनत तनु दशा भुलानी । सूरदास
प्रभु बनभीतरते तब अपने घरआनी १०२ ॥ मुरलीके बचन । रंगसूहे ॥ जब
सुनिहो करतूति हमारी । तब मनमन तुमहीं पछितैहो वृथादई कहि
याको गारी । तुमतप कियो सुन्यो मैं सोऊ रिसपावहुगी औरकहारी ।
मोसमान तपतुम नहिंकीन्हे सुनहुकरौ जिनि शोर वृथारी । मैं कह
कहाँ सुनहुगी तुमहूँ जगत बिदित यह बात हमारी । सूरश्याम आपु
नहीं कहिये सुनत कहा मुसक्यात मुरारी १०३ ॥ रागसारंग ॥ मोपर
खालि कहा सतराति । कहा गारीदेति मोको कहा उघटति जाति ।
जो बड़ी तुम आपुहीको तुमहिं हेहु कुलीन । मैं बँसुरियाँ बांसकी तो
भई जो अकुलीन । पीरमेरी कौन जानै छाँडिइक करतार । सूर प्रभु
सँगदेखि काहे खिभति बारम्बार १०४ ॥ रागआसावरी ॥ मैं अपनेबल
रहाति श्यामसँग तुम काहे दुखपावतिरी । मोपर रिस पावतिहो पुनि
पुनिकहुकह बरन करावतिरी । तुमहुँ करौमुख मैं बरजतिहैं सेसेहि
शोर लगावतिरी । कहा करौं मोहिं श्यामनिवाजी कहि नहिं दूरि
करावतिरी । वृथाबैस तुम करती निशिदिन आछो जन्म गँवावति

री । सूर मुनहु ब्रजनारि सयानी मूसख ह्वै समुभावतिरी १०५ ॥ राग
 रामकली ॥ मुनहु यकवात हो ब्रजनारि । रिसकिये पावति कहाहै कहा
 दीन्हैगारि । जाति उघटति पाति उघटति लेतिहैं सबमानि । तुमक-
 हति मेंहुँ कहति सोइमोहिँ बनते आनि । कर्मको यहवहुत नाहीं प्र्याम
 अधरन धारि । सूरप्रभु जो कृपा कीनी कहा रही बिचारि १०६ ॥
 रागसारंग ॥ श्वार्शिनिकितहि बरहनेदेहु । बूझहु धौं यहवात प्र्यामसों
 जितदुख जुरेड सनेहु । जनमतही हमभई बिरतिचित छाँडिग्राम गुण
 रोहु । सकहि पायँ रहति नितटाढी हिमश्रीयमञ्जतु मेहु । तज्यो मूल
 शाखा सुपत्रसब शोच मुखानी देहु । सुरो न तनुमन अग्नि मुलाकत
 बिकट बनायो बेहु । कतहो बकति बाँसुरीजानै करिकारि तामसुतेहु ।
 सूरप्र्यामको तुमाँहि रिभैकरि क्यों न अधर रसलेहु १०७ ॥ रागबिलावल ॥
 रिभैलेहु तुमहुँ किनि प्र्यामहिँ । काहेको बकवाद बढ़ावति सतरहाति
 बिन कामहिँ । मैं अनेक तपको फलु भुगवति तुमहुँ करी फलुलीजै ।
 तब जो कीचबोलिहै कोई ताहि दूरि धरि कीजै । अपना भागु नहीं
 काहसों आप आपने पास । जोकछु कहौ सूरके प्रभुको मोपर हाति
 उदास १०८ मेरे दुखको ओरनहीं । यदञ्जतु शीत उष्ण बरथा मैं ठाढ़े
 पायँरहीं । कसकी नहीं नेकहू काटत घामे राखीडारि । अग्निमुलाक
 देत नहिँ मुरकीबनै बनावति जारि । तुम जानति मोहिँ बाँस बँसुरिया
 अग्नि भाँपदे आई । सूरप्र्याम सेसो तुम लेहु न खिभति कहाहै
 माई १०९ अम करिहौ जब मेरीसी । तब तुम अधर सुधारस बिलसौ
 में ह्वैरैंहैं चेरीसी । बिनाकष्ट यहफल न पायहौ जानतिहौ अब टे-
 रीसी । यदञ्जतु शीततपनि तनु गारेड बाँस बँसुरिया केरीसी । कहा
 मौन ह्वैहूँ जो रहिहौ कहा अवति अवसेरीसी । मुनहुमूर मैं न्यारी ह्वै
 हौं जबदेखौ तुम मेरीसी ११० ॥ राग सारंग ॥ मुरली तो अधरनपर गा-
 जति । कैसेबैठी दुहँ करनि चढ़ि अँगुरी रंघनि राजति । प्र्यामहिँ मिलि
 हम सबनि देखावति नेकहु मन नहिँ लाजति । नादत शब्द मोद सों
 उपजत मधुरे मधुरे बाजति । कबहुँ मौन ह्वैरहति कबहुँ कछु कहति
 रहतिनहिँ हाजति । सूरप्र्याम वाको मुरसाजत वह उबहींते भ्राजति
 १११ ॥ राग मत्त ॥ मुरली तपु कियो तनुगारि । नेकहू नहिँ अङ्ग मुरकी

जब सुलागी जारि । शरद प्रीथम प्रबल पावस खरी इक पग भारि ।
 काहेह नहिं अह सकोरेउ साहसिनि अतिनारि । रिभैलीन्हे श्याम
 सुन्दर देतिहौ कतगारि । सुरप्रभु तपुदरेहैरी गुणानिकीनी प्यारि ११२
 राग सारंग ॥ मुरलिया ऐसे प्रयास रिभाये । नंदनन्दनके गुणानहिं जा-
 नति अतिप्रसते यहिपाये । तुवव्रतको फलुवहै दिखायो चीरकदम्ब
 चढाये । कहेउ कहा सब बैसेहि आवहु युवतिन लाज छिँडाये । तब
 दैचीर अभूयता बोले धनि धनि शब्द सुनाये । सुनहुसुर व्रजनारीभोरी
 इतनेहि हरय बढाये ११३ ॥ राग विलावल ॥ मुरली जो तपु कियो कैसे
 तुमकरिहौ । यद्वत्तु सकपग क्यों रहै अबहीं लरखरिहौ । वहका-
 रत सुरकी नहिं तुमती सबसरिहौ । वहि सुलाक कैसेसहेउ परसतही
 जरिहौ । तुम अनेक वह एक है वासों जिनि लरिहौ । सुरजप्रभु जेहि
 ढरिमिले नहिंजीतौ हरिहौ ११४ मुरलीकी सरिजिन करौ वह तप
 अधिकारिनि । सतेपर तुम बोलिहौ कहा भई बंजारिनि । धीर धरे
 मर्याद है नातरु लघु ह्वैहौ । नेक दशा की आश है ताह ते जेहो
 भगरो भगरोइरहै तेहिकहा बडाई । वह अपना फलुभोगवै तुमदेखौ
 माई । देखौबाके भागको ताको न सराहै । सुरदासभक्तकी कहानीके
 किनिचाहौ ११५ ॥ राग रामकली ॥ मुरलीसों अब प्रीति करौरी । मेरी
 कहीमानि मनराखौ उतरिस दूरिकरौरी । तुमहिं सुनी मुरलीकीबातें
 दीनहोय उतरानी । काहे न ठरै प्रयासतापरको क्यों न होय पटरानी ।
 हमजान्यो यहगर्ब भरीहै साधन यातेओर । रिभैलिये हरिको तप
 केवल तृथाकरौ तुमशोर । सुरश्याम बहुनायक सजनी यहीं मिली
 इकआई । तुमअपने नेमही रहौगी नेम न करतेजाई ११६ ॥ राग कान्हरी ॥
 नेमहिंसों हरिआय रहेंगे । मुरलीसों तुमकहू कहौजनि ऐसेहि तुमहिं
 मिलेंगे । वै अन्तरयासी सब जानत घटघटकी जोरीति । जाकी जैसो
 भाव सखीरी ताहिमिलै तेहिप्रीति । मातपिता कुलकानि लाजतजि
 भजी जनस ते जाहि । काहेको मुरली की डाहनि क्यों तजियैरी ता-
 हि । सोरहसहस एकसवो आगरि नागरि राधाजानि । सुरश्यामको
 भजै निरन्तर जासोहै पहिँचानि ११७ मुरलीकी जनिबात चलावहु ।
 बहबल करति आपने तपको तुमकाहे बिसरावहु । कहारही सकाहि

पग ठाढी कहाकाटि जो डारी । कहा सुलाक सह्यो उतगाढे करसें
 प्रयामसँवारी । निसिय एकभरि कष्टसहेउ जो तुरत अधर मधुलीच ।
 सूरसुनहु जिनिबात कहते बड़ी आहिजो नीच ११८ हमते तपु मुरली
 न करैरी । कहा सुलाक सह्येउ यकपल जो नितप्रति बिरह जरैरी ।
 किरियासी करिकै भइवाढी तुरत अधर तटलागी । हमको दिन दिन
 मदनजरावत वाहीरस अनुरागी । यहैबात कर्महुँते मोटी तातेहम सरि
 नाहीं । सूरप्रयाम की सहिसान्यारी कृपाकरी तामाहीं ११९ तुम अपने
 तपुकी सुधिनाहीं बारते तनुगार कियो । संवत पाँच पाँचकी सब ये
 अजहँलौं भयो प्रकटहियो । वहतुयार वह तर्पनि तपस्या वह पावस
 भक्तभोरनि । वह लरिकई मातपितु कैहित बैसी प्रीतिहि तोरनि ।
 तबहीँते तनु बिरहजरतिहै निशिबासरयो जात । कैसे फलनि फलहि
 जागैगो सुनहुसूर यहबात १२० ॥ राग गैरी ॥ मुरलिया सकैबातकही । भाग
 आपनो अपनेमाथेमानमलहिँसही । हमतेबहुत तपस्यानाहीं बिरह जरी
 वह नाहीं । कहा निसिय करिप्रेम सुलाकी देखौ गुणि जियमाहीं ।
 बात कहति कळु निन्दति नाहीं भाग बडेहै वाके । सूरदास प्रभुचतुर
 शिरोमणि वश्यभये हैं जाके १२१ मुरलीसों कहकाम हमारो । अधर
 धरे शिर परकिन राखो तुम जिनि कबहुँ बिगारो । जाकारण तुम
 जनम भईब्रज ध्यावहु नन्ददुलारो । बीचहु कहुँ औरसों अटके तामें
 कहा तुम्हारो । वह सुसुकनि वह प्रयामसुभाग कबि नयननिते जिनि
 टारो । सूरजप्रभु ब्रजनाथ कहावत ते तुम क्षण न बिसारो १२२ ॥ राग
 बिहागरो ॥ मुरली प्रयाम बजावन लागे । अधर सुधारस दे वह पागी
 आपुन तारस पागे । धन्य धन्य बड़भागरि नागरि धनि हरिके मुख
 लागी । धनि वह वन धनि वह उपवन जहँ धनिधनि बँसुरि सुहागी ।
 धनिवह रन्ध्र धन्य वह अँगुरी वारम्बार चलावत । सूर सुनति ब्रज-
 नारि परस्पर दुहुँ मुख दोऊ पावत १२३ ॥ राग पूर्वी ॥ मुरलिया कैसे
 बाजै रसमानी गरजति धुंकार अमृतबनी । अधिक नाद प्रबाह तारे
 तारे भारेरीभे इतनो रस कहाँते उपजै तौ इतनी नाहीं मुरलिया कैसे
 बानी । सप्त सुरनि गतिजति उपजति अतिबिपरित यावर पवनपानी ।
 सूरप्रयाम गिरिधर बहुनाथक याहीसों रैनदिन रसमानी १२४ ॥ राग

रामकली

॥ मुरलिया बाजत है बहुबान । तीनिग्राम इकीस मूर्कना उन-
चास कोटितान । सबैकला बिस्फन्न सुधरअति या समसरिको आन ।
अतिमुकराठ गावति मनभावति रीके प्रयाम सुजान । ऐसी सों नहिं बैरु
कीजिये दूरिकरौ रिसजान । सूरप्रयामके अधरनि राजति सबहीं अङ्ग
निधान १२५ मुरलिया प्रयामअधरपर बैसी । सुनहु सुखी यहहै तेहि
लायक अतिहि भली नहिं नैसी । कैसे नंदनन्दन करधारत जोपै हेती
गैसी । तुमहीं वृथा कहति जोईसोइ जैसीकी तैसी । सुनहु कहा कहि
कहि मुखगावति हृदय प्रयामके पैसी । सूरदास प्रभुकर्यो न मिलै ढरि
तिहंभुवन जैजैसी १२६ ॥ राग बिलावल ॥ आपु भलाई सबै भलीरी । जो
वह भलीयुगानि करिपूरी तौ ढरिप्रयाम मिलैरी । इकयुवती अरुम-
धुरेगावति बाणी ललित कहैरी । जबजब प्रयाम अधरपर राखत तब
तब सुधा बहैरी । सते पर हमसों सन्मुख हैं तुम काहे रिसपावति ।
सूरदासप्रभु कमलनयन को सतेपर वह भावति १२७ ॥ राग रामकली ॥
मुरलीप्रयाम बजावन दैरी । अवगानि सुधा पिबावति काहे यहिजनि
तु बरजैरी । सुनतिनहीं वह कहति कहा है राधा राधा नाम । तू जा-
नतिहरिभूलिगये स्वहिं तूसे पतिवाम । बाहीके मुखनाम धरावत
हमहिं मिलावत ताहि । सूरप्रयाम हमको नहिं बिसरो तुम डरपति
हौकाहि १२८ ॥ राग जेतप्री ॥ जब जब मुरली कान्हवजावत । तबतब
राधा नाम उचारत बारम्बार रिझावत । तुम रवनी बै रवन तुम्हारे
वैसेहि मोहजनावति । मुरलीभई सौति जो माई तेरीटहल करावति ।
वहदासी तुम हरिअर्द्धगिनि यह मेरेमन आवत । सूरप्रकट ताही सों
कहिकहि तुमको प्रयामबोलावत १२९ ॥ राग वैमन ॥ यह मुरली ऐसी
है माई । हमयासों रिस वृथाकरतिही तब यहकदरि न पाई । बाणी
ललित सुनतअवगानिहित चितमेरे अतिभाई । गाजति बाजति प्रयाम
अधरपर लागत तानसोहाई । मैं जानीहै निदुरकाठकी नरमबाँसकी
जाई । सूरदास ब्रजनारि परस्पर ताकी करति बढाई १३० ॥ राग
कान्हरो ॥ अब मुरली कछु नीकेबाजति । ज्यों ज्यों अधरनि करपर
बैठति त्यों त्यों अति अतिराजति । अबलों जानी बाँस बँसुरिया याते
और न बंश । कैसे भजिरजि चली सबनि को राधा करति प्रयाग ।

यहकुलीन अकुलीन नहींरी धनि याके पितृमात । सुनहुसूर नाते की
 भैनी कहतिवात हरयात १३१ ॥ राग जेतथी ॥ मुरलिया माको लागति
 प्यारी । मिली अचानक आय कहंते ऐसीरही कहारी । धनियाके
 मातापितृ धनियह धनियह मृदुमृदु बोलनि । धन्यप्रयास गुणगुण
 कैल्याये नागर चतुर अमोलनि । यहनिर्मोल मोलनाहिं याको भली
 न याते कोई । सूरदास याके पतरको तौ दीजै जो होइ १३२ ॥ राग
 मलार ॥ बंशीकर प्रयासके अधर बिरसी । लेतिसर्वस युवाति जनको
 बदन बिधुते असी । प्रियतिन्यारे गरबडारे करतनाहिं तमी । बोलि
 शब्द सुसप्त मुरमिलि नागर मुरगदसी । महाकठिनके बैरमें सुनिबाँस
 बंश जमी । सुर श्रीमुख परसि परसां नेकुनाहिं नसी १३३ जादिनते
 मुरलीकर लौन्ही । तादिनते अवरानिमुख सुनि२ मनकीबात सबै लै
 दीन्ही । लोकवेद कुललाज काजको तजिमर्याद प्रीतिमिति कीन्ही ।
 तबहींते सब सुधिविसराई निशिदिन रहति गोपाल अधीनी । शरद
 सुधानिधि अंशको सींचत असी प्रेमरस भीनी । ताऊपरशुभ दरशसूर
 प्रभुश्रीगोपाल दरशन रहकीनी १३४ देखहुरी इनमदन मुरलिकाने
 सुकसी सबजग मोहेउ । जेतजीव जन्तु जलथल के नाद स्वादरस पो-
 हेउ । जेतीरथ तपकिये तरुशि तट प्रसाकै पीठि न दीन्ही । तातीरथ
 के तपको फललै प्रयास सुहागिनि कीन्ही । सुदिन सुधरी शील कुल
 छाँड्यो अरु रचितके अनुराग । सुन्दरप्रयास सुधारस सींचत मेदत प-
 हिलेदाग । धरिगधरी गोबर्धन राख्यो कामल पाणि आधार । हरि
 अबलटक रहत ठाढ़ेहैं तनक मुरलिके भार । निदरि हमें अधराधर
 पीवति पढी दूतिका माई । सूरप्रयास कुञ्जनि ते प्रगटी चपरिसो ह्वै
 आई १३५ ॥ राग धनाथी ॥ बाजीहो रुन्दावन रानी । धनिवै बंश दुख
 भंजनि गिरिधर करधर मोहन मानी । तरल रसाल अधर छबिकरलै
 मुरली सकल कहानी । कुञ्जखोह कहूँ करत तपीतप तिनतन तपति
 सिरानी । अम्बर घेरि घटांघनआये रही धारधरि पानी । बभ्रुतबाल
 गोपाल सखाको कृतिम कहांते आनी । मुखजनगज श्रीसुन्दर हरि
 मुख सूरसबै जगजानी १३६ ॥ राग सारंग ॥ मुरलीकोन मुक्त फलपाये ।
 अधरमुधा पीवति मोहनको सबै कलंक गंवाये । तन न टौर मनगाँदि

प्रकरही छिद्रविशाल बनाये । अन्तर शुन्य सदा देखियतिहै हैं कुल
 बंध सुभाये । लघुता अङ्ग कलुनहिँ गरुड निरखत नहीं निकारै । सुर
 दास प्रभु पाणि परसि नित कामचली अधिकारै १३७ जबते मुरली
 अवतापरी । तबहीते मन औरभयो सखितन सुधि सब बिसरी । हैं
 अपने अभिमान रूपशुभा योवन गर्भभरी । नेक न कहैउ करैउ दूतीको
 वादहि आयदरी । बिन देखे यह प्रयास मनोहर युगभरि जातघरी ।
 सुरदासयह आरज पयते कलुवन चाडसरी १३८ ॥ राग कल्याण ॥ तब
 लागि सबै सथान रहै । जबललि नवकिशोर मुरली नहिँ बदन समीर
 बहै । तबहीं ली अभिमान चतुरई पतिव्रत फलहि चहै । जबललिप्र-
 वरा रन्ध्र मारगामलि नाहिँन मनहिँ सहे । तबललि तरलतख चञ्च-
 लता बुधबल सकल अहै । सुरसखी जबते यह धुनिधुनि नाहिँन ब-
 चन कहै १३९ ॥ राग सारंग ॥ सुनहुरी मुरली अवर बजाई । मोहै सुर
 नर नाग निरन्तर ब्रजवनिता माल धाई । यमुनानीर प्रवाह यकित
 भयो पवन रहेउ सुरभाय । खग मृग मीन अवीनभये सब अपनीगति
 बिसराय । द्रुमबेली अनुराग पुलकतन शशि यकि निशि न घटाई ।
 सुरश्याम वृन्दावन बिहरत चलहुसखी सुधिपाई १४० ॥ राग नव ॥ हम
 न भई बडभागिनि बँधुरी । कर अम्बुज में बाससदाई जाके ससाक्षरा
 पिबत अधर मधुरसुरी । मुरलीमनोहर नामकहावत तीनलोकबिदित
 जग यशुरी । सुरदास प्रभु अधिक नितुर भये मुरली को दयोहसारी
 सर्वधुरी १४१ ॥ रागसारंग ॥ सखीरी मुरलीलीजैचोरि । जिनगोपालसब
 अपनेमनसे प्रीति सबनिसों तोरि । एकहु पल नाहीं निशिदिनमें क-
 बहूँधरत न छोरि । कबहूँकर कबहूँ अवरनपर कबहूँ उरकटि ओरि ।
 जानतिहैं कलुमेलि मोहनी राखे सबझंग मोरि । सुरश्याम को मन
 सुनि सजनी बांध्योनाद किडोरि १४२ ॥ रागमौरी ॥ मुरलीकुंजनि कुंजनि
 बाजति । सुनरी सखी अवगादे अब तू ज्यहिबिधि हरिसुख राजति ।
 करपल्लव जब धरत सबैलै सप्तधुरनि कलसाजति । सुरदासयह सीति
 शाल भइ सबहिनके सरिगाजति १४३ मुरलीबिधिहुते प्रबल प्रवीन ।
 कहिये कहा आहिको ऐसी कियो जात आधीन । चतुरबदन उपदेश
 विधाता याकेथिरुचर नीति । आठ बदन गरजत गरबीली क्यों चली

यहिरीति । एकबेर श्रीपतिसिखये जौन लियो गुणाज्ञान । इनकेतो नंदलाल लाडिलो लग्यो रहत नितकान । अधरनि साथ पियति ब्रजकुलते नहिंन प्रयास तनत्याग । तदपि मूर यह नन्दसुवनसों याहीको अनुराग १४४ ॥ राग सोरठ ॥ मुरलीभई आजुते अनूप । अधरबिम्ब बजाय कर धरिसोहे विभुवनभूप । देखि गोपीगवाल गैयन देखियह बनकूप । देखि मुनिजन नाग चंचल देखिसुन्दररूप । देखि धरत अकाश मुरतर देखि शीतल धूप । देखिसूर अगाध सहिमा भये दादुर कूप १४५ ॥

राग बिलावल ॥ अधर मधुर कहत हमराखी । संचितकिये रही सबराधे-सकी न सकुचति चाखी । सहि सहि शीतजाय यमुनाजल दीनबचन बहुते दिन भाखी । तब अति क्षीरा नहिंन हरिमुख सखि मनहींमन अभिलाखी । अब यह अमृत पियतसखि मुरली सर्वाहनके शिरनाखी । लयो छिंझायनिदरि मुनिमूरज धनु धुरिदै आंखी १४६ ॥ रागकेदारी ॥ मुरली सर्वाहन को मनहरेउ । प्रथमहीं ब्रजनारियनके आनि गिरिधर बरेउ । तब न रहेउ गयो हमपै शब्द अवसानि परेउ । पति पुत्र पिता बिसारि अम्बर चलीं ग्रह तजिभरेउ । सिद्धचारणा गुणी गंधर्व सुनत सब बिसरेउ । सगनमुनि मारुत न डोलत सिधिल शशि न ररेउ । स-टाकि सर्प दुरात धुनि छुनि कछु जु बंशी करेउ । तगा तोरि कुंजन पुंज मुरभी सदनदेन चरेउ । चपल चितदैरहेउ कोकिल कीरनेकु न मुरेउ । ध्यान सों धरि रहे द्रुमसब नाद उरमें अरेउ । मृग मोर मधुप चकोर सरिता एक मती करेउ । बेध अपना छांड़िबानी योग जप व्रतधरेउ । थके थिरचर मुनअसुर नर लिये गृहन भरेउ । सूर मुरली अधरधारी प्रभु कामनाके खरेउ १४७ ॥ राग नट ॥ मुनिके कंज काननि बैन । ब्रज बानिता बिसारि जो अंबर चलीं गृह तजि चैन । शब्द यहि बिधि भयो मोहन सूक्ति औरपरैन । सूरप्रयास जो रसिक नागर सुभट मुर उरदै न १४८ ॥ राग रामकली ॥ मुरली दिन दिन भली भई । वनकी रहन नहीं अब यामें मधुही पागिगई । अमृत समान कहतिहै बाणी नीके जानिलई । जैसी संगति बुधि तैसी ये ह्वै गइ सुधा मई । जब अई तब औरै लागी सो नितुरई हई । सूरप्रयास अधरनि के परशे शोभां भई नई १४९ ॥ राग गौडमत्तार ॥ भली अनभली करतूति संगतिहुते बांस बन भारकी भई

मुरली । कहा तब लहतही नितुर आई जबहिं बचन अमृत कहति सु-
रनि मुरली । सुधा अधरनि संभ भई आपुहि सुधा कहा अब प्रीतिमें
गंवायो । सूर प्रभु मिले अरु हम मिलीं धायके इतेपर धन्य चहुंयुग
कहायो १५० धन्य मुरली धन्यतप तुम्हारो । धन्यमाता धन्यभ्राता
धन्य धन्य पिता धन्य तुव भक्ति सारो । धन्य वहबांस धनिधन्य जहँ
तू रही धन्य बनभार तोते बढाई । धन्य तप कियो घटञ्जतु रही सक-
पग डुली नहीं धन्य मनकी दुढाई । कटतह मुरी नहीं रंधह जरीनहीं
नेमते तरीनहीं तेही जानै । तैसेही मिले प्रभु सूर तो को तुरत सींचि
अमृत अधरनेइसानै १५१ ॥ रागहमीर ॥ आजुबजाई हो मुरली मनोहर
सुधि न रही कछु सों तनमनमें । मैं यमुना तट सहज जातिकान्ह टाढे
हो वृन्दावन में । नाना रागिनी गावत धरै अमृत अधरनि में । सूर नि-
रखिहरिचंग विभंगी वा छवि में गई मरि में १५२ ॥ रागपूर्वी ॥ मुरली
घाजे राजेहो मुख मोहनके सुनिरीभिरही रलताननि । अतिदूरि रही
रस धुनि संग आईरी भई मगनवै काननि । तबते और कछु नहिं
भावत वहछवि बाननि । सूरदास प्रभु नवल छबीले हरत नवल ना-
रिनकेजाननि १५३ ॥ रागकाफी ॥ साय मोहनाकी मुरलीमें मोहनी बसतु
है । जबतेसुनी अवरण रहेउ न पर भवनदेहते मनहु प्राण अब निकसतु
है । कहा करौं मेरी आली बांसुरीकी धुनि शाली सात पिता पति
बंधु अतिहीतरसतुहै । मदन अगिनि अरु बिरहकी ज्वाला जरिजैसे ज-
लहान मोन तरहि दरशतुहै । अतिहि तपति छाती लागति है प्रेसकी
कांती फूलनिकी मालामनो व्यालह्वै डसतु है । सूरश्याम मिलन को
आतुर ब्रजकी बाम सकसकपल युगसम ज्यों बिततुहै १५४ मोहन मन
मोहिलियो ललित बेगाबजाईरी । मुरलीधुनि अवरण सुनत बिबशभई
साईरी । लोकलाज कुलकी मर्यादा बिसराईरी । घरघरउपहाससुनत
नेकहु न लजाईरी । और जपतपवेद पुराण कछुबैनसुहाईरी । सूरदास
प्रभुकीलीलानिगम नेतिगाईरी १५५ सुनिआधीसी रातिमोहन मुरली
बजावै । नींदउबसिगाई मनमुरभानि प्राणानि और न भावै । मनहरिलियो
देहगतिभूली गृह आँगन न सुहावै । सूरदास प्रभुमुरली ताननि देहदशा
बिसरावै १५६ ॥ इतिरागकल्पद्रुमान्तर्गतमुरलीलीलासमाप्त ॥

अथ सूरसागर रागकल्पद्रुम ॥

रासलीला का प्रसंग ॥

राग केदारो ॥ आजु बन देगा बजावत प्रयास । यह कहिकहि चकत भई शोपी सुनत सधुरसुर काम । कोउ जेवनार करति कोउबैठी कोउ टाढ़ीहै धाम । कोउजैवति कोउपतिहि जैवावति कोउशृङ्गार में बाम । मानो चित्रही लिखिकाढी सुनत परस्पर नाम । सूरसुनत सुरली भई बौरी मदन कियो तनतास १ जव हरिमुखली अधरधरी । प्रयासल तन में रची रूपनिधि गिरिवर धरनवरी । उघटततान बँवान सप्तसुर सुनि रस उमगिभरी । आकट्यों चितवित युवतिनको गति बिपरीतकरी । प्रियमुख सुधाबिशाल सुरत संगोत समुद्रतरी । सुरदासबैलोक्य बिजय रतिपति सतिदर्पहरी २ सुरली अधरसजी बलवीर । नादसुनि बनिता विमोहीं बीसरे उरचीर । खगनैन मंदि समाधिरहे नयननि मिले तप धीर । डुलतनहिँ प्रु मपव बेली थकित सन्बसमीर । मृगधेनु हरातजि रहे मुख बढरा न पीवत क्षीर । सुरमोहन राग सुनिमुनि थकित य-मुना नीर ३ ॥ राग बिहागरो ॥ बंशीरी बन कान्ह बजावत । आनिमुनहु अवरानि सधुरे सुर नाद मथलै नाम बुलावत । सुरअति तान बँवान सपित अतिअतित अनागत लयावत । जुरियुग भुजाशिर शैलशेखमथि बदन पर्याधि अमृत उपजावत । मनमोहनी बेयवारिकै मनमोहतमनो मधुपान करावत । खग मृग सीन बगभये नादरस मगनहुते सदनहिँ जग जयावत । और कहाँ लागि कहाँ सुर थिरचर मोहे कोइ पार न पावत । मानहुमूक मिठाईको गुणाकहि न सकत मुखशीश डुलावत ४ राग सारंग ॥ सुरलीसुनि अवरगा सुनत भवन रहेउ न परई । ऐसीको चतुर नारि धीरजो मन धरई । सुर नर सुनि सुनत सुधि न शिवसमाधि तर-ई । अपनी गति तजत पवन सरिता नहिँ ढरई । मोहनमुख सुरलीमन भोतन बश करई । सुरदास सप्तसुरन सुधासार भरई ५ ॥ राग केदारो ॥ सुरली मोहन अधरधरी । आरजपथ बिसरी आतुरहैबनहुँ कि सुधि न करी । पदरिपु पहँ अरक्यो न संहारति उलटि न पलटि खरी । कबहुँक शिवशत बाँहन रबिकि मिल्यो मनहुँ कि बुद्धि हरी । दुरि

गये कीरकपोत मधुपिपक शारंग मुधि न करी । उडपति बिद्रुमबिंब
लज्जानो दामिनि अधिक डरी । मिलिहैं प्र्यामहिं हंस सुतातट आ-
नंद उमगिभरी । मूरण्यामको मिलीपरस्पर प्रेमप्रवाह परी ६ मुरली
अति गर्व काहुबदति नाहिं न आजु । हरिको मुख कमल देखिपाये
सुखराजु । बैठति कर पीठ ढीठ अधर छत्र छाँह । राजत अति चँवर
चिह्नर सदर सभासाँह । यमुनाके जलहि नाहिं जलधिजान न देति ।
स्थावर चर जङ्गम जड कहत ज्योति ज्योति । बिधि की बिधि मेति
करति अपनी नइरीति । श्रीपतिहू श्री बिसारि येही अनुराग । बंशी
ब्रजसकल सुरनरमुनिनाग ७ ॥ राग बिहागरे ॥ बंशी बनराज आजु आई
रगजीते । मेढति है अपनेबल सबहिनकी रीते । बिडरे राजयुथ शैल
सैन तुरत भाजी । धूधुत पट कवँच टूटि छूटे सब ताजी । काहुपति गेह
तजे काहु तनप्रान । काहुसुख शरणा लये सुनत सुयश गान । कोऊ
पद परसिगये अपने मन देश । कोऊरस रङ्गभरेते भये नरेश । देतिस-
बनि मारुत मिलि दशहुँ दिशि दुहाई । मूरज गोपाललाल बंशीब्रज
साई ८ ॥ राग जैतथी ॥ सुनियेहे धरिध्यान सुधारस मुरलीबाजै । प्र्याम
अधरपर बैठिबिराजत सप्तसुरनि साजै । बिसरी सुबिबुधि रातिसबहिन
की सुनिबेगु मधुर कलगान । मनगतिपंगुभई ब्रजजुवती गन्धर्व मोहे
गान । खगमृग यके फलनि तरा तजिकै बछरा न पीवत क्षीर । सिद्ध
समाधि थकयो चतुरानन लोचन बहै सबनीर । महादेव की तारी छूटी
अतिहूँ रहे अचेत । ध्यानदरेउ धुनिहों मनलारयो मुर सुनिभये अचेत ।
यमुना उलटि बही अतिव्याकुल मीनभये बलहीन । पशुपत्नी सबथ-
कित भयेहैं रहे इकटक लौलीन । इन्द्रादिक सनकादिक नारद शारद
सुनि आवेश । घोषतरुगि आतुरहूँ धाई तजि पति पुत्र अदेश । श्री
वृन्दावन कुंजकुंज प्रति अतिविशाल आनंद । अनुरागी पियधारी
के संगरस सब रचे सानंद । तिहूँभुवन भरिनाद प्रकाश्यो गगन धरिगा
पाताल । थकित भये तारागण सुनिकै चंदभयो बेहाल । नटवर भेय
धरे नंदनंदन निरखि ब्रजभयो काम । उरबनमाल चरगा पंकज लों
नीलजलद तनप्र्याम । जटित जराव मकर कुंडल छबि पीतबसन सो
भाय । वृन्दावत रसरास साधरी निरखि मूर बलिजाय ९ ॥ रागकाफ़ी ॥

बझाई बांसुरी ब्रजराज मोहे ब्रजराज । सुनिअबया भवननहिं रहिसकीं
 नहिसुहातगृहकाज । सातुपिता पति बंधुकी तजीइन नयननिलाज । हरे
 भरेद्रुम भरेभये तुन्दावन बिपरीत । ललितलता सबनमित भयेहैं सुनि
 सुनि धुनि सुअतीत । गैयागोप गोठगृह अटके हंससुता भइथीर । गन
 गध्रबसब थाकितभयेहैं चलत न बिबिधि समीर । सुनि सुनि सकलव्रज
 बधूधाई बिकल बावरीबेश । रहि न सम्हारहार उरअज्बल छुटेकंचुकी
 केश । शिवाविरंचि शिशिशेष शारदा मधवा मगनभये । रबिरथरीकि
 रहे सुरपुर में बाजी बाग जोगये । सुर नर सुनि स्थावर जंगम सबहि
 मनभये पङ्क । तजि धनधाम बासगृह अटकी सुरश्याम के सङ्ग १० ॥
 रागरायसामूहो ॥ मेरे साँवरे जब सुरली अधरधरी । सुनि धुनि सिद्धि स-
 माधि तरी । सुनिथके देव बिमान । सुरबन्धु चित्र समान । गृह नखत
 तजत न रासि । बाहन बंधे धुनि फांसि । सुनि आनंद उमगिभरे । चल
 थकिरमे अचल चरे । चल अचलगति बिपरीत । सुनि बेगु कल्पित
 गीत । अरना भरे पावान । गन्धर्व मोहेगान । सुबिचंचल पवनथक्यो ।
 सरिता जलचलि न सक्यो । सुनि थकित भयो समीर । उलट्यो जु य-
 मुजानीर । धुनिधुनि चलीं ब्रजनारि । सुतदेह गेह बिसारि । सुनिखग
 मृग मौन धरी । फलताराहुँ कि सुधि न करी । मृगधेनु चकतरहे । तारा
 दन्तहनि गहे । बकरा न पीवें क्षीर । पक्षी मनों सुनिधीर । द्रुम बेलि
 चपलभई । नवपल्लव पलटि नई । जेबिटप चंचलपात । ते निकट-को
 अकुलात । अंकुरित पुलाकित गात । अनुराग नयन चुचात । मनमोहेउ
 मदनगोपाल । तनश्याम नैन विशाल । नवनील घन तनश्याम । नवपीत
 पट अभिराम । नवमुकुट नव नव दाम । लावण्य कोटिक काम । मन
 मोहन रूपधरेउ । तब कामको गर्बहरेउ । श्री मदन मोहनलाल । नव
 नागरी सँग बाल । नवकुंज यमुना कूल । देखत सूरदास हियफूल ११
 राग बिहागरो रायसा ॥ तोपर वारीहैं नंदलाल शरद चांदनी रजनी सोहैं
 तुन्दावन श्री कुंज । प्रफुलित सुमन बिबिधिरङ्ग जहँ जहँ कूजत को-
 किल पुंज । यमुनापुलिन श्याम घन सुन्दर अद्भुत रास उपायो । सप्त
 सुरनि बन्धान सहितहरि सुरलीटेरि मुनायो । थक्यो पवनसुर थकित
 भये सुनि धरिया उमगि घर कांप्यो । खगमृग मौन जीवजल थलके

सबतन हरति बिसारी । सूखे द्रुम पल्लव फललागे बनबन शाखाडारी ।
 सुनि ब्रजबधू तडयो आरजपथ सुतपति नेह न कीनो । प्रगल्भो अङ्ग
 अनङ्ग विकलभइ तनमन हरिसब लीनो । यकजैवनार करतही छांडी
 यक जैवत पति त्याग्यो । यकबालक पै पियत सुवावति प्रेमबिबश
 तनुजारयो । जो जैसे तैसे उठिधाई तनमन हरति बिसारी । सुरलि नाद
 करि टेरिलई हरि ब्रजनवतरुणा कुमारी । आंजत नयन अधर दुहुँके
 बिच शारंगसुत नहिंलाग्यो । मानहुँ अलिबैठे बन्धुकपर पियत सुमन
 रसपाग्यो । कटिकंबुकी उरज लहंगाकसि चरगान हार सँवारेउ । उ-
 लटे भूयरा अङ्गनिसाजे फेरि न काहुनिहास्यो । चलीं सबै जिय आधी
 रतियां जहँनव कुंजबिहारी । आनिहजूरभई काननमें जहांश्याम सुख
 कारी । देखिसबै ब्रजनारि श्यामघन चितये बुद्धिसँवारी । क्यों आई
 टुन्दावन भीतर तुमसब पियकी प्यारी । तुम कुलबधू भवनहीं नीकी
 रैन कहा सबआई । अपने अपने घरपति तसों कैसे निकसनिपाई ।
 बेगुशब्द अबगानमग हँउर पैठि हमहिं लैआयो । आशतुम्हारी जानि
 चपल चित चंचल तुरत चलायो । अपनो पुरुष छांडि जो कामनि
 अन्यपुरुष मनलावै । अपयश होय जगत जीवनभरि बहुरि अधमराति
 पावै । अजहुँ जाहुसब घोयतरुणा फिरि तुमती भली न कीनी । रैन
 बिपिन नहिबासकीजिये अबलनिको नहिंलीनी । घरकैसे फिरिजाहिं
 श्यामजू तनयइई सबर्यारों । तुमतेकहौ कौनयहाँ प्रीतम जासँग मिलि
 अनुरागों । हमअनाथ ब्रजनाथ नाथतुम चरगा शरणा तकिआई । नि-
 तुर बचन जिनिकहौ पीयतुम जानत पीरपराई । दीनबचन सुनिअवरा
 कृपानिधि लोचनजल बरयाये । धन्य धन्य कहि कहि नंदनन्दन ह-
 रित कंठ लगाये । हम कीनो अपमान तुम्हारी तुम नहिं जिय कहु
 आन्यो । सरिता जैसे सिन्धुभजै ढरितैसे तुममोहिं जान्यो । द्वादशकोश
 रासपरमित भइ ताको कहां बखानो । बोलिलई ब्रजबधू बिहंसि सब
 तुम मगडल बिधुमानो । पाशा पाशा सों जोरि युवति दुहुँ दुहुँ बिच
 श्यामबिराजै । कञ्चनखम्भ खचित मरकतसरिा यहउपमा कहुछाजौ
 अंगप्रति कोटिकाम छबिलजित मधिनायक गिरिधारी । निरंतरत
 रसब्रश भये दोऊ राधा मोहन प्यारी । ब्रजवनिता मगडली बनी यों

शोभा अधिक बिराजै । नूपुरकटि किंकिनी चालितगति अरश परश
 पर बाजै । मोरचन्द्रिका शिरपर सोहै जब हरि रुखाभूषा नाच्यो ।
 अङ्ग अङ्ग प्रति और और गति कोटिमदन छवि राच्यो । यहुनाजल
 उलटी बहिधारा चन्द्रारथ न चलावै । बानिक अतिहि बनेसनमोहन
 मन्मथ पकरि नचावै । नित्तर करत रीभक्त मनमोहन राधा कंठलगाई ।
 रासविलास करत सुखउपज्यो सबवश कियेकन्हाइ । अन्तर्धानकरत
 दुखबाढ्यो राधावर सुखकारी । सरदासप्रभु भक्त ब्रज्यता प्रकट करी
 गिरिधारी १२ ॥ रागभारठ ॥ शरद निशाकी रैन सुहाईहो । वृन्दावन
 घनमें यदुपति राईहो । सप्तसुरनि विधिसों सुरलि बजाईहो । सुनिधुनि
 नारिचलीं ब्रजतजि आईहो ॥ छन्द ॥ धुनि सुनत दयाकुल भई युवती
 मदनतन आतुरकरी । बिबशभई तनमन भुलातीं भवन कारज परिहरी ।
 उलटे अभूषण सब बनाये अङ्गकी सुधि बीसरी । नन्दसुत चित बित
 चुरायो आयभई सबहाजिरी ॥ छन्द ॥ हाजिर आयगई जहाँ बनवारी
 हो । निशिकहां धायचलीं ब्रजघोष कुमारीहो । बचन सुनायेहो मो-
 हन नागरकी । पतिगृह त्यागी क्यों गुरुजन वा नरकी ॥ छन्द ॥ गृह
 पूतपति क्यों त्यागिआई नाहिने जुभलीकरी । पापपुण्य न शोचकीनो
 कहाजिय तुमयहधरी । अजहुँ घर फिरिजाहु कामिनि करहु सो जो
 इसकहेउ । लोकवेदानि विदितगायो पर पुस्यनहिँ धनिलहेउ । नितुर
 बचन सुनिकै खारिनि नितुरभई । अतिसुरभाय रही सुधिबुधि सबै
 गई । बिनय बचन कहिकै खालिनि सुनाईहो । तुव चरखानि मनदै
 सब बिसराईहो ॥ छन्द ॥ तुव दरशकी आशापिय ब्रतनेम दृढ यह है
 धरेउ । कौन सुतको मातृकोपति कौनत्रियको कितकरेउ । कहाँ पठ-
 वत जाहिं काके कहा कहँ मनमानिहै । यहांबरु हम प्राणत्यागी आई
 जहँ सोइ जानिहै ॥ छन्द ॥ हरिहँस बोलेधनि ब्रजनारी । मैं बहुतकसी
 तुम ब्रतधारी । सुखकहु बहुत कही अन्तर तुमहिरही । जब जहां देह
 धरी तबतहां तुमसङ्गही ॥ छन्द ॥ कहा किसिकोउ तुमहिं देखै कनक
 बारह बानिहो । मेरे तौ तुमहीं प्राणजानहुँ और मननहिँ आनिहो ।
 तबहिँ हिलिमिलि रासकीनो युवति बहु मंडलिजुरी । कनक सरकत
 पचिरची बिचकान्ह बिच बिच नामरी । अद्भुत रास रचेउ गिरिधर

लाङ्गिले । श्रीवृषभान सुतासों हरि चाङ्गिले । अति आनन्द बढेउ गोपी
हरष भई । निरुतरीभेहे भुजभरि प्रयामतई । जलथल पवन थक्यो ।
खग मृग तरु बिथक्यो । देखत मदन जक्यो । चरगानि शरगातक्यो ।
जीवसब तिहुँभुवन मोहे असर नभ बिथकित भये । चन्द्रमा रथ सध्य
थाक्यो रासवश मोहन भये । और तरुफल और लागे और मयपल्लव
कली । श्रीश्याम श्यामा रासनायक गोपिकागण मगडली । रासरङ्ग
रसअति बढेउ मनगर्बित सुकुमारि । लेहु कन्ध प्रभु सों कहेउ अन्तर
भये दैत्यारि । अन्तरभये दैत्यारी । श्रीराधा संगते डारी । प्रभुसन्तन
के सुखकारी । दुष्टनमन गर्व प्रहारी । भक्तवत्सल बपुधारी । वरणा
उधारन कारी । चहुँदिशि चितवत चकृतह्वै सङ्ग प्रयाम कहुँ नाहिं ।
आपु अकेली देखिके मुरछिपरी वरमाहिं । वरमुरछि परतनहिंजानी ।
दुखसागर सांभ ससानी । हाक्या कया रतलागी । हरि अधर पान
अनुरागी । ललिता गहिबांह जगाई । तबचौंकि उठी अकुलाई । उह
कहत उठी हरिआये । ज्यों मनोरंक निधिपाये । सावधान तेहिसरा
भई नयना दयेउधारि । ललिताके मुखदेखिके भई बिरहतनभारि ।
अति बिकल भई बेहाला । कहुँ देखेहैं मदन गोपाला । मोहिं त्यागि
गये नंदलाला । तन करत मदन जंजाला । मुख सुंदर बचन रसाला ।
वर लोचन कमल विशाला । मिलि करहु न मोहिं निहाला । हुंइति
वन बीथिन ताला । चित और भयेहैं कपाला । त देखेहैं दीनदयाला ।
जहां तहां खोजत फिरी चरगा चिह्न कहुँ पाई । बारबार अवलोकिके
नयन चले दहराई । बनबेली बूझत जाई । कहुँ नाहिंन मिले क-
न्हाई । चम्पक बकुलबट बूझे । तन बिरह बिद्या हितगूझे । खोजे
वनवनवारम्बारा । कहिकहिमुख नन्दकुमारा । मोहिंनंदनन्दन क्यों
त्यागी । मैं अतिही परमअभगी । नंदनन्दन वशप्रेमके प्रकटभये तेहि
काल । प्यारीकोमिलि मुखदियो मेठिबिरहदुखजाल । मिलिसनमो-
हन वजवाला । फिर आपुहिभये कपाला । पुनि रासमगडल बिधिठा-
यो । सबकासद्वंदुखकाट्यो । सुरअसुर नारिनरमोहे । यहिरस रास
बिलास सबपोहे । दिविदुन्दुभि देव बजाई । सुरनारि सुमनबरयाई ।
जैधुनि लोकनिगाये । यशतिहं भुवनभरिकाये । रसरसरसिक सुरा

भारी । श्रीराधाभोहनप्यारी । सहसानन कहत नआवै । जेहि निगस
नेति नितगावै । मुख आनंद पुञ्ज बढ़ायो । क्योंजात मुरपैगायो १३ ॥

यहां ते ठाकुर ठकुराइन को बिवाह ॥

रग मूढो ॥ व्रतधरि देवी पूजी । जाकेमन अभिलाष न दूजी । दीजे

नंदपूत पतिमेरे । जोपै होय अनुग्रह तेरे । तब करिअनुग्रह बरुदियो ।
जब बरय भरिलो तपुकीयो । बैलोकसुन्दरपुरुष भूषण रूपगुण ना-
हिनवियो । इतउबटिखौरिशिङ्गारि सखियनि फिरिकुंवरि चोरीअ-
नो । जाहितकिये व्रतनेम संयम सोधरी बिधना ठनी । मुकुट रचिसौर
बनायो । माथेधरि हरिबरु आयो । तन श्यामल पीत दुकूले । देखत
दामिनि घनभूले । दामिनी घन कोटिवारों जब निहारों मुखकबी ।
कुराडल बिराजत गरुडमराडल नहीं शोभा शशिरबी । और कौन स-
मान विभुवन सकलगुण जासाहि । मनुमेर नित्तत संग डोलत मुकुट
की परछाहि । गोपी सबन्योते आई । मुरलीधुनि पटै बुलाई । बिधि
आनंदमङ्गलगाये । नवफूलन मराडपछाये । छायेजुफूलन कुञ्जमराडल
पुलिनमें बेदीरची । बैठेजु श्यामा श्यामबर बैलोक की शोभाखची ।
उत कोकिला गराकरै कुलाहल इत सकल व्रजनारि । आईजु न्योते
दुहंदिशते देति आनंद गारि । रासमराडल भुजजोरी । श्याम साँवरे
राधागोरी । पागिअहण बिधिकीनी । तबमराडलधमि भाँवरिदीनी ।
दीनी जो भाँवरि कुञ्ज मराडल प्रीतिगाँठि हृदय परी । शरद निशि
पुन्यो बिसलशशि निकटवृन्दा शुभधरी । गायेजुगीत पुनीतबहुबिधि
वैदरुचि सुन्दरधुनी । नन्दसुत वृषभान तनया रासमें जोरीबनी । भैस-
न्मथ सैन बराती । द्रुम फूले नानाभाँती । मुरबन्दीजन यशगाये । तह
मधवा यन्त्र बजाये । बाजहिजे बाजन सकल नभसुर पुहुप अंजुल बर-
यहीं । दिव्यदिव्य विमानबैठे शब्द जैकारि हरयहीं । सुरदामहिभयो
आनंद पुजीसनकी साधा । मदनमोहनलाल दूलह दुलहिनी श्रीराधा
१४ ॥ रग सारंग ॥ कान्ह तुम्हारी माय महाबल सबजग अपवश की-
न्हेहो । नेकचितै मुसकाय उनसबको मनहरि लीन्हेहो । कहुकुल
कर्म न जानिये बाकेरूप सबै रंग राखेहो । त्रिनुदेखे समुझे सुने जगत
न कोऊ बाखेहो । इन बातनि लाजनि सरिये कोउ पुरुष न बाँचत

पावेहो । जो कोऊ सेवै सुखमें तेहि सेवत जाय जगावेहो । पहिरे
 राती कंचुकी शिरप्रवेत उपरना सेहैहो । कटिनी तो लहंगा करेउसो
 को जो निरखि न मोहैहो । चोरी चतुरानन ठगोसब अमर उपरना
 रातेहो । अन्तरौटा अवलोकिके सबअमर महामद मातेहो । एकनि
 दै दरशनठगै निशि एकनिलैसंग सेवैहो । एकनिलै मन्दिर चढैरचि
 एकनि बिरचि बिगोवै हो । अकथ कथा वाक्की सबै कहू कहैं तो
 कहिय न जाईहो । छैलनि के संग्यों फिरै जैसे तनतन सँग परिछाँई
 हो । मुनिताकी सब अपतई शुक सनकादिक मुनिजागेहो । नेकदुष्टि
 पथ परिगई शंकर शिरटोना लागेहो । योग युगति बिसरी सबै उर
 काम क्रोध मद जागे हो । लोकलाज सब छाँड़िके उठिवाय चलेसंग
 लागेहो । और कहाँलंगि बरगियाये भरिजल थल जिवजेतेहो । चतुर
 शिरोमणि श्यामसुनो गनिकहाँ कहाँलंगि कैते हो । यहि लाजनि
 मरिये सदाजब सबकोउ कहततुम्हारीहो । मूरदासप्रभु बरजिके किनि
 मेरहु कुलकी गारीहो २५ ॥ राग बिहागरो ॥ नहिंछूटै मोहन डोरनाहो ।
 प्रथम व्याधहै रहेउ हो कङ्कराचार बिचारि । रचिरचि पचि पचि
 गुथि बनायो नवल निपुणा ब्रजनारि । बडेहोहु तब छोरियोहो मुनिये
 गोकुलराय । कै करजोरि करी बिनतीके छुबहु गीराधाजूकेपाय ।
 यह न होय गिरिको धरिवो हो सुनहु कुंवर गोपिननाथ । आपन को
 तुमबडे कहावत काँपन लागेहो दोउहाथ । बहुरि समेटि ब्रज सुन्दरी
 मिलि दीनि गांठि छुराय । छोरहु बेगि कि आनहु अपनी यशुमति
 माय बुलाय । पचिहारे कैसेहु न छूटत बँधी प्रेमकीडोरी । देखिसखी
 यहरीति दुहुन की मुदितहँसी मुखमोरी । अबजनि करहु सहाय स-
 खीरी छाडहु सकल मयान । दुलहिनि छोरि दुतहको कङ्करा बोलि
 बबा दृयभान । कमल कमल करनि सहे पानिप्रियाके लाल । अब
 कबिसाँचे से लयेरोम कटीले नाल । लीलारास गोपाल की जोरें र-
 सिक बखान । सदारहै यह अविचल जोरी बलिबलि मूर समान २६
 राग सारंग ॥ तुमसें गारिकहा कहिदीजै हो यादव नंदने । युगबापनाउ
 कौनको लीजैहो यादव नंदने । युगबाप जाकेनाम कहिये जाति गो
 तन जानिये । बिनुरूप बिन अनुहारि कैसेकै बियाद बखानिये । सब

सोधिरहे न सोधिपायो विनुसुने कहकोजिये । बलिजाउँ यादवराय
 तुमकोगारि कहकाहि दीजिये । तुम्हरीमाय सब कुलखोयेहे यादव
 नन्दने । सो को जो बलनविगोये हे यादव नन्दने । सोकोजुबलकरि
 ना बिगोवै फिरति निशिवासर बनी । शिर प्रवेत कटि पदलाल
 लहँगा नीलचोली बिततनी । चलीमन्द मुमुकाय सुरनर नागभुज
 भीतरलिये । बलिजाउँ यादवनाथ तुम्हरी मायकुल बिनतुम किये ।
 वै तो भूलिरहे सब भोगी हे यादव नन्दने । बशकिये बोलन योगी
 हे यादव नन्दने । बशकिये बोलन बहुत योगी छवपतिकेते कहैं ।
 और अगजग जीव जल यत वनके बुधिनहिँ सुबिल हैं । अतिखरे
 आतुर काम कातर देखिनित कौतुक नये । अकुलाय निशि दिन
 सङ्गताके फिरत भ्रम भूले भये । कछु कही न जायगति ताकी हे
 यादव नन्दने । वहफिरति सदन मद छाकीहे यादवनन्दने । फिरति
 हे सद सदन छाकी निलज कुच ढाकेनहीं । नित निरखि निरखि जु
 छैलशोभा बिकल है धावै तहीं । यक गिरिपरत अचेत उरभूत मोह
 मद मनसा गही । मुखवरणि कथा अनेकताकी कहतहू न बनेकही ।
 वह तो नित नूतन रति जोरै हे यादव नन्दने । चितवनि में चितचोरै
 हे यादव नन्दने । चारु चितवनि चित चोरावै चलतवर धीरन धरै ।
 फिरि नेमकि चोपलगाय चञ्चलतनहिँ तनअन्तरकरै । यकभौंहकी
 छवि निरखि ऐसे कौनजो ब्रततेरै । यहिभौंति परम सुजान सुंदरि
 नित्य नूतन रतिकरै । अतिहिकहियति परम सयानेहे यादव नन्दने ।
 हे ठाकुर सब जग जाने हे यादव नन्दने । सबही के ठाकुर कृपानिधि
 सुयश सब जग गाइये । अवलोक को उपहास आपन बरजि गारि
 मिलाइये । कहकहैं यहचोप माधव और अंत न सुझै । प्रभुसूर चतुर
 सुजान यहकुल अब न ऐसी बूझै १७ ॥ राग बिहागरे ॥ दुलह देखोगी
 अबजाउँ । उतरे संकेत बट केहि मिसि देखन पाउँ । फलगंधि साला
 जैसे मालिनि है जाउँ । नन्दनदन प्यारेको बिरिजा करिलेउँ । तम्बो-
 लनि है जाउँ निरखि नयनन सुखदेउँ । तुम्हावनचन्दको मैं भूयसा
 मटिलेउँ । सुनारिनि है जाउँ निरखि नयनन सुखदेउँ । चंदन अरगजा
 सुगंध केशरि धरलेउँ । गंधिनि है जाउँ निरखि नयनन सुख देउँ ।

सनकादिक नारदमुनि शिव बिरञ्चि जाने । तूदुन्दुभी मृदङ्ग बाजेवर
निशाने । तोरणा जब आयेहरि कीन्हे उछाहु । ब्रजकी सबरीतिभई
बरमाने क्याहु । डोरनकर डोरनको आई सकल बधाई । फूली फिरे
सहचरी उर आनंद न समाई । गजवरगति आवनि पग धारनि गति
पाउ । लटकत शिर सेहरो मनो शिखी शिखगड सुभाउ । सोहत संग
नारि अङ्ग सबै छवि बिराजै । गजरथ बाजी बजाय चवैर छत्रसाजै ।
दुर्लहिनि वृषभानसुता अङ्गअङ्ग भ्राजत । सूरदासप्रभुदूलह देखौ ब्रज-
राज राजत १८ वृषभान नन्दिनी अति छवि बनी । श्रीवृन्दावनचंद
राधा निर्मल चाँदनी । प्र्यामअलकविच मोतीद्युतिमङ्गा । मनहुँ भल
मलत शिवशीश गङ्गा । श्रवणा ताटकुसोहै चिकुरकी कांति । उलटि
चल्योहै राहुचक्रकी भाँति । गोरैललाट सोहै सेंदुरको बिन्दु । शशि
की उपमादेति कविको होयनिंदु । चपल उनीदे नयनलागत सुहाये ।
नासिका चम्पक कलीकोहै अलिधाये । बदन मञ्जन ते अञ्जन गये
दूरी कलङ्क रहित शशि पुनि कलापूरी । गिरिते लटाभई यह हम
सुनी । कञ्चन ताते ह्वैगिरि भये पुनी । कञ्चन से तनसोहै नीलाम्बर
सारी । कुहनिशामध्यमनो दामिनि उजियारी । नखशिखशोभाभोपर
बरगान जाई । तुमसी तुमहीं राधा प्र्याम मनभाई । यहछवि सूरदास
सादरह्वैबानी । नंदनंदन राजाधिराज राधिका देखरानी १९ ॥ राग देव
गन्धार ॥ दोउराजत प्र्यामाप्र्याम । ब्रजयुवती मगडली बिराजति देखत
सुरनर बाम । धन्यधन्य वृन्दावन को मुख सुरपुर कोनेकाम । धनि
वृषभान सुता धनि मोहन धनि गोपनिको नाम । इनकीको दासी सरि
ह्वै धन्य शरद की याम । कैसेहु सूर जन्म ब्रज पावै यह मुख
नहिँ तिहुँघाम २० ॥ रागकेवारी ॥ बिराजत मोहन मगडलरास । प्र्यामा
प्र्याम सुधारस मानहुँ क्रीडत बिसल बिलास । ब्रजवनिता सबयूथ सं-
डली मिलिकर परशकरी । भुजमृगाल भूषणायुत तोरणा कंचनखम्भ
खरी । मृदुपद न्यास संद मलयानिल बिगलित शीशनिचोल । पीत
अरुणा सित प्रवेतव्रजा चलशीत समीर भुकोल । गिरत कुसुमकवरी
शीशनते टूटतहै उरहार । शरदबृंद शिशु वरय चली मनो जहां तहाँ
जलधार । अति कुराडल घर गिरत न जानत हृदय अनंदभरे । चरणा

परसते चलत चहुं दिशि मानहुं मीनतरे । दशनकुन्द दाडिम द्युतिदा-
 मिनि प्रकटित अरु दुरिजात । अधरबिम्ब मधुर अमीकन प्रीतमबदन
 समात । सुंदर बदन बिलोल बिलोचन अति गहि रङ्गरंगे । पुष्कर पुं-
 डरीक पर मानहुं खञ्जन युगुल खगे । बिपुल पुलक कंचुकि बँद हूटे
 हृदय अनन्दभये । कूचयुग चक्रबाक करुणा मिति अन्तर रैनि गये ।
 पृथुनितम्ब कर भँवर कमल पद नख मरिगा चन्द अनूप । मनहुं लुब्ध
 भयोबारि जलदते इन्दुकिये दशरूप । चरगा सुनित नूपुर कटिक्किन
 कंकरा करतल ताल । तरुणातनय समेत सहसमुख मुखारित मधुर म-
 राल । तालमृदङ्ग उपङ्ग बांसुरी उपजत ताल तरङ्ग । निकट बिरपद्विज
 कुल कूजित मनो पैबल बटत अनङ्ग । मूरबिनोद सहित सुरललना मोहे
 खग नरबाग । बिथक्यो उडपति वयोम बिम्बगति श्री गोपाल अनु-
 राग २१ ॥ रागसूत्रे ॥ रास रसिक गोपाल लाल ब्रजबाल सङ्ग बिहरत
 वृन्दावन । सप्तसुरनि मुरली बाजति राजति अधरनि धुनि सुनि मोहे
 सुरनरगांधर्वांगन । तरुणाकान्ह तरुतमालके तटतरुणा गोपिकायूथ नि-
 कटपट पीतांबर नीलांबर तनतन । मृत्यकरत उघटत संगीतपद ताथेइ
 येइता कहत सूरप्रभु निरखि परस्पर रीभक्त मन मन २२ ॥ रागमलार ॥
 मानो माई घनघन अन्तर दामिनि । घन अन्तरशोभित हरिभामिनि ।
 यमुना पुलिनमालिका मनोहर शरद मुहाई यामिनि । सुंदर शशिगुणा
 रूप रागनिधि आनंद मन बिआमिनि । रचे रासमिलि रसिक राय
 सो भेदभई बरचामिनि । रूपनिधान प्रयास घन सुन्दर अङ्ग अङ्ग अ-
 भिरामिनि । खञ्जन मीन मयूर बिहँसि पिक भेद भई गजगामिनि ।
 कोराति गनै सुरनागर संग काम विमोहेउ कामिनि २३ ॥ रागविहागरे ॥
 आजु निशि शोभित शरद मुहाई । शीतलमन्द सुगन्ध पवनबहै रोम
 रोम सुखदाई । यमुना पुलिन पुनीत परमरुचि रचिमराडली बनाई ।
 राधाबास अङ्गपर करधारि मध्यहि कुंवर कन्हाई । कुण्डलसंग तातंक
 सकभये युगुल कपोलन भाई । सक उरग मानो गिरिऊपर द्वै शशि
 उदय कराई । चारि चकोर परे मनुफन्दा चलत ह्वै चञ्चलताई । उड
 पङ्कति जति रहेउ निरखि लजि सूरदास बलिजाई २४ ॥ राग केदारो ॥
 आजु हरि सेसा रास रच्यो । अवगा सुन्यो न कबहुं अबलोको यह

सुख सुखहि सच्यो । प्रथमहिं सबै समाज साजिसुर सब मोहे कोउ न
बच्यो । सकहिसुर सुमार थावरचर कोजानै कोकबहिं नच्यो । गत
गुणानन्द अभिमान अधिकरुचि लै लोचन मन तहई खच्यो । शिव
नारद शारदा कहत्यों हम इतने दिनबाद पच्यो । निरखि नयनरस
रीति रजनिरुचि कामकरक फिरि कलहसच्यो । सुरधनुष धीरजन
धरेउ तबउलटि अनङ्ग तच्यो २५ आजुहरि अङ्गुत रास उपायो । सकहि
सुर सब मोहितकीने सुरलीनाद सुनायो । अचलचले चल यकितभये
सब मुनिजन ध्यान भुलायो । चंचल पवन थक्यो नहिं डोलत यमुना
उलटि बहायो । यकित भये चन्द्रमा सहित मृग सुधासमुद्र बहायो ।
सूरप्रियाम शोपिन सुखदायक लायक दरश दिखायो २६ ॥ रागघोष्ठ ॥
मोहन यह सुख कहांधरेउ । जो सुखरास रैनि उपजायो त्रिभुवनमनहिं
हरेउ । सुरली शब्द सुनतसेसो को जो ब्रतते न टरेउ । बचे न कोउ मो-
हित सबकीन्हें प्रेम उद्योत करेउ । उलटि काम तन काम प्रकाशयो
अङ्गतरूप धरेउ । सुरदास शिव नारद शारद कहत न कहेउपरेउ २७
रागबिहागरो ॥ आजुनिशि रास रंग हरि कीनो । ब्रजबनिता बिचश्याम
मंडली भिलि सबको सुख दीनो । सुरललना सुरसहित बिमोहे रचेउ
मधुर सुरगान । निर्त्तरतउघटत नानाबिधसुनि धुनि बिसरेउध्यान ।
सुरली सुतत भये सब व्याकुल नभधरणी पाताल । सूरप्रियाम को कौन
कियेबश रचि रचि राखरसाल २८ ॥ रागकेदारी ॥ रासरस सुरलीहीते
जान्यो । प्रियामअधर पर बैठि नादकियो मारग चन्दभुलान्यो । धरणा
जीव जल थलकेमोहे नभमराडल सुरथाके । तरा द्रुम सलिल पवनगति
भूल्यो अवरण शब्द परेउजाके । बचेउ नहीं पाताल रसातल कितिक
उदयलोभाज । नारद शारद शिवयह भायत कहु तन रहेउ स्यान ।
यह अपार रसरस उपायो सुनो न देख्यो नयन । वन मृग धुनि सुनि
सुनि ललचान्यो प्रियामअधर सुनिबैन । कहतरमासों सुनि सुनि प्यारी
बिहरत हैं वनश्याम । सुरकहा हमको सेसोसुख जो बिलसत ब्रजबाम
२९ जीती जीती होरग बंशी । मधुकरसुत बंदत बन्दी पिक सागव
सदन प्रशंशी । मथ्यो मान बलदर्प महीपति युवति यूथगहि आन्यो ।
वनको दराडब्रह्मराड भेदकरिसुरसमुख शरतान्यो । ब्रह्मादिक शिव

मनक मनन्दन बोलत जै जै बाने । राधापति सबसु अपने है हित ता
हाथ बिकाले । खगसृग मीन सुमारकिये सबजड़ जंगम जितभेय । छा-
जलछत मदमोह कवच कटि तजत न नयन निलेख । अपनी अपनी ठ-
कुराइनकी काढतिहैं ध्रुवरेख । बैठि पीठि पानगरजतिहैं देखि सबन
अवशेष । रविकोरथ लें दयोसोमको यददशकला समेत । रखेउ यज्ञ
रसरस राजसु वृन्दार्चिपित निकेत । दानमान परधान प्रेमरस बहेउ
माधुरी हेत । अधिकारी गोपाल तहांहैं सूरसबन सुख देत ३० ॥

यहांते श्रीगोपालजी के रासबिलासकी लीला ॥

रामकेदारो ॥

॥ शरद सोहाई आईराति । चहुँदिशिफूलिरहीबन जाति ।
देखि प्रियामके मनसुखभयो १ शशिगो मण्डित यमुनाकूल । हरिचित
बिंदप सदाफलफूल । विविधपवन दुखदवनहैं २ श्रीराधारवशा बजायो
बेनु । सुनिधुनि गोपिन उपज्यो मैनु । जहां तहां ते उठिचलीं ३ चलत
न काहूदियो जनाव । हरिप्यारेते बाहेउ भाव । रागरसिकगुणा गा-
यहैं ४ घरडर बिसरी बहेउ उछाह । मनचिन्त्यो पायोहरिनाह । ब्रज
नायक सुन्यो ५ पतिमृतकी छांडी इसआश । गोधनभर्तिकियो नि-
राश । सांचोहेत हरिसांक्रियाईखानपानतनकरन सन्हार । हिलगि
छांडायो गृह व्यवहार । सुधिबुधिमोहनहरिलियो ७ सञ्जन अञ्जन अञ्ज
शृङ्गार । पट भूषण कूटो परिवार । रासरसिक गुणागायहैं ८ एक दु-
हावतते उठिचली । पतिसेवाकछुकरी न भली । उदकंटा हरिसोबडी ९
उफनत दूध न धरेउ उतारि । सीपी दुलहा चुलहैं डारि । पुस्त्यतजें जेवत
हुते १० पय प्यावत बालक धरिचली । पतिसेवा कछुकरी न भली ।
धरेउ रहेउ भोजनभली ११ तेल फुलेल उबटना भूल । भाग्य न पायो
जीवन मूल । रासरसिक गुणागायहैं १२ अंजन एक नयन बिसरेउ ।
करिकंचुकि लहंगा उरवरेउ । हारलपेटे चरणा सों १३ अंब्रगानि प-
हिरे उलटेहार । ताऊपर चौकी शृङ्गार । चतुर चतुरता हरिलियो १४
जाको मनमोहन हरिलियो । ताको काहु न कछू कियो । ज्योंपतिसेां
प्रिय रुचिकरै १५ प्रियामहिं सांचेउ मुरली नाद । सुनि धुनि छांडेउ
बिषय सवाद । रासरसिक गुणा गाय हैं १६ मातु पिता पति रोंकी
आनि । सही न प्रिय दरशनकी हानि । सबहिनको अपमानकारि १७

जाकोमन जासों अटव्यो । रहत न ताविनु खरा हउव्यो । कठिन प्रीति
 को फन्दहै १८ जैसे सरिता सिंधुहि भर्जे । कोटि गिरि भेदत नाहिं न
 लजें । ऐसी गति उनकी भर्जे १९ इकजो गृहते निकसी नहीं । हरि
 कसणाकरि आयेतहीं । रासरसिक गुणागाय हैं २० नीरस कविन
 कहैं रसरीति । रसकी लीला रसपरतीति । यहसति शुक्रमुख जानिबी
 २१ ब्रजवनिता आई पियपास । चिंतये नयनभ भृकुटि विलास । हँसि
 पंखी हरिमानदे २२ नीकेआई सारग सांभ । कुलकी नारि न निकसे
 सांभ । कहाकहैं तुम जो गहौ २३ ब्रजकी कुशल कहौ बड़भाग । क्यों
 तुम छाँड़े सुवन सुहाग । रासरसिक गुणागाय हैं २४ अजहूँ फिरि
 अपने गृहजाहु । परमेश्वरकरिमानोनाहु । बनमें निशि बसियेनहीं २५
 प्रीतुन्दावन देख्यो आय । सुखद कुमोदिनि प्रफुलित जाय । यमुना
 जलही करघना २६ धरमहँ युवती धर्महिं फबै । ताविनु सुतपति दुखितै
 सबै । यह विधना रचना रची २७ भर्ताकी सेवा सतसार । कपट तजे
 भूँटे संसार । रासरसिक गुणागायहैं २८ लुट अमोगी जो प्रतिहोय ।
 मूसख रोगी तजै न जोय । पतित बिलसकरि छाँड़िये २९ तजि भर्ता
 रहि नारहि लीन । ऐसी नारि न होयकलीन । यश बिहीन नरकहि
 परै ३० बहुतकहा समुझाऊँ आजु । हमहूँ कछुकरिबे गृहकाजु । तुमते
 को अति जानिहै ३१ श्रीमुख बचन सुनत बिलखाय । व्याकुलधरगिरा
 परीं मुरझाय । रासरसिक गुणागाय हैं ३२ दारुणा चिन्ता बढी न
 थोर । क्रूर बचनकहैं नन्दकिशोर । और प्ररणा सूझे नहीं ३३ रुदन
 करत नदिबढी गंभीर । हरिकरिया नहिँजने पीर । कुचयम्भनि अ-
 वलम्बहै ३४ तुम्हरी बहुत प्रियाहै आश । बिनुअपराध न करहु नि-
 राश । कै तब सुखाई छाँड़िये ३५ नितर बचन अनि बोलहु नाथ ।
 निजदासी जनि करहु अनाथ । रासरसिक गुणागायहैं ३६ सुखदेखत
 सुखपावत नयन । अवगा सिरात सुनत मृदुवैन । सैननहीं सर्वस हरेउ ३७
 मन्द हँसनि उपजायो काम । अधर मुवा धनि करि बिग्राम । बरथि
 सींचि बिरहानला ३८ जबते हम देखे ये पाय । तबते और न कछु
 सुहाय । कहौ घोय हम जाहिं क्यों ३९ सजन बंधुकी करिहैं कानि ।
 तुम बिहुरत पिय आतमहानि । रासरसिक गुणागायहैं ४० बे

६६० सुरसागर रासलीला रागकल्पद्रुम ।

जाय बोलाई नारि । सहिआई कुल सबकीगारि । मन मधुकर लक्ष्मण
भयो ४१ सोऊ सुन्दरि चतुर सुजान । आरजपंथ तजैसुनि गान । तिन
देखत पुस्यउ लजै ४२ बहुत कहा बरगौं यह रूप । और त. त्रिभुवन
सरिस अनप । बलिहारी या रातिकी ४३ सुनि मोहन बिनतीदैकान ।
अपयश होय किये अपमान । रासरसिक गुणागायहैं ४४ तुमहमको
उपदेशेउ धर्म । ताको कछु न पायोमर्म । हम अबलामति हीनहैं ४५
दुखदाता सुतपति गृह बन्ध । तुम्हारि कृपा बिन सबजग अन्ध । तुमते
प्रीतम और न कोय ४६ तुमसों प्रीति करहिं ये धीर । तिनहिंन लोक
वेदकी पीर । पाप पुण्य तिनके नहीं ४७ आस पास बंधी हम बाल ।
तुमहिं बिमुखहैं बेहाल । रासरसिक गुणागायहैं ४८ बिरद तुम्हारो
दीनदयाल । करसों करं धरि करि प्रतिपाल । भुजदण्डनि खगडहु
व्यथा ४९ जैसे गुणीदेखावै कला । छपिरा कबहुं नहिं मानै भला ।
सदय हृदय हमपर करौ ५० ब्रजकी लाज बढाई तोहिं । करहु कृपा
करुणा करिजोहिं । तुमहिं हमारे गतिसदा ५१ दीनबचन जब युव-
तिन कहे । सुनत अवरा लोचन जलबहे । रासरसिक गुणागायहैं ५२
हंसिबोले हरिबोली बोडि । करजोरे प्रभुता सबछोडि । हैंअसाधु तुम
साधुहौ ५३ मोकारण तुमभई निशंक । लोकवेद बपुराको रंक । सिंह
शरणा जम्बुक बसै ५४ बिनादान करिलीन्हो मोल । करत निरादर
भई नलोत । आवहु हिलिमिलि खेलिये ५५ ब्रजयुवतिन घरेब्रजराज ।
मनहुं निशाकर किरण समान । रासरसिक गुणागाय हैं ५६ हरि
मुख देखत फूलेनयन । उर उमंगे कछु कहत न बैन । प्रियमहिं गावत
कामवश ५७ हंसत हँसावत करि परिहास । मनमें कहतकरैं अबरास ।
अञ्चलगहि चञ्चल चल्यो ५८ ल्यायो कोमल पुलिन सभारि । नख
शिख भूषण अङ्ग सँवारि । पट भूषण युवतिन सजे ५९ कुच परसत
पुजई सबसाध । रससागर मनो मगन अगाध । रासरसिक गुणा गाय
हैं ६० रसमें बिरस जु अन्तरध्यान । गोपिनके उपजै अभिमान । बि-
रहकथा में कौनसुखई ६१ द्वादश कोश रास परमान । ताको कैसे होत
बखान । आसपास यमुना भिली ६२ तामें मानसरोवर ताल । कमल
बिमल जल परसरसाल । सेवहिं खग मृग शुकभरे ६३ निकट कलप

तरु बंशीबटा । राधारति गृहकुंजन अटा । रासरसिक गुणागायहैं ६४
नवकुंकुम रज बर्यत जहां । उडत कपूर धूरि तहंतहां । और फूल फल
को गले ६५ तहं घनश्याम रास रस रचेउ । सरकत मरिा कज्जन सों
खचेउ । अद्भुत कौतुक प्रकट कियो ६६ मगडलजोरि युवति जहँबनी ।
दुहुँदुहुँ बीच श्यामघन धनी । शोभा कहत न आवई ६७ घूंघुट मुकुट
विराजत शीश । शोभित शशि मनो सहस बतीश । रासरसिक गुणा
गायहैं ६८ मरिा कुगडल ताटक बिलोल । बिहंसत लज्जित ललित
कपोल । अलक तिलक बेशरि बनी ६९ कंठ श्री गजमेतिनहार ।
चचरि चुरी किंकिरिा भूतकार । चौकी चमकत उरलगी ७० कौ-
स्तुभमरिा राजति रुचिपोति । दशन दमक दामिनिते जोति । सरस
अधर पल्लवबने ७१ चिबुक मध्य श्यामल रुचि बिन्द । देखि सबनि
रीभे गोबिन्द । रासरसिक गुणागायहैं ७२ सबनि बिसान गगनभरि
रहे । कौतुक देखनसुर उमहे । नयन मुफल सबकेभये ७३ बाजे देव-
लोक निशान । बर्यत सुमन करत सुर गान । मुनि किन्नर जय धुनि
करैं ७४ युवतिन बिसरो पतिगति गेह । प्रेममगन सब सहित सनेह ।
यह सुख हमको हो कहां ७५ सुन्दरता सब गुणा की खानि । रसना
सक न परत बखानि । रासरसिक गुणागायहैं ७६ नीलकंचुकी सा-
डन लाल । भुजनि नवइआ उर बनमाल । पीतपिछौरी श्यामतन ७७
अंगारिन मुंदरी पहुँचीपानि । कठिकटि कछनी किंकिरिाबानि । उर
नितम्ब बेनीरु ७८ नाना बंधन सुघन जघन । पायन नूपुर बाजत स-
घन । नखन महाउर खिलि रहेउ ७९ राधामोहन मगडल सांभ । मा-
नहुँ राजित संध्या सांभ । रासरसिक गुणा गाय हैं ८० पग पटकत
लटकत लटबाहु । मटकत भौंहन हस्त उछाहु । अज्जल चज्जल भूमका
८१ निरखत दुरि दुरि नयनन सैन । मुख मुख बिहंसि कहत मृदुबैन ।
मिश्रित गंडप्रस्वेदकन ८२ चौरी डोरी बिगलित केश । भूमत लटकत
मुकुट सुदेश । फूल खसत शिरते घने ८३ कृष्णबंधु पावत यशगाय ।
रीभत मोहन कराटलगाय । रासरसिक गुणागायहैं ८४ बाजत भू-
यगा तालमृदङ्ग । अङ्ग देखावत सरस सुवङ्ग । रङ्गरहेउ न कहेउपरै ८५
नूपुर किङ्किरिा कज्जन चुरी । उपजत मिश्रित धुनि माधुरी । सुनत

सिराने सबनसन ८६ मुरली मुरुज रबाब उपङ्ग । उघटतशब्द बिहारी संग । नारागि सबगुणा आगरी ८७ गोपीमराडल मण्डितश्याम । कनक नीलमरिा जनु अभिराम । रास रसिक गुणा गायहैं ८८ तिरप लेति सुन्दरि भासिनी । मनहुँ विराजत घन दासिनी । या कवि की उपमा नहीं ८९ राधाकी गति परत न लखी । रससागर कीसी बानखी । बलिहारी वा रूपकी ९० लेति सुघर औघर गतितान । दैचुम्बन आकर्षति प्रान । भेंटति भेंटति दुखसबै ९१ राखाति पियहि कुचनिविच आनि । दैअधरामृत शिरपर पानि । रासरसिक गुणा गायहैं ९२ हरियत बेरा बजायोछैल । चन्दहि बिसरी नभकीगैल । तारागुणा मनमें लजे ९३ मोहनधुनि बैकुण्ठहि गई । नारायणा सुनि प्रीति जी भई । कहत बचन कमलासुनों ९४ कुञ्जबिहारी बिहरतदेखि । जीवनजन्म सुफलकरि लेखि । यहसुख तिहुँपुरहे कहाँ ९५ टुन्दावन हमतेअति दूरि । कैसे धौं उड्डिलागै धूरि । रास रसिक गुणा गायहैं ९६ कालाहल धुनि दुहुँदिशि जाति । कल्पसमान भई सुखराति । जीवजन्तु भै सत्तसब ९७ उलटि बहेउ यमुनाकोनीर । बालक बच्छ न पीवेंसीर । राधारमन दगैसबै ९८ गिरिवर तरवर पुलकित गात । गोधन धनते दूधचुचात । सुनि खग मृग सुनिव्रत धरेउ ९९ सहिभूली भूल्यो गति पवन । सोवतखाल तजत नहिं भवन । रासरसिक गुणा गायहैं १०० रागरागिनी मूरति मन्त । दूलह दुलहिनि सरस लसन्त । कासकला सङ्गीत गुरु १०१ सप्तसुरन की जाति अनेक । नीकै मिलवति राधा सक । मनमोहेपियको सुघर १०२ चौंद धुवनिके भेदअपार । नाचति कुञ्जरि मिलेभपतार । कहेउ सबैसङ्गीत में १०३ सरस सुलयधुनि उघटत शब्द । पिकनि रिभावति गावत सुपद । रासरसिक गुणा गायहैं १०४ चलतसुलय मोहतिगज हंस । हंसत परस्पर गावतगंस । तानमान मृगमनथके १०५ रोरीचन्दन चर्चितबाहु । लेतसुवास पुलकतननाहु । दैचुम्बन हरि सुखलियो १०६ श्यामल गौरकपोल सुचार । रीभि परस्परलेतउगार । सकप्राणाद्वैदेहहैं १०७ नाचत गावतगुणाकी खानि । अमितभये टेकतपियपानि । रासरसिक गुणा गायहैं १०८ पियगावत अतिनादहिभेत । मारचकोर फिरतसंगहेत । धन जुनहाईहै मनो १०९

कचकुच बिच दरशेहँसि प्रयाम । चलतभौंह नयनन अभिराम । अं-
गनकोटि अनङ्गकवि ११० हस्तकभेद ललित गतिलई । अञ्जलउद्धत
अधिक छविभई । कुच बिगलित मालागिरी १११ हरि करुणाकरि
लई उठाय । पोंछति अमजल करतलगाय । रासरसिक गुणागायहैं
११२ तिनहिँ लिवाय यमुन जलराये । पुलिन पुनीत निकुञ्जनि ठये ।
अङ्गअमित सबकेभये ११३ जैसे मदगज कुलबिदारि । तैसेसँगलै खेलै
नारि । शङ्क न काहूकीकरी ११४ मेटीलोक वेद कुलमैंडि । निकसि
कुंवरि खेल्योकरि रेंडि । फबीसबै जो मनधरी ११५ जलयल क्री-
डत व्रीडत नही । तिनकी लीलापरत न कही । रासरसिक गुणागाय
हैं ११६ कहेउ भागवत शुक अनुराग । कैसे समुझै बिन बड भाग ।
थीरु शुक कृपाकरी ११७ सुर आसकरि बरगयो राम । चाहतहैं
गुन्दावनवास । श्रीराधा इतनी करि कृपा ११८ निशिदिन प्रयासासे-
बहुँ तोहैं । यहै कृपाकरि दीजैमोहैं । नवनिकुञ्ज सुखपुञ्ज में ११९
हरिबंशी हरिदासी जहाँ । हरिकरुणाकरि राखहु तहाँ । नित बि-
हार आधारदै १२० कहत सुनत बाढ़ै रसरीति । वक्ताश्रोता हरिपद
प्रीति । रास रसिक गुणागाय हैं १२१ ॥

यहांते विष्णुपदबंद रासलीला ॥

राम टोड़ी ॥ सुरली सुनत भई सब बौरी । मनहुँ परी शिर साँभ
शौरी । जो जैसे सो तैसेसोरी । तनुव्याकुल सबभई किशोरी । कोउ
बरगयो कोउ गगन निहारै । कोउकर करते वासनडारै । कोउ मनहीं
मन बुद्धि बिचारै । कोउ बालक नहिँ गोदमँभारै । घरघर तसुगामबै
बिततानी । सुतपति आरजपन्थ भुलानी । मन मन कहति कौन यह
बानी । ढंढतिधरणा फिरतिबिततानी । लैलैनाम सबनकोटै । सुरली
बुनि घरहीकेनरै । कोउजैवत पतिही तनहरै । कोउ दधिमें जावनपय
करै । कोउ उठिचली जैसेही तैसे । फेरि आय घरही में पैसे । घरपाछे
पुरलीधुनि सेसे । आँगन गये नहीं वहतैसे । गृह गुरुजन तिनहुँ सुधि
नाहीं । कोउ कतहं कोउ कतहं जाहीं । कोउ निरखतनहिँ काहूमाहीं ।
पुरकै मदन तसुगाम सबदाहीं । व्याकुलभई सबै ब्रजनारी । सुरली सों
गोले गिरिधारी । चलीं सबै जहँ तहँ सुकुमारी । उपजी प्रीति हृदय

हरि भारी । मुरली श्याम अनूप बजाई । त्रिविधमर्ष्यादा सबनि भुलाई ।
निशि वनकी युवती सबवाई । उलटे अङ्ग अभूषणा नाई । कोउ चलि
चरणाहार लपटाई । काहू चौकी भुजनि बनाई । अंगियाकटि लहँगा
उरलाई । यह शोभा बरणी नहिंजाई । कोउ उठि चलीजातिहैं कोऊ ।
कोउ मगगई मिली मगकोऊ । सूरदासप्रभु कुंजबिहारी । शरद रास
रसरीति विचारो १ ॥ राग गोंडमलार ॥ शरद निशि देखि हरि हर्यपाये।
विपिन वृन्दावन सुभग फूले सुमन रास रुचि श्यामके मनहिंआये।
परम उज्ज्वल रैन छिटाकिरही भूमिपर सदा फल तरुणाप्रति लटक
लागे । तैसोई परम रमणीक यमुना पुलिन त्रिविधबहै पवन आनंद
जागे । राधिकारवशा बतभवन मुख देखिके अधरधरि बेगु सुललित
बजाई । नाम लैलै सकलगोप कन्यानिके सबनिके अवरु यह धनि
सुनाई । सुनत उपज्यो मैनपरत काहु न चैन शब्दसुनि अवरुभई बि-
कलभारी । सूरप्रभु ध्यानधरिके चलीं उठिसबै भवनजल नेह तजि घोष
नारी २ ॥ रागबिहागरो ॥ मुरली सुनत उपजीवाय । श्यामसों अतिभाव
बाढ्यो चलींसब अकुलाय । गुरुजनन सों भेदकाहू कहेउ नहीं उधारि।
अह रैन चलीं धरणाते यूथ यूथति नारि । नंदनन्दन तरुणाबोलीं
शरद निशिके हेत । रुचिसहित वनकीचलीं वै सूर भईअचेत ३ ॥ राग
गोंडमलार ॥ सुनत मुरली भवन डरु न कीन्हे । श्याम पै चित्त पहुँचाय
प्रहिलेहिं दियो आप उठिचलीं सुधि मन न दीन्हे । कहति मनकामना
आजु पूरणाकरे नंदनन्दन सबनवन बोलाई । जानि लायक भजीतरुणी
सुत पति तजी काहू नहिँलजी अति प्रेमवाई । तज्यो कुलधर्म गोधन
थपेई तजे पगीरस कृष्णाबिन कछु न भावै । सूरप्रभुसों प्रेम सत्यकरिके
कियो मनगयो तहाँ इनको बुलावै ४ ॥ राग खोखर मुरली मधुरबजाई
श्याम । मनहरिलियो भवन नहिँभावत व्याकुल ब्रजकीबास । भोजन
भूषणाकी सुधि नाहींतनकी नहींसम्हार । गृह गुरुलाज सुतनसोंतोखी
डरींनहीं व्यवहार । करत अङ्गार बिबशभई सुंदर अंगनिगईभुलाय ।
सूरश्यामवनबेगुजबावत चित्ताहित रासरमाय ५ ॥ रागगोंडमलार ॥ करति
अङ्गार युवती भुलाहीं । अंग सुधिनहीं उलटे भरणाधारहीं । एकसकल
कछु सुरति नाहीं । नैनअंजन अधरअंजही हरयसों अवरु ताटकउलटे

सँवारै । सूरप्रभु मुख ललित बेगु धुनि बन सुनत चलीं बेहाल अंचल
न धारै ६ ॥ रागनट ॥ हरिमुख सुनत बेगु रमाल । बिरह व्याकुलभई
बाला चलीं जहँ गोपाल । पय दुहावत तजिचलीं कोउ रहेउ धीरज
नाहिं । सक दुहनी दूध जावे को सिरावत जाहिं । सक उफनतहीचलीं
उठि धरेउ नहीं उतारि । सक जेवन करत त्याग्यो चढे चूल्हे डारि ।
सकभोजनकरिसँपूरया गई वैसेहि तप्रागि । सूरप्रभुके पास तुरतहि मन
गयो उठि भागि ७ ॥ रागरामकली ॥ मन गयो चित श्यामसौ लाग्यो ।
नानाविधि जेवनकरि पस्यो पस्यजेवावत त्याग्यो । इकपय पिवत
चलीं तजि बालक छोहनहीं तबकीन्हे । चलीं धाय अकुलाय सकुच
तजि बोलि बेगु धुनि लीन्हे । यक पति सेवा करत चलीं उठिद्व्या-
कुल तन सुधि नाहीं । सूर निदरि विधि की मर्यादा निशि बनको
सब जाहीं ८ ॥ रागजैतथी ॥ जबहिं बन मुरली श्रवण परी । चकतभई
गोपकन्या सब काम धाम बिसरी । कुल मर्याद वेदकी आज्ञा नेकहु
नहीं डरी । श्यामसिंधु सरिता ललना गरा जलकी ढरनि डरी । अंग
मरदन करिबेको लागीं उबटन तेल धरी । जो जेहि भांति चली सो
तैसेहि निशि बन को जु खरी । सुत पति नेह भवन जन शंका लज्जा
नहीं करी । सूरदास प्रभु मन हरि लीन्हे नागर नवल हरी ९ ॥ राग
केदारो ॥ सुनि मुरली शब्द ब्रजनारि । करतअंग अङ्गारभूली कामगयो
तनु मारि । चरणासों गहि हार बांध्यो नयन देखति नाहिं । कंचुकी
कटिसाजि लहँगा धरति हिरदय माहिं । चतुरता हरि चोरिलीन्ही
भई भोरी बाल । सूरप्रभु रति काम मोहन रास रुचि नंदलाल १० ॥
रागरामकली ॥ ब्रजयुवतिन मन हरो कन्हाइ । रासरंगरसरुचिमनआन्यो
निशिवन नारिबुलाई । तप तनुगमरिबहुतश्रम कीन्हे । सो फल पूरया
देन । बेगु नादरस बिबशकराई सुनि धुनि कीन्हेगौन । जाकामनहरि
लियो श्याम घन ताहि सँभारै कौन । सूरदासज्यों नारि कन्त मिलि
करै सुभावे जौन ११ ॥ रागधनाथी ॥ चलीं बन बेगु सुनत जब धाई ।
मात पिता बंधव यक पासत जातकहां अकुलाई । सकुच नहीं शंका
कहुं नाहीं रैन कहां तुम जाति । जननी कहति दईकीघाली काहेकी
इतरति । मानति नहीं और रिस पावति निकसी नातो तोरि । जैसे

जलप्रवाह भादोंकी सो कोसकैबहेरि । ज्यों कंचूरी भुञ्जाम त्यागत
 मात पिता यों त्यागे । सूरश्यामके हाथ बिकानी अलिअम्बुज अनु-
 रागे १२ ॥ रागगोडमलार ॥ सुनत मुरलीसकि न धीर धरि कै । चलीं पितु
 मात अपमान करि कै । लडत निकसीं सबै तोरि फरके । भई आतुर
 बदन दरश हरिके । जाहि जो भजै सो ताहि रातें । कोउ कछु कहै
 सबनिरस बातें । ता बिना ताहि कछु नहीं भावै । और जो जोरि को-
 टिकदिखावै । प्रीति की कथा वह प्रीतिजानै । और करिकोटि बातें
 बखानै । ज्यों मल्लिलसिंधु बिन कहूँ न जाई । सूर वैसी दशा इनहुं
 पाई १३ ॥ रागसूहो बिलावल ॥ घर घरते निकसीं ब्रजवाला । लै लै नाम
 युवतिजन जनके मुरलीमें सुनि सुनि तत्काला । एक मारग एक घरते
 निकरी एक निकरति एकभईबेहाला । एक नाहीं भवननते निकरी
 तिनपै आये परम कृपाला । यह महिमा ओहीपै जानै कबिसों कहा
 बरगिा यह जाई । सूरश्याम रस रीति रास मुख बिन देखे क्यों आवै
 गाई १४ ॥ रागगोडमलार ॥ रास रस रीतिनिहिं बरगिा आवै । कहां वैसी
 बुद्धि कहां वह मन लहे कहां यह चित्त जियभ्रम बुलावै । जो कहौ कौन
 मानै निगम अगम जो कृपा बिन नहीं या रसहिपावै । भावसों भजै
 बिन भावमें ये नहीं भावहीमें भाव यह मन बसावै । यहै निजमंत्र यह
 ज्ञान यह है ध्यान दरश दम्पति भजन सरस गाऊं । यहै सांगों बार
 बारप्रभु सूरके नयन यहां रहैं बस देह पाऊं १५ सुनत बन बेगा धुनि
 चलीं नारी । लोक लज्जा निदरि भवनतजि सुंदरी मिलीं बनजायके
 बनबिहारी । दरशके लहत मन हर्य सबके भयो परश की साधअति
 करति भारी । यहै मन बच कर्म तज्यो सुतपति धर्म मेदिभवधर्मसहि
 लाज गारी । भजै जेहि भाव ज्यों मिलै हरि ताहि त्यो भेदभेदा नहीं
 पुरुष नारी । सूर प्रभु श्याम ब्रजवास आतुर काम मिलीं बनधाम
 गिरिराज धारी १६ ॥ रागसूहो बिलावल ॥ देखि श्याममन हर्य बढ़ायो ।
 तैसिय शरद चांदनी निर्मल तैसाइ रासरंग उपजायो । तैसिय कनक
 बरग सब सुन्दरि यह शोभा पर मन ललचायो । तैसाइ हंसमुता
 पबिवतत तैसाइ कल्पवृक्ष सुखदायो । करो मनोरथ पूरग सबके एक
 अन्तर एकखेल उपायो । सूरश्याम रचि कपटचतुरई युवतिनके मन

यहभरसायो १७ ॥ रागविहागरो ॥ निशिकाहेवनको उठिवाइ। हँसिहँसि
 श्याम कहत हो सुन्दरि की तुम ब्रजमारगहि भुलाई। गइरही दधि
 बेंचन मथुरा तहां आजु अबसेर लगाई। अति भ्रमभयो बिपिन क्यों
 आइ सारग वह कहि सबनि बताई। जाहु जाहु घर तुरत युवतिगारा
 खीभत गुरुजन कहि डरवाई। की गोकुलते गमन कियोतुम इनबात-
 निहै नहीं भलाई। यहधुनिके ब्रजबाम कहतभई कहा करत गिरिधर
 चतुराई। सुर नाम लै सब जनजन के सुरलीवारम्बार बुलाई १८ यह
 जनि कहौघोषकुमारि। हमचतुरइनहीं कीन्हीतुमचतुरसब रवारि।
 कहां हम कहँ तुम रहीब्रज कहांसुरलीनाद। करतिहौ परिहास हम
 सों तजौ यह रसवाद। बड़ेकी तुम बहू बेटी नाम ले क्यों जाय। ऐसे
 निशि बन दौरि आइ हमहिंदोष लगाय। भली यह तुम करी नाहीं
 अजहुं घर फिरि जाहु। सुर क्यों तुम निदरि आइनहींतुम्हरेनाहु १९
 रागजैतथी ॥ मात पिता तुम्हरे धौं नाहीं। बारम्बार कमल दल लाचन
 यह कहिकहि पछिताहीं। उनके लाजनहीं बन तुमको आवन दीन्ही
 राति। सब सुन्दरी सबै नवयौबनि नितुर अहीर कि जाति। की तुम
 कहि आइकी ऐसेहिकीन्ही कैसीरीति। सुर तुमहिं यहनहीं बूझिये
 बड़ीकरी बिपरीति २० ॥ रागएमकली ॥ अब तुम कही हमारी मानो।
 बनमेंआय रैन सुखदेख्यो यहैलहो सुखजानो। अबऐसी कीजो जनि
 कबहुं जानतिहौ मनतुमहं। यहधुनि सुनैकहूं जो कोऊ तुमको लाजरु
 हमहं। हमतौ आजु बहुत शरमाना सुरली टेरि बजायो। जैसेकियो
 लहेउफल तैसो हमहीं कोय न आयो। अबतुम भवन जाहु पति पूजहु
 परमेश्वरकीनाई। सुरश्याम युवतिनसों यहकहिकहि अपराध समा-
 ई २१ ॥ रागसूहे बिलावल ॥ यह युवतिन को धर्म न होई। धृग सो नारि
 पुरुष जो त्यागै धृग सो पति जो त्यागै जोई। पतिको धर्म यहैप्रति-
 पालै युवती सेवाहीको धर्म। युवती सेवातऊ न त्यागै जोपति कोटि
 करैअसकर्म। बन में रैन बास नहिं कीजै देख्यो मनो तृन्दावन आय।
 विविध सुमन शीतल यमुना जल विविध समीर परमि सुखदाय।
 घरही में तुव धर्म सदाई सुतपति दुखीहोत तुमजाहु। सुरश्याम यह
 कहि परमोधत सेवाकरौ जाहु घरनाहु २२ ॥ रागविहागरो ॥ यहिविधि

वेद सारस सुनौ । कपट तजिपति करौ पूजा कहातुम जियगुनौ । कंथ
 मानहुं भवन रोगी और नाहिं उपाय । ताहितजि क्यों बिपिन आई
 कहा पायो आय । विरध अरु बिन भागदूको पतितजैपतिहोय । जो
 पतिहुसूरखहोय रोगी तजै नाहीं जोय । यहै मैं पुनि कहत तुम सों
 जगत में यहसार । सूरपतिसेवाबिना क्यों तरौगीसंसार २३ कहाभयो
 जो हमपै आई । हमहुंको बिधिको डरभारी अजहं जाहु चंडाई । तजि
 भर्तार और जो भजिये सो कुलीन नहिंहोय । मरेनरक जीवतयाजगमें
 भलाकहै नहिंकोय । हम जो कहतसबैतुम जानति तुमहुंचतुरसुजान ।
 सुनहुसूर घरजाहु हमहुं घर जैहैं होत बिहान २४ ॥ रागबिलवल ॥ निदुर
 बचनसुनि प्रयासके युवतीबिकलानी । चकतभईसबसुनिरहीं नहिंआवै
 बानी । मनो तुयार कमलन परेउ सेसे कुम्हिलानी । मनो महानिधि
 पायकै खोय पछितानी । सेसी हूँगइतनदशा पियकी सुनिबानी । सूर
 विरहव्याकुल भई बूझीं बिनपानी २५ ॥ रागमारु ॥ प्रयासउर प्रीतिमुख
 कपटबानी । युवतिव्याकुलभई धरिगा सब गिरगईआशगइ टूटिनहिं
 भेदजानी । हंसतनदलाल मनमन करत ख्याल ये भई बेहाल ब्रजबाल
 भारी । रुदन जल नदीसम बहि चलयो उरज बिच मनो गिरिफोरि
 सरिता पनारी । अंग थकि पथिक नहिं चलत कोउ पन्थके नावरस
 भावहरि नहींआनै । सूरप्रभु निदुर करिआ कहा हूँरहे उनहिं बिन
 और को खेयजानै २६ ॥ रागजेतप्री ॥ निदुर बचन जनि बोलहु प्रयास ।
 आशनिराशकरो जनिहमसों व्याकुल बचन कहति हैं वाम । अंतर
 कपट दूरिकरि डारो हम तन कृपा निहारो । कृपासिंधु तुमको सब
 गावत अपनोनाम सन्हारो । हमको शरणा और नहिं सुभै कापैहम
 अब जाहिं । सूरदास प्रभु निजदासिन की चूक कहा पछिताहिं २७
 रागमौरी ॥ तुम पावत हम घोष न जाहिं । कहा जाय हम लैहैं ब्रजमें
 यह दरशन त्रिभुवनमें नाहिं । तुमहुं ते ब्रजहितू कोउ नहिंकोटि कहौ
 नहिं मानै । काके पिता मातहैं काके काहू हम नहिं जानै । काके
 पतिमुत मोहिं कौन के घरहै कहां पठावत । कैसो धर्म पाप है कैसो
 आश निराश करावत । हमजानै केवल तुमहीं को और वृथा संसार ।
 सूरप्रयास निदुराई तजिये तजिये बचन बिसार २८ ॥ रागजेतप्री ॥ तुम

हौ अन्तर्दय्यासि कन्हाइ । निदुर भये क्यों रहत इतेपर तुम नहिं जा-
नत पीर पराई । पुनिपुनि कहत जाहु ब्रजसुन्दरि दूरिकरौ पिय यह
चतुराई । आपुहि कही करौपति सेवा ता सेवा कोहैं हमआई । जो
तुमकही तुमहिं सबछाजै कहा कहैं हमप्रभुहि सुनाई । सुनह सूरप्रभु
यह तनुत्यागै हमपैघोषगयो नहिंजाई २६ ॥ रागबिहागरो ॥ कैसे हमको
ब्रजहि पठावत । मनतो रहेउ चरगा लपटानो जो इतनी यहदेह चला-
वत । अटके नैन साधुरी मुखकनि असृत बचन अवगानि को भावत ।
इन्द्री सबै मनहिंके पाछे कही धर्मकहि कहा बतावत । इनको करि
आपने लयेतौ क्यों हमको नाहीं जियभावत । सूर सैनदै सर्वसलूख्यो
सुरली लैलैनाम बुलावत ३० ॥ रागकान्हरो ॥ भवन नहीं अबजाहिं क-
न्हाइ । सज्जन बंधुते भईबाहिरी अबकैसे वे करतबडाई । जो कबहुंक
वे लेहिं कृपा करि तौ धृग हम सब नारि । तुम बिछुरत जीवन धृग
राखैं कही न आप बिचारि । धृग बहलाज बिमुखकी संगति धनि
जीवन तुमहेत । धृगमाता धृगपिता गेह धृग धृग सुतपतिहैं जेत । हम
चाहति मृदुहंसनि साधुरी जाते उपजो काम । सूरश्याम अधरन रस
सींचहु जरति बिरह सब बाम ३१ सुनहु श्याम अबकरत चतुरई क्यों
तुमबेगु बजाय बुलाई । बिधि मर्याद लोक की लज्जा सबै त्यागि
हमधाई आई । अब तुमको ऐसी न बुझिये आश निराश करौजनि
साई । सोइकुलीन सोई बड़भागिनि जे तुव सन्मुखरहैं सदाई । तेधनि
पुस्य नारिधनितेई पंकज चरगा रहे दृढताई । सूरदास कहि कहा
बखानै यहनिशि यहअंग सुन्दरताई ३२ ॥ रागयमकली ॥ बिनती सुनि
श्याम सुजान । अतिहिमुख अपमान कीन्हो दृढन इनते आन । अब
करो दुखदूरि इनको भजौतजि अभिमान । बिरह दन्द निवारिडारों
अधररसदै पान । मनहिं मन यह मुख करत हरि भये कृपा निधान ।
सूरनिप्रचय भजीमोको नहींजानतिआन ३३ ॥ रागबिलावल ॥ मोहिबिना
ये और न जानै । बिधि मर्याद लोककी लज्जा त्वाहंते घटि मानै ।
इनमोको नीके पहिंचान्यो कपट नहीं उरराख्यो । साधु साधु पुनि
पुनि हरयित ह्वै मनहींमन यह भाख्यो । पुनि हंसिकहेउ निदुरताधरि
कैक्योत्याग्यो गृहधर्म । सूरश्यामसुख कपटहृदयरति युवतिनकेअति

भर्म ३४ ॥ राग गौडमलार ॥ तजौनंदलाल अतिनिदुरई गहिरहे कहा पुनि
 पुनि कहत धर्म हम को । यहीढंग रहेवचन सबकटुकहे वृथायुवतिन
 देहे मेदिप्रराको । बिमुख तुमतेरहैं तिन्हिं हम क्योंगहैं कलहहैं तहां
 दुखदेह भारी । कहा सुतपति मातपितकुल कहाकहा संसारबिन बन-
 बिहारी । हमहिंसमभाय यहकहौ बनवारि कहा तुम कहानाहिंसम
 जानै । सुनहु प्रभु सूर तुमभले की बेभले सत्यकरिकहौ हमअबहिं मा-
 नै ३५ ॥ राग रामकनी ॥ तुमहिं बिमुख धृग धृग नर नारि । हमतौ यह
 जानति तुवमहिंसा को सुनिये गिरिधारि । सांचीप्रीति करीहम तुम
 सेां अन्तर्यामी जानो । गृहजनकी नहिं पीरहमारे वृथाधर्म हठठानो ।
 पापपुण्य दोऊपरित्याग्यो अबजोहोय सो होई । आशनिराशसूरके
 स्वामी ऐसीकरै न कोई ३६ ॥ राग जेतथी ॥ आश जनितोरहु श्यामह-
 मारी । बेगानादधुनिमुनि उठिवाई प्रकटतनामसुरारी । क्योतुमनिदुर
 नाम प्रकटायो काहे बिरदभुलाने । दीनआजु हमते कोउनाहीं जानि
 श्याममुसकाने । अपने भुजदण्डनि करगहिये बिरहसलिल में फांसी ।
 बारवार कुलधर्म बतावत ऐसे तुम अविनासी । प्रीतिवचन नौका को
 राख्यो अंकमभरि बैठावहु । सूरश्याम तुमबिन गतिनाहीं युवतिनपार
 लगावहु ३७ ॥ रागनट ॥ चितदै सुनहु अंबुज नैन । कृपणा को गय भयो
 तुमको सरस अमृत बैन । हमगुणी नवबाल रिभूवति तुम तरुणा धन
 राशि । कैसेहु सुखदान दीजै बिरह दारिद नाशि । करहु यहग्रशनाथ
 त्रिभुवन निदुर कोटीखोलि । कृपा चितवनि भुज उठावहु प्रेमवचननि
 बोलि । दीनबाणी थचरा सुनि सुनि द्रवे परमकृपाल । सूरसकहु अंग
 न कांची धन्य धनि ब्रजबाल ३८ ॥ राग बिहारो ॥ हरिसुनि दीनवचन
 रसाल । बिरह व्याकुलदेखि बाला भरे नयन विशाल । चारु आनन
 नीरधारा बरगिकापै जाय । सनहुं सुधा तड़ाग उछलै प्रेमप्रकट दिखाय ।
 चन्दमुखपर निदरिबैठे सुभागजोर चकोर । पिवत मुख भरिभरि सुधा
 शशि गिरत तापरभोर । हरखबाणी कहत पुनि पुनि धन्यधनि ब्रज-
 बाल । सूरप्रभु करिकृपा जोहेउ सदयभये गोपाल ३९ श्यामहंसिबोले
 प्रभुता डारि । बारम्बार बिनय करजोरत कटिपट मोद पसारि । तुम
 सन्मुख में बिमुख तुम्हारो में असाध तुमसाध । धन्य धन्य कहिकहि

युवतिन को आप करत अनुराध । मोको भजी एकचित हँकै निदरि
 लोक कुलकानि । सुतपति नेहतेरि तिनकासों मोहिँ निजकरि जानि ।
 जाकेहाथ पेड़ फलताको सो फल लहेउ कुमारी । सुरकृपा पूरणा सों
 बोले गिरि गोवर्द्धन धारी ४० ॥ रागसूत्र ॥ कहत प्रयास श्रीमुख यह
 बानी । धन्यधन्य दृढ़नेह तुम्हारो बिनदामन मो हाथबिकानी । नि-
 र्दय बचन कपटके भाये तुम अपने जिय नेक न आनी । भजी निशंक
 आय तुम मोको गुरु गुरुजनकी शंक न मानी । सिंहरहै जम्बुक शर-
 गागत देखी सुनी न अकथ कहानी । सुरप्रयास अंकम भरि लीन्हे
 बिरह अगिनि भर तुरत बुझानी ४१ ॥ रागमाह ॥ कियो जेहि काज
 तप घोषनारी । देखै फलहैं तुरत तुमलेहु अवधरी हरय चितकरहु दुख
 देहु डारी । रासरस रच्यो मिलिसङ्ग बिलसहु सबै बख्खहरि कहेउ जो
 निगमबारी । हँसत मुख निरखि बचन अमृत बरयि कृपारस भरे शा-
 रङ्गपानी । ब्रजयुवति चहँपास मध्य सुन्दर प्रयास राधिका बाम अति
 छवि बिराजै । सुर नव जलदतन सुभग प्रयासलकान्ति इन्दु बहुकांति
 बिच सुभगछाजै ४२ ॥ रागनट ॥ हरिमुख देखि फूले नयन । हृदय हर-
 यित प्रेम गदगद नहीं आवतबैन । काम आतुर भजीगोपी हरि मिलैं
 तेहिभाय । प्रेमबधु कृपाल केशव जानिलेत सुभाय । परस्पर मिलि
 हँसत रहैसत हरयि करत बिलास । उमगि आनंदसिन्धु उछलै प्रयास
 से अभिलास । मिलति यक्यक भुजनभरिकै रासरुचि जिय आनि ।
 तेहिसमय मुखप्रयास प्रयासा सुर क्योंकहै गानि ४३ ॥ राग बिहागरो ॥
 रासरुचि जबहिं प्रयास मनआनी । करहु शृङ्गार सँवारि सुन्दरी हँसत
 कहत हरिबानी । जो देखै अँग उलटे भयरा तरुणा तरुणा मुमुकानी ।
 बारबार प्रियदेखि देखि मुख पुनिपुनि युवति लजानी । नवसतसाजि
 भई सबटाढो को छवि सकै बखानी । बंह छवि निरखि अधीरजं भइ
 तनु कामनारि बिततानी । कुचभुज परसि करी मन इच्छा कछु तन
 लया बुझानी । सुनहु सुर रसरास नायका सुन्दरि राधारानी ४४ ॥
 राग सोरठ ॥ अञ्जल चञ्चल प्रयास गहेउ । लैगये सुभग पुलिन यमुनाके
 अँगअँग भेय लहेउ । कल्पतरोवर तट बंशीबट राधा रति गृह धाम ।
 तहां रासरस रङ्ग उपायो संगसोहत ब्रजबाम । मध्य प्रयासघन तडित

भर्म३४ ॥ राग गोंडमलार ॥ तजौनंदलाल अतिनिदुरई गहिरहे कहा पुनि
 पुनि कहत धर्म हम को । यहीहँगा रहेवचन सबकटुकहे वृथायुवतिन
 दहे मेदिप्रसाको । बिमुख तुमतेरहैं तिनहिं हम क्योंगहैं कलहहै तहां
 दुखदेह भारी । कहा सुतपति मातपितकुल कहाकहा संसारबिन वन-
 बिहारी । हमहिंसमभाय यहकनै बनवारि कहा तुम कहानहिंसम
 जानै । सुनहु प्रभु सूर तुमभले की बेभले सत्यकरिकहै हमअबहिं मा-
 नै ३५ ॥ राग रामकनी ॥ तुमहिं बिमुख धृग धृग नर नारि । हमतौ यह
 जानति तुवमहिमा को सुनिये गिरिधारि । सांचीप्रीति करीहम तुम
 सेां अन्तर्यामी जानो । गृहजनकी नहिं पीरहमारे वृथाधर्म हठठानो ।
 पापपुण्य दोऊपरित्याग्यो अबजोहोय सो होई । आशनिराशसूरके
 स्वासी ऐसीकरै न कोई ३६ ॥ राग जेतथी ॥ आश जनितेरहु श्यामह-
 सारी । बेगुनादधुनिमुनि उठिवाई प्रकटतनामसुरारी । क्योंतुमनिदुर
 नाम प्रकटायो काहे बिरदभुलाने । दीनआजु हमते कोउनाहीं जानि
 श्याममुसकाने । अपने भुजदण्डनि करगहिये बिरहसलिल में फांसी ।
 बारबार कुलधर्म बतावत ऐसे तुम अविनासी । प्रीतिवचन नौका को
 राख्यो अंकमभरि बैठावहु । सूरश्याम तुमबिन गतिनाहीं युवतिनपार
 लगावहु ३७ ॥ रागनट ॥ चितदे सुनहु अंबुज नैन । कृपणा को गथ भयो
 तुमको सरस अमृत बैन । हमगुणी नवबाल रिश्वति तुम तरुणा धन
 राशि । कैसेहु सुखदान दीजै बिरह दारिद नाशि । करहु यहग्रशनाथ
 बिभुवन निदुर कोटीखोलि । कृपा चितवनि भुज उठावहु प्रेमवचननि
 बोलि । दीनबाणी अथवा मुनि मुनि द्रवे परमकृपाल । सूरसकहु अंग
 न कांची धन्य धनि ब्रजबाल ३८ ॥ राग बिहारो ॥ हरिमुनि दीनवचन
 रसाल । बिरह व्याकुलदेखि बाला भरे नयन विशाल । चारु आनन
 नीरधारा बरसाकापै जाय । मनहुंमुधा तड़ाग उखलै प्रेमप्रकट दिखाय ।
 चन्दमुखपर निदरिबैठे सुभागजोर चकोर । पिवत मुख भरिभरि मुधा
 शशि गिरत तापरभोर । हर्यबाणी कहत पुनि पुनि धन्यधनि ब्रज-
 बाल । सूरप्रभु करिकृपा जोहेउ सदयभये गोपाल ३९ श्यामहंसिबोले
 प्रभुता डारि । बारम्बार बिनय करजोरत कटिपट गोद पसारि । तुम
 सन्मुख में बिमुख तुम्हारो में असाध तुमसाध । धन्य धन्य कहिकहि

युवतिन को आप करत अनुराध । मोको भजी एकचित हूँकै निदरि
 लोक कुलकानि । सुतपति नेहतेरि तिनकासों मोहिँ निजकरि जानि ।
 जाकेहाथ पेड़ फलताको सो फल लहेउ कुमारी । सुरकृपा पूरणा सों
 बोले गिरि गोवर्द्धन धारी ४० ॥ रागमूहो ॥ कहत प्रयास ओ मुख यह
 बानी । धन्यधन्य दृढनेह तुम्हारो बिनदामन मो हाथबिकानी । नि-
 र्दय बचन कपटके भाये तुम अपने जिय नेक न आनी । भजी निशंक
 आय तुम मोको गुरु गुरुजनकी शंक न मानी । सिंहरहै जम्बुक शर-
 गागत देखी सुनी न अकथ कहानी । सुरप्रयास अंकम भरि लीन्हे
 बिरह अगिनि भर तुरत बुझानी ४१ ॥ रागमाह ॥ कियो जेहि काज
 तप घोघनारी । देखँ फलहौं तुरत तुमलेहु अबधरी हरय चितकरहु दुख
 देहु डारी । रासरस रच्यो मिलिसङ्ग बिलसहु सबै बख्खहरि कहेउ जो
 निगमबारी । हंसत मुख निरखि बचन अमृत बरयि कृपारस भरे प्रा-
 रङ्गपानी । ब्रजयुवति चहुँपास मध्य सुन्दर प्रयास राधिका बाम अति
 छवि बिराजै । सुर नव जलदतन सुभग प्रयासलकान्ति इन्दु बहुकांति
 बिच सुभगछाजै ४२ ॥ रागनट ॥ हरिमुख देखि फूले नयन । हृदय हर-
 यित प्रेम गदगद नहीं आवतबैन । काम आतुर भजींगोपी हरि मिलै
 तेहिभाय । प्रेमवश्य कृपाल केशव जानिलेत सुभाय । परस्पर मिलि
 हंसत रहंसत हरयि करत बिलास । उमगि आनंदसिन्धु उछलै प्रयास
 से अभिलास । मिलति यक्यक भुजनभरिकै रासरुचि जिय आनि ।
 तेहिसमय मुखप्रयास प्रयासा सुर क्योंकहै गानि ४३ ॥ राग बिहागरो ॥
 रासरुचि जबहिं प्रयास मनआनी । करहु शृङ्गार सँवारि सुन्दरी हंसत
 कहत हरिबानी । जो देखै अँग उलटे भयगा तरुणा तरुणा मुमुकानी ।
 बारबार पियदेखि देखि मुख पुनिपुनि युवति लजानी । नवसतसाजि
 भई सबठाढी को छवि सकै बखानी । वह छवि निरखि अधीरजं भइ
 तनु कामतारि बिततानी । कुचभुज परसि करी मन इच्छा कछु तन
 लया बुझानी । सुनहु सुर रसरास नायका सुन्दरि राधारानी ४४ ॥
 राग सोरठ ॥ अञ्जल चञ्चल प्रयास गहेउ । लैगये सुभग पुलिन यमुनाके
 अँगअँग भेय लहेउ । कल्पतरोवर तट बंशीबट राधा रति गृह धाम ।
 तहां रासरस रङ्ग उषाये संगसोहत ब्रजबाम । मध्य प्रयासघन तडित

भामिनी अति राजत शुभजोरी । सूरदास प्रभु नवल छबीले नवल छ-
बीली गोरी ४५ ॥ रागटोड़ी ॥ जहां प्र्यामघन रास उपायो । कुंकुमजल
मुख वृष्टि रसायो । धरणी रज कर्पूर में भारी । विविध सुमन छवि
न्यारी न्यारी । युवतीजुरि मण्डली बिराजै । बिच बिच कान्ह तसुगि
बिच भ्राजै । अनुपम लीला प्रकटि दिखायो । गोपिनको कीन्हो मन
भायो । बिच प्रीश्याम नारिबिच गोरी । कनकखम्भ मरकत खचि
धोरी । शोभासिंधु हिलोरि हिलोरी । सूरकहा बरसौं मतिथोरी ४६
रागगोडमलार ॥ रासमण्डल बने प्र्यामश्यामा । नारी दुहुँ पास दुहुँ पास
गिरिधर बने शशिबीस द्वादश उपमा । मुकुटकी छवि कहा उपमाकही
नयन जानत नहीं देहजानै । सुभग नवमेघ ताबीच चपला चमकि नि-
रखि नितंत मोरहरिय सानै । करति आनन्दपिय संगललना पुंज बढ़त
रसरंग सखा सखाहिँ ओरै । सूरप्रभु रासरस नागरी मध्यदोउ परस्पर
नारिपति मनहिँ चोरै ४७ परस्पर प्र्याम ब्रजबाम सोहैं । शीश श्री
खण्ड कुण्डल जटित मणि अवगा निरखि छवि प्र्याम मन तसुगि
सोहैं । नासिका ललित बेशरिबनी अधरतट सुभगताटक छवि कहित
जाय । धरणि पग पटकि करभटकि भौंहनि मटकि अटकि मनतहां
रोम्हे कन्हाय । तब चलतहरि मटकिरहीं युवती भटकि लटकि खटकि
छवि निवारै । कहति प्रभुसूर बहुरेउ चलो वैसेही हमहुँ वैसेचलैं जो
निहारै ४८ निरखि ब्रजनारि छविप्र्याम लाजै । विविध बेसी रची
सांग पाटी सुभगभाल बैदीबिन्दु इन्दुलाजै । अवगाताटङ्क लोचनचारु
नासिका हंसखञ्जन कीर कोटि लाजै । अधर बिद्रुम दशन नहींछवि
दामिनी सुभग बेशरि निरखि कामलाजै । चिबुकतर कण्ठसरीमाल
मोतिन छवि कुच उमगत हेमगिरि अतिहि लाजै । सूरकी स्वामिनी
नारि ब्रजभामिनी निरखि पियप्रेम शोभा मुलाजै ४९ ॥ राग बिहामरी ॥
बनि ब्रजनारि शोभा भारि । पगनि जेहरि लाल लहंगा अङ्ग पचरंग
सारि । किङ्किणीकटि कुनितकंकणा करचुरीभनकार । हृदयचौकि
चटाकिबैठी सुभगमोतिनहार । कण्ठसरि दुलरीबिराजत चिबुकप्र्या-
मलबिन्द । सुभग बेशरि ललितनासा रोम्भिरहे नंदनन्द । अवगा बर
ताटङ्क की छवि गोर ललित कपोल । सूरप्रभु ब्रज अतिभयेहैं निरखि

लोचनलोल ५० ॥ रागजेतथी ॥ सुरगणा दृढे विसानन देखत । ललना सहित सुमनगणा बरघत जन्म ब्रजहि को लेखत । धनि ब्रजलोग धन्य ब्रजबाला बिहरत श्रीराधा गोपाल । धनि बंशीबट धनि यमुनातट धनि धनि लतातमाल । सबते धन्य धन्य वृन्दावन जहां कथा को बास । धनि धनि सूरदास के स्वायी अहुत राख्यो रास ५१ ॥ रागबिलावल ॥ नयन सुफल अब भये हमारे । देवलोक निशानबजाये बरघत सुमनसुधारे । जय जय धुनि किन्नर मुनिगावत निरखत योग बिसारे । शिवशारद नारद यहभायत धनिधनि नन्ददुलारे । सुर शरणापति गतिबिसराये रही निहारिनिहारि । जातननेक देखि सुखहरिको आइलोकबिसारि । यह छबिहू विभुवन कहूँ नाहीं जो वृन्दावन धाम । सुन्दरता गुणारसकी सीवां सुदराधिका प्र्याम ५२ ॥ रागआसावरी ॥ हमको विधि ब्रजबधू न कीन्हीं कहा अमरपुर बासभये । बारबार पछिताति यहै कहि सुख होतो हरि संगरये । कहा जन्मजो नहीं हमारो फिरि फिरि ब्रजअवतारभलो । वृन्दावनद्रुमलता हजिये कर्तासों मांगिये चलो । यह बांकना होय क्यों पुरादासीहै बरु ब्रजमें रली । सूरदासप्रभु अन्तर्यामी तिनहिं बिना कासों करली ५३ ॥ रागबिहागरी ॥ धन्यनन्द यशुदाकेनन्दन । धन्य खंड पीतशिर लटकनिकुंडल धनि मृगमदचन्दन । धन्य राधिका धनि सुन्दरता धनि मोहन कीजोरी । ज्यों घनसगमें दामिनि की छवि यह उपमा कहैं थोरी । धनि मंडली जुरी गोपिनकी ताबिच नन्दकुमार । राधा सम सबगोपकुमारी कीडत रासबिहार । यददश सहस घोषसुकुमारी यददश सहस गोपाल । काहूँसों कहूँ अंतर नाहीं करत परस्पर ख्याल । धनि ब्रजबास आशयह परगाँवसे होत हमारी । सूर अमर ललनागणा अम्बर विद्यकी लोके बिसारी ५४ ॥ रागमूडो ॥ तरुतमाल गोपाल लाल बनमाल श्रीवधर हृदय विशाल । कबहुँक गेधन संग लैबाल कबहुँ फिरत संगसखा खाल । धनि ब्रजनाथक कियो सहारि प्रेयिप्रीतिपाल । कबहुँ बनि केहरि रहैं बनजाय गोशसदान लेत संग गाय पैठिपताल । नाथ्यो काली काल फाफा प्रति निरत बिबिध ताल । भूयसासुकुट जडेउ चुन्नी लाल धन्य सूरप्रभुता धरे राजै संग बजाल ५५ ॥ रागकान्हरी ॥ कुंडल लोलकपोल बिराजत दशन च-

मक चण्या जालीतलक शोभित धिर केशरि नयना बिबिबि बने ।
 कटि काळनी चन्दन खौरि प्रयास बरसा घनसुन्दर ऐसे नटनागर कै
 जैयेरी बारने । शिभंगीह्वैवृत्त करत व्रजयुवतिन मंडलविचहुं दुहुं विच
 प्रयास घने । दोरसुकुट श्रीशधर राजतहँसूरप्रभु निरखिनिरखि अमर
 जयजय धुनि भने ५६ ॥ रागधनाश्री ॥ रासमंडल मध्य प्रयासराधा । मनोघन
 जीच दामिनी कौंधति सुभग एकहँस रूप है नहीं बाधा । नायकाअसह
 दिशा सोहहिं बनी चहुँपाससबगोप कन्या । मिले सब संगनहिलखति
 कोउ परस्पर बनेयददा सहसकृपा सैन्या । सजे शृङ्गार नवसातजग-
 मगि रहेउ अङ्ग भूषण रैन बनी तैसी । सूर प्रभु नवल गिरिधर नवल
 राधिका नवल व्रजसुता मण्डली जैसी ५७ ॥ रागमौरी ॥ युवति अंगरूप
 निरखत प्रयास । नन्दकुमार श्रीअङ्ग साधुरी अवलोकति व्रजवास ।
 परीदृष्टिकुच उचनि पिथाकी वह सुख कहैउ न जाय । अँगिया नील
 माइनी राती निरखत नयन चुराय । वे निरखत केयूर भुजकी छवि
 पहुंचनिपहुंचीभाजति । कर पल्लवन मुद्रिका सोहति ता छविपर मन
 लाजति । वदनविंदु निरखत हरि रीझै शशिपर बालविभास । नन्द-
 लाल व्रजबाल सुखवि क्यों बरगै मूरजदास ५८ प्रयासतन राजत पी-
 तपिछौरी । उर बनमाल काळनी काळे कटि किङ्किरिा छवि रौरी ।
 बेगीसुभग नितस्वनिडोलति मन्दगामिनी नारि । सुयनि जघन बांधि
 नारा बँद तिरनी पर छविभारि । नखनि रंग जावककी शोभा देखत
 पिय मन भावत । सूरदास प्रभु तन विभङ्ग है युवतिन मनाहिं रिभावत
 ५९ ॥ रागविहागरी ॥ निरत प्रयास नानारंग । मुकुटलटकनि प्रकटि मट-
 कनिधरे नटवर अङ्ग । चलति गतिकटि करित किङ्किरिा घुंघुल भन-
 कार । मनो हंस रसाल बागी अरश परश बिहार । लसतिकर पहुंची
 उपाजय मुद्रिका अति ज्योति । भावसों भुज फिरत जबहीं तबहिंशोभा
 होति । कबहुं निरत नारि गतिपर कबहुं निरत आप । सूरके प्रभु
 रसिक की मणि रच्यो रास प्रताप ६० गति सुगन्ध निरत व्रज-
 नारि । हाव भाव नयजन सैनन देवै रिभरति गिरिधारि । पग पग
 पटकि भुजन लटकावति फूँदा करनि अनूप । चञ्चल चलत भूसका
 अंचल अद्भुत है वह रूप । दुरि निरखत अंगरूप परस्पर दोउ मनहीं

सन रीभक्त । हँसिहँसि बदन बचनरस प्रकटत प्रवेत अङ्ग जल भोजत ।
 देसी छूटि लटै बगराजी युक्त लटकै लटकानो । फूल खखत शिरते
 भये न्यारे लुभग स्वात्तिवृत मानो । गान करति नागरी रीभक्त प्रिय
 लीन्ही अंकमलाय । रसबसुहृद् लपटायरहे दोउ सूर सखी बलिजाय
 ६१ ॥ रागमेरी ॥ निरत अङ्ग अभूयसा बाजत । गति सुगन्ध शोभा वह
 देखत यकतेयक अतिराजत । कहत न बनैरह्यो रससेसोबरसातबरसा
 न जाय । तैसेइ बने प्रयास तैसिय बनि गोपी छवि अधिकाय । कं-
 कणा चुरी किङ्किणी नूपुर पगजनि बिछिया सोहत । अद्भुत धुनि
 उपजत इन मिलिकै भ्रामि भ्रमि इत उत जोहत । सुनि सुनि अवसा
 रीभक्तमनहींमनराधा रासरसजा । सूरप्रयास सबके मुखदायक लायक
 गुणानुसाजा ६२ ॥ रागकेवारी ॥ उघटत प्रयास निरतति नारि । धरे अधर
 उपगउपजै लेतहँ गिरिधारि । तालगुरुजरबाब बीसा किन्नरी रससार ।
 शब्द संगमृदंग मिलवत सुधर नंदकुमार । नागरी सब गुणानि आगारि
 मिलिचलतिप्रियसङ्ग । कबहुंगावतिकबहुंनित्तति कबहुंउघटतिरङ्ग ।
 मराडली गोपाल गोपी अङ्गअङ्ग अनुहारि । सुरप्रभु घननवलभामिनि
 दामिनी छवि डारि ६३ ॥ रागबिहागरी ॥ नित्ततहँ दोउ प्रयासाप्रयास ।
 अङ्ग मगन प्रियतेप्र्यारी अति निरखि चकत ब्रजबास । तिरपलेति
 चपलासी चमकति भ्रमकत भूषणा अङ्ग । या छविपर उपसा कहुं
 नाहीं निरखत विवश अनङ्ग । श्रीराधिका सकलगुणा पूरणा जाके
 प्रयास अधीन । संगते हेत नहीं कहुं न्यारे भये रहत अति लीन ।
 रस समुद्र मानो उछलितभयो सुन्दरताकी खानि । सूरदास प्रभुरीभि
 धाकितभये कहत न कछु बखानि ६४ ॥ रागकल्याण ॥ कबहुंप्रियहरथि
 हिरदय लगावैं । कबहुं लैलै तान नागरीसुधरअतिवधर नन्दसुवनको
 मन रिभावैं । कबहुं चुम्बन देति आकर्षिजिय लेति करति बिनबेत
 वशहेत अपने । मिलति भुज कंठदै रहति अङ्ग लटकिकै जात दुख दूरि
 हँ भक्तिकि सपने । लेति गहि कुचनि बिच देति अधरनि असृत एक
 कर चिबुक यक शीश धारै । सूर प्रभुकी स्वामिनी प्रयाससन्मुख हँ
 निरखि मुख नयन यकटक निहारै ६५ ॥ रागबिहागरी ॥ रसबस प्रयास
 कीन्हे नारि । अधर रस अचवत परस्पर संग सब ब्रज नारि । काम

आतुर भजी बाला सबन पुरई आश । सकयक ब्रजनारिइकइक आप
करेउप्रकाश । कबहुं निरत कबहुं गावतकबहुं कोकबिलाश । सूरके
प्रभु रासनायक करतसुखदुख नाश ६६ ॥ रागकल्याण ॥ हरिगुरलीनादश्याम
कीन्हो । कथिं मन तिहुंभुवन सुनत थकि रहेउ पवन शशिहि भूल्यो
गसन ज्ञान लीन्हो । तारकागगा लजै बुद्धि मन मन सजै तबहिं तन
सुधि तजै शब्द लाख्यो । नाग नर मुनि थके नभ धरणि तनतके शा-
रदा शम्भु शिव ध्यान जाख्यो । ध्यान नारद दरेउ शेष आसनचल्यो
गई बैकुण्ठनि गगनस्वामी । कहत श्रीप्रिया सों राधिकारवरा ये सूर
प्रभु श्याम के दरश कासी ६७ ॥ रागबिहागरो ॥ मुरलीधुनि बैकुण्ठगई ।
नारायणा कमलामुनि दम्पति अतिरुचि हृदय भई । सुनहु प्रियायह
बाणी अद्भुत वृन्दावन हरि देख्यो । धन्य धन्य श्रीपति सुख कहि
कहि जीवन ब्रजको लेख्यो । रास बिलास करत नंदनन्दन सो हमते
अति दूरि । धनि ब्रजधाम धन्य ब्रजधरणी उडि लागै जो धूरि । यह
सुख तिहुंभुवनमें नाही जोरि सङ्ग पल सक । सूर निरखि नारायणा
थकटक भूले नयन निमेष ६८ ॥ राग आसावरी ॥ जो सुख श्याम करत
वृन्दावन सोसुख तिहुंपुर नाहीहो । हमको कहा मिलत रज उनकी
यह कहिकहि अकुलाहीं हो । सुनहु श्रीप्रिया सत्य कहतहैं मोतेऔर
न कोई हो । नन्दकुमार रासरस सुखबिन वृन्दावन नहिं होईहो । हर्ता
कर्ताको प्रभु मैहीं वह मोतेहैं न्यारोहो । सूर धन्य राधाबर गिरिधर
धनि सुख नन्ददुलारो हो ६९ ॥ रागकल्याण ॥ जब हरि मुरली नाद प्र-
काश्यो । जङ्गम जड थावर चरकीन्हो पाहन जलज बिकाश्यो । स्वर्ग
पताल दशौ दिशि पूरणा धुनि अच्छादित कीन्हो । निशिबर कल्प
समान बढ़ाई गोपिनको सुख दीन्हो । सैमतभये जीव जल थलके तन
की सुधि न संहार । सूरप्रियाम सुखबेरा सधुर मुनि उलटे सब व्यव-
हार ७० ॥ रागपूर्वी ॥ मुरली गति बिपरीति कराय । तिहुंभुवन भरि
नाद समान्यो राधारसगा बजाय । बछराथन नाहीं सुखपरसत चरति
नहीं दगाधेनु । यमुना उलटी धार चली बहि पवन थकित सुनिबेनु ।
बिह्वलभये नहीं सुधि काहू सूर गन्धर्व नर नारि । सूरदास सब चकत
जहांतहं ब्रजयुवतिन सुखकारि ७१ ॥ राग केदारो ॥ मुरली सुनत अचल

चले । धके चर जल भरत पाहन विफल वृक्षफले । पथ स्रवत गोध-
ननि धनते प्रेम पुलकित गात । भुरेद्रुम अंकुरित पल्लव बिटप चंचल
पात । सुनत खग मृग मौन साध्यो चित्रक्री अगुहारि । वरणा उमगि
नसति धरमें यती योग विसारि । खाल गृह गृह सहज सोवत उदय
सहज सुभाय । सूरप्रभु रसरामके हित सुखदरौनि बढाय ७२ ॥ रागवि-
हागरे ॥ दूल्ह दुल्हिन प्रयामा श्याम । कोक कला व्युत्पन्न परस्पर
देखत लज्जित काम । जा फलको ब्रजनारि कियोव्रत सो फलसबनि
दियो । मनकामना भयो परिपूरण सबही मानिलियो । राग रागिनी
प्रकट दिखाये गाये जो जेहिरूप । सप्तसुरन के भेद बतावति नागरि
रूप अनूप । अतिहि दुधरि पियको मनमोहति अपवश करति रिक्ता-
वति । सूरप्रयाम मोहन सूरतिको बारवार उरलावति ७३ ॥ रागसंकली ॥
श्यामा प्रयाम रिक्तावति भारी । मन मन कहति और नहिं मेसी पिय
के कोऊ प्यारी । धुवाबिन्द धुरपद यश हरिके हरिही गायसुनावति ।
आपन रीझि कन्त को रिक्तवति यह जिय गर्ब बढावति । नितति
उघटति गति सङ्गति पद सुनत कोकिला लाजति । सूरप्रयाम नागर
नागरिविच ललनामण्डलि राजति ७४ रिक्तवति पियहि बारम्बार ।
निरखि नयन लजाति हरिहैं नहीं शोभा पार । चलि सुलप गज हंस
मोहति कोककला प्रवीन । हंसि परस्पर तान गावति करति पियहि
अधीन । सुनत बन मृग होत व्याकुल रहत चकत आय । सूरप्रभु वश
किये नागरि महाजाननि राय ७५ प्यारी प्रयामलई उरलाय । उरज
उरसों परश को सुख बरणा कापै जाय । कनक छवि तनु मलय ले-
पन निरखि भासिनि अङ्ग । नासिका शुभ बास लै लै पुलक श्याम
अनङ्ग । देत चुम्बन लेत सुखको मानि पूरणभाग । सूरप्रभु वशकिये
नागरि वदति धन्य सुहाम ७६ ॥ रागविहागरे ॥ रीझे परस्पर बरनारि ।
कंठ भुज भुज धरे दोऊ सकति नहिं निरवारि । गौर प्रयाम कपोल
सुललित अधर अमृत सार । परस्पर दोउ पियरु प्यारी रीझि लेत
उगार । प्राण यकद्वै देह कीन्हे भक्ति प्रीति प्रकाश । सूरत्वामी स्वा-
मिनी मिलि करत रङ्ग बिलाश ७७ गावत प्रयाम प्रयामारङ्ग । सुधर-
हती नागरी अलापति सुरहि धरत पियसङ्ग । तान गावति कोकिला

सनो नाद अलि मिलि देत । मोरसङ्ग चकोर डोलत आप अपने हेत ।
 भामिनी अंग जोन्ह सानो जलर प्रियामल गात । परस्पर दोउ करत
 क्रीडा मनहिं मनहिं सिहात । कुचन बिच कच परम शोभा निरखि
 हँसत गोपाल । मूर कञ्चन गिरि बचनि मनो रहेउ है अँधकाल ७८
 मोहन मोहनी रसभरे । भौंह मोरनि नयन फेरनि तहांते नहिंदरे । अङ्ग
 निरखि अनङ्ग लज्जित सकैनहिं ठहराय । एककी कहचलै शतशत
 कोटि रहत लजाय । इते पर लट हस्ति गति छवि निरत भेद अपार ।
 उडत अञ्जल प्रकटि कुच दोउ कनक यदरस सार । दरकि कंचुकि
 तरकि साला रही धरणी जाय । मूर प्रभु करि निरखि करुणा तुरत
 लई उचाय ७९ ॥ रागजेतथी ॥ प्रेम सहित साला करलीनी । प्यारी
 हृदय रहति यह जानी भुवपर नाहिं पतीनी । पीतवसन लै अम जल
 पोछत पुनिलै कंठ लगाई । चरणान कर परसत हैं अपने कहत अतिहि
 अमपाई । कुचअम देखिपवन मुखहीके फुंकि भुरावत अङ्ग । सूरदास
 प्रभु भौंह निहारत चलत बिया के रङ्ग ८० ॥ रागमेख ॥ हाहा हो पिय
 निरत करो । सेसेकरि मैं तुमहिं रिभाई त्यों मेरो मन तुमहुं हरो । तुम
 जैसे समबाय करतहौ तैसे मैंहुं डुलाऊंगी । मैं अमदेखि तुम्हारे अंग
 को भुजभरि बंठ लगाऊंगी । मैं हारी त्योंहीं तुम हारो चरणचापि
 अम भेटौंगी । सूरप्रियाम ज्यों उछंगलई मोहिं त्यों मैंहुं हँसि भेटौंगी ८१
 राग रामकली ॥ निरतत प्रियाम प्रियामाहेत । मुकुट लटकनि भृङ्गटि मटकनि
 नारिसन मुखदेत । कबहुं चलत सुगन्ध गतिषों कबहुं उघटतबैन । लोल
 कुण्डल गण्डमण्डल चपल नैननि सैन । प्रियामकी छविदेखि नारि
 रही इकटक जोहि । सूरप्रभु उरलाय लीन्हो प्रेम गुणिकारि पोहि ८२
 राग कमोदमलार ॥ अरुकि कुण्डल लटबेशरि सों पीतपट बबमाल बिच
 आनि उरभे बै दोउजन । प्रागानसों प्राग नयन नयन सों अटकिरहे
 चटकीली छविदेखे लपटात प्रियामघन । होडाहोड़ी निरत करें रीभि
 रीभि अङ्गभरें ततार्येइ थ्येथ्येइ उघटत हैं मगन । सूरदास प्रभु प्यारी
 मण्डली युवती भारी नारिको अञ्जल लैलै पोछत हैं अमकन ८३ ॥
 राग अङ्गने ॥ मोहनलाल सङ्ग ललना यों सोहैं ज्यों तनुतमालन के दिग
 सुभाग सुमन जरद को । बदनकांति अनूपभांति नहिं संहारति नीलां-

वर रागनमैनवधन बिच प्रकट्यो शशिगशाशरदको । मुक्तालर तारा-
गशा प्रतिबिम्बित बेशरिको चूनो मिलिरङ्ग जैसे हात हरदको । सूर
दास प्रभु मोहन गोहनकी छविबाढी भेटत दुख निरखि नैन सैन दरद
को ८४ ॥ रागपूर्वी ॥ नन्दनन्दन सुधरराय मोहन बंशी बजाय सरिगम
पधनिशा सप्तधुरन्गाय । अतित अनाघात सङ्गीत सुधर और तांत मि-
लाय । सुरध्याय तालध्याय निरुद्धाध्याय निपुणाराय मृदङ्ग बजाई । मूरज
प्रभु नवलबाल सकलकला गुणाप्रवीण अरश परश रीभिरिभाई ८५
राग बिहागरो ॥ पियसंगखेलत अतिक्रयमभयो आवरी हांको बयारि ।
अपनो अञ्चल लै लै सुखउ सखीरी रुचिर बदन थम कनके बारि ।
नित्त उलटिगये अंगभूषणा बिहुरी अलक बांधों सवारि । सुनहुँसूर
पियप्यारीको मिलन जाहि न सुहाय ताहि डारेवारि ८६ ॥ रागकंदारो ॥
प्यारी देखि बिह्वल गात । नन्दनन्दन देखिरीभे अङ्क भरि लपटात ।
कबहुँ लेहिं उठझि वाला कहि परस्पर बात । प्रेम रसकरि मिलेदोऊ
नयनमिलिसुसुकात । रासरसकामना पूरा रैन नहीं बिहात । सूर
प्रभुसंग ब्रजतरुनि मिलि करत सुख न सिरात ८७ ॥ रागकल्याण ॥ रच्यो
रासरङ्ग प्रयास सबही सुखदीन्हे । सुरली सुर करि प्रकाश खग मृग
सुनि रसउदास युवतीतजि गेहवास बनिहिं गवन कीन्हे । मोहेसुर असुर
नाग मुनिजन गरा भयेयाग शिवशारद नारदादि चकृत भये जानी ।
अमर गरा अमर नारि आई लोकनि बिसारि ओक ओक त्यागि
कहत धन्य धन्य बानी । थकित भयो गति समीर चन्द्रमाभयो अधीर
तारागशा लज्जित भये मारग नहिं पावै । उलटि यमुन बहतधार बि-
परित सबहीबिचार सुरजप्रभुसंगनारि कौतुकउपजावै ८८ ॥ रागटोड़ी ॥
नन्दकुमार रासरसकीन्हे । ब्रजतरुनि मिलिकै सुखदीन्हे । अद्भुत
कौतुक प्रगटिदिखाये । कियोप्रयास सबहिन मनभाये । बिबंशोपी
बिच मिलिगोपाला । मरिा कञ्चन सोहत शुभमाला । राधा मोहन
सध्य बिराजै । त्रिभुवनकी शोभा ये भाजै । रासरंग रस राख्यो भारी ।
हावभाव नानागति न्यारी । नित्त अङ्ग थकितभई नागरि । रूपगु-
णानकरि परमउजागरि । उमगिप्रयासप्रयासा उरलाई । बारम्बारकहेउ
थमपाई । कंठकंठभुजदोऊजोरे । घनदामिनि छूटतनहिंछोरे । सूरप्रयास

युवतिनमुखदाई । राधाजिय अतिगर्वबढाई ८९ ॥ रागसूहे ॥ तब नागरि
जियगर्वबढायो । मोसमानविय और नहींकोउ गिरिधर मेंही बषाकरि
पायो । जोइजोइकहति करत सोईपिय मेरेहि हितयह रास उपायो ।
सुन्दरिचतुर और नहिंमोसी देहधरेकोभावजनायो । कबहुंक बैठिजाति
हरिकरधरि कबहुं कहति में अतिग्रमपायो । सूरप्रथामगहिकंतरही
विय कन्वचढो यहवचन सुनायो ९० ॥ रागबिलावल ॥ कहै भासिनी
कन्त सों मोहिंकन्व चढावहु । नृत्य करत अति ग्रमभयो ताअनहिं
मितावहु । धरणी धरत बनेनहीं पगअतिहिपिराने । बियाबचनसुनि
गर्व के पियमनमुसुकाने । मैंअबिगत अजअलखहीं यहमर्ग न पायो ।
भाव बषय सबपै रहेउ निगमन भरमायो । एक प्राणा द्वै देहहैं दुविधा
नहिंयामें । गर्वकियो नर देहले में रहौ न तामें । सूरज प्रभु अंतर भये
संगते तजि नारी । जेजे जहां तहां रहीं सबघोष कुमारी ९१ ॥

यहांते ठाकुर अन्तर्द्वानभये ॥

रागबिहागरी

॥ तब हरि भये अन्तर्द्वान । जब कियो मन गर्व प्यारी
कौन मोसीआन । अति यकित भई चलत मोहन चलि न मोपैजाय ।
कंठभुज गहिरही यहकहि लेहुजबहिं चढाय । गयेसङ्ग बिसारि रसमें
बिरस कीन्हीवाल । सूरप्रभुदुरि चरितदेखत तुरतभई बेहाल १ ॥ राग
ढोड़ी ॥ प्रथामगये युवतीसबत्यागी । चकतभईतरुणीसबै निशिजागी ।
प्यारी संगन लेगये बिहारी । कुंजलता सब तरुणी डारी । संग नहीं
तहाँगिरिवरधारी । चहूँदिशा तन दृष्टि पसारी । प्रीतिमुरझि तब स-
कल कुमारी । कामबर लीन्हे शरमारी । कहि कहि कहांगये बन
वारी । भई व्याकुल सब सुरत बिसारी । नयन सजिलभीनो सबनारी ।
सूरसंग तजिगये हुरारी २ व्याकुलभई घोषकुमारि । प्रथामतजिसङ्गते
कहांगये यह कहति ब्रजनारि । दशौदिशि नभ द्रुमनि देखति च-
क्रित भई बेहाल । राधिका नहिं तहांदेखीकहेउ वाकेख्याल । कछुक
दुख कछु हर्य कीन्हे कुंज लैगये प्रथाम । सूरप्रभु संग देखि हसको
करे सेसेकाम ३ ॥ रागबिहागरी ॥ तबकुञ्जनि चलीं ब्रजनारी । सदाशधा
करति दुविधा देति रसकी गारी । संगही लैगई हरिको सुखकरति ब-
यारी । जहांजैहैं ढुंढिलैहैं महा रसिक निवारी । चरणाचिन्हनि चली

देखत राधिका जाहिं । सूरप्रभु पग दरशि गोपी हसहिं हर्यमुमुकाहिं
 ४ ॥ रागकान्हरी ॥ हर्य युवतिसब कहत परस्पर प्यारी वे अब कहां गये
 री । श्याम काम तनु आतुर उपमा बश्य भयेरी । एनि देखियत चिह्न
 पग युवती पियपग चिह्न न पावैं । की पियको प्यारी उरलीन्हे यह
 कहि भ्रम उपजावैं । वै गिरिधर उरधरि कों लोहिं व बहि गिरिधर
 उरलीन्हे । सुरभई आतुर व्रजनारी पियप्यारी पग चीन्हे ५ ॥ राग
 बिलावल ॥ जो देखे द्रुमके तरे मुरछी सुकुमारी । चकत भई सब सुन्दरी
 यहती राधारी । यहीका खोजति सबै यहरही कहारी । वाय परीं
 सब सुन्दरी जो जहां तहारी । तनकी तनकहु सुविनहीं व्याकुल भई
 बाल । यहतो अतिबेहाल है कहँ गये गोपाल । बार बार बभूत सबै
 नहिं बोलति बानी । सुरश्याम काहे तजी कहि सब पछितानी ६ ॥
 रागभैरों ॥ क्योंराधा नहिं बोलतिहै । काहे धरशापरी व्याकुलहै काहे
 नयनन खोलतिहै । कनकबेलिषी क्यों मुरभानी क्यों बन सांभ अ-
 केलीहै । कहां गये मनमोहन तजिके काहे बिरह दहेली है । श्याम
 नाम अवगानि धुनि सुनिके सखियनि कंठ लगावति है । सुरश्याम
 आये यह कहि कहि ऐसे मन हर्यवति है ७ ॥ राग बिहागरे ॥ कहांरहे
 अबलौं तुमश्याम । नयन उधारि निहारि रही तहँ जो देखे ब्रजबाम ।
 लागी करन बिलाप सबनिसों श्यामगये मोहिं त्यागि । तुमको नहीं
 मिले नंदनन्दन बभूतिहै तबजागि । निरखि बदन वृथभानकुंवरिको
 मनो सुधाबिन चन्द । राधाबिरह देखि बिरहानी यह गति बिन नंद
 नन्द । या बन में कैसे तआई श्यामसङ्गहें नाहीं । कहु जानति कहँगये
 कन्हाई तहां तोहिं लैजाहीं । मैं हठकियो वृथारीमाई जिय उपज्यो
 अभिमान । सुरश्याम ऊपर मोहिं आनी हँगये अन्तर्धान ८ ॥ रागका-
 न्हरी ॥ मैं अपने मन गर्ब बढाये । इहै कहेउँ पिय कन्ध चढौंगी तब
 मैं भेद न पाये । यह वाणी सुनि हँसे कंठ भरि भुजनि उछड़ि लई ।
 तब मैं कहेउँ कौनहै मोसी अन्तर जानिलई । कहांगये गिरिधर मोको
 तजि ह्यां कैसे मैं आई । सुरश्याम अन्तरभये मोते अपनी चूकसुनाई ९
 रागबिहागरे ॥ रुदनकरति वृथभानकुमारी । बारबार सखियनि उर ला-
 वति कहांगये गिरिवारी । कबहुं गिरितधरशापिर व्याकुल देखि दशा

ब्रजनारी । भरि अकवारि धरति मुख पोंछति दोत नयन जलहारी ।
 प्रिया पुसखसों भाव करति है जानै निहुर मुरारी । सूरप्रयास कुलधम्म
 आपनी लये रहत बनवारी १० ॥ राग गौरी ॥ नंदनन्दन उनको हम जानति ।
 बालन सङ्ग रहत जो माई यह कहिकहि गुणागानति । बनवन धेनुच-
 रावत बासर प्रिया बधत डरनाहीं । देखिदशा लुखभानसुताकी ब्रजतस-
 रणी पछितःहीं । कहा भयोप्रिय हठ जो कीन्हे यहनबूझिये प्रयासहिं ।
 मुरदासप्रभुमिलहु कृपाकरि दूरिकरो मन तामहिं ११ ॥ राग कल्याण ॥ रा-
 धिकासों कहैउ धोरमन धरिरी । मिलैगे प्रयास व्याकुल दशाजनि करै
 हरयजियकरो दुखदूरिकरिरी । आप जहांतहां गई बिरह सबपगिआई
 कुँवरिसों कहि गई प्रयासल्यार्वे । फिरति बनवन बिकल सहस सोरह
 सकल ब्रह्म पूरया अकल नहीं पावै । कहां गये यह कहति सबैसग जो
 वही कामतनु दहति ब्रजनारि भारी । सूरप्रभु प्रयास प्रयासा चरित
 देखहीं गर्व अन्तर हृदयहेत नारी १२ ॥ राग बिलावल ॥ प्रयास सबको
 देखिही वे देखति नाहीं । जहांतहां व्याकुल फिरैं तनु धीरज नाही ।
 कोउ बंशीबदको चलेकोउ बनघनजाहीं । देखिभूमिवहरासको जहँतहँ
 पगछाहीं । सदा हठीली लाडिली कहिकहि पछिताहीं । नयन सजल
 जल दारिके व्याकुल मनमाहीं । यकयक ह्वै बन हंडहीं तरुणी बिक-
 लाहीं । सूरज प्रभु कहूँ नहिं मिलै हंडत दुसपाहीं १३ ॥ राग रामकली ॥
 कहिधौंरी बन बलिकहँ तें देखेहँ नंदनन्दन । बूझहुधौं मालती कहँतें
 पायेहँ तनुचन्दन । कहिधौं कुई कदम्ब बकुल बट चम्पक ताल तमा-
 ल । कहिधौं कमल कहाँ कमलापति सुन्दर नयन विशाल । मुरली
 अधर सुधारसलै तरु रहे यमुन के तीर । कहि तुलसी तुम सब जानति
 है कहँ घनप्रयास शरीर । कहिधौं मृगी मया करि हमको कहिधौं
 मधुप मराल । सूरदास प्रभुके तुमसंगी हैं कहँ परस दयाल १४ ॥ राग
 आसावरी ॥ कहूँ न देखोरी मधुवन में साधो । कहांधौं रावतक्रिया क-
 हाँधौं बिलमिरहे नयनसरत दर्शनकी साधो । जबते बिहुरे प्रयासंतव-
 ते रहे न जाय सुनहुसखि मेरोई अपराधो । सूरदासप्रभु बिनकैसे में
 जीऊंमाई घटत घटत घटिरहेउ प्राणआधो १५ ॥ कहँ पाऊंरी सब हू-
 दति बन घनप्रयास सुन्दर परिवारों तनमन । नयननि चटपटी मेरेतबते

ललीरहत कहाँ प्राणायारो निरधनिनको धन । चम्पकजुही गुलाल
बकुलबहुली तरुतरु प्रतिबभूति कहुं देखेनंदनन्दन । सूरदासप्रभु रास
रसिक बिनु राम रसिकिनी बिरह बिकलकरि भईहैं सगत १६ ॥ राग
काफ़ी ॥ कोउकहुं देखेरी नंदलाल । साँवरो सलोना ढोटा नयन रसाल ।
भोरमुकुट उरबनमालबिभाल । पीताम्बर सोहैसोहै मनगोपाल । निशि
बनगई जहां सबै ब्रजबाल । अन्तर्ध्यान भये रचि खयाल । द्रुमद्रुम
ढुंढत भई बेहाल । सूरश्याम बिनबाला परीं बिरह जंजाल १७ ॥ राग
बागेश्वरी ॥ मोहनी मोहनके टेरे । होकान्ह येहीसँगयेही मनमेरे । सेसो
सँगतजिहूरिभये क्योंसमुझि परीहरि गैयनिधेरे । चकसानिहसलीन्ही
अपनी कैसेहु लाल बहुरि फिरि हेरे । कहियत है तुम अन्तर्ध्यासी
पूरयाकामसबकेरे । ढुंढतिहै द्रुमबेली वालाभई बेहाल करत औसरे ।
सूरदासप्रभु रासबिहारी श्रीवनवारी वृथा करत काहे भोरे १८ ॥ राग
अडाने ॥ होकान्हये बातेंहैं तिहारी बनवारी सुखहीमें भयेन्यारे । सक
संग सक सतीप रहतहैं निततजि कहां सिधारे । अब करिकपामिलव
करुणामय कहियत है सुखकारी । सूरश्याम अपराध क्षमहु अब स-
मुझी चूकहसारी १९ ॥ राग पसारी ॥ केहिमारग में जाउँ सखीरीमारग
बिसरेउ । नाजानो कित ह्वैगये मोहिंजात न जानिपरेउ । अपना पिय
ढुंढत फिरौंरी मोहिं मिलिवेकोचात्र । कौटालारयो प्रेमको पियग्रह
पायोदाव । बनडंगर ढुंढतफिरी घरमारग तजिगाउँ । बूझेद्रुम प्रति
खूबरा कोउकहै न पियको नाउँ । चकतभई चितवत फिरौंरी व्या-
कुल अतिहि अनाथ । अबके जो कैसेहु मिलौ तौ पलक न तजिहौं
साथ । हृदय माँझ पियघर करौरी नयनन बैठक देउ । सूरदास प्रभु
संग मिलौंरी बहुरि रासरस लेउ २० ॥ राग खी ॥ कान्ह प्यारी कहूँ
पायोरी । श्याम श्याम कहि कहति फिरति यहधुनि वृन्दावन छा-
योरी । गर्वजानि पियअन्तर ह्वैरहे सो मैं वृथा बढ़ायोरी । अबबिन
देखे कलन परत क्षण श्यामसुन्दर गुण गायोरी । मृगी मृगानि द्रुम
खगरस सारस पिककाह नहीं बतायोरी । सूरदास प्रभु मिलहु कृपा
करि युवतिन टेरि सुनायोरी २१ ॥ राग बिहागरे ॥ हो कान्ह मैं तुमहिं
चाहौं तुमकाहे नहिंआवो । तुमतन तुमधन तुममन भावो । कियो चाहौं

अरुण परशकरो नहीं माना । सुन्यो चाहैं अवरुण सधुर मुरली की
 ताना । कुञ्ज कुञ्ज जपति फिरति तेरे गुणानकी माला । सूरप्रभु बेगि
 मिलौ मोहिं मोहन नंदलाला २२ ॥ राग काफ़ी ॥ सखि मोहिं मोहनलाल
 मिलावै । ज्योंचकोरचन्दाको यक्यक भृङ्गी ध्यानलगावै । बिनदेखे
 मोहिं कलन परैरी यहकहि सबनि सुनावै । बिनकारणा मैं मानक-
 योरी अपनेहिंमन दुखपावै । हाहाकरि पायँनपरिराधा हरिहरिटेर
 लगावै । सूरप्रथामबिनकोटिकरौं जोऔर नहीं जियआवै २३ ॥ राग आसावरी ॥
 हैंतौहंदि फिरिआईमाईरीसिगरी रुन्दावन कहँनहिंपाये नंदनन्दना ।
 अनतौह रहेजाय कौनेधौं राखे छिपाय मोको न कछु सोहाय कहां
 जाय रहे कामकन्दना । मोहिते परीरी चूक अन्तर भयेहैं जाते तुमसों
 कहति बातें मैंहीं कियो दंदना । सूरदासप्रभु बिन भईहैं बिकलआली
 कहारहे बनमाली सुर नर मुनिजन बन्दना २४ ॥ राग बिलावल ॥ मिलहु
 प्रथाममोहिं चूकपरी । तेहि अन्तर तनकी सुधिनाहीं रसना रटलागी
 नदरी । धरिणा परी व्याकुल भइ बोलति लोचन धारा अंशुभरी ।
 कबहुँ मगन कबहुँ सुधिआवति शरणा शरणा कहि बिरहजरी । कृष्णा
 कृष्णाकहि टेर उठति है युगसम बीतति पलकधरी । सूरनिरखि ब्रज
 नारि दशा वह चकतभई जहँ तहांपरी २५ देखि दशा सुकुमारि की
 युवती सबधाई । तरुतमाल पंखतिफिरैं कहि कहि मुरभाई । नंदनन्दन
 देखेकहँ मुरली करधारी । कुण्डल मुकुट बिराजई तन प्रथामलभारी ।
 लोचनचारु बिशाल हैं नासा अति लोनी । अरुणा अधर दशनावली
 छवि बरगो कोनी । बिम्ब परवारे लागही दामिनि द्युति धोरी । ऐसे
 हरि हमको कहे कहँदेखे हेरी । अङ्ग अङ्ग छवि कहकहै देखे बनि-
 आवै । सूरप्रथाम पावैं नहीं कोकाहि बतावै २६ ॥ राग बिलावल ॥ अति
 व्याकुल भई गोपिका हँडति गिरिधारी । बूझतिहैं बनबेलिसों देखे
 बनवारी । जाही जूही सेवती कमुना कनिआरी । बेलिचमेली मालती
 बूझति दुम डारी । खूभा सरुआ कुन्द सों कहैं गोद पसारी । बकुल
 बदरि बर कदमपै ठाहीं ब्रजनारी । बारबार हाहाकरैं कहँहो गिरि-
 धारी । सूरप्रथामको नामलै लोचन जलहारी २७ कहँ न पाये प्रथाम
 को बूझति बनबेली । सबैभई व्याकुल फिरैं तनमदन दहेली । मृगनारी

सेां बूझहीं बूझे सुकुमारी । कमल सरोवर बूझहीं विरहातनु मारी ।
 कनकबेलखी सुन्दरी द्रुमके तरनारी । मनु दामिनि धरणीपरी कीधौं
 पनारी । इत उतते फिरि आवई जहँ राधा प्यारी । सुरप्रियाम अजहूँ
 नहीं करि मिलत कृपाली २८ करतिहैं रुचिर चरित ब्रजनारि । देखि
 अतिही बिकल राधा यहै बुद्धि विचारि । इक भई गोपाल की बपु
 इक भई बनवारि । इकभई गिरिधरन समरथ एकभई दैत्यारि । एक
 इकभई धेनु बछरा एक भई नँदलाल । एक भई यमला उधारसा एक
 विभक्ति रसाल । एकभई छबिराम-मोहन कहत राधानारि । एककहति
 उठि मिलहु भुजभरि सूर प्रभु की प्यारि २९ ॥ रागजैतथी ॥ सुनत धुनि
 अग्रसा उठि मिलहु भुजभरि अकुलाय । जो देखै नँदनन्दनहिँ वै सखि-
 यन भेषबनाय । कहा कपटकरि मोहिं देखावति कहां प्रियाम मुखदाय ।
 कृपा कृपा शरणागत कहिके बहुरि गिरी भहराय । पनि दोरीं जहँ
 तहँ ब्रजबाला बनद्रुम शोर लगाय । सुरदास प्रभु अन्तर्यामो बिरहनि
 लेहु जिवाय ३० ॥ राग कान्हरो ॥ कृपासिंधु हरिप्रसाद करोहे । अनजाने
 मन गर्ब दढाये सो अपने जनि हृदय धरो हे । सारहसहस पीर तनु
 एकै राधा जिव सब देह । ऐसीदशा देखि करुणामय प्रकट्यो हृदय
 स्नेह । गर्बहत्यो तनुबिरह प्रकाशये प्यारी व्याकुल जानि । सुनहुँसूर
 अब दरशनदीजै चूकलई इनमानि ३१ ॥ रागबिहांगरो ॥ राधे भूलि रही
 अनुराग । तरुतर रुदन करति अलसानी दुँडिफिरी बनबाग । कवरी
 प्रसित शिखराड़ी यहिध्रम चरणा शिली मुखलाग । बासीमधुरजानि
 पिक बोलत कदम करो रत काग । कर पल्लव किशलय कुसुमाकर
 जानि प्रसित भय कीर । राकाचन्द्र चकार जानिके पिवत मैन को
 नीर । बिह्वल बिकलजानि नँदनन्दन प्रकट भये तेहिकाल । सुरप्रियाम
 हित प्रेमाङ्कुर उर लायलई भुज माल ३२ ॥ रागकान्हरो ॥ नँदनन्दन उर
 लाय लई । नागरि प्रेम प्रकट तनुव्याकुल तबकरुणा हरि हृदयभई ।
 देखिनारि तरुतर सुरेष्ठाणी देहदशा सब भूलिगई । प्रियाजानि अंकम
 भरिलीन्ही कहिकहिं ऐसीकाम हई । बदन बिलोकि कंठ उठि लागी
 कनकबेलि आनन्द जई । सुरप्रियाम फल कृपा दृष्टि भये अतिहि भई
 आनन्दमई ३३ प्रकटभये नँदनन्दन आई । प्यारीनिरखि बिरहअति

व्याकुल धरते लई उदाई । अभय भुजाभरि अंकम दीन्हो राखी कंद
 लगाई । प्राणाहुते प्यारी तुममोरे यह कहि दुख बिसराई । हंसत भये
 अन्तर हस तुमसों सहज खेल उपजाई । धरणी सुरछि परी तुम काहे
 कहांगई चतुराई । राधा सकुचिरही मनजान्यो कहेउ न कछु सुहाई ।
 सूरदास प्रभु मिलि सुख दीन्हो दुख डारेउ बिसराई ३४ ॥ राग मृदंग ॥ अ-
 न्तरते हरि प्रकट भये । रहत प्रेमके बश्य कन्हारै युवतिन को मिलि
 हरष दये । वैसहि सुख सबको फिरि दीन्हो वहै भाव सब मानि लियो ।
 प्रहजानति हरिसंग तबहिंते उहै बुद्धि सब यहै हियो । वहै रासमंडल
 रस जानति बिच गोपी बिच श्याम धनी । सूर प्रयाम श्यामा सधि
 नायक उहै परस्पर प्रीति धनी ३५ ॥ राग सारंग ॥ बहुरि प्रयाम सुख रास
 कियो । भुजभुज जोरि जुरीं ब्रजबाला वैसै हीरस उमगि हियो । वैसहि
 मुरलीनाद प्रकाशयो वैसहि सुरनर बश्य भये । वैसहि उडगगा सहित
 निशापति वैसहि मारग भलि गये । वैसहि दशाभई यमुना की वैसहि
 गति तजि पवन यक्यो । वैसहि निर्ति रङ्ग बढायो वैसहि बहुरेउ काम
 जक्यो । वाहि निशा वैसहि मन युवती वैसहि हरि सबानि भजे । सूर
 श्याम वैसहि मन मोहन वैसहि प्यारी निरखिल जे ३६ ॥ राग बिहारी ॥
 श्याम छवि निरखति नागरिनारि । प्यारी छवि निरखत मन मोहन
 सकत न नयन पसारि । पिय सकुचत नहिं दुष्टि मिलावत सन्मुख होत
 लजात । श्रीराधिका निदरि अवलोकति अति हिह दय हर्षति । अरश
 परश मोहन मोहनि मिलिसंग गोपी गोपाल । सूरदास प्रभु सब गुण
 लायक दुष्टनके उरशाल ३७ रचि रसरस प्रयाम सुजान । प्रथम मुरली
 नाद करि हरि हरेउ सबको जान । सबन उलटी रीतिकीन्ही देवसुर नर
 आदि । ब्रजबधूसन कामपूरण कियो पुस्त्य अनादि । सहज सुख निशि
 ग्वाल सोवत सोरची यदमास । हेत युवती सुख बढावत कियो पूरण
 आस । मेदि अन्तर ध्यानको दुख वहै राख्यो भाव । सूर प्रभु सहिमा
 अगोचर निशम अन्त न पाव ३८ ॥ राग नट ॥ मोहनरचेउ अद्भुतरास ।
 संग मिलि वृषभानत नया गोपिका चहुँ पास । एकही सुर सकल मोहे
 मुरलिसुधा प्रकास । जलहु थलके जीव थकिरहे मुनिन मनहिं उदास ।
 प्रकित भयो समीर सुनिके यमुन उलटी बार । सूर प्रभु ब्रजबास मिलि

वन निशाकरत बिहार ३६ बिहरत रसरङ्ग गोपाल । नवलप्रयासासंग
 सोहत नवल सब ब्रजबाल । शरदनिशि अति नवल उज्ज्वल सबलता
 बनवास । परमनिर्मल पुलिन यमुना कल्पतरु बिश्राम । कोशदादश
 रास परमिति रचेउ नन्दकुमार । सूरप्रभु सुखदियो निशिरसि काम
 कौतुकहार ४० ॥ राग ललित ॥ रासरसि अमित भई ब्रजबाल । निशि
 सुखदै यमुनाजल लैगये भोरभयो तेहि काल । मनकामना भई परि-
 पूरणा रही न सकौ साध । थोड़श सहस नारि संगमोहन कीन्हो सुख
 आगाध । यमुनाजल बिहरत नन्दनन्दन संगमिली सुकुमारि । सूरधन्य
 धरणी वृन्दावन रवितनयासुखकारि ४१ ॥ रागगोडमलार ॥ संगब्रजनारि
 हरिरास कीन्हो । सबन की आशपूरणा करी श्यामले बियनपतिहेत
 सुखमानि लीन्हो । मेदि कुलकानि मर्याद बिधि वेदकी त्यागि गृह
 नेह सुनि बेगुवाई । फबी जे जे करी मनहिं सबते धरी शंक काहु न
 करी आप भाई । ज्यों महामत्त राज यूथ करिणीलिये कूलसरफोरि
 डर काहिमानै । सूरप्रभु नंदसुत निर्दरि निशिरस करेउनाग नरलोक
 सुर सबै जानै ४२ ॥

अथ जलक्रीड़ा

रागगोडमलार ॥ रैनिरसरास सुखकरत बीती । भोरभये गयेपावन य-
 मुनाके सलिल न्हात सुखकरत अति बड़ी प्रीती । एक एक मिलति
 हँसि एकहरि संगहँसि एकजलमध्य यकतीर टाढी । एकएक डरति
 एकअंकभरिकै चलति एकसुख लरतिअति नेहवाढी । काहुनहिं डरत
 जलथलहु क्रीडाकरत हरत मननिदरि ज्यों कन्ततारी । सूरप्रभु श्याम
 प्रयासा संगगोपिका मिठी तनुसाध भइ मगनभारी १ ॥ रागसोढ ॥ साध
 नहीं युवतिन मन राखी । मन बांछना सबन फलपायो वेद उपनिषद
 साखी । भुजभरिमिलीकटिन कुचचापे अधरमुधारसचाखी । हावभाव
 नयननिर्भननि दै बचन रचनसुखभाखी । शुकभागवत प्रकटकरि गायो
 कहूँ नहुबिधाराखी । सूरश्यामब्रजनारि सङ्ग हरिबाकीरही न कांखी २
 रागकान्हो ॥ धनि शुकसुनि भागवत बखान्यो । गुरु की कृपा भई जब
 पूरणा तवरसना करिगान्यो । धन्य श्याम वृन्दावनको सुख संतभयेते
 जान्यो । जोरस रासरंग हरिकीन्हो वेद नहींदहरान्यो । सुर नर सुनि

मोहित सब कीन्हो शिवहि समाधि भुलान्यो । सूरदास तहँ नयन
 बसाये और न कहँ पत्थान्यो ३ ॥ रागधनाश्री ॥ मैं कैसे रसरसहिगाऊं ।
 श्रीराधिका प्रयासकीप्यारी तुमदिन कृपा बास ब्रज पाऊं । अन्यवेद
 सपनेहुं नहिं जानौ दम्पति को शिरनाऊं । भजन प्रताप चरणा सहि-
 माते गुरुकी कृपा दिखाऊं । नवनिक्कुञ्ज बनधाम निकट एक आनंद
 कुटी रचाऊं । सुरकहा बिनतीकरि बिनवै लाभ जन्म यह ध्याऊं ४
 रागबिलावल ॥ तुमहीं सोको ढीठकियो । नयन सदा चरणान तर राखे
 मुख देखत नहिं गनतबियो । प्रभु तुम मेरी सकुच मिटाई जोइ सोइ
 सांगत पेलि । सांगो चरणा शरणा वृन्दावन जहां करत नित केलि ।
 यहबाणी भजनीक अवता बिन सुनत बहुत शरमाऊं । श्रीवृन्दाभानसुता
 पतिसेऊं सुरज कत भरमाऊं ५ ॥ रागबिहाारी ॥ रास रसलीलागाय सुना-
 ऊं । यह यशकहे सुने मुख अवगान तिन चरणान शिरनाऊं । कहा
 कहाँ बक्ता श्रोता फल इकरसनाक्यों गाऊं । अससिद्धि नवनिधिसुख
 संपति लघुताकरि दरशाऊं । जो परतीति होय हिरदयमें जासाया
 धृग देखै । हरिजन दरश हरिहिसमपूजै अन्तर कपट न भाखै । धनि
 बक्ता तेई धनि श्रोता प्रयास निकट हैं ताके । सुरधन्य तिनके पितु
 माता भाव भजनहै जाके ६ ॥ रागबिलावल ॥ वृन्दावन हरिरास उपायो ।
 देखिशरदनिशि रुचि उपजायो । अद्भुत मुरलीनादसुनायो । युवतिन
 सुनि तन दशा गँवायो । मिलिवाई मनकोफल पायो । जंगमचलेजु
 चलनि थिरायो । उलरी यमुना धार बहायो । सुनि सुनि चंचल पवन
 थकायो । सुरनर मुनिको ध्यानभुतायो । चन्दागन सारगबिसरायो ।
 रूपदेखि मनकाम लजायो । रसमें अंतर बिरस जनायो । युवतिन के
 तन बिरह बढायो । बहुरि मिले हित अति उपजायो । फेरि रास स-
 गडली बनायो । हावभाव करि सबनि रिक्तायो । कल्परैनि रसहेत
 उपायो । प्रातसमय यमुनातटआयो । नारिनके निशि अमहिं मिठायो
 युवतिन प्रतिप्रति रूपबनायो । शिवनारदशारद यहगायो । ध्यानदरेउ
 चित्त तहाँलगायो । राधाबरनिजनामकहायो । सूरदास कहुकहु कहि
 गायो । रसाकन्त जा मुखको ध्यायो । सो मुख नंदसुवन ब्रजपायो ७
 रागगौरी ॥ यमुना जल क्रीडत नंदनन्दन । गोपीवृन्द सनोहर चहँ दिशि

मध्य अरिष्ट निकन्दन । पकरेपाशा परस्पर छिरकत शिथिल सलिल
 भुजचन्दन । मनोयुवति पूजति अहिपतिको लग्यो अङ्गदै बन्दन । कच
 भरि कटिल सुदेश अङ्गकन चुवत अङ्गगति मन्दन । मानहु भरि मंडूय
 कमलपर डारत अतिआनन्दन । भुज भरि अङ्ग अगाध चलत लै ज्यों
 लुब्धक खगफन्दन । सूरदासप्रभु सुयश बखानत नेतिनेति श्रुतिचन्दन ८
 रागकान्हरो ॥ बिहरतहैं यमुनाजल श्याम । राजत हैं दोउ बांहांजोरी द-
 म्पति अरु व्रजवास । कोउ टाढी जलजानु जङ्गलों कोउ कटि हिरदय
 शीव । यह सुख बरगिासकै ऐसे को सुन्दरता की सीव । प्र्याम अङ्ग
 चन्दनकी आभा नागरि केशरि अङ्ग । मलयज पङ्ककुङ्कुमा मिलिकै
 जल यमुना इकरङ्ग । निशिधम मित्यो मित्यो तन आलस परसि यमुन
 भइ पावन । सूरप्र्याम जल मध्य युवतिगया जन जनके मन भावन ९
 जलक्रीडा सुख अतिउपजायो । रासरङ्ग मगते नहिं भूलत बहैभेद मन-
 आयो । युवती कर करजोरि मगडली श्यामनागरी बीच । चन्दन अङ्ग
 कुङ्कुमा हूस्त जलमिलि तटभइ कीच । जो सुख प्र्याम करत युवतिन
 संग सो सुख तिहुंपुर नाही । सूरप्र्याम देखत नारिनको रीझिरीझि
 लपटाहीं १० ॥ राग बिलावल ॥ बिहरत नारि हंसत नंदनन्दन । अङ्गम
 भरिभरि लेत अनन्दन । निर्मल देह छूट तनु चन्दन । अतिशोभा त्रिभु-
 वन जगबन्दन । कञ्चनपीठि नारिअंग शोभा । वे उनको वे उनकोलोभा ।
 कबहुं अङ्गभरि चलत अगाधहि । अरश परश छेत मनसाधहि । कोउ
 भाजै कोउ पाछे धावै । युवतिन सेा कहि ताहि संगावै । ताको राहि
 अथाह जल डारै । सुख व्याकुलता रूप निहारै । कंठलगाय लेत पुनि
 ताही । देत अलिङ्गन रीझत जाही । सूरप्र्याम व्रज युवतिन भोगी ।
 जाको ध्यावत शिवमुनि योगी ११ ॥ रागटोड़ी ॥ ऐसे प्र्याम वप्रयराधा
 के । नामलेत पावन आधाके । प्यारी प्र्याम छंजुली डारै । वा छवि
 को चितलाय निहारै । मनोजलद जलडारत डारै । मनमनहीं तनमन
 धनधारै । निरखि रूपनहिं धीर सन्हारै । सूरप्र्यामको अङ्गम धारै १२
 रागललित ॥ राधे छिरकति छैल छबीली । कुच कुङ्कुम कंचुकि बंदूटे
 लटकिरही लटगीली । बंदन शिर ताटङ्ग गगड पर रतन जडित मारा
 लीली । गति गयन्द मृगराज मुकटि पर शोभित किङ्किरा ढीली ।

सचेउ खेल यमुनाजल अन्तर प्रेम मुदित रसकीली । नन्दसुवन भुजग्रीव
 बिराजत भाग सुहाग भरीली । बरयत सुमनदेवगगा हर्षित दुन्दुभिसरस
 बजीली । सूरप्रयास प्रयासा रसक्रीडत यमुना तरंग थकीली १३ ॥ राग
 रामकली ॥ प्रयासा प्रयास सुभग यमुनाजल विभ्रम करत विहार । पीत
 कमल इन्दीवर पर मनो भोरहि भये निहार । श्रीराधा अम्बुज कर
 भरिभरि छिरकत बारम्बार । कनक लता मकरन्द भरत मनु हालत
 पवन सँवार । अतसी कुसुम कलेवर बूंदें प्रतिबिम्बित मनुहार । ज्योति
 प्रकाश सुघनमें खोलत स्वातिसुवन आकार । धायधरे वृषभान सुता
 हरि मोहे सकल शृंगार । बिद्युत जलद सूर मनोबिधु मिलि अवत
 सुधाकी धार १४ रीभे प्रयास नागरि रूप । तैसिय लट बगरी उर
 ऊपर अवत नीर अनूप । अवत जलकुच परत धारा नहीं उपमा-
 पार । मनो उगिलत राहु असृत कनक गिरिपर धार । कुचन परसत
 प्रयाससुन्दर नागरी शरमाय । मूरप्रभु तनुकाम दयाकुल गये मनहिं
 जनाय १५ प्रयासाप्रयास अङ्गन भरी । उरज उर परसाय भुज भुज
 जोरिगाढेधरी । तुरत मनमुख मानिलीन्ही नारितेरि रंगहरी । पर-
 स्पर दोउ करतक्रीडा राधिका नवहरी । ऐसही सुखदियो मोहनसबै
 आनंद भरी । करति रङ्गहिलोर यमुना प्रेमआनंद भरी । रासनिशि
 थम दूरिकीन्हे धन्यबनि यहधरी । मूरप्रभु तट निकसि आये नारि
 सँग सबखरी १६ ॥ राग गूजरी ॥ ठाढ़ेप्रयास यमुना तीर । धन्य पुलिन
 पवित्र पावन जहाँ गिरिधर बीर । युवति बनिबनि भईठाढ़ी और प-
 हिरे चीर । राधिका सुख प्रयासदायक कनक बरगा शरीर । लाल
 चोली लीलडँडिआ संग युवतिन भीर । मूरप्रभु छवि निरखि रीभे
 संगन भयो मनकीर १७ ॥ राग नट ॥ ललकत प्रयास मन ललचात ।
 कहत हैं घरजाहु सुन्दरि मुख न आवत बात । यटसहसदश शोपक-
 न्या रैनभोगई रास । एकसरा भइकोउ न न्यारी सबनि परईआस ।
 बिहँसि सब घर घर पठाई ब्रजगई ब्रजबाल । मूरप्रभु नंदधाम पहुँचे
 लख्योकाहु न खयाल १८ ॥ राग बिलावल ॥ ब्रजबासी सबसेवतपाये ।
 नन्दसुवन ऐसी मतिदानी घरलोगन उनजाय जगाये । उदेप्रात गाथा
 सुखभायत आतुर रैन बिहानी । ऐहत अङ्ग जम्हात बदन भरि कहत

सबै यहबानी । जोजैसे सो तैसेलागे अपने अपने काज । सुरप्रियाम के
चरित अगोचर राखी कुलकीलाज १९ ॥ राग जैतथी ॥ ब्रजयुवती रस-
रासपगी । कियोप्रियामसबके मनभायो निशिरतिरङ्गजगी । पूरसाब्रह्म
अलख अविनाशी सवनसंग सुखदीन्हे । जितनीनारि भेयभये तितने
भेद न काहूचीन्हे । वह सुखतरत न काहूमनते पतिहित साधपुराई ।
सुरप्रियाम दूलह सब दुलहिनि निशिभाँवरि दैआई २० ॥ राग गुजरी ॥
प्रयासा प्रियामके उरबसी । रैन नित्तत भोरि पियमन तडितते छवि
लसी । प्रयासा तारस लगन डोलति सबत्रियन में जसी । कौककला
प्रवीणा सुन्दरि कन्तगुणा करकसी । करति सदन शृङ्गार बैठी अङ्ग
अंग प्रतिरसी । सुरप्रभु आये अचानक देखि तिनको हँसी २१ ॥ राग
रामकली ॥ पिय निरखत प्यारी हँसि दीन्हे । रोझे प्रियाम अङ्ग अंग
निरखत हँसि नागरि उर लीन्हे । आलिङ्गन दै अधर दशन खँडि
करगहि चिबुक उठावत । नासा सों नासालै जोरत नयन नयन पर
सावत । यहिअन्तर प्यारीउर निरखयो भुभुकिभई तबन्यारी । सुर
प्रियाम मोकोदिखरावन लयाये धरि कै प्यारी २२ ॥

यहाँति मान राधा जी को ॥

राग टोड़ी ॥ अबजानी पियवात तिहारी । मोसों तुमसुहकी निरवत
हो भावति है वह प्यारी । राखे रहत हृदय पर जाके धन्यभाग हैं
ताके । सेसी कहीं लखी नहिँ अबलौं बश्यभये यों याके । भलीकरी
यहवात जनाई प्रकट देखाई मोहिँ । सुरप्रियाम यह प्राणपियारी उर
में राखी पोहि २३ ॥ राग धनाथी ॥ सुनतप्रियाम चकत भयेवानी । प्यारी
पिय मुख देखि कछुक हँसि कछुक हृदय रिसआनी । नागरि हँसत
हँसी उरछाया तापरअति झुहरानी । अवर कांपिरिस भौंह मरोखो
मनहींमन गहरानी । यकटक चितैरही प्रतिबिम्बहि सौतिशालजिय
आनी । सुरदासप्रभु तुम बड़भागीबड़भागिनिजहिआनी २४ प्यारीसाँझ
कहति की हाँसी । काहेको इतना रिसपावत कत तुम होहु उदासी ।
पुनिपुनि कहति कहातबहींते कहा ठगीसीठाढी । यकटक चितैरही
हिरदयतन मनाचित्र लिखिकाढी । समुझीनहीं कहा मनआई सदन
वसै तुव आगे । सुरप्रियाम भये काम आतुरे भुजागहन पियलागे २५

मोहिँहुँऔ जिनिदूरि रहेजू । जाकेहृदय लगाय लईहै ताकी बाँह
 गहौजू । तुम सर्वज्ञ और सबसूरख सोरानी अरुदासी । मैं देखति हि-
 रदय वहबैठी हम तुमको भइहाँसी । बाँहगहत कहु प्रारम न आवत
 मुखपावत मनमाहीं । सुनहुसूर मोतन वह इकटक चितवति डरपति
 नाहीं २६ ॥ राग विलावल ॥ कहाभई धनि बावरी कहि तुमहिँ सुनाऊँ ।
 तुमते कोहै भावती केहि हृदय बसाऊँ । तुमहिँ अबरा तुम नयन हो
 तुमहींप्राणअवार । वृथाकोधविय कोंकरीयाँकहिबारम्बार । भुजगहि
 ताहि देखावहु जो हृदय बतावति । सूरजप्रभु कहै मागरी तुमते को
 भावति २७ ॥ राग नट ॥ साधव नाहिन दुरति जो हृदय बसति । ऐसी
 ढीठि मेरेजान तुमहीं कीन्हे है कान्ह मोहन मुख देखत न असति ।
 भुंकेते भुंकति भाल भुंकीते कुटिल किये हृखे हृखी ह्वैरहति हँसे
 हँसति । तबहींते यकटक चितवति वोहिजक वा उरते इतउत न धं-
 सति । जाहीसों लगत नयन ताही सों पगतबैन नखप्रखलों सबगात
 असति । जाकेहरिराचेरङ्ग सोईहै अन्तर संग काँचकी करौतीके जज
 ड्यों लसति । बिहँसिबोले गोपाल सुनिहै ब्रजकिबाल उखंगलेतकत
 धरशि खसति । अपनी छाया निहारि काहेको करति आरि काम
 की कसौटी सूरसकते कसति २८ ॥ राग कान्हरो ॥ काहेको हौ बात
 बनावत । अब तुमको पिय मैं पतिअतिहैं छाहँ आपनी धरशि ब-
 तावत । वा देखत हमको तुम मिलिहौ काहेको अनखावत । जैहै कहूँ
 निकसि हिरदयते जानिबुझि कोतेहि उचटावत । जो वहकहै करौ
 तुमसोई कहामोहिँ पुनिपुनि समुभावत । सूरप्रयास नागर वह नागरि
 भलेभलेजू मोहिँखिभावत २९ ॥ राग गोंड मलार ॥ वृथाहठदूरि किनकरौ
 ग्यारी । कहा रिसकरति ह्याँ छाँह अपनी देखि डरकोउ नहीं रिस
 जरतिभारी । तुमहिँ धनरहति मन नयन में तुमबसति कनक सेकसि
 लेहु कहाबैठी । चतुरई कहँबुद्धि कैसी भई चूकसमुझेबिना भोंहसँदी ।
 यहसुनतरिसभरीरही नहिँतहाँखरी ओढहैभरहरीमानु कीन्हे । जाहु
 सनमन कहेउ मैं बहुतसख लहेउ सौतिदिखराय मोहिँ सर दीन्हे ३०
 राग कल्याण ॥ कियो अतिमान वृथभान बारी । देखि प्रतिबिम्ब पिय
 हृदय नारी । मनहिँमन देतिअति ताहिगारी । कहाह्याँ करत लैजाहु

प्यारी । सुनत यहबचन पियबिरह बाढो । कियो अति नागरी सानु
गाढो । काम तनदहत नहिं धीरधारे । कबहुं बैठतउठत बारबारै । सूर
अति भये व्याकुल मुरारी । नयनभरिलेत जलदेतहारी ३१ ॥ राग बिहा-
गरे ॥ सानुकरेउ घियबिनु अपराधहि । तनुदाहत बिनु काज आपनो
कहत डरत जियबादहि । कहाँरही मुखमँदि भासिनी मोहिँछूक कछु
नाहीं । भ्रमकि रही क्यों चतुर नागरी देखि आपनीछाहीं । अजहूँ
दूरिकरो रिसउरते हिरदय जानबिचारो । सूरप्रयास कहिकहिपचि-
हारे हठकीन्हे जियभारो ३२ ॥ रागसेरठ ॥ प्रयासकाम तनचपटाकियो ।
सानुधख्यो नागरि जियगाढो सुख्यो कमलहियो । व्याकुलभये चले
वृन्दावन मिली दूतिका आनि । बारबार हरिबदन निहारति सकै न
दुख पहिँचानि । कैसीदशा आजु में देखति कहौ न मोहिँ सुनाय ।
सूरप्रयास देखे तुमव्याकुल आये कहा गँवाय ३३ ॥ राग गौरी ॥ व्या-
कुल बचन कहत हैं प्रयास । वृथानागरी सानुबढायो जोरकियो तनु
काम । यह कहतहि लोचन भरिआये पायो बिरह सहाय । चाहत
कहेउ भेद ताआगे बाणी कही न जाय । और सखी तेहिअन्तरआई
व्याकुल देखिमुरारि । सूरप्रयास मुखदेखि चकतभइ क्यों तनुरहे बि-
सारि ३४ ॥ राग बिहागरे ॥ कहति दूतिकासखिनबुझाई । आजुराधि-
का सानुकख्योहै प्रयासगये कुन्हिलाई । करसों करधरि लाल गइलै
सखिन सहित बनधाम । सुखदै कहेउलिये आवतिहैं संगबिलसाऊँ
बाम । मोआगे की महरि बिटिहिनी कहा करै वहमान । सुनहु सूर
प्रभुकितिक बातयह करौ न परराकाम ३५ ॥ राग भैरव ॥ प्रयासकुञ्ज
बैठारिगई । चतुर दूतिका सखियन लीन्हे आतुरताई जातलई । म-
नहींमन इकरची चतुरई यहैकहाँगी वातनई । अबहींलै आवति हैं
ताको इहोभई कछु बहुतदई । करिआई हरिसों परतिजा कहाकहै
वृथभानजई । सूरप्रयास सों मानकख्यो है आजहि सेसी कहाभई ३६
राग नट ॥ सखियनि संगलै तहाँगई । दूतिका सुखनिरंखि राधाजानि
हिरदयलई । अतिचतुरवृथभानतनया सहजहि बोलिलई । सहजबचन
प्रकाशकीन्हे कहा किरपा भई । तुरतही यह कहिसुनायो प्रयास
बोलतताहि । सूरप्रभुवन बोलिपदायो तोहिँ कारणामोहिँ ३७ ॥ राग

दोड़ी ॥ काहेको बन प्रयामबोलाई । याहीते तुमवाईआई । कहा कहीं
 तोकोरी माई । तुमहु भली अस भलेकन्हाई । अबयक नई मिली है
 आई । ताहीको अबलेहिं मिताई । ताको राखे हृदय दुराई । तोको
 ह्मांते दारि पठाई । सूरप्रयाम ऐसे गुणाराई । उनकी महिमा कही न
 जाई ३८ ॥ राग धनाश्री ॥ आजुकहु घर कलह भयोरी । तऊ आजुअन-
 मनी बताती यहकहु मानु कियोरी । मोसों कछु कहेउ नहिं मोहन
 सहज पठाई लैन । कहापुकार परी हरिआगे चलौ न देखौनैन । तेरो
 नामलेत हरिआगे कहत सुनाय सुनाय । सूरसुनहुं काको काकोगय
 तैंधौंलियो छिंझाय ३९ ॥ राग सूहे ॥ वृन्दावन हरिबैठेधाम । काहेको
 गयहख्यो सबनिको काहे अपनोकियो कुनाम । डारिदेहु कहलियो
 पराये मेरो कहेउमानरी बाम । तबहींते उनशोर लगायो तोको बोली
 हैं यहकाम । चलौ तुरत जिनिदेरलगावहु अबहींआयकरौबिग्राम ।
 सूरप्रयाम तेरीघांभगरत तूकाहे तिनसें करैताम ४० ॥ रागजेतश्री ॥ यह
 कहु नोखीगत सुनावति । काको गय मैं धौं लीन्हेहै बारबार बन
 मोहिं बोलावति । मेरी घां हरि लरतकोनसें इतीसग्रामोहिं कीन्ही ।
 जैसे हैं हरि तेरे माई मैं नीके करि चीन्ही । की बैठहुकी भवन जाहु
 की मैं उनपै नहिं जाऊं । सूरदास प्रभुकोरी सजनी जन्म न लेहैं नाउँ ४१
 रागनेरी ॥ मैं कह तोहिं मनावन आई । प्रकट लिये सबको ब्रजबैठी कहा
 करति अधिकारि । जाय करो ह्मां बोध सबनिको मोपर कतसतरानी ।
 प्रयामलरत तबहोंते उनसें तिनपर अतिहिं रिसानी । बारबार तूकहा
 कहतिरी ब्रजकाको मैं लीन्हे । सूरदास राधा सब हरिसों ज्वाव नि-
 दारिके दीन्हे ४२ ॥ रागषोष्ठ ॥ तैं कछु नहिं काहू को लीन्हे । प्रकट
 कहा तबहीं मानेंगी ज्वाव निदरि मोहिं दीन्हे । तब बदिहैं सेसेहि
 ह्मां कैहै जहँ बैठे सबबैरी । मेरे कहे बहुत रिसपावति सम्पति सबकी
 लैरी । यकटक करि सब तोहिं दिखाऊं कहि आवहुं बन जाई । की
 दीजो की सब पुनि लीजो सूरप्रयामपै आई ४३ ॥ रागसूहे ॥ जिनिजिन
 जाय प्रयाम के आगे तेरी चुगली बहुतकरी । बारबार तिनसें हरि
 खीभे तेरी घां ह्वै मेंहुलरी । प्रयामभेदकरि मोहिं पठाई तू मोहीं पर
 खरीपरी । जायकरौ रिसबैरिन आगे जाके जाके गयहिहरी । धरणि

अक्राश बनहुँके आये देखत तिनके अतिहि डरी । सूरप्रयाम बिन
न्यावचुके क्यों तिनपर तू अतिही भूहरी ४४ ॥ रागधन.भी ॥ तेजन पु-
कारे हरिपै जाय । जिनकी यहसब सौंज राधिका तेरे तनते लई छिं-
डाय । इन्दुकहैहो बदन बिगोयो अलकन अलि समुदाय । नयननमृग
वचनन पिकलूटे बिलपत हरिहि सुनाय । कमलकीर केहरि कपोत
राज कनक कदलि दुखपाय । बिद्रुमकुन्द भुजङ्ग सङ्गमिलि शरणागये
अकुलाय । अतिअनीति जियजानि सूरप्रभु पठये मोहिं रिसाय । बन
बोलीं ब्रजनाथ बेगिचलि अब उत्तर दे आय ४५ ॥ रागकन्हरो ॥ मानु
करौ तुमग्रौर सवाई । कोटि करो एकै पुनि हैहो तुम अरु वै मनमोहन
माई । मोहनसों सुनि नाम अवराहीं मगन भई सुकुमारि । मानु गयो
रिसगयो तुरतही लज्जित भइ मनभारि । धायमिलीं दूतिका कंठसों
धन्य धन्य कहिबानी । सूरप्रयाम बनधाम जानिके दर्शनको अतुरानी
४६ ॥ राग बिलावल ॥ हंसिके कहेउ दूतिका आगे श्यामहिं सुखदैरी तू
जाय । करि स्नान अभयरा अंगभरि में आवति तो पाछे धाय । यह
सुनि हरयभई अतिही सखिगई तहां जहंश्याम । अति व्याकुल तन
की सुधिनाहीं बिह्वल कीन्होकास । की बनमें की घरहीबैठे की बा-
सरकी याम । सूरश्याम रसना रटलागी राधा राधा नाम ४७ ॥ राग
रामकली ॥ श्यामनारिके विरहभरे । कबहुँक बैठत कुंज द्रुमनतर कबहुँक
रहतखरे । कबहुँक तनकी सुरति बिसारत कबहुँक तनसुधि आवत ।
तबनागरिके गुणाहिं बिचारत तेइ गुणा गुणा गुणागावत । कहंमुकुट
कहुँ मुरलि रहीगिरि कहुँ पटपीत पिछौरी । सूरप्रयाम ऐसी गति भी-
तर आयदूतिका गौरी ४८ ॥ रागबिलावल ॥ श्याम भुजा गहि दूतिका
कहि आतुर बानी । काहेको कदरात है मैं राधा आनी । विरहदूरि
करिडारिये सुखकरौ कन्हाई । प्रिया नाम अवगान सुन्यो चितये
अकुलाई । मिले दूतिकहि अंक दे लोचन भरि आई । प्यारी प्यारी
बोलिके युवतिहि उरलाई । तबबोली हंसिदूतिका पिय आवत नारी ।
सूरप्रयाम सुनि बोलतबै हरये बनबारी ४९ ॥ रागलजरी ॥ धीरधरौ प्यारी
अब आवति । मैं जो गई प्रतिज्ञा करिके सो कहिबात जनावति । मन
चिन्ता अबदूरिकरौजू कहौ न कहामोहिंदैहौ । बनि आवति दृयभान

नन्दिनी भुजभरि अङ्गुल लैहौ । यह सुन्दरता और नहीं कहूँ बड़भागी
 सोपावै । सूरप्रियाम दूतिका बचनमुनि करयुग जोरिमिलावै ५० ॥ राग
 जैतथी ॥ यह मुनिके मनप्रियाम सिहात । पुलकत अङ्गरहत नहिँधीरज
 पुनि पुनि पंथ निहारत जात । कुञ्जभवन कुहमनकी शब्दया अपनेहाय
 सँवारत जात । जो द्रुमलता लटक तनुलागत तेऊँचे धरि पुलकित
 गात । प्यारी अंग अति कोमल जानत सेजकली चुनिडारत । सूरप्रियाम
 रीझत मनहींमन सुधिकरि छविहि निहारत ५१ ॥ रागकल्याण ॥ दूतिका
 हँसति हरि चरित हैरै । कबहुँ कर आपने रचत सुमनन सेज कबहुँ
 मग निरखिकहँ भयोभरै । काम आतुरभरे कबहुँ बैदतखरे कबहुँ आगे
 जाय रहत दाढे । चतुर सखि देखि पुनि राधिकापै गईभरेक्यो करत
 धनकन्त चाहे । सुनत प्यारीहँसी पियाके मनबसी खपगुना करिजसी
 प्रेमरासी । सूरप्रभु नाम मुनि मदनतनु बल भयो अङ्गप्रति छवि उपर
 रमादासी ५२ ॥ रागधनायी ॥ बनि टयभानसुता बड़भागिनि । कहानि
 हारति अङ्ग अङ्गछवि धन्य प्रियाम अनुरागिनि । और प्रिया नखशिख
 अङ्गार सजि तेरे सहजन पूरै । रतिरम्भा उबसी रमासों तोहिँनिरखि
 मनभूरै । ये सबकन्त सोहागिनि नाहीं तूहै सकहि प्यारी । सूरधन्य
 तेरी सुन्दरता लोसी और न नारी ५३ सहज रूप की राशि नागरी
 भूषण अधिक बिराजै । मुख सौरभ सों मिलित सुधा निधि कनक
 लता परछाजै । बन्दनबिंदुधार मिलि शोभित धूमिलि नील अगाध ।
 मनहु बालरवि रसभरि शंकित तिमिर कूटहै आध सागिकासंध्यपास
 चहुँमाती पंगतिन झलक सेंदूर । रेंगयो तमतमाल तारागण उगततघेखो
 सर । की सन्मथ रथ चक्राकितरि वन बारचित्तमे साज । अवराकूप
 की रहन घंटिका राजत सुभग समाज । नांसा नथ सुकत बिम्बाधर
 प्रतिबिम्बित अससंच । बिंध्यो कनक पासि शुक सुन्दर करक बीच
 गहि चंच । कहँ लगि कहाँ भूषण भूषित अङ्ग अङ्ग के रूप । सूरस-
 कल शोभा थीप्रतिके राजिव नयन अनूप ५४ ॥ रागकान्हरो ॥ बिर-
 जित राधारूप निधान । सुन्दरता को पुंज प्रकटही को पटतर धिय
 आन । सेंदुर शीशसांग मुक्तावाल कवकबंसी अबितान । मनहुँ चन्द
 मुख कोपिहन्यो रिपु राह बिधम बलवान । तरल तिलक ताटक

पडैरा भलकत कल बिबकान । मानहु शशि सहाय करबे को रगा
बिरचे द्वैभान । दीरघ नयन नासिकावेशरि अरुणा अधर छबिवान ।
खंजन शुक नहिं बिबसमिनको लज्जित भये अजान । को कहिसके
उरोजन की छवि कञ्चन मेरुलजान । श्रीफल सुकुचि रहे दुरिकानन
सिखरिहबो बिहरान । रोमावलि बिबली छबिछाजत जनु कीन्ही
यह टान । कृष्णकटि सबल डंड बन्धनमनो विधिदीन्हे बन्धान । अङ्ग
अङ्गआभूषण कीछबिकापै होयबखान । सूरदासप्रभुसिकशिरोमणि
बिलसहु श्याम सुजान ५५ ॥ रागमठ ॥ राधे देखितेरे रूप । पटइहोहरि
शंकि मनुदल सज्यो मनसिजभूष । चाल राजश्रीफला नूपुर नीबिनव
रुचि ढाल । किङ्किणी घराटा घोष साधव भये भयबेहाल । कंचुकी
भूषण कवचसजि अति कुच कसे रगाबीर । अञ्जतध्वजा अबलौकि
नाहीं धरतपियमनधीर । भौंह चापचढायकीन्हे तिलकशर संधान ।
मैन कौतुक देखि गिरिधरतज्योहै मदमान । चँवरचिह्नुर सुदेश घूंघुट
छष शोभित छांह । ज्यों कहौ त्यां हेन मिलाऊं दै दया कर बांह ।
राधिका अति चतुर सुन्दरि सुनि सुबचन बिलास । सूर रुचि मतसा
जनाई प्रकटि मुख मृदुहास ५६ ॥ रागकल्याण ॥ आजु अञ्जन दियो रा-
धिका नैन को । मृगमीन हीनपुसा लज्जित खञ्जनडोलअधिकचञ्चल
सरस श्याम मुखदेन को । लसनि दाडिम दशन भौंह मन्मथ फन्द सु-
लपलट लटक रहि रहतनहिं चैनको । कसनि कंचुकिबन्द उर मुकुट
माल मुखनिरखि उडगाराज तजिगयो सुर सेनको । कनित नूपुर चर-
गा सुद कटि घराटका कनक तनु गौर छवि उमगि उपरैन को । सूर
सुनि अवरु उठि नवल गिरिधर सेज चलिहै गजगति मलपि मदन
गढ लैन को ५७ ॥ रागटोड़ी ॥ रसिक शिरमौरदेरि लगावत गावत राधा
राधानाम । कुञ्ज भवनबैठे मनमोहन अलि गोहन मोहन बोलत मुख
तेरोई गुण ग्राम । अवरु सुनत प्यारी पुलकित भई प्रफुलित तनु मनु
रोम रोम सुखरासी बाम । सूरदास प्रभु गिरिधरधर को चली मिलन
गजराज गामिनी भक्तक रुनक बनधाम ५८ ॥ रागकल्याण ॥ नवल सुनि
नवल पिय नव कुंजहेरी । भावते लालसों भावती केलिकरि भावती
भावतौ रसिक रसलेरी । त्यागिअभिमान गुण रूप सौभाग्य रतिमा-

निनी मनुहारि मैन सुख देरी । सक व्रजबास आवत जात देखियत
 आवनी जाति पति पैंडकी घेरी । ललित उदार हित पीर करि कोर
 मति धीर तन मेदि मनमथन को मेरी । कला चौसाठि संगीत शृङ्गार
 रस कोक विधि बन्द प्रकट भेद सेरी । सुरत सागर साज अवरण अश
 रस लाजअङ्ग अनुकूल रतिराज रसाजेरी । काम शर कनक कुच प्रकट
 भुङ्की खिन्न दागिमें लै कन्त आपनो कैरी । जासु आलाप सुनि दारुसे
 पल्लवे प्रहृष सधु धार फर भार भरजेरी । सुरलिका गान तुवनाम म-
 धुरा धुनी सुधा गुणा सिंधु नहिं गनत निज मैरी । हीनजल मीन उद्यो
 दरशाबिन कलमलै प्राणा प्रीतम नहीं धीरज धरैरी । प्रीतिकी रीति
 गत होतिहैरी हरयि निरखि रति करि चिबूक असनहैरी । तुव काम
 केलि बनी अकामिनि रुन्द चन्दचकोर चातिकस्वातिहैरी । सुर सुनि
 अवरणातजि भवनकरि गवनमनरवणा तन तबहिंकल हंसगतिहैरी ५६
 रागकान्हरो ॥ मनो गिरिवर ते आवतिगङ्गा । राजत अतिरमणीक राधिका
 यहिबिधिअधिक अनूपमअङ्गा । गौर गात अतिबिमलबारिबिधिकटि
 तट धिबलीतरल तरङ्गा । रोमराजि मनोयमुनमिलीअध भँवरपरतमानो
 भुवभङ्गा । सरिगांगरा भूयगा रुचिर तीरवर मध्यधार मोतिन में सङ्गा ।
 सुरदास मनोचली सुरसरी श्रीगोपाल सागरसों सङ्गा ६० ॥ रागभूषे ॥
 नाहिंन नयनलगे निशि यहिडर । जबतेजायकह्यो हँसिहरिसों समर
 शोच उनके जियधरवर । भौंहकमान तिलकभलुका करिरचिसुदेश
 श्रीमन्त सुरंग शङ्ख । बलय ताटक चक नख नेजा दामिनिसे चमकत
 रद असिवर । गज उरोज वर बाजि विलोचन बंकट विशद विशाल
 मनोहर । लाल ढाल अञ्चल चञ्चलगाति चँवर चिह्नर राजत ताऊपर।
 अङ्ग अङ्ग सजि सुभट सहायक बने विविधि भूयगा बानेवर । कामिनि
 आजुहि आनि रहैगी काम कटक लै कुंज भगडतर । चरगा रुगात
 नूपुर रगातुरा सुनतं यक्षा काँपहिंगे थरथर । तब जानिबो किशोर
 जोर रुपिरहै जीतिकरि खेतसबै फर । रेंचिकरो जो कहैंकिशोरी
 वे जु भितर ह्वै रहेबैठि घर । यहै सतो मुखजोर होतही करहु पारलै
 पकरि पियहिकर । सहचरि चतुरायन लैआई बांह बोलिदै करिकै
 तबकर । रोय सुरत रगामिली अङ्गभरि लै लटकी दै दन्त पियाधर ।

जुरत सूरत संग्राम सधयो छवि कूटि कूटि कच टूटि हार लर । अति सनेह दुहुँ बिसरि देहभरि सैनमल्ल मुरभाय गिरे धर । विविधि बि-
 शाल कलासु कोशबश राधा नारी नंदनन्दन बर । निगमति नेति
 कहेउ निरुणा सो कह गुणाधि बरिहिँ सूरनर ६१ ॥ रागटोड़ी ॥ फूलन
 के महल फूलनकी शय्या फूले कुंजबिहारी फूली राधाप्यारी । फूले
 वे दम्पति नवल मगन फूले फूलेकरँ केलि न्यारी । फूली लता बोलि
 बिबिधिसुमनगारा फूलें आनन दोउहँ सुखकारी । सूरदासप्रभु प्यारी
 परवारत फूलेफूल चम्पक बेलिनेवारी ६२ ॥ रागधनाभी ॥ आजु रंगफूले
 कुंवर कन्होई । कबहुँक अधर दशन भरि खराडत चाखत सुधा मि-
 टाई । कबहुँक कुचकर परसि कठिन अति तहां बदन परसावत । सुख
 निरखति सकुचति सुकुमारी मनहींमन अति भावत । तब प्यारी कर
 गहि सुख टारति नेक लाज नहिँ आवत । सूरदासप्रभु कामशिरोमणि
 कोककला दिखरावत ६३ ॥ राग केदारो ॥ प्रिय भावती राधा नारि ।
 उलटि चुम्बन देत रसिकन सकुच दीन्ही डारि । परस्पर दोउभरे अम
 जल फूकफूक झुरात । मनो बुझी अनङ्ग ज्वाला प्रकट करतलजात ।
 बहुरि उठे सन्हारि भट ड्यों झुग अनङ्ग सन्हारि । सूर प्रभु बन धाम
 बिहरत बने दोउ बरनारि ६४ ॥ राग रामकली ॥ बिहरत दोउ मन एक
 करे । एक भाव एक भये लपटिके उर उर जोरिधरे । मनो सुभटरा
 एकसंग जुरि करिवर नहीं डरे । अधर दशन छत नखछत उरपर घा-
 यन फरहिं प्रे । यह सुख यह उपमा पटतरको रति संग्रामलरे । सूर
 सखी निरखति अन्तरभइ रतिपति काजसरे ६५ ॥ रागकल्याण ॥ सकुच
 मन परस्पर बसन लीन्हे । प्यारिप्रिय निपुण अति कोकशुण काल
 में उनिघनहिं उनिकन्त अबल कीन्हे । स्वेदकन रागंड मगडलनि नासा
 निकट प्रिय निरखि पीतपट पोंछि डारेउ । निरखि प्यारी पोंछि
 वैसेही प्रिय बदन कहु सकुचि कहु हरथिके निहारेउ । नागरीडरनि
 प्रिय पीतपट उरधरे बहुरि जनि आपनी छांहदेखे । सूरप्रभु स्वामिनी
 अङ्ग छवि दामिनी भलकप्रति बिम्बपर मानपेखे ६६ ॥ रागरामकली ॥
 संग राजति दृषभानकुमारी । कुञ्ज सदन कुसुमन शय्या पर दम्पति
 शोभा भारी । आलसभरे मगन रसदोक अङ्ग अङ्ग प्रति जोहत । मनहुँ

गौर श्यामल राशिन पर उत्तम बैठे सन्मुख सोहत । कुञ्जभवन राधा
 मनमोहन चहुँपास व्रजनारि । सूर रही लोचन यक टक करि डारत
 तन सन वारि ६७ ॥ रागनट ॥ यकटक रहीं नारि निहारि । कुंज घर
 श्रीश्याम श्यामा बैठि करत बिहारि । नयनसैन कटाक्षसों मिलिकरत
 रङ्ग बिलास । नहीं शोभा पार पावति बचन मुख मुख हास । तरुणि
 श्रीवृषभानतनया तरुणा नन्दकुमार । सूरसों क्यों बरगिभावे छपरस
 सुखसार ६८ ॥ रागधनाश्री ॥ चितै राधा रतिनागर वार । नयन बढ़न
 छबिसों उपजत मनो राशि अनुराग चकोर । सारस रस अँचवन को
 मानो हृदित मधुप जुरजोर । पान करत कहूँ लप्ति न मानत पलकनि
 देत अँकोर । लिये मनोरथ मानि परस्पर रजनिगई भयो भोर । सूर
 श्यामश्यामा आपुसमें करत रहत चित चोर ६९ ॥ रागरामकली ॥ देख
 सखि पञ्चकमल द्वै शंभु । एक कमल बज्र ऊपर राजत निरखत नयन
 अचम्भु । एक कमल प्यारीकर लीन्हे कमल सुकोमल अङ्ग । युगल
 कमल सुत कमल बिचारत प्रीति न कबहूँ भङ्ग । यट युग कमल मुख
 सन्मुख चितवत बहुबिधि रङ्गतरङ्ग । तिनमें तीनि सोम बंशी बश तीनि
 सुकश्यप अङ्ग । जेइ कमल सनकादिक दुर्लभ जिनसे निकसी गङ्ग ।
 तेइ कमल सूर नित चिन्तत निपट निरन्तत सङ्ग ७० ॥ रागनट ॥ देख
 सखि चारि चन्द यकटौर । निरखत बैठि नितबिन पियसँग सारसुता
 की वार । द्वै सखि श्याम नवलघन सुन्दर द्वै कीन्हे बिधि गोर । तिनके
 मध्य चारि शुक्र राजत द्वै फल आठ चकोर । शशि शशि सङ्ग प्रबाल
 कुन्द कलि अरुभि रहेउमनमोर । सूरदास प्रभु अति रतिनागरबलि
 बलि युगलकिशोर ७१ देखरी प्रकट द्वादश मीन । यट इन्दु द्वादश
 तरुणि शोभित बिमल उडगारा तीन । यट अष्ट अम्बुज कीर यट मुख
 कोकिला सुर एक । दश दोइ बिद्रुम दामिनी यट तीनि व्याल वि-
 शेष । विबलि यट श्री फल बिराजत परस्पर बर नारि । व्रज कुंवरि
 गिरिधर कुंवर पर सूरजन बलि हारि ७२ दम्पति कुंज द्वार खरे ।
 शिथिल अङ्ग मरगजे अंबर अतिही छपभरे । सुरतही सबरैनि बोती
 कोक परारंग । जलज दामिनिसंग सोहत भरे आलसअङ्ग । चकत द्वै
 व्रजवारि निरखति मनो चन्द्रचकोर । सूरप्रभु वृषभानतनया बिलसि

रतिपति जोर । ७३ ॥ राग ललित ॥ भोरही प्रयासा प्रयास खरे । जलद
नवीन मिली मनो दामिनि बरधि निगान भरे । शिथिल बसन तन
नील पीत द्युति आलस युत पहिरे । अमजल बुन्द कहं कहं उडगारा
बदरिनि बरनिकरे । भयरा विविधिभांति मिडवारतिरति रस उमगि
भरे । प्रेस प्रबाह चली मनो सरिता दूरी मालगरे । काजर अधर त-
मोर सैनरंग अंग अंग भीलपरे । शोभा अमित बिलोकि सूरप्रभु क्यों
सुख जात तरे ७४ ॥ राग बिलावल ॥ जो सुख प्रयास पियासंग कीन्हे ।
सो युवतिन अपने करि लीन्हे । दुबिधा हृदय कछु नहिं राख्यो ।
अतिआनन्द बचनमुख भाख्यो । यहै कहति तबकी अबनीके । सकुचि
हँसीनागरि सँगपीके । नयनकोर पियहृदय निहारेउ । उनपहिले पी-
तान्बरधारेउ । सूरदास यहलीलागावै । हरिपदशरणा अछैफल पावै
७५ ॥ राग नट ॥ धनि ब्रजसुन्दरी धनिप्रयास । धन्यधनि वृथभानतनया
राधिका जेहिनास । गेहगेहनि गई तरुणी प्रयास गये नन्दधाम । भवन
गइ वृथभानतनया कोककला सुजान । करत मनकासना पूरणा सक
निशि सब वास । सूर प्रभु जा सदन जातन सोकरत तनताम ७६ ॥

यहांते खंडितावचन ॥

राग बिलावल ॥ नानारंग उपजावत प्रयास । कोउ रीझति कोउ खी-
भति वास । काहूके निशि बसत बसाये । काहू सुखहै आवत जाये ।
बहु नायक है बिलसत आप । जाको शिव पावै नहिं जाप । ताको
ब्रजनारी पतिजानै । कोउ आदरकोऊ अपमानै । काहूसों कहि आ-
वतसांभ । रहत और नागरिघरसांभ । कबहूरैनि सबसंग बिहात । सु
नहु सूरसेसेनंदतात ७७ अब युवतिन सों प्रकटे प्रयास । अरश परश
सबहिन यह जानी हरिलुब्धे सबहिन के धाम । जादिन जाके भवन
न आवत सो मनमें यह करति बिचार । आजगये औरहि काहूके
रिसपावति कहिबड़े लवार । यह लीला हरिके मनभावति खगिडत
वचन कहत सुखहेत । सांभ बोलदै जात सूरप्रभु ताके आवतहेतउ-
देत ७८ ॥ राग रामकली ॥ टाढ़े नन्दद्वार गोपाल । बोलि लीन्हे देखि
ललिता सैन दैतकाल । हंसतगयेहरि गेहताके कोउ न जानत और ।
मिली हरिकोलाय उरभरिचापि कठिन कठोर । कहेउमेरेधामकबहं

क्यों न आवत प्रयास । सूर प्रभु कहि आजु नागरि आयहैं हमयास
 ७६ ॥ राग बिलावल ॥ ललिता को सुखदै गये प्रयास । आजु बसैंगे रैन
 तुम्हारे प्राणापियारी है तुमबाम । यह कहिकै अनतहि पगुवारे ब-
 हुनायक के भेद अपार । सांभ समय आवन कहिआये सौंह बहुत
 करि नन्दकुमार । वह बैठी मारग हरि जोवति यक्यक पल बीतत
 यक्यास । सूरश्याम आवन की आशासेज सँवारति दयाकुल बाम ८०
 राग मोरी ॥ सांभहि ते हरिपथ निहारै । ललिता, रुचि करि धाम आ-
 पने सुमन सुगन्धन सेज सँवारे । कबहुंक होत बारने टाढी कबहुंक
 गनति गगन के तारे । कबहुंक आय गलीमग जोवति अजहुं न आ-
 येश्याम पियारे । वै बहुनायक अनत लोभाने और बामके धाम सि-
 धारे । सूरश्याम बिनु बिलपति बाला तमचुर जहँतहँ शब्द पुकारे ८१
 राग मेरी ॥ ललिता तमचुर देखुन्यो । वै बहुनायक अनत लोभाने नहिं
 आये जिय कहा गुन्यो । बिन कारणा दै आशगये पियवारबार विय
 शीश धुन्यो । सेज सँवारि पथ निशि जोवत अस्त आनि भयो चन्द
 पुन्यो । तब बैठी मनमारि आपनो कछुरिस कछुमन शोच परेउ । सूर-
 प्रयास भयते नहिं आये सात पिता को ब्राम धरेउ ८२ ॥ राग जेतगी ॥
 शोच परेउ नागरि मनमाहीं । की काहूके अनत लोभानेकी पितुमात
 ब्राम मनमाहीं । वै निर्गमसे सहलशीलाके मुख सबरैन गँवाई । उठे
 अकुलाय भोर भयो जान्यो तब नागरि सुधिआई । सहज चले गोपी
 सों कहिकै जिय सकुचत अति भारी । सूरश्याम ललिता गृह आये चितैरही
 मुख प्यारी ८३ ॥ राग ललित ॥ प्यारी चितैरही मुख पियको । अंजन
 अधर कपोलन बन्दन लारयो काहू वियको । तुरत उठी दर्पणा करलीन्हे
 देखौ बदन सुधारौ । अपनो मुख उठि प्रात देखिकै तबतुम कहँ सिधारौ ।
 काजर बन्दन अधर कपोलन सकुचे देखि कन्हाइ । सूरश्याम नागरि
 मुख जोवत वचन कहे नहिं जाई ८४ ॥

शीलाके गृहते ललिता के आये ॥

राग आसावरी ॥ दर्पणा लै प्यारी मुख आगे कहति पिया छवि हेरौ
 जू । मेरीसां हाहा कहि पुनि पुनि उतकाहे मुख फेरौजू । सकुचत कहा
 बालके सांचे मेरे गृहतौ आयेजू । रैन नहिं तौ अबजु कपाभइ धनिजिन

स्वांग करायेजू । मेरी कही बिलग जनिमानो मैं तुव करति बड़ाईजू ।
 सूरप्रयाम सन्मुख नहिं चितवत रहे धरणी शिरनाईजू ८५ ॥ रागल-
 नित ॥ क्यों मोहन दर्पणा नहिं देखो ; क्यों धरणीपग नखन करोवत
 क्यों हसतन नहिं पेशो । क्यों ठाढ़े बैठत क्यों नाहीं कहापरी हसचूक ।
 पीताम्बर गहि कहेउ बैठिये रहेकाह हैमूक । उधरि गयो उरते उप-
 रैना नखछत बिन गुणामाल । सर देखि लटपटी पाग पर जावक की
 छबिलाल ८६ ॥ राग ईमन ॥ ऐसी कहा रंगीलाल । जावकसों कहैं
 पाग रंगाई रंगरेजनि मिली को बाल । बन्दन रङ्ग कपोलन दीन्हे
 अधर अरुताभये श्यामरसाल । जिन तुम्हरी मनइच्छा पुरई धनिधनि
 पिय धनि धनि वह बाल । माला कहा मिली बिनु गुण की उरछत
 देखि भई बेहाल । सूरप्रयाम छबिसवै विराजति इहे देखि मोको जं-
 जाल ८७ ॥ राग बिलावल ॥ जवाब नहींपिय आवई क्यों कहां टगाने ।
 मैं तबहीं की बकति हैं कछु आजु भुलाने । हां नाहीं नत कहत है
 मेरी सेां काहे । आये क्यों चक्रतभये मोको रिसदाहे । कहांरहे काओं
 बन्यो तहई पग धारो । सूरप्रयाम गुण रावरे हृदय न बिसारो ८८
 काहेको कहिगये आइदे काहे भूठी सोंहैं खाये । ऐसे मैं जाने नहिं
 तुमको जो गुणकरि तुम प्रकट देखाये । भलीकरी दर्शन यहदीन्हे
 जन्म जन्म के पाप नशाये । तब चितये हरिनेक प्रिया तन सब अप-
 राध क्षमाये । सूरदास सुन्दरी सयानी हँसिलीन्हे पिय अङ्गमलाये ८९
 नयनकोर हरि हेरिके प्यारी बश कीन्हे । भाव करेउ आधीन को
 ललिता लखिलीन्हे । तुरताये रिसदूरि है हरिकंठ लगाये । भली
 करी मनभावते ऐसेहु मैं पाये । भवनगई गहि बांह लै निशि जागेजाने ।
 अङ्ग शिथिल निशिअस भयो मनहीं मनमाने । अंगसुगन्ध मर्दन कियो
 तुरतहि अन्हवाये । अपने कर अँग पोंछिके मनसाध पुराये । चीर
 अभूषणा अङ्गदै बैठे गिरिवारी । रुचिभोजन प्रियको दियो सूरज ब-
 लिहारी ९० ॥ रागकल्याण ॥ कियो मन काम नहिं रही बाकी । प्रिया
 रिस दूरिके दियो रस दूरिके अङ्ग बल दूरिके गोप जाकी । नन्दसुत
 लाडिले प्रेमके छाडिले सो हृदय कहतहै नारिआगे । तुमपरम भावती
 प्राणहँते खरी सुखतहीं लहत मैं तुमहिं त्यागे । सुतहु धनतुमहिं तन

तुमहिं मनहीं बसौ और धियनाहिं मो मनहिं भावै । सूरप्रभुचतुरवर
 चतुरि नागरिनके चतुरई बचनकहि मन चुरावै ८१ ॥ राग मेरौ ॥ इहे
 भाव सब युवतिसों । सेसेइ बचन कहत सबआगे भलि रहति मनमो-
 हनसों । बिनदेखे रिसभाव बढ़ावै मिलत आयदै सौंहनिसों । मुखदे-
 खत दुखरहत नहींतन चितवत सुरिदोउ मोहनिसों । और त्रिया अंग
 चिह्न बिराजत रिस मनहींमन छोहनसों । सुरप्रयास सबगोपकुमारी
 दरति नहीं कहूँ गोहनसों ८२ ॥ राग बिलावल ॥ ललिताको मुखदै चले
 अपने निजधाम । बीचमिली चन्द्रावली उनदेखे प्रयास । मोर मुकुट
 कछुनीकछे नखर गोपाल । रहीबदन तनुहेरिके अतिहंत ब्रजवाल ।
 गलीसांकरि कोउनहीं आतुर मिलिधाई । कहां कहां पिय रहतहो
 हमको बिसराइ । प्रयास कहेउ हंसि बामसों तुम्हरे निशिबास । सूर
 हृदयकी कल्पना सुनिभई हुलास ८३ ॥ राग आभावरी ॥ प्रयास बामको
 मुखदै बोलैरैन तुम्हारे आऊँगो । मातपिता जियबास धरतहैं तऊ
 आय मुखपाऊँगो । तुव मिलिबेकी साध भुजा भरि उरसों कुच पर-
 साऊँगो । नयन बिगल भरि उरबैठे ते तुव हाथ कढाऊँगो । तुवतनु
 परसि कामदुख मेरौं जीवन सुफल कराऊँगो । सुनहुसूर अधरनिरस
 अंचऊं दुहुमन तथा बुझाऊँगो ८४ ॥ रागगुजरी ॥ सुनिसुनि बचननारि
 सुसुकानी । गईसदन अति ह्वै उतायती आनंद सहित लजानी । फूली
 फिरत कहति नहिंकाहू सीनमिल्यो जनुपानी । बारम्बार प्रयासरति
 रसकी कहीप्रकट करिबाबी । वासर कलप समान न बीतत कैसेहि
 रैन तुलानी । सूरदेखि गतिगत पतङ्गकी अवधि जानि हर्षानी ८५
 रागकल्याण ॥ राधिकागेहहरि देहवासी । और धियधरिगाधरतनुप्रकाशी ।
 ब्रह्मपररा द्वितियनहींकोऊ । राधिकासबै हरिसबै ओऊ । दीपसोंदीप
 जैसे उजारी । तैसेहू ब्रह्मधरधर बिहारी । खण्डितावचनहित यह उ-
 पाई । कबहुं जात कहूँनहिं कन्हारै । जन्म को सुफल हरि यहैपावै ।
 नारिरसबचन अवगर्भन सुनावै । सूरप्रभु अनतहीगवनकीन्हो । तहां
 नहिंगयेजहूँ बचनदीन्हो ८६ ॥ रागयेड़ी ॥ प्रयासगये मुखमाकेधाम ।
 देखत हर्ष भई मन बाम । आतुर मंदिर गये समाई । प्यारी प्रेम उठी
 झुहराई । प्रयासभासिनीपरम उदारा । कोककलारसकरतबिचारा ।

बोलत प्रिय नहीं आवति पास । गद्गद बाणी कहति उदास । धाय
जाय पति अंकुसलाई । हाहा कहि कहि लेत बलाई । अति आतुर
पतिके गतिकामा । कहाँ प्रकृति पाई यह बामा । बाँझगहत कीन्हे
धनि माना । तब हरिकीन्हे सक सयाना । तब प्यारी चरणान शिर
धारी । कामव्यथा जान्यो सुकुमारी । अलपहँसी मुखहेरि लजानी ।
सूरजप्रभु प्रिय मनकी जानी ६७ ॥ राग गोंडमलार ॥ श्यामकर भासिनी
मुख सँवारेउ । बसन तनु दूरिकरि सबलभुज अङ्गभरि कामरिस बाम
पर निदरि धारेउ । अधर दशननि भरे कठिन कुच उरलरे परे मुखसेज
मनसक दोऊ । मनो कुम्हिलाय रहे सैनसे मल्ल दोउ कोक परबीरा
घटि नहीं कोऊ । अङ्ग बिह्वलभये नयन नयनन नये लजित रति अन्त
प्रियकन्त भारी । मूरधनि धन्य मुखमा नारिवश श्याम याम युगभई
प्रतिते न न्यारी ६८ ॥ राग बिहागरे ॥ चन्द्रावली श्याममन जोवति । क-
बहुँ सेजकर भारि सँवारति कबहुँ मलय रज भोवति । कबहुँ नयन
अलसात जानिके जललै पुनि मुख धोवति । कबहुँ भवन कबहुँ आंगन
हैं ऐसे रैन बिगोवति । कबहुँक बिरह जरति अति व्याकुल आकु-
लता मनमों अति । सूरप्र्याम बहु रवनि रवनप्रिय यह कहि तब गुणा
तो अति ६९ ॥ राग ललित ॥ ऐसेहि ऐसे रैन बिहानी । चन्दमलीन चि-
रैया बोलीं सुनी कागकी बानी । वे लुब्धे अनतहि काहूके मान कि
आश भुलानी । कपटी कुटिल करकह जानै प्र्यामनाम जियआनी ।
कोकिल प्र्याम प्र्याम अलि देखौ प्र्याम रङ्गहै पानी । प्र्याम जलद
अहिप्र्याम कहावत सूरप्र्यामसों बानी १०० ॥ राग गोंड ॥ बामसँग प्र्याम
प्रिय यामजागे । कोकबिधि निपुणा सकल गुणामें सपुन सुरत संग्राम
जुरि नहीं भागे । अंग आलस भरे नयन निद्राढरे नेकशय्या परे निशा
वीती । सूरप्रभु नन्दसुतचले अकुलायकै गयेताधाम रसकामजीती १०१
राग बिभास ॥ चन्द्रावलि धाम प्र्याम भोरभये आयेजू । इत रिसकरि रही
बामरैनिकागि चारोंयाम देखै जो द्वार कान्हटाढे मुखदाये ज । मन्दिर
ते रही निहारि मनहीं मनदेतिगारि ऐसेकपटी कठोरआये निशिबीते ।
रिसनहीं सकीसम्हारि बैठी चढी द्वार टाढे गिरवारि निरखि छवि
नखशिखहीते । बिनगुणा बनि हृदयमाल ताबिच नखकृत रसाल लो-

चन दोउ दरगिलाज जैसी कचिवाही । जावक रँगलखो भाल बन्दन भज
 पर बिशाल पीक पलक अवर भलक बाम प्रीति गाही । क्यों आये कौन
 काज नाना करि अङ्गसाज उलटे भूयता शिंगार मिरवत हैं जाने । ताही
 के जाहु श्याम जाके निशि वसे बाम मेरे गृह कहा काम सूरदास गाने १०२॥

मुखमाके गृहते चन्द्रावलि के आये ॥

राग विलावल ॥ तहई जाहु जहँ रैन बसे । काहेको दाहन है आये अंग
 अंग देखत चिह्न जसे । अरगज अङ्ग सरगजी माला बसन सुगन्ध भरे
 हैं । काजर अधर कपोलनि बन्दन लोचन अरुता ढरे से हैं । पलकन
 पीक मुकुर लै देखो सकौनहीं अन्धे से हैं । सुरदास प्रभु पीठि बलय गड़े
 नागरि अङ्ग भरे से हैं १ तहई जाहु जहँ रैन हुते । काह दुराव करत मन-
 मोहन मिते चिह्न नहिँ अङ्ग जुते । बिनहीं गुणा उरहार बिराजत पद्म
 चतुरि हिय लाय सुते । बिथुरी अलक अटपटे भूयता काम कुटिल कुच
 बिच युगुते । सुरतनु रागरंगे अतिराजत भासिनि भवन भले भुगुते । सूर
 सुदेश अधर मधुकी के लोचन अलस उनीत उते २ पीताम्बर पटु कहा
 भयो । नीलाम्बर ओढ़े है आये अति डह डहो नयो । तै तोइ अङ्ग बसन
 रँग तै सोई कहा कहैं यह शोभा । तै सिय बनी सरगजी के गरि ता प्रिय
 के मन लोभा । सते पर क्यों बोलत नाही कहा खोय से आये । सूर श्याम
 यह अब मैं जानी नागरि चित्त चुराये ३ ॥ राग भैरों ॥ जानति हैं जैसे गुगानि
 भरे है । काहेको दुराव करत मन मोहन सोइ पै कहै तुम जहां ढरे है ।
 निशि जागत निज भवन न भावत आलस सब अङ्ग धरे है । चन्दन तिलक
 मित्यो कहँ बंदन काम कुटिल कुच उर उधरे है । तुम अतिकुशल कि-
 शोर नंद सुत कहौ कौन के चित्त हरे हौ । औचक ही जिय जानि सूर प्रभु
 सौं हकरन को होत खरे है ४ ॥ राग विलावल ॥ तहई जाहु जहँ निशा बसे
 है । जानति हैं पिय चतुर शिरोमणि नागरि नागर राग रसे है ।
 घुसत हौ मनोपिया उरगिनी नव बिलास अमसेज डसे हौ । लटपटि
 पाग महा उर के रँग मानिनि पग पर शीश घसे हौ । बिगलित बसन-
 सरगजी माला पीठि बलय के चिह्न लसे हौ । सुरदास प्रभु प्रिया बचन
 सुनि नागरि नगधर नेक हँसे हौ ५ तहई जाहु जहँ रैन गँवाइ । काहेको
 मुह पर मन आये जानति हैं चतुराई । वाके गुणा मनते नहिँ दारत नाही

बोलत बैन । या छबिपरमैं तनमन वारों पीक बिराजत नयन । भली
 करी यह दरश दिखायो ताते नयन सिराने । मूरप्रयाम निशि सुख
 ह्वां लूट्यो हमकोभयो बिहाने ६ ॥ रागभैरों ॥ हांहा हो प्रिय बातकहौ ।
 आपु कछु जिय करत गहत हौ तो तुमसो सों सौन गहौ । कहाचूक
 हमको जियलगे खसिरहेहौ काहेजू । तबहीते वैसेहिहौ ठाढ़े मांतन
 को नहिं चाहेजू । अबहमको अपराध समौगे क्षपाकरो सुखबोलोजू ।
 मूरप्रयाम अब तजौ निदुरई गुढी हृदय की खोलो जू ७ ॥ रागबिलावल
 खसेहै प्रियखसेहौ । उतरनको उत्तर न देत देखेहितहीन कछुसेहौ । वह
 चितवनि न होय नयननकी वचनन बहुतहँसेहौ । वहसुख कमलबिकाश
 नहीं रति शायक शिशिर बिदूसेहौ । कीछुतिगईसंपदा करते की दग
 ठगेकछुसेहौ । मेरेहु जान सूरप्रभु सांचेहु मदनचोरसिलिमूसेहौ । मदन
 चारेसों जानिसुसाया । अपनी लालीखोय पीककी लाली पलकनि
 पाये । ह्वांते गयेचतुरई लीन्है सोसब उनहिंछिपाये । आलसअबल
 जम्हात अंगसब सँझत तन दरशाये । कंचन खोय कां बलैआये बित
 तौ भलो फवायो । मूर कहूँ घरपर मन नाहीं जैसे हाल करायो ८ ॥
 रागकाफी ॥ लालउनींदे लोचना आलस भरि आये । अरुक्ति कामकी
 बेलिसों कौनेबिलमाये । शिथिलपेच शिरपागको जावक रँगभीने ।
 पायँपरे अब बशकरेतवरस चसदीने । लालीमेरेलालकी सबतनुढीले ।
 लालीलै लालनगये आयेसुखपीले । बिन गुणामाल हियेलसैप्रियप्रीति
 निशानी । सखि रसाल हम को दई तुमदेहुबिरानी । पग डगसग इत
 कोधरो उतको दगधाये । अभिअन्तर अंतरवसे प्रियसोसनभाये । उल-
 टितहीं पशुधारिये जासों मनमान्यो । छपद कंच तजि बेलिसों लटि
 प्रेम न जान्यो । तब हँसिबाले प्रयामजू तुम ते को प्यारी । तुम बिनु
 कलमोकेनहीं अतिही सुखकारी । वचन चतुरई छाँडिदेहु कहँपडि
 आये । मूरप्रयाम गुणाराशिहौ नीके प्रकटाये १० ॥ रागमुधरवि ॥ आये
 लाल यामिनी जागेतेभोर । नीलकलेवर कोसल उरपग गडिगयेकुच
 जु कठोर । निशिबसिरहे भामिनीके गृह ह्वां उठिआये भोर । मूरदास
 प्रभु बचन बतावत अब चोरत मतभोर ११ आये लाल ललित भेष-
 किये । पीक कपोल अधरपर काजर जावक भालदिये । चन्दन खारि

मिली अब आये कुंकुमरंग हिये । पीताम्बर कह डारि कौन को नी-
लांबरहि लिये । लाली दै पियरी लै आये देत पुलकिजिये । सुरदास
प्रभु नवल रसीले वोऊ नवल विये १२ ॥ रागललित ॥ मैं जानी जह
रतिमानो । तुम आये हो ललना जब चिरिया चुहचुहानी । मुखकी
बातकहाकहो ठानी बातनहीं पहिंचानी । इतेपर अखियां रसमसानी
अरु पगिया लटपटानी । भाल जावक रंग बनाये अधर अंजन प्रकट
जानी । बिन गुणा बनीमाल सबअङ्ग उलटीनिशानी । सुरदास प्रभुगुणा
निशानी अन्तर्गत की जानी । धनि विया तुम को जो मुखदीनो संग
जागत रैनविहानी १३ ॥ रागविभास ॥ मैं जानी पियवात तुम्हारी । भोर
भये मेरेगृह आये ऐसे भोरे भारी । ह्यांआये मुख परशान मेरो हृदय
तरत नहि प्यारी । कपटचतुरई दूरिकरौजअग्रशलेत अरुगारी । कहा
सांचमें खोवत करते झूठेकहा फबावत । सुरश्याम नागरनागरि वह
हम तुम्हरे मन आवत १४ ॥ रागकाफी ॥ रैन को रीभेकी बात कहौ ।
काहेकोसकुचत मनमोहनटाढेकों न रहौ । पीतांबर कहभयोतुम्हारो
कीधौ लियोगहौ । नीलांबर पहिरावन पाई सन्मुख क्यों न चहौ । तव
हंसचले श्याम मंदिरतन कछुजिय लाजगहौ । सुर श्याम ह्यांई अब
रहिये अति पुनीत तुम हो १५ ॥ रागविनावल ॥ तुम रीभे की उनहिं
रिभाये । हाहापिय यहप्रकट सुनावहु कोटिक सौंहदिवाये । जावक
भाल चिह्न मैं जान्यो हटकरि पायँ लगाये । नयननि पीक मया उन
कीन्हे अंजन अधर लगाये । बिन गुणामाल मिली कहुं तुमको कंकरा
पीठि दिवावहु । सुरश्याम हमतो यों जानति तुमहं कहि न सुनावहु
१६ आजु हरिरैन उनींदेआये । बिन गुणामाल बिराजत उरपर च-
न्दनरेख लगाये । अंजन अधर ललाट महाउर नयन तमोर खवाये ।
मगन देह शिर पाग लटपटीजावक रंग रँगाये । हृदय सुभग नखरेख
बिराजत कंकरा पीठि बनाये । सुरदास प्रभुयहैअचम्भव तीनितिलक
कहपाये १७ आजुहरि आलस अङ्गभरे । कबहुंक बांह जोरि ऐंहावत
बहुत जम्हातखरे । बैठौकोपीपावधारियेदेखतनयन सिराने । सांभआय
यकदर्शनदीन्हे कीअबहोत बिहाने । कबके द्वारभये पियटाढेभोरेभये
कन्हाई । सुरश्याम ह्यां सुरति करतिवह यहतुम भोर लगाई १८ सौंह

करनकोभोरहीं तुम मेरेआये । रैनिकरतसुख अनतहीं ताकेमनभाये ।
 अङ्गअंगभूषण औरसेसांगेकहुंपाये । देखियकित यहिरूपको लोचन
 अरुणाये । पाग लटपटी मोहई जावक रङ्गलगाये । मान कियो वह
 भासिनी धनिपायँ पराये । यह चतुराई कहँपढी उनहीं समुझाये ।
 सूरदास प्रभु सांचिले उपमा कबि गाये १६ ॥ रागमौरी ॥ तुमकोकमल
 नयन कबिगावत । बदन कमल उपमा यहसांची तागुणा को प्रकटा-
 वत । सुन्दर करकमलन की शोभा चरणाकमल कहवावत । औरअंग
 कहिकहा बखानै इतनेहिंको गुणागावत । प्रयामनाम अद्भुतयहबाणी
 अवगानुनत सुखपावत । सूरदासप्रभु खाल सँधाती जानीजाति जना-
 वत २० ॥ राग बिलावल ॥ तुम न्यायकहावत कमलनयन । कमल चरणा
 कर कमल बदन छवि अरु जु सुनावत मधुरे बैन । गातप्रकट रतिर-
 बिहि जनावत हुलसत आवतहो अँकदैँन । निशि द्वार कपाटसदलबधु
 मधुपनि पिबत परम चैन । मिलेहु सांझ उदास अनर्तचित बसतसदा
 जल सकसेन । सूरकपट फलतबहिं पायहो अपनि अरप जब देहँमैन
 २१ ॥ रागभैरो ॥ धीरधरो फल पावहुगे । अपनेहीसुखके पियचाँडे क-
 बहँती बश आवहुगे । हमसों कहत औरकी औरै इन बातन मन भा-
 वहुगे । कबहुं राधिकामान करैगी अंतर बिरह जनावहुगे । तबचरित्र
 हमहीं देखैगी जैसे नाच नचावहुगे ॥ सूरप्रयाम अति चतुर कहावत
 चतुराई बिसरावहुगे २२ ॥ रागदेवगन्धार ॥ यह कहि प्यारी भवनगई ।
 रीझे प्रयाम देखि वा छवि पर रिससुख सुंदिरई । द्वार कपाट दियो
 गाढेकरि कर आपने बनाई । नेक नहीं कहुं संधि बचाई पौढिरही
 तबजाई । येअंतर्गामीपरमेश्वरजोकहुकरैसोहाई । जहानारि मुखसुंदि
 पौढिरही तहांसंग रहेसोई । जोदेखे ह्यांसंग बिराजत चलीबिया भु-
 हराई । सकप्रयाम आगताहीदेखे एकगृहरहे समाई । उनको वै अति
 बिनय करतहैइत अँकसभरिलीन्हे । सूरप्रयाम मनहरन कहावहुमन
 हरिके बश कीन्हे २३ ॥ रागकल्याण ॥ तब नागरि रिस भूलिगई । पु-
 लकअङ्गअंगियाउरदरकीअङ्गअनङ्गजई । अङ्कसभरिपियप्यारीलीन्हे
 निशि सुख बासरदीन्हे । मान किंझायहुलास बढ़ायोसफल मनोरथ
 कीन्हे । तब निजधाम प्रयाम पंगु धारे तहां सहचरी आई । सरज

प्रभु रसभरी नागरीदेखिरही मनलाई २४ ॥ राग आसावरी ॥ चन्द्रावली
 हयसों बैठी तहां सहचरी आईहे । औरैबदन औरैअंगशोभादेखिरही
 चयलाईहे । कहा आजु अति हरितबैठी कहा लूटिसी पाईहे । क्यों
 अंग शिथिल मरगजीसारी यहकबि कही न जाईहे । मोसों कहादु-
 राव करति है कहा रही शिर नाईहे । मैं जानी तोहिंसिले सूरप्रभु
 यशुसति कुंवर कन्हाईहे २५ चन्द्रावली करति चतुराई सुनत बचन
 मुखसूदि रही । उवाचनहीं कछुदेति सखीकोह्यांनाहीं कछु बैनकही ।
 गूंगे गुरुकी दशा गई हूँ पूरणा प्रथम सुहाग भरी । वहै ध्यान हरिके
 अनुरागी बहलीला चितते न तरी । तबबोली मोसों कछु ब्रह्मतिकहा
 कहाँसुख बनेनहीं । सूरप्रथम युवती मनमोहन तिनकेगुण नहिं परत
 कही २६ ॥ राग बिलावल ॥ हाहाकरि चन्द्रावलि मोसोंहरिके गुण मैंहंसुनि
 लेउं । अवगान मग सुनि हृदय प्रकाशों पुनिपुनिरी तोहिं उतरदेउं । कै
 तोहिंसिलेतीर यमुनाके की तोहिं मिले भवनहींमांझ । कह तोहिं मेरे
 पृष्ठ आये मानो अस्त होत रबिसांझ । काहु बामके धाम बसे निशि
 भोर सदन गये मेरे आय । सूरप्रथम जो चरित उपायो कहन चहों
 मुखकहेउ न जाय २७ ॥ राग गौरी अवती कहे बनेगीसाई । कहा प्रथम
 अचरज सोकीन्हे कहतकहेउ नहिं जाई । कैसलाल अनतलैआये जैसे
 तेरे गेह । कैसे मानु कियो क्यों मिलिगयेकैसेबहेउ सनेह । तब गदगद
 बाणी मुखप्रकटी सुनुसजनी देकान । सूरजप्रभुके चरित सुनाऊं जैसे
 बिसरेउ मान २८ मैं हरिसों हो मान कियोरी । आवत देखि आनि
 बनि तारत द्वारकपाट दियोरी । अपनेहीं कर शंकर सारी सची सु-
 साधि सियोरी । जो देखैंतौ सेज सँवारति कांण्यो रिसनहिं बेरी ।
 अबभुंकिचली भवनतेबाहरतत्र हठि लोटलिगोरी । कहा कहाँ कछु
 कहत न आवै तहँगोबिन्द बियोरी । बिसरिगयो सबरोय हर्यमनपुनि
 फिरि सदन जियोरी । सूरदास प्रभु अति रतिनागर कबिमुख अमृत
 पियोरी २९ ॥ राग बिलावल ॥ तबहोंते भयोहर्यहियो । वैसेआय चरित
 येकीन्हे सदनपैठि मनचोरि लियो । अङ्ग बामकबि लेखि देखिके
 रिसउपजी जियभारी । कोवगयो उरआनंद उमरयो सुखतनुदशा बि-
 सारी । ऐसे चरित कौनकी आवै जो कीन्हे गिरिधारी । सूरप्रथम

रतिप्रतिकेनायक सबलायक बनवारी ३० ॥ राग भैरों ॥ नंदनंदन सुख
दायकहैं । नयनसैनदेहरतनारिमनकामकामतनुदायकहैं । कबहुँ रैन
बसत काहूँके कबहुँ भोरउठि आवत हैं । काहूँको मनआपु चुरावत
काहूँके मन भावत हैं । काहूँके जागत सगरीनिशि काहूँ धिरहजगा-
वतहैं । सुनहुसूर जोइजोइ मनभावे सोइसोइ रङ्ग उपावतहैं ३१ ॥ राग
बिलावल ॥ अनतहि रैनिरहे कहूँप्रियाम । भोरभये आये निजधाम । ना-
गरि सहज रंही मनमाहीं । नंद सुवन निशि अनत न जाहीं । महर
सदनकी मेरेगेह । हिरदय है चिय यहै सनेह । आयेश्याम रही सुख
हेरि । मनसन करनलगी अवसेरि । रतिरस चिह्न नारिकेजानि । सूर
हँसी राधा पहिँचानि ३२ ॥ राग रामकली ॥ आजुवने पियरूप अगाध ।
पर उपकार काज तनु धारेउ पुरवत सब मनसाध । धर्मनीति यह
कहाँपढीजू सोइबात सुनावहु । कहौ कहाँ काको सुख दीन्हे काहे
न प्रकट बतावहु । धनि उपकार करत डोलत हौ आजु बात यह
जानी । सूरप्रियाम गिरिधर गुता नागर अङ्ग निरख पहिँचानी ३३
राग गूजरी ॥ पिय छवि निरखि हँसत त्रियभारी । कहाँ महाउर पाग
रँगाइ ये शोभा यक न्यारी । अरुणा नयन अलसात देखियत पलक
पीक लपटाने । अवर दशन छत बन्दन राजत बंधुकपर अलसाने ।
हृदय रुचिर मोतिनकी माला नख रेखी तेहितीर । बिन गुतामाल
सूरके स्वामी कुंकुम प्रियाम शरीर ३४ ॥ राग बिलावल ॥ धन्यआजुयह
दरशदियो । धन्य धन्य जासों अनुरागे तब जानी नहिँ और बियो ।
भलेप्रियाम बशभली भावती भले भलीमिति भलीकरी । यह मेरीजिय
अतिहि अचंभित तौ बिहुरत क्यों एक घरी । जाहु तहीं सुख दीन्हे
मेको वै सुनिके रिसपावैगी । सूरप्रियाम अतिचतुर कहावत बहुरेउ
मन न मिलावैगी ३५ क्योंआये उठिभोर यहाँ । काहेको इतना शर
माने रैनिरमे फिरि जाहुजहाँ । हमको कहाइती गरुआइ तुमहीं क्यों
न सम्हारौजू । उनआये ह्यां नाहीं जान्यो अजहँ लोपग धारौजू । ह-
महँ बोलि उहाईलीजो डर उनको उमहँकोहै । सूरप्रियाम तिनहीं सु-
खदीजो जो बिलसै संग तुमकोलै ३६ ॥ राग रामकली ॥ उनहीं को मन
राखे काब । ह्यां तुमती आये जो नाहीं बात सुनतहौ नाहीं प्रियाम ।

देखौ अङ्गअङ्ग प्रतिशोभा मैतौ भूलीहैं यहिरूप । धनि प्रियवने बनी
 वेऊ हैं सक सकते रूप अनूप । सो छवि मोहिं देखावन आये सया
 करी बहुते हरिआजु । सुरदासप्रभु रसिकशिरोमणि वहाँ रसिकिनी
 बन्यो समाजु ३७ ॥ राग बिलावल ॥ रसिक रसिकई जानिपरी । नयनन
 ते अवन्यारे हूँ तबहींते अति रिसनि मरी । तुम यौबन अरुसो नव
 यौबनि सतेपर सब गुणान भरी । लाजनहीं मेरे गृह आवत जाहुजाहु
 करि विय भुहरी । अञ्जन अधर कपोलन वन्दन पीक पलक छवि
 देखि डरी । सूरश्याम रति चिह्न देखावन मेरे आये भले हरी ३८ ॥
 राग धनाश्री ॥ श्याम विया सन्मुख नहिं जोवत । कबहुँ नयन की कोर
 निहारत कबहुँ बदन पुनिगोवत । मनसन हँसत असततन परगट सुनत
 भावतीबात । खण्डितबचन सुनत प्यारीके पुलकहात सबगात । यह
 मुख सुरदाम कहु जानै प्रभु अपने को भाव । श्रीराधा रिसकरत नि-
 रस्त्रिमुख सो छविपर ललचाव ३९ पियको सुखप्यारी नहिं जानै ।
 जोइआवत सोइ सोइ कहिडारत जाहुजाहु तुमगानै । काहेको मोहिं
 डाहन आये रैनदेत सुखवाको । भली नबली नेखी पाई जो जाको
 सो ताको । चन्दन वन्दन वियअंग कंकुमा शेषतिये छां आये । सुर
 श्याम यह तुमहिं बडाई औरनिको शरमाये ४० ॥ राग बिलावल ॥ औरन
 को छवि कहा देखावत । तुमहीँको भावत मनभोहन हम देखत रिस
 पावत । आपुनको भइ वडी प्रतिज्ञा जावकभाल लगाये । याकोअर्थ
 नहीं कोउ जानत मारत सबन लजाये । पिय निधरक हम अतिसकु-
 चत हैं दर्पणा लै मुख देखौ । सुरश्याम क्यों बोलत नाहीं क्यों हमतन
 नहिं पखौ ४१ ॥ राग गौरी ॥ श्याम हँसे प्यारीमुख हेरो । रिसनि उठो
 भुहराय कहेउ यह बश कीन्हे मनमेरो । जायहँसे पिय तेही आगे
 मै रीझी अतिभारी । ऐसे हँसिकेताहि रिझावहु देउँ कहा अबगारी ।
 होत अबार गमन अब कीजै धरणी कहा निहारत । सुरश्याम सतकी
 मै जानीताके गुणाहि विचारत ४२ ॥ रागदेवान्यार ॥ मै जानो पिय मन
 की बात । धरणी पग नख कहाकरोवत अबसीखे ये घात । तुमजानै
 जिय हमहिं सयाने अरुसबलोग अग्राने । रैन बसतकहुँ भोर हमारे
 आवतनहींलजाने । यहचतुरई पढीताहीपै सोगुणाहमसे न्यारे । धनि

धनि सूरदास के स्वामी काहे हमन बिसारो ४३ मैं जानो हो जू ल
लन तहीं न सिधारिये जहां नयो नेहरा । मुहकीभलाई मोहंसे करन
आये जियकी जासों ताहीसों तुमबिन सूनो वाकोगेहरा । निशि के
मुखकी कहेदेत अधरनयना उर नख लागे छविदेहरा । बेगि सँवारो
पावँ धरिये सूरके स्वामी न तरु भीजै गोपियरोपट आवतुहै पियमे-
हरा ४४ ॥ रागगोडमलार ॥ दाढ़े रहौ आँगनहींहो पिय जौलैं मेहु नख
शिख भीजो । परनदेहु बड़ीबड़ी बूंदें तुमचीर उतारि और बख्खर्पाहि-
रौ तब गेह देहरी पावँदीजो । कहियेबात रैनिकी सांची ता पीछेसैंहैं
कीजो । सूरश्यातुमहौ बहुनायक देहसुधारि सो हूजो ४५ ॥ रागमलार
मोहंसें निटुराई दानी हो मोहनप्यारे काहेको आवनकहेउ सांचेहो
जु सांचे । प्रीतिके बचन बांचे बिरह अनल आंचे आपने गरज को
तुम सकपायँ नाचे । भलेहौ जू जाने लाल अरगजी भीनी माल केशरि
तिलक भाल मैन मंचकाचे । निशिके चिह्नचीह्ने सूरश्याम रतिभीने
ताहीके सिधायो पिय जाके रंगराचे ४६ ॥ रागमालकीशिक ॥ तुम जनि
सकुचो मेरे प्यारेलाल जा तियसों रति मानी ताही के रहौ अब । मैं
इतनेहीं भलोमान्यो प्रीतम जो मेरे आँगना पावँ धारे आपुन जब । न-
यन ललभये दरश देखतही अवगा ललभ भये बचन सुने तब । सूरदास
प्रभु चरणा छुपे कहति रोमरोम पुलकित अंगभये सब ४७ ॥ रागकान्हरी
नयन चपलता कहाँ गँवाई । सोसों कहा दुरावत नागर नागरिरैन
जगाई । ताहीकेरंग अरुणाभयेहौ धनि यह सुन्दरताई । मनो अरुणा
अम्बुजपर बैठे सत्त मृङ्गरस आई । उडि न सकत ऐसे मतवारे लागत
पलक भमाई । सुनहु सूर यह अंग साधुरी आलस भरे कन्हाई ४८
रागबिलावल ॥ नयनन की चंचलताकहा कहैं भीनेरंगकौनके हो श्याम
हमहं सों कतहौ दुरावत । औरनकेबदन देखिबे को नेम लियोताको
पलकन राखे भार भरेनये आवत । पुहुपगन्ध लोभभँवरउडि न सकत
फिरिबैठि जात समीप रति मानी संगलिये आवत रति कीरति गा-
वत । सूरदास प्रभु प्यारी रसबगकीन्हे मुखकी हमहिं बनावत ४९ ॥
रागकान्हरी ॥ जाके रस रैन आजु जागे हो लाल जाई । जावक तिलक
भलादियोहै बूंद लालबिन गुणावनी माल कहत अनाखी अरु बातनि

बनाई । अधर अञ्जन दाग मिट्यो है पीक पराग और मिटी बदनकी ललाई । अङ्ग अङ्ग शिथिल भयेहौ प्रेम सरके स्वामी मिटिगई चञ्चललाई ५० रङ्गभरि आयेहौ मेरेललना बातें कहतहौ अटपटी । अति अलसात जम्हातहौ प्यारे पिय प्रकट प्रिया प्रताप छूटत नहीं न अंतरकी गती । यह चतुरई अधिकई कहां पाईश्याम वाक प्रेमके पटेहौपटी ।

सूरदास प्रभु गिरिधर बहुनायक तन मन नयन चटपटी ५१ डोलत सहल सहल यहै रहल हम जानतितुम बहुनायकपिय । आयेहौसुरत किये टाटक रसलिये सकसकी धकधकी हिय । छूटे बन्दन अरुपागकी बांधनि लटपटे पेच अटपटे दियो । सूरदास प्रभु हौ बहुनायक मेरेपाव धारे बैठो जुबैठो भली कियो ५२ ॥ रागभ्रमन ॥ सहलसहलअब डोलतहौ । यहै कामते धाम बिसरेउ बूझे काहेन बोलत हौ । बहुनायकी आजु मैं जानी कह चतुराई तोलतहौ । निशि रसकियो भोर पुनि अटके शिथिल अंग पग डोलत हौ । टटके चिह्न पाछिले न्यारे धकधकात उर जोलत हौ । जाहु चले गुण प्रकटसूरप्रभु कहचतुराई डोलतहौ ५३ अङ्गअङ्गरङ्गभरे आये हौ । रङ्गभरिपराग भालरङ्गशोभा रँग रँग नैन पगाये हौ । रंग कपोल रँग पलकन शोभाअधरन प्रयास रँगाये हौ । नख छत रङ्ग चारु उर रेखा रति रङ्ग रैन जगाये हौ । कंकणा बलय पीठि गड्डिलागे उरउर छापबनाये हौ । दूरश्यामवामा रङ्ग पागे अनुरागे मन भाये हौ ५४ ॥ रागविलावल ॥ बारबार मैं कहति हौ पिय तही सिधारे । आयेहौ मनहरणा को हरि नाम तुम्हारे । भलीबनी छवि आजुकी क्यों लेत जम्हाई । रैन आजु सोयेनहीरति काम जगाई । वह रति तुम रतिनाथ हौ हम कैसे भावैं । सूर श्याम तुम बहु गुणीजे तुमहिं रिभावैं ५५ ॥ रागमोहठ ॥ सकुचत श्यामकहत मृदुबानी । किनदेख्यो किन कही बातयह मोहजूर कहैआनी । याते बचनबोलिनहिंआवतरिस पावतहौ भारी । जोरि कहति बातेंतुवआगे खोटी ब्रजकी नारी । तुमहूंतें ऐसी को प्यारी सौंह करौं जो मानौ । सुनहु सूर जो बूझति मोको मैं काहुन पहिंचानौ ५६ ॥ रागभैरों ॥ बिन बोल पियरहियेजू । नाहीं कही हमें कहतको अब सेसेजनि दहियेजू । मौनरहे तौ कछुगँवायो इनबचनन कह लहियेजू । सतेपर बकबा-

दन लागे कैसैरिस मनसहियेजू। सौंहकहा करिहो सुनिपावे सम्मुखह्वै
 धौं कहियेजू। सूरदासप्रभु रसिकशिरोमणि। रसिकहि सबगुण चाहिये
 जू ५७ ॥ रागबिलावल ॥ आइगई ब्रजनारि तहां। सौंह करत प्रियप्यारी
 आगे आनंद विरह महां। प्यारी हंसी देखि सखियनि को अन्तर
 रिस है भारी। नैन सैन देखै अंग अंग निरवति प्रिय शोभा अधिकारी।
 प्रयासरहे मुखमंदि सकुचिकै युवति परस्पर डेरें। सूरदासप्रभु अङ्ग अ-
 नुष छवि कहँपाये कहिकेरें ५८ तब नागरी कहति सखियनिसों सते
 पर ये सौंहकरें। दरशन प्रातदेतहैं हमको निशि औरनिके चित्तहरें।
 तुमहीं देखिलेहु आबानक सतेपर क्यों सहीपरें। कृपा करें अबतहीं
 सिवारें मोआगेते अद्भुत रैं। यहछवि देखिसनाथ भई मैं अब ताही
 पर जायदरें। सूरप्रयासरो देखि चले डरि कहौ सखी अब ह्यां न फिरें
 ५९ ॥ रागबिहागरो ॥ प्रयासगये तिय मान कियो। देखौ मोहिँ दोष तुम
 देती उन सेसे मनचोरि लियो। जाहुसदन तुमहंसब अपने में बैठी हों
 धाम। जानदेहु अब ह्यां जनिआवैं सेमेनको कहकाम। अनतहिबसत
 अनतही डोलत आवत किरिया प्रकाश। सुनहु सूर पुनि तौ कहि
 आवैं तनगिगये तापास ६० ॥

यहांते राधा जीको मान ॥

रागबिहागरो ॥ यह कहिकै वियधाम गई। रिसनिभरी नखशिखलौं
 प्यारी यौवन गर्वभई। सखी चली गृह देखि दशा यहदृष्ट करि बैठी
 जाई। बोलतितहीं मानुकरि हरिसों हरि अन्तररहेआई। यहिअन्तर
 युवती सबआई जहां प्रयास घनदारे। प्रिया मानुकरि बैठिरहोहैं रिस
 करि क्रोध तुम्हारे। तुमआवत अतिही भुहरानी कहाकरी चतुराई।
 सुनत सूर येबात चकृतप्रिय अतिहि गये सुरभाई ६१ बहुरि नागरी
 मानकियो। लोचन भरिभरि द्वारिदिये दोउ अति तनु विरहहियो।
 देखतही देखत अति व्याकुल प्रिय कारणा अकुलाने। वे गुण करत
 होय अबकांचे कहियत परम सयाने। यह सुनिकै दूतीहरि पठईदेखि
 जाय अनुमाने। सूरप्रयास यह कहितेहि पठई तुतरतजैं जेहिमाने ६२
 रागकेदारो ॥ दूतीदई प्रयास पढाय। औरकछु मुखकहत बारां तहांबैठी
 जाय। वियातन परवाहिनाहीं अपटि आवैंजाहिं। सौतिशाल सलाइ

बैठी डुलत इतउत नाहिँ । भीतिबिनु कह चित्रदेखैं रहीदूतीहेरि । सूर
 प्रभु आतुर पठाई करतिमन अवसेरि ६३ ॥ रागकान्हो ॥ दूती मन अव-
 सेरि करै । प्रयास सनावन मोहिँ पठईहै यह कतहूँ तबते न टरै । तब
 कहि उठी मानु अति कीन्हे बहुतकरी हरिकहा करौं । ऐसे बिनवे
 नहीं जानिहैं अबकबहूँ जिति उनहिँ टरौं । मैं आवति यमुना तटतेव्रज
 खखी एक यहबात कही । सुनहु सूरमैं रहि न सकी गृह कहा प्रयास
 की प्रकृति सही ६४ ॥ राग बिहागरो ॥ अबद्वारेते टरत न प्रयास । अबपर
 घरकी सोह करतहैं भूलिकरो नहिँ ऐसोकाम । अब तू मानुतजै जिति
 उनसों यहैकहन आई तेरेवास । अब समुझी औरौ समझैबे हम जब
 कहैं करै तबताम । अबमोको यहजानि परीहै काहूँके न बसे कहूँयास ।
 सूरदास दूतीकी बाणी सुनति धरत मनहीं मन काम ६५ ॥ रागसूहा ॥
 जबदूती यहबचन कहेउ । तबजाने हरिद्वारे ठाढ़े उरउमरयो रिसनहीं
 रहेउ । काहेको हरिद्वार खड़ेहैं किनराखे कहिजीभि गरै । मौन गहेउ
 मैंहीं कहिआवत काहेको तू रिसनिजरै । चतुर दूतिका जानिलईजिय
 अब बोलीगयो मानसबै । सूर प्रयास पै आतुर आई कहत आन की
 आनफबै ६६ ॥ राग केदारो ॥ काहि सनाऊँ प्रयासलाल बाल जोरैं नहिँ
 डीठि । मुखहूँ जो बोलै तौ मनहूँकी लहिये ऐसी निहारी अहोठि ।
 अपनीसी बहुतकही सुनिउनि सबैसही बारकी बंद ताको कहा करै
 बसीठि । सूरदासके पियप्यारी आपुहिजाय सनायलीजै जैसीबयारि
 बहै तैसी मोड़िये जुपीठि ६७ लजन तुम्हारी प्यारी आजु सनायो न
 मानति । भिंहरावत जानिका बैठी कियोजु इतरितुमहीं लैकोकियो
 गुण गानति । भरिभरि अँखियन नीरलेतिपै ढारति नाहीं अतिरिस
 कम्पतिअधर फरकिकरि भृकुटी तानति । सूरदासप्रभु रसिक शिरो-
 सगिआ आपुहि चलिये तौहोतौ भले सनावति ६८ ॥ रागपूर्वी ॥ हैंकैसेकै
 ल्याउ जो सरसपाउ प्रयासवाकी मान मानो गदबै भयो । तनु कञ्चन
 गिरि प्रकटाकियो तामेंबसनकोट रचेउअञ्चलडेउढी वेढदियो । बचन
 पौरियाबोलनखोलै मुखपौरिसुंदिरहेउ । मोहनमोहकमान नयनारिस
 कोबानतातेजाइ न निकटगयो । सूरदासप्रभु चतुरकहावत आपुहिच-
 लिये तौतुमहं पैजायलयो ६९ ॥ रागनट ॥ बिहरति मानुसरजुकसार ।

कैसेहृनिकसतिनहींहै रही करि मनुहारि । मौनपारि अपाररचि अव-
गाह आंशु जुवारि । मगन हूँ वै डरत नाहीं थकित प्रकट पुकारि ।
सूरप्रवाससरोज लोचन डुलनिजनु जलचारि । ग्राहक प्राणाचाहकत-
रत तहँडर डारि । चिकुरसइ बरगिकर अरुभक्ति सकति नहिं निर-
वारि । नीलचंचलपत्र पद्मनिनि उरजजलज निहारि । रहेउरचिरुचि
मान मानिनमन सरालमुरारि । सूरआपु न आनिये गहिबांहनारिनि-
करि ७० ॥ रागबिहागरे ॥ यह सुनिप्रयाम विरह भरे । कहूं मुकुट कहूं
करि पीताम्बर मुरखि धरणि परे । युवति भरि अँकवारि लीनहीहै
कहांगिरिधारि । आपुहीचलिबांह गहिये अँकलीजै नारि । अतिहि
व्याकुल होतकाहे धरौ धीरजश्याम । सूर प्रभु तुम बडेनागर विवश
कीन्हेकाम ७१ ॥ रागरामकली ॥ श्यामहिं धीरजदै पुनिआई । बाणी
यहै प्रकाशत मुखसे व्याकुल बडेकन्हाई । बारम्बारनयन दोउढारत
परे मदन जंजाल । धरिहारहे मुरभाय बिलोकेकहा कहीं बेहाल ।
बैठीआय अनमनी हूँ कै बार बार पछितानी । सूर श्याम मिलिके
सुखदेहि न जो तुमबड़ी सयानी ७२ तुरीं पिय भावति नाहिन आन ।
निशिदिन मनमन करत मनोरथ रसबस केलिनिदान । ध्यानबिलास
दरश संधर्ममिलि मानत मानिनिमान । अनुनय करत विवश बोलत
है दै परिरम्भनदान । प्रथम समागसते नाना विधि चरित तिहारेगान ।
सूरश्याम कुहवर अंतर सुनि सुयश आपने कान ७३ ॥ रागसारंग ॥ श्यामा
तु अति श्यामहिंभावे । बैठतउठत चलत गउचारत तेरिय लीलागावै ।
पीतै पीतबसन भूषणसजि पीतधात अँगलावै । चन्द्रानन सुनि भोर
चन्द्रिका साथेमुकुट बनावै । अतिअनुरागसैन संधर्ममिलि सङ्ग परम
सुखपावै । बिकुरत तोहिंकासि राधाकहि कुंज कुंज प्रतिधावै । तेरो
चरितलिखै अरुनिरखै वासरविरहु गँवावै । सूरदास रसरास रसिक
सों अंतर क्यों करिआवै ७४ ॥ रागबिहागरे ॥ मनपछिताबोई रहिजैहै ।
सुनिहुन्दरि यहसमय खोयते पुनि न शूल सहिजैहै । मानहु सैन म-
जीठ प्रेमरङ्ग तैसेही गहि जैहै । काम हरय हररै हरि अँवर देखतही
बहिजैहै । इतेभेदकी बातसखीरी कतकोऊ कहि जैहै । परत भवनि
खनि कपसरत्नो मदनअग्निनि दहिजैहै ७५ ॥ रागकेदारो ॥ तेरोरी नयन

मुहावने हो नेक न भावत न्यारेरी । पलक वोढ प्राणाजात तरेरीध्यान
 चकोर चन्दा बरसानचितवनिपर चरेरी । कमल कुरंगन सधुष उपसा
 नहिं आवै चंचल रहत चितेरेरी । मूरदास प्रभुकी तुहीं जीवनि क-
 तहिं करत विष भरेरी ७६ ॥ रागसारंग ॥ जब जवतेरी मुरति करत ।
 तब तब डब डबाय दोउ लोचन उमगि भरत । जैसेमीन कमल दलको
 चले अधिक अरत । पलककपाट न होत तबहिंते निकसि परत । अं-
 शुपरत ढरि ढरि उर ऊपर मुक्तामनहुं भरत । सहज गिरा बोलत न
 बनतहित हेरि हरत । राधा नयन चकोर बिना मुख चन्दजरत । मूर
 प्रयास तुम्हारे दर्शन बिनु नाहीं धीरधरत ७७ बहुरि पक्षितैहैरी ब्रज-
 नारि । देखिजाय दाढ़े मगजोवत सुन्दर प्रयास मुरारि । सेखी नितुर
 नेक नहिं चितवति चंचल नयन पसारि । कहा गर्व या भूठेतन को
 देखि हायलैबारि । तजि अभिमान मानिरी मानिनि में जु करति स-
 नुहारि । मूर हंस स्वाती सुत धोखे कबहुं क खात जुवारि ७८ हरि
 तोहिं बारम्बार मम्हारै । कहि कहि सब युवतिन के नामहिं नहिं
 रुचि जेहि उरधारै । कबहुं क आखिमूँदि करिचाहत चित धरि ठौर
 तिहारै । तब प्रसिद्धलीलाविहारते अबनहिं तुमहिं बिसारै । जो जाको
 जैसे करिजानै सो तैसे हितमानै । उलटी रीति तुम्हारी मुनि के सब
 अबिरिजु करिजानै । क्यों पतिआ पढवै नहिं उनको बाँचिसमुझि
 सुखपावै । मूरप्रयास हैं कुंजधाम में अन्त न मन बिरसावै ७९ राधे
 हरितेरी नाम उचारै । तुम्हरेहि गुणा ग्रन्थितकरि माला रसना कर
 मों टारै । लोचन मूँदि ध्यान धरि दृढ़करि नेकन पलक उधारै । अङ्ग
 अङ्ग प्रति रूपमाधुरी उरते नहीं बिसारै । सेसेनेम तुम्हारे प्रिय के
 कहजिय नितुर तिहारै । मूरप्रयास मनकाम पुराबहु उठि चलि कहे
 हमारै ८० ॥ रागकेदारो ॥ जाके दरश को जग तरसत ताहि देखी दरश
 नेकदेरी । जाकी मुरलीकी धुनि मुर मुनि मोहैं ता तन नयन चितैरी ।
 शिवबिरचि जाको पार न पावत सो ता तेरे चरणन परसतुहैरी । मूर
 दासबश तीनिलोक जाके हैं सो तौ तेरेबश माईरी तू मुख धुनि सुनाय
 मोहिलैरी ८१ ॥ रागभोपाली ॥ तुव कोहैरी कौन पढई तेरीको मानै । तजो
 कहति प्रयास को न देखे न सुने को पहिंचाने । और कहति कहिनेषु

लिये छाँको बैसी बेईजानै । सूरदास प्रभु रसिकबडे तोको पठई अतिहि
सयालै ८२ ॥ रागसांग ॥ अति न हठकीजैरी सुनि गवारि । हैंजु कहति
तू सुनि याते सुठसरे न सकोडारि । सक समय मोतिन के धोखे हंस
चुगतहै उवारि । कानी कान्ह कुँवरके ऊपर सर्वसदीजै वारि । यह
यौवन बरयाकी नदि ज्यों फोरति कतहि करारि । सूरदास प्रभु अन्त
मिलहुरी येबीते दिनचारि ८३ ॥ रागरामकली ॥ कहा तुम इतनेहिँ को
गर्बानी । यौवनरूप घोस दशहीको ज्यों अंजुलिको पानी । तूराकी
अग्नि धूम को मन्दिर ज्यों तुयारकन पानी । रिसहो जरत पतङ्ग
उयोति ज्यों जानतिलाभ न हानी । करि कछु ज्ञान अभिमान जानदैं हैन
कौन मतिठानी । तनु धनु जानियाम युगछाये भूलति कहा अयानी ।
नबसै नदीचलति मर्यादा सुधिये सिन्धु समानी । सूर इतर ऊसर के
बरये थोरैहि जल इतरानी ८४ ॥ रागपूजा ॥ तू चलि प्यारीरी येतो हठ
छाँडि मानिरी । परम बिचित्र गुण रूप आगरी अतिही चतुर तिय
भारीरी । मनमोहन तनु मदनदहतहै तोरि उनकि पिरन्यारीरी । सूर
दास प्रभु बिरह बिकलहैं नेकन निरखि निहारीरी ८५ ॥ रागविहागरी ॥
बादि बक्त काहेको तू कत आई मेरेघर । वे अतिचतुर कहा कहिये
जिनि तोसी मुखलैन पठाई तनुबधति बचनन शर । उतकी इत इतकी
उत मिलवति समुझति नाहिन प्रीतिरीति कोही तुम कोहैं गिरिवर
धर । सूरदास प्रभु आनि मिलैगे कुँहें पग अपनेकर ८६ ॥ रागमलार ॥ ज्यों
ज्यों मैं निहारो करैं त्योंत्यों यों बोलतिहैरी अनारखी खसनिहारी ।
बहियां गहति सतराति कौनपर मगधरि डगरी कौनपर होति पीरी
कारी । को कौन करत मान तोसी और प्रिय आन हठ दूरि करि
धरि मेरेकहै आरी । सूरदास प्रभु तेरोपथ जोवत तोहिँ तोहिँ रलगी
मदन दहत तनुभारी ८७ तूतो गवारि अहीरी तोसां वै कछु नँदनन्दन
हँसि कहैउ इतनेहिँ को तुव कबकी अनउत्तर बोलति कहैउ नहिँ मा-
नतिरी । श्यामसुन्दर हँसि हँसिदेत सुनि सुनि करतिकानि यकटकहि
गारिनिजु रहीरी । कहाकहाँ हरिसों वे तोसी को मुह लगाई वारि
फेरिडारो तोहिँपिय सकरोम परीरी । सूरदास प्रभु को कहा कहि
बरगो सती कबहूँ काह की न सहीरी ८८ ॥ रागनट ॥ यकतो लालन

लाडनि लड़ाई दूज योवन बावरी । उनके गर्ब जनि भूलि रहैरी हम
 सांच करिलीन्हे सुखअनेक दिनदिन चारिहेत अविह चारवरी । मेरो
 कहेउ तू मानरी माई सबधियानिको यहै सुभावरी । मैंजुकहत करि
 सुरप्रयासों हिलिरहिये उठत बैसको यहै दावरी ८६ ॥ रागकान्हरो ॥
 रहैरी भासनि मानु न कीजै । यहयौवन अंजुरी जल है जो गोपाल
 सांगे तो दोजै । सरा सरा घटति बढ़ति नहिं रजनी ज्यों ज्यों कला
 चन्दकी कीजै । पूरा पुण्य मुकत फलतेरो काहेन रूपनयन भरिपीजै ।
 सोह करति तेरे पायनकी सेसे जियनि दशौ दिनदीजै । सुरसुजीवनि
 सुफल जगतको बैरीबांधि बिबश करिलीजै ८७ ॥ सुनिष्यारी राधिका
 सुजान । कहिधौं कान काज सरिहैरी यहि भूँटे अभिमान । जिनके
 चरणा रमानित लालति सब गुण रूप निधान । तिनके मुखके बचन
 मनोहरसोत करति न कान । परमचतुर सुन्दरि मुखकारी तोसीधिया
 न आन । कीजैकहा कृपाका सन्धति दिना भोग बिन दान । सेसी
 व्यथाहेत निशि हरिको जनि हठिकरै बिहान । नाहिन कहत और
 के काढेसूरसदनके बान ८८ ॥ रागगमकली ॥ आजु हठिबैठी मानकिये ।
 महाबोध रस अहतपत मिलि मनुबिय बियम पिये । अवमुख रहति
 बिरह व्याकुल सिख सरिसंघ नहिं मानै । शुक्रनहिं तजै सुमिरजाती
 ज्यों सुधियायेतनुजानै । सकलीक बसुधापर काढी भक्तन गोदपसारी
 जनुवोहित तजितके परनको दधि ज्यों अवनि निहारी । ज्यों अति
 दीन दुखी सबही अंग कतहूँ शांति न पावै । तो बिन पियहि धिया
 प्रातहिते एकइबात मनावै । कबहुँक धकति धरणि अमजलभरि महा
 शरद रबिसाण । चाहक भई चित्रपुतरी ज्यों जीवनकी नहिं आश ।
 तब उपचार कियो मैं करकस लैरस पारेउ कान । मुरझा जी नहिं
 मुखबोली लैबैठी फिरमान । हैंतौ थकी करति बहु यत्ननि जीकी
 व्यथा न पाई । बूझहु लाल नवल नागर तुम सकै सैन बताई । शिव
 आकार दिखायो कह्यक भावदोष रसनाहीं । सूरदास प्रभु रसिक
 शिरोसणि लैमेलौं पगछाहीं ८९ ॥ रागगन्धार ॥ पिया पिय नाहिं म-
 नायो मानै । श्रीमुख बचन मधुर मृदु मादक कठिन कुलिशते जानै ।
 शोभित सहित सुगन्ध प्रयासकच कलकपोल उरभाने । सानहँ बेधत

प्रस्थोकलानिधि तजत नहीं बिनदाने । बालभाव अनुसरति भरतिदृग
अग्रशुकन आने । जनुखंजरीट युगल जठरातुर लेत सुभय अकुलाने ।
नयन निकट ताटंक गंडसंडल पर कबिनबखाने । जनु खद्योत चमकि
चलिसकत न निशिगति तिमिर हिराने । यहसुनिकै अकुलाय चले
हरि कृत अपराध समाने । सूरदासप्रभु मिले परस्पर मानिनि मिलि
मुसुकाने ६३ ॥ रागधनाथी ॥ मानि मनायो मौन रही । सङ्कुच समेत
चली उठि आतुर बदनको गैल गही । बिधुमुख निरखि बिमुखकरि
लोचन पुनिबिधु बदनचही । दरशपरश तदङ्ग आजु निज भुव नख
लेख कही । पुहुप सुरंग शारंग रिपुवोट दिखावतु चतुर लही ।
पाणि सुपरसत शीश परस्पर मुसुकाने तबहीं । दृषा तोरेउ गुणाजात
जिते गुण काटति रेखमहीं । सूरप्रयास बहुरेउ मिलि बिलसहुजाति
अवधि अबहीं ६४ ॥ राग सारंग ॥ चली बन मौन मनायो मानि । अ-
ञ्जल ओठ पुहुप दिखरायो धरोशीशपर पानि । शशितन चितै नयन
दोउमंदे मुखमहं अंगुरी आनि । यह तो चरित गुप्तकी बातें मुसुकाने
जियजानि । रेखातीनि भूमिपर खांची दृषातोरेउ करतान । सूरदास
प्रभु रसिक शिरोमणि बिलसहु प्रयास सुजान ६५ ॥ राग गौड मलार ॥
सैनदे कहेउ बनधाम चंलिये प्रयास यहै करिकाम जबआनि मिलिहैं ।
भावही कहेउ मनभाव दुह राखियो देउमुख तुमहिं सँगरइ रलिहैं ।
जानिपियअतिहि आतुरनारि आतुरी गईबन तीरतनु सुद्धिहेती । सूर
प्रभु हरयभये कुञ्जनव तहाँगये सजतरतिसेजजे निगमनेती ६६ प्रयास
बनधाम मगबास जोवैं । कबहुँ रचिसेज अनुमानजिय जियकरत लता
संकेततरकबहुँसेवैं । एकसरा एक धरीधरी एक ग्राम बासग्रामसक
बासरतेहोतभारी । मनहिंसनसाध परवतअङ्ग भावकरिधन्यभुज धन्य
हृदय मिलेधारी । कबहिं आवैसाँभशोचअति जियसाँभ सैनखग
इन्दुहैं रहे दोऊ । सूरप्रभु भासिनी बदन पूरगाचन्द रस परश मतहिं
अकुलात वोऊ ६७ ॥ राग नटनारायण ॥ दूतीसङ्ग हरिके रही । प्रयास
अति आवीन हैंकै जाहुतासों कही । बेगिआनि मिलायमोको परम
प्यारीनारि । देखिहरि तनुकाम व्याकुल चलीमनहिं विचारि । गई
तहं जहं करति राधा अङ्ग अङ्ग शिङ्गार । सूरके प्रभु नवल गिरिधर

सङ्गजानि बिहार ६८ ॥ राग बिहागरो ॥ राधासखी देखि हरधानी । आ-
 तुर प्रयाम पठाई याको अन्तरगतिकी जानी । वहशोभा निरखत अँग
 अँगकी राधारही निहारी । चकत देखिनागरि मुखवाको तुरत शिं-
 गार बिसारी । ताहि कहेउ मुखदैचलि हरिको मैं आवति हैं पाछे ।
 वैसहि फिरी सूरके प्रभुपै जहाँकुञ्ज गृहकाछे ६९ ॥ राग केदारो ॥ दूती
 देखि आतुर प्रयाम । कुञ्जगृहते निकसिघाये कामकीन्हो ताम । बो-
 लिउटी रसाल बाणी धन्यतुव बड़ भाग । अबहि आवति बनीबाला
 किये मन अनुराग । कहा बरगौं अङ्गशोभा नयन देखौ आज । सूर
 प्रभु नेकधरो धीरज करौं पूरया काज १०० ॥ राग ईमन ॥ बड़ेभाग के
 मोटेहौ । ऐसीप्रिया औरकोपावै बने परस्पर जोटेहौ । तैसिय नारि
 सुन्दरी छोटी तैसेइ तुमबलि छोटेहौ । पूरव पुण्य सुकृत फलकी वह
 आपु गुणानिकारि होटेहौ । परम सुगौन सुलसरा नारी तुमहिं विभ-
 ङ्गी खोटेहौ । सूरप्रयाम उनकेमन तुमहों तुमहूँ नायक कोटेहौ १०१
 राग काफो ॥ सुन मोहन तेरिप्राणा प्रियाको बरगौं नन्दकुमार । जोतुम
 आदिअन्त मेरोगुण मानहु यह उपकार । चन्दमुखी मोहैं कलङ्कविच
 चन्दन तिलक लितार । मनुबेसी भुवङ्गिनि के परसत अवत सुधाकी
 धार । नयन सोन सरवर आनन में चञ्चल करत बिहार । मानों क-
 रणाफूल चाराको रवकतबारस्वार । बेसरिबनी सुभग नासापरमुक्ता
 परमसुहार । मनोतिलफूल सुघरविम्बाधर दुहुँविच बूंद तयार । सुठि
 सुठान ठाढ़ी अति सुन्दरि सुन्दरताको सार । चुवतहि चुवत सुधारस
 मानों रहिगइबूंद संभार । कराईशरी उरपदिक विराजत गजमेतित
 के हार । दहिनावत देतमनों ध्रुवको मिलि नखतनकी मार । कुचयुग
 कुंभ शुण्डि रोमावलि नाभि सुहृदय अकार । जनुजल सोखि लियो
 संशयता यौवनगज मतवार । रतनजडित गजरा बाजूबंद शोभाभुजनि
 अपार । फुंदा सुभग फूल फूले मनो मदन बितप की डार । छीनलङ्क
 नीवी किङ्किरि धुनि बाजत अति भनकार । मौरबाँधि बैठोजनु
 दूलह मन्मथ आसनमार । युगलजंघ जेहरि जरावकी राजत परम
 उदार । राजहंसगति चलति कशेदारि अति नितम्ब के भार । छि-
 टकि रहेउ लहंगा रंग ता संग सारीतन सुकुमार । सूर सुअङ्ग सुगन्ध

समूहनि भँवर करत गुञ्जार १०२ ॥ राग जेतथी ॥ नव नागरी हो सकल
 गुला आगरी हो हरिभुज श्रीवाहो शोभासीवा हो । गौर प्रयास छबि
 पावई भई सबतौ में हे सखी यौवन कियो प्रवेश । कहा कहैं छबि
 रूपकी नख शिख अङ्ग सुदेश । श्रीपति केलि सरोवरी से सब जल
 भरिपूर । प्रकट भई कुच उंचस्थली सोख्यो यौवन सूर । कुटेकेश म-
 उज्जन समय देखि बिरुध अहिमार । भोर कुहू निशि मेरुते उत्तरि चले
 बहि ओर । शीघ्र सचिक्रपा केश हो बिच श्रीमन्त सर्वारि । मानहुँ
 किरणि पतङ्गते भयो द्विधातम हारि । केशरि आइ लिलाटहो बिच
 सेंदुरको बिन्दु । चक्र तरेउना नयनमृग रथबैठो जनुइन्दु । नयनन ऊ-
 पर कह कहैं यों राजत भुवभङ्ग । युवा बनावत चन्द्रमा चपल होत
 सारङ्ग । चरूपकलीठी नासिका राजत असल अदोश । तापर मुक्तायों
 बन्यो मनो भोरकन ओश । मुक्ताआप बिकायके हो उरमें छिद्रकराय ।
 अधर अमृत दिततप करेउ अधमुख ऊरध पाय । अधरनि की छबि
 कह कहैं सदाप्रयास अनुकूल । बिम्बपवारे लाजहीं हरयत फुलेफूल ।
 पांतिकांति दशनावली रहे तमोल रँगभीजि । बन्दनसों शशि में बये
 मनोसै दामिनिके बीजि । गुंजा कीसी छविलई मुक्ता अति बडभाग ।
 नयननकी लइ प्रयासता अधरनको अनुराग । बेसरि को मुक्तामणि
 धनिधनि नासा ब्रजनारि । गुरुभृष्टुत बिच भौसहो शशिसमीप ग्रह
 चारि । खंडिला सुभग जरावके मुक्तामणि छबिदेत । प्रकटभयो धन
 मध्यते शशिमनो नखत समेत । सुन्दर सुभग कपोलहो रहेतमोर भरि
 पूर । कञ्चनसम्पुट द्वैपला मानहुँ भरेसिंदूर । चिबुक छिडोना जबदियो
 मोमनधोखे जात । निकस्यो अलिशिशुकञ्जते मनहुँ जानि परभात ।
 जेहिमारग बनवाटिका निकसति आनि सुभाय । सधुपकमल बनकां-
 डिके चलत सङ्गलपटाय । जहां जहां तू पग धरै तहां तहां मन साथ ।
 अतिअधीन पिथहैरहे तनमनदै तवहाय । देखिवदनके रूपकी मोहन
 रहेउ लुभाय । यकटक रहै चकोर ज्यों दुष्टि न इतउत जाय । तोहिँ
 श्यामसोहै सखी बडो निरन्तर प्रीति । तू तनमन धनश्याम को तैं हरि
 पाये जीति । सतमोहन तू बशकरे अति प्रवीण नँदलाल । मुरदास गावैं
 सदा कीरति विशद बिशाल १०३ ॥ रागनट ॥ राधासंग ललितालिये ।

प्रयाम आतुरजानि बाला गवन आतुर किये । किंकरीणी धुनिश्रवणा
 सुबिहरि अतिहि पुलकित हिये । नारि आवत जानि गिरिधर नहीं
 धीरज जिये । चले आतुरधाय आगे सङ्ग सहचरि बिये । सूरप्रभु रति
 रङ्गराचे देखि रीझे त्रिये १०४ ॥ रागबिलावल ॥ पियछवि निरखत ना-
 गरी अंग दशा भुलानी । अन्तरगति आनंदभरी ललिता हरयानी ।
 सहचरिसों कहिसुमन लै हरिफेंट भराये । अतिअधीन पिय ह्वै गये बश
 परे पराये । मारग सुमन बिछावहीं पग निरखि निहारैं । फूले फूले
 धरधरैं कलियां चुनिडारैं । ऐसे बश पिय बासके सुख सूरज जानैं ।
 जोजेहि भावनि हरिभजै तेहि तैसे मानैं १०५ ॥ रागपूर्वी ॥ पीछे ललिता
 ताआगे श्यामा प्यारी ता आगे पिउ मारगफल बिछावत जात । क-
 ठिन कठिन कलीबीनि करत न्यारी न्यारी प्यारीके चरणा कोमल
 जानि सकुचत अति गहिबेहि डरात । दीरघलता अपनेकर निरवारत
 ऊंचे लैडारत द्रुमबेली पात । सूरदास प्रभुकी ऐसी आधीनता देखत
 मेरे नयन सिरात १०६ ॥ रागकान्हरो ॥ चौंढे बार संझिन परसत श्यामा
 पीछे अपने अञ्चलमें लिये । बेगो गुंथन मिसफूल सुगन्धफेंट भरेडो-
 लत बोलत नाहिं न सकुचहिये । अस कुसुमी सारी में अलक भलक
 गोरेतनु मनें अहिकुल चन्दन वन्दन सों पूजाकिये । सूरदासप्रभु त्रिय
 मिलि नयन प्राणा सुख भयो चितै कुरुखिअनि अनकति दिये १०७
 रागरामकली ॥ बरणा बरणा बनफूलि रहेउ । हरयित ह्वै दृषभान नन्दिनी
 संग सबसखिन कहेउ । कुसुमकली देखत रुचि उपजी यहकहि तितहि
 सुनावति । आपु न चुनति गोद लै धारति युवतिन कहति चुनावति ।
 हँसति परस्पर दैतारी श्यामलिये करवाहीं । सूरदासप्रभु कामआ-
 तुरे और ध्यान चितनाहीं १०८ डोलति बांकी कुञ्जगली । ब्रजबनिता
 मृगशावकनयनी बीनति कुसुमकली । कमल बदन पर बिथुरि रही
 लट कुञ्चित मनहुं अली । अवरबिम्ब नासिका मनोहर दामिनिदशन
 छली । नाभि परसलैं सरस रोमावलि कुचयुग बीचचली । मनहुं बि-
 बरते उरगारिंथोतकि गिरिके सन्धिधली । पृथुनितम्ब कटिछीन हंस
 गति जघनसघन कदली । सूरसुमोहन लालरसिक संग बन घन मांभ
 रली १०९ ॥ रागपूर्वी ॥ सखियनसंग राधेकंवरि बीनति कुसुमकलियां ।

एकबहिक्रम सकाहि बाबकस्वरुप गुणाकीसीवां मनभावत सुन्दर प्रयाम
लालके करमेहति रंगीली डलियां । एकअनूपम मालवनावति सक
परस्पर बेनीगंधति भ्राजति कुञ्जगलियां । सूरदासप्रभु संगमिलि कौ-
तुक देखत हरयि हरयि प्यारी अंकुस भरियां ११० ॥ रागकल्याण ॥ लै
गई धामवन प्रयाम प्यारी । रहेलपटाय दोउभुजनि पलटायकै कहेउ
पिय बचन है । निठुरनारी । बिहँसि वृषभानतनया कहति हम निठुर
तुम सुहृद बातवै जनि चलायो । निठुर अरु सुहृदसो मनहिंसन जानि
है कहावह कथाकी सुरति धायो । परस्पर हँसे दोऊ रसे रतिरङ्ग में
करत मन काम फलपुरुष नारी । सूरप्रभु कोकगुणामे निपुणा हैं बड़े
काम बलतोरि रसरहेउ भारी १११ ॥ रागसूत्र ॥ गिरिधर नारि अबल
अतिकीन्ही । सबल भुजाधरि अंकुस भरिभरि चापिकटिन कुच उर
पर लीन्ही । कोक अनागत क्रीडापररुचि दूरिकरत तनसारी । कमल
करन कुच गहत लहतपट देखौ वहछबि न्यारी । बारबार ललचात
साधकरि सकुचति पुनि पुनि बाला । सूरश्याम यह काम करौ जनि
धनिधनि मदनगोपाला ११२ ॥ रागरामकली ॥ सुतादधिपतिसों क्रोधभरी ।
अम्बर लेतभई खिभि बोलाहि शारंग रङ्गलरी । तब औपति अतिबुद्धि
बिचारी मरिालै हाथधरी । वै अतिचतुर नागरी नागारि लैमुखसांभ
करी । चापत चरणाशेष चलिआयो उदयाचलहि डरी । सूरदासस्वामी
लीला उर अंकुलागि उवरी ११३ सकुचि तन उदधिसुता सुसकानी ।
रबिसारथी सहोदर तापति अम्बर लेत लजानी । शारंगपाशा सुंदि
मृगनयनी मरिा मुखसांभ समानी । चरणाचापि सहिप्रकटकरी पिय
शेषशीश सहुंदानी । सूरदास तब कहकरे अबला जबयह मतिहीठानी ।
कुच अंकुसभरि चापि कटिनडरि प्रयामकंठ लपटानी ११४ ॥ रागबि-
लावल ॥ वह छबि अङ्ग निहारत प्रयाम । कबहुंक चुंबनदेत उरज धरि
अति सकुचति तनबाम । सन्मुखनयन न जोरति प्यारी निलजभये पिय
सेसे । हाहा करति चरणा करिहेरत कहाकरत ढंगनैसे । बहुरिकामरस
भरे परस्पर रति बिपरीति बढ़ाई । सूरश्याम रति पति बिह्वल करि
नारिरही सुरभाई ११५ पिय प्यारी तन अमितभये । सकुचिउठी ना-
गारि पटलीन्हे प्रयाम लजाग्रये । सावधान रतिअन्त भरेपिय प्यारी

तन नहिं हेरत । नागरि कुटिल कटाक्षनि हेरति भृकुटी बंकटफेरत । ऐसे
 पुसा किनि तुमहिं सिखाये तिरगाँ कटि कसि दीन्ही । सूर कहति
 पियसों वियबाँ मैं आज तुमहिं मैं चीन्ही ११६ ॥ रागधनारी ॥ हरयि
 प्रयास वियबाँह गही । अपनेकर सारी अँगसाजत यह यकसाध कही ।
 सकुचति नारि बदन मुसकानी उतको चितै रही । कोक कला करि
 पूरादेऊ विभुवन और नहीं । कुंजभवन संग मिलि दोउ बैठे शोभा
 सकचही । मुरप्रयास प्रयासा शिर बेगी अपने करनगुही ११७ ॥ राग
 जेतथी ॥ मोहन मोहनि अङ्ग शिँगारत । बेगी ललित ललित करगुंथत
 निरखत सुन्दर माँग सवारत । शीशफूल धरि पाटी पोछत फुन्दनि
 भुवनिहारत । बन्दन बिन्द जराय कि बेदी तापर दनय सुधारत ।
 तरिवन अवगा नयन दोउ अंजत नासाबेसरि साजत । बीरी मुखभरि
 चिबुक डिठौना निरखि कपोलनि लाजत । नख शिख सजत अंगार
 भावसों जावक चरणनि सोहत । मुरप्रयासविय अँगनि सवारत निरखि
 आप मनमोहत ११८ ॥ रागललित ॥ ऐसेहि सुख सबरेनि बिद्वानी । भोर
 भये ब्रजवास चलेदोउ मन मन नारि सिहानी । प्यारी गइ दृषभान
 पुरातन प्रयासजात नंदधाम । प्रमदा सहल द्वारहीटाही उन देखी वह
 बाम । प्रात चले बनते ब्रज आये मनमन करति विचार । सुनहु सूर
 सकुचत ठिठुकरत गृह आये नन्दकुमार ११९ ॥

बहुरि खण्डितावचन ॥

रागदेवगन्धार ॥ कितते आये है नंदलाल ऐसी कौन बाल जो धोखे
 तुमआये द्वारे हैं भाँके । मिटतिनहीं चितवनि हित चितकी वहै टेव
 नित नितकी मैं पहिँचाने नयनाबाँके । कबहुँ जम्हात कबहुँ अँगमारत
 अटपटात मुख बात न आवत रैनिकहुँ धौं थाके । मुरदाम प्रभु रसिक
 शिरोमणि रसिक रसिकई जानी नामलेहु रहेजाके १२० ॥ रागललित
 बनतनते आये अतिभोर । रातिरहे कहूँगाइत घेरत, आयेहैं ज्योंचोर ।
 अङ्गअङ्ग उलटे आभुषण बनहुँ मैं तुमपावत । बड़भागी तुमते नहिँ कोई
 कपाकरत जहँ आवत । औचक आगये गृहमेरे दुल्लभ दर्शन दीन्हे
 मुरप्रयास निशिहैं कहूँ जागे पावति अँगअँग चीन्हे १२१ ॥ रागबिलावल ।
 लाल उनींदे भये । राजत हैं रतनारे नयना मानहुँ नलिन नये । पीक

कपोल लिलाट महाउर वन्दन बलित खये । जनु तन जामेसद्य अरुणा
दल कामके बीजबये । बिन गुणहार पयोधर मुद्रा हृदय मुदेश ठये ।
अंजन अधर सुमंत्र लिख्यो रति दिक्षा लेनगये । सूरप्रियाम बिश्वरे कच
मुखपर नख नाराच हये । ताऊपर आनंद इन्दु जनु मानहुँ समर जये
१२२ ॥ राग बिभास ॥ रैनिकागे रतिरस पागे अनुरागे नबिचिय सङ्ग । मेर
सन्मुख कत आयेहो दहन पिय रसमसे नयन अटपटात बैननि तहांई
जाहु जाके रङ्ग । बिनगुणा बनी मालपीक कपोलनिलाल जावक ति-
लक भाल कीन्हे रस बगअङ्ग । सूरदास प्रभु तुम रजनी बिहाय आये ।
जीतिअनङ्ग १२३ ॥ राग बिलावल ॥ मुनतसखी तहँ दौरिगई । मुनेप्रियाम
मुखमाके आये धाई तरुशानई । कोउ निरखतिमुख कोउनिरखति
अंग कोउनिरखति रँग और । रैनिकहूँ फिरि परे कन्हाइ कहतिसबै
करिरीर । तब कहिउटी नारि मुखमा यह भाग हमारो आये । सूर
प्रियाम धनिवास लुह्यारो जिन निशिबग करिपाये १२४ ॥ राग बिभास ॥
साईआजु लाल लपटात आये अनुरागे । शोभित भयरा अङ्गअङ्ग आ-
लसभरे रैन उनींदे जागे । लटपटी गिर पेंचपाग छूटे बन्दनि बागे ।
सूरप्रियाम रसिक राय रसबग कीन्हे सुभाय जागे जहाँ सोई बिया
बडभागे १२५ ॥ राग भूपाली ॥ होसाई आजुअनत जागेरी मोहन भोरहीं
मेरे कीन्हेहैं आवन । शोभित भयरा अङ्ग अङ्ग आलसभरे लै लै आगे
अनमिली मिलावन । अब कैसे पतिआतिहो प्रीतम साँचेहो सोंहनि
बोलनि बाहन । सूरप्रियाम रसिकराय जावक चिह्नलाय अब आये
मोहिँ असल सजावन १२६ ॥ राग सुघराई ॥ आजुबन्यो नवरङ्ग पिया-
रो । ब्रजबनिता मिलिक्यों न निहारो । लटपटिपाग महाउर पागी ।
कुंवरि सनावति अति बडभागी । पीककपोल अधर मसितारो । आ-
लस बलित सबै निशिजागे । कहूँचन्दन कहूँचन्दनकी छबि । रैनिरङ्ग
अंगअङ्ग रहेउफबि । सूरप्रियाम के यहछबि देखो । जीवनजन्म सुफल
करिलेखो १२७ आजु बने नवरङ्ग कबीले । डगमगात पग अंग अंग
ढीले । जावकपाग रंगीधौं कैसे । जैसी करी कहौपिय तैसे । बोलत
वचन बहुत अलसाने । पीक कपोलनिसों लपटाने । कुसकुस हृदय भु-
जनिछबि बन्दन । सूरप्रियाम नागरिसन फन्दन १२८ ॥ राग गौरी ॥ आजु

बने बनते ब्रज आवत । यद्यपि हैं अपराध भरे हरि देख तऊ मोहिं
 भावत । नखरेखा मुक्तावलिके तट अङ्ग अनुपलसी । सनोंसुरसरी ईश
 शीशते लै बिधुकला धँसी । केलिकरत काहू युवतीकर कुसकुमभरि
 उर दीन्हो । सनोंभारती पञ्चधारहैं नभते आगम कीन्हो । बीचबीच
 कसनीय अङ्गपर प्रयासलरेख रही । सूरसुता सनों कनक भूमिपर
 चारि प्रवाहबही १२९ ॥ राग रासकली ॥ सखिशोभा अनुपम अतिराजै ।
 नयनकोन की अञ्जनरेखा पटतर कहूं न छाजै । खञ्जरीट मनोप्रसित
 पन्नगी यह उपमा कहूँ आवै । दुखसिंधुकी गरल कलाज्यों कोटिक
 भ्रम उपजावै । की सुरसरिता सूरतनय तट की पर्यपिवर्ति भुवङ्गिनि ।
 की अपमानमानि सागरते उलरी यमुन तरङ्गिनि । शम्बरारिको सु-
 यशकी प्रकट एकही काल । किधौं रुचिर राजीव कोशते निकसि
 चल्यो अलिमाल । सूरदासदासनि हितकरकी हरिहलधरकी जोरी ।
 राधाबर निशि रसिकशिरोमणि कवि कुलपरी ठगोरी १३० ॥ राग
 अङ्गाने ॥ लाल आवैंहो उनींदे आपुन पौढिये पलिका हो पलोढिहैं
 पाय । मेरी सङ्ग व जियमें कत आनतिहो तौ अन्तःकारिनि हैं तुम
 जिनजानौ मोसों औरनिकेसे सुभाय । यह अचरज आवत इनबातन
 मानु करतनहिं मानत मोसों आये मानसनाय । सूरप्रयास ता बामहिं
 बशकर लीन्हो कण्ठलगाय १३१ ॥ राग ललित ॥ आजुअति रैनउनींदे
 लाल । तुम पौढी में चरगा पलोढों जिय जनि जानौ खयाल । सुमन
 सुगन्ध सेजहैडासी देखति अङ्गबेहाल । मेरेकहेन्हाउ कहूँ भोजनकारी
 सदन गोपाल । निशिअसभयो पीरमोहिं आवति सुनति परस्परवा-
 ल । सूरप्रयास सुनि बचन कपट विय भरि लीन्हो अंकमाल १३२ ॥
 राग बिलावल ॥ प्रयासहिं मुखदै राधिका निजधाम सिधारी । चिततेकहुँ
 उतरत नहीं श्रीकुञ्ज बिहारी । रैन बिपिन रतिरस रहेउ सो सनहिं
 बिचारै । पियसंगके अंग चिह्नजे दर्पणाहिंनिहारै । यह अन्तर चन्द्रा-
 वली राधागृह आई । अङ्ग शियल कबि देखिके जहँ तहँ भरमाई ।
 कहेउ चहति कहतिन बने मनमन अनुमानै । सूरप्रयास संग निशिबसी
 निप्रचय यह जानै १३३ ॥ राग आशावरी ॥ चन्द्रावली सखिनसंग लीन्हो ।
 राधाके गृहआईहो । आजु अङ्गशोभा कहूँ औरै हरिसंग रैन पुराई

हो । अबतौनहीं दुरावरहेउ कछु कहौसाँच हमआगेहो । अवरदशन
छत उरजनि नखछत पीक पलक दोउपागे हो । हमजानी तुम कहौ
प्रकटकरि प्रथामसंग सुखमानो हो । सुनहुसूर हम सखी परस्परक्यों
न रैन यशगानोहो १३४ कहतिमखिनमों राधिका तुमकहतिकहा
री । मेरीसोंकी हँसतिहौ सुनिचकतमहारी । पीककपोलनयोंलख्यो
मुखपोंछनलागी । कहाँश्याम कहँ मैरहीकबधों निशिजारी । उरज
करज निज करजको गरहार सँवारत । सहज कछुक निशि में जगी
वचनन शरमारत । कहतिऔरकी औरई में तुमहिँदुरैहैं । सूरश्यामसंग
जोमिलौं तुमसों नहिँ कैहैं १३५ आजुबनी नवरङ्ग किशोरी । रसिक
कुँवरमोहन बिनजोरी । बिथुरीअलक शिथिलकरिडोरी । कनकलता
मनोपवन झकोरी । अवर दशन छतकछुछबि थोरी । दर्पगालै देखो
मुखगोरी । मुखलूत अतिहीभइभोरी । सूरसखीडारत तृणातोरी १३६
रागठोड़ी ॥ आजु बनी वृषभान कुमारी । गिरिवर वर राधा तू नारी ।
हमसों करति दुराववृथारी । इन बातनि तू लहति कहारी । आलस
अङ्ग मरगजीसारी । ऐसी छबि कहिकालि कहारी । सूरदास छबि
पर बलिहारी । धन्य धन्य तुमदोउ वरनारी १३७ ॥ रागनट ॥ मैजानी
हेरीतेरे जियकी बात भाई अरु गातचिह्न कहेदेत साई । आलस तन
मेरे भुजजोरे जम्हाईरी अटपटातभारी लागत मोहिं सुहाई बाहीपि-
यके मनभाई । बैनखैन नैनसैन देखिये रसीले शिगार हारवार बिथुरि
रहेरी रतिके पति देति क्यों न जनाई । सूरदासप्रभुकी सुनजरिआली
तेरे अङ्गअङ्गभयोउद्योत वह हिलनि मिलनि खिलनिकी तेरेप्रेमप्रीति
जनाई १३८ ॥ रागपूहे ॥ नहिँन दुरत हरिपियको परस । उपजतुहैमन
को अति आनंद अवरनि रंग नयननको अरस । अंचलउडत अधिक
छबि लागत नख रेखाउर बनीबरस । मनोजलधरतर बालकलानिधि
कबहुं प्रकटि दुरिदेतिदरस । बिथुरी अलक सुदेश देखियतअसजलते
मिट्योतिलकसरस । सूरसखीबूभेहु नहिँ बोलत सो कहिधौं त्वाहिँ
कौनतरस १३९ ॥ रागबिलावल ॥ तोहिं छबिराजैरीबजराजकेसङ्गजागेकी ।
करसों करजोरि मिलिजम्हात अरु सेंडातिहोति द्युतिमुरिहरी अलक
लसिआगेकी । कबहंकबहं पलक भूपकिभूपकिआवतते मनभावति

अखियाँ अरुणा भई प्रेमपागेकी । सूरदास प्रभुकोजुप्रकट उमगदेखति
 प्रयाससुन्दर उर लागेकी १४० ॥ रागदेसाख ॥ अरी मैं जानिपाये चिह्न
 दुरैनदुराये । अतिअलसात जम्हातिप्यारी श्यामकेकामपुराये । कहा
 दुराव करतरीप्यारी कोटिकरै मुखनयनभुराये । सुमनहारसौं मरगजि
 डारी पिघरै रैन जगाये । प्रकट नहीं तू करति डरति कैहि सुरति

। सूरश्यामलोहिं रस बसकीन्हे जात न मन बिस-
 राये १४१ ॥ रागटोडी ॥ लालसोरति सानी जानी कहेदेत नैनारी रङ्ग
 भोये । चञ्चलअञ्चलकरतिहि दुरावति रूपराशिअतिमानहुसीनमहाउर
 धोये । पीक कपोलन तरिवनके ढिग भलसलात मोतिनछबि जोये ।

सूरदास प्रभु छबिपर रीझे जानतिहैं निशि नेक न सोये १४२ ॥ राग
 रामकली ॥ सोसोंकहा दुरावति प्यारी । नंदलाल सँगरैन बसीरी को-

ककला गुणभारी । लोचन पलंकपीक अधरनको कैसे दुरत दुराये ।
 मनो इन्दुपर अरुणारहे बसि प्रेम परस्पर भाये । अधर दशन कृतकी
 अतिशोभा उपमा कही न जाई । मनोकीर फलबिंब चोंचदै भस्मयो
 न गयो उड़ाई । कूचनख रेख धनुषकी आकृत मनो शिवशिर शशि
 राजै । सुनत सूर प्रिय बचन सखीमुख नागरि हँसि मन लाजै १४३ ॥

रागधनाशी ॥ प्यारी सुनतसखी मुखबानी हँसिमुखकायरही । नैननिरही
 लजायमुदितचित सानी बातसही । तोसोंकहा दुराव करैरी तूप्रारान

ते प्यारी । कहाकहाँवहमिलनि श्यामकी क्रीडाकहतिउधारी । रति
 सुखअन्त रची यक लीलाकहाँ कि धरौं दुराई । सूरदास प्रभुके गुण

आली चितही रहेउ सनाई १४४ ॥ रागसोरठ ॥ राधा अबजनि कछुदु-

रावै । हाहा करि चरान शिरनावति अपनीसोंह दिवावै । वहैकथा
 मोसोंकहिप्यारी चरित कहा हरि कीन्हे । जारसमें तू मगनभई है

कौनअङ्ग सुखदीन्हे । उकलितभयो सुधाउरघटतेमुखमारग न सन्हारै ।
 सूर श्याम रसककी राधिका कहत न बनै बिचारै १४५ ॥ रागगोड ॥

श्याम रतिअंतरयहकीन्हे । कहतपुनिपुनि कहा अम्बरतजहु मैं रही
 सकुचि गहि आपलीन्हे । कियोतब मैं कहालरी शारङ्गसों शारङ्ग-

धर धरिगि चरगा चापी । शेष सहसोंफरान मगानकी ज्योतिअति
 शसते कंद लपटाय कापी । रहीउनकीदेक चलैमेरीकहा धरनगिरि-

राज भुज सबल धारी । सूर प्रभुकी सखी सुनहु गुहारैनि के वै पुस्य
 में कहा करौं नारी १४६ धन्य धन्य दयमान कुमारी गिरिवर धर
 वशकीन्हैरी । जाइजोइसांधकरी पियरति की सोखव उनकोदीन्है री ।
 तोसी श्रिया और को विभुवन पुस्य प्रयामसे नाही री । कोककला
 पूरगा तुमदेऊ अबन कहंठारि जाहीरी । सेखेबश तुमभये परस्पर भासों
 प्रेमदुरावैरी । सूरसखी आनंदन सन्हारति नागारि कंठलगावै री १४७
 रागबिलावल ॥ प्रयाम गये तुन्दा के घाम । कामके गृह निशिवसे पुरयो
 मनकाम । सांभगये कहिआइहैं बहुनायकनाम । सेखेसँवारति आश लै
 सेखेहि गइयास । अरुणा उदय द्वारेखड़े देखत भयतास । रिसनिरही
 झुहरायकै मनहींमन बाम । चिह्न और अँगनारिके बिनगुना उरदाम ।
 सूरदास प्रभु गुणभरे आलस तनुभाम १४८ आजु और छवि नंदकि-
 शोर । मिलिरिस रचि रोचनभयें लोचन चित्तवत चित्तपराये वोर ।
 शोभित पीठि प्रकटकरकंकणा शोभित हार हिये बिनडोर । शोभित
 पीत बसन दोउराते अधरन अंजन नयन तमोर । नखशिख ज्यों शि-
 गारअटपटे पाये मनहुं परायेचोर । फुलेफिरत दिखावत औरनि लि-
 डर भये हैं हँसनिअकोर । कहत न बनें सुनतहु न आवैं बैसँधिबर्गात
 कबिन कठोर । अचरज क्यो न होत इनबातन सूरग्रहणा देखे बिन
 भोर १४९ ॥ रागबृज ॥ अतिहि अरुणाहरि नयनार्तिहारे । मानहुरति
 में भाइ रगमगे करत केलि पिय पलक न पारे । मन्द मन्द डोलति
 शक्तितसे शोभितमधुप मनोहरतारे । मनहु कसल सुंदर सहैं बीधेउडि
 न सकत चञ्चल अतिवारे । भलमलात जगि रैन जनावत रतिरस
 मत्तधमत्त अनियारे । मानहु सकल जगत जीतनको काम बाम खर-
 सान सँवारे । अटपटातअलसात पलकपट मंदत कदहुंकरत उधारे ।
 मनहु मुदित सरकत मगि आंगन खेलत खजरीट चटकारि । बारबार
 अवलोकि राखियत कपटनेह मनहरत हमारे । सूरप्रयाम सुखदायक
 लोचन दुखमोचन लोचन रतनारे १५० ॥ रागबिलावल ॥ नहिं न दुरत
 नयना रतनारे । मनो बंधूक कुसुमन पर शोभित सुन्दर प्रयाम शिली
 सुख तारे । कुटिल अलक रहि बिथुरि बदन पर सकुचि सहित हरि
 नर मुनि हारे । भौह शिथिल मनु मदन धनुष गुणारे कोकनदयान

बिसारे । सूरें आवत आलसके वश छीन भये उधरत न उधारे । सूरदास प्रभु सोइ पै कहैं तुम को भामिनि जहाँ रतिरसा हारे १५१ रति संग्राम कीर रखमाते । हैं हरि सूर शिरोमणि अजहं नहिं न स-
 न्हारत ताते । आनहिं बरसा भये दोउ लोचन अपने सहज बिनाते । मानहु भीरपरी योधनकी भये क्रोध अतिराते । परिमल लुब्ध सधुप
 जहं बैत उड़िन सकत तेहिठांते । मनहु मदनके हैं शर फावे फोंक बाहिरो धांते । बैठिजात अलसात उनींदे क्रमक्रम उठत तहांते । मनो
 सूच्छा कटाक्ष नादसल कटि न सकत हियराते । डगमगात घूमत जनु घायल शोभा सुभट कलाते । सूरदास प्रभु रतिरसा जीते अब स-
 कात धौं काते १५२ नयन उनींदे भये रंगराते । मनहु सुरंग सुसनपर सजनी फिरत धृङ्ग मद साते । प्रेम पराग पाखुरी पल दल प्रफुलित
 मदन लताते । सुभगसुबास बिलासबिलोकनि प्रकट प्रीतिकरिताते । तैसोइ मारुत मंद जम्हावरि मिलत मुदित छविघाते । सांचेसूरश्याम
 मानिनि के हितसों केलि कलाते १५३ ॥ रागरामकली ॥ आये सुरतरंग
 रसमाते । मानहु सरा विश्राम निमित्त पिय अमितभये हैं ताते । ड-
 गमगात मग धरत परतपग उठत न बेगि तहांते । मनुगज मत्त चरगा संकर कर गहि आनत तेहि ठांते । उर नख छत कांकरा छत पाछे
 शोभित है रुहि राते । मदन सुभट के बाग लागि मनो निकसि गये बहि धांते । सांचे करत आपने बोलन टरत न मर्यादाते । सूरश्याम
 कहिगये आइहैं पगधारे तेहि नाते १५४ रागबिलावल ॥ अरुना नयन
 राजत प्रभु भोरे । रति सुख सुरतकिये सखि संगमनो जात समर म-
 न्मथ शर जोरे । अति उनींदेअलसात मंदराति गोलकचपल शिथिल कलु थोरे । मनहु कमल के कोश तमी तम उठत रहत छवि रिपुदल
 दोरे । शोभित सुभगसजल प्रतिकोर संगम छवि तारे रुनडोरे । मनो भारतिके भँवर मीन शिशु जात तरल चितवत चितचोरे । बरसा न
 जाय कहाँ लग बरगों प्रेम जलधि बेलावर बोरे । सूरदास सों कौन
 विधा जिनि हरि के अङ्ग अङ्ग बल तोरे १५५ काहेकोपिय भोरही मेरेगृह आये । इतने गुण हमपै कहाँ जे रैन रमाये । ताही के पग
 धारिये चकृतमैं जाने । बिन गुण गडिमालारही नहीं कहूं बिहराने ।

आये हौ सुख देनको येसेइ हितकारी । सूरश्याम तुम योग को को
 बैसी नारी १५६ कृपाकारी उठि भोरही मेरे गृहआये । अब हम भई
 बड़भागिनी निशि चिह्न दिखाये । जावक भालनसों दियो लीकेबश
 पाये । नयन देखि चकत भई क्यों पान खवाये । अघरनपर काजर
 बन्धो बहु रंग कहाये । बंदन बिंदुली भालकी भुजआप बनाये । यह
 सोसों तुमहीं कहौ उरकत अतनाये । सूरश्याम यश राशि हौ धनि
 प्रियासहाये १५७ ॥ रागमेरव ॥ जाहु तहींकह शोचतहौ जा संग रैनि
 बिहात न जानी भोरभये तेहि मोचतहौ । औरन को क्षायाग बीतत
 है तुम निहचीते नागर हौ । भूमत नयन जम्हात बारहीं रतिसंग्राम
 उजागर हौ । मैं अब कहत तुम्हारे हित की ताहीके गृह सीयरहौ ।
 सूरश्यामवैसी प्रियकी वह रस वाहीबिन न लहौ १५८ हमहींपरपिय
 लसे है । बोलत नहीं सक क्यों ह्वे रहे अंग रँग हीन कहूँसे हौ । तब
 निरखत औरहिं हित कीधौं कहूं तुम लूँसेहौ । तब हँसि बदन मि-
 लत आजुहि कछु और भये नितुरेसेहौ । डगमगात पग उतहि परतहैं
 चित चंचल उतहूँसे हौ । सूरदास प्रभु सांच भाषिगये प्रिया अङ्गबत
 मूँसे हौ १५९ ॥ रागबिनावल ॥ हरयि प्रियाम प्रिय बाँह गही । चूकपरी
 हमको यह बकसो आवनको कहिगये सही । रिसनि उठी भहराय
 भर्त्तिक भुज कुवत कहा पिय शरम नहीं । भवन गई आतुरहैंनागरि
 जो आई सुख सबै कही । मेरेमहलआजुते आवहु सौहनन्दकी कोटि
 कही । सूरदास जबलौं जीऊं मैं मिलौं नहीं बरु काम दही १६० ॥
 रागनटनारायण ॥ नागरिनितुर मानगहेउ । पीठिदै रिसकांपिबैदी फिरि
 न उतहि चहेउ । प्रियाम मन अनुमान कीन्हो रिसनि व्याकुल नारि ।
 तनकही रिस खोय डारो यह प्रतिज्ञा धारि । सखी सक स्वभाव अ-
 पनी गये ताके मोह । यह चरित सब कहेतासों चतुरि लख्यो सनेह ।
 गई आतुर नारि ताके लखे नयननि कोर । चकत बाला नन्दसुतबिन
 लहेउ हठकोकोर । भुजागहि कहिकियो कारी सही ब्रजकीगवारि ।
 सूरप्रभुसों मानकीन्हो हृदय देखि विचारि १६१ ॥ रागकान्हरो ॥ बाँह
 गहेउ राहि आंगन ल्याई । बहुनायक उनको नहिं जानत बड़ी चतुर
 हौ भाई । मैं जो कहति श्रवण सुनि चित धरि यौवन धनसपनेको ।

हँसि कहि जाय अर्वाहि में लाऊं मन न धरौ अपने को । तुहीं गहति
 किन बांह जायके सोसों बांह गहावति । सुनहु सूर मैं सौंह करी है
 तू मोहिं तिनहिं मिलावति १६२ कहा कहति तू मिलहिं रही है ।
 मोसों करति कहा चतुराई उन यहभेद कही है । जो हठ करेउ भली
 नहिं कीन्ही ये दिन ऐसे नाहिं । की यहई पिय कौन बुलावे की
 तहई चलि जाहिं । वे सब गुरा लायक तू नागरि यौवन दिन है
 चारि । सुरप्रयास को मिलि सुख लही न पुनि पछितै है नारि १६३
 बहुरि पछितै है री व्रजनारि । देखि जाय ठाढ़े मगजोवत सुन्दरप्रयास
 सुरारि । ऐसी निदुर नेक नहिं चितवत चंचल नैन पसारि । कहा
 गर्व या भूठे तनको देखि हाथ लै बारि । तजि अभिमान मानि री मा-
 निनि में जु करति मनुहारि । सूर हंस स्वातीसुत धोखे कबहुं क स्वात
 जुवारि १६४ ॥ रागकेदारो ॥ मोसों मानि भावै न मानि लाल सनाय
 हैरी तेरी आंखिन में पैयतु है । कत सकुचत में तो सब जानत ऐसे
 प्रीति क्यों दुरैयतु है । मेरो बिलग मानतियह जानत या बातनमेंकहु
 पैयतु है । सुरप्रयास न्यारे न बूझिये यह मोसों नहिं भावे काहे को
 अनखैयतु है १६५ ॥ रागबिलावल ॥ बहुरि मिलौगी कालिही चित स-
 मुझि सयानी । मेरो कह्यो न क्योंकरै क्यों होहि अयानी । अनलहि
 औयव अनल है सब जानि रही हौ । काहेको हठ करतिहौ बे काज
 बही हौ । धरणीधर व्याकुल खड़ेरी गर्ब गहेली । सूर कहेउ सुनि
 मानिले में कहति सहेली १६६ ॥ राग सोरठ ॥ प्रयास धरेउ विय मोहन
 रूप । दूती प्रिया सङ्ग यक लीन्ही अङ्ग विभंग अनूप । अन्तर द्वार
 आय भये ठाढ़े सुनत वियाकीबार्ते । सरस बचनजु कहति सखिआगे
 कहौ मिलौं केहि नाते । कपटी कुटिल कूर कहि आवत यह सुनि
 सुनि सुसकात । सूरदास प्रभु हैं बहुनायक तुहीं कहत यह बात १६७ ॥
 रागमलार ॥ जौलौं माई हीं जीवन भरि जीऊं । तबलग मदन गोपाल
 लालके पन्थ न पानी पीऊं । करौ न अंजनधरौ न सकत भृगमद तन
 न लगाऊं । हस्तबलय कटिनापट मेचक कंठ न पोतबनाऊं । सुनो न
 अवसान अलिपिक बारागी नैनन नव घन देखौ । नील कमल करधरौ
 न कबहुं प्रयासमरीसी लेखौ । इतनी कहतिहिं आय गये मोहनलिये

प्रिय दूतीसंग । छूटिगई रिसटेकमानुकी निरख रसिकके अङ्ग । अति
रति लीनभईभासिनि सँग तव करगहि लीन्हो । सूरदासप्रभु रसिक
शिरोमणि मिलि जु मुवा सुखदीन्हो १६८ ॥ रागधनाश्री ॥ कवि गावत
हरिसोहन नाम । गाढोमान दूरिकरि डारेउ हरखभई मनवास । ऐसे
चरित और को जाने धन्य धन्य नंदलाल । जो ये गुण तौ हरत वि-
यनमन अति हरित भई बाल । मित्यो कामतनु ताम तुरतही रिभई
मदन गोपाल । सूरप्रयामरसबस करिलीन्हो यहै रच्यो इक खयाल
१६९ ॥ रागगोडमलार ॥ प्रयाम गुणाराशि मानिनि मनाई । रहेउ रस पर-
स्परमित्यो तनुबिरहभर भरी आनन्द प्रिय उर न साई । कबहुंरति स-
हज कबहुं करत विपरीत बासरहुते सबरैनि बीती । अमित दाउ अङ्ग
भयेअतिहविहलपरेसेजरतिजीति बहीप्रीती । भोरभयेचलेनिजनदन
पितमातु के फिरे सकुच देखि नंददारे । सूरप्रभु प्रयाम सकुचिगये प्रमु-
दाधाम कहति ये गुण भले हरि तुम्हारे १७० कहां हैं प्रयाम
कहांगवन कीन्हो । कहांतुमरहत कबहुंदरश देतनाहिं धोखेगये आय
हममानि लीन्हो । नयन आलसभरे चरगा डगलरखरे कहा हौ डरेसे
कहौ सोसों । रैनिकहुंबसे प्रियकौन सोरसेहो उरकरज कसेसो कहौ
गोसों । भलेजु भले नन्दलाल वेऊभली चरगा जावक पाग जिनहिं
रंगी । सूरप्रभुदेखि अङ्गअङ्ग बानककुशलमें रही रीभिवहनारि चंगी
१७१ ॥ रागकल्याण ॥ सुनत हंसिचले हरि सकुचि भारी । यह कहेउ
आजु हम आय हैं गृहतुवतरक जिनि कहाहम समुझि डारी । नारि
आनंदभरी रागसी है ढरी डार अपने खरी अंग पुलकी । गये कहि
सूरप्रभु रैनिसहैं आजु सजति शृङ्गार कहु सकुच कुलकी १७२ अङ्ग
शिंवार सुन्दरि बनावै । मिलौगी प्रयामनिजुधाम करि आजुही रैन
बिलसों काम मन मनावै । सरससुमनाजात शीशकरसों करति सो-
मंत अलक पुनिपुनि सँवारै । मांगसूधीपारि निरखिदर्पणा रहतिगाथि
कधरीछांहपाटो निहारै । कमल खंजनमृगजमीन लोचनजीतिशारङ्ग
सुतलेति तहां आंजै । हारउरधरति नखाशिखहु भूयरा भरति सूरप्रभु
मिलन हित नारिराजै १७३ ॥ रागधनाश्री ॥ बिधुबदनी अरु कमल नि-
हारै । सुमनासुत लै कमलति मज्जति धनपति धासको नाम सँवारै ।

तरागा तात वनिता सुत ता क्वचि कमल न रचि रवि अन्वित चारै ।
 कमल कमल पररेख बनावति शारंग रिपुपाहन गतिटारै । उरहारा-
 वलिमेलति कमलन मनहुं इन्दु पारसढिगपारै । सूरप्रयासके नामहिं
 जीति न कमलापतिके पदाहि बिचारै १७४ ॥ रागआसावरी ॥ अङ्गशृंगार
 सँवारि नागरी सेज रचति हरि आवेगे । सुमन सुगन्ध रचति तापर
 लै निरखि आपसुख पावैगे । चंदन अगर कुंकुमामिश्रित अमतेअङ्ग
 चढावैगे । मैं मन साध करौंगी संग मिलि बै मनकामपुरावैगे । रति
 सुख अंतभरौंगी आलस अंकम भरि उरलावैगे । रसभीतर मैं मानक-
 रौंगी बैगहि चरगा मनावैगे । आतुर जब देखौं प्रिय नयनन बन र-
 चना समझावैगे । सूरप्रयास युवतीमनलोहन मेरेमनहिंचुरावैगे १७५
 रागबिलावल ॥ नन्दसुवन बहुनाथक अनलहि रहे जाई । वह अभिलाष
 करतरही ताको बिसराई । बासरसेसेही गयेनिशियाम तुलानी । नारि
 परी अति शोच मैं बिरहा अकुलानी । आवन कहिगये सांभही अ-
 जहूँनहिंआये । कीधौंकतहूं रसिरहे की फँदपरे पराये । वेईहैं बहुना-
 यकीनाथकगुणभारी । सूरप्रयास कुमुदाभवनसुबिकरिपगुधारी १७६
 रागवेदारो ॥ रहेहरिरैनि कुमुदागेह । परस्परदोउप्रेम भीजेचढ्योअतिहि
 सनेह । एकसगा यकयाम बितवति काम रस बसगात । ताहि बीतत
 यामयुगसम गनतताराजात । उनहिंवेसे याहिसेसे रजनिगइभयोभोर ।
 सूरमोसों करि चतुरई गये नन्दकिशोर १७७ ॥ रागनट ॥ कुटिलाई
 करी हरि मोसों । चित्तभरी सुन्दरी करतिमनगोसों । कहिगयेनिशि
 आइ हैं हरि अंत बिरमे जाय । रैन बीती उदित दिनकर देखि विष
 सुरभाय । भवनहींमनमारि बैठी सहजसखि यकआय । देखितनुअति
 बिरहबाला कहति बचन सुनाय । बोलीढिग बैठारि ताको पोछिलो-
 चनलोर । सूरप्रभु केबिरह व्याकुल सखी लखि मुखअोर १७८ ॥ राग
 गौरी ॥ आजुबिन आनंदको मुखतेरो । कहारही मनुमारि भोरही अति
 व्याकुल मनमेरो । मोसोंगोप करै जनि सुन्दरि नहिंपावति बहभाव ।
 सुनौंवात कैसी उपजीहै कहुजनि करैदुराव । तबमधुरी बाणीसों बोली
 कहा कहौं रीतोहिं । तेरेप्रयास भले गुणानागर कपटीकुटिल कटोहिं ।
 निशि बसिबेकी अवधि बदी मोहिं सांभगये कहि आवन । सूरप्रयास

अनतहि कहूं लुब्धे नयन भयेदोउ सावन १७६ ॥ रागधोरठ ॥ सेसेगुता
हरिकेरीलाई । मैं पहिंचानि रहीहैं नीके कुटिल शिरोमशिराई ।
अब सोसों उनसों कहवनि है कछु मैं गईबुलावन । आपुहि काल्हि
कृपा यह कीन्ही अजिरजु करिगये पावन । तोकेमिलैं कहंमेरीसों
तिनसों यह तू कहिये । सूरदासप्रभु बोलन सांचे लाजकछुजिय ग-
हिये १८० ॥ रागविहागरी ॥ सखीरी और सुनहुयकवात । आजुगोपाल
हमारे आये उठि करिवहि मिसप्रात । कतहं रैनितनीदेमोहन अपने
गृहते जात । आगेहार नन्दहँटाड़े तातेगये न सकात । डगमगात मग
धरत परतपग आलसवन्त जन्हात । मानहुंसदन बंड दे छाँड़े चूसकीदे
दे मात । जो कहेउ कहारहेहौ मोहन तो सन्मुख सुसकात । तातेकछु
न उत्तर आयो सूरप्रयास सकुचात १८१ ॥ रागकेदारो ॥ तबहरि यह
चतुराईकरी । कहेउ मेरेधाम आवनरार देगये हरी । आपही श्रीमुख
गयेकहिसही कैषीपरी । सेजरचि सब रैनितजागीतबरिसनि हैंजरी ।
प्रयास देखे द्वारटाड़े सनहिं सन भुरिहरी । कहतिसूर सुनायहरिको
धन्य यह शुभधरी १८२ ॥ राग बिलावल ॥ यहै कही कहि सौनरही ।
सनसन कहति दरश अब दीन्हे निशिसव विरह डही । नधरे बचन
सुनाय सखी सों रिखबश भरे कही । आये तहां जाहु ताहीके चतुर
बिया डिगही । वाबिनुउनको कौन मिलेगी नहिंकोउ फिरति बही ।
सूरज प्रभु इतकी जनि आवैं पगुधारेँ उतही १८३ ॥ रागकान्हरो ॥ सखी
निरखि अँग अँग प्रयासके । कहूं चन्दन कहूं बन्दन रेखा कहंकाजर
छवि लखतिबानके । आलसभरे नयन रतनारे चतुरनारि संगजगेया-
सके । अपने सनहरि शोचकरत यह परी बियाअङ्ग कठिन तामके ।
मानुकिप्रो मोतनफिरि बैठी आयेहैं यहसुनतनामके । सूरप्रयास यक
बडिबिचारी सनमोहन रतिसहितकामके १८४ ॥ रागगुहा ॥ प्रयाससैन
दे सखी बोलाई । यहकहि चलीजाय गृहअपने तू तो मानुकियोरी
माई । अन्तर जायभये हरि टाढे सखी सहज निकसी तहँजाई । मुख
निरखत दोउहँसे परस्पर भवन जाहु मैं लेउंमनाई । अङ्गद्विषाय गई
हँस प्यारी सुरत चीह्नि नीकी सुधराई । सूरज प्रभु गुणपलेरहे को
जानिबूझि कीन्ही रिसहाई १८५ ॥ रागगोरो ॥ सखी गई कहिलेहु

मनाई । जानति मणि विद्यामणि गुणमणि चतुरनमणि चतुराई ।
 प्रियाहृदय यहबुद्धिउपाई यहंतौ नहींकन्हाई । आतुरचली यमुनजल
 खोरन काहू सङ्ग न लगाई । पहुंची तरुणि तरुणितनया तट न्हाय
 चली अतुराई । सूरश्याम सारगभये ठाढ़े बालक मोहन राई १८६ ॥
 रागबिलावल ॥ पांचवरय के लालहू प्रिय मोहन आये । नागरिआगेहूँ
 गई तब बोलि सुनाये । कहोकहारी जातिहै काकी तू नारी । मोहिं
 पठाई प्रयास लेनजाकी तू प्यारी । यह सुनि नारि चकतभई आपुन
 तहँ आये । तब करसोंकर राहिलियो देखत मनभाये । अगम चरित
 प्रभुसूर केत लखे न कोइ । प्रयासनाम अबगानि परेउ हरषी मुखजो-
 ई १८७ ॥ रागरामकली ॥ हरषी निरखि रूपअपार । गहेउ करसों सदन
 ल्याई जानि गोपकसार । प्रयास मोको बोलिपठई कहतहैयहलाल ।
 भवन लै इनभेद बूझी सुनौ बचनरसाल । हृदय आनंदभई बाला प्रेम
 रसबेहाल । कुंवरि अंतहूपुर गईलै रच्योहरि तहँ खयाल । तरुणा हूँ
 कर उरजपरसे दियो अञ्चलडारि । सूरप्रभुहंसि लईप्यारी भूजन अं-
 कमधारि १८८ ॥ रागटोड़ी ॥ मुखनिरखत प्रियचकतभई । जोदेखैअति
 तरुणा कन्हाई यह को लखैदई । छांड़िदेहु ऐसे मनमोहन हंसि मन
 लजित भई । सेसे छन्दरचत धनि धनि प्रिय कीन्ही करशितई । अं-
 कमभरि प्रिय कंठजगाई कुचउर चापिलई । सूरश्याम मानिनि मन
 मोहन रति रस सों भोगई १८९ ॥ रागबिलावल ॥ प्रयासमनाय मानिनी
 हरयित भइ अङ्ग । रैनबिरह तनुकोगयो जो करै अनंग । सुतामहर
 वृथभानकी सुधिकीन्ही श्याम । सुखताको दैहरिचलेप्यारीकेधाम ।
 प्यारी आवतप्रिय लखीचितईमुखसुसकाय । जिय डरपैमोहिं देखि
 कै सो मुख कह्यो न जाय । अब न प्रियहि उचढाय हैं मोको रस
 मात । आस करत मेरी जितो आवत सकुचात । आनि द्वार ठाढ़े भये
 नायकबहु नाम । सूरजप्रभु अङ्ग सहजही निरखत रुचिबाम १९० ॥
 रागगोडमलार ॥ श्याम डरबाम निज धामआये । उतहिप्रमुदा धाम सखी
 सहजहि गई अङ्ग के चिह्नकहु और पाये । देखि हरषी नारि सकुच
 दीन्हीडारि अतिहि अतन्दभरी प्रयास रङ्गी । सखिबूझति ताहिहँ-
 सति ता मुखचारि श्यामको मिलीरी बनी चंगी । कहन लागि कहा

कहति तू आज मोहिं नाहिं नाहीं करति दुरत कैसे। मिलै प्रभुसूर
 तोहिंजानि यहचतुरई नहीं तू करति नहिंलखतजैसे १६१ ॥ रागमूहो ॥
 नैन तो अति रंगीले चिकुर छूटे छनीले काजर पीक लागी लै आ-
 रसी देखि। मरगजे बसन अधर दशननि छत कहंकहुं नीकीलागीच-
 नदन रेखि। काहेको तू मोहिं दुरावतिजानी अरश परशछवि शेष।
 मूरदास प्रभु नंदसुवनसङ्गअबहीं सुरतरङ्ग कोसोभेष १६२ ॥ रागबलावल ॥
 अबतू कहा दुरावैगी। मोहिं कहतिनाहिं काहि कहैगी कबलों बात
 लुकावैगी। मोसी और कौन पिय तेरे जासोंप्रेम जनावैगी। मेरीसों
 उनकी सों तोकोकहा दुराये पावैगी। औरनि सी मोहूँ को जानति
 मोसों बहुरि रमावैगी। सूर प्रयास तोहिं बहुरि मिलैहैं आखिर तो
 प्रकटावैगी १६३ प्रसुदाअति हरितभई सुनिबात सखीके। रोमरोम
 पुलकित भई उपजी रुचि हीके। कहत अबहिं ह्याति गये नन्दसुवन
 कन्हई। चरित कहाउनके कहैं मुखकहेउ न जाई। सांभगये कहि
 आय हैं मोसों रीआली। अनतविरमि कतहं रहे बहुनायकख्याली।
 रैन रही मैं जागिके भोरहिं उठिआये। मानकियो रिसपायके पल
 मोहिं छिंड़ाये। अगसात गुना प्रभुसूरके कहि तोहिंसुनाऊं। अबहिं
 चरित करिके गये तेईगुणागाऊं १६४ ॥ रागरामकली ॥ आजुसखी यमुना
 मग मोहन मोहिं छंदी छंद लाई। को तू आहि कौनकी बनिता बात
 सक सुनि पाई। बिहंसि कहेउ मोहिं प्रयास पटाई सुनत विरह गति
 भूली। रति जल जलजहियो हुलस्यो मन पुलक पांखुरी फूली। जानि
 कुमार गहेउ करसों कर लयाऊं भवन बुलाई। नैन मँदि अञ्चल गहि
 डारेउ मैं साधव मिलिआई। छेलछवी उरबदन बिलोको सकुचि रही
 सुसकाई। छांडहु सूरप्रयास यह तुम्हरी आवत जानि न जाई १६५ ॥
 रागधनाश्री ॥ आवतहीं मैं तोहिं लख्योरी। तुमहुं भली उनको मैं जानति
 अधर बिम्ब सलो कीर भख्योरी। अङ्ग मरगजी पटोरी देखी उर नख
 छत छवि भारी। धनि वे नन्दसुवन धनि नागरि कियो सुरत रगाहारी।
 हँसत गई सखि भवन आपने मन आनन्दबढाये। सूरप्रयास राधिका
 धामके द्वारे शीश नवाये १६६ ॥ रागबिलावल ॥ भलीकरी पिय सेसेहू मेरे
 गृह आये। लीन्हे कंठ लगायके बड़भागिनि पाये। कहा शोच जिय

करतही भुजगहि करलीन्हे । गई भवन भीतर लिये तहँ बैठक दीन्हे ।
 प्रथामसकुच अंग हेरहीं नागरि पहिंचानी । चिह्न निहारत डर कहा
 आवतही जानी । या कविपर उपमा कहों जो विभुवन होई । तुम जानति
 यह रूपको असु लखै न कोई । चन्दन बन्दन पान रङ्ग अधरन करज
 कवि । सूरप्रथाम उर करजको को बरगिसके कवि १६७ काहेकोपिय
 सकुचत है । अब ऐसी जनि कामकरो कहूँ जो अतिही जिय सकुचत
 है । अबकी चुक नहीं जिय मेरे और दिनको जानिरहै । सौंहकरी
 मेरी सों आते डर डारो जनि सौन गहौ । यह सुनि प्रथाम हरखि कुच
 परशे बारबार शिव सौंह करी । सूरप्रथाम गिरिधर गुणानागर बात
 आजते सहीपरी १६८ प्रथामसों कुच परश किया । नन्दसदनते अबहीं
 आवत और बियनको नेम लियो । ऐसी प्रपथ करी काहेको जोकहु
 आजु करी सो करी । अब जो कालिहते अनत सिधारो तब जानौगे तु-
 महि हरी । मैं सतिभाव मिलीहँसि तुमको कहा आजुकी सौंहकरी ।
 सूरप्रथाम जो भई सु भई ज अबते सबको नेमधरौ १६९ ॥ रागगोडमलाए ॥
 अहो राजत राजीवनयन मोहन कवि उरगलता रँगलाग । जेहिबनिता
 रसबस कीन्हे निशि प्रकट होत अनुराग । शिथिल अङ्ग असु शिथिल
 पाग बनि शिथिल चरया गति आज । मनहुँ सेजरे बाहुते उठिआवत
 है राजराज । भालमध्य जावक रँग देखत लागतिहै मोहिँ लाज । तुम
 अपने जिय सों जानतहै तिलक लोक प्रयराज । हंस बन्धुबर लोचन
 ललना निलित निशा कृतकाज । बदन चन्द बिय सन्निव जानि नहिं
 बढ़त किरणमें लाज । भवन जीव सुत लग्यो अधर पर यहकवि कही
 न जाय । मनो बँधक सुमन ऊपर बिय अलि सुत बैठे आय । कुचकुंकुम
 अवलेप तरिकाकिये शोभित प्रथामलगात । गतपतङ्ग राकाशशि बिय
 संग घटा सघन लौभात । प्रथाम हृदय लच्छन ताऊपर लगीकरज कित
 रेखा । मनहु बसन्तराज रुचि कीरति आन किशलतरु भेखा । काम
 वामबर लिये पंच चितवत प्रति अंग अङ्ग लाग । अब न जान गृहदेउं
 पियारे जब आये तब भाग । ता दिनते वृथभाननन्दिनी अनत जाननहिं
 दीन्हे । सूरदासप्रभु प्रीति पुरातन यहिबिबि रसबस कीन्हे २०० ॥

यहांते बड़ो मान ॥

रामबिलावल ॥ सखियन संग लै राधिका निकसी ब्रजखोरी । चली

यहुन स्नानको प्रातःहि उठि गोरी । नन्दसुवन जा गृहबसे तेहि बोलन
आई । जाय भई द्वारे खड़ी तब कह्ये कन्हारि । औचक भेंट भई तहां
चकत भये दोऊ । ये इतते वे उतहिते नहिँ जानत कोऊ । फिरी सदन
ते नागरी सखि निरखत ठाढ़ी । स्नान दानकी सुधिगई अतिरिस तनु
बाढ़ी । प्रयासरहे सुरभायकै ठगमूरी खाई । ठाढ़े जहँके तहँ रहे सखि-
यन समुझाई । इतनेहींके हूँगये गहि बांह ले आई । सूरज प्रभुको लै
तहां राधा दिखराई १ ॥ रागसकली ॥ राधाहि प्रयास देखी आय । महा

मान दृढाय बैठी चितै कापै जाय । रिसहिँ रिस भई मगन सुन्दरि
प्रयास अति अकुलात । चकत हूँ जकि रहे ठाढ़े कहि न आवै बात ।
देखि व्याकुल नन्दनन्दन सखी करत बिचार । सूर दोऊ मिलै जैसे
करीं सोइ उपचार २ ॥ रागकान्हरो ॥ सखी यक गई मानिनि पास । ल-
खाति नहिँ कहु भाव ताको मिति न मनकी आस । कहां कासों कौन
सुनिहै रिसन नारि अचेत । बुद्धिशोचत घिया ठाढ़ी तेक नहीं सुचेत ।
प्रयास व्याकुल अतिहिँ आतुर यहि कियो दृढ मान । सूर सहचरि
कहांति राधा बड़ी चतुर सुजान ३ नाहीं हैरी अति हठ नीको । मोसों
कहेउ सुनहु ब्रजसुन्दरि मानि मनाओ नगर पीको । सोइ अति रूप
सुलसया नारी रीझे जाहि भावतो जीको । प्यासे प्राणजायँ जो जल
बिन पुनि कहकीजै सिन्धु अमीको । तौ जो मान तजहुगी भासिनि
रविकी रश्मिकाम फलपीको । कीजैकहा समय बिन सुन्दरि भोजन
पीछे अचवन धीको । सूर स्वरूप गरव यौवनके जानतिहैं अपने शिर
ठीको । जाके उदय अनेक प्रकाशत शशिहि कहा डर कमल कली
को ४ ॥ राग सारंग ॥ चितई चपल नयन की केर । मन्मथ बाण दुसह

अनियारे निकसे फूटि हिये वहि ओर । अति व्याकुल धुकि धरिया
परे जिस तरुण तमाल पवनके जोर । कहूँ सुरली कहूँ लकुट मनो-
हर कहूँ पर कहूँ चन्द्रिका मेर । सगा बूझत सगाहीं सगा उछरत बि-
रह सिन्धुके परेभकोर । प्रेमसलिल भीज्यो पीरोपट फट्यो निचोरत
अचराकोर । फुरै न बचननयन नहिँ उधरत मानहुँ कमलभये बिनभोर ।

सूरसु अधर सुधारस सींचहु मेढहु मुरझानन्दकिशोर ५ तेरे नयन कि-
 धौरी बान । आसारे ज्यों मुरझि परेधर क्योंकरि राखे प्रान । खगपर
 कमल कमलपर कदली कदलीपर हरिदान । हरिपर सर सरवरपर
 कलसा कलसापर शशिभान । शशिपर बिम्ब कोकिला ताबिच कीर
 करत अनुमान । बिचबिच दामिनि द्युति उपजति है मधुपयूथ अश-
 मान । तू नागरि सब गुगान उजागरि पूरणाकला निधान । सूरप्रयास
 तुव दर्शन कारणा व्याकुलपरं अजान ६ ॥ रागमलार ॥ यह ऋतु सुखि
 की नाही । बरयत मेघ मेदिनीके हित प्रीतम हरयि मिलाहीं । जेत-
 माल प्रीयम ऋतुडाहीते तरुवर लपटाहीं । जलबिन सरितापयपूरणा
 है मिलन समुद्रहिंजाहीं । यौवनधनहै दोसचारि को समुक्ति चतुरि
 मनमाहीं । मूरसुनत उठिचलहु राधिका दै दूती कहैवाहीं ७ ॥ रागमेरठ ॥
 राधेहरि रिपु क्यों न छिपावति । मेरुसुतापति पति ताके सुत ताको
 क्यों न मनावति । हरिबाहन ता बाहन उपमा सो तैं धरे दृढावति ।
 नवअरुमातवीसतेहि सोहत काहे गहरुलगावति । शारङ्गबचन कहेउ
 करि हरि को शारङ्ग बचन न भावति । मूरदास प्रभु दर्श बिना तुव
 लोचन नीर बहावति ८ राधे यामैं कहा तिहारो । मुख हिसकर त-
 नुहाटक बेगी सो पन्नग अङ्गकारो । गति सराल केहरिकटि कदली
 गुणलज्जंघ अनुहारो । नयन कुरङ्ग बचन कोकिल के नासा शुक क-
 कहगारो । बिद्रुम अधर दशन दाडिम कन करो न तुम निरवारो ।
 मूरदास प्रभु बिभुवन पतिको सकन उनहिं उबारो ९ पोच पिशुन
 लस दशन सभासद प्रभु अनंग मंत्रीबिन भीति । सखिबिनमिले तउन
 बनिऐहै कठिन कुराज राजकी इति । मन्दहास मुखमंद बचन रुचि
 मंदचाल चरणान भइ प्रीति । नखशिख ते चितचोर सकल अङ्ग ज-
 सराजत सब प्रजा बसीति । तेरो तन धन रूप महागुणा सुन्दर प्रयास
 सुनी यह कीर्ति । सु करि सूरजेहि भांतिरहै पति जिनि बल बांधि
 बढावहु कीर्ति १० ॥ रागबिलावल ॥ यहितेरे वृन्दावन बाग । सुनि रा-
 धिका कदंब बिटपकी शाखाएकअमी फललाग । प्रयासअरुणाकहु
 अधिक प्रीतिछवि बरसा जायँनहिं अङ्गबिभाग । अति सुपक मुरली
 के परसत चुइचुइ परत उमगि रसराग । ब्रज बनिता बरवारि कनक-

मय रोंके रहत सुधा छरनाग । तुव प्रताप छुड़ सकत न सुन्दरि शु-
 कमुनि मर्कट कोकिलकाग । मैं मालिनि यत्ननि जलजुगयो सींचत
 छहत परे कर दाग । सूर सग्रम उठि भेंटि परस्पर हिय पिगूय पाये
 बड़भाग ११ ॥ रागरामकली ॥ रसिक राधे बोली नंदकृमार । दरशन को
 तरसत हरि लोचन तू प्रोभाकी धार । खंजरीट मृगमीन मधुप मिलि
 रंभारचि अनुसार । गौर मकुचि शशि बिरथकियेरथ मेरुलुट्यो बड़ि
 तार । कौन हेततेमित्यो सितासितबिकुरी कौनबिचार । मन्दाकिनि
 मानोशिरधारिकै रुदन करीपुकार । राख्यो मेलि पठोतैं परधन हरजु
 कियोबिनहार । सूरदासप्रभुसों हठकीन्हे उठिचलिक्यों न सवार १२
 रागबिनावल ॥ जल सुत प्रीतम सुतरिपु बंधव आयुध अनल न बिलयुभ-
 योरी । मेरु सुता पति बसतहै साथ कोटि प्रकाश सरसाय गयोरी ।
 सारुतसुतपति अरिपुरबासी पितु बाहन भोजन न मुहाई । हरसुतबा-
 हन अगन सनेहीमानहुं अलदेह दोलाइ । उदधिसुतापति ताकरबा-
 हन ताबाहन कैसेतहुभावै । सरण्याम मिलि धर्मसुवन रिपु ता अवता-
 रहि खलिलबहावै १३ ॥ रागअडानो ॥ मोहननीकोरी अतिनीको । तासों
 न रुसनकीजै हितुके मनाय लीजैहंसत हंसतदूरिकरै लेनरिस जीको ।
 अतिहि मानिनीजे तेतेउ में मनायदइअतिहि कठिनहठ देखयोरीतो
 प्रियाको । दूसरी यामिनी गई त्यांत्यों तू हठीलीभई सूर निरखि मुख
 देखो प्यारी पीको १४ ॥ रागबिहागरो ॥ औरसखी एकप्रयास पठाई ।
 हरिको बिरह देखिभई व्याकुल मानु मनावन आई । बैठीआय चतु-
 रई काळे तहँकछु नहींलगार । देखति हैंकछु औरदशा तब बभूति
 बारम्बार । मन मन खिभूति मानिनी याको कौने यहां पठाई । सूर
 सबनि कहुमानु मनायो सो मुनिके यह आई १५ ॥ रागमलार ॥ सुनरी
 सयानी विग्रहसिबेकोसैनलियो पावस दिननि कोऊसेसोहैकरतरी ।
 दिशिदिशि घराउठी मिलिरी प्रियसों रुची निडर हियोहै तेरोनेक
 न डरतरी । चलियेरी मेरीप्यारी मोकोमान देनहारी प्राणाहुंते प्यारी
 पतिधीर न धरतरी । सूरदास प्रभु तोहिं दियोचाहै हितचित्त क्यों न
 मिलैतेरो नेम तरतरी १६सेजरचि पचिसाज्यो सघनकुंजनिकुंजचित्त
 चरण लाम्यो छतिया धरकि रही । हाहाचलि प्यारी तेरो प्यारो

चैंकि चैंकि परै पातकी खरक पियहिय में खरकि रही । बातन
 धरत कान तानतहै भैंहवानउत न चलतिबाम अँखिया फरकि रही ।
 सुरदास सदन दहत पियप्यारी सुनि ज्यों ज्यों कहे त्यों त्यो बस उ-
 तको सरकि रही १७ ॥ रागकेदारो ॥ त तौ मो मो बातन कहति साई
 चलैगीकहांते । काहेको गहरु कीजै विनुरथकहालीजै दीजैजायउतरु
 में आई हैं जहांते । अनोखी मानिनी यह पाहन पूतरी भई बैन न
 बदति और जारत तहांते । आई हैं शपथ खायजातन परत पाय सु-
 रदासप्रभु नवल पहांते १८ ॥ रागसारंग ॥ हैंतौ दुहुनिचक्रडोर कीन्ही ।
 उतते ये पठवत इत वै नहिं मानत हौ दुहुन चक्रडोर कीन्ही । क्रोध
 भेय मुख मुदेश नयननि छवि न कहि आवै आतुर हूँ उतिधारिआवर
 लीन्ही । तासरस लोचन हावभाव बिनाकरे मानें न मानिनि मान
 रङ्ग भीनी । सुरज प्रभुराय शिरोमणि आपुहि चल देखौ क्यों न
 नायका नबीनी १९ हैं पिय रीझिआई । गईही मानु छिडावनपिया
 रीझि आई । ऐसीछवि राजतिहै मोपै सो बरिआ नहिंजाई । आपुहि
 चलिये बदनदेखियेजैलैंरहै निटुराई । सुरश्याम प्यारी अतिराजति
 रावरीदुहाई २० ॥ रागकल्याण ॥ मैं तुम हँसत खे ततछाँडिगई अब न्यारे
 न्यारे अनबोले हूँ रहे दोऊ । इततुमखे हूँ रहेगिरिधर उत अनसनी
 अञ्जलउरमाय मुखजंग लगायरहीं दोऊ । नीची दुष्टिकरि धरणी नख
 करोवति सहोपिया तबहीं यकटक घँघटतनचितै रही आहिकहाहैं
 करैअबसोऊ । सुरदासप्रभुप्यारे अङ्गमभरिजायलीजैछाँडौछाँडौकहन
 देहुऔरनमानैकोऊ २१ ॥ रागईमन ॥ अजहँरैनितीनियामहै जू । काहेको
 हरबरात श्याम जू । मैं तौवाकी प्रकृति लई लखिकै बातजो पै रिस
 देखिहैं तौ घरिहु लागिहै तिहारी प्यारी लाडिली बामहैजू । पैज-
 किये जातितहि अबलिये आवतिहैं मेरेतौ तिहारेमुख मुखहै याते
 कौन कामहै जू २२ ॥ रागसारंग ॥ जहां बैठे साधव तहां तू बुलाय राधे
 यमुना निकट शीतलछहियां । आखी नीकीलागति कुसुमोसारीगो-
 रेतनु परस चतुरि चलीहरि पहियां । दूती एकगई मोहन पै जायक-
 हेउपिय कहियां । सुरदास सुनि चतुर राधिका प्रश्याम रैनि तुन्दावन
 सहियां २३ ॥ रागईमन ॥ रसमें रिसकीबात । बेरस कीजैन भामिनीहैं

पठई तोहं लैन सांवरे तोहिं बिन कछु न सुहात । हाहा करति तेरे
 पायनपरतिहैं सरासरा निशिघटति जात । सूरप्रयाम तेरोमगजोवत
 अति आतुर अकुलात २४ ॥ रागविहागरो ॥ उतरुन देति मोहनीमौन ह्वै
 रहीरी । सुनि सब बात नेकहू न मटकीरी । अब धौं चलैगी कबरज-
 नीगईरी सब शशिबाहन धरणी वे देखलटकी । नैगारी करें अलोल
 धरैरी पाणिक्पोल भुवनख लिखैतिलहं न कछुभटकी । सुगंध बधूरी
 शठकाहेकी परीहै हठपरम भावती तू नागरी नटकी । ध्रुव समान आ-
 येजुसप्तमुनि बहुरिबेर रहेउहै तमचुररटकी । सूरसखीजायबलिराधिका
 कुंवरिचलि आजु कबिनीकी तैसे आके नीलपटकी २५ सर्वरी सबबि-
 हानी तोहिं सनावतिराधारानी । शुक्रउदै होनलागयो जागेतमचुरढरि
 आई जु मृगानी । प्रफुलितकमल गुंजारकरत अलिपीरी पहुफटी कु-
 मुदिनी कुन्डिलानी । सूरप्रयाम बनमुरखि परे हैं मानिनि वारोंमोंपर
 क्यों भुहरानी २६ प्रयामप्यारी बोलैन लागे तमचुरघटिगई रजनी ।
 अरीवे मनमोहन ब्रजनायक ठाढेसजनीढेठाढेहैं हरिअकु द्वारे ललित
 बेन बजाय है । अबरा सुनत कैसे रहति कैसे तोहिं गेह सुहाय हौ ।
 तुम कुंवरिदृष्टभानु कीकछुनेह प्रीति न जानहू । कहिपठई हरितोहिं
 काहे न चितआनहू । नन्दनन्दन कहेउसेसे ह्यां सुन्दरिआय हौ । और
 नहिं कछु काजबनमें नेक सधुर सुर गायहौ । सूरप्रभुहिं बिचारि मन
 में प्रीति सों उरलाइये । यह पुनि पुनिमें कहति राधिका मनबांछित
 फलपाइये २७ ॥ रागकेवारी ॥ मोहन तेरे अधीन भये रिस कबते की-
 जतुरी गुणाआगरी नागरी । तेरे अनउत्तर सुनिसुनि श्याम हंसि हंसि
 देत नेक चितै इत नागरी । तेरोई भाग सोहाग तेरोई अनुराग तेरेही
 साथे रती तू हूप उजागरी । सूरदासप्रभु तेरो मग जोवत तुहींतुहींरट
 लागी जैसे मृगनि भूली बागरी २८ ॥ रागनट ॥ कुञ्जसदन में ठाढेदेखों
 अखियनभरि तब मैं जाऊंगी बलि । मोपै न देखेपरे खरेतुम डारिगहे
 अकेले नेक तू ठाढीहौ ढिगचलि । तेरोरी बदनप्रफुलित अम्बुजहरि
 जूके नैना में देखे अति आतुर अलि । सूरदास नन्दनन्दन प्यारेप्यारे
 नेक न कीजैहाहा दूरिकरों मानैमलि २९ ॥ रागकेवारी ॥ तेरे मानिबहु
 तेरीमानु नीकोइ लागत सेसरहिये जौलीलालहि लैआऊं । औरनकी

हांसीखे त तिहारी सखाई साईधिरहमें यहरगजन सुख नयन आ-
 पियिखाऊं । उलटि पिय पै जाउं नौतन दोष बहाउं सोरह कलाको
 पशि कहिपियनाऊं । सूरदास प्रभु गिरिधरस सों हिंलिनिलि पिय
 शिलियो को बडवत्तकप अनूपमपाऊं ३० ॥ रागविहागरे ॥ कहतिप्रयास
 सों जायसनायो न मानै जू । कहाँही मन घालि कहा अनुमानै जू ।
 कहा सनसैघालि बैठीभेद में नहिं लखिसकी । आपछां बडवहां बैस
 जात आवत में थकी । नेकहू जो कहेउं मानै कोसिभांतिन में कही ।
 हाहा करिसनुहारि सुनतही रिसगही । कहा बैठे चले बन है आपह
 नहिं मानि है । तुम कुंवर घरही के बाहे अब कछु जिय जानिहौ ।
 बेगिचलिये अनखिजैहै तुमयहां बहजरति है । वाकेजिय कछु और
 कपटकरि धरतिहै । राधिका चित अतुरजानोजाय ताडिगही रहे ।
 कहाजोमुखफेरिबैठी सधरसधुर वचनकही । सूरप्रभुअबसनेनाचे काढ
 जैसी तुमकछो । कहियत गुणपरवीरा कोधविषभडो ३१ ॥ रागविहागरे
 सुनियह प्रयास बिरहुभरे । बार बार गगन निहारत कबहूँ होतखरे ।
 मानिनी नहिं मानसोच्यो दूसरी निशि आजु । तबपरि मुरझाय धरणी
 काम करेउ अकाजु । सखिनतब भुजगहि बचाय कहावारे होत । दूर
 प्रभु तुम चतुर मोहन मिले अपने सोत ३२ ॥ रागबिल वन गूहो ॥ प्रयास
 चतुरई कहाँ राँवाइ । अबजानेघरके बाहेहैतुम सेसेकहँ रहे मुरझाई ।
 बिना जोर अपनी जांघन के कैसे सुख कियो चाहत । आपुन दाहत
 अचेत भये क्यों उतमानिनि मन काहे दाहत । वहीं रहौ कहैगी क-
 तहूँ जायरहे बहुनायक । सूरप्रयास मनमोहन कहियत तुमीहो सबही
 गुण के लायक ३३ ॥ रागरामकली ॥ तब हरिरच्योदूत रूप । गये जहाँ
 मानिनी राधा विद्यास्वांग अनूप । जायबैठे कहत सुखयह तू यहाँवन
 प्रयास । मैं सकुचि तहंगईनाहीं फेरिकहियत बाम । सहजबातें कहत
 मानो अब भईकछुऔर । तू यहां बै बहंबैठे रहति सकहिऔर । कहौ
 मोसों कहा उपजी बै रहति तुवनाम । सुनति है कछु वचन राधा सूर
 प्रभु बन धाम ३४ राधे तैं अति मान करेउ । यहकोहि हरि पछितात
 मनहिंसत पूरव पाप परेउ । पहिली अपनी कथा बताई जब वियभेय
 धरेउ । तब तेहि रूप अनूप सुमुखि सुनि त्रिभुवन चित्त हरेउ । मोहे

अमुर महासद माते सुरमुख अमृत भरेउ । शिवगणा सहित समेत महा
 पुनि को व्रत नेम ढरेउ । तो तनुकी छवि निरखि सूर शिव कृतज्यों
 जान धरेउ । जेहि जारेउ जगकास सो सावबतेरेई हठजात जरेउ ३५
 रागविहागरे ॥ इतो अम नाहिंन तबहुं भयो । सुनि राखिका जितो अम
 मोको ते यहि मानु दयो । धरणीधर बिधि वेद उधारो मधु सो शत्रु
 हयो । दिज नृप कियो दुसह दुख मेट्यो बलि को राज लयो । तेरेउ
 धनुष खयंबर कीन्हे रावरा अजित जयो । अघ बक बच्छ अरिख
 केशि मथि दावानल अंचयो । वियवपुधरेउ अमुर सुर मोहे को जग
 जोनइयो । जानो नहों कहा या रसमें जेहिधर सहज नयो । गुरुसुत
 सुतक काज निजुआये सागर सोंबलयो । सुर सुवन अंब तोहिं सना-
 वत मोहिं सब बिसरिगयो ३६ ॥ रागविहागरे ॥ राखिका तजि मानुमया
 कर । तेरे चररा शररा त्रिभुवनपति भेटि कलप त होहि कलपतर ।
 जिनके चररा कमल सुनि बंदतसो तेरो ध्यान धरे धरणीधर । अहो
 बाबरी कहा तैं कीन्हे प्रीतस पढे दियो बैरिनि घर । तुन नागरि लै
 श्री नागर वर तुम हनुवरि वै श्रीछन्दरवर । ये हरि तो दुख हरत सबलि
 को तू लखभानदता हरिको हर । जो कृत्तिकछू कहेउ बाइतिहै उनहिं
 जानि मथि मोरीं सों लर । तबहीं सूर निरखि नयनन भरि आयो
 उधरि लाल लालिताकर ३७ ॥ रागविहागरे ॥ प्रयासचतुरई जानति हैं ।
 ये गुण तुम अजहं नहिं छांड़े इन छन्दनि में मानतिहैं । तुमरस बाद
 करन अवलागे जसब तेउ पहिंचानतिहैं । वे बातें अथ दूरिगई जू ते
 गुण सुनि सुनि गानतिहैं । यह कहि बहुरि मानुगहि बैठी जियही
 जिय अनुमानतिहैं । दूरकरी जोईसतभावे यहैवात कहिभानतिहैं ३८
 रागविहागरे ॥ यह कहि बहुरि मानकियो । रिसनि घरघर होतिबाला
 योग नेस लियो । कहतिमन मन बहुरि मिलिहैं अब न करौं विलास ।
 ध्यानधरि बिधिको सनावै लैति ऊरव आस । बिया को जलि जन्न
 पाऊं जनिकरै पति नारि । जन्म तौ पायागा मांगीं सूर मोद पसारि
 ३९ ॥ रागविलवल ॥ प्रयासचलेपछितायके अति कीन्हे मान । ब्याकुल
 रिसतनु देखिके सगगयो सयान । बैठे शीश नवायके बिन बीरजप्रान ।
 दूतो तुरत बुलायके पठई दै आन । बिरहाके बग हरिपरे धि

अनुमान । धीरधरौ मैं जातिहैं करिये कछु ज्ञान । सावधान करिकै
 गई दूतिका सुजान । सरमहाबह मानिनी मानोपाधान ४० ॥ रागधनाश्री ॥
 अंग पराये दैदेरी । मेरी शिखसुनि रसिक राधिका मनमें न्याय चि-
 तैरी । आप आपनी तिथि वा इन्दुहि अचवत अमरसबैरी । हर सुरेश
 सुर श्रेय समुक्तिजिय क्यों प्रभुमान करैरी । वह जंटो शशि जानि ब-
 दनबिधु रच्यो बिरज्जि यहैरी । सौंप्यो सुपतविचारि श्यामहित सो
 तू रहिलटिलैरी । जाकी जहां प्रतीति सूरसों सर्वसतहां सचैरी । सिद्ध
 सुधानिधि अर्पि अबहिं उठि बिधि पुनिपुनिन पचैरी ४१ ॥ रागबिहारी
 राधिका हरि अतिय तुम्हारे । रति पति असन काल गृह आयै उठि
 आदर करु कहै हमारे । आसन आधी सेज सरकिदे मुखपैहें पदहरायि
 पखारे । अर्धादिक आनन्द अमृतमय ललित लोन लोचन जलधारे ।
 धूप धुबासन तत्क्षणा बशकरि मनमोहन हँसि दीप उजारे । बचनरचन
 भुवभङ्ग अंबरअंग प्रेम मधुररस परसिनिनारे । उचित केलिकटु तिक्र
 त्यागिपटु अमल उलटि अंकम हठिहारे । नखकतकार कयाय कङ्कग्रह
 चुम्बनसर्पि ससर्पि सँवारे । अधर सुधा उपदंश सोंचशुचि बिधुपूरणा
 सुखबास सचारे । सूर सुकृत सन्तोष श्यामको बहुतपुण्य यहवत प्रति
 पारे ४२ ॥ रागधनाश्री ॥ अब मोहिं जानि ऐसोकीजै । सुन राधिका कहत
 साधव यों बुभयो दण्ड सो लीजै । उर उर चापि बांधि भुजबन्वन नख
 नाराच सरम तकिदीजै । भौंह चढाय रिसाय दशन दसि अधर सुधा
 अपने मुखपीजै । अब जनिकरै बिलम्ब भामिनी सरिसकरौ जेहि गात
 पसीजै । ग्रन्थ गुननिगाहि जूट गांठिदै छूटिन कहूँ अमजल भीजै । पुनि
 सखि समुखि पाय लागतिहैं दम्पति अरश परश तनुडोजै । सूरश्याम
 संगमिलि रस बिलसहु जीवन सुफल यहै सुनिलीजै ४३ ॥ रागगोडमलार ॥
 गहेउ दृढमान लुखभान बारी । उलै बरु स्वर्ग सुरपति सहित सुरनिहों
 डुलै कञ्चन मेरुपहि निहारी । रैन रबि उदय बासर चन्द होय बरु
 डुलै सब नखत यहहोय भाखै । धरिणा पलटै सिन्धु मर्याद को तजै
 शेषशिर डुलैनहिं मानुजाखै । वांझ सुत जनै उकटेकाठ पल्लवै विफल
 तरुफरै बिन मेघपानी । सूरयह सुनहु बरु अचलचल चलैको कहति
 बानी ४४ ॥ रागदूत कान्हरो ॥ यकै मनहींमन दूती यह अनुमानकरै । कासों

कहाँ सुने को मेरी कैसे कहेउ हरे । हरिपदई मोको आतुरकरि यह
जिय शोचकरै । कैसे बचन कहैं या आगे यह अनुमान करै । चतुर
चतुरईफवै न यासों सुनिरिस अतिहकरै । सुरसहजही मानु मनाऊँ
सेा यह कबहुँ करै ४५ ॥ रगमलार ॥ मानि मनावों राधाप्यारी । दहित
मदन दहतन नायकहो पीर पीरते न्यारी । तू जु कहतही और रूसने
अब कहि कैसे रूसी । बिनहीं शिशिर तमक तामसते तुवमुख कमल
बिदूसी । सुनियत विरद रूप रस नागरि लीन्ही पलटि कछूसी । तेरे
हृत्ती प्रेम सम्पत्तिसखि सेा सम्पत्ति केहिमूसी । उनतन चितै आप तन
चितवहु अहोरूपकी राशी । पिय अपनो न होइ तऊ जो ईश सेइये
काशी । तुमती प्राणा प्राणाबल्लभके वै तुमचरणा उदासी । सुनिहैकोऊ
चतुरनारि कत करत प्रेमकी हांसी । ज्योंज्यों मौनभई तुमउनके बाढी
आतुरताई । कान्हआनि बिनितारत सुनिसुनि जियपैठी निटुराई । हिये
कपाट जोरि जड़ताके बोलत नहीं बुलाई । हो राधा राधा रटलागी
चितचातकी कन्हाई । जोपै मानत भांवरिमान न होई । हियते बादि
प्रेमचितवतिहो अन्तभाव तौ सोई । जो गोरी पियनेह गरवतौ लाख
कहै किन कोई । काहु लियो प्रेमपरचौ वह चतुर नारिहै सोई । कत
होरहीनारि नीचीकरि देखत लोचनभूले । मनहुँ कुसुदरुचि उद्वर्पितसों
किये ऊरधमुख हँफूले । बेतौ हित वृथभाननन्दिनी सेवत यमुनाकूले ।
तेरेतनक मान मोहनके सबै सयानपभूले । अहो इन्दुवदनी सुनिसजनी
कत पलकन पलजोरे । तुवमुख दरश आशके प्यासेहरिके नयन च-
कोरे । तेरेबल भामिनी बदतनहिँ उपजत कामहिलोरे । सुनियतहते च-
तुरि नागरिते तनक मानभये भोरे । तब दूती फिरिगई प्र्यामपै प्र्याम
वहाँ पशु धरिये । जेहि हठ तजे प्राणाप्यारीसों यतन सवारो करिये ।
वै वैसे तुम ऐसे वैसे कहे काज कह सरिये । कीजै कहा चाँड अपनी
कत यहां मसूसनि सरिये । अपनी चोप आप उठिआये हैं रहे आगे
गाढे । भूलिगये सब चतुर सयानपहुते जो बहुगुणा गाढे । डोलत नहिं
बोलैं न बुलाये मनहुँ चित्र लिखिकाढे । परो न काम नारि नागरसों
हैं धरही के बाढे । निबह्यो सदा औरही को हठ यह परकीर्ति तुम्हा-
री । आपनहीं आधीन हैं टाढे देखि गोबर्द्धनधारी । प्राणाहिं पियहि

कसने कैसे सो सुनि दृयभान दुलारी । कहूं न भई सुनो नहिं देखीरहे
 तरङ्ग जलन्यारी । रिस कसने मिलन पतकनको अतिकसुख रङ्गजै-
 सो । रहे न सदा छुटत सखा भीतर प्रात वसविय तैसो । वेहें परम स-
 लीन किये मन उठि कहि मोहन वैसो । घर आये आदर न चूकिये
 बैठी दूध अँचैसो । वेतौ भँवर भावते बनके और बेलिको तैसी । कीजै
 मान सदनमोहनसों बातकहैं हँसिनैसी । तुमजानहुं को लाल तुम्हारी
 तुमहिं उनहिं है जैसी । वाहीते तुम गर्व भरी हौं बैठावे तुम वैसी ।
 यौवनजल बरखा कि नदी उग्रों चारदिनाको आवै । अन्त अवधहीलों
 नातो जो कोटिक लहरि उठावै । बलभको बलभको मिलिबो तुमहिं
 कौन समुझावै । लै चलिभवन भाव तेहि भुजगहिको कहि गारि दि-
 वावै । भुकिठेलो ह्यांते सरिहांती कौने सिखैपडाई । लै किन जाहि
 भवन अपने ह्यां लइन कौनसों आई । कांपत रिसन पीठिरे बैठी सह-
 चरि और बुलाई । कहु सीरी कहु ताती बातन कान्हहिं देखिदुहाई ।
 कबहुंको लैभरि दर्पणा मोहन ह्वै रहे आगे टाढो । पटअन्तरनहिं विषय
 निहारतइते मानमन गाढो । तलफतफिरैं धरैं नहिं धीरज विरहअनल
 को डाढो । इत नागरी उतहिं बै नागर इन बातन को छाढो । बडो
 बडाई को प्रतिपालै बडो बडाईछीजै । ताको बडोबडो धारणागत बैस
 बडै सों कीजै । तु दृयभान बडे की बेरी तेरे ज्याये जीजै । राखहु बैर
 हिये गहिमोसों दौरिहि पीठि न दीजै । भासिनि और भुवंगिनिकारी
 इनके बियहि डरइये । राखहु विरचेसुखनाहीं भूलि न कवहुं पत्यइये ।
 इनके वषा मनपरे मनोहर बहुत यत्न करिपइये । कामी होय काम
 आतुर तेहि कैसेको समझइये । जेजे प्रेमछके में देखे तिनहि न चातु-
 रताई । तेरेमान मयानसखीतेहिं कैसेकोसमुझाई । परिहैको धिचिनि
 भाँवरि में बुझिहै नहीं बुझाई । हौं जु कहति ते बाद बावरी तूनाते
 आगि उठाई । बहुरेउ भये सहचरो मोहन ताकि आपनी घातैं । लागे
 कान सखीके धोखे कहत कुञ्जकी बातैं । सुधिकरि देखि कसने उ-
 नको जबखाईहाहातैं । आपपीर परपीर न जानतिभली यौवननातैं ।
 कहूं न भयो सुन्यो नहिं देख्यो तनुतेप्राणा अबोलैं । होतकहांहै आल
 सहं मिस सखा घुघट पसखोलैं । पावति कहा मानमें प्यारी कहागवां

सहायो । कूटबन्ध लुंभीअलकावलि मरगज तनकेबाणे । अञ्जन अधर
भालजावक रंगपीक कपोलन पाणे । बिनगुणामाल पीठिगडि कङ्कन
उपटिउठे उरलागे । रसिकराधिकाके मुखकोमुख लूटेउ श्यामसभागे ।
नवलगोपाल नवेलीराधा नये नेहबश कीन्हे । प्राणनाथ सेां प्राण
पियारी प्राणपलटिसे लीन्हे । बिबिधि बिलास कलारसकीबिधि
उभयअङ्ग परवीन्हे । अतिहित मानुमान तजिमानिनि मनमोहनमुख
दीन्हे । राधाकृष्ण केलिकौतूहल अवरगामुनै जेगावै । तिनके सदास-
मीप श्यामजु नितहि अनन्द बढ़ावै । कबहुं न जाहि जठर पातक
जिनको यहलीला भावै । जीवन मुक्तिसूरसोजगमें अन्तपरमपद पावै
४६ ॥ रागगोडमलार ॥ राधिका बप्रयकरि प्रयासपाये । बिरहगयेदूरि
त्रियहरय हरिकेभयो सहसमुख निगमजिन नेतिगाये । मानुतजि मा-
निनी सैनकोबलहत्यो करततनुकन्तके आसभारी । कोकबिद्यानिपुण
प्रयाम प्रयामाबिपुल कुञ्जगृह द्वारठाढे मुरारी । भक्तहितहेत अवतार
लीलाकरत रहत प्रभुतहाँ निजुआन जाके । प्रकट प्रभुसूर ब्रजनारिके
हितबन्धु देतमन कामफल संगताके ॥

अथ गुरुमान लीला ॥

सखिनसंग वृथभान किशोरी । चलीन्हान प्रातहि उठिगोरी । जाके
घर निशिबसे कन्हाई । ताघर ताहि बुलावन आई । ठाढीभई द्वारपर
जाई । कढे तहांते कुंवरकन्हाई । औचक मिले न जानत कोऊ । रहे
चकत इतउतरो दोऊ । फिरीसदनको तुरतहि प्यारी । न्हानजान की
सुरत बिसारी । भई बिकल तन रिस अतिबाढी । रहिगई सखी नि-
रखि सब ठाढी । रहिगये ठाढे श्यामढंगेसे । सकुचाने उरशोचपगेसे ।
जबदेखे हरि अतिमुरझाये । तबसखियन गहिभुज समझाये । उलटि
भई सब हरिकी घाई । दैकेबांह प्रिया जहँ ल्याई । देखिप्रयाम आये
जहँ राधा बैठी मानदृढाय अगाधा । रिसही के रस मगनकिशोरी ।
भई श्याममति देखतभोरी । ठाढे चकत चित अकुलाहीं । मुखतेबचन
कहे नहिंजाहीं । व्याकुल लखिनदलालको सखियन कियोबिचार ।
अब दोऊ जैसेमिले करियेसो उपचार । अतिरिसनारि अचेतकोसुनि
हे कासों कहें । इतये धरिया नहिंचेत परी रुठावन बानइन । प्यारी

निकटाई सबआली । ठाढ़ेपौरिरहे बनमाली ॥ कहति मानकीन्हो तैं
 च्यारी । न्हानजानते फिरीकहारी ॥ तोहिँ लाखतहीरो गिरिधारी ।
 अतिहि डरेतन सुरति बिसारी ॥ सुरछि परे धरणी अकुलाई । तरु
 तमाल जनुगयो भुराई ॥ तैं ऐसे चितयो कह्यु उनको । नेकहु चैन रहेउ
 नहिँ तिनको ॥ तेरेनयनअरी अनियारे । कियोंबाखा खरसान खवां-
 रे ॥ भौंहकमान तान यों मारे । क्योंकरि राखे प्राणप्रियारे ॥ घायल
 जिमि सुच्छिन्न गिरिधारी । अमीबचन अबसींचु पियारी ॥ बहुना-
 यक वे तू नहिँ जानै । तिनसों कहाइतो दुखमानै ॥ बाँहगहौ हरिको
 दिगलावै । अबवे निज अपराध समावै ॥ गहति बाँह तुमहीं किन
 जाई । मोसों बाँह गहावन आई ॥ काल्हिहि सौंह मोहिँ उनदीन्ही ।
 आजाहि यहकरणी पुनिकीन्ही ॥ दोहा ॥ देखिछुकी उनकेखान निज
 नैनसुखप्राय । तिनहँ मिलावतिमोहिँ अबबाँहगहावतिआय ॥ घेरठा ॥
 मलौनतिनवोंभल अबजौलौंजीवनजियौं । सहैंबिरहकोशलवक्तार्क

चोपा

कबहुँनैन न अञ्जन लाऊँ । मृगमद भलि न अङ्ग चढाऊँ ॥ हस्तबलय
 पटनील न धारौं । नैननकारे घनन निहारौं ॥ सुनौं न अबसान अलि
 पिकवानो । नीलजलजपरसौं नहिँपानी ॥ सुनतप्रियाकी बातसुहाई ।
 हरयत ठाढ़ेपौरि कन्हाई ॥ सखी कहति यों हठनहिँ लीजै । हरिसों
 मान न कीजै ॥ तहै नवल नवल गिरिधारी । यहयौवन
 चारी ॥ सखासखा ड्योँकरकोजलकीजै । सुनरी याकोगर्ब न कीजै ॥
 नंदनन्दन मुखशशि मुखकारी । तकरिनयन चकोरि पियारी ॥ हुते
 प्रेमधन तौ यहभारी । सोअब कहतैं कियोकहारी ॥ कहति हतीसुसौं
 नहिँ कबहीं । सोअब रूसतहै जवतवहीं ॥ सुनिहैसुधर नारिजो कोइ ।
 करिहैहँसीप्रेमकीसोई ॥ दोहा ॥ मानकियो जो भावतेसानभावतेहाय ।
 उरतेरिसवत प्रेमकत अन्तभाव तौ सोय ॥ घेरठा ॥ लाखकहौं किनकोय
 पियसनेहजोगोयहै । चतुरनारिहैसोय लियोप्रेमपरचौं किनहुँ ॥ चोपाई ॥
 तुमवैसकनदोयपियारी । जलतेतरंगहायनहिँन्यारी ॥ रससुसने ओष
 कगा जैसा । सदा न रहै चाहिये तैसा ॥ तजि अभिमान सिलहि प्रिय
 प्यारी । मानु राधिका कही हमारी ॥ छुप न रहतिकह करति मना-

वन । तुम आईहौ बात बनावन ॥ बहुत महीघर आईयातें । सुरतिदि-
 वावति पिछली बातें ॥ मोसोंबात कहतिहौ काकी । जाहु घरन अब
 कहुहै बाकी ॥ कोउनकी नहिँबात चलावत । हँवे अब तुमहींको भा-
 वत ॥ तुम पुनीत अरुवे अतिपावन । आईहौ सबमोहिँ मनावन ॥ यह
 कहि रही रीय भरिभारी । गई सखीये जहाँ बिहारी ॥ कहेउ जाय
 हरिसें हसवाई । आजचतुरई कहाँ गवाई ॥ बिननिज जाँघन चलहि
 ललारे । कैसे चहत कियोसुख प्यारे ॥ हैमनमोहन तुम बहुनायक ।
 नागर नवल सकल गुणालायक ॥ तबबोले हरि दोउ करजोरी । तेरी
 सों लुखभानकिशोरी ॥ तू ही हितचित जीवन मोको । सदाकरत आ-
 राधन तोको ॥ तुमस तिलक तुहीआभूषण । पोथरा तेरेइबचन पियू-
 यण ॥ तेरोइ गुणमें निशिदिन गाऊँ । अब तजमान हृदय सुखपाऊँ ॥
 करजोरे बिनतीकरि भाख्यो । कहत शीश चरणान परराख्यो ॥ यह
 सुनि कहुप्यारी मुसुकानी । तबबोली उठिसखी सयानी ॥ सुनहुष्याम
 तुमहौ रसनागर । रूपशील गुणप्रीति उजागर ॥ तुमते प्रियानेकनहिँ
 न्यारी । सक प्राणद्वै देहतुम्हारी ॥ प्यारी में तुम तुममें प्यारी । जैसे
 दर्पाछाँह बिहारी ॥ रसमेंपरै बिरस जहँआई । होयपरति तहँ अतिक-
 टिनाई ॥ अबकैहमसब देति मनाई । परशोप्यारी चरणा कन्हाई ॥ अब
 रुठायहौ जोगिरिधारी । रामराम तौ बहुरि हमारी ॥ दोहा ॥ जबपरशे
 प्यारीचरणा परमप्रीति नँदनन्द । कुट्योमानहरयोप्रिया मित्योबिरह
 दुखदन्द ॥ चोपडा ॥ उरआनन्द बढ़ाय प्रेम कसौटीकसि पियहि । अवगुणा
 मनबिसराय मिली प्रियाउठिप्रियामसों ॥ चोपाई ॥ हरयिमिलेदोउ प्रीतम
 प्यारी । भईसखी सबनिरखि सुखारी ॥ तबदोउ उबटि सखिन अन्ह-
 वाये । रुचिर शृंगारशृंगार बनाये ॥ मधुरमिष्ट भोजनमनभाये । दोउन
 सकेथारजमाये ॥ दियेपानअचवन करवाये । सुमन सुगन्ध मालपहि-
 राये ॥ लैबीरा अपनेकरप्यारी । दीन्हे बिहँसि बदनगिरिधारी ॥ त-
 बहिँ सुफल हरिजीवन जान्यो । परमहरय उरअन्तर आन्यो ॥ मिलि
 बैठेदोउ प्रीतम प्यारी । तब सखियन आरती उतारी ॥ अति आनन्द
 भरे दोउ राजें । अरश परश निरखति कवि छाजें ॥ पाये बश करि
 कुञ्जबिहारी । बिहँसि कहेउ तब पियसों प्यारी ॥ सुनहुष्यामबरवा

ऋतु आई । रचहु हिंडोरो शुभ सुखदाई ॥ हैमनपिय यहसाधहसारे ।
सर्वमिलि भूलहिंसंग तुम्हारे ॥ सुनितिय बचन श्यामसुखपाये । ऐसे
कहि हरिमान छुड़ाये ॥ छन्द ॥ तियमानहरि ऐसे छुड़ाये भक्तहित
लीलाकरी । निगम नेति अपार गुण सुखसिन्धु नटनागर हरी ॥ यह
मान चरित पवित्र हरि को प्रेम सहित जु गावहीं । करहि आदर
मानतिनको सन्तजन सुख पावहीं ॥ दोहा ॥ राधारसिक गोपाल को
कौतूहल रसकेलि । ब्रजवासी प्रभुजनन को सुखद कामतरु बेलि ॥
भारटा ॥ सुफल जन्म है तास जे अनुदिन गावत सुनत । तिनको सदा
हुलास सूरदास प्रभुकी कृपा ॥

इति श्रीकृष्णानन्दव्यासदेव रागसागरोद्भवसूरसागरराग
कल्पद्रुमरासलीला और मानलीलासम्पूर्णाव ॥

अथ सूरसागर रागसंग्रह कृत ॥

राग सागरोद्भव रागकल्पद्रुम ॥

अपनो दीनत्व प्रभुजीको माहात्म्य तथा विनयपत्रिका प्रारम्भः ॥

राग बिलावल ॥ करणी करुणासिन्धुकी कहत न बनिआवै । कपट
तरे परसेवकी जननी गतिपावै । दुखितगजेन्द्रहि जानिकै आपुनउठि
धावै । कलिमें नाम प्रकटनीच ताकी छानि छवावै । उग्रसेनकी दी-
नताप्रभुके जियभावै । कन्समारि राजाकियो आपुनशिरनावै । बरुण
पाशते ब्रजपतिहि क्षणमें छिटकावै । बहुत दोष मो सूरकहतातेगहरु
लगावै । साधववेभुज कहाँदुराये । जिन्हींभुजन गोवर्द्धन धारेउसुरपति
गर्व नशाये । जिन्हीं भुजन काली को नाथ्यो कमलनाल लै आये ।
जिन्हीं भुजन प्रह्लाद उबारैउ हिरणयाक्ष को धाये ॥ जिन्हीं भुजनगज
दन्त उपारैउ मथुरा कंस ढहाये । जिन्हीं भुजन दांवरी बंधाये यमला
मुक्ति पढाये । जिन्हीं भुजनअघासुर मारेउ गोसुतगाय मिलाये । तिहि
भुजकी बलिजाय सूरजन तिनका तोरि दिखाये २ अपने जाने में ब-
हुत करी । कौन भाँति हरि कृपा तुम्हारी सु कहु न स्वामी समुक्ति
परी । दूरिगयो दर्शनके कारण तुव सहिमा बिभुता बिसरी । मनसा
बाचाकर्म अगोचर सो सूरति नहि नयनधरी । गुणविन गुणी स्वरूप

रूप बिन नाम बिना श्री प्रयास हरी । कृपासिन्धु अपराध अपरमित
 समहु सूरतें सब बिगरी ३ चकईरी चलि चरणा सरोवर जहां न प्रेम
 बियोग । जहँ भ्रम निशा होति नहिं कबहुं वे सायरमुख योग । सनक
 शेष आदिक शिव मुनिजन नख रवि प्रभा प्रकास । अफुलित कमल
 निमेष न शशि डरु गुंजत निगम सुवास । जिहि सर सुभग मुक्ति मुक्ता
 फल मुक्त बिसल जल पीजै । सोइ सर छाँडि कुबुद्धि बिहंगन यहां
 कहाँ रहि कीजै । तहँ श्री सहस सहितनित कीडा शोभित सूरजदास ।
 अब न मुहाय वियय रस कीलर वा समुद्रकी आस ४ तुम्हरो नाम
 तजि प्रभु जगदीश सुतो कहा मेरे और कहा बलु । दूध बिबेक अनु-
 मान आपने सुधैं करहु सब मुकतिनको फलु । वेदपुराणास्मृतिसन्तनकी
 यह आचारमीनको ज्यों जलु । अष्टसिद्धि नवनिधि सूरके सम्पतिबिनु
 मुख कहू कहाललु ५ ॥ रागधनाथी ॥ सो कहा जुमें न कियोजोपै तुम
 सोइ सोइ चितधरिहौ । पतितपावन बिरद प्रकट कौनभाँति करिहौ ।
 जबते जग जन्म पायो जीव नाम कहायो । तबते सबऔगुणा करि गु-
 राना कहिआयो । मुकती शुचि सेवकजन काहेन जियभावै । प्रभु की
 प्रभुताई यहैदीन शरसापावै । स्वादलम्पटसन्तनिन्दक कपटी गुरुद्रोही ।
 जेतै कहू अपराध कहियत लागै सबमोही । प्रयाससुन्दर कमलनयन
 सकलअन्तर्ध्यामी । बिनती कहा करै सूर कर कटिल कासी ६ पतित
 पावनहरि नाम तुम्हारो कौनेहु धरेउ । हैंतौ दीनदुखित संशयरत द्वारे
 रत परेउ । जीव यातना योनि रुविर जल जब जब जटर जरेउ । त-
 बहूँते तुम निकट तज्यो नहिं शत अपराध भरेउ । गज गगिका नृग
 गीध ब्याधते मैं घट कहा करेउ । बिद्यमान सम शूल सहत हैं काल
 कुलिश न डरेउ । एते कोटि कटिल करुणामय तिनते कहा सरेउ ।
 ना जानौ यह सूर महाशठ कौन दोष बिसरेउ ७ ॥ रागसोढ ॥ और न
 जानै जनकी पीर । जब जब दीन दुखित भये तब तब कृपा करी बल-
 बीर । गज बलहीन बिलोकि बहुत दिशि तब मुख शरसा परो । करु-
 णासिंधु दयाल दरश दै सब सन्ताप हरो । सागध मथेहते नृप बन्धन
 मृतक बिप्रसुत दीन्हे । गोपीगाय गोप गोसुत लागि सातद्योस गिरि
 लीन्हे । श्रीनृसिंह बपुवारि असुरहति भक्त वचन प्रतिपारो । समि-

रत नाम द्रुपदतनया कहै पट समूह तन धारो । मुनि सद मेदिदासव्रत
 राख्यो अम्बरीष हितकारी । लाक्षागृह बनवसत सैन्यते पांडव बि-
 पतिनिवारी । बरुणापाश ब्रजपति मुकराये दावानल दुख टारो । गृह
 अपने बसुदेवदेवकी कंसमहाखल मारो । सोइभीपति युगयुग सुमिरगा
 बश वेद विशद यशगावै । अशरणा सूर शरणा याचतहै कोऊ सुरति
 करावै ८ ॥ रागधनाश्री ॥ साधव राज ग्राहते छुड़ायो । निगमनहं मनव-
 चन अणोचर प्रकटस्वरूप दिखायो । शिवबिरञ्जि सुरपति सब देखत
 बहुत दिनन दुखपायो । बिन बदले उपकार कृपा को काहू करत न
 आयो । चितवतही चितमें चिन्तामणि चक्रलिये करधायो । अति
 करुणा कातर करुणानिधि गरुडो जिहि बिसरायो । मुनियत यश
 युगयुग जन कारणा कबहू गहरुनलायो । ना जानिये सुरयहि औसर
 कौन दोष बिसरायो ९ जैसे तुम और बहुत खलतारे । चरणा प्रताप
 भजनमहिमाको को कहिसकै तुम्हारे । दुखित गयन्ददुष्टमति गरिमाका
 नृगहि कपते उधारे । बिप्र बजाय चलयो सुतके हित काटि महा अघ
 भारे । गीव व्याध गीतमविय मृगकपि यहि धौं कह व्रत पारे । कंस
 केशिकुबलय बलमुष्टिक सब सुखधाम सिधारे । स्तनबिय बांढि लगा-
 यचली ब्रज बकी कवन गति पाई । रजकप्रलम्ब द्रोणा दुष्टशासनभक्त
 भजन फलदाई । नृप शिशुपाल बियय रस बिह्वल सर अवसर नहिं
 जान्यो । अघ बक दृग्रभ तूखावत्त धेनुक गुणानहिं दोष न मान्यो ।
 पांडुबधू पटहीन सभामहं कोटिन बसनपूजाये । बिपतिकाल सुमिरगा
 तेहि अवसर जहां तहां उठि धाये । गोपि गाय गोसुत जल वासित
 गोवर्द्धन कर धारेउ । सन्ततदीन हीन अपराधी काहे सुरबिसारेउ १०
 काहूके कुल नाहिं बिचारत । अविगति की गति कहाँ कौन सों प-
 तित सबन को तारत । कौन जाति को पांति बिदुरकी जिनके प्रभु
 व्योहारत । भोजन करत तुष्टिघर उनके राज मान सद टारत । ओछे
 जन्म कर्मके ओछे ओछेही बोलावत । अनत सहाय सूरके प्रभुकी भ-
 क्तहेत पुनि आवत ११ ॥ रागधारण ॥ गोविंद प्रीति सबनकी मानत । जो
 जेहिभाय करै जनसेवा अन्तरगत की जानत । बेर चाखि कटु तजि
 लै मीरे भिलड़ी दीन्हे जाय । जूठन की कहू शङ्क न कीन्ही भस किये

सद भाय । सन्तत भक्त सीत हितकारी श्याम बिदुरके आये । प्रेमहिं
 विकल बिदुरअर्पितप्रभु कदली छिलटाखाये । कौरव काजचले ऋषि
 आपुन शाकके पत्र अघाये । सूरदास करुणानिधान प्रभु युगयुग भक्त
 बढ़ाये १२॥ रागधनाश्री ॥ तेऊ चाहतकृपा तुम्हारी । जिहिकेबशअनमिय
 अनेक गरा अनुचर आज्ञाकारी । प्रवहतपवन भ्रमत दिनकर दिन फरा-
 पतिशिर न डुलावै । दाहकगुणा तजिसकत न पावक सिंधु न सलिल
 बढ़ावै । शिवबिरांचि सुरपति समेत सबसेवत पद प्रभु जाने । जोककुहल
 करनसोइकीजतु करियतु अति अकुलाने । तुमअनादि अविगतअन्नत
 गुणापूरापरमानन्द । सूरदासप्रभुसकल असंयम मधवा चरितनिकन्द
 १३ दयानिधि तेरीगतिलखिन परै । धर्मअधर्म अधर्मधर्मकरि अक-
 रनकरन करै । जय अरु विजय पाप कह कीन्हो ब्राह्मणा शापदिवा-
 यो । असुर योनिदीन्हीताऊपर धर्मउछेद करायो । पितावचन खंडेतै
 पापी सो प्रह्लादैकीन्हो । तिनकेहेत खंभतेप्रकटे नरहरिरूप जुलीन्हो ।
 द्विजकुल पतितअजामिलबिययी गणिका प्रीतिबढ़ाई । सुतहितनाम
 नरायणा लीन्हो तिहि तुवपदवीपाई । यज्ञ करत बैरोचनको सुतवेद
 बिहितबिधिकर्म । त्यहि इति बांधि पत्तालहिदीन्हो कौन कृपानिधि
 धर्म । पतिव्रताजालन्धरयुवती प्रकटसत्यतेरारी । अधमपुंश्चलीदुष्टग्राम
 की सुवां पढ़ावत तारी । दानी धर्म भानुसुत सुनियत तुम ते बिमुख
 कहावै । वेद बिरुद्ध सकल पागडवसुत सो तुम्हरे जिय भावै । मुक्ति
 हेतु योगी बहुग्रम करै असुर बिरोधे पावै । अकथितकथित तुम्हारी
 सहिमां सूरदास कहगएवै १४ ॥ रागकेदारो ॥ है हरि नाम को आधार ।
 और यहकलिकाल नाहिंन रहेउ बिधिद्वयोहार । नारदादि शुक्रादि
 शंकर कियो यहै बिचार । सकल अति दधि मधत प्रायो इतनो यह
 घृतसार । दशहुंदिशि गुणकर्म्म रोंकयो मीनको ज्यों जार । सूरहरिके
 भजनकरते मिटिगयो भवभार १५ ॥ रागदेवगन्धार ॥ मेरेजिय सेसी आ-
 यबनी । छांडि गोपाल औरै जो सुमिरौं तौलाजैजननी । बियको मेरु
 कहालै कीजै अमृत एककनी । मन क्रम बचन और नहिं चितवौं जब
 कब श्याम धनी । कह लै करौं कांच को संग्रह छांडि अमोलमर्त
 सूरदास भगवन्त भजन बिनु तजीजाति अपनी १६ ॥ रागसारंग ॥ जित

जिनहीं के सङ्ग उरगायो । तिहि तुमपै गोविन्दगुसाईं सबनिअपनपौ
 पायो । अजामील मुख सिव हमारो सो मैं चलत बुझायो । कहां क-
 हांलैं कहां कृपाकी तिनहूं अबरा सुनायो । व्याधगोधर्गाकाराजिहि
 कागरहेतिहिंचिठि न चढायो । सरियतलाज पांचपतितनमेंसूरसमो
 बिसरायो १७ ॥ रागसारंग । चर्चरी ॥ नाथशारङ्गधर कृपाकरि दीनपरडरतु
 भववासते राखिलीजै । नाहिंनजप नाहिंन तप नाहिंन सुमिरा भजन
 शरणा आये की लाज कीजै । जीव जलथल जितेभेय धरधरतिते र-
 चित दुर्गम अधम अदलभारी । मुशल मुद्गर हनत विविध कामें गनत
 मोहिंदंडदेतयमदूत भारी । वृषभधेनुक प्रलम्बकेशि चारुण सल्लूपतना
 रजकसे दुष्टतारे । अजामिल गजगणिका ते कर्म घटिकिये जु अबसूर
 चितते बिसारे १८ ॥ रागधनाश्री ॥ जो जग और बियोहोंपाऊं । तो यह
 बिनती बारबार की हैं कत तुमहिं सुनाऊं । शिवाबिरंचि सुर असुर
 नागमुनि सुतोयांचि जन आयो । भूयो धूम्यो ह्यातुर मृगलों का-
 ह्यम न गवांयो । अपथसकल चलि चाहिचहूँदिशि भ्रमउघटत मति
 मंद । थकित हात रथ चक्रहीन ज्यों निरखि कर्म गुणाफन्द । पौरुष
 रहित अजित इन्दिन बश ज्यों गजपंक परेउ । बिययासक्तनदीको
 कपि ज्यों जोइजोइ कहेउझकरेउ । अपनेहीं अभिमान दोषतेरबिहि
 उलूक न मानत । अतिशयसुकृत रहित अध व्याकुल वृथाश्रमित रज
 छानत । मुनि व्रयतापहरणा करुणामय संततदीनदयाल । सूर कुटिल
 राखो शरणाई यहि व्याकुल कलिकाल १९ कबहूं नाहिंन गहरु
 कियो । सदा सुभाव सुलभ सुमिरणा बश भक्तन अभय दियो । गाय
 गोप गोपीजनकारणा गिरिकर कमललियो । अध अरिष्टकेशी का-
 लीमथि दावाअनलपियो । कंसवंश बधि जरासन्ध हति गुरुहुतआनि
 दियो । करयतसभा द्रुपदतनया को अम्बरआनि छियो । सुरश्याम
 सर्वज्ञ कृपानिधि करुणा मृदुल हियो । काके शरणा जाऊँ यदुनन्दन
 नाहिंनऔर बियो २० ॥ राग धनाश्री ॥ हैंहरि सब पतितन को नायक ।
 कोकरिसकै बराबर मेरी एतेमनको लायक । जेतुम अजामील सों
 कीन्ही सो पाती लिखिपाऊं । होय विश्वासभलो जिय अपने औरौ
 पतित बुलाऊं । सिमिति जहांतहँते सबकोऊ आयजुरै यकटौर । अब

के इतने आनि मिलाऊँ बेर दूसरी और । होडाहोड़ी मन हुलासकरि
 करें पापभरिपेट । सर्वाह मिलैकरि पायनपारों यहैहमारीभेंट । ऐसी
 कितिक बनाउँ प्राणापति धुमिरोंहै भये आडो । अबकीबेर निबेरि
 लेहु प्रभु सूरपति को ताडो २१ ॥ राग देवगन्धार ॥ जोपै यहै बिचार
 परी । तौकतकलि कलमय टुन को मेरिये देहधरी । जो नाहीं स्वस-
 मानौ कीजतु जगत माहिँ कतकीन्हो । काम क्रोध मद लोभ मोहके
 बाँध हाथकरि दीन्हो । मनसा और मानसी सेवा क्यों अगाध करि
 जानो । होहुप्रकट करुणामय केशव बहु अपराध न मानो । काको
 गृहदारा सुत सम्पति जासों कीजै हेतु । सूरदासप्रभु दिनदिन मरिबो
 यमको लेखो देतु २२ ॥ राग कान्हरो ॥ तुम्हरीकृपा गोविन्द गुसाईं हैं
 अपनेअज्ञान न जानत । उपजत दोय नाहिँसुनि समुक्त रविकेकतहि
 उलूक न मानत । सबमुखनिधि हरिनाम महामणि सोपायो नाहिँन
 पहिँचानत । परमकुबुद्धि तुच्छरस लोभी कौडीलिंगि मगलग रज्ज्हा-
 नत । शिवकोधन सन्तनको सर्वस महिमा वेदपुराणा बखानत । इते
 मानइन मूरमहाशठ सोइनग बदलि बियय घरआनत २३ जोपैतुमहीं
 बिरद बिसारो । तौ कहौ कहाँ जाय करुणामय कृपणा कर्मको
 डारो । दीनदयाल पतितपावनयश वेदबखानत चारो । मुनियतकथा
 पुरातन दिशि दिशि व्याध अजामिल तारो । रागद्वेष विधिअविधि
 अशुचिशुचि जिहिप्रभु जहाँसम्हारो । कियो न कबहुँ बिलम्बकृपा-
 निधि सादर शोचनिवारो । इहिलगु नामरूप गुणागुणा सबअज आ-
 पुन तनधारो । सूरदासस्वामी यहमनअमु करत करत अबहारो २४ ॥
 राग कल्याण ॥ सबनि सनेहो छाँडि दियो । हा यदुनाथ जरा तनआस्थो
 प्रतिमो उत्तरिगयो । सोइ तिथिबार नक्षत्र लग्नसोइ करगायोग सोइ
 ठाहयो । अबवेआंक फेरिनिहिँ बाँचत गतस्वारथ समयो । बरसद्योस
 में होत पुराने फिरिफिरि सबकोउ लिखतनयो । डरोरहत निर्मल
 देशज्यों अतिरहि तापतयो । सोइधनधाम नामसोकुल सोइ सोइयह
 बर्णजहि सब बिहयो । अबहीं सबको बदन स्नानलों चितवत दूरि
 लयो । दाराहुत हितचित सज्जनसब काहुन शोचिजयो । संसृत दोय
 बिचारि सूर धति जे हरिशरणा गयो २५ जैसेहिराखौ तैसेहि रहौ ।

जानत हौ दुख सुख सब जनको मुखकरि कहाकहैं। कबहुँक भोजन
 देत कृपाकरि कबहुँक भूख सहैं । कबहुँक चढ़ैं तुरङ्ग महागज
 कबहुँक भार बहैं । कमल नयन घनश्याम मनोहर अनुचर भयो
 रहैं । सूरदास प्रभु भक्त कृपानिधि तुम्हरे चरग गहैं २६ आजु हैं
 एकको देकर टरिहैं । मोहि कहा डरपावत हौ प्रभु अपने परेपर
 लरिहैं । हैं तौ पतित सात पीरीको जो जिय ऐसी धरि हैं । हैंतौ
 फिर बेसोई ह्वैं हैं तुमहिं बिरद बिनु करिहैं । अब तौ तुम परतीति
 नशाईक्योंमनमाले हियरा । सूरदास सांची तब यपिहैंजो हंसिदेहौ
 बीरा २७में अधसागर पैरि न लीन्हो । उनपतितनकी देखादेखी पा-
 छेशोच न कीन्हो । अजामील गगिकाहि आदि दै पैरि पारि गहि
 पोलो । संगलगाय बीचही छान्डेउ निपटदि नाथ अकेलो । मो देखत
 सब हंसतपरस्पर तारी दैदे भीटि । कीनी कथा पाछिलनुकी सी गुरु
 दिखायपुनिईटि । भवनगंभीरनोरहीसूभक्त क्योंकरिउतरो जात । नहीं
 आधार नाम अवलम्बनु तिन हित डुबकी खात । तुम कृपालकरुणा-
 मय केशव अबहैं बूडत मांह । कहत सूर चितबो करिहौ कै तुमदौ-
 रिपकरिहौ बांह २८तुम्हारे आगेहैनच्यो । सुनियेदीनदयालदेवमसि
 बहुबड रूप रच्यो । कियो स्वांग जलह थलह सहै सकै तौ न बच्यो ।
 शोधिसबै गुणागूढदिखायेअन्तरहो जुसच्यो । रीभतनहीं गोविन्द गु-
 साई क्यो कछजाय यच्यो । इतनी तौ कहौ सूरपूरो दै काहे सरत
 पच्यो २९ ॥ रागबिलावल ॥ अब कै माधव मोहिं उधारि । मगन हेतु
 भवसिंधुमें कृपासिंधुमुरारि । नीरअतिगम्भीर मायामोह लहरितरंग ।
 लरेजात अगाधको बग गहेग्राहअनङ्ग । मोनइन्द्रीअतिहि काटत मोट
 अधशिरभार । भौये न पाई जातजितकित मोहअरुभे सिवार । क्रोध
 दम्भ भयान तृष्णा पवन अतिभक्तभोर । चाहिंचितवन देत सुतविय
 नाम नौका ओर । परेउबीच बिहालबिह्वल सुनहु करुणामूल । श्याम
 भुज गहि काटि डारहु सूर ब्रजजन कूल ३० ॥ रागधनाभी ॥ अब हों
 नाच्यो बहुत गोपाल । काम क्रोध को पहिरि चोलनाकंदविययकी
 माल । महा मोहके लूपर बाजत निन्दा शब्द रसाल । भ्रम भोये मन
 भयो पखावज उरप असंगत चाल । तृष्णानाद करति घटभीतरनाना

बिधिके ताल । सायाको कटि फेंटा बांध्यो लोभ तिलक दियोभाल ।
 कोटिक कला काछि दिखराई जल थल सुधि नहिं काल । सुरदास
 की सबैअविद्या दूरिकरहु नंदलाल ३१ ॥ रागसारंग ॥ साधव मोहिंका-
 हेकी लाज । जन्म जन्म ह्वैरही मैं ऐसी अभिमानी बैकाज । कोटिक
 कर्म किये करुणामय यादेहीकेसाज । निशिवासर बिययारस रुचिते
 कबहुं न आयोबाज । बहुत बार जलथलजग जायोभ्रमि आयो दिन
 देव । अबगुणा की कछु सकुच न शंका परिआई यह देव । अब अन-
 खाय कहौ घर अपने राखौ बांधि बिचारि । सुर स्नानके पारनहारे
 आवतहै दिनगारि ३२ ॥ रागकेदारो ॥ कृपा अबकीजिये बलिजाउँ ।
 नाहिंन मेरे अनतकहूं अबपद अम्बुज बिनटाउँ । हौं अशुची अकती
 अपराधी सन्मुख होत लजाउँ । तुमकृपाल करुणानिधि केशवअवस
 उधारणा नाउँ । काके द्वार जाय हौं ठाढो देखत काहि सुहाउँ । अ-
 शरणा शरणा विरद व्यापक तुव हौं कूटिल काम सुभाउँ । कलुषी
 परममलीनदुष्टहौं सेंट्यउतौ न बिकाउँ । सुरपतित पावन पद अम्बुज
 पारश क्यों परसाउँ ३३ ॥ रागकान्हरो ॥ ऐसी कब करिहौ गोपाल ।
 मनसानाथ मनोरथ दाता हो प्रभु दीनदयाल । चितचरगान नीरन्तर
 अनुरत रसना चरित रसाल । लोचन सजल प्रेमपुलकित तन करकं-
 जलि दलमाल । ऐसीरहत लिखत सरा सरा यस अपने भायोभाल ।
 सुर सुयश रागी न डरत मन सुनि यातना कराल ३४ ॥ रागकेदारो ॥
 थैरेजीवन भयोतन भारो । कियो न संत सम्रागमकबहुं लयो न नाम
 तुम्हारो । अति उनमत्तनिरंकुश सैगलनिशि दिनरहेउ अशौच । काम
 क्रोध मदलोभ मोह बशरहुं सदन असपोच । महा मोहअज्ञान तिमिर
 में मगन भयो सुख जानि । तैलकटुय यों अस्यो भ्रमहिं भ्रम भज्यो न
 शारंगपानि । गीधयो दीठ हेम तस्कर ज्यों अति आतुर मति मन्द ।
 लुब्धयो स्वादुलीन आमियज्यों अबलौ क्योंनहिं फन्द । ज्वाला प्रीति
 प्रकट सम्मुखहै हठि पतंग बपु जारो । बिययाशक्त अमितअध व्या-
 कुलषो हम कछु न सम्हारो । ज्यों कपि शीत हुताशनगुंजा सिसिटि
 होत लै लीन । त्यों शठ वृथातजै नहिं धँगा हठ रहेउ बियय आधीन ।
 सेंबर फत सुरङ्ग शुक्र निरखत मुदित भयो खगभूप । परसत चोच

सुलब्धत मुखतरा क्वांति पशु कूप । औरकहांलंगि कहैं कृपानिधि
या तनके कृतकाज । सूर पतित तुम पतित उधारन गहौ विरदकी
लाज ३५ ॥ रागधनाथी ॥ प्रभु मेरे औगुण न बिचारो । धरि जियलाज
शरणा आयेकी रबिसुत वास निवारो । जो गिरिपति मसिघोरि उ-
दधिमें लै सुरतरु निजहाथ । समकृत दोय लिखैबसुधा भरि तऊनहीं
मिति नाथ । कपटी कुटिल कुचील कुदर्शन अपराधी मतिहीन । ना-
हिंन और कियो कोउ सेसा जाहि भजौं हैं दीन । योग यज्ञ तपव्रत
नहिं कीन्हे वेद बिसल नहिं भाख्यो । अति रसलुब्ध स्वान जंडनि
ज्यों अनत नहींमन राख्यो । जिहिजिहि योनि फिरौं शंकटमें तिहि
तिहि यहै कसायो । काम क्रोध मद मोहग्रसितहैं बिययपरम बिय-
खायो । तुम अनन्तअनादि परिपूरणा अधमोचन सुखराशि । भजन
प्रताप नाहिंनेजान्यो बंध्यो कालकी फांशि । तुम कृतज्ञ सबही बिधि
समर्थ अशरणा शरणा सुरारि । कृपानिधान सूर बद्धतहै लीजै भुज
पसारि ३६ बिनती जन कासों करै गोसाईं । तुम बिन दोय दयाल
देवमणि सब फीकी ठकुराई । अघनेसे कर चरणा नैन मुख अपनीसी
बुधिवाई । काल कर्म बश फिरत सकलप्रभु ते हमरीसी नाई । परा-
धीन पर बदन निहारत मानत मोह बड़ाई । हंसैहंसै विलखै दुखबिन
दुख ज्योंजल दर्पणाभाई । लियो दियो चाहैतौ कोउ प्रभु सुनि सम-
रथ यदुराई । देव सकल व्यापार परस्पर ज्यों पशु दूध चराई । तुम
बिन और कोऊ न कृपानिधिपावै पीर पराई । सुरदासके आसहरसा
को कृष्णनाथ प्रभुताई ३७ ॥ पगनट ॥ हैं प्रभु मोहते अति घापी । घा-
तक कुटिल चघाई कपटीमोह क्रोध संतापी । लम्पटधूतपूत दसरीको
बियम जाप नित जापी । काम बिबश कामिनिहीं के रस ठठकरि
मनसा थापी । भक्षअभक्ष अपय पीवन को लोभलालसा थापी । मन
क्रम बचन दुसहसबहिजसों कटुकबचन आलापी । जेते अधम उधारे
प्रभुतुम में तिहिकी गति मापी । सागर सूर बिकार जलभरो बधिक
अज्ञामिल बापी ३८ बहुरि की कृपा कहा कृपाल । बिधमान जन
दुखित जगतमें तुम प्रभुदीनदयाल । जीवत थांचत कन निर्धन करदर
ररस्त बिहाल । तनछूटे धर्मनहीं कछु जोदीजैमशालाल । कहदाता

जुद्धवै नहिंदर्शन देखि दुखित कलिकाल । सूरश्यामको कहानि हेरो
 चलत वेद की चाल ३६ मेरे हृदय नाहिंन आवत होयो पाल होइतनी
 जानत । कपटी कपिरा कुचील कुदर्शन दिनउठि विषयवासना बानत ।
 कदली कराठ कुसाधु असाधुहि के हरिके संगे धेनु बयाने । यह बिप-
 रीति जानि तुम जनकी अन्तर दै बिच रह्यो लुकाने । जो राजा सुत
 होय भिखारी लाज परेते जाय बिकाने । सूरदास प्रभु अपने जनको कृपा
 करहुं जो लेहुनि दाने ४० कहावत ऐसे त्यागी दानि । चारिपदारय
 दये सुदामहिं अरु गुरुको सुत आनि । रावगा के दशमस्तक छेदे कर
 गहि शारंग पानि । वीभीषणा को लंका दीन्हो परबली पहिंचा-
 नि । मित्र सुदामा कियो अयाचक प्रीति पुरातन जानि । सूरदासों
 कहानि ठुरई नयन नहं ते हानि ४१ ॥ राग धनाश्री ॥ नाथजू अब के मोहिं
 उबारो । पतित नमें बिख्यात पतित हीं पावन नाम तुम्हारो । बड़े पतित
 नाहिंन पास गहं अजामील को हीं जु बिचारो । भाजै नरक नाउँ मेरो
 सुनि यम बंदियो हठतारो । सुद्रपतित तुम तरे रमापति अब न करो
 जियगारो । सूरदास सांचो तुम माने जो होय मसति स्तारो ४२ बा-
 दिहि जनम गयो सिराय । नाहरि भजन न गुरुकी सेवा मधुबन बस्यो
 न जाय । श्रीभागवत अवगा नहिं कीन्हो कबहुं रुचि उपजाय । सा-
 दरह्वै हरिके भक्तन के कबहुं न धोये पाय । रिझ्ये नहिं कबहुं गिरि-
 वरधर बिसल बिसल यशगाय । प्रेम सहित पग बांधि धूंधूख सक्यो न
 अङ्ग नचाय । अघ की बार मनुष्य देह धरि कियो न कछु उपाय ।
 भवसागर पद अस्त्रुज नौका सूरै लेहु चढाय ४३ ॥ राग सारंग ॥ छांड़ि
 मन हरि बिमुखन को संग । कहा भयो पयपान कराये बिय नहिं तजत
 भुवङ्ग । जाके संग कुबुद्धी उपजै परत भजन में भङ्ग । काम क्रोध मद लोभ
 मोह में निशि दिन रहत उमङ्ग । कागहि कहा कपूर खवाये श्वान नह
 वाये गङ्ग । खरको कहा श्ररगजा लेपन सरकट भूषण अङ्ग । पाहन
 पतित बारा नहिं भेदत रीते करत जियंग । सूरदास खल कारी का-
 मरि चढत न दूजो रंग ४४ ॥ राग विलावल ॥ तेरो तब तिहि दिन के हि
 हरि बिन सुबिकारि कृपणा तिहि चित आनि । जब अति दुखसाहि क
 दिन काम गहि राख्यो हो जदरल सो नित सानि । जहां न का

गमदुःसह दारुणा तनसकलविधि बियम खलखानि । समुझिधौं जिय
माहिं को न सकत नहिं बुधबल कुलतिहिं जाये काकी कानि ।
वैसी आपदाते राख्यो तोख्योपोख्यो जिय दयो मुख नासिका नयन
पद पानि । मुनि कृतव्र निशिदिन को सखा आपु अब जो बिसारो
करी वै पहिंचानि । अजहुं संगरहत प्रथम लाजगहतु सन्ततशुभचा-
हतु प्रियजन जानि । सुरमुहदमरिा ईश्वर अन्तर्यामी मुनि शठ शठ
भूढो हठ कपट न ठानि ४५ ॥ राग नट ॥ जौलों सत्यस्वरूप नसुभक्त ।
तौलों मन मरिाकराठ बिसारे फिरत सकल बनबूभक्त । अपनोहींमुख
मालिन मन्दमति देखत दर्पणा मांह । ता कालिमा मेढिबे कारणा प-
चत पखारतछांह । तेलतल पावकपट धरिधरि बनहिंन बिना प्रका-
शत । कहतबनाय दीपकीबार्ते कैसेही तमनाशत । सुरदास जव यह
मतिआइ वे दिनगाये अलेखे । कहजानै दिनकरकी महिमा अन्धन-
यन बिनुदेखे ४६ ॥ राग केदारो ॥ दिनदशलेहु गोविंद गाय । मोहमाया
लोभजागो कालधरे आय । नीरमेजस उठत बुदबुद देखतेविरलाय ।
दिखतको क्षितिजन्म भूढो काक आन न खाय । कर्मकागद बांचि
देखो जो न मन पतिआय । अखिल लोकहि भटकिआयो लिख्यो
मेढि न जाय । स्फुरति के दशद्वारखंडे लुट्टहि जरा आय । सुर हरि
को भजनकीजै जनम पातकजाय ४७ ॥ राग धनाधी ॥ रे मन रामनाम
सुमिरा विनु जनमबादिखोयो । रज्ज्वरकके मुखकारणा अन्तकाल
बिसोयो । साधुसंग भगति बिना तनु अकारय जाय । जुआरी ज्यों
हाथभारि ज्यों चले छिटकाय । सुतदारा देहगोह सशपति मुखदाई ।
इनमें कछुनाहिं तेरोकाल अवधिआई । काम क्रोधलोभमोह लूणा
मनमोहेड । गोविंद गुराचित बिसारि कौन नींदसोयड । सुर कहैं सचु
। रामनाम निजकरणी औरसकलबन्ध ४८ ॥

रागकेदारो ॥ रे मन गोपाल सों करु हेतु । नामकी दृढबारि करि लैं
उवरै तेरो खेतु । मनसुवातन पींजर रे बंधयोरहत निकेतु । काल फिरत
बिडालतनुधरि अवधरे तोहिं लेतु । बियबिदारसासेय हरिको उतरेसा-
यसु सेतु । सुरभजु गोविन्दको योंशु बताये देतु ४९ ॥ रागसारंग ॥ भजन
बिनुजीवतहैं जैसेप्रेत । मलिन मन्दमति डोलत घरघर उदरभरनके हेत ।

सुख कटुवचनवक्तृनितनिन्दासुजन सुखेदुःखदेत । कबहुं पापकै पावत
 पैसागाडिधूरि तहँदेत । गुरुब्राह्मणा अच्युतजन सज्जनजातनक बहुनि-
 केत । सेवानही गोविंद चरणाकी भवन नीलकोखेत । कथा नहीं गुणागीत
 सुयश हरि साधन देव अनेत । रसना सूर बिगारै कहँ लों बूझत कुटुं-
 ब समेत । ५० तबते गोविंद क्यों न सम्हारो । भूमिपरै ते शोचनला-
 गयो महाकठिन दुखभारो । अपने पिण्ड पोषिबे कारणा केटिसहस
 जियमारै । उन पापन ते क्यों उवरैगो लोहयम्भ अंकनारै । अपने
 लोभ लालचके कारणाकाहु पापते न हारै । सूरदासयमकंठ गहेते नि-
 कसत प्राणा दुखारै ५१ इन राजस गुणाको न बिगोयो । हिरण्यक-
 श्यप हिरणयाक्ष आदिदेवावरा कृष्णकरणा कुलखोयो । कन्धकेशि
 चाणूर महाबल करनरजी यमुना जल बोयो । यज्ञ समय शिशुपाल
 सुयोधाआनआशलै ज्योति समोयो । ब्रह्मा महादेव सुरसुरपति नाचत
 फिरत महा रस भोयो । सूरदास जे चरणा शरणा रहे ते जन निकट
 नोदभरिसोयो ५२ हरिकेजनसबते अधिकारी । ब्रह्मा महादेवते को
 बड़ताकी सेवाकहु न सुधारी । याचकपै याचककहयाँचै जो याँचै
 तो रसना हारी । गणिका पत शोभनहिं पावत जिनके कुलमें कोउ
 पितारी । तिनकी साख देखहु हिरणयाक्ष सरावणा कुटुंब सहित
 भयेख्वारी । जन प्रह्लाद प्रतिज्ञापारी बीभीषणा आहुकराजारी । शि-
 लातरी जलसांभ सेतुबंध बलिबह चरणा अहल्या तारी । जे रघुनाथ
 शरणा तकिआये तिनकी सकल आपदा टारी । जिहि गोविंदअचल
 ध्रुव राखयो ग्रहदहनावृत्ति देतबिसारी । सूरदास भगवंत भजन बिनु
 धरतीजननिबोक्त कतमारी ५३ ॥ रागबिलावल ॥ मनरेकरुमाधवसोप्रीति
 कामक्रोध मदलोभ मोहतूछाँडिसबैधिपरीति ॥ ध्रुव ॥ भौराभोगीवन
 भ्रमैरे मोहु न मानैभापु । सबसुमननि नीरसकरैरे कमल बंधावै आपु ।
 सुनि परासत पिय प्रेमकीरे चाहक चितवै बारि । धनआशासबदुख
 सहै पै अनत न याँचैबारि । देखहुकरणीकमलकीरे कीन्हों रबिसों
 हेत । प्राणा तजे प्रेम न तज्योरे सुखयो सरहि समेत । दोषकु पीर न
 जानहीरे पावकु परेपतंग । तनतो तिहिजवाला जरेउरेचित न भयेरस
 भंग । मीन बियोग न सहिसकै रे नीर न पईबात । देखित ताकीगति

हिरे रति न घटी तनजात । परनिपरेवाप्रेमकी रे चितुलैचढतअकाश ।
तहँचढि ताहि जु देखहीरे भोंगिरि तजत उशाश । सुमिरि सनेह कृ-
रङ्ग को रे अवरगानि राचेउ रागु । धरगिा सक्योपगुपहमना रे सरस
न मुखउरलागु । देखिजरनि जडनारिकी रे जरतिप्रेतकेसङ्ग । चिता-
नचितफीकोभयो मुराची पियकेरङ्ग । लोकवेद बरजेशले रे नयननि
देख्योबासु । चोर न जिय चोरी तजै रे बरुसब सहे निवासु । सबरस
को रस प्रेम है रे बिययो खेलै सारि । तन मन धन यौवन खस्यो रे
तउ नहिं सानी हारि । तै जरतन पायो भलो रे जान्यो साधुनसाजु ।
प्रेमकथा अनुदिन सुनीरेतऊब उपजी लाजु । सदासँघाती आपनोअरु
जियको जीवन प्रान । सुती बिसारेउ सहजही रे हर ईश्वर भगवान ।
बेद पुराणानि सुनिसबैरे मुरतरु सेवैजाहि । महा मोह अज्ञानमें रे क्यों
न सन्हारै ताहि । खगमृग मीनपतंग लों रे मैं सोधे सबदौर । जलथल
जीवजितेकिते रे कहूंकहां लगिऔर । प्रभुपुराणपावन सखारेप्राण-
नहीं के नाथ । परम दयाल कृपाल कृपानिबि जीवन जिहिके नाथ ।
गर्भवास अतिवास में रे जहां न सकोअंगु । सुनिशठ तेरे प्राणपति रे
तहँउंन छाँड्योसंगु । दिनराखत प्रोयत रहरे जैसेचोलीपान । वा दुखते
तोहिं काढिकै रे गहिदीनो पयपान । जिहिंजडते चेतन कियोरे रचि
गुणातरु बिधान । चरसाचिकुर करनख दिये रे नयन नासिकाकान ।
अशन बसन बहुबिधि दये रे अवसर अवसर आनि । मातपिता भैया
मिलेरे नइरुचिनइपहिंचारि । सजन कुटुम्ब परिकरबढ्योरे सुत दारा
धनधाम । महा मोह बिययो भयोरे चित आकरण्यो काम । खान-
पान परिधाममें रे यौवन गयोसबबीति । इयोबितपर विधसंग बस्यो
रे भोरभये भयोभीति । जैसे मुखहीधन बढ्योरे तैसेतनहिं अतंग । धूम
बहेउ लोचन खसेरे सखा न सुभोसंग । यश जान्यो सबजग मुन्यो रे
बाढ्यो अग्रश अपार । बीचनकाह तब कियो जवदूतन दीन्हीमार ।
कोजाने कैवार मरेउरे सेसेकुमति कुसीच । हरिसों हेतु बिसारिकै रे
सुखचाहतहै नीच । जोपैजियलज्जानहीं रे कहाकहोंसौबार । सकहि
संक न हरिभड्यो रे सुनिशठ सूरगाँवार ५४ ॥ एतद्यनाम्नी ॥ जन्मसिराने
अटके अटके । सुत सम्पति गृह राजमान को फिरी अनतही भटके ।

कठिन जवनिका रचोमोह की तोरीतो न जाय चटके । नाहरिभजन
 न हृत्ति विषय करि रह्यो बीचही लटके । सब जंजाल सु इन्द्रजाल
 सम ज्यों बाजीगर नटके । सुरदास शोभा न शोभियत पियबह न धन
 मटके ५५ यह सब मेरी ये कुमति । अपनेहीं अभिमान दोषदुख पा-
 वत अति जैले केहरि उभक्ति कृपजल देखि विनुप्रति । कोप परो मद
 मर्म न जान्यो भईहै सुगति । ज्यों गजशेल फविक में देख्योदशननि
 हति । जो तू सुर सुखाहि चाहत है तो करु विषय विरति ५६ हैं
 महापतित अरु दूजे अभिमानी । परमारथ सों विरति विषय रति
 भावभगति में कबहुं न जानी । निशिदिन दुखद मनोरथ करि करि
 वावतह तृष्णा न बुझानी । शिरपर काल नीच नहिं चितवत आयु
 घटत अँजुरीको प्राणी । विमुखजिसों रतिजोरि साधुनि सों मानो न
 हुती कबहुं पहिंचानी । तिनविनु प्राण रहत निशिवासर जिहिं सब
 दिन रसरीति बखानी । माया मोह लोभके लीने जानि न वृन्दावन
 रजधानी । नवलकिशोर जलदतन सुन्दर बिसरैसुर सकल सुखदानी
 ५७ इतने दिन हरि सुमिराया बिनखोये । परनिन्दा रसना के रसमें
 अपने करतलबोये । विविधरुचिर अँगाअँगदै मई न बसनबनायेधोये ।
 तिलक चटकदै चले स्वामिहैं विषयिनके मुखजोये । सबजग कंपित
 काल व्यालडर सुर ब्रह्मादिक रोये । सुरदास अधमन की को रति
 उदरभरे भरिसेये ५८ ॥ राग बिलावल ॥ हरिके जनकी अतिठकुराई ।
 महाराज ऋषि सुर नरवर मुनि देखत रहत लजाई । निर्भय देशराज
 ताहीको लोगनमन उत्साह । काम क्रोध मद लोभ मोह मिलि भये
 चोरते शाह । दुष्ट विद्यास किये सिंहासन तापर बैठ भूप । यश सों
 विमल छत्र शिर शोभित राजत परस अनूप । हरि पद पंकज प्रिया
 प्रेसरस ताहीके रंगरातो । मंत्री ज्ञान न अवसर पावत कहत न बात
 सकातो । अर्थधर्म दोउरहे दूरिदूरि काम भोस शिरनायो । विनय
 बिबेक विचित्रपौरिया समय न काह पायो । अष्ट महा सिधि आगे
 ठाढी करजोरे डरलीन्ही । छरीदार बैराग बिनोदी भोरिके बाहर
 कीन्ही । मायाकाल कहु नहिं व्यापै या रसरीति जुजाने । सुरदास
 नरतन तो पायो शुद्धप्रसाद पहिंचाने ५९ ॥ राग सारंग ॥ आपनी भक्ति

दे भगवान् । कोटि जो लालच दिखावै नाहिने रुचिआन । महासा-
 चलु सरसाको कछु शोच नाहीं मोहिं । किये प्रण हीं रहत द्वारे आजु
 ते थरुतोहिं । जादिनते यह जन्म पायो यह याकोरीति । विषय विषय
 हठि खात दुरत न करत कछु अनीति । यथा किन्नर यूथ किंकर तऊ
 तरी न देक । कोपिगयो यमपुरी तहाऊं परे उधार अनेक । नाहिन काचो
 मुनिहो पानिधि कहत कहा रिसाय । सूर प्रभु यह तुम्हें निहोरो डारि
 हैं कदुराय ६० ॥ रागधनाश्री ॥ साधवतोहं सकुचशरणा आवेकी होत
 जु निपट निकाज । यद्यपि बाल बिहुन वैभवसों सोऊ करत कृपा तो
 लाज । हृष्यायुत सलिल बहत बर पोथतु पकरत सोउ नरजात । नदि-
 कर वृक्ष मूल आश्रित हित तऊ आप अकुलात । तुम प्रभु अजित
 अनाथ लोकपति हैं अजान मतिहीन । कछु अनहोत निकट उतलागत
 मरन होत उत दीन । परिहस प्रबल शूल निशिबासर ताते यह कहि
 आई । सूरदास कृपाल शरणागत भये सु कौन जिहि रति पाई ६१ ॥
 रागमेरठ ॥ पतित पावन दीनदयाल अनाथ के नाथ । सन्तत सब लो-
 कन श्रुति गावत यह गाथ । मोते न कोउ पतितनको अनाथ को दीन ।
 काहेन मोहिं तारिये जन कवन अंगहीन । डिज गणिका गतिदायक
 गजमेचन ऋषिशाप । अर्जुन संताप शरणाहरण अधिताप । मनसा
 बाचा कर्मना कछु कहत नाहिन राखि । सूर सकल अन्तर के तु-
 महीं हौ सारिख ६२ ॥ रागबिलावल ॥ जन्म जन्म जबजब जिहि जिहि
 युग जहां जहां जन जाय । तहां तहां तब चरणा कमल रति जोवै
 सुदृढ रहाय । अवरासुयश शारंगनादविधि चातक विधि मुखनाम ।
 नयन चकोर संत संतत शशि कर अर्चन अभिराम । मुमति स्वरूप
 सञ्चतु श्रद्धा विधि उर अम्बुज अनुराग । तिन प्रति धनि अलि गुञ्ज
 मनोहर आवत प्रेम पराग । औरै सकलसुकृत श्रीपति हित प्रति फल
 रहत सुप्रीति । नीतिवई सुखदुख सूरजप्रभु दीजै भजन प्रतीति ६३ ॥
 रागसारंग ॥ तुम्हरी भक्ति हमारे प्राण । छूटिगये कैसे जन जीवहिं ज्यों
 प्राणी बिन प्राण । जैसे गगननाद मुनिशारंग बधे बधिक बिनबान ।
 ज्यों चितबै शशिओर चकोरहि देखतही शङ्कुमान । ज्यों पतंगदीपक
 सों लोभ्यो पानी मीन सुदान । सूरदास प्रभु हरिगुण मीठे नितप्रति

सुनियत कान ईश यहै करत अनेक जन्मगये मन सन्तोष रखायो ।
 सुनि दिन दानि दुराशा लाग्यो सबै लोक फिरिआयो । सुनि सुनि
 स्वर्गारसातलशीतल तहांतहां उठिवायो । काम क्रोधमद मोहअग्नि
 ते काहु न तनक बुझायो । सक चंदन बनिता बिनोद मुख यह दव
 जडनि बुतायो । मैं अजान अकुलाय अधिकलै जरत मांझ घृतनायो ।
 भस्मिअब हारेउँ हियराये देखि अनल जगछायो । तुम्हरी कृपाबिन
 सूरप्रियम प्रभुकाह अस न नशायो ईश ॥ रागधनाथी ॥ ताते जानि भजे
 बनवारी । शरणा आयेकी तापनिवारी । जन प्रह्लाद प्रतिज्ञा पारी ।
 हिरण्यकशिपुकी देह बिदारी । ध्रुव निर्भयपद दियोसुरारी । अम्ब-
 रीय की गर्भगतिदारी । द्रुपदसुता जब प्रकट पुकारी । गहतचीरहरि
 नाम उबारी । गजगणिका गौतमत्रिय तारी । सुरदास शठ शरणा तु-
 म्हारी ईई भक्तिबिना जो कृपा न करते तौहो आश न करतो । ब-
 हुतपतित उद्धारकिये तुम हो ताको अनुसरतो । मुख मृदुवचन जान
 मतिजानहु शुद्धपन्थ पगधरतो । सजनवेद्य रचनाप्रति जन्मन आयो
 परधन हरतो । कर्मबासना कबहुं छांडी शाप पाप आचरतो । धर्म
 ध्वजाअन्तर कछुताहीं लोकदिखावत फिरतो । परत्रिय रति अभि-
 लाष निशादिन सनपिठरीलै भरतो । दुर्मति अतिअभिमान सानबिन
 सब साधनते तरतो । उदर अखात बिवर पूरणाहित मित्र बन्धुहंलर-
 तो । रसना स्वाद शिथिल लम्पट ह्वै अघटित भोजन निरतो । यह
 द्रव्यवहार लिखाय प्रातदिन पुनिजीयो पुनिमरतो । रबिसुतदूत बारि
 नाहिं सकते कपट मनो उरवरतो । साधुशील सद्रूप पुरुषको अपरस
 बहु उच्चरतो । औघड असत कुचीलन सों मिलि सायाजलमें तरतो ।
 कबहुं क राजमान मदपूरणा कालहुते नाहिं डरतो । मिथ्याबाद आप
 यश सुनि सुनि सुंकाहिपकरि बिगारतो । यहिबिधि उच्च अवचतनधरि
 धरि देशहिदेश बिचरतो । तहँ मुखमानि बिसारि नायपद अपने रंग
 बिहरतो । अब मोहिं राखिलेहु मनमोहन अधमअङ्ग पदपरतो । खर
 कूकरकी नाई सानि मुख बियय अग्निमें जरतो । तुम गुणाकी जैसे
 मति नाहिंन हों अघकोटि बिचरतो । तुम्हेंहमें प्रतिबादभयेते गौरव
 ताकोगिरतो । मोतेकछू न उबरीहरिज आयो चढतउतरितो । अजहँ

पतित सूरयद तजतो जो औरहु निस्तरतो ६७ अहुत यश विस्तार
 करनको हमजनको बहुहेत । भक्तपावन कोउ कहत न कवहं पतित
 पावन कहिलेत । जयबीजयकी कथा न कहु वै दशमुखबध विस्तार ।
 यद्यपि जगत जननको कर्ता सुनि सब उतरतपार । शेषनाग के ऊपर
 पौढत तेतिक नाहिं बड़ाई । यातुधान कुच गिरि सरकत तब तहांप-
 रांता पाई । धर्मकहे शरशयन गङ्गसुत तेतुक नाहिं संतोष । सुतसुमि-
 रत आतुर द्विज उधरत नामभयो निर्दोष । धर्मकर्म अधिकारिन सेां
 नहिं तुम्हरे ना कहु काज । भूभर हरणा प्रकट तुम भूतल गावत सन्त
 समाज । भारहरणा बिरदाबलि तुम्हरी मेरे क्यों न उतारी । सूरदास
 सस्कार कियेते ना कहु घटै तुम्हारी ६८ हरिजू हैं याते दुखपात्र ।
 श्रीगिरिधरणा चरणा रति न भई तजि न बियथरसमात्र । हुतोआह्व
 तब कियो असहृदय्य करी न ब्रजवन यात्र । पोये नहिं तुव दास प्रेम
 सेां पोष्यो अपनोगात्र । भवनसँवारि नारिरस लोभ्यो सुत बाहनजन
 भ्रात्र । महानुभावपद निकट न परशे जान्यो न कृतविधात्र । कलबल
 करि जिततित हरि परधन आयो सबदिन रात्र । शुद्धाशुद्ध बहु बोझ
 बहेउशिर छाँयि जो करेउ लै दात्र । हृदय कुचील काम भूदृष्टा जल
 कलिमल दैपात्र । सेसकुसति जात सूरजको प्रभुबिनको न उधात्र ६९
 महा पतितपावन जानि शरणाआयो । उदधि संसार शुभ नाम नौका
 तरन अटल अस्थान निजनिगमगायो । व्याध अरु गीध गणिकाअ-
 जामिल द्विजहि चरणा गौतमनारि पराशि पायो । अन्त औसर अई
 नाम उचारकरि सुमिरतहि गजग्राहते छुड़ायो । अबल प्रह्लादबलि
 देत सुखहीन चित दास ध्रुव तवचरणा शीश नायो । पांडुसुत बिपति
 मोचक महादासके द्रौपदीचीर नाना उढायो । भक्तबत्सल कृपानाथ
 अशरणा शरणाभार भूतलहरणा जनमुहायो । सूरप्रभु चरणाचित चेत
 चिन्तनकरत ब्रह्म शिव शुक सनकसङ्ग धायो ७० प्रभुहैं सबपति-
 तनकोटीको । और पतितसब द्योसचारिके हैंतोपतित जन्महीको ।
 बधिक अजामिल गणिकातारी और पूतनाहीको । मोहिं छाँडितुम
 और उधारे सिदैशूल केजेजीको । कोऊ न समरथ सेधकरनको खैचि
 करतहैं लीको । सरियत लाज सूरपतितनमें कहत सबनमें नीको ७१

राग रामकली ॥ अनाथके नाथ प्रभु कृपास्वामी । श्रीनाथ शारंगधर कृपा
 करि मोहिं सकल अघहरणा हरि गसडगामी । परेउ भवजलधिमें धरि
 हाथकाहि समदोष जनिधरो चितकाम कामी । सूर बिनतीकरै सुनहु
 नंदनन्द तुम कहाकहीं खोलिकै अन्तर्दर्यामी ७२ ॥ राग धनाश्री ॥ ऐसे प्रभु
 अनाथके स्वामी । कहियत दीनदास परपीरक सबघट अन्तर्दर्यामी ।
 करतबिबस्त्र द्रुपदतनयाको शरणाशब्द कहिआयो । पुराअनन्तकोटि
 परिवसनन आरि को गर्व गँवायो । सुतहित बिप्र कीरहितगारिका पर-
 स्वारथ प्रभुपायो । क्षणाचिन्तन बनशाप सँकटते गजग्राहते छुड़ायो ।
 तब तनबदन देखि अविगतको जनलगी बेयबनायो । जेजनदुखी जानि
 भयेते रिपुहति २ सुखउपजायो । तुम्हरिकृपा यदुनाथगोसाईं किहि
 किहि अमु न गँवायो । सूरदासअन्ध अपराधी सो काहेबिसरायो ७३
 दीन जन क्यों करिआवै शरणा । भूल्यो फिरत सकल जल थल मग
 सुनि प्रेतापहरणा । मसअनाथअबिबेक नयनबिनु स्रक्तशब्दसुनिधावै ।
 पद पदपरतकर्मतम कूपहि को करिकृपाबचावै । नहिंकर लकुटि सु-
 मृति सतसंगति किहिअधार अनुसरई । प्रवल अपार मोहनिधि दश
 दिशि सुधो कहा अबकरई । अघटित रत्नसभीर सुमृतखनिनिगमसेन
 नहिंपावै । सूरश्याम पदनख प्रकाशबिनु क्योंकरितिसिर नशावै ७४
 राग बिलावल ॥ तुम्हरो नाम तजि प्रभुजगदीशसुतो कहे मेरे और कहावतु ।
 बुधि बिबेक अनुमान आपुने सुधोकरहु सबस्रक्तनि को फलु । वेदपु-
 राराग सुमृतिमंतनकी यहआधार सीनकोड्यो जलु । अष्टसिद्धिननिधि
 सूरके संपतिबिनु सुखकळु कहाललु ७५ ॥ राग धनाश्री ॥ मेरो मनमतिहीन
 गुसाईं । सबसुख निधिपद कमल विसारे भ्रमत आनकी नाई । दृशा
 अमित भाजन अवलेहत सुनेसदन मशान । यहिलालच अटक्योकेसेह
 लप्ति न मानत मान । जहँजहँ जात तहाँतहँ वासत करत मिलत पद
 जान । कौन काज कारणा कुबुद्धिशठ भटकत सतेमान । परम दयाल
 विश्वपालकप्रभु सकल हृदय निजनाथ । ताहिछाँडि यह सूरमहाजड
 भ्रमत भ्रमित के साथ ७६ मोक्षो पतित न औरहरे । जानतहो प्रभुभ-
 तर्थासी जो मैं कामकरे । ऐसे अन्ध अधम अबिबेकी खोटनि करत
 खरे । बिययीभजे बिरक्तन सेये मन धनधाम धरे । ड्योसाखी मृगमद

मगिडततनपरहरि पूज्यपरे । त्योत्योमूढबिययगुं जागहि चिन्तामरिा
 बिसरे । कुवरि करेउ पायराड कामबश भूपभवन निसरे । एकै इहै जा-
 निअवलम्बन वैसेहि पतिततरे । हारे घासकरत यमकिंकरसुनिसमनाम
 डरे । सूरपतिततुम पतित उधारन बिरदकी लाजबरे ७७ ॥ रागकान्हरो ॥
 ठाकुर भलेबुरेतीतेरे । हमरे कुलकीलाजबडाई बिनती सुनो प्रभुमेर ।
 आनन्दे सबरंक भिखारीमें सबछांडेउ होतअनेरे । सबर्ताज तुमशरणा-
 गत आयों दुठ करिचरणा गहेरे । तब प्रसाद हमबदत न काहू निडर
 भये घडघरे । सूरदास प्रभु तुम्हारि कृपाते पायेसुख जु घनेर ७८ ॥ राग-
 धनाम्नी ॥ तुम कब मोसों पतित उधारेंउ । काहेको हरि बिरद बुलावत
 बिनुमसकतिकोतारेउ । व्याधगीध पूतनाजोतारी तिनको कहानिहो-
 रो । गणिका तरी आपनी करणी नामुभयो प्रभुतेरे । अजामीलद्विज
 जन्मजन्म की हुतोपुरातनदास । नेकचूकते यहगतिकीनीपुनि बैकुण्ठ-
 हिवास । भक्तजानिके सबजनतारे तो क्यों जायेखूट । तबजानिहैं जु
 मोहितारिहै सूरकर कबिदूट ७९ मैं तो अपनी कही बडाई । अपने
 कृततेहैं नहिं बिरमतु सुनि कृपाल बजराई । जीवन तजे स्वभावजीव
 को लोकविदित दुठताई । तो क्यों तजेनाथ अपनेप्रसाद हमप्रभु की
 प्रभुताई । पांचलोक मिलिकहेउ तुम्हारो नहिंअंतर मुखताई तब सुमि-
 रणा छलदुर्भर के हित माला तिलकुबनाई । कांपनु लागी घरा पापते
 ताडिनि देखुजडाई । आपन भये उधारणा जगकी मैं सुधि नीकेपाई ।
 अर्बमिथ्या तब जाप ज्ञान सबप्रकटभई ठकुराई । सूरदास उच्चार सहज
 गति चिन्ता सकलगवाई ८० ॥ रागनट ॥ जाके हरिजुकोबरु ताकेधौं
 कौनकोडरु । काहे जियमें शोच कीजैको हैहो ऐसोअवरु । सब दिन
 के नाथ जीवन याही के हाथ वे अजर अमर अजित अकाथ । सोई
 बसतसाथ शरणासेदा अनाथ बद्धवेद बिदुय देखौधौं गावतगाथ । सुनो
 धौं जिनकी भांतिसकल चलतनीति अपनेचित चक्रितरहत । रवि न
 तपत अतिबायु न तजतगतिडोलत न शेषशिर सिंधु न बद्धत । कालके
 मारन हारप्रकट धरणा बसि अनाथ अभय करि इहांहुलसत । प्रकट
 सूरके स्वामी अखिल अंतर्दामी असुर अवद्ध दुष्ट अजड असत ८१ ॥
 रागकान्हरो ॥ सोइ रसना जो हरिगुणागावै । नयननकी कवि यहै चतुर-

तासेइ मुकुन्दमकरंदहिध्यावै । निर्मलचित्ततेईसांचो कृष्णविनाजेहि
 अवसु न भावै । अवरानि कोजुग्रहै अधिकारै हरियश नितप्रति अव-
 रानचावै । करतेइजु प्रथम जु को सेवै चरसानिचलि वृन्दावनधावै ।
 सूरदासकहे बलि ताकीहैं जो संतन सों प्रीतिबढावै ८२ ॥ रागधनश्री ॥
 रैबोरे छांड़ि विषयको रचिबो । कत त सुआहोत सेवरको अंत कपास
 न पचिबो । अननं तरङ्ग कनक कामिनि ज्यों हाथरहैगो पचिबो ।
 तजिअभिमान कृष्णाकहि बौरे न नरकज्वाला तचिबो । सद्गुरु कहेउ
 कहोहैं तोसों कृष्णरतनधन सचिबो । सूरदास स्वामी सुमिरणा बिनु
 योगी कपि ज्यों नचिबो ८३ सबै दिनसक से नहिंजात । सुमिरणा
 भगतिलेहु करिहरिको ज्योंलगितन कुशलात । कबहुं क कमलाचप-
 लपायको टेढेइटेढेजात । कबहुं कमगमगधूरि टटारत भाजन को बिल-
 खात । बालापन खेततही खेयो भक्तिकरत अरसात । सूरदास स्वामी
 के सेवत पैहो परमपदतात ८४ ॥ रागगुर्जरी ॥ हरिरसकबहुंतौ जायलहिये
 बादविबाद गरबईरयता यतोदराड सबसहिये । कोसल बचन दीनता
 सबसों सदासुदित चितरहिये । शोकगये उपज्योरहै आनन्द सेसेधर्म
 निबहिये । इतनी जो उपजैमनमहियां यहमुख कहँलोकहिये । सूर
 सुकत तेहि अष्ट महासिधि जो भुगते सोहइये ८५ ॥ रागसारंग ॥ देखो
 हरिको एकसुभाय । इतगँभीर उदार उदधिप्रभु जानशिरोमणिराय ।
 राईजितनी सेवाकोफलमानत मेरुसमान । समुझिदास अपराध सिंधु
 समबंद न सकौमान । दृष्टिपरशको हातचरणापर जानतहैं जियसेसी ।
 बिमुखहुभये कृपा या मुखकी जबचितवो तबतैसी । भक्तबिरह कातर
 करुणामय डोलत पाछेलागे । सूरदास ऐसे प्रभुकोकत दीजत पीठि
 अभागे ८६ ॥ रागकेवारी ॥ तुम्हरो कृष्ण कहतकहजात । बिछुडे मिलन
 बहुरिकब ह्वै है ज्यों तरुवरके पात । शीत वायु कफ कराठ बीरुधो
 रसना ठूठीबात । प्राणालिये यमजात मूढमति देखतजननीतात । क्षणा
 यकमाहँ कोटियुगबीतत नरककी पाछेबात । यहजगप्रीति सुवासेमर
 ज्यों चाखतही उड़िजात । यमकीबांध नियरनहिं आवत चरगानचि-
 त्तलगात । कहत सूरबिरयाया देही इतनो कतइतरात ८७ जोमनक-
 बहं हरिकोयांचै । आनप्रसंग उपासनछांड़ै मनक्रमबच अपने उरसांचै ।

निशिदिननाम सुमिरियशुगावै कल्पन मेति प्रेमरसमांचै । यहव्रतधरै
लोक्रमहँ बिचरै समकरिगनै महासगिकांचै । शीत उदय मुख दुख
नहिंजानै आयेगये शोकरनहिं गांचै । जायसमाय सूरमहँनिधि में ब-
हुरि न उलटि जगत सहँनांचै ७८ ॥ रागधनाश्री ॥ सोइभलो जोहरि यश-
गावै । अपचगरिष्टहेत रजसेवक विनुगोपाल द्विजजनमनशावै । योग
यज्ञ जपतपतीरथभमे जहँजहँ जायतहां डहकावै । होयअटल भगवन्त
भजनते अन्य आशनस्वर फलपावै । कहँ न दौर चरणापंकजविनु जो
दशहृदिशिफिरिफिरि आवै । सूरदास प्रभुसाधु संग ते आनन्द अभय
निशानबजावै ८९ ॥ रागढ ॥ मन क्रम बचन तू गोविन्द सुधि करि ।
शुचिरुचिसाधु समाधि आनिउर दीनबंधु करुणामयउरधरि । मिथ्या
वाद बिबादछाँडि तू बियय कोभ सम साया परिहरि । चरणा प्रताप
आनिउरछंतर औरै मुखयामुख के तरहरि । वेदाह कहेउ समृत्तियों
भाष्यो पावन पतितनाम निजनरहरि । जाकोसुयश सुनत अरु गावत
जायपास कापैयक भरहरि । अजहँ चेतिसुदृहं दिशिते आयोकाल
अगनि ज्यों भरहरि । सब यह जालजाल परैगो हरि विनुकोन करै
गोधरहरि । अतिभयभीत निरखि सागरतन धन ज्यों आनिरहेगोकर
हरि । सूरकाल बरन्याल ग्रसत हे श्री गोविंद प्रतिपरिकिनधरहरि
९० ॥ रागसेरठ ॥ अबसन मानिधौ रामदुहाई । मन बचक्रम हरिनाम
हृदयधरि ज्यों गुरु वेद बताई । महागर्त दशमास गर्भवसि अधमुख
शीश रहाई । इतनी कठिन सहीतैं कतको अजहँ न तू समुझाई । सि-
दिगये रागद्वेय सब तनके जिनहरि प्रीति लगाई । सूरदास येनाम कि
सहिमा पतित परस गति पाई ९१ ॥ रागसेरठ ॥ करुमन हरिसों नेह
सांचो । निपट कपटकी अटपटी छाँडिदे इन्द्रियवशराखहि किनपां-
चो । सुमिरणाकथा सदासुखदायक बिषय परमबिषयांचो । सूरदास
प्रभु हितके सुमिरौ जीयो आनन्द करि कै नांचो ९२ ॥ रागकल्याण ॥
धोखेही धोखे डहकायो । समुझि न परी बियय रसगीधो हरिहीरा
घरमांझ गाँवायो । ज्यों कुरंग जलदेखि पिवनको प्यास न गईदशौं-
दिशि धायो । जन्मजन्म बहुकर्म कियेहँ जत जनपै आपुनप बँधायो ।
ज्यों शुकसेवरसेइ आशा लगिनिशि बासर हठिचित्त लगायो । रीतो

परी जबैफल चाख्यो उडिगयो तुलतवारो आयो । ड्यों कपि डेरि
 बांधि बजोगर कन कनको चौहटेनचायो । सुरदास भगवन्त भजन
 बिन कालव्याल पै छपैखवायो ६३ ॥ रागगुर्जरी ॥ प्रभुबिन कोऊकाम
 न आयो । यहभूठी मायाकेलोने रतनसो जन्मगँवायो । कञ्चनकलश
 बिचित्र चित्रकिये रचिरचिभवन बनायो । तामेंते तत्सारागहि कात्थो
 पलुयक रहन न पायो । हैं तुम्हरेसंग आऊंगी कहि बियधुति धुति-
 धन खायो । चलतहरी मुखमारि चोरिरुब एकौपण नाहिन पहुँचा-
 यो । बोलि बोलिसुत स्वजन मित्र जन लीन्हे सुयश सुहायो । परेउ जु
 काजअन्त अन्तक सों उहि ढिग आनि बँधायो । कोटि जन्म भूमि
 भूमिहैं हारेउ हरिपदचित न लगायो । और पतित तुम बहुत उधारे
 सुरकहा बिसरायो ६४ रे मन मरुख जन्म गँवायो । करि अभिमान
 बिययसों राचेउ श्याम शरणा नहिँ आयो । यह संसार फूल सेँवरको
 सुन्दर देखि भुलायो । चाखन लाग्यो रुई उडिगई हाथ कछु नहिँ
 आयो । कहाभयो अबके मन शोचै पहिले नाहिँ कमायो । कहतसूर
 भगवन्त भजन बिनु शिरधुनिधुनि पछितायो ६५ ॥ राग सारंग ॥ फिरि
 फिरि सो इहै करतु । जैसे प्रेमपतँग दीपकसों पावकहं न डरतु । भव
 दुखकूप ज्ञानकरि दीपक देखत प्रकटपरतु । कालव्याल रजतमविष
 डवाला कतजड जन्तु जरतु । अबिहित स्वादु बिबाद सकल मति इन
 लागि भेषु भरतु । यहिबिधि भ्रमतु सकल निशिदिनगत कछु न काज
 सरतु । अगमसिन्धु यत्ननि सजि नौका हठि क्रमभारभरतु । सुरदास
 के यहैव्रत कृष्ण भजि भव जलनिधि उतरतु ६६ ॥ राग केदारो ॥ रहेउ
 मन सुमिरगाको पछितायो । वहतन राचिराचि कै बिरचेउ कियो
 आपु मनभायो । मनकृत नदी तरंगते जबहीं बहेउ चलयो जुसवायो ।
 मेल्यो काल लालजब खँचेभयोमीनकोहायो । कीरपढावत रागिका
 तारी अजामील मुखपायो । ऐसो सुरगुण नाहिँतू दूजो दूरिकरे थम
 दायो ६७ ॥ राग धनाशी ॥ भक्ति कबकरिहौ जन्मसिरानो । कोटि य-
 तनकीने मायाको तऊ न मुख अघानो । बालापन खेलतही खोयो
 तरुणाभये गर्बानो । कामक्रोध लोभके बलहरि चेत्यो नहीं अयानो ।
 लुब्धभये कफकंठ बिह्वयो शिर धुनि धुनि पछितानो । सुरश्याम के

नेक बिलोकित भवनिवि जायतिरानोद इतउत चितवत जन्मगयो ।
 इनमाया लयाके काजे दुहुं दृग अन्धभयो । जन्मकष्टते मातु दुखित
 भइ अतिदुख प्राणानहेउ । बोधिभुवनपति विसरिगयेत्यो सुमिरतक्यो
 नरहेउ । श्रीभागवत सुन्योनहिं कबहुं बीचहि भर्त्तिक सुयो । सूरदास
 कहै सबजग बूडेउ युगयुग भक्तजियो ६६ सबैदिनगये विषयके हेत ।
 देखतही आपनपौ खोयो केशभये सबप्रवेत । रुंध्यो आस मुखबैन न
 आवत जैसे चन्दगहेउ शिरकेत । तजिगंगोदक पीयकूपजल पूजतहारे
 प्रेत । करिब्रमोद गोविन्द विसारे बूडेउसबनिसमेत । सूरदास कहुख-
 रचु न लागत कृष्ण सुमिरि किनलंत १०० ॥ रागसारंग ॥ जेहिंतन हरि
 भजिवोन कियो । सोतन शकर आनमीन ज्यो यहिसुख कहाजियो ।
 जो जगदीश ईश सबहिनको तहीं न चित्तदियो । प्रकटजानि यदुनाथ
 बिसारेउ आशामयपियो । चारि पदारथके प्रभुदाता तिनहैं न मिल्यो
 हियो । सूरदास रसना बश अपने टेरि न नास लियो १०१ ॥ रागधनाश्री ॥
 हरिसोमीत न देख्यो कोई । विपत्तिकाल सुमिरततिहि औसर आनि
 तिरीछो होई । ग्राहगहे गजपति मुकरायो हाथ चक्रलै धाये । तजि
 बैकुंठ गरुडतजि श्रीतजि निकट दासके आये । दुर्वासाको शापनिवा-
 रेउ अम्बरीष पतिराखी । ब्रह्मलोक पर्यन्त फिरेउतहैं देवअनल मुनि
 साखी । लाक्षा गृहते जरत पांडुसुत बुधबल नाथउबारे । सूरदास प्रभु
 अपनेजनके नाना वासनिवारे १०२ हरिजूतुमते कहा न होय । बोले
 गुंगपंगु गिरिलंधै अस आवै अन्धा जगजोय । पतित अजामिल कवि
 जातिनहूं तो कलिमल सब धोय । रंकसुदामा कियो इन्द्रसम पांडव
 हित कौरव दलखोय । बालक मृतक जिवायदये गुरु जो आईदरवारे
 रोय । सूरदास प्रभु इच्छापूरण श्रीगोपाल सुमिरहु सबकोय १०३ ॥
 रागविलावल ॥ क्यो त गोविंदनाम विसारेउ । अजहूँ चेति भजनकरि हरि
 को कालफिरत शिरऊपर भारेउ । धन सुत दारा काम न आवै जि-
 नहिंलागि आपनपौ खोयो । सूरदास भगवन्त भजनबिनु चल्यो पछि-
 ताय नयन भरि रोयो १०४ ॥ रागधनाश्री ॥ माधवजु जो जनते विगारै ।
 सुनि कृतज्ञ कसगामय केशव प्रभुनहिं जीयवरै । ज्यो शिशु जननी
 अदरांतरबसि शतअपराधकरै । तउ सेवै तनु तोयि पीयिकै विविकर

अङ्गभरै । द्विजरसना दलितुखित होत तब ता रिसकारि करै । क्षमि
 शत सोभक्षीर मधु मिश्रित मुखसमीप मचरै । यद्यपि बिटप जहरतन
 हितकरि करकुठार पकरै । तदपि सुभाव सुशील सुशीतल रिपुतन
 तापहरै । घरबिध्वंसि हलहतन कृषीकरि बैरबीज संचरै । सो सन्मुख
 सुखहितहि सत्वगुण शिशुगुण फरनिफरै । कारणा करणा अन्तश्चज
 अजशिव अपभेदीनहरै । यहकलिकाल व्यालमुख आसित सूर शरणा
 उबरै १०५ साधवसन मद्यदितजी । ज्यों राजमत्तजानि हरितुमसों बात
 बिचारिसजी । मायेनहीं सहावत सतगुरु अंकुश जानहुयो । धायेअधम
 बनीअति आतुर शंकर सुसंगलुयो ॥ इन्द्रीयसङ्कलिये बिहरतदृष्टा
 कानन माहे । क्रोधशोच जलसों रतिमानी कामभक्षहित जाहे ॥ और
 अवार नाहिँ कछु सकुचत भ्रमगहि गुहा रहे । सुरश्याम के हरि
 कस्तुभामय कबनाहिँ विरदगहे १०६ हमें नंदनन्दनमौललिये । यमकी
 फांसिकाटि मुकराये अभय अजात किये । मूढमुडाय कंठ बनमाला
 चक्र के चिह्नदिये । माये तिलक अवरण तुलसीदल मटिव अंगविये ।
 सबकोउ कहत गुलाम श्यामके सुनत सिरात हिये । सूरदास प्रभु जू
 केचेरे जूठन खायजिये १०७ रति अविगति जानी न परै । अति अ-
 गाधम अगम अगोचर बुधिवल क्यों पसरै । कबहुंक रंकरंकरंकराजा
 करिशिर छवधरै । कबहुंक दृष्टा डूबत पानीमें कबहुंक शिलांतरै ।
 प्रबल प्रचण्ड महा बपुशायक केहरि भूखसरै । अनायास बिनउद्यम
 अजगर सहजहि पेटभरै । बागर में सागर करिडारै टांटांनीर भरै । सू-
 रपतित तरिजाय क्षणाक में जो प्रभु नेकुठरै १०८ ॥ रामटोड़ी ॥ भंगानि
 निर्भय चरणा कमल मकरंद गहेजहँ न निशाको श्याम । जहँबिधिमान
 समानएकरस सो बारिज सुखवास । जहँ किंजलक भक्तिनव लक्षणा
 काम जामसरसक । निगम सनक शुकनारद प्रारदमुनिसन भँवर अ-
 नेक । शिवादिरेचि खंजन समरंजन क्षणाक्षणा करत प्रवेश । अखिल
 कोणतहँ बसहिँ सुकृतजल प्रकटित श्याम दिनेश । मुनि मधुकर भ्रम-
 तजीकुमुदिनीको राजिव शुभकरिकैआस । सूरजदास प्रेममयप्रफुलित
 तहँचलिकदहिँ निवास १०९ अजहँ सावधान करिहोहिँ । सायाबियम
 भुजंगिनि को बिय उतरेउ नाहिँ न तोहिँ । कृष्णसुमंत्र शुद्धबनसूरी जि-

नियम सरतजिवायो । बारबारअवसान नीकटहोइ शुक्लारुखीसुनायो ।
जायो लोहमेरु अतिबूढी सुयश गीतके गाये । सूरगई अज्ञान सूरका
ज्ञान सुभेयज खाये ११० मन तोसों कोटिक बार कही । समुक्ति न
शरणा गयो गोविंदको उरअंग शाल सही । सुमिरसा कथा और शु-
स्तसेवा सकौ नाहिं गही । लोभी लम्पट बिषयी व्यभिचारी सेसेही
निबही । तजिमरिा कनक अमोलक हीरा कांच कि किरच गही ।
जैसेजानि बिबेक चतुर तुम तजिपय पिवत सही । आदि ब्रह्म रवि
शेष ईश मिलि सोधी मरस बही । सूरदास भगवन्त भजन बिन सच
बैलोक्य नही १११ गोविंद भजन करहु यहि बार । ईश्वर पार्वती
उपदेशत तारकसंब जपो तेहि द्वार । काहेको अश्वमेधयागकीजै गया
आइ काशीकेदार । रामकृष्ण अभिधाम न परतर जो तनगारै हेमहत
मार । प्राग कल्प माये करवत दै चन्दा तरिा ग्रहण लखबार ।
सूरदास भगवन्त भजनबिन यसके दूत कौनटारै मार ११२ जाघटअन्तर
हरि सुमिरे । तासों काल कूटिका करिहै जो छितचरणाधरे । कोप्यो
तात प्रह्लाद भक्तको नामहिं लेतडरे । खम्भ फोरि नरसिंह प्रकटभये
असुरके घ्राणाहरे । सहस्रवर्ष राज युद्धकरतभये सरा यक ध्यानधरे ।
चक्र धरे बैकुण्ठते धाये वाकी पैज सरे । अजामील द्विज सह अपराधी
अन्तकाल विगरे । सुतसुमिरत नारायण बाणी पार्यद धायपरे । जहँ
जहँ दुसहकष्ट भक्तनको तहतहँ मारकरे । सूरजदासश्यामसे सते दुस्तर
पार तरे ११३ भजहु न मेरो श्याम सुरारी । सब सन्तनके जीवनहैंहरि
कमलनयन ध्यारो हितकारी । यासंसार समुद्र मोह जल दुष्सातरंग
उठतितेभासी । नाव न पाईसुमिरसा हरिको भजन रहितबूझत संसारी ।
बीनदयाल अघार सबन को परम मुजान अखिल अधिकारी । सूर-
दास कह तुम यांचै जन जन को याचक हेत भियारी ११४ रे मन
कृष्ण नाम कहिलीजै । शुकके वचन अटल करि मानहु साधु समा-
गम कीजै । पढ़िये छुनिये भक्ति भागवत और कहा कथि कीजै ।
कृष्ण नाम बिन जन्म बादिही वृथा जिवन कह जीजै । कृष्ण नाम
रस बह्योजातहै हृदयवन्तहै पीजै । सूरदास हरिशरणा ताकिये जन्म
सफल करिलीजै ११५ भक्ति बिन शकर ककर जैसे । बिगबगला

अरुगीध घूघुआ आयजन्म लियो तैसे । ज्यों लोमरी बिलाउ मोरहृक
 भोरत रहत छंदरनि घैसे । ताहि न अवधिन सुत दारावै उने भेद कहौ
 कैसे । जीव मारिके उदर भरतहैं रहत अशुद्ध अनैसे । सूरदास भगवन्त
 भजनविन जैसे ऊंट खर भैसे ११६ हरिविन अपनोको संसार । माया
 लोभ मोह यों चाहे कालनदी की धार । ज्यों जन संगति हात नाव
 में रहत न परशे पार । तैसे धनदारा सुखसम्पति बिहुरतलरी न बार ।
 मानुषजन्म नामनरहरिकोपैये न बारम्बार । येतन क्षणभंगुरके कारणा
 कह करै गर्व गवार । जैसे अन्धा अन्धकूप में गनत न खाल पनार ।
 तैसेहि सूर बहुत उपदेशहि सुनि सुनि गे कै बार ११७ गर्व गोविन्दै
 भावत नाहिं । कैसी करी हिरण्यकशिपु को रती न राखी राखिन
 माहिं । जगजानी करतूति कंसकी नरकासुर मारे उबलवाहिं । बरुणा
 बिराँच शक्रशिव मनसिज नरहृणाकी मनसा गहिगाहिं । यौवनरूप
 राजधनधरती जिय जानत तैसी जलदकीछाहिं । सूरदासहरिभजेनजेते
 बिमुख अन्त अन्तकपुर जाहिं ११८ यहि विधि बहुत जन्म बौरायो ।
 बिमुख भयो हरि चरणा कमल तजि मन सन्तोष न पायो । जब जब
 प्रकट भयो जल थल तब अनेक शांत बपुधारेउ । कामक्रोध मदअन्ध
 बियरतिहि रचे अटल अधभारेउ । मृग कपि बिप्र गीधगणिकागज
 कंस केशि खलतारेउ । अध बक वृषभ बकी धेनुकहति भवजलनिधि
 तेनिवारेउ । शंखचूड़ मुष्टिकप्रलम्बमथि व्याधतगावर्त्ततारे । रजचा-
 गारदवन दवनाशन व्यालमथन भवहारे । जनदुखजानियसलद्रुमभंजन
 अतिआतुरह्वै धाये । गिरिकरधारि इन्द्रसद सखी दासनसुखउपजाये ।
 रिपु कचदहत द्रुपदतनया जब शरणा शब्द करहाई । मृतक जिवाय
 शुक्लके सुतको व्याध परमगतिपाई । नन्द बरुणाबन्धनभयमोचन सूर
 कुटिलशरणाई । किहिमिस भज भगवन्तशरणाको सबकोइभईवडाई
 ११९ नाहिंन छांडत मान मन्दभागी । यहिसति चितबहु रूपधरे भृगु
 सोई लोभालकलागी । फिर रुचिकरे बलि बिययावन भ्रमर विकल
 बियजागी । अतिरुचि अरुणाश्रमल हरिपदतख अम्बुज जलकोत्या-
 गी । कहि गुणाज्ञान ग्रन्थ पचिहारे कछुह समुक्ति न आयो । अति
 कासी अभिमान अन्ध अपमारग स्वादचखायो । नाहिं अनाथ बन्धु

कोऊ मम जिहियहवात जनावै । सूर सुदीनदयाल नामलै बारबारशु-
हरावै १२० सोसोंपतित न और गुसाई । ये औगुगा सोपै कबहुंनहिं
कूटे बहुत पचेउ अबताई । जन्म जन्म हैं रहेउ भूमित ह्वै कपिगुञ्जा
की नाई । तापरशतगयो शीत न कबहुं लैलै निकट तपाई । लुब्धयो
जाय कनक कामिनिज्यों शिशुदेखतजलभाई । जिह्वास्वाद मीनलों
डारेउ सुभियो नहीं फँदाई । मुदित भयो सपनेमें जैसे पाये निधिहि
पराई । जागिपरे कछुहाय न लारयो सेसिसूर प्रभुताई १२१ मनवश
हात नाहिं जियमेरे । जिह्वातन तबहेउ फिरतहै सोइसोइ लैलैप्रेरे ।
कैसेकरौं कहाँकैसे यश औरहिऔर खचरे । तुमतो सिलगावतकोटे
शिर बैठे देखत नेरे । कहा करौं यह चरेउ बहुत दिन बिन अंकुशहि
मुकरे । अबकौ सूरदासप्रभु आपुन परोहायहाँतरे १२२ ते दिनबिसरि
गये यहँ आये । अतिउत्तम मोह मद छाक्यो फिरत लटै बगराये ।
तब तिन दिन निजजननि जठरमें वस्यो बहुतदुख पाये । सोइतू कहा
तबहुं तो कौनसँग खानपान पहुँचाये । सोइ चितधरौ जु पिता प्राण-
पति जीयतुजाके ज्याये । सूर सुमृग जो सहत फिरतहै विषम बियय
शर खाये १२३ ॥ राग केदारो ॥ मेरी कौनगति ब्रजनाथ । भजनबिमुख
अरु शरणा नाहिंन फिरत विधायिन साथ । हैं पतित अपराधपूरणा
भरेउ कर्मबिकार । कासकुटिल अरु लोभ चितबान नाथ तुमहिं बि-
सार । उचित अपनीकृपाकरहु तऊ जान्योजाय । सोउकरहु जेचरणा
सेवै सूरजुँटनि खाय १२४ ॥ राग मलार ॥ सेसेइ करत अनेक जन्म गये
सन सन्तोष न पायो । दिनदिन दीनदुराशा लागी सकललोक फिरि
आयो । मुनिमुनिस्वर्ग रसातल भूतल तहींतहीं उठिधाये । कासक्रोध
मद लोभ अग्निते जरत न काहु बुझायो । सक्चन्दन वनिताबिनोद
मुख जिहुजल जडनि बतायो । मैअजान अकूलाय अधिककरि जरत
साहँ घृतनायो । भूमिभूमि हैंहारे अबथीपति देखिअनल जगछायो ।
सूरदासपै तुम्हरि कृपाबिन क्यों अमजात गावाँयो १२५ ॥ रागधनाशी ॥
प्रोतम जानिलेहु मनमाहीं । अपने मुखको सबजग बाँधयो कोउकाह
को नाहीं । मुखमें आय सबैमिलि बैठत रहत चहुँदिशि घेरे । विपति
परी तब सबसँगाछाँड़ै कोउ न आवैनेरे । घरकीनारि बहुतहितजासों

अरुगीध घृधुआ आयजन्म लियो तैसे । ज्योंलोमरीबिलाउ सोरठक
 भोरत रहत छंदरनि घैसे । ताहि न अंधिन सुत दाराबैउने भेद कहौ
 कैसे । जीव सारिके उदर भरतहैं रहत अशुद्ध अनैसे । सुरदास भगवन्त
 भजनविन जैसे ऊंट खर भैसे ११६ हरिविन अपनोको संसार । माया
 लोभ मोह यों चाहे कालनदी की धार । ज्यों जन संगति होत नाव
 में रहत न परशे पार । तैसे धनदारा सुखसम्पति बिहुरतलरी न बार ।
 मानुषजन्म नासनरः ११७ नबारम्बार । यतन क्षणभरककारणा
 कह करै गर्व गवार । जैसे अन्धा अन्धकूप में गनत न खाल पनार ।
 तैसेहि सूर बहुत उपदेशहि सुनि सुनि गे कै बार ११७ गर्व गोविन्दे
 भावत नाहिं । कैसी करी हिरण्यकशिपु को रती न राखी राखित
 साहिं । जगजानी करतूति कंसकी नरकासुर मारेउबलबाहिं । बरुआ
 बिरंचि शक्रशिव सनसिज नरद्वाराकी सनसा गहिगाहिं । यौवनरूप
 राजधनधरती जियजानत तैसी जलदकीछाहिं । सुरदासहरिभजेनजेते
 बिमुख अन्त अन्तकपुर जाहिं ११८ यहि बिधि बहुत जन्म बौराथो ।
 बिमुख भयो हरि चरणा कमल तजि सन सन्तोष न पायो । जब जब
 प्रकट भयो जल थल तब अनेक शांत बपुधारेउ । कामक्रोध मदअन्व
 बियर्यातिहि रचे अटल अधभारेउ । मृग कपि बिप्र गीधगणिकागज
 कंस केशि खलतारेउ । अध बक वृषभ बकी धेनुकहति भवजलनिधि
 तेनिवारेउ । शंखचूड़ मुष्टिकप्रलम्बमथि व्याधद्वारावर्ततारे । रजचा-
 गारदवन देवनाशन व्यालमथन भवहारे । जनदुखजानियसलद्रुमभंजन
 अतिआतुरहैं धाये । गिरिकरधारि इन्द्रसद सखी दासनसुखउपजाये ।
 रिपु कचदहत द्रुपदतनया जब शरणा शब्द करहाई । मृतक जिवाय
 शुद्धके सुतको व्याध परमगतिपाई । नन्द बरुआबन्धनभयमोचन सूर
 कुटिलशरणाई । किहिमिस भज भगवन्तशरणाको सबकोइभईबड़ाई
 ११९ नाहिंन क्वाँडित मान मन्दभागी । यहिमति चितवहु रूपधरे भृगु
 सोई लोभालकलागी । फिर रुचिकरे बलि बिययावन भ्रसर विकल
 बियजागी । अतिरुचि अरुणाअसल हरिपदनख अम्बुज जलकोत्या-
 गी । कहि गुणज्ञान ग्रन्थ पचिहारे कछुह समुझि न आयो । अति
 कासी अभिसान अन्ध अपसारग स्वादचखायो । नाहिं अनाय बन्धु

कोऊ मम जिहियहवात जनावै । सूर सुदीनदयाल नामलै बारबारगु-
हरावै १२० सोसोंपतित न और गुसाई । ये औगुणा सोपै कबहुंनहिं
छूटे बहुत पचेउ अबताई । जन्म जन्म हैं रहेउ भ्रमित ह्वै कपियुञ्जा
की नाई । तापरशतगयो शीत न कबहुं लैलै निकट तपाई । लुब्धयो
जाय कनक कामिनिज्यों शिशुदेखतजलभाई । जिह्वास्वाद मीनलों
डारेउ सुभियो नहीं फँदाई । मुदित भयो सपनेमें जैसे पाये निधिहि
पराई । जागिपरे कछुहाथ न लाग्यो सेसिसूर प्रभुताई १२१ मनवश
हात नाहिं जियमेरे । जिह्वातन तबहेउ फिरतहै सोइसोइ लैलैप्रेरे ।
कैसेकरौं कहाँकैसे यश औरहिऔर खचरे । तुमतो सिलगावतकोटे
शिर बैठे देखत नेरे । कहा करौं यह चरेउ बहुत दिन बिन अंकुशहि
मुकरे । अबकै सूरदासप्रभु आपुन परोहाथहैंतेरे १२२ ते दिनबिसरि
गये यहँ आये । अतिउत्तमत्त मोह मद ढाक्यो फिरत लटै बगराये ।
तब तिन दिन निजजननि जठरमें वस्यो बहुतदुख पाये । सोइतु कहा
तबहुं तो कौनसंग खानपान पहुँचाये । सोइ चितवरौ जु पिता प्राणा-
पति जीयतुजाके डयाये । सूर सुमृग जो सहत फिरतहै बियस बियय
शर खाये १२३ ॥ राग केदारो ॥ मेरी कौनगति ब्रजनाथ । भजनबिमुख
अरु शरणा नाहिंन फिरत बिययिन साथ । हैं पतित अपराधपरा
भरेउ कर्मबिकार । कामकूटिल अरु लोभ चितबान नाथ तुमहिं बि-
सार । उचित अपनीकृपाकरहू तऊ जान्योजाय । सोउकरहु जेचरणा
सेवै सूरजंठनि खाय १२४ ॥ राग मलार ॥ सेसेइ करत अनेक जन्म गये
सन सन्तोष न पाये । दिनदिन दीनदुराशा लागी सकललोक फिरि
आयो । मुनिमुनिस्वर्ग रसातल भूतल तहींतहीं उठिवायो । कामक्रोध
मद लोभ अग्निते जरत न काहु बुझाये । सकचन्दन बनिताबिनोद
सुख जिहुजल जडनि बतायो । मैअजान अकुलाय अधिककरि जरत
साहँ घृतनायो । भ्रमिभ्रमि हैंहारे अबशीपति देखिअनल जगढाये ।
सूरदासपै तुम्हरी कृपाबिन क्यों अमजात रावाँयो १२५ ॥ रागधनाश्री ॥
प्रीतम जानिलेहु मनमाहीं । अपने सुखको सबजग बांध्यो कोउकाहू
को नाहीं । सुखमें आय सबैमिलि बैठत रहत चहुँदिशि घेरे । बिपति
परी तब सबसंगछाँड़ै कोउ न आवैनेरे । घरकीनारि बहुतहितजासों

रहत सदा सँगलागी । जब इनहंस तजी यहकाया प्रेत२ कहिभागी ।
 याबिधिको व्योपारबन्यो जग तासों नेहलगायो । सूरदास भगवन्त
 भजनबिन नाहकजन्म रावाँयो १२६ सोप्रभु मेरेहिदोखनिवारे । किये
 अपराध अनेकजन्मके नखशिख भरे बिकारे । धरणीपात सिंधुजल
 पूरसा गिरि कञ्चन मसिडारे । सुरतरुवर की शाखा लेंकारि लिखत
 शारदा हारे । पतित पावन हरि नाम तुम्हारे वेद बखानत चारे ।
 सूरदास प्रभु तुम्हारे मिलन को करत फिरत हरि हारे १२७ हरि
 बिन सीत नहीं कोउ तेरे । मुनि मन कहत पुकारि हैं तोसों भजि
 गोपाल कह मेरे । या संसार विषय विष सागर रहतसदा सब घेरे ।
 सूरदास प्रभु अन्त काल में इनबिन कोउ न आवतनेरे १२८ दीनको
 ब्याल सुन्यो अभय दान दाता । साँची तुम्हारी बिरदाबलि जक्त के
 पितु माता । ब्याध गोध राज गसिका इन में कोऊ ज्ञाता । सुमिरत
 तुम तबहीं आये विभुवन बिख्याता । कंस कैश दुष्ट मारि मुचिक
 कियो घाता । अपने ध्रुवकाज राज कैतिक यह बाता । तीन लोक
 बिभंवदियो तन्हुलके खाता । सर्वस प्रभुरीभि देत तुलसी के पाता ।
 सुरजेहि त्यागिमांगि तनमन अनुराता । अपनी प्रभु भक्तिदेत जासों
 जाननाता १२९ करे गोपालके सबहाय । जे अपनी पुरुषारथ साथ
 अतिही भूँढोसेय । साधन मंत्र यंत्र उद्यमबल ये सब राखेधोय । जो
 कहुलिखि राख्यो नंदनन्दन मैतिके नहिंकोय । दुखसुख लाभअ-
 लाभसइज तुम कतहु मरतही राय

चरगा मनपोय १३० ॥ रागमलार ॥ आंधरेकी दई चलावै । नाहिन
 पतपिता समकोऊ जलमें शैल तरावै । जो अरि कोटि होय बहुतेरे
 खोन सीर सरपावै । जाहि सहाय होय श्रीपतिकी बिनुहीं क्याई
 ह्यावै । काहेको चिन्ताचित कीजै जो चरगान चितलावै । संकत
 सूर सहाय होय प्रभु बसन प्रवाह बढावै १३१ ॥ रागबिलावल ॥ जहाँ
 जहाँ सुमिरे तुमजेहि बिधि तहींतहीं उदियायेहो । दीनउधाररा भक्त
 कृपानिधि वेदपुरासानि गायेहो । सुत कुबेरकेमल विषयसद नयननि
 छायेहो । द्विजके शापते भये यमल तरु तिहिलगि आपु बँधायेहो ।
 परमसखीन दीन द्विज देखत ताकेतन्हुल खायेहो । दैसन्पति वाकी

पत्नीके मनअभिलाष पुजायेहो । कलानिधान सकलगुण सागर शुभ
 धों कहा पढायेहो । तिहुउपकार मृतकसुत यांचे ते यमपुरते लयाये
 हो । कतगोषे अरराधी साधव केतिक सुगति पढायेहो । सूरदासप्रभु
 करुणासागरपावन बिरद कहायेहो १३२ ॥ रा । आशुवती ॥ सोइप्रभुकरों
 कहू दीनदयाल । जाते जनसखा चरणा न छाँडै करुणा सागर भक्त
 कृपाल । इन्द्रो अजित बुद्धि दिखयेरत मनकी अनुदिन उलटीचाल ।
 कामक्रोध मदलोभ महाभय अहानिशि नाथ रत बेहाल । योगयज्ञ
 जपतप तीरथ व्रत इनमें एकौ अंगन भाल । कहाकरों किहि भांति
 रिभाऊंहीं तुमको सुन्दर नंदलाल । सुन समरथ सर्वज्ञ कृपानिधिअ-
 शरणा शरणा हरणा जगजाल । कृपानिधान सुरकी यहगति कासों
 सपन कहै यहिकाल १३३ ॥ राग धनाश्री ॥ गुसाईं दीनको दयालसुनौ
 परम दानिदाता । जाकी यह सांची बिरदाबलि भक्तनके पितुमाता ।
 कलकेशि मुष्टिक मुर मधुकैठभ घाता । धाये गजराज काज केतिक
 यहबाता । गणिका द्विजद्वयप्रभ अवस इनमें कोउजाता । आनकहत
 नाथ कहेउ जान्यो नहिंजाता । गौतमकीबामतरी तनक परगताता ।
 और कुरिल तारितारि कहाहैं गंवाता । रोभिदेत सर्वस तुम तनक
 तुलसि पाता । कहाभयो दोउलोक दये तनुदुलके खाता । सांगत है
 सूरत्यागजिहिं तनुमनुराता । अपनी प्रभु भक्तिदेहु जासों तुमनाता १३४
 प । गीता ॥ अबमोहिं शरणा राखिलेहु नाथ । कृपाकरी जगुरुजन पठये
 वहै जातनहिं हाथ । अहंभावते तुम बिसराये इतने भूठ साथ । परेउ
 जु भवसागर प्राकृतबश बांध्यो फिरेउ अनाथ । यमित भयो जैसे मृग
 चितवत देखिदेखि भ्रमपाथ । जन्मत लिख्यो सन्तकी संगति कहेउ
 सुन्यो गुणगाथ । कर्मधर्म तीरथबिनु रावन हँगये सकलअकाथ । अ-
 भय दानदै अर्पन भुजाधरि सूरदासको साथ १३५ ॥ रागधाय ॥ मेरेजिय
 ऐसी आनिबनी । काँडि गोपाल और जो सुमिरौं तो लाजैजननी । मन
 कस वचन और नहिं चितवों जबकव प्रयासवनी । दिखको मेरु कहा
 लै कीजै अमृत सककनी । कहलैकरों कांचको संग्रहत्यागि अमोल
 सनी । सूरदास भगवन्तभजनको तजीजाति आपनी १३६ अन्त के दिन
 को है राम । सातप्रता वनसुत तौलग जौलग जियको काम । आ-

मिथ रुधिर अस्थिअंग जौलों जौलों कोमल चाम । तौलथु यह संसार
 सयोहै जौलशुलेहि न नाम । इतनी जो जानत मनसूरख मानत याही
 धाम । छाँड़ि न कहत सूरसब भवडरु टुन्दाबनसों ठाम १३७ ॥ रागगोरी ॥
 मोहनके मुखऊपर धारी । देखतनयन सबैसुख उपजत बार बार ताते
 बलिहारी । ब्रह्माबाल बंरुआ हरिगयो सो तत्त्वक्षरा सारिखेसवारी ।
 कीन्होकोप इन्द्र बरयाह्वतु लीलालाल गोवर्द्धनधारी । पांडव जरत
 देखि पुरुषोत्तम प्राणानाथ द्रौपदी पुकारी । तीनलोकके तापनिवारण
 सेवक सूरश्याम सुखकारी १३८ हरिदासनकी सबै बढाई । अम्बरीष
 हित द्विज दुर्वासा चक्रछाँड़िकै कूपपराई । दानवदुष्टअसुरको बालक
 ताहित सबमर्यादा ढाई । भक्तराज कुन्तीके सुतहित रथचढ़ि आपुन
 लीनिलडाई । शिवब्रह्मा जाको बरदीन्हो अन्त सबानकीखोजकढाई ।
 हरिपद कमल प्रताप तेजते ध्रुवपदवी लैशिखर चढाई । अजामील ग-
 णिकारत द्विजसुत सुत सुमिरत यमवास पढाई । गजदुख जानितबहिं
 उठिवाये ग्राह सुखनिते विपति छिडाई । सब आंगिरस देव यजनको
 कर्मग्रंथि द्विजशकल मिटाई । नारी ब्रजपति नामनेह सुनिरसना ना
 अर्पणाको धाई । कौरव राजपंथ रचनाकरि श्रीपतिको शोभा दिख-
 राई । आपुन बिदुर सदन पगुवारे सदास्वभाव साधु सुखदाई । सकल
 लोक कीरति भर्चिगावै हरिजन प्रेमनिशान मढाई । कहँ लौं कहौं
 कृपासागरको सूरदासजाहिंन सुघराई १३९ तुम्हरो सकबड़ी ठकुराई ।
 प्रतिदिन जनजन कर्म सवासन नाम हरै यदुराई । कुसुमित धर्म कर्म
 कुमारग जेकोउ करत बनाई । तदपि बिमुख पांती युग नीयत भक्ति
 हृदय नहिं आई । भक्तिपन्थमेरे अतिनियरी जब तब कीरति गाई ।
 भक्त्यधिकार सूरलखि पायो भजनछाप नहिं पाई १४० ॥ रागधनाश्री ॥
 ऐसे भगवन्त भक्त हितकारी । जहांजहां जिहिकाल सँभारे तहँतहँवास-
 निवारी । धर्मपुत्र जबयज्ञ उपायो द्विजमुख होइपनु लीन्हो । अश्वनि-
 मित्त उतरदिशिके पथ गमन धनंजय कीन्हो । अहिपति सुता सुवन
 सन्मुखे हँ बचन कहेउ यकहीनो । पारथ बिमल बध्मवाहन को
 शीशखिलौनादीनो । इतनीसुनत कुन्ति उठिवाई वरयतलोचन नीर ।
 पुत्र कवन्ध अंकभरि लीनो धरत न क्षरा यकधीर । लैलैश्रीरा हृदय

लपटावत चुम्बति भुजागँभीर । त्यागतप्राणा निरखि प्रायकधनुगति
 गति बिकल शरीर । टाढ़े भीम नकुलमहदेवा अरु भूपति सब बिप्रा
 समेत । पौढ़े कहा समर शय्यासुत उठिकिन उत्तरदेत । कथितभये कहू
 संव न पुरई कीने मोह अबेत । पारथ बैठि बन्धुको गर्जहि पुरई हों
 कुरुखेत । काको बदन निहारि द्रौपदी दीनदुखी संभरि हैं । काकी
 ध्वजा बैठि कपि किलकहि किहि भय दुर्जन डरि हैं । काके हित
 श्रीपति यहँ ऐहँ को संकट रक्षाकरि हैं । को कौरव दल सिन्धुमयन
 करि या दुखपार उतरि हैं । चिन्ताहानि चितै अन्तरंगति नागलोक
 को धाये । पारथ शीघ्र शोधि अष्टाकुल तब यदुनन्दनलाये । अमृत
 गिराबहुबरिय सूरप्रभु भुजागहि पार्य उठाये । अञ्चममेन बधुबाहन लै
 सुफलयन हितआये १४१ अधमकीजु देखी अघसाई । तुमविभुवन-
 पतिनाथ हमारो मोपैकही न जाई । जबते जन्यलरणा अन्तरहरि
 करत न अघाहि अघाई । अजहँ लौं मनमगन कामरत बिपरति नहिं
 उपजाई । परमअज्ञान लक्षि नहिं जडमति यहँ बडि मरखताई । पाँचौ
 देखि ठहै ठगु ठठहि ठगोरी खाई । स्मृति वेदपंथहरिपरके तातेदियो
 भुलाई । कंटककुटिल कवनिकाननमधु सोतोदियोदिखाई । अब कह
 कहाँ सबै जानतही मेरीकुमति कन्हाई । मूरपतितको नाहिं कहँ गति
 राखिलेहुगरताई १४२ ते जन चाहैं कृपातुम्हारी । जिनकेबश अनेक
 अनमिषगता अनुचर आज्ञाकारी । सुनिखुतरहे सतश्रुतिधार । जेमत
 तुमको जननि प्रकट्योजानि जगआधार । विपुल बिद्या बिलास मन
 गतिमोह तनजंजार । जजतिधन अम शोकदुखसुख कृष्णचरणआधार ।
 औरअखिल उपाय अनुदिन योगव्रत तप दान । सूरदास अनेकविधि
 नहिं चरणा भजन समान १४३ अपने को कौन आदर देय । ज्यों बा-
 लक अपराध कोटिकरै मात न मारैतेय । ते बेली कैसे दहियतहैं जे
 अपनेरस भेद्य । श्रीशंकर बहुरतन त्यागिके बियहिकंट लपटेय । माता
 अक्षत क्षीर बिनु सुतमरै अजाकंट कुचसेय । यद्यपिसूर महापतित है
 पतितपावन तुमतेय १४४ ऐसेमाधवसीतहमारे । सदा सहाय कियो
 सुख दीयो संकट हुये रखवारे । जिन लाखा गृह जरत उबारै द्रौपदि
 लाज निवारी । जमन प्रवाह बहेउ अम्बर ते जज कहि नाथ पुकारी ।

जिन भारत पारथ रथ हांक्यो द्विजहि प्रतिज्ञा कीनी । दुरत बज्र
 बाणावलि छूतपीठि आनि प्रभुदीनी । आपुन करतहरत पुनि आपुन
 और न दूजो कोई । रथ पर बैठि बट प्रव शयनकरि प्रलय करतहैं
 ओइ । ते कहुकरि अभिमान आपनी बोहयो बचनअनेरो । तातेसुर
 प्रभु बलकरि राख्यो गर्वप्रहारेउ तेरो १४५ ॥ रागभैरव ॥ ऐसेहि बसिये
 ब्रजकीबीथनि । साधुनके पनवारे छुनिछुनि उदर जु भरिये सीथनि ।
 पैडिसेके बसन बीनितन छाया परम पुनीतनि । कुंजकुंजतर लोटि लोटि
 रचि रजलागे रंगीतनि । निशिदिन निरखि यशोदा नन्दन अरुयमुना
 जल पीतनि । दर्शन सुरहेत तन पावन दर्शन मिलत अतीथनि १४६ ॥
 रागआसावरी ॥ हरिजु मेसों पतित न आन । मनकम बचन पाप जे कीन्हे
 तिनको नहीं प्रमान । चित्रगुप्त यमद्वार लिखत हैं मेरेपातक भारि ।
 तिनहुं घाहि करी सुनिये गुण कागद दीन्हेडारि । औरन को यमके
 अनुशासन किंकर कोटिक धावैं । सुनि मेरी अपराध अधमई कोउ
 निकटनहिं आवैं । हैं ऐसेो तुम वैसे पावन गावतहैं जे तारे । अवगाहो
 पूरणा गुण स्वामी सुरसे अधम उधारे १४७ ॥ रागसारंग ॥ अब हों हरि
 शरणागत आयो । कृपानिधान मुदुखिहेरिये ये पतितन अपनायो ।
 ताल मृदंग पांच इन्द्रिन मिलि बीणा बेरा बजायो । मन मेरे नट के
 नायक उन तिनहीं नाच नचायो । उधत्यो सकल संगति भवसागर
 अंगनअङ्ग बनायो । काम क्रोध मदलोभ मोहके तान तरंगन गायो ।
 सुर अनेक देहधरि भूतल नानाभाव दिखायो । नाच्योनाच लसचौ-
 रासी कहुं न पुरो पायो १४८ ॥ राग जेतथी ॥ अबहों सब दिशि हेरि
 रहैउ । कोऊ नहिं राखत करुणामय अतिबलप्राह गहेउ । सब स्वा-
 रथी असुर सुर नर सुनि कत अम आनि करे । तारण उदित तिमिर
 नहिं नाशैं चितरवि रूपधरे । इतनी सुनिआये कसलापति निजकर
 घकलये । । इति राजशङ्ख सुरके स्वामी सब सुख आनिदये १४९ ॥
 राग धनाश्री ॥ कहौ शुक श्रीभागवत बिचारि । हरि की भक्ति युगहि
 युग बरधे और धर्म दिनचारि । चिन्तातजौ परीक्षितराजा मुनिशिय
 सांच हमारि । कमलनयन की लीलागावत हरिगये नेक बिकारि ।
 सतयुग सत वेता तपकीनो हापर पूजा चारि । सुरभजन या कलि में

कीजै लज्जया काननिवारि १५० ॥ राग जंगला ॥ तुम्हारो कथा कहत
 कह जात । बिहुरे मिलन बहुरि कबसेये ज्यों तरुवर के पात । शीत
 बात कफ कंठविरोधो देखतजननीजात । सरायक माहिं कोटियुग
 बीतत नरकी कितनीबात । यह जंगप्रीति सुआ सेंबर ज्यों चारखतही
 उडिजात । सूरदास ओछेजीवनको काहेकोइतरात १५१ ॥ रागबिलावल ॥
 गोविंद भजन करो यहि बार । शंकर पार्वती उपदेशत तारक मन्त्र
 अपार । अश्वमेधयज्ञ जो कीजै गयाआइकाशी केदार । रामनाम सर
 तेउ न पूजो ज्यों तनगारेहै मार । सहसवार जीवतहै बरसों चक्रवर्त
 रजधार । सूरदास भगवन्त भजन बिन होत यहै यमद्वार १५२ रे सन
 सुमिरिहरिहरि । सत्युग माहिं नामशर परतीतकरिकरि । हरिनाम
 हरणाकुशबिसारो उढोबरबरवरि । प्रह्लादहेत जनअमर मारेउ नाहिं
 हरडरडरि । गज गीघ गगिका व्याधके अघ गये गिरिगिरिगिरि ।
 चरणाभ्रबुज बुद्धिभाजन जल भरिहिभरिभरि । द्रौपदीके लाजकार-
 गा दावपरपर परि । पांडुसुतके बिघटारे गये ढरि ढरि ढरि । करसा
 दुर्योधन दुशासन शकुनिअरअरअरि । सुतहेत अजामिल नामलोन्हे
 गयो तरतरतरि । चारिफल के दातिहैं प्रभुरहे फरफरफरि । सूर श्री
 गोपालहिरदय राखि धरिधरिधरि १५३ ॥ राग घनाश्री ॥ बिचारतही
 लागे दिनजान । सजलशरीर काकही डीने कोसल केहिबिधि राखै
 प्रान । योग न यज्ञ ध्याननहिं सेवा सतसंगति नहिंजान । जिह्वा स्वाद
 बियथके कारणा आपघटै दिनमान । और उपाय नाहिंरे बौरे सुनती
 यह दैकान । सूरदास अब होत बिलम्बन भजले शारंगपान १५४ ॥
 राग घनाश्री ॥ अब मैं जानी देहबुदानी । शीश पांवधरि कह्यो न मानै
 तनकीदशासिरानी । आनकहत आनैकहिआवत नयननाकबहैपानी ।
 मिटिगइ चसकदमक अंगअंगकी गई जुमति हेरानी । नाहिरहीकहु
 सुधि तनमनकी ह्वैहै बातबिरानी । सूरदासप्रभु अबहिं चेतलो भजले
 शारंगपानी १५५ सन तोसां केतिकही समुझाई । नंदनन्दनकेचरणा
 कमलभजि तजि पखंड चतुराई । सुख सम्पति दारा सुत हैं जग भूठ
 स्वप्न समुदाई । सरा भीतर ऐसे वे श्याम बिन अन्त नहीं संग जाई ।
 जन्मत मरत बहुत युग बीते अजहूँलाज न आई । सूरदास भगवन्त

भजनविन भूतजन्म गाँवाइ १५६ ॥ राग विलावल ॥ जेहितन हरिकेभजन
 कियो । यहैलोक परलोक सुफलहोताको धन्यजियो । सन्तसमागम
 श्रीगुरुसेवा अमृतसर जो पियो । सुरदास धनिभागताहिके हरिचर-
 नानिचितदियो १५७ ॥ रागमाह ॥ अवसर हारेउ रे तेहारो । मानुयजन्म
 पाय नरबौरे हरिको भजनबिसारो । रुधिर बूंदते साजि कियो तन
 सुन्दररूपसँवारो । जठरअग्नि अन्तर ऊरधमुख जिनदशमासउबारो ।
 अन्ध अचेत मूढमति बौरो सो प्रभु क्यों न सम्हारो । पहिरिपटस्वर
 करिआइम्बर यहतन हठ शिंगारो । काम क्रोध मद लोभ विधारति
 बहुविधि काजबिगारो । सरगा बिसारि जीवनहिं जान्यो बहु उद्यम
 जियवारो । सुतदाराकेजोह अँचैविष हरिअमृत फलडारो । भूढसांच
 करि मायाजोरी रचिरचिभवनउसारो । कालधरी परगामइजादिन
 तलहो रथागि सिधारो । प्रेतप्रेत तेरोनाम परेउनर भौरीबाँधिनिका
 रो ॥ जेहि सुतकेहित बिमुख गोविन्द ते प्रथमैं मुख जिनजारो । भाई
 बंधु कुटुम्ब सहोदर सबमिलि यहै विचारो । जैसे कर्मतहो फल तैसे
 तिनका तोरि उवारो । सतगुरुको उपदेश हृदयधरि जिनदुखसकल
 निवारो । हरिभजु बिलंबछाँडि मूरजप्रभु ऊँचे ढेर पुकारो १५८ ॥
 राग विलावल ॥ भूँहारे भजु चरणाकसलपद जहँ निशि को नहिं बास ।
 जबबिधुभान समानसकरस मूरवरिज सुखरास । जहँ कंजलजा भक्ति
 होत नहिं लक्षणा काम ज्ञान रसअङ्ग । निगम संग सुख शारद नारद
 भँवर सुभृङ्ग अनंग । शिव विरचि खंजन मनरंजन क्षणा क्षणा प्रकट
 अवेश । सुनुमधुकर ध्रुम त्यागि कुमुन्दन नाहिन तहँ राकेश । सहससु
 कीडा करत रमायुत कोटिक सूर्यप्रकाश । मूरजप्रभु सुगंधमें प्रफुलित
 तहँचल करिये वास १५९ ॥ रागविहारो ॥ भजु मन चरणा संकटहरणा ।
 सनक शंकर ध्यान ध्यावत निगम अशरणा शरणा । शेष शारद कहैं
 नारद सन्त चिन्तत चरणा । पद पराग प्रताप दुर्लभ रसा बोहित फ-
 रणा । परशरंगाभई पावन तिहँपूर धरधरणा । चित्तचेतन करत अन्तः
 करणा तारणा तरणा । गयेतारि लौ नाम केतेसंत हरिपूरधरणा । जास
 यदरज परशि बौतस नारिगति उद्धरणा । जाकि सहिमा प्रकट कहत
 न धोय पराशिर धरणा । सोई कृष्णपद सकरंद पावत और नहिंशिर

परगा । सूरप्रभु चरगारविन्दते मितै जन्म श्री सरगा १६० ॥ रागबिला-
वल ॥ जादिन सन्त पावने आवत । तीर्थ कीटि अस्नान करन फल
जैसे दर्शन पावत । नित बिनोद दिन दिन प्रति उनके चरगाकमल
चितलावत । मनबच कर्म और नहिं जानत सुमिरत श्री सुमिरावत
मिथ्या बाद उपाधि रहतहैं बिसल २ यश गावत । सूरजदास भक्ति
कर तिनके जे हरि सुरन करावत १६१ ॥ रागबिहागरो ॥ गर्बगोविन्दहि
भावत नाही । केशी करि हरिरायकश्यप सों प्रकटहुये सरा साहीं ।
जगजानै करतूतिकसकी वृषभासुर मारो पलमाहीं । ब्रह्मा इन्द्रादिक
पहिंचाने गर्ब आदिके साहीं । यौवनरूप राज धन धरती जैसे जलद
कि छाई । मुरदासहरि भजो गर्बतजि बिमुख अगतिको जाई १६२
मुनिमृप लारियो करनविचार । भूतेनाते जगतकेसुत कलवपरिवार ।
चलत न कोऊसंग चलैगो मेरिरही मुख नारि । गाढे आवतकाम
सामही देखो सूर बिचारि १६३ ॥ रागकैकीटी ॥ जादिन मनपंकी उडि-
जैहैं । तादिन तेबेत्तनु तरवर के सबैपातभरिजैहैं । या देहीको गर्बन करिये
स्थार काग और गिदाखैहैं । तीननामतन बिद्याकमि हूँ नातन खाक
उडैहैं । कहँवह नीर कहाँ वह शोभा कहँ रंगरूप दिखैहैं । जिन लो-
गनसों नेहकरतुहैं तेही देखिघनैहैं । घरके कहत सबारे काढो भत
होय धरिखैहैं । जिन पुषनहिं बहुत प्रति पालेउ देवीदेव सबैये । तेइलै
बांसदियो खोपरी में शीशफाट बिखरैये । अजहूँ मूढकरोसतसङ्गति
संतनमें कुछपैहै । नरबपु धरन जननहीं हरिको यसकी मारखैहै ।
सूरदास भगवन्त भजनबिनु मृथासुजन्म गवैहै १६४ ॥ रागकान्हरो ॥ ध-
निशुक मुनि भागवत बखान्यो । गुरुकी कृपाभई तबपरगा तबरसना
काहि जान्यो । धन्यप्रथाम वृन्दावन को सुखसंतन यातेजान्यो । जो
रस रासरंग हरिकीन्हो वेदनहीं ठहरान्यो । सुरनर मुनि मोहित सब
कीन्हें शिवहि समाधि भुलान्यो । सूरदास तहँनयनबसाये और कहूँ
चितनहिंठान्यो १६५ अविगति गतिकहु कहत न आवै । जो गंगी
मीठे रसको फल अंतरगतही भावै । परमस्वादसबसों निरअन्तरअमित
अ उपजावै । मनसाने की अगम अगोचर सो जानै सो पावै । यहै
हिये सूरजप्रभु मगुसालीला पदगावै १६६ ॥ रागबिहागरो ॥ चौ-

परि जगत मध्येयुग बीते । गुणापांसा क्रमब्रंशदशा चौसारि न कबहुं
 जीते । दिशफर चार मनोरथ घरफिर फेरिकेरि गुणा आवैं । काम
 क्रोध मिलि लोभके संगम खे तगत हारि न पावैं । मातगर्भ स्थिति
 पाइपिता दशमास उदरसे डारैं । जनमछठी छक और बधाई दुइछक
 दुइपुनिघारैं । मुराडनकरनबेध व्रतबंधविवाहगवनगृहबासी । आलिंगन
 चुम्बन पारिरंभन नखछत चारु परस्पर हांसी । केतकि करणाबेलि
 चंबेली सुमन सुगन्ध सिंचाये । रचहि तलप निशिभोग चतुरसम
 बहुत सकादश प्राये । उर परशत सबअंग बिलोकत क्रीडत सुखसुख
 जीके । चोलीचीर अलक भूयसा फिरि साजतपिय भवनी के । नख
 शिख साजिशिंगार सकल ब्रिय सुन्दर बदननिहारत । बिधि बिलास
 सकल कौतुकरस छदश अंकभरि डारत । यौवनमद जनमद मादकमद
 धनमद विधमद भारी । कामबिबश परनारि भजत दुइ पंचशरहि
 फिरि मारी । प्रौरि प्रगारि मइल मन्दिर रचि राजत अंत अटारी ।
 भीतर भवन विचित्र बिराजत पंचदुवा दशहारी । कथी बसाज बयो-
 हार ग्रामपति हय बांधत दरहाथी । करि अभिमान हरीसों बेमुख
 संग नहीं कोउ साथी । रतन रजत कंचन मुक्तामणि मारिाक संचित
 कंसिकंसि । छह सनि गुणात छहो रसबिलसत कहत अटारइ हंसि
 हंसि । परिव्राते पंचिमी दशमि कहुं पोतठका नित कीन्हा । पंजा
 तीनिपरे नीकीबिधि बिप्रति भोजन दीन्हा । स्वजन समधि परिवार
 दासदासीजन सबको हितकारी । दाव धाव गति देखि करति रति
 पंजा पारत न्यारी । संध्या तिमिर इन्दु दुविधा दुइठोक निगम पथ
 चालत । अवरा पुराणा शिला तुलसीदल पूजित दुखितहि पालत ।
 पंचवरय दशवरय औरिछक युगखेलहु खिलवारी । शिशुगइ जीतकि-
 शोर कालहति मनुकांची करिडारी । पुनि पौछक औरी छक पंजा
 साजिसारिसँख फोरै । तितनेदाउँ बहुरि फिरिखेलो तरुणाबिरधयुग
 जोरै । अमावस पुनोसंक्रांति ग्रहणा द्विजकर प्रभवामेलत । सकादशी
 द्वादशी संयम कहूदेत छकखेलत । मंगल बुधगुरु शुक्रभान शशिशक्ति
 करत ग्रहतीके । राहुकेतु चन्द्रमा सुसंयुत कृतन परत हितजीके । सैन
 उद्यान अमर्दबिना जन उपवासन तनसाधे । दुइ चौदशी जनम निशा

शिव पांचचारि मनबांधे । हारावती गोमती पुष्कर तीर्थ प्रयाग अ-
 न्हाये । गर्जन मनकी कठिन मलिनता कहाभयो धमिआये । बारह
 बज्रके परिदक्षिणा पंचद्वादशे पेयत । जपतप संयम नेम धरमव्रत
 करिकारि कष्ट सकलत । लोचन अथवा त्वचा सेजारे सर्वस कोनहिं
 कांधे । सुधिबुधि सुमति सुरजिगइ दशनिव जुराजुग विधिबांधे । ध-
 रत चरणा निरलरत लकटले चलन नवल कइ कांपत । कासस कफ
 करतन गिरिवरधुक तदाबिहूरत भायत । सुतबनिता हित पांचो नेह
 नातो सबहीं टूटे । दावकुदाव परे दुइपंचते जोरामिलु युगफूटे । बालक
 तरुणा विरध अधजर जितिसारी दिगदारी । सूरसकथो नामबिनानर
 फिरि फिरि बाजीहारी १६६ ॥ रागधनाथी ॥ जन्मगँवायो उठायबाई ।
 भजेचरणा श्यामसुन्दर के रहेउ बिलोकत भाई । धन यौवनमद सेइइ
 सेइतोकात फिरेपराई । लालछलुध्व आन भूपदन ड्यो तेऊ हाथ न
 आई । रंचकरचि सुखकांच लागिकत कंचन राशि गँवाई । सुरदास
 प्रभु छांड़ि सुधारस मरतबियय बियखाई १६७ सो कहाजु मैं नकियो
 जे चितवरिहो । पतितपावन बिरद प्रकटको निपांति करिहो । जननी
 अठराह सुचित तिनको दुख दीन्हे । सुधि तेल तमार गतिहि अपने
 गवन कीन्हे । जवते जग जन्म पाइ जीवनासु कहायो । तबते मोहिं
 ओगुगागभो औरनकहा आयो । असत संगत स्वादलम्पट कपटी गुरु
 द्रोही । जेते अपराध काहि अन्तलागत सबमोही । सुकृती शुचिसेवक
 रुचिकहि न जीवभावै । प्रभुकी प्रभुतावहै जुदीन शरसापावै । श्याम-
 सुन्दर कमल नयनसकल अन्तरयासी । बिनतीकहे कोन सूरकूरकु-
 टिलकामी १६८ राग शोष्ठ ॥ ड्यो प्रभुमेरो होयबिचारी । कियोअपराध
 अनेक जनस भरि तटवर रूप धरेउ अधिकारी । पुहमीपर्वसंधु मसि
 करिके गिरिकंचन मिलिगारो । सुरतरवरकी शाखालेखनि लिखत
 शारदा हारो । पंचित उधारन बिरद बिदित जग वेदपुरारा पुकारो ।
 सूरश्यामहे पतितशिरोमणि तारिसकी तौतारो १६९ ॥ रागधनाथी ॥
 जनम तो सेसेहि बोतिगयो । जेसरंक पदारथपायो लोभबिसाहिलयो ।
 बहुतकजन्म पुरीयपरायण शूकर प्रवानभयो । अबमेरो मेरीकरिबोरे
 बहुरो । नरकोनाम पारगासीहे सोतहिं श्याम

नारिकेलि कपिकर ज्यों पायोनाहिं पयो । रजनीगत दासर मृगस्यया
 में हरिको न बयो । सूरनन्दनन्दन जिनिबिसरेउ आपुहि आपहयो १७०
 अब मोहिं भीजत क्यों न उबारो । दीनबन्धु करुणानिधि स्वामी जन
 के दुःखनिवारो । समताघटा मोहकीबुन्दे सलितामें न अपारो । बूझत
 कबहुं थाहनहिं पावत गुरुजन ओटअधारो । गरजन क्रोधलोभकेनारो
 मूकत कहुं न उधारो । तृष्णातडित चर्मकि संसाहीं क्षणा यह निशि
 यहतन जारो । यहभव जल कलिलमलहि गहेहै बोरत सहस पुकारो ।
 सुरदास पतितनको संगी विरदहि नाथसम्हारो १७१ ॥ रागटोड़ी ॥ गो-
 बिंदपदभजु मनबच क्रमकरि । शुचिशुचि सहस समाधिसाधिशठदीन-
 बंधु करुणामय उरधारि । मिथ्यावाद बिबाद छांडि शठ विषय लोभ
 मुदमोहै परिहरि । चरणा प्रताप आनि उरअन्तर और सकलदुखया
 सुख तरहरि । वेदनिकहेउ समृति इमिभाष्यो पावन पतित नामहेनिज
 हरि । जाके सुयश सुनत असु सुमिरत जेहै पापवृन्द तजि नरहरि ।
 परम उदार श्यामसुन्दरवर सुखदाता सन्तनहित हरिधारि । दीनदयाल
 गोपाल गोपपति गावतगुणा आवतहिग ढरहरि । अजहुं मूढचेतै चहुं
 दिशितेउपजीकली अगिनि भक्तभरहरि । जवयमजाल पसारि परैगो
 हरि बिनु कौन करैगो धरहरि । सूरकाल बलव्याल ग्रस्यो जिनि श्री
 पतिचर्या परहिं कनि फरहरि । नाम प्रतापआनि सुहृदयमहँ सकल
 बिकार जाहिसब तरहरि १७२ ॥ रागगुनीया धनश्री ॥ अब शिरपरी टगौरी
 देव । ताते बिबशभयो करुणामय छांडि तिहारी सेव । साया सन्ध प-
 ढत मन निशिदिन मोह मूरछा आवत । ज्यों मृगनाभि कमल तजि
 अनुदिन निकट रहत नहिं जानत । भ्रमसंद सलकामी तृष्णारस बेग न
 क्रमैगहेउ । सूरसक पलगाहरु न कीन्हे कहियुग इतै रहेउ १७३ साया
 देखतही जुगई । नाहरि हित नहिं तूहित इनमें सकौ तौ न भई । जो
 मधु सायो सर्वान्तरन्तर बनकी ओटलई । व्याकुलहोतहरेज्यों सरवर
 आंखिन दूरिदई । सत सन्तान सजन वनिता रति घन समानउनहीं ।
 राखे सूर पवन पायराडहति करिजो प्रीति नहीं १७४ ॥ रागआषावरी ॥
 वृथाही जन्मलियो संसार । कबहुं भक्ति न कीन्हे हरि की वियय
 लिये शिरभार । युगयुग जपतप नाहीं कीन्हे अल्प मितो आसार ।

प्रकटे नर नहिं दुर्लभ गये जन्म सब द्वार । कामक्रोध मदलोभ मोह
में हों निशि दिन रहो जार । मूर हरिको सुग्रश गावहु जाते मिरहि
भवभार १७५ ॥ रागधनाथी ॥ काया हरिके काम न आई । भावभक्ति
जहँ हरियश सुनियत तहांजात अलसाई । लोभ उतर ह्वै काममनोरथ
तहां सुनत उठिवाई । जबलग प्रयास अङ्ग नहिंपरशत अन्ये ज्यों भर-
साई । सूरदास भगवन्त भजनबिन बिषय परम बिषखाई १७६ ॥ राग
खोष्ट ॥ ऐसी मूढ़ता या मनकी । परिहरि नाम भगत मूरसरिता आश
करत आसनकी । योग कसौटी फटकमें कांडीमान मनायो तनकी ।
दृढ दशन न जानत री रसमयी अतिहि छवि अंगनकी । धूम समूह
निरखि चाहत रुज्यों लप्याहोत अतिघनकी । नाहिंन तहँ शीतलतादेखत
हानिहोत लोचनकी । कहलों कहां कुचाल आपनी जानतहौ गति
जनकी । सूरदास प्रभुहरहु दुसह दुख लाजकरो निजपनकी १७७ ॥
राग केदारो ॥ तुमहिं अकृत कहा दुखदयाल । दीन जानिके हरत नाहिंने
कहा जिये बहुकाल । सत हूटे धन धर्मगँवायो कहादिये सगालाल ।
कनक सांगि तप छिजित दिनैदिन द्वारे रत बिहाल । मूरश्यामको
करो निहोरो चलत वेदकी चाल १७८ ॥ रागधनाथी ॥ मोते औरकौन
है पापी । घातक कुरित चबाई कपरी लोभमोह सन्तापी । लरूपद
धूत पूत कौडीको बिषय बास जब आपी । दुसहकर्म कीन्हे निशि
बासर कटुक बचन आलापी । सकुमिछ अपयच्छ पछहो करि न
लालसा धापी । यकमति बारमुखिन के संगमें गमनऔर मनव्यापी ।
जितने पतित पदारे सुमिरत तिनकी गतिमें सापी । सागरमूर बिकार
भरेउ जैसे व्याध अजामिल वापी १७९ तुमतिज भूल्योभूल्यो डोलत ।
लालचलगे कोटि देवनके फिरत कपाटन लोलत । ज्यों तजि सर्वस
कीन्हे चाहै तब लग दुहुंकी प्रीति । फल मांगत ही हेत मुकर सुख
यहदेवन की रीति । तजि कञ्चनहिं कांचमरिा अनुचित या माया के
लीन्हो । चारिपदारथको प्रभुदाता सोउ बिसर्जनकीन्हे । तुमकपाल
कसणामय केशव अखिललोक के नायक । सूरदास फिरि दुहकारि
पकरे अब ये चररा सहायक १८० ऐसेहि जन्म बहुत बौरायो । बि-
सुखभयो हरि चरराकमल तजि मन सन्तोष न पायो । जबजब प्रकट

क्रियो जल थल तवतव अनेक वपुधारे । काम क्रोध मद लोभ महा-
 तम रचे अटल अधभारे । प्रकटेविप्र गीधगणिका गजकेशि कंसखल
 तारे । अर्ध बक्र वृथभ बकी धेनुकहति ब्यालहरणा दुख तारे । शंख
 चूड मुष्टिक प्रलम्ब बधि लग्नावर्त संहारे । कालीदमन पियो दावा-
 नल भवजल जलाधिउबारे । जनदुख जानि युथल द्रुम भंजन अति आ-
 तुर है धाये । कर गिरिधरि वासव मदमर्दन सन्तन सुख उपजाये ।
 रिपु कचगाहन द्रुपदतनया तन शरणाशरणा कहि भाखी । पांडवबध
 द्रुपदतनया की सभासांभू पति राखी । मृतक जिवायदियो गुरुकी
 सुत ब्याध परम गतिपाई । नन्द बरुणा भववन्धन मोचन सूरपतित
 शरणाई १८१ दयानिधि तेरी गति लखि न परै । अकरण करन
 करनअकरणजो करनहंकरनकरै । जय अरु बिजय पाप कहकीन्हो
 ब्राह्मणा शापदेवायो । असुर योनि ता ऊपर दीन्हो धर्मजु क्षीराक-
 रायो । पिताबचन मैतै सोइ पापीसो प्रह्लादाहि कीन्हो । ताके काज
 खम्भसों प्रकटे नृसिंह रूप तब लीन्हो । यज्ञकरन बैरोचनके सुतवेद
 विविधिविधिधर्मा । तेतुमबांधि पताल पठायेकौन दयानिधि कर्मा ।
 दानिसुधर्म भानुसुत कहिये ते तुमबिमुख कहाये । अधर्मधर्मसों पांडव
 सुत ज्यों सो तुम्हरे मनभाये । पतिव्रता जालन्धर युवती ते तुम व्रतते
 तारी । अधमयोनि की मर्मपूकरी सुवा पढावततारी । मुक्तहोत योगी
 जन अमकरि असुरबिरोधे पावै । अकथ कथा कसणामय तेरी सूर
 कहा कहि गावै १८२ ॥ रागगौरी ॥ कोको न तरेउहरिनामलेत । पतित
 अधम गणिकाहै केत । मुआ पढावत गणिकातारी । व्याधतहां सरि-
 घातहै डारी । अन्तर दाहको मैतै उपास । कोइयक हरि जन सांग्यो
 दास । तारे खग मृग पशूपखान । तारे इन्द्रजु लिये बिमान । कोउ योग
 युक्त कोउ भक्ती भाई । ध्यान ध्यान कोउ गुरु लखाई । कोउ पूजाकरि
 यज्ञअचार । कोउअस्नान धन देतअपार । चिन्ताचित सबमेदहुमान ।
 सूरदासहरि परगतवान १८३ ॥ राग धनाश्री ॥ जिनतनना हरिभजनक्रियो ।
 शूकर खग कूकर खगमृग मानो यहि सुख कहा जियो । जो जगदीश
 ईश सबहिन को कबहुं न लाय हियो । निपट निकट यदुनाथ बिसारी
 साया मदीहि पियो । चारि पदारथके प्रभुदाता नहिंचितचरणादियो ।

सूरदास भगवन्त भजनावन दृष्टाहि जन्मलियो १८५ हिराजिन परेउ
हरि मेरी । सायाजल बडतही तकिट चरणा शरणा धरि तेरी । भ-
वसागर बोहिस बपु मेरीलोभ पवन दिशि चारो । सुत धनदास लह्या
हित औरै लुब्धो बहुत विधि भारो । अब भुवभँवर परेउ व्रजनाथक
निकसन की सबविधि की । सूर शरद शशि बदन दिखाये उठैलहर
जलनिधिकी १८५ ॥ रागकान्हरी ॥ जो अपने मन हरिसों रांचे । आन
उपाय प्रसङ्गकांडिके मन बच कस अनुसांचे । निशिदिन नाम लेतहै
रसना फिरि जु प्रेमरस सांचे । यहि विधि सकल लोकमेंबांचे कौन
कहै अब सांचे । शीत उष्ण सुखदुख नहिंमानत हर्षशोक नहिंबांचे ।
जाइ ससाइसूर वा निधिमें बहुरि जगत नहिंनाचे १८६ ॥ रागधनाशी ॥
मैं हरि उधरि दावँ दै हारेउ । आशा भंग भईका सोपै बचन पायजु
तिहारेउ । हारि मानि उठि चले दीन ह्वै जानि आपनीकैद । समुक्ति
लेहु तुमइतनीसोपै बचन तिहारेवेद । उतरुनको उत्तरनहिं आवैतबहौं
मिलि उल्लिजाते । तुम्हरी कीरति बातब्रह्मकी अधर बचन सदमाते ।
अपनीचालि जोरि मनहींमनचले वसीटीतेरी । सूर सकलभंग न कांपै
मैं देख्यो सकलहरी १८७ ॥ राग कान्हरी ॥ दीनजनकैसे आवैशरणा । भूले
फिरत सकल जलथल मन मुनहु ताप त्रयहरणा । परमअनाथबिबेक
नयनबिन निगमनयन नहिंपावै । परा २ प्रतिक्रम कूपमोहतसकोकिरि
कृपा बतावै । नहिंकरलकुट सुमति सतसंगतिजेहिअधार अनुसरिये ।
प्रबल प्रस्त्रेदइमति दशहृदि से सुधी कहै कह करिये । उदभटआन
दैव याचत नहिंसुकुत शब्दसुधि पावै । सूरश्याम पदनख प्रतापबिन
को यह तिमिर सितावै १८८ ॥ रागभोरठ ॥ देखो ऐसेो हरिस्वभाव ।
बिनगंभीर उधारउदधि प्रभुजानि शिरोमणि राव । बदनप्रसन्न कमल
पद सन्मुख देखत हैं जैसे । विमुख भयो कि कृपा वा मुखकी फिरि
चितवोतौ सैसे । सरसों इतनी सेवाके गुण मानत मेरु समान । मानत
सकुच सिंधु अपराधहि बंदआपनेजान । भक्तविरहकातर करुणामय
डोलत पाछे लाग । सूरदास ऐसेप्रभुको दये पीछेपीठि अभाग १८९ ॥
रागपरज ॥ पतित पावन हरि नाम तिहारो कौनै हो धरो । हौतौ दीन
दुखित संशयरत हारेरत परो । जीवयोनि यातना रुधिर जीव मल

जबजन जठरजरो । तबहीं तब्रतुम निकर बिहारो शत अपराधभरो ।
 ब्रिहस्पति भवप्रसूत मइत यम काल कलश निदरो । औरो कोटि कु-
 टिल करुणामय तिनते कहा सरो । ना जानौ वह सुर महाशठकौन
 दोष बिसरो १६० ॥ रागधनश्री ॥ जगतपति नामधुन्यो हरितेरो । मन
 चाहकजल तज्यो स्वाति हित सकलपुत्र व्रतधारो । नेकबियोग गिनत
 नहिं मानत प्रेमकाग वपुहारो । राकानिधि केतेअन्तर शिर निमिय
 चकोर न लावत । निरखि पतंगध्यान नहिं छांड़त यदपि उद्योतितनु
 तावत । कीन्हे नेह निवाहि जीवजइ तेइत उतनहिं चाहत । जैहैकाहि
 समीप सूरनर करि वचन न दोउदाहत १६१ ॥ रागबिहारी ॥ जोपैराम
 नाम धन धरतो । दरती नहीं जन्मजन्मान्तर कहा राज यम करतो ।
 लेतो करि व्योहारसबनिशों मूलगांठि में परतो । भजन प्रताप सवाई
 धृतमधुपावक परे न जरतो । सुस्मृतगोविंदबिधि बैठी विप्रपरोहन
 भरतो । सूरचले बैकुण्ठपैठिके को बिचकौन जाअरतो १६२ ॥ रागभारत ॥
 गोविन्द हैं मनकेसीत । राजअरुव्रज प्रह्लादद्वीपदी सुमिरतहीनिप्रचीत ।
 लाक्षागृह पांडवन उवारे शाकपत्रमुखनाये । अंबरीषहित शापनिवारे
 व्याकुल चलेपराये । नृपकन्याको व्रतप्रतिपारे कपटभेद्यइकवारो ।
 तामेंप्रकटभयेथीप्रतिज अरिगणागर्भप्रहारो । कोटिध्यानवै नृपसैनासब
 जरासंध बँधछोरै । भगवतिबिरहके अंतहिपाये गर्भअधुरबलनाशोरै ।
 शुरुबांधव हितमिले सुदामहिं तनुज पुनिहीं यांचत । प्रेमबिकलताल-
 खिगोपितकी बिबिध रूपधरि नाचत । संकटहरराचरराहरिप्रकटे वेद
 बिदित यशगावै । मूरदाससेसेप्रभु तजिकैघरघर देवमनावै १६३ ॥ राग
 रामकली ॥ ब्रजनाथअनाथहिकेसंगी । दोनदयाल दुखितकरुणामय जन
 हितकारराप्रभुबहुरंगी । प्रारथपतिकौरवज सभामेंपठबोलेन कहेउहरि
 संगी । अग्रशासनत बरुणा सरिताअति बाढी बसनउमंगी । कहावुं धरी
 शीलरूपगुणा बशभये ललितविभङ्गी । गजग्रासे उद्योउग्र बिनाबल बि-
 लपतबिकल गातगातिखङ्गी । भक्तनबडल कृपानिधि केशव प्रेमिनके
 प्रभुखङ्गी । आयेधाय गडह्मीतजिकै करधरनखटरखङ्गी । अवलोकह
 प्रतिज्ञाप्रभुकी तहांपरम जोपद परनङ्गी । सुनतहि अबरा मूरअति गर-
 जत जगयश अन्नस अन्नङ्गी १६४ ॥ रागकदारी ॥ प्रभुतम दीनके दुखहररा ।

। ससुन्दर सदनमोहन वानअशरराशररा । दूरिदेखि सुदाम आवत
 धाय परशयो चररा । लसयो बहुलस दीन्हों दानअव ढरढरन । वधे
 कौरव भञ्जकीन्हे भयोगिरिवर धरन । सूरप्रभुकी कपाजापर भक्तजन
 सबतरन १६५ ॥ रागधनायो ॥ हैंतीसव पतितनको राजा । निन्दापरमुख
 पूरहीजग यह निशान निजुवाजा । तयादेहसुभृतमनोरथ इन्दीकयी
 हमार । मंत्रीकामसुमतिदेवेको क्रोव हरत प्रतिहारे । गजहंकारचह्यो
 दिगवाजइ लाभकव धरिशीश । भुवपतिजानि भज्योनिज भवतजिसत
 संगत प्रतिईश । मोहमही जीतेसबगावत वन्दीदोय अपार । सूरबिरद
 निजुगढ गहिराखयो अन्तकालकीवार १६६ अबहीं कहौ कौनदर
 जाउँ । तुमजु गोपाल चतुरचिन्तामणि दीनबन्ध सुनिताउँ । मायाक-
 पट रूपकौरव अतिलोभ मोहमद भारी । परबशपरी सुनहु करुणामय
 सनसति पतिव्रियभारी । क्रोधदुशासन गहेलाजपट मरणाधिकपति
 मेरी । सूरनरसुनि कोउनिरुद न आवत सूरसमझि हरिचरी १६७ ॥
 रागनट ॥ सनबशहात नाहिनेमेरे । जिनवातनिने बहेउफिरतहीं तेई वात
 अनेरे । कासोंकहाँ करौंकहु औरै औरै आनतघेरे । तापर दोय लगा-
 वनको शिर बैठो देखत नेरे । कहा करों फिरिबरो बहुत दिन अंकुश
 विनामुकरे । अबके सूरदास याकेबश द्वारपरो हैंतिरे १६८ जोपैसन
 कालिमा न छूटै । तौकहयोग यज्ञतपुकीन्हे बिनकन हितयहिकूटै ।
 कहखान क्रियातीरथ के अङ्गभस्म जटूटै । कहपुराणा पढिभयो अ-
 टारह ऊर्ध्वमके छूटै । मनशीभाकी बहुत बडाई इतने कहु न छूटै ।
 सूरदास तबहीं तमनाशै ज्ञानअगिनि भरफूटै १६९ मेरी बेरहै क्यों
 शीवि । कोटिकै अघ हांस फटबहु ज्योदियो गजमोचि । कौनकरणी
 करीबदि मोसांकरी फिरिकांवि । न्यावकी खुनुसान कीजै चूकपल
 भर बांवि । मैं कहु करबे न छांड्यो या संसारहि पाइ । दीनदयाल
 कपासिंधु भक्तनके सुखदाइ । तऊमेरोसुख मानतनाहीं करत न लागी
 बार । सूरप्रभु यहजानि पदवीचले बेलहिआर २०० ॥

इति श्रीकृष्णानन्दब्रह्मदेवरागसागरोद्भवसूरसागररागकल्पद्रुम
 अपनीदीनेताप्रभुजीकोमाहात्म्यविनयपत्रिकासंपूर्णम् ॥

श्रीरागसागरोद्भव श्रीकृष्ण गोकुल ते मथुरा पधारं
सो लीला प्रारम्भ ॥

रागधनाथी ॥ कछुसकत्रज औरो रहे हरिहरिहे । अवजनि मथुरा
जाहुपरब करहुघर अपने हरिहे । कुशलसोम निरबाहु अहोहरि हरि
हे । खेंटेउर उतमानकेहरि ० । सबनकियो मतिसक अहोहरि ० । अतु-
राजहि देखनचली फूलत कुसुम अनेक । मानोरति बहुखपधरि पति
पहं जातिसटेक । नवेववल नवनागरी नवयौवन नवभूष । नयानेहनित
नाहुमें नवसत सजे अनूप । दशेदिशो दिशि बोधि में घरघर करहिं
अनन्द । नरनारी मिलियांचहीं यशवृन्दावनचन्द । एकादिशि यक
प्रीतिसीं चलींयमुनके तीर । बरसा बरसा बनिबनि चलीं पीतअरुणा
तनचीर । द्वादश अमरणा द्वादशी साजिचलीं व्रजनारि । हरिहलधरहिं
सनावहीं देहिं नन्दकोगारि । तेरसि तियमें तनभई खेलत प्रीतमसङ्ग ।
भरत भरावत लाजही लज्जित कोटिअनङ्ग । चौदशचतुर सखी मिलि
हलधर पकरेधाइ । पुढसांडे छांडे नहीं काजर देहिं बनाइ । दूग्यो
पुरा प्रीतिकारि हरिआये हरिचाइ । बलभैयाको छांडहु फगुवादेहु
संगाइ । मोहनपकरे

करी हमहीं देव संगाइ । नन्द छिडावहु प्रयासको याजगमें यशुले
यशुमति धरि वृषभान को फगुवा हमरो देहु । यशुमति हाँस
सखिनसों राधेलीन्हीबोल । मेवामिथी बहुरतन दईसवन भरिचोल ।
होरोहथिहलायकै मोहनभूलेडोल । गावतसखी निशकहैकहिकहि
अमृतबोल । पाटसिंहासन बैठकारि अरुअभिषेक कराइ । राजकरहु
चितलाइले सूरदास बलिजाइ १ ॥ रागकान्हो ॥ अहो नृप है अरिप्रकट
भये । वसेनन्दगृह गोकुलथनके दियो सुदिनगाये । तुमहंको दुख बहुत
जन्मको रथसारग आरोपे । तादिनते शिशुसप्त देवकी तेरेही कर-
सोपे । जोपरि राजकाज सुखचाहै बेगबुलाय न लीजै । हरिजीति
दोउनकी बिबिधशहू है सोईकीजै । ऐसेकाहि बैकुंठसिधारे कसनिशा
बिकराई । सूरप्रियाम कृतकीबैइच्छा मुनिसनयहैउपाई २ ॥ रागकान्हो ॥

हुम विनुमेरेहित न कोऊ । मुनि अक्रूर पुरत नृपभायत नन्दमहरसुत
ल्यावहुदोऊ । मुनिरुचिबचन रोम हरविततनु प्रेमपुलकि मनकछू न
बोल्थो । यह आयसु पूरसा सुकृत वश सो काहूपै जाय न तोल्थो ।
मौनदेखि परिहंस नृपभीनोमनहुंसिंहसृग आयतुलानो । यहिकसविनु
वे सुत अहीरके रेकतिसुकत मनहिंसकूचानो । आयसु पाइ अथ रथ
करगहि अनुपम तुरंग साजिधृत जोरेउ । सूरश्यामकी मिलनि सुरति
करि मनुनिरधनि निधि पाइ बिमोरेउ ॥

मारउने कंसको समुभायो ॥

रागविलावल ॥ फागरंग करि हरिरस राख्यो । रहेउ न मन युवतिन
के काख्यो । सखासंग सबको सुखदीन्हे । नरनारिनसन हरि हरि
लीन्हे । जोड्यहि भाव ताहिहरि तैमे । हितकोहित दैतबको नैसे ।
महरि नन्द पितु मातु कहाये । तिनहीं के हिततनु धरिआये । युग
युग यह अवतार धरतहरि । हर्ताकर्ता विश्वरहेभरि । धरणी पापभार
भइभारी । सुरन लिये संगजाइ पुकारी । बाहिबाहि ओपतिदैत्यारी ।
राखिलेहु मोहिंशरणाउवारी । राजसरोतिसुरनिकहिभायी । भयेचन्द
सूरज तहँ साथी । सीरसिन्धु अहिशयन मुरारी । प्रभु अवगानि तहँ
परी गुहारी । तबजान्यो कमलाकेकन्ता । दनुजभार पुहुभीसेमन्ता ।
सिंधुमध्य बारापीपरगाशी । भुवअवतार कहेउ अविनाशी । मथुराज-
नसि गोकुलहिआये । मातपिता सुतहेतकहाये । नारदकहि यह कथा
सुनाई । ब्रजलोगन सुखदियो कन्हाइ । नन्दयशोदा बालक जान्यो ।
गोपीकामरूपकरिमान्यो । प्रथमपिवतपयबकी बिनाशी । तुरत सुनत
नृपभयोउदाशी । यहिअन्तरजे दनुजसँघारे । यहिअन्तरलीलाबहुवारे ।
को सहिमाकहि सकैतुम्हारे । बालतरुणा सुखन्यारेन्यारे । धन्यधन्य
ये ब्रजके वासी । ब्रशकीन्हे जिन ब्रह्म उदासी । अकलकला निगसहु
ते न्यारे । ते युवतिन सङ्गवननि बिहारे । आज्ञाइहै मोहिंप्रभुदीन्हे ।
यह अवतार जबहिंभुवलीन्हे । दैत्य दहनसुरके हितकारी । अबसारी
प्रभुकंसप्रचारी । यहसुनिहँसेसुरनिकेनाथा । जबनारद गाईयहगाथा ।
श्रीमुख कहेउ जाय समुक्ताबहु । नृप आयसु करि मोहिं बुलावहु ।
अचलजोरि देव मुनि हरये । कृपानचन तिनसां हरिबरये । तुरत चले

नारदनुपपासा । यहैबुद्धि मनकरत प्रकासा । संकर्यसा हृदयेप्रकटाई ।
 जो बाणीश्रद्धागयेमुनाई । आदिपुरुष अद्वैतबिचारी । शेषरूपहरिके
 मुखकारी । हरिअन्तर्यामी जगताता । अनुज हेतुजगमानत नाता ।
 यहैवचन हलधरकहि भाख्यो । मुनिमुनि अवसा हृदय हरिराख्यो ।
 तुमजनमे भुवभारउतारन । तुमहो अखिललोकके तारन । तुमहोसब
 संसारकोसारा । जलथल जहांतहां बिस्तारा । तबहंसिकहेउ भ्रातसों
 बानी । जो तुमकहत बातमें जानी । कंस निकंदन नाम कहाऊं । के-
 शगहूं पुहुमीघिसलाऊं । यहिअन्तरगयेमुनि नृपपासा । मनमारे मुख-
 करे उदासा । हरयिकहेउ मुनिनिकटबुलाये । आदरकरिआसनबैठाये ।
 कैसेमुख क्यों मनश्रद्धा सारे । कहचिन्ता जियबढ़ी तुम्हारे । नारद
 कहेउ मुनोहो राऊ । कहबैठे कछुकरौउपाऊ । त्रिभुवनमें तुमसरिको
 सेसो । देखौ नन्दसुवन ब्रजवैसो । करतकहा रजधानी सेसी । यह तुम
 को उपजी कछुनैसी । दिनदिन भयो प्रबलयरहारी । हमसब हितकी
 कहैं तुम्हारी । तबगर्वित नृप बोले बानी । कहाबात नारदतुमजानी ।
 कोटि दनुज मोसरि मोपासा । जिनको देखि तरनि तनुवासा । कोटि
 कोटि तिनके सङ्गयोधा । कोजीवै तिनके तनुकोधा । मल्लनि के बल
 कहा बखानो । जिनकेदर्शन कालडरानो । कोटिधनुर्द्धर संतत द्वारे ।
 बचैकौन तिनकीजु हँकारे । एक कबलया त्रिभुवन गामी । ऐसेऔर
 कितिक हैं नामी । ग्वाल सुतनकी कथाचलाबहु । यहबाणी कहि
 कहा सुनावहु । प्रजालोग ब्रजके सबमेरे । सेवा करत सदाहैं नेरे ।
 तातेशुचतहैं उन काजा । बालक सुनत होतजियलाजा । भलीकरी
 यहबात सुनाई । सहज बुलाय लेउँ दोउ भाई । और सुनहु नारदमुनि
 मोसों । अवसानिलागिकही कछुयोमों । कितिकबातबलराम कन्ह-
 ई । मो देखत अतिकाल डराई । आजु कालिह अब उनहिं बुलाऊं ।
 कहि पठऊं ब्रजसहित मँगाऊं । औरप्रजा ब्रजआनि बसाऊं । अपने
 जियकी खुदक मिठाऊं । तिनपर क्रोधकहा मैं पाऊं । रङ्ग भूमि
 चरगा रुदाऊं । मेरे समसरिके वै नाहीं । यह मुनिके नारदमुमुकाहीं ।
 सत्यवचन नृपकहत प्रचारे । अबजाने उनितीतुमसारे । यहका
 बैकुण्ठ सिधारे । त्रिभुवन में को बलहि तुम्हारे । कंस परेउ मन यहै

विचारा । रामझया बचयहै खभारा । दनुज हृदय हरियहै उपायो ।
नारद कही सुनत मनआयो । अवनारन नहिं गहरु लगाऊं । मथुरा
जहांतहां बलकाऊं । प्रकथकात जियबहुरिसम्हारै । क्योंमारोंसो बुद्धि
विचारै । सूरज प्रभु अविगतिअविनाशी । कंसकालयहबुद्धिप्रकाशी १ ॥

कंस के मनकी विचार ॥

अक्रूर की बुलाय श्री गोकुल भेजेइत्यादिप्रसङ्ग ॥

रागधोरठ ॥ नृपति मनयहै विचार परेउ । क्यों मारों दोउ नन्दहु-
टौनासही अरनिअरो । कबहुं कहतआपच्छि धाऊंयहै विचारकरो ।
सात दिवस में बधोपूतना यहगुनि मनहिंडरो । पुनिसाहस जियजिय
कहि गयौ ताको काल सरेउ । सूरप्रयास बलराम हृदय ते नेकनहीं
बिसरेउ २ सहर दुटौना शालिरहै । जनमहिं ते अपडाव करतहै गुनि
गुनि हृदय कहै । दनुज सुतापति लैहि संहारी पयपीवत दिनसात ।
गयोप्रतिज्ञाकरिकागामुर आग्रगिरोसुरझात । लयाप्रकटक्षरामाहिं
सँघारो केशीहन्यो प्रचारि । जेजेगये बहुरि नहिं देखे सबहिन डारे-
मारि । ज्यों ज्यों करिरनि दुहुन सँघारो बातनहीं कहुऔर । सूरनृ-
पति शोचत यहमन मन यहैकरत मनदौर ३ ॥ रागमाह ॥ नंदसुतसहज
बुलायपटाऊं । प्रयासराम अतिसुन्दर कहियत देखन काज सँगाऊं ।
जेहै कौन प्रेमकरि ल्यावैभेद न जानैकोई । सहर सहरिसों हितकरि
ल्यावै महाचतुर जो होई । यहि अन्तर अक्रूर बुलायो अति आतुर
महराज । सूरचले मनशोच बढ़ाये कौनहै सेसो काज ४ ॥ रागधनाम्नी ॥
अतिआतुर नृपमोहिंबुलायो । कौनकाज सेसोहै अटक्यो मनमनशोच
बढ़ायो । आतुरजायपौरिभये ठाढे कहेउ पौरियाजाय । सुनत बुलाय
महलहीलीन्ही सुफलकसुत गयेधाय । कहुंडरकहुजिय धीरज धारे
गयोनृपतिके पास । सूरशोच मुख देखि डरानो ऊरध लेत उसास ५ ॥
राग माह ॥ चर्वरी ॥ शोचमुखदेखि अक्रूरभरमै । साथकरनाय करजोरि
दोऊ रहे बोलिलीन्ही निकटवचननस्मै । आपुहीकंस तहँ दूसरोकोह
नहींवास अक्रूरजिय कहाकैहै । नृपति जियशोच जान्योहृदयआपने
कहतकहु नहीं धों प्राण लैहै । निकट बैठाय सबबात तेहीकहेउ गये
जेभायिनारदसवारै । सूरसुत नन्दके हृदय शालतसदा मन्त्रयह और

नहिं इन्हें मारै है ॥ राग सारंग ॥ चर्चरी ॥ सुनहु अक्रूर यह बात निश्चय
 करो आजु मोहिं भोरते चैन नाही । प्रियामवलराम यह नाम सुनिताम
 मोहिं काहु पठबहु जाहि तिनहिं पाहीं । प्रीति करिनन्दसों सहसबातें
 कहै तुरत लयावै दुहुनि नृपतिबोलै । देखिबे साध बहुत सुनिपुणा बि-
 पुल अतिहि सुन्दर सुनेदोउ अमोलै । कमल जबते उरग पीठिलयाये
 सुने यहै बकशीश अब इन्हिं देहै । सूरप्रभु प्रियामवलरामको डरनहीं
 बचन इनके सुनत हरय पैहें ७ ॥ राग खेरठ ॥ यह बाणी कहि कंस सु-
 नाई । तब अक्रूर हिये भयो धीरज डरडारो बिसराई । मनमन कहत
 कहाचित बैठी सुनि सुनि ऐसी बानी । अपना काज आपही बोल्यो
 इनकी मीचु तुलानी । हरयि बचन अक्रूर कहै तब तुरत काज यह
 कीजै । सूरजाहिं आयसु करिपाऊं भोरपात तेहि दीजै ८ ॥ राग बिनावल ॥
 तब अक्रूर कहत नृपआगे धन्यधन्य नारदमुनिजानी । बड़े शत्रु व्रजमें
 दोउ हमको सुनहु देव नीकी चितआनी । महाराज तुम मरि को ऐसी
 तऊ जगत यह चलत कहानी । अब नहिं बचे क्रोध नृपकीन्हे जैहै
 सराक तवाज्यों पानी । यह सुनि हर्ष भयो गर्बानो जबहिं कही अक्रूर
 सुयानी । कालिह बुलाय सूर दोउ मारों बारबार भायत यह बानी ९
 कंसनृपति अक्रूर बुलाये । बैठिसकांत मन्त्र टढकीन्हे राम कृष्णदोउ
 बन्धु संगाये । कहं मलकहुं गऊदैराखे कहं धनुषकहुं धीर । नन्दमहरी
 के बालक मेरे करयत रहत शरीर । उनहिं बुलायबीचही मारों नगर
 न आवन पावै । सूरसुनतअक्रूर कहत नृप मनमनसौज बडावै १० यहै
 संवअक्रूर सों नृपरै निबिचारी । प्रातनन्दसुत मारिहैं यह कहै उप्रचारी ।
 करि बिचार युगधाम लौं मंदिर पणवारी । कहैउ जाय अक्रूर सों भये
 आलसभारे । तुरतजाय पलका परो पलकन भवकानो । प्रियाम राम
 सपने खड़े तहैं देखि डराजो । अति कटोर दोउ कालसे भरम्यो अति
 भक्तको । जागि परो तहैं कोउ नहीं जियही जिय ससक्यो । चैंकि
 परो संग नारिके रानी सब जागीं । उठीं सबै अकुलायकै तब बूझन
 लागीं । महाराज भक्तके कहा सपनेक्यों संके । सूरअतिहि दयाकुल
 भयेधर उरदंके ११ महाराज क्यो आजुही सपने भक्तकाने । पीछे
 अबहीं आयकै देखे बिलखाने । कहा शोचं ऐसोपरो ऐसो पहुचीको ।

काकीसुधि मनमेंकरी कहिये अपजीको । रानी सब ब्याकुल भई कहूँ
भेद न पावैं । तब आपुन सहजहि कहेउ वह नहीं जनावैं । सावधान करि
पौरिया प्रतिहार जगावैं । सूरवास बलश्यामके नहिं पलकलगावैं ॥ १२ ॥

नन्दजीको स्वप्नभयो ॥

रागविलावल ॥ उत नन्दहि स्वप्न भयो हरि कहूँ हिराने । बलमोहन
कोउ लैगयो सुनिकै बिलखाने । रनालसखा रोवत कहैं हरि तौ क-
हुंनहीं । संगहि संगखेलतरहे यह कहि पछिताहीं । दूतसक संगलै-
गयो बलराम कन्हाइ । कहा ठगौरीसी करी मोहनीलगाई । बाहीके
दोउ ह्वै गये हम देखत ठाढ़े । सूरजप्रभु वे नितुर ह्वै अतिही गये
गाढ़े १३ ॥ रागसोरठ ॥ ब्याकुल नन्द सुनत यह बानी । धरणी सुरकि
परी अति ब्याकुल विवश यशोदारानी ॥ ब्याकुल गोपि गाय सब
ब्याकुल ब्याकुल ब्रजकी नारी । सुनीवात बलराम श्यामको लैगयो
दूत सक दुखकारी । धरणी परत उठति पुनि धावति यहि अन्तरनन्द
जागे । धकधकात उरनैन श्रवतजलसुतझंग परशनलागे । सुसकतसुनि
यशुमति अतिआतुर कहा महर धनपायो । सूरनन्द धरणीके आगे
यहधमन

कंतको स्वप्नभयो ता उपरांत को वृत्तान्त ॥

रागकल्याण ॥ एक याम नृपको निशि युगते भइ भारी । आपन
गोसब नारो । कबहुं उठतबैठत पुनिकबहुं सेज ॥

कबहुं अजिर ठाढ़ो ह्वै ऐसे निशि खोवैं । बारबार ज्योतिषिसों धरी
बुझि आवैं । एक जाय पहुंचै नहीं अरु एक पठावैं । ज्योतिषिजिय
वास परेउ कहा प्रात करिहै । सूरकोवभरेउ जृषति काके शिरपरि
है १५ ब्याकुल ते रैनिकटी बची धरी बाकी । एकसक सारा याम
याम ऐसी गतिताकी । कोजैहै ब्रजको मनकरै कहि पठाऊं । जासों
कहि नन्दसुवन आजही मंगाऊं । अब नहिं राखों उठाय बैरी नहिं
नान्हे । मारों राजपै रुंदाय मनहीं अनुमान्हे । पठऊं अक्रूरहि को
ऐसा नहिं कोऊ । सूरजाय गोकुल ते ल्यावैं ठगि दोऊ १६ ॥ रागवि-
लावल ॥ अरुणा उदय अतिही अक्रूर बुलाये । आपकहेउ प्रतिहार सक
सुनिकै तब धाये । सोवत जाय जगाय कैकहि बात प्रकाशा । आयसु

साथे मानि कै उठि चले उदाशा । नृपति द्वारपर खड्डो देखत शिर-
 नाथो । कहिखवाससों सैनदै शिर पाग मंगायो । अपने कर करिकै
 दियोसुफलकसुत लीन्हो । हायजेरि नृपतिकोपरगाम जु कीन्हो ।
 मुखअक्रूर हरितभयो हिरदय बिलखानो । असुरवास जिय अति
 परेउ कहा कहै सयालो । तुरतहि रथ पलनाय के अक्रूरहि दीन्हो ।
 आयसु शिर पर मानिकै आवुर ह्वै लीन्हो । बिलम्ब करहु जिनि
 नेकहु अबहीं ब्रज जाहु । सबैकाज सरिआवहु जिनि रैन बसाहु १७
 सुनहु देव यक बात जनाऊं । आयसु भयो तुरत लै आवहु ताते फेरि
 सुनाऊं । बलमोहन बनजात प्रातही जोउनकीनहिं पाऊं । रैहौआज
 नन्दगृह बसिकै कालिह प्रातलैआऊं । यह कहिचले नृपतिहमान्यो
 सुफलकसुत रथ हांकयो । सूरदास प्रभुध्यान हृदयधरि गोकुल तनको
 ताक्यो १८ ॥ रागगोपी ॥ सुफलकसुत मन करेउ बिचारा । कंसनृवंश
 होयहत्यारा । नगर सांभरथ कीन्हो ठाढो । शोच परेउ मनमनअति
 गाढो । सब कियो निशि मेरेसाथ । ल्यावन कहेवल असु ब्रजनाथ ।
 गजसृष्टिक चारार निहारेउ । व्याकुल नीरनैन दोउ ढारेउ । अतिबा-
 लक बलरास कन्हाइ । कहाकरौ कछु नाहिं बसाई । कैसे आनिदेह
 में जाई । सो देखत सारै दोउभाई । सारै मोहिं बन्दिलै मेलै । आगे
 को रथ नेक न ठेलै । सूरदास प्रभु अन्तर्दयासी । सुफलकसुत मन पू-
 रगा कामी १९ ॥ रागकल्याण ॥ सुफलकसुत हृदय ध्यान कीन्हो अबि-
 नाशी । हरन करन समरथ सब घटघटके बाशी । धन्यधन्य कंसहि
 मोहिं जिनपठायो । मेरो करिकाज मृत्यु आपको बुलायो । यहगुनि
 रथ हांकिदियो नगर परेउ पाछे । कछु सकुचत कछु हरयत चल्यो
 लागि काछे । बहुरि शोच परेउ दरश दक्षिणा मृगमाला । हरण्यो
 अक्रूर सूर मिलिहैंगोपाला २० ॥ रागटोड़ी ॥ दक्षिणादरश देखिमृग-
 माला । अति आनन्दभयो तेहिकाला । याही बनमिलिहैं गोपाला ।
 प्रयास जलदतन अंग रसाला । तादर्शन ते होउं निहाला । बहु दिनके
 मेठों जंजाला । मुख शशि नयन चकोर बिहाला । तनु विभंगसुन्दर
 नँदलाला । बिबिधि सुसन हिरदय शुभ माला । सारसहूते नयन बि-
 शाला । निश्चय भयो कंसको काला । सूरज प्रभु विभुवन प्रतिपा-

ला २१ ॥ रागआसावरी ॥ दाहिनीहों देखत मृगनकी मालहि । मनो यह
 शकुन अब हिये बनइनि भुज भरिकै भेंटों गोपालहि । निरखि तनु
 विभंग पुलकितसकल अङ्गअङ्ग धरिआअङ्कुर जैसेपाय पावसकालहि ।
 परिहैं पाथैं जाय भेंटिहैं अंकमलाय मूलते जमी जो बेलि चढ़ति
 तमालहि । परिशि प्रेम आनन्द सींचि कै कामना कन्दकरिहैं प्रकट
 प्रति प्रेम प्रबालहि । बचनरचन हास सुखद सुख निवास कंस फल
 फलित फलअसल रसालहि । स्फुरति शुभ सुबाहु लोचन सब उछाहु
 फलिके सुकृतफल फलि तेहि कालहि । निगम कहत नेति शिव न
 सकत वेति सूरसुहृदयलगायलेहैंता दयाजहि२२ ॥ रागकान्हरी ॥ आशु
 जाय देखिहैं वे चरणा । शीतल सुभग सकल सुख दाता दुखद दवन
 दुखहरणा । अङ्कश कुलिश कमलध्वज चिह्नित असुताकंजके रङ्ग । गो
 चारत बनजात पाइहैं गोपसखनकेसङ्ग । जाके ध्यानधरत सूरमुनि
 जन शिव विरंचि सब ईश । तेईचरणा प्रकटकरि परशोंइनकरअपने
 शीश । निरखि स्वरूप रहै नहिं सकिहैं रथते उतरिहैं धाय । सूर-
 दासप्रभु उभय भुजाभरि हंसि भेंटिहैं उठाय २३ ॥ रागनट ॥ जब शिर
 चरणान धरिहैंजाय । कृपाकरि मोहिंटेकिलैहैं करनि हृदयलगाय ।
 अंग पुलकित बचन गदगद सनहिं सनसुख पाय । प्रेमघट उच्छलित
 ह्वै है नयनअश्रु बहाय । कुशल ब्रूकत कहिन सकिहैं बारबार सु-
 नाय । सूरप्रभु गुणध्यान अटक्यो गयो ग्रंथमुलाय २४ ॥ रागआसावरी ॥
 मथुराते गोकुल नहिं पहुंचे सुफलकसुत को सांभभई । हरि अनुराग
 देहसुवि बिसरी रथबाहन की सुरति गई । कहां जात कित मोहिं प-
 टायो कोहैंमें यहियोच पख्यो । दशहं दिशा श्यामपरि पूरणा हृदय
 हरय आनन्द भख्यो । हरि अन्तरयामी यह जानी भक्त बहल बानो
 जिनको । सूरमिलै जोभाव भक्तके गहर नहीं कीन्हे छिनको २५ ॥
 रागकल्याण ॥ तुन्दावनरबालनिसङ्ग गैयनिहरिचरैं । अपनेजन हेत काज
 ब्रजकोपगुधरैं । यमुना करिपार गाय प्रियाम देत हेरी । हलवर सङ्ग
 सखा लये सुरभी गगाधेरी । घेनुदुहन सखनिकहेउ आपुदुहन लागे ।
 तुन्दावन गोकुल बिचयमुना के आगे । भक्तहेत श्रीगोपाल यह सुख
 उपजाये । सूरज प्रभुको दरशन सुफलकसुत पाये २६ ॥ रागकान्हरी ॥

८० ई सूरसागर मथुरालीला रागकल्पद्रुम ।

मुफलक सुतहरिदरशनपायो । रहि न सकयो रथपरमुखव्याकुल भयो
वहै मनभायो । भुवपरदौरिनिकट हरिआयो चरणानिचित्तलगायो ।
पुलक अङ्गलोचनजलधारा श्रीगृहशिर परशायो । कृपासिंधुकरिकृपा
मिलेहँसि लियोभक्त उरलाय । सूरदास यहमुख सोइजानै कहाँ कहा
में गाय २७ ॥ रागकेदारी । चर्चरी ॥ हरयि अक्रूर हरि हृदय लायो । मिले
तेहि भाव चितवनि चितैप्रेमसों भगत बडल नामतौ कहायो । कुशल
पूकृतप्रसन्न वचन अमृतरसन मुनिपुलक अङ्गअङ्ग कीन्हे । चितैआनन
चारुबुद्धिउरविस्तार दनुज अबदलौयह ज्वाबदीन्हे । भेदहीभेद शब्द
इतबाणी कही तुरतबोलेहेत इहैवाके । सूरभुजफरकि मनमें न उछाह
लौ धरणि उडार हितबसीताके २८ ॥ रागबिलावल ॥ श्यामइहै कहिके
उठे नृपहमहिं बुलाये । अतिहिकृपा हमपरकरीजो कालिह मँगाये ।
सङ्गसखा यह सुनतही चकृतमनकीन्हे । कहा कहत हरि सुनतहो
लोचनभरिलीन्हे । श्यामसखनमुख हेरिके तब करी सयानी । कालिह
चलौ नृप देखिये शंका जियआनी । हयभये हरि यह कहैमन मनदुख
भारी । सूरसङ्गअक्रूरके हरि व्रजपगुधारी २९ ॥ रागसमकली ॥ अतिकोमल
बलरामकन्हई । दुहुन गोदअक्रूर लियेहँसि सुमनहुंतेहरुआई । खाल
सङ्गरथ लीन्हे आये पहुंचे व्रजकीखोरि । देखत गोकुललोग जहां तहँ
नन्दउठे सुनि रोरि । निशि सपनेको इंसित भये अति सुन्यो कंसको
दूत । सूरनारि तर देखनपाये घरघर शोर अकूत ३० ॥ रागसारंग चर्चरी ॥
कंसनृप अक्रूर व्रज पढाये । गयेआगे लेननन्द उपनन्दमिलि श्याम ब-
लराम उन हृदय लाये । पकारि स्यन्दन लियो देखि हरण्यो द्वियो
कहत सब मनहिं मनकहां आयो । राज के काजकोनाम अक्रूरयहि
किधौं कर लेनको नृप पढायो । कुशल तेहि बूझि लैगये निजवास
व्रज श्याम बलराम मिलिगयेवाको । चरणपखरायके सुभग आसन
दियो विविध भोजन हयि दियो ताको । गयो अक्रूर तहँ तुरतदोउ
सङ्ग लै नारितर लोग व्रज सब देखे । मनो आये सङ्ग देखि ऐसे रङ्ग
मनहिंसक घरघर करन भाखे । मारिजेवनार अँचवनकरि भये शुद्ध
दियो तंसोर नन्द हरयि आगे । सेज बैठारि अक्रूरसों जोरिकरकृपा
कहँ करी तब कहन लागे । श्याम बलरामको कंस बोले नन्दलैसुतन

हमपास बेग आवै । सुरप्रभु दरशकी साध अतिहि मोहिं कहेउ स-
मुझाय जानि गहरु लावै ३१ ॥ रागकान्हरी ॥ सुन्यो ब्रजलोग कहत यह
बात । चकृतभये नारीनर ठाढ़े पांच न आईसात । चकृत नन्द यशु-
मति भई चकृत मनहींमन अकुलात । दै दै सैन श्याम बलरामहिं सबै
बुलावत जात । परब्रह्म अविगत अविनाशी मायारहित अतीत ।
मनो पहिंचानि कहुंकी करत सबै मनभीत । बोलत नहीं नेक चित-
वत नहिं सुफलकसुत सों पागे । सूर हमहिं हितकरि नृप बोलै यहै
कहत ता आगे ३२ ॥ रागबिहागरी ॥ व्याकुलभये ब्रजके लोग । श्याम
मन नहिं नेक आनत ब्रह्मपूरण योग । कौन माता पिता कोहै कौन
है पति नारि । हंसत दोठ अक्रूर के सङ्ग नवल नेह बिसारि । कोउ
कहत यह कहां आयो क्रूर याकी नाम । सुरप्रभु लै प्रात जैहै और
सङ्ग बलराम ३३ चलन चलन श्याम कहत लेन कोऊ आयो । नन्द
भवन भनक सुनी कंस कहि पढायो । ब्रजकी नारि गृहबिसारि व्या-
कुल उठिधार्ई । समाचार बूझनको आतुर हूँ आई । प्रीतिजानि हेत
मानि बिलखि बदन ठाढ़ी । मानहुं वे अतिविचित्र चित्र सी लिखि
काढ़ी । ऐसी मति ठौरठौर कहत न बनिआवै । सुरप्रयास बिछुरेदुख
विरह काहि भावै ३४ ॥ रागकान्हरी ॥ चलत जानि चितवत ब्रजयुवती
मानहुं लिखी चितेरे । जहां नन्दसुत तहां एकटक जोवत फिरत न
लोचन फेरे । बिसरि गई गति भांति देहकी सुनत न यवगानि टेरे ।
मिलि जु गये मानो पयपानी निरवत नहीं निवेरे । लागे सङ्ग मदन-
सत्तके ज्यों धिरत न कैसेहू घेरे । सुरप्रेमअंकुश आशा तजि बाहिनि
इतउत नेरे ३५ ॥ रागसारंग ॥ सब सुरभक्तानीरी चलबे की सुनत भनक ।
गोपीरवाल नयनजलढारतमोकुल हूँ रहेउबुन्दजनकायहअक्रूर कहां
ते आयो दाहनलारयो देह कनक । सूरदास स्वामीके बिछुरत घटत
नहीं चहै प्राण तनक ३६ ॥ रागसकली । चर्चरी ॥ देखि अक्रूर नरनारि
बिलखै । अनुर्भजन यज्ञहेत बोले इतिहिं और डरनहिं सबन काहि सं-
तोषै । महार व्याकुल दौरि पायंगहि लै परी नन्द उपनन्द संग जाहू
लैकै । राजको अंश लिखिदेहु दूनों देउमैंकहा करों सुन दुहुन दैकै ।
कहत ब्रजनारि नैनन नीर दारिके इननि को काज मथुरा कहा है ।

सूरनृप क्रूर अक्रूर क्रूर भये धनुय देखन कहत कपट महा है ३७ ॥
 रागसारंग ॥ ब्रजबासिन के सर्वस प्रयाम । रे अक्रूर क्रूर बटसारे जीके
 जी मोहन बलराम । अपना लागलेहु लेखोकोह जे कहू राजचंशके
 दाम । और महर लै सङ्ग सिधारे नगर कहा लरिकन को काम ।
 संतत माधु परम उपकारी सुनियत बडो तिहारो नाम । सूरदास प्रभु
 पटै मधुपुरी को जीवै क्षणा बासर याम ३८ नहीं कोउ प्रयाम राखै
 जाइ । सुफलकसुत बैरीभयो मोकोकहति यशोदासाइ । मदनगोपाल
 बिनाघर आंगन गोकुल काहि मुहाइ । गोपीरहीं ठगीसी ठाढीकहा
 ठगौरी लाइ । सुन्दर प्रयाम राम भरिलोचन बिनदेखे दोउभाइ । सूर
 तिनहिं लैचलमधुपुरी हिरदय झूलबढाइ ३९ ॥ रागचोख ॥ मोहनइ-
 तनो मोहिं चित धारिये । जननी दुखित जानिकर कबहुं मथुरागमन
 न करिये । यह अक्रूर क्रूरकृत पहिले तुमहिं लेनहै आयो । तिरछे
 भये पुरुबले पातक बिधि यह टाट बनायो । मोसों साततात ब्रजपति
 सों कहत रहत दोउभाइ । तिहि सुख चलन कहत सुनि जीवति मोसों
 कहू न बसाइ । सूर स्वरूप बिलोकि यशोदा धरिगोपरी मुरभाइ ।
 बलिबलि जाउँमुखारबिन्द की बरजति रहीं कन्हाइ ४० यशोदाबार
 बार यह भाखै । है कोऊ ब्रजहितु हमारो चलत गोपालै राखै । कहा
 काज मेरे छगन मगनको नृप मधुपुरी बुलाये । सुफलकसुत मेरे प्राण
 हरणको कालरूप है आये । बरु यह गोधन कंसलेइ सब मोहिं बन्द
 लैमेलै । इतनोसांगतिकमलनैनम्बरिअखियनआखेलै । कोकरकमल
 मथानी गहिहैको दधिमाखनखैहै । बहुरेउ इंद्रवरयिहैब्रजपरकोनमेरु
 कर लैहै । बासर रैनबिलोके जीऊ संगलागि हिलराऊ । हरिबिबुरत
 असुरहैकर्मबश तौकिहि कंठलगाऊ । टेरिटेरिधर परतियशोदा अधर
 बदन बिलखानी । सूर सुदशाकहांलगा बरगों दुखितनन्दकीरानी ।
 ४१ ॥ रागसूहा ॥ सुफलक सुतकेसंगते हरिहात न न्यारे । बारबार ज-
 ननी कहै मोहिं तज्यो न दुलारे । कहा ठगौरी यहकरी मेरे बालक
 मोहेउ । हाहा करिकरि मरतिहैं मोतन नहिं जोहेउ । नन्दकहेउ पर
 मोधिके संग में लैजैहैं । धनुययज्ञ दिखरायके तुरतै लै रेहैं । घर घर
 गोपनसों कहेउ कर भार जोरावहु । सूर नृपतिके द्वारको उठि प्रात

चलावहु ४२ ॥ रागविहागरो ॥ यशुमति अतिही भईबिहाल । सुफलकसुत
 यह तुमहिं बूझिये हरतहै मेरेवाल । येदोउभैया ब्रजजीवन हैं कहति
 रोहिणी रोय । धरणी गिरति फिरति अतिव्याकुल कहिराखतनाहिं
 कोय । निदुर भये जबतें यहआयो घरहु आवत नाहिं । सूरकहा नृप
 पासतुम्हारो हम तुमबिनुसरिजाहिं ४३ ॥ राग सोरठ ॥ कन्हैया मेरीछोह
 बिसारी । क्योंबलराम कहतनाहीं तुममेंतुम्हरी सहतारी । तबहलधर
 जननी परमोदत-स्थियायह संसार । ज्योंसावन की बेलि फफंडि कै
 फलतीहै दिनचार । हमबालक तुमको कहसिखवैं कहूं तुमहिते जात ।
 सूरहृदय धीरज अवधारौ काहेको बिलखात ४४ यहसुनि गिरी व-
 रीणा धुकिमात । कह अक्रूर ठगौरी लाई लियेजात दोउतात । वृद्ध
 समयकी हरत लकटिया पापपुण्य डरनाहीं । कहूनफा तुमकोहै यामें
 शोचौधौ मनमाहीं । नाम सुनि अक्रूर तुम्हारो क्रूरभये है आई ।
 सूरनन्दधरणी अति व्याकुल सेसेहि रैनबिहाई ४५ ॥ राग भैरो ॥ भोर
 भयो ब्रज लोगनिको । ग्वालसखा सखि व्याकुल सुनिके प्रयासचल-
 तहैं मधुपुरको । सुफलकसुत स्यन्दन पलनावत देखे तहैं बलमोहनको ।
 यह सुनि घर २ ते उठिवाई नन्दसुवन मुख जोहनको । रौरि परी
 गोकुलमें जहंतहैं गायफिरतपयदोहनको । सूर दर्यकर भार सहारत
 महर चलत हरि गोहनको ४६ ॥ रागरामकली ॥ चलन कहियत हैं हो
 हरि आज । अबहींगई अवगुन सुनि आईकरत गमनको साज । कोउ
 यकक्रंसकपट करिपठयेकहु संदेशदेहाय । सोलैचल्यो हमारे जीवन
 सबनिधि अपने साथ । अबयह शूलन जात सखी री सहिरहिये करि
 लाज । धीरज अवधि आशदै सबको सैनजनाय चले ब्रजराम । छांडो
 जगजीवन की आशा की छांडो कुलकानि । कहिये बिनती कमल
 नयन सों सूरसमय यहजानि ४७ चलत हरिधृग जु रहेतन प्रान । कहैं
 वह सुख अब उठो दुसह दुख उरकरि कुलिश समान । चितवत नयन
 चकोर सुधाबिय देखहु मुखकबि आन । कहैंबह कंठ प्रयाससुन्दर भुज
 करति अवररस प्राप्त । जाकोजग उपहाम कियोतब छांडैउ सबअभि-
 मान । सूर सोनिधि बिहुरत हैं हमते कठिन है कर्म निदान ४८ सुनेहैं
 प्रयास मधुपुरी जात । सकुचति कहि न सकति काइसों पुनहृदय की

बात । शङ्कित बचन अनागत कोऊ कहिजुगई अधरात । नीद न परै
घटैनिहंरजनी कबउठि देखोंप्रात । सुफलकसुत हम ऐसीचाँडो ज्यों
जल पुरइन पात । सुरश्यास संगते बिछुरत हैं कब सेहैं कुगलात ४९
अगिनिहुंते बिरहागिनि ताती । माधव चलन कहत मधुवन को सु-
नततपी अतिछाती । न्याइहि नागरि नारि बिरहबश जरति दिया
ज्यों बाती । जेजरिमरी प्रकट पावकपरि तेबिय अधिक सहाती ।
ढारति नीर नयन भरि भरि बढि आकुलता मदमाती । सुरदयथा
सोइपै जानै श्यास सुभग रङ्गराती ५० ॥ रागआसावरी ॥ श्यामगये सखि
प्रारारहेंगे । अरश परश ज्योंबार्तेकहियत तैसेहिबहुरि कहेंगे । इन्दु
बदन खग नयन हमारे जाननि और चहेंगे । बासर निशिकहुं हेत
न न्यारे बिछुरत हृदय सहेंगे । एककहैं तुम आगेबागी श्याम न
जायरहेंगे । सूरदास प्रभु यशुमतिको तजि मथुरा कहा लहेंगे ५१ ॥
रागधोरठ ॥ गोपाललालको अलम्बन प्रान । क्रूरबचन उरक्रूर क्रूर
सङ्ग लागे मथुरा जान । क्रूरनाम गुणक्रूर क्रूरमति काहे गोकुल
आये । क्रूर कंस नृपबैरु जानिमेरि निधिको लेन पठाये । बारबार
जननी कहिमेसों माखन सांगत जौन । सूरतिनहिं लेबेकोआये करि
हौ सुनोभौन ५२ ॥ रागकल्याण ॥ श्याम चलतचाहत कहेउ सखी एक
आइ । तबमोहन रथबैठे सुफलकसुत चढ़नचहत यहसुनि सबचक्रित
भई बिरहदों लगाई । धुकिधुकिसबधरगिपरी ज्वालाभरलतागिरी
मनों तुरत जलद बरयि सुरनि नीर परशी । धाईसब नंदद्वार बैठेरथ
दोड कुमार यशुमति लोटति भुवपर निदुर रूप दरशी । कौन मात
कौनपिता आप ब्रह्मजगधाता राख्योनिहं कछुनात नेकनेह नाहीं ।
आतुर अक्रूरचढ़ै रसना हरिनामरद्वै सूरजप्रभु कोमलतनु देखि चैन
नाहीं ५३ ॥ रागबिलावल ॥ आतुररथ अक्रूरचढ़ै । तब रसना हरि नाम
भायिके लोचननीर कढ़ै । महरिपुत्र कहि शोरलगायो तसु ज्यों ध-
रिगालुडाई । देखतनारि चित्रसी टाढीचितये कुंवर कन्हाइ । इतने
में कहदियो सबनिसोंमिलिहैं अविबिबिताई । तनक हँसे हरिमनयुक्-
तिनको निदुरठगौरी लाई । बोलतनहींरहींसबटाढी श्यामदगी ब्रज
। सूरतुरतमधुवनपगुधारे धरणीके हितकारि ५४ कान्ह कहा

धौं कहेउ । बेगि सुबचन सुनाय सखीरी नाहिन परतुरहेउ । कह मै
करों घोखते लै निधि दूतदूरनिबहेउ । हैमति हीनकरी विधितेहि
झरा भूली मथति दहेउ । सबै अग्रान भई तिहि औसर काहू रथ न
गहेउ । सूरदास प्रभु वृथा लाजकरि दुसह बियोगसहेउ ५५ ॥ रागसा-
रंग ॥ हरि बिहुरत फाट्योन हियो । भयो कठोरबजते भारी रहिकै
पापीकहा क्रियो । घोरि हलाहल सुनिमेरि सजनी औसर तब न
पियो । मनसुधिगई सँम्हार न तनकी कूरदावअकूर दियो । कहुन
सुहाय जबैनिधि बिहुरी भवन काजको नैमलियो । निशिदिन रस्त
सूरबलिहारी मरिबो यत्ननि जातजियो ५६ ॥

अथगोकुलसों हरिजूके मथुराचलन समयकीलीला ॥

रागधनानी ॥ बिरह अनल अग्नितुं तेताती । साधव चलन कहत म-
धुवनको सुनत कँपतिहै छाती । धनितेनागरि नहिंमानतिहै देहजरत
जिमिबाती । सबसँग मरहिंप्रकट पावक जरि वहजिय जानसुहाती ।
जानैकौन कहासुख बिकसत बिकलभई मदमाती । सूरदास सोई पै
जानै जो यहरस रङ्गराती ५७ गोपाल इतनो मोह न धरिये । जननी
दुखित जानि नंदनन्दन मथुरा गसन न करिये । वहअकूर कूरभयो
हमकहँ लेन यहांलौं आयो । तिरछोभयो करमबलपुरको बिधिसं-
योगवनायो । चलन जानिआयेब्रजबासीरहि न देहसुधिज्ञान । गोकुल
के यहलोग बनेहरि तज्योबुद्धि अस्तध्यान । फिरिचितयो तबअर्वाव
बद्योहरि रहेउ प्राणापति आस । सूरदास प्रभु को निहारि कै आई
सब ब्रजवास ५८ बिन परबहि उपगारे कहेउ । कह जानै यह राह
रमापति कबधौं सौंध लहेउ । दुसह दशन धुकिकरत चापके परशि
न परत सहेउ । यह शशि अब सेसो लागतबिन भाखन प्रेमदहेउ ।
शरद चन्द ज्यों उगत गगन में राधाआनि गहेउ । ताके बीचन बीच
नयन मिलि अंजन रूपरहेउ । बिरह संधिबलि पायसनो हृदिहै तिय
बदन गहेउ । सकलगुणानि भयसूरज प्रभुमुख छबिसों अधिकदहेउ ।
५९ परम बियोगिनि सबमिलि ठाढ़ी । ज्यों जलहीन दीन कुमुदि
निगत रवि प्रकाशकी ठाढ़ी । जिहिबिधि मीनसलिल सों बिहुरत
अति अधीन कुम्हिलानी । सुखो अधर कहत नहिं आवै बचनरहित

मुखवानी । उन्नत आस बिरह बिरहनिउर कमलबदनबिलखानी ।
 भीजत नयन निमेष क्षणहिं क्षण मिलन कठिन जियजानी । बिनु
 बल बुद्धि चकत डोलति है चल न सकत पचिहारी । सूरदास प्रभु
 अवधि कहौतौ प्राणा तजति ब्रजनारी ६० ॥ रागगी ॥ हरिबिन कौन
 सों कहिये । जो अक्रूर बोयेहैं तिनके सोईगुण गुणारहिये । कामे
 कहैं कहा कोउ करिहै नाहक अनल जु दहिये । सूरदास प्रभु तुम्हरे
 दरश का मधुको जो वत रहिये ६१ ॥ रागपट ॥ चलनचलन कहत हैं
 प्रयासलेनकोउ यह आयो । नन्दभवनमें सुनरीसखिकपटीकंस दूतप-
 ठायो । ब्रजकीनारि गृहबिसारि सकल उलटी जु धाई । पूछनकोससा
 चार यशुसतिपै आतुर हूँ आई । जियहिजानि शोचमिलबिलखि
 बदन सबहीटाढीं । मानहुँ वे अति चिचिचिहैं लिखिहैंकाढी । सेसेही
 गतिदौरदौर कहत नबनिआवै । सूरदास बिहुरन बिपति बिरहकाहु
 न आवै ६२ ॥ राग नट ॥ तब न बिचारीरी यहबात । चलत न फँद
 गह्यो मोहनको अबकहरी पठितात । निरखि निरखि सुखरहीमौन
 हूँ चकत भई बिलखात । जबरथ भयो दुष्टि आगोचर लोचन अति
 अकुलात । सबै अज्ञानभई वहि औसर अतिद्विग रहिछुतमात । सूर-
 दासस्वामी के बिहुरे कौडीभरि न बिकात ६३ ॥ राग विन्ध्यजंगला ॥ च-
 लनजानि चितवत ब्रजयुवती जानोलिखी चितेरनि हो । जोइ जोइ
 जहँसोइ इकठक टाढीं फिरति नहींमन फेरनि हो । बिसरी सतिगति
 बचन बिकस चित अवगति सुनत न हेरनि हो । गयोयमुन मिलये
 मीनज्यों निबरतनाहिं निबेरनि हो । सूरदास आशा अंकुशवश उलटे
 प्रभुको हेरनि हो ६४ ॥ रागपूर्वी ॥ देखुवे आवत हैं बनमाली । जिन
 पहिले पौढत पलनाहीं पय पयावत पतनाबिघाली ॥ अघबक वृषभ
 बरुणा केशीसुत जलते काढ्यो काली । जिन हठि सारि प्रलम्ब त-
 रावर्त्त इन्द्र प्रतिज्ञा राली । सतेपर अजहँ नहिं समुक्त कपटी कंस
 कुचाली । अब बिधुबदन बिलोकि सुलोचनि अवरा सुनतही आ-
 ली । धन्य सु गोकुल नारि सूर प्रभु प्रकट प्रीति प्रतिपाली ६५ ॥
 राग धनायो ॥ सुन्योप्रयास मधुपुरी जात । कहि न सकति लाजनकाह
 सों गुन हृदयकी बात । शोचत चपल आनि उर अन्तर कहि जू गये

अधरात । नौद न परै घटै नहिं रजनी कव उठि देखौ प्रात । सूरदास
प्रभुसंगहि बिछुरे कौन कहै कुशलातई ६ मथुराकेद्रुम देखियत न्यारे ।
इतनीदूरि सँदेह मिलनको सुनियत टेर प्रकारे । तुमबिन श्याम मनो-
हरमूरति सदनबारा हमसारे । सूरश्यामबिन भयो गेहबन गगन गनत
निशितारे ६७ ॥ रागपूर्वी ॥ कहं जात देखयो प्रियमेरो । जबते हरिमधु-
बनहिं सिधारे कबहुं कियो नहिं फेरो । पथिक न चलत सँदेशन पावत
मगजोहत भइ डेरो । एकबार हरिदर्शन दीजै योग युगति नहिं हेरो ।
ता बिन कौन करै जो सूरज युवतिन प्रेम निबेरो ६८ ॥ रागधनम्री ॥ उ-
मगिचले दोउ नयन विशाल । सुनिसुनि वे संदेश श्यामघन सुमिरतही
गोपाल । आननते रजनीके अन्तर जलधर शोभित काल । मानहुं युग
जल श्रीगुण सुमिरत बाढो शीश सुनाल । लोचन जल भीड्यो गुण
सुमिरत उरमोतिनकी माल । मानो अर्वाध इन्द्रस मानव असीओ-
सकन भाल । कीन्ही गोपिनसों अब ऐसी करि करि उलटी चाल ।
सूरदास यहकपट सँदेशन क्यों निबहै वहवाल ६९ ॥ रागकालिंदरा ॥ मनहुं
प्राति अति भई पातुरी । अनुज सहित बलराम हमारे कमलनेन देखौ
मिलि न जातरी । अरश परश कछु समुझत नाहों या ब्रजकोप भली
कि वातुरी । कज्जलकांच कपूर करपरी हीरा सम कैसेपोत बिकात
री । वे दोउ हंस मानवरवरके भीतर सुजमलीन कैसे न्हातरी । सूर
श्याम मुक्ताफल भोगी को रति करति उबारिकत पातुरी ७० ॥
रागधनम्री ॥ मोहन नेक नन्दतन हेरो । राखत हेत तात जननी सों सदन
गोपाल लालमुख फेरो । बिछुरन भेंटदेहु टेटेहैं निरखो घोषजन्मको
खेरो । सबधों सखा बलाय संगके अपनी गाय आनि तुमघेरो । पाछे
चढ़हु बिमान मनोहर बहुरो यदुपति होत अबेरो । गयेन प्राण सूर
यह सुनिकर कीन यतन यशुमति बहुतेरो ७१ मेरी बज्जी की छाती
बिदरि बिदरि नहिं जाती । हरिहि चलत चितवत मगडाढी पछिताती ।
बिद्यमान बिरहशूल उरमें जु समाती । आवनकी आश्रलगी अबबिही
पत्याती । ज्यों ठगनिधि हरबेको रज्जुकण्ठ देहि किहि भांती । इसि
फिरि मुसकानो सूरमनसा भइमाती । चितवत मनसा इकभइ जागत
अकलाती ७२ ॥ रागमाह ॥ बहुतदुख पैयतहैंरी यहबात । तुम जु सुनतहो

माधव मधुवन सुफलकसुत संगजात । मनसिज व्यथा दहत दावानल
उपजी है यहगात । सुधोकहो तब कैसेकीजिये निजुचलिहो उठिप्रात ।
जोपै यह क्रियो चाहत है सीधु बिरह शिरघात । सूरश्याम तो तब
तक राखी गिरिकरले दिन सात ७३ ॥ रागबिहागरो ॥ भवन भयालक
लागै मायश्यामबिना । देखिहैंजाय काहिलोचनभरि नन्दकेअंगना ।
लैगये अक्रूरकूर ताहिको आजके प्राणाधना । कौन सहाय करै गृह
अपने मेटे बिघनघना । काहि उठाय गोदधरि लीजै करि करि मना
मना । सूरदास मोहन दरशनबिन सुखसम्पति सपना ७४ ॥ रागकामोद ॥
नन्दहरि तुमसे कहाकहेउ । मुनिमुनि निदुर बचन मोहनके क्योंकरि
हृन्सहेउ । छाँडिसनेह चलेमन्दिर कत दौरि न चरगा गहेउ । फाटि
न गई बजकी छाती कतग्रहशूल सहेउ । सुरतिकरति मोहन की बातें
नयननिनीर बहेउ । मुधि न रही अति गलितगातभयो जनु डसि गयो
अहेउ । क्यो छाँडि गोकुलकत आये चारखन दूध दहेउ । तजे न प्राण
सूर दरशनलों हुतो जन्म निवहेउ ७५ ॥

अथ मथुरामें पहुंचे सी लीला ॥

रागगोरी ॥ वहदेखो आवत बनमाली । घनतन श्याम पीतपट सुन्दर
शोभित नयन विशाली । जिनपहिलेही पलना पौढत पयपीवत पूतना
बिघाली । अथ बक बच्छ अरिषु केशि मथि जलते काहेउ काली ।
जिहि अति शकट प्रलम्ब तृणावर्त इन्द्रप्रतिज्ञाली । इतनेपर अन्वो
मानत नहिँ कपटी कंस कुचाली । अब बिधु बदन बिलोकि सुलोचनि
अवसानि मुनत जुआली । धन्यती य गोकुलकी नारी सूरजप्रकट प्रतिज्ञा
पाली ७६ ॥ रागगोरी ॥ वह देखो दोउ आवत जन गौर श्याम तन । नील
पीत पट मानहु मिलि दामिनि घन । लोचन बद्ध विशाल कमल दल
चितवत चितै हरत सबके मन । कुराडल किरिया दिपत अति कञ्चन
जटित लालमणि लाल मीन तन । चन्दन चित्रविचित्र अङ्ग लिखि कु-
सुम सुवास दये नंद नन्दन । बलि बलि जाउँ चले जिहि मारग सङ्ग
उठाय लये मधुकरगन । धनि वह भूमि पावँ जिहि धारे जीतहिँगे रिपु
आजु रङ्गरन । सूरदास प्रभु नगर नारि मिलि लेति बलाइबारि अम्बर
तन ७७ ॥ रागमाला ॥ नन्दमहर के ढोरा जिनकी सुनियत भरि बड़ाई ।

जन्मसही बियकुच लगायकै आय पूतना हतिदुखदाई । सुन्दर प्र्याम
सुदेश पीतयट भुज चन्दन चरचित कीन्हे । नटवर भेयधरे बालक सो
राज हति दन्तन लीन्हे । लोचन चारु चरण कटि किंकिरा वनमाला
उरसोहै । कर कंकरा मरिा कंठ मनोहर कामदेखि मनमोहै । चन्द्र
चकोर भेघ चात्रिकलीं अबलोकत मनलाये । सूरदास संतनहितका-
रणा प्र्याम मधुपुरी आयो ७८ वे माधव जिनि मधुमारेउ । मथुराजन्म
गोकुलहि आयो नन्ददुलार बहुत सारेउ । केशी दृगावर्त्त अधवकसुर
हति पूतना बिसुहिधारिउ । इन्द्रकोपि वरण्यो वरमेघन हातप्रलयव्रज
को टारिउ । कंसराज हति इन्द्ररज्योहै रङ्गभूमि अतिरणा सारेउ । सूर
प्र्याम भये मथुरापति ज्यों बहुत जनमतेतारेउ ७९ ॥ रागधारि ॥ मेरेक-
मल नयन प्राणाते ध्यारे । इनको कौन मधुपुरी पढवै रामकृष्ण दोऊ
जन बारे । यशुदाकहे सुनहु सुफलकसुत मैपयान यत्ननिकरि हारे ।
यहकह जानहिं सभाराजकी गुरुजन विप्र जिवावन हारे । मथुराअ-
सुर समूह बसत हैं करि कृपाणा योधा हथियारे । सूरदास स्वामी ये
लरिका इनकब देखेमल्ल अखारे ८० ॥ रागकेदारो ॥ हरिबिन कौनकहै
केहिसुनिये । मनसिज व्यग्रा आइ ज्यों बियकी उरझंतर कहूँ सुनिये ।
कानन भौन रैननिशिवासर सुखहू कबहि न लहिये । मुकइभयेअब
जगमें पशु ज्यों कंसके दुःख न सहिये । कबहुँक जिय ऐसी उपजति
है जाय यमुनजल गहिये । सूरदासप्रभु कमलनयन बिनु कोलै जीवन
रहिये ८१ मथुराके द्रुम देखियतन्यारे । इतनीदूरि संदेहमिलनको
सुनियत टेरपुकारे । आवत नहिं संदेश न भेजत माधव नन्द दुलारे ।
तुमबिन प्र्याममनोहर सूरति मदनबाणा हरिमारे । सूरप्र्याम बिनभये
गेहवन गगन गनत निशितारे ८२ ॥ रागनट ॥ कहूँजात देख्यो पियमेरो ।
जबतेहरि मधुवनहिं सिधारे कबहुँकियो नहिंफेरो । पथिक न चलत
सँदेशन पावत मगजोवत भरेडेरो । एकवार दरशन हरिदीजो योगयु-
गति नहिंडेरो । ताबित कौनकरे जो सूरज युवतिन प्रेमनिबेरो ८३ मो
कोना हरिबार भई । जबतेहरि मधुवननि सिधारे तबतेसुखि न लई ।
कहकीजै सङ्गति जो नोचकी मनअति दुखितभई । चन्दनचाय अरिन
समलागत यहविधि सबैगई । सूरदासप्रभु दरशन दीजै नेकजुमैयाठई ।

तेरी गति मोको है सुमिराव अब कहु मानमई ८४ ॥ रागधनाथी ॥ केतिक
दूरि गयो रथसाई । नंदनन्दनके चलत सखीरी मोहं मिलन न पाई ।
सकहुद्योस द्वारनंद जाके तहां रैन बिनु आई । आज बिधाता मतिहु
रिसानी भवन काज बिसराई । जब चलबेकी साज करतु तब काहुन बात
चलाई । बिधना सकल अकेली कीन्ही शूल सही नहिं जाय । सूरदास
प्रभु कहा जानि जिय जलनिधि दइ है बढाय ८५ ॥ राग जंगला ॥ पाछे ही
चितवत यह लोचन आगे परत न पाय हो । मन भावव लै गये मधुपुरी
कहा करौं ब्रज जाय हो । पवन सुभरी पताका अम्बर भई न रथके अङ्ग ।
धुरी न भई चरना लपटानी जाति उहां लौं सङ्ग । कोबिधि भई करौं
हैं कैसी कबरी मिलैं गोपाल । सुरप्रयास बिन रही ठगीसी सुरछित
परी बिहाल ८६ ॥ रागधनाथी ॥ हरि ज्यों जहां तहां सो ढाढी । हरिके
चलत देखियत सेसी मनहु चित्रलिखि काढी । सुखे बदन अबत नैनन
जल धारा अति बहु बाढी । कांधे हाथ धरे चितवत हैं मानो द्रुम बेली
धौंदाढी । नीकी नहीं करी सुफलकसुत छांड़ि दूध बिन साढी । सूरदास
अक्रूर कृपाते सही दयथा अति गाढी ८७ ॥ राग जंगला ॥ चलन जानि मो-
हन ब्रज युवतिन मानो बनी चितेरति हो । जो जैसे सेतै से अरकी फिरति
न लोचन फेरति हो । बिसरी गति मति बिकल बिरहिनी अवगति
लोचन टेरति हो । रायो जमन मिलि पथपानी ज्यों निबरति नहीं नि-
बरति हो । लगी सङ्ग योगति यशुमति ज्यों घिरति न क्यों पै घेरति हो ।
अब कहि सूर आश अङ्गुश बश उलटि प्रभुको घेरति हो ८८ ॥ रागधनाथी ॥
कहा जानि अब लालन मेरे । हैं अनाथ दुख पायों अति ही मन बचकम
नहिं फेरे । चितवत रही चकोर चन्द ज्यों अबलनकी गति हेरे । प्रयास-
सुन्दर कमल नैन अतिहि दृष्टिकरि चरणान हेरे । सो सब छांड़ि और
जो भावत सकल जन्म भरि देरे । सेखल अब गोपी सब लूटत महाकर्म
के बेरे । सूरदास जासों सुख पावै सो सुख छांड़ि और नहिं मेरे ८९ ॥
राग जंगला ॥ प्रयास चलन अब मनियत आज कौन कटिल यह ब्रज आयो ।
नन्द भवन में भनक सुनी अब कंस जु दूत पढायो । ब्रज की नारिन यहै
निचारेइ सकल मिसरि करि आई । ब्रह्मत समाचार आतुर है गृह
गृह तो उठि आई । प्रीति जानि शोच मति बिलखि बदन बाढी ।

ननहुं वे सखी विविचिचिबहु लिखिकाहीं । येभीकवि दौरदौर कहत
नबनिआवै । सुरदासबिरहबियाकही काहिभावै ६० ॥ राग नट ॥ हरिसे
प्रीतम क्यों बिमराई । गिलन दूरिमन लसत चन्दपर चित चकोर
पछिताई । जलमेंरहै जलहितेउपजत बिन जलही कुम्हिलाई । प्रकट
न प्रीतिकरैपरदेशी सुखकेहि देशवसाई । सोइ गोकुलहै सोइ गोव-
र्द्धन काहि न करिवह छाई । धरणी दुखितदेखि बादर अति बरथा
जलु बरथाई । सुरदासप्रभु तुम्हरे दरशबिनुदुखक्यों हिये बसाई ६१
सखीरी ज्यों कुरुक्षेत्र कुशानी । तबवे दुखदीन्हे जब बांधेताकोफल
अवजानी । बिनुकृतिचकपरी अब समुझी लेतजलनपरमाती । सुन्दर
प्रयाम जबैते बिछुरे बिरह दहतहै छाती । हमअबला अतिदीन हीन
मति वे सबही विधियोग । सुरबदन देखेजिय हरयत हरत शरीर ह-
रोग ६२ ॥ रागमल्ल ॥ सुन्योवसुदेव नन्द सुवनआयो । बियासों कहत
कहु सुनत हेरीनारि रातिहु सुपने कैसेपायो । गये अकूर श्रीकृष्ण
लैनको आज्ञापाय तुरतधायो । दन्तगज तोड़के धनुष बिडार के रङ्ग
भूमि रत्ताजीति पायो । मुष्टि चाखूर शल तोशल मारकर केशगहि
करमोको जो मारेउ । कहेतीय सुनहोकांसजाय मिलोकाहेबैरविसा-
रेउ । दिये लोचनढारि तू कन्त कहामान कहाहम पापकरि जन्म
लीन्हे । सोतो देखतभये येवजराजतेवचो अबहीं मनजान चीन्हे ।
छांड बंधते वसुदेव देवकी तोहिं लाज न मरिधत भूले । मूरलिखि
कर्मघो होईवाही विविहेली होयसो मिटै न भूले ६३ ॥ रागरामकली ॥
तब वसुदेवहरखितगात ॥ प्रयानरामहीं कंठलगाये आनन्देदोउ भात ।
अंबरदेव दुन्दुभि शब्दभयो अतिही जय जय कार । दुष्टदलि सुखदये
संतनि इहिवसुदेव कुमार । दुखगयो हुलास मन अति नगर के नर
नारि । भयो पररा सकल काजहि कलशमंगल वारि । तुरत विप्रन
बोलिपठये धनुकोटि संगाय । मुरके प्रभु ब्रह्मपूरसापाय हर्य बढ़ाय
६४ ॥ रागपरज ॥ रानिन परमोधि प्रयाम सहलडार आयै । काल
वंशनेमि उग्रसेन सुनत धाये । भुक्ति चरता परेउ आय गाहि गाहि
नाथा । बहुते अपराध परे समहुं मोहिं नाथा । महाराज कहि श्री
सुख लिये उरहि लाई । हमरो अपराध समहुं करी हम ढिठाई ।

तबहीं सिंहासन पे उग्रसेन धारे । छत्र शिर धराय चँवर अपने कर
 धारे । ठाढ़े आधीन भये देवदेव भाखे । अपन जानके प्रसाद सादर
 कहिय राखे । सोको कह सतो प्रभु विश्वम्भरन स्वामी । घट घट को
 जानतहौ तुम अन्तर्यामी । तो फिर नृपकहत कहि तुमकेईकेती ।
 सेवा तुम जेती करी देही पुनि तेती । रजकधनुषगज मल्लनिशंकमारि
 काजा । सूरजप्रभु सोहत भये उग्रसेन राजा ६५ ॥ रागभारंग ॥ मथुरा
 लोगन बातसुनी उग्रसेन को राज दियो । सिंहासन बैठारि कृपाकरि
 आप हाथ हरि चँवर लियो । मात पिताके संकट हरिहैं देवनजय
 धुनि शब्द कियो । रानीसबै सरततेराखी उनतेप्रभुनिहिं ओरबियो ।
 अबहीं सुनि बसुदेव देवकी हरित ह्वै है दुहुन हियो । सूरदास प्रभु
 आय मधुपुरी दर्शनते पुरलोक जियो ६६ ॥ रागपूर्वी ॥ मथुराके लो-
 गन सच्चपायो । नरवर भयधरे नंदनन्दन सङ्ग अक्रूर के आयो । प्रथ-
 महिं रजक मारि कर अपने गोपचन्द पहिरायो । तोरि धनुषशाला
 नटनागर सब जग खेल खेलायो । रणभुवि मुष्टि चारार बली अति
 भुजसों तारबजायो । नगरनारि गारीदैकहहीं अजशुति युद्ध बनायो ।
 बरषहिं सुमन अकाश महाधुनि दुन्दुभि देव बजायो । चढिकर अमर
 बिमान परस मुख कौतुक इन्द्र आप आयो । कंस मारि सूर राजी
 करिकै उग्रसेन शिर नायो । मात पिता बन्धन ते छोरे सूर सुयश
 गायो ६७ ॥ रागनट ॥ मथुरा घरघर सुनि यह बात । रजक धनुष गज
 मल्लनमारो तनकसे नन्दके तात । धन्यमात धनिपिता धन्यगृह धन्य
 धन्य बहरात । जबकि लियो अवतार धरणिमें धन्य बनी सो मात ।
 हंसकेसे जोटदोक असुरदियो निपात । सूरयोधा सबैसारे कहा जानत
 घात ६८ ॥ रागकान्हरो ॥ साधव वे भुज कहा दुराये । जिहिभुजते आघा-
 सूर सारेउ अस सबगोमुत ग्वालबचाये । जिनभुजते प्रह्लाद उबारे हरि-
 नाकशको उदरबिगारेउ । जिनभुजले दांवरी बँधाये जिन यमलार्जुन
 मुक्तिपढायउ । जिनभुजते बलियाचकह्वै के हरिजू बामन ह्वै केआये ।
 जिन भुजते लंकागढ़ ढायो रावणाशीश तबै लौढाये । आनि विभीषण
 प्रभु जू निवाड्यो सुस्थिर राज तिन्हें देआये । जिन भुजते भारत हठ
 दान्यो कौरव पांडव आनिलराये । जिन भुजते अंडा भरुही को सकल

युद्ध क्षणा माहिं बिलाये । जिनभुजते सबदेव उधारेउ मुनिह्वै निपुनजु
 आये । जिनभुजते पृथिवी हलराये महाशब्द अंकते जु उदाये । जिन
 भुजते बलिजाइमूर अब रंगभूमि दृगा तोरि लँघाये ६६ ॥ रागपूर्वी ॥ दे-
 खन मन्दिरपर जु चढी । यदुपति पूरगाचन्द बिलोकिति जनुपूर उ-
 दधि तरंगबढी । दरशनकी प्यासी अतिआतुर निशिवासर श्याग्राम
 रही । रही न लाज मोहिं मुख चितवत सबनि सुनाइ अशीय पढी ।
 रही देहकी खेह करमवश जनुपट घटिका अनलडढी । सूरदास प्रभु
 कृपा बिलोकनि मनहुं बिधातैं फेरि मढी १०० ॥ रागकल्याण ॥ खेलत
 गजसँग श्याम रामकँवर दोऊ । क्रोध द्विरद व्याकुलअति इनकेरिस
 नेकनहीं चकृतभये योधातहँ देखत सबकोऊ । श्यामभटकि पंखलेत
 हलधर करशुडिदेत महल महल नारिचरित देखत यह भारी । ऐसे
 आतुरगोपाल चपलनयन मुखरसाल लिये करवेगु लकुट लाल मनो
 नितकारी । सुरांगना व्याकुल बिमान मनमन सबकरैगान बोलतयह
 बचन अजहुं सारिउतहिं हाथी । सूरजप्रभु श्यामराम अखिललोकके
 बिश्राम पुरपूरगा काम करन नामलेत साथी १०१ ॥ रागधोरठ ॥ तब
 रिसाकियो महावत भारी । जोनहिं आजुमारिहैं इनको कंसडारिहै
 सारी । अंकुश राखि कुम्भ पर करण्यो हलधर करहै किलकारी ।
 धायो भवनहुंते अतिआतुर धरणी देतखभारी । जब हरि पंखगह्यो
 दक्षिणाकर कम्बुकवर शिरवारी । पटक्यो भूमिफेरिनहिं सटक्यो महा
 कुबलया भारी । दुहुंकर द्विरद दशनयक यक छविसे निरखत पुर
 नारी । सूरदास सुरनर मुखदायक सारोनागपकारी १०२ ॥ रागढोड़ी ॥
 हँसत हँसत श्यामप्रबल कुबलया सँहारेउ । तुरतदन्त लयेउखारि क-
 न्वनिपर धारेउ । निरखत नरनारि मुदित चकृत गजसारी । अतिही
 कोमल अजान सुनत नृपति जीयमें सँकारो । तनुबिन ज्यों भये प्राणा
 सलनि प्रेमआये । देखतही शंक्तिगये कालनिरखि भाये । कंसआन
 धेरिलियो दोउमन मुसक्याये । असुरबीर चहँ पास जिनके मुख अ-
 काशमल करतगास नाशब्रह्मको बिचारै । सबै कहत भिरहु श्याम
 सुनत रहत सदानाम हारजीत घरहीमें कौन काहि सारै । हाँस बोले
 श्यामराम कहासुनत रहेनाम खेलनको हमहिंकाम बालकसँगडोले ।

सुरनन्दकेकुमार यहै राजसी दिचार कह। कहत बार बार प्रभु ऐसे
 बोले १०३ ॥ रागकल्याण ॥ रंगभूमि आये अतिनन्द सुवनबारे। निरखत
 प्रजनारि नेहउरते न बिसारे। देखोरी मुष्टिक चारार इनहँकारे। कैसे
 अबबचै नाथ उर्ध्वशाय डारे। रजक धनुष योधा हति दन्तगज उपारे।
 निर्दय यह कंसइनहिं चाहतहै मारे। कहां मल्लकहां अतिहिकोमल
 अंगबारे। कैसीजननी कठोर कीन्हे जिनन्यारे। बारबार सबै कहति
 भरिभरि दोउतारे। सुरजप्रभु बलमोहन उरते नहिंटारे १०४ ॥ रागमाह ॥
 नवलनन्द नन्दन रंगभूमि आये। संगबलराम अभिराम शशिसुर जो
 अपनी आपछबिसों सुहाये। द्वारगजराज लखि पीतपट कटि कसत
 मन्दमृदुहंसत अतिलखतभारी। कछुकही परतीत गजहि फिरिहेरिके
 पेंचदेखबीली पगिया सँवारी। गर्बके गिरिमनो चलत पायँन तैसेही
 कुबलया प्रबल रिखहिवायो। बालकनि बच्छु ड्यों पूंछधरि खेलिये
 तैसे हरिहाथ हाथी गिरायो। गहि पटक पुहुमि पर नेक नहिं मत
 कियो दन्तफिरि जालसे ऐंचि लीन्हे। कन्धधरि चलेशेउ बीर नोके
 बने निरखि पुरजन प्राणावारि दीन्हे। शैलसे मल्ल सबै धाड़ आये
 शरनकौड भूलोगाड धरंधराने। कंसके प्राणभयभीत पिंजराचले नव
 बिहंगम भरत फरफराने। मधुपुरीकी युवतीसबै कहतिअति रतिभरी
 देखरी देख अँग अँग लुनाई। सुनत अथगानि रही देखरी तब सही
 मधुर सूरति सुरनपति न पाई। निपट स्मर दोऊ निरखि देखरीबिधि
 बडो क्रूर किधौं हम अभागी। परमहंस ब्रह्मरिपु रिपुदमन देखभक्त
 जननके आनन्द अनुरागी। अबलसों अबल भये सबलसों सबल भये
 ललिततनु उद्योति अतिही प्रकाशी। ज्ञानकरि ध्यानकरि जिन जैसी
 लईमानि मातपित दुखदूरि मूर अबिनाशी १०५ ॥ रागसोरठ ॥ मथुरा
 रोषी आजुबनी। सानोपतिको आगमजान्यो सजेशिंगार घबी। भू-
 यगा चित्र बिचित्र देखियत शोभित सुन्दर अङ्गनि। सानोकोटिकसी
 कटि किंकिशि उपवन बसन मुरझनि। सुनि अतिसघन करालघोषमें
 पायँन नूपुर बाजत। उर अञ्चल चञ्चल अति राजत धामनि ध्वजा
 बिराजत। ऊंचे अटन नक्षत्रनकी छवि जनुयुवती मणु फली। कनक
 कलश कुच प्रकट देखियत आनंद कंचकि भली। बिद्रुम फटिक पा-

नची ऊपर जालरंध्र की रेख । मनहुं तुम्हारे दरशन कारणा नयननि
तजी निमेख । अवलोकहु यहि भांति रमापति पुरी परम स्तविरूप ।
सूरदासप्रभु कंसमारिके होहुयहांकेभूप १०६ ॥ रागधनायो ॥ ॥ कुब्जा
हरिकी दासी आहि । जैसे आप भांगि गोकुल रहे तैमे राखी ताहि ।
रूप रतन दुराय यहि राख्यो जैसीदीन न काही । जैसे छाप अमोल
रतन परि कहजानै जो करमाही । वैसेहि रही कुबरीदासी अबिनाशी
की आहीं । सूरदास प्रभु कंसमारिके लई आनि तिहि नहीं १०७ ॥
रागधनायो ॥ अति हित चञ्चल जानि लई । मन भांवरि करि अति
नागर बर रसबस मोललई । परमानन्द सांवरे ऊपर तनमन बिसरि
गई । राधाप्रयास प्रीति उरअन्तर सर्वस प्रीतिहई । आवनजान गवन
कत कीन्हो हरि सब भांति ठई । गोपीनाथ प्राणा के रस बस जाणी
जाय दई । गिरिधर लाल रसिक के ऊपर कुब्जा वारि गई । मानत
नाहिं लई सांवरको सकल प्रीति सखा सांभई । माननि मानकरत
गोपी हमें दुख सब भांति बई । सूरदास चिन्तामणि चित धरि अब
कित प्रीति गई । जेरेमन बचकमहिं सांवरे और न मानमई १०८ ॥
रागिनी भूपाली ॥ आनदेही हर्य बढो अति । देवचन्द चरशारबिन्द ज्यों
मथुरा प्रकट भयो पति । गावत गुण गन्धर्व जु पुलकित रसिक सूर
जो अति रति । विद्यासुरधर कंठक ततिअति तालउद्यततननि जति ।
शिव विरंचि सनकादिक आगे चितनसमान रहेउ रति । कमल न-
यन शशि बदन बिलोक्त देखि बदन जु बिचित्र रति । प्रयाससुभग
जो पीत बसन द्युति और आनि जोरे अति । नखमणि मुकुटबिभाव
मुदित ज्यों चितै न मानतिमनयति । सूरदास प्रभु किशो कृपा अति
भुज के चिह्न दुरावति १०९ ॥ रागगौड ॥ क्रोध राजराजपाल कीन्हो ।
गरजिघुसरात मदभारगाननिअवगापवनते बेगितिहि समयचीन्हो ।
चक्रसों धसत चक्रतभये देखि सब चहुं धोदेखिये नन्दढोटा । चमकि
गये बीर सब चक्रों चोंधो लगी चितै डरपे असुर घटा घोटा । लाल
अम्बर धौलबरन बलराम तनु पीत अम्बर प्रयास अङ्गशोभा । सूरप्रभु
चरित पुर नारि देखत महल महल पर आशिर्वाद देत लोभा ११०
कहत हलधर कहेउ मान मेरो । अखिल ब्रह्मांड के नाथ ह्यंहैं खरे

मारि राजजीव अब लेहुं तेरो । यह सुनत रिस भरो दौरिबे को करो
 श्राव भटकत पटाकि कूक पारो । घातमन करेलैं डारिहैं दुहुंतिपर
 दियो राजपेलि आपुन हँकारो । लपक लीन्हो धाय दर्बाकि उर रहे
 दोउ भ्रम भयो राजहिं कहां गये वैधों । अरो दै दगन धरणीकोटबीर
 दोउ कहत अबहीं याहि मारिकैधों । संगदै हांकटाढे श्याम पाछेते
 रामभये आय आगे । उतहि वे पुच्छ गहि जाय यह श्राव कैं फिरत
 राज पास बहु हँसत लागे । नारिमहल निरखिसबै अतिहि डरीं नन्द
 के नन्द दोउ राज खितावैं । सूरप्रभु श्याम बलराम देखतिवसतिवचैं
 ये कुंवरविधि सों मनावैं १११ ॥ रागकल्याण ॥ भले नन्दके छोहरा रे
 डर नहीं कहा जो सल सारे बिचारे । बारहीबार दै हांक गये कहां
 अब आपने सबअसुरन हँकारे । पौरि गाढीकरे डारबीरन कहे आय
 ललकारि इत मारिदेवैं । बहुरिघरजाहुगे धेनु दुहि खाउगे जानदेहु
 तुमहिं प्राण लेवैं । कोउ न टरे वहां लोदै आवतकहां पग दै धरणी
 हरी सन्मुखै आयो । चकत गयो मीच दर्शन भयो कहारी मीच यह
 कहि सुनायो । श्याम बलराम के नाम लैलैं कहत साथ आई लेव
 तुमहिं बाजैं । सूरप्रभु देखि नृपक्रोधकारि घरी यककटि पीतपट देव
 राजैं ११२ ॥ रागमाह ॥ देखि नृप तमकि हरि चमकित हैं गेंदमारि
 लीन्हे गहि बाज जैसे । धमकि मारो धाय तमकि हृदयधरो भूमकि
 गहि केशलै चलै धैसे । ठेलि हलधर दियो भेलि तब हरिलियो म-
 हलके तरे धरणी गिरायो । असर जय धुनि भई धाक त्रिभुवन गई
 कंस मारो निदरदेवरायो । धन्यबाणी गगन धरणीपाताललों धन्य
 हो धन्य बसुदेव ताता । धन्यअवतार लियोसुरन उपकार दै सूरप्रभु
 धन्य बलराम भ्राता ११३ जयजय धुनि तिहुंलोक भई । मारि कंस
 धरणी तब उधरी ओक ओक आनन्दमई । रजकमारि कोदराइ
 विभंज्यो खलत राजकर प्राणालियो । सलपछारि तुरत संहारे सबन
 मान सुरलोक दियो । पुर नरनारिन को मुख दीन्हे जो जैसा फल
 सोइ लहेउ । सूर धन्य यदुवंश उजागर धन्यधन्य धनि धुमरि रहेउ
 ११४ आजुतो निशान बाजे बसुदेव रायकै । मथुराके नर नारी उदै
 सुख पायकै । असर बिमान सबै कहैं हरयायकै । फले मात पिता

देउ आनन्द बढाय कै । कंसको भगडार देत सबै लुटाय कै । धेनु जे सकल राखे नन्द ये नाय कै । ताँबे रूपे सोने सजि राखे बनायकै । सागध मङ्गनजन लेत मनुभायकै । अष्टसिद्धि नवसिद्धि आगेठाहीं आयकै । सर्वातिलक बिप्रन बन्दिदई दिवायकै । सब पुरनारि आई मङ्गल गायकै । अम्बर भूयरा पठैदई उन्हें पहिरायकै । अखिलभुवन जन कामना पुरायकै । पुरजन धन देतहैं लुटायकै । सुरजन दीनद्वारे ठाढ़ेभये गायकै । कछु कृपाकरि दीजै मोहिंको दिवायकै ११५ जब यदुकुलपति कंसहि मारो । तिहुंभुवन भरिषोर परो है तुरत मंचते धरिणा गिरायो । ऐसेहि मारत बिलस न लायो । केशगहे पुहुसी घिसरायो । डारियसुन जलबीच बहायो । जाके मुह तिहुंभुवन डराई । ताको मारो हलवर भाई । जाके धनुय टकोरत हाथा । आसन डारि भजे सुरनाथा । मारत ताहि बिलस नहिंकीन्हे । उग्रसेन को राज्य सुदीन्हे । जयहो जयबसुदेव कुमारा । जयहो जय तुम नन्ददुलारा । सुरदेवी देवै धनि मैया । धनि यशुमति त्रिभुवनपति धैया ११६ ॥ रागधनाथी ॥ धनि अक्रूर मधुपुरि लैआये । सूर असुरजयजय धुनिगाये । दनुजवंश निरवंश कराये । धरणी शिरते भारगँवाये । मातपिता बन्धनते छुड़ाये । यहबाणी सुरलोकनि गाये । जो जैसे तैसे तिहिभाये । सुरज प्रभु सबके मुखदाये ११७ ॥ रागबिलावल ॥ कंस मारि सुर काज कियो । मात पिता बन्धनते छोरे दुखबिसरे आनन्द हियो । उग्रसेन को धार्यमिले हरि अभय अचलकरि राजदियो । असुरवंश निरवंश सगाकमेंसकीनहिं कोउ और बियो । मिली कूबरी चन्दनदेकै ऐसेहि हरिको नामलियो । सुनहुसूर नृपपास जातिहैं बीचमुक्त अतिदरश दियो ११८ ॥ रागमाला ॥ कूबरी पूरव तप करि राख्यो । आये प्र्याम भवन ताहीके नृपति महल सबनाख्यो । प्रथमहिं धनुयतोरि आवत हैं बीच मिली वहधाय । तिहि अनुराग बश्यभये ताकेसो हितकह्यो न जाय । देवकाजकरि आवन कहिगये दैगये रूपअपार । कृपा दुष्टि चितवत श्री श्रीभई निगम न पावत पार । हते दूर दिन नीके पाके ऐसे दीनदयाल । सुरसुरनके काज तुरतही आवत तहैं गोपाल ११९ ॥ रागजैतसी ॥ यहै कहत बसुदेव ब्रिया । जनि रोवहुहो बारन्दे सौहनार

सुख बोवहु नारी। कहियतहै गोपाल हरया दुखगर्व प्रहारी। कबहुं प्रकट वे हाहिंगे कृष्ण तुम्हारे तात। आजु कालिह हरि आय हैं यह सपनेकी बात। अब जिन होय अधीर कंसके आय तुलान्यो। देखत जाय बिलाय भार तिनका करि जान्यो। ऐसे सपने मोहिं भयोरी प्रिया सत्यकरि सानि। विभुवनपति तेरे सुवनहैं तोहिं मिलैगे आनि। यदि अन्तर हरि कहेउ सात पितु कहां हसारे। तहँ लैगये अक्रूर प्रयास बलराम पधारे। बर्जशिला हारे दियो दर्शनते गये छूटि। सहज कपार उधरि गये तारा कूँजी खूटि। जो देखे बसुदेव कुंवर दोउ काके आयो। दर्शनदियो तोहभेय प्रथम जो दर्श दिखायो। पाय मिले पितु सातको यह कहि मैं तुत्रतात। मधुरे रोवन दोउलगे सुनिहैं कंधरात। तुरत बन्दते छोरि कहेउ मैं कंसहि माख्यों। योधा सुभट संहारि सल्ल कुबलया पछाख्यों। जिय अपने जनि डरकरो मैं सुततुम पितु सात। दुखबिसारि अब सुखकरो अब काहे पछितात। निश्चय जननी जानि कंधरि रोवन तारी। तब बोले बलराम सात तुमते को भागी। बारबार देखै कहै कौनगोद खेले नाहिं। द्वादशदय कहां रहे सात पिता बलिजाहिं। पुनि पुनि बोधत कृष्णालिखयो नहिं मेरेकोई। जोइ जोइ मनकी साधकहो मैं करिहैं सोई। जो दिनगये सो गये तब अब सुख लूटो सात। तातनृपति रानी जननि जाके मोसों तात। जोइ मत इच्छाहोय तुरत देखो मैं करहूं। गगन धरिया पातालजात कतहूं नहिं डरहूं। साता हृदये तब कहो मनमन बहेउ अनन्द। महर सुवन मैं तो नहीं मैं बसुदेवको नन्द। राजकरी दिन बहुत जानिके है अब तुमको। अष्टसिद्धि नवनिधि दोउ मथुरा घरके। रमा शिवकनी दोउ करि कर जोरे दिनयाम। अब जननी दुखजनि करो करो न पूरया काम। धनि यदुवंशी प्रयास यहै युग चलत बड़ाई। शेष रूप मैं राम कहत नहिं बात बनाई। सुरज प्रभु दनु कुल दहन हरन करन संसार। ते पाये सुत तुमहिं करि करो न सुख बिस्तार १२०

राग काफ़ी ॥ किये सुरराज गृहचले ताके। पुरुष असु नारिको भेदभेदी नहीं कुलिन अकुलीन अब तरो काके। दास दासी कौन प्रभुनि प्रभु कौनहैं अखिल ब्रह्माण्ड यक रोम जाके। भाव साँचो हृदय जहाँ

हरि तहांहै कृपा प्रभुकी साथ भागवाके । दास दाधी प्र्यास भजनहु
 ते जिये रमा सम भई सो कृपा दासी । मिली वह सूरप्रभु प्रेम चन्दन
 चरचि कियो जप केटितपकोटिकासी १२१ कुब्जासदन आये प्र्यास ।
 करि कृपा हरि गये प्रथमहिं भई अनुपम वाम । प्रीति के बश दीन
 बन्धव भक्तवत्सल नाम । मिली मारग सतय लैके भये पूरा काम ।
 उर्वसी पटतर नहीं नहिं रमाके मन ताम । सूर प्रभु सहिमा अगोचर
 रमादासी धाम १२२ ॥ राग धनश्री ॥ मथुरा के नरनारि कहैं । कहां
 मिली कुब्जा चन्दन लै कहा प्र्यास तिहि कृपा चहैं । कहा तपस्या
 करि यह राख्यो जहाँ तहाँ पूर यहै चले । कहु नहिं आवत हरि
 देखी यहै करौ प्रभु हेत भले । तबहिं कृपाकरि सुन्दरि कीन्ही यह
 सहिमा मोहिं कहिनहिं आवैं । सूरजदास भाग कुबरीको को न ताहि
 के पटतर पावैं १२३ ॥ रागगोडमलार ॥ हर्य नरनारि मथुरापुरीके । शोच
 सबको गयो दैत्यकुल सब हयो तिहुंभुवन जय जयो हर्यकरिके । नि-
 दरमारो कंस प्रकट देखत सबै अतिहि दिन अतप के नन्द डोटा ।
 नयन दोउ ब्रह्मसे परम शोभा लसे भक्तके यथा शुभ हंस जोरा । देव
 दुन्दुभि बजी अमर आनंदभये पुहुपगारा बरयहींचैत जान्यो । सूर व-
 सुदेवसुत रोहिणीनन्द धनिधनि मिथ्यो भार भुवअखिल जान्यो १२४
 रागमाह ॥ तुरत मारोकंस देवनाथा । निदरमारो अमर पूतना आदिने
 धरिया पावनकरी भइ सनाथा । लोकलोकन बिदित कथा तुरतिहि
 गई करन अस्तुति जहँ तहाँआये । देव दुन्दुभि पुहुप वृष्टिजय धुनिकरे
 दुष्ट यहमारि सुरपुर पढाये । केश गहि करिय के यमुनजल डारिदे
 सुन्यो नृपनारि पति कृपा मारो । भई व्याकुल सबै हेत रोवनलगीं
 मरणाको तुरत जोहर बिचारो । गये तहां प्र्यास बलराम बोधी सबै
 कहत सब नारि तुमकरो तैसी । सुनहु नृपनाम वह काम ऐसोइ रहेउ
 जानि यह बात क्यों कहत ऐसी । मरति काहे कहा तुमहिं कह वह
 भई जानि अज्ञान तुमहात काहे । सूरनृप मारिहरि बचनकी सत्यता
 हरख है प्र्यास मुख रामचाहे १२५ ॥ रागमाह ॥ सही सुत नन्दअहीर
 के । मारैउ रजक बसन सबलुख्यो संग सखा बलवीरके । काँधे धारि
 दोउजन आये वन्तकुबलिया पीरके । पशुपति मगड़लमध्य मनोमनि

श्रीरधि नीरधि सीरके । उठि आये तजि हंस मातमनो मान सरोवर
 तीरके । सुरदास प्रभुताप निवारन हरनसन्त दुखपीरके १२६ ॥ राग-
 गोंड मलार ॥ बोलिलीन्हें कंसमल चाणूरको कहारे करत क्योंबिलम
 कीन्हो । बंश निरबंशकरि डारिहीं सगाक में गारि दै ताहिवास
 दीन्हो । शत्रुनान्हो जानिरहे अबलौबैठि जनक आपनेको मारि डा-
 रो । द्विरदको दन्त उपटाय तुमलेतहो यहैबल आजु काहेनसंहारो ।
 भलीनहिं करीतुम राखिराख्यो उनहिं है वही कहि तुरततेहि पटायो ।
 क्रोधकहु शासकहु शोचकहु शोककरि साहसै करतरंगभूमिआयो ।
 परस्पर कहि सबनि नृपति शस्योमोहिं सुनहूरेबीर अबलों न सा-
 न्यो । प्रथम बलराम इतदुहुनि को मारकर होयसो होययह कहत
 रान्यो । निरखि दोउ बीरतन डरेदोउ मनहिंमन वहीबुधिकरो ज्यों
 नाशकीजै । लखति पुरनारिप्रभुं सुरदोउ मारिहैं कहत है नृपतिपशु
 सुयशलीजै १२७ ॥ राग कल्याण ॥ देखोरी मल्लइन्है मारन को दौरे ।
 अतिही सुन्दरकुमार यशुमति रोहिणीवार बिलपति वह कहतिसबै
 लोचनढोरे । कैसेहू बचै आज पठये धौं कौनकाज निदुर हियोमाता
 को लाभही पटायो । एतौ बालक अजान देखौ उनको सयान कहा
 किये ज्ञानयहां काहेको आयो । कहांमल्ल सुष्टिकसे चाणूर शिला-
 भञ्जनसे कहत भुजागहि पटकन नन्दसुवन हरये । नगरनारि व्याकुल
 जियजानत प्रभु सुरप्रथम गर्बहतन नामध्यान करिकरि वे हरये १२८
 राग धनाश्री ॥ कहत पुरनारि यहमनमों हमारे । रजकमारेउ धनुषतोरी
 द्वैखण्ड करेउ हत्यो गजत्यो इनिहैं कौनसारे । त्रिसित अति बारीबैस
 मल्लज्योंज्यों कहे लरतनिहैं प्रथम हमसङ्ग काहे । परस्पर सतौकरत
 मारिडारो इन्है लखत यहचरित दुहुमुखनि चाहे । कहाहम कहैयह
 होन चाहत कहा अबहिं मारत दुहुन हमहिं आगे । सुर करजोरि
 अंचरछोरि बिनबै बचैये आजुबिधि यहैमांगे १२९ ॥ राग गोंड मलार ॥
 सुनहो बीर सुष्टिक चाणूर तुम हमहिं नृपपासनहिं जानदैहो । घेरि
 राखे हमहिंनहीं ब्रह्मत तुम्हें जगत में कहा उपहास लौहो । सबै कह
 यहै भली मति तुमपैहै नन्दकुंवर दोउ मलभारे । यहैयश लेहुगे जीव
 नहिं देहुगे खोजहीपरे अबतुम हमारे । हमनहीं कहतु मनमनिहैं जो

यहैबसि कहत हो कहा तो करै तैसी । मूर हमतन निरखि देखिये
 आपको बाततुम मनीहँ यह बसीनैसी १३० ॥ राग टोड़ी ॥ जबहींश्याम
 कही यहबानी । वहसुनिकै युवती बिलखानी । मल्लनि कहेउ हमहिं
 तुमदेखो । अपने बल अपने तनुपेखो । चितयेमल्ल नन्दसुत क्रोधा ।
 कालस्वरूप बज्रकी घोधा । भुजएँटी रजअङ्ग चढाये । गांस धरोहरि
 ऊपर आयो । श्याम सहज पीतान्बर कांधे । हलधर निरखत लोचन
 आंधे । तबचागार कृष्णपर धायो । भुजा जोरिके अँगबल पायो । प्र-
 थम भयो कोमल तनताको । शिथिल रूपमन मेलतवाको । तबचागार
 गर्वमन लीन्हो । दुर्गप्रहार कृष्णपर कीन्हो । फूलहुते अतिसम करि
 मान्यो । तिहि अपनेजिय मारेउ जान्यो । हरख्यो मल्लमारि भयो
 न्यारो । कहन लग्योमुख अहो बिचारो । हँसत श्यामघन देखेठाढ़े ।
 शोचपरेउ तब प्राननि गाढ़े । फिरिकहि कहिहरि मल्ल हँकारेउ । स-
 नहु गुहाते सिंह पुकारेउ । हांक सुनत सबकोइ भुलान्यो । धरधराय
 चागार सकान्यो । मूरश्याम हरि महतम जान्यो । निप्रचय मृत्यु आ-
 पनी मान्यो १३१ ॥ राग गेड मलार ॥ गहेकर श्याममल्ल अपने धाय
 भटार्क लीनोतुरत तेहिपटार्क धरणी । भटको अति शब्दभयो पटक
 नृपकेहिये अटार्क प्राननि परेउ चटक करणी । लटक निरखन लग्यो
 सटकसब भलिगई हटक डारिदेहु यहैलागी । भटार्क कुण्डल निरखि
 अटक हँकै गयो गटार्क सलसो रहेउ मीचजागी । मल्लजेजे रहे सबै
 मारे तुरत असुरयोधा सबैतो सँहारे । धाय दूतनि कहेमल्ल कोउ नहिं
 रहे मूर बलराम हरिसब पछारे १३२ भिरेउ चागारसो नन्दसुतबाँधि
 कटपीतपट फेंट नवरङ्ग राजे । द्विपदन्त करकलित अरुभेष नटवर
 ललित मल्लउर मल्ल तलतालबाजे । पीनभुज नीलजै लच्छिरञ्जित ह-
 दय नीलघन शीततन तुंगछाती । देखिरहि मेखरति प्रेमनर नागरी
 बदतितजि भीररति शीतिराती । मत्तमातङ्ग बलअङ्ग दम्भोलिदल का-
 क्खनीलाल गलमाल सोहै । कमल दलनैन मृदुबैन बंदित बदन देखि
 मुरलोक नरलोक सोहै । बाहुसों बाहुउर जानसों जानुनी चरगासों
 चरगाधरि प्रकटपेलैं । परस्पर जब करत मोहन अरुमल्ल दोउ देखत
 नारिपुनर मष्टभेलैं । घूमदे घुंघरनि भीडभइ बन्धु जन सुभट पदपाशा

धरिया धरति मौलै । चित्तसौचित्त मनबन्धु मन बन्धसों दुखिसोंदृष्टि
 नहिँ सूरडोलै १३३ ॥ राग मारु मथुराके लोगन सच्चुपायो । नटवर भेय
 काछि नँदनन्दन संग अकूर ले आयो । प्रथमहिँ रजक सारि सनमो-
 हन गोपचन्द पहरायो । धनुषतेरि लीला नटनागर तबराजखेल खे-
 लायो । रङ्गभूमि सुखिक चारारहि भुजबल तालबजायो । नगरनारि
 दै गारिकन्सको अजगुत युद्धबनायो । गनगन्धर्व और देवतनसों कौ-
 तुकअम्बर कायो । मारेउकंस काजसब सारेउ उग्रसेनि मनभायो । हरये
 बसुदेव देवकी आनन्द मङ्गल बधायो । मात पिता की बन्दि छुड़ाई
 मूर सुयश यशगायो १३४ ॥ रागधनाम्नी ॥ आजु परमदिन मङ्गलकारी ।
 लोक लोक को टीको आयो मुदित सकल नरनारी । शिव सुरेशशेष
 असु नारद चन्द्रानन करयारी । हरिकर पाटबन्ध नौकावर करत र-
 तन पटसारी । बाजत होल निशान शंखधुनि बहुत कलाहल भारी ।
 अपने अपने लोग चलेसब सूरदास बलिहारी १३५ जो पैराखति हो
 पहिँचानि । तो अबके वह मोहनमूरति मोहिँ देखाबहु आनि । तुम
 रानी बसुदेव रोहनी हो गँवार ब्रजवासी । पठैदेहु मेरोलाल लहै तो
 वारों ऐसी हांसी । भलीकरी कन्सादिक सारे सबसुर काजकिये ।
 अबइन गैयन कौन चरावै भरिभरि लेतहिये । खानपान परिधानरा-
 जमुख जो कोउकोटि लहावै । तदपि सूर मेरेबारे कन्हैया साखनहीं
 सच्चुपावै १३६ ॥

श्रीकृष्णकेवचननन्दप्रति ॥

रागनट ॥ तुममेरी प्रभुता बहुत करी । परम गँवार औरपशु पालक
 नीचदशा ते ऊँचधरी । रोगद्वेष सन्ताप जनम के प्रगततही तुम सबै
 हरी । असु महामिधि और नवैनिधि करजोरे मेरेद्वार परी । तीन
 लोक असुभवन चतुर्दश बेदपुराणान शाखधरी । सूरदास प्रभु अपने
 जनको देत परममुख घरीघरी १३७ ॥ रागबिहागरी ॥ जाहु ब्रजकहुँ फि-
 रहु नन्दराई । हमहिँ तुमहिँ सुततात को नातो और परेउ है आई ।
 तुमकीन्हे प्रतिपाल हमारो शूलन जियते जाई । जहाँ जहाँ हमरहै
 तुम्हारे डारहु जिन बिसराई । जननि यशोदा खालसखा सब मिलि-
 यहु करादलगाई । सुदिन साधि सोधिकर देखो मेरोई गुणगाई । माया

मोह मिलन असु बिहुरन सेसेही दिनजाई । मूरदास प्रभु नितुर बचन
 सुनि नैननिनीर बहाई १३८ ॥ पुरिया घनाथी ॥ फेरिनन्द उत्तर नहिं
 दोन्हे । रोमरोम भरिगये बचन सुनि मनहुं चित्रलिखि कीन्हे ।
 यह तो परम्परा चलिआई सुख दुख लाभ असहानि । हसपर दया
 मया करि रहियो सुत अपनो जियजानि । कोजलपै निरखे काके
 पल लागे निरखि बदन शिरनायो । दुःख सम्ह निदोपरि पुरके
 चलत कंठभरि आयो । अधर पाद भुवमयी कोटिगिरि जोसँगिगो-
 कुल पैठो । मूरदास अम कवन कुलिशतेअजहुं रहततन बैठो १३९ ॥
 रागमोह ॥ नन्द बिदाह्ये घोष सिवारे । बिहुरन मिलनरची बिधि
 सेसे यहसंकोच निवारे । कहियो जाययशोदा आगे नयन नीर जिन
 डारो । सेवा करि जान्यो सुतअपनो करि प्रतिपाल हमारो । हमहिं
 तुमहिं कछु अंतरनाहीं तुम जो ज्ञान बिचारो । मूरदास प्रभु यह
 बिचारि कै उह जिनि प्रीति बिसारो १४० ॥

अथ नन्दरायजी अरु श्रीकृष्ण के प्रतिबचन ॥

गोपालराय हो न चरणा तजिजैहैं । तुम्हेंछाँडि मधुवन मेरे मोहन
 कहा जाय ब्रज लैहैं । उतरु कहा देहो यशुमति को जब सन्मुख में
 जैहैं । प्रात समय सोवत उठि जननी काहि कलेऊ देहैं । बारहबर्थ
 दई हम ढीठ्यो यह प्रताप नहिं जान्यो । अब तुम प्रकट भये बसुदेव
 सुत गरग बचन परमान्यो । कतहम काजसहारिपु मारेब्रजआपदनि
 बिनासी । डारिन दयो कमल करते गिरिदबिसरते ब्रजवासी । बासर
 सङ्ग सखासब लीने टेरिन धेनु चरावहु । क्यों रहिहैं यह प्राणा दरश
 विनु संध्यासमय न आवहु । अबतुमराजकरौ कोटिक युग मात पिता
 मुख देहो । कबहू तात तात मेरे मोहन मुखसों मोसों कहिहो । ऊ-
 रध आस चरणा शिथिलाने नयननि जल भरिताई । सुरनन्द बिहुर-
 न की बिपदा सोपैकही न जाई १४१ ॥ रागपूर्वी ॥ अपने गोपाल को
 हैं चरो । जन्म जन्म सुनि सुवल सुदामा निबहेउ यह प्राणा मेरो ।
 ब्रह्मादिक इन्द्रादि आदि दे जानत बल सबकेरो । सकआसकीआस
 चलतउठि तजितजि अपनो खेरो । कहाभयो जो देश द्वारकाकीन्हे
 दूरिबसेरो । अपनेहीं या ब्रजके कारणा करिहैं हरि फिरि फेरो । इहं

उदार हम फिरत साथही तकत असाध अहेरो । मूर हिये ते तरत न
गोकुल अंग छुवतही तेरो १४२ ॥

श्रीकृष्णवचन नन्दयशोदा प्रति ॥

रागकलिंग ॥ नीके रहिये यशोदा मैया । आबैगे दित चार पांच में

हम हलधर दोउ भैया । बंशीबेगु बियाददेखियो और अवेर सवेरो ।
लै जिनजाय चोराय राधिका कहू खिलौनामेरो । जादिनते हमतुमते
बिछुरे कोहु न कहे कन्हैया । प्रातसमय उठि कियो न कलेऊ सांभ
पियो नहिं घैया । कहा कहीं कछुकहत न आवै यशुमति जेतो दुख
पायो । अब सुनियत बसुदेव देवकी कहत हमारो जायो । कहियो
जाय नन्द बाबासों मंदनितुरमन कोन्हो । सुरश्याम पहुँचाय मधुपुरी
बहुरि संदेश न लीन्हो १४३ ॥ रागमाह ॥ मेरे कान्ह कमलदल लाचन।
अबकी बेर बहुरि ब्रज आवहु कहा लगे जिय शोचन । यह लालसा
बहुत मेरे जियबैठेदेखत रहिहैं । गाय चरावन जान कुंवरको कबहू
भूलि न कहिहैं । करत अठान न बरड्यों कबहू अरु साखन की
चोरी । अपने जियत नयन भरि देखों हीराकीसी जोरी । एक बेर
मिलिजाउ इहांलैं अनत कहूँ केऊतर । चारिहु दिवसआइ सुखदीजै
सुरपहुनई मूतर १४४ ॥ रागधनाश्री ॥ पथिक इतनी कहियोवात । तुम
बिनु इहां कुंवरवरमेरे हात जिते उतपात । बधे अघासुर तरत नरारे
बालक बनहिं न जात । ब्रज पंजरि संधि मानों राखे निकसन की
अकुलात । गोपीगाय सकल लघु दीरघ पीतवरगा कृष्णागत । परम
अनाथ देखियत तुमबिनु केहि अवलंबिये तात । कान्ह कान्ह के
तेरत तबधौं अब कैसेजियमानत । यहव्यवहार आजुलों है ब्रज कपट
नाटकल ठानत । दशहूँ दिशिते उदितहातहैं दावानल के कोत ।
आंखें मंदिरहत सन्मुख हूँ नाम कवच दै ओत । ये सबदुष्ट गतेअरि
जीते भये एकहीपेट । सत्वर सूर सहायकरोअब समुझि पुरातन हेत
१४५ ॥ रागबिहागरो ॥ अबनन्द गइयांलेहु संहार । हमतो तुम्हरे आत
प्रकटे गौचराइ दिनचार । दूध दधि सब चोर खायो तुमज्यों कियो
प्रतिपार । सुरके प्रभु चले ब्रज तजि कपट कागज फार १४६ ॥

रागसारठ ॥ नन्द तुम छांडे कहां कुमार । कैसे प्राणा रहत बिनुदेखे
 पंहुत गोपिगोपार । कसुआ करत यशोदा मैया नयन बहे आसार ।
 चितवत नन्द ठगसे ठाढ़े ग्रन्थहरे मनहरे जुंवार । मुरली धुनि ब्रज में
 नहिं सुनिये मुरज जन सब करत प्रकार । श्याम सुंदर जादिनते बि-
 छुरे कोउ नहिं भ्रांके नन्द के द्वार १४७ मेरो माय अतिप्यारो नंद
 नंद । कहांबिसारि नन्दतुमआये चूकपरी मतिमंद । बलिमाधव अंबुज
 लोचनकिये अतिआनंदके कन्द । सरवरगोप कुमुदकुन्हिलाने कान्ह
 बदन बिनु चन्द । चलहु चरगागहैं बसुदेवके मेलिपाग गलफन्द । मूर
 दासप्रभु गोकुल पठवत वहे तीन लोक मुनिबन्द १४८ हरि बिछुरत
 फाट्यो न हियो । भयोकठोर बज्रते भारी यहारहे अब कहा कियो ।
 बांदि हलाहल सुनि मेरी सजनी औषधिही न पियो । मन बाधि गई
 संहारन तनकी कूडो दांव दियो अब काकरो कौन बिधि मिलिहैं
 परवश प्राणालियो । निशिदिन रत मूरके प्रभुबिन कैसे परतजियो
 १४९ उलटि पग कैसे दीनो नन्द । छांडो कहां उभयसुत मोहन धृग
 जीवन मतिमन्द । कैतुम धनयोवन मदसाते कै तुम छूटेबन्द । सुफल-
 कसुत बैरीभयो मोको लैगयो आनंदकन्द । रामकृष्णबिन कैसे जीजै
 कठिन प्रीतिको फन्द । मूरदास अबभई अभागिनि तुम बिन गोकुल-
 चन्द१५० सराहिये बन्द तिहारोहियो । मोहनसे सुतछांडि मधुपुरी
 गोकुल आनिजियो । हेांपचिशोच बहुतकरिहारी सकौ नाहिंभयो ।
 जीवनप्राणा हमारे ब्रजको बसुदेव छीनलियो । कहाकसुं मोरे ललित
 लाडिले बरजत गवनकियो । मूरदासप्रभु श्यामलालघन परहथजाय
 दियो १५१ है कोऊ इतनी भांति दिखावै । किंकिश शब्द चलत
 धुनि सुनुभुनु तुमुक तुमुक गृहआवै । कहुक बिलास बदन की शोभा
 अरुआ कोटि गतिपावै । कञ्चन मुकुट कंठ मुक्तावलि मोरपुच्छ छबि
 पावै । धूसरधूरि अङ्गसंगलीने ग्वालबाल संगलावै । मूरदासप्रभुकहत
 यशोदा भागबडैते पावै १५२ ॥ राग धनापी ॥ भावजन बिनु नहीं बनि
 सुख कहा प्रेमसुयोग । काराहंसहि सङ्गजैसे कहादुख कहभोग । जगत
 में यहसंगदेखौ वचनप्रतिकहे ब्रह्म । मूर ब्रजकीकथा कासों कहैयह

करिदम्ब १५३ कहांसुख ब्रजको सो संसार । कहांसुखद बंशीबदय-
 मुना यहमन सदाबिचार । कहँवनधाम कहां राधासँग कहँ वहब्रजकी
 बास । कहांलता तरुतरुप्रति बूझति कुञ्जकुञ्जनवधाम । कहँखगमृग
 रुन्दावन सुन्दरकहँ बंशीबद ठाम । कहां बिरह सुख बिन गोपिनसंग
 सुरश्याम मनकाम १५४ यह अद्वैत दरशी रङ्ग । सदाभिलि यकसाथ
 बैठत चलत बोलत सङ्ग । बात कहत न बनत यासों नितुरजोसी जङ्ग ।
 प्रेम मुनि बिपरीति भायत होतहे रस भङ्ग । सदा ब्रज वो ध्यान मेरे
 रास रङ्ग तरङ्ग । सूर वहरस कहँ काहू संग मिलि शुभरङ्ग १५५ संग
 मिलि कहँका संग बात । यह तौ कथत योग की बातें जामें रसजारि
 जात । कहत कहा पितु मात कौन के पुरुष नारि कहँ नात । कहां
 यशोदा सीहें मैया कहां नन्दसमतात । कहँ वृषभानसुता संगके सुख
 वह बीसर कहँप्रात । सखी सखा सुखनहीं भवनमें नहिँबैकुण्ठ सुहा-
 त । वह बातें कहिये केहिकारणा आगे यहतन हरि पछितात । सूर-
 दास प्रभु ब्रज सहिसा कहि लिखी बढत बल ध्यात १५६ ॥ रागपरज ॥
 पाछेहि चितवत मेरे लोचन आगे परत न पाई । मन हरिलियो सा-
 धुरी मूरति कहा करौं ब्रजजाई । पवन न भई पताका अम्बर भई न
 रथको अङ्ग । रेणु न भई चरणा लपटाती जाति वहांलों संग । केहि
 बिधि कर कैसे करि सजनी कब जुमिलें गोपाल । सूरदास प्रभु पदै
 मधुपुरी मुरछिपरीं ब्रजबाल १५७ चातक न होय कोई विरोहनि
 नारी । अब यह पीउ पीउ रतत सुरपति के झुंडन मगन सुख वारी ।
 अति कृश गात देखि सखि वाको अहनिशि रतति पुकारी । देखहु
 प्रीति बापूरे पशुकी अनत न मानत हारी । अब पतिबिन सेसी ला-
 गति ज्यों शोभित सरवर वारी । तैसे सूर जानि सबगोपी जो न कृपा
 करि मिलहिं मुरारी १५८ जवतेहरि मधुवनहिंसिधारे कबहुं कियो
 न फेरो । भये वहाईके मनमोहन इतही नाहिं चितेरो । बिन देखे
 कलनाहिं परत है निशि दिन लगात उभेरो । सुरश्याम कोउ आति
 मिलावै आनंद होय घनेरो १५९ ॥ रागनट ॥ सोको ना हरि बारभई ।
 जवते हरि मधुवनहिं सिधारे तबते मुधि न लई । कह कीजै संगति
 नीचे की मन अतिदुखि जु भई । चन्दन चौरअगिनसम लागतस

सुर सई । तेरी गति कोऊनहिं जानत अब कछु मानसई । सुरदास प्रभु
 दरशन दीजै नेकजु मयादई १६० ॥ रागधनाथी ॥ कुन्दा हरिकी दासी
 आहि । जैसे आपभाजि गोकुल रहे तैसे राखीताहि । रूपन रतन दु-
 राये राख्यो जैसे नहीं कपूर । जैसे छीपअमोल रतनपरि कहजानै जो
 क्रूर । बैसेहि रही कुबरी दासी अविनाशी की आहि । सुरदास प्रभु
 कंसमारिके लइ आनी तिहिकाहि १६१ सखासुनु एकमेरी बात ।
 इहलता गृहसंग गोपिन सुधिकरत पछितात । बिधिलिखी नहिंरत
 कैपेहु यहकहत अकुलात । हँसि उपगसुत बचन बोले कहाहरिपछि
 तात । सुरप्रभु इह सुनत मोसों एकही सों नात १६२ ॥ रागकल्याण ॥ जब
 ऊधो यकबातकही । तबयदुपति अतिहीसुखपाये मानी प्रकटसही ।
 श्रीमुख कहेउ जाहुतुम ब्रजही मिलौजाइ ब्रजलोरा । मोबिन बिरह-
 भरी ब्रजबाला जाइ सुनावहु योग । प्रेम मिटायजान परमेधहु तुमही
 पूरगा जानी । सुरउपङ्गसुत मनहरयाने इहमहिमा इनजानी १६३ ऊधो
 यहतुम चिप्रचय जाने । मनक्रमबच मैं तुमहिं पढावत ब्रजको तुरत
 पलानो । पूरगा ब्रह्म अलख अविनाशी ताके तुमही जाता । रेख न
 रूप जाति कुलनाहीं जाकेपितु नहिंमाता । इहमतदे गोपिनकोआवहु
 बिरह नदीमें भासति । सुर तुरत तुम जाइकहेइह ब्रह्म बिना नहिं
 आसति १६४ ॥ रागबिहागरी ॥ ऊधो ब्रजको गमन करो । हमहिंविना
 बिरहिनी गोपिका तिनके दुखहि हरो । योग जान परमेधि सबनि
 को क्यों सुख पावै नारि । पूरगाब्रह्मअकल परचैकरि मोहिं बिसारि
 डारि । सखा प्रबीरा हमारेतुमहे तुमतेनहींमहत । सुरश्यामकारणा
 यह पठवत है आवैगो संत १६५ तुरत ब्रजजाहु उपङ्गसुत आजु ।
 जान बुझाय खबरदै आवहु एकपंथ है काज । जबते मधुवनको हम
 आये फेरिगयो नहिंकोई । युवतिन पै ताही को पठवै जोतुम लायक
 होई । यक प्रबीरा अस सखा हमारेजानी तुमसरि कौन । सोइकीजै
 जैसे वे बाला साधन सीखै पौन । श्रीमुखश्याम कहतयह बाणी उद्धव
 सुनत मिहात । आयवु मानि सुर प्रभु जैहों नारि मानिहैं बात । क-
 हत न बनै सँदेशो मोपै जननि जितो दुख पायोहो । अब हमसों बसु-
 देवकी करत आपनो भायोहो १६६ ॥ रागटोड़ी ॥ उपङ्गसुत हाथ

दई कर पाती । यह कहियो यशुमति भैयासों नहिं बिसरै दिनराती ।
 कहत कहा बसुदेव देवकी तुमको हम हैं जायो । कंस वास शिशु
 अतिहि जानिकै ब्रजमें जाइ दुरायो । कहै बनाय कोटि कोइ बातें
 कहि बलराम कन्हाइ । सूर काज करिकै कछु दिनमें बहुरि मिहेंगे
 आई १६७ ॥ रागशासावरी ॥ ऊधो हुतो जननि सों मिलियो अस कृप
 लात कहोगे । बाबा नन्दहि पालागन कहि पुनिपुनि चरणागहोगे ।
 जादिन ते मधुवन हम आये सोधनहीं तुम लीन्हो । देदे सौंह करोगे
 हितकरि कहा नितुरई कीन्हे । यह कहियो बलराम प्रयास अब
 आवेंगे दोउभाई । सूरकर्मकी रेखमिटै नहिं यहै कहेउ यदुराई १६८
 रागगोरी ॥ पाती लिखि ऊधो कर दीन्ही । नन्द यशोदाहि हितकरि
 दीन्ही हंसै उपकुसुत लीन्ही । मुख बचनन कहिहेतु जनायो तुमहौ
 हेतु हमारे । बाल जानि पठये नृप डरते तुम प्रतिपालनहारे । कुब्जा
 सुन्यो जात ब्रज ऊधो सहलहि लियो बुलाई । स्वा द्यपाति लिखी
 राधाको गोपिन सहित बनाई । मोको तुम अपराध लगावति कृपा भई
 बिन आस । भक्त कहा सोपर ब्रजनारी सुनहु न सूरजदास १६९
 यदुपति सखा ऊधो जानि । लगे लगे मन यहै शोचन भली नहिं यह
 बानि । अंश भुजधरि होतटाढे नितुर जैसो काठ । सङ्ग यह नहिं बनत
 नीको होय कैसेहु साठ । जो कहे तो करे क्यों यह निन्दिहे अस
 सोहिं । देखिबेको परम सुन्दर रहत नयननि जोहिं । कनक कलश
 आपन जैसें सोइ यह रूप । सूर कैसेहु प्रेमपावे तबहिं होय स्वरूप १७० ॥
 रागधनाश्री ॥ यदुपति जानि उद्वेग रीति । जेहि प्रकट निज सखा कहि-
 यत करत भाव अनीत । बिरह दुख सुख जहां नाहीं तहँ न उपजै प्रेम ।
 रेखरूप न बरसा जाके यह धरेउ यह नेम । बिगुणा तनकरि लाखत
 इसको ब्रह्म मानत और । बिनाशुणा क्यों पहुँचि उधरे यह करत मन
 डोर । बिरहरस केहि संव कहिये क्यों चलै संसार । कछु कहत यह सक
 प्रकटत अति भरेउ अहंकार । प्रेम भंजन नेम याको जाय क्यों समुझाई ।
 सूर प्रभु मन यहै आनो ब्रजहि देउ पठाई १७१ नन्दोप सब सखा
 निहारत यशुमति सुतको भावनहीं । उपसेन बसुदेव उपकुसुत सुफलक
 सुत बैसै हिसंगहीं । जबहीं मनन्यारो हरिकीन्हो गोपन मन यह द्यपि

गई । बोलिउठे यहि अन्तर मुखहरि निदुर रूप जे ब्रह्ममई । अति प्रतिपालकियोतुम हसरोसुनत नन्दजिय भक्तकिरहे । सूरश्यामसेसी नहिं चाहिये जो मोसों यह बचन कहे १७२ मोहिं कहत प्रतिपाल कियो । मोसों कहत होहजिनि ऐसी नयन दरत नहिं भरतहियो । शंकित नन्द बासबाणी सुनिबिलस करतकहक्यों न चले । कंसमारि रजधानी दोन्ही ब्रजते बहुरे आनिमिले । मनहींमन सेसी उपजावत वेउतब्रह्म ब्रह्म दरशी । सूर पिता को मात कवन है रहत सबनिमें वे परशी १७३ कुब्जासी भागिनिकोमारि । कंसहि चन्दन लयेजातही बीचमि तीताको दइतारि । हरिसुकृपा करिरानीकीनी कुब्जमिदायो डारि । यहैवात मधुपुरी जहां तहँदासी कहतडरत जियभारि । कुब्जा भूलि कहत जो कोऊ ताहि उठत सबदेदै गारि । सुनहु सूररानीसुनि पावै बासहेत जिनि डारैमारि । १७४ ॥ रागरामकली ॥ हरिकी कृपा जापर होइताही । कछुबह बहुत नाहिं हृदय देखो जाही । कहा संशय करत याको कितिक है यहवात । असुरसेन सँहारिडारै भक्त जनसों नात । हरन करन येयहै समरथ कहा बारम्बोर । सुरहरिकी कृपाते खलतरि गये संसार १७५ कुब्जातो बड़ भागिनि हूँ । करुणा करिहरि जाहि निवा जीआपुरहे तहँराजी हूँ । पूरव तपकरिबिल-सनलागी मनके भाव पुरावत हूँ । मथुरानरनारी मुख बाणी रहेउ जहां तहँ जयजय हूँ । दैत्य बिनाशि तुरत तहँ आये यह लीला जाने पै हूँ । सूरदासप्रभुभावहि के ब्रशमितत कृपाकारिअति सुखहूँ १७६ ॥ रागबिलावल ॥ तब बाले हरि नन्दसों मधुरेकर बानी । राग बचन तुमसे कहे सेनहिं निबहेजानी । पैआयो संसारमें भुवभारउतारन । तिन के तुम धनि धनि कहौ कान्हाप्रतिपारन । मातपिता तुम्हरेनहींतुमते असुकोऊ । सकबेर ब्रजलोगसों मिलिहौं सुन सोऊ । मिलन हिलन दिन चारि को तुमतोसब जान्यो । मोको तुम अति सुखदयो सोकहा बखान्यो । मथुरा नरनारी मुनै दयाकुल ब्रजवासी । सूर मधुपुरी आयकै येई अविनासी १७७ ॥ रागधेरठ ॥ गोपालरायहैं न चरया तजि जैहैं । तुमहिं छाँडि मधुवन मेरे मोहन कहा जाय ब्रजलैहैं । कहिहैं कहा जाय यशुमति सों जब समीप उठिसेहैं । प्रात समय

दधिमथन छांडिके काहिकलेऊ देहैं । बारहवरय दियेहमहीतो यह
 प्रताप बिन जानो । अब तुम प्रकट भये बसुदेवसुत गरग वचन पर-
 सानो । रिपुहति क्राजसबै हमकोन्हे कत आपदा बिनासी । डारन
 दियो कमलकरते गिरि दबिसरते ब्रजबासी । बासर सङ्गसखा सब
 लीन्हे टेरि न धेनु चरैहैं । क्यों रहिहैं मेरेप्राण दरश बिन जबसंघा
 नहिं रोहौ । उई आस काया गति छाक्यो नयन नीर न रहाय ।
 सूरनन्द बिछुरे की वेदन मोपै कही न जाय १७८ ॥ रागिनीजैतथी । तथा
 पुरीया धनाथी रूपकताल ॥ कुवरी को न्यावरी जासों गोविन्द बोले । वे व-
 यलोकनाथ चाहत हैं काहेन रोडो बेंडी डोले । जिनसों दूपा करी
 नंदनंदन सो क्यों न करतकलोले । कारोकारो कुटिल अति कान्हर
 अन्तरग्रन्थि न खोले । हमबौरी बकबादकरतहैं लूयासुरतियहजोले ।
 दीपक देखि पतंग जरत उर्यो मीन सुजल बिन भोले । प्रीति पुरातन
 पारिजनन सों नेहकसौटीतोले । सुरश्याम उपहास चलयो ब्रज आप
 आपने टोले १७९ ॥ रागरामकली ॥ ऊधो जाकेसाथेभाग । अबलनयोग
 सिखावन आये चेरिहि चपर मुहाग । आये बवन योग की बेली
 काटि प्रेम को बाग । कुब्जहि करिआये पटरानी हमहिंदेन बैराग ।
 लौंडी की डोंडी बाजीजग हरि हाँसीको राग । कुब्जा कमलनयन
 मिलि खेलत बारहसामी फाग । मिल्यो सोहायो साथ श्याम कहा
 कहां स कहँ काग । सूरदास प्रभु ऊधछांडिके चतुर चिचोर तआग
 १८० ॥ रागधनाथी ॥ हारिके बचन सुनिहि आहि । यहाँको कहै कौन
 की बार्ति ज्ञानध्यान सुमिरोको काहि । को सुखसमर तास युवतीको
 जिनहरिकंसहते । हमरे तो गोपति सुत अधिप्रतिबन्ता औरनते । गो-
 रजरंजितरूप रुचिकारी चितै चितै हरिहात । कबहुंकरनिमसस्य
 तिल नेक न मालकेसोत । ता रिपुसमय सङ्ग मिलिलीन्हे ये आवत
 तनु घोष । सूरदास स्वामी मनमोहन कत उपजावत दोष १८१ कहीं
 कौन नाहिन सुख पाये बालगोपाल के राज । ऊधो आपु सम्प्रदा
 उनकीहै सब इनकेकाज । धनुषतीरि गजमारि मल्लसाथ निडरकियो
 यदुवंश । उन को जाय और सुख दीन्हे करिय केश गहि कंस ।
 कुबिजारूप देखिसुखदीन्हेसब कीन्हे मनकास । उग्रसेन बसुदेवदेवकी

आनेअपनेधाम । दिन प्रति दीनदयाल कृपानिधि वहे हमारीआश ।
 सूरप्रयाम हरि होहु कृपाकरि इननयननिकी आश १८२ अब हरि
 कौनके रस गीधे । सकतनाहिं निरखत ऊधोशशि बदरी ज्योंबीधे ।
 पतिनत्यागि अबला गई तजी सकलकुलकानि । यमअंधकार छांडिये
 गाहिलवाकफल लकुटविनपानि । यतनधुनि निर्गुणा भये सब नर गुने
 अभिलाष । मनमोहन मोहन नहिं देखे कैसेरैहै साख । बिना चरणा
 सरोजदेखत बरतकुमुदिनिवास । बिनापुष्करनयन किहिविधिजिये
 सूरजदास १८३ ॥ रागबिलावल ॥ माधव इतनैयतनतबकाहिकिये । अपने
 जानि जानि यदुनन्दन बहुत भीतसों राखिलिये । अघबकतृषभवरुणा
 बन्धनते व्याल दावानल जीति पिये । इन्द्र मानमेढे गिरि करधरि
 क्षराक्षराप्रति आनन्ददिये । हरि बिहुरन की प्रीति न जानी बचन
 मानिहम बादि जिये । सूरदास अब वा लालन बिनु कहि न सकत
 यक बीराहिये १८४ परेखो कौन बोलको कीजै । ना हरि जाति न
 पांतिहमारी कहामानिदुखलीजै । नाहिन मोर चन्द्रिका साथे ना-
 हिनउरबनमाल । नहिं शोभित पुष्पन के भूषणा सुन्दर प्रयास तमाल ।
 नंदनन्दन गोपीजनवल्लभ काहे को कान्ह कहावै । वासुदेव यादवकुल
 दीपक बन्दीजन बिरमावै । बिसरिगयो गृहवनकोनातो रहेउ न सको
 अङ्ग । सूरप्रयाम कहैं गई सगाई वा सुरलीकेसंग १८५ ऐसे साइहम
 नाहिंजानेप्रयामहीं । सेवाकरत करी उनऐसी जातिगईकुलनामनहीं ।
 तनमन प्रीतिलाय जो तोरैकौनभलाई तामहीं । वे कहपीर पराईजानें
 लुब्धआपनेकामहीं । नागरिनारिरतेकेनागररतेजो कुब्जाठामहीं १८६
 ॥ राग नट ॥ कंसबधयो कुब्जाके काज । और नारि हरिको न मिलावहु
 कहां गवाँडैलाज । जैसे काग हंसकी गतिलह लहसतसंग कपूर । जैसे
 कञ्चन कांच बराबर गेछ काम सिंदूर । भोजन साथ शूद्र ब्राह्मण के
 तैसेइउनको साथ । सुतहु सूरहरि गायचरैया अबभये कुब्जनाथ १८७
 हरिही फेरीकुब्जा ढोठ । टहलकरती महलमहलिन संग स्वेतीपीठ ।
 नेकही सुखपाइ भली अतिहि गइगवाई । जात आवतरही कोऊयहै
 कहै पठाइ । वे दिना गयेभूलि ताको दिवस दशकी बात । सूरप्रभु
 वासी लुभाने ब्रजबधू अनखात १८८ देखो कुबरी के काम । अबक-

हावति पट्टरानी बड़ेराजाप्रयाम । कहत नहिंकोउ उनहिंदासी वे नहीं
 गोपाल । वेकहावत राजकन्या वे भये भूपाल । पुरुषकोरी सर्वाहोहै
 कुब्जा काहेकाज । सूरप्रभुको कहाकहिये बीचपाई लाज १८६ यह
 सुनि हमहिं आवतलाज । जायमथुरा कंसमाख्यो कूबरी के काज ।
 लोगपुरमें बसतऐसे सबनि यहैसोहात । कबहुंकोऊ कहतनाहीं प्रयाम
 आवोवात । कहां वेरी कहाकीन्हे कहाआपुन हेत । तुमबड़े यदुवंश
 राजा मिलेदासी गोत । अजहुंकहै सुनाय कोऊ करै कुब्जा दूरि ।
 सूरडाहनि सरत गोपी कूबरी के भूरि १८७ भासनि कुब्जा सोरंग
 राते । राजकुमारहि जो पैपाते तौनहिं अङ्ग समाते । रीझे जाय तनक
 चन्दन लै मधुवन सारगजाते । ताकी कहाबडाईकीजै ऐसेरूपलोभाते ।
 ये अहीर वह कंस कि दासी जोरीकरी बिधाते । ब्रजकी बनितात्यागि
 सूरप्रभु बूझी उनकीवाते १८१ ॥ रागधनाश्री ॥ तवते मेरे सब आनन्द ।
 या ब्रजकीसब भागसंपदा लेजायेनँदनन्द । धेनुतहीं पथग्रवति सविर
 मुख चरति नाहिंदगा कन्द । बियम बियोग दहत उरसजनी बाहिरहे
 दुखदन्द । शीतल कौन करेरी माई नाहिंयहां हरिचन्द । सूरस्वाति
 की बंद आशलगि सूकत रङ्गीकन्द १८२ ॥ रागमलार ॥ गोपालहि पा-
 वहुं कहिदेश । सींगन मुद्रा असु खप्पर लै करि योगिनि को भेष ।
 कथा पहिरि बिभूति लगाऊं जटा बढाऊं केश । हरि कारणा गोर
 खहि जगाऊं जैसे स्वांगमहेश । तनमत जारों भस्मचढाऊं बिरहिनि
 गुरु उपदेश । सूरश्याम बिनुहमहैं ऐसी जैसे मरिाबिनु शेष १८३ ॥
 रागकान्हरी ॥ हंसकाग को संगभयो । कहैं गोकुल कहैं गोप गोपिका
 विधियह संगदयो । जैसे कंचन कांचसा फल चन्दन संगसुगन्धि ।
 जैसे खरिक कूपरदोउ एकसम यह भई सुगन्धि । जलबिन मीनरहत
 कहुंन्यारो सोई हरिहि बोलावत । जबब्रजकी बातें ये कहियत तबहिं
 तबहिं उचटावत । याको जानथापि ब्रजपठऊं और न याहि उपाव ।
 सुनहु सूर याको अबपठऊं यहैबनै गोदाव १८४ याको और न कहू
 उपाय । मेरो प्रकट कहेउनहिं बदिहै ब्रजही देउपठाय । गुप्तप्रीतिपु-
 व्रतनकी कहिकै याकोकरौंमहन्त । गोपिनके परमोचनकारणा जैहै
 सुनततुरन्त । अतिअभिमानकरैयो मनमें योगिनिकी यहिभांति । सूर

प्रयास मनयह निप्रचयकरि बैठत हैं मिलिपांति १६५ ॥ रागनट ॥ जबहीं
 यह कहोगे याहि । मोहिं पठवत गोपिकन पै हर्यहूँ है ताहि । योग
 को अभिमानकरि है ब्रजहि जैहै वाय । कहेंगे मोहिं प्रयासमानत करो
 यह चतुराय । आयगये तेहि समय उडवसखा कहिलियो बोलि । कंध
 धरि भुजभये दाढ़े करत बचननि टोलि । बारबार उसास डारत कहत
 ब्रजकी बात । सूरप्रभुके बचन सुनि सुनि उषंगसुत मुमुकात १६६ ॥ रागक-
 ल्याण ॥ उडव मन अभिमान बढ़ाये । यदुपति योगजानि जियसांचो
 नयन अकाश चढ़ाये । नारिनपै मोको पठवत हैं कहत सिखावन योग ।
 मनहीं मन अन्नकरत प्रशंसा यह मिथ्या सुखभोग । आयसुमानि लिख्यो
 शिरऊपर प्रभुआज्ञापरवान । सूरदासप्रभु पठवत गोकुलमें क्यों कहों
 कि आन १६७ ॥ रागकान्हरो ॥ तुम पठवत गोकुलको जैहैं । गद्गद
 बचन कहत मुख प्रफुलित बार बार समुझैहैं । आलस नहीं करों तुव
 कारणा कौन काज पुनि लैहैं । यह मिथ्या संसार सदाई यह कहिकी
 उठियेहैं । सूर दिना है ब्रजजन सुखदै आय चरणा पुनि गैहैं १६८ ॥
 रागगेरी ॥ उडव ब्रज जिन रहसु लगावहु । तुम ब्रजनारि जानि मन
 सकुचन कहिधौ योग सुनावहु । आगी कहत समुझिपै लहिहैं कही
 हमारी मानो । बिरह दाह यह सुनत बुझैहैं मानो अनलहि पानो ।
 अबहीं जाहु विकल सबगोपी योग बचनकरि पोयहु । सूरनन्दबाबा
 असुयशुमतिजननी जाय सँतोयह १६९ गहरु जनि लावहु गोकुल जाई ।
 तुमहिं बिना व्याकुलहम हूँ है यदुपति करि चतुराई । अपनोई रथ
 तुरत सँगायो दियो तुरत पलताई । अपनो मुकुट पिताम्बर अपनो
 देत सबै सुखपाई । सूरप्रयास तद्रूप उषंगसुत भृगुपद एक बचाई । अ-
 पनेहीं अंग आभूषण करि आपनहीं पहिराई २०० ॥ रागविंहागर ॥
 प्रयास कर पव लिखि बनाय । नन्दबाबा सों बिनयकरि करजोरि
 यशुमतिमाय । गोप खाल सखानि कहि मिलि मिलन कंठ लगाय ।
 और ब्रजनरनारि जेहैं सानप्रीतिजनाय । गोपिकन लिखि योग पठयो
 भाव जानि जनाय । सूर प्रभुसन और यह कहि प्रेमलेत दृढाय २०१ ॥
 रागकेवारी ॥ विधना यहै लिख्यो संयोग । कहांते मधुपरी आये तज्यो
 साखन भोग । कहां वे ब्रजके सखा सब कहां मथुरा लोग । देवकी

बसुदेव सुत सुनि जननि करिहैशोग । रोहिणीमाता कृपाकरि उठलि
 लेती रोग । सूरप्रभु मुख यह बचन कहि लिखि पढायो योग २०२ ॥
 रागविहागगे ॥ उद्वज जात ब्रजहि सुने । देवकी बसुदेव सुनिकै हृदयहेत
 गने । आपसों पाती लिखी कहि धन्य यशुमति नन्द । सुत हमारी
 पालि पढयो अति दियो आनन्द । आयकै मिलिजातकबहुं न प्र्यास
 अरु बलराम । यहै कहति पढाय हैं अब तबहिं तन बिश्राम । बाल
 सुख सब तुमहिं लूट्यो मोहिं मिले सुकुमार । सूर यह उपकार तुमते
 कहत बारम्बार २०३ ॥ रागपरज ॥ कहां सुखब्रजकोसो संसार । कहां
 सुखद बंशीवट यमुना यह मनसदाबिचार । कहँ बनधाम कहां राधा
 संग कहां संग ब्रजबाम । कहां लता तरुतरु प्रति बभूत कुंजकुंज नव
 धाम । कहां बिरह सुख बिन गोपिन संग सूरप्र्यास मन काम २०३
 वहसुख कहौ काकेसाय । कहां नन्दकहां यशुमतिकहां राधानाथ ।
 भाव जनबिननहीं बनिमुख कहां प्रेमरु योग । काग हंसहि संग ऐसे
 कहां दुख कहँ भोग । जगतमें यह संग देखो बचनप्रति कहें अलेखे ।
 सूरब्रज की कथा कासों कहै यहकरि देखे २०५ ॥

इति श्रीकृष्णानन्ददयासदेवरागसागरोद्भव सूरसागरसंगीत

रागकल्पद्रुम मथुरालीलासम्पूर्णात् ॥

अथ सूरसागर रागसंग्रहकृत ॥

राग कल्पद्रुम ॥

श्रीमथुराते श्रीकृष्णजी उद्वजजीको ब्रजमें पढायो लोकथाप्रारम्भ ॥

मङ्गलाचरणा ॥

र ग कल्याण तालजलदतिताला ॥

चरंगाकमल बन्दौ हरिराई । जाकी कृपा पंगुगिरिलंधे अंधरे को
 सब कहु दिखराई ॥ बहरोसुनै गुंगपुनिबोलै रंकचलै शिरछत्रधराई ।
 सूरदासस्वामी करुणामय बारबार बन्दौ तेहिपाई ॥

अथ भ्रमरगीतको प्रस्ताव ॥

श्रीप्रभुजीके बचन उद्वजप्रति ॥

रागसारंग ॥ पहिले करि परणाम नन्दसों समाचार सबदीजो । और
 वहां वृधभान गोपसों जाय सकल सुखिलीजो । श्रीदासा आदिक सब

खालन मेरोहुतो भेटियो । सुखमन्देश सुनाय हमारो गोपिनको दुख
 भेटियो । मंथी यकबन बसत हमारो ताहि मिले सचुपाइयो । सावधान
 ह्वै मेरो हुनो ताही माथ नवाइयो । सुन्दर परमकिशोर वयक्रमचंचल
 नयन विशाल । कर मुरली शिर मीरपंख पीतान्बर उर बनलाल ।
 जिनि डरियो तुम सघन बननमें ब्रज देवी रखवार । तुन्दावनसो बसत
 निरन्तर कबहुं न होत नयार । उद्धव प्रति सब कही श्यामजु अपने
 मनकी प्रीति । सुरदास किरपाकरि पठये यहै सकल ब्रजरीति १ ॥
 रागमोह ॥ कहियो नन्द कठोरभये । हम दोउबीरै डारि परधरै मानो
 थाती सौं पिगये । तनकतनकतेपालि बडेकिये बहुतै सुख दिखराये ।
 गोचारनको चलत हमारे पाछेकोशकधाये । यह बसुदेवदेवकी हमसों
 कहत आपने जाये । बहुरि बिधाता यशुमतिजु के हमहिं न गोद
 खिलाये । कौनकाज यह राज नगरको को सुखसो सुखपाये । सुर-
 दास ब्रजसमाधानकरु आजु कालिहहम आये २ ॥ रागविलावल ॥ तबहिं
 उपझुत आयगये । सखा सखा कहु अन्तर नाही भरि भरि अझ
 लये । अति सुन्दर तनश्याम मरीखो देखत हरिपछिताने । ऐसेकुवैसी
 बुधिहोती ब्रज पठवत तब आने । या आगे रसकाव्य प्रकाशे योग
 बचन प्रकरावै । सुरज्ञानदुह याके हिरदय युवतिन योग सिखावै ३
 हरि गोकुल की प्रीति चलाई । सुनहु उपझुत मोहिं न बिचरत ब्रज-
 बासी सुखदाई । यहचित होतजाउँ मै अबहीं यहां नहीं मनलागत ।
 गोपसुखाल गायबनचारत अतिदुखपायो त्यागत । कहँ नाखनचोरी
 कहँ यशुमति पूतजैबहुकरिप्रेम । सुरश्याम के वचन सहित सुनिदया-
 पत अपननेम ४ ॥ रागसामकली ॥ यदुपति लख्योतेहि सुसक्यात । कहत
 हममन रहेजोई सोईभइ यहवात । बचन परगठ करन लागे प्रेमकहा
 चलाय । सुनहु उद्धव मोहिं ब्रजकी सुधि नहीं बिमराय । रैन सोवत
 चलत जागत लखत नहिंमन आन । नन्द यशुमति नारिनर ब्रज जहां
 मेरोप्रान । कहत हरिसुनि उपझुत यह कहतहां रसरीति । सुरचितते
 दस्तनाहीं राखिजाकी प्रीति ५ ॥ रागधारण ॥ सखा सुनो मेरी इकवात ।
 बहसता गगन संगे गोपिन सुधिकरत पछितात । कहां वह वृषभानतनया
 परम सुन्दर गात । सुरति अये रासरस की अजिक जिय अकुलात ।

सदाहितु यह रहत नाहीं सकल मिथ्याजात । सूरप्रभु यहसुनो मोसों
 एकहीसों नात ६ ॥ रागटोड़ी ॥ उद्धव यह इननिप्रचयजानो । मन क्रम
 बचमें तुम्हें पठावत ब्रजको तुरतपलानो । पूरया ब्रह्मसकत अविनाशी
 ताकेतुमहो जाता । रेख न रूपजाति कुलनाहींजाकेनहिं पितुमाता ।
 यहमत दैगोपिन कहँ आवहु बिरहनदीमें भासति । सूरतुरत यह जाय
 कहौतुमब्रह्म बिनानहिंआसति ७ ॥ रागनट ॥ उद्धव बेगिही ब्रजजाहु ।
 सुरति संदेश सुनायमेरो बल्लभिन को दाहु । काम पावक तूत में तन
 बिरह आस समीर । भसम नाहिन होन पावत लोचननि के नीर ।
 अजोंलों यहिभांति ह्वैहै कछुक सजगशरीर । एतेपर बिनुससाधाने
 क्यों धरैतिय धीर । कहौकहा बनाय तुमसों सखासाधु प्रवीन । सूर
 सुमतिविचारिये क्योंजियेजलबिनुमोन ८ ॥ रागसारंग ॥ पथिकसंदेशो
 कहियो जाय । आवैगे हम दोनों भैया भैया जनि अकुलाय । याको
 बिलगु बहुत हममान्यो जो कहिपठयोधाय । कहलों कीर्ति सानिये
 तुम्हरी बढाकियेपयध्याय । कहियोजाय नन्दबाबासोंअरुनादिपक-
 रेउपाय । दोऊदुखीहोननहिं पावहिं धूसरिधौरीगाय । यद्यपि मथुरा
 विभव बहुत है तुमबिनु कछु न सुहाय । सुरदास ब्रजबासी लौगनि
 भेंटतहृदय जुडाय ९ नीकेरहियोयशुमतिभैया । आवहिंगे दिनचारि
 पांचमें हमहलधर दोउभैया । जादिनते हमनुमते बिकुरेकाहु नकहेउ
 कन्हैया । कबहुं प्रात न कियो कलेवा सांझ न पीन्हीधैया । बंशी
 ब्रगासम्हारि राखियोऔरअबरे सबेरो । मतिलैजाय चुराय राधिका
 कछुक खिलौना मेरो । कहियोजाय नन्दबाबासों निपट निठुरजिय
 कीन्हे । सूरश्याम पहुँचाय मधुपुरी बहुरि संदेश न लीन्हे १० ॥
 रागकल्याण ॥ उद्धवसब अभिलाय बढायो । यदुपति योगजान्यो जिय-
 सांची नयन अकाश चढायो । नारिन पै मोको पठवत हौ कहतसि-
 खावनयोग । मनहीं मनअबकरत प्रशंसाहै मिथ्यासुखभोग । आयस
 सानिलियो शिरऊपर प्रभुआज्ञा परमान । सुरदास प्रभु पठवतगोकुल
 में क्यों कहां कि आन ११ ॥ रागमलार ॥ है कोई वैसेहि अनुहारि ।
 मधुवन ते इतआवत सखिरी चितौतु नयन निहारि । साथे सुकृत स-
 नेहरकुण्डल पीतबसन रुचिकारि । रथपर बैठकहत सारथिसो ब्रज

तन बांहपसारि । जानतिनाहिन पहिंचानति हं मनु बीते युगचारि ।
 सूरदास स्वामीके बिहुरे जैसे मीन बिन बारि १२ ॥ रागसोमठ ॥ देखे
 नन्दद्वाररथढाढो । बहुरिसखी सुफलकसुतआयो परेउसँदेहउरगाढो ।
 प्राणा हमारे तबहिं गयोले अब केहिकारणा आयो । जानति हं अनु-
 मानसखीरी कृपाकरन उठिवायो । इतने अन्तर आय उषंगसुत तेहि
 क्षणा दरशनदीन्हो । तब पहिंचानि सखा हरिजूको परमसुचित मन
 कीन्हो । तब परणाम कियो अति रुचिसें और सबहिं कर जोरे ।
 सुनियतरहैं तैसेइदेखे परमचतुर मतिभोरे । तुम्हरो दरशनपाय आ-
 पनो जन्म सुफलकरि जान्यो । सुर ऊधो सों मिलत भयो सुख ज्यों
 चखपायो पान्यो १३ कहौ कहाँतेआयेहो । जानतिहो अनुमानमनो
 तुम यादबनाथ पढायेहो । वैसेइवरणा बसन पुनि वैसेइ तनभूषणासजि
 ल्यायेहो । सर्वसुले तबसंगसिधारे अबकापरपहिरायेहो । सुतहुमधुप
 सकेामनु सबको सोतो उहाँले छायेहो । मधुबनकी मानिनी मनोहर
 तहहिंजाहु जहँ भायेहो । अब यह कौन सयानप ब्रजपर का कारणा
 उठिवायेहो । सुर जहाँलों श्यामगातहैं जानि भलेकरि पायेहो १४ ॥
 राग नट ॥ ऊधोकोउपदेशसुनो किनुकानदे । सुन्दरश्यामसुजान पढायो
 मानदे ॥ ध्रुव ॥ कोउआयो उतआर जते नंदसुवन सिधारे । तहैंबेरा
 धुनिहोइ मनो आयेनंदप्यारे । धाईसब गलगाजिके ऊधोदेखेजाय ।
 लेआई ब्रजराज में हो आनंदउर न समाय । अरघआरती तिलकदूब
 दाधि साथे दीन्हो । कञ्चनकलश भराय आनि परिकरमा कीन्हो ।
 गोपभीर आंगनभई मिलिबैठे यादवजात । जलभारी आगेवरी होवू-
 भति हरिकुशलात । कुश तक्षेमवसुदेव कुशलदेवै कुबिजाऊ । कुशल
 क्षेम अकूर कुशल नीकेवलदाऊ । पूछिकुशल गोपालकी रहींसकल
 गहिपाय । प्रेसमगत ऊधोभये हो देखत ब्रजकोभाय । मनमन ऊधो
 कहै इहनुबुझिये गोपालहि । ब्रजको हेतुबिसारि योगसिखवत ब्रज
 बालहि । पातीबाँधि न आवई रहेनयन जलपूरि । देखिप्रेम गोपिन
 को ऊधो ज्ञानगरबगयो दूरि । तब इतउत बहराय नीरनयननमैषो-
 खयो । ठानी कथाप्रमोद बोलिसब गुन समोखयो । जो ब्रज सुनिवर
 ध्यावहीं नरपावहिं नहिंपार । सो व्रतसीखो गोपिका हो छाँड़ि बि-

खयबिस्तार । सुनि ऊधोके वचन रहों नीचेकरितारे । मनो सुधासों
सींचि आनि विषज्वाला जारे । हमअबला कह जानहीं योग युगति
की रीति । नंदनन्दन व्रतछांडिके हो कोलिखिपूजै भीति । अविगत
अग्रह अपार आदि अविगतिहै सोई । आदि निरञ्जननाम ताहिरंजै
सबकोई । नैननासिका अग्रहैं तहां ब्रह्मको वास । अविनाशी बिनशे
नहीं हो सहजज्योतिपरकास । घरलागे औ घर कहे मनकहो बंधा-
वै । अपना घर परिहरे कहे को घरहि बतावै । सूरख यादवजातहैं
हमहिं सिखावतयोय । हमकोभूलीकहतहैं होहमभूली किधौंलोय ।

अन्ध ताहिदुहुं लोचनसेसे । ज्ञाननैन जो अन्धनाहिं

२२२

। ब्रह्मे निगम बोलाइको कहैं वेद समुझाय । आदि अन्त
जाकेनहीं हो कौनपिता को माय । चरखानहीं भुजनहीं कहौऊखल
किनिबांधो । नैन नासिका मुखनहीं चोरिदधि कौने खांधो । कौन
खिलायो गोदमें किनकहे तुतरेबैन । ऊधो ताको न्यावहै हो जाहि
न सूझै नैन । हम ब्रह्मति सतभाउ न्याउ तुम्हरे मुखसांचो । प्रेम नेम
रसकथा कहे कञ्चनकी कांचो । जो काउपावै शीशदे ताकोकीजै
नेसु । झुपपहसारीसों कहे हो योगभलो किधौंप्रेसु । प्रेमप्रेमसोंहोइ
प्रेमसों पारहिजैये । प्रेमबँध्यो संसार प्रेमपरमारय पैये । सकैनिहचो
प्रेम को जीवनमुक्ति रसाल । सांचो निहचो प्रेमको हो जो मिलिहैं
नंदलाल । सुनि गोपिनकोप्रेम नेम ऊधोको भूल्यो । गावत गुणगो-
पाल फिरत कुञ्जनिमें फूल्यो । झगा गोपिनके पगधरे धन्य तिहारो
नेम । धायधाय द्रुम भेंटहीं हो ऊधो छाकेप्रेम । धनिगोपी धनि गोप
धन्य सुरभी बनचारी । धन्यधन्य सोभूनि जहां बिहरेबनचारी । उप-
देशन आयोहुतो मोहिं भयो उपदेश । ऊधो यदुपतिपै गये हो किये
गोपको वेश । भूल्यो यदुपति नाम कहत गोपाल गोसांई । सकवार
ब्रजजाहू देहु गोपन दिखराई । गोकुलको सुख छांडिके कहां बसेहो
आय । कपावन्त हरिजानिके हो ऊधो पकरेपाय । देखतब्रजकोप्रेम
नेम कहुनाहिनभावै । उसइयो नयननिनीर बात कहुकहत न आवै ।
सूरश्याम भूतलगिरे रहे नयन जलछाय । पोंछि पीतपटसों कहेउ हो

१५ ॥ राग यनापी ॥ हमसों कहत कौनकी बातें ।

न ऊधो हम समुक्तकाहीं फिरि पंडितहीं तार्ते । को नृपभयो कंस
 किनसारेउ को बसुदेवसुत आदि । इहां हमारे परममनोहर जीजतु है
 सुखचाहि । दिनप्रतिजात सहजगोचारन गोपसखालेसंग । वासरगत
 रजनीमुख आवत करत नयनगतिपंग । कोव्यापक पूरणाअबिनाशी
 कोबिधिबेद अपार । सूर वृथाबकबादकरतहो यात्रजनन्दकुमार १६
 रागसारंग ॥ तूअलि कासी कहतबनाय । बिन समुझे हमफिरि बूझतहैं
 सक बारकहो गाय । किन वे गवन कीन्हो शकतनि चाँड मुफलक
 हुत के सङ्ग । किन वे रजक लुटाइ नानापटपहिरे अपने अङ्ग । किन
 हति चाप निदरि राज सारेउ किन वे मल्लमथिजाने । उग्रसेन बसुदेव
 देवकी किन ये निगड हठि भाने । तू काकी परतीति प्रशंसा कौने
 घोषपटायो । किन मातुलबधि लयोजगत यशकौन मधुपुरीछायो ।
 साथे मारमुकुट बन गुंजा मुखमुरली धुनिबाजै । सूरजदास यशोदाब-
 नन्दन गोकुलकहन बिराजै १७ हमतो नन्दघोषकी बासी । नामगोपाल
 जाति कुलगोपक गोप गोपाल उपासी । गिरिवरधारी गोधन चारी
 वृन्दावन अभिलासी । राजा नन्द यशोदारानी जलधिनदी यमुनासी ।
 प्राणा हमारे परममनोहर कमलनैन सुखरासी । सूरदास प्रभु कहीं
 कहाँलौ अष्टमहासिद्धिदासी १८ ॥ रागकेदारी ॥ गोकुल सबै गोपालउ-
 पासी । योगअङ्ग सावनको ऊधोतेसब बसत ईशपुर काशी । यद्यपि
 हरि हम तजि अनाथ करितदपि रहति चरणानि रसराशी । अपनी
 शीतल तऊ न छाँडत यद्यपिहैं शशिराहु गराशी । को अपराधयोरा
 लिखि पठवत प्रेमभजन तजि करत उदासी । सूरदास ऐसी को बिर-
 हिन आगत हुक्त तजे गुलारासी १९ ॥ रागधनारी ॥ जीवन मुद चाही
 को नीका । दरशपरशदिन रातकरतहैं कान्ह पियारेपीको । नखनन
 मँदि मँदिकन देखोबँध्यो ज्ञान पोयीको । आछे सुन्दरप्रयासमनोहर
 और जगतसबकीको । मुनोयोगको कहलौ कीजैजहां हानिहैजीको ।
 खाटो मही नहीं सूचि मानै सूरखवैयाघीको २० ॥ रागकाफ़ी ॥ आयो
 घोष बडो व्योपारी । लादिखंप्रयास ज्ञानयोगकी ब्रजमेंआयउतारी ।
 फाटक दैकरि हाटक मांगत भोरे निपट सुवारी । धुरही ते खाटो
 खायोहै लये फिरत शिरभारी । इनके कहेकौन डहकावै ऐसी कनौ

अग्रानी । अपनेदूध छाँड़ि को पोवै खारकूपको पानी । ऊधोजाहु
 सवार यहाँते बेगि रहसु जनि लावो । मुहुमांगयो पैहो सूरजप्रभुसा-
 हुहि आनि दिखावो २१ योग ठगोरी ब्रज न बिक्केहै । यह ब्योपार
 तिहारो ऊधो ऐसेही फिरि जैहै । जापैलै आयेहो मधुकर ताके उरन
 समैहै । दाखछोड़िके कटुक निबोरीको अपने मुखखैहै । सूरीके पा-
 तनके कोयनाको मुक्ताहलदेहै । सूरदासप्रभु गुणाहिं छोड़िके कोनि-
 र्गुणा निरबैहै २२ ॥ राग नट ॥ आये योग सिखावन पाँडे । परमारयो
 पूरागानि लादे ज्यों बतजारे टाँडे । हमरे गति पति कमलनयन की
 योगसिखेते राँडे । कहे मधुप कैसे मसाहिंगे एक ग्यान दो खाँडे ।
 कहे यदपद कैसेखैयतुहै हाथिनकेसंग गाँडे । काकीभूख गईबयारि
 भयि बिना दूध घृत माँडे । काहेको भालालै मिलवत कौनचारतुम
 डाँडे । सूरदास तीनो नहिं उपजत धनिय धान कह काँडे २३ ॥ राग
 बिलावल ॥ ये अलि कहा योगमें नीको । तजि रसरीति नन्दनन्दनकी
 सिखवत निर्गुणाफीको । देखत सुनत नाहिं कछु अवगानि ज्योति २
 करि ध्यावत । सुंदरश्यामदयाल कृपानिधि कैसेहोबिसरावत । सुनि
 रमाल मुरली सुरकीधुनि सोइकौतुक रसभूलै । अपनी भुजा ग्रीवपर
 सेलै गोपिनके मुखफूलै । लोकक्रानि कुलको भ्रमप्रभुमिलि मिलिके
 घरबनखेली । अब तुम मूर खवावनआये योगजहर की बेली २४ ॥
 राग मलार ॥ हमरे कौनयोग व्रत साधै । मृगतत्वच भस्म आधारि जटाको
 कोइतने अवराधै । जाकीकहं याहनहिं पैये आस अपार अराधै ।
 गिरिधरलाल छबीले मुखपर एतेबांधको बाँधै । आसन पवन बिभूति
 मृगछाला ध्याननि को अवराधै । सूरदास मानिक परिहरिके राख
 गाँठिको बाँधै २५ ॥ रागधनयो ॥ हमतो दुहुँभाँति फलपायो । जो ब्र-
 जनाथमिलै तो नीको नातरु जग यशुगायो । कहां वे गोकुलकी गोपी
 बरसा हीनलयु जाती । कहां वे कमला के स्वामीसंग मिलिबैठे थक
 पांती । निगमध्यान मुनिज्ञान अगोचर तेभये घोय निवासी । ताऊपर
 अब सांचु कहोधौं मुक्तिकौनकी दासी । योगकथा पालागों ऊधो ता
 कहु बारम्बार । सूरश्याम तजि और भजे जो ताकी जननीछार २६
 राग कान्हरी ॥ पूरा तारना नयनन प्री । तुम जो कहत अवगानि पुनि

समुभक्त येयाही दुखसरति विसूरी । हरि अन्तर्यामी सब जानत बुद्धि
 विचारत बचन समूरी । वे रस रूप रतन सागर निधि क्यों मरिपाय
 खवावत धूरी । रहुरे कुटिल चपल मधुलम्पट कितव सँदेश कहत कटु
 कूरी । कहंमुनिध्यान कहांब्रजयुवती कैसेजात कुलिश करिचूरी । देख
 प्रकट सरिता सागर सर शीतलशुभग स्वादरुचि छरी । सुरस्वातिको
 बसे जियचाहक चितलागत सबभूरी २७ ॥ रागधनाम्नी ॥ हमते हरि
 कबहूँ न उदास । रातिखवाय पिवाय अधररस सो क्यों विसरत ब्रज
 कोवास । तुमसों प्रेमकथाको कहिबो मनहुँ कारिबोधास । बहिरोतान
 स्वाद कहजाने गुंगोवात मिठास । सुनुरी सखीबहुरि फिरिसेहैं बहमुख
 बिबिधबिलास । सुरदास ऊधो अब हमकोभयो तेरहों मास २८ तेरो
 बुरो न कोऊमाने । रसकीबात मधुपनीरम मुनि रसिक होत सोजाने ।
 दादुर बसे निकट कमलनि के जन्म न रस पहिंचाने । अलि अनुराग
 उड़न मन बांध्यो कहे सुनत नहिँकाने । सरिता चली मिलन सागर
 को कूल मूल द्रुमभाने । कायर बके लोहतेभाजे लरे जो सुरबखाने २९
 घरही के बाढे रावरे । नाहिन सीत वियोग वशपरे अनवैं उंगे अलि
 बावरे । भुख मरिजाय चरै नहिँ तिनुका सिंहको यहै स्वभाव रे । अवरणा
 सुधा सुरली के पोखे योग जहर न खवाव रे । ऊधो हमहिं सीखका
 देहो हरिणी अनत न ठाँवरे । सुरजदास कहा लै कीजै ग्राहीनदिया
 नावरे ३० ॥ रागमलार ॥ श्याम मुख देखेही परतीति । जो तुम कोटि
 यतन करि सिखवत योग ध्यानकी रीति । नाहिँन कछू सग्यानज्ञान
 में यह हम कैसे मानहिं । कहा कहा कहिये या नभको कैसे उर में
 आनहिं । यह मन एक एक वह सरति भृङ्गकीट सममाने । सुरशपथ
 दै ब्रह्मत ऊधो यह ब्रज लोग सग्याने ३१ ॥ रागधनाम्नी ॥ लरिकीई को
 प्रेम कहा अलि कैसे करिके छूट । कहा कहीं ब्रजनाथ चरित अब
 अन्तरगति यों लूटत । चंचलचाल मनोहर चितवनि वे मुसुकानि मन्द
 धुनिगावत । नटवरभेष नन्दनन्दन को वह विनोद गृह बनते आवत ।
 चरणाकमलकी शपथ करति हैं यह सँदेश मोहिं बिय सम लागत ।
 सुरदास मोहिं निमित्त न विसरत मोहन सरति सोवत जागत ३२ ॥
 रागधनाम्नी ॥ अटपटि बाततिहारी ऊधो सुनैसो ऐसी कहै । हम अहीरि

अबलाशठ मधुकर तिनहैं योग कैसे सो है । बूचिहिखुभी आंधरी काज न कटी पहिरे बेशरि । मुंडली पाटी पारन चाहे कोट्टी अङ्गहि केशरि । बहिरीमों पतिमता करैं सो उत्तर कौन पै पावैं । से सो न्याव है ताको ऊधो जो हमैं योग सिखावैं । जो तुम हमको लाये कृपा करि शिर चढ़ाय हम लीन्हें । सूरदास नरि अरु ज्यों बिय को करहि बन्दना कीन्हें ३३ ॥ राग बिहागरो ॥ बरु वे कुब्जा भलो किया । सुनि सुनि समाचार ऊधो सो कहु क मिरात हियो । जाको गुण गति नाम रूप हरि हरेउ सो फिरि न दियो । तिन अपनो मन हरत न जान्यो हैं मिहँसि योग जियो । सूरतनक चन्दन चढ़ायतन ब्रजपति ब्रज्य कियो । और सकल नागरि नारिनको दासी दाव लियो ३४ ॥ राग सारंग ॥ हरि काहे के अन्तर्यामी । जो हरि मिलत नहीं हैं औसर अर्वाध बतावत लामी । अपनी चोप जाय उठि बैठे और निरस बेकामी । सो कह पीर पराई जानैं जो हरि गरुडागामी । आई उधरि प्रीति कजईसी जैसे खाटी आमी । मूर पर सते अनख मरत हैं ऊधो पीवत मासी ३५ बिलगु जिनि मानहु ऊधो प्यारे । यह मथुरा काजर की कोटारि जे आवाहं ते कारे । कारे भँवर सुफल कसुत कारे कारे रतन पवारे । कारे न सङ्ग अधिक छवि उपजत तिनहैं हमैं मति आरे । मानहु नील मातते काहे लेय सुना ज्यों पखारे । वहां ज्ञान की कौन चलावैं सूरश्याम गुणान्यारे ३६ ॥ राग देवगन्धार ॥ हरि बिनु कैसे या ब्रजजीजै । पङ्कज बरयि बरयि उर ऊपर शारंग रिपु जलभीजै । तारापतिके रिपु शिर टाहो निमियनि छैन न दीजै । चन्दा चौथि जात गोपिनको मधुप आय यश लीजै । वायस अज दोउ शब्द की मिलनी ताकार गा मन छीजै । सूरदास प्रभु हो जग जीवन बेगहि दरशन दीजै ३७ ॥ राग सारंग ॥ अपने स्वारथ को सब कोऊ । चुप करि रहो मधुप रसलम्पट तुम देखे असुखोऊ । औरी कहूँ संदेश कहन को कहि पठवो किन सोऊ । लीन्हें फिरत योग युवतिन को बड़े खाने दोऊ । तब कत मोहन रास खिलोई जोपे जान हुतोऊ । अब हमरे जिय बैठो यह पद होनी हो उषो होऊ । मिटि मये मान परे खोऊ धो हिरदय हुतो सो होऊ । सूरदास प्रभु गोकुल नाथ क चित चिन्ता अब खोऊ ३८ तुम जो कहत संदेशो आनि । कहा करों वा ब्रह्मचन्दन सो होत नहीं हि सुधाना योग युगति किहि काज हमारे यदपि

महासुख खानि । सुने सुनेह प्रियामसुन्दर के हिलिमिलिके मनमानि ।
 सोहत लोह पदशपारस जो सेवन बारे बानि । पुनि वह चोप कहाँ
 चुम्बक ज्यों लटपटाय लपटानि । रूपरहित नीराशा निरगुणा निग-
 महुँ परतन जानि । सूरजदास कौनबिधि तामोंअबकीजै पहिंचानि ३६
 रागधनाथी ॥ हमतौकान्ह केलिकीभूखी । कैसेनिरगुणा मुनिहं तिहारो ।
 बिरहिनिबिरह बिदूखी । कहिये कहा यहो नहिंजानत काहियोगुहे
 योग । पालागों तुमहींसोंवापुर बसतबावरोलोग । अञ्जनअभरणा चीर
 चारुबरुनेक आपतनकीजै । दण्डकमण्डलभस्मअधारी जो युवतिनको
 दीजै । सूरदेखिदुद्धता गोपिनकी ऊधो यह व्रतपायो । कहै कृपानिधि
 हो कृपालहो प्रेमपटन पढायो ४० अखियां हरिदरशन की भूखी ।
 कैसे रहै रूप रसराची ये बतियां मुनि छूखी । अबधि गनत थकटक
 मगुजोवत तब सतो नहिंभूखी । अब इन योग संदेशन ऊधो अति
 अकुलानी दूखी । बारक वहमुखफेरि दिखावहुहुहि पर्यापिवतपतूखी ।
 सूरसकति सतिनाउ चलावैं ज्यों सरिताभर सूखी ४१ ॥ रागकेदारे ॥ नेह
 न होत पुरानो हे अलि । जलप्रवाह ज्यों शोभासागर तटनवतन ब्रज-
 नाथ अहेबलि । जीवतहै आनन्द रूपरस रबि प्रतीति को मीन चढे
 थलि । अमी अगाध सिंधु सर भरि तहँ पीवतहँ न अघात यतेजलि ।
 दिनदिन बढत नीरनलिनी ज्यों प्रियामरंगमें नयन रहेरलि । सूरगोपाल
 प्रीति जियजागी छूटत नाहिन नेकसली सलि ४२ ॥ रागसारंग ॥ जाय
 कहा बूझी कुशलात । जाके जान न होय सो माने कहीतिहारोबात ।
 कारोनाम रूपपुनिकारी कारेअंग सखा सबगात । जोपैभले होत कहुं
 कारे तो कत बदलि सुता लेजात । हमको योग भोग कुब्जाको काके
 हिये समात । सूरदास से सेसा पतिके पाले जिन्ह तेही पछितात ४३
 कहाँ लों कीजै बहुतबड़ाई । अतिहि अगाध अपार अगोचर मनसा
 तहां न जाई । जलाबिन तरंग भीतिबिन चित्रन बिनचितही चतुराई ।
 अब ब्रजमें इन रीति कछु यह ऊधो आनि चलाई । रूप न रेख बदन
 बपुजाके संग न सखा सहाई । ता निर्गुणा में प्रीति निरन्तर क्यों नि-
 बहैरी साई । मन चुभिरहेउ साधुरीमुरति रोमरोम अरुभाई । हो बलि
 गई सूरप्रभु ताके जाके प्रियाम सदा सुखदाई ४४ ॥ रागमलार ॥ काहे को

गोपीनाथ कहावत । जोपै मधुकर कहत हमारे गोकुल काहे न आवत ।
 मयने श्री पाँचानि जानिकै हमहिं कलंकु लगावत । जोपै श्याम
 कुबरीरीक्षे सो कित नामधरावत । ज्यों गजराज काजके ओसर औरै
 दशन दिखावत । कइत्र सुनबको हमहैं ऊधो सूरअन्त बिरमावत ४५
 अबकत सुरति होतहै राजनि । दिनदश प्रीतिकरी स्वारथहित रहत
 आपनेकाजनि । सबैअयानि भईसुनि मुरली ठगीकपटकी भाजनि । अब
 मन भयोसिंधुके खग ज्यों फिरि फिरि शरणा जहाजनि । बह नातो
 टूटो तादिनते सुफलकसुत संगभाजनि । गोपीनाथ कहाय सूरप्रभुकर
 मारतहो लाजनि ४६ ॥ रागभारत ॥ लिखिआई ब्रजनाथकी छाप । बांधे
 फिरत शीशपर ऊधो देखत आवेताप । नूतनरीति नन्दनन्दनकी घर
 घरदीजतु थाप । हरिआगे कुब्जाअधिकारी तातेहै यहदाप । आयेक-
 हन येगु अवराधो अविगत कथाकी जाप । मूरसँदेशे सुनियन लागे
 कहाकौनके पाप ४७ ॥ रागसारंग ॥ फिरिफिरि कहा सिखावत बात ।
 प्रातकाल उठिदेखत ऊधो घरघर माखनखात । जाकीबात कहतहै
 हमसों सोहै हमसों दूरि । यहँहै निकट यशोदानन्दन प्राणा सजीवन
 मूरि । बालक संगलये दधिचोरत खात खवावत डोलत । सूर शीश
 सुनि चौंकत नावत अब काहे न सुख बोलत ४८ ॥ रागधनाशी ॥ अपने
 सयुगा गोपालै साई यहिविधि काहेदेत । ऊधो की ये निरगुणा बाँतें
 सीठी कैसेलेत । धर्मअधर्म कामना सुनावत सुखऔसुक्ति समेत । काकी
 भूखगई मदलाइ सो देखहु चितचेत । जाके मुख्य बिचित्र वरजत
 निगम कहतहैनैत । सूरश्याम तजिको भुसफटके मधुप तिहारेहेत ४९
 रागसारंग ॥ हमको हरिकी कथा सुनाउ । अपने ज्ञान कथा हो ऊधो
 मथुराही लेगाउ । नागरि नारि भले बूझहिंगी अपने बचन सुभाउ ।
 पालागों इनबातनि रेअलि उनहींजाय रिभाउ । सुनिप्रियसखा श्याम
 सुन्दरके जोपैजिय सतिभाउ । हरिसुख अतिआरत इननयननि बारक
 बहुरि दिखाउ । जेकोइ कोटियतनकरै मधुकर बिरहिनि ओरसोहाउ ।
 सूरजदास मीनकोजलबिनु नाहिनि और उपाउ ५० ॥ रागकान्हरो ॥ अलि
 हो कैसे कहाँ हरिके रूपरसाई । मेरे तनमें भेद बहुत बिधि रसना न
 जाने नयनकी दिशाहि । जिनदेखेते आहिबचनबिनु जिन्हें बचन दर-

शन न तिसहि । जिन बारागी भरि उमगि प्रेमजल सुमिरिवास गुणायहि ।
 बारबार पछितात यहै मन कहा करै जाबिधि न बसहि । सूरदास अंगन
 की यह गति को समुझावै पाछ पद पशुहि ५१ ॥ रागमार्ग ॥ हमरे हरि
 हरिल की लकरी । मन बच क्रम नंदन नंदन से उर यह दृढ़ करि पकरी ।
 जागत सोवत सपने से मुख कान्ह कान्ह यह जकरी । सुनतहि योग
 लगत ऐसे अलि ज्यों कसई ककरी । होई ब्याधि हमहि ले आये देखी
 सुनी नकरी । यह तो सूर तिन्हें लै दीजै जाके मन चकरी ५२ फिरि फिरि
 कहा सिखावत मौन । दुसह बचन अलियों लागत उर ज्यों जारे परलौन ।
 सिंगी भरम त्वचा मृगमुद्रा अरु अवराधन पौन । हम अबला अहीर शठ
 मधुकर घर बन जाने कौन । ये मतलैति नहीं उपदेशों जिन्हें आजु सब
 सोहत । सूर आजलों सुनी न देखी पोत सुतरी पोहत ५३ ॥ राग जेतथी ॥
 प्रेम रहित यह योग कौन काज गायो । दीन न से नितुर बचन कहे कहा
 पायो । जिन नयन न हम कमल नयन सुन्दर मुख हेरो । सुंदन तेन यन कहत
 कौन जान तेरो । तामें कहु मधुकर हम कहा लैन जाहीं । जामें प्रिय प्राणा-
 नाथ नन्दन न जाहीं । जिन के तुम सखा साधु बातें कहु तिन की । जीवै सुनि
 प्रियम कथा दासी हम जिन की । अविनाशी निरगुण गुण आनि आनि
 भाखों । सूरदास जिय के जिउ कहाँ कान्ह राखों ५४ ॥ राग केवारी ॥ जनि
 चालो अलि बात पराई । नाको उकहै सुनै याव्रज में नइ कीरति सब जात
 हिराई । बूझै समाचार मुख ऊधो कुल की आरति बिसराई । भले सङ्ग
 बसि भई भली मति भले मेल पहिंचान कराई । सुन्दर कथा कटुक सी
 लागति उपजत उर उपदेश पेखराई । उलटो न्याव सूर के प्रभु को बहे-
 जात सांगत उतराई ५५ ॥ राग मलार ॥ या की सीख सुने ब्रज कोरे । जाकी
 रहनि कहनि अनमिल अलि कहत समुक्ति अति थोरे । आपुन पद स-
 करंद सुधारत हृदय रहत नित बोरे । हम सों कहत बिरह समुजे हैं
 गगन कूप खनि खोरे । धान को गाउँ प्यार ते जानो जान बिसय रस
 मोरे । सूर सो बहुत कहे न रहे रस गुलर को फल फोरे ५६ निरखत
 अङ्ग प्रियम सुन्दर के बार बार लावत छाती । लोचन जल कागद मसि
 मिलिके हँगाइ प्रियम प्रियम की पाँती । गोकुल बसत सङ्ग गिरिधर के
 कबहुं बयारि लगी नहिं ताती । तब की कथा कहा कहीं ऊधो जब

हम बैन नाद सुनि जाती । हरिके लाइ गनति नहिं काह निशिदिन
सुदिन रासरसमाती । प्राणनाथ तुमकबधौमिलहुगे सूरदास प्रभु बाल
सँधाती ५७ ॥ रागमाह ॥ मोहिं अलिदुहंभांति फलहाति । तब रस अधर
लेति मुरली अबभई कूबरी सोति । तुम जु योग मत सिखवन आये
भस्म चढावत अङ्ग । इन बिरहिनि में कहुं को देखी सुमन गुहाये
संग । कानन मुद्रा पहिरि मेखली धरे जटा वो धारी । यहाँतरल त-
रिवन काके देखे अरुतन मुखकीसारी । परमबियोगिनि रदति रैनि
दिन धरि मनमोहनध्यान । तुमते चलोबेगिमधुवनको जहाँयोगको
ज्ञान । निशिदिन जीजतुहै या ब्रजमें देखि मनोहररूप । सूर योगलै
घरघर डोलो लेहुलेहु धरि सूप ५८ ॥ रागसारंग ॥ बिलगु जनि मानहुं
हमरी बात । डरपति बचन कटोर कहतमतिबिन पतियां उठिजात ।
जो कोउ कहतजरे अपने कहु फिरीपाछे पछितात । जो प्रसादपावन
तुम ऊधो कथा नामलै खात । मनजु तिहारो हरि चरणान तरअचल
रहतदिनरात । सूरप्रयामतेयोग अधिक केहिकहि आवतयहबात ५९
अपनीसी कठिन करत मन निशिदिन । कहिकहि कथा मधुप समु-
झावत तदपिन रहत नन्दनन्दनविन । बरजन अवगा संदेश नयनजल
मुख बतियां कहु और चलावत । बहुतभांति चितधरत निहुरतासब
तजि औरयहै जियआवत । कोटिस्वर्ग समसुख अनुमानत हरि समीप
समता नहिंपावत । थकितसिन्धु नौकाके खगड्यों फिरिफिरिफेरि
वहै गुणा गावत । जे बासनन बिदारत अन्तर तेइतेइ अधिक अनूअर
दाहत । सूरदास परिहरि न सकत तन बारक बहुरि मिल्योहै चाहत
६० ॥ रागधनायी ॥ रहुरे मधुकरमधु मतवारे । कहा करौं निर्गुणा लौके
हो जीवहु कान्ह हमारे । लोटत नीच परागपंक में पचत न आपु स-
न्हारे । बारम्बार सरस मदिराकी अपरस कहा उधारे । तुम जानत
हमहुं वैसीहैं जैसी कृष्ण तिहारे । घरी पहर सबको बिलसावत जेते
आवत कारे । सुन्दरश्याम कमलदललोचन यशुमति नन्ददुलारे । सूर
श्याम को सर्वस अप्यो अब काके हम लोहि उधारे ६१ ॥ रागबिलावल ॥
काहे को रोकत मारग सुधो । मुनहुमधुप निर्गुणा कंठकते राज पन्ध
क्यों खंधो । कौतुम सिखै पठाये कुब्जाके कही श्यामघन जूधो । वेद

पुराणा सुमृत सब हूँदोयुवतिनयोग कहूँधो । ताको कहा परेखो कोजै
 जानत छाछन दूधो । मूर मूर अक्रूर गयेलें दयाजनिबेरत ऊधो ६२ ॥
 रागमलार ॥ बातन सबको ऊ समुभावे । जेहि बिधि मिलन मिलैं वे साधव
 सो बिधि कोउ न बतावै । यद्यपि यतन अनेक रचीपचिमारि असन
 बिरसावै । तद्यपि हठी हमारे नयना और न देखेभावे । वासर निशा
 प्राणा बल्लभतजि रसना और न गावे । सूरदास प्रभुप्रेमहिं लागि करि
 कहिये जा कहि आवे ६३ ॥ रागसारंग ॥ निर्गुणा कौन देशको वासी ।
 मधुकर हंसि समुभाय सोंहदे ब्रूभक्त सांचु न हांसी । कोहै जनक ज-
 ननि को कहियत कौन नारि को दासी । कैसे बरन भेय है कैसे बहिरस
 में अभिलासी । पावेगो पुनिकियो आपनो जोरे कहेंगो गासी । सुनत
 सौन हूँ रहेउ दरयो सो सूरसवै मतिनासी ६४ ॥ रागकेदारी ॥ नाहिन रहेउ
 मनमें ठौर । नन्दनन्दन अछत कैसे आनिये उर और । चलत चितवत
 दिवस जागत सपन सोवति राति । हृदयते बह प्रयास सूरति करान इत
 उत जाति । कहत कथा अनेक ऊधो लोक लाभ दिखाय । कहा करोंतन
 प्रेम पूरणा घटनि सिंधु समाय । श्यामगात सरोज आनन ललितपति
 मृदुहास । सूरयेसे रूपकारणा सरत लोचन प्रयास ६५ ॥ रागमलार ॥ ब्रज
 जन सकल प्रयास व्रतधारी । विनयोपाल और नहिं जानत आनकहे
 दयभिचारी । योगमोट शिरबोझ आनिकै कत तुम धोय उतारी । इतनी
 दूरि जाहु बलि काशी जहां बिकात पिपारी । यह मदेशन हिंसुनेति हारो
 मगडली अनन्य हमारी । जोर सरीतिकरी हरि हमसों सो कत जान बि-
 सारी । महासुक्ति कोई नहिं बूझेयदपि पदारथ चारी । सूरदास स्वामी
 मनमोहन सूरतिकी बलिहारी ६६ ॥ रागधनोत्री ॥ कहति कहा ऊधो सों
 बोरी । जाको सुनत रहे हरिके दिग प्रयास सखा यह सोरी । कहा कहनरी
 में पत्यातरी नहीं सुनी नहिं ही कहनावत । हमको योग सिखावत आय
 यह तेरे मन आवत । करणी भली भलेई जाने कपट कुटिल की खाति ।
 हरिको सखा नहीं रीमाई यह मन निश्चय जानि । कहाँ रास रस कहाँ
 योगधर इतने अंतर भायत । सूर सबै तुम कत भइवौरी याकीपति कह-
 राखत ६७ ॥ रागभिकली ॥ ऐसेई जन दूत कहावत । मोको एक अचम्भो
 आवत यामें एक छुपावत । बचन कटोर कहत कहि दाहत अपनी

महत गाँवावत । ऐसी परकृत परतिछाँह को युवतिन ज्ञान बुझावत । आपुन निलज रहत नखशिखलों सतेपर पुनिगावत । सूरकरत पर-
शंसा अपनी हारेहु जीतिकहावत ६८ ॥ रागधनाथी ॥ प्रकृत जोइजाके
अंगपरी । आनपूछकोटिक जोलागेसूधि न काहुकरी । जैसे कागभस
नहिंछाँडे जनमतउयो नधरी । धोयेरंगजातकहुकैसेउयोकारीकसरी ।
उयो अहिडसत उदरनहिं पूरत ऐसी धरणा धरी । सूर होउ सो होउ
शोचनहिं तैसेहैं सऊरी ६९ ॥ रागरामकली ॥ तौ हम मानैबात तुम्हारी ।
अपनोब्रह्म दिखावहुऊधो मुकुट पितांबरधारी । भजिहैं तब ताको सब
गोपीसाँहरहि हैं बरुगारी । भूतसमान बतावत हमको जारहु प्रयास
विसारी । जेमुखसदा सुधाअंबवतहैं तेबियक्यों अधिकारी । सुरदास
प्रभुसक अंगपररीभिरहीं ब्रजनारी ७० ॥ रागबिलावल ॥ यहसुनतहीनयन
पराने । जबहीं सुनत बाततुअ मुखकी रोवत रमतढराने । बारम्बार
प्रयासघन घनते भाजत फिरत लुकाने । हमकोनहिंप्रतियात तबहिते
जबब्रज आपुसमाने । नातरुयही काकहन कांछति वे यहजानि कि-
पाने । सुरदास हमरे शिरधरिही तुमहौ बड़े सयाने ७१ ॥ रागधनाथी ॥
नयननिवहैरूप जोदेख्यो । तौऊधोयहजीवनजगको सांचुसुफलकरि
लेख्यो । लोचन चारुवपल खंजनमन रंजन हृदय हमारे । रुचिर
कमल मृगमीन मचोइर प्रवेतअरुणा अरुकारे । रतन जटित कुराडत
अवगानि बरगण्ड कपोलनि भाँडे । मनुदिनकर प्रतिबिंब मुकुट महं
हुँडतयह छविपाई । मुरली अधर बिकट भौहँकरि टाढेहेत विभङ्ग ।
मुकुट मालउर नीलशिखरते धमिधरणी ज्योंगंग । औरभेय को कहै
बरगिसब अङ्ग अङ्ग केशरि खौर । देखतबनै कहत रसनासोंसुरबि-
लोकत और ७२ ॥ रागनट ॥ नयनन नन्दनन्दन ध्यान । तहाँलै उपदेश
दीजे जहाँ निरगुण ज्ञान । पाणिपल्लव रेखगणि गुण अविधिविधि
बंधान । सतेपरकहिकटुक बचनन हततजैसेप्राण । चन्द्रकोटि प्रकाश
मुख अवतंसकोटिकभान । कोटि सन्मयवारि छविपर निरखिदीजत
दान । भृकुटिकोटि कुदगडरुचिअबलोकनीसंधान । कोटिबारिजबङ्ग
नयन कटाक्ष कोटिकभान । कम्बुग्रीवा रत्नहार उदारउरमनि जान ।
आजानुबाहु उदार अतिकर प्रभुसुधानिधान । प्रयास तन पदपीत की

छद्मि करेकौन बखान । मनहुनिर्तत नीलघनमें तडित देतीमान । रास
रक्षिक गोपाल मिलिमधु अधर करतीपान । सूर ऐसे रूपविन कोइ
कहा रसकआन ७३ ॥ रागजेतथी ॥ देनआयेऊधोमत नीको । आवहुरी
सब सुनहु सयानी लेहु न यशको टीको । तजन कहत अंबर आभूषणा
रोह नेह सबहीको । शीशजटा सब अङ्ग भस्म अति सिखवत निर्गुणा
फीको । मेरे जान यहै युवतिन को देतफिरत दुख पीको । तेहि सर
पञ्जर भये प्रयास तन अब न गहत डस जीको । जाकी प्रकृति परी
प्रागान सों शोच न पोच भलीको । जैसे सूर ब्याल डसि भाजत का
मुख परत असीको ७४ ॥ राग सारंग ॥ प्रीतिकरि दीन्हीगरेछुरी । जैसे
बधिक चुगाय कपटकन पाछे करतबुरी । मुरली मधुरचोप करिकापो
मोरचन्द्र ठटवारी । बंक बिलोकनि लुकलागिवश सकी न तनहिंस-
म्हारी । तलफत छाँडिचले मधुवन को फिरिके लई न सार । मुरदास
वा कमलतरोवर फेरि न बैठीडार ७५ ॥ रागधन्याथी ॥ कोउ ब्रज बाँचत
नाहिन घाती । कत लिखि लिखि पठवत नंदनन्दन कठिन बिरहकी
काती । नयन सजल कागद अतिकोसल करअंगुरी अतिताती । पर-
शत जरे बिलोकत भीजे दुहुँभाँति दुखछाती । क्यों समुझै ये अङ्कसूर
सुनु कठिनमदन शरघाती । देखे जियहिं प्रयाससुंदरके रहहिं चरणा
दिनराती ७६ ॥ रागजेतथी ॥ मुकुत आनिमन्दिरमें मेली । समुझि सगुणा
लेचले न ऊधो ये सब तुम्हरे पूंजिअकेली । कैलैजाहु अनतही बेंचन
कैलैजाहु जहां बियबेली । याहिलागि को मरै हमारे चन्दावन पायँन
तरपेली । शीश धरे घरघर कत डोलत सकसते सबभई सहेली । सूर
वहां गिरिधरन छबीलो जिनकी मुजा अंशगहि मेली ७७ ॥ रागकान्हरी ॥
हमअलि गोकुलनाथ अराध्यो । मनबचक्रम हरिसौंधरि पतिव्रतप्रेम
योग तपसाध्यो । सातपिता हित प्रीति निगमपथ तजि दुखसुख धनु
नाख्यो । मान अपमान परं परितोयिसु अस्थित धित मनुराख्यो ।
सकुचासन कुलशील परशिकरि जगत बन्दकरि बन्दन । मानपवाद
पवन आरोधन हितक्रम काम निकन्दन । गुरुजन कानि अंगानि चहुँ
विशिते भरतताप रविदेखे । पिवत घम उपहास जहांतहँ अपयश अ-
वनि अलेखे । सहज समाधि बिसरि बपवानक निरखि निमेष न

त्यागत । परम जातिप्रति अङ्ग माधुरी भरत यहै निशिजगत । त्रिकुटि
सङ्ग भुवभङ्ग तराटक नयन नयन लगिलागे । हँसनि प्रकाश सुमुख
कुण्डलमिलि बदन सरअनुरागे । मुरली अधर मधुर मुरसों मुनिशब्द
न हृद मुनिकाने । बरयत रस रुचि पवनसङ्ग सुख पद आनन्द समाने ।
मंत्र दियो मन जातभजन गुण ध्यान २ हरिको । सुरकरै गुरुकीनकहै
अति कानमुने सतफीको ७८ ॥ रागधनाम्नी ॥ सीटी बातनिमें कहलीजै ।
जो पै हरि हितु होहिं हमारे करन कहे सो कीजै । लाय सुगन्धनाय
आभूषणायों कीन्ही अरधङ्ग । ते कैसे अवलिखि पठवाहिंगे भस्मचटा-
वनअङ्ग । सकवार बिहरत वृन्दावन बेणी बिबिधबनाई । ते क्योंकहत
जटा साथेको पलटा नामकन्हाई । काननमें करकान्ह आपने करणा-
फल पहिराये । तिनमावव माटीके मुद्रा मधुकर हाथ पढाये । कासों
कहाँ दूरिनंदननदन तुम जो मधुपमधुपाती । मुर न होय प्रयागके मुख
की जाहु न जारहु छाती ७९ हरिसों भली सो पतिसोता को । जाके
हेत काज बहुकीन्हे कियो सिन्धुबीताको । रावणामारेउ लंका जारी
सुखदेखयो भीताको । दूतहाथ उन्हें लिखि न पढाये निगमज्ञान गीता
को । अबधों कहा परेखो कीजै कृष्णको सीताको । जैसे चढ़त सबै
सुधिभूली ज्यों पीता चीताको । कीन्ही कृपा योग लिखिपढया नि-
रखिपष रीताको । मुरजदास प्रेमकहजानै लोभी नवनीताको ८० ॥
रागधोरठ ॥ निरमोहियो सों प्रीतिकीन्ही काहेन दुखहोइ । कपटकरि
करि प्रीतिकपरी लेगयो मनुगोइ । काल मुखते काहि आनी बहुरि
दीन्ही होइ । मेरे जियकी सोइजाने जाहि बीती होइ । शोचि आलि
मजीठकीन्ही निपट काचीपोइ । मुरगोपी मधुप आगे दरकि दीन्ही
रोइ ८१ ॥ रागसाय ॥ बिन गोपाल बैरन भई कुंजें । तब खेलतालगत
अति शीतल अबभइ बियम ज्वाल की पुंजें । वृथा बहुत यमुना खग
बोलत वृथा कमल फूलें अलि गुंजें । पवन पानि घनसार मजीठनि
बधिसुत किरनिभान भइभुंजें । ये कबो कहियो माववसे विरह कदन
करि मारतलुंजें । मुरदास प्रभुको मगजोवत अखियां भई बरणा ज्यों
गुंजें ८२ ॥ रागनट ॥ सँदेशो कैसेके अब कहैं । इन नयनन पातन को
प्रहरो कबलगा देतरहैं । जुकहु बिचार होइ उर अन्तर सचि प्रीति

प्रोचि गहों । मुखआनत ऊधोतनु चितवत न सो विचार नहों । अब
 सोई शिष्य देहुसुखानी जाते सर्वाह लहों । सूरदासप्रभु कैसे बक सो
 बिनती कै निबहों ८३ ॥ रागकान्हो ॥ बहुरो ब्रज बात न चाली । वह
 जो सकबार ऊधोकर कमलनयन पाती दैघाली । पथिकतिहारे पा-
 लागतिहैं मथुरा जाहुजहां बनमाली । कहियो प्रकटपुकार द्वारहैं
 कालिन्दी फिरिआयो काली । जबरूपा यदुनाथ कि हमपर रही सु
 रुचि जो प्रीति प्रतिपाली । सांगत कुसुमदेखि द्रुम ऊँचे गोद पकरि
 लेते गहिडाली । हमऐसी उनके केतिकहैं अंग प्रसंग सुनहुरी आली ।
 सूरदासप्रभु प्रीति पुरातन सुमिरि सुमिरि राधा उरशाली ८४ ॥ रागनट ॥
 मोहनलालके संग आंखि । प्रथम ऊधो आनिदेहम सुगुरा डारेनाखि ।
 दोइ तोनि सात अनन्त जैसे कहत सुमृत सोभायि । हृदय बिद्याधर्म
 ज्ञानसों लोचननि अभिलायि । उडहिं जहांके केलिसखिरी सुमिरि
 चकरी पांखि । हरि हरेहरि हेरिआलों रही भुक्ति बक्ति भांकि ।
 निरखिजल प्रतिबिम्ब बिहसत उडत खोरत राखि । हंदिपन्न पुरैनि
 बनजनु जलपि कहकुहि कांखि । रैनियों अंकुरत निशि अलिमदन
 दरिमद माखि । इन्दुउडगारा कमल कुमुदिनि मिले सूरजसाखि ८५
 राग मलार ॥ हँदेशनि मधुवन कूपभरे । जे कोई पथिक गये जो ह्यांते
 फिरिनिहिं गवनकरे । केवै प्र्याम सिखाइ समोधे केवै बीचमरे । अ-
 पनेनिहिं पठवत नंदनन्दन हमरेउ फेरिधरे । मसिखूरी कागज जबभोजे
 सरदे लागिजरे । पातीसूर लिखे क्यों करिजो पलक कपाट अरे ८६
 रागनट ॥ नन्दनन्दन मोहनसों मधुकर काहे की प्रीति । जो कीजै तो
 होइजलजवर रविकी ऐसीरीति । जैसेमीन कमल चातिकको ऐसेही
 गइवीति । तलफत जरत पुकारत सुनुशठ नाहिन है यहरीति । मन
 हठ परेउ कबन्ध युद्धज्यों हारेहं भइजीति । बँधत न प्रेम समुद्र सूरवल
 वर बासहि की भीति ८७ मधुवनियां लागनि को पतिआय । मुख
 औरै अन्तरागति औरै पतियाँलिखि पठवतहि बनाय । ज्योंकाइल
 सुतकाया जिआवत भाव भगति भोजनिहिं खवाय । कहकुहाय आये
 वसन्तवर्षतु अन्तमिले कुल अपने जाय । जैसे मधुकर पुहुप बासले
 फेरि न बूझेवात न आय । सूरजहांलौ प्र्यामगातहैं तिनसों क्यों की-

जिगे लगाय ८८ हरिहैं राजनीति पढ़िआये । समुझी बातकहत म-
 धुकरके भसाचार कहुपाये । यक अतिचतुरहुते पहिलेही असकरि
 नेह दिखाये । जानीबुद्धि बड़ी युवतिन की योगसंदेस पठाये । भले
 लोग आगेके सखिरी परहित डोलत ध्राये । वे अपनेमन फेरिपाइये
 जेहैं चलत चुराये । तेक्यों नीतिकरत आपुनजे औरनिरीति छुड़ाये ।
 राजधर्म सबभये सूरजहैं प्रजा नजाय सताये ८९ योगकीगति सुनत
 मेरे अङ्ग आगिबई । सुजगि सुलगि हमरहीं तनमें फूंकि आनिदई ।
 योगहमको भोग कुबिजहिं कौनेशिय सिखई । सिंह राजतजि दगाहिं
 खराडत सुनीवातनई । कर्मरेखा मिटतनाहीं जोबिधि आनिदई । सूर
 हरिकी कृपाजापर सकल सिद्धिभई ९० ॥ रागधनाश्री ॥ ऊधोजान्यो
 जानतिहारो । जानैकहा राजगति लीला अन्त अहीस बिचारो । हम
 सबे अयानी सक सयानी कुबिजासों मनमानो । आवत नहीं लाजके
 मारे मानहुँकान्ह खिस्यानो । ऊधोजाहु बाँहदै लयावहु सुन्दरश्याम
 पियारो । व्याहेलाय धरोदश कुबरी कन्तहु कान्हहमारो । सुनरी
 सखी कहुनहिं कहिये माधव आवन दीजै । जत्रहीं मिलहिं सूरके
 स्वामी हाँसी करिकरिजीजै ९१ ऊधोकहा कहन जोपारो । नाहिंन
 अलिकहु दोष तिहारो सकुचिसाव जिनिमारो । नाहिन ब्रजबसि
 नन्दलाल गोपाल विनोद निहारो । नाहिन रासरसिक रसचाखो
 तोड़ि लियोसो डारो । जो नहिंगयो सूर प्रीतम संग प्राण त्यागितन
 न्यारो । अबतो बहुत देखिबो सुनिबो कौ नकरससों चारो ९२
 ऊधो हमहिं श्यामकी यहैपरेखो आवै । तबबह प्रीतिचरणा जावक
 शिर अब कुबिजा मनभावै । तब हम लाडलडाय लडैते हँसिहँसि
 कराठ लगावै । अबवहखप अनप कृपाकरिनयननि क्यों न दिखावै ।
 जो मुख समिप रैन दिन क्रीडत सो अब योगसिखावै । जो मुख
 अमृत पियो भरि रसना सोकैसे बियभावै । कस्मोडत पछितात धुनत
 शिर कस कस मन समुभावै । सूरदास प्रभु बिकल विरहिनी सेसी
 विधि दुखपावै ९३ ॥ रागसारंग ॥ ऊधो कहत न कहु बनिआवै ।
 शिरपर सौति हमारे कुबजा चामके दाम चलावै । उनकहु मन्त्रपढ्यो
 चन्दनसे ताते प्रियामहिं भावै । अपने रङ्गहिरंगे साँवरे शुकज्यों

पढावै । छांड्यो नेह हेत गोकुलसों लिखि लिखि योग पढावै । बि-
सरेउ श्रेय असुरकी दासी अज कृतबधू कहावै । ज्योंनदिनी लघुहाथ
लकुटिले कपिज्यों नाचनचावै । सूरदासप्रभुजरी बहुतदुख तापर लोन
लगावै ६५ ॥ रागधनाथी ॥ ऊधो योग सिखावन आये । कैसे धीरजधरि
हरिपाती लिखिज्यों आप सिधाये । एक समय हरि अपने कारणा
कर्णफूल पहिराये । ता कारणा माटीके मुद्रा मधुकर हाथ पढाये ।
जोरि जोरि चितजोरि जोरानो जोरी जोरि न जानो । बिनको प्रेम
कहा भयो ऊधो अब यह योग दृढानो । हरिजी हमसों प्रीति जो
कीन्ही जैसे मीन अरु पानी । तलफि तलफि जिय निकसन लाग्यो
पानी पीर न जानी । निगिबासर मेरी पलक न लागत कोटियतन
करि हारी । जैसे भुअङ्गम राजी केचुरी सो गति भई हमारी । बेसी
सुभग एहीकर अपने चरणान जावक दीन्हे । कहियोजाय सुरस्वा-
मीसों निपट निदुर जियकीन्हे ६५ ऊधो जनि मधुवन तन देखो ।
कहुक दिवस औरो रहि गोकुल जन्म सुफल करिलेखो । कहाजाय
लेहो प्रभुता में राजकाज की बात । बाजकुमार किशोर निरखि जे
घरघर साखन खात । तुम निर्गुणानि कहत निरन्तर निगम नीति
यह नीति । प्रकटरूप मदमत्त नयन क्यों छांडत प्रेम प्रतीति । जाको
शिव सनकादि सनातन क्षणाक्षणा मनधरि ध्यावत । सूर सु प्रभु ब्रज
गोप सखन संग गोधन वृन्द चरावत ६६ ॥ राग मलार ॥ ऊधो तुमहो
अति बड़भागी । अपर सरस तस नेह तगाते नाहिँन मन अनुरागी ।
पुरइनि पात रहत जलभीतर तारसदेहु न दागी । ज्यों जलमांह तेल
की गागरि बूंद न ताके लागी । प्रीति नदीमें पावै न बोरेउ दुष्टि न
रूप परागी । सूरदास अबला हम भोरी घर चींरो ज्यों पागी ६७
ऊधो यहमन और न होय । पहिलेही चढ़ि रहेउ प्रयासरंग छुटत न
देख्यो धौय । कै तब वचन छांडि हरि हमसों सोइ करे जो मल ।
योग हमहिँ सेसो लागत है ज्यों तोहिँ चम्पक फूल । अब क्यों नि-
दत हाथ की रेखा कहौ कौन विधि कीजै । सूरप्रयास मुख आनि
देखावो जाहि निरखि करि जीजै ६८ रागगोड ॥ ऊधो ना हमबिरही
ना तुम दास । कहत सुनत घटप्राणा रहतहैं हरितजि भजहु अकास ।

बिरही मीन मरत जल बिछुरे छाँड़ि जीवनकी आस । दास भावनिहँ
 तजत पपीहा बससहि रहत पियास । प्रकटप्रीति दशरथ प्रतिपाली
 प्रीतम के बनवास । सूरप्रयाम से दूढव्रत कीन्हे मेदि जगत उपहा-
 स ६६ ॥ रागसारंग ॥ ऊधो कहीसो बहुरि न कहियो । जो तुम हमहिँ
 जिवाये चाहे अनबोले ह्वै रहियो । हमरे प्राण अघात होतहैं तुम
 जानत हो हाँसी । वा जीवन ते मरगा भलो है करवट लेहैं कासी ।
 जब हरि गमन कियो पूरब लों तब लिखि योग पढाये । यह तन
 जरिके भस्मह्वै निबरेउ बहुरि मशान जगाये । केरे मनोहर आनि
 मिलावो के लेचलु हम साथे । सूरदास अब मरगा बन्धोहै पाप ति-
 हारे साथे १०० ॥ रागसारंग ॥ ऊधो तुम अपने यतन करो । हितकी
 कहत कुहितकी लागी की बिनवे काजररो । जायकरो उपचार आ-
 पनो हम जो कहत हैं जीकी । कछु कहत कछु वे कहि डारत धुनि
 देखियत नहिँ नीकी । साधुहोय तेहि उत्तरदीजै शुभसों मानीहारि ।
 याहीते तुम्हें नंदनन्दन जो पढये यहाँ हो टारि । मथुरा बेगि गही
 इन पाथँन उपज्यो हेत न रोग । सूरसो बैद्य बेगिकिन दूँहो भये अर्द्ध
 जल योग १०१ ॥ रागसारंग ॥ ऊधो जाके साथे भाग । कुब्जा को पद-
 रानी कीन्ही हमहिँ देत बैराग । तलफत फिरत सकल ब्रजबनिता
 चोरी चपरि सोहाग । बन्धो बनायो सङ्ग सखीरी बेरे हंतके काग ।
 लौंझीके घर डौंझी बाजी श्यामराग अनुराग । हाँसी कमलनयनसंग
 खेलति बारहमासी फाग । योगिकि बेलि लगावन आये कार्त प्रेम
 को बाग । सूरदास प्रभु ऊख छाँड़िके चतुर चिचोरत आग १०२ ॥
 रागसारंग ॥ ऊधो अब यह समुझ भई । नंदनन्दन के अङ्ग अङ्ग प्रति उ-
 पमा न्यायदर्श । कुन्तल कुटिल भँवरभरि भौंवरि मालति भुरइलई ।
 तजत न गहरु कियो कपटो जब जानी निरसगई । आनन इन्दु बि-
 मुख सम्पुट सजि करये ते न नई । नवनेही नवनेसा कुमुदिन अन्तहु
 हेमहई । तनधन प्रयाससेइ निशिबासर रतिरसना छिजई । सूरविवेक
 हीन चातकमुख बूंदो तो न सई १०३ ॥ रागधनाम्री ॥ ऊधो हम अति
 निपट अनाथ । जैसे मधु तोरेकी माखीत्यों हमबिन ब्रजनाथ । अघर
 अमृत की पीरखुई हम बालदशाते जोरी । सेतो बधिक सुफलकष्ट

लैगयो अनायाशही तोरी । जबलग पलक पाणि मीडति रहि तब
 लग गये हरि दूरी । कै निरोध निबहै तिहि अवसर दे पग रथ की
 धूरी । सब दिन करी कपिला की सङ्गति कबहुँ न कीन्हो भोग । मूर
 बिधाता रचि राख्योहै कुब्जाके मुख योग १०४ ॥ रागसांग ॥ ऊधो
 ब्रजकी दशा बिचारो । तापाके यह सिद्धि आपनी योग कथा बि-
 स्तारो । जेहि कारणा पढये नंदनन्दन सो शोचहु मनसाहीं । केतिक
 बीच बिरह परमारथ जानतहो किधौनाहीं । तुमनिजदास जो सुखा
 श्यामके सन्तत निकट रहत हो । जल दूधत अवलम्ब फेनको फिरि
 फिरि कहा गहत हो । वे अति ललित मनोहर आनन कैसे मनाहिं
 बिसारो । योग युक्ति औ मुक्ति विविधि विधि या मुरली परवारो ।
 जेहिउर बसे श्यामसुन्दर धन क्यों निर्गुण कहि आवै । मूरश्यामसोइ
 भजन बहावै जाहि दूसरोभावै १०५ ॥ रागसांग ॥ ऊधो यहहित लागै
 काहै । निशिदिन नयनतपत दर्शनको तुम जो कहत हृदयसाहै । नींदन
 परत चहुँदिशि चितवत बिरह अनलके दाहै । उरतेनिकसिकरत क्यों
 न शीतल जोपैकान्ह यहाँहै । पालागों ऐसेहि रहनदे अवधआगजल
 थाहै । सतिले डारो निर्गुण सिन्धुमें फिरनपाइयोचाहै । जाको मन
 जाहीसेराखेउतासोंबनेनिबाहै । मूरकहा लेकरैपपिहायेतेसरसरिताहै
 १०६ ॥ रागनट ॥ ऊधोयोग योगहिगोहु । हम अवलाकहयोग जानहिं
 शयथहमसों लेहु । जैसेचन्दचक्रोरचाहत मोरचाहतमेहु । हमहुंचरगा
 सनेहचाहतप्रियामसङ्गसनेहु । कतकखंभबिसारि कैसेकरतकाननगोहु ।
 छोडिचन्दन कुसुमकेशर क्योंचढावहिखेहु । श्यामगातसरोजआनन
 करत पावकयेहु । मूरकेप्रभुदरशदुर्लभ पातहंसमुभेहु १०७ ॥ रागधनयात्री ॥
 ऊधोब्रजमेंपैठ करी । यहनिर्गुणानिमूल गांदरी अबकिनकरहुखरी ।
 नफाजानिकै यहाँलैआयेसबैबातअकरी । यहसौदा उहाँलै बेचाजहां
 बड़ी नगरी । हमबालिनि गोरस दधिबेचो लेहिअबैसवरी । मूरयहां
 कोइ साँहक नाही देखियतु मरेपरी १०८ ॥ रागसांग ॥ ऊधो तुम जो
 निकट के बासी । यह परमारथ बूझिकहो धों नाम बड़ोकी कासी ।
 योग न ज्ञान ध्यान अवराधन साधनमुक्तिउदासी । आन प्रकारकहा
 रचि मानहिं जो गोपाल उपासी । परमारथी जहांलोजेते बिरहिन

के दुख दाई । सूरदास प्रभु रङ्गी प्रेमरङ्ग जारों योग सगाई १०६ ॥

राग बिलावल ॥

ऊधोतुम अतिचतुरवृजान । जे पहिले रङ्ग रङ्गी प्रयासरङ्ग
तिन्हें न चहै रङ्ग आन । दुइ लोचनजो बिरदक्रिये श्रुति गावत सक
समान । भेद चकोर कियो ताहमें बिधु प्रीतन रिपु भान । बिरहिनि
बिरह भजे पालागों तुमहों पूरणा ज्ञान । दादुर जलबिन जियें पवन
भयिमीन तजो हठि प्रान । वारिज बदननयन मेरे यटपद कब करिहें
सधुपान । सूरदास गोपीन प्रतिजा छुवत न योग बिरान ११० ऊधो
कोकिल कजत कानन । तुम हमको उपदेश करतहौ भस्म लगावन
आनन । औरोंसखीसखासङ्ग लैलै टेरतचढ़ति पग्रानन । बहुरोंआनि
पपीहाके मिस सदन इनत जिनुवानन । हमतो निपट अहीर बावरी
योगदीजिये ज्ञानन । कहाकथत मामीके आगे जानतनाती नानन ।
सुन्दरप्रयास सनोहरसूरति भावतनीकेगानन । सूरमुकति कैसे प्रजति
है वा मुरली की ताजन १११ ॥ रागसारंग ॥ ऊधो हमअज्ञानमतिभोरी ।
जानतिहैतेयोग की बातें नागर नबल क्रिशोरी । कंचनके मृगकौने
देख्योधों कौनैबांध्योडोरी । कहुधों मधुपवारि मथिमाखन कौनैभरी
कमोरी । बिनहीं भीतचित्र किनकाछेउ किनतभ बांध्योभोरी । कहा
कौनपै कहत कनूकाजिनहठि भूसिपछोरी । यहव्यवहारतिहारोबलि
जाउँहम अबला मतिथोरी । निरखाहंसूरप्रयास मुखचन्दहि अखियां
लगनिचकोरी ११२ ॥ रागमोरी ॥ ऊधोकमल नयन बिनरहिये । एक
हरि हमें अनाथकरिछाँडी दुजे बिरह किमि सहिये । जैसेऊजर खं-
रेकी सूरतिको पूजेकोमाने । ऐसीहम गोपालबिनुऊधो कठिनब्रिया
को जाने । तनमलीन मन कमलनयन सों तामिलिबे की आस । सूर-
दास स्वामीबिन दीखे लोचन मरत पियास । ११३ ॥ रागसारंग ॥ ऊधो
कौन आहि अधिकारी । लेनजाहु यहयोग आपनो कततुम हात दु-
खारी । यहतोवेद उपनिषद मतहै महापुरुष ब्रतधारी । हम अहीरि
अबला ब्रजवासिनि नाहिन परत सँभारी । कोहैछुनत कहतहैकासों
कौनकथा अनुसारी । सूरप्रयास सङ्गजात भईसनो अहि केँचुलीसी
डारी ११४ ॥ रागजैतथी ॥ ऊधो जो तुम हमहिं सुनायो । सोहम निपट
हटुके यासनको समुझायो । युगति यतन जिति योग अन-

हिगाहि अपथयं लीं लायो । भटकि फिरैउ वोहितके खगज्योंपनि
 फिरि हरिजीपै आयो । हमकोसबैअहित लागति है तुमअतिहितहि
 बतायो । सरसरिता जलहोम कियेते कहाअगिति सचुपायो । अब
 कैसे उपाय उपदेशो जिहिअग्र जातजियायो । सकबार जो मिलहिं
 सूरके प्रभुतब कीजे अपनोभायो ११५ ॥ रागसारंग ॥ ऊधोयेणु बिसरि
 जनि जाहु । बांधहुगांठिकहुं जनिछूटैफिरिपाछे पछिताहु । ऐसीवस्तु
 अतपस मधुकरमरम न जाने और । बसबासिनके नहींकामको तुम्ह-
 रेहीहै ठौर । जोहरि हितकरि हमकोपढयो सोहम तुम्हहीं दीन्हो ।
 मूरदास नारिअरु ज्यों बियकों करहि बंदनाकीन्हो ११६ ऊधोप्रीति
 न मरसाबिचारे । प्रीतिपतंग जरेपावकपरि जरतछंग नहिदारे । प्रीति
 परेवा उड्डतगगन चिह्नगिरतन आप संहारे । प्रीतिमधुप केतकी कुसुम
 बग कराटक आपुप्रहारे । प्रीतिजानि जैसेपथपानी जानिजानिआप-
 नपोजारे । प्रीतिकुरंग नादरसलुब्धक तानितानिरसभारे । प्रीतिजानि
 जननीसुतकारणाकौन अपनपोहारे । सूरश्यामसो प्रीतिगोपिनकी कहूं
 कैसे निसुवारे ११७ ॥ रागमोरी ॥ ऊधोकोयों राखौंयेनैन । सुमिरि सुमिरि
 गुणाअधिक तपतहै सुनत तिहारोबैन । ये जोमनोहरबदनचंदके सादर
 कुसुद चकोर । परम लयारतसजलश्यामघन तिनकेचाहकमोर । मधुप
 मराल चरणापङ्कजकेगतिबिलास जलमीन । चक्रवाक मणिद्युतिदिन
 करके मृगपुरलीआधीन । सकललोक सुनोलागतुहै दिनदेखेवारूप ।
 सूरदास प्रभु नंदनन्दन के नखशिख अङ्ग अनूप ११८ ॥ रागरामकली ॥
 ऊधो जाहु तुम्है हमजाने । श्याम तुम्है ह्यांनाहिं पढाये तुमहौ बीच
 भुलाने । ब्रजबासिन सों येण कहतहो वातन कहतन जाने । बडेलोग
 न बिबेक तुम्हारे ऐसे नये अथाने । हमसों कहीलई सों सहिकै जिय
 गुण लेहु आपने । कहँअबला कहँदिशा दिगम्बर समुखकरो पहिं-
 चाने । साँच कहे तुमको अपनी सों बूझतिवात निदाने । सूरश्याम
 जब तुम्है पढाये तब नेकहु सुसकाने ११९ ॥ रागधनार्थी ॥ ऊधोश्याम
 सखा तुमसाँचे । केकरि लयोस्वांग बीचहि ते वैसेहि लागत काँचे ।
 जैसीकही हमहिं आवतही औरजिकहि पछिताते । अपनी पतितजि
 और बतावत महिसानी कहखाते । तुरत गवन कीजैमधुवनको यहाँ

कहाँ यहलयाये । सूरसुनत गोपिनकीबाणी उडवशीशनवाये १२० ॥
 रागनट ॥ ऊधोबेगि मधुवन जाहु । योगुलेहु संभारि अपने बेंचिये जहँ
 लाहु । हमबिरहिनी नारि हरिविनु कौनकरै निबाहु । तहाँदीजे मूस
 पूजे नफाकछु तुमखाहु । जो नहीं ब्रजमें बिकानो नगरनारि बिसाहु ।
 मुरवेसब सुनतलेहैं जियकहा पछिताहु १२१ ऊधोकछुक समुझिपरी ।
 तुम जो हमको योगुलयाये भली करनि करी । यकबिरह जरिरहीं
 हरिके सुनत अतिहि जरी । जाहुजनि अबलों न लावहु देखि तुमहिं
 डरी । योगपाती दई तुमकर बड़ेजान हरी । आनि आश निराशकी-
 न्ही सूरसुनि हहरी १२२ ॥ रागधनाश्री ॥ ऊधोसुनत तिहारि बोल । लयाये
 हरि कुशलात धन्यतुम घरघर पारोगोल । कहनदेहु कहकरे हमारो
 बरिउडि जैहैभोल । आवतही याकोपहिंचान्यो निपटहि ओछेतो-
 ल । जिनकेशोचु न रहि कहिबेको तेबहु गुगानि अमोल । जानीजाति
 सूरहम इनकी बतचल चञ्चल लोल । १२३ ॥ रागनट ॥ ऊधो जानि
 परेउ सयान । नारि यहको योगुलाये भलेजानु मुजान । निगमहे यह
 पार प्रायो कहतजासों जान । नयनचिकुटी जोरिसङ्गम ज्यहि करत
 अनुमान । पवनधरि रवितन निहारत मतिहिं राख्योमारि । सूरसो
 मनुहाय नाही गयोसङ्ग बिसारि १२४ ॥ रागधनाश्री ॥ ऊधो मननहिं
 हाथहमारि । रथचढाय हरिसङ्ग गयेलै मथुरा जबहिं सिधारे । नातक
 कहा योगुहम छाँडिहि अतिरुचिके तुमलयाये । हमतोभक्तति प्रया-
 सकी करणी मनले योग पढाये । अजहँ मन अपना हम पावें तुमते
 होयतो होय । सूर शपथ हमें कोटितिहारी कहे करेंगी सोय १२५
 ॥ नयो हमदुर्लभ । आपुकहत हमसुनत अर्चभित जानतहो
 जिय दुर्लभ । रेख न रूप बरना जाकेनहिं ताको हमहिं बतावत ।
 अपनीकहो दरश वैसेको तुम कबहुँ होपावत । मुरली अधर धरत हैं
 सोपनि गोधन बन बन चारत । नैनविशाल भौंह बंकटकरि देख्यो
 कबहुँ निहारत । तनविभङ्गकरि नटवर बपुधरि पीतान्बर तोहिं से-
 हत । सूरश्याम ज्योदेत हमहिंसुख त्यों तुमको सोउ मोहत १२६ ॥
 राग रामकली ॥ ऊधोहम लायक शिष्यदीजे । यहउपदेश अगि
 कहे कौनविधि कीजे । तुमहीं कहे यहां इतनिन में

को है । योगीयती रहित मायाते तिनको येमनु सो है । जेकर पर चन्दन
तनलेपनते बिभूति क्यों छाजै । सुर कहो शोभा क्यों पावै आँखि आँधरी
आँजै १२७ ऊँधो कहा कथत बिपरीति । युवतिन योग सिखावन आये
यहतौ उलटी रीति । जोतत धेनु दुहत पथ टूटको करन लगे जो अनी-
ति । चक्रवाक शशिको क्यों जानै रविचकोर कह प्रीति । पाहनतरे
सोलह जो बड़े तो हममाने नीति । सुर प्रयास प्रतिअङ्ग साधुरी रही
गोपिका जीति १२८ ऊँधो युवतिन ओरनिहारी । तब यह योग मोद
हम आगे हिये समुक्ति बिस्तारी । जेकर प्रयास आपने कर करि नितहि
सुगन्ध रचाये । तिनको तुम जो बिभूति घोरिके जटालगावन आये ।
जेहिमुख मृगमदमलयज उवर्तत सगाक्षरा धोवति मांजति । तेहिमुख
कहत खेद लपटावन सो कैसे हम छाजति । लोचन आँजि प्रयास शशि
दरशति तबहीये तृप्ताति । सुरतिन्है तुमर बिदरशावत यह सुनि सुनि
करुआति १२९ ॥ रागधनायो ॥ ऊँधो नयनन यह व्रत लीन्हे । स्वाति
बिनाऊसर सब भरियत ग्रीवरंघ्र तुमकीन्हे । सुरलीगरज तात मुक्ता
तनु मेघध्यान जलु दीन्हे । बसये प्राण जाहिं ऐसेही बचन हाँहिं
क्यों दीन्हे । तुम आये लै योग सिखावन सुनत सदा दुख दीन्हे । कैसे
सुर अगोचर लहिये निगम न पावत चीन्हे १३० ऊँधो इन नयनन
अञ्जन देहु । आनहु क्यों न प्रयासरंग काजरु जामों जुरेउ सनेहु । तप
तरहत निशिवासर मधुकर नहिं सोहात तनगेहु । जैसे मोन मरत जल
बिहुरत कहा कहाँ दुख सहु । सब विधि बानिठानि के राखो खरि
कपूर को रेहु । बारक मिलवहु प्रयास सुर प्रभु क्यों न सुयश जग-
लेहु । १३१ ॥ रागरामकली ॥ ऊँधो भली करी तुम आये । यह बातें कहि
कहि या दुखमें ब्रजके लोग हँसाये । कौन काज रुन्दावनको सुख दही
भातकी छाक । अब वेकान्ह कूबरीराचे बने एकही ताक । मोर मुकुट
सुरली पीताम्बर पहवो सो जहमारी । अपनी जटाजूट अरु मुद्रा लीजै
भस्म अघारी । वे तौ बड़े सखातुम उनके तुमको सुगम अनीति । सुर
सबै सति भली प्रयास की यमुनाजलसें प्रीति १३२ ॥ रागधारंग ॥ ऊँधो
बूझति गुपित तिहारी । सब काहके मनकी जानत बांधे सूरि फिरत दग
वारी । पीतध्वजा उनके पीताम्बर लालध्वजा कुबिजा व्यभिचारी ।

सतकी ध्वजा प्रवेत प्रजकुपर अजस हे ऊधो वो प्यारी । उनके प्रेम
 प्रीति सलरंजन पैता सकल शीलव्रतधारी । सूरवचन सिंध्या लंगराई
 ये दोऊ ऊधो की न्यारी १३३ ॥ रागधनार्थ ॥ ऊधो मनमानेकी बात ।
 जरत पतङ्ग दीपमें जैसे औ फिस्फिरि लपटात । रहतचकोर पुहुमि
 पर मधुकर समिअकाश भरमात । ऐसे ध्यानधरो हरिजी पै सगाइत
 उतनहिं जात । दादुर रहत सदाजलभीतर कमलहिं नहिं नियरात ।
 काठफोरिघरुंकियो मधुपजिमि बंधेअंबुजकेपात । बरयाबयतनिशि
 दिन ऊधो पुहुमीपूरि अघात । स्वातिबूंदके काजपपीहासगाक्षरारत
 रहात । सेहि नखात अमृतफल भोजन तोमरि को ललचात । सूरज
 कृष्ण कूबरीरोभे गोपिन देखि लजात १३४ मधुकररहेउ योगलशि
 नातो । काहे को बेकाजबकतहो हातयहांते नातो । जबहिंलिलिमिलि
 पयपानकरतते तबहूं हुतो कहांतो । अब आये निर्गुण उपदेशन जो
 नहिं हमें सोहातो । काचे गुणाकरि दगाहिं लपेटत करिवारिज के
 तातो । मेरेजान गहेउ चाहतहो बहुरि कि मैं गलभातो । अबतौ सूर
 ताहि लै दीजे जाके पेट समातो । जब चाहेंतवसांगिपठैं जो कोइ
 आवत जातो १३५ ॥ रागभारंग ॥ मधुकरहम न होहिंवेबेली । जिनको
 तुम तजि भजत प्रीति बिनु करत कुसुम रंस केली । बारेते बलवारि
 बाढ़ि अरु पोखी प्यारी पानी । बिनपिय अरु प्रात उदिकूलतहात
 सदा हितहानी । ये बेली बिहरत बुन्दावन अरुभीप्रयाम तमालहि ।
 प्रेम पुष्प रस बासु हमारे बिलसत मधुरगोपालहि । योग समीरधीर
 नहिं डोलत रूपडारदिलालागी । सूरपराग न तजत हियेते कमलनयन
 अमुरागी १३६ मधुकर प्रयाम हमारे ईश । जिनके ध्यानधरे उरअन्तर
 आनहिं नयन बैन बिनशीश । योगिनजाइ योगउपदेशो जिनके मन
 दशबीश । एकैमन एकैवहमूरति नितबितवत दिनतीश । काहेनिर्गुण
 जानआधुनो जिततित डारतखीश । सूरजप्रभू नन्दनन्दन हैं उनते को
 जगदीश १३७ ॥ रागमलार ॥ मधुकर तुमहो प्रयाम सखाई । पालागो
 यहदोष बकसियो सन्मुख करत ढिठाई । कौनेरङ्ग सम्पदा बिलसा
 सोवत सपनेपाई । किनसोनेकी उडत चिरैया डारी बांधि खिललाई ।
 धान धुआंके कहाकौनके बैदो कहाअथाई । किनि अकाश ते तोरि

तरीयां आनि धरी घरमाई । वोरनकी माला गुहि कौने अपने करन बनाई । बिनचल नाउचलत किनहेली उतरि पारकोजाई । कौनेक-मलनयन व्रतुत्रीड्यो जो समाधि दिलगाई । सूरदास तू फिरि फिरि आवत यामें कौनबढ़ाई १३८ ॥ रागधनाथी ॥ मधुकर मनतो सकैआहि । सोतो लैहरिसङ्ग सिधारे योग सिखावत काहि । रेशट कटिल बचन रसलम्पट अवलन तनधौं चाहि । अबकाहेको देतलोनहो बिरहअनल तनदाहि । परमारथ उपचार करतहो बिरह व्यथानहिं जाहि । जाको राजदोष कफुद्व्यापै दहीखवावत ताहि । सुन्दरप्रयाम सलोनीभूरति प्रारिही हियमाहि । सूरताहि तजि निर्गुण सिंधुहि कौनसकै अवगाहि १३९ ॥ रागभारंग ॥ मधुकर छांड अटपटी बाते । फिरिफिरि बार बार सोइ सिखवत हमदुख पावत जाते । अनुदिनदेत अशीष प्रातउठि अब सुख सोबतन्हाते । तुम निशिदिन उरअन्तर शोचत व्रजयुवतिन को घाते । पुनिपुनि तुम्हें कहत क्यों आवैं कछुजाने बहिनते । सरदास जो रंगीश्यामरंग फिरि न चढत अवराते १४० मधुपराबरीपाहिं-चाति । बाधिरसले अनतबैठे पुहुपकी तजिकानि । बाटिकाबहुबिपिन जाके सक वे कृन्दिहलानि । फूलफूलेसघनकानन कौन तिनकेहानि कामपाकक जरतकाती लोनलाये आनि । योगपाती हाथ दीन्हे बिय चढाये सानि । शीशते मशिहरी जिनकेकौन तिनमेंबानि । सूरकोप्रभु निरखि हिरदय व्रजतउयो यहजानि १४१ मधुकर प्रथाम हमारैचोर । मन हरिलियो माधुरी सूरति चितै नयनकी कोर । पकरोते हिरदय उरअन्तर प्रेमप्रेतके जोर । गये छडाय कोरि सबबन्धन देगये हंसनि अकोर । सोवतते हम उचकि परीहैं दूतमित्यो मोहिंभोर । सूरप्रयाम मुसकनि मेरोसबत लैगये नन्दकिशोर १४२ मधुकर समुभिकहौ सुख बांत । परमदुपियो मत्तताहि खचतु काहेको इतरात । बीचजो परे सत्य पै भाये बोले सत्यस्वरूप । मुखदेखतको न्याव न कीजै कहां रह्य कहैं भूप । कछु कहत कछुये मुखनिकसत परनिन्दकव्यभिचारी । ब्रजयुवतिनको योग सिखावत कीरति आनि पसारी । हम जान्यो सो भवर रसभोगी योग युगति कहैं पाई । परम गुरु शिरमूढि बापुरे करमुख कार लगाई । यहै अनीति बिधाता कीन्ही तौज समुभक्त नाहीं । जो

कोइ परहित कूपखनावै परै सो कूपहिमाहीं । सूरसेवे प्रभुअन्तर्यामी
 काओं कहों पुकारी । तब अक्रूर अबैइन ऊधो दुहुँमिलि छातीजारी
 १४३ मधुकर हमसे कहेकरे । पठयेहै गोपाल कृपाके आयतु ते न
 टरे । रसना बारिफेरि नवखण्डके देनिगुणाके साथ । इतना तनकु बि-
 लथु जिन मानहुँ अखियां नाहींहाथ । सेवाकठिन अपूरव दरशन क-
 हत अबहुँ मैं फेरि । कहियोजाय सूरकेप्रभुओं केरापास उद्योबेरि १४४
 रागधनाथी ॥ मधुकर तौ औरनि श्रियदेहु । जानौंगे जब लागैगोहे खरो
 कठिनहै नेहु । मन जो तिहारो हरिचरणानतर तनधरि गोकुलआये ।
 कमलमयनके संगते बिकुरे कहुकौने सचुपाये । यहैरहे जाहु जिन
 मथुरा भूतोमायामेहु । गोपी सूरकहत ऊधोसों इनहींसे तुमहोहु १४५
 मधुकर जानत नाहिन बात । फूँकि फूँकि द्वियरा सुलगावत उठि न
 यहांते जात । जो उरबसत यशोदानन्दन निर्गुणा कहाँसमात । कतभट-
 कत डोलत कुसुमनको तुम किन पातनपात । यदपि सकल बलीवन
 बिहरत जायबसत जलजात । सुरदास ब्रज मिलि बन आये दासी की
 कुशलात १४६ ॥ राग सारंग ॥ तिहारी प्रीति किधों तरवारि । दुष्टिधार
 करि मारिसाँवरे घायलसब ब्रजवारि । रहीमुखेत ठौर टुन्दाबन रंगाहु
 न मानतिहारि । बिलपतिरही सम्भारत सखासखा बदन मुवाकरबारि ।
 सुन्दर प्रयासमोहर मुरति रहिहैं कबिहि निहारि । रंचकशेखर रहेउ
 सूरजप्रभु अबजिनडारो मारि १४७ ॥ रागधनाथी ॥ मधुकर कौनसनाये
 माने । अजिनाशी अतिअगम अगोचर कहाँ प्रीतिरसुजाने । सिखवहु
 जाहि समाधिकिवाते जेहें लोगसयाने । हमअपने ब्रज सेसेहि बसिहैं
 बिरह बायबौराने । सोवत जगत सपने सौंतुक रहीहै सुपतमाने । बाल
 कुमार किशोरकि लीला सिंधु सुतामें माने । परेउ जो पयनिधि बंद
 अलपसों को जो अब पहिंचाने । जाके तन घन प्राण सूर हरिमुख
 मुमुकानि बिकाने १४८ ॥ रागमलार ॥ मधुकर ये मन बिगारिपरै । समु-
 भूत नाहि ज्ञान गीताको हरिमुमुकानिअरे । बालमुकुन्द रूपरसराचे
 ताते बक्रखरे । सूचि न होय आनपूछ उद्यो कोटिक यतन करे । हरि
 पदनलिन बिसारतनाहीं शीतल उरसंचरे । योग गंभीर अन्धकूप कत
 देखतदूरिडरे । हरिअनुराग सहागभाग भरे अमिग्रते गारलगरे । सूर-

दास बस सेसेहि रहिहैं कान्ह बियोगभरे १४६ मधुकर जो तुमहित
हमारे । तौ यह भजन सुधानिधि में जनि डारोयोग जलखारे । सुनु
शठरीति सुरभि पयदायकक्यों न लेत हलफारे । जो भयभीतहोतरजु
देखत क्यों बढवत अहिकारे । निज कत बूझिबिना दशनन हति म-
जत धामनहिंहारे । सो बल अकृत निशापंकजमें दलकपाट नहिंदारो
रे अलि चपल मोदरस लम्पटकतहि बकत बिनकाज । मूरप्रयामकवि
क्यों विसरतहै नखशिखअङ्ग विराज १५०॥ रागधोरठ ॥ मधुकरकौन
गावकीरीति । ब्रजयुवतिन को योगकथा तुम कहत सबै बिपरीति ।
जा शिरफूल फुलेलमेलिकै हरिकर ग्रन्थेमोरी । ताशिर भसमसमान
पै सेवन जटा करत आधोरी । रतन जटित तारंक विराजत अस कम-
लनकी ज्योति । तिन अवगान पहिरावत मुद्रा तोहिं दयानहिंदोति ।
बेसरिनाक कंदमरिगामाला मुखनिसार अस्त्रास । तिन्ह मुख सिंगी
कहाबजावन भोजन आकपलाम । जा तनको मृगमद घसि चन्दन
सक्षम पटपहिराये । ता तनको रचिचीर परातन दै ब्रजनाथ पटाये ।
वै अविनाशी ज्ञानघटैगो यहिविधि योगसिखाये । करोंभोग भरिपूर
मूरप्रभुयोग करोब्रजआये १५१ ॥ रागसारंग ॥ मधुकर राखियोगकीबात ।
कहिकहिकथा प्रयामसुन्दरकी शीतल करु सबगात । जे निर्गुणागुणा
हीनगने सो मुनिसुन्दरि अकुलात । दीरघ नदीनाव कागज की को
देख्यो अदिजात । हमतन हेरि चितै पट अपने देखिपटारहिलात ।
मूरदासप्रभु बनवन बसिकै कैसेकल्प बिहात १५२ ॥ रागनट ॥ मधुकर
ये नयना पै हारे । निरखि निरखि मग कमल नयन को प्रेम मगन
भये भारे । ता बिनते नदी पुनि नाशी चोंकि परत अधिकारे ।
सपन तुरी जागत पुनि ओई जो हृदय हमारे । यह निर्गुना लेताहि
बतावो जो जानैयाकसार । मूरदासगोपालकांडिकै छुसेटोखारे १५३
रागधन्या ॥ मधुकर कह कारेकी जाति । ज्यों जलमीव कमल मधु-
पनके क्षरा नहिं प्रीति घटाति । कोकिल कुटिल कपट बायस कलि
फिरि नहिं वहि वन जाति । तैसेहि राजकेलिरस अंचयो बैठिसकही
पाति । सुतहित योग यज्ञ ब्रह्म कीजत बहुविधि नीकी भांति । देखहु
अहि मन मोह मया तजि ज्यों जननी जन खाति । तिनको क्यों मन

विद्यमो कर्जौ औगुण लों मुख सांति । तैसेइ सूर सुनै यदुनन्दन बजी
 एक स्वर तांति १५४ ॥ रागरामकली ॥ मधुकर ल्यायेयोगसँदेशो । भली
 प्रयास कुशलता सुनाई सुनतहि भयो अँदेशो । आश रहीजियकबहुं
 मिलनकी तुम आवतही नाशो । युवतिन कहत जटा शिर बांधततो
 मिलिहैंअबिनाशो । तुमको जिनगोकुलहि पठायो तेबसुदेवकुमार ।
 सूरप्रयास मनमोहन बिहरत ब्रजमें नन्ददुलार १५५ ॥ रागसेरट ॥ प्रयास
 बिनोदी रे मधुबनियां । अब हरि गोकुल काहेको आवहिं चाहत
 नवयौबनियां । वे दिन माधव भुलि बिसरि गये गोद खिलाये क-
 नियां । गुहि गुहि देते नन्द यशोदा तनक कांचके मनियां । दिना-
 चारिते पहरनसीखे पढीताम्बरतनियां । सूरदास प्रभु तजीकासरी
 अब हरिभये चिकनियां १५६ ॥ रागधनाषी ॥ ऊधो हम अति बौरी ।
 हरिहि दोयतहिं बातें रोरी । सुभग कलेवरकुंकुम खोरी । गुंजमाल
 अरु पीत पिछोरी । रूप निरखि दृग लागे डोरी । चित चुरायलयो
 सरति सेरी । गहियत सो जो समय अँकोरी । याही ते बुधिकहियत
 बौरी । सूरप्रयास लों कहिये कठोरी । ग्रहउपदेश सुनेते बौरी १५७
 कहांलगा सातिये अपनी चूक । बिनगोपाल ऊधो मेरी छाती ह्वै न
 गई द्वै हूक । तन मन यौवन वृथा जातहै ज्यों भुवङ्गकी फूंक । हृदय
 अरितको दवा बरतहै कदिन बिरहकी हूक । जिनकीसाहि हरिलई
 शीश ते कहा करै अहिमूक । सूरदास ब्रजनाम बलीं हममनहुंदाहिने
 शूक १५८ ॥ रागकल्याण ॥ कहैकोइ परदेशीकी बात । मन्दिरभागअर-
 धकर दै गयेहरि भयु देखी जात । अजयाभयुअनुसारत नाहीं कैसेके
 हिवस सिरात । शशि रिपु बरय सूर रिपु युग भर हररिपु की अव-
 घात । नक्षत्र योग पुनि अर्द्ध जोरिकरि साईं बन्त अब खात । मघ
 पंचक लोगप्रयासघन तातेमन अकुलात । मनमोहनबिनरहि न परत
 है बार बार बिलखात । सूरदास बसभई बिरहके कर मीजें पछितात
 १५९ ऊधो योग जानै कौन । हम अन्तरा कह योग जानहीं जियत
 जाके रौन । योग हम पै होय न आवै भरि न आवै सौन । बांधिहैं
 क्यों मन प्रखेह सांधिहैं क्यों पीन । अम्बर प्रहिरि के मृगाकाल
 ओहै कौन । एरु हमारे कुवरीकर मन्त्र मालाजौन । सदनमोहन बिन

हमारे परे बात न कौन । सूरप्रभु कवचाये हैं वे प्रयासदुखके दोन ।
 १६० ॥ रागयन श्री ॥ फूल बिनननाहिं जाउं सखीरीहरिविनकैसे बीनों
 फूल । सुनरी सखि मोहिं रामदोहाई फूल लगत तिरपूल । वे जो दे-
 खियत राते राते फूलन फूली डार । हरिविन फल भारी सीलागत
 भरिभरि परत अंगार । कैसेकै पनघट जाउं सखीरी डोलों सरिता
 तीर । भरि भरि यमुना उमड़ि चलो हैं इन नैनन के नीर । इन नैनन
 के नीरसखीरी सेजभई घरनाउ । चाहतिहैं याहीपर चढ़िकैप्रयास
 मिलनको जाउँ । प्राणा हमारे बिन हरि प्यारेरेहे अवरनपर आय ।
 सूरदासके प्रभुसोंसजनीकौनकहे समुझाय १६१ ॥ रागविहागगे ॥ ऊधो
 जो मैं तिहारे चरणनलागीं बारकया ब्रजकरविभावरी । निशितनींद
 आवै दिन न भोजन भावै मग जोवत भइ दुष्टि भाँवरी । वहै कृन्दा-
 वन प्रयास सघन बन रहै सुभग साँवरी । एक प्रयास बिन प्रयास न
 भावै सुधि न रही जैसे बकत बावरी । लाजकाँड़ि हम उहाँहि आवती
 चलि न सकति आवै बिरह ताँवरी । सूरदास प्रभु बगि दरश दीजै
 होयहै जगमें कीरतिरावरी १६२ ऊधोजी जबहिंजाहु गोकुल मरिगा
 आगे भेंट अँकवारी पैयों लागन कहियो । अब मोहिं विपति परी
 दर्शन बिन सहि न सकत तन दारुणा रहियो । शरद चन्द मोहिंबैरि
 महाभयो अनिल सहि न परे बिधि रहियो । सूरप्रयास बिन गृहवन
 सुनो बिन मोहन काको मुख चाहियो १६३ ॥

श्रीयशोदाजीकेवाक्यउद्धवप्रति ॥

राग सोरठ ॥ सँदेशो देवकीसां कहियो । हसतो धायतिहारे सुतकी
 कृपा करतही रहियो । उवतनतेल और तातोँजल देखेही भजिजाते ।
 जोइजोइ सांगत सोइसोइ देती धर्म कर्मकेनाते । तुमसौ टेव जानतहि
 होइहो तऊ मोहिं कहि आवै । प्रात उठत मेरेलाल लड़ैतेहि साखन
 रोटी भावै । अब यह सूर मोहिं निशिवसर बड़ो रहत जिय शोच ।
 अब मेरे अलक लड़ैते लालन हूँ करत सँकोच १६४ यद्यपि मन
 समुभावत लोग । शूलहोत नवनीत देखिके मोहनके मुखयोग । प्रात
 समय उठिसाखन रोटीको बिनसांगे देहे । कोमेरे बालक कुंवर का-
 न्हिको खगलसा आगो लेहे । कहियो जाग्रपथिक घर आवाँहँ राम

प्रियाम देउमैया । सूरवहां कतहेत दुखारी जिनके मोसीमैया १६५॥
 राग सारंग ॥ जोपै राखतिही पहिंचानि । तीबारेक मेरे मोहनको मोहिं
 देहु दिखाई आनि । तुसरानी ब्रह्मदेव गिरहनी हम अहीर ब्रजबासी ।
 पठेदेहु मेरोलाल लहैतो बारों ऐसी हांसी । भलीकरी कंसादिकमार
 अवसर काजकियो । अब इनगाइन कौनचरावै भरिभरि खेतहियो ।
 खान पान परधान राजमुख जो कोउ लाइ लहावै । तदपि सूर मेरो
 यह बालक साखनही सचुपावै १६६ ॥

उद्धवगोकुलतेमथुराआयेतबगोपिनकेपरस्परवाक्य ॥

रागमलार ॥ मेरे मन इतनी झूलरही । वे बतियाँ छातियाँ लिखि
 राखी जे नंदलाल कही । सकदिवस मेरे गृहआये मेंहीं मयति दही ।
 रति मांगत मैं मान किया सखिसो हरि गुसा गही । शोचति अति
 पछिताति राधिका मुर्छित घरगिा ढही । सूरदास प्रभु के बिछुरे ते
 व्यथा न जाति सही १६७ ॥ रागसारंग ॥ देखी साधव की मिठाई ।
 आई उधरि कनक कलई उगोदे निज गये दगाई । हमजाने हरिहित
 हमारे उनके चित ठगाई । छाँड़ी सुरति सबै ब्रजकुलकी निटुर लोग
 मिलि माई । प्रेम निबाहि कहाँ वे जानै साँचेई अडिराई । सूरदास
 बिरहिनी बिकल मति कर मीजें पछिताई १६८ ॥ राग कोरठ ॥ मैं
 जान्या मोको साधव हितुहै कियो । अति आदर अलि ज्यों मिलि
 कमलहि मुख मकरन्द लियो । बसु वह भली पूतना जाको प्रथ संग
 प्राणा पियो । मन मधु अँचै निकट सुने तन यह दुख अधिक दियो ।
 देखि अचेत अमृत अवलोकन चालजु सींचि हियो । सूरदास प्रभु वा
 अधार ते ताते परत जियो १६९ अब या तनहि राखि का कीजै ।
 सुनरी सखी प्रियामसुन्दर बिन बाँटि बियम बिय पीजै । कै गिरिये
 गिरि चढ़िके सजनी के स्वर शीश शिव दीजै । कै दहिये दारुण
 दावानल के ती जाय यमुन धँसि लीजै । दुसह वियोग बिरह साधव
 के कौन दिनाई दिन छोडै । सूरदास प्रीतम बिन राधे शोचि शोचि
 मन मन खीजै १७० ॥

भगवानप्रतिउद्धववाक्य ॥

रागधनाश्री ॥ साधव सुनो ब्रजको नेम । बूझि इस यत्नास देख्यो

गोपिकनको प्रेम । हृदय ते नहिंरत उनके श्यामराम समेत । अश्रुस-
लिल प्रवाह उरपर अरधनयननदेत । चोरखंचलकलशकुच मनोपाशा
पदुम चढाय । प्रकट लीलादेखि हरिकेकर्म उठतीगाय । देहगेहसमेत
अर्पणा कमललोचन ध्यान । सुर उनके भजनआगे फीको लागै ज्ञान
१७१ कहँ लोकहिंयेब्रजकी बात । सुनोश्याम तुमबिन उनलोगन जैसे
दिवसबिहात । गोपीरवालगाय गोसुतसब मलिनबसन कृशगात । परम
दीनजनु शिशिरहेमहत खंजगगा बिनुपात । जो काहू आवत देखतहैं
मिलिबूभक्त कृशलात । चलन न देत प्रेम अति व्याकुल फिरिचरगात
लपटात । पिक चात्रिक बन बसन न पावत बायस बलिनहिंखात ।
सुरदास संदेशनिके डरपथिक न वा मगजात १७२ ॥ रागकेदारी ॥ उनमें
पांच दिवस जाबसिये । नाथ तिहारी सों जिय उपजत फेरि अपनघी
कसिये । वह लीलाबिनाद गोपिनके देखेहीबनि आवै । मोकोबहुरि
कहां वैसा सुखब्रजभागी सोपावै । मनसिवचन कर्मना कहतहोनाहिन
कहु अवराखी । सुरकाहि डारेउ होब्रजतेदूध माँझकी माखी १७३
चित्त दे सुनो श्यामप्रवीन । हरितिहारे बिरहराधे में जो देखीछीन ।
कहन को संदेश सुंदरि गवन मोतनकीन । छुटी सुद्राबलि चरगा अ-
रुम्हे गिरीबलहीन । बहुरिउठी स्रग्हारि सुभट ज्योपरम साहसकीन ।
हांकतको पढयो वे काजहिंशठ बाबरो अयानो । तुमहं बोझ बहुतवातन
को ब्रहां जाउ तौ जानो । बिन देखे मनमोहन सखिरी सबसुख उनको
दीन । सुरहरिकेचरगा अम्बुज रही आशा लीन १७४ साधववहब्रजको
व्याहार । मेरोकहेउ पत्रलको भुसभयो गावत नन्दकुमार । सखावारि
गोधनले रेंगाति एक लकट कर केति । एकमण्डली करबैठारत छाक
बाँटिकेदेति । एकबारि नदपर बहुकीला सककर्म गुरागावति । कोटि
भांतिके में समुझाई नेक न उरमें लयावति । निशिब्रामर येही ब्रतसब
ब्रज दिनदिन नूतन प्रीति । सुरसकल फीको लागतहै देखत वह रस
रोति १७५ कोहवे में न कहू सकराखी । बुझिबिबेक अनुमान आपने
सुख आईते भाखी । हांप्रांच कहतो पहरसकमें वे क्षणमाहिं अनेक ।
हारिसानि उदितद्यो दीनहुँ छाँडिआपनी टेक । कंदवचन न बोलि
आसो हृदय परिहवसीन । तयनधरि जो रोय दीनहो असत आपदहीन ।

श्रीमुखकी सिखई ग्रन्थोंते कथि सबभई कहानी । एकहोय त्यहिउत्तर दीजैसूर सुती अबुहानी १७६ कहेतो मुख आपनो सुनाऊं । ब्रजयुव-
तिनकी कथा योग की क्यों न यतो दुख पाऊं । हैं यकबात कहत निर्गुणकी ताहीवैं अटकऊं । वेउमड़ी बारिधि तरङ्ग ज्यों तापर थाहन पाऊं । कौनकौनको उत्तरदीजै ताते भज्यों अगाऊं । वे मेरे शिर पाटी पारहिं कन्या काहि उड़ाऊं । एकआंवरी हियेकीफूटी दौरै पहिरि खराऊं । सूरसकल ब्रज घटदरशी हो बारहखड़ी पढाऊं १७७ तवते इन सबहुन सचुपायो । जबते हरिसन्देश तिहारो सुनत तावरो आयो । फूले व्याल दुरते प्रकटै पवनपेटभरि खायो । भूलेमृगा चौंक चरगान ते हुतो जो जिय बिसरायो । ऊंचेवैठि बिहङ्ग सभाविच उठिकोकिल सङ्गत गायो । निकसि कन्दराते केहरिने साथे पूछहिलायो । गृहबनते राजराज निकसिकै अँगअँग गर्भजवायो । सूर बहुरिहो कहै राधा यों बैरिनिहींका भायो १७८ फिरि फिरि मोपर कत दुख पावत । अब की और चतुर कोइपठवो बार न होइहै आवत । मैपरसारथ सबसमुभायो रोय सहित वे कोपी । सुफलकसुतको कहेउ मानिहैं आरति करति हैं गोपी । इतनीसुनत कमलदललोचन खैंचिसुकर करिलीन्हे । सूरश्याम सुसकाय जानि जिय तरक जानि हैंसिदीन्हे १७९ ॥

उद्धवप्रतिभगवद्वाक्य ॥

रागधनारी ॥ ऊधो मो ब्रज बिसरत नाहीं । हंससुता की सुन्दरि कलङ्गी अस कुंजनकी छाहीं । वे सुरभी वे बच्छ दोहनी खरिक दुहावन जाहीं । खाल बाल सबकरत कुलाहल नाचत गहि गहि बाहीं । यह सथुरा कञ्चनकी नगरी मरिगमुक्ताह लजाहीं । जबहिं सुरति आवत वा मुखकी जिय उमगत तनुनाहीं । अनगन भांतिकरी बहु लीला यशुदा नन्दनिबाहीं । सूरदासप्रभु रहेमौनह्वै यहकहिकहि पछिताहीं १८० ॥

गोपिनकेवाक्यउद्धवभगवानप्रतिकहतहैं ॥

रागसारंग ॥ देखुरी हरिजके नयननकी कबि । यह अनुमान मनमान मानिनी अम्बुज सेवत रवि । खंजरीट अतिव्यथा चपल भये बन मृग जल सहँ सीन रहे दबि । इते मान तन कछु कहतहैं ककबि । इन सों नोएइ हरि आवेन कछु फबि । सूरदास उपमा जु गइ सब ज्यों होसत

हवि १८१ ॥ रागकेदारो ॥ फिरि ब्रजबसहु गोकुलनाथ । बहुरि न तुमहिं
जगाय पठवों गोधननके साथ । बरजों न माखन खात कबहूँ देहोदेत
लुटाय । कबहूँ न देहैं उरहनेो यशुमति के आगे जाय । दौरि दामन
देहुं गी लकुटी न यशोमति पानि । चोरी न देहूँ उधारिके औगुना न
कहिहैं आन । करौं न तुमसों मानहट हठिहैं न मांगतदान । कहिहैं
न मृदु मुरली बजावन करन तुमसों गान । कहिहैं न चरगान देन
जावक गुहन बेगी फूल । कहिहैं न करन शिंगार बटतर बसन
यमुना कल । भुज भयगा युत कन्ध धरिके रास नृत्य न कराउं । हैं
संकेत तिकुंज बसिके दूति मुखन बुलाउं । कोटि नारिसों बिलसि
आवहु भृकुटिरिम न चढाउं । दन्तदेउ न पियत मुख मुख अवराधास
बढाउं । घोयनारि अयानवावरि समसरी कृतकाज । तुमसो चतुरस्रजान
सांवरे प्रीतिलागै लाज । चरगा मृदुतर कुच कटिनसों करिहैं नहीं
संयोग । दृढभुजा भरिसमर कटिभरि उलटो न करिहैं भोग । एकबार
जु हरश दिखवहु प्रीतिपन्थ बसाय । चँवरकरौं चढाय आसननयन
आग छाँलाय । देहु दर्शन नन्दनन्दन मिलनहीकी आस । सूरप्रभुकी
कुंवर छवि को सरत लोचन प्यास १८२ ॥

उद्धवप्रतिकुब्जाकेवाक्य ॥

रागभारंग ॥ सुनियो एक सँदेशो ऊधो तुम गोकुल को जात । ता
पाछे तुम कहियो उनसों एक हमारी बात । सात पिताको हेतजानि
के कान्ह मधुपुरी आये । नाहिन प्रयाम तिहारे प्रीतम ना यशुदा
के जाये । समुझो वृक्षो अपने मनमें तुम जो कहाभलो कीन्हे । कह
बालक तुम सत्त ग्यालिनी सबै आप बश कीन्हे । और यशोदा मा-
खन काजे बहुतक प्रास दिखाई । तुमहिं सबैमिलि दांवरि दीन्हीरञ्ज
दयानहिँ आई । अस तुयभानसुता जो कीन्ही सो तुमसब जियजानो ।
याही लाजतजी ब्रजमोहन अब काहे दुखमानो । सूरदास यह सुनि
सुनि बातें प्रयामरहे शिरनाई । इतकुब्जा उत प्रेमग्यालिनी कहत न
कहु बनिआई १ ॥ रागमलार ॥ कोऊ आवत है तन प्रयाम । वैसेइ पटु
वैसेइ रथ बैदनि वैसिय है उरदास । जोजैसे उठि तैसिय दौरौं काँहि
सकल गृहकास । रोसपलक गद्गद भई तिहि क्षरा शोचिअङ्ग अभि-

राम । इतनी कहत आयगये ऊँचो रहोठगी तिहिठाम । सूरदास प्रभु
 ह्याँ क्यों आवैं बँधे कुब्जा रससाम २ ॥ राग सारंग ॥ कबहुँ संधि करत
 गोपाल हमारी । पढ़त नन्द पिता ऊँचो सेाँ अरु यशुमति महतारी ।
 कबहुँ तो चूकपरी अनजानत कह अबके पड़िताने । बासुदेव घर भी-
 तरआये हम अहीर नहिँजाने । पहिले गरग कहेउहो हमसेाँ या देखे
 जिनि भूले । सूरदास स्वामीके बिहुरे राति दिवस उरशूले ३ ॥ रागबिला-
 यल ॥ भलीबात सुनियतहैं आजु । कोऊ कमलनयन पठयोहै तबबनाइ
 अपना सो साजु । ब्रह्मो सखा कहौ कैसेकै अबनाहीं कीवे कहुकाजु ।
 कन्समारि बसुदेव गृह आने उपसेन को दीनो राजु । राजाभये कहाँ
 है यहसुख सुरभि सङ्ग बनरोप समाजु । अब जो सूर करहु कोउ को-
 टिक नाहिन कान्ह रहत ब्रज आजु ४ ॥ रागनट ॥ ऊँचो हम आजुमई
 बड़भागी । जैसे सुमन सुगन्धलै आवतु पवन सधूप अनुरागी । अति
 आनन्द बढ्यो अँगअँग में परे न यहसुख त्यागी । बिसरे सब दुख देखत
 तुमको श्यामसुन्दर हमलागी । ज्यों दर्पणा मधि दृगनिरखत जहँ दृष्टि
 तहाँ नहिँजाई । त्योहींसूर हममिली साँवरे बिरहबिधा बिसराई ५ ॥
 राग सारंग ॥ पाती सखि सधुवनले आई । ऊँचोहाथ श्याम लिखिपठई
 आइ सुनहु मोरि साई । अपने अपने गृहते दोरीलै पाती उरलाई ।
 मथनति नीर निरखि नहिँ खगिहत प्रेम न बिधा बुझाई । कहाकरीं
 हूने यह गोकुल हरि विसु कहु त मुहाई । सूरदास प्रभु कौन चूकते
 श्याम सुरति बिसराई ६ ॥ रागनट ॥ सुनु गोपी हरिको संदेशु । करि
 समाधि अन्तरगति चितबो प्रभुको यह उपदेशु । वे अविगति अवि-
 नाशी पूरगा घट घट रहेसमाइ । तिहि निप्रचयके आबहु सेवे सचित
 कमल मतलाइ । यह उपाइकरि बिरह तजहुगी सिलै ब्रह्म तबआइ ।
 तत्र ज्ञानविन मुक्ति न होई निगम सुनावत गाइ । सुवत संदेश दुसरे
 साधव के गोपी जन बिलखानी । सूर बिरह की कौन चलावै मथत
 छरत अति पानी ७ ॥ रागसारंग ॥ हो तुमपर ब्रजनाथ पढायो । आत्म
 ज्ञान सिखावन आयो । आपुहि मुख आपुही नारी । आपुहि वान-
 प्रस्थ व्रतवारी । आपुहि पिता आपुही माता । आपुहि भगिनी आ-
 पुहि धाता । आपुहि पण्डित आपुहि जानी । आपुहि राजा आपुहि

रानी । आपुहि धरती आपु अकासा । आपुहि स्वामी आपुहि दासा ।
 आपुहि खाल आपुही गाई । आपुहि आपु चराबन जाई । आपुहि
 भेंवर आपुही फूल । आतम ज्ञान बिना जग भूल । रङ्गराज दूजो नहिं
 कोइ । आपुहि आपु निरञ्जन सोइ । यहि प्रकार जाको मन लागे ।
 जरा मरणा जीते भ्रम भागे । मुनि ऊधो यह कौन सयानी । तुम तो
 महापुरुष बड़जानी । योगीहोइसु योगहि जानै । नवधा भक्ति सदासन
 मानै । भावभगति हरिजन चित्तधारे । उद्योतिरूप शिवसनक बिचारे ।
 तुम कह रचि रचि कहत सयानी । अबला हरिके रूप दिवानी ।
 जात पीर बंझा नहिं जानै । बिनु देखे कैसे रुचि मानै । फिरि फिरि
 कहै उहै सुधि आवै । प्रियामरूपबिनु और न भावै । योगमसाधि उद्यो-
 ति चितलावै । परमानन्द परमपद पावै । नवकिशोरको जबाहिं नि-
 हारै । कोटि उद्योति वा छबिपरवारै । सजल मेघ घनप्रियाम शरीर ।
 रूपदगी हलवरके बीर । शिरशिखराड कुण्डलवनमाल । कयोबिसरै
 वे नयन विशाल । मृदुमद तिलक अलक घुंघरारे । उनमोहन मनहरे
 हमारै । भृकुटी विकट नाशिकाराजै । घरुणा अवर मुरली कलबाजै ।
 दाहिम दशन दसक द्युति सोहै । मृदु मुसकानि मदन मनमोहै । चारु
 चिबुकउरपर गजमेती । दूरिकरत उड्डगगाकी उद्योती । कङ्कणाकिङ्किणि
 पद्मिकबिराजै । चलतचरणा कलनूप बाजै । वनकीधातु चित्रतनुकिये ।
 वह छवि चुभिजु रही हमहि दिये । पीतवसन छबिबराणा न जाई । नख
 शिख सुन्दर कुंवर कन्हाई । रूप राशि खालनको सङ्गी । कब देखे
 वह रूप बिभङ्गी । जो तुम हितकी बात सुनावहु । मदनगोपालहि कौं
 न मिलावहु । ताहि भजहु किनि सबै सयानी । खोजत जाहि महामुनि
 जानी । जाके रूपरेख कछु नाही । नयनसुंदि चित्तबहु चित साहीं ।
 हृदय कमलमें उद्योति बिराजै । अनहदाद निरन्तर बाजै । इडापिंगला
 सुख मन नारी । सुन्य सहज में बसै मुरारी । मात पिता नहिं दारा
 भाई । जल थल घट घट रहे समझि । यहि प्रकारभव दुस्तर तरिहो ।
 योग पंथ कज कस अनुसरिहो । ये सब कुरमुख मूढहु जाई । हमरे चित
 बित हरि अहुराई । ब्रजवासिन गोपाल उपासी । ब्रह्मज्ञान सुबिआवै
 हांसी । अबलों योग कबहुं नहिं आयो । मानो छबिजा रूपमें पायो ।

खोलि सुगाहक पाइ दिखायो । माधोमधुकर हाथ पढायो । अबला
ठगी अतप रत हेरी । सोढा ठग्यो कंस की चेरी । रामजनम तपसा
यदुराई । तिहि फल बहु कबरी पाई । सीता बिरहबहुत दुखपायो ।
अब कुबिजा मिलि दियोसिरायो । ज्ञाननिराश कहालैकीजे । योग
मोह दासी शिरदीजे । वह अच्युत अविगत अविनासी । त्रिगुणरहित
बपु धरे न दासी । कहैमधुकर सुनिवातहमारी । यह वह सून्यसुनुहु
ब्रजनारी । नहिं दासी ठकुराइन कोई । जहंदेखहु तहं ब्रह्महिछोई ।
आपुहि औरहिं ब्रह्महिं जानै । ब्रह्म बिना दूसर नहिंमानै । बारबार
ये बचन निवारो । भक्ति विरोधी ज्ञान तुम्हारो । होत कहा उपदेशे
तेरे । नयन सुवश नाहीं अलिमेरे । हरिपथ जोवत निमिष न लागे ।
कृष्ण बियोगिनि निशि दिन जागे । नंदनन्दन को देखे जीवै । रुचि
वह रूप पवन नहिं पीवै । जब हरिआवै तबमुख पावै । मोहनमूरति
निरखि सिरावै । दुसहबचनअलि हमहिं न भावहि । योग कहाछोडै
कि डसावहि । ऊधो कहैधन्य ब्रजवाल । जिनके सर्वसमदनगोपाल ।
वह मत त्याग्यो यह मति आई । तुम्हरे दरशभगति में पाई । तुममस
शुभमें दास तुम्हारो । भगति सुनाय जगत निस्तारो । ध्रुवगीतजेसुनें
सुनावैं । प्रेम भक्ति से प्राणी पावैं । सूरदास गोपी बडभागी । हरि
दर्शन कि ठगोरी लागी ८ मधुकर भली सुमति मति खाई । हांसी
हेनलगी या ब्रजमें योगहि राखहुगोई । आतल रामलखावतडोलत
घटघट व्यापक जोई । चापे कांखफिरत निर्गुणाको ह्यां गांहक नहिं
कोई । प्रेम कथा सोईपै जानैजापै बीतोहोई । तू गीरस एती कहजावै
बुझिदेखिबे छोई । बडो दूत तू बडेठौर को कहिये बुद्धि बडोई । सूर-
दास पूरीयहि यदपद कहत फिरत है सोई ९ सुनियत ज्ञानकथा अ-
लिगात । जिहिमुख सुना बेगारवपरित हरिप्रति सखाहिंसुनात । जहं
लीलारस सखीसमाजहि कहत कहत दितजात । विधवा फेरि कियो
अब देखियत तहंयदपद समुझात । विद्यमान रसरास लईते कत मन
इत असुझात । रूपरहित कहुबकत बदनते सति कोउ दस मुरकात ।
साधुबाद युतिसार जानिको उचित न मनबिसरात । नंदनन्दन
कमलान री कवि मुख डरपर प्रसात । एकसक ते सबै सयानी ब्रज

सुन्दरिन सकात । सूरश्याम रससिंधु गामिनी नहिं वदशा हिरात १०
ऊधो इतनी कहियो जाय । अति कशगात भई हैं तुम बिनु बहुत दुखारी
गाय । जलसमूह बरघाति अंखियनि ते हंकत लैलै नाउँ । जहां जहां
गोदोहन करते डूँहत सोइ सोइ टाहं । पराति पछारि खाइ तेही क्षणा
अति व्याकुल हूँ दीन । मानहुं सूरकाहि डारे हैं वारिमध्य ते मीन ।
११ ऊधो योगसिखावन आये । सिंगीभस्म अवारीमुद्रा लै ब्रजनाथ
पढाये । जोपै योग लिख्यो गोपिनको कसरस राम खिलाये । तबहिं
ज्ञान काहेन उपदेशो अधर सुधारास प्याये । सुरली शब्द सुततवनग-
वनति सुतपतिगृह बिसराये । सूरदास संगकांड़ि श्याम को मनहिंरहे
पछिताये १२ ऊधो लहनों अपनों पैंये । जोकहु विवना रचीसो भैंये
आनदोय न लगैंये । कहिये कहाजु कहत बनाई शोचि हृदय पछितैये ।
कुवजावसुपावै सोहनसों हमहीं योगवतैये । आज्ञा होय सोइ तुम कहिबो
बिनती यहै सुनैये । सूरदास प्रभु कृपा जानि जो दरशन सुधा पियैये १३
ऊधो हमें श्याम सुन्दर बिनु सबकोऊ समुभावै । जिहि बिधिमिलहिं
श्यामघन सुन्दरसो बिधि कोउ न बतावै । यद्यपि यतन किये अने कपरि
तहां न मन बिरमावै । तदपि हठीले हमरे लोचन औरन देख्यो भावै ।
बासर निशा प्राणा बल्लभ बिनु रसना औरन गावै । सूरदास प्रभु प्राणाहिं
लागते कहिये जो कहि आवै १४ ऊधो कह । करै लै तो पा । जो लगि नाहिं
गोपालहि देखति विरह दहति मेरि छाती । निमित्त सकमोहि बिसरत
नाहिन शरद समय कीराती । मन्तौ तबहीते हरिलीन्हो जव भयो मदन
बराती । पीर पराई कहतुम जानो तो तो प्रयास सँहाती । सूरदास खामी
सो तुम पुनिकहियो ठकुर मुहाती । १५ ऊधो बिरहो प्रेमुकरै । ज्यों बिन
पुटपट गहेन रङ्गहि पुटगहे रसहि परै । ज्यों आबों घटदहत अनल तनु
तौ पुनि अमिय भरै । ज्यों धरि बीज देह अंकुर चरि तौ सत फरनि फरै ।
जो शर सहस सुभट सन्मुख रणा तोरबि रथहिरै । सूर गोपाल प्रेम
पथजलते कोउ न दुखहि डरै १६ ऊधो इतनी जाय कहो । सब बलबी
कहति हरिसों ये दिन सब पुरी रहो । आजकाज तुमहुं देखत हीतपत
तरियासम चन्द । सुन्दर श्याम परस को मलतनु क्यों बशहे नंदनन्द ।
ममुर मोरपिकपुस्य प्रवज्यति वन उपवन अहि जो कत । सिंह चक्रस

गायबच्छत्रज बीथिनबीथिनडोलत । आसनअसन बसनबिय अहिसम
 भुयसा भवन भंडार । जितकित फिरत दुसहद्रुम द्रुमप्रति धनुयलयेस-
 तसार । तुमती परमसाधु कोमलमन जानत हो सबरीति । सुरप्रयास
 को क्योंबोले ब्रजबिनटारे यहईति १७ ॥ रागमलार ॥ जोपै ऊधो हृदये
 सांभहरी । तोपैइती अबजा उनपैकैसे सहीपरी । तबहिं दबाद्रुमदहन
 न पाये अबक्योंदेहजरी । सुन्दरप्रयासनि कसि उरतेहम शीतल क्यों न
 करी । इन्द्रिसाय बरयनयननमगाघटत न सकधरी । भीजत शीतनीत
 तनकांपत रहे गिरि क्यों न धरी । करकङ्कणा दर्पणाले दोऊ अबयहि
 अनावभरी । एतेमान सुरसुनि योगज बिरहिनि बिरहभरी १८ ऊधो
 इत हितुकररहियो । याव्रजको द्योहारजितोहै सबहरिसों कहियो ।
 देखि जात अपनी इनआंखिन दावानतदहियो । कहँलों कहँव्यथा
 अति लाजति यहमनको सहियो । कितोप्रहार करत मकरध्वजहृदय
 फारि चहियो । यहतन नहिं जरिजात सुरप्रभुनयननको बाहियो १९
 ऊधो यहि ब्रज बिरह बढ्यो । घरबाहिर सरितावनउपवन बलीद्रुमन
 चढ्यो । बासररैनि सखम भयानक दिशि दिशि तिमिर पढ्यो । हन्व
 करत अति प्रबल हेतपुर पथसों अनल डढ्यो । जरिकिन हेतभस्म
 क्षणामहियां हाहरिमन्त्र पढ्यो । मूरदास प्रभु नंदनन्दन बिनु नाहिन
 जात कह्यो २० बरुयहि कुब्जा भतीकियो । सुनिसुनि समाचारहंसि
 ऊधोअधिकजुडातहियो । जाकोगुणहरिरूप नामुहरिहरेउ सो फिर
 नदियो । तिहि अपने मनहरत न जान्यो हंसिहंसि लोणजियो । सुर
 तनक चन्दन चढाय कै अवरासृत जो पियो । औरसकलनागरनारी
 को दासी दाउ लियो २१ रागधनमयी ॥ ऊधो तुम कहियो ऐसे गोकुल
 आवहिं । दिनदश रहेसुभली कोनी अबजनि राहलु लगावहिं । तुम
 बिनुकहु न मुहाय प्राणपतिकानन भवन न भावहिं । बालबिलखि
 मुखगौ न चरततुल्य बडरनिखीर न रथावहिं । आंखिन
 ऊधो हमकाहकहा अनावहिं । सुरप्रयास बिनुतपतिरैबिबिनु हरि-
 हिमले सचुप्रावहिं २२ ऊधो अबजो कान्हू न रहे ।
 हृदयबिचारो हमनइतेहृदयसँह । बभौजाय कोन के होटा काउरु
 ॥ खायो खेत्योसंग हमारे तहाँको कहा

मथुराके बासीकोतों भूँठ कहिहैं । अब हम लिखि पठवन चाहति
हैं वहाँपाँति नहिंपैहैं । इन गैयनि चरिबो छांड्योहैं जोनहिं लालच-
रहैं । सतेपर नहिंमिलत सुरप्रभुफिरिपीछे पछितैहैं २३ ऊधोहमैंदोउ
कठिन परी । जो जीवहिं तौ मुनिगठ ज्ञानी तनतजि रूपहरी । गुणा
गावहिं तौ शुक्रसनकादिक संगधारे तौ लीलाफरी । आशा अवधि
सँतोय धरहि तौ धर्मन ब्रजसुन्दरी । श्यामाहे सबसखी मुजाती पैसब
विरहभरी । शोकसिंधुतरिवेकीनौका जिहिमुख मुरलिधरी । निशि
दिन फिरत निरंकुश अतिबड़ सातेमदनकरी । ढाहेगो सबधामसूरजो
चितै न बहकेहरी २४ ऊधो बहुतै दिन गये चरणा कमल विमुखही ।
दरश हीनदुखितदीन सारासरा बिपदासही । रजनी अति प्रेमपीरगृह
वन मनधरे न धीर । बासरमग जोवतउर सरिता बहीनयननीर । अब
आवनअवधि आशसोई गनिघटत आस । इतोबिरह बिरहिनि कोंसहि
सकैकहिसूरदास २५ ॥ रागआसावरी ॥ ऊधो कहतन कछूबनै । अधरासृत
आस्वादिनि रसना कैसेयोगा भनै । जेहिलोचन अवलोके नख शिख
सुन्दर नन्दतनै । तेलोचनक्योंजायँ औरपथ लैपटये अपनै । रागिनि
राग तरंग तानघन जेअुति मुरलि सुनै । तेअुतियोग सँदेश कठिन क-
हिकांकर भेलिहमै । सूरदासश्यामा मोहनकेयहगुणा बिबिधिरानै ।
कनकलताते उपजै न मुक्ता यटपद रङ्ग चुनै २६ ॥ रागमाह ॥ ऊधो इन
नयननि नेमुलियो । नंदनन्दन सों पतिव्रत बांध्यो दरशत नाहिंबियो ।
इन्दु चकोर मेघ अरु चाविक सेसेहि बिबिध इयो । तैसे ये लोचन
गोपालै यकटक प्रेमपियो । जानकुसुम लै आयेऊधो चपलन उचित
कियो । हरिमुख कमल अमीरस सुरज चाहत बहैलियो २७ ॥ राग
केदारे ॥ ऊधोहरि के औरैदंग । जहँ न अनंग रसनेह रूपको तहां दई
गतिदई अनङ्ग । जिहि अनङ्गबपु अमुर दासिका ते भइ नीतन अङ्ग ।
अपुबिधता तजिदोऊ समभये धानक लजित बिभङ्ग । कनकबेलि सत
दल शिरसगिडत दूढतर लतालवङ्ग । श्यामासदन विसारि भये जाय
चञ्चलनारि पलङ्ग । तेमुख बहुतबहुतपावहिँगी जेकरिहैंअंगसङ्ग । का
कारगाहै जोनहिं ब्रजके सूरप्रभु औरङ्ग २८ ऊधो ब्रजरिपु बहुरिजिये ।
जे हमरे कारगा नंदनन्दन हतिहति दूरिक्रिये । निशिक बेयबकी है

आवति अतिडर करति सकम्पहिये । तिनपैते तनप्राणहमारे रबिही
छिनक छिनायलिये । बन वृकरूप अघासुर समगृह कितहू तौनबितै
सकिये । कोटिक काली समकालिन्दी दोयत सलिल न जात पिये ।
अरु ऊंचेउस्वास तरावर्त्त तिहि सुखसकल उढायदिये । केशीसकल
कर्मकोसा बिन सूरशरणा काको तकिये २९ ॥ रागभारंग ॥ ऊधो कहिये
काहिसुनाय । हरि बिहुरत जेती सहियतहैं इतो बिरहके धाये । बरु
साधव मधुवनहीं रहते कत यशुदा के आये । कत प्रभु गोप बेध ब्रज
धारेउ कत ये सुख उपजाये । कत गिरिधारि इन्द्रसद मेढ्यो कत बन
रासबनाये । अब कह निरुरभये हम ऊपर लिखिलिखि योगपढाये ।
परम प्रवीणा सबै जानत हौ ताते यह कहि आये । अपनी कौन कहै
सुनि सूरज मात पिता बिसराये ३० हमहूँ तौ ऊधो अपनेसा कठिन
करति मन निशिदिन । मधुपकथा कहिकहि समुभावत तदपि न र-
हत नन्दनन्दन बिन । बरजत अब निशिदिवस नयनजल सुखबचनन
कछु और चलावति । अनेक भाँति चित धरत निरुरता सब मिलि
सुरति यहै जिय आवति । कोटिशक समसुख अनुमानति हरिसमीप
समता नहिँ पावति । थकित सिन्धुनौका के खग ज्यों फिरि फिरि
वोइगुना गावति । जोइ जोइ बचन बिचारति अन्तर तेइ तेइ अनल
अधिक उरदाहति । सूरदास परिहरि न सकतितनु बारक बहुरि मि-
ल्योइ चाहति ३१ ऊधो भलीकरी गोपाल । आपुन तौ आवत नाहीं
यहँ उहाँरहे यहिकाल । चन्दन चन्दहुतो तव शीतल कोकिल शब्द
रसाल । अबसमीर पावक समलागत अबब्रज उलहीचाल । हारचीर
कंचुकि कंठक भये तरुणा तिलक भयेभाल । सेजसिन्धु गृह तिमिर
कन्दरा सर्प सुमगिा मरिगामाल । हम तौ न्यायसहैं एतोदुख बनबासी
जु गुवाल । सूरदास स्वामी सुखसागर भोगी भ्रमर भुवाल ३२ ॥ राग
सेष्ठ ॥ अपने मनसुरति करत रहिबी । ऊधो इतनीबात श्यामसों स-
मयपाय कहिबी । घोष बसतकी चूकहमारी कछु न जिय गहिबी ।
परमदीन यदुनाथ जानिकै गुणाबिचारि सहिबी । सकाहबार दयाल
दरशहैं बिरह राशिदहिबी । सूरदास प्रभु बहुत कहाकहों बचनलाज
बहिबी ३३ ॥ राग केदारो ॥ ऊधो नन्दनन्दन सौ इतनी कहियो । यद्यपि

ब्रज अनाथकरि छांड्यो तदपि बारइक चितुकरि रहियो । तिनुका
 तोरि करहु जिन हमसें एक बासकी लज्जा गहियो । गुणा औ गुणान
 दोषनहिं कीजत दासनिदास कि इतनी सहियो । तुमबिन श्यामकहा
 हम करिहें यह अवलम्ब न सपने लहियो । सूरदास प्रभु यह कहि
 पठई कहां यागकहैं पीवन दहियो ३४ ॥ राग सारंग ॥ ऊधो हरिकर
 पठवत जेती । जो मनहाथ हमारे हेतो तौ कत सहती सती । हृदय
 कठोर कुलिशहू ते अतितामें चेत अचेती । तबकुच बीच अंचलनहिं
 सहती अब यमुनाकी रेती । सूरदास प्रभु तुम्हरे मिलन को शरणादेहु
 अबमेती । बिनदेखे मोहिंकल न परतिहै जाको अति गावतहेनेती ३५
 ऊधो खरीये जरीहरिके मूलनकी । कुञ्जकलोलकरे वनहीवन सुधि
 बिसरी वा भूलनकी । ब्रजहम दौरि आंक भरिलीन्ही देखिछांह नव
 मूलनकी । अब वह प्रीति कहालों बरसों वा यमुना के कूलनकी ।
 वहछविछाकि रहेदोउ लोचन बहियां गहिवल भूलनकी । खरकति
 है वह सूरहिये में मालदई मोहिं फूलनकी ३६ ॥ राग नट नारायण ॥ सेसी
 बात कही जनिऊधो । ज्योविदेय उपजेजकलागत निकसत बचन न
 सूधो । आपनपौ उपचार करौ अति तब औरनि मुखदेहु । मेरे कहें
 बजासत राखो शिरके बारेगेहु । जो तुम पद्मपराग छांडिके करहु
 ग्रामबसि बाम । तौहम सूरयहो करिदेखैं निमिष छांडहींपास ३७ ॥
 राग केदारो ॥ ऊधोजु देखेहोब्रजजात । जायकहियो श्यामसों याबिरह
 को उत्पात । नयनन कहूनिहिं सुभई कहु अवगाधनत न बात । श्याम
 बिन आवर न बूझत दुसह धुनि भइबात । आये वैतौ आइ जो बहुरि
 शरीरसमात । सूरकेप्रभु बहुरि मिलिहो पाछेहुपाछितात ३८ ॥ राग मेरठ ॥
 ऊधो यहहरि कहा करेउ । राजकाब चितदियो सांवरे गोकुल क्यों
 बिसरेउ । जौलों घोयरहेतौलोंहम सन्ततसेवाकीनी । बारक कबहुं उलू-
 खल परसेसाई मानिजिय लीनी । जो तुम कोटिकरौ ब्रजनायक बहुते
 राजकुमारि । तौये नन्दपिताकहैं मिलिहैं असु यशुमति सहतारि । कहैं
 गोधन कहंगोप तुन्दसब कहंगोरसको खेवो । सूरदास अब सोई करो
 जिहि होयकान्हको सेवो ३९ ॥ राग आसावरी ॥ ऊधो सेसाकाम न कीजै ।
 सकरंगकरि तुमदोऊ वोई प्रवत क्योंकीजै । फेरिफेरिके दुखअवगाहहिं

हम सबकरी अचेत । कलपटपर गोता मारतहौं सेनि भूइकेखेत । तरपट
 कोटकीट कुलजतमि सुकहा भलाईजाने । फेरतगांठि बांस दांतनु में
 बारबार ललचाने । छांड़िकमलमें हेतुआपनो तू कत अनतहिजाय ।
 लम्पटहीठ बहुत अपराधी कैसे मनपतिआय । इहेजुबात कहतिहैं तुम
 सों फिरिमति कबहुँ आवहु । एक बार समुझावहु सूरज अपना ज्ञान
 सिखावहु ४० ॥ रागसारंग ॥ ऊधो औरै कथा कहौ । तजियश ज्ञानमुने
 तावततनु बरुगाहि मीनरहौ । रतिद्रुम प्रीतिप्रीति नयननजल सींचध्यान
 धरलागी । ताकेबीच अतिमुख मनपरवत श्यामशूल अनुरागी । शीघ्रम
 अलिआये प्रकटहिं ब्रज कठिनयोग रबिहेरे । बनमुरझात सूरको राखे
 मेहनेह बिनतेरे ४१ ऊधो सांचकहो हमआगे । घरमें कहाबचै कहि
 ताके प्रकटआगिके लागे । जादिनते गोपालसिधारे आसअनिल तन
 जारेउ । ऋषिहिरदय मुखचन्दु मुखभयो काहि बाहिरो डारेउ । सते
 पर तोहिं सुभक्तनादिन योग सिखावनआये । फिरिलैजाहु सूरकेप्रभु
 पै जिहिहैं यहां पठाये ४२ ऊधोसब स्वारथके लोग । आपुन केलि
 करत कुब्जा संग हमहिं सिखावत योग । भ्रमबनजात सांवरी मूरति
 जिनदेखहि बहिरूप । अब रसरासपुलिन यमुनाकेकरतलाज भयेभूप ।
 अनुदिन नयन निमेषन लायत भयोविरह अतिरोग । मिलबहु कान्ह
 कुमार अस्वनी मितैसर सबशोग ४३ ऊधोदीनी प्रीति दिनाई । बातनि
 सुहृद करम कपटीके चलेचोरकी हाई । विरह दीबबध चारुसलिल
 मानो अघर साधुरीष्याई । सोहै जायखगी अन्तरगति औषधबल न
 बसाई । सरलदान दीयो पै नीको या कहैं नहीं उपाय । कैमारै कैकाज
 सरै तिहि दुखदेखयो नहिंजाय । कहिमारै सो शूरकहावै सिवद्रोहन
 भलाई । सूरदास सेसेअलि जगमें तिनको गतिनहिं काई ४४ ऊधोजो
 हरिआवै तो प्राणारहैं । आवतजात उलटाफिर बैठत जीवन अवधिगहैं ।
 जब हेदामऊखलसों बांधे बदनआय रहे । चुभिजु रही नवनीत चोर
 छवि क्यों भूलत नहिं जानगहे । तिनमें सेसी क्यों कहिआवै जे कुल
 पतिकी शसमहे । सूरश्याम गुसारननिधि तजिकै क्यों घटनीरबहे ४५
 ऊधो यह निप्रब्रय हमजानी । खोयोगयो नेहनग उनपै प्रीति कोदरी
 भईपुरानी । पहिले अघर सुधाकरसींची दियोपोखबह लाइलझानी ।

बहुरे खेलुकियो शिशुकेशव गृहरचना ज्यों चलत बुझानी । ऐसेही
 परतीति दिखाई पन्नग कंचुरि ज्यों लपटानी । बहुरो सुरतिलई नहिं
 जैसेभरलता त्यागत कुम्हिलानी । बहुरंगी जहँ जाय तहींमुख सकरंग
 दुखदेह दहानी । सुरदास पशुधनी चोरके खायाचाहत दानापानी ४६
 ऊधो हमहैं तुम्हरी दासी । काहेको कटुवचन बोलतहो करत आपनी
 हांसी । हमरे गुणहिगांठि किनबांधयो हमकह कियो बिचारु । जैसी
 तुम कीनी सो सचह जानतुहै संसार । जो कहुभलीबुरी तुम कहिहो
 सो सबहम सहिलेहैं । आपनकियो आपभुगतहिंगे दोष न काहूदेहैं ।
 तुमतौ बड़े बड़ेकेपठये असुसबकेसरदार । यहदुख भयो मूरकेप्रभुमुनि
 कहत लगावनछार ४७ ऊधोतुम कहत हृदयरहतहै । कैसेहायप्रत ति
 क्रूरसुनिये बातें जुसहतहै । बासरगैनि कठिनविरहानल अन्तर प्राण
 दहतहै । प्रजरिप्रजरिपांच निकसिधूम अवनयनन नीरबहत है । अ-
 धिक अवज्ञाहोत देहमुख मर्यादा न गहतहै । कहि क्यों मनमानैये
 मूरप्रभु इनबातनि जु कहतहै ४८ ऊधो तुमहीं हो सबजान । हमको
 सोई सिखावन दीजे नन्दसुवन की आन । आसिय भोजनहितहै जाके
 सो क्यों साग प्रवान । तामुख सेमिपात क्यों भावत जा मुख खाये
 पान । किंगिरि मूर कैसे सचमानत मुनिमुरली को गान । ता ऊपर
 क्यों निर्गुण आवत जा उर प्रियामसृजान । हमबिन प्रियाम बियोगिनि
 रहि हैं जबलग यह घट प्राण । मुख ता दिनते होय मूरप्रभु ब्रजवा-
 सिन के भान ४९ ऊधो यहै बिचार गहै । कै तनगये भलीमानेकै
 हरि ब्रज आय रहौ । कानन देह विरह दो लांछी इन्द्री जीव जरी ।
 बुझै प्रियाम घन कमल प्रेम मुख मुरली बंद परौ । चरगा सरोवरसीन
 मनु सुहृदरहै सकरसरीति । तुम निर्गुण बाछमहँ डारो मूर कीनयह
 नीति ५० ऊधो कतवे बातें चाली । अति मोटीमधुरी हरिमुखकी हैं
 उरअन्तरशाली । प्रियामसघनतन सींची बेली हस्तकमल धरिपाली ।
 अब वे बेली सुखन लागीं छांड़ि दई हरि माली । तक्ते कृपा करत
 ब्रज ऊपर संसलता ब्रजवाली । मूरप्रियाम बिनमरि न गई क्योंविरह
 व्यथाकी घाली ५१ ॥ रागनट ॥ ऊधोयोगकी गति सुनतमेरे अंगआगि
 बई । सुलसि सुलसि हमरहीतनमें फूँकि आनिदई । योग हमकोभोग

कुब्जहि कौनेशिय सिखई। सिंह तिनुका चरन लागो सुनी बातनई।
 मितै नाहिं न कर्म रेखा जो बिधि टाट ठई। सुर प्रभुकी कृपा जापर
 सकल सिद्धि भई ५२ ॥ रागकेदारो ॥ ऊधो जो हरि हितू तिहारे। तो
 तुम कहियो जाय कृपाकै जेदुख सबै हमारे। उर तरवर ज्यों जरति
 बिरहिनी तुम दौं ज्यों हम जारे। नहिं शिरात नहिं जरतकार ह्वै सु-
 लगिसुलगि भये कारे। यद्यपि उमगि प्रेमजल भिजवत बरषिबरषि
 घन तारे। जो सींचै यहि भांति यतनकरि तो इतने प्रतिपारे। कीर
 कपोत कोकिल रंजनबधिक बियोगबिहारे। इनदुःखन क्योँजियहिं
 सुरप्रभु ब्रजके लोग बिचारे ५३ ॥ रागधनाथी ॥ ऊधो कहत सँदेशो
 आनि। कहाकरौं वा नंदनन्दनसों हेत नहिं चितहानि। योगयुगति
 किहि काज हमारे यदपि महा सुख खानि। सुनी सनेह प्रियामसुन्दर
 सों हिलिमिलिकै मनमानि। सोहत लोह परश पारसके ज्योंसुबराग
 बनिबानि। पुनि वह चारु चुम्बक सेनते लटपटाय लपटानि। पर-
 हित निर्गुण नीरस नितनित निगमहु परत न जानि। सुरदास कौने
 जा कारणा फिरितन सों कीजै पहिचानि ५४ ॥ रागबिलावल ॥ ऊधो
 तुमकहियो हरि सों जाय हमारे जियको दरद। दिन नहिं चैनरेनि
 नहिं सोवत पावक भई जुहैया शरद। जवते अक्रूर लैगये मधुपुरी
 भई बिरहतन बाय छरद। कनेहीप्रबल जंगी अति ऊधो शोचि भई
 जस पीरी हरद। सखा प्रवीण निरन्तर हौ तुमताते कहियतखोति
 परद। काथ रूप दर्शन बिन हरिके सुर मूरि न हियो सुरद ५५ ॥
 रागगौरी ॥ ऊधोक्योँआय ब्रज धावते। सहायक सखाराज पदवीमिलि
 दिन दश कछुक कमावते। कहेउ जु धर्म कृपाकरि कानन सुतो उत
 बसिके गावते। गुरु निर्वर्त्तिदेखि आंखिनजे श्रोता सकल अघावते।
 इत कोउ कछु न जानत हरि बिन तो कत युगति बनावते। जो कछु
 कहत सहो सो तुमपहिं अनभवते सुख पावरते। मनमोहन बिन देखे
 कैसे उरसों औरहि चाहते। सुरदास प्रभु दर्शन बिन यह बार बार
 पछितावते ५६ ॥ रागदेसाब ॥ ऊधो यहैप्रकृति परिग्राई तेरे। जोकोउ
 कोटि करै कैसेहु फिरत नहीं मन फेरे। जा दिनते यशुदा गृह आये
 मोहन आदवराई। ता दिनतेहरि दरशपरशबिन और न कछुसुहाई।

क्रीडत हँसत कृपा अवलोकत युग सगाभरितव जात । परमलज्ज सब-
 हिन तन होती लोचन हृदय अघात । जागत सोवत स्वप्न श्यामघन
 सुन्दरतन अति भावै । सूरदास अब कमल नयन बिन बातनहींबहरा-
 वै ५७ ॥ रागधनाश्री ॥ ऊधो मन नाहीं दशबीश । सकहुतो सुगयोहरिके
 सङ्ग कोअराध तुव ईश । भई अति शिथिल सबै साधव बिन यथा
 देह बिन शीश । आसा अर्दीकरहे आशालगि जीवहु कोटि वरीश ।
 तुमती सखा श्यामसुन्दरके सकल योगकोईश । सूरजदासरसिक की
 बतियां पुरवौ मन जगदीश ५८ ॥ रागकेदारि ॥ ऊधोछां लगहै जग जी-
 जतु । जाते प्रियसों प्रेम पुरातन बहुरि नयोकरि कीजतु । कहँरबि
 राहु राहु रबि मति रुचि विधि संयाग बनायो । उहि उपकारआज
 र्याह औसर हरिदर्शन सच्च पायो । कहँ वे तुम यदुनाथ सिंधु तरहम
 गोकुल ब्रजवासी । वह बियोग वह मिलन कहाँ अब काल चालि
 चौरामी । सूरदास मुनिचरणा चरचि किन गुरु लोगन रुचि मानी ।
 तब असु अब यह परम कठिन अति निमित्यै पीर न जानी ५९ ॥ राग
 मलार ॥ ऊधो तुम सब साथी भोरे । अबके कहे बिलगु मानहुगे कोटि
 कटिअ लै जोरे । वे अकूर कूर कृप तिनके रीते भरे भरे राहि ढोरे ।
 वे घनश्याम श्याम अन्तरघन श्याम कासमहबोरे । ये मधुकरद्युति
 निर्गुणा गुणाके देखेफटाकि पछोरे । सूरदासकारनु संगतिते कह पूजहै
 हिगोरे ६० ॥ रागभारठ ॥ ऊधो समुझावै सो बैरनि । रे मधुकर निशि
 दिन मरियतु है कान्ह कंबर औसेरनि । चितचुभिरही मोहनीमरति
 चपल दुगनकी हेरनि । तन मन लियो चुराय हमारो वा मुरलीकी
 ढेरनि । बिसरत नाहिं सुभगतन शोभा पीताम्बरकी फेरनि । कहत न
 बनैकांध लकरी धरिछबिवन गाइनघेरनि । तुमप्रवीणा हमबिरहबता-
 वत आंखिमूँदि भटभेरनि । जिहिउरवसत श्यामघन सुन्दर मुक्तिपरी
 सोइभेरनि । तुमहमैं कहांलैआयेऊधो योगदुखनकेढेरनि । सूररसिक
 बिन क्यों जीवत हैं निर्गुणा कठिन करेरनि ६१ ॥ रागसारंग ॥ ऊधो
 श्यामहिं तुम लै आवहु । ब्रजजन चाहक श्याम सरत हैं स्वाति बंद
 बरखाबहु । घोष सरोज भयेहैं सम्पुट दिनमगिा हैं बिगसावहु । छाँते
 जाहु बिलम्ब करहु जनि इसरी दशा सुनावहु । जो ऊधो हरि यहां

न आवैं हमको तहां बुलावहु । सूरदास प्रभु बेगि मिलाय सन्तन में
 यश पावहु ६२ ऊधोजू योग तबहिं जान्यो । जादिनते सुफल कसुत
 के संगरथ ब्रजनाथ पलान्यो । तादिनते सब कोह मोह मिटिसुतपति
 हेत भुलान्यो । तजि माया संसार सारकह ब्रजबनितन व्रत ठान्यो ।
 नयन सुंदि सुखरहे मौनधरि तनतपि तेज सुखान्यो । नन्दनंदन मुख
 मुरली धारी यहैरूप उरआन्यो । सोइ संयोग जिहीभूले मोहिं तुमहूं
 योग बखान्यो । ब्रह्मा पांच पचि मुये प्राणा तजि तऊ न तिहिप-
 हिंचान्यो । कहेसुयोग कहालैकीजै निर्गुणापरत न जान्यो । सूरवहे
 निजरूप श्यामको है उरमाहिं समान्यो ६३ ऊधो वे सुखअबै कहां ।
 सखा सखा नयनन निरखत बह मुख फिरि मन जात तहां । मुखमु-
 रली शिर मोर पखौआ उर घुंघुचिन को हारु । आगे धनु रेनु तन
 मगिडत तिरछि चितौनी चारु । रातिद्योस सबसङ्ग आपने खेलतबो-
 लतखात । सूरदास यह प्रभुता चितवत कहि न सकत यह बात ६४
 कहि ऊधो हरि गये तजिमथुरा कौन बडाई पाई । भुवनचतुर्दशको
 यह बैभव नृपकी जूटि पराई । जो यह काज करै सो सेवक तोअति
 पढ़ै बतारै । सेवत सेवत जन्म घटावत दैयस सदनपटारै । तुमतौ परम
 साधु अन्तरहित जनि कछु कहौ बनाई । सूरश्याम मतकहाविचारेड
 कौन दगौरी लाई ६५ ऊधो हरि हम निपट बिसारी । जबहींगमन
 कियो मधुवनको बहुत करी मनुहारी । अबतौवे पतिआति नाहिने
 हरि पठवत सहतारी । उनहूँतौ अलि इत आवन की योग सँदेशनि
 टारी । अबलगि प्राणारहे आशा तकि येजु चले परिचारी । सूरदास
 स्वामी सों कहियो दे तिलअंजलि ठारी ६६ ॥ राग धनाश्री ॥ ऊधोजाय
 बहुरि सुनि आवहु कहा कह्यो है नन्दकुमार । यह न होय उपदेश
 श्यामको कहत लगावन कार । निर्गुणा ज्योति कहा उनपाई सिख-
 वत बारम्बार । कालिहहि करतहुते हमरे अँग अपने हाथ शिंगार ।
 व्याकुल भई गोपालहि बिहुरे गयो गुण ज्ञान मन्दहार । तातेज्यो
 भावैं त्यो बकतसे नाहीदोष तुम्हार । विरह सहन को हम सरजीह
 पाहन हृदय हमार । सूरदास अन्तरगत मोहन जीवन प्राणा आधार ६७
 राग बिजावल ॥ ऊधोकह मतदीन्हे हमहिं गोपाल । आवहुरीसखिसब

मिलिशोचैँ जोपावैँ नंदलाल । घरबाहेर ते बोलिलेहु सबजावणकब्रज
 बाल । कमलासन बैठहुरीसाई मूंदहु नयनविशाल । छटपटकाही सोऊ
 करि देखी हाथकछू नहिंआई । सुन्दरग्यास कमलदल लोचननेकुन
 देत दिखाई । फिरिभइ मगन बिरह सागरमें काहुहि सुधिनरही । प
 ररा प्रेम्हेखि गोपिनके मधुकर मौनगही । कछु धुनिधुनि अबगानि
 चातककी प्राणापलटितबआये । मूरछु अबकेहेरि पपीहै बिरहीमृतकु
 जिवाये ६४ ऊधोते कि चतुरपद पावत । जेनाहिं जानैपीर पराई हैं
 सर्वज्ञ कहावत । जोपैसीन नीरते बिहुरे कौकरि यतन जिवावत ।
 प्यारेप्राणा जातहैं जलबिनु सुधासमुद्र बतावत । हमबिरहिनी श्याम-
 सुन्दरकी तुमनिर्गुराहिं जनावत येइग मधुप सुमनसब परिहरि कमल
 बदन रसभावत । कहिपठवत संदेशनि मधुकर कत बकबाद बढावत ।
 करौ न कुटिल निठुरचित अन्तरसूरदास कविगावत ६६ ॥ रागकल्याण ॥
 ऊधोभली करीअबआये । विधिकुलालकीने काधेघटतेतुमआनिप
 काये । रंगदियो होकान्ह सांवरे अंगअंग चित्रबनाये । गलन न पायेनय
 ननीरतेअबबि अल इवैँ छाये । ब्रजकरि अवांयोग करि ईधनु सुरति
 अगनि सुलगाये । कोकउसास बिरहतन प्रजुलित दरशन आशफि-
 राये । भये संपूर्ण भरेप्रेमजल छुवन न काहुपाये । राज काजते गये
 मूरहनि नंदनदन करलाये ७० ॥ रागमनार ॥ ऊधोकुलिशभई यहछाती
 मेरोसन रसिकलरयो नंदलालहि भरत रहतदिनराती । तजिब्रजलोक
 पिताअरुजननी कंठलाइगयेकाती । ऐसेनिठुर भयेहरिहमको कबहुंन
 पठईपाती । पियपिय कहतरहत जियमेरो होइचातिककी जाती । सूर
 दासप्रभुप्राणाहिं राखहु वैँकरिबुंदसवाती ७१ ॥ रागगुजरी ॥ ऊधो प्रेम
 रहितयोगसरस कवन कवनगायो । निठुर बचन दीननिसों कहैं कहा
 पायो । जिनितयननिशिदिन मनमोहन मुखहेरो । मूंदनते नयनकहत
 कवन ज्ञानतेरो । जिनके तुम सखासाधु बातेकहो तिनकी । जीजै
 सुनि श्याम कथा दासीहम जिनकी । तातेसुनि मधुकर हमकहा लैन
 जाहीं । जामें यों प्राणानाथ नंदनन्दन नाहीं । अविबेकी कुटिल कूर
 कूरआनि भाख्यो । मूरदास जियकोज्यों कान्ह कहांराख्यो ७२ ॥ राग
 कान्हरो ॥ ऊधो शरद समग्रहुँ आयो । बहुते दिवस रत चातक तजि

तेउ स्वातिजल पायो । कबहुं क ध्यान धरत उर अन्तर मुख सुरली लै
 गावत । सोरसरास पुलिन यमुनाकी शशि देखे सुधि आवत । जासों
 लगन प्रीति अन्तरगत औशुभा गुणाकरि भावत । हमसों कपट लोक
 उरताते सूरसनेह जनावत ७३ ॥ रागमारंग ॥ ऊधो कौन कुदिन छांडेउ
 हो गोकुल । बहुरि नआयेफिरिया ब्रजमें बिछुरेउ तबहिं मिल्यो अब
 सेकुल । गरगबचन समुझे अब मधुवन कथा प्रसंग सुन्योहो जोकुल
 सूरभये अब विभुवनके पति नातो जाति लहे अब कोकुल ७४ ऊधो
 राखिये बहवात । कहतहो अनहद सुवाणीधुनत हम चपिजात । योग
 फल कुठमांड ऐसे अजामुख नसमात । बार बार नभायिये कोइ अमृत
 तजि बिय खात । नयन प्यासे रूपके जलदिये नहिन अघात । सूर प्रभु
 मन हरेउ तौलगी जौलगी न तन कुसरात ७५ ऊधो तुम लोगनि सों
 आदेश । इकटक ध्यान धरे निशि जागी यह तुम्हरे उपदेश । उलटि
 चित्तबित फुरे नडोले अंग भस्म रजलेश । सूरदास प्रभुगोरख बिसरी
 में योगिनिके भेष ७६ ऊधोवात तिहारी जानी । आयेहो ब्रजको
 बिनकाजहि दहत हृदय कटुबानी । जोपै श्यामरहत घटोकात बिरह
 बिथा न परानी । झूठीवातनि क्योंमनमानत चलिमत अलप गियानी
 योग युगतकी नीति अगम हम ब्रजवासिनि कहजाने । सिखबहुजाय
 जहां नटनागर रहत प्रेम लपटाने । दासी धेरिरहे हरि तुम छां गति
 गति कहत बनाई । निपट निलडज अजहुं नचलतउठि कहत सूर समु-
 भाई ७७ ऊधो राखतिहों पति तेरी । यहंते जाहु जाहु आगेते देखत
 आंखि बरतहै मेरी । तुमजु कहत गोपाल सत्यहै देखहु जाइ नकुन्जा
 घेरी । ते सब तैसे दोउबनेहैं वे अहीर वह कंसकी चेरी । तुम सारिखे
 बसीठ पढाये कहाकहों उनकी मतिफेरी । सूरदास प्रभु तुम्हरेमिलन
 को खालनि के संग जोवत हेरी ७८ ॥ रागनट ॥ ऊधो वेदबचन पर-
 मान । कमल मुखपर नयन खंजनदेखिहैं क्यों आन । श्रीनिकेत समेत
 सबगुण सकल रूपनिधान । अधरसुधा पिवायबिछुरे पठैदीनोज्ञान ।
 दूरि नहीं दयाल सब घट कहत एक मयात । निकसि क्यों कै गोपाल
 बोधत दुखनिके दुखजान । रूपरेखनि देखिये बिनस्वाद शब्द भुलान ।
 प्रियदाड अडारि हरिगुण गहतपाणि बिद्यान । बिततराग सुजान योगी

सकल सिद्धि निवास । निगम बाणी भेटिकै क्यां कहै सूरजदास ७६
 रागसागर ॥ ऊधो अब चित भये कठोर । पूरव प्रीति बिसारी गिरिधर
 नौतन राचेओर । जादिनते मधुपुरी सिधारे धीरजरहेउ नमोर । जन्म
 जन्मकी दासी तुम्हरी नागर नन्दकिशोर । चितवनि बाग लगाये
 मोहन निकसे उरबहि ओर । सूरदास प्रभु कबहि मिलहुगे कहांरहे
 रणछोर, ८० ऊधो अब नहिं प्रयास हमारे । मधुबन बसत बदलि से
 लीन्हे साधो मधुप तिहारे । इतिनिहिं दूरिभये कछु औरै जोइ जोइ
 मसुहारे । कपटी कुटिल काक कोकिल ज्यों अंतभये उडिन्धारे । रस
 लै भंवरजाय स्वारथहित प्रीतम चित नबिसारे । सूरदास तिनसें कह
 कहिये जे तनहुं मनकारे ८१ ऊधो पालागों भले आये । तुम देखे
 जनु साधव देखे तुम बैताप नशाये । नंद यशोदा नातो दूरो वेद पुरा-
 गाहु गाये । हम अहीरि तुम अहिर नाम तजि निर्गुणा नाम लखाये ।
 तब यहि घोष खेल बहु खेले ऊखल भुजाबंदाये । सूरदास प्रभुयहै
 भाल जिय बहुरि नचरणा दिखाये ८२ ऊधो बलैया लेहैं बहुरि
 सिधारो । हमजारी जगदीश विरहकी जरियनको कतजारो । हमरे
 प्राणाघातहवै निबरे तुमकरि जानोहांसी । यहि जीवनते मरणा भलो
 है करवट लीजै कासी । कैहरि हमको आनिमिलैहो कैलैजैहो साथे ।
 सूरप्रयासविनु प्राणा तजतिहैं बहदुख तुम्हरेसाथे ८३ ऊधो निरश्रया
 कहतहो तुमहां अबधों लेहु । सगुणा मूरति नन्दनन्दन हमहिं आनिहु
 देहु । अगमपंथ परम कठिन गवल तहां नाहिं । मनकादिक भूलिपरे
 अबला कहं जाहिं । पंचतत्त्व परकीरति अपर कैसे जानी । मन बच
 कर्म रहित सुबैरनिकी बानी ८४ ऊधो और कछु कहिबेको । सोऊ
 कहिडारे पालागें हम सब सुनि सहिबेको । यह उपदेश आजलों में
 सखि अवगा सुन्यो नहिं देख्यो । नीरस कटुक तप्त जीवनगत चाहत
 मन उर लेख्यो । बसत प्रयास निकसत न सक पलहिये मनोहर येन ।
 याकहं यहां ठौर नाहीं लैराखो जहां सुचैन । हम सब सखि गोपाल
 उपासिक तिनसें बातेंछाडि । सूर मधुप लैराखि मधुपुरी कुञ्जाके घर
 गाडि ८५ ॥ रागसागर ॥ ऊधो कहियोसबै सोहती । जाहिजान सखि-
 वन तुम आये सो कहौ ब्रजमें कायती । अंतहु सीख सुतहुगे हमरी

कहियत बातविचारि । फुरतन बचन कहू कहिवे को रहै प्रीति
 सों हारि । देखियत हो करुणाकी मूरति सुनियत हो परपीरक ।
 सोई करो ज्यों सिद्धे हृदय को दाहपरै उरसी रक । राजपंथते टारि
 बतावत उरज कुबील कुपेड़ो । सुरज दास समाय कहाँलों अजके
 बसन कुम्हेड़ो ८६ ॥ रागसारंग ॥ ऊँचो तुमलाये किहि काज । हित
 की कहत अहितकी लागत बकतन आवैलाज । आपन कोउपचार
 करौ कहू तबऔरनि शिवदेहु । मेरेकहे जाहु सत्वरही गहौ सीयरो
 गेहु । उहांभेध नानाबिधि के अरु मधुरिहीसे बैदु । हमकालरडरा-
 ति अपनेशिर ई कलंक है कौदु । सांची बात छाँड़ि अब भूठी कहौ
 कौनबिधि सुनिहैं । सूरदास मुक्ताफलभागी हंसबद्धि क्यों चुनिहैं ८७
 ऊधोउलटी रीति तिहारी सुने सुयेसी कोहै । अलप बेधअबलाअहीर
 शठ तिनहिंयोग तौ सोहै । बचीखुखी आंधरी काजर नकटी पहिरे
 वेशरि । मुडली पटियापारिसंवारे कोहलगावैकेशरि । बहिरिपतिसें
 मतो करैतौ ऊतरु जैसेपावै । सोगतिहोय सबैताकोजै ग्वालनि योग
 सिखावै । मिलइ कहत प्रियामजी बतियां तुमको नाहिन दोय । राज
 काज तुमते न सरैगो काया आपनिपोय । जातभूलिसबै मारगमें यहां
 आनि कहकहते । भलीभई सुधिरही मूरतौ मोहधार सहं बहते ८८
 ऊधोतुमहुं सुनौयकबात । जोतन कहत सिखावन सोहमै नाहिन नेक
 सुहात । शशिदरशन बिनमलिन कुमेदिनिज्यों रवि बिनजल जात ।
 स्थोहम कमलनयन बिनदेख तलफि तलफि मुरझात । घसि चन्दन
 घनसार सजेतन ते क्योंभस्मभरात । रहे अवरा मुरलीधर सोरतसिंगी
 सुनतडरात । अबलनि आनियोग उपदेशत नाहिननेक लजात । जिन
 पायो हरिपरश सुधारस ते कैसे कसुखात । अवधि आश गनि गनि
 जीवतिहैं अब नहिंप्राणा खदात । सुरश्याम हमनिपट बिसारी ज्यों
 तरुसीरसापात ८९ ॥ रागमाह ॥ ऊधोकहु मधुबनकी रीति । राजा हवै
 ब्रजनाथ तिहारे कहाचलावतनीति । निशिलो करतदाह दिनकरज्यों
 हुतो सदशशिशीति । पुरवापवन कहेउनहिंमानत गयेसहजबपुजीति
 कंसकाज कुब्जाके मारेउ भई निरंतर प्रीति । सुरबिरह ब्रजभलो न
 लागत जहां ब्याह तहंगीत ९० ऊधो कालचाल औरासी । मन हरि

मदन गोपाल हनारो बोलत बोल उदासी । सतेपर हमयोग करहिं
 क्यों अविगतिहै अविनाशी । गुप्तगोपाल करोबनलीजा हमलटीख
 राशी । लोचन उमगि चलत हरिकेहित बिनदेखे बरिसासी । रसना
 सूरप्रयासके रसबिन चातकहूते प्यासी ६१ ॥ रागबागवत ॥ ऊधोअंखि-
 यां अतिअनुरागी । इकटक मगजोबति अरु रोवति भूलेहु पलक न
 लागी । बिनपावस पावसअतुआइ देखतहो बिदमान । अबधौ कहा
 क्रियो चाहत हो छांडहु नीरसज्ञान । सुनिप्रिय सखा प्रयाससुन्दर के
 जानत सकल सुभाव । जैसे मिलैसुरप्रभु हमको सोकहुकरहुउपाव ६२
 ऊधोतौ यहप्राणारहे । आवत जातउलटि फिरिबैठत जीवति अवधि
 गहे । जादिनदाम उलखल बांधेबदन नवायचहे । चुभिजु रहीनवनीत
 चोरछबिभूलते ज्ञानकहे । तिनसों कोंकहियत येबाँते जिनकुल वास
 सहे । सूरप्रयास सुन्दर रस परिहरि न घुटहि नीरबहे ६३ ऊधोकहत
 कही न जाय । मदनगोपाललालकेबिहुरत प्राणारहे सुरभाय । जब
 स्यन्दन चढिगवन क्रियोइतफिरिचितयो गोपाल । तबहीं परमकृतज्ञ
 सबैउठि संगलगीं ब्रजबाल । अवयह औरै सृष्टिबिरहकी बकतिबाय
 बौरानी । तिनसों कहादेतफिरि उत्तरु तुमहौ पूरगाजानी । अबसो
 मानघटै काकीजै ज्यों उपजै परतीति । सूरदास कहुवरणि न आवै
 कटिन बिरहकी रीति ६४ ॥ रागसारंग ॥ ऊधोराखहु योगकी बात ।
 कहिकहिकथा प्रयाससुन्दर की शितल करहुसवगात । यह निर्गुण
 गुणहीनकर्यैको शठअबला अरसात । दीरघनदीनाव कागदकी देखो
 चह्योकों जात । हमतनहेरिचितै अपनेतन देखि पसारो लात । सूर
 प्रयास बासरवनवसते कैसेकाल बिहात ६५ ॥ रागविहागरोऊधो यहमन
 अधिक कठोर । निकसि नगयोकुम्भकाचेज्यों बिहुरत नन्दकिशोर ।
 हमकहुप्रीति रीतिनहिंजानी तो ब्रजनाथतजी । हमरेप्रेम नयनकी
 ऊधोसब रसरीति लजी । हमतेभली जलचरो बपुरी अपनेनेमनिबा
 है । जलते बिहुरतही तनत्यागै जलहीजल को चाहै । अचरज सक
 भयो सुनोऊधो जलबिन मीन जियो । सूरदास प्रभु आवन कहिगाये
 मन बिश्वास गह्यो ६६ ऊधोहात कहासमुभाये । चित चुभरही सांव-
 ली मुरति योगकहा तुमलाये । पालागों कहियो हरिजूसों दरशदेहु

यकवेर । सूरदास प्रभुसों बिनतीकरि यहैसुनैयो ढेर ६७ ऊधोहमहिं
योगनहिंभावे । चितमैंबसत प्रियामघनसुन्दर सो कैसेबिसरावे । तुमजो
कही सत्यसबबाते हमरेलेखे धूरि । जाघटभीतर सगुणानिरंतर रहेप्रयास
भरिपरि । पालगोंकहियोमोहनसों योगकूबरी दीजै । सूरदासप्रभुरूप
निहारी हमरे सन्मुखकीजै ६८ ऊधोहमन योगपदसाधे । सुन्दरप्रयास
सलोनोगिरिधर नंदनंदन आराधे । जातन रचिरचिभूषणपरिहरेभांति

। भस्मचढ़ावन आवत नाहन लाज । घट

भीतर नितबसत सांवरोभारमुकुट शिरधारे । सूरदासचिततितनसोंलागो
योगहि कौनसम्हारे ६९ ॥ रागसांग ॥ ऊधोकीहयो यहसंदेश । लोग
कहतकूबजारतिमातो तातेतुमसकूचोजिनिलेश । कबहुंक इतपगधारि
सिधारहु बरुहरिखंड सुबेश।हमरे मनरंजन कीन्हैतेहवैहौभुवननरेश ।
तबतुम इत ठहराय रहेगो देखहुगो सबदेश । नहिंबैकुंठ अखिल ब्रह्मां-
डहि ब्रजबिन सब कृतकेश । यह किहि मंत्रदियो नंदननंदनतजि ब्रज
भ्रमनविदेश । यशसतिजननी प्रियाराधिका देखेऔरउ देश।इतनीक-
हत कहत प्रयासापै कछुनरहेउ अवशेष । मोहनलाल प्रबाल मृदुल मन
तत्सगाकरी सुहेश । को ऊधो को दुसह विरहजुरको नृप नगरसुरेश ।
कैसेजान कहैउ किहिकासों किहिपठयो उपदेश । मुखमृदुबिसुरली
रवपरितगोरज कर्बुरकेश । नटनाटकगति विकट लटकतबबनसेकियो
प्रवेश । अतिआतुर अकुलाय धार्यपियपोंछत नैनकुशेष । कुम्हिलानो
मुखपद्म परशकरि देखत छविहि विशेष । सूरसोमसनकादि इन्द्रअज
शारद निगम महेश । नित्यविहार सकलसरभ्रमगति कहगाबहि मुख
शेष १०० ॥ रागभासवती ॥ ऊधोहरिजु हितजनार्याचित चोरायलयो ।
ऊधो चपलनयनचलाय अंगरागदयो । परमसाधु सरासुजन यदुकुल
केसानि । कहेबात प्रातसकसांची जियजानि । शरद बारिजदुगभौंह
काल कमान । क्यों जीवहिं बेधेउर लगे बियसबान । मोहन मथुरा पै
बसें ब्रजपठयो योगसंदेश । क्योंन कांपीमेदिनीकहत युवतिनउपदेश ।
तुमसयाने प्रयासकेदेखहु जियबिचारि।प्रीतमपतिनृपतिभये योगहेधर
नारिकोमलकर मधुरमुरलीअवरधरेतान।पसरिसुधापूरिरहीक
अवकानामृगीमृगजलोचनी भयोउभयसकप्रकार । नादनयनबिय

जान्योसारनहार । शोधनतजि गवनकियोलियोविरदगोपाल । नीकेकै
 कहिबीअह भली निगमचालासुरसुमति सुन्दरी कुम्हिलानेमुखसरोज
 सहिनसके प्रथामज उर चापिलई उरोज १०१ ॥ रागसांग ॥ मधुकर
 योगनि होतसँदेशनि । नाहिन या ब्रजमें कोउहुनिहै कोटियतनउपदे-
 शनि । रविकेउदय मिलनचकईकोसंध्यासमय अँदेशनि । क्योंबनवसै
 बापुरे चातकवधिकन काजबधेसनि । नगरसक नायकबिनसुनोनाहिन
 काजसवेसनि । सूरसुभाय मितक्योंकारे जिहिकुलरीतिडसेसनि १०२
 मधुकर जानतहै सबकोऊ । जैसे तुमअरु सीततुम्हारेगुणनिनिपुणहौ
 दोऊपाकेचौरहृदयकेकपटीतुमकारेअरुदोऊसरबसुहरतकरतअपनो
 मुख कैसेहु किनहोऊ । परम हृपियाथेरेधनजीवन उबरतनाहिनसोऊ
 मरसनेहकरैजो तुमसों हुकरेआपविगोऊ १०३ मधुकर कहाकान्हहि
 देखिये हमजीबतही इन नैन । देखतनहिं कहुकमलबदनकोदेहधरत
 सुनिबैन । अलिकुब्जापतिभयेरमापतिवहांबसैसुखदैन । सिंधुसुधाराधा
 मुखपीवत कहा न पायोचैन । जेहिअंशकोसल करकामिनिकेधरमन
 कहअसहैन । तिहिअंशगजबरदअतिभारीधसेवरगितेलैन । जिहिभुज
 दंडअखण्ड गगनशशि आलिंगितरसरैन । तिहिभुजदण्ड प्रचण्डमहा
 बलमल्ल युद्धदलजैन । ये कहियो संदेश प्रथामकोजे ब्रजमिटिये गैन ।
 सतिन्यारे होखँलोचनतेवे सुरगुणनकोरेन १०४ मधुकरकहियत बहुत
 सयाने । तुम्हरीगति कापै बनिआवै हमरेकाज अयाने । तैसेइतू तैसे
 तेरोठाकर सकहिबरनहिबाने । पहिलेहिप्रीति पिवायसुधारस पाछे
 योग बखाने । सकसमय पंकज रसबासे दिनकर अस्तन माने । सोइ
 सूरगति भई यहांहरिबिनहाथ मीडि पछिताने १०५ मधुकरकहत
 संदेशो मूलहु । हरिपद छाँडिचलो तातेतुम प्रीतिप्रेम भ्रमभूलहु । नहिं
 या उक्ति मृदुल श्रीमुखकी जे तुम उरते भूलहु । बिलज जुबदन होत
 या उचरत जे संधाननि मूलहु । उत बड़ठौर नगर मथुराको इतै तर-
 गितत कूलहु । उत महराज चतुर्भुज सुमिरहु इत किशोर नंददूलहु
 जे तुमकही बडे न की बतियां ब्रजजननहिं समतूलहु । सूरश्यामगोपी
 संग बिलसे कराठधरे भुजमूलहु १०६ ॥ रागसोरठ ॥ मधुकरयहां नहीं
 मनमेरो गयोजो संग नन्दतनन्दनके बहुरिनकीन्होफोरो । लयो नयन

सुसकानिमोकदै कियो परायो घेरो । सोप्योजाहिभयो बस ताके बिसरे
 उबास बसेरो । कोससुभाय कहै सुरजसों रसबसकाहूकेरो । मन्देपरेह
 सिधारि अनतलै यहनिगंगा मनतेरो १०७ मधुकर रेरे मदमतवारे । कहा
 कीजैवा निर्गुगासों चिरजीवहु कान्हहमारै । लोटतपीत परागकीचमें
 नीचन अंगसमारै । बारम्बार सरकमदिराकी अपसरकहत उधारे । त
 जानत टेरीसी बखी जिहिके तुम अलिप्यारे । घरीपहर सबक्यों बिर-
 सावत जेतक आवत कारे । प्र्यामशरीर नीररुह लोचन यशुसति नन्द
 दुलारे । तन मन सुर प्र्यामको अप्ये काके लेहिं उधारे १०८ मधु-
 कर अब हम सुभुभई कमलनयनके अंग अंगप्रति उपसान्यायदई ।
 कुंतल कटिल भंवरभर भावर मालति भुरेलई । तजत नगहरु कियो
 कपटीजन जानी निरसगई । आनन इन्दु बिमुख सबिसंपुट करते नहीं
 नई । निरमोही नवनेह मुकुमुदिनि अन्तहुहेमहई । तन घन सजलसेज
 निशि बासर रति रसना छिजई । सुर बिवेकहीन छातक मुख बूंदौ
 तौ नयई १०९ मधुकर हमहींको समभावत । बारम्बारजानगाथाव्रज
 अबलन आगे गावत । नंदनन्दलबिन कपट कथा कहि कहि कतरुचि
 उपजावत । सकचन्दन मुखआनि तुधारतकहि कैसे सचुपावत । देखि
 बिचारि तुहीं अपने जिय नागर हेजु कहावत । सब सुमनन फिरि
 फिरि नीरस करि काहेको कमल बंधावत । कमलनयन कर कमल
 बदनहे रहे कमल बर भावत । सुरदास प्रभु अलि अनुरागी काहे को
 शेष भुपावत ११० ॥ रागधनाम्नी ॥ मधुकर को गोपाल कहां को बासी
 कासोंहै पहिंचानि । तुमधौ संदेश कौनके पढये कहत कौनसों आनि ।
 अपनी चांड आनि उडिबैठेउ भंवर भलोरस जानि । केबह बैल बढौ
 की सुखौ तिनको कह हित हानि । प्रथम बेरा बन हरत हरिण मन
 राग रागिनी टानि । जैसे बधिक बिसासि बिबश करि बसत बियम
 शरतानि । पयप्यावत पतनाहनी छवि बालि हन्यो बलिदानि । सूर्य-
 नखा ताडका निपाती सुरप्र्याम यह बानि १११ मधुकरके पढयेते
 तुम्हरी व्यापक न्यूनपरी । नगरनारि मुखकबितन निरखत हैबतियां
 बिसरी । ब्रजको नेह अरु आप पर्याता सको ना उवरी । तृतीय पंथ
 प्रगटभयो देखियत जब भेंटी कुबरी । यहतौ परम साधु तुम डहक्यो

इन यह मन नधरी । जोकहु कहेउ छुनिचल्यो शीशधारि योग युगति
उचरी । सुरदास प्रभु ताकहँ कहिये प्रीति भली पसरी । राजमान
सुख रहै कोटिपै धोय न सकधरी ११२ ॥ रागआसावरी ॥ मधुकर बाल
वचन कत बोलत । तनक तोहिं न पत्याऊं कपटी अन्तर कपट नखो-
लत । तू अति चपल अलपको संगी विकल चहुँदिशि डोलत । मा-
गाक कांच कपूर खल कुटिल सक संग क्यों तोलत । सुरदास यह
रसत बियोगिनि दुसह दाह क्यों भोलत । अमृत रूप आनन्द अंगनि-
धि अनमिल अगम अमोलत ११३ ॥ रागकेदारि ॥ मधुकर सीत नहींसं-
सार । जहँ जाको सुख लोस बढ़तहै तहँताको अनुसार । तौलौ लप-
टिरहत अम्बुजपर हिमकर जनित तुषार । नैलुकप्रभा प्रकट दिनक-
रकी तत्सखा तजतव्योहार । मृदुलमलिका सेसी छुनिअलि कुहुमक-
रत जिहि भार । त्यहि सदन करि गन्धलेप पुनि सदनरचत बकसार ।
नाना स्वाद करत नित भोजन सकहि दिवस अवार । तत्सखा हस्त-
धरणा गति शिथिलित पंथ न पेड़ पसार । बिययो भजन त्रिया अंग
जबहीं तबत्यागत उरहार । भोरभये निकसत अन्तरकरि गिरि सरिता
प्राकार । कहिहैंधौ कौनहेतु हरिगोकुल प्रकटकियो अवतार । का-
केहेतु लई कर मुरली अंगरूप शतसार । सुरप्रयास सेसी न बूझिये
जहँ नित अटल विहार । बिरदघटतु किहिको तुमदेखहु यहकहुकरी
विचार ११४ ॥ रागसारंग ॥ मधुकरदेखि प्रयास तनतेरे । हरि मुखकी
छुनि सीटी बातें डरपतहै मनमेरे । कतहोचरणा छुवतरसलम्पट बरज
तहौ बेकाज । परशतगात अवगाहुच कुंकुमइतनीकरि कहुलाज । बुधि
विवेक बलवचन चातुरी ते सब चितैं चुराये । सो उनको कहे कहा
बिसारेउ लाज छाँड़ि ब्रजआये । अबलौ कौनहेतु गावतहैं हमआगे
यहगीत । सुरसुतेसोंधारि कहाहै जोपै त्रिगुण अतीत ११५ मधुकर
काकेसीत भये । दिवस चारि की प्रीति सगाई सो लै अनत गये ।
इहकतफिरत आपनेस्वारथ प्रायंड औरठये । चाँड़ेसरे चिन्हारेमेटी
करत जो प्रीतिनये । शिरहिउचाटिमेलि गयेरावल मनहरिहरिजुलये ।
सुरदास प्रभुदूत धरमठगि त्रियकेबीज बये ११६ मधुकर कहाँपढी
यहनीति । लोकवेद श्रुति ग्रंथ रहित सब कथा कहत विपरीति ।

जन्मभूमि ब्रज जननि यशोदा क्यहि अपराध तजो । अति कुलीन
 गुणरूप अभितसज दासीजाय भजो । योगसमाधिगूढ श्रुति मुनिमग
 क्योंसमुक्तिहै गँवारि । जोपैगुण अतीत व्यापक तौ तोहिं कहा
 वारि । रहुरे मधुप कपट स्वारथ हित तजि बहु बचन विशेषि ।
 मन क्रम बचन बचति यहि नाते सूरश्याम तन देखि ११७ मधुकर
 होहु यहाँते न्यारे । तुम देखत तन अधिक तपतहै असनयननकेतारे ।
 अपना योग सँति धरि राख्यो यहाँ लेत को डारे । तोको जनु अपने
 मुखकरिहैं मीठेतेपुनि कारे । हमरे गिरिवरधरके नाम गुणबसेकान्ह
 उर बारे । सुरदास हम सबै सक मत तुम सबखोटे कारे ११८ ॥ रागनट ॥
 मधुप बिराने लोग बटाऊ । दिन दश रहत काज अपने को तजि गये
 फिरे न काऊ । प्रथम सिद्धि पढै हरि हमको आये ज्ञान आगाऊ ।
 हमको योग भोग कुब्जाको बाको यहै स्वभाऊ । कीजै कड़ा नंद न-
 नदनको जिनको है सतभाऊ । सुरदास प्रभु तन मन अपर्या प्राण रहैं
 की जाऊ ११९ ॥ रागसारंग ॥ मधुकर महाप्रवीण सयाने । जानततीनि
 लोककीबातें अबलन काजअथाने । जेकच कनक कचोरा भरि भरि
 मेलततेल फुलेल । तिनकेशनको भरम बतावत तेसकैसे खेल । जिन
 केशन कुबरो गहिमुन्दर अपनेहाथबनाई । तिनको जटाधरनकोऊधो
 कैसेकै कहिआई । जिन अवगान ताटक खुभी अरु करार्फूल खुदि
 लाऊ । तिनअवगान कशमीरो मुद्रालटकनचीर भलाऊ । भालतिलक
 काजरचयनासा नकवेशरि नथफूली । तेसब तजिहमरे मेलन को
 उज्ज्वल भस्मीखली । कंठसुमाल हारमणि मुक्ता हीरा रत्न अवार ।
 ताहीकंठ बाँधिवे कारणा शृङ्गीयोग शिँगार । जिहिमुख गीतसुभाषत
 गावतकरत परस्पर हास । तामुख सौनगहे क्योंजीवहिंधूँटे ऊरधन्वासा
 कंचुकिछीनि कपटघसि चंदनसारी सारसचन्द । अब कंधासकअति
 गूदर क्यों पहिरे मतिमन्द । ऊधो उठोसबै पालागें देख्योज्ञान तुम्हा-
 रो । सुरदास मुख बहुरिदेखिहैं जीजो कान्ह हमारो १२० मधुकर
 कौनदेखाते आये । जबतेकूर गयोलै मोहन तबते भेदनपाये । जाने
 सखासावहरिजूके अवधबचनको आये । अबयाभाग नंदनंदन के य
 स्त्रामितकोपाये । आसन ध्यानबायुअवरोधन अलितनमन अतिभाये ।

हैविचित्र अतिशयान सुलच्छया गुणीयोगमतगाये । मुद्राशृङ्गी भस्म
त्वच्चासृगव्रजयुवती तनताये । अतसीकुसुम वरसामुखसुरली सुरप्रयाम
किनिलाये १२१ मधुकरकान्ह कहीतेनहोही । कीर्धनई सखीसखई
हैनजअनुरागबिरोही । सचिराखीकूबरी पीठिपरयेवातें चकचोही ।
प्रयामसुगांहक पायसखीरोछारि दिखायोगोही । नागरमणिसों भा
गसंगरजेजगयुवतीहंसिमेही । लियोरूप दैज्ञानठगोरीभलोठरयोठगो
ही । हैनिर्गुणा सरवरि कुबरीअब घरीकरो हमजोही । सूर सुनागरि
तूयोगनहिं जिनिजिनहिं आजसबसेही १२२ ॥ रागसारंग ॥ मधुकरअबधौ
कहाकरेउ चाहत । येसबभई चित्रकी पुतरी शून्यशरीरहि दाहत ।
हमसों तोसों बैरुकाहाअलि प्रयाम अजाभयो राहत । क्षारिभूरि मन
कतहरिलैगये बहुरि पयारहि गाहत । अबतौ तोहिंसकतको गहिबो
कहअमु करितूलैहै । सूरजकोरह मध्यद्वारहै तो अपनेो कियो तूपैहै
१२३ ॥ रागसारंग ॥ मधुकर जायकहेउ सुनिमोरो । पीतबसन तनप्रयाम
साजकरि राखति परदातेरो । रहिब्रजके उपदेशन लायक त बरहेउ
करिदेरो । इत्तमान यहसखीमहाशठ छांडत नाहिंनकेरो । ऐसी बात
कहेत तासोंहेरिजुकहिबेलायक । इहां यशोदाकुंवर विराजेंसगासगा
प्रतिमुख दायक । जोतुम पृथपपराग छांडिकैं करौप्राम बसवास । तौ
हमसूरयही करिदेखें सगायक छांडेपास १२४ मधुकर आवतइहेपरे
खो । ज

। योगयज्ञ तपदान

नेमव्रत करतरहै होजात । क्योंहुं सुत जोबहेउ कुशलसों कठिनमोहकी
बात । करणीप्रकट प्रीतिपिककीरतिअपनेकाजलेंभीर । काजसरेउ
दुखगयो कहोधीकहबायसकीबीर । जहँजहँ रहेराजकरोतहँतहँ तेउ
कोटिशिरभार । यह अशीय हमदेति सूरसुनि न्हातखसो जिनिबा-
र १२५ मधुकरप्रीतिकियेपाछितानी । हमजानीऐसी निबहैगीउनकहु
औरैतानी । कारेतनको कौनपत्यानो बोलतसधुरीबानी । हमकोलिखि
लिखियोग पठावत आपुकरत रजधानी।सुनीसेज प्रयामबिनुमेकोतल
फतरैनि बिहानी । सुरप्रयामप्रभुमिलिकैंबिहुरेतातेमतिजुहिरानी १२६
॥ रागकेदारी ॥ मधुकर अबसेरीको बोलैसाखि । येसब हरिके संगसि-
धारे अबलसि रहत न राखि । रूपरंग रससदै परानो वचन न आवत

भायि । प्राणा उदान बसत तब ब

जीवनसरि महुन्दहि लैआइइहांआँखि । घरीघरी घसिदेतअँजनमसि
प्रौररही । नारिधयोगअ-

विवेक बोहितचह्निअमुकारितौ

शिवचेत परी । जीवन अति सुकुमार अधीरज युगतिन जातितरी ।
आपु निराश कहुचलै नआवै लहरि नउठैसमाय । भासिक भँवरभेद
देखियतहै मनसा तही नजाय । गुण अवलंबु कहै नहिं कोई तुमहुं
निगुण सुनावहु । मनमोहन बिनुकल न परत जिय बेगइ प्रयास को
ल्यावहु । साधन किये लालमरिा मारिाक सुकारतन अमोल । प्रेम
सफलचारि सदाफल निर्भय अमित अडोल । सुमिराया ध्यान आश
छायाकरि मनमोहन प्रभुनागर । दुस्तर सूरतरहिं क्यों अबला चयुज
ल सरिता सागर १२८ ॥ रागमाह ॥ मधुकरको संगतिमें जनियत बंश
सनचितयो । बिनसमझे कह कहति सुन्दरी सोइ मुख कमल गहेउ ।

ल कीनारि । आलापहु गावहु

। नाचहु दाउँपरै लै । जुआकियो ब्रजमंडल यहहरि जीति अव
धि सोखेलि । हाथपरेउ सुगयहु चपलत्रिया कहा सदनमें हेलि । सुनो
कर्मकियो मातुलबधि मदिरा प्रमदु प्रमादु । सूरप्रयास सतेऔगुणमें
निगुणाते अतिस्वादु १२९ ॥ रागसेरठ ॥ मधुकर तुमहौ अतिबड भागी ।
अपरम रहत सनेह तगावै नाहिन तुमअनुरागी । पुरइनिपत्र रहतजल
भीतमरजतनहिं नबनागी । ज्यौंजल सिक्त तेलकी गागारिबंदन ता
कोलागी । प्रीति नदीमें पाउँन बोरेउ दुष्टिनरूप अनुरागी । सूरदास
अबला हमभोरी गुरचींटी ज्यौंपागी १३० मधुकरजो आगेतेदूर । यो
ग सिखावन कोहस आयो बडोनिपट तूकर । जाघट रहत प्रयासघन
सुन्दर सदा निरंतरपूर । ताहि छाहि क्यों शून्य अराधै खोवै अपने
नूर । ब्रजमें सबगोपाल उपासी कोउन लगावे धर । अपने नम सदा
जोनिबाहै सोइ कहावे सर १३१ ॥ रागसारंग ॥ मधुकर योग विरचि
जनिजाहु । बाँधहुगाँठि छुटिकहुं परिहै फिरिपाछे पछिताहु । ऐसी
बात अनूपस ऊधो मर्मन जानै और । ब्रजबानिता के नाहिं प्रेसको तुम
रहिये यकटौर । जोतुमहमें लैआये ऊधो सोहस तुमपै लीन्हे । सूर

दासनारि असुविप्र को करहि बन्दना कीन्हे । १३२ ॥ रागसौरभ ॥ मधु
कर सुनहु लोचन बात । यहतरोके अंगसव पै नयन उडि उडिजात ।
ज्यों कपोत बियोग आतुर भ्रमरतहै तजिधाम । जाल दूत त्यों फिरि
न आवत बिना दरशे प्रियाम । रहे मन्द कपाट पल दोउ भये घुंघुट
ओट । प्रवास सत ज्यों जात कितही निकसि मन्मथ फोट । अथवा
सुनियश रहत हरिको मनरहत धरि ध्यान । रहत रसना नाम रटिपै
इनहिं दर्शन हान । करत देह विभाग भासिनि जो कछु उव लेत । सूर
दरशनहीं बिना यह पलक चैननदेत १३३ ॥ रागगौरी ॥ मधुकर जोह-
रि कहीकरै । राजकाज चितदियो सांवरे गोकुल क्यों बिनरै । ज्यों
ज्यों घोररहे हम तिहिलौ संतत सेवाकीन्ही । बारक कहै उलूखल
बांधे उहैकाँधि जिय लीन्ही । जोहम कोटिकरै ब्रजनाथक बहुतराज
कुमारी । तौण्ड नन्द पिता कहँमिलिहैं असु यशुसति सहतारी । गो-
बर्द्धनकहँ गोप लुन्दसच्च कहँ गोरस सचपैहै । सूरदास अबसोईकरि-
ये बहुरीहुलै सेहै १३४ ॥ रागविलावल ॥ मधुकर भल आये बलबीर ।
दुर्लभ दशन सुलभपाये जाजिहो परपीर । कहत बचन विचारि विन
बहु सोधिहो मनसाहिं । प्राण पतिकी प्रीति ऊधो है कि हमसों ना-
हिं । कौन तुमसों कहँ मधुकर कहन योगी नाहिं । प्रीति की कछु
रीति न्यारी जानिहो मनसाहिं । नयन नौंद न परै निशिदिन बिरह
बाहीदेह । कठिननिर्दय नन्दके सुत जोरि जोरिउ नेह । कहा तुमसों
कहँ घटपद हृदय सुन्न कि बात । सूरके प्रभुको बरैज्यों करहि अब-
लाघात १३५ मधुकर यहकारेकी रीति । मनदै हरत पराये सर्वसु
करै कपटकी प्रीति । ज्यों घटपद अम्बुज के दलमें बसत निशा रति
मानि । दिनकरउये अनतउडि बैठे फिर न करत पहिंचानि । भवन
भुजंग पिठारे पील्यो ज्यों जननी जियतात । कुल करतूति जानि नहिं
कवहुँ सहज सुईसि भजिजात । कोकिल काग कुरंग प्रियामकी कथा
सुना सुनति करावत । सूरदास प्रभुको मुख देख्यो निशि दिनहीं मो
हिंभावत १३६ ॥ रागसौरभ ॥ मधुप तुम कहा इहै श्या गावहु । येप्रिय
कथा नगर नारिनसों कहहु जहाँकछु पावहु । जानत मरम नन्दनन्द
नको और प्रसंग चलावहु । हमनाहीं कमलासी भोरी करि चतुरई

मनावहु । जिन परशे अलि चरगा हमारे बिरह ताप उपजावहु । हमनाहीं कुविजासी भोरी करि चातुरी दिखावहु । अति बिचित्र ल-
रिका की नाईं शुरू दिखाय बौरावहु । मूरदास प्रभु नागारि मनसों
किहिबिधि आनि मिलावहु १३७ ॥ रागकेदारो ॥ मधुकर पीत बदन
किहि हेत । जनि अन्तर मुख पांडुरोग भयो युवतिन योग दुखदेत ।
रसमय तनमन प्रयास धामको जो उचरे संकेत । कमलनयनके बचन
सुधासे करग घंट भरिलेत । कुत्सित कटु बायक सायकसे को बोलत
रसखेत । इन चतुरीते लोग बापुरे कहत धर्मकी सेत । साथेपरो योग
पथ ताके बक्ता छपद समेत । लोचन ललित कटाक्ष भोक्षबिन महिमा
जिये निकेत । मनसावाचा और कर्मणा श्यामसुंदरसों हेत । सूरदास
मनकी सब जानत हमरे मनाहिं जितेत । १३८ मधुकर मधु मदमातो
डोलत । जिय उपजत सोइ कहत नलाजत सुखे बोल नबोलत । बक्त
फिरत मदिराके लीन्हे बारबार तनछूमत । मीठारहित सबन अवलो-
कत लताकली मुख छूमत । अपनेहुं तनकी सुधि नाहीं परेउ आनही
कोही । सावधान करिलेहिं अपनपीतुमहींसों करि गोटी । मुखलागी
पराग पीक की डारत नाहिन धोई । तासों कह कहिये सुनि सूरज
लाजडारि सब खोई १३९ मधुकर ये सुनि तन मन कारे । कहूं न
प्रवेत सिद्धताईं तन परखे अंग तुम्हारे । कीन्हे कपट कुंभबिच पूरण
पयमुख प्रकट उधारे । बाहिर बेय मनोहर दरशात अन्तरगत जुठगारे ।
अब तुम चले जानबिच ब्रजदे हरण जुग्राण हमारे । तेक्यों भलेहोहिं
सूरज प्रभु रूप बचन कृतकारे । १४० ॥ रागसारेठ ॥ छनु मधुप कौनको
कृतकाज कौन पायो । राजरिपु चसू अधसी पैठि जनपद दियो जीति
बिन कपट दुन्दुभि बजायो । सुभटते सुभटगण जीति रबि ब्रज भये
फिरेउ नृप दशहुं दिशि दों लगायो । सेसी करुणा किये लेत बिच
राखिके सप्तमुख सेनसजि सचिव धियो । बशी अजल साजि बाजिब
बहु तूर भुव कहा करै ईश पशुहि ठहरायो । नवल बयबेय सम शील
शराखूप सम गवनको हेतकळु मन सुनायो । इतिहि जे कपटकंपटी सिंती
नाथसों कहौ तुम कहा तिनसे बसायो । सूर संयोग रस धर्मके हेत
जे प्रीतिके हेत तन तन बनायो १४१ ॥ रागसारण ॥ मधुकर तुम रसल-

स्पष्ट लोग । कसल कोशमें रहत निरन्तर हमहिं सिखावत योग ।
 अपनेकाज फिरत ब्रजअन्तर निमित्त नहीं अकुलात । पुहुपगये बहुरी
 बेलनके नेक ननैरे जात । तुम चंचल हम चोरसकल अंग बातन क्यों
 पतियात । सूर बिधाता धन्य रची जो मधुप प्रयास एक गात १४२
 मधुकर कासों कहि समझाऊं । अंग अंग गुदागहे प्रयासके निर्गुण
 काहि गहाऊं । कुटिल कटास बिकट शायक समलागत मर्मनजाने ।
 सरमिगयेउरफोरि पिछाहेपाछेपै अहताने । धूमतरहतसम्हारत नाहि
 यफेरिफेरि समुहाने । टूकटूकह्वै रहे ढोरगहिपाछे पग न पराने । उठत
 कबन्ध युद्ध योधा उद्यो वादर सन्मुख हेत । सूरप्रयास वा अमृत दुष्टि
 करि सींचि प्राण कत देत १४३ मधुप तुम देखियत हो चितकारे ।
 कालिन्दी तटपार बसत हौ सुनियत प्रयास सखारे । मधुकर चिहुर
 भुजंग कोकिला अधधि नहीं दिन टारे । वे अपने मुख ही के राजा
 तजियत यह अनुहारे । कपटी कुटिल नितुर हरि मोही दुख दे दूरि
 सिधारे । बारक बहुरि कबहिं आबहिंगे नयनन साध निवारे । उनकी
 हनै सो आप बिगोवै चित चोरत बटमारे । सुरदास प्रभु क्यों मनमानै
 सेवक करत नन्यारे १४४ मधुकर को मधुबनहिंगयो । काकेकहे संदेश
 लैआये किन लिखि लेखु दयो । को बसुदेव देवकीनन्दन को यदुकु-
 लहि उजागर । तिनसों हम पहिंचानी नाहिंन फिरि लैदीजहु कागर ।
 गोपीनाथ राधिकाबल्लभ यशुमति नंदकन्हाई । दिन प्रति दान लेत
 गोकुलमें दूनीरीति चलाई । तुमतौ परससयाने ऊवो कहत औरकी
 औरै । सुरजदास पंथके बहँकेबोलतही उद्यो बौरै १४५ एकबातह्वै भांति
 अटपटे कहौ अलि कहा बिचारे । हरि मधुपुरी रहे जो थिर ह्वै हम
 दिन क्योंकर टारे । ब्रजवानक गति और भईहै पूरव दिशा निहारे ।
 मुखकर सब प्रतिकूलभयेते क्यों हरि इत पशुवारे । मधुपसकल खग
 कटक बदन अब चन्द अग्नि अनुसारै । समनबाणा सम गुहा कुंजगृह
 धूम सरत तनजारे । पलतभयो व्योहार देखियत को दुख दुखते टारे ।
 समाधान नहिंहेत कौनबिधि करत बहुत उपचारे । हमसी कोटिकहैं
 या ब्रजमें सकौ नन्दकुमारे । सुरजप्रयास तहां रहौ तौलौ जौलौदुरति
 निकारे १४६ ॥ रागसौरव ॥ ये अलि हमें अदेशोआवै । कौन गुनाह योग

लिखि पठयो सेतू कहि समुभावै । जो अंगरचे बसन आभूषण कैसे
भस्म चढावै । कबरी केश सुमन गुहिराखे सो क्यों जहाँ बनावै ।
सब विषरीत कहत तू हमसों सो कैसे चित आवै । सुन्दर प्रयास
कमल दललोचन सूरप्रयास मोहिं भावै १४७ तूअलि कहत कहा समु-
भाय । हमरे चित सकौ नहिं आवै जोइ कहत तू गाय । हमरे हृदय
बसत मनमोहन सुन्दरप्रयास शरीर । तू जो कहतहै शून्य अराधन
जैसे कीलर नीर । जा अंग चन्दन कंकुस चरचे तहाँ चढावनक-
हतहोकार । सो तजि हम कबहुं न लगारै छुनि भट सूरगँवार १४८ ॥

श्रीहरिगोपिनको विरह और भ्रमरगीतको प्रस्ताव ॥

रागसारंग ॥ बारक नयननहीं मिलिजाहु । कमलनयन घनप्रयास
राधिके परशत जो न पत्याहु । जानत हौकर कमल विरोधी बरुता
विरोधी बाहु । मुख शशि शक्र पयोधर गिरि अति तहँ तुम क्योंवश
माहु । गति गज मंद सराल विरोधी रुचि रिपु हेम सुदाहु । कदलि
जंघकटि सिंह विरोधी नाथ निरखि अकुलाहु । चीन्हिरहे चितजोर
सकल अंग सकौ सुपत नसाहु । तदपि सुर इनकी रुचि राखहु तुम
जनि अधिक डराहु १४९ बातें बूझत यों बौरावत । सुनहु प्रयास वे
सखी सयानी पावस राखे चिह्न सुनावति । घन देखत गिरि कहत
कुशल मति गरजत गुहा सिंह समुभावति । नहिं दामिनि द्रुसदवा शै-
लपर रत बयार उलटा भर धावति । कबहुंका दादुर मार बकत बन
गवालमंडली खगल खिभावति । नहिं नभ टुष्टि भरत भरजाजलपरि
परिवृंद उच्चति इत आवति । कबहुंका प्रकटपपीहाबोलत कहिरूपसि
करतनी बजावति । सूरदास प्रभु तुम्हरे मिलनको वह बिरहिनि सते
दुख पावति १५० साधो सते यतन तब तुम काहेको कियो । अपने
जान जानि यदुनन्दन बहुत डरनते राखि लियो । अघ बक टुथम ब्र-
ह्मा बंधन ते दयाल जीति दावानल पिये । इन्द्रमान सेथ्यो गिरिकर
धरि सखा सखा प्रति आनन्द दिये । बिहुरन की हम बात न जानी
बचन मानि तब बादि जिये । सूरदास अजहँ बहलालच रहतहै कठिन
कठोर हिये १५१ देखियत कालिन्दी अति कारी । कहियो पथिक

जाय हरिसों यों भई बिरह जुरजारी । मनो पलिका ते परी धरिया
धसि तरंग तलफ तनुभारी । तट बाखु उपचारि चर मनो स्वेद प्रवाह
पनारी । बिगलित कच कुस कास पुलिन मनो पंकज कडजल सारी ।
भ्रमर मनो मति भ्रमत चहुंदिशि फिरतिहैं अंग दुखारी । निशिदिन
चकई दयाज बकत मुख किनि मानहुं अनुहारी । सूरदास प्रभु जीय-
मुना गति तेगतिभई हमारी १५२ सखीरी श्याम कहाहित जानै । जो
कोउप्रीति करै कैसेहुहटि अपने गुण ठानै । देखो तो जलधरकी बातें
बरयतअपने जानै । चाहक सदा चरणाको सेवक रतबिना जलपानै ।
भ्रमरकुरंग काग कोकिल अहि कबि सब कपटबखानै । सूरदास जो
सर्वसदीजैकारे कृतहि न मानै १५३ अबयह यों लागेदिनजान । सुभिरत
प्रीतिलाज लागतहैं उरभयो कुलिश समान । लोचन रहत बदन बिनु
देखि बचनसुने बिनुकान । हृदय रहत हरिपाणि परशबिनु बधत
न मनसिज बान । मनौसखी मनाहिं हमारे वे पहिले तनप्रान । आजु
समेटि रचिचले नंदसुत बिरहमृष्टि ब्रजआन । बिधिवळु हरेबहुरि इन
कीन्है वैसेइबेगु बियात । सूरदास वैसीकछु मऊसमुभतिहैं अनुमान १५४
हैं मोहनकेबिरह जरीरीत कतजारत । रेपापी पशुपक्षि पपीहा पिय
पियकरि अधरात पुकारत । सबजन सुखी दुखी तूजलबिन तउअन-
तनकीतपति बिचारत । करतनकछु करतूतिन ऊपर गूढमृतक अबल-
निशर सारत । रेसठ संतापत औरनिको यहिआरति अपने जिय आ-
रत । सुरप्रयास बिनु ब्रजपर बोलत काहेको अगिलो जन्म बिगारत
१५५ यहि बिरियां बनते आवते । दूरिहितेबरबेगु अधरधरि बारंबार
बजावते । कबहुंक कैसेभाति चतुरचित अतिऊंचे सुरगावतेकबहुंक
धोरीधेनु मनोहर लैलैनाम बुलावते । यहिमिसि नाउमुनाय श्यामघन
सुरछे मनहिं जगावते । आगम मुख उपचार बिरहजुर बासर अंतन-
शावते । रुचिरुचि प्रेमप्रिया सैनहिदै क्रम क्रम बलाहि बढ़ावते । सुर
सकल रसनिधि निजदरशन पुनिपथ प्रकट करावते १५६ अबकछुऔर
हाचली । मदनगोपाल बिना यात्रजमें सबैबात बदली । गृह कन्दरास-
मान सेज बियु सिंहहु चाहिबली । शीतल चन्दहुतो सखि कहियत
तिनहुते अति अधिक जली । मृगमद मलय उसीर कुसकुमा सींचाधि

आयअली । सको क्रिया विरहजूरतेकहु लागतिनाहिंभली । बहरति
 असुत लता सुभि सूरज अधि बिधि फलनि फली । हरिबिध बिमुख
 कवनहुं नहिं बिकसे मनसा कुमुद कली १५७ विचारतही लागे दिन
 जान । तुमबिन नन्द सुवन यहि गोकुल निशिभइ कलप समान ।
 सुरली शब्द धेनुकीबोलनि सुनियत नाहिन कान । चलत न रथपर
 गहेस्यास यों तब लागी पङ्क्तिान । है कोउ जायकहे साधव सों
 धीरन धरहीं प्रान । सूरदास प्रभु तुम्हरे दरश बिन हूँ है निपट
 बिनान १५८ सुनियत सुरली देखि लजात । दूरिहुते सिंहासन
 बैठे श्रीशानाय सुसकात । सुरभी लिखी चित्र भीतिन पर ताहि
 देखि सकुआत । मोरपंख को बिजन बिलोकत बौरावत कहि बात ।
 हमरी चरचा जो कोउ चालत चालत ही चपिजात । सूरदास ब्रज
 भले बिसारेउ दूध दही क्यों खात १५९ तबते इन सर्वाहिन सचु-
 पायो । जबते हरि संदेश तुम्हारो सुनत तवारो आयो । फले व्याल
 निकसि दरते अब पवन पेटभरि खायो । गह्वरते गजराज निकसिके
 अँगअँग गरब बढ़ायो । सघनगुहाते निकसि केहरी माथे पंखडुलायो॥
 सकल बिहंगम कहौ कौनकी सुकौनराउ कहायो । अब जिनि गहरु
 लगावहु नागर जौं जिय चाहत ज्यायो । सूरदास अब भयो देखियत
 बैरिनका सनुभायो १६० या विनु होब कहा यह सुनो । लै जु प्रकट
 कीन्हे प्राचीदिशि विरहिनको दुख दूनो । सुर आशुर निरदय भये
 सखिरी सायरसर्प समेत । काहु न करी कृपा इतननि में त्रियतन बन
 दव देत । धन्य कुहु बरयातम चुर खग अरु कमलनको हेतु । जीवहु
 जरा बापुरो युगजो जुरेराहु अरु केतु । निरखि चन्दतन सुसुरिप्रयास
 घन बिकलभई ब्रजबाल । सूरदास प्रभु अपने ब्रज पर काहे न होहु
 कृपाल १६१ अब बोहि निशि देखत डरुलागत । बारबार अकुलाय
 देहते निकसि निकसि जिय भागत । प्राची प्रकट देखि पूरणाशशि
 हवै जुगयो तनतातो । मानहु मदन बदन विरहिनसों केतु लियो रिख
 रातो । लांकन छबि अधिकार जनावत अति बलकरि शर साधतु ।
 मानहु किरण पसारे पासनि हठे वियोगनि बांधतु । सुनि शठ सुदै
 प्राण अति मेरो याको सबजग जानतु । सूरसिन्धु बूडैते काह्यो तिन-

हुंके कर्ताहि नमानतु १६२ प्रयासहो नेक दिखाई देहु । या तनते दर-
शनके बदले जो भावे सोलेहु । भूलीरही ठगीसी चितवति तजो आस
गुणगोहु । जबतेवन अबिबेकी बयननि हटकत कियोसनेहु । कहियो
पर्यंकजाय पालागो बिरहकियो तनखेहु । सूरदासप्रभु प्राणपर्यंक
को तुमहिं निहारो लेहु १६३ कहियो मुखसंदेश अरु हाथ दो-
जियो पाती । समयजानि यहवात चलैबी मुखहीमांभ सुहाती । तब
हम प्राण ससर्पाकीन्हे गनेनहीं दिनराती । युगतिबही नंदनन्दनयेहें
लै जुरहे मनधाती । जो कोउ साखी तबहीं करती तो कत हम
पछिताती । सूरदास प्रभु सुकर जाय जब संग लिवायो जाती १६४
लोचन व्याकुलहैं दोउदीन । कैसेरहैं दरश बिनुदेखे बिधु चकोरउयो
लीन । बिबरणा भै खंजन निदाघ ऋतु ज्यों बारिज जलहीन । प्रयास
सिंधुते बिहुरि परेहैं तरफरात सनेमीन । ज्यों ऋतुराज बिमुखअलि
कोकिल धानेदिन दिनखीन । सूरदास प्रभुबिनु गोपाल अब कतबिध-
ना यहकीन १६५ अब ब्रजभयो धरिगते स्वर्ग । तब गिरिपर ये अब
इनपर गिरि प्रीति किधोंथा दुर्ग । सूर अश्रुबिबालि बारिगदअन्न
अवधि सतिखूटी । प्रिय प्रति बिरह मदन चहुंठयोरी सको अलंगन
टूटी । नयन तड़ाग अवसामठ सरति यंत्रसर्कति बरवानी । राखै केलि
पौरिया मानहु देखि परम रजधानी । गोरंभन गोला गर्जनि अतिधम
धोंधिनभ रोकी । कटक रोम कँथुरनि प्रतिसानो अपनी अपनी दो-
की । चहत विभंगी प्रयास साजिदल खसतनहीं पलआंखी । सोइअब
सूरसहाय हमारे गगन सगडली राखी १६६ प्रीतिकरि काहुमुख न
लहेउ । प्रीतिपतंग करी दीपक सेां अपनी प्राणदेतेउ । अलिगणप्री-
तिकरी जलसुत सेां संपुट मुखहि गहेउ । शारंग प्रीति जु करी नौद
सेां निकटहि बान सहेउ । हमहुं प्रीतिकरी साधव सेां चलत न कछ
कहेउ । सूरदास प्रभु बिहुरे राधिका नयनन नीर बहेउ १६७ अबनि-
ज नयन अनाथ भये । मधुवनते साधव सुनि सजनी कहियत दूरिग-
ये । मथुरा बसत हुती उरआशा यहलगाते द्यौहार । अबसन भयेभी-
सके हाथी सपनेहु आस अपार । सिंधुकूल इकदेश कहतहैं ताहिडा
रका नाउ । यहतनुसां पि सूरके प्रभुको आजुबहां उडिजाउ १६८ नेक

हु शोच न काहू कोन्हो। सुनि ब्रजनाथ सबनके औगुण मिलि मिलि
 थह दुख दोन्हो । जतु वसंत अनुसमय अधम मति । पिकसहाय लै
 धावत । प्रीतम संगजानि युवतिन मुख बोलेहूनिहंआवत । सदाशरद
 शशिसकल कलालै मन्मुख रहतजुन्हारै । कोशशिपसकुहू बीतेबिनु
 कबहुंन देत दिखाई । विविध अनिल सौरभ सुमनसयुत मत्तमधुप गुं-
 जार । ज्योंज्यों रच्यो सुकियो बांधिवल तजिमेन सबैविचार । रति
 पतिअति अनीति करिकोप्यो कोटि धमधवज मानु । लैकर धनुष
 चितैतुहरो मुख अबकरलेतुहै जानु । भलीकरी गोकुल फिरि आये
 नीकेकाल अतीति । कहाजानि बेप्रबल मल्लसों समर कौन विधि
 जीति । सपनयहै कै सत्यकै मुखदुख लहत मनके अंसु । सुर स्वामी
 अब तुम ब्रजरहिबो बसुत बसिआ कंसु १६६ ॥ रागसौरभ ॥ अबहुं
 रहत तनहारि जु सिधारे काहेकि प्रीति हमारे । छिदि छिदिजात
 बिरह शरमारे परिपरि आवत अवधि विचारे । फटत न हृदय संदेश
 तुहारे कलिशते कठिन धुकतहै तारे । जीवन सरगा दोउ भय भारे
 कहियेधौं सुरलाज पचिहारे १७० ॥ रागमलार ॥ शिखिन शिखरचढ़ि
 टेरिमुनायो । बिरहिनि सावधान हवै रहियो सजिपावस दलआयो । दा-
 मिनिशैल समान घटायन गरजि निशान बजायो । चातक पिकशुक
 भंग भिलारी सबहिन साख गायो । मदन सुभटलै पञ्चवानकर ब्रजस-
 न्मुखहवै धायो । जानि बिदेश नन्दनन्दनको अबलनवास दिखायो ।
 सुरश्याम पहिले गुण सुमिरत जात प्राण बिरमायो १७१ किधौं घन
 गरजत नहिं उन देशनि । किधौंवह इन्द्र हठिह हरि बरज्यों दादुर
 खाये शेषनि । किधौंवह देश बकनमगु छाडिउ धरवहनि नप्रवेशनि ।
 किधौंवाहदेश मोर चातक पिक बधिकन बधे विशेषनि । किधौंवहि
 देश बालनहिं भूलति गावत गीत सहेसनि । पथिक न चलत सुरके
 प्रभुपै जासों कहीं संदेशनि १७२ सखीरी पावस सैन पलान्यो । पा-
 योबीच इन्द्र अभिमानी हरिबिनु गोकुल जान्यो । दशहूँदिशासमूम
 देखिकै कम्पितहै अतिदेह । मनहुचमू चतुरंग चलत बहुबाढीहैखुर
 खेह । बोलतमोर शैलद्रुम चढ़िबग उडत त्यागि डरिडाके । मनोसेब्र

कहराय किरावत भाजत कहतपुराके । गरजत गगनगयन्द गुंजमनो
 अरु दादुर दलकार । सूरदास प्रभु अपने ब्रजको काहेन लेहु सन्हार
 १७३ कोउसखि नईचाह सुनिआई । यहव्रज भूमिसकल सुर पतिपै
 मदन मिलिक करिपाई । धनधावत बगपाँति परोशिर बैरख तहित
 सुहाई । बोलतपिक चातक ऊंचेसुर मनो मिलिदेतदुहाई । दादुरमोर
 चकोर बदतशुक सुमन समीर सुहाई । चाहत कियोबास वृन्दावन
 बिधिसोंकहा बसाई । सीवनचापि सवयोतब कोऊहुतेबलकुंवरकन्ह-
 ई । अबसुनि सूरप्रियाम के हरिविनु ये करिहैं ठकुराई १७४ देखियत
 चहुंदिशिधे धनधारे । मानहुमत्त मदनके हस्ती बलकरि बंधनतोरे ।
 प्रियामनुभग तनचुवत गल्लमद बरखत थोरेथोरे । धावतपवन महावत-
 हुपैसुरत न अंकुश मेरे । मनहुदन्त बगपाँति निकसिउर अर्वाध सरो-
 वरफोरे । विनुबेलाजल निकसि नयनमग कुच कंचुकिबद्धिबोरे । तब
 उहिसमय आनि सेरावत ब्रजपतिसें करजोरे । अबसुनि सूरप्रियाम के
 हरिविनु गरतगात जैसेओरे १७५ बरयाकृतु आईहरि न मिले माई ।
 गगन गरजि धन दामिनिदीन्ही दिखआई । मोरनिवन कुत्ताई दादुर
 लीन्हे जगाई । पपीहा पुकारसखि सुनतेबिकलभाई । इन्द्रचाप च-
 टाई शायकडारे रिसाई । बियमबूंद सतारी याहीते सहे न जाई ।
 पथिकपाती लिखाई बेगदीजै पहुँचाई । सुरसुमतिजैसे आर्वाहिं यदुरा-
 ई १७६ सखीरी चातकमोहिं जियावै । जैसेहि पिउपिउ रततरैनिदिन
 तैसेवहै पुनिगावै । पहिले बिरह जरी प्रीतम के तोऊ जीभनिरहावै ।
 आपुनबोलि पिवाइ बिरहिनी अमृतरस बोरावै । जोन सुहाइ होययह
 पंखीप्राण बहुत दुखपावै । जीवन सुफल सूरताही को काज पराये
 आवै १७७ बहुरि हरिआर्वाहिंगे किहिकाम । कृतवसन्त अरु सकार
 बितैकै अरु बादर भयेप्रियाम । तारेगनत गगनके सखिरी मोहिं बितै
 सबयाम । घरकोकाजसबै विसरायो सुमिरि सुमिरिपियनाम । सगा-
 भीतर सगाबाहिरठाढी रुचैततन धनधाम । सूरदास प्रभुअर्वाधिबिआ-
 रत रहे अस्थिरअरु चाम १७८ ब्रजपर बहुरीआये गाजन । जो कहां
 पतिजाइ बड़ेकी मुख क्योदिखवत लाजन । बादरदल चहुं दिशिधे
 उमड़े सुनियन लागेबाजन । घोष के लोग कान्हवल विनुअब जित

तित्तिधाये भाजन । आपनजाय द्वारकाछाये लागेप्रयास विराजन ।
 सूरदास गोपी क्यों जीवहिंजिनके बिहुरे साजन १७६ बहुरेवावर
 बरखन आये । अपनी अधि जानि नंदनन्दन गरजि गरजि घनछाये
 सुनियतहैं सुरलोकवसतहैं सेवकसदा पराये । चातक कुलकीपीरजा-
 निकै जहँतहँते उठिधाये । दुर्माकियेहरितहरथि मिलिबली दादुरमृतक
 जिवाये । छायेनिबिड नीर टगाजहँतहँपंछिनहूँ पतिभाये । समुझति
 नहिंसखि चूकआपनी बहुतैं दिनहरिलाये । सूरदासस्वामी करुणा-
 मयसुधवन बेसिविसराये १८० कहाअब पहिले मिलनकोनेह । हमरे
 जियते नंदनन्दनअब कियोअन्त कहुंगेह । सकादिवस गइगायदहावन
 तहँकछु बरठयोमेह । हितकेलिये उढायपीतपटकरनिजसकेदेह । अब
 हमको लिखिलिखि पठवतहैं योगयुगातितुमलेहु । सूरदासविरहिनि
 कोजीवहिंकोन यतनहै येहु १८१ मोको साईयमुनायम ह्वैरही । कैसे
 मिलौं श्यामहुन्दरको बैरिन बीच वही । जबहिं श्याम उठिचले मधु
 पुरीकछु न बात कही । ताहीठगी रही जैसे पुतरी चलत न फेटगही ।
 अब कहकरों कहेमेरी सजनीहों अब बिरह दही । सूरदास प्रभुदरश
 बिमुख भइ नेकु न सुरति लही १८२ परम बियोगिनि गोविन्द बिनु
 कैसेकै बितवै दिन सावन के । हरित भूमि भरे मलिल सरोवर मिटे
 सगमोहन आवनके । पहिरिसुहाई सबकत सुहागिनि भुंडन भूलति
 गावनके । गरजत भुमरि घमंड दामिनि मदन धनुष धरि धावनके ।
 दादुर मोर शोर शारंग पिक सोहे निशा सूर पावनके । सूरदास दिन
 कैसेनिघटत त्रिशुला किये शिर रावनके १८३ मोहिं भरोसो कान्हका
 डरपो जिनि कोई । सुनुरी यशुमति कंस सीत ते न जिनि व्याकुल
 होई । पहिलेही पूतना प्रकटके आई कुच बिय पोई । बासी प्रबल
 हरदिनके बालक मारी देखत तोई । केशि ब्रह्मावर्त अघ अरिष्ट इत
 देख्यो बल टोई । गिरि कर धरि घोष सब राख्यो सूर इन्द्र मधु
 खोई १८४ हमारे साई मोरउ बैरपरे । घन गरजे बरजे नहिं मानत
 त्यों त्यों रत खरे । करि इकठौर बीजि इनमें पंख मोहन शीशधरे ।
 याहीते हमहीं को मारत हरिही दीठकरे । कह जानिये कवन गुण
 सखिबरी हमसों रहत अरे । सूरदास परदेश बसतहरि ये बनते न

दरे १८५ मानो साई सबनिइहै भावत । तब उहिदेश नंदनन्दनघहँ कोउ-
नदशा जनावत । धरत न दुस नव पल्लव फूल फल पिक बसन्त नहिं
गावत । सुदित नसरसरोज नवअलिकुल पवन पराग उड़ावत । पावस
बिबिध बरसा बादरघन उभडि नअम्बर धावत । दादुर भोर चकोर
नबोलत दासिनि रूप दुरावत । यह अब प्रकट निरन्तर निशिदिन
बलकरि बिरह बढ़ावत । सुर बैर ब्रजनाथ नजानत क्यों सर्वज्ञ कहा
वत १८६ श्यामघन देखि गगनघन डरते । औसरपाय उद्यान गहन
वन अपनी सेवा करते । अंग छटा नव घटा निरखिसन ब्रीडत अल्प
उचरते । वे भों वानि मानि सौ भगता ब्रजपथ पैड नभरते । गो दूपा
हित हरिजात तब संग छवछाँह अनुसरते । यही पुण्यते जगत जलद
हथै दशहू दिशा बिचरते । अब बिश्वास प्रवास प्राणापति अति मद
सर्वसु हरते । सुरप्रयास आगम आशाकरि इमन बिरमवा डरते १८७
अब कछु भोरे भाय भई । निरखत बदन नंदनन्दन को और हुती सु-
गई । उपजी प्रीति हृदय अंतर जड सप्तपताल गई । अब दुस पसरेउ
शिखर अँवरलों चहुँदिशि छायरई । बचन सुपुन बंक अवलोकनि
श्यानिधि पुष्पमई । सुरदास फल गिरिधर बागर मिलि रस रीति
ठई १८८ नयनघन रहत न सक घरी । कबहुँन घटत सदा पावस ब्रज
लागिये रहतिभरी । बिरह इन्द्र बरधावत निशिदिन ब्रजपर अधिक
करी । ऊरध चास समीरतेज जल उरभुबि उमंगि भरी । बूझत भुजा
रोम दुसअंबर अरु कुच उबवरी । चलि नसकत पगपाथिकरेहे थकि
चन्दनकीच खरी । रसज्जु मिठी भई अबसकै यहबिधि उलटिपरी ।
सुरदास प्रभु तुम्हरे मिलन बिन ज्जु मर्याद टरी १८९ ॥ रागधनाधी ॥
रहति रैन दिन हरि हरि हरि रत । एकटक मगजोवत चकोरलों
वते तुमबिछुरे नागरनट । भरिभरि लोचन नीरलोतिउर सजलकरत
कुच कंचुकिके पट । मनहु बिरहकी बिजुलतालागि लयो नेम शिव
शीश सहसघट । जैसे यवके अग्र ओसकन प्राणारहत इमि अवधि-
हिकेतट । सुरदास प्रभु सुधि किन मिलहू चलत कहे सावब सों दिन
आये निकट १९० अति रसलपट मेरेनैन । त्वहि न मानति पिवत
कमलमुख सुन्दरता मृदुबैन । दिन अरु रैन घरी क्षया पलभरि काहू

नाहिन चैन । शोभा सिन्धुसमाय कहाँलों हृदय साकरोयेन । अब यह
 विरह अजर उमगी अंग बिसलाये दुखदेन । सूर वैद ब्रजनाथमधुपरी
 काहि पठाऊँ लैन १६१ नयनन को मत सुनहु सयानी । निशि दिन
 तपत सिरातु नक्षत्राभरि यद्यपि उमगी चलत पलपानी । हेाँ उपचार
 अमित उरआनति खलभये लोकलाज कुलकानी । कछु नसुहाय दहे
 दर्शन दुख बारिज बदन मन्द मुसकानी । रूप लकुट अभिमान निडर
 हवै जग उपहास सहत न लजानी । बुधि बिवेक बल बचन चातुरी
 मनहु उलटि उनमाँझ समानी । आरजपथ गुरुज्ञान गुप्तकारि बिकल
 भई तन दशा भुलानी । याचत सूर प्रयास अंजनको वह मूरख जिय
 साझ हितानी १६२ अबतौ ऐसेई दिन मेरे । सुनुरी सखी दोय नहिं
 काहु हरिहित लोचन फेरे । मृगसद मलय कपूर कुंकुमा जे सबसंतत
 चरे । मन्द सुपवन सुमन शशिशीतल ते देखियत करेरे । चातक मोर
 कोकिला मधुकर उपवन दियेबसेरे । जोभावत सोबकत दिवसनिशि
 बरजत रहत नटेरे । जे द्रुम सींचि सींचि कर अपने कियेबढाय बढेरे ।
 मूरदास किशलय करबर हवै आनि नयनमगधरे १६३ अति मलीन
 वृषभानदुलारी । हरि अमजल भोजेउर अंचरयह लालचिन धुवावति
 सारी । सुखेचिकुर बदनकुम्हिलानो ज्यों नलिनी हिमकरकीमारी ।
 अधमुख देखिजंघोनिहिं चितवति ज्योंवनहारे थकितजुआरी । हरि
 संदेशसुनत मुर्छितभइ विरहजरी दूजेअलिजारी । मूरप्रयासबिन कैसे
 जीवै ब्रजबनिता कि प्राणादियोवारी १६४ ॥ रागजैतथी ॥ उमगी चले
 दोउनयन विशाल । सुनिमुनि यहसंदेश प्रयासघन सुमिरितुम्हारेण
 गोपाल । आननअरु उरजनिक अन्तर जलधारा शोभितत्यहिकाल ।
 जानुगुलजनु मेरुशृंगते मिलेजायसम शशिहि सनाल । भीज्यो उर
 अम्बरअति राजततिहतरहरिसुक्तनकीमाला । मनहुइन्दुअननवनलिनी
 दल अलंकृत असी ओसकनजाल । कहंबह प्रीतिरीति राधाकी कह
 यह करणी उलटीचाल । मूरप्रयास यहकपट संदेशन क्योंजीवहिबिर
 हिनबेहाल १६५ केतेदिन बीतेरी हरिबिनदेखे । गनतगनतमिगिह
 सखीरीकरअंगुरीकीरेखे । जिहियहि विरहअमर कीन्हीसोबिसरी
 नयन निमेखे । हाँडरपति अवाधिहि मूरजप्रभु जिनिपारों मुरलेखे १६६

रागआसावरी ॥ तेहकह जामैपीर पराई । सुन्दरप्रयास कमलदल लोचन
हरि हलधरको भाई । मुख गुरली शिरभोर पखौआ बनवन धेनुचरा
ई । जे यमुनाजलके रंगरंगिगये अजहुन तजत कराई । वहंते बिरमि
रहेछाखे मन देखयो इडिसमुभाई । सूरस्वातिको बृंदभयोसन हेरतगयो
हिराई १६७ जनिपत बार्दिह चितये प्रान । चलतीबेर हरणा नहिं
कीन्होपंथ असंगलजाव । औरोअंग सगाज सकलगुणामन लोवनअरु
ज्ञान । स्यन्दनअग्र पदार्तिकिये लै सासिकदइ मुसकान । मथुरा नगर
राजलीला को ब्रजमृगया बनठान । प्रयासमृगी व्याधा ऊधो पुनियोग
गुणति शशि बाम । करुणासिंधु कहत अति मुनि गणा तेउन कीन्ही
कान । फिरि जनि मन पाछिताहुसूरप्रभु उपजेप्रेमबिज्ञान १६८ तबते
छीनि शरीर सुबाहु । आधो भोजन सुबल करतहै सब खालन मन
दाहु । आनंद गयो गई सब शोभा काहुन मन उच्छाहु । नन्दगोप
पिछवारे डारत नयनन नीर प्रवाहु । सकवार बहुरो या ब्रज में दूध
पतखिन खाहु । सूर सपुजवहु गोकुल आशा उलटि मधुपुरी जाहु
१६९ सखीरी हरिहि दोष जनिदेहु । जातेइते सानदुख पैयत हमरेहि
कपट सनेहु । बिद्यमान अपने इन नयनन सुनो देखति रोहु । तदपि
श्रुत ब्रजनाथ बिरहते फिरि न होत बड़बेहु । कहिकहिकथापुरातन
ऊधोअबतुम अन्तन लेहु । सूरदास तनतोयाँ हवैहै उयोफिरि फागुन
मेहु २०० उधरिआयो परदेशीकोनेहु । सबतुम कान्ह कान्हहिहेरत
फूलतहीअब लेहु । काहेको तुम सर्वस अपनोहाथ पराये देहु । उन
जुमहाठग मथुराछांडी सिंधुतीर कियोगेहु । अबतन तपतमहाउर उप
जी बाढयो मन संदेहु । सूरदास बिहवलभई गोपी नयनन बरख्यो
मेहु २०१ रागदेवगन्धार ॥ कंवार कीउ धैरागिनबैराग । पलटतिबसन
करति निशिचोरी वपुबिलसत भईयाग । बेसरि बैहमूदि मृगमदम-
थि नखन बिदारतमांग । अबगानते तजितरल तरौना पहिरत फणि
मगानाग । कुहमावलि अंधितउरमाला रचिप्रचिबांधीपाग । बासर
रहत रजनिके धोखे धोये मित्त न दाग । सुन्दरि सक प्रयासते बिहू-
रीहुंइति हैवन बाग । सूरदासप्रभु तुम्हरे मिलनको आलि उड़ावत
काग २०२ ॥ रागटोड़ी ॥ हरि न मिलेरी माई जन्म सेसेहीलखयो आवा

जोवत मग द्योस द्योस बीतत युग समान । चातक पिक बचन सखी
 छुनि न परै कान । चन्दन असु चन्द किरणि मनहुं कोटिक भान ।
 युवती तन भूषणा सजे जानो रया आतुर धान । भीषम लैं मदन सहित
 अर्जुनके बान । सो पतितन सेज सूर चलन चपल प्रान । दक्षिणा रावि
 अर्वाध अटक इतनी ये आन २०३ रागविलावल ॥ हरि देखिबे की राध
 मुई । उडि उडि फिरत नयन के गोलक फलफूटे जैसे आकसई । योग
 सुनत औरै जिय उपजी प्रेमपुलकि अम श्वेद खुई । जानो नहीं कहां
 ते आवति वह सरति मन साह दुई । बिन देखेकी व्यथा बिरहिनी
 अतिजुरजरति न जातिमुई । सूरवत सूरधान अंकुर लों मानहुं बरवा
 मल तुई २०४ बायस गहगहात छुनि सुन्दरि बासी बिसल पुर्व
 दिशि बोली । आजु मिलाहिंगे प्रयासमनोहर चित दै छुनि राधे मन
 भोली । कूच भुज नयन अधर फरकत हैं बिन समीर अंचर ध्वज
 होली । शोचनिवारि करहु मनआनंद जानत भागदशा बिधिखोली ।
 सुनत बचन लब्धज सखिन के प्रेम पुलकि तरकी उर चोली ।
 सूरदास सुबिलास नन्द सुत रहसो बिलसित नारि अमोली २०५ ॥
 रागनट ॥ तुम्हरे बिरह ब्रजनाथ अहो पिय नैनननदीबद्धी । लीन्हैजात
 निमेष कूल दुहुं सते मानचढ़ी । गोलक नवलौका न सकत खलि स्यो
 सरकनि बडि बेरति । ऊरध चास समीर तरंगन तेज तिलक तरुतो-
 रति । कडजलकीच कुचीलकियेतट अन्तर अधर कपोल । रहेपथिक
 जुजुहां सुतहां थकि हस्त चरया मुखबोल । नाहिन औरउपाय रना-
 पति बिन दर्शन साराजीजै । अथु सलिल बूझत सब गोकुल सूरकुकर
 गहिलीजै २०६ हमको सपनेहुंमें शोच । जादिनते बिछुरे नंदनन्दन
 ताही बिनको पीच । मनो गोपाल आये मेरे आंगन हंसि भुज बांह
 गही । कहा करों बैरिनि भइ निद्रा नेक न अधिक रही । क्यों चकई
 प्रतिबिम्ब देखिके आनन्दी पियजानि । सूर पवनमिस निहुरबिधाता
 चपल करेउ जलआनि २०७ सपनेहुंतो देखिये जो नयनन जीदपरै ।
 बिरहिनी ब्रजनाथबिन कहौकीन उपायकरै । चन्द मन्दसमीर निशि
 दिन सेज सजर जरै । कहौ कौनिहिभाति मेरोमन न धीरधरै । बिबश
 यत्न अनेक कीम्हे कहु न चाइ सरै । सूर शीतल कटया बिन कहौ

कौन साप हरे २०८ सखीरी प्रयास सबै एक सार । सीढेबचन मनो-
हर बोलत अन्तर जारनहार । भंवर करंग कागकोकिल शिखि कप-
टिनकी चदशार । सदनगोपाल आपुनहिं पढाये प्रीतिकिये बहुवार ।
ऊनै आई घटा जलद की प्रेम प्रतीति अपार । सूरदास सरिता भदि
उभड़ी चालक करत पुकार २०९ ॥ रागकान्हरो ॥ अखियां अजानभई ।
सक अंग अवलोकत हरिको औरहुती सुगई । यों भूली श्यों चोर
भरे घरचोरी निधि न लई । बदलत भोरभयो पछितानो करते छांड़ि
दई । जिहि मुख पहिलेही परिपूरण त्योंही क्यों न रई । सूर सकल
अति लोभ बढयोहै उपजत पीर नई २१० ॥ रागकेवारी ॥ मनो बिधि
हेहीं उलटि रची । जानत नाहिं सखी काहेते प्रेम न पजारि पची ।
बूझि नमुई नीर नयनन के बही न तेज तची । जलप्रवाह अरु बिरह
अगिनते क्यों दुहुं बीचबची । जो कहु सकललोककी शोभालै द्वारका
सची । उतकी सकल आधि बड़वानल समउरआनिखची । वेतो संक-
र्याकेभैयाहैं कीरति सकलमची । सूर सजिहि साया जगनेह्यो सोइ
मुख निरखि नची २११ कैसेधौं वनतव्रज दूरिको आवनु । सुनियतहैं
वहांहुते जो सजनी दूर कियोहै अनत गवनु । निकट बसत हम मर्म
नजान्यो मिलिहु न आई छांड़िभुवन । अबवै अपने कुतुम्ब सहितसखि
भवन सिधारे जीति जवनु । अगम अनन्त दूर पश्चिम दिशि जहां
कहतहैं सिंधुलवनु । सूरदास तन मन तरसत अब यदुपतिपै लैजाय
कवनु । २१२ शरद समयहु प्रयास नआये । जानतिहौं रसबस वहि
औसर क्यहु बिरहिन बिरमाये । अमल अकाश कास कसमित भये
लसरा शोच नजाये । रससरिता सुलताजल उजबल अलिकल कमल
सहाये । नवमयंक मकरन्द दुन्दधवज दाहक गरलगंवाये । प्रीतमअंग
संग मिलि सुन्दरि सचिसचि सिंधुसराये । सुनीसेज तुयार तेज नहिं
बिरह सिंधु उपजाये । सूरश्याम राइ आश मिलनकी भये व्रजनाथ
पराये २१३ दधिसुत जातहौं उहिदेश । द्वारका हैं श्यामसुन्दर सकल
भुवननरेश । परम प्रीतल अमिय तनुतुम कहियो यह उपदेश । काज
अपने सारि हमको छांड़ि रहे बिदेश । नंदनन्दन जगत बन्दन धरहु
नद्वरभेश । नाथ कैसे अनाथ छांड़ी कहियो सूरसंदेश २१४ हरिके

रुध्रके रसैं आली कैसे कै कहीं बिरहिनी मनबसैं । अपने तनमें भेद
 बहुतबिधि रसना न जानैं इन नयननकी दसैं । जे देखत ते नयनरसन
 बिनहारी रसन दशन न तिसैं । बिन बाणी जल उरगि अधिकनिशि
 सुमिरि सुमिरि वह सगुण यसैं । बारबार पछिताति यहैहैं कहाकरीं
 जी बिधि न बसैं । सूर सकल अंगनि की यह गति को समुझावैं या
 रुध्रदपसैं २१५ ॥ रागगौरी ॥ केते दिन बीते हरिदेखे बिनसाई । नंद-
 सुवन सुखकमल मनोहर मूरति प्रियाम सदा सुखदाई । जब उठिजा ।
 प्रात गोसुतलैं गोविंद ब्यालसंग बलसाई । अब जुनिकट मथुरा मधु-
 सुदन निपट जनक जननी बिसराई । तबतेगनत घरीघरआंगन बासर
 बिये रैन न बिहाई । सूरदास ऐसी कठिन भई है प्राण पचत घट
 छांड़ि न जाई २१६ वह दिन बैसाई जुहुतारी । हवैजाते मेरे आंगन
 मोहन बरियारहे है सोरी । बाल दशा की प्रीति निरंतर परी रहति
 हो दोरी । राधा राधा नंद नन्दन मुख लगी रहति हीलोरी । बेगु
 पाया गहि मोहिं सिखावते मोहन गावत गोरी । सूरदास प्रियामा
 संगम सुख क्षण सुमिरत भइभोरी २१७ ॥ रागनट ॥ रहे रहेरे बिहंगम
 बनबासी । तुम्हरे बोलतरजनी बाढी बचन सुनत नोदौ नासी । तन
 तल बेली बहि प्रीतमकी उयो चकोर चन्दाहि तासी । सूरदास प्रभु
 तुम्हरे दरश को जाय लेहैं करबट कासी २१८ ॥ रागगौरी ॥ हरि
 बिन कौन सों कहिये । मनमें दयया रहत अरनी उयो उरअन्तर द-
 हिये । कानन भवन रैन बासरसुख काहुन सुखलहिये । हमतौभई
 यज्ञके पशु उयो कबलौ दुखसहिये । कबहुं क जिय आवत लै ऐसी
 जाय यमुन जल बहिये । सूरदास प्रभु रामकृष्ण बिन कैसेकै व्रजरह-
 ये २१९ ॥ रागकेदारो ॥ इतनिक दूरिगोपाल कबहुं न मिलेआई । कहिये
 कहा दोष कहि दीजै इतनि हमारी जइताई । सपनेहुं सोवत सुनुसखिरी
 अर्वाधि निधन निधि पाई । सकहिबार अचानक कोकिल उपवन बे
 लिजगाई । जो जागों तौ कहेउठिदेखौ बिकल होति अधिकाई ।
 किशल कुसुम नवनत दशोदिशि मधुकर मदन दुहाई । बिछुरत तनु
 तउयो तेहीसण हठि न गईसंगसाई । समुझि न परी सूर त्यहिहोसर
 हंसि निजप्रीति लगाई २२० ॥ रागमलार ॥ अब वे बातेईजुरही । मोहन

मुख मुसकाय जु कबहुं कान्ह जेजेकही । प्रीति शूलतासुधि न रही सब
सन्मुख सबैसही । अबहैं शालति उरअंतरते काहेकहतनहीं । सखियह
व्यथा विशालकरसकी कतहै फिरतवही । हरिचुम्बक जहंमिलेसुर-
प्रभु लैचलमोहितही २२१ जाहिरी सखीशाय मुनिमेरी । जहं अबहों
नंदलाल बसतुहैं बारैक वहां आउदै फेरी । त कोकिला कुलीन श्याम
तन जानत व्यथाविरहिनीकेरी । उपवन बैठि बोलिपिक बाणी बच-
नबिसाहि मोहंकिरि चेरी । प्राणानके पलटेपाई जैसे अतिहि विसाह
सुयशकी डेरी । नाहिनकोइ और उपकारी यहिविधि बसुधाहेरी ॥
करियहु प्रकट पुकार द्वारहवै अबला आनि अनंग अरि घेरी । ब्रजलौं
आउ सुरके प्रभुको गावहिं कोकिल कीरतितेरी २२२ ॥ रागभारंग ॥
कहुं तो जो कहिबे की होय । प्राणनाथ बिछुरेकी बेदन जानतना-
हिन कोय । तबते अधर सुधारस लैलै रहीमदन रसभोय । जोरस
शिवसनकादि न पावैं सो रसबैठी खोय । बिरहद्वया बाढीडर अन्तर
जामें व्यापी होय । सूरदास मनहरन मनोहर ले जु गयेमनगोय २२३ ॥
रागमलार ॥ कोउमाईबरजै वा चन्द्रहि । करतब कोपु बहुतहम ऊपर
कुमुदिन करति अनन्दहि । कहांकुहू कहंरवि असु तमचुर कहांबला
इक कारी । चलतनचपल रहत रथयकिंकरि बिरहिनिके तनतारी ।
निन्दति शैलउदधि पन्नग को चापति कमठ कठोरहि । देतिअशीय
जरा देवीको राहुकेतु किनजारहि । ज्यों जलहीन मीनतन तलफत
सोइतर्पात ब्रजबालहि । सूरदास प्रभु बेगिमिलावहु मोहन मदनगोपा
लहि २२४ हरिबिन निशिदेखत डरलागत । बारबार अकुलाइदेहते
निकसिनिकसि मनभागत । प्राचीप्रथम देखिपूरशाशिशि हवैआये
तनसातो । मालहु कमलन बन बिरहिनि को करलीन्हे शिररातो ।
भृकुटी कुटिल कनक चापजनु अतिमदशरहि जुसावे । मनहुकामक-
सन्धातु कोपसों वियमबाणबरबांधे । मुनशठ सोहि प्राणार्पतिमेरो
जाको यश जगजानत । सुरसिंधु बुझेतेकादयो ताहू कतहु न मानत
२२५ ॥ रागमलार ॥ अखियां करतिहैं अतिआरि । सुन्दरश्याम पहुनई
के मिस मिलिन जाहुदिनचारि । बांहयकी बायसहि उड़ावत कबदेखों
अनुहारि । राधा श्यामश्याम कहिदेरति कालिन्दी किं करारि ।

शबिन सकत न पंख पसारि २२६ ॥ रागकेदारी ॥ जायै कोउ सधुवन लै
 जाय । पतियां लिखी प्रियामसुन्दर को करकंकन दे उताय । अब
 यह प्रीति कहांगइ माधवमिलते बेगु बजाय । नयन नीर शारंगरिपु
 भीजै दुखसुख रैनविहाय । सुन्य भवन मोहिंखरो डरावै यह शत्रुमन
 न सुहाय । सूरदास यहसमोगयेते पुनिकह लैहैं आथ २२७ ॥ रागसारंग ॥
 अबये यहांहैं ते कहां । जहं ये प्रियाम मदनसूरति सखि लै चलिमोहिं
 तहां । कटिलअलक मकराकृतकुण्डल घंचलनयनविशाल । उर अनूप
 बनसाख बिराजत कंचन लता तमाक । घनतनप्रियाम पीतपट ओहेजनु
 अलिकमल पराग । बिपुलबाहु भरिकरि परिरंभन मनोमिले दुसनाग ।
 सेवातिही सपनेको अतिमुख सत्यजानिजियजाग । सूरदास प्रभुप्रकट
 मिलनको चातक ड्योलैं लाग २२८ ॥ रागमलार ॥ ऐसे माई हमन जाने
 प्रियामहिं । सेवा करतकरी उनयेसी गये ज
 जोरि प्रीति जो तोरहिं कहा भलाईतामहिं । तेकहपीरपराई जानहिं
 ड्यो लुब्धक अपने कामहिं । चातक चरया सदाको सेवक दुखीबिना
 जलपानहिं । सूरदास प्रभु अबयह कीन्हों रचीकबरी नामहिं २२९ ॥
 रागदेवगंधार ॥ जबते धिक्कुरे कुंजबिहारी । नींद न परै घटात नहिरजनी
 व्यथा बिरह जुरि भारी । धिक्कसुन्दरी बिरह की जेदन जगमें रही
 उजारी । रबिकी रस्म लगति अनलाती यहि शीतल शशि जारी ।
 अवगानि दुख सुहाय नहिं सखिरी पिक चातक दुमडारी । तनहिं न
 भावत अति आतुरहवै कर कंकरा जु उतारी । सूरप्रियाम बिन विष
 लागति है क्लृप्त सेज जुरजारी । बिलख बदन वृषभान नन्दिनी ति-
 न्दित कपि रिपुहारी २३० ॥ रागकेदारी ॥ मैं जान्योरो आये हैं हरि
 जागिपरे पछितानी । इतेमानतनतलफतसखिरीमनहुमीन बितपानी ।
 सुनहिं देहते जरत बिरहज्वर यतननि परकृतआनी । अब कह करों
 अपथ मिलिवे की बढी व्यथा दुख दुहरानी । पदवर्षाधिक सब समा
 चारलिखि बकति २ अति अकुलानी । सूरजप्रियाम सुधाबिनुकैसे घट-
 त्व ज्ञानी २३१ ॥ रागमलार ॥ ऐसे जो अबहीं हरिआवैं ।
 निरखिवह बदन मनोहर नयनबहुत सखपावैं । तैसिय प्रियाम

घटा तैसाइ हरि तब तैसिय घराणक्ति दिखावैं । तैसाइ मेर कुलाहल
 छिनकै सखिहम हरयि हिंडोरना गावैं । कबहुं क आवजुहि लिलिलि
 खेलहिं कबहुं निकांज बुलावैं । कबहुं क संगलै सखा शैल चढि सुरलि
 नलार बजावैं । बिहुरत यहै प्राणा कैसे करि बहुत भांति सजु भावैं । जित
 ही हरि जानि चलत छुनि सुरज तिहिं पहिले डठि भावैं २३२ ॥ रागसारंग ॥
 देखि सखीरी इतहै बहगाउँ । जहाँ वही नंदलाल बसतु है मोहन मयूरा
 नाउँ । कालिन्दी के तीर विराजत परम मनोहर टाउँ । जोतन पंख
 होहिं छुनि सजनी आजु अबै उडि जाउँ । होनी होइ सुहोउ यहि अव-
 सर हेतो अन्न नखाउँ । सुरप्रियाम सुन्दरसों हितु करि लोगनि कहा
 डराउँ २३३ ॥ रागगौरी ॥ छुनि सखि धन्य हैं तेनारि । जे अपने प्राणाव-
 सभको अपनेहुं देखत अनुहारि । हौं कह करौं जु प्रियाम चलेते पहिले
 ही नींद गई दिनचारि । अब काहु केलहे न आवति रही छठि अपमान
 संहारि । अरु ताहुमें नयन तपत ये अनुदिन मुख बाढति है बारि ।
 सुरदास दोउ सुभग सरीबर चको उमति मर्याद उतारि २३४ ॥ राग-
 मेलार ॥ जोपै नन्दसुवन घर होते । ती छुनि पिक चातक यह बिनती
 कत डरती डरतोते । हमहिं अकेलि जानि इहि गोकुल हयगय रथ
 रया जोते । मानहु गरजि गरजि घन पठवत मदन महावत पीते । जो
 कहु करलागत है इहि ब्रज खेतन सरदसहेते । सुरदास अब शैलधरया
 बिन कहासैर अयमोते २३५ हरि परदेश बहुत दिन लाये । कारीघटा
 देखि बादरकी नयन नीर भरि आये । पालगों तुम बीर बटाऊ कौन
 देशते ध्राये । इतनी पतिया मेरी बीजहु जहां प्रियामघन छाये । दादुर
 मोरपपीड़ा बोलत सोबत मदन जगाये । सुरदास स्वामी के बिहुरे प्रीतम
 भये पराये २३६ आजु घनश्यामकी अनुहारि । उनै आये सांवरे सखि
 रो देखि रूपको आरि । इन्द्रधनुष मनो पीतबसन कबि दामिनि दशन
 बिचारि । जनु बगपांति मिली मोतिनकी चितवत चितलेत है हरि ।
 गरजत गगनगिरा सो बिंदकी सुगत नयन भरेवारि । सुरदास गगनसुमिरि
 प्रियामके बिकल भई ब्रज नारि २३७ ॥ रागकेदारी ॥ अब हरि आई है जनि
 शोचहि । छुनि बिधुमुखी बारि नयन नते अपनी सों जिनि मोचहि । लैलै
 मुखमसि अपने कर करि लिखु संदेश छांड़ि संकोचहि । सूरसुनिरह

जनाउ करति कत प्रबल मदन रिपु मोचहि २३८ बज्जकी छतियां
 बिहरि नाहिनजाति । बिद्यमान बिरहशूल उरहीमें जोसमाति । आ-
 वनकी अवधिआशते तालगि पतियाति । प्रेमकथा प्रकटभई शरदरास
 राति । कहत सुनत समुझत नहिं जियहुं न लजाति । क्यों टग निधि
 हरत करचंगुरवै जिहिभाति । योंकिरि मुसकाइ सूरसनसागईमाति ।
 सकैंपै जियमेंही बदनकमलकीकांति २३९ ॥ रागकान्हरी ॥ करकपोल
 धरे भुज जानुपर लिखति है चरणा नख रेखनि । शोचति बिचारु
 करत बैठी कामिनि धरतिध्यान मदनमुख भेयनि । नयनन नीरु भरि
 भरिलेति उसासभरी विकविक येदिनजाति अलेखनि । कमलनयन
 रहे मधुपुरी छाइकरि जाके गुणान जाने सहसमुख शेषनि । अवधि
 झुटाइ कान्ह झुरी सखी क्यों जीवों निशि दामिनि देखनि । सूर-
 दास प्रभुचेतकु लगाइय नाचिगयो नट नाना भेयनि २४० ॥ रागसारंग ॥
 यह सब मैंहीं पोचकरी । प्रयामस्वरूप निरखि नयननउडि भौहनि
 फन्दपरी । बयकिशोर कमनीय कुमतिहो लुब्धोते न डरी । अबछवि
 गई समाइ हृदयमें दारतहु नटरी । अति सुख दुख व्याकुल सम्भ्रमअन
 बिधमुख निरखि खरी । रोमरोस सुन्दरता देखत आनंद उमगिभरी ।
 यद्यपि सूरसहति सन्मुखशर अंगहु दैनसरी । तद्यपि करमुरली अव-
 लोक्त उलटि अनंगजरी २४१ ॥ रागकेदारी ॥ अब सखि नोदौ गई ।
 भाई जिय अपमानमानि जनु सकुचनि ओटलई । अतिरिस निजवश
 कतकिये निशि आगम अटकदई । सपनेहुं पियसंयोग सहतिनहिंसह
 चरि सौतिभई । कहति पोच शोच मनहींमन करत नबनें खई ॥ सूरदास
 तनतजे भले बरु बिधि बिपरोति ठई २४२ ॥ रागबैतथी ॥ हरिजु आये
 सो भलिकीनी । मोदेखत यों कहि राधाउटि अंक तिमिरको दीनी ।
 छुटि न भुजाबल फुटि बलयाबल बलिदूरी लरकटि कंचुकि भीनी ।
 मनहुं प्रेमकी परनिपरेवा याहीते पड़िलीनी । तन कछु कंप विकल
 आतुरभई उर धकधकी खेदकीनी । चरणाचलति गतिगई गलितमति
 खेक्सलिल भुवभीनी । अवलोकत इहिभाति रसापति जनुजीवत अहि
 मणिाकीनी । सूरदास कछुकहि नजाइ मोपैंहीं अजान सतिहीनी २४३
 रागसारंग ॥ नयना अबलागे पछितान । बिकुरत उमगि नीर भरिआये

बिसरे सब औसाने । हिलिमिलिके कत प्रेमदहायो हरीहंभये बिय-
खान । तबवह प्रीतिकारी आतुरह्वै रजुकि न कछुअजान । बैरीनाम
दहै निशिबामर नहीं हमारेयान । भयो विदेश मधुपुर हमको क्योंहुं
होतनजान । अतिछटपट देखयोही चाहत अबलागे ललचान । सुरदास
प्रभुदान दुखित ह्वै लेनगये संगप्रान २४४ हरिदर्शन को तरसति अं-
खियां । भ्रांकिति भुकिति भरोख्या बैठी करमीडत अयो मखियां ।
बिहुरी बदन सुधारत निधिते लगति नहीं पलपखियां । अकटकचि-
तबति उडि न सकति दोउ यकित भईधुनि सखियां । बारबार शिर
धुननि बिसूरति बिरहजार जनुजखियां । सुरस्वरूप मिलेही जीबहि
नहिं कटिकेरनि धरति नखियां २४५ नयनन बहैरूप जोदेखे । तीर्थी
यहजीवन जरभो सांचुसफल करिलेखे । जोचन चपल चारुखंजम
अनूपअनुसंजनहृदय हमारे । सुरंग कमल मृ. सीन सनोहर प्रवेतअरुणा
असकारे । कंडल रतन जटित अवगानवर गंडकपोतनि भाई । मानो-
दिनकर प्रतिदिनबसुकरमे हुंदतयह छबिपाई । सुरलीअधरबिकटभौहैं
करि दाढीहोहिं भिभंग । मुक्तमाल उर नीलशिखर ते धसीधरसाज-
मुगंग । और भेष कोकहै बरशासब अंगनि के शरिखोरी । देखबनैन
कहत रसनासाँ हमअरु मोहन जोरी । वे बातें सुधिकरि करि खजनी
व्यथाहोति भियभारी । सुरदास प्रभुके निजुधेते सदन पांचपर सारी
२४६ तबते मितेसबै आनन्द । यात्रज को सौभाग्य संपदा लेजगये नंद-
मन्द । व्याकुल भई यशोदाहोति दुखित नन्दउपनन्द । धेनुनहींपय
अवत उदित मुख चरतनहीं हराकन्द । बियस वियोग रहति सनसज-
नी बाहिरहे दुखदन्द । शीतलकौन करैरीमाई नहिं इहांजजचन्द ।
रथचढ़ि चलत गहोहि न काहु चाहिरही मतिमंद । सुरदास अबकौन
छिड़ावैपरी बिरहकेफंद २४७ भरेजिय करकैरही । बेवतियांछितियां
लिखिराखी जे नंदनद कही । सकदियस आयेनंदनद हैं गृहमथतद-
ही । रतिमांगत में मानकियोहै सोहरि गुहागही । शोचति अरु पछि-
ताति राधिका सुरछि परतमही । सुरदासखामीके बिहुरेबिया न जात
सही २४८॥ रागमलार ॥ सेसे नन्दराइके बारे । इतनन जनिपतियाहु स-
खीरी जेतैहैं तनकारे । खेलात रंगसंग गृन्दावम निमिषनहोतु न न्याये

परिलो मुख दासता भये हनकी देखुगये दुखभारे । उरपर भीजतुहै
 शारंगरिपु मयनगीर बहुदारेसरदास प्रभुधेगमिलहुहुम उरतनहींखा
 दारे २४६ ॥ रागआगावरी ॥ देखीकोऊ हितुहै सजनी सोको हरिहि
 मिलावै हो । नारक बहुरि नंदनंदन को इहांलौ लै आवैहो । पार्थन
 परि बिनतीकरै अरु यह दशा जनावैहो । नवनिकुंज वनकेलि रीति
 रस रास कि हरति अनावै हो । औरी कौनभांतिकी सकुचनि का-
 न्हाको उपजावैहो पुनिपुनिसर प्राणपति सों कहै लोचन जरतजुडावै
 हो २५० ॥ रागधनात्री ॥ मिलिकिन जाहु बटाऊनाते । नंद यशोदाके
 तुमबालक बिगय करतिहैं ताते । तुम्हरी प्रीति हमारीसेवा गनियत
 नाहीं काते । लोखदेखि तुमकहा भुलाने सीतभये बनपाते । तुमबिछु-
 रत वनप्रयास मनोहर हम अबला प्रारधाते । कहा करौ जु सनेह न
 छूटै छपड्योति गइजाते । जबहठिदान मांगते हमपै अंगगात लपटाते
 सूरदास प्रभुप्रबल कौनरिपु बीच परेउहै जाते २५१ ॥ रागसारंग ॥ हरि
 जु सतेदिन कहां लाये । मानो अवधिमें कहत न समुभी गनतअचानक
 आये । भलीकरी जु बहुरि इननयनन सुन्दर चरणा दिखाये । जानी
 कया राजकाजहिमें कहत बचन बिसराये । हृदय अंतरते तुरत प्रकट
 किये मन अभिलास गुजाये । बिरहिन बिकल बिलोकि सूर प्रभु
 धाय हृदय करलाये २५२ जोपैकोउ साधवसोंकहै । सदै बिधाजानि
 नंदनंदन कतमधुपरी रहै । पहिले सब दीनता प्रकटकरि पुनिकरच-
 रणागहै । सोपरतीति है नन्द सुवनकी सुनत न प्रेमसहै । सूरदास प्रभु
 को संदेशो कछुसोइ कत निबहै । सकवार यहितनके कारणा जे दुख
 अनलदहै २५३ ॥ रागआसावरी ॥ गोकुलको सचकहैं हमसोंमाई । जबते
 हमारेचले कन्हाइ । निधनेघर जैसे पहनो भूखो । जलबिनु सरवर
 दोसै सखो । वे ब्रजनारि कहेकैसे जीवैं । जौलगा हरिदरशन नहिं
 पीवैं । सूरदासदुख कासोंकहिये । चलो प्रयास मथुरारमिरहिये २५४
 रागगौरी ॥ बाढीरैनि कलप वरकीसगादूरि न करहि बेणुकरधरिबो ।
 रथथाक्योमानहु मृगमोहे नाहिंन बनत चन्द्रको चलिबो । बीतीजाय
 सोईपै जानै कठिनहै प्रेमफन्दको परिबो । कमलनयन बिछुरे सखि
 जबते रहत न नयन नीरकोढरिबो । चन्दन रचत अतिहि तापततु

सहिनहिं सकत बिरह उर जरियो । सूरदास प्रभु तुम्हरे मिलनविनु
 सब भूयोतननिको करिजे २५५ ॥ पगवदारी गहरिको तिलाज हरिबिना
 जुदहत । कहियतहै उडराज अमृतलय तजि दुभाव भोको नहिं बहत ।
 छपा न छीनहाय मेरी सजनी भूमिडसन रिपुकाधों बसत । शशिबहिं
 गवनकरे पश्चिम दिशि राहुप्रसतभोको गहि न गहत । सेनाइ ध्यान
 धरततुम दधिघृत मुनिमहेश जैसेरहि न रहत । सूरदास प्रभुमोदपनूरति
 चितैजातु पै चित न सहत २५६ ॥ छुटिगइशशिकी शीतलताई । मानहु
 जारि भरमकियो चाहत संजनको कलंक तनकाई । याहीते प्रयास
 अकाश देखियत मनदुरहे काजर लपटाई । ताऊपर सदेत सखासब
 उडगन अग्नि कनिका उडिआई । राहुकेतु दोउजोरिषकके तज बहि
 समय जराजोपाई । आसेते पच्छिजाय पापमें कहति सूर विरहिनिदुख-
 दाई २५७ ॥ सखि आजुकी रैनिको दुख कहेउन जात मोपैपै । मन
 राखनको बेगुलियोकर मृगयाके उडपति न चरै । वाही प्रासानाय
 प्यारे विनु शिवरिपु बारा नूतन जुजरै । अति अकुलाय विरहिनी
 व्याकुत भूमिडसन रिपुभण्यो न करै । अतिआतुर हवै सिन्दुरलिखी
 कर गहि भासिनिको कसुनरै । सूरदास शशिको रथुचलितयो पाछे
 तेरवि उदयकरै २५८ ॥ जारन आवारी श्यामके पापी जन्ह बिसासी ।
 काहे कहतहुवाकर शीतल हैयह अगिनि अमरकोबासी । देखोजाय
 दबासोलागो बूझत नयनवारि बरयासी । इकहुन प्रलजरी साधवके
 अरु लोगनकीहांसी । येक्यों भरमभई सन्मथसंग योहिजानि भुन्यो
 प्रतिशासी । सूरजदास कितिक हमदासी इनजारे अविनाशी २५९ ॥
 रागसारंग ॥ नाहं देखति सपनेउ निहारि । सहन गोपाल कहां निर्मोही
 प्रीतिखोजु गयेमारि । तुमसौरैरु बड़ेखोंकीन्हों मड छडाईगारि । वे
 नंदधवन गातके सनियां गयेनात डोयांडारि । जानीवहीं कपटकी चि-
 तवानि सर्वशु दीन्हो ढारि । सूरदास प्रभुगोपि दुखित भई कालिन्दीके
 करारि २६० ॥ हुनोसखी साधवविनु यातन सब विपरीतभई । गईछपाय
 छपाकरकी छवि रही कलंकमई । अंखियां हूतों कमल पाखुरिसी
 ते जनिचोरिलई । आंच लगी छेडनों सोनेसो योतन धातुघई । कदली
 दलसी पीठि सनेहर सोऊ पलारिगई । सकल सूरहरि हरी सम्पदा

दिग्गहा दईदई २६१ ॥ रागविलावल ॥ जिधुबैरी शिरपरबसै निशिनीद न
 परई । हरिहरभानुसुभविना यहिको बसकरई । गगन शिखर उतरी
 छतै गरवौजिय धरई । किरिया सकति भुगभरिहने उरमें सगासरई ।
 उइ परिवार पिधानसभा अपयग्रहि न डरई । सोइ परपंचकरै अबला
 उथों जरई । घटैबहै यहिपापते कलिमानहिंदरई । सूरदास समुझाइये
 ह्योत्थों यह खरई २६२ ॥ रागनट ॥ नेकहु शोच न काहुकीनो । सुनि
 ब्रजनाथ सबनिके औगुगा मिलाहि मिलेदुखदीनो । जनुबसंत असमय
 अवसमति पिक सुभावलै धावत । प्रीतस संग जानि युवतीरुचि बोलै
 हनहिं आवत । सदाशरदखनु सकल कलालै सन्मुख रहति जुनहार ।
 सोसितपच्छ कुह समचीत कबहुंन देति दिखाई । विविधि समीर
 सुसन सौरभ मिलि सत्तमधुष गंजार । जोइजोइ रुचेउ सोकियोवांधि
 बल सजिनन सकुचबिचार । रतिपतिअतिअतिथी कीबेको कोटिधूस
 धजमानो । लैकरधनुय चितै तुम्हरोमुख अब बोलै तोजानो । भलीक-
 रौ नीके ब्रजआये सेसेकाल अतीत । नाजानिये प्रबलमल्लनिसों समर
 कौन बिधिजीत । सपनसत्य दुखमुख सुनि सजनि नयेका अंस । सूर-
 दास प्रभु अब ब्रजरहिथे बहुरि वांधियेकंस २ ॥ रागमलार ॥ देखोसाई
 नयनन सों घनहारे । जिनुही कृतु बरयत निशिबासर सदा सजलदोउ
 तारे । ऊरध चास समीरतेजअति दुखअनेक दुसडारे । बदनसदन करि
 बसेबचनखग अतुपावसके मारे । हरिधरि बंदपरत कंचुकिपर मिलि
 अंजनसोंकारे । सानहु पराकुडी शिवकीबिच धारा प्रयास निन्द्यारे ।
 छमिरि छमिरि गरजत निशिबासर अग्रु सलिलकेधारे । बूझत ब्रजहि
 सूरको राखै बिनु गिरिवर धर प्यारे २६३ कैसे जीऊं हरि परदेश
 रहे । गरजि गरजि घन बरयनलागे नदि अरु नार बहे । बासरगये
 निहारति नारग चातक रेनिदहे । कासोंकहीं तपतमन निशिदिन
 को यहपीर लहे । कोऊ जाय मदनमोहनसों हमरी बिधाकहे । हमहुं
 किनि लजाउ सूरप्रभु को ब्रजविपति सहे २६४ कोउसाई बरजीबो-
 लतमोरनि । रतत पपीहा सागान रहाई होतविरह की रोरनि । चम-
 कति चकत चहुंदिशि दामिनि अंबरघरनकी घोरनि । बरयत बुन्द
 नाया हवै लागत कों जीजैयहि जोरनि । चन्दाकि किरिया नयनभरि

पीवत नाशतल्लक्षित चकोरनि । सरदास प्रभुहमता जीवें मिलिहैनन्द-
किशोरनि २६६ कैसेजिउ राखोगी बोलत मोर । देखिसखी तरवर
जनो सेवत चितवत चन्दचकोर । दृगदामिनि अरु मेघघटा ज्यों गर-
जतहै घनघोर । ऐसी अवस्था परिवालकको कठिन मदनभक्तभोरा
नवसत साजिचलीं ब्रजगोपी उरनाहिंन बँदखोर । सूरदास प्रभुदरश
सुन्हारे पलकनि देति अकोर २६७ कैसेभरिये दिन सावनके । हरित
भूमिभइ खलिल सरोवर सिरेमग मोहनआवनके । हरिदुरंग सबकान्त

गरजत घुमरिघटाघनघोरतिमदन
धनुषधरि धावनके । दादुरभोरभोर प्रारँगपिक निशिहि निशासुह
सावनके । सूरज दीजैनि क्यों निघटै शिशुपाकिये शिररावनके २६८
जोत नेकहू उडिजाहि । बिबिधबचन सुनायबाणी यहाँ रिक्तवतुका-
हि । पतित मुखपिक पुरुषपशुलो कहाखलो रिसाहि । नाहिनेकोउ
मुनत समुक्त बिकल बिरहिनि थाहि । राखिलेवा अवधिलो तनुम-
दनमुखजनि खाहि । तुहूँतो तन दग्ध देखी बहुरि कहा समुक्ताहि ।
नंदनन्दन को बिरह अतिकहत बनत बनाहि । सूरप्रभु ब्रजनाथबिनलीं
सौनमोहिं बिसाहि २६९ अबब्रजनाहिंन नन्दकुमार । यहैजानिअजान
मघवा रची गोकुल आरानयन जलदनि मेघदामिनि अँधुववर्षतधार ।
दरशशशि रविदुरयो धीरजु प्रवास पवन अकार । उरजगिरि भयभरन
भारी असमकाम अपार । गरजविकल बियोग बाणी रहत अवधअ-
धार । मधुप मथुराजाय हरिसौं बात कहौ बिचार । सेन शत्रुधामु-
घेरेउ सूरलेहु सुन्हार २७० यहिडर बहुरि न गोकुल आये । मुनरीस-
खी हमारीकरणी समुक्ति मधुपुरी छाये । अधरातक ते उठिकरेबा-
लक सबमोहिं जगैहैं आय । बिनु पदवाणा बहुरि पठवैंगी बनहिंचरा-
वन गाय । सुनो भवन आनि रोकैंगी दधि चोरत नवनीत । पकरि
यशोदापै लैजैहैं नाचहु गावहु गीत । भालिनि मोहिं बहुरि बांधैंगी
केते बचन लगाय । सते दुखवन सुमिरि सूरमन बहुरि सहैको जाय
२७१ फिरि ब्रज आइये गोपाल । नन्दनृपति कुमारकहिहैं पुनि न
कहिहैं खाल । सुरलिका सुर सप्तदिशि दिशि चलौ निशान बजाय ।
दिग्विजय के युवाति मंडल भूपपरिहैं पाय । सुरभि सैन सखा सुभर

संग उठैगी खुर रंगा । आतपत्र मयूर चन्द्रक लसतहैं सखिबेरा । स-
 द्रपतिमधुकर निकरवर सदन आयसुपाय । द्रुमलतावन कुसुमबानिक
 बसनकुटी बनाय । सकल खगगण घंक पायक पौरिया प्रतिहार ।
 सूरप्रभु ब्रजको समय मुख क्योंसके शेष आपर २७२ तबते बहुरि न
 कौऊआयो । वहै जु एकवार ऊधोपै कहुक सोधसों पायो । सुधो
 विचारकरै सखि साधव इतैगहरु कहलायो । गोकुलनाथ कृपाकरि
 कबहुं लिखियो नाहिं पढायो । अर्वाध आश यतननि करि यह मन
 अब जैहैं बौरायो । सूरदास प्रभुचातक बोल्यो मेघनअंबर छायो २७३
 सखिरी चातक मोहिजियावतु । जैसेहि रैन रतहैं पिडपिड तैसेहि
 पुनि यह गावतु । अतिसुकुठ सुदेश प्रीतम सुखतर जीभ न लावतु ।
 आपन पिवत सुधारससजनी बिरहिनि बोलिपिवावतु । जौयहसखी
 सहाय न होतो प्राण बहुत दुखपावतु । जीवन सुफलसूरताहीकोकाज
 पराये आवतु २७४ संदेशनि बिरहव्यथा क्योंजाति । जबलगि परै न
 दुष्टि वहसूरति मनहु चन्दकी कांति । जादिनते हरि हमतेबिहुरे तप
 त्योतन न बुझाति । सूरदास प्रभुसिलहु कृपाके कृतियांताहि सिरा-
 ति २७५ कह्यो पथिकजाय साधोसों मन चढ्यो नयनन केलेखे ।
 यहैदिवसहवै भगवतआवत निरखत मुखक्यों लगीनिमेखे । ते अबचा-
 हतइनपै फिरिफिरि बिधिजु लिखीदरशन अबरेखे । केतताहिबताय
 बिदितइम लगी पलक जडताके पेखे । अनुदिन क्षणाक्षरा जोरियतन
 करि आनतयुगअबलीय विशेषे । सूरदासप्रभुया अरुणानिते नहिं
 मनकुहत दरशबिनुदेखे २७६ सखीकरि कछुउपाउ । सातुल सारन
 चलयो बिरहिनीके चाउ । हुताशन ध्वजजातउन्नत चलयोहरदिशि
 बाउ । असमसररिपु नन्दबाहन हरयितगाउ । वारिभवसुत सप्तभांवरि
 अबलै करिहैं काउ । अबकी बेरप्राणाप्यारे ब्रजसखिन मिलाउ । अतु
 समयगयेसानकीजैसेइकिनिबहिजाउ । सूरप्रभुके नरनाहीं देउकेलवि
 भुवनराउ २७७ अब रह प्रीतिभई पातरी । श्यामकान्ह बलराम हमारे
 मारग जामिलैउ न जातरी । यह ब्रजराज बसत गोपाललाल कबहुं
 सुनीपोच बातरी । कंचनकाच कपूर कटुकखारि सोई समहीरा पोत
 बिकातरी । नमो भगवते वासुदेवाय ॥ बंद सलिनक्यों नहातरी ।

सुरदास मुक्ताफलभोगी कोरि करत क्योंज्वारिखातरी २७८ ॥ रागविहा-
 गरी ॥ साईभोको चन्दलरयो दुखदैन । कहँये प्रयासकहांवे बतियां कहँवे
 सुखकीरैन । तारेगनत गनतहैं हारी टपकनलागेन । सुरदास प्रभुतुम्हरे
 दरशाबिनु बिरहिनको नहिंचैन २७९ ॥ रागगौरी ॥ ब्रजरीसतो अनाथ
 कियो । सुनरीसखी यशोदानन्दन बियु संदेशदियो । तबबहकपाप्रयास
 सुन्दरकी करगिरिरेकिलियो । अरुप्रतिपाल बवालगाइनको जलका
 लिंदि पियो । यह सबदोष हमहिं लागतु है चलत न फट्यो दियो ।
 सुरदास प्रभु लँदनन्दन बिनु कारणा कौन जियो २८० ॥ रागधनाश्री ॥
 मेरोमन मथुराईरहेउ । गयोजतनते बहुरिनआयो गहिगोपाल गहेउ ।
 इन नयननको भेटुनपावै केहि भेदिया कहेउ । राखोखप चोरि चित
 अन्तर सोइ हरि सोधितहेउ । आये बोलत तावन ऊवो सपादै लेहु
 महेउ । निर्गुणा साठि गोविन्दहि सांगत क्यों दुखजात सहेउ । जिहि
 आधार आजलौ यहितनु सेसेही निबहेउ । सोइछिड़ायलेत सुनिसरज
 चाहत हृदय दहेउ २८१ ॥ रागमट ॥ तबते नयनन नींद हिरानी । परेउ
 उचाट निमेष न लावत उमगि चलत भरिपानी । एक समय उनसानत
 अन्तर शोभा सब उरआनी । रहि न सकी तन तपत बिरहज्वर सों
 अबलौकि डरानी । बिसरिगई तिहिकाल सकल सुधि यह परिहस
 बिलखानी । बुधि बिवेक बलरहित बिवशगति धरणि परति मुर-
 भानी । सपने में सपनो सुनि सजनी हठि रिसकटि अरुभानी । मत
 बांचत मनुहारि छुवतपद निरखि बदन मुसकानी । पाणिसरोज उरो-
 जनिपरशे सकुचत समुझि लजानी । रोमरोम प्रकटित पुलकितचित
 हरथि सुदशा नशानी । जागेते जियशोच पोचअति बिकलभई अकू-
 लानी । इंदु किरणा जनु तरणि तरफि बपु फिरि पाछे पछितानी ।
 पचिहारी पुनि पलक न लागी पल पल देह सुखानी । जिहि बिधि
 मिलहिं प्रयासघनसुन्दर सर सुयतन बताउ सयानी २८२ डसीरी मदन
 भुवंगस कारे । चितवतही मुसकाय लोभकरि जातुमेसां डारे । तन्वन
 जानौ मन्व नजानौ चलै गुणीगुणहारे । परमप्रीति बियधरसांवांधी
 सोडारत मोहिं जारे । यहै जानि ऊधो ब्रजआये बैठु दैचले हमारे ।
 आवति लहरि जु मदन बिरह की को यह बैठु हँकारे । मदनगोपाल

कहियत सो या बिसहि उतारे । सूरदास प्रभु कबहूँ मिलहि
 ॥ रागभारत ॥ दुवाडारे २८३ ॥ रागभारत ॥ लोगसब देत छुहहिवाते । कह-
 तहि सुगम करत नहि आवै बोलि न आवत ताते । पहिले आगिमुनत
 चन्दनसी ससी बहुत उमहै । समाचार ताते अरु सीरे पाछे कौनुकहै ।
 कहत सबै संग्राम सुगम अति कुसुमलता करवार । सूरदास शिरदिये
 सूरसा कौनुकहै व्योहार २८४ हमारे हृदयकुलिश बरजीते । फटत
 सखी अजहुं बह आशा नरघ दिवस भरिबीते । हमहुं समुझिपरानी
 ह्वैकै यहै असितनुकी रीति । बहुरि न जीवन सुखफिरि करिकै सधु
 पनकीसीप्रीति । अबतो वातरहि घरीपहरकी उयो उदवसकी भीति ।
 सुरज प्रयास दासमुख जेवत भये उभय निहचीति २८५ ॥ रागकेदारो ॥
 मोहन फिरि किन गोकुल आवत । जिनकुंजनि कीडा बनकीन्ही सो
 सबहिन मनभावत । गोपीबाल और ब्रजबनिता सुमिरिसुमिरि गुण
 गावत । बारते तुम काहे को सिरजे कुब्जानाथ कहावत । नितनित
 प्रीति बढ़ावत उनसों हमहिं कौन ढंगलावत । सूरदास प्रभुपरमनुर
 भये पतियां कत बिसरावत २८६ ॥ रागगौरी ॥ सखि सुनि जानी हरिबै
 बात । बैठे रथऊपर चढ़ि भोरे हँसत सधुपुरी जात । सुफलकसुत ठग
 ठाठ ठयोउर साधुभेष मनघात । जेतक बड़े धर्मधुजसानी संग प्रेम पथ
 पात । यादबकुलह्वै सन्त सुनेहैं तिहिके ये उतपात । एकहि हरे प्राण
 गोकुलके अपरयोग कुसरात । यद्यपि सूर प्रताप प्रयासके दानव दुष्ट
 डरात । तद्यपि भजनभाव नहिं ब्रजमन खोजत शीपीसात २८७ सुरति
 करि उहिकिन रायदियो । चलयोजात पथिक एक सारग गोपीबल
 तेहि बोलि लियो । कहधौं बीर कहंतिआयो पहुंसि प्रणामकियो ।
 परसप्रीति करि निजगृह बोल्यो पहुना चार कियो । गढ़ाद कंठ
 हृदय भरिआयो बचन न कहेउ परेउ । सूरदास प्रभु फिरिबुझैते उत्तर
 कहु न करेउ २८८ कोऊ मोहनलाल दिखावै । कैसे धीरज धरै
 सखीरी अंग अंग मनधावै । उयो उयो यतन करति बह तन को त्यों
 त्यों दुख बितरावै । बिरह अगिनि सोकत चन्दन जल ज्वाला
 । समयभयो सुनिश्यामा हरिज परमचतुरअब आवै ।
 ॥ इवर तनको क्योचन्द सियरावै २८९ ॥ रागगौरी ॥

व्रजकी बात भई अबन्यारी । तिहि सुन्दरि सधियोग गाइयतु जहंगा-
वतहैं गिरिधारी । रिपुरणामारि रहेमन दिशित्यों भिक्षुक्या बिस्ता-
री । सूर व्यथित दिनसकुचि कुसुदिनी निशि हेमंतप्रजारी २६० ॥
रागसौरभ ॥ हरिसे प्रीतस क्यों बिसराहि । मिलनदूरि मनबसतचन्द है
ज्यों चकोर चितै पड़िताहि । जलमें रहे जलहिने उपजै जलही विनु
कुम्हिलाहि । जल तजि हंस चुनहिं मुक्ताफल मीन कहां उडिजाहि ।
धरणी दुखित देखि बादरज्यों बरवै अरु बिलखाहि । प्रकट नप्रीति
करै परदेशी दुखवै हृदय भसाहि । सोइ गोकुल गोबर्धन सोइ कौन
करै व्रजकाहि । सूरदास प्रभु तुम्हरे मिलनविनु अनत न कहूं क्षमाहि ।
२६१ ॥ रागसौरभ ॥ खाल तू छाँडि बिरह खरेउ । तेरे बिरह बिरहिणी
व्याकुल भवनकाज बिसरेउ । करपल्लव उडपति रथ खेंच्यो मृगपति
बैरकरेउ । पक्षीपतिन सबै सकुचाने चातक अन्नंग भरेउ । शारंगधर
सगरब उतरेउ । सूरदास सागरसुत पतिके देखत
सदन हरेउ २६२ ॥ रागमैरी ॥ आजु रैन नहिं लौं पारी । जागत गनत
गानके तारे रसना रत गोपालहरी । वह चितवनि वह रथकीबैठनि
वह अक्रूरकी बाँहपकरी । चितवत सूर ठगोसी दाही कहि नसकी
कहु बिरहभरी २६३ ॥ रागसौरभ ॥ जेलै जाय कोऊ बहिदेश । जैसेकै वह
कहै सखीरी वारों सोईभेश । बोलिधैं हरवाय दक्षी आपने सनमेश ।

अथ

युवांत वृन्दनरेश । तदापशाश कुसुदिनी सूरज रचोप्रोत बिबश २६४
पथिक पालागों श्यामतों कहियो यहबाताइतनी दूर बसतकों बिसरे
अपनेजननी ताताजादिनते मधुपुरी सिधारे श्याम सनोहरगात । तादिन
तेये नयन पीड़ा दरश व्यास अकुलात । जहां खेलनकी दौर तुम्हारी
देखिनन्द सुरभात । जब कबहुं वहि खरिक्जातहैं गायदुहावन घात ।
दुहत देखि औरन के बालक प्राण निकसि नहिं जात । सूर श्याम
फिरि कबै देखिहैं कोमल कर दधि खात २६५ ॥ रागमैरी ॥ बिहुरत
ओव्रजराज आजु सखि नयननकी परतीतिगई । उडि नमिले हरिसंग
बिहंगस हवै नगये घनप्रयासमई । याते क्रूर कुटिल सचमेचक लुथा
मीन छबि छीनिलई । रूप रसिक लालची कहावत सो करणी कहु

तो नभई । अब काहे घोचत जलमोचत समथगये नित प्रूलनई । सूर
 दास याहीते जहभये जवते प्रलकन दगादई २६६ ॥ रागनट ॥ यह बल
 कितकुजानि यदुराई । सुमते चले हसन अबलनये तरकिबांह छि-
 काई । कहियत हो अति चतुर सकल बिधि जानत सकल उपाई ।
 सौजायी जीअब सकोसरा सकौहदयते जाई । सूरदास स्वामी श्रीप-
 तिके अंतर भावनि भाई । सहिनसके रचि बचन उलटिहंसि लीन्ही
 कंठलगई २६७ ॥ रागसारंग ॥ अबचरही में प्रयास बताये । यौसमदृष्टि
 आदिनिगुणापद तौकत चित्त चुराये । लये सँभारि सबै हरि अपने
 रासरंश जे पाये । मोहन बदनबिलोकि मानिसचि हंसिकर कंठलग-
 ये । हम सतिहीन अजान अल्पबुद्धि तुम अनभय पदपाये । सूरदास
 तेहि बसिज कहायुगा नूरहु साँझ राँवाये २६८ तौ तू उडिहि नरेका-
 रा । जी गोपाल गोकुलहि आवाहंतौहैं हमरे भाग । दधिओदन देनाके
 देहौ अरु अंचरकी पाग । लोचन हृदय दुभाय सगुन तन भेटिबिरह
 के दाग । सूरदास प्रभु मिलहुमया करि याहुते अनुराग । जैसे मात
 पिता नहिं जानहिं रैन होयनहिं जाग २६९ ॥ रागधनाश्री ॥ को कहै
 हरिसों बात हमारी । हमतौ हों तबते जिय जान्यों इतैभये मधुकर
 अधिकारी । एक प्रकृति सके कै तब गति तिहि गुण अस जियभावे
 प्रकटतहे जबकंज मनोहर बज किंशुक कारसा कत आवै । कंजनीर
 चरुपक रस चंचल गति सबहीते न्यारी । ताअलिकी संगति बसिमधु
 पुरि सूरदासप्रभु छुरति विसारी ३०० हमारे प्रयास चलन कहतहैंदूरि
 मधुवन बसत आसही सजनीअब सरिहैं जु विसरि । कौने कह्योकहां
 छुनिआई किहि रुखरथकी धरि । संगहि सबैचलों भावबके नातरु
 सरिबो भूरि । पश्चिमदिशि यकनगर द्वारका सिंधुरह्यो जलपूरी
 सूरप्रयास क्यों जीवहिंवाला जात सजीवन सूरि ३०१ ॥ रागमलार ॥ सु-
 नुरी ऐसे जो हरि आवैं । निरखि निरखि वै बदन मनोहर नयनबहुत
 सुखपावैं । तैसेइ हरितवन तैसिय प्रयासघटा तैसिय बिच बग पंक्ति
 दिखावैं । तैसेइ मोर कुलाहल करते हरथि हिंडोरन गावैं । कब-
 हुंक हिलि मिलि खेलन के मिश्र सघन निकुंज बुलावैं । कबहुंक लैं
 संगसखा शैलचढ़ि मुरलि मलार बजावैं । बिकुरे प्राण रहत कैसे

करि बहु यतननि सधुभाषैं । जितिहि वधाणि चकत नरन प्रभुनिनि
 पहिले उठिभाषैं ३०२ आजु घन प्रयासकी आहुति । उपासजाये
 संचरे सखिरी देखि रूपकीआरि । इन्द्र धनुष नानो पीतजिहोरीना-
 मिनि हँसनि बिचारि । मनोबगपांति माल मोतिनकी चित्तबिचित्र
 निहारि । गरजत गगन मिरह सोविंदके सुगत अकसा सुनि रवारि ।
 सुरसकलशुभा सुमिरि प्रयासके बिलपतिहैं ब्रजवारि ३०३ ॥ रागधनाम्नी ॥
 अलिये बहुरि न कबहुं मिलेहरि । कमल नयन मिलियेके कारणाअ-
 पनो यतनरही बहुते करि । काहुनप्रकटकरी यदुपतिहों दुसहभिराश
 गई अबध्योदरि । धीर न धरै प्रेमदयाकुज तन लेतिउत्सास नीर लोचन
 भरि । बिनगोपाल भईहैं येधी ड्यों मछरी जलभिषा करी धरि ।
 सुरदासताते विरयकित भइ अब अह बियोग विरहसागर तरि ३०४ ॥
 रागसारंग ॥ ब्रजते पावसपै न टरी । शिशिर वसंत शरदगत सजनीजीती
 अवधिकरी । उनैउनै घन बरसत बहिरुपरिता सलिलभरी । कुमकुम
 कडजलकीच बहेजनु कुच युग पारपरी । तायेंबियसप्रकट प्रीयमकलु
 इतियोताप करी । सुरदासप्रभु कुसुम बंधुजनु बिरहिनि तरनि जरी
 ३०५ अबवे सधुपुरीहैं साधो । जिनको बरसबिलोकात नयनन युगहोतो
 पल आधो । तबबह कपाहुती हमऊपर नाखत नदीअगाधो । सुरदास
 अपने ब्रजके गुणा बस मानत अपराधो ३०६ हमैतैतदनंदन कियोगारो
 इन्द्रकोप ब्रजबहयो जातहो गिरिधरि सकल लकारो । राजहठ्या बल
 बढत न काहू निडर चगावत चारो । सगरेबिगरेको शिरऊपरबलको
 बीर रखवारो । तबते हमन भरोसो पायो केशिलगावर्त्त मारो । सुर
 दास प्रभु रंगभूमिमे हरि जीतौनृपहारो ३०७ ॥ रागधनाम्नी ॥ हरिसुख
 देखेबिनजान लागे बहुते दिना । कैसेकरि नयन राखों कान्हविना ।
 यतन कहाकरत सखी क्षणाहिं सिना । सिंह कैसेजीवन वनचरतलगा
 जोपै नाहींडरपत बचन रिना । अबकहा कहिप्रत सुरप्रयास सुना ३०८
 आजु बिरहिनी बिरहातुरहवैं केशव केशव रत्तरहीनासरकया क-
 तिलकरिकरि मन क्रमक्रम द्ययासही । संध्या शांति होजातिचलीउ-
 दिरहतन अंकगही । अतिअममलय कुमकुमारोवत सरिता सेजबही ।
 तनतलफत न सुहातकछू अबनयनन जोर बही । तो क्यों सुरहोय अब

शीतल पिया जियोग रही ३०६ ॥ रागकल्याण ॥ आवन कहिगये
 अजहुं न आये येतेदिन लाये । इतने दूरि गोपाललाल लिखि संदेशहु
 न पाये । चलतछितै मुसकायके मृदुबचन सुनाये । तेईमगठग मोदक
 भयेमन धीर धरनहरि तनछूके करि छिटकाये । जगमोहन यदुनाथ
 केशुगाजनि न पाये । मानहुं सूर तिहिजाजते घनश्याम सुंदर बहुरि
 न बदन दिखाये ३१० ॥ रागमलार ॥ सुन्दर प्रियाम पियाके आरत । स
 रखा सखीबाला प्रौढासब बासर रैनिसम्हारत । वेचकई सरउडशशि
 चाहत येषब उनहिं बिडारत । इनसेंकोलि बिलास रासरस सबके संग
 गोचारत । येतमचुर बिनमणि दक्षिणापत वे इनको अनुसारत । सूर-
 दासप्रभु रसिक मभुरबलवे युवतिन परगासत ३११ नैननलायेहैभरु
 कुंचे चह्नि टेरति आरतदुर कहिकहि गिरि धरु । गानकरत सींचत
 रुन्दावन नन्दको घर । कौन कौनकी दशा कहाँसखि ब्रजततपर ।
 सबैरहेपगि प्रियाम सुंदरमें नारीनरु । सूरदास प्रभुरहेसौन कहेउ सच
 प्रेमको भरु ३१२ जबजब सुरत्योकरत । तबतब डबडबायजलउ मँगि
 भरत । ज्योतुगमीन कमलदल ते चलिजलको अरत । पलककपाटन
 होयतो तोयनि करत । ज्यों जलबिन्दुइन्दु मुखते मानौ सुक्ताडरहरत
 सहजशिंंगार शोभा छबिहारोहरत । राधानयनचकोर राखिनंदनदन
 चन्दनजरत।सूरदासप्रभुतुम्हरे दरश बिनधीरनधरत ३१३ ॥ रागसारंग
 मैमन बहुत भांति ससुभायो । कहाकरो दर्शनरस अटक्यो बहुरिनहीं
 फिरिआयो । इन नयननके भेद स्वरूपन उरमहँ आनिदुरायो । मानो
 तिहि अभिमान सुपत हवै पलटो देन सिंभायो । लोक वेदकुल निदर
 निडरहवै करतआप मनभायो । मुखछवि निरखि बोधि निखंगलों
 हठि अपनपौ बंधायो । कहावे दूरिकहा बन घनयह अपने बलकर
 धायो । अतिविपरीतिहोत सूरज प्रभु सुरभियो मदन जगायो ३१४
 रागनट ॥ मेरे कान्ह कमलदल लोचन । अबकिबार मुखआनिदिखाव-
 हु कहालगे जिय शोचन । करतओट पावरहे नहिं कबहुं अरुसाखन
 की चोरी । अपने जिय नयनन भरि देखहिं हरिहलधर की जोरी ।
 यह लालसा रही मनमेरे बैठी देखत रहिहैं । गाय चरावन बहुरि
 प्रियामसें भूलिन कबहुं कहिहैं । एकबार मिलिजाह सांवरे अनत

न कहूँके ऊपर । क्योंहूँ आँखिनको सुखदीजै सुर पाहुने सूतर ३१५
 रागधनाश्री ॥ अबहरि भये कठोर । पूरवप्रोति बिसारि मोहन नव
 तन राचेओर । जबतुम वृन्दाबनते सिधारे धीरजरहेउ न मोर । बि-
 रहके बाणा लगाये मोहन बीधेउरकेओर । जन्मजन्मकी दासीतुम्हरी
 नागर नवलकिशोर । सूरदासप्रभु कबहुँ मिलहुगे कहारहे चितचोर
 ३१६ उतीदूरिते को आवैहो । जाकेहाथ संदेश पठाऊँ सो कहिका-
 न्ह कहाँ पावैहो । सिंधुकूल इकदेश कहतहैं देख्योसुन्यो न सतवावै
 हो । तहारच्यो लवनगर नंदसुत पुरिदारिका कहावैहो । कंचनकेसव
 भवन मनोहर राजा रंक न दृशा कवैहो । बहूँके सबवासी लोगनको
 ब्रजको बसियो नाहिं भावैहो । बहुविधि करत विलाप बिरहितीबहुत
 उपाव न चितलावैहो । कहाकरीं कहँ जाउँ सूरप्रभु को मोहिं हरिपै
 पहुंचावैहो ३१७ शरद प्रसन्नहूँ प्रयाग न आये । नाजानों रसवशके
 अबसर किन बिरहिन बिरमाये । अमल अकाश कुतुम जल फूले
 ऋषि नभ स्वच्छ जनाये । तनु तरिता सरिता जल उज्ज्वल अलिकूल
 कमल सुहाये । सूनीसेज तुयारतेज बिरहानल नन्दन आये । प्रीतम
 अंग संगसुखकारणा सजिसजि सेजसिराये । आनंदकन्द मकरन्दद्वन्द
 मिलि ग्राहक शरल गँवाये । हुतेमिलनकी अवधिसूरप्रभुभयेब्रजना-
 थ पराये ३१८ ॥ रागमलार ॥ सेसेसाई पावसकहतु प्रथम सुरति करि
 साधोजु आवैरी ॥ ध्रुव ॥ बरणा २ अनेक जलधर अतिमनोहरबेध ।
 तिहिसमय यहगगनशोभा सबनिते सुविशेष । उडतबक शुकटंदराज-
 त रतत चातकमोर । बहुभांति चितहित रुचिबढावत दामिनी घनघोर ।
 धरणा तनु दृषा रोम हर्यित प्रियसमागम जानि । और द्रुमबली बि-
 योगिनि मिलीपति पहिंचानि । हंसपिक शुक सारिकाअलिकुंजना-
 ना नाद । मुदित संगत मेघवरयत गतिविहंग बियाद । कुरज-कुन्दक-
 दम्ब कीबिद करणिका रसकंज । केतकी करवीर चिलक बसंतसम
 तरु मंज । सघन तरु कलिका अलंकृत सुकृत सुमन सुवास । निरखि
 नयनन होतमन साधो मिलनकी आस । मनुज मृग पशु पक्षिपरमिति
 और अमित जे नाम । सुख सुदेश विदेश प्रीतम सकल सुमिरतधाम ।
 हवैहै न चित उपाय शोच न कछुपरत बिचार । नाहिंब्रजवासी बि-

सारत निकटनन्दकुमार । सुनिहृदशा दयाल सुन्दर ललितगतिमृदुहा
 स । चारुलोल कपोल कुण्डलडोलबलित प्रकाश । बेगुकर कलगीत
 गावत गोपशिशु बहुपास । सुदिन कवयर्हाह आँखिदेखैबहुरिबाल
 बिलास । बारबारहि संधिरहति अति विरह व्याकुल होति । बातबेगि
 सुलगै जैसी दीन दीपक ज्योति । सुनिबिलाप कृपाल सूरजदासप्राण
 प्रतीति । दरशदै दुखदूरि कीन्हें सहिन सके उरप्रीति ३१६ ॥ रागके
 दारो ॥ प्रयासजूहों निजुकै बिसारी । सारग चितवत सशुभासनावतका
 गउडावत हारी । नाजानो सखि कौन हेतु ते व्याप्यौयह दुखभारी ।
 सूरदास प्रभु तुम्हरेदरशबिन कामबिषम शरमारी ३२० ॥ रागमलार ॥
 कहा परदेशीको पतियारो । प्रीति लगायचले मधुवनको बिकुरे दुख
 दीनोअति भारो । उग्रोजलहीन मीनतलफतहै तैसेव्याकुल प्राणहमारो ।
 सूरदास प्रभु तुम्हरे मिलनबिन दीपक जैसेभवन अँध्यारो ३२१
 चलहुँधौ लै आबहिं गोपालै । पायँ पकरि कै निहुरि विनतिकहि
 गहिहलधरकी बांह बिशालै । बारिक बहुरि आनि दिखरावै नन्द
 आपने बालै । गायन गनत गोप गोपीजन सीखत बेगु रसालै । य-
 द्यपिसहाराज सुखसम्पति कौनगलै मोतिन अरुलालै । तदपिसूरआ-
 करयि लियोसन उर धँधुचिनकी सालै ३२२ ॥ रागमाह ॥ तुम्हरो
 गोकुलहो ब्रजनाथ । घेरैउहै यहमदन महाभट चमु चतुरंगीसाथ । गर
 जत अतिगम्भीर गिराजनु जातगयन्द अपार । धुरबाधूरि उडत रघ
 पायक घोरनकी खुरतार । चपलाचमचमाय आयुधवर भाँतिबकनि
 आकार । परतनिशान घाउ तमकतनभ कटकटाति तिहिबार । सारे
 सार करत दादुरअति पहिरेबहुत सनाथ । हरेकवच शिरमुकुट बाँधि
 कै बरहि मिले सब आय । कारेपट पहिरे पिक चातक कहत भाजि
 जनिजाहि । उत्तरि २ वै परत आनिते योधा परम उद्धाहि । भयो
 घायल धीरजदुहुं बहियां दुरजन उतत ददाल । हबकतहाथ आयगयो
 थोथा अर्धाकरहैउ उरशाल । भाल खण्डकारी मानोरथ आन्योभो-
 लीं घाल । रह्यो हँकार सुखेत सुरमा सकतरही उरशाल । अतिहि
 ब्रियोगजानि किरपानिधि आय सकतिहिगाउँ । कापै जाउँ अनाथ
 कृपानिधितुमबिन नाहिनटाउँ । नन्दकुमार यशोदानन्दन कमलनयन

बलिजाउँ । पड्यो मोहिं जगाउ दिवको सूरदास मेरोनाउँ ३२३ ॥
 रागमलार ॥ बिहुरनजनि काहुसोहाय । बिहुरनभयो राम सीताको
 क्रमसिति खोजी देय । बिहुरन भयो मीन अरु जलको तजफि
 तलफि तनखोय । बिहुरन भयो चक्रई चक्रवा को रैन गवाँई
 रोय । रुदन करत बैठी मन सहियां बात न बूझै कोय । सूरदास
 स्वामी को बिहुरन बनत उपाय नसोय ३२४ बलैया लैहां हो बीर
 बादर । तुम्हरे रूप सम हसरे प्रीतन गयेनिकट जलसागर । पालागों
 द्वारिका सिधारे विरहित के दुखदागर । सेषोसंग सूरके प्रभु के
 करुणाधाम उजागर ३२५ ॥ रागभारंग ॥ उपमा न्यायकही अंगनकी ।
 चले मधुपुरी क्यों फिरिआवैं शोभाकोटि अंगनकी । मोरमुकुट शिर
 सुरधनुकी छवि कुरिरहे दरशावैं । जो कोउकरै कोटि कैसेहुं नेकहु
 छुवन न पावैं । अलक भ्रमर भ्रम भ्रमत सदा बन बहुबेली रसचाखैं ।
 कमलकोशवासी कहियतपै बंशवंश अपना मनराखैं । कुण्डल मकर
 नयन नीरजसे नाश शुक कविकुल गावैं । थिर न रहे सक्छे निशि
 बशाहवै पंजर रहिकै बेगामुनावैं । भू धनु प्रागाहररा दशनावलि हीरक
 अधर सुबिम्ब । सहज कठिन संगति बुधिहर्ता तहँ कीन्हों अवलम्ब ।
 भुजा प्रचण्ड महारिपु मारक अंश सुक्यों टहराइ । तामें सप्त छिद्रयुत
 सुरली मनुहर मंत्र पढाइ । कटिकेहरि पदगति सुहंस सम पीताम्बर
 तनुहै परधान । मृगीबासगति शिथिल प्रेमपथराखि अबधिबश प्राण ।
 सूरदास शोभा चित चितवत उपज्यो उत्तटि बिचारानिरुपसरसपीडो
 तन ३२६ लिखे नहीं पठवत हैं बोल । हैं

लागत है बहुमोल । हम इहि बार प्रयासपर

लेख बीच बिरहको जोर । सूरदास प्रभु हमरे मिलनको हृदय करेउ
 जुकटोर ३२७ कौन सुहागिलसों मनुमिलिहै वा मधुकरके सीत । दिन
 दशरहि मथुरा हू तजिहैंमोमन यह परतीत । ब्रजते सबन क्रियो ज्यों
 औरैके तेऊ दिन बीत । राधामुख सुख यशुमति लालन तन भये ग्रंथ
 अबीत । घरघर पुरपुर बनबन बीधिन इहै हिलगके रीत । सकौसगा
 कलपरी नतबहुं मुखसुख माधुरिपीत । नहिंकोउ शिरपर नहिं काको
 डरनहिं लोगनकी भीत । नातरु काज करहिं क्यों सेमे जानी विशुणा

तीत। सुमिरतनाम नृपति पदवीको सुनतबचन अतिशीत ।

कहिये दशादेहकी सुरकिरिया नवनीत ३२८॥ रागमलार ॥ नयनानशा
धौपैरहीनिरखत बदन नन्दनन्दनको भूलि न लपति लही। पचिहारी
इनकीरुचि कबहुं मैं परमिति नलही । तन बिसखो कुललाज गँवाई
जगउपहास सही । सतेपर मन्तोय नमानत मढ्यादा नगही । सूरदास
इनलोभिनके संग कबलौं फिरावही ३२९॥ रागसारंग ॥ कहौ कैसेकै दर्शन
पाऊं । सुनहु पथिक बहि देश द्वारका जो तुम्हरे संग आऊं । बाहर
भीर बहुत भूपनकी पछत बदन दुराऊं । भीतर भवनभोग भासनिभर
त्यहिठांकाहि पठाऊं बुधिवल बिधि संयोग यतनकारि तन प्रियपै पहुँ-
चाऊं । ब्रज यमुनातट केहि रसिक बिनु किहि यह दशा सुनाऊं ।
यद्यपि सूर जाउं प्रभुतारस भवनको भलो मनाऊं । नवकिशोर मुख
सुरली बिन इन नयनन कहा दिखाऊं ३३० ॥ रागगौरी ॥ तुम्हरीप्रीति
कि धौं तरवारि । दुखिधार धरिहती जुपहिले घायल सब ब्रजनारि ।
बिलपत परत सँभारत पुनिपुनि बदन मुधानिधि बारि । करी समर
निजखेत लुन्दावन रगाहु नमानो हारि । अब यह कृपा घोष लिखि
पदवत कीन्हीमदन गृहारि । कलु अवशेषरह्यो सूरज प्रभु सोउ जनि
घालौमारि ३३१ बालहमारीमानो जोतौ । आवन कहौ बहुते दिनलाये
तोरो उनहीं कोतौ । सकइ बोलनि केलि आपनी खोइइई बेवाती ।
तातेपरमिति यही ठौरहै चाहे बचन सोवाती । इतनी कहै कोर धरि
राखै योगआपने घरको । पैजखैचि भेटन आयेहौ तनऊजारीखरको।
नन्दनन्दन लैगयेहमारी याव्रजकी सबऊब । सूरप्र्याम नहिंरहत हृदय
ते इयों ऊजरखेरेकी दूब ३३२ सपने हरिआयेहो किलकी । नींदनु
सखी भई रिपु हमको रहि नसकी रति तिलकी । जोजागोतो कोऊ
नाहीं रोकेरहत न हिलकी । तब फिरि जननिभई नख शिखते दीप
वाति इयों शिलकी । पहिलीदशा पलटि लीनीहै त्वचा त्वचाकि त
पिलकी । अब कैसे सहिजात हमारी भई सूर गति शिलकी ३३३
रागबिलावल ॥ कहाँलो सनराखिये बिरसाइ ।

प्र्यासमुता सुत घरनी आइ । हरिबाहन इव तासु सहादर
उदित सुरकि सहि जाइ । गिरिजापति रिपु नख शिख व्यापल

सुधा पिय कथाछुनाइ । बिरहिनि बिरह आप बगदीन्हे लैकेकमल
जनु पाइनु लाइ । बेगै मिलौ सूरके स्वामी उदधि सुतापति मिलिहैं
आइ ३३४ महादुखित दोउ मेरे नैन । जा दिनते हरि चले मधुपुरी
नेक न कबहुं कीनो प्रैन । भरेरहत अति न निघटत जानत नहिं कब
देन । महा दुखित अतिही भ्रममाते बिनु देखे पावत नहिंचैन ।
जो कबहुं बलको नहिं खोलत चाह न चाहत मुरली सैन । छांडत
सगा में ये जो शरीरहि रहिके बियाजात हरिलैन । रसे नयन
ग्रहे इन मिलि जैहैं और न भायें बैन । सूरदास प्रभु जबतेबिछुरे तब
ते सब लागे दुख दें ३३५ ॥ रागमलार ॥ क्यों जिवहि कमल कांदो
हीन । प्रीतिजिनसोंहुती सजनीबिछुरि तितदुख दीन । कूलसागरमीन
तलफत हैं तहँ लसतछीन । प्रियामबारि सुलई बिधिहरि असलकमल
अधीन । नयनअंबुज और शशिगगा दहतहैं मिलितीन । सूरदासप्रभु
बिनु ऐसे ब्रज जो चीन्हत नहिं ताहि प्रवीन ३३६ साईरी मेघ गाजै ।
मनहु कामकोपि चढेउ कोलाहल कटक बढेउ पिक चाहत जयजय
निशान बाजै । बरगाबरगा बादर बनायेते बाजिगज बिराजै । दामि-
निकरबार करनि कंपत सबगात डरनि जलधर समेत सैन्य इन्द्रधनुष
साजै । ऐसे अलिलाय धीर बिगत चीरत नयनलाजै । अबलनि अके-
ली कर अपने कुलनिते विसरी अवधिसर सकल अंगमें हहराइभाजै
३३७ साईरी कत कौरनि कोनात । देखोइन्ही कमलमधुपनकीक्षणा
नहिं प्रीतिघटात । कोइल कपिशुक बायस बलिछलि नाहिनउहिबन
जात । यद्यपि सुधाराहु शशिपीनो बैठि सकहीपात । सुतनितनेम यज्ञ
व्रतकीजत बहुबिधि नीकीभांत । तिनहैपायसुख मन मोहितजिय क्यों
जननी जगखात । इनको कहा परेखो कीजत अबला बल मुखसात ।
सूरदास में तबहींजानी जबकर बाजी तांत ३३८ ॥ रागकेदारी ॥ सखीरी
श्यामक्यों रूसेजाइ । औगुगा हमजुंकिये मेरेध्यारे सो क्यों न देहु ब-
ताइ । प्रीति अचेतभई जो हमते थोरीसो उपजी सतभाइ । पांय परौ
बिनती कौरौ जो कोउ श्याम मिलाइ । थोरे दिनकी बयक्रम अबला
कासोरहेलपटाइ । चन्द्रकीरप्रिम अगनिहवै लागी तारेगनतबिहाइ ।
बदन मलीन भई सबगोपी छांडि चले यदुराइ । नितप्रति भजनकरत

ही भोको चरणा कमल चितलाइ । चोटीपर कहा कटकई नाथव जे
तुमचले विसाइ । कानन कंडल अरु वनमाला सोखबिक्यों विसराइ ।
सूरदास चातकभइश्यामा पिउपिउ रसना लाइ । नीरदश्याम सुखदसौ
भगतनहै कोउआनि मिलाइ ॥३३६॥ सखीरी श्यामघटावेआइ । जिहि
दिशिगोचारत मोहनबल उमगिउमगितितधाइ । यकितभईचहुंदिशि
सुरली सुनि मोहन जबहिं बजाइ । तैसेइ नील बपु निरखि निरखि
भुक्ति बरखत घन बलभाइ । चकित रहीं सुरभी जित कित सब तजि
हंग प्रेमालुभाइ । मानहु कलित डंडीर पिण्ड रुचि धरे अंचल यक-
चाइ । तब दल छबिचिचि बिराजत भ्राजतहै बिधुमधू सुहाइ । मनहु
नीलनग सुरंग सरापट मनसह नाल गुहाइ । सुरति भूयअति खलत
बिगतकरि अंगसुधरनि बहाइ । मनहु बियादिशि नगरदामिनी पटान
लुहित दुसहाइ । कुलपदगुंड स्वच्छ मुक्ताफल काटि केयूर बनाइ ।
उभकत चगत हंस सारस मानो पावस मगहिं जलाइ । चातक मोर
अकेर भेषपुनि पिकसमरेश सुनाइ । फरिसरिा लियेफिरत चातक
उ्यों मनु रहे ध्यान बिनाइ । उड़पति बिधुद्युति घनलों गीधे कुंहकत
सरस मलाइ । जैसे बक शोभित कोमलधर हिरत फिरत बिसलाइ ।
सुफलक राज कानन यह राजत गाजत गगन गोहाइ । कौंधत चपल
छटा दशहुंदिशि डोलत मदन दुहाइ । बिन गोपाल सकल ये हमको
बिद्य सम लागत माइ । सूरदास प्रभु मिलहु कृपाकरि गोपिन लेहु
जिवाइ ॥३४०॥ सखीरी दुसह कहे क्योंसहिये । यह घनघटा रैन पिक
बोलत बिरह दहन दुख दहिये । शीतकल दामिनि बैरनिभइ भेकनि
भीमशूल सहिये । नींद जो गई सिराय जलज उ्यों तिल विश्राम न
गहिये । नाहिन हितकरन कोउ अपने जासों ये दुखकहिये । मदना
तीर गंभीर नीरपर विनुसुख नाउ उ्यों बहिये । पलक न मिलत छुटी
किहि औसर शोक सरल तन तइये । कोकिल काक मोर पुनि कुंह-
कत हरयत कहे न सहिये । जो कबहुं याछपद निरन्तर रहत परम
लागत जोहिये । तुवकह सुरति भूठ वदतसब रथ न होत विनुपहिये ।
बिकल मथान राधाथ मन्दमति उ्यों उ्यों अवधि बतइये । सुरश्याम
बियोगिनि बिह्वल यकोआवत न हिये ॥३४१॥ रागमलार॥ हरिकीप्रीति

उरमाहँ करिकै । आयेअकूर लैचले प्रयासको हितनाहीं कोउहरिकै ।
 कंचनको रथ आगे कीन्हो हरिहि चढायो वरिंदे । मूरदास प्रभुसब
 सुखदाता गोकुल चले उजरिकै ३४२ वारक जाधो गिलि साधो ।
 कोजानै जिय छूँट जायगो आसरहै जिय साधो । गहुनहु रसनावाके
 आवहु देखिलेहु पल आधो । मिलहीमें बिपरीतकरीविधि हातदरश
 को बाधो । सोसुख शिव मनकादि न पावत जो सुख गोपिभ लाधो ।
 मूरदास राधाबिलपतिहै हरिको रूपअग्राधो ३४३ हरिहृष काहेको यों
 बिसारी । प्रेमतरंग बूझत ब्रजबासीतरल प्रयासताई हारी । अनुसाधव
 पिक बचन सुधाकर मसुतमदन गतिभारी । सहिनहिंसकतबिरदजासो
 तन आग मिलाकन जारी । उग्रों जलथाकेमीन कहाकरै त्योंहरिलेलि
 अब हारी । विजय अधोमुख लेन मूरप्रभु कहियो बिपतिहमारी ३४४
 जोपै यहै हुती उनकेसन । तौ तब कमलनयन हमकारसा कहाकैसेब्रज
 इते यतन । विजयल व्याल वरुणा बरयानल अखिलअशुभ हतिराखे ।
 संततसंग रहत काहुमिस निठुर बचन नहिंभाखे । उन बिपदन कंचित
 जो करते कहुन जोय सहेती । कहा कहांउननिठुरप्रयासकोकीनीज्यो
 घर रेती । कहिये कह जो सब जानतहैं यातनकी गति सेती । मूरदास
 प्रभु हितसों चित्तके बेगि प्रकट बीतैसी ३४५ त कहि धैर्यी कब हरि
 आवहिंगे । सँगाकिनि चलहु गोवर्द्धनधारी मुरली शब्द सुनावहिंगे ।
 अपने वे रँगमहलमें ठाढ़े आपहि आप चिताबहिंगे । मूरदासप्रभु बेगि
 किन मिलहु कमलनयन सचुपाबहिंगे ३४६ ॥ रागमेरठ ॥ सर्वोदीनन्द
 को गोपाल हमसों गयोतृणा ज्योतिरि । मीन जलकी प्रीति सजनी
 नाहिं निबही ओरि । कहाभयो आकाशगुडिया कर हमारेडोरिमि-
 लनको ब्रजनाथ ऊधो मिले गोरि बहोरि । कबरीके चन्दनराचेप्रीति
 नातो ओरि । मूरहीरा हाथ टारेउ रही समुद बिरोरि ३४७ निशिदिन
 बरयत नयन हमारे । सदा रहतपावसकहत हमको जबतेप्रयाससिधारे ।
 दृग अंजन लागतनहिं कबहुँ उरकपोल भयेकारे । कंचुकिसुखतनहिं
 सुनु सजनी कुचबिच बहत पनारे । मूरदासप्रभु अंबुवन्द्योहै गोकुललेहु
 उबारे । कहँलगाकहों प्रयासधनसुन्दर बिकल होत अतिभारे ३४८
 आछे कमल कोशरस लोभी है अलि शोचकरै । कनकयलिकातवदल

के ढिग बसते उभकिपरै । कबहुं क पस सँकाचिसौनहवै अंबु प्रवाह
 भरीकबहुं क कम्पितचकितनिडरहवै लोलुपता बिसरै । बिधुसमूहसं-
 डलमेंराजत असृत अंगभरै । सतेउ यतनबचतनहिं तलफत बिनमुखस्वर
 उचरै । कीर कसठ कोकिला उरगकुल देखत ध्यानधरै । आपन कौन
 पधारो सुरप्रभु देखे कह बिगारै ३४६ आये नहिंसाई कोई धौ । अबतो
 सखी संदेश कठिनभये नयन यक्रेमग जोई धौ । मथुराते जायनिवास
 सिंधिकियो प्राण जीवनधन सोईधौ । हारावती दूरि अतिमारग कैसे
 पहुंचै तोईधौ । नाहिन मिलन निराश मृतक भई ब्रजवासिन कहि
 रोईधौ । सूरदास स्वासी यह जानो जिय अपचैन सबन होईधौ ३५०
 ब्रजकहि पठय सुशील दयो हम पुनि मन मुनिमत राखै । स्नेहनेह
 पुरनारि सकल अति रतिकारि कबहुं न भाखै । ज्यों मुनि हम अकु-
 लात पांति दुख त्यों कोउ और न पावै । सूर संदेशो कहियो हरिपे
 तापस मति बिसरावै ३५१ मुनिमुनि प्रभुपै कछु न रहेउ । बैठिरहेजै-
 सेही तैसे आनंद ब्रज उदयो । सगा अकुलाय पाय बिरहाडवर पुनिरस
 रास भयो । सूरज सुभट महामुनि ज्ञानी कौने ध्यान लहेउ ३५२ ब्रज
 तौ तुमबिन बहुत बिहाल । प्रेमअग्नि कैसे सहै पद्मिनि क्यों सहैसौ-
 तिन शाल । कुशलकर्म केशवके मुनिमुनि पाणि लगावतभाल । सूरज
 तपत दगत सीताबलि छुटी नीर छुटि जाल ३५३ ॥ रागसारंग ॥ साधव
 भली नहीं यह रीति । सके सखा ब्रजजन बिन तुमहीं और जनावो
 प्रीति । बीथी लता ललित कुसुमित बन श्रीराधा रस गीति । यहसुख
 देखि दूसरौ चाहत कहयह भइ विपरीति । बेगु बिसारि धनुष कर
 लीन्हे शत्रु हननकी भीति । राजअभिमान और राजाबलि असकारि
 करिके जीति । हमरो जीवन तनमन दाता सूर सनेह कि नीति । कहा
 करिहौ करुणाकरि पाछे अर्वाध किते दिन बीति ३५४ ॥ रागगुजरी ॥
 मोहन सांख्यो अपना रूप । ज्यों ब्रजवास अचेतहि बैठी ताबनिहानि
 अनप । मेरो मासु मेरो लोचन अलि लैजुगये धुपि धूप । ताऊपर हम
 लेनपढाये थालि धरेउ ज्यों सुप । अपना काज सँवारि सूरप्रभुहमहिं
 बतावतकूप । लेबादेई घरीघरीमें कौनरंकको भप ३५५ ॥ रागकाहरो ॥
 गो रिपू ता रिपू ता सुत आयुध प्रीतम तहां निन्यारे । सो विरंचि

सम्भव जा तनते तहँ रहे प्राणा हमारे । सो बरजतही गवन कियो
हटि स्वाद लुब्ध रस आल । कुन्तीनन्द तात मुख जोवति कलमलाइ
अति प्याल । भोर भये पशु बन्धन छूटे ज्यों विरहिनि रति मानै ।
यहि बिधि मिलहिं सूर को स्वामी चतुर होय तौ जानै ३५६ ॥
रागसारंग ॥ बिछुरेउरी मेरो बाल सँघाती । निकसि न जात प्राणा ये
पापी बिहरत नाहिं न छाती । होतिहि समय मथति दधि भलीभरि
यौवन सदमाती । जो जाने हरि चलतमधुपुरी लाजछाँडिसँग जाती ।
ढारत नीर नैनभरि सुन्दरि नहिं सुहात दिनराती । सूरप्रयास मिलिबे
कोसखीरी बेगिपठैलिखिपाता ३५७ ॥ रागकेदारो ॥ कहाकरोहोअपने
हारे । जब गोपाल गये गोकुल ते मथुरा जाय कंस उन मारे । बसुदेव
पिता देवकी माता वैजु कहत जगदीश हमारे । मिलहु न जायभाइके
नातेसेवा बहुतकरी हमबारे । पालागों ऊधो यह कहियहु नैन सजल
भरि ढरत पनारे । सूरदास प्रभु तुम्हरे बिछुरत सेसे भये कोखिके जा-
रे ३५८ बोलिरी सखीचाहक पिक मधुकर अरुमोर । दिनहिंदिनको
न सहैं बिरहद्वयथा घोर । नलिनीदल दूरिकरौ मृगमदका पंक । अब
जनितन राखिलेहु मनसिज शरशंक । सजि सुगन्ध सुमनसेजशशिसें
कहिजाय । जैसेहि यह बीरकर्म देखहिं सब आय । लाउमलयमासत
अरु अलु बसंत संग । पूजत सखि काम मर्म सन्मुख रगारंग । सूरदास
प्रभु कृपाल कोमल चित गात । ताही सगा प्रगट भये सुनत प्रिया
बात ३५९ ॥ रागअडानो ॥ सबन अबध सुन्दरी बधे जनि । सुक्ता माल
अनंग गंगानहिं नवसत साजे अर्थ प्रयासघन । भाल तिलक उडपति न
होय यह कबरि ग्रंथि अहिपति न सहसफन । नहिं बिभूति दधिसुत
न कंद जइ यह मृगमद चन्दन चर्चित तन । गगन चर्मयह असितकंचु
की देखिबिचारि कहां नन्दीगन । सूरदास प्रभु तुम्हरे दरशबिन बर
बश कामकरत हठ हमसन ३६० सुनु सखि प्रयास कहांगये मेरे आगे
ते । चैंकि परी सपने हरि देखे बिलपि बियोगिनि जागेते । बारों ये
आखि उधरि दोउ आई अधिक प्रीति अनुरागेते । मिथुनकोक जैसे
मिलिबिछुरत रजनि बिमुख भ्रमभागेते । एकहों जरिजूरही पहिलेही
विधिस बिरह दब दागेते । सूर प्रयास बिन अब क्यों जीजै पञ्च बाणा

शरलागेते ३६१ ॥ रागमलार ॥ सजलजलद वानैतवदरिया बधनविरहिनी
 आई । मास मोर करत चातकपिक चढिनग टेरसुनाई । दामिनिकर
 कर बारसेहथी प्राथक बंद बनाई । मन्मथ फौजजोरि चहुंदिशि
 ब्रजसन्मुख हवै धाई । नदी सुभद कैसेकहि पठऊं पथिकन बाहिदिशि
 जाई । यक हम दीन दुखित माधव बिन दूजे गरज डराई । सुनो घोष
 बैस तकिआयो शक्त निशान बजाई । गोवर्द्धनधर दूरि सूर छनि होत
 आज सहाई ३६२ अब ब्रज सनहुं अनाथ कियो । सुनुरीसखी यशोदा
 नंदनलिखि संदेशदियो । तब वह कृपा प्रियामसुंदरकी करगिरि टेक
 लियो । करिप्रतिपालगाय गोपिनको कालीगरलपियो । यहसबदोष
 हमारोबिहुरत फाटिनगयोहियो । सूरदासजग नंदनंदनबिनु कारणा
 कौनजियो ३६३ हरिकोमारग दिनप्रति जोवति । चहुंदिशि चितै
 चकेरचंदज्योसुमिरि २ गुणारोवति ॥ लिखिन पढाय देहु नंदनंदन
 आनहुकागददोवति । जबतेतुमबिहुरे सुरलीवर नेकुनींदनहिसेवति ।
 कहँलगिकहौ बिकलतातनकी बिरहव्यथा भरिभोवति । सूरदासप्रभु
 तुम्हरेदरशबिनु जन्मअकारथ खोवति ३६४ ॥ रागनटा ॥ हरिबिहुरतप्राणा
 निलज्ज रहेरी । प्रियसमीप सुखकी सुधिआवै शूलशरीरन जाति
 सहेरी । निशिवासर टाढीसग जोवतियेदुख हमनसुनैचहेरी । गवन
 करत देखननहिंपाये नयननीरभरि बहसिबहेरी । तेबातैबसिरहौहिये
 मेंउलटि अवधिकेबचन कहेरी । सूरप्रियाम बिनुपरब बिरहब्रशमानहुं
 रबिशिशिराहु गहेरी ३६५ ॥ रागसारंग ॥ बेगिनिकुंज चलहु नंदनंदन
 तुमबिनुराधा निपट निरंग । सन्ततहितकरते अनहित रिपुसदृशहोत
 उनके सबअंग । बहतमन्द मलयानिल ताको प्रकटित कुबरी भीम
 भुजंग । पिकचातक शुक्धुनि शंकासनअवलोकत भुवधनुयहुपांग ।
 अतिगौरंश प्रियामत्तासो मिलिउभयउर अधिक उतंग । नाहिन आवत
 निकट नपरशत शिवशिव भ्रमकरिडरतअतंग । अंजन राहुसुपनयन
 में निरखतही बिधुको मदभंग । सूरदुसांघि रहेउ सजनीतन अबनहिंरहे
 प्रियामबिनुसंग ३६६ दूरिकरहु बीणाकर धरिबो । मोहेसृग नाहींरथ
 हांक्योनाहिंन होत चन्दकोढरिबो । बीतीजाहि सोईपैजाने कटितहै
 प्रेमफांसिके परिबो । जबतेबिहुरे कमलनयन सखिरहतन नयननीर

को गरिबो । शीतलचंद अग्निममलागत कहिये धीरकौन विधिधरि
बो । सूरदासप्रभुतुम्हरेदरश बिनु सबभूढा यतननि कोकरिबो ३६७
भयोनिजनयन अनाथ हमारे । सुन्दरश्याम बहांते सजनीसुनियतदूरि
सिधारे । बेजलहैं हममीनसखीरो कैसेजीवहि न्यारे । हमचकोरचातक
अंबुदतन सुधाबरयि प्रतिपारे । मधुवनबसत आशदरशनकीजोइजोइ
मगुहारे । सूरश्यामकीनीविधिसेसीमृतकहुंतेफिरिमारे ३६८ दिनहींदिन
कोसहैबियोग । नाहिनथहशरीरसखिमेरो अतेबिरह जु रियोग । सजि
थीकुसुमसुगन्धसेजरचि बसनकुमकुमाबोरि । नलिनीदलनि दूरिकरि
उरतेकंचुकिकेबँदछोरि । जनिबरजेवनवदंत मोरपिक मधुपनिसोंकहि
आउ । उदित चन्द चन्दन चढायदल विविधसमीर बहाउ । रतिप्रिय
नामश्यामसुन्दरको अवगासनाय सुनाय । तोदेखत तनहोमि मदनमुख
मिलिहैंसाधवजाय । सूरसकलघट अंतर्हामी जानियुवाँतिकी रीति ।
तबहीं प्रकटभये नंदनन्दन मुमिरिपुरातनप्रीति ३६९ सकुचत कहिन
सकतगुप्त हृदयकीबात । सकत बचन अनागत कोऊ कहिजुगयोअध
रात । रजनी घटेन सूरप्रकाशे कबउठिदेख्योप्रात । सूरदास प्रभुसँगते
बिहुरेको लावै कुशलात ३७० तब न विचारीरी यहबात । चलत न
फँदगही मोहनकी अबढाही पछितातानिरखि २ मुखरही मौनहवैथ-
कितभई पलपात । जबरथभयो अदृष्टि अगोचर लोचन अतिअकुलात ।
सबैअजान भईवहि औसर ढिगाहि यशोमतिमात । सूरदास स्वामीके
बिहुरे कौड़ी भरिन बिकात ३७१ ॥ रागमलार ॥ कोकिल हरिकोबोलि
सुनावो । मधुवनते उपटारि श्यामकहँ यहिव्रज लैकर आवो । याचक
शरणा मुदेतसयाने तन मन धन सबसाजु । सुयशविकात बचनकेबदले
क्यों न बिसाहत आजु । कीजैकछु उपकार परायोयहैसयानोकाजु ।
सूरदासप्रभुकहँयहि अवसर बनबन बसंतविराजु ३७२ यहिवन मोर
नहीं येकामवान । बिरह खेद धनु पुहुप भूँ गगनरितेतेरयारिपुसमान ।
ल्योघेरिमनमृग चहुँदिशि ते चूकअहेरी नहींअजान । पुहुपसैन घन
रचित युगलतन क्रीड़तकेशव बननिधान । महामदन मुदित प्रेमरस
उसगिभरे मयमें न जान । यहि अवश्याम मिलेसूरप्रभु बदरेउनागदे
जीवदान ३७३ आजुवन मोरनि गाथोआई । जवते अवगा सुन्यो सुनि

सजनी तबते रह्यानि जाई । ब्रजते बिछुरे सुरलिसनोहर मनोव्याल
 गयोखाई । औयधि बैदगासुरी हरिविनमानेनसंवदुहाई । चातकपिक
 दुखदेतरेनिदिन पिउपिउ बचनसुनाई । सुरदास प्रभुतोपैजीऊं जोहरि
 मिलिहैं आई ३७४ बहुरि बनबोलनलागेभोर । करत संहारनन्दनंदन
 की सुनिबादरकीधोर । जाकोपियपरदेशसिधारेउ सोजियपरेनिदोर ।
 मोहिंबहुत दुखहरि बिछुरेको थकित बिरहके जोर । चातकपिके
 चकोर पपीहा येसबही मिलिचोर । सुरदास प्रभुबेगि मिलहु किन
 जनम परतहै बेर ३७५ ॥ रागकेदारो ॥ यहशशि शीतल काहेते कहि-
 दतु । मीनकेत अंबुज आनन्दित ताते तोहित लहियतु । एक कलंक
 मिट्यो नहिं अजहूं मनहुं दूसरो लहियतु । यहिदुखतेघटत बहतनित
 निशानींद रिपुगहियतु । बिरहिनि अरु कमलनि वासनि कहूं अपका-
 रीरथनहियतु । सुरदास प्रभुमधुवन गवनेतौ इतने दुःखसहियतु ३७६ ॥
 रागसारंग ॥ हरिमें हरिनखकहिजुगये । हरिदरगत हरिसुदित उदितह-
 रि हरिब्रज हरिजुलये । हरिरिपु तारिपु तारिपुको सुत हरिविनुअ-
 धिकबये । हरितनया शोधित जलदहमहहरि अभिमान गावाये । अब
 हरिबदन किता कुविजाहरि सुरदासमनभाये ३७७ कहारहेउ माई
 नंदको मोहन । वह सुरति जियतेनहिं बिसरति गयोसकलजगसाहन ।
 कान्हबिना गोसुतको चारे कोलयावै भरिदोहन । साखनखातसंगवा-
 लनके औरसखा सबगोहन । जोइर सुरति करतिहां सखिरी तेईअ-
 धिक मनमोहन । सुरदासस्वामीके बिछुरे क्यों जीवहिं इनकोहन ३७८ ॥
 रागमलार ॥ सखीरी हरिविनुदुखहैभारी । सिंहक सुतहिभूयगानिकट
 जैसे तैसी गतिभई हमारी । सिबिरबधूअरि काहे निवारति पुहुपध-
 नुयके विशेष । चक्षुअवाउरहार वासते अछिन दुतियवपुरेय । घटअछ
 असन समयसुख आनन अमीगलितजैसेशेख । जलधर व्यौस अंबुद्धत
 मुंचत नयन होइ बदलेख । द्विजपति प्रभुमोहिं आनिमिलावहु हरत
 आरत जानि । जैसेहरिहि कबन्ध प्रकटभयो हरिअनंद रतिमानि ।
 घटआनन बाहन काननमें धनरजनी तहवाढी । सुरदासमिलिरसिक
 शिरोमणि सुनिचाहक पिककाढी ३७९ हमते कमलनयनभये दूरि
 चलनकहत मधुवनहुते सजनी इननयन का मूरि । चलतकान्ह सब

देखन लागीं उडत न रथकीधूरि । सूरदास प्रभु उत्तर न आवैं नयन
 रहे जलपूरि ३८० सखीरी हरिको दोष न देहु । तातेसन पावत
 जो इतोदुख मेरेहि कपट सनेहु । बिद्यमान अपनेही नयनन सुनो
 देखत गोहु । ते सबये व्रजनाथ बिनाउर फट न होत बड वेहु । कहि
 कहि कथा पुरातन सखिरो अब अतिअंत न लेहु । सूरदास तन यों
 बकरोगी ड्यों फिरि फायन मेहु ३८१ ॥ रागसारंग ॥ बीरबटाऊ ठाढ़े रहि
 यो । जबहीं गवनकरो मधुवनको हमरो संदेश प्रयास सों कहियो ।
 बहुती कहा लिखौ पतियामैं अंचरा बांधिकमल करगहियो ॥ सूरदास
 प्रभु सखीतुम्हारी तुमहो चतुर बदन यह लिखियो ३८२ ॥ रागमलार ॥
 अब दल उठत बलाहक जोर । मनु मयमत्त मदन संग दन्ती आवत
 ब्रजपर भोर । बाजीबंक समीर सुरयनभ नहेउबारा वगडोर । सारथि
 सुमन सुमंत्र महाबल हांकतहैहो धोर । रथीकाम धनुपहुपबाणा सुर-
 पतिशासनशिरोभोर ॥ समरशोर सन्मुखब्रजसाध्योशायकचित्तकठोर ।
 बंदी बद्ध कोकिला भूझी दादुर चातक भोर । सूरदास प्रभु ऐसे अव-
 सर राखहु नंदकिशोर ३८३ ॥ रागटोड़ी ॥ परमसुखद शिशुताको नेह ।
 सोजनि तजहुदूरिके वासे सुनहु सुजान जानगतिथेह । भँवरकुरंगकाक
 अरु कोकिल जनिपतियाहु चितैतुमदेह । ऊधोअरु अक्रूर क्रूरकृत
 उपवन कुटिल कियेरचिगेह । येहौबिनती लिखीकृपानिधि सोउआ-
 दरकरिलेहु । सूरदास प्रभुकों न मिलहुअब तो तनमनफायनकेमेहु
 ३८४ ॥ रागसारंग ॥ नाथ अनायनकी सुधिलोजै । तुमबिनदीनदुखितहैं
 गोपी ऊधो को पतिया लिखिदीजै । नयन सकल भरिआये हरिबि-
 न करमेंसुकर मेरी गहिलीजै । सूरदास प्रभुआशमिलनकी अबकीबेर
 हरि आवनकीजै ३८५ परमचतुर सुन्दरसुखसागर तनकोप्रियप्रति-
 हार । रूपलकुटिरोके रहतो सखि अनुदिन नंदकुमार । अब ताबिन
 उर भवन भयोहै शिवरिपुको संचार । दुख आवत मनहटक न मानत
 सुनो देखि शिंगार । अससु उसास जात अन्तरते करत न सकुचबि-
 चार । निशा निमेष कपाट लगे बिन शशीससु सतसार । यहगति
 मेरीभईहै हरिबिन नाहिं कछु प्रतिहार । सूरदास प्रभुबेगि मिलहुतुम
 नागरनन्दकुमार ३८६ ऐसेसुनियतहैं दुहिमाहु । याहीते सब बातजा-

नियो चतुर शिरोमणि जाहु । आवन कह्यो न फेरि सिधारे करो
पाछकी गाह । उहँई बिरजि रहे कुब्जा संग कौन वेदकी राह । येते
पर संतोष न मानत परे हमारेदाह । सूरदासप्रभु पूरो दीजे दिनदश
मानीशाह ३८७ ॥ रागमंगल ॥ ऐसे सुनियतहैं दोइ सावन । बहै बार्ताफिर
शालतिहै प्रयास कह्योहैं आवन । तबतक प्रीति करीअबलाभी अपने
कीयो पावन । यहि दुखसखी निकसि ततजइये जितहि सुनेकोउनाव-
न । सकहिबेरे तजीहमलागे मथुरा नेह बढावन । सूर सुरतिकतहोत
हमारी लागीनीकीभावन ३८८ ॥ रागकल्याण ॥ दिनकर दिन देखे इस
लागत । शशिसीरो सोउ सातोतकिकौ है दंबते मन भागत । कौतुक
निरखि सखा मोहन की यमुना पुलिन पनारी । निकटपाये जैसे मृग
दृष्टा प्रयास सनेह प्रजारी । याचक एक रूप रस कारणा लहत न
सुख गुणागाये । प्रीयस गिरिकौलों उरराखों सूरदरश बिनुपाये ३८९
सबैजहु औरै लागत आहि । मनु सखि वा ब्रजनाथबिना ब्रजफीकी
लागत चाहि । देखिप्रयास घननयनये बरयै पावस यहै सिराताशरव
सनेह खरख सरिताउर मारगहबै जलजात । हिमदिनकर देखेही
उपजत निशारहित यहयोग । शिशिर सुरतिआये कांपतउर सुमिरि
प्रयास उपभोग । निरखि बसन्त बिरह बल्लितन वे सुख दुखहवै
फूली । प्रीयसकाम निमिष नहिंछांडत देहदशासबभली । यदजहु
मिलिइकधाम कियोबपु उभय विदोयजुरे । सूरअर्धाधि उपचार आजु
लौ राखे प्राणाभुरे ३९० ॥ रागमरंग ॥ कहाहोत अबके पछिताने ।
खेलतखात हंसत अंगसंगरहि हम न प्रयासगुगजाने । कोबसुदेवकीन
कीधाती कोहैसखि जबहिंउनआने । सोबतलायदेउ ऊधोहमें तुमहंतौ
अतिनिपटसथाने । यहनहिंकथा काककेकिलकी कपटरंग मनसाहै
समाने । सूरसमयचतुराज बिराजे मिलेजाय निजकुलपहिंचाने ३९१
बहुरितकबहुं मिलेहरि । कमलनयन दर्शनकेकारणा होसखियत्तरही
बहुतैकरि । जेजेपथिकगये मधुवनकोतिनसोंबिधाकही पांयनपरि ।
कहियोप्रकट जाय यदुपतिसों प्रयासकही सोजातिअर्वाधरि । धीरन
धरतप्राणान्याकुलअति लेतउसास नीरनयननभरि । सूरदास मनथाकृत
भयेहैं यहबियोषा सागर न सकतितरि ३९२ बिनघरवाहि उपगारगाहेउ

नाजावीधहराह उमापति कतहोय शोधलहेउताकेवीचनीचनयननमें
 आंजनलपरहेउ । बिरहसिंधु बलपायप्रकटभयो नाहिंनपरतकहेउ । दु-
 लहदशनदुख दलिनयननजल परसुन परतसहेउ । मानहुअवलसुधाअंतर
 ते उरपरजात बहेउ । अबसुख शशिसेसो लागतज्यो तिनमाखनहि न-
 हेउ । सूरदरश हरिदानदियेबिनुमुखप्रकाशनिबहेउ ३६३ ॥ रागविजयगरी ॥
 दरतनहींलारीछवि जियमेंचुभी । घनतनप्रयास पिताम्बरदर्शिन चात-
 कज्यो अंखियांलुभी । ज्योबगपंकति राजिनमानो उरमुक्ता कीमाल
 शुभी । गिरागंभीर गरजसीसुनिकै नार्थकि अवधि खुभी । सुरलीनार
 मनोहरबाराी सुनेकटकजु उभी । सूरमेघ मनमोहनदेखत उपजी काम
 शुभी ३६४ ॥ रागसारंग ॥ बिनुमाधव राधातन मजनी सब बिपरीति
 भई । गइछपाय छपाकरकीछवि रहीकलंकमई । लोचनहुते शरद
 सारसे छुछविनिचोइ लई । आंचलगे च्योनी लोली त्यों तनधातुह
 ई । कदली दलसी पीठिमनोहर सोजनु उलटिगई । सूरपतिसव हरि
 हरीसूरप्रभु बिपदादर्दई ३६५ ॥ रागमलार ॥ सखीरीदखराबहुबहदेष ।
 कहाकहों याव्रजबसि हरिबिनु लहेउ न सुखकोलेश । सुखभीटीअ-
 क्रूरजु दीनो हमशिगुदीनो लैंजान । जानु न बधिक बिभेसो मृगज्यो
 हतत विसासीप्रान । मैमजुज्योराखे सचिमोहन ते भूंगीकीरीति । हे
 दुगछार अवधिलैं गसने छनिपति जहांअनीति । मोहनबिन हमबसत
 घोय सहैं भई तीसरीसांभ । सूरदास ये प्राणापतित अब कहारतघट
 सांभ ३६६ ॥ रागगोडमलार ॥ ब्रजतजिगये माधोकालि । श्यामसुन्दर
 कमल गुणनिधि कों बिसारों आलि । बैठि निशिबासर बिसरति
 बिकल चहुंदिशि भालि । कहकरै कृतकर्मअपनो काहिदीजैगालि ।
 तज्योभोजन भवन भूयसा अतिवियोग बिहालि । हितनहीं कोउकाहि
 पठऊं करिरही जियलालि । दोखहीधोखेदगादै क्रूरगयो रथचालि ।
 सूरश्याम कहती यशोदा कहापायोपालि ३६७ ॥ रागमलार ॥ कराउरे
 शारंगजाय श्यामहिं सुरति कराउ । पौढेहोहिं जहां नंदनन्दन ऊंची
 टेरे सुनाउ । गौश्रीवस पावसकहतु आई सबकाहूचितचाउ । उनबिनु
 ब्रजवासीयोसाहत ज्योकरियाबिनु नाउ । तेरोकहा मानिहैं मोहन पां-
 यलागि लैंआउ । अबकी बेर सूरके प्रभुको नयनआनि दिखाउ ३६८

रागधनाश्री ॥ यहिबिधि पावस सदाहमारे । पूरणापवन प्रवासउरऊरध
 आगि जुरत सकहारे । बादरप्र्यास प्रवेतनयननमें बरयिअश्रु जलधारे ।
 अरुणाप्रकाश पलकद्युति दामिनि गरजनाम पियपारे । चातकदादुर
 मोरप्रकटव्रज बातनिरंतर आरे । सऊतौ तवतेअटकेजब प्र्यासरहे हि-
 तडारे । सूरकहा कहिये को जाने याहितके व्योहारे । तुमहिंसेइबहि
 के पछितानी कठिन बिरहके नारे ३६६ ॥ रागमलार ॥ घटासधुवनपर
 बरयीजाय । हरिघनप्र्यास बिना सब बिरहिनि बोलिगई कुम्हिलाय ।
 उग्रतेजसम भानुतपतप्रशि व्याकुल मन अकुलायाकरहिंकहाउपचार
 सखीरी नेकुन तपनिबुभाय । जबजब सुरतिहोत उरअंतर तबहिं उरत
 तनताय । सुमिरि सुमिरि गुणप्र्यासरामके रहीसर सुरभाय ४००
 रागसारंग ॥ जीवहिंज्यो कमलकांदोहीन । जिनसोप्रीतिकरी मुनुसजनी
 तिनबिछुरे दुखदीन । ज्यो सरकूल सीनतलफतहै हुलसहोत जलजीन ।
 प्र्यासबारिनिधि लहरि बिरद त्यों हमजुमरति लयलीन । प्रशिच-
 नदन घनसार डारिगुण अधिक तपत मिलितीन । सूरप्र्यासविनुघो-
 य मौनव्रत बनयंती ज्योबीन ४०१ ॥ रागमट ॥ ब्रजघर मंडल करतहैका-
 म । कहियोपाथिक कान्हसोराखहिं आनि आपनोधास । मनुखुर धू-
 रिधुनि चतुरंगिनि घेरिहरेउदै गाउँ । अवधिबचनगढ ढाहन चाहत
 निदरिपाखिले दाउँ । जलदकमान आप दाखभरि तडित पलीतादेत ।
 गरजनिमनहुंछुटनिगोलीकी पहरकमेंपुललेत । लेहुलेहुधुनिधरतडरत
 बन्दीपिक चातक मोर । होवाकरत सुभट दादुरपिक दलकि दलकि
 चहुंओर । कुसुम कदम्ब कुसुमसर अलिमुख छांडत शरधनु खेंचि ।
 पवन वकील प्राणाकरसांगत रहीतुमहिंमोबेंचि । तापर अलिजासुस
 देखिगयोदूख्यो धीरजपानि । जोजियलाज होहितौराखहु सूरआपनो
 जानि ४०२ ॥ रागकल्याण ॥ सुनियत कुब्जाकान्ह निवाजी । पीतअटपटीचाल
 गईदुरि नवसत तनकंचनकीसाजी । भेटीआय नगर दरवाजेचन्दनदेत
 ठगेकरि बाजी । पायो सुरति मुहाग सबनको हरिप्राचीन प्रीति उप-
 राजी । भली भई पूरणा फलपायो देखिस्वरूपकाम रतिलाजी । जन्म
 कोटि तपकियो सूरप्रभु परमसहागिनि शिरचढिगाजी ४०३ ॥ राग
 सारंग ॥ कहादिन ऐसेहोजैहैं । मुनसखिसदन गोपाल न आंगन खालन

संग किरियेहैं । कबहुं कजाय पुलिन यमुनाके बहुत विरह विधिवेलत ।
 सुरति होत आवत सुरभिन संग पुहुप लिये कर भेलत । मृदु सुसकानि
 अनिराख्यो बपु चलत कहै उहे आवन । सूरसुदिन कबहुं तो होइ है सुर-
 लीमधुर सुहावन ४०४ ॥ रागमलार ॥ सखीरी हरि आवाहिं किहि हेत । बेरा-
 जा तुमखाल बुलावत यहै परेखो लेत । अर्वाशिरद्ध कनकमशिराजै
 मारचन्दनहि भावत । सुनिब्रजराज पीठि देवै रत यदुकुल बिरद बुलावत ।
 द्वारपाल प्रतिपर्वरि बिराजत दासी सहस्र अपार । गोकुल गाइ दुहत दुख
 कौलौ सूरसहे सुकुमार ४०५ ॥ रागकान्हरी ॥ कहा कहौ इन नयन की बात ।
 ये खस युगल उडै दुइ चाहत पल पिंजरा न समात । इकटकमगजो-
 वत निशिबासर पलपल बीतत याम । ब्रजबनिता अति दुखित जानि
 हरि कब आवाहिंगे धाम । असुवनि शियिल भई है छाती सब ब्रज
 बाहेउ बारि । योग सँदेश भँवरमें डारत क्यों करि पावै पारि । हरिबो
 बिरहलये सब अवन्ता अति व्याकुल आधीन । सुरदास गिरिधरबिन
 गोकुल जैसे जलबिन मीन ४०६ ॥ रागमलार ॥ बहुरि पपीहा बोल्योरी
 माई । नोंदगई चिन्ताचित बाढी सुरति प्रयास को आई । सावन मास मेघ
 की बर्या होउति आंगन धाई । चहुंदिशि गगन दामिनी कौंधति तिहिं
 जिय अधिक डराई । काहू रागमलार अलाप्यो मुरलीमधुर बजाई । सूर-
 दास बिरहिनी दयाकुल धरि पापरी पुर भाई ४०७ ॥ रागनट ॥ देखो माई लोग
 चतुर मधुबन के । बात नही गोपाल बिमोहे गुण जानत मोहन के । जब हरि
 गमन क्रियो मथुराको छाडि उमोह सबनिके । सुरदास प्रभुबिनयो लागत
 मेघ गयो ड्यों पवन के ४०८ ॥ रागमारंग ॥ सखीरी जागौ तो कोऊ दिग
 नाही बिलपति बिकल बिहान । मै जान्यो अँकभरि मिले माधो उठि
 लागी अकुलान । नोंद मनो सुरभाय गिरिधर राखी प्रथम पंचसंधानि ।
 अब अति उर मेर मेरि माई सपन छुटे छलवान । सूरसकति रराजन लक्ष्मणा
 ड्यों शरको कछु अगद न आन । लयावस जीवन मूरि मुकुन्दहि तब हिरहैं
 ये प्रान ४०९ ॥ रागधनाषी ॥ कहकोई जाने पीर पराई । ड्यों जल माहँ
 मीनको मारु पशु पहिंचान्यो न जाई । ब्रजके लोशुरो नहिंस मुभत
 वैद्यहि देत बताई । सो जाने जाकेत न लागी के जिनदई लगाई । हरिके
 संग रहत निशिबासर बिरह न देत दिखाई । नाजाने हम कौन यतन करि

जलमें आगिलगाई । तनअतिस्तीनचलन गतिथाकी सुधिबुधि सबविस-
 राई । सूरप्रयासप्रभुआनि मिलाबहु जातेसबदुखजाई ४१० ॥ रागविद्यारो ॥
 जपतिहैंतेरे गुणकीमाला । तुम्हरेकारण योगिनि होउंगीबाँधिकसर
 मृगछाला । यकवनहुँहि सकलब्रजहुँठ्यों कहूँनपायेनदलाला । सूरदास
 प्रभुतुम्हरे मिलनको हैंविरहिनीबेहाला ४११ मोहनमदनगोपाल म-
 नोहर मथुराजायदुःखदीनो । चलतीबेर अवधिआशादे अजहूँनआयो
 कुब्जासंगसुखकीनो । हमैंछाँड़ियेसीजसजलते मीनकाहि हमतलफति
 तनकीनो । सूरदासअबबेग मिलहुँकिनि सबतुम्हरेआधीनो ४१२ ॥
 रागविलावल ॥ हरिसुत पावक प्रकटभयो । मारुतसुत बंधव पितु प्रीहितता
 प्रतिपालिहियाँडिगयो । रतिपतिताकोपुनिबाहनताबाहनघनसुतउन
 यो । मीनसुतासुततातकहतहैंतापरकाशतसकलछयो । प्राशिकेसंगसरोज
 कलीकोताते मेरेमन माहँठयो । शैलसुताको रूप न आवत तादिनको
 विचयेसुलयो । सारंगसुता वाकेसुतको हितु तासुतसोंसुख नाथहयो ।
 सूरदासरविरथ रविकेबश अजहूँन मोहन दरशदयो ४१३ ॥ रागनट ॥
 मिलबहुपार्थ मित्रहिआनि । जलज सुतके सुतकि सचित्तेभई रसकी
 हानि । उर्दधि सुतासुत अर्वालि उरपर इंद्र आयुधजानि । गिरिसुता
 पतितिलक करकस सतत शायकतानि । पिनाकीसुत तासुबाहन
 भक्षकोभक्ष बखानि । शाखाभृग रिपुबसत मलयजहुतहुताशनजानि ।
 धर्मसुत अरिके सुभाइहि तजो शिरधरि पानि । सूरदास बिचित्र
 विरहिनि चूकसन मनमानि ४१४ ॥ रागसारंग ॥ जलसुत प्रीतस सुत
 रिपु बांधव आयुध आनन बिलखभये । सारंग सुतपति बसत जु
 साथेकोटि प्रकाश रिसायगये । मारुत सुतपति रिपु पुरबासी पितु
 बाहनभोजन न सोहाये । हरिसुत बाहन भक्षसनेही मानहु अनल
 देहदोलाये । दधिसुत पतिबाहन को बाहन ताको कैसे हो समुभाई ।
 सूरदास प्रभुधर्मपुत्र रिपु ता अवतारहि सलिलबहाई ४१५ हुनरीपक्षी
 समुझिशिखमेरी । जहाँ बसत यदुनाथ जगतमर्या बारकतहां आठ
 करफेरी । तुमकोकिला कुलीन कुशलमति जानति बिथा विरहिनी
 केरी । तोसीऔरनहीं उपकारिनि यहवसुधामैं विधिकरहेरी । उपवन
 बैठि बोलिबरबागी बचन बिसारिभोहिं करचेरी । प्राणानिके पलटे

न पाधये सैतिविकारि सुयशकीडेरी । कहियोप्रकट पुकारिहारहवै
अबलाआनिअनंग दलधेरी । ब्रजलै आउ सूरके प्रभुको गाऊंगी क-
लकीरति तेरी ४१६ ॥ रागआसावरी ॥ वर बढाऊ पातो लीज्यो । जब
तुमजाहु देशद्वाराधति हरनिरिसालगोपालहिंदीज्यो । रंगभूमि रम-
णीय मधुपुरी राजधान रजकी सुधिकीज्यो । सारसमुद्र छाँडि किन
आवतथह निर्मल यमुनाजलपीज्यो । यागोकल की सकल खालिनी
देति अशीष कान्ह चिरजीज्यो । सूरदासप्रभुहमरेहेतेनंदनंदनकेपाय
परीज्यो ४१७ ॥ रागनट ॥ वेदिखियत मधुवन केखरी । तामेंआम
हमारेप्रीतम जिननिहरी मेरीनींद भूखरी । उनबिनु मोपैरहेउ न परत
है बिनुदेखे नयननि को दूखरी । सूरदासप्रभु मोहन नागरको विरह
कोलभयो तनऊखरी ४१८ ॥ रागकान्हरी ॥ लालउनि सुनीहै मनोहर
बंशी । नहिं तन स्रग्हार युवतीवरतवते सदनभुजंगमंडं सी । कोल्यावै
संगीत सरोवर मगनभईगति हंसी । आपुनहीं चलिये उद्धरिये मेल
भौह दुहकाँसी । मानहु तरुणातमाल प्रयासतन लतामालती अंसी ।
सूरदास प्रभुमोहन नागर लै भुजबीच प्रशंसी ४१९ ॥

पुनःभ्रमरगीत ॥

रागआसावरी ॥ हरिरथरतनजरेउ कि अनूपदिखावै । जिहिमग कया
गये उत्तहीते आवै ॥ चाल ॥ उत्तहीते आवै सखिन बूलावै देखीमनहिं
बिचारी । मशामुकुट किरियातन पीतबसन कोउ गोविन्दकीअनुहा-
री । धोइअभयगालागेदेखनजबलगमेरेआये । ऊधोजियजानेमुखकुन्हि
जानेकयासंदेसपढाये । चलोचलोधोरी सुनियेकहुबार्ते । कहहुकहहु
ऊधोहरिकी कुशलार्ते ॥ चाल ॥ कहियेकुशलार्तेसांचीबार्तेआवनकहेउ
किनाहीं । केगरवानेराजसमानेअबहमचितनसुहाहीं । टाढीतनकम्पहिं
सुन्दरि जम्पहिं बारबार अकुलाई । अबजिय कपटकहुजिनिराखहु
बूझौं सौहृदिवाई । कहहु कहहु तोऊधो तुमक्यों ब्रजआये । तब हँसि
बचनकहे हमकयापढाये ॥ चाल ॥ कयापढायेतो ब्रजआये कहत मनो-
हरबानी । तुम सुनहु संदेशो तजो अंदेशो तुमहै सकलसयानी । गोप
सखा चित जिनिराखो अबिगतहै अबिनाशी । मोहन माया पीर न
दायासबधतसदानिवासी । ऊधोजिनिकहोहरिकीप्रभुताई । सुनिजिय

अनकबद्धे रितरहेउ नजाई ॥ चाल ॥ रितरहेउ नजाई अनख जियवाहै
 यहहरिलोप्रभुताई । दासीकुविजाकुटिल किसंगतिकौनबहै मनपाई ।
 तुमपुनिभले कहनआवतहौ हमकोसबैसयाने । जोकछु बार्ते देखियत
 आंखिन सो उनकेमनमाने । ऊधोहरिके कृतहमकहा बखाने।गोविंद
 की बार्ते सबकोउजाने ॥ चाल ॥ सबकोउ जाने क्यों मनमाने अवनकछु
 बनिआवै । परबश भये कहतहैं सोई कछु कुब्जा जो कहावै । वाको
 न्याव दोष सब हमरो करमरेखकोजाने । हम गोरस दुहिंके जोराखे
 गाहक विधिगतिआने । ऊधो तुम कमलनयनसों कहियोजाई । एक
 बार कैसेहूं ब्रजदेहु दिखाई ॥ चाल ॥ कहियोजायश्यामसुन्दरसों तब
 ऊधो समुझावैं । शंकरब्रह्म शेषअरु सुरपति कोऊ अन्तनपावैं । जोपै
 प्रीति प्रकट मिलिबेकी हृदयध्यान अति धरिये । सूरदास मिलि देत
 बहुत सुख बिरहशोक कृततरिये १ ॥ रागबिलावल ॥ उमंगिब्रजदेखनको
 सबधाये । सकहिसक परस्पर ब्रुभक्त जनु मोहनदूलहआये । सोईध्वजा
 पताका सोई रथचट्टि दिवस सिधाये । श्रुतिकुंडल अरु पीतबसनसक
 वैसेइ साज बनाये । जाय निकट पहिंचान्यों ऊधो नयन जलज जल
 छाये । सूरप्रियाम सिटी प्रत्याशा नतनबिरह जनाये २ क्यों अलिगमन
 किये मथुराते कहेधों कहा बिचार । सभा सुमति गुण ज्ञान ध्यानमें
 नहिं ब्रज भजन प्रकार । ज्यों सुखस पटधोय नारिकों तुम शिर यदु-
 कुलभार । कहा बोलत चित प्राणानाथबिन साधु बादश्रुतिसार । मुनि
 मुनि मुखमुख भूठनिभूठनि पढतबक्यों बिस्तार । हमरेयोगअरु अगम
 अगोचर शैलधरणा आचार । हमतो नंदनन्दन के रसमें पगीधरें नहिं
 सार । सूरदास प्रभु आनि मिलावहु नागर नन्दकुमार ३ कृपाकरि
 हरिपठयो ब्रजपै तुम्हरो दरश दिखावन । प्रिय संदेश कहेतो कहि
 लेउ पाछे यश टुन्दावन । तुम हम कबहुं निमेष बिगस नहिं निगम
 कह्यो मनभावन । अरु एक बीचनि दरशनदीनो भूततत्त्व मुनिपावन ।
 भये अथाह मधुपुरी ऊपर श्रीगोकुल पर सावन । भादों चौथ चन्द्रमा
 की गति ऊधो सखा सुहावन । हमतो कहि निबधे प्रयासाजू पुठपवा
 बशयावन । इतनी सकल करहु निज रसना नारि सकल गुणागावन ।
 कृष्णाकथा ठकुरानी मगडल गुरुबच पथ बिसरावन । कहालों कहिये

अलखबिना कलु और न पेखो । कंचीतार एकमनलाई । नयनमंदि
अंतर्गतध्याई । हृदय कमल महँ ज्योतिप्रकाशी । सोइ अन्तर्यामी
अबिनाशी । यहैउपाय बिरहजल तरिहो । योगपन्थ क्रमक्रम अनु-
सरिहो । यहसंदेश कहेउ गोपाल । सुनतहि विमुख भई ब्रजवाल । रे
मधुकर रस लम्पटवाई । ऐसेबचन न कहेकन्हवाई । श्रीचुन्दावनभवन
बिराजै । नटवरभेष सदाहरि साजै । रासबिलास भलेमानेसन । बिच
गोपी बिचकान्ह प्रथामघन । अलिआये हैं योगसिखावन । देखिके
प्रीति लगेशिरनावन । ध्रमरगीत जो दिनदिनगावै । परमानन्दपरम
पदपावै । सूरयोगकी कथा न भाई । प्रेमभक्ति गोपीजनपाई ५ परी
पुकारद्वार गृहगृह प्रति यहसांचीभइ योगीआये । पवन सधावन भ-
वन छिडावन रवनरसाल कृपालु पठाये । आश अवधि परमावधि
जीवन तेउ शिथिलकरि काहि तुलाये । कनकबेलि कामिनि ब्रज-
बालहि योगअगिनि बीबेदिनवायो । भ भरहरण अमुर मारणाहित
कारणाकान्ह मधुपुरी छाये । या दोउमें ब्रज एको नाहिँन काहेको
उलट्यो यशवितरायो । साँवलप्रथाम धामदे पठयोनुप अधिकार सा-
रजेपायो । सूरन प्रीति बिसारि साँवरे भलीचतुरता जगत सुनायो ६
रागघोरठ ॥ कोउ मधुवन ते है आये । सखीसुमतु सब सुनो सुचिनुदे
हितकरि प्रथामपठाये । मनमोहन बिछुरे यात्रजमें इते द्योसदुखपा-
यो । सोइयहि कमलनयन करुणाकरि हिरदेसाँभ बताये । जाको
योगी यतन करतमिलि ज्ञान मुगुरुन दिखाये । सोइइन परमउदार
मधुप्रब्रज बीथिनिसाँभ बताये । अतिकृपाल व्याकुल अवलनि क-
रिको व्यापक अगह गहाये । भजहु सूर सुनिहोत परमसुख नेतिजु
निगमनिगायो ७ ॥ रागसाँग ॥ मधुकर भलीदुसति मतिखोई । हाँसी
होनलगी या ब्रजमें योगहि राखहु गोई । आतमराम लखावत डो-
लत घटघट व्यापक जोई । चापे काख फिरत निर्गुणाको छाँगाहक
नहिँकोई । प्रेमकथा सोईपै जाने जापै बीतीहोई । तनोरस सतीकहा
जाने बूझि देखिबेघोई । बड़ोदूत तू बड़ोतौरको कहिये बुझि बड़ोई ।
सूरजदास प्रीय सुयटपद कहत फिरतहै सोई ८ योग युगति यद्यपि
हमलीनी लीलाकाकोदैहो । उलटि जाहु मथुरा मधुकर तुम बूझि

बेगि ब्रज येहो । रास समय कालिन्दीके तट तब तुव बचन न माने ।
 यहको सुने कुपन्यकी बतियां प्रभु परायेजाने । नगर बसत गुणाज्ञान
 बद्धतपै मूलहु बिसरेउ ज्ञान । चारिबाहु बड़भये मधुपुरी खरे सुहाये
 कान । आपन फेर कियो देखियतुहैं तुमभू लो हमभू लति । सूरप्रयास
 बल्लभ बेगीविनु दरश सलिल उन मूलति ६ जैसे कियो तिहारे प्रभु
 अलि तैसाभयो ततकाल । ग्रन्थितसूत धरति तिहि श्रीवा जहँ धरते बन
 माल । टेरि देत श्रीदामा द्रुमचढ़ि सरसबचन गोपाल । तहँ अबस्तवत
 अक्रूर प्रमुख सब कहत कंस कुलकाल । कोमल स्निग्ध कुटिल अल-
 कावलि मृगमद भूषितभाल । तहँ अब लागत धूमवेदी को पूजा भस्म
 कराल । जहँ मरिाक झूठा सुधासरिसजल शतदल मधुकरजाल । ऐसे
 सर त्यागे सुनु सूरज फन्दत न्याय सराल १० श्यामरासको सङ्गी यह
 अलि तासों कह संभासा । मोहन नागर नायककी मरिात जे अवरिक कह
 आसा । कर्मभूत दानेउर सुनियत रसनासन्धि प्रकासा । भई बिदा
 ब्रजप्रेम नेमकी हाथटोंकि गहिनासा । इतनीभये नयन नहिँ समुक्त
 प्रथम परे यहि पासा । टेक न छाँड़त अजहुँ सूरयह बीचबसीठ दभा-
 सा ११ हरिबिहुरनकी शूल न जाय । बलि बलि जाउ मुखारविन्द
 पर मूरति मनमें रही समाय । सकादिवस टुन्दावन सहियाँ गहिअ-
 चरा मेरोलाज छुडाय । तेदिन ऊधो नहिँन बिसरत अम्बरहरे यमुन
 तटआय । कबहुँक हँसिजु देत आलिङ्गन कबहुँक दुरे उदत हैं गाय ।
 सूरबासस्वामीके गुणागारा सुमिरि २ गोपी पछताय १२ ॥ रागबसन्त ॥
 कोयलबोली बनबन फले मधुप गुंजारन लागे । मनोभयो भोर रोर
 बंदिनिते मदनमहीपतिजागे । तिनहुँ तेनवपल्लव प्रकटेजे द्रुमहुते दाव-
 नलदागे । मनो रतिपति मन्तरीभू याचकनि बरसा बरिा दयेबागे ।
 नयोसास मधुनई बरनिशा नवनव रस बिधिपागे । नयो नेह नइना-
 गरि कुब्जा कत आवै सूरज अनुरागे १३ ॥ रागसारंग ॥ जिहितन गोकुल
 नाथ भज्यो । ऊधो हरि बिहुरत तिहिनागरि तेतनु तबहुँतज्यो । जब
 स्यन्दनचढ़ि गमनकरत फिरिहँसि चितयो गोपाल । तबले परमकृतज्ञ
 प्राणाउठि सङ्गहि चले उताल । अवयह सृष्टि और ब्रजकी गति जानत
 कोउ इकजान । नतो संदेश आपने पियके क्यों बनकरती कान । अ-

जहं सान गई या मनते उपजत नहिं परतीति । सूरदास जन वररा
 कहाँलों कठिन प्रेमकीरीति १४ गोपालहि बालकहींते देव । जानति
 नहीं कौनपै सीखेचोरीके छलछेव । साखन दूधधखी जबखाते सहि
 रहती करिकानि । अबक्योंसही परति सुनिसजनी मरिामारिका की
 हानि । कहियो मधुपसंदेश प्रयाससों राजनीति समुझाय । अबहंतजत
 नाहिं वह लोभी युगति नहींयदुराय । बुधिविवेक सरबस या व्रजको
 लेजुरहे मुसकाय । सूरदासप्रभुके गुणअवगुण कहिये कासोंजाय १५
 बिसरति क्यों गिरिधरकी बातें । अवधिआशते रह्योमधुपमन तजि न
 गयो घटतातें । पतिके बिरह सीसाभइ देहों द्वैदुःखपरसंघातें । तनरिपु
 काम चित्तरिपु लीलाज्ञानरुचत नहिंयाते । अत्रासुख्यो चाहतहरिके
 गुण जोई कथा रसराते । लोचनरूपध्यानरहे निशिदिनकहोघटेकहि
 काते । ज्यों नृप प्राणातजे सुतके हित त्याँ न गयेजाते । सूरसुमतेतुही
 जिय उपजे जोहरि आवैं मथुराते १६ क्यों मन मानतहै इनबातनि ।
 पायेजाति सकलधुनि मधुकर जेगुण सांवरे गातनि । प्रथमहिंप्रेमय-
 दापि मधुकर को तजत सङ्गच जलजातनि । बनरस बहुरि निकटनहिं
 आवत देखिपुराने पातनि । सुनियतकथा काककोकिलकीकण्ठ रंग
 कीरातनि । सबदिनसेवाअस करायकेअन्तमिलतपितुमातनिबेणुजजा-
 यउधाकर हरिमुख बनबोली अधरातनि । अतिरति लुब्ध तजो नहिं
 जाती कहिनसकति कछुप्रातनि । बालीमारोबंधनकीनोलुब्धकजैसी
 घातनि । कोपतिआय सुताकहि सूरज वा कैतव के आतनि १७ जोपै
 हमहिं कृष्णजु भावहिं । तो सुनि मधुप यशोदानन्दन अबहीं गोकुल
 आवहिं । जिनि नयननिमोहन मुखहेरेउ निशिदिनरूपविचारेउ । ते
 नयनाव रहत सुने घरघोँति न हृदय बिदारेउ । जिहितन आसन शयन
 संगसुख हरिसमोप रतिमानी । तिहितन बिरह न छुटत सुमिर गुण-
 चक विद्या न जानी । समसौरभ शशि त्रिविधि अनिलगुण वैश्विप्र-
 कृतिनिबाहत । बियमबिरहिनी यामिछाँछिननु तउतननाहिंनदाहत ।
 अतिबल उग्र अनंग महाभट जाहिसबै जगु जानत । सोइबल हीनदीन
 सरवरगहि कोपि धनुष नहिंतानत । बनबिलास व्रजबासरासरस देखि
 देखि दुखपावत । सूरदास बहुरों वियोग विधि कुकवि बिलजहै गा-

वत १८ सबखोटे मधुवनके लोग। जिनके संगश्याम सुन्दर समसीखे
 हैं उपयोग। आयेहैं ब्रजके हितकारण लैबातनिकायोग। आसनध्यान
 नयनरूंदे सखिकैसे जातु बियोग। इनहुं भलीजानि उपदेश्यो दासीसे
 संयोग। सूरसु बैद कहा लै कीजै कहै न जानैरोग १९ अद्यपिमें बहुत
 यत्न करे। तदपि मधुप हरिप्रिया जानिकै काहुन प्राणहरे। सौरभ
 युत सुननस सेवति लै संतत सेजधरे। सनमुख हतत शरदशाशि सजनी
 तऊनअंगजरे। चातक मारकोकिला मधुकरसुनिधुरअवराभरे। शरद
 हैनिरखति रतिप्रतिको नेकु न पलकपरे। निशिदिन रतितनंदनन्दन
 याउरते छिन न टरे। अतिआहुरचतुरंग चमचह्नि अन्नंग न शरसंचरे।
 जानतिनहीं कौनडर इतने यातेसबै डरे। सूरदास सकुची श्रोपतिकी
 सुभट निबल बिसरे २० गोपालहि पाऊंतो जाऊंवाहदेश। सिंगीमुद्रा
 करखपर लैकरि योगिनिको भेष। कथापिहौं भस्म लगाऊं जटा
 बनाऊंकेश। हरिमिलिबे गोरखहि जगाऊं जैसेस्वांग महेश। तनमन
 जारों खेहउडाऊं बिरहिनि गुरुउपदेश। सूरश्यामबिनु सबजग सुनो
 जैसेमणिबिनुशेखर २१ अबहरि कैकोहैरहत। सुनियह दुसहदशागोकुल
 की ऊधोका हरिकहत। देखुसखी कसणा अतिइनकी उलटे चरण
 गहत। तुमको चाहिअधिक करिमाई आँखिनते अँसुवाबहत। नीय
 तिही यह बातजु परदुखनाहिन सहत। उपचिपरी परतीत सूरइनदइ
 सुलहत २२ भलीकरीशोच कहालागे करन। ऊधो कमलनयनसों क-
 हियो गोवर्द्धन के धरन। अबदै बिरह अनल लागे बारन तबदनईज-
 रन। संकट बिपतिपरेते राखी प्रीतिकैकैलईशरन। तुम्हरीदशा ब्रज
 नायकसुमिरि सुमिरि लागी भरन। सूरश्याम प्राणअब तजिहैं बेगि
 दिखावो चरन २३ या युवती के गोरसको हरि इकदिन बहुत अरे।
 ऊधोवे बातें क्यो बिसरति छाँड़ि न हठहिपरे। तादिनको देखी ये
 अंचरऐंचत ओप भरे। आपसिखाय खाल सबहिनको न्यारेरहेखरे।
 मोसुरति नयननिमें लगिरहि अंगअंग खेलबरे। सूरश्याम निरखेसचु-
 पैये संदेशे रहेधरे २४ जब वह सुरति होतहै बात। सुनहु मधुप या
 वेदनकी गति मनजानेके गात। रहतनहीं अंतर गतिराखे कहत नहीं
 कहिजात। भईरीति उयो उरगळूंदार छाँड़े बने न खात। येहीहाल

सदा था ब्रजमें बीतत है दिनरात । सूरदास प्रभुकेामिलि बिलुरन सु-
मिरि सुमिरि पंडितात २५ नयना नाहिंन रहत । यद्यपि मधुप प्र्यास
सुन्दरको नेरेही कहत । हृदय माहिं जोहरि वे बतावत सोयानर ल-
हत । परीजु कठिन प्रकृति दरशनकी देखोही चहत । कैसेहीकेबदन
बिलोके बिनुरहेउ न परत । अंतर संदेश अधिक कुल उलटे बहत ।
यातेऊधो योगका करिहु सौंन जहत । सूरप्र्यास इनका बातनिमुनि
देह दबदहत २६ ॥ रागधनश्री ॥ योग ज्ञानकी बातेंऊधो तुमहीपै बनि
आई । ओता कंठ कुसुमकी माला बक्ता लइ ठकुराई । वे ज्ञानी गुप्त
सबजग जाने जबदासो रतिपाई । कनक रतन रथऊपर चढ़िके सी-
खिचले ब्रजधाई । तुमतो परमसाधु उपदेशक कथनी कथत बनाई ।
प्रेम हरिन नयनीकी संगति ज्ञानपन्थ सहंगाई । याको मर्म न जानत
कहु वे कहि सुन्दरि समुझाई । सूरदास प्रभुपोंतुम कहियो बेंतेसभा
जुझाई २७ सदागुरु चरया भजन विनुबिद्या कहे कैसे को पावैं । उ-
पदेशक हरिदूरिहुते क्यों हमरे मनआवैं । जोहित कियो तोअधिक
करहि किनि आपुन आइसिखावैं । योग बोझते चलि न सकौ तो
हमहीं क्यों न बुलावैं । योगज्ञान मुनिनगर तजेबसु सघन गहनबन
धावैं । आसन मौननेसुमन संयम बिपिनमध्य बनिआवैं । आपुनकहे
करे कहुऔरै हससबहिन डहकावैं । सूरदास ऊधोसों प्र्यासा अति
संकेत जनावैं २८ साधवसों न बने मुखमेरे । जेहि नयननि प्राशि
प्र्यास बिलोक्यो ते क्योंजात तरनिसों जेरे । मुनिमन रमन ये योग
कसठ घन संदर भारसहत क्यों ओरे । तसुगी हृदय कुमुदके बंधन
कुंजर क्यों न रहत विनुतेरे । नीलांबर घनप्र्यास नीलमणि पैयत
क्योंहिंधूसके भोरे । सूरभृंगकमलनिके बिरही चंपक मनलागतनहिं
थोरे २९ ॥ रागजैतश्री ॥ अबहरि औरै भये साई इतनेहिंदूरि । मधुकर
हाथसंदेश पठाथो चतुरचातुरीचूरि । रूपराशिसबशुभाकी परमिति
प्र्यास सजीवनमूरि । तासों कहत मनहिंसन देखोसबठांहे भरिपूरि ।
क्यों ऐसे यहदेह सूरसुनिरह बिहरत भक्तभूरि । तापर छपदकरन
आयेहा कोयलहूतेधरि ३० और सकल अंगनिते ऊधो अखियाँ
खरी दुखारी । अतिहि पिराति सिरातिन कबहूँ बहुत यतन करि

हारी । यकटक रहति निमेष न मिलवति बिद्या बिकल भइभारी
 भरिगइ बिरह बायुविन दरशन चितवति रहति उधारी । रेरे अति
 गुरु ज्ञान शिलाकाहि क्योसहि सकति तुम्हारी । सूर सुखंजन आनि
 रूपरस आरति हरणाहमारी ३१ ॥ रागभासावरी ॥ तुम्हरेदेश कहासरि
 खुटी । भूखध्यास सबनींद गईअलि हरि बिनुबिहर लयोतन लूटी
 दादुर मोरपपीहा बोलत अबधिभई जवभूटी । पाछेआइ कहातु
 करिहो जवतन जैहै छूटी । गोपिसँदेशो हरिपै पठवति प्रथम प्रीति
 क्योतूटी । सूरदास प्रभुयोजानतिहो बैरकरहिंगे कूटी ३२ सखीरे
 जानियत यहि अनुमान । देखियत नहीं यतनजीबे को इतहि बिरह
 इतज्ञान । इतैचंदचंदन समीरसखि लागत अगिनिनिदान । उतनिगाँ
 अवलंबन हरिको कठिन विरोधिन पान । इतभूषणा भयकरतअंगे
 सब निशि जागिबिहान । इतसमाधि शून्यगुणा ऊखो योगध्यानके
 जान । दुसह दुराजनृपति बद्धदोऊदुखको उभयसमान । यहिअवसरको
 राखेसूरज कमलनयन बिनु आन ३३ ॥ रागधनाम्बी ॥ आपुदेखि परदेखिरे
 मधुकर तो औरैसिख देह । बीतेगीत बजाने गोरे खरोकठिनहै नेह ।
 मनुज तिहारो हरि चरणानि तरतनुलै शोकल आयो । कमल नयन
 को संग बिछुरिकै कहिकौने सचुपायो । शोकलरहो जाहनिज मथुरा
 भूटो माया मोह । गोपीकहति सूरऊधोसों इसहीं से किनिहोहु ३४ ॥
 रागदेवगन्धार ॥ लारिकाईको नेहकहो अलिकैसेछूटत । कहाकरो ब्रज-
 नाथ धरितबहु समअंतर गति लूटत । वह चितवनि वह चाल मनो-
 हर वह सुसकानि मन्दधुनि गावनि । नटवर भेषधरेनंदनन्दन वह
 भावनि बनले ब्रजआवनि । चरणा कमलको शपथ करतहैं यहसँदेश
 मोहिं बिय समलागत । सूरदास प्रभु निमिय न बिसरति मोहन मूरति
 सोवत जागत ३५ ॥ रागबिलावल ॥ सोको जो नाहिंन सुखपायो बल
 गोपालकोराज । ऊधोआज सम्पदा उनकी है सबहिनकेकाज । धनुष
 तोरि गजनिहति मल्लमयि निडरकियो यदुबंस । मुनिअमरन आनंद
 बढ़ायो करठयो करगहि कंस । कुब्जाछपदियो छिजकोसुत मालीको
 मनकास । उग्रसेन बभ्रुदेव निगाइते आनेअपनेधान । दीनदयाल दीन
 प्रभुदाता दिनदिन इस सबको आस । सूरप्रथम सों कहे हरहिहरि

इन नयननकी प्यास ३६ ॥ रागमाह ॥ वेहरि क्यों बिहरी । आवत राधा
 पंथ चरगारज हित सों संगधरी । भांतिभांति किशलय कुसुमावलि
 शय्या सहयकरी । निमिषबियो ग हात तबतलफत उद्यो जल बिबुल-
 छरी । सुनत अमित प्रयासा रसरंजित खोवतरंगभरी । आपुन कुसुम
 व्यजनकरिलोने करतमरुत लहरी । गोचारनमिस जात सघनवन सु-
 रली अधर धरी । नादप्रनालि प्रवेशघोषमें रिभूवत तिर्यगिगरी ।
 प्रकृतपुरुषतामहिं ताकोसंग सुरप्रकटयगरी । ऊधोसुनतसुनत मनवि-
 धाकित सुफलितकर्म दरी ३७ सब सुखलेकर प्रयाससिधारे । सुफलक
 सुत कछुभलो न कीनी दैदेहीउपदारे । चलतपोतपट करधि नराखे
 यहजिय शोचहमारे । भूख नींद छुटि गइ निशिबासर सुनहु न ऊधो
 प्यारे । महाप्रलयतेकतप्रजराख्यो कर धरिशैल उबारे । सुरदासप्रभु
 तुम्हरेदरशबिनु क्योंजुरहेयेतारे ३८ ॥ रागकान्हरो ॥ कहानकीजे अपन
 काजे । दिनहैं चारि यहै करि देखौ जो हरि मिकैं योगके साजे ।
 माथेजटा पहिरि उरकंथा लावहु भस्म अंग मुखसाजे । मिझीदण्ड
 माल मृगकाला लोचन मंदिरहो बिनआंजे । योग बिरहके नीच
 परमदुख सरियतु हैं यहि दुसह दुराजे । सन्मुखहैं सबसखी सयानी
 नाहिनआजु उबरियतु भाजे । ऊधोकही सो सांची मानोवरया बि-
 दित पञ्चमीगाजे । यातेसुर कहोना कीजो अवसर बने भेरिके
 बाजे ३९ हरिठाकुर लोगनसों मधुकर काहेकी है प्रीति । जो कीजै
 तोई जलधर रबिकीसीहै रीति । देखहुमान कमल चातक उद्यो
 येसेही गइवीति । तलफत जरत एकार करत हैं कछु नाहिने नीति ।
 मनहठपखो कबन्ध योधज्यों हारेहु मानेजीति । सकत न प्रेम सहुद्र
 सूरबर बाख्खीज्यों भीति ४० भूलोतहो कतमीटोबातन । येअलि हैं
 उनहीकेसङ्गी चञ्चल चित्त सांवरे गातन । वेसुरलो धुनिके जगमोहत
 इनकीगुञ्ज सुसन मनपातन । वेउठि आनआन सतरंजित येउडिआन
 तरंग रसरातन । वेनवतन मानिन गृहबासी ये निशिदिबंस रहतजल
 जातन । ये अटपद वेडिपद चतुर्भुज इनमें कछुभेद नहिंभातन । स्वारथ
 निपुया सर्वरसभोगी जनिपतिपाउ बिरहदुख दातन । वेमाधो येसधुप
 सूरसुनि इन दोउनमें कौनघट घातन ४१ ॥ रागमेरो ॥ हरिबुख निरखि

निमेष बिसारे । तादिनतेमानो भयेदिगम्बर इन नयननके तारे । तजि
 शिख सीखसमुर सासुनकी लाज जनेऊजारे । घूंघट अरु छांडो बी-
 थिन अहनिशि अरुत उधारे । सहज समाधि रूपरुचि इकट्ठ करत
 न टकतेधारे । ताकेबीच बिघन कारणापति बन्धुपिता पचिहारे । सूर
 सुमति समुभक्त जियजानत ऊधो बचन तिहारे । करै कहा ये कहे न
 मानत लोचन हठी हमारे ४२ उपमा एक न नयन गही । कबिजन
 कहत कहत नितआये सुधिकरि करिकाइनकही । कहेचकोर मुख
 बिधु दिनु जीवत भँवर न तहँउडिजात । हरिमुख कमल केशबिहारे
 ठालेक्यों दहरात । खञ्जनगन रञ्जनजन जोपै कबहुं नहिंन सतरात ।
 पक्षपसारि न उडत सन्दहे समर समीप विकात । आयेवधन व्याधहूँ
 ऊधो जोशृंग क्यों न पलाय । देखतभाजि बरोधन बनमें जहँकोउ सङ्ग
 नधाय । ब्रजलोगनबिन लोचन कैसे प्रतिसरा अतिदुखबाहत । सूर-
 दास सीनता कछूयक पलभर सङ्ग न छाँडत ४३ प्रेम न रुकत हमारे
 बूते । किहिगयन्द बाँध्योकहिऊधो पद्मनाल किधौंकाचेसूते । मन-
 मथसिंह जगायो सेवत सुनिसंदेश प्र्यामकेतूते । बिरह समुद्र सुकाय
 कहाँते रञ्जकयोग अगिनिकेबूते । परमारथ गुरुज्ञान कहतहौ मुक्तिलै
 जाउ हमारेहूते । चाहतमित्यो सूरके प्रभु को क्याँपतिआय तुम्हारे
 हूते ४४ ॥ रागधोरठ ॥ हरिहमसों करिहो सजनी सीनजलकी प्रीति ।
 कितिकहूरि दयालऊधो अवधिगई व्यतीति । तलफिकै तनप्राणादी
 ने प्रेमकी परतीति । नीरनिकट न पीरजानी गइबयथा बपुजीति ।
 चलतहोप्रभु कहीयाही आइहां रिपुजीति । सूरअब ब्रजनाथसीखे
 सबैउल्लरीतीति ४५ ॥ रागसरंग ॥ तुमसों उनसों कहासगाईहमअहोर
 अबला ब्रजबासी वे यदुमरिा यदुराई । कहा भयोजुभले यदुनंदन अब
 यह बुद्धिबताई । सकुच न आवतधोय बसतकी तजिब्रज गये पराई ।
 ऐसेगये उहांयादवर्षति गाइगोपबिसराई । सूरदास या ब्रजकोनातो
 भूलि गयो बलभाई ४६ में जानीऊधो हरिकीचतुराई । बारबारतुम
 कहत अध्यातम पावतकौन बडाई । तुमजोकहत हौ अगम अगोचर
 हरिरस तज्योनजाई । बाहर भीतर प्र्यामबरगाते सुनियत दूरिभला-
 ई । कीतुम कहत आपअपनीते की तुम कहत कहाई । सूरदास प्रभु

विरहजरतिहैं विनुपावकदौंलाई ४७ गोपालहि कैसेकैहमदेति । ऊ-
धोकी इन सीटीवातन निर्गुण कैसे लेति । अर्थधर्म कामना सुनावत
सब सुख मुक्तिसमेति । ताकीभूलगई मनसाह देखहु सो चितचेति । जे
व्यापकहि विचारत बर्गात निगम कहतहैं नेति । सूरप्रयाम तजिकीन
संकतिहै अलिकाके गतिगति ४८ हरिविनु यहिविधिहै ब्रजरहियतु ।
परपीरउ सुनियतु है ऊधो ताते तुमसों कहियतु । चन्दनचन्द पवन
पावकसम मिलि मिलिहै तन रहियतु । जागत याम जात युगयुगसम
यतननिही निबहइयतु । विरहसिंधु यदुनाथ प्रयामतनकैसेहु पार न
पइयतु । फिरिफिरिअबधिआश अवलम्बित बूझत दृष्टाजनु सहियतु ।
नेसुकु आश दरश की ऊधो तालगि है सब सहियतु । मन क्रम बचन
प्रपथहै सूरज और कहूनिहं चहियतु ४९ ॥ रागधनाथी ॥ कहा कोऊ
जाने परपीर । नन्दनन्दनके बिछुरे सखिरी बहतेसही शरीर । कहि
कहिकथा सधुप समुझावत मन राखत धरिधीर । नयन सीन कैरो
सचुपावत बिनहरि दर्शननीर । योग समाधि कहा हमजाने ब्रजवा-
सिनी अहीर । कैसेही धौं मिलहिं सूरप्रभु बहुरि तरंगिनितीर ५० ॥
रागसारंग ॥ हम तो इतनेही सचुपाये । सुन्दरप्रयाम कमलदल लो-
बहुरि सुदरश दिखाये । रजकधनुय राज कंसमारिके करेउ सबनका
भाये । सहाराजह्वं मातुपतिहि मिलितऊन ब्रजबिसराये । कहाभयो
जो लोगकहतहैं कान्हमधुपुरी छाये । सुनि यह दशा विरहिलोगन
की उडिआतुरह्वं धाये । गोपीगोपनन्दयशुंदा मिलि प्रेमसमुद्रबढाये ॥
सतेमान कृपाल निरखिमुख नयननीर भरिआये । यद्यपि हम सकु
चतिप्रभुतासुनिहरिही अधिक जनाये । कैसेहि सूरबहुरिनन्दनन्दनघर
घर साखनखाये ५१ ॥ रागनेतथी ॥ हरिसों कहियो हो जैसे गोकुल
आवैं । दिनदशरहे सोभलीकीन्ही अबजनि गहसुलगावैं । नाहिंनकहु
सुहातसुहाहिं बिन कानन भवन न भावैं । देखे जात आपनी आँखिन
हम कहि कहा जनावैं । बालबिलख मुख गाउ न घरत दृष्टा बहुरा
पीवन पयनहिं धावैं । सूरप्रयामविनु रटत रैनदिन मिछेहिभले सचु-
पावैं ५२ ॥ रागसारंग ॥ यदुपति को संदेश सखीरी कैसेकै कहैं । बिना
कहे मनहीं मन भीतर कवलगि शूलसहैं । जो कहुबात अपने चित

अंतर रक्षिपति शोचिरहो । मुखआनत ऊधोतनचित्तवत बहुतविचार
 नहैं । सो कहूँ सिखतुम देहु सयानीजाते धीरगहैं । सुरदास प्रभु
 को सेवकसो बिनतीकरिनिबहैं ५३ ॥ रागसोढ ॥ कबहुंघोसैसीयेबात
 कहो । तजहुशोच मिलिहैं नंदनन्दन हितकरि दुखनिदहो । तुमबिन
 समाधान के कारण पढये कहनसँदेश । अधिक आयआरतिउपजा-
 ई मेरहु बिरह कलेश । एकतुम निकट रहतहो उनके जानत सकल
 सुभाय । सोई प्रकट देखि वहदरशन छांडहु आगउपाय । हमकहकरे
 कमल लोचन के जब कीयो मृदुहास । सुरदास प्रभु क्यों बिसरति है
 नखशिख अंग प्रकास ५४ हरि व्रज कबहं कह्योहैं आवन । सांचे
 मधुप सुनाय मधुर मोहिं बिरह दयथा बिसरावन । होयह बातकहा
 जानोसखि जातमधुपुरी छावन । अपनीचूक कहाँलों मानोअबलासो
 दुखपावन । सबनिशि सुरसेज समपावक शशिसीरोतन तावन । कब
 वे अंचल उरकर गहिहैं दुःसह दाह नशावन ५५ सखीरी मधुरामें है
 संस । इकअकर और ये ऊधो जानत नीकेग्रस । येदोउ क्षीर नीरप-
 हिंचानत इतिहैं बघायो कंस । इबके कुल ऐसी चलि आई सदा उ-
 जागर बंस । अजहूं कृपाकरो मधुवनपर जानिआपनोअंस । सुरसुयोग
 सिखावत अबलानि सुनतहोय मन अंस ५६ ॥ रागधनाश्री ॥ बहुतेदिनराये
 ऊधो चरगा कमल बिमुखही । दरशहीन दुखित दीन छिनुछिनु बि-
 पदासही । रजनी अतिप्रेम पीर बन घन नहिं धरैधीर । बासर मगजो
 व्रत उरसलित बहैनयन नीर । जब लागिहुती अवधि आस सोइ गति
 घटरहे आस । अतिविद्योग बिरही तनुतजिहैं कहैसुरदास ५७ ॥ रागसोढ ॥
 येतेमान कहाहरि कृष्ण पायेहैं परिपोतु । इतनी दूरिभये हरिऔर
 बिसरी गोकुल गोतु । कैसे सहेंप्रयास घनसुन्दर बिरहिनि बिरहिति
 सोतु । तुमहीं कहो बिचारि हृदय हम जैसोहैं हमकोतु । आयेयेसा
 सिखावन ऊधो सुरभि कन्धव्रज जोतु । सुरदासप्रभुतबहिं जिवहिंसी
 देखें मुखउघोतु ५८ ॥ रागसरेण ॥ नाहिन इहीनेह नयो । मधुमाधव
 हे तुहिब्रज बिधिते पहिलेहीभयो । बीचमनमाली मदनउरआल बाल
 बयो । प्रेमपय सींचेउ सहज हरि रोक रतिबल लयो । येतेअमर
 प्रयाससुन्दर बिरहबिसल बढेउ । सुरलि मधु छवि पत्रशाखा दृगनि

नेश चढेउ । कमल तजितुम रमत क्योंनिहिं आकके छबोद । सुरयो-
 गन अवगा परसे विनु गोपाल बिनोद ५६ वारक कान्ह करो किनि
 फेरो । दरशन दै मधुवन को सिवारो मेरे लेखे सुख इतना बहुतेरा ।
 भल्यहि मिले बसुदेव देवकी जननि जनक निजकुटुंब घनेरी । केहि
 अबलखि रहेहम ऊधो देखि दुःख नंदयशुसति केरो । तुम बिनको
 अनाथ प्रतिपालन जाजरि नाउकुसंगसहेरो । गयेसिंधुको पारउतारै
 अब यह सूर थकयो ब्रजबेरो ६० ॥ रागनट ॥ जाहु जाहु ऊधोजानेहे ।
 जैसेहारि तेसे तुमसेवक कपट चतुरई सानेहे । निशुणा योग कहां तुम
 पायोकहे कोनेब्रज आनेहे । यह उपदेश देहु लैकुब्जहि जाके हाथ
 बिकानेहे । मनतो हरि लैगये हमारेकही कोचसतिटानेहे । सूरदास
 अनघेरे ऊधो नागरिरूप भुलानेहे ६१ ॥ रागसारंग ॥ सानेभार सकही
 खांचे । नखशिख कमल नयनकी शोभा सकभृगुलता बांचे । दारुजात
 कैसेपरा इनमें ऊपर अन्तर प्रयास । हमको ह्वै सुगयन्दबतावत बचन
 कहत निःकाम । येसब अमितदेहधरे जेतेसेसेई मखिजानि । सूरसकते
 सकआगरो यामधुराकी खानि ६२ ॥ रागबोसठ ॥ कहियेतासों जोहाय
 विवेकी । तुमतीअलि उनहोंकेसंगी अपनिबातकेटेकी । खेसीकोठाली
 बैठीहै तोसोंमूँहचढावै । भूठीबाततुसी फटकेज्यों कनतोहाथन आवै ॥
 अजहंतो अगहूँन छांडत यहसूरखसतिभोर । सन कम बचन सूर अ-
 भ्यन्तर नन्दनंदन शिरमोर ६३ बार्ते कहत सयाने कीसी । कपटतिहारी
 अकट देखियत ज्योंजल नायेसीसी । हैंतीकहतु तिहारेहितकी का-
 हेतेसोभरसति । हमहंसया तिहारी तो कहुथोरीसीहै मरभति । छाया
 बसाय गये मुफलकसुत नेकहुलागी वारन । सूरकपाकरिआयेऊधोता-
 पर देवाडारन ६४ रागसारंग ॥ आये नन्दनंदन के नेव । गोकुलआनि-
 योग विस्तारी भलीतुन्हारी जेव । जबतुन्दाबन रासरचेउ हरि तब
 हांकत तुमहेव । अब युवतिनको योग सिखावतु भस्मअधारी सेव ।
 अबलग क्यों तुम यह मतदान्यों ज्यों योगिनि को भोग । सूरदास
 प्रभ सुनत अधिक दुख आतुर विरह बियोग ६५ त अलिकहापरीहै
 पैहै । बरतत प्रयास आज सयो हमको बचतनाहिनेबैहै । यहउपदेश
 सहितभारीज्यों चहिके भये बरेहै । जिहितन यशुदा सुतको सुखहै

हृदय मांभहोयेहे । तजि लीला मनुमारग अपने काहेने चलतउपेहे ।
 इहिआदरपरअजहूँबैठो डरत न सूर पल्लेहे ६६ माधवनेक दिखाईदेहु ।
 नातनके पलटैया तनसों जो भावैसो लेहु । भूलीफिरत दगोसी डोलति
 तजेश्याम अरु गोहु । जबतेइन अपराधी नयनन हटकत कियो सनेहु ।
 कहियो मधुप जाय पालागों बिरहकियोतनखेहु । सूरदासप्रभु प्रा-
 रापथिक को तुमहिनिहेरोलेहु ६७ हमतो तबहिं ते योगुलियो ।
 जादिनते मधुकर मनमोहन मधुवन गसन कियो । रहितसनेह सरो
 रुह सबदिन श्रीखंडभस्म चढाये । पहिरि मेखला चीर चिरातन फि-
 रिफिरि फेरि शिवाये । बांधेबेधु कंट शृङ्गीपिय सुमिरि सुमिरि गुण
 गावत । करबरबेत दंडडरपावत सुनत प्रवानदुख धावत । भोगभुगति
 भूलेभावै नहिं फिरेबिरह बैरागु । गोरख शब्द पुकारत आरत रस
 रसना अनुरागु । श्रुति अवतंसमैन मुद्राबलि अर्वाध अवार अवारी ।
 दरशन भिक्षामांगत डोलत लोचन पधपसारी । रमत न चित्त उदास
 फिरतअति बनबीथिनि दिनराति । आवत कबहुं कुटुम्ब दरशहित
 धरिंकंटक सोऊ न सुहाति । परम सुखरति नाथ हाथशिर दयो मंत्र
 उपदेश । चतुर चेटकी मथुरानाथ सों कहियो अब आदेश । को
 देख्यो भोगी या ब्रजमें योग देनहेआये । जानीसिद्धि तिहारे सिधकी
 जिनतुम यहाँपठाये । सूरदासप्रभु तंतुलखायो है हमरे सोइध्यान । तुम
 अलि औरहि ठौर चलावहु अपने फोकटज्ञान ६८ मनौदोउ सकहि
 मतेभये । ऊधोअरु अक्रूर बधिक महा ब्रजआखेट ठये । बचनप्राप्ति
 बांधे माधव मृग अनरत घालिलये । इनहींहती मृगी गोपीजन शायक
 ज्ञान हये । बिरहअग्निको दवादेखियत दहुंदिशि लायदये । अबसों
 कहा कियो चाहत है शाचत नाहिं जये । परमारथी ज्ञान उपदेशत
 बिरहनिप्रेमरये । कैसे जियहि प्रथामबित सूरज चुम्बकमेघ गये६९
 साधव छाँड़िदई पहिंचानि । तबते बिरह कुटिल या मोकुल कीनीहै
 निज खानि । तनु गिरि जानि आनि अवनो उर यहि डर भीतरहै ।
 गमनकान्ह खिनखनत काम शशि किरिशि उदातुगहै । रज अञ्जन
 जल नयन द्वारहूँरख्योहियो भरिपरि । निकसत नहींउपाय रत्न ज्यों
 गये श्यामरंग दूरि । तुमसों बात और अलिभावों उलटि ध्यान अपु

जीते । वैष्णव लङ्घत प्रजा इन्दर दुख कहो सूरको नीते ७० तुमअलि कमल नयनके साथी । देखियत बड़े काजको ऐसे हातधूसके हाथी । सुन्दरप्रियाम मगडमगडलकत अमजलकन अमछाजै । योगजानहूँ दशन भोगरद कोनीकुंवरिविराजै । जबशिशुहतेकुमार असुरहति आतेप्रीति मुजाने । अबभये बिबश जाय दासीकेव्रजतजि प्रकटपराने । करि करि कपट तुच्छ बिबिधावश भगतकरत अंगभटज्यों । सूरज अवधि मन्वसंजीवन सारिजियावत नटज्यों ७१ माधव मधुपुरी रतिमानी । सकबार बिन घोय उमंगि ऋतु बरया आयतुलानी । घनसुधि नेहबैन बन्देअतिअवधि दामिनी कोधति । दादुरकाम बियोगमोरसन पथिक कुञ्जरुह चोंधति । अबसुकुमार अंगअब निरखत जेगुणाग्रन्यनिभाखे । अतिकूलवन्त जात सबजानत गहेफेँट तिनराखे । यदुपति कुंवरि नाम कहियतहै ये जग चलत कहानो । सुरशिंगार बने कैसे अलि आँखि आँजियेकानी ७२ अब हरिऔरिहरिगाराचे । ऊधोसरससखातुमकपि ते तुमतेसयानपकाचे । बालापनते निकट बसतहै शून्या सकपखानो । जैसे बास बसत है कोई तैसे हात सयानो । जे उपमा पटतर लै दीजै ते सब उनको लायक । जोपै अलख रहे है वा दिशि ता दिशि ये व्रज नायक । जोपै यहां कहतहैं निजकरि हरिसवही भरिपूरि । आवाग मनकरतहो काको कौ लगुकाते दूरि । जे जे बुद्धि सिखावहु हमको तेसब हमहिअलेखे । सुरमुमनभा तबसुख पैहैं कमलनयनके देखे ७३ माधव मानिके हित हारि । तौतुव मुख ये योग सँदेशे दोन्हे हैं गहि डारि । घराटानादगीतमुरलोधुनि मनकुरंग संगाराखे । नहिंमारत नहिं मिलत अंकभरि अतुर सखासंगनाखे । नयन लगाति घातकज्यों जानत रतिमानत नहिंगाये । करि करि यतन प्राणाराखेबिनु सूरस्वाति हरिपाये ७४ तबते बहुरि दरशनहिं दीनो । ऊधो हरिमथुरा कुब्जा गृह रहेनेमव्रत लीनो । चारिमास बरयाके आगमसनोरहतयकठौरि । दासी धाम पवित्र जानिके नहिंदेखत बहिपौरि । ब्रजबासी सबरवाल कहत हैं रिसगहि अनत गये । सुरसगुणाहे जातमधुपुरी निर्गुणा नाम फये ७५ पठवत योगहातनहिं लाजन । सुनियत यंत्रतांतिते जानी कपटराग रुचिबाजन । जियहोगही क्रूरकी सिखवनि मोह हात नहि

राजन। यहनृपसीतिकहे कौनेहुयुग हनेहेत यशआजन । सोइतसुरति
 नहींकीजति दुख देखि पर्योजाह माजन । सबसुधिपरी बचनकन
 होवत हँकरहे मुखभाजन । कैदुर्लाहिनि दासीभय दूल्हाफिरत व्याह
 के साजन । सुरबडो भुवभूप कंस इत्यो वा कुबरी के काजन ७६ या
 ब्रजसगुणा दीप परकास्यो । मुनिऊधो भृकुटी विवेदपर निशिदिन
 प्रकट अभास्यो । सबके उरसरबनि सनेहभरिसुमन तिलीकोवास्यो ।
 शृगाअनेक तेषुगा कपूरसम परिमल बाहर मास्यो । विरहअगिनि
 अंगहि सबके नहिं बुझतपरे चौमास्यो । ताकेतीन पुकेया हरिसेतुम
 से पंचसरास्यो । आनभजन दृशासम परितब करती थोति उपास्यो ।
 साधनभोग निरंजनतेरे अन्वकार तमनास्यो । बादिनभयोतिहारो
 आवन बोलतहे उपहास्यो । रहिनसके तुम सोकरूपहुँ निर्गुणा काज
 उकास्यो । बाढीज्योति केशदेशलो फूट्यो ज्ञानमवास्यो । दुरवासना
 सुलभसबजारेजेऊँरहे अकास्यो । तुमती निपटनिकटके बासी मुनिय
 तहुते खवास्यो । गोकुलकछुरसरीति नजानत देखत नहीं तमास्यो ।
 सुरकरमकीखीर परोस्यो फिरफिर चरतजवास्यो ७७ कहिवे औसी
 जिनि शकराखौ । लांबीमेइ दइहे तुमकोबकतरहौ दिनआखौ । जाकी
 बात कहततुम हमको सुभौरहेके कांधी । तेरोकहेउ पवन को भुस
 भयो उडेउजात ज्यों आंधी । काहेते अमकरतु मुनतुको हातजिवन
 को रोयो । सुरइतेह सांभन सुभूतनिपट नयन को खोयो ७८ प्रीति
 उहिदेश न कोऊजानत । तोतबातकहतअलिसेसी बिनहिं तृथापहिं
 चानत । जेगोपाल गृहगृहब्रजभोतर चोरीलेदधिखाते । ते अबदुखित
 देखिब्रजबासिन दूहिभये कुबजाते । सुरकुटिल जितने मुनियतहें लोग
 पुरातनगावत । नखशिखलो बियरूप बसतहें सधुवन नाम कहावत
 ७९ हमपरहेतुकरे रहियो । वहदिनऊधोबिरसतनाहीं फिरिफिरिकाव
 हियो । देखेजातहे अपनीअखियां यातनको दहियो । याब्रजको
 ब्यवहार सेसाभयोसब प्रभुसों कहियो । प्रयासशरीर कमलदललोचन
 कबहिंदरश लहियो । सबसुख लाइ लड़ायसर प्रभु वेहि धरारहियो
 ८० हरिविन कैसेराखों प्रान । पहिलेही रंगरंगीप्रयासरंग अबन च-
 दतरंग आन । कागदभूटो लेखनि भूटी मसिभूटीपरवान । जेजेबचन

कहेहरितुम सों भूठहमारे खान । प्रयाससुंदरकी बतियांभूडी भूठेतुम
अगवान । सूरदासप्रभु बेगिभिलहु किनव्यथा बिरह पाहिंचान ८१ बि-
लख हममानहिं ऊधो काको । तरसत हैं बसुदेव देवकी नाहिंन सात
पिताको । काकोसातुपूतको काकोदूव पियोहरिजाको । नंदग्रशोदा
लाइबझाये नहिंनभयो हरिताको । कहियो जाय बनाय बीनती जो
हितुहै अबलाको । सूरदास प्रभुप्रीतिहै कासों कुटिल मिल्यो कुब्जा
को ८२ हमहिंता इतनेही सों काजु । कैसेहूं अलिकमल नयनको ब्रज
लै आवहु आजु । और अनेक उपाय तुम्हारे विकलकरहु सुखराजु ।
कैसेहैं निबहत अबलनिपै कदिन योगकोसाजु । नखशिखसुभगप्रयास
तनकीछवि दरशन हरत बिराजु । सूरदास सतरहत कौन बिधि मदन
बिलोके बाजु ८३ जीलगिहृदय ज्ञान नहिं आवै । तीलगि कोटियतन
करै कोऊबिन बिबेक नहिंपावै । न्याय बिचारि सपनसों देख्यां में
सब यतननि जोय । नाना दारु मध्य ज्यों पावक प्रकट मथेते होय ।
तुमहीं कहत सकल अंगव्यापक असु सबहीते निथरे । नखशिखलों
तनजरत निशादिन निकसि करत किमि सियरे । सांचेबोलसबै बोलत
हो ज्योंमुख मेले तुलसी । सूर सुअ्रीयव हमहिं बतावत ज्यों कफज्वर
पर गुरसी ८४ संदेशन सुनत प्रीति गतिजानी । चातकस्वाती बूंदलों
सागर भरेउ बतावत पानी । विनगुणा मोहबंध्यो शुक्नल ज्यों बन्शी
बन कल कीनी । अबधौं मनपठये देखन तुम यहै सुरति हमलीनी ।
निर्गुणा के ऐसे गुणा सुमिरत सुनिअलिसखा सनेही । ज्योंहरिलियो
कौन ऐसी हितु सूर सुपोषतदेहो ८५ सबजल तजेप्रेमके नाते । तऊ
स्वाति चातक नहिंछांडत प्रकट पुकारत ताते । समभक्त सीननोरकी
बार्ते तऊप्राणा हटिहारत । सुनतकुरङ्ग नादरस परगायदपि व्याधशर
सारत । निमिय चकोर नयननहिंलावत शशि जीवत युगबीते । कादि
पतंगज्योति बपुजारे भयेन प्रेमघदरीते । अबलानिहिं बिसरी वेबार्ते
संग जुकरीं ब्रजराज । सुनिऊधो हमसूरश्यामको छांदिदेहकेकाज ८६
मनकी मनही मांभरही । कहियेजायकौनसों ऊधेनानहिंन परतसही ।
अबधि अधार आवनहिं कीतन मनहीं व्यथासही । चाहतिमूर्तिगुहार
जहांते तहंहिते धारबही । अबबह दशादेखनिज नयननि सबस्यर्था-

दहही । सूरदासप्रभु के बिहारेते दुसह बियोगदहो ८७ ॥ रागनट ॥ कहि
 योअति अबला दुखपावै । हिरन पदनप्रति प्रविशत ज्योंहै बारबार
 समुझावै । सारंगरिपु ता पतिरिपु वारिपु तारिपु तनहिजुजारै । इति
 बाहन बाहनपति धायल ता सुतआनिबचावै । सुररिपु गुरु बाहन ता-
 रिपु पति ताचाहि भेयदिखावै । सूरदास प्रभुतुम्हरेमिलनकोबिरहिनि
 तपति ब्रुझावै ८८ ॥ रागकेदारो ॥ हमतोख बार्तनि सच्चपायो । गोव
 खिलाय पिबायदेह पय पुनि पालने भुलायो । देखति रहीफसान
 कीमतिज्यों गुरुजपज्यों न भुलायो । अबनहिं समुझति कौनपापते
 बिघनासो उलटायो । बिनुदेखै पलपल नहिं क्षणाक्षणा येही चितही
 चायो । अबहिं कटोरभये ब्रजपति सुतगेवत सुंदु न धूवायो । तबहम
 दूधदही केकारना घरघर बहुतखिझायो । सोअब सूरप्रकटहेलाग्यो
 योगरु ज्ञानपठायो ८९ ॥ रागमलार ॥ ब्रजपर सदन कटकई आई ।
 ऊधोदेश मधुपुरीबासी कहियो हरिसोंजाई । गरजचले चहुंदिशि
 बादर ज्योंरसाबंबजजाई । पारक असु असवार कामके सुभट चले सु
 दाई । अतिबडघटा सुडिप पंकाति सों दामिनि ध्वज फहराई । चातक
 पिकाशिखि द्रुमशाखाचाहि अवगानि टेरेखनाई । कंठिनियंग कसि
 कुटिल धनुयलेलीनहुकार बुलाई । मुखअरविंद दिखाय सूरप्रभु अब
 किनिलेहुं छुडाई ९० ॥ रागकान्हरो ॥ जोसकरन्द लुब्धत मधुकर मुख
 कमल छांड़िकत करत धमन । नहिंसौरभपद पद्मके तुल्य कहुताहमते
 रसजात कोलिवन । सारथुझार भुवन छैद्वैषट रत कीरमुनि सुनिन
 अवन । कहाकान दीनो खखे पथ कहा बिचार कियो ब्रजअवन ।
 प्रथमहिं शाप मुजनमेको फल भेटधरी साधना पवन । क्यों कहिगई
 बातयोगनिकी सूरअछत रात्रिका रवन ९१ ॥ रागधनाश्री ॥ अंखियां
 हरिदर्शनकी प्यासी । बिनुदेखै पलयुग सम बितवति क्योंजीवै ब्रज
 बासी । घरघर छांड़ि बनबन डोलत ऐसे फिरत उदासी । इहै सुहात
 रैनदिन कहियत हैं निर्गुणा अविनासी । ज्यों बिनुभोर कमलशशि
 वासित परे प्रेमकी फाँसी । सूरदासप्रभु बिनु यों लागत जैसेमोन जल
 सासी ९२ ॥ रागआशावरी ॥ सुनिउत्तर किनहै मधुकर बातसखी आननकी ।
 निकट रहत याते ब्रुझति हैं कथाचलत काननकी । कैसे बेय रहत

मनमोहन कौनप्रियाप्राननकी । कोछवि निरखतचदनकमलकी का-
 तों मनमाननकी । तुमअक्रूर वसुदेवदेवकी सभाभली जाननकी । क्यों
 करिसकै बिषयजल तीरथे काहुचितै चाननकी । कहिहो सबै प्राप्ता
 नायक्यों तुम्हरेगुना गाननकी । सूरछनत फोकोभयो योग जगोपिन
 मन ध्याननकी ६३ इतनी जानिपरै जो ऊधो मनपछिताओ धरैनहीं ।
 केसरि तरलतरङ्गिनकी गति उपजति जातिवही । मालाकार दुलारन-
 न्दकोगोपीबेलिजुही । क्यों सुखवत करुणानिधिलजबिनुपैयतुवनेमही ।
 अग्निउपज जबजब वृन्दावन योगयुक्ति निवही । तैसे समयभयोअब
 ब्रजमें जौन बुझावै अबहीं । छनतकथा सुखवचन सखीके ऊधो ग्रन्थ
 प्रही । सूरप्रियामतिहिला तहंप्रकटे यातेचलतकही ६४ प्रियामताके
 लये मधुपकी द्वैवार्ते सुनिलीनी । मेंजानो सखि कछुहैं पैकछु नाहिंन
 काहेकि करणो कीनी । कहि युवतीबनाइ लघुता कीनीबडाई अपथ
 अकथ कथा साधुरसभोनी । धर्मकियो सुजाल भल्लतिलक भाल
 लक्ष्मिदालि मृगीबागतिभीनी । ज्ञानके छनत सुनिज्ञान मन उपजत
 तिहिकेबदलेहम भई सतिहीनी । राखिलेहु सूरस्वामी जो संदेशअंत-
 र्यासी नातर कुशून्य रूप कालसम पीनी ६५ ॥ रागकल्याण ॥ जाहु
 बजाहु जाहुआगे ते ऊधो पतिराखति हैं तेरी । काहेको जियरोय
 दिवावत देखतिआँखि बरतिहै मेरी । तजु कहत है साँच हैं गोविंद
 कहियत हैं कुन्जा उहि घेरी । दोऊ मिले तैसेई तैसे ये अहीर बड़ कांस
 किचेरी । तुमसारिखे बसोठ पढाये कहिये कहा बुद्धिउहिकेरी । सूर
 दास पहिली सुधि बिसरी देतहते ग्वालन गँगहेरी ६६ ॥ रागसांग ॥
 हमरे को बनयोग अराधे । वटुआभोरी दण्ड अधारी मंजन को तल
 बांधे । आसन पावन बिभूति मृगछाला इतने को को साधे । सूरदास
 हरिमणिक परिहरि कोरिगाँठि कोबांधे ६७ ॥ रागमोरी ॥ श्याम तु-
 न्हारी ये बाते । अपनिचोप को मुँहकि कहतहौ भूलतहौ जुअबहिं
 उठिजाते । श्यामशरीर गहवटपद गुना अतिहोलुव्व फिरत दिनराते ।
 रातीदेख कनेर कलीइयों अन्तरसेत कपटजिय याते । जिह्वा कोटि
 बक्तहु न बनई अतिहि बिचित्र अटपटी याते । कहँलों परेखो करै
 सूरप्रभु बारक भिलहु प्रीतिकेनाते ६८ ॥ रागमलार ॥ श्यामकोइहै प-

रेखोआवै । केवह प्रीति चरगायावक कृत अब कुब्जामन भावै । तब
 कत पाणिधखो गोवर्द्धन कतव्रजपतिहि कुडावै । कतबह बेरा अघर
 मोहन धरि लैलैनाम बुलावै । तब कत लाइलडाइ लडैरो हँसिहँसिकंत
 लगावै । अब वहखप अनूप कृपाकरि नयननह न दिखावै । जामुख
 सङ्ग समीप रैनदिन सोइअब योगसिखावै । जिनहुख अमृतदयेरसना
 भरि सो कैसेबिय प्यावै । करमोडति पछिताति हियोभरि क्रमक्रम
 मनसमुभावै । सुरदास यहिभाँति बियोगिनि ताते अतिदुख पावै ६६
 लिखिलिखि कितव पठावहु कागर । हम अबलनपर मयाभईहै भये
 कुँवरिवश नागर । ऊधो योग कहालै कीजै जलबिनु सुखोसागर ।
 कहियो मधुप कांचके धोखे कोदेहै बैरागर । कहि या प्रकट सँदेश
 जितहिबे मधुवन प्रयास उजागर । सुरप्रयासबिनु क्योंमन राखहिं तन
 यौवनकी आगर १०० सखोरी मोमन धोखेजात । ऊधो कहत रहत
 हरिमधुपुरि गतआगत न थकात । इतदेखो तीआगेमधुकर सत्तन्याय
 सतरात । फिरिचाहे तो प्राणनाथ इतमुनत कथा सुसिकात । हरि
 साँचे जानोसबभूते जेनिगुणा यशगात । सुरदासजिहि सबजग डहँक्यो
 ते इनको डहकात १०१ जियसां सुरति करत रहिबी । घोयबसतकी
 पीरहमारी कछु न मन बहिबी । ऊधो सकबात हरिजुसां समयपाय
 कहिबी । परमजानु यदुनाथजातिकी गुणाबिचारि सहिबी । सकबार
 दर्शन मुखदैके बिरह आविदहिबी । सुरदास प्रभु पाणिगहन अरु
 बचनलाज रहिबी १०२ भौराकाहेको भयोउदासी । बपुतेरो कारो
 बदन उपीरोतकलि सो कइ आसी । सबकलिका को रसलैकैपुनिवेऊ
 करो निरासी । साँचो सुरप्रयासकोसेवक योग युगति सुउपासी ॥
 १०३ ॥ रागमौरी ॥ ब्रजतेइ अतु पैनगई । पावसअरुग्रीधम प्रचंडसखि
 हरिबिनु अधिक भई । ऊरध आस समीर नयनघन सबजल योग-
 जुरे । बरिय जोप्रकट किये दुख दादुरहुते जु हरिदुरे । विषमवियोग
 दुसह दिनकरसम दिनउठिउदयके । हरिबिधु बिमुख सुतो कहि सूरज
 को तनतापहरे १०४ नाहिं न ब्रज नन्दको कुमार । परमचतुर सुन्दर
 मुखदायक तनकोप्रिय प्रतिहार । रूपलङ्कार सखिलयेरहतहो अनुदिन
 नयनन डार । अब तिनबिनु उर भवनभयो है शिबरिपुको सञ्चार ।

निशानिमेध कपाट लगेबिनुशशिसुसत तनसार । सूर प्राणवाहि आश
न छांडत सुमिरि अवधि आधार १०५ ॥ रागमोह ॥ सेसेजो हरिजू
आवाहिं । निरखि निरखि वा बदनमनोहर नयन बहुत सुखपायहिं ।
तैसिय प्रयासघरातैसाइ हरितवन तैसियबिच बगपंक्तिदिखावहिं । तै
साइ मोर कोलाहल सुनिकै सखीहरयि हिंडोरना गावहिं । कबहुं क
यहिनिस संग जुखेलैं कबहुं निकुंज बुलावहिं । कबहुं क लैसैं सखा
शैलचहि मुरली मधुर बजावहिं । बिहुरत प्राण रहैकैसे करि बहुत
भांति समुझावहिं । जितहीचलत जानिसुरजप्रभु तितहिं तितहिं उठ
धावहिं १०६ ॥ रागधनाश्री ॥ नन्दनंदन सौं इतनी कहियो । यद्यपि
ब्रज अनाथकरि छांडेउ बारक हमपर चितधरि रहियो । तिनुका
तेरि कतव डारतहैं सकबासकी लज्जागहियो । गुण अवगुण सब
मेदि हमारे हमदासिनकी इतनी सहियो । तुमबिनु प्राण आवहिं छां-
डतिहैं अबये लोचनसपने लहियो । सूरदास पातीलिखि पठै जहां
प्रीतितहैं और निबहियो १०७ ॥ रागसारंग ॥ राखीयहमत योग पट
पटो ऊधो पाईपरों । कहँसरीति कहां मनशोधनु सुनिसुनि लाजम-
रों । चन्दनकाँडि बिभूति बतावत यहदुख क्यों बभरों । सगुणहिखप
रहेउ उरझंतर निर्गुण कहा करों । निशिदिन रसना जपत प्रयासघन
सौननिक्यों बपरों । नासागहि तुमध्यान बतावत बेसरि कहांधरों ।
मुद्रान्यास अंगअंग भूयरा पतिव्रतते न ररों । सूरदासप्रभु यह व्रत लेरे
हरिमिलि नहिं बिहुरों १०८ ॥ रागमोह ॥ माइयह मधुवनकीरीति ।
नोरसजानि तजोक्षरा भीतर नैवलकुसुम करैप्रीति । जिनहिंसंगकै से-
वककै तब क्यों आवै परतीति । हमहिंकाँडि विरमेकुब्जाके आये न
रिपुकोजीति । जनि पतियाउ मधुरसुनि बातन आयेकरन सहीति ।
सूरदास अससङ्ग प्रयासको ज्यों भुसपरकी भीति १०९ ॥ रागसारंग ॥
जानीआली ऊधोकीचतुराई । ब्रजमंडलकी दशादेखिकै कथा न बै
विसराई । परसप्रिया को देखन पठये कहिगति योगवनाई । उनको
आनभाव बिहुरन कहि वैबतियां हमलाई । कहा कहाँहरि कहा
सुन्यो तुम कहलीला मुखगाई । यद्यपि बिबुध बड़े यदुकल में नेऊ न
बढी बडाई । गुणसय मित्र सदा श्री पति के मुक्तिपुरी अब गाई ।

नहिं देखी ब्रजवन की लीला सूरप्रथाम लरिकाई ११० ॥ रागमोरी ॥
 तुमहिं सधुप गोपाल दोहाई । कबहुं क प्रथाम करत छां की मन
 किधोनिपटचित सुविबिसराई । हमअहीर मतिहीनचापुरी हटकतह
 हति करहिंमिताई । उइनागर मथुरा निरमोही अंगछंग अरेकपट च
 तुराई । सांची कबहु देहु अवसानसुख छांडहु जिया कटिल धताई ।
 सूरदास प्रभु बिरदलाजधरि मेदुयहंकी नेकहंसाई १११ कैरी जीबे
 ऊधोहरिपरदेश रहे । बरयि बरयिहरि गर्जतमेघा नबिछोरी नारबहे ।
 कहिपटयोमधुपुरी सखीमेरेहांतो चरगागहे । बासरगाये निहारत मा-
 रग चातक रैनडहे । कासोंकहां तपतमन निशिदिन कायहपीरल-
 हे । हमहं किन लेजाय सूर प्रभु को ब्रज दुखहिंसहे ११२ ॥ रागमोरी ॥
 उधरिआये कान्ह कपट की खानि । सर्वसुहरेउ बजाय बांसुरी अब
 छांडी पहंचानि । जिनपय पियत पूतनामारी दक्षकरी नहिंहानि ।
 बलिछलिबांधि पतालपठायेनेक न कीनीकानि । जैसेबधिक अधिक
 मृगबिंदवत रागरागिनी टानि । अवधि आश परतीति ओट दै इनत
 विषम धरतानि । जैसेनटशर टरत न उरते तुमऊधो अतिजानि । सूर-
 दासप्रभु के जिय भावै आयसुमाये मानि ११३ कहियो सधुप जाय
 हरिखो मेरोमन अटकेउ नयननके लेखे । इहे दोख दैदे भगरतहै तब
 निरखतहै मुखन निमेखे । केततही बताय बढति यों लगीपलक जह
 जाके पेखे । तेसब अब इनपै भरि छांडत बिधि जो लिखे दर्शनमुख
 लेखे । यहिविधिअनुदिन युक्ति यतनकरि गनतकईछंगुरी अवरेखे ।
 सूरदास इन भगरन नहिंचित घटत बदेन बिन देखे ११४ कबहुकहा
 हमते बिगरी । कौन अन्याय योगलिखि पठये हंसिसेवा कबहं न
 करी । पाखंड प्रीति करी नंदनन्दन अवधि आधारहुती सोटरी । गुना
 जटाऊधोलै आयेब्रजबनितापहिरो सिगरी । जातिल्लभावमिदैनहिंस-
 जनी अन्तनऊकोरीठिकरी । सूरदासप्रभुबेगिमिलहुकिन नातरुप्राण
 जात डगरी ११५ योग कौनसों हरिपाये । निजआजा तपकियो बि-
 धाता कनकर राखिननाये । योगयुक्तिशंकरआराधी परमतत्त्व लबला
 ये । भुजबरी प्रीति कबहिं नंदनन्दन हिलिमिलि कलसुर गाये । बक
 दासअथ महाकवि कबहं दगाछाया न कराये । बरयत दुखितजानि

सबमोहन कबगिरिवर करखाये । अतितप पुंन विप्रदुरवासा दुरवा
 तथानितखाये । चक्रवर्धन तपततहासुनि कबहुल आगलसमाये ।
 बहुतप कियो नार्कशडेडिन अजा सिंधुभरलाये । सबलपैनीती अज
 कहिकहिहरि वरुतापाउ बुकराये । भक्त बिरह कातरकातरानस
 वेद निरंतरगाये । कोहेयोस सुनत ह्यांजघो सूर प्रजास मनभाये ११६
 हमरेकौन बोलवतसाधै । मुद्राभस्म अमारी कंधाको इतनो चाराधै ।
 जाकोकहं आहनिहं पैयत अगमअपारअगाधै । गिरिधरलाल छबीले
 को यह कहापछापो पाधै । सुनि मधुकर सखा सब रसचाख्यो सो
 कयो मुखपावत आधै । सूरदास ऐसीभरि तजिकै धुंधचीगांठि को
 बांधै ११७ इनअलि कैसैकै पतियाहिं जाको कौन ठौन सगलाये ।
 हांकरिरही कंदमें लरि या बिनापिरोयेवाये । तुमहीं कहत आहि
 यहनिशु या काहासुहिं त्यहिंकाज । सूरदास सखसहिं मिले मोहन
 रोमरोम मुख राज ११८ ॥ रागआसावरी ॥ ज्ञानधर्मके आताबक्तापै बक्ता
 इसजाने हो । अवशा धर्मनहिं या मारग में कहतप्रीति के लानेहो ।
 बहुबल्लो लज्जत जे मधुकर नहिंमुख्यज पहिंदानेहो । पै निशिकमल
 गन्धलोभी हूँ तजतकतिव तन प्राणेहो । तुमओता यूगओता कहुंघों
 बुझति हमहिं अयानेहो । तुम आये पदपल्लव तजिकै मृग न जात
 हतिबानेहो । धेवक्ता अरु तुम वक्ता हो सुकथिअ दोऊ समानेहो ।
 पहिआयेतुन संख्योगको कहु कबजाके कानेहो । शब्दमाधुरीपरभृत
 प्रतिभृत उडते प्रतिकिनुहानेहो । ताते तुमफिर जाहुमधुपुरी वाचक
 ताहि विगानेहो । अबहम तुष्टभईइतनेही अपथ पंथके दानेहो । प-
 रसाता सिधिभइ इसमानो भये देशकोराने हो । ऊधो बचन कछुनहिं
 उपजत सुन्दरि के सुनकानेहो । सूरदास सांवलरस माती बोलतिअति
 अभिमानेहो ११९ ॥ रागमोहठ ॥ अपनेखुषीं पिछोचनयुग लाधीबले
 नधुदेश । इजो रच्यो पुस्तकसुनि ऊधो अगिनमें कियोप्रवेश । बरसा
 लुजाति मिलेमोहनसों औरदियो उददेश । ताते कछु न बिचारेउ
 हमहिंस सतिपतरोसदेश । दरशनतयै नयनलैयायो प्रयासखड्ड नय-
 वेश । सूरदासमनवासि प्रयासाकी दुर्लभजह्ममदेश १२० कहाभयोजु
 आजु राजाभयो । अबतौ कछु औरकी औरै दांढ्योहै जू हूँ भुजनयो ।

अबलों तो छोटेछंग घरघर भोजन मांगि लयो । सोई ब्रज अब क्यों
 बिसरायो जहँ चोरीते जन्म गयो । काल्ह तो ग्वालिन के संग
 सथिकेपीवतहै जु धयो । अबहुम और अनखकीनोहै हनुयोगलिखि
 पठयो । अबयह ज्ञान वेद परवासी हमपर अरु अभिमानअयो । सुर
 दास चतुराई देखीकुब्जा चितहरयो १२१ कहुअलि काके सीत अ-
 हीर । काहेको भरि भरितुम डारति इन नयननतेनोर । आपुन पीय
 पिवावति ग्वालिन इन गैयनकोसीर । स्यासया पलुपलु बिसरत
 नाहीं या यमुनाकोतीर । हृदये भीतर दवलागोहैदाहत सकलशरीर ।
 अंगअंग कै तबतामुनि सुरज संकर्षणकेबीर १२२ जेहि जेहि तजो ब्र-
 जकीभीर । कहकहां अलिहरि लखी तुम सखासुन्दरधीर । मदननृप
 शशि नेत्र अबलनि दुर्गदूत समीर । विपिन सेना साजि नवदल बढत
 बन्दीकीर । फूलहीद्रुम मध्यमानों कवच कज्जनबीर । ककुभ कुञ्जर
 बिटप गोर मुचासु चमरसईर । चमूचज्जल चलत नाहिंन यकितहूँ
 पुरतीर । समरमानहुं कीट कीरट हसुन अति तियोधीर । आसजातक
 व्याधिबाजक कहैंकासोंपीर । सुररखि शिरोमणीबिन जरत य-
 मुनानीर १२३ बिरही कहँलों आपु सँभाहैं । जबते गंग परी हरिपद
 ते तबते बहिबो नाहिं निवारैं । नयननते बिहुरी सौहैं रहैं शशि अ-
 जहँ तनगारैं । रामतेबिहुरी कमलकंठभये सिंधुभये जरिहारैं । बेगुते
 बिहुरी बीति अवाधि भइबदही कौन निवारैं । सुरदास जाके अंगवि-
 हुरैऊधो किहि बिद्या परचारैं १२४ ॥ रागकेदारो ॥ उरमें साखनचोर ग-
 डे । अब कैसे निकसतहैं ऊधो तिरछे हूँ जु अडे । यदपिअहीर यशो-
 दानन्दन तदपि न जातछडे । वहाँकहत यदुबंश महाकुल हमहिं न
 लगतबडे । कोबसुदेव देवकीहै को नाजानैसो बूझैं । सुरश्याम सुन्दर
 बिनदेखेऔर न कोऊसूझैं १२५ ॥ रागनट ॥ रे अलिकहा सिखावन
 आयो । येतो नयनरूपरस राचे कहेउ न करत परायो । योगयुगति
 हम कहू न जानहिं नाककुब्रह्मजानो । नर्वाकशोर मोहन मृदुसूरति
 तासों मन अरुभानो । भलीभईतुम आये ऊधो देखहु दुसइ दुखारी ।
 दौव उपाय मिलाय सुरघन आरति हरहु हमारी १२६ ॥ रागआसावरी ॥
 हमतो मृतक जिवत शशिसाखी । तुम अलि रविहित कमल विशेषी

हरे विमल मधुसाखी । सुरली मधुरश्याम मुख मुनिमुख लोचने अनुरा
 दुवार । मधुहारी अक्रूरदर्श मुख अवधिरुडाई छार । मनको गिरह न-
 यनकहजाने अतिमतिहसितनावै । सुरभरत अंगुलीकृपितया तज योग
 गुणगावै १२७ ॥ रागकेदारो ॥ यहै प्रकृति परिआई ऊधोअनुदिनही मग
 लेरे । जो कोउयोतिकरै कैतेहं फिरत न लोचनकरै । जादिनतेयशुगलि
 गृहआये मोहन यादबराई । तादिनते या दरश परशविन और न कहू
 मुहाई । क्रीडत हंसत कृपाअवलोकत गुणसमान पलजाते । प्रेसहपति
 सबही अंग लहते लोचन पै न अघाते । जागत सोवत रूपन निशाविन
 सुन्दर तन अतिभावै । सुरदास ता कमल नयनविन बातनि कथोरदि
 आवै १२८ ॥ रागकल्याण ॥ उत्तर कत न देत अलिनीचि । श्रीयलतेज
 सहतिव्यों बेली बड़ी कमलकर सोचि । सुरलीअवर सुधानिधि
 आनन दैपोयी दिन राति । अब ये काम धामदासीके सुरति रीति
 किहियाति । समुझी प्रयामकरो स्वारथकी रचिगुण कपटो राज ।
 सुरसक राखतहै नाता जगत कहत ब्रजराज १२९ ॥ रागकान्हो ॥ उपले
 अलि बहदेशमुखको । जहांबसत गोपालहमारो तहांजायदुखहीको ।
 सुन्दर बदन कमल सुरलीध्वनि कतमुख शब्द गुनायो । तवतेप्रकथो
 मधुपमन तहई बहुरि नहीं घरआयो । जैसेदेह आसविन तैसे सबब्रज
 लागत फीको । केहिकेहि यतन प्राण राखे हम सर सजीवन जोको
 १३० ॥ रागनट ॥ हेगोपाल गोकुलकेवासी । येसीबातैं मुनिमुनि ऊधो
 लोगकरतहैंहांसी । मथिमथिसिंधु मुवा सुरघोये सिंधुभयेबियआसी ।
 इमिहति कंसराज दै औरनि आपुचाहिकैदासी । बिसरेउ सुरविरह
 दुखअपनो सुनतचालि औरासी । ज्यों न बिहंगम गुप्त बिलोकी प्र-
 कट न पकरतफांसी १३१ ॥ रागबिलावल ॥ ज्ञानविना कतहं कहुनाहिं ।
 निर्गुणातजि सगुणाहिं क्यों ध्यावतिमुघो कहौ किहियाहिं । तत्त्वभु
 जेतैं निकट न छूटे ज्यों तनकेसंग छाहिं । भूदेवचन कहत काहे को
 मुनै हृदय दबदाहिं । तन धन नयनमोहनी युवती औरन नाहिं लखा
 हिं । सुरदास अलपेकरलागे हयोकहौकेहिगाहिं १३२ ॥ रागधनायो ॥
 हमारे बोलबचन परतीति । येऊधो हम जानत नाहिंन तुम्हरे गांव
 किरीति । सुन्दरश्याम गये मधुवन को कह्योकंस रिपुजीति । उनकी

वातन कोन पतीजे भुसऊपर की भीति । आवन अर्धविगये बहि ह-
 गती गयेदिन बहुतकवीति । सुरदासप्रभुमिलहु कपाकारि लुनिरि पु-
 रातनप्रीति १३३ । रागमारंग ॥ बदलेको बदली लैजाहु । उनकी सक
 हमारी ह्वैतुन सबैजैया आहु । तुमतो हमैं जानिकेभारी पोईसारी
 बाउ । हमरीबेर सुकरह्वै भागत हिये चौकुनेचाउ । अतनुम सखी
 निदित ह्वैजैये मेरहु उनकोबाहु । सुरदासज्योहार भयेते हमतुम पोऊ
 शाहु १३४ ॥ रागजैतया ॥ हरिहरि देखौ तेरोजान । सुफलकसुत सर्वसु
 सँग लै गयो तुलैन आयो प्रान । लुयाकतअपलो क लावत कहतयह
 संदेश । इरपिकातर होहुजातिन कहतये नवलेख । योगनतिअतिविशद
 कीरति होहिं बांछित काम । सदातनमय तामईरहेवेपुकुय तुमभाम ।
 इनचरया कंज सुबासलैलै जीवत सेसीरीति । कहततिनसों धूम धूंहु
 ना चहुहु यहिप्रीति । अजहुं नहिं कहिकहि सिरानों या कथाकोछोर ।
 सुरधाखातनकषो मनदेखिलीनोषोउ १३५ ॥ रागमारंग ॥ तूजो कहतहरि
 हृदयरहतहैं । कैये होय प्रतीतिमधुप्रधानि दुखइतने जु सहतहैं । बासर
 रीति कठिन विरहागिनि अंतरप्रासा दहतहैं । प्रजरि प्रजरि तननिक-
 सिधूमअरु नयननिनीर बहतहैं । कठिन अवजा होतदेहदुख सरयादान
 गहतहैं । कहोन क्यों मनमाने सुरज इनबातन जु कहतहैं १३६ जा-
 निके बावरीजनिहोहु । तत्त्वमिले सेसीह्वै हो ज्यों पारस परसेलोहु ।
 मेरे कहेउसत्यकरि मानहु मेरिसर्बानि को दोहु । तबलागिसब पाती की
 चीपरि जबलगि अक्षरमेहु । रेरे मधुप जातयहसेसो क्यों कहिआवत
 रोहु । सुरसुवस्तुहिंछांड़ि अभागी हमहिं बतावत खोहु १३७ सेसी
 कहूंकहो जिनिऊधो । कगलनयनकी कानिकरत ननुदेती उत्तरसूवो ।
 बातनही उडिजायऔर ज्यों त्यों हमनाहिंनकाची । मन क्रम बचन
 प्रसिद्धकंतमत कान्हकुलंग गराची । पासागों सोइतुन कीजो मिह
 हृदयको शूल । गुरलीघर को आनि दिखाबहु पहिरैपीतदुकूल ।
 इनहीं बातनभयेप्रयासतन निलवतहो गह्विछोलि । सुरबचन लुनि र-
 डेउ उखोषो बहुरि न आयोबोलि १३८ अलि तुमजाहु फिरि बहि
 देश । जोर करिकरिहो भगाहै सीख सिखलबलेश । भाललोअनचन
 चमकत कठिन कंठहिशेष । नादगुदा जिभु तिभारी करो रावल भेष ।

वहां जाय संदेश कहियो जटाधरो सबशीश । कौनकारना नाप्रच्छांड़ी
 सररहे संदेश १३६ ॥ रागदेवन्यार ॥ जोपै रहें प्रीतिकी बात । तो ऊबो
 तुम निकट रहत क्यों निरखि साँवरोगात । बचन कहत भरिलेत नयन
 जल सुरतिकरत अकूलात । जो घटघटहरि रहत निरन्तर कतहि सधुपुरी
 जात । सगुणाप्रीति ऐसी प्रति पालत दुखित होत अतिगात । तुमनिर्गुणा
 सों प्रीतिकरत क्यों सूरसमुक्ति पछितात १४० ॥ रागटोड़ी ॥ मुख देखे की
 कौन मिलाई । जैसे कपड़ाहिं दीन साँगना लाल चलीने करत बड़ाई । प्रीत स
 सों जो सदा करस निशि बासर बढे प्रेम सवाई । चित सहुँ और कपट
 अन्तर गति ज्यों फल खीर नीर चिकनाई । तब वह करी नंदन नंदन अ-
 लि बन बाली रसरास खिलाई । अब यह कितिक दूरि मधुपुरि ज्यों
 उड़िके भ्रमर बलि बिसराई । सुनि संदेश सूरपाती लिखिकेहि ओस
 कन प्यास बुझाई । सूरजदास उदास भई अब पाखंड प्रीति उधरि निज
 आई १४१ ॥ रागकेदारी ॥ जबलों ज्ञान हृदय नहिं आवै । तब लागि कोटि
 यतन करै कोऊ बिनु बैराग न पावै । बिना विचार सबै सपनो सों में
 देख्यो सब जोय । नाना दारु मध्य ज्यों पावक प्रकट मथे ते होय । तुमहीं
 कहत सकल घट व्यापक असु सर्वाहिन के नीरे । नखशिखलों तनु जरत
 है निशि दिन निकसिकरत किन सीरे । सांचे बोल सबै बोलत है मुख में
 मेले तुलसी । सूर सु औघवि हमहिं बतावत ज्यों कफ उबर पर गुरखी
 १४२ बातें हमहूँ तो कहि जानत । जोपै नेह नहिं हुता पुरातन तो नातो
 कत मानत । मधवा वृष्टि पानि पल्लव गिरि गिरिधारी यशुगायो । दा-
 वानल अरिष्ट जीते ब्रज तगावत गहिलायो । ये गुणा सब सुन्दर मुरली
 धुनि ध्यानहि ये ते खुलाहनि । सूर मधुपको जाय मधुपुरी सुनहिं कँवर
 सब दुलाहनि १४३ काज कह कीना मथुरा जाय । सखाति हारे शत्रु
 हने ते यह ब्रज प्रकटे आय । शशिस म कंस कंस आयुध ले उडगन असुर
 समान । निशा अघासुर उदर जानि जिय डर न रहत पल प्रान । तब दा-
 वानल पानि कियो अब उन संग मिलि बल कीना । परिसल पवन कपूर
 सक हो इत प्रति करत नतीना । अब ब्रजवास हास करि मानत डर कुब्जा
 जिनि छटे । चलत बचन रिपुमारि आइ हैं सूर कहो दोउ भूटे १४४ ॥
 रागचरंग ॥ कहेउ तिहारो लागत काहे । कोटिक यतन करहु जो ऊबो

नाहिन बनत निवाहे । काहेको अपनेजिय भूलन करकरि मनकीला
हे । यहधमतो अबहीं भाजैतो ज्यों पयार के गाहे । काशीके लोग-
निलै सिखवहु जो समुझत यामाहे । सूरदासप्रभु गोकुलभीतरजोजतहैं
मुखचाहे १४५ ॥ रागजलित ॥ शोचतिराधा लिखतिनखनि सहिवचन
कहत कंदजलतास । क्षितिपर कमल कमलपर कदलीकदली पङ्कज
कियो प्रकास । तापर अलिसारंग सारंगपतिसारंगरिप्रकियो लेकुल
बास । तहँअरिपंथ पिता युगऊदित बारिज बिंदरंग भवआभास ।
सारंगमुखते परत अम्ब ढरि मनोशिवपूजित तपतिबिनास । सूरदास
प्रभुबिनु हरिहर रिपुदाहत अंगदिखावतवास १४६ ॥ रागधनाश्री ॥ भयो
अलिनेह निरंतर भारी । छांड्यो भोगयोग ब्रजभीतर प्रयास मिलन
व्रतधारी । नयनकमल पुतरीहि पारथी बीरसजल शिरजाये । परी-
बिरह परनाम अबनिको उठिजुगई हरिआये । सुनेसखा तैसेईलागत
सबगुण भेयबनाये । जितोसुनति मधुवनकी बातेंसहीसूरतूगाये १४७ ॥
रागमाह ॥ हमतो सबहिनसों हितछाँड्यो । कतगत कथा सुनहुं अलि
तेरी योगप्रेम बिनुखाँड्यो । काजर परसि जरति पावक सम बुझति
चले जलधार । निशितम तकेपलकनहिं लागतगनत बच्योनिहितार ।
कोकिलकुंज कुंजमधुकर धुनि घनबोलत डरडारे । सूरहित बहुयतन
कियेहुं आपहेत कहुंकारे १४८ ॥ रागकेदारि ॥ सुनतिअलितेरे मुखबातौ ।
कमल नयन की कपट कहानी हूँ आयो तन तातौ । कत ब्रजराज
काज गोकुल के सबैकियो गहिनातौ । अबनहिं निमित्त बियोग स-
हतज्यों करत कामशिर हातौ । मधुवन जाय कान्ह कुब्जा संगमति
भूलीसुधि सातौ । तिहिंगज यूथ निमित्त नहिं बिहुरत सुर काम मद
सातौ १४९ ॥ रागसारंग ॥ बोल इक इनहंको सुनिलीजै । कैसी उठि
उठैधौं ऊधोतैसा उत्तरकीजै । यामें कछु अनुचितै नाहींअपनो मतौन
दीजै । सुनरी सखी भाजिये किहिडर चलोजाय मुख छोडै । द्वैकर
जोरिभई सब ठाढ़ी सोइ कहे जिहिजीजै । सूरदास सोईमतिदै जिहि
बदन सुधारस पीजै १५० ॥ रागमोह ॥ जुहे मिष्टफल सो कहि कैसे
आवै । जैसेसुक मिठाईको मुखअन्तर अन्तरभावै । परमस्वादुसबहीते
न्यारो अमित तोष उपजावै । मन बाणी गुण कर्म अगोचर सोइ

जाने जोपावै । बिनारूप गुण नामयुक्ति विन निरालम्बकन ध्यावै ।
 भजे न अंत तहींते सूरज सगुणालीन मनगावै १५१ ॥ रागकेदारी ॥ जोपे
 अलि सयुरा लैजाहु । आरतिहरहु अवगा लोचनकी मेढहु उरकोदाहु ।
 बुधबलबचन जहाजवाहुगहि बिरहसिंधु अवगाहु । पारलगावहु मधु
 पुरकेतट चन्दतज्यो अनुराहु । देखेआयरूप कुब्जाकोमहि न सकत
 यहदाहु । जीवन जन्म सुफलकरि लेखहि सूर जन्म उत्साहु १५२ ॥
 रागसारंग ॥ जादिनते गोपालचले । तादिनते ऊधो यात्रजके सबस्वभाव
 बदले । घटेअहार बिहार हरयहित सुखशोभा गुणागान । आज तेज
 सवरहित सकलविधि आरति असम समान । बाढीनिशा बलय आ
 भूयगा उरकंचुकी उषास । नयननिजल अंजनअंचल प्रति अवाअव-
 धिकीआस । अबइहिदशा प्रकट यातनकी कहियोजाय सुनाय । सूर
 दास प्रभुसोसा कहियो बेगिमिलहिं अवआय १५३ ॥ रागआमावरी ॥
 सबैदिन एकसे नहिंहेते । तबअलि शशि सीरोअवतातो भयोबिरह
 जरि मेते । करियटमास रास निशिअंतर एकोनिमिय न जान्यो ।
 अब औरैगति भई कान्हविनु पलबीतत युगमान्यो । किहिमतयाग
 युक्ति शाखा श्रुति तेकलिकहे धनेरे । अबनहिं और सहाइ सूरगुण
 सुमिरि प्रयाससंगकरे १५४ ॥ रागधनाश्री ॥ काम गँवारिसों परेउ । रूप
 हीन कुलहीन कूबरी तासोंमन जु ढरेउ । उनकोसदा स्वभाव सलिल
 को खोरिनिखाइ भरेउ । सकुच्योनों जानि ऊधो तन उमगनि मन
 पसरेउ । फेरैफिरत असुरदासोके अनुजइमार धरेउ । सूरदास गोपाल
 रसिकमिलिअकरम करम करेउ १५५ ॥

यहां ते कुब्जा को संदेशो गोपिन सों उद्वेग कहतेहैं ॥

रागमोहठ ॥ मोपरकाहेकोभुक्ति व्रजनारी । काहूकेभागसों साभो
 नाहिंन हरिकी कृपानियारी । फलनि मांभजैसे करुईतूबरी रहति
 जो घरेडारी । हाथपरी जब गुणी जननके बाजत रामदुलारी । यह
 संदेश कुब्जा कहिपठयो अरुकीनीमनुहारी । तनटेढी सब कोऊ जानत
 परसे भइ अधिकारी । हैंतीदासी कंसरायकी देखहु हृदय बिचारी ।
 सूरप्रयास करुणाकरस्वामी अपनेहाथ सँवारी १५६ ॥

रागसारंग ॥ कहाभयो मथुराहिगये । अब अलिहरिकैसे सुखपावत
 तनहैं भाँतिभये । इहां अटकमन प्रेमपुरातन नूतन नेहनये । उहांधरत
 नृपबेद्य दिनहिंदिन यहँकर मुरलिलये । कहाहठेकर परेउ अक्ररकेबहु
 टग टाटठये । अबक्यों कान्हरहतबिन गोकुल लोगनके सिखये । राजा
 राजकरो अपनेगृह साथेऊबदये । चिरजीवहु यहांमूर कन्हैया योजत
 मुखचितये १५७ गगनसघन नगरनिभयोइन्द । प्रसरौभूमंडल केतकि
 युत मासुतमत सकरन्द । परपथ अपथभयोसुनि सजनीगयो बासुखित
 खेत । कोउनजाइ कान्हपद देसबी दोउ तजि निबह अनेत । बिषति
 बिचारिजानि यदुनंदन दीनोंदरश उदार । सुरदासभेटे उनभेटो बिरह
 बिकल भ्रमभार १५८ यहसंदेश कहेजोऊधो कहौकौनपैपाये । करि-
 यतहैं अनुमानसकमन यहिमिसहो यहँआये । हरिज प्रथमनन्द यशु-
 मतिगृह नाना लाइ लड़ाये । उर उत्संग कन्हैया लैलै साखन खान
 सिखाये । सुबलसुदामाकेसंग सबब्रजबीथिनि बीथिनिधाये । कछुयक
 जानभये खेलनतब गोदरा देनपढाये । बेरामधुर धुनिबोलत थेइ थेइ
 संगन नाचनचाये । जलथल नितनूतन लीलाके केतेउयुग बिरमाये ।
 यहिबिधि विविध कुतूहल क्षण क्षण करत आपने भाये । कब चले
 मधुवनकबमारौ रिपू बचन अचम्भ जनाये । पाछेरहे मुनतमोहनप्रिय
 उभक्ति उरस्थललाये । सुरदासप्रभु ब्रूकतबतियां सखियन स्तप्रवताये
 १५९ माधो आवनहारभये । अंचल उड़त अधिकमन आनंद फरकत
 नयनखये । भईप्रतीति आपने जियते सबन अंगारठये । मानहं नबब-
 संतके आगम प्रकटतपातनये । शोचिबिचारि जीयअंतरमति चितवत
 निकरभये । सुरश्याम अंतरते निकसिकै सब मुख हंसि पूजये १६०
 फिरिफिरिकहा सिखावतवात । प्रातकालउठि देखतिऊधो घरघर
 साखनखात । जिनकीबात कहततुम हमसोसाहै हमतेदूरि । यहांनि-
 कट यशुदाकोनन्दन प्रागानहींकी मुरि । बालक संग लियेदधि चोरत
 खात खवावत डोलत । सुरशीश नीचो कत नावत अबक्यों नाहिं
 बोलत १६२ जोकरिकृपा पाउँधरेब्रजमेंतौकछु तुमहिं दिखावै । मौन
 धरे जो बैठिरहैक्षणा मुरलीशब्द सुनावै । अबहिंसिधारे बन गोचारत

हमबैठों यशगार्वै । निशिआगम थोदामाकेमँग नाचत ब्रह्म बतावै ।
 कोजाने संकोच द्विधाते तुमडर निशिपै न आवै । तब दुख हनइ बहै
 अति दारुण सखियनि प्राणाच्छिडावै । नाकरिये नंदलाल यहाँपै जो
 कोउ कोटिसिखावै । मूरदास यहसुनि ऊधोमन क्योंहुन मथुराधावै
 १६२ ॥ रागनट ॥ बातन क्यों ब्रजनाथ मिलनको विसरतहै अलिनेह ।
 बंशनिनाद स्वादरस लम्पट मानत नहिं श्रुति येह । को सातुल बध
 कौन मधुपुरीको पति परजन रोह । को ऊधोको योगनिरूपन नव
 किशोर बिनुखेह । कोटियतन युगवो बनबेली बनसींचे बनमेह । होरा
 हीरचीर सोंधामिलि नीरबिना सबदेह । कुम्भज कुंभसमान ज्ञानपथ
 बिनगुण पानपबेह । मूरश्याम रसमहज माधुरी रसिकनिको अवलेह
 १६३ ॥ रागधनाथी ॥ हमतो भजिहैं नंदकिशोरना । योगउलटि लेजाव
 ऊधोजहँ बसे चितके चोरना । योगहि योग मिलाइये हम या योग
 अयोग । ऊधोतिनलै दोजिये अलिजहँहै नित्यसंयोग । पूरणा पूरणा
 कहतहो उहापूरणा यहाँकौन । ऊधोकहा तुमदेतहो अलिदगवऊपर
 लौन । मिलनभांति बहुबिबिहै यामिलबेको हेत । मूरदासप्रभु अवधि
 बदीहै मिलिहैं जहँ कुरुखेत १६४ ॥

उद्धवप्रति यशोदाजूके वचन ॥

रागसारंग ॥ ऊधो सेसो हमहिं न जानी । सुतके हेतु सरसनाहिं पायो
 प्रकटे शारंगपानी । निशिबासर छतियां लैलाऊं बालकलीलागाऊं ।
 सेसेभाग बहुरि फिरिहैंहो मोहन गोदखिलाऊं । जाकारणामुनि ध्यान
 धरै शिवअङ्ग बिभूति लगावै । सोबालक लीला धरि गोकुल ऊखल
 साथबँधावै । बिदरत नहीं बजकी छतियां हरिवियोग क्यों सहिये ।
 मूरदास ब्रजनन्दनंदन बिनु कहे कौन बिधि रहिये १६५ ॥

उद्धवोक्तिप्रभुप्रति ॥

रागसारंग ॥ जबहोयहहीतेगयो । तबब्रजराजसहितसबगोपिनआगेहैंज
 लयो । उतरोजाय नन्दबाबाके सबहिनसोधुलहेउ । साँचिकहे मेरी
 सोऊधोमैयाकहाकहेउ । बारम्बारकुशलतापंकी लैलैतुम्हरोनाम । मन
 धकवकीदया चातकलीं कृष्णाकृष्णबलराम । सुंदर परमबिचित्र सुशो-
 भित यहमुरली दैघाली । लइउठाय शिरनाथ मूरप्रभु प्रीतिआनि उर

साली १६६ ॥ रागसार ॥ साधो मैं योगको बोझ बहेउ । श्यामा मुखविधु
 बचनसुधारस सुनि सुनि कहू न कहेउ । सकल शृंगार साररस सर्वसु
 ब्रज नवनीति लहेउ । छूँछे भाँड ब्रह्मांडलोक हित पीवन दयो सहेउ ।
 नवनव भावतुरङ्ग सहेदधि ब्रजघरघर उमहेउ । हमजो कहेउ ज्ञानको
 सारग पाइनि जातदहेउ । मोहिँ अचरजजू ये पैलागत तुमकैसे जात
 सहेउ । सुरश्याम सुनिसखा सयानो लेभुजबीच गहेउ १६७ साधोजूमैं
 उत्तमति सचुपायो । अपना जानि सँदेश द्याजकरि ब्रजजन मिलन
 पठायो । क्षमाकरो तोकरो बीनती जोउत देखिहांआयो । श्रीमुखज्ञान
 पन्थजे उचरेउ तापै कहू न सुहायो । सकल निगम सिद्धांत जन्मग्रम
 श्यामा सहज सुनायो । नहिंश्रुति श्रेय सहेष प्रजापति जेरस गोपिन
 गायो । कटुककथा लागी मोहिंमेरी उहिरस सिन्धुउन्हायो । उततुम
 देखे और भाँति मैं सकलदयाहि बुझायो । तुम्हरी अकथकथा तुमजानो
 हमजनताहिँ बसायो । सुरदाम सुन्दरपद निरखत नयनननीर बहायो
 १६८ ॥ रगकेदारो कहत न बनेब्रजकी रीति । कहासम शठको पठायो
 देखि उनकी प्रीति । युवतिबल्लभ कहावतहो करत सकल अनीति ।
 मोहिँतौ इहकठिन लागत औरक्यों परतीति । सुनहुतौ कान आपनों
 लोक लोकनिकीति । सुरप्रभु अपनी सचाई रही निगमनजीति १६९
 जोतुम करुणाके आलैं । तौकत हेत कटोर कठिन मनमाहिँ बहुत
 दुखशालैं । बहोबिरदको लाजदीनप्रति करिसदृष्टि ब्रजदेखो । मोसां
 बात कहौकिन सन्मुख कहा अबनिकोलेखो । निगम कहत ब्रजहेत
 भक्तके सोई उनहं कीनी । सुरजद्याम छाँडि हाहाब्रज जल अखियां
 भरिलीची १७० मैं जान्योहो उहिँको भयो । परेउजु उनके प्रेमकोस
 मय तुमप्रभु बिसरिगयो । तुमसां शपथ करिगयो साधव बेगि कहेउ
 हो आवन । देखतही वैसेई हूँ गयो लग्यो उन्हें मिलिगावन । समुझि
 श्याम यदसां स व्यतीते कहाहुतो कहआयो । सुरअनकही दोगोपिन
 सां श्रवणमंदि उदिधायो १७१ सुनिलीनो उनहींको कहेउ । अपनी
 चाल जानि मनहीमन गुणि अगाराय रहेउ । बेहीकाज हों कतहि
 पठायो शठबावरो अग्रानों । तुमहुं बहुत बूझोबातनको वहां जाउती
 जानों । अबलनसां कहिपारत नाहिंन बाततोरि करिकानि । अ

बोले पुरी दै लोन्हें बहुत दिननको जानि । आज्ञाभंग होयक्यों मो
 पै गयो तुम्हारे ढीले । सुरपदावनहकीबूझी रहेउ युक्तिसौलीले १७२
 मैं हरि उहां काउदै हारो । आज्ञाभंगहोय क्यों मोपै बचन तुम्हारे
 पारो । हारिमानि उठिचल्योदीन हूँ जानि अपनपो केहु । समुझिलेहु
 तुमइतनेहीमें कहकरै सगिाकोबैदु । उत्तरको उत्तरनहिं आवत तब
 उन्हें मिलिजात । तुम्हरी कितो बात ब्रह्माको अर्ध बचन भैसात ।
 अपनीचाल जानि मनहींमन चलयोबसीठी तोरि । सुरसकह अङ्ग न
 काची मैंदेखी टकटोरि १७३ सबब्रज घरघर सकैरोति । ज्यों कुरु
 क्षेत्र गड़ेउ धनबाहे त्योप्रभु तुमतनप्रोति । वेसब परमविचित्र सयानी
 असु सबहीजग कीति । मेरे बचनमुनत ढाईसब ज्योंबाहूकी भीति ।
 सकैगहन गहीइनदुहकै मेरिवेदकीरीति । गोपभयभजि सुरसांवरैरहीं
 बिषवबरजीति १७४ सुनहुप्रियाम सुजान विद्या गजगामिनिकीपीर ।
 बिरहसर गम्भीर ग्राहक कामप्रसीअबोर । शोकापंकसगो सुसुन्दरि
 मोचिनयननि नीर । करति समदिनरैनिबिरहबल बिकलभईशरीर ।
 चक्रलेकर बेगिघातहु कृपाकरि बलबीर । कोटिदुःख समूहबंधनि
 काढिआनहुतीर । कहाजानि छुडायलोन्हें द्विरद दीनदयाल । सुर
 प्रभु न बिसारियेजू राविकासीवाल १७५ सुनहुप्रियाम जे सब ब्रज व-
 निता बिरह तुम्हारे भईबावरी । नाहिं न नाथ औरकहि आवै छाँडे
 चेत्क कथारावरी । कबहुं कहतिहरि माखनखावै कौनबसेहो यही
 गाँवरी । कबहुं कहत धरिबाँधा ऊखल घरघरते लैचलींदासरी ।
 कबहुं कहति ब्रजनाथ साथते चन्दभयो यहिठाँवरी । सुरदासप्रभुतु-
 म्हरे दरशविन भइवे मूरति सुभगसाँवरी १७६ सुनियेब्रजकीबात गु-
 साई । रथकी ध्वजा पीतपट भूयगा देखतही उठिघाई । जेबातें तुम
 कहियोगकी ते मैं सबै सुनाई । नयनमंदि गुणकर्म तुम्हारे प्रेममगन
 हूँगाई । बारबार संदेश यशोदा कहतद्वारलगिआई । हुतीकछूहमहीं
 सों नातो निपटकहा बिसराई । सुरदासप्रभु बनबिनोदकरि जेतुमगाय
 चराई । तिनगायनको ग्वालन घेरतमानहुआहि पराई १७७ कान्ह
 तुम्हारी बिकल बिरहिनी बिलपति बिरह बिगोये । अतिआरतिन
 सहारत तनमन इकटकदै मगजोये । काजरमिलि लोचन जल बर्यत

दुखद सुखद कृत्रि रोये । राहु केतु शशि मिलि मिलि मधुकर अंक
 कुडावत धोये । अबलाकहा योगमतजाने मनमथ दययाबिलोये । सूर
 प्रयासको नीर चुबतहै नीलघुबसन निचोये १७८ ब्रजजन दुखित
 तन अतिसीरा । रत इकटक जगतचातक प्रयासतन घननील । द्योस
 कारति सकल मिलिकरि कथित गुण बलवीर । रैन उडपति निर-
 खि तलफति मीनज्यों जलतीर । कहन जो तुमकहौ मोसों पचिरहेउ
 उपदेश । चिकन पटजल बूंद ज्यों ढरि बचन उर न प्रवेश । बस
 मुकुट मुरलीअधर पटपीत उर बनमाल । रहीबहकृत्रि अंग अंग ज्यों
 लता लपटि तमाल । करहु कृपा अनाथ बन्धव कहे ऊवो जाय ।
 सूरप्रभु अबकी दरशदै सरतलेहु जिवाय १७९ हरिजु सुनहुबचन सु-
 जान । ऊधोकहत संदेश ब्रजको सखासंत निदान । बिरह व्याकुल
 क्षीणतन शतहेनलोचनकान । भैंसकलव्रज दीनदेख्यों ज्योंबिना तन
 प्रान । तुमबिना शोभानहीं ज्यों दिवस बिनहैभान । आसआस उसा-
 सघटमें अवधिआशामान । जगतजीवन जगतपालक जगन्नाथ कृपाल ।
 करहुयत्नकहु सूरकेप्रभुज्योंजियहिं ब्रजबाल १८० ॥ रागमाह ॥ साधव
 विलपति प्रियपति क्षण घोयअति दुखारो । सुन्दरि सुकुमारिअंग
 अनंग आधि तारो । बिरह व्यालगरलप्रसित मुधा सींचितारो । ज्ञा-
 नगुस्त्व मथुराधरो उत कहु न बिचारो । राजकाज तजिकै सजि
 सुबेध सिधारो । बातन बिरमाय यहै नेहको तुम्हारो । शीतज्ञान
 नलिनी मृदुबेलि मतिप्रजारो । निगमचारि राशिगसन तरुणा विया
 तारो । चन्द्रवर्दान राहुग्रहो सकलआधिमारो । हमसेनाथ वे केतेउ
 जाउपै तुमबिना न उजियारो । मंत्रीअसु मित्रमोसों जगत यशभारो ।
 सौईभोहिं सिखवाय योग वृद्ध बय बिगारो । अकूरके संगचलत ब-
 चन कहेउ सम्हारो । सुनतक्यों न चलतप्रभु नयन कहा निहारो जा-
 निहत भ्रमलोकके हित कहे निगमचारो । ऊधोप्रति कहु न कहत
 प्रयाससुन्दर प्यारो । मीडत करकमल हाहा राधाते होनन्यारो । ह-
 दय रसभरा चलत लोचन जल धारो । ऐशोकठिन देखिसखा आयो
 क्योंअवारो । सुरदास प्रभुत्यहिक्षणा मिल्योजाय सँवारो १८१ धर्म
 अभिमान बहेउ जन्मनते न लहेउ भजन प्रकार । कौतकाज यदुकलमें

बड़ाई कीनोभूकोभार । केलिकथाकल कोकिल बधनी ब्रजविद्य
नभसिखचारातहँकीनो प्रतिबोध चातुरी देखिविचित्र बिहार । स्थान
पधरि हरि वचन वेदकी कहेउ योग असिधार । तेहि कुकर्ल समअब
भेदत सुमिरिरूप सुकुमार । पुनि ऐसीमति करौ प्रति नौतन बिरचौ
नाथ उदार । फेरौनिगम दावनल सूरज अन्तहि आश अवधार १८२ ॥
रागसारंग ॥ कोऊलुनत न बात हमारी । कहँमत योगयुगति प्राप्ता श्रुति
प्रकटप्रेम ब्रजनारी । कोऊ कहति गये गोचारन कोऊ धेनु दुहिसेत ।
कोऊ कहति इन्द्रवरदातकि गोबर्द्धनकरलेत । कोऊकहतिनागकाली
सुनि गये यमुनके तीर । कोऊकहति अघासुरमारत लथेसंग बलबोर ।
कोऊ कहति खालसंग खेलत बनमें जाय लुकाने । सूरसुमिरि गुणा
नाथ तिहारे कोऊ कहेउ न माने १८३ ॥ रागगौरी ॥ दिनदश घोष चलहु
गोपाल । गाइतिकी अवसरे मिटावहु भेंटहुभुजभरिखाल । नाचतनहीं
मेर वा दिनते बोलत बरये काल । मृगदूबरे दरश तुम्हरे विनु सुनत
न बेरा रसाल । वृन्दावन भावतो तुम्हारे देखहु प्रियाम तमाल । सूर-
प्रियाम मैया यशुमति के फिरि आवहुनँदलाल १८४ ॥ रागसारंग ॥ अब
गति पंगु भयो मनमेरो । आयोवहाँ निगुणा कहिबेको भयो सगुणा
को चरो । अति अज्ञान कहत कहि आयो दूत भयो वहिकेरो । निज
जन जानि यतनते तिनसों कीन्हों नेहघनेरो । मैं कहू कहेजानगाथा
ते नेक न परसति नेरो । सूर सधुप उठि चल्यो सधुपुरी बेरो योग
को बेरो १८५ ॥ रागमाला ॥ मैंसमुझाय बहुत अपनेसो । तद्यपि उनपर
तीति न उपजी लग्यो सबनि सपनेसो । कहीतुम्हारी सबे सुनाईप्रेम
सहितवे कोपी । सुफलकसुत कोकहेउ मानिद्वै अरतिकरतिसबगोपी ।
जानिबूझि करिहों कत पढ्यो शठबावरो अथानो । तुमहंबहुत बोझ
बातनिको वहाँजाउतो जानो । इतनी सुनत कमलदललोचन गहिकर
सों करलीने । प्रीति सहित सुसकाय सूरप्रभु तरकजानि हँसिदीनो
१८६ बिनती सकसुनहु श्रीप्रियाम । चलन न दैतिचल्यो नहिंभावत
चलतकह्यो आवन यदयाम । तुमसर्वज्ञ सर्वाहंके व्यापक जीवन पद
जनके बिग्राम । संततरहतदीछ्योदै कहियत हो सेवक सुखधाम । वह
रसरीतिप्रीति गोपिन कीलये रहति लीला गुणानाम । सूरदास प्रभु

सब सुखदाता तेऊतो निगरे नंदग्राम १८७ ॥ रागमोरठ ॥ तुम्हारी भा-
वती कहेउ । वह कहियो नंदनन्दन आगे अति दुखदुमह सहेउ । लेति
उसासशोच निशिदिनके नेकन रूपरहेउ । बिगलितके शब्दन कबिषेते
जनुशशि राहुगहेउ । साखन काढिकूबरी लोन्हे ब्रजमें रहेउ सहेउ ।
सूरप्रियाम रतिजनम प्रेमपै बहुरौ जस्योकहेउ १८८ ॥ रागसारंग ॥ ब्रजमें
सम्भ्रम मोहिं भयो । तुम्हरो ज्ञान सँदेशो प्रभु जू सबैजु भूलिगयो ।
तुमहीं सों बालक किशोर बपु में घरघर प्रतिदेख्यो । मुरलीधरघन
प्रियामसनोहर अद्भुतनरवर पेख्यो । कौतुक रूपबाल वृन्दन में गाय
चरावन जात । साँझ प्रभातहि गोदोहन मिसचोरी साखनखात । नंद
नन्दन जुबाललीला करिगोपिनचित्तचुरायत । इननयननि ते ब्रह्मति-
हारो देख्योह नहिंभावत । करिकरुणा उनदरशन दोनो में पचियोग
बहेउ । सगामानहुं यदमास सूरप्रभु देखतभूलिरहेउ १८९ ब्रजमें एक
अचम्भौ देख्यो । मोरसुकुट पीताम्बर धारे तुम गाइन सँग पेख्यो ।
गोपबाल सँग धावत तुम्हरे तुम घरघर प्रतिजात । दूध दहेउरुसहेउलै
दोरत चोरीसाखन खात । गोपीसबमिलि पकडतिहुसको तुमहुडाय
करि भागत । सूरप्रियाम नितप्रति यहलीला देखि देखि मन लागत
१९० ॥ रागरामकली ॥ यहकछु नाहिननेहनयो । मधुप माधव सेजु यह
ब्रज बिधितेपहिलेभयो । बीजमन माली मदनमनु आलबाल बयो ।
प्रेमपै सींचो पहिलही रूपरति बल दयो । इते अम तन प्रियामसुन्दर
बिरवाबिमल बहेउ । निरखत प्रियामसुन्दर मन मोहन बिन आनन्द
उरतेकहेउ । कवल तजितन रचतनाहीं आकको आमोद । सूरजीवन
बचन परसत बिन गोपाल बिनोद १९१ ॥ रागबिहाग ॥ नितुर माइया
मधुवन के लोग । बेगपटइदे प्रियामको अब सब ब्रजबिरह बियोग ।
हम जानत तुम सेसीकरोगे प्रीति करि किधोंयोग । सूरदास प्रभु-
म्हरे मिलन को कबमिलि यहसंयोग १९२ ॥ रागपरज ॥ पिथरीप्रियाम
बियोगी मधुकररे । प्रियामसुंदर मधुवनको सिधारे अंत बटाऊ लोग
मधुकररे । सकादिन हरिहम मिलिकीड़ाकरते अबलिखिपठयेयोग ।
बिहुरन भये मिलन कब हूँ है कितहम कित वहलोग । सूरदास प्रभु
तुम्हरे दरश को नदियानावसंयोग १९३ ॥ रागमट ॥ ऊचो कबआइहै

नंदलाल । हेरतपंथ बहुतदिन बीते सबब्रजबाल बिहाल । घोरिलियो चहुं
 कोर प्रेमवश पूछत भालनिखाय । सूरदास प्रभु लुहरे मिलन को
 फिरिकरिहैं प्रतिपाल १६४ ॥ रागपरजकलिंगरा ॥ सुनिलीजा नाथ सँदे-
 सबाब्रज बासिन सेतीकही । बालापनको नेह छाँड़िके करि कुब्जासे
 प्रीतिनही । नितउठि रारिकरत हरि हमसों जब हमबेचन जातदही ।
 अबतो बीचपरो वरयनको यह अँखियां देख बिलोकरही । अबसु-
 नियत महाराज भयेहैंलोत्तकंचन कोटमही । वे दिन बिसरिगयेसुनि
 ऊधो घरघर साँगत छाँड़मही । वेतोहैं तीन लोकके ठाकुर ब्रजयुव-
 तिन शिरपेचदही । सूरदासदुख कामोंकहिये ओकेकी प्रीति कौली
 निबही १६५ ॥ रागधनाश्री ॥ कैसे धीरज धरुं ऊधो तुम योग सिखावन
 आये । एकसमय हरिअपने करनन करगफूल पहिराये । ताकारग
 माटीके मुद्रा मधुकर हाथपढाये । एकबेर टुन्दावनकुंजन शिरपैकेश
 बनाये । यह अबसर सेती मृगछाला ब्रह्मज्ञान दरशाये । सूरश्यामसों
 यों जायकहियो ब्रजन भक्तबिसराये । बिनदेखेकल परत न सकपल
 साँवर हाथबिकाये १६६ जाजारेमधुकरदूरदूर । रंगरूप सकहीमुरत
 मेरो मनकियो चूरचूर । जब लग गजरज तब लग निकट हूँ काज
 सरेपै रहे धूर । सूरश्यामअपने गरजके कलियन रसलै धूर धूर १६७
 जबते सुन्दर बदननिहारेउ । तादिनते मधुकरमन अटक्यो बहुत करी
 निकरै न निकारेउ । मातपिता पतिबंधुसजनजनि तिनहंका कहिबोन
 सिधारेउ । रहीनलोकलाज मुखनिरखत दुसह कोध फीकोकरिडा-
 रेउ । हूँबो होयसो होय कर्मबश अबजोकोसबशोच निवारेउ । दासी
 भईदास सूरजप्रभु भलो पोच अपनो न बिचारेउ १६८ ॥ रागपरजताल
 जत ॥ नयना मेरे नयननि सांझसमाने । तारे न तरत सकारस मधुकर
 प्रेमप्रीति अरुभाने । मनबुधि थकित भई सब उनको बहुतयतनकरि
 ठाने । बिन्दे फन्दबिहंग बापरो ते सबभयेहैं विराने । मन बच क्रम
 पलकनि के अन्तर युगबलहातमयाने । सबहरिलये सूरप्रभुवश करि
 जिहिबीतेसेजाने १६९ ॥ रागपरज ॥ ब्रजजन सकल श्यामव्रत धारी ।
 बिनशोपाल औरजोहि भावतते कहिये व्यभिचारी । योग मोट शिर
 ब्रोभ आनितुम कतधों घाय उतारी । इतनिक दूरिजाहु चलिआशी

जहां बिकतिहै प्यारी । यह संदेश सुनि लिये तुम्हारे अतिमण्डली
 अनन्यहमारी । ज्योंरसीति कही हरिहमसोसा क्योंजात बिसारी ।
 सहासुक्ति कोऊनहिं बांछे कृष्णपदारथ चारी । मूरदास स्वामी मन-
 मोहनसरति की बलिहारी २०० यह बातहमारे कौन सुनै । जिनचा-
 हेउहरि कृपसरति करि भूलि अंगारनिकोचुनै । यह सेवन को दौर
 न देखततातेसुनिमनमें सुनै । केशुकविरह बयारपवनकी बैठे ठाने को
 धुनै । तब उनभांतिन लाइलझाये अबबुभियेन यहउनै । बालिकांडिके
 सरहमारे अबनरबायकोलुनै २०१ ऊधो सुधेनेक निहारो । हम अबल-
 नि को सिखबनिआये सुनौ सयानतिहारो । निर्गुणकह्यो कहाकहि
 यतहै तुम निर्गुण अति भारी । सेवतिसगुण प्रियामसुन्दरकोसुक्तिलई
 हमचारी । हमसालोक्यस्वरूप सयुज्या रहत समीप सहाई । सो तजि
 कहति औरकी औरै तुम अलि बड़ेअड़ाई । हमसूरख तुमबड़ेचतुरहो
 बहुतकहा कहिये । बेही काजसदा भटकतहै अबसारग गहिये । अहो
 अज्ञान ज्ञान उपदेशत ज्ञानरूप हमहीं । निशिदिन ध्यान सूर प्रभुको
 अलिदेखत जिततितहीं २०२ कहा रसबिरआये की प्रीति । यौन
 गड़े उरअन्तर ऊधो भुस ऊपर की भीति । नैन बैन अरु हृदय मिलत
 सबबांस्तप्रेमप्रतीति । येदोउ हंसहेतजब मनसुख लेतिनहींमनजीति ।
 ऊधो यह संदेशो कहियो मधुवन कैसी रीति । मूरदास सोई जनजाने
 गईहै तिनहिमेंबीति २०३ मधुकर कहिके मनगानै । जिनको एकअ-
 नन्य व्रतसूझैक्यों दूजोउरआनै । यहतो योगस्वाद अलिसेसा या बि-
 द्याखरिसानै । कैसेधों यहबात पतिव्रता सुनि यट पुरुष बिरानै । जैसे
 शृगगण ताकिबाधिक दगकर कोदगडगहितानै । हिंसाकरिपोषततन
 मन सुखाधिर अपराध न आनै । बड़ोबिचित्र कुब्जारंगरंगे हमनिर्गुण
 लिखिदानै । मूरप्रयास रसगुण रतिमानी मधुप प्राण जिनछानै २०४
 ऊधोकाहे को भगतकहावत । जोपैयोग लिखपठयो हसको तुमहुं न
 भस्म चढावत । शृङ्गीसुद्धा भस्म अघारी हमहिं को कहा सिखावत ।
 कुब्जाअधिक प्रयासकी प्यारी ताहिनहीं पहिरावत । यहतो हमको
 तबहिं न सिखयो जबते गायचरावत । मूरदास प्रभुको कहियो अब
 लिखि लिखि कहा पठावत २०५ ऊधो अब ब्रज पहुंचेजाई । तबकी

कथा कृपा करि कहिये हम सुनि हैं मनलाई । बाबानंद यशोदासैया
मिले कवन हित आई । कबहुं सुरति करति साखन की किधौ रहे
बिसराई । गोपसखा दधि भात खात बन अरु चाखते चखाई । गोउ
बच्छ सुरली सुनि उमड़त अहिर कहत किहि भाई । गोपिन गृहद्वय-
हार बिसारे मुख सम्मुख मुखपाई । पलकओट निमियन अनखाती
यह मुख कहां समाई । सकसखी उनपै ज्यों राधे लेति मनै जु चुराई ।
सूरप्रियाम यह बारबार कहि मनहों मन पछिताई २०६ भरिभरि
लेत लोचन नीर । तुमबिना ब्रजनाथ बिरहिनि बिरह खेद अधीर ।
कमल गगा उरआनि राखत छिरक चन्दनचौर । जालमणि शशि
किरगारोक्त मलय मन्दसमीर । हों यहां तुम पासपठयो जानि मन-
मथपीर । सूरदास मुजान श्रीपति मिलि हरो जियपीर २०७ नयन
घन घटत न सकधरी । कबहुं न मिततसदा यह पावस ब्रजललि रहत
भरी । बिरहइन्द्र धर्यतनिशि बासर यहि अधि अधिककरी । ऊरव
श्याम समीरते जलजराऊबो उमंगिभरी । बृद्धतिभुजोरौम छंवाद्रु मअरु
कुच ऊचथरी । चलि न थकित पद पथिकरहे थकि चन्दन कीच-
खरी । सबजहुं मिटिसकभईव्रज सहि यहिबिधि उलटिधरी । सूरदास
प्रभु तुम्हरे बिछुरे सतिमदर्यादरी २०८ सुनऊबो मोहिं नेकन बिसरत
येब्रजबासीलोग । तुमउनकोकहु भलो न कीनोनिशिदिन दियो बि-
योग । यदपि कनक मणि रचीहारका सकलराज्य मुखभोग । तदपि
मनहिं यह हरत वंशीबट बनयमुनासंयोग । वे उतरहत प्रेम अवलंबन
इततेपठयो योग । सुरउसास छांड़ि भरिलोचन बढेउ बिरह जबशोग
२०९॥ रागधनाम्नी ॥ है कोई इतनीभांति दिखावै । किंकिश शब्दच-
सन धुनुरुनु भुनु दुनकदुनक गृहआवै । कलुक बिलास बदनकीशोभा
अरुणा कोटि गतिगावै । कञ्चन मुकुट कण्ठमुक्तावलि मोरपंख छवि
छावै । समरधूरि अंग केसंग लीन्हे खालबालसंगलावै । सूरदास प्रभु
कहत यशोदा भागबडैलेपावै २१० पंथीइतनीकहियोबात । तुम बिन
यहां कुँवरबरमेरे होतजिते उत्पात । बकीअघासुर सरत न टारेबालक
बनहिं न जात । ब्रजपंजरी छवि मनो राखे निकसनको अकुलात ।
गोपी गाय सकल लघु दीरघ पीतबरगाकृष्णगात । परम अनाथ देखि-

यत तुमबिन केहिअबलम्बिय तात । कान्ह कान्हके ढेरत तबधौं अब
 कैसे जिय मानत । यह व्यवहार आजुलौंहेवज कपटनाट छल ठानत ।
 दशह्निदिशिते उदित होतहै दावानलकोकोट । आँखें मंदिर रहत संमुख
 हूँ नाम कबच दै ओट । ये सब दुष्ट गते अरुजीजे भये एकही पोत ।
 सत्वरसुर सहायकरौ अब समुझिपुरातन होत २११ तुमकोहो कहँते
 आयेहो । जानतहो उनमान मनो तो तुम यदुनाथ पढायेहो । बैसैहि
 बरगा बसन तनवैसे वैभूषणपजि लायेहो । लेसबंसु संग सखा सिधारे
 अबकापर पहिरायेहो । अहोमधुप सकैमन सबके सुतोवहां ले छाये
 हो । अबयह कौन सगान बहुरिव्रज जा कारण उठिआयेहो । मधु-
 वनकीमानिनी मनोहरतहँहिजाहु जहँभायेहो । सूरजहांलौं प्रयासगात
 है जानिभलेकरि पायेहो २१२ कोऊ दैसेहीअनुहारि । मधुवनतेआ-
 वतहँसखिरी देखौनयननिहारि । साधेमेरसुकुट कटि किंकिरिपोत
 बसन रुचिकारि । बैसैहिबातकहत सारथिसौं ब्रजजन भुजापसारि ।
 इतनीबात बिचारत अन्तर मनुवीतेयुगचारि । सूरदास प्रभु बिन सब
 सैसी जैसी लीन बिनुवारि २१३ ॥ रागपरज ॥ हौं यह तेरोहि कारण
 आयो । तेरीसौं मनु जननि यशोदा हठिगोपाल पढायो । कहाभयो
 जो लोग कहत हैं दुखित जु माताजायो । खान पान परिधान राज्य
 मुखतेही लाह लहायो । इतो हमारे राज्य द्वारका मेा जो कछू न
 भायो । जबजब सुरतिहोत बहिहितकीबिहुरि बचइज्योधायो । बूझे
 समाचार सुधिपाई बहुतक मुख दिखरायो । चलाहु न कुटुंब समेत
 सूरनंदनन्दन उहां बलायो २१४ ॥ रागनट ॥ ऊधो कहाकरोलैपाती ।
 जबहिं न देखेउं गोपाललाल को विरह जरावतछाती । जानतहौं तुम
 मानतनाहीं तुम्हरो प्रयाससँघाती । निमिय निमिय में बिसरतनाहीं
 शरद सुहाई राती । यह पातीलैजाहु द्वारका जहँबसे प्रयाससुजाती ।
 मनहमरो लैसये उहांको कामकठिन सुरघाती । सूरदासप्रभुकह चा-
 हतहैं कोटिक बात सुहाती । सकबेर मुख बहुरि देखाबहु रहे चरगा
 रजराती २१५ ॥ रागबिलावल ॥ गोकुलजीवन गोविंद मेरे । जाहिलागि
 हो रहोजु तनमन दुखभूलत भटकत मनहरे । जाकेगर्व बंदों नहिं सुर
 पाति रहेउं जु द्विवध सातलौं घरे । ब्रजकोनाथ गोबर्द्धन धारी सुभा

भुजननख रेखजुनेरे । जाकोयश ऋयिगर्ग बखान्यो कहत निगमनि-
जुते सजुडरे । सोअबसूर सहित संकर्यगा पायेयतन घनेरे २१६ ॥ राग-
नट ॥ बहुतदिनबीते हरिविष्टुखही । दर्शनहीनदीन दुःखित ह्वैबहुबिधि
बिपति सही । रजनी दिवस प्रेम अति पीडित गृहवन धरत न धीर ।
पग पग मग जोवत उरअन्तर भीजत नैनननीर । अबलों आश अवधि
बदि गिनिगिनि राखतिहैघटवास । सूरदास प्रभुप्रीति पुरातन मिलहु
पियासनआस २१७ ॥ रागधनाथी ॥ मोहन ब्रजतजिगये जुकालि । सुन्दर
प्रियाम कमलदल लोचन क्यों बिसरै निधिआल । कहाकरीं कृतकर्म
आपनो कैरही कितजाल । दुष्टअति अक्रूरआयो लैगयो रथचाल ।
रुदन करहि ज ठाढ़िबनिता करति अतिदुख हाल । सूरकेप्रभु कहि
यशोदा कहां पाई पाल २१८ ॥ रागनट ॥ हमपरयेसोयोग न होई ।
सुनिधुनिबचन तिहारेऊधो नयना आवतरोई । कुन्तल कुटिल मुकुट
कुण्डलकुबि रहीरही अतिपोई । सूरश्याम बिनप्रासारहे नहिं कोटि
करौ किनकोई २१९ ॥ ऊधो योगकहौ किधौ हाँसी । जबते आय
हमारे ब्रजमें डारि प्रेमकी फाँसी । तुमहोबड़े योगकेपालक संगलिये
कुबँजासी । सूरदास प्रभु तुम्हरे दरश को करवत लीजो कासी २२०
बिनयधुनो एकमेरीरे । जादिनते बिछुरे नँदनन्दन कामकरक तनघे-
रीरे । देखोहृदय बिचारि तुमहिअब प्रीतिरीतिसब केरी । जहँजीकी
निधि तहँ सब जोषै उयो मृगनाद अहेरी । वेद समान रतन रसबश ते
शशिबिन रैनि ईधेरी । सूरदासस्वामी कब आवैं बशीकरशा ब्रजफेरी
२२१ बिनती धुनुहु हमारी । जादिनते बिछुरे नँदनन्दन काम अनल
अति जारी । हमको योग सिखावन ऊधो पठये आप पुरारी । हाँडे
ऊपर लोल लगावत कहत न बातबिचारी । हमसोंप्रीतिभई सपनेकी
कीनीदासीनारी । इनबातन निश्चयकुब्जापति भयेहैं श्यामबिहारी ।
अबऊधो कहुकहत न आवैं प्रेमघटा अतिभारी । लिखयो परमपद सूर
श्यामसब गोकुल दीनदुखारी २२२ ऊधोधन तुम्हरोव्यवहार । धनिबे
ठाकुर धनि वे सेवक धन तुमबर्त्तनहार । आस को काठबँबूर लगावत
चन्दन की करवार । साह कोपकरि चोरको छोड़त चुगलन को इत
वार । सूरश्याम कैसे निवहैगी अन्धधुन्ध सरकार २२३ ऊधो तुम

कहत कौनकी बातें । सुनि ऊधो हम समुझत नाहीं फिरि पंडित हैं तातें । को नृपभयो कंस किनमारुत को बसुदेवसुतआहि । इह यशुदा सुत परममनोहर जीजतुहै मुखचाहि । निशिदिन रहत धेनु बनचारन गोपसखनके संग । बासर गत रजनीमुख आवत करत नयनगतिपंग । को पूरणा अविगत अविनाशी को बिधि वेद अपार । सूरवृथा कत बाद बढावत इहिव्रज नन्दकुमार २२४ ॥ रागकेदार ॥ कमल नयन की अविधिसिरानी अजहं भये न आवन । निशि बासरहों सगुणामनावति मिलहु कृपाकरि भावन । सबै संदेश बिदेशी आये वृक्षपखेख्खावन । मानोबिरह बिवाहन आयो कोड्डासंगल गावन । तामहिं मोरघटाघन गर्जहिं संगमिले तिहि सावन । भरिभादोंबैछाइ घायपति नारिनदुख बिसरावन । बिनदेखे कल परै न यक क्षण वह सुरति चितचावन । सूरदास प्रभु ठानी ऐसी बैरीकंस ज्यों रावन २२५ ॥ रागमलार ॥ शिखरचाटिशिखी सुटेरि सुनायो । बिरहनि सावधान हूँ रहियो सजि पावनदल आयो । बादरवान तपावत साजो चटिके चटिकनचायो । सदन सुभट करपञ्च बारा लै ब्रज सनमुख हूँ आयो । पिक चातक खग मृग जे हंसगण सब मिलि साखगायो । जानि बिदेश गये हरि ताते अबलनि प्रास दिखायो । मनमोहन बिन देखे सजनी धरि पल क्षण न सुहायो । सूरदास स्वामी गुण पहिले सुमिरि प्राण बिरमायो २२६ ॥ रागनट ॥ अबतो वे लागेदिनजान । सुमिरति प्रीति लाज लागति है उरभयो कपसमान । लोचन रहित बदन बिनु देखे बचनसुनों बिनुकान । हिरदै रहतु पावनूपुर से छीजत तनमन प्राण । वे यशमेति गये नंदनन्दन बिरहसृष्टि ब्रजआन । बिधिवश हरे बहुरि फिरि कीन्हेवेशिशुबेद बखान । जबतेगये मधुपुरीलोहन बियय खान अरुपान । यहते सूरयहै जो भावतिहो बसिये अनुमान २२७ ऊधोक-इतसँदेशो नीको । हितउपदेश करन ब्रजआयो लियेमतोहरिजीको । योग युगति निर्गुण उपदेशत जान सुनाय यती को । बिरह व्याधि औषधि नीकी ज्यों आमबातहै पथ्यमही को । हमको योगभोग कुबरोको ज्ञानद्वयाजेको । सूरश्याम बिन और न जाने यह निश्चय है हीको २२८ तुहरीप्रीति ऊधो पूर्वजन्मकी अबहुभये मेरे तनहुके

गरजी । बहुतदिननितेविरमिरहेहो संगते बिछोहिहमहिं गये वरजी ।
जादिनते तुम प्रीति करीहै घटति न बढ़ति तोलिलेहु नरजी । सूर
दास प्रभु तुम्हरे मिलनविन तनयोंहोतबिरह भयोदरजी २२९ ॥ राग-
विहाग ॥ कृष्णाकृष्णा करत डोलूं कृष्णा कहां मैं पाऊं । नहिं विधना
मोहिंपंख दीने उड़िके द्वारिका मैं जाऊं । ऊधो जु तुम बेग जाओ
प्रयासहिं बेगले आऊं । सूरके प्रभु दरशदीयो तेरी कहाय अब कौन
की कहाऊं २३० ॥ रागविहागरे ॥ जावोजावोमेरेआगेते मैं पति राखों
ऊधोतेरी । काहेको अबरोय दिवावत देखत आंखवरतहमेरी । तुम
ज्यों कहतहौ संगहै गोविन्द कहियतहै कुब्जाउन चरो । दोऊ मिले
तैसेइतैसे वे अहीर वह कंसकि चरो । तुमसारिखे बसीठपढाये कहिये
कहाबुद्धि उनकेरी । सूरप्रयास सुधि बिसरिगई वह गावत हैं खालन
संगहेरी २३१ ॥ रागसिंधु ॥ ऊधोइतनो मोहिसंतावत । कारीघटा देखि
बादरकी दामिनि चमक डरावत । हेमसुता पतिको रिपु व्यापै दधि
सुत रथ न चलावत । अम्बुखंडन को शब्द सुनतही चित चक्रित उठि-
धावत । कंचन पुरपतिको जो धाताते सब बलहि न आवत । शंभुसुत
को जोबाहन है कुहुके असलसलावत । यद्यपि भूयगाअंगबनावत सो-
इभुजंगहोइ धावत । सूरदास बिरहिनि हति व्याकुल खगपति चढि
किन आवत २३२ ऊधो यह हित लागतकाहे । निशिदिन नयन तप
ति हरिकहियो तुम जु कहत हृद साहे । पलक न परत चहुंदिशि
चितवत बिरहानल के दाहे । इतनी आरत काहे न मिलही जो पर
प्रयास यहांहे । पालागों सेसेहि रहन दे अब न आशजल थाहे । जनि
बोरहु सर्गसा ससुद्रमें पुनिपाई बिनचाहे । उपजि परी जासों जिहि
अंग संगसो अंगबनै निबाहे । सूर कहा लै करे पपीहा सते सर सरि-
ताहे २३३ वैसी शारंग करहि लिये । शारंग कहत सुनत वे शारंग
शारंग सनहिं दिये । शारंग थकी बैठ यह शारंग शारंग विकल
हिये । शारंगधुकि शारंगपरिशारंग शारंग क्रोध किये । शारंग है
भुज करहिबिराजत शारंगरूपबिये । सूरजदास मिलहिंवा शारंग तो
परि सुफल जिये २३४ देखो साई प्रयाससुरति अबआवै । दादुरमोर
कोकिला बेली पावस अगम जनावै । देखि घटा घनचापि दामिनी

मदन सिंगार बनावै। बिरहिनि देखि अनाथ नाथ बिन चहि नहिं
 ब्रजपरआवै। कासों कहों जाय कोइ हरिपै यह संदेश सुनावै। सूर-
 दास प्रभुमिलहु कृपाकरि ब्रजबनिता सचुपावै २३५॥ रागसिंधु ॥ प्रयास
 सिधारे कौनोहिदेश। तिनके कठिन करे जो सखिरोजिनकेपियपर-
 देश। उन ऊधो कछु भली न कोन्हो कौन जगतको बेश। सराभरि
 प्राणा रहत नहिं हरिविन निशिदिन अधिक अंदेश। अतिहि नितुर
 पातीनहिं पठई काहू हाथ संदेश। सूरदास प्रभु यह उपजतहै धरिये
 योगिनिवेश २३६हरिविन वे सुखबहुरिकहां। यदपि नयन निरखत
 वह सूरति फिर मन जात तहां। सुखसुरली शिर मारपंख बने अस
 घुंघचिनको हार। आगेधेनु रेनु तनमंडित चितवन तिरकी चार।
 रातदिवस अंगअंग अपनेहित हंसि मिलि खेलतखात। सूरदेखि वह
 प्रभुताउनकीकही न आवैबात २३७ सेठोकोऊनाहिनसजनी जोमोह-
 नहिं मिलावै। एकैबार बहुरि नंदनंदन को यहलौं लैआवै। पायन
 परि विलती करिमेरी यहसब दशासुनावै। निशि निकुंज सुखकोलि
 परमरुचि रासरंग की सुरति करावै। और कौनहुं सातकी सकुचनि
 सब बिधिकी उपजावै। पुनिपुनि सूरवहै करिहरिसों लोचनअरतिबु-
 भावै २३८ बटाऊ होहिं नकाकेमोत। संगरहत शिरमेलिठगोरीहरत
 अचानकचीत। मोहैनयन रूपदरशनके अवगामुरलिकोगीत। देखतही
 हरिलैजु सिधारे बांधिपिछोरी प्रीत। यहितेभुक्तियहै मगचित्तवति
 सुखजु भये बिपरीत। सूरदास बरुमिलहु पियारे आश तजी परतीत
 २३९हमैंतो इतनेहीसोंकाज। कैसेहबल कमलनयनको ब्रजलेआवहि
 आज। औरअनेक उपायतुम्हारे सकल करहु सुखराज। कैसेये निबहै
 अबलनपै कठिन योगके साज। नखशिख सुभगश्याम अनतनको द-
 शनहरति बिधाज। सूरदासप्रभु महरकौनबिधि बदनबिलोकनिवाज।
 २४० ऊधोहस अज्ञान अतिमेरी। सखब्रोजाय योगकी बातें नागरि
 नवलकिशोरी। कंचनकीमृगकौने देखयो किनलैबांधेडोरी। कहियों
 मधुप बारि मथिसाखन कौनेभरी कमोरी। बिनहीं भीति चिचकिन
 लेखो किनि नभ घाल्यो घोरी। कहियों कौने काढ्यो कनिका जो
 हठि तुसी पिछोरी। सबबिधि पूरया जान तुम्हारे हम अबला सति

भोरी । चाहकसुरप्रयास शशिपूरया अंखियां विविधचकोरी २४१
हरिसुत सुतहरिके तनआहि । यहको कहेकौनकी बातें ज्ञानध्यान
सुमिराकेकाहि । कोदुखसुरै तासुजेवतीकोको जिनकंस हते । हमरेतो
गोपतिमुत अधिपति बनिता औरनते । मोरज अन्धरूप कचिकारी
चित्तेचिते हरिहेत । कबहुं के करनी समेतिलो नेकनमानके सोत ।
तारिपु समैसंग शिशुलीन्हे आवत है तन घोय । सुरदास स्वामी मन
मोहन कत उपजावत दोय २४२ जलबिनतरंग भीतिबिन लेखन बिन
चेतहि चतुराई । याव्रजमें कछुनहीं चाहहै ऊवो जानि सुनाई । सन
चुभिरही माधुरीमूरति अंगअंगउरभाई । सुन्दरप्रयास कमलदललो-
चन सुरदास सुखदाई २४३ सबखोटे मधुवनके लोग । जिनसँग प्रयास
सुंदर सखि सखियेसबही सकहियोग । आये हैं कहियत ब्रजऊवो
युवतिनको लेयोग । आसनध्यान नयनसंदे सखि कैसे कहे बियोग ।
हमअहीर इतनी कहजानैं कूकपिसों संयोग । मूरसुबैद कहांलोंकी-
जै कहे न जानेरोग २४४ साईरी मधुवन की यह रीति । नोरसजानि
तजतक्षरा भीतर नवलकुसुमरस प्रीति । तिनकेसंगीहैं कैतवचितक्यों
आवैं परतीति । हमहिं छांड़ि बिरसहिं कृष्ण संग आये न रगारिपु
जीति । जिनिपतिथाहु मधुरमुनि बातें लागेकरनसभीति २४५ ऊवो
जिनि मधुवन तनदेखौ । कछुक दिवस औरो ब्रजबसिके जनमसुफल
करिकेखौ । कहाजायलैहै वहांऊवो जामें राजकिबाते । बालकि-
शोर कुमार निरखिमुख घरघर माखन खाते । तुमनिर्गुण निजकहत
निरन्तर निगमनेति यह नोति । प्रकररूप मदसत्त नयन को छांडो
दरशन प्रीति । शिवबिरंचि सनकादिकमुनिमन संतत जाकोध्यावत ।
सुरदास प्रभु गोपसुतन संग गोधन सुन्दचरावत २४६ ॥

रागधनाश्री

॥ उद्धव को उपदेश सुनो ब्रजनागरी । रूपशीललावण्य
सबै गुणआसरी । प्रेमध्वजा रसखपिणी उपजावन सुखपुंज । सुन्दर
प्रयास बिलासिनी नव सुन्दावन कुञ्ज । सुनो ब्रजनागरी १ कहन
प्रयास संदेशसकमें तुमपै आयो । कहन समयसंकेत कहूं अवसर नहिं
पायो । शोचतही मनमें रहेउ कब पाऊं यक ठाउँ । कहि संदेश नँद-
लाल को बहुरि मधुपुरी जाउँ । सुनो ब्रजनागरी २ सुनत प्रयास को

नाम ग्राम गृह की सुधि भूली । भरि आनंद रस हृदय प्रेमबेलीद्रुम
 फूली । पुलकिरोम सब अंग राये भरिआये जलनैन । कराठघुटैगदगद
 गिरा बेली जातन बन । व्यवस्था प्रेमकी ३ अर्द्धतिन बैठारि बहुरि
 परिकरसादीन्ही । श्यामसखा निज जानि बहुरि सेवा बहु कीन्ही ।
 ब्रूभक्ति सुधि नंदलाल की विहंसत मुख ब्रजबाल । नीकेहैं बलबीरजू
 बोलति बचनरसाल । सखासुनुश्याम के ४ कुशलश्याम अरुराम कु-
 शल संगी सब उनके । यदुकुल सिगरे कुशल परम आनंद है उनके ।
 हृभन ब्रज कुशलातको आयों तुम्हरे तीर । मिलिहैं थोरे दिवसमें
 जिनि जिय होहु अधीर । सुनो ब्रजनागरी ५ सुनि मोहन संदेशरूप
 सुमिरगाह्य आयो । पुलकित आननकमल अंग आवेष जनायो । बि-
 ह्वल है धरणीपरीं ब्रजबनिता मुरझाय । दैजल छोट प्रबोधहीं उदब
 बातसुनाय । सुनो ब्रजनागरी ६ वे तुमते नहिं दूरि ज्ञानकी आंखिन
 देखो । अखिल बिम्बभरिपूरिब्रह्मसब रूप विशेषो । लोहदारुपाया-
 रामें जलथल महि आकाश । सचर अचर बर्त्तत सबै ज्योतिहि रूप
 प्रकाश । सुनोब्रजनागरी ७ कौनब्रह्मकोजाति ज्ञानकासों कहिऊधो ।
 हमरेसुन्दरश्याम प्रेमको मारग सुधो । नैन बैन श्रुति नासिका मोहन
 रूप लखाय । सुविबुधि सब मुरलीहरी प्रेम ठगोरी लाय । सखा सुन
 श्यामके ८ यह सबसगुण उपाधिरूपनिर्गुणहैं उनके । निर्विकारनि-
 र्त्तप लगतनहिं तीनों गुनको । हाथ न पाय न नासिका नैन बैन नहिं
 कान । अच्युतज्योति प्रकाशहींसकलबिम्बकोप्रान । सुनोब्रजनागरी ९
 जो मुख नाहिंन हतो कहौ किन साखनखायो । पाछैन बिन गोसंग
 कहौ वनवनको धायो । आंखिनमें अंजनदयो गोवर्द्धन लयोहाथ । नन्द
 यशोदा पूतहैं कुँवरकान्ह ब्रजनाथ । सखासुनुश्यामके १० जाहि कहत
 तुमकान्ह ताहि कोउ पिता न माता । अखिल अंड ब्रह्मण्ड बिषव उ-
 नहीं में जाता । लीलागुणअवतारहैं धरिआये तनश्याम । योग युगत
 होपाइये परब्रह्म पुरवास । सुनोब्रजनागरी ११ ताहि बताओ योग
 योग्य ऊधोतहंजाबो । प्रेम सहित हम पास श्यामसुन्दर गुणगावो ।
 नैन बैन मन प्राणमें मोहन गुण भरिपूरि । प्रेमपियूथै छोड़िकै कौन
 मनेटैधूरि । सखा सुनुश्यामके १२ दूरि बुरीजोहाय ईश क्यौं शीघ्र

चढ़ावै । धूरिसेवमें आय कर्म करि हरि पद पावै । धूरिहिते यह तन भये
 धूरिहिते ब्रह्मंड । कोकचतुर्दश धूरिते सप्तद्वीप नवखंड । सुनौ ब्रजनागरी
 १३ कर्म धूरिकी बात कर्म अधिकारी जाने । कर्म धूरिको आनि प्रेम
 अमृतमें साने । तबहीं लों सब कर्म है जब लग हरि उर नाहि । कर्म बध्य सब
 बिप्रबके जीव बिमुख है जाहि । सखा सुनु श्याम के १४ तुम निन्दत कह कर्म
 कर्म ते सद्गति होई । कर्म रूप ते बली नाहिं त्रिभुवनमें कोई । कर्महिते
 उत्पत्ति है कर्महिते है नाश । कर्म किये ते मुक्ति है परब्रह्म पुरवास । सुनौ
 ब्रजनागरी १५ कर्म पाप अरु पुण्य लोह सेना की बेरी । पायँन बंधन
 होउ कोउ मानों बहु तेरी । ऊँच कर्म ते स्वर्ग है नीच कर्म ते भोग । प्रेम
 बिना सब पचि सरै बियय बासना रोग । सखा सुनु श्याम के १६ कर्म
 दुरे जो होय योग काहे को धारै । पद्मासन सब धारि रोकि इंद्रिज को
 मारै । ब्रह्म अग्नि जरि शुद्ध हूँ सिद्धि समाधि लगाय । लीन होय सायु-
 ज्यमें ज्योतिहि ज्योति समाय । सुनौ ब्रजनागरी १७ योगी योगी भजे
 भक्ति निरूपै जानै । प्रेम पियूषै प्रकट श्याम सुन्दर उर आनै । निर्गुण
 गुणहिं जो पाइये लोग कहैं जो नाहिं । घर के नागन पूजहीं बाँबी पूजन
 जाहिं । सखा सुनु श्याम के १८ जो उनके गुण होय वेद क्यों नेति ब-
 खानै । निर्गुण सगुण आत्म रची ऊपर सुख सानै । वेद पुराणानि खो-
 जिके पायो कितहुन सक । गुणहीं के गुण होहिं ते कहाँ अकाश कि
 टेक । सुनौ ब्रजनागरी १९ जो उनके गुण नाहिं और गुण भये कहाँति ।
 बीज बिना तरु जमें मोहितुम कहाँ कहाँति । वा गुण की परछाँह री
 साया दर्पण बीच । गुण ते गुण न्यारे भये अमल बारि जल की व । सखा
 सुनु श्याम के २० साया के गुण और और हरि के गुण जानो । उन गुण को
 इन माहिं आनि काहे को सानो । जाके गुण अरु रूप को जान न पायो
 भेद । ताते निर्गुण रूप को बहत उपनिषद वेद । सुनौ ब्रजनागरी २१
 वेदहु हरि के रूप श्वास मुखते जोति सरै । कर्म क्रिया आसक्त सबै पि-
 छली सुधि बिसरै । कर्म मध्य हूँ सबै कितहुन पायो देख । कर्म सहित
 ही पाइये ताते प्रेम विशेष । सखा सुनु श्याम के २२ प्रेम जो कोऊ
 बस्तु रूप देखे लब लागै । बस्तु दृष्टि बिन कहाँ कहाँ प्रेमी अनुरागै ।
 तरि साचन्द्र के रूप को गुणानहिं पायो जान । तो उनको कह जानिये

पुराणीत भगवान् । सुनो ब्रजनागरी २३ तरंगिणी अकाश प्रकाश
 तेजमय रहेउ दुराई । दिव्य दृष्टिही रूप भले वह देखो जाई ।
 जिनकी वे आंखें नहीं देखें कनकहृत्प । तिनहें बिश्वास क्यों ऊपजे
 जेपरे कर्मको कृप । सखासुनुप्रयासके २४ जब करिये नित कर्म भक्तह
 जामेंआई । कर्मरूप किहिकहो काहिपैकृत्यो जाई । कर्मकर्मकर्महिं
 सर्वाकिये कर्मनाश हो जाय । तबै आत्मान कर्मकरि निर्गुणावस्था स-
 माय । सुनो ब्रजनागरी २५ जो उनके नाहिं कर्म कर्मबन्धन है आवै ।
 तो निर्गुणहै बस्तुमात्र परमाणा बतावै । जो उनको परमाणाहै तो प्र-
 भुता कछु नाहिं । निर्गुणा भये अतीतके सधुराकमल जगमाहिं । स-
 खासुनु प्रयास के २६ जो गुण आवै दृष्टिमांभ नहिं ईश्वर सारे । वे
 सबहुनते बासुदेव अच्युतहैं प्यारे । इन्दी दृष्टि बिकारते रहत अधो-
 क्षीय जोति । शुद्ध सखपी जानि जिय दमिजु ताते होति । सुनो ब्रज-
 नागरी २७ नास्तिकजहैंलोग कहाजानैं हितरूपै । प्रकटभानुको छां-
 द्विहैं परछाहींधूपै । हमरे तुम्हरे रूपही और न कछु मुहाय । ज्यों
 करतल आभासको कोटिक ब्रह्म दिखाय । सखासुनुप्रयासके २८ ऐसे
 में नंदलाल रूप नयनन के आगे । आचरणे छबि छाथ बनै पियरे
 उरबागे । ऊधोसोंमुख मोरिके कहि कछु उतते बात । प्रेमअमृतमुखते
 श्रवत श्रुज नयन चुचात । तरंग रसरीतिकी २९ अहोनाथ अनाथ
 और यदुनाथ गोसाई । नंदनन्दन बिडरात फिरततुम बिन सबगाई ।
 काहेन फेरिकपालहो गोरवाहन मुख देहु । दुखनिधि जलमें बूझहीं
 करि अवलम्बनलेहु । निदुरहैं कहंरहे ३० कोऊ कहै अहो दरशदेहु
 पुनि बेरा बजावो । दुरिदुरि बंनकी ओट कहा हिय लोन लगावो ।
 हमको तुमसे एकहैं तुमको हमसीकोरि । बहुतभांति के रावरे प्रीति
 न डारोतीरि । सबैइकबारहीं ३१ कोऊकहै अहोदरश देत फिरिलेत
 दुराई । यह छलविद्या कहौ कौन पिय तुमहिंसिखाई । हम परवश
 आधीनहैं ताते बोलतदीन । जलबिन कहो कैसे जिये गहिर जलकी
 मीन । विचारियरावरे ३२ कोऊकहै अहो प्रयास कहा इतराय गये
 हो । सधुराको अधिकार पाय सहारा भयेहो । ऐसीकछु प्रभुताहुती
 जानत कोऊ नाहिं । अबला बधवनि हरिगये बली डरे जग मांहो ।

पराक्रम जानिके ३३ कोऊ कहै अहो प्रयास चहतमारखा जो खेले ।
 गिरिगोवर्द्धन धारि करी रक्षा तुम कैसे । व्यालचनत अत व्यालरो
 राखि लये सब ठोर । अब विरहानल दहतहो हँसि हँसि तनरकि-
 शोर । चोरि चित लै गये ३४ कोऊ कहै ये नितर इन्हें पात नहिं
 व्यापै । पाप पुण्यके करणहार ये आपाहि आपै । इनके निर्दय रूप
 में नाहिनकछु बिचित्र । पयपीवत प्राणान हरे पतना बाल चरित ।
 मिथयेकौनके ३५ कोऊ कहैरी आज नाहिं आगे चलिआई । राम-
 चन्द्रके धर्मरूपमेंहीनितुराई । यज्ञकरावन जातहैं बिद्यामित्र समीप ।
 मगमेंसारी ताड़का रघुवंशीकुलदीप । बालहीरोति यह ३६ कोऊ कहै
 यहपरमधर्मस्त्रीजितपरे । लखलख संधान धरे आयुध के खरे । धीता
 जुके कहते प्रूर्णशाखा पै कोपि । छेदिछुअंग बिस्वपक्षे लोगन लज्जा
 लोपि । कही ताकी कथा ३७ कोऊ कहैरी सुनो और इनके गुण
 अली । बलिराजा पै गये भूमि मांगन बनमाली । मांगत बामनरूप
 ह्वै परबतभये अक्राय । सत्यधर्मसब छाँड़िके धरोपीठपैपाय । लोभका
 नावये ३८ कोऊ कहैरी कहा हिरण्यकश्यप ते बिगरेउ । प्रेमढोठ प्र-
 हलाद पिता सन्मुखह्वै भगरेउ । सुत अपनेको देतहो शिखादण्ड ब-
 ताय । इनबपुअरि नरसिंहको नखन बिदारेउजाय । पिताअपराध
 ही ३९ कोऊ कहै इन परशुराम ह्वै सातामारी । फरत कांधेधारि
 भीम सजिन संहारी । शोणितकुंड भरायके पोये अपनेपिय । इनके
 निर्दय रूपमें नाहिन कछु बिचित्र । विलग कह मानिये ४० कोऊ
 कहैरी कहादोषाशिशुपालनरेणै । व्याह करनकोगये नृ रति भीयसके
 देखै । दलबलजोरिवरात को टाढेहैं छविबाढ़ि । इनछतकरि दुजही
 हरी सुधितप्रासमुखकाढ़ि । आपने स्तारथी ४१ अहिबिधिहै आवेश
 परम प्रेमीअनुरागी । औररूप पियवरित तहांते देखनजागी । रो-
 मरोम हरि क्यापि कै मोहन जियके आय । जितको भत भयिष्यधों
 जानत कौनदुराय । रंगीली प्रेसकी ४२ देखत इनकोप्रेम नेमऊ शेकी
 भाइयो । तिसिर भाव आवेश बहुत अपनेपनलाइयो । सनमेंकहै राज
 पायके लैभाये निजवारि । हांता छत अकतरहों विभुवनआनंदवारि ।
 बन्दनायोरागये ४३ कचह्रंके गुणगाय प्रयासके इन्हें रिभाऊं । ताते

गुरातीत भगवान । सुनो ब्रजनागरी २३ तरुणा अकाश प्रकाश
 तेजमय रहेउ दुराई । दिव्य दृष्टिही रूप भले वह देखो जाई ।
 जिनकी वे आंखें नहीं देखें कबवह रूप । तिनहें बिद्यास क्यों ऊपजे
 जेपरे कर्मको रूप । सखासुनुश्यामके २४ जब करिये नित कर्म भक्तह
 जायेंआई । कर्मरूप किहिकहो काहिपैकूल्यो जाई । क्रमक्रम कर्महिं
 सर्वाकिये कर्मनाश हो जाय । तबैआत्मनि कर्मकरि निर्गुणावस्था स-
 माय । सुनो ब्रजनागरी २५ जो उनके नाहिं कर्म कर्मबन्धन है आवै ।
 तो निर्गुनाहै बस्तुमात्र परमारा बतावै । जो उनको परमाराहै तो प्र-
 भुता कह्यु नाहिं । निर्गुना भये अतीतके सगुणाकमल जगमाहिं । स-
 खासुनु श्याम के २६ जो गुण आवै दृष्टिभांज नहिं ईश्वर सारे । वे
 सबहुनते बाहुदेव अच्युतहें प्यारे । इन्द्री दृष्टि विकारते रहत अघो-
 संख जोति । शुद्ध सखपी जानि जिय हृत्तिजु ताते होति । सुनो ब्रज-
 नागरी २७ नास्तिकजोहैंलोग कहाजायें हितरूपै । प्रकटभानुको छां-
 द्विगहें परछाहींधरपै । हमरे तुम्हरे रूपही और न कह्यु सहाय । ज्यों
 करतल आभासको कोटिक ब्रह्म दिखाय । सखासुनुश्यामके २८सेसे
 में नंदलाल रूप नयनन की आगे । आयगये छवि छाया बनें पियरे
 उरबागे । ऊवोसोंदुख मोरिके कहि कह्यु उतते बात । प्रेमअमृतमुखते
 अबत अंबुज नयन चुचात । तरकर मरीतिकी २९ अहोनाथ श्रीनाथ
 और यदुनाथ गोसाई । नंदनन्दन बिडरात फिरततुम बिन सबगाई ।
 काहेन फेरिहृपालहो गोरबालन सुख देहु । दुखनिधि जलमें बूझहीं
 करि अबलम्बनलेहु । निदुरह्वै कहंरहे ३० कोऊ कहै अहो दरशदेहु
 पुनि बेरा बजावो । दुरिदुरि बनकी ओट कहा हिय लोन लगावो ।
 हमको तुमसे एकहैं तुमको हमसीकोरि । बहुतभांति के रावरे प्रीति
 न डारोतीरि । सबैइकवारहीं ३१ कोऊकहै अहोदरश देत फिरिलेत
 दुराई । यह छलविद्या कहौ कौन पिय तुमहिंसिखाई । हम परवश
 आधीनहैं ताते बोलतदीन । जलविन कहौ कैसे जिये गहिर जलकी
 मीन । विचारियरावरे ३२ कोऊकहै अहो श्याम कहा इतराय गये
 हौ । मथुराको अधिकार पाय महाराज भयेहौ । ऐसीकह्यु प्रभुताहुती
 जानत कोऊ नाहिं । अबला बधसनि डरिगये बली डरे जग माहिं ।

पराक्रम जानिके ३३ कोऊ कहै अहो प्रयास चहतभारता जो सेने ।
गिरिगोवर्द्धन धारि करी रक्षा तुम कैसे । ब्यालचनन अत उदाहते
राखि लये सब तोर । अब बिरहानल दहतहौ हँसि हँसि नमस्कृ-
शोर । चोरि चित लै गये ३४ कोऊ कहै ये नितुर इन्हें पात नहिं
व्यापै । पाप पुण्यके करणहार ये आपहि आपै । इनके निर्दय रूप
में नाहिनकहू बिचित्र । पथपीवत प्राणान हरे पतना बाल चरित्र ।
मिथयेकौनके ३५ कोऊ कहैरी आज नाहिं आगे खलिआइ । राम-
चन्द्रके वसखपमेंहीनिदुराई । यज्ञकरावन जातहैं विद्यामित्र ससीप ।
मगमेंसारी ताडका रघुवंशीकुलदीप । बालहीरोति यह ३६ कोऊ कहै
यहपरमधर्मस्त्रीजितपरे । लललक्ष संधान धरे आयुव के खरे । धीता
जूके बाहेते धूर्पगाखो पै कोपि । छेदिमुधंग बिरूपके लोगन लज्जा
लोपि । कही ताकी कथा ३७ कोऊ कहैरी सुनो और इनके गुण
आली । बलिराजा पै गये भूमि मांगन बनसाली । मांगत बामनरूप
है परबतभये अकाय । सत्यधर्मसब छाँड़िके धरोपीठपैपाय । लोभका
नाबये ३८ कोऊ कहैरी कहा हिरण्यकश्यप ते बिगरेउ । प्रेमढीठ प्र-
ह्लाद पिता सुमुखहूँभनरेउ । सुत अपनेको ऐतहो शिष्यादण्ड ब-
ताय । इनबपुंवरि नरसिंहको नखन बिदारेउजाय । विनाअपराध
ही ३९ कोऊ कहै इन परशुराम हूँ सातासारी । फरवा कांधेधारि
भूमि सन्निन संहारी । शोणितकुंड भरायके पोये अपनेपिय । इनके
निर्दय रूपमें नाहिन कहू बिचित्र । विलग कह सानिये ४० कोऊ
कहैरी कहादेयगिशुयातनरेणै । व्याह करनकोगये नृपति भीषमके
देशी । दलबलजोरिवरात को टाढेहैं छबिबाढि । इनकृतकरि दुतही
हरी सुधितप्रासमुखकाढि । आपने स्वारथी ४१ यहिविधिहै आवेश
परम प्रेमीअनुरागी । औररूप पियवरित तहांते देखनलागी । रो-
मरोम हरि व्यापि कै मोहल जितके आय । जितको भूत भविष्यधों
जानत कौनदुराय । रंगीली प्रेसकी ४२ देखत इनकोप्रेम नेमऊ शोको
भाज्यो । तिसिर भाव आवेश बहुत अपनेमनलाज्यो । मनमेंकहे रज
पायके लैसाधे निजधारि । होंता कृत अकृततरेहां प्रियवनआनंदबारि ।
नन्दनायोरथये ४३ कवचके गुणगाय प्रयासके इन्हें रिभाऊं । ताते

प्रेमाभक्ति प्रथमसुंदरकी पाऊं । जिहिविधि मोपै रीझहीं सो विधि
 करौ बनाय । ताते मो मन शुद्ध है दुविधा ज्ञान मिटाय । पाय रस
 प्रेमको ४४ ताहीपणा यकभँवर कहूँ तेही उड़िआयो । ब्रजबानितनके
 पुंज माहिं गुञ्जत छबिछायो । चहैउ चहतहैपगनपै अरुणाक्रमल दल
 जानि । माने सन ऊवोभयो प्रथमहिं प्रकटेउ आनि । मधुप को बेय
 धरि ४५ ताहि भँवरसों कहैं सबै प्रतिउत्तर बातें । तर्क बितर्क नि-
 युक्ति प्रेमरसछपी घातें । जनिपरशौ समपावैरे तुम मानत हमचोर ।
 तुमहोंसे कपटीहुते मोहननंदकिशोर । यहांते दूरिहो ४६ कोऊ कहैरी
 बिचसांझ जेतें हैं कारे । कपटकुटिलकी कोटिपरममानुष मसिहारे ।
 एकप्रथामतन परशिकै जरतआजलों अंग । तापाछे यासधुपहूलायो
 घोरा भुबंग । कहाइनकोदया ४७ कोउ कहैरी मधुपबेय उनहीं को
 धारेउ । प्रयासपीत गुंजारबैन किंकिशो भनकारेउ । वा पुर गोरस
 चोरिकै फिरिआयो यहदेश । इनकोजनि मानहु कोऊ कपटी इन
 कोबेय । चोरिजनि जायकहु ४८ कोऊकहैरे मधुपकहैं अनुरागी
 तुमको । कौनैगुराको जानि यही अचरजहै हमको । कारोतन अति
 पातकी मुखपियरोजगननन्द । गुणाअवगुणा सबआपनो आपुहिंजानि
 अलिन्द । देखिले आरसी ४९ कोऊकहैरे मधुप कहातू रसका जानै ।
 बहुत कुछमपरबैठ सबै आपनसम मानै । आपन सम हमको कियो
 चाहत है सतिमन्द । द्विविध ज्ञान उपजाय कै दुखित प्रेम आनन्द ।
 कपट के छन्दसों ५० कोउ कहै रे मधुप कहा मोहनगुरागावै । हृदय
 कपट सों परमप्रेम नाहिंन छबिपावै । जानति हौ सब भांतिकै सर्वस
 लियो चुराय । येवौरी ब्रजबासिनी कोजो तुम्हें पतियाय । लहे हम
 जानिकै ५१ कोउ कहै रे मधुप कौन कहै तुम मधुकारी । लिये फि-
 रत मुख योगगांठ कांटाव कटारी । सधिर पानकियो बहुतकै अरुणा
 अधर रंगरात । अब ब्रजमें आयेकहा करनकौन को घात । जातकिन
 पातकी ५२ कोउ कहै रे मधुप प्रेम यतपद पशुदेख्यो । अबलों यहि
 ब्रज देश नाहिं कोउनाहिं बिशैख्यो । हैं संगआनन ऊपरोजामें कारो
 रात । खल अमृतसम मानहीं अमृत देखि डरात । बादियहरसिकता
 ५३ कोउ कहै रे मधुप ज्ञान उलटो लेआयो । मुक्तिपरे जे फेरि तिन्हें

पुनि कर्म बतायो । वेद उपनियद सार जे मोहन गुणा गहिलेत ।
 तिनके आत्मा शुद्धकर फिरिकर रंधादेत । योग चरसारमें ५४ कोउ
 कहैरे मधुप निगुणा इन बहुकर जान्यो । तर्क वितर्क नियुक्त बहुत
 उनकी यह आन्यो । पर इतनो नहिं जानहीं वस्तु बिना गुणा नाहिं ।
 निर्गुणा होहिं अतीत के सगुणा सकल जगमाहिं । सखा सुनु श्याम
 के ५५ कोउ कहै रे मधुप तुम्हें लज्जा नहिं आवै । सखा तुम्हारे श्याम
 कूबरीनाथ कहावै । यहनीची पदवीहुतीगोपीनाथ कहाय । अब यदु
 कुल पावनभयो दासी जूटनिखाय । सरतकह बोलको ५६ कोउ कहै
 अहो मधुपश्यामयोगी तुमचेला । कुब्जा तीरथजायकियो इन्द्रिनको
 मेला । मधुवन सुधि बिसरायके आयोगोकुल माहिं । यहां सबै प्रेमी
 बसैं तुम्हरो गाहक नाहिं । पधारो रावरे ५७ कोउ कहैरे मधुप साधु
 मधुवनकेसे । और तहांके सिद्धलोग हूँ हैं धौं कैसे । अवगुणा गुणा
 गहिलेतहैं गुणाको डारतमेरि । मोहन निर्गुणा को गहैं तुम साधनको
 भेरि । गांठिको खोइके ५८ कोउ कहैरे मधुपहोहिं तुमसेजोसंगी । क्यों
 न होय तनश्याम सकल बातन चौरंगी । गोकुलमें जोरीकोऊ पाई
 नाहिं तुम्हारि । सदन विभंगी आपही करी विबंकीनारि । रूपगुणा
 शील की ५९ यहिबिधि सुमिरिगोविन्द कहतिऊधोप्रतिगोपी । भृ-
 ङ्गसंज्ञाकरि कहत सकल कुल लज्जालोपी । तापाके इकवारही रु-
 दितसकल ब्रजनारि । हा करुणामय नाथ हा केशव कृष्ण मुरारि ।
 फाटिहियरोचल्यो ६० उमंगें जो कोउ मलिल सिंधुलैं तनकीधारनि ।
 भीजत अम्बुजनारि कंचुकी बहुगुणा हारनि । ताहीप्रेमप्रवाहमें उडव
 चले बहाय । भलीज्ञानकीमेड हैं ब्रजमें दोन्हीआय । कुलहितारनभये
 ६१ प्रेमप्रशंसा करत शुद्धजोभक्ति प्रकाशी । दुबिधा ज्ञान गलानि
 मन्दता सिगरीनाशी । कहतमोहिंबिस्मयभयो हरिके ये निजपात्र ।
 हैंतौ कृतकत हूँ गयो इनकेदर्शनमात्र । मेरिमत ज्ञानको ६२ पुनिपुनि
 कहि हरिकहन बात सकांतपढायो । मैं इनको कहु मर्म जानिसको
 नहिंपायो । कहां जु निज मर्यादकी ज्ञानकर्म लो रोंपि । येसबप्रे-
 मासक्तहूँ कुललज्जाकरि लोपि । धन्ययेगोपिका ६३ जोसेसे मर्या
 दमेरि मोहनकोधायै । काहेन परमानंद प्रेमपदवीकोधायै । ज्ञानयोग

सबकरसते प्रेम परेहीसांच । हैंयहिपटतर देतहैंहीराआने कांच ।
 वियसता बुद्धिकी ६४ धन्य धन्य जोलोग भजत हरिकोजो सेसे । जे
 कोउ पारसऔर प्रेमविन पावतकैसे । मेरेयालघुज्ञानको उरमद रहेउ
 उपाध । अबजानो ब्रजप्रेमकोलहत न आधोआध । वृथाअमकरिथके
 ६५ पुनिकह उत्तम साधुसंग नित्यैहै भाई । पारस परशेलोह तुरतकं-
 चन ह्वै जाई । गोपीप्रेम प्रसादको हैं अब सीखो आय । ऊधोते मधु-
 कर भयो द्विविधा ज्ञान भिदाय । पायरसप्रेमको ६६ पुनिकह पर-
 शतपाय प्रथमहो इनाहिं निवारो । मृङ्ग सँज्ञाकरिकहतनन्दिबबहीते
 डारो । अब हवैरहैं ब्रजभूमिकी पग मारगकी धरि । बिचरतपदमोपै
 परै सबसुखजीवनमूरि । मुनिन दुर्लभ अहै ६७ कैसेहोहुं द्रुमलता बेलि
 बलीबनमाहीं । आवत जात सभाय परति मोपै परछाहीं । सोऊमेरे
 बशनहीं जोकहुकरों उपाय । मोहनहोहिंप्रसन्नजो यहवरसांगोंजाय
 कृपाकरि देहुजू ६८ सेसेमग अभिलायकरत मधुरा फिरिआयो । गद-
 गद पुलकितरौस अंग आवेश जनायो । गोपीगुण गावनलग्यो मोहन
 गुण गयभलि । जीवनको लै कहकरें जोनहिं जीवनमूलि । भक्तिको
 सारयह ६९ सेसेशोचत जहां श्याम तहँआयोधायो । परिकर्मा दगड
 वत बहुतआवेशजनायो । कहुनिर्दयता प्रयासकी करि कोधित दोउ
 नैन । कहुब्रजवनिता प्रेमकी बोलत रस भरिबैन । सुनौ नंदलाडिले
 ७० करुणामयअरु रसिकतातुम्हरीसबभूटी । जबहीं लौं नहिंलखी
 तबहिंलौंबांधी मूठी । मैंजान्योब्रज जायकै तुम्हरो निर्दयरूप । जोतुम
 को अबलंबही बाकोमेलोकूप । कौन यहधर्महै ७१ पुनिपुनि कहहो
 चलौजाय टुन्दाबन रहिये । प्रेमपुंज को प्रेमजाय गोपिनसँम लहि-
 ये । और काम सब छाँडिके उनलोगनि सुखदेहु । नातरुट्यो जातहै
 अबहीं नेह सनेहु । करौगे तो कहा ७२ सुनत सखा के बैन नैन भरि
 आये दौऊ । बिबश प्रेम आवेश रही नाहीं सुधि कोऊ । रोम रोम
 प्रतिगोपिका ह्वैरहि सौवरिगात । कल्प तरोरुह साँवरो ब्रजवनिता
 भङ्गपात । उलहि अंगअंगते ७३ हो सचेत कहिभलो सखापठयो सु-
 धिलयावन । अबगुण हसरेआनि तहांते लगेबतावन । मोमें उनमें अ-
 न्तरो सकौलसातरिनाहिं । ज्यों देखौमोमाहिं वे त्योंमें उनहींमाहिं ।

तरंगनि बारि ड्यो ७४ गोपीरूप दिखाय तबै मोहन बनवारी । ऊधो
 भ्रमहिं निवारि डारिमुख मोहकि जारी । अपनो रूप दिखाय कैलीन्हे
 बहुरि दुराय । नंददास पावनभयो जो यहलीलागाय । प्रेमरसपुंजनी
 ७५ मधुकर काहेको गोकुल आये । बैसेही सच अपने मनमें दूनोंजि
 रह जगाये । हमजानतिहैं जिन्हें पठाये प्रयाससंदेशो ल्याये । जनम
 जनम के दूत तिरावन कौनहिं लार लगाये । कहा करहिं कहँ जायँ
 सखीरी हरि बिन कछु न सुहाये । जन्म सुखफल सूरतिनकोजे का-
 जपरायेवाये १ ॥ रागमलार ॥ आयेसाईदुरंगप्रयास के संगी । जोपहिले
 रंगरंगे प्रयास रंग तिनहींको बुधिरंगी । हमरीउनकी सी मिलवतहो
 ताते भये विहंगी । सुधीकहै सबनि ससुभावन ते सांचे सरबंगी । श्री-
 रनि को सरबसु लै मैरत आपुन भये त्रिभंगी । सूरसुनाम शिखीमुख
 जोपै वे घन कबंध उषंगी २ आयेनंदनन्दनकोनेव । गोकुलमांझ योग
 बिस्ताखोभली तुम्हारी जेव । जब लुंदावन रासरच्यो हरि तबहिं
 कहाये हेव । अबयह ज्ञान सिखावन जाही भस्म अघारी सेव । अब-
 लन को लै सो व्रत टान्यो जो योगिन को योग । सरदास ये सुनत न
 जीवहिं आतुर बिरह बियोण ३ कोउव्रज बांचतनौहिंन पाती । कत
 लिखिलिखि पठवत नंदनन्दन कठिन बिरह की कातो । नयनसजल
 कागज अति कोमल कर अँगुरी अति ताती । परशे जरे बिलोके
 भोजे दुहूँ भांति दुखछाती । क्यों ये बचन सुझंक सूरसुनि बिरहमदन
 शरघाती । मुखमृदु बचन बिना सींचे अब जिबहिं प्रेमरसमाती ४ ॥
 रागमारंग ॥ देनआये ऊधोसतनीको । हित उपदेश करनव्रजआये लिये
 सतो हरिजीको । योगयुगति निरगुण उपदेशत ज्ञानसुनाययतीको ।
 आवहुरी मिलि सुनहु सयानी लिये सुयश को टीको । तजन कहत
 अम्बर आभूषण देहगोह सुतहीको । अंगभस्मकरि शीशजरा धरिसि-
 खवत निरगुण फीको । मेरेजानयहै युवतिनको देतफिरतदुखपीको ।
 तो सरापते भयेप्रयासतन तरुण गहत डरजीको । जाकीप्रकृति परीरी
 जौबहिं तैसीशेच न भलीबुरीको । जौ लागि सूरच्याल डसि भाजौ
 सुखनिहिं होतअमीको ५ ॥ रागबिहाग । तालयकतारा ॥ कथाकथा करतडोलं
 कथाकहाँ पाऊं । द्वारेतेदौडआऊं तोऊ नलाज लजाऊं सोहिंछाँडि

१००४ सूरसागर भ्रमरगीत रागकल्पद्रुम ।

और की ये कौन की कहाऊं । ऊधो तुम बेगि जाओ प्रेम लिखि प-
ठाऊं । हंसत फिरौं बनकुंजसाहिं प्रयास प्रयास गाऊं । बिचना नहिं
पंखदियो उड़िकै तहँ जाऊं । ऊधो तुम बेग जाओ प्रयासहिंलै आओ ।
सूरजप्रभु दरश दियो सबहि कंठ लाओ ६ ॥

इतिसूरसागरभ्रमरगीतसम्पूर्णसि ॥

इति श्रीसूरदासजीकृतसूरसारावलीनित्यकीर्तनरागकल्पद्रुमादि
अनेकरागसंयुक्तसूरसागरसमाप्तः ॥



मुंशीनवलकिशोर के छापेखाने मुकाम लखनऊ में छपा फरवरी सन् १८८३ ई०

